☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

चौथा भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पंना नं:
०६ चेत २०११ बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	दिल्ली	दिल्ली	००१
०७ चेत २०११ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	००६
०८ चेत २०११ बिक्रमी	हरि संगत नवित	मेरठ छाउणी	मेरट	०४२
०९ चेत २०११ बिक्रमी	हरि संगत नवित	मेरठ छाउणी	मेरट	०४७
११ चेत २०११ बिक्रमी	हरि संगत नवित	मेरठ छाउणी	मेरट	०७६
१२ चेत २०११ बिक्रमी	हरि संगत नवित	मेरठ छाउणी	मेरट	१००
१३ चेत २०११ बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरट	११३
१४ चेत २०११ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरट	१५३
१४ चेत २०११ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरट	१५८
१४ चेत २०११ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	मेरट	१७६
१८ चेत २०११ बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	२०७
०१ विसाख २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२१०
०५ विसाख २०११ बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	वैरोवाल	अमृतसर	२१६
२५ विसाख २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२२७
०१ जेठ २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२३२
०२ जेठ २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२३२
०४ जेठ २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	२३७
०५ जेठ २०११ बिक्रमी	गुरपुरब ते	बुग्गे	अमृतसर	२४५
०६ जेठ २०११ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	२७५
०७ जेठ २०११ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	३०४

1
०४

०८ जेठ २०११ बिक्रमी	हीरा घाट नहिर दे कंढे कल्सीआं	अमृतसर	३२७
०६ जेठ २०११ बिक्रमी	हीरा घाट नहिर दे कंढे कल्सीआं	अमृतसर	३३५
०६ जेठ २०११ बिक्रमी	चेत सिँघ दे गृह कल्सीआं	अमृतसर	३५५
०६ जेठ २०११ बिक्रमी	मनी राम दे गृह सिधवां	अमृतसर	३५७
१० जेठ २०११ बिक्रमी	तेजा सिँघ दे दे गृह भुच्चर	अमृतसर	३७८
११ जेठ २०११ बिक्रमी	सुरजन सिँघ दे गृह भुच्चर	अमृतसर	३८८
१३ जेठ २०११ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह बुग्गे	अमृतसर	३९२
२१ जेठ २०११ बिक्रमी	गुरबखश सिँघ दे गृह जेठूवाल	अमृतसर	३६७
पहली हाढ़ २०११ बिक्रमी	काका मनजीत सिँघ दी समाध दी नींह रक्खण समें जेठूवाल	अमृतसर	४०१
पहली हाढ़ २०११ बिक्रमी	काका मनजीत सिँघ दी समाध दी नींह रक्खण समें जेठूवाल	अमृतसर	४०३
०७ हाढ़ २०११ बिक्रमी	तेज भान दे गृह मेरठ छाउणी		४११
१३ हाढ़ २०११ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह जेठूवाल	अमृतसर	४३४
१६ हाढ़ २०११ बिक्रमी	बिशन कौर दे गृह जेठूवाल	अमृतसर	४३६
१७ हाढ़ २०११ बिक्रमी	मनजीत सिँघ दी समाध त्यार करन नवित	अमृतसर	४५६
१८ हाढ़ २०११ बिक्रमी	दरबार विच जेठूवाल	अमृतसर	४७३
१६ हाढ़ २०११ बिक्रमी	सतिसंग घर डेरा जैमल सिँघ, गुरचरन सिँघ ब्यास	अमृतसर	४८३
१६ हाढ़ २०११ बिक्रमी	चरन सिँघ दे नवित तरनतारन	अमृतसर	४८६
२० हाढ़ २०११ बिक्रमी	पाल सिँघ दे गृह भलाई पुर	अमृतसर	४८७
२१ हाढ़ २०११ बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह भलाई पुर	अमृतसर	४६६

2 ०४

२२ हाढ़ २०११ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	५०२
१२ भादरों २०११ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	५१३
१२ भादरों २०११ बिक्रमी दयाल बाग राधा स्वामी दे डेरे आगरे शब्द भेजया	बुग्गे तों	अमृतसर	५१५
१२ भादरों २०११ बिक्रमी राशट्रपति राजिंदर प्रशाद नूं दिल्ली शब्द भेजया			५१८
१२ भादरों २०११ बिक्रमी गुरचरन सिँघ नूं शब्द भेजया ब्यास			५२१
१२ भादरों २०११ बिक्रमी संत लाभ सिँघ नूं शब्द भेजया ते उतर मंगया			५२२
१२ भादरों २०११ बिक्रमी मुहम्मद दीन शाह मस्ताना पाकिस्तान शब्द भेजया			५२४
१४ भादरों २०११ बिक्रमी माता बिशन कौर	जेठूवाल	अमृतसर	५२६
१४ भादरों २०११ बिक्रमी दिल्ली लाल किले जाण वास्ते गुरमुखां दे नाम लिखत विच आए	जेठूवाल	अमृतसर	५२६
१४ भादरों २०११ बिक्रमी संत लाभ सिँघ नूं शब्द भेजया	जेठूवाल	अमृतसर	५२६
१५ भादरों २०११ बिक्रमी बिशन सिँघ नूं गुड़गाउँ शब्द भेजया			५३०
१५ भादरों २०११ बिक्रमी लछमण सिँघ नूं दिल्ली शब्द भेजया			५३१
पहली अस्सू २०११ बिक्रमी तेज भान दे गृह	मेरठ छाउणी		५३२
०२ अस्सू २०११ बिक्रमी तेज भान दे गृह	मेरठ छाउणी		५४२
०३ अस्सू २०११ बिक्रमी गांधी दे नवित	राजघाट	दिल्ली	५४६
०३ अस्सू २०११ बिक्रमी लाल किले दीवाने आम विच		दिल्ली	५५१
०३ अस्सू २०११ बिक्रमी लछमण सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह		दिल्ली	५५५
०४ अस्सू २०११ बिक्रमी पं: गोस्वामी गनेशदत्त नाल बचन बिरला मन्दर दिल्ली			५६१
०४ अस्सू २०११ बिक्रमी रकाब गंज गुरदवारा		दिल्ली	५६३
०४ अस्सू २०११ बिक्रमी राशट्रपति भवन डा राजिंदर प्रसाद		दिल्ली	५६३

3
०४

०४ अस्सू २०११ बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	दिल्ली	५६३
०५ अस्सू २०११ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे सीस ते मोर दे पंखां दा मुकट रक्ख के	दिल्ली गुड़गाउँ विच्कार	५६८
०५ अस्सू २०११ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	५६८
०६ अस्सू २०११ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	५८१
०७ अस्सू २०११ बिक्रमी	५ शब्द लिखके महिता जी नूं दिते	दयाल बाग	५८३
०७ अस्सू २०११ बिक्रमी	महिता जी नाल शब्द दुआरा बचन		५८४
०७ अस्सू २०११ बिक्रमी	बांके बिहारी मन्दर विच	बिन्दराबन	५८७
०८ अस्सू २०११ बिक्रमी	बिशन सिँघ दे नवित	दिल्ली रेलवे सटेशन	५८८
०८ अस्सू २०११ बिक्रमी	चंनण सिँघ दे गृह	मोदी नगर	५८८
०६ अस्सू २०११ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	५८८
१० अस्सू २०११ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह महिता जी नूं आगरे शब्द भेजया		५६३
१० अस्सू २०११ बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी	६००
१८ अस्सू २०११ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल अमृतसर	६०५
११ कत्तक २०११ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल अमृतसर	६०६
११ कत्तक २०११ बिक्रमी	गुरचरन सिँघ नूं तीजी वार शब्द भेजया		६१४
१२ कत्तक २०११ बिक्रमी	आतमा सिँघ दे गृह	मलूवाल अमृतसर	६१६
१४ कत्तक २०११ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे अमृतसर	६२०
१६ कत्तक २०११ बिक्रमी	जगदीश सिँघ दे जोती जोत समाण दे नवित		६२१
२१ कत्तक २०११ बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल अमृतसर	६३०
२७ कत्तक २०११ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे अमृतसर	६३७
२८ कत्तक २०११ बिक्रमी	बेबे वीरो दे अन्तम समें	बुग्गे अमृतसर	६४३

4 ०४

०१ मग्घर २०११ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६५५
१६ मग्घर २०११ बिक्रमी माता रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६६५
१६ मग्घर २०११ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह	भलाईपुर	अमृतसर	६७०
१६ मग्घर २०११ बिक्रमी सतिगुर प्रताप सिँघ नूं शब्द भेजया अमृतसर			६७१
२० मग्घर २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	६७६
२१ मग्घर २०११ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह	पट्टी	अमृतसर	६७७
२२ मग्घर २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	६८१
पहली पोह २०११ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	६८५
०५ पोह २०११ बिक्रमी जगदीश दी याद विच दरबार दी नींह रक्खण समें उस दीआं हड्डीआं ते भसम नींह विच पाई गई			६८७
०५ पोह २०११ बिक्रमी महिता जी नूं दयाल बाग शब्द भेजया	जेठूवाल	अमृतसर	६६५
०५ पोह २०११ बिक्रमी गुरचरन सिँघ नूं बिआस शब्द भेजया		अमृतसर	६६६
०५ पोह २०११ बिक्रमी सतिगुर प्रताप सिँघ नामधारी नूं शब्द भेजया	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
०५ पोह २०११ बिक्रमी राशट्रपति राजिंदर प्रशाद नूं	दिल्ली शब्द भेजया		६६८
०५ पोह २०११ बिक्रमी जवाहर लाल नहिरू नूं	दिल्ली शब्द भेजया		७००
०५ पोह २०११ बिक्रमी राणा संगरूर नूं शब्द भेजया		अमृतसर	७०१
०५ पोह २०११ बिक्रमी महाराजा पटिआला नूं शब्द भेजया		अमृतसर	७०२
०५ पोह २०११ बिक्रमी फरीदकोट महाराजे नूं शब्द भेजया		अमृतसर	७०२
०५ पोह २०११ बिक्रमी कपूरथला महाराजे नूं शब्द भेजया		अमृतसर	७०३
०५ पोह २०११ बिक्रमी बाबा मेहर सिँघ जलंधर नूं शब्द भेजया		अमृतसर	७०३

5
०४

०५ पोह २०११ बिक्रमी	संत लाभ सिंघ नूं सैदपुर शब्द भेजया		अमृतसर	७०४
०५ पोह २०११ बिक्रमी	गुरबखश सिंघ अडीटर प्रीतलड़ी नूं शब्द भेजया			७०४
०८ पोह २०११ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७०५
०६ पोह २०११ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७११
२१ पोह २०११ बिक्रमी	माता रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७१६
२५ पोह २०११ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	७२४
२६ पोह २०११ बिक्रमी	दरबार दे संपूरन होण ते जगदीश सिंघ दी याद विच	जेठूवाल	अमृतसर	७३०
२८ पोह २०११ बिक्रमी	बखशीश सिंघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	७७५
२६ पोह २०११ बिक्रमी	करनैल सिंघ दे गृह	कादराबाद	गुरदासपुर	७८६
३० पोह २०११ बिक्रमी	प्रेम सिंघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	७६७
पहली माघ २०११ बिक्रमी	प्रेम सिंघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	८०६
०२ माघ २०११ बिक्रमी	प्रेम सिंघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	८२४
०३ माघ २०११ बिक्रमी	प्रिथीपाल सिंघ	तरनतारन	अमृतसर	८२५
०३ माघ २०११ बिक्रमी	हरनाम सिंघ	पंडोरी	अमृतसर	८२७
०३ माघ २०११ बिक्रमी	मस्सा सिंघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	८२६
०५ माघ २०११ बिक्रमी	बूड़ सिंघ दे गृह	बरनाला	अमृतसर	८३६
१० माघ २०११ बिक्रमी	सूरत सिंघ दे गृह	बुग्गे	अमृतसर	८५०
११ माघ २०११ बिक्रमी	कांशी राम दे गृह	सनईआ	गुरदासपुर	८५०
२१ माघ २०११ बिक्रमी	संत लाभ सिंघ	सैदपुर	अमृतसर	८५१
०१ फग्गण २०११ बिक्रमी	हरि भगत दुवार	जेठूवाल	अमृतसर	८७२
११ फग्गण २०११ बिक्रमी	सवामी संतोश दर्शना अनंद	बटाला	गुरदासपुर	८७५

6 ०४

१३ फग्गण २०११ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह फैंजपुर गुरदासपुर ६००
१३ फग्गण २०११ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ लुधिआणा नूं शब्द भेजया ६०७

7
०४
7
०४

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

१ ०४

✻ ६ चेत २०११ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह दिल्ली ✻

हउमे रोग जगत दुखदाई। सृष्ट सबाई एका ताल काल दुहाई। कोई ना पावे आपणी सार, दर दर पाउँदे फिरन दुहाई। ना कोई जाणे नर नार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उलटी मति सृष्ट रखाई। उलटी मति जगत जहान। छुटया तीर रसन कमान। ना कोई झल्ले जीव कलिजुग नादान। ना कोई फले फुल्ले, बेमुख जीव फल ना लग्गे काया डाहण। दरगहि साची ना पाए कोई मुल्ले, धर्म राए देवे अन्त सजान। अग्न लग्गी रहे काया झूठे कुले, ना कोई सके पछाण। अन्तिम अन्त बेमुख जूठे झूठे भुल्ले, आई हार सर्ब जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां करे आप पछाण। बेमुख मूर्ख मुग्ध अञ्याणयां। भुल्लया इक्क सच्चा हरि भगवानया। ना खुल्या दर चुक्कया डर, ना मिल्या नाम निधानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मिटाए आवण जाणया। आवण जावण दए मिटा। साचे रहे अन्तिम कलि गुरमुख साची भाल, ना कराए कोई वल छल, जाओ बलि बलि, देवे सच्चा नाम होए सहाए बेमुखां लाहे खल्ल, वेला अन्त ना जाए टल देवे हरि सज़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट वारो वार दए मिटा। चार कुन्ट चार दिवार। वारो वारी होण ख्वार। प्रभ अबिनाशी मारे डाहढी मार। कलिजुग जीवां दोहीं हथ्थीं दईं हुलार। साची वंडा आपे करदा आया ना किया कोई उधार। विच नव खण्डां जोत हरि जी धरदा आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे सार। नौ खण्ड नौ दर। हरि जी दिसे ना किसे घर। चारों कुन्ट आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप नुहाए आत्म साचे सर। गुरमुख साचे हरि पछाण। प्रगट होए जोत सरूपी हरि भगवान। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी ना भुल्ल नादान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख आप लिखाए, भरम भुलेखा दूर

कराए, गुरमुख साचे बलि बलि जान। कलिजुग कूड़ी रैण बेमुखां खाए वेले अन्त, बण गई भैण डैण। गुरमुख विरला बचे साचा संत, जिस तन शब्द पहनाए साचा गहिण। साचा दर हरि खुल्हाया, गुरमुख विरले लाहा लैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात जगाए गुरमुखां वखाए तीजे नैण। तीजा नैण नेत्र खोल्हे। प्रभ अबिनाशी आत्म बोले। बेमुखां रक्खे माया पड़दे ओहले। गुरमुखां उठाए बिठाए विच शब्द साचे डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची किरपा कर। देवे वर साचा हरि, आप रखाए आपणी चरन सरन, दर घर साचे साचे गोले। साचा गोला, तन पहनाए शब्द चोला। रंगे नाम रंगण हरि जगत अमोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कंडा हथ्थ उठाया पूरे तोल तोला। साचा कंडा हथ्थ उठाया। शब्द डण्डा इक्क रखाया। नौ खण्डां पाए वंडां ना सके कोई बचाए, चार कुन्ट दए हिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चण्डी चमकाए दए खपाया। चण्डी चमके चार कुन्ट, करे भेख हरि बनवारया। कलिजुग खेल करे अपर अपारया। सिँघ आसण डेरा लाए, मिटाए ठग चोर यारया। खुल्हड़े आपणे केस रखाए, धरत लिटाए सर्ब संसारया। कर कर वेस माझे देस जगत भुलाए, आउण देवे ना किसे विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारया। साचा भेख सिरजणहार दा। करे वेस गुरसिख प्रवेश, साधां संतां आप विचारदा। इक्को सच्चा नर नरेश, फड़ बाहों हरि जी तारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा पार कराए, मेल मिलावा हरि साचे कन्त प्यार दा। सतिजुग तेरी सच विचार। सिँघ आसण बैठा करे निरँकार। बेमुख डुब्बे वहन्दी धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, करे अवल्लड़ा भेस माझे देस ना कोई पाए सार नर नार । नर नारी होए अन्धे। मायाधारी पापी गन्दे। प्रभ अबिनाशी गल पाए सभ दे फंदे। सोहँ शब्द धुरदरगाही इक्क साची दात ल्याया, गुरमुखां आत्म तोड़े जंदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत जगाउणी, गुरमुख साचे संत जनां आप उठाए धुरदरगाही आपणे कंधे। आपणे कंधे लए उठा। साचा हरि जिथ्थे वसे, तीजे नेत्र दए दिखा। चुकाए जम का डर, नुहाए साचे सर, अमृत झिरना दए झिरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग सतिजुग पंचम् जेठ मेल मिलावा दए करा। कलिजुग सतिजुग दोवें भाई। करे खेल प्रभ अबिनाशी धुरदरगाही। साचा लेखा आप लिखाए, दोहां अड्डो अड्डी राहे पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग एका लगाए तेरे मस्तक छाही। झूठी छाही लग्गे दाग। चोरी यारी कलिजुग विच चली तेरी तृष्ना आग। साचा राह किसे हथ्थ ना आया, ना सोया गया कोई जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, सतिजुग साचे माण दवाया पहली माघ। सतिजुग साची बणत बणाई। साची दात प्रभ झोली पाई। चरन

प्रीती साचा नात, ना तुटे ना कोई तुड़ाई। मिटाए गुरमुखां अन्धेरी रात, एका जोत हरि जगाई। प्याए अमृत आत्म बूंद स्वांत, साची भिच्छया प्रभ झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर अवल्लड़ा भेस, सृष्ट सबाई आप भुलाई। सच भूमिका सच अस्थान है। जिथ्थे वसे हरि भगवान है। जोत जगाए आपणी आप महान है। गुरमुख साचे संत जना, देवे आप ब्रह्म ज्ञान है, बेमुख जूठे झूठे जीवां, आत्म रखाए झूठा माण ताण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई चलाया सोहँ तीर, रसना खिच कमान है। रसन तीर गया चल। सृष्ट सबाई जाए हल। कलिजुग वेला अन्तिम होया मिटदा जाए अज कल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर चलाए गुरसिख बहाए धाम अटल्ल। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। चारों कुन्ट होए ख्वारी। लाड़ी मौत मगर लगाई, देंदी जाए घर घर बहारी। पहली कूट हरि वखाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे सिक्दारी। शब्द सवार हरि सुल्तान। प्रभ अबिनाशी वाली दो जहान। मात जोत प्रगटाए शब्द रक्खे तीर कमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम निधान। नाम निधान नौ निध पान। गुरसिख साचे आत्म रस माण। शब्द तीर आत्म जाए विध, आप बणाए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान। वड बली बलवान विच संसार है। धरी जोत हरि निरँकार, पहली वार है। बेमुख मारे कर ख्वार, ना पावे कोई सार है। गुरमुखां देवे शब्द अधार, बहाए चरन सच्चे द्वार है। खोल्ले आत्म दर, देवे दरस अपार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई निगाहबान है। सृष्ट सबाई वेख विचारे, आत्म बैठ झाती मारे, तिन्नां लोआं पावे सारे, चौदां लोक प्रभ अबिनाशी रहे पुकारे, बेमुख जीव झूठे पढ़न शब्द सलोक। हरि जी साचा ना कोई विचारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे, सृष्ट सबाई छोटे बाले तेरे पिछे देवे झोक। छोटा बाला अग्गे लाया। सतिजुग साचा राह चलाया। एका पड़दा उप्पर पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी अनन्द साचा धाम आप सुहाया। हरि जोत इक्क अकार है। हरि जोत सृष्ट सबाई पसर पसार है। हरि जोत तिन्नां लोकां पावे सार है। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आई जामा धार है। हरि जोत हरि गुण जाण। हरि जोत हरि रंग पछाण। हरि जोत विच मात सच निशान। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि मात प्रगटाए वड बली बलवान। हरि जोत हरि निरँकार। हरि जोत विच मात जोत सरूपी ल्या अवतार। हरि जोत घर साचे वसे, करे सच अकार। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला कलिजुग पावे सार। हरि जोत हरि निराली। हरि जोत चारों कुन्ट दिसे, कोई दर घर सर ना खाली। हरि जोत नर नरायण, सृष्ट सबाई साचा माली। हरि जोत,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात प्रगटाई कलिजुग तेरी अन्त कराए चाली। हरि जोत हरि का वास। हरि जोत सरूपी विच मात पावे रास। हरि जोत अन्तिम अन्त कलि बेमुखां करे नास। हरि जोत गुरमुख संत जनां होई रहे दासन दास। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम आया, सृष्ट सबाई आप कराए नास। हरि जोत हरि की धार। हरि जोत गुरमुख साचे कर विचार। हरि जोत बेमुखां रोड़े वहन्दी धार। हरि जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जगाए करे रुशनाए, कलिजुग भुल्ले जीव गंवार। हरि जोत खेल अवल्लड़ा। हरि जोत हरि एका एक वसे धाम इकल्लड़ा। हरि जोत गुरमुख साचे संत जनां, आप फड़ाए साचा पलड़ा। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म दर द्वार अग्गे खलड़ा। हरि जोत हरि निराधार। हरि जोत करे कराए साची कार। हरि जोत मात आए जाए वारो वार। हरि जोत जोत सरूपी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए नाम रखाए कल्गीधर अवतार। कल्गीधर हरि जगदीश। सृष्ट सबाई जाए पीस। कलिजुग वेला अन्त चुकाए, पंचम् जेठ नेड़े आए, भेव खुल्हाए बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर चलाए, मन्दिर मसीतां सारे ढाहे, ना कोई देवे बांग विच मसीत। मन्दिर मसीतां जाणे ढेह। सृष्ट सबाई मरना खेह खेह। प्रभ अबिनाशी साचे संत जन सिर तेरे हथ्थ रक्खै। कोई ना दीसे राजा राणा, तख्तों लाहे उचे दर ना कोई बहै। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत प्रगटाई, माझे देस वज्जी वधाई, , आप चलाए साची नै। साची नईआ आप चलाए। चार कुन्ट चार वरन इक्क गोत बणाए। सृष्ट सबाई भैणां भईआ, आपणे दर बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची नींह रखाई, कलिजुग जूठी झूठी दोहीं हथ्थीं दए पुटाए। चार वरन हरि दए जणाई। जात पात ऊँच नीच लेखा कोई नाही। राजा राणा शाह सुल्ताना ग़रीब निमाणा एका थान बहाई। गुरमुख साचे संत जनां शब्द पड़दा उप्पर पावे, देवे ठंडी छाँई। रसना कहण धन्न धन्न , गावण चांईं चांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी अन्दर बैठा गुरमुख साचे संत जना पार करावे फड़ के दोवें बाहीं। आओ सरन सच्ची सरकार। बाहों पकड़ फड़ फड़ प्रभ देवे तार। बेमुखां डोबे वहन्दी धार। कलिजुग सतिजुग दोवें दर खलोते पाए आपणी सार। कलिजुग झूठा दए दुहाया, सतिजुग साचा मात लगाया, पहली माघी जन्म दवाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी भुल्ली फिरदी ना कोई पावे सार। मायाधारी होए बेहाले। जूठे झूठे फल लग्गे डाले। गुरमुख एका शब्द तन पहनाए, देवे शब्द दोषाले। आत्म झूठा जन कढाए, साचा नाम विच मन वसाए, तोड़े जगत जंज़ाले। एका राग कन्न सुणाए, साची धुन इक्क उपजाए, दीपक जोती आपे बाले।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत आप जगाई करे रुशनाई, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम अन्त कलि आपे भाले। कलिजुग सतिजुग आए सच दरबार। साचे आसण हरि जी बैठा, दोहां सुणे पुकार। कलिजुग रोवे धाहां मारे, लक्ख चुरासी होई ख्वारी कोई ना पावे सार। औखी होई पंड चुक्कणी भारी। लाह सिर मेरे तों भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाए धरत मात सुणे तेरी पुकार। कलिजुग साचे साचा कर्म कमाया। वड वड ज्ञानीआं फड़ फड़ बाहों झूठे धन्दे लाया। करन गुर घर सच्चे बेईमानीआं, झूठा टिक्का मस्तक लाया। कलिजुग तेरीआं आईआं अन्त निशानीआं, ना सके किसे कोई छुडाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात जामा पाया। सतिजुग सोया उठया जाग। प्रभ अबिनाशी किरपा कर दोहीं हथ्थीं फड़ मेरी वाग। मातलोक जन्म धर, गुरसिक्खां धोवां अन्तिम दाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द डोर बंधाए, ना तुट्टे ना छुट्टे साचा ताग। शब्द डोरी देवे बन्न। गुरसिक्खां उठाए आपणे कंध। आत्म साची शब्द जोत तनक लगाए, भाण्डा भरम देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दात झोली पाए, कलिजुग बेमुख कोई ना लाए संनृ। कलिजुग झूठा जीव गंवारी। मानस जन्म गया हारी। फिर ना आवे दूजी वारी। गुरसिख साचे सदा सदा बलिहारी। चरन सरन गुर जो आए करे निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर दोए बहाए, लेख कराए वारो वारी। गुरमुखां हरि देवे माण। सोहँ शब्द सच्चा निशान। साचे तन आप वसाए, टिकाए नाम निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आन। करन करावणहार आप दातारया। आवण जाण जाण आवण खेल अपर अपारया। अग्न मेघ बरसे सवण, सृष्ट सबाई करे ख्वारया। जोत सरूपी धारे भेख जिउँ बल दुआरे बावन, आपणे भाणे हरि आप समा रिहा। कलिजुग अन्त मिटाए जिउँ रामा रावण, तोड़े सर्ब हंकारया। गुरमुखां होवे साचा ज़ामन, देवे नाम अपर अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक वजाए डंक, चार कुन्ट आप सुणा रिहा। शब्द डंक आप वजाए। राउ रंक रिहा सुणाए। एका अंक शब्द जणाए। द्वार बंक गुरसिख तेरी आत्म आप सुहाए। आप तराए जिउँ भगत जनक, आपणे लड़ बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत झेड़ा, दए उलटा गेड़ा, आपे आप मिटाए। आप मिटाए जगत झेड़ा। ना कोई दिसे नगर खेड़ा। धरत मात तेरा खुल्ह्ला कराए प्रभ अबिनाशी साचा वेहड़ा। एका साची तनक लगाए, शब्द सरूपी देवे गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाई, कलिजुग अन्तिम आ गया नेड़ा। कलिजुग अन्तिम रिहा बीत। बेमुख जीआं झूठी होई नीत। एका बख्शी हरि साचे, साची चरन प्रीत। गुरमुख विरला संत जन, मानस जन्म जाए जग जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए सतिजुग

साचे तेरी साची रीत। सतिजुग साचे तेरी साची रीत। अन्तिम कलिजुग आप मिटाए, मन्दिर अन्दर ना कोई दिसे मसीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भूमिका बैठ अस्थान, परखे सभ दी नीत। आप मिटाए झूठा भेख। सृष्ट सबाई हरि जी वेख। दिस कोई ना पाए औलीआ पीर शेख़। ना हदीस कोई किसे पढ़ाए, ना दिसे कोई मुसायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका साचा नायक। शेख़ मुसायक मिटाए पीर। पहली कुन्ट आप कराए अन्त वहीर। दस्तगीर शाह हकीर, ना कोई होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत रिहा बणाए। साची बणत हरि बणाए। पंचम् जेठ लिख्त लिखाए। साची छेड़ आप छिड़ाए। दस्से सच धाम नगर खेड़ा, जिथ्थे पहलों अग्न लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नबेड़ा आपे आप कराए। आप मिटाए दीन इस्लाम। पूर कराए आपणा काम। सृष्ट सबाई एका नाम जपाए प्याए साचा जाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सोहँ सच्चा नाम। सोहँ नाम जगत वपार। आप कराए हरि दातार। सृष्ट सबाई रिहा कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि हरि नर सच्चा अवतार। सुरत शब्द शब्द ज्ञान। आत्म घर ना करे कोई ध्यान। जिथ्थे वसे साचा हरि, ना आयण दर पंज शैतान। नुहाउँदा रहे साचे सर, अमृत झिरना झिराए आप महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि सच्चा मेहरवान। आत्म सर साचा सीर। गुरसिख पी कढ्ढे हउमे पीड़। सदा सदा सदा जग जी, दूई द्वैती पड़दा चीर। आत्म बीज साचा बी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे साचा नीर। अमृत नीर नीर निराला। गुरमुखां आत्म जोती दीपक जगाए, किरपा करे आप गोपाला। साचा मन्दिर तन सुहाए, जिउँ दीपक गगन थाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द गुरसिख तेरे तन पहनाए साची माला। साची माला तन शृंगार। गुरमुख साचे कर विचार। माझा देस होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा मगर लगाए मारे वारो वार। माझा देस होए वैराना। प्रभ अबिनाशी आप बन्ह्राए हथ्थीं गाना। अमृतसर साचा घर, रामदास सच्चा वास, अन्तिम कलि थेह कराना। कोए ना पाए झूठी रास, ना कोई खाए मदिरा मास, साचा हरि बेमुखां ना कलि पछाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हरि निरँकार, आप मिटाए जूठा झूठा जगत निशाना। जूठा झूठा मिटे निशान। ना कोई दिसे बेईमान। मदिरा मासी पाए गल जम की फाँसी, देवे सज़ा आप वाली दो जहान। ना करे कोई बन्द खलासी, दर घर साचे सच सरोवर धीआं भैणा करन हासी, जूठे झूठे पंडत पांधे काशी वेद विचारन, भेख धारे माझे देस श्री भगवान। माझे देस उडे धूढ़। बेमुखां हरि पाए जूड़। गुरसिक्खां आत्म रंग चढ़ाए गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप कराए, शब्द वेलणे पीड़े साचे बूड़। माझे देस

किस्मत माढ़ी। वढ्ढुणी मिले ना किसे हाढ़ी। हरि जी साचा दर खलोता आपे वेखे, चारों तरफ दिसे उजाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाया, फड़ के बाहों राहे पाया, मगर लगाई मौत लाड़ी। मौत लाड़ी राहे पाया। सत्तर लक्ख दए चढ़ाया। बेमुख जीव सुंञे तन मल्ली बैठे, गुरदुआरे आत्म सर्ब हंकारया। रामदास तेरा साचा सर साचा घर, जिथ्थे बेमुख जीव खांदे जो मदिरा मास विकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतार करे ब्यासों पारे। गुरदुआरे आयण छड्ड। घर घर दिसण पए हड्ड। दोहीं हथ्थीं रिहा वढ्ढ। आप डुबाए ब्यासा डूंघी खड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लडाए गुरमुखां साचे लड। ब्यासा वगे साची धार। बेमुख वहन्दे जाण कोई ना पावे सार। गुरमुख साचे संत जन दर घर साचे बहिंदे जाण, निहकलंक दरस दिखाए प्रगट जोत कल्गीधर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा चरन आप उठाए, पिण्ड भंडाल आण टिकाए, संत मनी सिँघ तेरी आपे पाए सार। पार ब्यासा चरन छुहाए। गुरमुख साचे संग रलाए। एका चपू नाम लगाए। शब्द नईआ लए चढ़ाए। भैणां भईआ गुर संगत दए बणाए। जात पात ना कोई रक्खे, पिता पूत आप बण जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार ब्यासों आपणा डेरा आप लाए। पार ब्यासों डेरा ला। राजे राणे लए जगा। जोत सरूपी दरस दिखा। बाहों पकड़ आपणी सरन लए लगा। माण ताण आन शान, सभ दए गंवा। वडा इक्क हरि सच्चा शाह सुल्तान, आपणी चरनी लए बहा। शब्द सरूपी गल विच पाउँदा जाए फाह। कोई ना करे अग्गों नाह। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे संत जनां, देवे आपणी ठंडी छाँ। राजे राणे लए जगाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। पहरेदार ना कोई उठाए। सुत्या फड़ हरि अग्गे खड़ भरम चुकाए। जे कोई मंगे सच्चा सुखआसण, नाम चोली तन पहनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर गुरसिक्खां इच्छया पूर कराए। राजा राणा आप उठाए। शब्द बबाणा इक्क रखाए। वञ्झ मुहाणा आपणे हथ्थ रखाए। शब्द निशाना आत्म दर साचे घर झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत प्रगटाई आओ चल सरनाई, आत्म तृखा बुझाओ दरस पाए। उठो उठ बल धारो। प्रभ अबिनाशी सच विचारो। क्यों सुत्ते पैर पसारो। मानस जन्म आई हारो। कोई ना पावे साची सारो। घर घर वेखो पैंदी किवें मारो। मात पित ना कोई संभाले, नारीआं छड्डुण सच भतारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल आप वरताए, आपणा रंग करे आप वरतारो। राजे राणे सुरत संभाल। प्रभ अबिनाशी लैणा भाल। मानस जन्म ना लैणा गाल। मौत राणी पाउँदी जाए गल विच जाल। कोई ना छुट्टे जीव प्राणी, आपणा तणदी जाए ताण। हाणीआं छड्डुणे पैणे हाणी, ना मिले किसे पाणी ना रहे किसे शान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका

७
०४

शब्द तीर चलाए, चारों कुन्ट वहीर कराए, सुत्ता कोए ना रहे बिरध बाल जवान। बिरध बाल जवाना शब्द तीर सच्चा इक्क निशाना। अन्तिम कलि आप चलाए, सिध्धा रखाए आप निशाना। साध संत जीव जन्त पीर फकीर ना सके कोई उठाए, तोड़े माण सर्ब अभिमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, सृष्ट सबाई जाणी जाणा। राजे राणे चरन लगाए। आपणा चरन हरि उठाए। मस्तूआणे जा छुहाए। साची जोत दर घर साचे डगमगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन साची सरन एका थान बहाए। चार वरन एका थां। एका पित एका मां। चार वरन एका देवे शब्द सरूपी ठंडी छाँ। चार वरन एका राह आप दिखाए फड़ के बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा साचा धाम सुहाए। राणा संगरूर सेव कमाए। साचे लेखे देवे लाए। राणा संगरूर आए सरनाई। आपणी भुल्ल लए बख्शाई। जोती जोत सरूप हरि, साचे तोल रिहा तुलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रलाए गुर संगत मेल मिलाए फड़ के दोवें बाहीं। गुर संगत हरि संग रला। साचा हुक्म दए सुणा। अग्गे हरि जी लए ला। जमन किनारे डेरा ला। वाली हिन्द लए जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखा। वाली हिन्द हरि उठाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। आत्म तृष्ना सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कान्हा कृष्ना आत्म दर दुआरे नज़री आए। वाली हिन्द शब्द जणाई। उठे उठ उठ रोवे, ना दिसे साचा माही। आत्म बीज कवण बोवे, कोई हाली दिसे नाहीं । झूठी नींद जो जन सोवे, अन्त पछोताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप जणाए, जोत सरूपी दरस दिखाए, भरम भुलेखा कोई रक्खे नाहीं। आपणा दरस दए दिखाल। आत्म करे मालो माल। माया रूपी तोड़े जगत जंज़ाल। गुरमुख साचा प्रभ साचा लोड़े, लाए फल सच्चे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचे संत जन लए सुरत संभाल। आप संभाले सभनीं थाँईं। मिलण आउँदा चांईं चांईं। गुरमुख साचा प्रभ दर साचे माणे ठंडी छाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात जगाई , दूसर कोई दिसे नाहीं। दूसर कोई ना दिसे होर। घर घर बैठे चारों तरफ ठग चोर। आत्म अन्धी आपणे धन्दे रही तोर। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ सोहँ शब्द आत्म देवे बानी, नेड़े कोई ना आए हराम खोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए मोर तोर। जिस किया अकार जन्म दवाया। आपे पाए सार हरि रघुराया। पूर्ब कर्म लए विचार, मात कुक्ख सुफल कराया। आप बंधाए साची धार, दु:ख रोग सर्ब मिटाया। फले फुल्ले विच संसार, चिन्ता रोग हरि गंवाया। हरि दर कोए ना लग्गे मुल्ले, मानस जन्म लेखे लए लाया। कलिजुग जीव सारे भुल्ले, हरि जी हथ्थ किसे ना आया। जूठे झूठे फले फुल्ले अन्तिम हुल्ले, फल किसे

डाहण नज़र ना आया। गुरसिख तेरे भाग लगाया कुले, साचा देवे वर हरि रघुराया। पी पी अमृत आत्म तृष्ना भुक्ख गवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीबी अमरजीत नाम रखाया, छोटा बाला एहदे पिच्छे लाया।

✻ ७ चेत २०११ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✻

चरन लगण औखी घाटी। एथे खुल्हदी बज़र कपाटी। साचा मुल पैंदा काया झूठी माटी। दर घर साचे सच्ची लग्गी रहे हाटी। गुरमुख विरला चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, खोल्हे केहड़ा सच्ची ताकी। सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी वेखे खेल जिउँ बाजीगर नाटी। गुरमुख साचे संत जन साचा लाहा गुर दर लैण, अमृत रस रसना रहे चाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ धागा हथ्थ विच फड़या आपणी हथ्थीं सीवें गुरमुखां काया चोली पाटी। सोहँ धागा हथ्थ विच फड़या। गुरमुखां दिसे अन्दर वड़या। चुप्प चुपीता रहे दड़या। आपे जाणे जाण पछाणे, जिस गुरसिख तेरा घाड़न घड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बन्न्हे आपणे साचे लड़या। सच्चा लड़ सच्चा दामन। दरगहि साची बणे जामन। गुरसिख तेरे पूर कराए, विच मात सारे कामन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेख। गुरसिक्खां अट्ठे पहर लिखदा रहे लेख। आपणा भेव ना किसे जणाए ना जाणे कोई रूप रेख। गुरमुख साचे विच समाए, गुरसिख नेत्र लैणा पेख। नेत्र तीजा देवे खोल्ह। पंजां नाल ना करना पए घोल। सोहँ शब्द अट्ठे पहर वज्जदा रहे ढोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची रीत बणाई, चरन प्रीत इक्क रखाई, गुरसिक्खां विच रिहा मौल। गुरसिख गुर दर सच्चा राह। गुरसिख भुल्ले, गल विच पाए फाह। मदिरा मास मुख लगाए, दरगहि साची दए दुरकाए, ना मिले कोई थां। प्रभ अबिनाशी ना चरन बहाए, ना देवे कोई ठंडी छाँ। गुरसिख साचे संत जनां आपणी हथ्थीं सीर पिलाए, जिउँ बालक पिता मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जपाए सच्चा नां। गुरमुखां दे मति आप समझांयदा। एका शब्द हरि हरि दिसांयदा। आप निभावे चरन नत, ना मात कोई तुड़ांयदा। गुरसिख तेरी आत्म साचा वत्त, सोहँ बीज हरि बिजांयदा। रसना चरखा लैणा कत्त, साचे राहे हरि जी पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बाल अञ्याणयां, दे मति आप समझांयदा। गुरसिख आत्म वेख विचार। आउणा फेर सच्चे दरबार। एथे पैंदी शब्द मार। अट्ठे पहर हरि जी साचा मगर लग्गा, आप बंधावे साची धार। दीपक जोती गुरसिख जगे, जोत अपर अपार। आप बंधावे सोहँ शब्द साचे धागे, ना तुटे विच संसार। गुरमुख भुल्ले प्रभ पकड़े शाह रगे, ल्याए खिच चरन द्वार। ना दिसे किसे पिच्छा अग्गे, सृष्ट सबाई

६ ०४

रही झक्ख मार। जो जन गुर चरन सरन साची लग्गे, बाहों पकड़ कलि जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीआ जन्त आपे पाए सार। नाम निधान नर निरवैर है। गुर दर साचे घर, वरते कदे ना कहर है। मिलदा साचा वर, प्रभ अबिनाशी देवे कर कर आपणी मेहर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती आप जगाए, अट्ठे पहर करे रुशनाए, चुकाए मेर तेर है। मेर तेर जाए चुक्क। वेला नेड़े आया ढुक्क। कलिजुग जूठे झूठे जीव अन्तिम जाण सुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणी सरन बहाए, बेमुखां मुख पाए थुक्क। सुरत शब्द गुर ध्यान। सुरत शब्द नाम बबाण। सुरत शब्द देवे हरि भगवान। सुरत शब्द गुरमुखां मेल मिलान। सुरत शब्द आत्म जोती जगाए महान। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सुरत शब्द सहिज धुन। सुरत शब्द खुल्हे सुन्न। सुरत शब्द गुरसिक्खां देवे हरि साचा चुण। सुरत शब्द विच मात, गुरसिख साचा गुण। सुरत शब्द देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख विचार गुण अवगुण। सुरत शब्द सच सच्यारी। सुरत शब्द देवे नाम ख़मारी। सुरत शब्द हउमे कटे तन बिमारी। सुरत शब्द हरि देवे सच्ची उडारी। सुरत शब्द गुरसिक्खां उडाए, लै जाए तिन्नां लोआं बाहरी। सुरत शब्द आप दवाए, हरि नर सच्चा निरँकारी। सुरत शब्द साचे धाम मेल मिलाए, साचे कन्त हरि संत बनवारी। सुरत शब्द गुरमुखां हरि साचा देवे, जो जन आए चरन सरन निमस्कारी। सुरत शब्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे किरपा कर अपर अपारी। सुरत शब्द सहिज सुख। सुरत शब्द उतरे भुक्ख। सुरत शब्द मात गर्भ ना होए उलटा रुख। सुरत शब्द लक्ख चुरासी लेखे लाए मिटाए तृष्ना भुक्ख। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए माता कुक्ख। सुरत शब्द भगत निशाना। सुरत शब्द आत्म देवे हरि, नाम सच्चा ब्रह्म ज्ञाना। सुरत शब्द देवे हरि किरपा कर, गुरसिख बणाए चतुर सुजाना। सुरत शब्द चुकाए जम का डर, वसाए साचे घर, मेल मिलाए हरि भगवाना। सुरत शब्द देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चढ़ाए एका शब्द सच्चे बबाणा। हरि खुल्हड़े केस भेख निराला। कलिजुग अन्तिम वेस हरि गोपाला। भाग लग्गा माझे देस, गुरसिक्खां नेत्र लैणा पेख, ना लैणा विच कोई दलाला। आप मिटाए औलीए पीर शेख़, बेमुखां मुख करे काला। गुरसिक्खां मिटाए बिधना लिखी रेख, देवे शब्द नाम धन करे माल माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार देवे वर, ना गुरसिख होए कदे कंगाला। गुरसिक्खां देवे आत्म सच्चा नाम धन। आप मिटाए दुक्खां भुक्खां, आत्म तृखा मिटाए कढाए झूठा जन। कलिजुग उतारे माया रूपी झूठी विखा, सृष्ट सबाई छाण पुण। साचा लेख हरि जी लिखा, गुरसिक्खां विचार गुण अवगुण। सोहँ शब्द तीर तिखा, ना

जाणे कोई रिख मुन। दर आयां पाए साची भिच्छा, आत्म खुल्हाए मुन सुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत इक्क जगाए, गुरसिख तेरी आत्म इक्क उपजाए शब्द धुन। शब्द धुन उपजाए धुन्कार। आप खुल्हाए दस्म दुआर। जगे जोत अगम्म अपार। एका जोती गुरसिख जगाई तेरी आत्म सोती, सोहँ फुंकारा मार। ना कोई वरन ना कोई गोती। हरि जी सच्चा माणक मोती, दुरमति मैल जिस दर धोती, सृष्ट सबाई घर घर बैठी रोती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पाए सर्ब सार। सृष्ट सबाई रही रो। कलिजुग जीवां साचा नाता तुट्टा मोह। अन्तिम वेला कलिजुग आया, मौत डैण सभ वाल देवे खोह। गुरसिक्खां अग्गे हरि सोहँ शब्द रखाया। तत्ती वा ना लग्गे को। फड़ फड़ बाहों राहे पाया, सतिजुग साचा राह दिखाया, साधां संतां संग रलाया, एका नाता चरन रखाया, दूसर सके ना कोई छोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, साचा बीज गुर आत्म रिहा बो। साचा बीज सच बिजारा। गुरसिख तेरी आत्म कीनी वक्ख, बणाया इक्क सच्चा क्यारा। बेमुख जीवां लाउँदे भक्ख, कोई ना पावे सारा। प्रभ अबिनाशी फड़ फड़ कीने वख, दर बहिण ना देवे मदिरा मासी दुष्ट दुराचारा। जिन्हां पल्ले बन्न्हे लक्ख, अन्तिम वेला नेड़े आया वेखो किवें पैंदी मारा। चारों तरफ खाली दिसण सक्ख, किसे कुछ ना आए हथ्थ, भैणां छड्डुण भाई नारां छड्डुण भतारां। महाराज शेर

११ सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण बैठा एका शब्द तीर चलाए, चार कुन्ट वहीर कराए, साचा सीर किसे हथ्थ ना आए, ११

०४ ना कोई पावे किसे सारा। तीर निराला गया छुट। सतिजुग पोह गई फुट्ट। कलिजुग नाता गया तुट्ट। जूठा झूठा इक्क ०४

प्याया हरि जी माया रूपी घुट्ट। अट्ठे पहर खेल रचाए, गुरसिक्खां दी बणत बणाए, बेमुखां जड़्ह रिहा पुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रचना आप रचाई, नौ खण्ड पृथ्मी आप भवाए दोहीं पासीं घुट्ट। नौ खण्ड पृथ्मी तणया ताण। सत्तां दीपां करे पछाण। जोत सरूपी मार उडान। ना कोई छड्डे राज राजान। मूंह दे भार डिग्गे, वडे वडे शाह सुल्तान। आप गिराए रण भूमी सुत्ते नौजवान। लक्ख चुरासी आप बणाई जूठे झूठे ढग्गे, लाए धर्म राए दे अग्गे, बन्दीखाने सर्ब खपाण। गुरसिख तेरी आत्म साची जोत जगे, देवे हरि सच्चा भगवान, सृष्ट सबाई एका अग्न लग्गे, ना कोई सके हरि पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी सृष्ट सबाई करे दासी, जन भगतां करे बन्द खलासी, दर घर साचे आप कराए जाण पछाण। हड्ड हड्ड जोड़ जोड़, अट्ठे पहर रहे तोड़। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़। तेरी पै गई लोड़। काया लग्गा झूठा कोढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि इक्क रिहा तोड़ विछोड़। काया दुःख अग्न पाया, कोई ना लए सौखा साह। गलों कट हरि जी फाह। आपणी दया दे कमा। तन मन बद्धा दे छुडा। आत्म जोती

दीपक जगा। चिन्ता सोग हरि गंवा। दरस अमोघ दे दिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नईआ दे चढ़ा। अमृत धार सहिज सुखदाई है। काया रोग दए सर्ब गंवाई है। चिन्ता सोग ना रहे राई है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, अमृत बूंद मुख चुआई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीआं जन्तां तेरे हथ्थ वड्याई है। रोग सोग देवे कट। आप मेटे लग्गे फट्ट। शब्द सरूपी उत्ते बन्ने साचा पट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची जोत जगाए, वसे घट घट। घट घट हरि वसेरा। दुक्खां दर्दां ढाहे डेरा। सोहँ शब्द रसना गाए, रोग सोग ना आए नेड़ा। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, करे सच नबेड़ा। काया अन्दर साचे मन्दिर तोड़े जन्दर, मुकाए झूठा झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी साचे हरी, आप वसाए काया नगर खेड़ा। बहत्तर नाड़ी दया कमाई। तिन्न सौ सट्ठ हड्डीआं काया विच टिकाई। आपे करे वखो वक्ख, आपे देवे जोड़ जुड़ाई। ना कोई लैंदा हरि जी वढ्ढी, सोहँ देवे नाम सच्ची वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे एका देवे माण सच्ची सरनाई। आप मिटाए आत्म घेर। फेर ना होए दूजी वेर। दुक्खां ढाहे झूठा ढेर। आप भुलाए कर कर हेर फेर । जोती जोत सरूप हरि, अमृत साचा सीर पिलाए करे आपणी मेहर। करे मेहर हरि भगवान। देवे जीआ साचा दान। अमृत घुट्ट साचा पीआ। दुःख दर्द सभ मिट जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
१२ ०४ भगवान, किरपा करे वाली दो जहान। गुरसिक्खां करे हरि प्यार, रिहा तार है। साचा मिल्या हरि भतार, सुखी होई १२ ०४
गुरसिख नार है। दर घर साचे पावे सार, मानस जन्म रिहा संवार है। कलिजुग अन्त ना आए हार, लक्ख चुरासी गेड़ निवार है। कलिजुग तन लग्गी लाहे छार, अमृत प्याए सच्ची धार है। गुरसिक्खां अमृत मुख चुआए प्याए वारो वार, खोल्ले दस्म दुआर है। साची जोत करे रुशनाए, मिटाए अन्ध अंध्यार है। बेमुख जीव करन हाए हाए, ना मिले कोए थाएँ, भुल्ले फिरन सभे गंवार है। दर घर साचे मिले नथावयाँ थाएँ, बहाए ठंडी छाँए। पूर्ब कर्म रिहा विचार है। धन्न धन्न जणेंदी माए, गुरमुख साचे संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग रंगाए, देवे नाम शब्द सच्ची खुमार है। नाम खुमारी सच अटारी, ना कोई दिसे चार द्वारी। एका एक हरि जी वसे, जगाए जोत अपर अपारी। बेमुखां आत्म अन्धेर होई जिउँ चन्द मस्से, काया होई रैण अंध्यारी। गुरमुख साचा दर घर साचे सदा सद वसे, मिल्या हरि सच्चा भतारी। फड़ फड़ बाहों वसाए घर, हरि नर निरँकारी। हरि घर सच्चा टिकाणा। लै जाए चढ़ाए शब्द बबाणा। ओथे कोए ना जाए, गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी साचे धाम बहाए, अमृत साचा जाम प्याए, देवे नाम निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब गुणवन्त हरि भगवन्त, जीव जन्त साध संत, आदि अन्त देंदा आया माणा। माण ताण हरि रखांयदा।

शब्द बबाण हरि चढ़ांयदा। इक्क उडान हरि करांयदा। सच अस्थान गुरमुख साचे आप वखांयदा। ओथे छुट्टे पीण खाण,
अमृत जाम इक्क प्यांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क इकल्लड़ा वसे धाम अवल्लड़ा, गुरमुख साचे हिरदे वाचे,
हरि जी तेरे दर घर आत्म नाचे, ना भेव कोई रखांयदा। ना भेव कोई रखाया। माया पर्दा हरि जी लाहया। जोत सरूपी
प्रगट जोत, दरस अमोघ दिखाया। ना होए कदे विजोग, सच संजोग धुरदरगाही साचा लेख आप लिखाया। साचा रस
लैणा भोग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत धार गुरसिक्खां पा सार देवे मुख चुआया। अमृत धार जगत निराली।
गुरसिक्खां आत्म दीपक बाली। चढ़दी जाए दिनों दिन गुरसिख तेरे मस्तक लाली। आउँदी जाए दर घर साचे, शरमाउँदे
जगे जोत भवानी। निहकलंक नरायण नर धरनी धर, साचा हरि देवे वर, किरपा कर चुक्के डर, नुहाए अमृत साचे सर,
देवे सच्ची नाम निशानी। दीआ नाम हरि धन्नवन्त। गुरसिख आए चल सरनाई, हरि घर साचे संत। बेमुखां हरि दए
दुरकाई, माया पाए बेअन्त। आपणा भेव रिहा छुपाई, ना मेल मिलावा किसे साचे कन्त। गुरमुखां बद्धा साचा दाअवा, प्रभ
अबिनाशी अग्गों मिलदा कर के लम्मीआं बावां, आण बाण जुगा जुगन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि जोत
१३ सरूपी समाए विच जीव जन्त। जीअ जन्त जोत अधारी। साधां संतां पाए सारी। आप बिठाए आपणे चरन द्वारी। गुरमुख १३
०४ साचे संत जनां अमृत साचा सीर प्याए, बज़र कपाटी चीर वखाए, एका नाम तीर लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०४
अन्तिम कलि आप मिटाए, संग मुहम्मद चार यारी। संग मुहम्मद चार यार। अन्तिम कलिजुग होण ख्वार। डुब्बदे जाण
वहन्दी धार। कुरान अञ्जील कोए ना सुणे पुकार। खाणी बाणी कलिजुग अन्तिम पछताउणी, वेले अन्त आई हार। पुरान
अठारां वेद चार पावे सार, होए ख्वार ना कोए बंधे धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द मात चलाए, तिन्नां
लोकां हरि दए जणाए, आप रखाए आपणी सच्ची धार। एका धार सच्ची रखांयदा। चार वरन साची सरन खोल्ले हरन
फरन किरपा करे धरनी धर, जो जन चरनी सीस निवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत सीर कढ्ढे हउमे
पीड़, गुरसिक्खां आत्म शांत करांयदा। आत्म शांत कराए सीना। हरि जी वडा दाना बीना। अमृत घुट्ट साचा पीणा। सदा
सद विच मात जग जीणा। सच दात हरि झोली पाए, गुरसिख तेरी डोली आपणी कंधीं आप उठाए, बिठाए विच शब्द
सच्चे बबाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अमृत धार कर प्यार पाई सार, हो त्यार धुरदरगाही आया दर
दरबार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृष्ना भुक्ख दए गंवाए। सच धाम सच द्वार, मातलोक आया नर हरि
हरि नर पहली वार। अचरज खेल आप कराया। जोत सरूपी भेख वटाया। किसे हिस्से ना हरि जी आया। एका आत्म

गुरसिख तेरी दिसे, दूसर नाही कोए थाँया। आप उतारे आत्म झूठी विसे, अमृत देवे जाम प्याया। गुरमुख साचे दर घर साचे नवायण सीसे, प्रभ साचा देवे सीस छत्र झुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे साचा सीर काया धीर, गुरमुखां मुख चवाया। गुर पूरा पूरी वड्याई है। गुर पूरा रसना भोग रिहा लगाई है। गुर पूरा सच्चा सूरा हाज़र हज़ूरा, ना रक्खे भेव राई है। बेमुखां दिसे दूरा, रिहा मुख छुपाई है। सर्बकला नर हरि हरि नर भरपूरा, देवे शब्द सच्ची वड्याई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण सबाई गुर संगत रिहा बणत बणाई है। भागां भरी भिन्नड़ी रैण। गुर संगत संग एका धाम वसे, वेखो सारे नैण। प्रगट जोत राह साचा दस्से, गुर संगत बणाए भाई भैण। बेमुख दर तों जायण नस्से, खाए माया डैण। माया राणी दर घर साचे खिड़ खिड़ हस्से, बेमुखां वहाए वहन्दे वहिण। झूठी फाही बेमुख जीव फसे, धर्म राए चुकाए लैण देण। आत्म तीर हरि जी कसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां बणे मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण। साक सज्जण सैण साचा मीत। अट्ठे पहर राखो चीत। गुरसिख साचे संत जना, ना डोले कदे नीत। साचा देवे नाम धना, काया करे ठंडी सीत। साचा शब्द सुणाए हरि कन्ना, इक्क सुहागी गीत। भाण्डा भरम हरि भन्ना, मानस जन्म जाणा जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत जगाए, सतिजुग साचा मात धराए, कलिजुग झूठा बाहर कढाए, आप चलाए साची रीत। साची रीत जगत चलाउणी। गुरमुखां लग्गी प्रीत तोड़ निभाउणी। आप कराए काया ठंडी सीत, शब्द वस्त विच टिकाउणी। ना किसे मन्दिर ना मसीत, उलटी हरि जी एका रक्खी रीत, गुरमुख आत्म एका धाम, एका शाम, हरया करे सुक्का चाम, सोहँ शब्द धार बंधाउणी। सोहँ शब्द तिक्खी धार। गुर पूरा गुरसिक्खी आपे लए विचार। दर मंगण साचे भिखी, साची रेख हरि जी लिखी, देवे सच भण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां उठाए डोली, बण जाए गोली, साचा बण आप कहार। गुरमुखां डोली आप उठांयदा। बेमुखां बोली हरि व्याहिंदा। तोरी जाए हौली हौली, शब्द डोरी हत्थ फड़ांयदा। ना कोई सर सरोवर ना कोई कूंआं बौली, आत्म तीर्थ इशनान करांयदा। गुरसिख तेरी काया आत्म भोली, प्रभ हउमै पीड़ गवांयदा। बज़र कपाटी आपे खोल्ही, पूरे तोल गुरसिख तेरी आत्म तोली, ना घाट कोई रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा नाम एका हट्ट विकांयदा। पुरख अबिनाशी दया कमाया। साचा हट्ट हरि खुल्हाया। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, ना कोई ताल जल भराया। ना कोई बन्न्हा ना कोई वट्ट, वसे घट घट अमृत साचा आत्म रखाया। बेमुख जीव झूठा खेल जिउँ बाज़ीगर नट, ना भेव जाणे जाण पछाणे रिहा हरि छुपाया। गुरसिख तेरी आत्म लाए सोहँ शब्द साची सट्ट, पर्दा उहला दए चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख

मस्तक धूढ़ लगाए, रसना रस साचा ल्या चट्ट,, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। मिटे अज्ञान अन्धेर जोत जगाईआ। ना कोई सन्झ सवेर, एका वेर कर कर हेर फेर, दीपक जोती सच्ची आप टिकाईआ। प्रगट हो शेर दलेर, बेमुखां मारे घेर घेर। लाड़ी मौत मगर लाईआ। आपे छेड़े छेड़, धरत मात तेरा खुल्हा करे वेहड़, दरगहि साची खेल रचाईआ। दोहां धिरां दा झगढ़ा करया नबेड़। दोहीं हथ्थीं लाए दोहां उखेड़। मारे इक्क लफेड़, आपणा भाणा ना किसे जणाए, मारे भेड़ भेड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची चक्की आप बणाई। कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़, सोहँ किली विच रखाई। पंचम् जेठ देवे गेड़ा, बेमुखां रिहा पिसाई। देवे गेड़ा करे नबेड़ा, कोए जीव रहण ना पाई। वेखो आपे छेड़े छेड़ां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप रिहा छुपाई। साची खेल हरि कर। कलिजुग सतिजुग इक्क दूजे दे उप्पर लए धर। आपे भन्ने भन्न वखाए, लक्ख चुरासी लई घड़। आपे डन्ने डन्न लगाए, कोए ना सके अग्गे अड़। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्ने, दर दुआरे अग्गे खड़्ह। इक्क दूजे नाल मिलाए बन्ने नाल बन्ने, घनकपुर वासी हीरा घाट उप्पर खड़्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे पाणी पीण ना देवे विच थाली छन्ने, कलिजुग जीव झूठे जूठे देवे छड़। आउँदी जाए पहली हाढ़। एका उठे रूसा धाड़। चारों तरफ हो जाए वाड़। धर्म राए दी सच दुलारी मौत लाड़ी, व्याहवण आऐ बेमुख जीव

१५ ०४ सारे लाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई दोहीं हथ्थीं रिहा साड़ पाड़। लाड़ी मौत आई दर। प्रभ अबिनाशी १५ ०४

साचे घर। इक्को दे दे साचा वर। लक्ख चुरासी पुरख अबिनाशी मैं लवां वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग नेड़े आया, सिर मेरे उप्पर हथ्थ धर। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। लाड़ी मौत भज्जी आई चांईं चांईं। फड़ के बाहों लाड़ी मौत विच मात पाए राहीं। पहली कूट इक्क वखाणी, मक्का मदीना पहले ढाहीं। उच्च मुनारा कोई छड्डी ना। दूजा हुक्म देवां फेर सुणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूर दुराडा हरि जी वसे, आपणे भाणे शब्द तूर रिहा वजा। लाड़ी मौत चढ़या चाअ। हरि जी साचे किरपा कर, मैं पहलां मारां केहड़ा थां। मुलां मसीत मार मैं ढाहवां। पीर फ़कीर औलीए गौंस ना कोई मारे धौंस, पाणी पीण किसे देवे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी औध मुकाई, वेला गया किसे हथ्थ ना आई, ना कोई फड़े किसे बांह। लाड़ी मौत हो त्यार। प्रभ अबिनाशी जांदी वारी देवे दो हथ्थां दा इक्क प्यार। साचा वर झोली पाईं, ना सिर मेरे तों हथ्थ उठाईं, मैं घर घर रवावां नर नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरी बेमुख जीवां साढे तिन्न हथ्थ देवां सीआं। साची फेरां जगत बहारी। चार कुन्टां वारो वारी। पहलां मुकावां संग मुहम्मद चार यारी। दूजी कूटे जावां, मारां बूरे कक्के। जिन्हां कोलों सारे अक्के। चारों तरफ पैण धक्के।

प्रभ अबिनाशी धर्म राए दे दुआरे धक्के। ना कोई मिले किसे मदीने मक्के। घर घर रहि जाण खाणे पक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल आप वखाए, ना भेव किसे जणाए, ना दिस किसे आए, गुरमुख साचे विच समाए। फड़यां हथ्थ किसे ना आए। मार उडार सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाए। कलिजुग जीआं आया पासा हारी, ना होए कोई सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची वंडी विच वरभण्डी। मौत लाड़ी पाई एका सिध्धी डण्डी। ना फेर वखाए कंडी। पहलां जा खड़काई चण्डी। ना कोई दिसे सुहागण नार, घर घर दिसे नार रंडी। कलिजुग जीव होए ख्वार, आप मिटावे सर्ब पखण्डी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा हथ्थ रखाया, सभ दी लाहुंदा जाए झण्डी। फड़या शब्द हथ्थ हथौड़ा। दूजा अस्व मारे पौड़ा। धुरदरगाही आया दौड़ा। चिट्टा अस्व सत्त सफेदी घोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अमृत साचा जाम प्याए ना मिट्ठा ना कौड़ा। लाड़ी मौत मात आई, उठ उठ वेखे सारे थाँईं। प्रभ अबिनाशी किरपा कर वखाल दर, फड़ के दोवीं बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ साचे लेख सर्ब लिखाए, भरम भुलेखा नाही। भरम भुलेखा ना कोई रखाउणा। जो लिखाउणा सो वरताउणा। राजा राणा सर्ब पछताउणा। निहकलंक किसे दिस ना आउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए, दे मति आप समझाउणा। हरि देवे सच्ची मति, नाम तत्त आत्म जत, सच्ची धीर रक्खे पति, जाणे मित गत, मानस जन्म ना आए हार। आपे मात पित, आत्म काया देवे सित, अमृत झिरना झिराए अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगाए नित नवित्त, कर कर हित्त, गुरमुखां बणे साचा मित, करदा रहे सदा प्यार। गुरमुख जीओ कर कर हीआ। निर्मल करो साचा जीआ। साचा बीज हरि जी बीआ। जिस दा ना कोई पुत्तर ना कोई धीआ। एका वेस हरि दरवेश माझे देस कीआ। रक्खे खुल्ह्ड़े केस नर नरेश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग रखाए आपणी हथ्थीं साची नीआ। दिल्ली हरि जी दए दिलासा। आपे वेखे खड़्ह तमाशा। चरन कराए पार ब्यासा। साचा करे आपणा वासा। सोहँ शब्द चलाए स्वास स्वासा। गुरमुख साचे संत जन, आप बणाए जिउँ कंचन पासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर आपणा करे आपे वासा। दिल्ली वेखे वेख विचारे। करे खेल हरि निरँकारे। अस्सू तिन्न नेड़े आए, गुरसिक्खां वाजां मारे। बेमुखां आत्म होई हँकारे, सीने पाड़े। लेखा लए गिण गिण, आपे परखे चंगे माढ़े। जोत प्रगटाए घड़ी घड़ी छिन्न छिन्न, भरम भुलेखे सारे लाहे। गुरसिख साचे दर बहाए दिन दिहाड़े। कलिजुग वेला नेड़े आए, बेमुख जीव धर्म राए तेरे बणाए टट्टू भाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा कुण्डा आपे लाहया, साचा दर इक्क खुल्हाया। बेमुख सारे इक्को वार एथे वाड़े। साचा कुण्डा आप खड़का।

दोहीं हथ्थीं दर दित्ता खुल्हा। ना कोई वार ना कोई थित्त, सुत्या जीआं प्रभ आप सवाए, ना बच्चे उठाए सुत्ते मां। वेला अन्तिम नेड़े आया, गुरसिख तेरा नगर खेड़ा हरि जी इक्क वसाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई सुंञ मसाण कराई, घर घर उडदे दिसण कां। सृष्ट सबाई होए उदासी। वेखो किवें फिरदे मदिरा मासी। करे खेल प्रभ अबिनाशी। जूठे झूठे दर घर साचे आयण, कर कर जाण हासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए मात पताल अकाशी। मात पताल अकाश हरि प्रकाश। गुरसिक्खां देवे शब्द स्वास। किरपा कर अपर अपार। आत्म बैठा पाउँदा रहे रास। जोत जगाए अगम्म अपार, जोत जगाए शाह शाबाश, आपणा भेव आप खुल्हा रिहा। गुर संगत हिरदे रक्खे वास, भरम भुलेखे दूर करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई लहणा देणा आप चुका रिहा। लहणा देणा जाए जगत चुक्क। बेमुखां हरे डाल जायण सुक्क। अन्तिम कलि मुख पाए थुक्क। भाणा साचा हरि वरताए, ना सके किसे कोलों रुक। बेमुखां हरि आप मिटाए, दूई द्वैती कोई रहण ना पाए, धरत मात तेरी गोद सवाए, जो मूंह नाल पींदे हुक्क। हुक्का पींदे रसना गन्द। बेमुख लायण बत्ती दन्द। इक्क गंवाया परमानंद। गुरसिख उपजाए, सोहँ दात झोली पाए, मात उपजाए सतिजुग साचे चन्द। आप आपणी दया कमाए, आत्म साची जोत जगाए, साचा नर हरि जन भगतां सदा बख्शंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई छाण पुण, पंचम् जेठ वक्खो वक्ख कराए गन्द। दिल्ली दिल कर विचार। प्रभ अबिनाशी आया जामा धार। तेरे दर तेरे घर चरन छुहाए, बेमुख सुत्ते गूढ़ी नींद पैर पसार। अन्तिम वेला नेड़े आया, वज्जे शब्द मार। साचा हुक्म हरि सुणाया, चुक्कणा मिले ना किसे बद्धा भार। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया, राजे राणे किसे भेव ना पाया, झूठे बणे जगत सिक्दार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आपे आया, तीजा फेर चरन छुहाया, सिँघ आसण बैठे जोत जगाया, वाली हिन्द सीस निवाए, आप बणे सच्ची सरकार। बणे हरि सच्ची सरकारा। राउ रंकां सच्चा दरबारा। वाली हिन्द दोए जोड़ करे निमस्कारा। हरि जी आसण सच बैठा, प्रभ मारे शब्द डाहढी मारा। आपे भन्ने कौड़ा रीठा, कलिजुग अन्तिम आई हारा। गुरसिक्खां आत्म रंग चढ़ाए मजीठा, सोहँ शब्द इक्क अपारा। गुरसिक्खां गुर साचा डीठा, दिल्ली आए पहली वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाउणा, पंचम् जेठ ना करना कोई उधारा। दिल्ली बैठी दूर दुराडी। प्रभ अबिनाशी सभ दा गाडी। धर्म राए दे दर बहाए इक्क चढ़ाए गाडी। गुरसिक्खां प्रभ दया कमाए, अट्ठे पहर लडाए लाडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी साचे हरी, भरम भुलेखे सारे काढी। देणा शब्द जगत ढंडोरा। करना नहीं कोई चोरी चोरा। गुरसिख पल्लू तेरे हथ्थ फड़ाए, अग्गे अग्गे जाए

तोरा। पिछे हरि जी आपे आए, शब्द चढ़या घोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वक्त आप ल्याए, पैरीं पाउण ना देवे किसे आपणा जोड़ा। दिल्ली तेरे दिल दी आस। पूरी करे प्रभ अबिनाश। घट घट रक्खे हरि जी वास। वेखो बेमुख जीव हुन्दे किवें उदास। गुरमुख साचे संत जनां सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए दासन दास। दासन दास आप रघुराई। देवे नाम धन सच्ची वड्याई। बेमुखां लेखा आप चुकाए, रहण ना देवे किसे वड्याई। साचा हुक्म आप सुणाए, भुल्ल ना जाए गुरसिख भाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे चरन सरनाई। वडी वड्याई हरि का नाउँ है। गुरमुखां आपणी गोद आप उठाए, जिउँ बालक प्यारी माउँ है। गुर संगत सारी संग रलाए, विच फेरा पाए गुड़गाउँ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ बिशन तेरे साचे लेख लिखाए, फड़ के साची बाहों है। मनी सिँघ तेरी वजदी रहे वधाई। प्रभ आप मिटाए कलिजुग लग्गी झूठी छाही। दरस दिखायण घर घर जायण, गुरसिख सोया आप जगाई। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए, वेखी वेखा कोई गुरसिख भुल्ल ना जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे आपणी सरनाई। संत मनी सिँघ आत्म सच वसेरा। चारों तरफ हरि जी वसे, आत्म पाया साचा घेरा। साचा लेखा आप लिखाया, किया अन्त नबेड़ा। जोत सरूपी धार भेखा, दूर दुराडा
१८ ०४ गुरसिख बैठा आत्म जोती वेखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लेख लिखाया, साचा बण लिखारा। साचा लेखा आप लिखाया। सोया पूत आप उठाया। साचे धागे नाल बंधाया। पहली माघे शब्द सुणाया। फड़ी वागे तुनक लगाया। पुरी घनक दा राह वखाया। साचे राहे आपे पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल कँवल चरन आपे खिच बहाया। चरन कँवल नैण मुँधारी। खिची आवे वारो वारी। पूर्ब कर्म रिहा विचारी। बेमुख मानस जन्म गए जूए हारी। ना कोई दिसे मुलां काज़ी, ना कोई दिसे शाह ताज़ी, वेखी हुन्दी किवें ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ एका सच्चा सुत बणया हाज़ी, आया घनकपुर चल सच्चे घर बाहरी। देवे नाम शब्द ज्ञानया। एका देवे चरन ध्यानया। किरपा कर नर हरि, दर सच्चे करे परवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया, साचा वर शब्द भण्डारा। वंडी जाए वारो वारा। चल के आए हरि दुआरा। गुरसिक्खां पाए आत्म सारा। बेमुखां तन रक्खे सदा अफारा। गुरसिक्खां कढ्ढे जन, आप बन्न्हाए एका मन, बेड़ा देवे बन्न, आप लगाए सच्चे इक्क किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया, गुरसिक्खां मिल मंगल गाया, आपे बणाए साची नारा। घर सच बसंत खिड़ी गुलज़ार। गुरमुख साचे संत दुलार। प्रभ अबिनाशी साचा माली, बण के मालण आया, मातलोक ल्या अवतार। गुरसिख हिरदा दिसे कोई ना खाली,

१८ ०४

प्रभ आप लगाए साचे फल साची डाल। साचे फुल्ल ल्याए तोड़, आप बणाए आपणा इक्क शृंगार सोहणा हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा करे एका इक्क प्यार। सतिजुग तेरा चिट्टा दुध्ध। गुरसिख उत्तम होई बुध। आप दवाए अगली पिछली सुध्ध। पंज जेठ नेड़े आई, चिट्टे अस्व तंग कसाई, मार छाल उत्ते बहे कुद्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल रचाई, वेखो पहली कूट किवें होवे युद्ध। गुरसिख निर्मल दुध्ध सच दलासा। सृष्ट सबाई अन्त कलि होए विनासा। गुरसिक्खां कलिजुग मिल्या शाह शाबाशा। गुरमुखां सद दर दुआरे रक्खे, बेमुखां दा वेखे तमाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाड़ी मौत मगर लगाई, नाल कालका भैण रलाई, इक्को खप्पर इक्को कासा। एका कासा हत्थ फड़ाए। बेमुखां दे मगर लगाए। शब्द तीर इक्क चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप रचाए, पहलों पीर फ़कीर दस्तगीर शाह हकीर विच मात टिकाए। गुरसिख तेरे दुध्ध दी धार। सतिजुग बन्ने एका साची धार। गुरमुख साचे संत जनां आप देवे नाम धन, कर कर प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा आप पिलाए, आपणे घर सच्चे दरबार। पीणा अमृत रस आत्म साचा जानणा। अट्ठे पहर देवे तेरी आत्म सच्चा चानणा रसना तेरी सदा सदा हरि गाए, एका देवे ब्रह्म ज्ञानणा। तेरे लग्गे फल साचे मेवे, सच्चा बणे इक्क निशानणा। करोड़ तेतीस तेरी सरन लगाए देवी देवे, साची जोत करे प्रकाश कोटन भानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि, ना जाणो कोई बाल अंञान्णा। ना हरि बाल ना बिरध ना जवान। इक्को रंग इक्को संग इक्को कस्सया साचा तंग, फड़या हत्थ तीर कमान। किसे दर ना जाए मंगे कोई मंग, देवणहार सर्ब जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां कटे भुक्ख नंग, आपे वसे अंग संग, देवे दरस हरि घर साचे आण। अमृत पीणा एका एक घुट्ट। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट। साचा भण्डारा हरि जी दीआ, ना जाए कदे निखुट्ट। आत्म जोत जगाया, अज्ञान अन्धेर दीआ पुट्ट। साचा शब्द मगर लगाए, पंजां चोरां बाहर कढ्ढे कुट्ट। गुरसिख साचे तेरा चन्द मात चढ़ाया, पंचम् जेठ पहु जाणी फुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा घोड़ा आपणे पास मंगाया, दूजा जोड़ा नाल रलाया, कल्गी तोड़ा हत्थ रखाया, वेखो सृष्ट सबाई किवें पैंदी फुट्ट। अमृत पी प्याला। किरपा करे दीन दयाला। गुरसिख आत्म होई मालो माला। विच मात ना होए कदे कंगाला। वेला अन्त अखीर नेड़े आया, गुरसिख उठो मारो छाला। पीर फ़कीर सर्ब मिटाया, गल विच तोड़े पाईआं माला। साचा नीर किसे हत्थ ना आया, गुरसिख साचे दया कमाया, गुरसिक्खां प्याया इक्को सच प्याला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जोती माणक मोती, आप जगाए करे रुशनाए, जिउँ खिच ल्याए विच्चों पहाड़ां जोत ज्वाला। सृष्ट सबाई

जाए हल। बेमुखां हरि लाहुणी खल्ल। झूठी कुठाली गए गल। वांग सिक्के जायण ढल्ल। गुरसिक्खां हरि आया हिस्से, इक्को लगाए साचा फल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे आसण डेरा लाया वसे धाम अचल। गुरसिख तेरा सच्चा सच प्रसादि। कराउँदा आए संत मनी सिँघ पिछली तेरी याद। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, साची सुरत आप रखाए, हरन फरन खुल्लाए, एका धार चलाए शब्द जणाए बोध अगाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे चल के आए, आत्म जाए साध। पूरे गुर कीनी सेवा। मिल्या फल साचा मेवा। घर आया वड देवी देवा। आत्म साचा भेव चुकाए, हरि जी सच्ची दात झोली पाए, गाओ रसना जिह्वा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा मात जन्म दवाया, तेरे मथ्थो तिलक लगाया, साचा मुख विच रखाया थेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची घाल पूर कराए, आप कराए सेवा। पूरी सेवा पई घाल। आत्म सर सरोवर प्रभ भर के जाए तेरा ताल। साचे तीर्थ आप नुहाए, पहली मार उठाए छाल। अमृत सीर आप प्याए, चढ़ाए रंग गुलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को तेरा मुल पवाया ना कोई रक्खे विच दलाल। गुरसिख इक्को लाल अनमुल्ला। कोई ना पाए सार, ना किसे तोल होर कोई तुल्ला। साचे घर भाग लगाए, चल के साचा हरि जी आया, वसाया साचा कुला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, वेखो किवें मेट मिटाए वड मुलाणे नाल मुल्ला। परम पुरख हरि कृपाल है। किरपा करे दीन दयाल है। गुरमुखां रिहा सुरत संभाल है। साची देवे दात, करदा मालो माल है। एका शब्द सच्ची करामात, देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निभे चरन प्रीती नाल है। गुरसिख तेरी आत्म गांदी। शब्द डोरी हरि एका बांधी। गुर पूरा विच फसाया बण गया सच्चा फांदी। हिरदे विच वसाया, ढाही भरमां कांधी। फेर आपणा दर बन्द कराया, ना छुट्टे भगतां बांधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर सुहञ्जणी रैण अज्ज आंदी। सुहञ्जणी रैण आई मात। गुरसिख बणाए नाल बरात। साची झोली पाई, इक्क शब्द सच्ची दात। गुरसिख साचे तेरे घर साची डोली आई बंधाए चरन सचा नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक प्याए अमृत बूंद स्वांत। साचा सिहरा कर कर मेहरा हरि जी आप गुंदाया। आप मिटाए तेरा मेरा, हेरा फेरा कर तेरे सीस बंधाया। आपे ढाहे भरमां डेरा, पहली वेरां सच्चा पल्ला आप फड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शेर दलेरा, चारों तरफ पाए शब्द घेरा, वेला वक्त कलि चुकाए, अन्तिम आया नेड़ा। दरगहि साची आप रखवाला, गुरसिख मस्तक चढ़दी जाए लाली। दीपक जोती आप बिलोए, बेमुखां पाए आपे चाली। चारों तरफ धर्म राए दए सजाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आपणे घर सुरत संभाली। भिन्नड़ी रैण संत वणजारीए। गुरसिक्खां करे प्यार,

देवे धार इक्क अपारीए। मिल्या हरि सच्चा भतार, गुरसिख नार सुघड़ स्याणीए। आपे पाए साची सार, लेखा कोए ना मंगे ना करे कोई उधारीए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे इक्क सच्ची वड्याई, गुरसिक्खां आत्म जोत जगाई, मिटाई अन्ध अन्ध्यारीए। भिन्नड़ी रैण उठ नेत्र खोल्। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, गुरसिख सिख गुर बैठे कोल कोल। सारे रल मिल दयो वधाई। साचा शब्द वज्जे चार कुन्ट ढोल। गुरसिख गाओ चांईं चांईं, मिल्या नाम जगत अनमोल। फड़ के तारे आपे बाहीं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कंडा सोहँ डण्डा हथ्थ उठाया तोले पूरे तोल। भिन्नड़ी रैण उठ मार झाती। प्रभ अबिनाशी आप चुकाए गुरसिक्खां बाकी। गुरसिख आत्म दर द्वार खुल्हाए, दोवें हथ्थीं खोल्हे ताकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि देवे वर, गुरसिक्खां रिहा पर्दे ढाकी। भिन्नड़ी रैण हरि दर आ। गुरसिख साचे गुर चरन बहाए, बणाए भैण भ्रा। एका पल्लू हरि जी फड़, साचा नाम लईं ध्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई, संत मनी सिँघ देवे वड्याई, गुरसिक्खां गुर पूरा रिहा मिला। साचे संत, साची सेव कमाईआ। बण गई साची बणत, मिली सच्ची वड्याईआ। महिंमा जगत अगणत, ना सके कोई गिणाईआ। मेल मिलदा आया आदि अन्त, जुगा जुगन्त साध संत हरि रघुराईआ। एका साचा मिल्या साचा कन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ चारों कुन्ट सद्द अद्द दए दुहाईआ। साचा संत आया सच दुआरे। अग्गों मिल्या इक्का नाम सच्चे घर बाहरे। आत्म मिटाई इक्को अन्धेरी शाम, ना कोई लग्गा एथे दाम कारज होए पूरे। सच्चे धाम हरि जी वसे सद हजूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लेख कराए, आप कराए अन्त पूरे। साचे संत तेरी वड्याई। सच दात हरि झोली पाई। काया चोली तेरी आपणी हथ्थीं आप रंगाई। एका दित्ती शब्द डोली, उप्पर दित्ता बिठाई। आप बणाई वाह वाह साची गोली, सृष्ट सबाई मारे तैनूं इक्को बोली, तेरी काया आली भोली प्रभ अबिनाशी पूरे तोल तुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे फोलण रिहा फोली, दिल्ली दित्ती आप सच्ची वड्डुयाईआ। गुर पूरे दा चिट्टा बाणा। पंचम् जेठ हरि जी पाणा। संत मनी सिँघ तेरा लिख्या लेख, पूरा फिर विच मात कराना। गुरमुख साचे संत जनां नेत्र लैणा पेख, हरि जी धारे केहड़ा भेख, आप लिखाए साचे लेख, ना जाणे कोई सुघड़ स्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरी सच कुआए। हरि जी आपणे तन छुहाए। कलिजुग काला सूसा मिटाए। ईसा मूसा संग मुहम्मद पहलों हरि रुढ़ाए। आप कराए रूसा चीना संग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुहम्मदी दीना वक्ख कीना धक्का दोहीं हथ्थीं आपे लाए। संत मनी सिँघ तेरा चिट्टा ताज। प्रभ अबिनाशी शब्द उडाया इक्को बाज। चारों कुन्ट उठ उठ वेखो किवें छुटदे राज। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए, राजे राणयां सिर तों लथ्थे ताज। तख्त ताज देणा छड्ड। आप डुबाए डूंघी खड्ड। बेमुखां हथ्थ पैर दोवें देवे वड्ड। दर घर साचे विच्चों बाहर कढ्ड। गुरमुख साचे संत जनां, आप लडाए साचे लड। गुरमुख साचे संत तेरी सच निशानीआं। गुरमुख साचे संत रंगण नाम हरि चढ़ानीआं। गुरमुख साचे संत, साचे कंगण तन पहनानयां। गुरमुख साचे संत दर घर साचे मंगण, देवे वर भगवानयां। गुरमुख साचे संत मेल मिलावा साचे कन्त, देवे नाम हरि निधानयां। गुरमुख साचे संत, मिले वड्याई विच जीव जन्त, लक्ख चुरासी गेड़ चुकानया। गुरमुख साचे संत बण गई साची बणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाई शब्द तीर साची कानीआं। गुरमुख साचे संत तेरा सचा चोला। गुरमुख साचे संत गुरमुखां बणे विच आप विचोला। गुरमुख साचे संत आपणी हथ्थीं चुक्कया गुरसिक्खां काया वाला डोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात तेरी झोली पाई दित्ता नाम अमोला। गुरमुख साचे संत सच्ची तेरी दात। गुरमुख साचे संत गुरमुखां पुच्छे अन्तिम वात। गुरमुख साचे संत गुरमुखां अमृत बूंद प्याए स्वांत। गुरमुख साचे संत साचे घर मिली वड्याई, बैठा रहे इक्क इकांत। गुरमुख साचे संत तेरी चिट्टी चादर। गुरमुख साचे संत आदि अन्त प्रभ साचा करदा आया आदर। गुरमुख साचे संत कलिजुग साचा मेल मिलाया, मिल्या करता कादर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन बन्न ल्याए, जिस फड़ाया तैनूं नादर। सच संत तेरी साची बाणी। प्रभ अबिनाशी रसना बोले सुणे रात हाणी। आत्म हिरदे सभ दे खोल्हे, साची काया तणे इक्का ताणी। अन्दर बैठा हरि जी बोले, गुरसिख साचे संत साची बाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान चतुर सुजान, हरि मेहरवान देवे दान कर ध्यान गुरसिक्खां कर पछाण, बेमुख भुल्ले जीव अञ्याणी। गुरमुख साचे संत हरि देवे सति संतोखी दात। सति संतोखी गुरसिख साचे संत सोहँ नाम निधानी। अन्तिम दित्ता साचा मोख, गुरमुख साचे संत आप गंवाए तृष्ना रोग, काया जूठे झूठे सोग, आप चुगाए सोहँ शब्द सच्ची चोग, तृष्ना भुक्ख रहण ना पाए। गुरसिख साचे संत आप दिखाए दरस अमोघ, आत्म तृष्ना सर्ब गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम शब्द देवे जोग, कौडी मुल्ल कोई ना लए। साचे संत सच दीबाण। गुरसिक्खां कराए जाण पछाण। संत मनी सिँघ तेरा लेखा हरि चुकाए, सृष्ट सबाई शब्द सरूपी लाया बाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणया जाणी जाण। संत मनी सिँघ कलम चलाई। प्रभ अबिनाशी देह तजाई। साची जोत मात प्रगटाई। निहकलंक नाउँ धराई। सृष्ट सबाई तनक लगाई। द्वार बंक आण सुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साधां संतां पाउँदा जांदा फाही। हरि सच्चा सच दरबारया। सिँघ आसण डेरा लाए, नर हरि हरि मुरारया। लोकमात फेरा पाए, कलंक

नेह नाउँ रखा लया। गुरसिख आत्म डेरा लाए, बेमुखां भेव छुपा रिहा। शब्द घेरा इक्क रखाए, ठग चोर यार दर दुरकारया। आत्म दर नेरन नेरा आप वखाए, औखी घाटी आप चढ़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे नेड़े आई वाटी, साचा लेखा आप लिखा रिहा। अग्गे नेड़े आई वाट। गुरमुखां पूरी होवे घाट। साची जोत मस्तक जगाए, जगे जोत विच ललाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे संत जनां दुरमति मैल रिहा काट। दुरमति मैल देवे कट। दूई द्वैती मिटे फट्ट। प्रगट जोत वसे घट घट। बेमुख जीव झूठे बन्दर, खेल जानण बाज़ीगर नट। साचा नाम हथ्थ ना आए, मातलोक जूठयां झूठयां खोल्हे हट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरसिक्खां सिर बन्न्हाए शब्द साचा पट। साचा पट सच्ची पट्टी। गुरमुख लाहा जाण खट्टी। एका रस नाम पूरन करे काम, घर बहि के चट्टीं। ना होए अन्धेरी शाम, ना लग्गे कोई दाम, मिलण आया सच्चा राम, नुहाए अट्ठ सट्ठ तीर्थ तट्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया वसे घट घटी। अट्ठ सट्ठ तीर्थ होए ख्वारी। चारों तरफ जीव गंवारी। बेमुखां काला सूसा तन पहनाए, लाड़ी मौत मगर लगाए, देंदी जाए बहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल कराए वारो वारी। चार यारी आप मुकाए। अहमद मुहम्मद तेरा वेला अन्त ल्याए। साचा लेख हरि जी लिख्या, ना सके कोई मिटाए। गुरसिक्खां रक्खे साया हेठ, अग्न जोत जगत लगाए। साचा हुक्म सुणाउँदा जाए। झूठा भेख मिटाउँदा जाए। संत मनी सिँघ तेरा लिख्या लेख, पूर कराउँदा जाए। प्रभ अबिनाशी धारे भेख, माझे देस भुल्ले नर नरेश, माया पर्दा पाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां साचे संत जना, फड़ फड़ बाहों दर घर ल्याए, दया कमाए दरस दिखाए राहे पाउँदा जाए। फड़ के बाहों पाए डण्डी। आप मिटाए सर्ब पखण्डी। बेमुखां आत्म होई रंडी। घर घर बैठे जीव घमंडी। चारों तरफ चमके चण्डी। गुरसिख साचे संत जनां, सोहँ नाम घर घर जाए वंडी। साचा हुक्म आप सुणाए, तन विच देवे घुट्ट घुट्ट गंढी। वेखो वेला अन्तिम आए, नौ खण्डी हुन्दी भंडी वरभण्डी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया साची चण्डी। साची चण्डी चमके विच मैदान। आप उठाए वड बली बलवान। एका हिरदे वास रखाए, उठण नौजवान। शब्द सरूपी हुक्म सुणाए, बिठाए विच बबान। एका उप्पर दए गेड़ा, धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा। रणभूमी सुत्ते बेईमान। आप मिटाए जूठा झूठा जगत झेड़ा, मातलोक झुलाए सोहँ सच्चा जगत निशान। कोई ना दीसे नगर खेड़ा, गुरसिक्खां बन्न्हे आपे बेड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे बल वड बलकारया। उठे दल वड हंकारया। अन्तिम फल गया पक्क, सदी चौधवीं आई भारया। अहमद मुहम्मद गया थक्क, अन्तिम पासा आया हारया। प्रभ अबिनाशी पुरी

घनक जोत जगा रिहा। लग्गी पतालीं जड़् दोहीं हथ्थीं देवे चुक्क, ना कोई अटका रिहा। फिर मारे बूरे कक्के, शब्द कुहाड़ा सिर लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आपो आपणी वारया। आए दर मुहम्मद करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। सदी चौधवीं अन्तिम होई, चढ़या इक्क हँकारी ताप। आत्म मेरी शांत कराई, अन्तिम कलिजुग पाई सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए दया कमाए, दर आया मुहम्मद संग लै के चार यार। संग मुहम्मद चार यारी। दोए चरन जोड़ करन निमस्कारी। अग्गों उठे हरि जी सच्चा पुच्छे पहली वारी। की कर्म विच मात कमाया, की कीती कारी। अग्गों मुहम्मद फेर शरमाया, मैं भुल्लया जीव गंवारी। मुहम्मदी दीना मैं दित्ता तेरी झोली डारी। लाड़ी मौत सभनां पिच्छे देवीं ला, इक्को पाईं शब्द फाह, धर्म राए दे दर दईं बहा, बाहरों कुण्डा दईं ला, मेरा वक्त अन्त अखीर होया, हुण आई तेरी वारी। करे मुहम्मद दर सच पुकारे। निहकलंक कलि जामा धारे। कोए ना सुणे किसे पुकारे। अल्ला हू तेरे मुक्क गए नाअरे। आपणी हथ्थीं पुट्टे खूह, इक्को धक्का मारे। ना कोई बचे विच पहाड़ जंगल जूह, सिँघ शेर शेर जामा धारे। शब्द सरूपी चार कुन्ट लभ्भदा फिरदा जूह, किथे बैठे वड हँकारे। सोहँ शब्द खण्डा ल्या म्यानो धू, मारे विच मैदाना हरि ललकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भेव आप लिखाए पंचम् जेठ पहली वारे। अल्ला नूर इक्क अलाहीआ। अथर्बण वेद तेरे हिस्से एहो आईआ। दर घर साचे आई सुखदाते पर्दा पाईं, निहकलंक तेरी सरनाईआ। बणी रही जगत कसाई, ना मिल्या किसे साचा माही, कलिजुग देवे अन्त दुहाईआ। निहकलंक हरि जोत जगाई, माझे देस वज्जी वधाई, पुरी घनक भाग लगाई, शब्द कटार हथ्थ उठाईआ। आपे मारे शब्द मार, चार यार होए ख्वार, आई अल्ला राणी सच दरबार, गल पल्ला पा रही पुकार, प्रभ अबिनाशी बख़्शीं किरपा धार, तेरे चरन सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला नेड़े आया। साचा राह ना किसे वखाया। मक्का मदीना फोल वखाया। झूठी एह जगत माया, अन्तिम वेले हरि जी साचे कीना वक्ख, आपणा रंग आप कराया। बेमुखां घर लाउँदा भक्ख, जोत सरूपी अग्न लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म अल्ला राणी आपणा आप सुणाया। आई अल्ला राणी हरि द्वार। अग्गे बैठा भेखाधारी हरि निरँकार। गल विच पल्ला पा, चरन उप्पर सिर टिका, कर रही पुकार। प्रभ अबिनाशी वेले अन्त कदे ना फड़ाए आपणा पल्ला, देवे दर दुरकार। सिँघ बिशन तेरा लेख, सिर उहदे विच देवे मार। वेखो हरि का भाणा सच्चा, वेखो केहड़ी करे कार। आप बणे ग़रीब निमाणयां सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट उठ उठ वेखे, केहड़ी बन्न्हे आपणी धार। अल्ला राणी इक्को वेखे थां। सौखा कोई ना निकले साह। प्रभ अबिनाशी पाया फाह।

घनकपुर वासी पिच्छों फड़ लए दो हथ्थां नाल बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल हरि वरताए, पहली कूटे खेल रचाए, घर घर उडदे काँ। अल्ला राणी तेरा सच्चा नूर। घर साचे विच होया पूर। तेरा भर गया वाहवा पूर। बेमुखां कलिजुग जीवां तूं अन्दर बैठी रही घूर। वेखो कलिजुग अन्तिम नेड़े आया, प्रभ अबिनाशी करे तेरे अंग चूर चूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वक्त नेड़ ल्याया, जिस नूं सिख जानण दूर। अल्ला राणी रक्ख ओट। प्रभ अबिनाशी अग्गों कढ्ढे हउमे खोट। दीन मुहम्मदी कोई ना चुक्के, आलूणउँ डिग्गे बोट। दाणा पाणी सभ दा मुक्के, गई फुट्ट पोट। किसे ना दिसे पाणी हुक्के, ना मिले किसे रोट। चारों तरफ मूंह विच पैण थुक्के, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द लगाई एका चोट। आई अल्ला राणी कर ध्यान। अग्गों वज्जे शब्द बाण। साचा घर वसे हरि, होर दिसे सुंञ मसाण। अन्तिम कलिजुग आवे डर, आपणा आप गई हर, लक्ख चुरासी कीने जिस वैरान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त मिटाए लेखे लाए मिटदी जाए कुरान। अल्ला तेरी मिटे कुरानी। नाले मुकण शाह दुरानी। अन्तिम वेला आया फानी। इक्को वज्जे शब्द कानी। बेमुखां हरि जी दिस ना आए, गुरसिक्खां बणया आपे बानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपे जानी। अल्ला नूर इक्क अकार। अन्तिम कलिजुग हरि साचा पावे सार। बेमुख जीव होए गंवार। शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, रक्खी तिक्खी धार। पहली वंड आप कराया, ना किया कोई अधार। साचा डण्डा आप लगाया, ना सिर रखाया किसे भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ आसण सेजा बैठा सभ दी सुणदा रहे पुकार। अल्ला राणी आई दर प्यासी। गुरसिख करो रज्ज के हासी। दोए जोड़ मंगदी प्रभ अबिनाशी। मेरी झोली पा मदिरा मासी। मैं नाल खून हथ्थ रंगदी, बण जावां तेरी चरन दासी। दर घर साचे मूल ना संगदी, मैं मुकावां लक्ख चुरासी। मैं गुरसिक्खां दा बूहा अगांह ना लँघदी, अग्गे दिसे घनकपुर वासी। दूर खलोती दरस दान गुरसिख तेरा मंगदी, गायण स्वास स्वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वसे दूर दुराडा, गुरसिक्खां घर आए मंगे वर मेरी कराओ बन्द ख़लासी। गुरसिक्खां अल्ला राणी रही सुणा। मेरी बणत दयो बणा। औखा होया आपणा लेखा साची गणत दयो गिणा। औखा होया भाणा सहिणा, निहकलंक कलि आया जामा पा। ना चुकाया जाए लैहणा देणा, रिहा गल विच फाहीआं पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाई, मैं गुरसिक्खां दे दर ते आई, मेरी दयो बांह फड़ा। गुरसिक्खां दे दर रही झक्ख मार। देणी नाम दात, मैं जावां घर सच्चे, जिथ्थे वसे हरि निरँकार। गुरसिख साचे संत जन नहीं भाण्डे काचे, एह घड़े हरि सच्चे घुमिआर। सर्ब जीआं दी आपे वाचे, बहत्तर नाड़ी विच राचे, गुरसिक्खां रिहा तार, शब्द लिखाए साचो साचे, जो वरताए

विच संसार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब ख्वार। अल्ला राणी गाए झूठा गीत। हरि जी ढाहे सर्ब मसीत। कलिजुग तेरी अन्त जूठी झूठी मिट जाए रीत। गुरसिख साचे साध संत प्रभ आप निभाए चरन प्रीत। बेमुखां माया पाए बेअन्त, साचा कन्त उलटी तेरी नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म शांत कराए, अमृत साचा मुख चुआए, गुरसिख साचे मानस जन्म ल्या जग जीत। प्रभ अबिनाशी मेहरवान है। गुरसिख तेरी आत्म अन्दर सदा वसे हरि सच्चा निगाहबान है। इक्को हरि जी गुरसिक्खां आया हिस्से, लक्ख चुरासी खाए धक्के, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान है। कलिजुग वेला अन्त ल्याए, गुरसिक्खां छत्र झुलाए तेरे सीस। किरपा करे हरि जगदीश। तेरी कोई ना करे रीस। शब्द मारे विच तीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरा माण ताण रखाए, एका दान तेरी झोली पाए, ना कोई चढ़ाए ना कोई शरअ पढ़ाए हदीस। शरअ हदीस ना कोई पढ़ाए। गुरसिख तेरी आत्म खुलाया दर काया डोली, ना कोई मुल चुकाए लाखे। आपे बण जाए तेरे दर दी गोली, करे तेरी राखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा फल तेरे आत्म डाल लगाया, पंचम् जेठ नेड़े आया, वेखो किवें फुटदी शाखे। भाग लगाए तेरी कुल। रसना जपया नाम तेरा पाए मुल। बेमुख जीव सुत्ते पैर पसार, प्रभ अबिनाशी गए भुल्ल। आया कलि जामा धार। पाए सार नर नार। ना कोई जाणे बुढा नर नार। पूरे तोल गुरसिख तुला, वेखो हुन्दा जगत ख्वार। वहन्दे जाण वहन्दी धार, गुरसिक्खां करदा जाए खबरदार। होए सहाए पहरेदार। शब्द हलूणा इक्क देवे, गुरसिख ना सोया पैर पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे साचा हरे, दर घर आए रिहा तार। गुरसिख सच्चे वणजारया। प्रभ अबिनाशी तेरे उत्तों लाहे भारया। आप उठाया घर बाहरया। रक्खे लाज, वटी तेरी मेरी इक्क दस्तारया। तेरा साजन रिहा साज, तेरे सिर ते धरया ताज, मारे शब्द इक्क अवाज, तिन्नां लोकां बूझ बुझारया। चार कुन्ट पए दुहाए, तेरा पर्दा हरि जी लाहे, बेमुखां घर घर लग्गी आग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दाग आपणी हथ्थीं आप धवा रिहा। गुरसिख तेरा शब्द घोड़ा। आप बणाए गुरसिक्खां गुर दोहां इक्का जोड़ा। संत मनी सिँघ संग रलाया, शेर सिँघ सिर हथ्थ टिकाया, फड़ के बाहों आप चढ़ाया उच्चा पौड़ा। धुरदरगाही साचा माहीआ, घर तेरे आया दौड़ा दौड़ा। उच्ची पौड़ी जाणा चढ़, राह विच ना जाणा अड़। बेमुख जीव आप वहाए वहन्दे हड़। गुरमुख साचे नेत्र वेखण, बेमुख जीव जायण झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ बाहों पार कराए ब्यासा कन्ढे आपे खड़। डूंघा सागर डूंघी धार। डूंघी चुभ्भी मार। हरि जी करे विचार। आत्म डूंघी काया डूंघी ना कोई पावे सार। कँवल मुख होई रहे मूंधी, ना खिड़े सच्ची गुलज़ार। ना पाए कोई अमृत बूंदी, ना आए आत्म

घर सच्ची बहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दर आयां जाए तार। साचा घर तेरा वसे गुरसिख। वेला हथ्थ ना आए, वड वड बैठे मुन रिक्ख। साचा घर मंगण कोई विरला आए, एथे पए नाम भिक्ख। गुरमुखां घाल पाए थाएँ, मिटाए आत्म तृष्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द ज्ञान दवाए, गुरसिक्खां लैणा सिख। आए दर होए अधीन। किरपा करे हरि प्रबीन। तीनो ताप लए छीन। इक्क मनाए शब्द ईन। रसना लैणा हरि जी चीन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द समझाए, गुरसिक्खां कन्न सुणाए, इक्क अवल्लड़ी बीन। वज्जे बीन राग सति। गुरसिक्खां देवे हरि जी मति। सोहँ शब्द धीरज आत्म साचा यति। अन्तिम वेले रक्खे पति। साचे धाम आप बहाए, गुरसिक्खां साचे संत जनां, जिस उप्पर ना रक्खे कोई छत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा बीज बिजाए, गुरसिख तेरी आत्म आया साचा वत्त। आत्म साचा वत्त बीज बिजाईआ। किरपा कर देवे तत्त, नाम दात झोली पाईआ। रसना चरखा लैणा कत, सोहँ शब्द वड वड्डयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई अन्तिम कलि आपे आप भुलाईआ। सेवा सुरत सर्ब सुखदाईआ। प्रभ साचे लेखे लाईआ। घर साचे मिली वधाईआ। गुरसिख गायण गीत, हरि साचे रंग रंगाईआ। हरि मिल्या साचा मीत, आत्म सच्चा हरि आप बुझाईआ। करनी इक्क सच्ची प्रीत, गुरसिख नार हरि एका थां वसाईआ। मानस जन्म लीआ जीत, होई काया ठंडी सीत, घर आया हरि रघुराईआ। औखा हो गया पंचा मीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रुत्त आप सुहाईआ। इक्क गुर इक्क गोबिन्द। चरन लगाए वाली हिन्द। संत मनी सिँघ साची बिन्द। कर दरस उतरी चिन्द। सृष्ट सबाई करे निन्द। साची कलम हथ्थ फड़ाई। अट्ठे पहर रिहा चलाई। शब्द आए वाहो दाही, ना थक्कण बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आस रखाई मेरी आत्म तृखा बुझाई। साचा लेख लिखाए बण लिखारा। सृष्ट सबाई होई अन्ध अन्धयारा। आप लाही आत्म विसे, जोत जगाई अगंम अपारा। किसे ना आया हरि जी हिस्से, गुरसिक्खां दर दुआरे आए, आपणा पल्लू अग्गे डाहे, मंगे इक्क सच्चा प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आया मंगण, तेरा सच्चा इक्क दुआरा। सच प्यार भिच्छया पाउणी। पूरे हरि दी एह पक्की हाढ़ी साउणी। तेरे आत्म अमृत साचा ताल रखाया, एह कीती इक्को रौणी। अमृत जल विच भराया, सोहँ लगाई साची भौणी। आपणा आप विच छुपाया डूंघी चुभ्भी इक्क लगाउणी। अग्गों नेत्र हरि जी खोल्ले, एका मुख तां रखाया। गुरसिख फड़ के बांहों आपणे गले लगाया। एका देवे सच सरनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण दान बण अञ्याण दर तेरे ते आया। साचा दान भिच्छया पा, पूरन इच्छया आपणी अज्ज करा। प्रभ करन आया रच्छया, सिर देवे हथ्थ

टिका। साचा नाम पूरी दात ना पाए कोई भिच्छया, बैठे मूंह छुपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई, तिन्नां लोकां वज्जे वधाई, साध संत ध्याउँदे थाँईं थाँईं, हरि जी दिसे किसे ना थां। बैठे विच उजाड़ां कन्दरां। हरि जी वसे गुरसिख नेरा, आपे तोड़े तेरा वज्जा जन्दरा। उचे टिल्ले वडे किले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भौंदे फिरन गोरख ते मच्छन्दरा। मंगण आए हरि दुआरा। एथे मिलदा प्रेम भण्डारा। सिँघ शेर की करे बेचारा। सच धाम छड्ड के आया, निहकलंक बण के आया, गुरसिक्खां करे प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी आत्म सोया, सिँघ शेर आत्म सेजा सच भतारा। ना कोई मंगदा होर द्वार। साची सेजा डेरा लाया, रिहा पैर पसार। सिध्धा मुख तेरे वल रखाया, चरनां उप्पर कर निमस्कार। तेरा नाभ कँवल उल्टाया, अमृत देवे बूंदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया आप कमाए, गुरसिख देवे सिर तेरे उत्ते इक्क प्यार। दित्ता इक्क सच्चा प्यारा। कीता जगत सच्चा विहारा। रसना गायण नारी नारा। बणया गुर पूरे दा सच्चा इक्क दुआरा। सिर तों लथ्था अगला पिछला भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दात मंगण आया तेरे चल दुआरा। साची दात तेरी नाम ताड़ी। लाज रक्खे हरि जी तेरी चिट्टी दाढ़ी। इक्क निगाह गुरसिख रखाईं छत्त गगन पाड़ी। प्रभ अबिनाशी आया चांईं चांईं, सृष्ट सबाई होई किस्मत माढ़ी। गुरसिख साचा गले लगाया, फड़ के आपे बाहीं। बेमुखां मगर लगाई मौत लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी लाज रखाए, जेहड़ी चरन छुहाई दाढ़ी। बाल जवानी गई बीत। अजे ना होई काया सीत। अन्तिम वेले हरि जी आया चीत। साचा घर नज़री आया, जिथ्थे एका साची रीत। मानस जन्म जिस दवाया, मिल्या साचा मीत। आउणा जाणा लेखे लाया। साध संगत विच बहाया। साध संगत तेरी धूढ़, एहदे मथ्थे लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, सहिंसा रोग चिन्ता सोग आत्म दुःख मिटाया। संगत संग मिल्या मेल। आप छुडाए धर्म राए दी विच्चों जेल्ह। साचे मार्ग पाया गुरसिक्खां दे संग रला के, बण जाए सज्जण सुहेल। कौड़ी वेल फल लगाए, दर घर साचे आए मुल्ल पवाए, अचरज खेल रिहा खेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म लेखे लाए, आत्म साची जोत जगाए, ना कोई बत्ती ना कोई तेल। होए निमाणी आए दर। अग्गे मिल्या साचा हरि। साचा देवे इक्को वर। जा वसे साचे घर। साचा घर सच सरोवर सिँघ बिशन तेरा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आउणा जाणा लेखे लाया, फड़े नाल आपे तेरी बांह। गुरसिख तेरे वडे भाग। सोग जाए घर तेरे विच्चों भाग। अमृत साची बूंद प्याए, आप बुझाए लग्गी आग। तेरा माण ताण रखाए, आप फड़ाए हथ्थीं वाग। गुरसिख तेरी शान वधाए, अमृत साचा सीर छिड़काए, लाहे पिछले दाग।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरे दर बहाए दया कमाए, बेमुख हँस काग। साचा बंस आप बणाया। गुरसिख साध संगत बण , एका बंस गुर बणाया। गुरसिख साचा मात चुण, साचा राग कन्न सुणाया। इक्क उपजाए शब्द धुन, किली सितार ना कोए रखाया। दूर दुराडा रिहा पुकारां सुण, पर्दे ओहले काया डोले जिस ने डेरा लाया। आपे करे छाण पुण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। सच घर गया आ। आपणी बणत जाए बणा। दरगाह साची हरि जी साचा देवे नाल रला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे देवे ठंडीआं छावां, फड़ के बाहों जिउँ पुत्तां देवे लोरीआं मां। आत्म चिरी विछुन्नी। सिरों लथ्थी चिट्टी चुन्नी। मैं मिलां हरि जी केहड़े गुणी। मेरे गुण अवगुण ना छाणी ना पुणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं आई सच तेरे दुआरे इक्क पुकार सुणीं। मेरी पुकार एका सुण, आत्म आई दर निमाणी। अमृत प्या हरि जी इक्को सच्चा पाणी। सोहँ शब्द दात झोली पा, गावां सच्ची बाणी। कलिजुग अन्धेरी रात मिटा, गुरसिख सारे रंग रला, इक्ठे होईए हाणी हाणी। एका रक्खीं ठंडी छाँ। आपे बण जाईं पिता मेरी मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरनां देवीं सच्चा थां। आई आत्म साचे दर। लै के जाए साचा वर। खुल्ला रक्खे हरि जी घर। गुरसिख ना आवे तैनूं डर। मातलोक ना जावे अन्तिम मर। किरपा करे हरि धरनी धर। आप नुहाए अमृत साचे सर। डूंघा ताल इक्क सुहाया काया अन्दर, साचे मन्दिर अमृत साचा रिहा भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा रिहा कर। आत्म आई नाल लयाई भिन्नड़ी रैण। दोहां इक्क सलाह बणाई, साचा हरि बण जाए साक सज्जण सैण। सृष्ट सबाई आप तजाईए, अन्तिम फेर ना पाईए वैण। मातलोक आउणा जाणा लेखे लाईए, दर्शन पाईए हरि जी साचे नैण। पिछला लेखा सर्ब चुकाईए, भरम भुलेखा सारा ढाहीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लैण देण। पिछला लेखा हरि चुकाए। अग्गे साचे मार्ग पाए। सारंगधर भगवान बीठला, काया विच्चों भन्ने कौड़ा रीठला, उत्ते अमृत छिड़के सीतला, इक्क रखाए चरन प्रीतला, ना लग्गी कोई तोड़ तुड़ाए। मानस जन्म गुरसिख साचे विच जगत दे जीतला, लक्ख चुरासी आप कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जम की फाँसी घनकपुर वासी आपणी हथ्थीं गलों लाहे। जम की फाँसी तुटा फाह। कलिजुग भुल्लया रुल्लया प्रभ फड़ के बाहों साचे राह दित्ता पा। अमृत आत्म अजे ना डुल्लया, पिछली भुल्ल लई बख्शा। गुरमुख साचा विच मात दे फलया फुल्लया, गुर दर आए चरनी सीस ल्या झुका। विच मात पाए हरि जी मुल्लया, भाग लगाए काया कुलया, साची देवे जोत जगा। कलिजुग जीव बेमुख झूठा जूठा अन्तिम हुल्लया, फल किसे डाले दिसे ना। गुरसिख साचा पूरे तोल तुल्या, होए निमाणा चरनी डिग्गा मूंह विच रक्खया घाह। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, साचे लेखे आपे लए ला। जो जन रहे भुल्ल भुलेखे। घर साचे आए वेखी वेखे। प्रभ लिखदा रहे लेखे। साची जोत हरि जगाई, सिंघ सिंघासण डेरा लाई, गुरसिख साचा नेत्र पेखे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर आयां दए वड्याई, पिछली भुल्ल दए बख्शाई, आपे कढ्ढे भरम भुलेखे। हरि रक्खे शब्द डोर। गुरसिक्खां आत्म बैठा बन्न्हदा रहे पंज चोर। दर घर साचे एह ना पायण जूठा झूठा शोर। आत्म साची जोत जगाए, आप मिटाए अन्धघोर। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची जोत दया कमाए, गुर संगत नाल रलाए, हौली हौली लए तोर। आपणी उंगल लए फड़ा। पहली पौड़ी लए चढ़ा। सच वखाया इक्क थां। जिथ्थे ना हुन्दी कदे नाह। ना कोई धी ना कोई मां। एका हरि जी साचा दिसे, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवे सदा ठंडी छाँ। ठंडी छाँ गुरसिख जानणी। हरि शब्द ताणे उत्ते चानणी। आत्म साची जोत जगाए, करे प्रकाश कोट भानणी। आत्म दुक्खां नास कराए, देवे शब्द वड ब्रह्म ज्ञाननी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया पूर कराए गुरसिक्खां भावनी। बख्शे चरन ध्यान नाम निधान शब्द उडान हरि मेहरवान। गुरसिख बणाए चतुर सुजान। आप मिटाए जम की कान। सोहँ शब्द लाए सच्ची पान। साचा नाम माल धन दोए जहानी बहि के खान। साची डोली आप बहाए, होर कुहार ना कोई रखाए, गुरसिख साचे लए उठाए, आपणे नाल तोरी जाए

३० ०४ हौली हौली। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचे सर इशनान कराए, आपणा घर आप वखाए, आपणी हथ्थीं बूहा लाहे, ना कोई नुहावण जाए अठसठ तीर्थ बौली। अट्ठ सट्ठ तीर्थ होए वैरान। मिटदी जाए नाल कुरान। एका वज्जा शब्द बाण। चुक्कदी जाए सभ दी काण। गंगा आए चरन भगवान। जटा जूट रिषी हरि जी लए पछाण। शिव शंकर वज्जी कंकर गंगा चली बेमुहाण। कलिजुग अन्तिम नेड़े आया, सारे मेटे मेट मिटाण। हथ्थ ना आए साचा सीरथ, मुखीं पायण झूठा नीरथ, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किसे ना छड्डया माण तान। गंगा गोदावरी गई लुट्टी। निहकलंक जड़्ह पुट्टी। अमृत मिले ना किसे घुट्टी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची चोग आप चुगावे, वेले अन्त सभ दी चोग निखुट्टी। सभ दी चोग गई निखुट्ट विच जहान। बेमुख होए मदिरा मास पीण खाण। फेर करन विच सरोवर इशनान। आत्म अन्धे पापी गन्दे झूठे बन्दे दुरमति मैल मल मल विच तारीआं लाण। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, कोई ना सके जीव पछाण। झूठीआं तारीआं रहे ला। पापां मैल रहे चढ़ा। कोई ना जपया साचा जापा, जेहड़ा मारे तीनो तापा दुरमति मैल दए गुआ। वेले अन्तिम कलिजुग कांपा, एका एक मिली सज़ा। माझे देस घर घर वेस, पंचम् जेठ चिट्टीआं पहने आप पुशाकां। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि, गुरमुखां खोल्ह्े आपणी हथ्थीं ३० ०४

आत्म वज्जीआं ताकां। आत्म ताकी पड़दा खोल्हे। आप हटाए माया ओहले। विच्चों हरि जी सच्चा बोले। एका वसे काया
साचे चोले। साची चोली तन रंगाईआ। गुर चरन धूढ़ उत्ते आण छुहाईआ। वाह वाह दुरमति मैल गंवाईआ। साची सुरत
हरि दवाईआ। करे मेहर रक्खे रुशनाईआ। भज्जा आवे वाहो दाहीआ। गुर संगत संग रलाए, इक्ट्ठे कराए भैणां भाईआं।
चिट्टे घोड़े तंग कसाया, चढ़ के आवे साचा माहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडा दाता सूरबीर, मारे शब्द तीर,
सभ दे सीने रिहा चीर, गुरसिक्खां दर आए दया कमाए, ठंडां देवे पाए सभनां दिसे विच प्रभास, मेरा तेरा तेरा मेरा हेरा
फेरा फेरा हेरा पहली वारां आपणा आप चुकाईआ। आपे बणया साचा दास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे
आत्म मण्डल जोत सरूपी अट्ठे पहर पाउँदा रहे रास। हरि गोबिन्द एका एक है। गुर रक्खे गोबिन्द टेक है। विच मात
तन ना लग्गे सेक है। आप लिखाए शब्द जणाए सृष्ट सबाई लेख है। हरि गोबिन्द हरि भगवान है। बणया साचा गुर
संत मनी सिँघ चतुर सुजान है। मिल्या लिख्या धुर, चढ़या शब्द सच्चे बबाण है। चल आया घनकपुर, अग्गों मिले श्री
भगवान है। दोहां मिल के बण गई इक्को सुर, ना घर जाए तुर, हीरे लभ्भणे बाल निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, संत मनी सिँघ हुक्म सुणाया आपे बणया जाणी जाण है ,। संत मनी सिँघ कहणा मन्न, अग्गों किहा धन्न धन्न।
३१ ०४ मैं जावां सच्चे सिक्खां दे दरबार, फड़ी बाहां विच अकाशां, मातलोक चढ़ावां चन्न। निहकलंक तेरी वड्याई, मेरी जोत ३१ ०४
मात जगाई, एका शब्द कन्न सुणाई, मेरा आत्म गया मन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे सिर ते हथ्थ रखाईं,
बेड़ा मेरा दईं बन्न। अग्गों हरि जी आख सुणाया। संत मनी सिँघ क्यों घबराया। प्रभ अबिनाशी आपणा पल्लू तेरे हथ्थ
फड़ाया। कलिजुग वेला अन्तिम आया। मिटदा जाए कलू, शब्द ढंडोरा घर घर दए सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, अन्तिम अन्त चढ़ के आए शब्द घोड़, पहला मारे सिर विच पौड़, कलिजुग ना दिसे भारत आया। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सोया पूत फेर उठाया। शब्द मारे इक्क उडार। तिन्नां लोकां होवे बाहर। आवे जावे
वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वसे साचे घर। हरि निरँकार निर आहारया। सच्ची सरकार जोत अधारया।
गुरसिख कर निमस्कार पीवे सारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सच्चा नाम, पूरन होवण जगत काम, मेल
मिलावा सच्चे राम, आप चढ़ाए साची नईआ। साची नईआ इक्क चलाई। चार वरन लए बहाई। ऊँच नीच ना भेव कोई
रखाई। राउ रंक शाह सुल्तान वड बलवान एका बेड़ा हरि रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जात पात वड कमजात
झेड़ा आप चुकाई। जात पात होवे दूर। सतिजुग तेरा इक्को बणे सच्चा पूर। ना कोई खाए गऊ निमाणी, ना कोई वढ्ढे

हथ्थीं सूर। ना कोई वेखे किसे धी ध्याणी, गुरमुखां आत्म होए सुघड़ स्याणी, विच वसे साचा नूर। दर घर साचे भरदे रहण पाणी, सोहँ पढ़दे रहण बाणी, सतिजुग तेरी सच निशानी, कलिजुग तपया इक्क तन्दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे बानी, अल्ला राणी कीती काणी, झूठी ताणी जिस ने ताणी, अन्त वेले पुणी छाणी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा हरि वरताया, हाणीआं छड्डणे हाणी । अल्ला तेरी उखड़ी जड़। केहड़े चुबारे जाए चढ़। बेमुख डिग्गे मूंह दे भार, हरि जी वेखे खड़। एका शब्द मगर लगाया, वज्जे कड़ कड़। एका धाड़ दए उठाया, रूसा चीना संग रलाया बाहों फड़ फड़ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे सोहँ डण्डा लाया, केहड़ा अन्दर जाए वड़। अग्गे हरि जी रक्खे डण्डा। तेरा एहो अगला कंडा। दाणा पाणी आप मुकाया, रहण ना पाया कोई विच वरभण्डा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे ढाहुन्दा जाए, साची बणत बणाउँदा जाए, गुरसिख सोए जगाउँदा जाए, अमृत बूंद स्वांत पिलाउँदा जाए, अन्धेरी रात मार झात आप हटाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सोहँ सुहागी गीत परखे नीत आपणी रसना आप सुणाउँदा जाए। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत। जिथ्थे परखे गुरसिक्खां नीत। दूर दुराडा नैण मुँधारी, लाई रक्खे इक्का ताड़ी, आपे जाणे सच्ची रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे पार उतारे, जिन्हां लाई चरन सच्ची प्रीत। ना कोई मसीत मुलां ना मुलाणा। सर्ब जीआं हरि आपे जाणा। आप पहनाए गुरसिक्खां सोहँ शब्द चिट्टा बाणा। साचे तख्त आप बराजे सच्चा शाह सुल्ताना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त जूठे झूठे माया लूठे, संगत सारी संग रलाई, तेरी आपे लाहे मुकाणा तेरी लाहे अन्त मुकाण। सतिजुग साचे देवे माण। जन्म दवाए हरि भगवान। मात धराए गुरसिक्खां संग रलाए, साचा नाता आप बंधान। भिन्नड़ी रैण रंग रंगाए, साचा संग निभाए, तिन्हां मिल इक्क बणाए शब्द बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथ साची गाथ गुरसिख तेरा आपे वेखे लिख्या लेख साचे माथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख रिहा लिखाए। शब्द डण्डा रिहा उठ। हरि जी फड़या आपणी मुठ्ठ। अल्ला राणी घेरी पहली गुठ्ठ। खाली करे सभ दे ठुठ। आप लटकाए धर्म राए दे घर पुठ्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे फेर मनाए, संत मनी सिँघ जो बणाए, घर साचे विच्चों जेहड़े बैठे रुठ। शब्द डण्डा लए बलधार। सभनां करे खबरदार। निहकलंक कलि जामा पाया, एका हरि सच्चा सरदार। आपणा भेव रिहा छुपाया, बेमुखां मारे डाहढी मार। वेला गया हथ्थ ना आया, किवें सुत्ते पैर पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सभ दी सार। आप सुहाई हरि जी साची रुत्त। अल्ला तेरी पंचम् जेठ वढ्ढे नक्क गुत्त।

जोत सरूपी जामा पाया, पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी अचुत। आपणे दर लए बहाया, बणाए साचे सुत। बेमुखां दर बन्द कराया,
साचे घर वड़न ना पाया, अग्गों पैंदे गुरसिक्खां वाले सिर ते जुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुरकाया, पंचम्
जेठ कोई नेड़ ना आया, मूंह विच पाए सभ दे थुक्क। नेत्र नीर नीर निराला। धोया कलिजुग दाग काला। पूरन होई
गुरसिख घाला। आपे लाहे जूठा झूठा नेत्र लग्गा जाला। शब्द ठूठा हथ्थ फड़ाए, दस्से राह सुखाला। महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, आपे बणे सच्चा आप दलाला। नेत्र नीर अमृत जल। सर कराए वड वड थल। साचा धाम आप वखाए
दया कमाए, गुरसिख ओथे जाणा चल। हेरा फेरा दा राह ना कोई वखाए, आपणा बेड़ा आप उठाए, एका देवे नाम उछल।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म क्यारी आप चलाए शब्द सरूपी साचा हल। गुरसिख तेरा नेत्र नीर। बण जाए
मात साचा सीर। सतिजुग साचे संत जनां, मेला अन्त अखीर। साचे शब्द सुणाए हरि कन्ना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, इक्क चलाए शब्द साचा तीर। नेत्र नीर वहन्दी धार। गुरसिख तेरा मेरा सांझा दिसे इक्क प्यार। गुरसिक्खां
गुरमुखां मिले हरि जिउँ हीर रांझा यार। संत मनी सिँघ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा पती साची नार। कलिजुग
३३ होणा अन्त ख्वार। आप व्याहे आपणा बोला, तेरे तन पहनाए चिट्टा चोला उत्ते केसर छिटकार। महाराज शेर सिँघ साचा
०४ जाणो जगत पछाणो, बेड़ा कर जाए पार। नेत्र नीर माणक मोती। वेखो किवें जगदी जोती। गुरसिख गुर बण गए इक्को
गोती। दुरमति मैल हरि नर पूरे आपणी हथ्थीं धोती। उपजे शब्द अनहद अनाहद तूरे, घर साचे गुरसिख सवाणी, साची
राणी, गुर चरन बैठी सुहाणी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे तन श्रृंगार पहनाए, शब्द सोहणा कंगण तन पहनाए,
शब्द कंगण गल आपणे हरि लटकाए, गुरमुख साचे माणक मोती। आप बणाए गल दा हार। फेर बंधाए तेरी धार। कलिजुग
वेखो किवें पैंदी मार। सतिजुग आया विच दरबार। गुरमुख साचे संत जनां, करे चरन निमस्कार। साचा वर हरि जी
पाया, किथ्थे वसे किथ्थे हस्से सच्चा नर भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां संग रलाए सतिजुग तेरी
बणत बणाए, आप बन्नाए तेरी साची धार। नेत्र नीर अमृत धार। गुरसिख तेरे नेत्र डुल्ली, सतिजुग पावे साची सार।
आप रखाए चरन तेरी आत्म निधी, देवे एका अमृत साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति संतोखी अन्तिम
मोखी गए दोखी, सच होया पहरेदार। नेत्र नीर मारे उछल। प्रभ अबिनाशी साची जोती फिर दर घर साडे विच घल।
पर्दा उहला बड़ा रखाया ना कर वल छल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लड़ हथ्थ फड़ाया, दरस दिखाए घड़ी
घड़ी पल पल। नेत्र नीर वगे सवण। चारों कुन्ट गुरसिख तैनूं आवे ठंडी पवण। अट्ठे पहर दिवस रैण, ना देवे तैनूं सवण।

सच घर सच अवतार नर, ना वरते कदे कहर, गुरसिख साचे संत जनां चरन लगाए दया कमाए बेमुख खपाए जिउँ रामा रावन। नेत्र नीर चरन छुहाया। प्रभ अबिनाशी लेखे लाया। जेहड़े रहे भुल भुलेखे, उहदा फल एह खवाया। पंज जेठ लिखे साचे लेखे, नेत्र पर्दा देवे लाहया। दूर दुराडा हरि जी वेखे, करदा रहे ठंडी छाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे दान रक्खे माण ताण जगत जहान, करे कराए चले चलाए जो मन भाया। नेत्र नीर ठंडा ठार गुर पूरा तेरे चरन द्वार। बैठा हरि हाज़र हजूरे। जिहनूं जानण जीव दूरे, इक्क वजाए शब्द तूरे, सुणे हरि पुकार। लक्ख चुरासी आपे घूरे, गुरसिख बणाए साचे सूरे, शब्द कुठाली लए गाल। कारज करे हरि जी पूरे, आप नुहाए अमृत सुहाए साचे ताल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े माया राणी तेरा तणया जाल। बलिहार बलिहार बलिहारया। बलिहार बलिहार गुरसिक्खां खड़ा हरि द्वारया। बलिहार बलिहार पावे सार विच संसारया। बलिहार बलिहार आए द्वार जिउँ बावन बल द्वारया। बलिहार बलिहार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां जिन्हां मिल्या हरि निरंकारया। बलिहार बलिहार संत सुहेलया। बलिहार बलिहार गुर मनी सिँघ, सिख संगत कन्त साचे मेल मिला लया। बलिहार बलिहार होया धनवन्त, नाल तेरे तरी तेरी कौर बलवन्त, ना होए वक्त दुहेलया। बलिहार बलिहार प्रभ अबिनाशी आप बणाए बणत, अचरज खेल विच
३४
०४
मात दे खेलया। बलिहार बलिहार दोहां लग्गे इक्का सच्चा फल, लिख्या धुर दरबारया। बलिहार बलिहार मिल्या मेल हरि सच्ची सरकार, कलिजुग अन्तिम वेलया। बलिहार बलिहार जोत सरूपी हरि निराधार, गुरसिख तेरी आत्म करे सच अकार, गुर सूरा हाज़र हज़ूरा आपे बणे गुर गुर चेलया। बलिहार बलिहार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खाधा लेखे लाया जो खवाया अचार डेलया। तेरे डेले रोडे भोडे। वेखो सृष्ट सबाई किवें भज्जदे गोडे। गुरमुख चुक्के हरि जी आपणे सज्जे मोढे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारी सृष्टी आप खपाए, कलिजुग तेरी अन्धेरी रात मिटाए, बेमुख कोई रहण ना पाए, लाड़ी मौत फिरे हलकाई, एका दर घर गुरसिक्खां दे छोडे। बलिहार बलिहार बलिहार हरि सच्ची घोल घुमाईआ। बलिहार बलिहार बलिहार गुरसिख साचे तोल तुलाईआ। बलिहार बलिहार बलिहार प्रभ अबिनाशी साची बंधे धार करे जगत विहार, सतिजुग साचा मात धराईआ। बलिहार बलिहार बलिहार करे आपणा इक्क अकार, कलिजुग मूंह दे भार सुटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभनां रक्खे थांउँ थाँईंआ। बलिहार बलिहार बलिहार गुर चरन द्वारया। बलिहार बलिहार बलिहार गुरसिख तेरी आत्म सुत्ता पैर पसारया। बलिहार बलिहार बलिहार आप बणाए लहिजा फहिजा, कलिजुग जीव भक्ख रहे तेरे भोजन भोग लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिथ्थे खपाया हँकारी दर्योधन ओथे चरन फेर छुहा रिहा।

आपे जाणे अगाध बोधा, गुरमुख हिरदा जिस ने सोधा, धरी जोत कृष्न मुरारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे
दर द्वार आए छड्ड के पुरी सच्ची हरि निरंकारया। द्वापर तेरा अन्त विचारया। एह बणाया साचा घर, जिथ्थे पए वेखण
शाह शाहकारया। कौरों पांडो होए जवान, तीर खिचण इक्क दूजे नूं मारन वारो वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
जाणो हरि एह कृष्न मुरारया। कृष्न मुरारी बण के आया हरि जी शाम। पल्ले ना रक्खे कोई दाम। पूरे कर जाए आपणे
काम। हरया कराए गुरसिक्खां दा आपे चाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई वज्जी वधाई सुणे लोकाई
जिउँ त्रेता राम रमईआ नर नरायण। गुरसिख नेत्र पेख आत्म वेख, ना रसना सके कहण। बेमुख कलिजुग जीव धारी
फिरदे भेख, ना लिखे कोई लेख, घर घर पैंदे वेखो वैण। गुरसिक्खां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साक
सज्जण सैण। ना कोई तीर ना कोई कमान। ना कोई योधा ना कोई बलवान। ना किसे कोलों मंगण जाए कोई दान।
ना जाए किसे दर, ना सर करे इशनान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चिला शब्द चढ़ाया, त्रैलोकी किला देवे
ढाहया, रसना छोडे तीर कमान। तिन्नां लोकां बणी इक्क त्रैलोकी। प्रभ अबिनाशी माया जाल इक्को पाया, बैठा सभ नूं
३५ रोकी। कलिजुग जीव अन्तिम हरि जी साचे वेखे, अन्दरों होई सभ दी फोकी। एका साचा खेल रचाया, छोटा बाला अग्गे ३५
०४ लाया, उहदे पिच्छे सभ नूं देवे झोकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द तीर तिखा आपणी हथ्थीं आप कराया, ०४
तिखी रक्खी एहदी नोकी। ना कोई फड़ाए हथ्थ कटार। ना कोई सद्दे नाल वडा सरदार। एका एक हरि जी सच्चा, चारों
कुन्ट करदा जाए खबरदार। जिथ्थे वेखे भाण्डे काचे, बेमुखां शब्द हथौड़ा देवे मार। जिथ्थे वेखे गुरसिख सच्चा, एका
पौड़ा देवे चाढ़। ना एह लम्मा ना एह चौड़ा, गुरसिक्खां वखाए पहली हाढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि सृष्ट
सबाई चबाई बैठा आपणी दाढ़। ना रो रौला पाईं, एह बणाई सतिजुग तेरी सच्ची भैण। साक सज्जण सभ तजाईं, बेमुखां
नूं ना संग रलाईं, मन्नीं साचा कहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगत जगाई फेर वखाए खोल्ह सच्चे
नैण। सच्चे नैणा देवे चानण। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञानण। होए तेज कोटन भानण। साचा दर हरि साचे मानण। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा काज आप रचाया, कलिजुग सतिजुग दोवें कुड़म कुड़ाम जानण। विच विचोला हरि जी,
ना कोई रखाया पर्दा उहला, इक्क ल्या डोला कलिजुग नारी लए व्याहया। मातलोक विच्चों बाहर कढाए, शब्द साचा धरत
मात तेरी गोद बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा बाणा सच्चा राणा आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। चले
तीर सच्चा तुफंग। चारे कुन्ट वेखो रंग। किवें वहन्दी खून गंग। अष्टभुजा प्रभ दर मंगे एहो मंग। हथ्थीं मेरे मैहन्दी लावीं,

एका देवीं सच्चा संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा हुक्म आप सुणाया, सच्चे राहे आपे पाया पहली माघी रहे बैठा चिट्टे अस्व कस तंग। चिट्टे अस्व तंग कसाया। साचा रंग हरि कराया। साध संगत संग रखाया। आप वसे अंग संग, बेमुखां करे भंग, पहली कूट जंग कराया। बेमुख सारे होवण नंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम नेड़े आया। गुरसिक्खां शब्द सरूपी देवे दोषाला। गुरमुख साचा विच लपेटयां इक्को साचा लाला। आपे बणे खेवट खेटयां, प्रभ अबिनाशी दीन दयाला। एका मन गुर चरन भेंटयां, पूरन होई घाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे गुरसिक्खां प्रितपाला। साचा रंग हरि मजीठी रंगया, करनी इक्क विचार। बन्नी शब्द धार दर घर साचे ना सन्गया, मानस जन्म ना आवे वारो वारया, लक्ख चुरासी जाए हार। ना कोई पहनाए तन शब्द शृंगार। सच्चा कंगण ना कोई देवे अमृत धार, ना खुल्हे बन्द कवाड़, ना कढ्ढे विच्चों मार ठग चोर यार। ना तोड़े कोई फन्दया, सृष्ट सबाई भरया आत्म इक्क हँकार। दर घर घर रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे आपणी कार। गुर प्रसादि हरि वरतांयदा। गुरसिक्खां झोली पांयदा। वारो वारी हरि पिलांयदा। जगत ख्वारी आप मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम भारी, प्रभ साचा राह चलांयदा गुरमुखां देवे चरन प्यारी, सच प्रीती आप वखांयदा। ना कोई रहे दर जीव हँकारी, भरम भुलेखे सारे लाहिंदा। जो जन आए चल सच्चे दरबारी, प्रभ तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। साची जोत जगे निरँकारी, निहकलंक नाउँ रखांयदा। चारों कुन्ट दए बहारी, बेमुखां सिर खेह आपे आप पांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम इक्खी वढ्ढु हाढ़ी, धर्म राए तेरे दर बहांयदा। राजे राणे आवण पिच्छे अगाड़ी, ना कोई किसे अटकांयदा। अन्तिम किस्मत होई माढ़ी, कलिजुग झूठी चोली पाड़ी, ना कोई जगत सवांयदा। मगर लग्गी मौत लाड़ी, बेमुखां नाल हरि प्रनांयदा। गुरसिक्खां शब्द घोड़ी रिहा चाढ़ी, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे रक्खे लाज गुरसिख सच्ची तेरी वाड़ी, काला दाग़ कोई तन रहण ना पांयदा। बेमुखां हरि जी पाए झाड़ी, धर्म राए दर जाए वाड़ी, ना कोई किसे छुडांयदा। गुरसिक्खां आत्म जोत जगाए विच बहत्तर नाड़ी, दीपक एका सच्चा विच टिकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुर प्रसादी, गुर प्रसाद आपणी हथ्थीं वरतांयदा। साचे हार गल लटकाए। अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे गुरसिक्खां नाल बंधाए, विच खलोता हरि जी फब्बे, चारों तरफ गुर संगत संग रलाए, कलिजुग मिल्या अन्तिम झभ्भे, हौली हौली धुरदरगाही आए बाहर विच्चों पड़दे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सारी सृष्ट जूह जंगल विच पहाड़, गुरसिख तेरी आत्म अन्दर आसण डेरा लाया, सुहणा लाड़ा आसण फब्बे। साचे हार तन शृंगारे, गुरसिख व्याही सुलक्खणी नार। फड़ फड़ बाहों रिहा तार। वेखो कलिजुग अन्तिम केहड़ी वरते कार। शब्द

झोली दात भराए सोहँ अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरी धन्न कमाई, तिन्नां लोकां मिले वड्याई, धरत मात तेरी चरनी रही सीस झुकाई, निहकलंक तेरे आया दर देण सच्चा वर, सृष्ट सबाई जिस भुलाई। सृष्ट सबाई वज्जा ताअना। गुरसिख तेरी हथ्थीं बद्धा गाना। दरगहि साची माण दवाए, किरपा कर वाली दो जहाना। ओथे कोई होर ना जाए, जिथ्थे वसे नैण मुधाना। एका राह गुरसिक्खा दस्से, सिध्धा रक्खे इक्क निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सद हिरदे वसे, आपे बणे जाणी जाणा। हरि साचे तन श्रृंगारया। कलिजुग अन्तिम जिस ने मारया। मुहम्मद दीना करे ख्वारया। दाना बीना आप निरंकारया। गुरसिक्खां करे ठंडा सीना, अमृत मेघ आप बरसा रिहा। साचा अमृत नाम सरोवर पीणा, हरि साचा, वेख हरि आपे आप उपजा रिहा। सोहँ देवे सच्चा जाप, मारे तीनो ताप, गुरसिख लग्गे ना कोई पाप, चरन प्रीत निभा रिहा। प्रगट होया आपे आप, कलिजुग पापी जाए कांप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत ना कोई दिसे वरन गोत, सृष्ट सबाई एका एक बणा रिहा। एका एक इक्क होए। गुरसिख तेरा खोल्हे तीजा लोए। हरि बिन अवर ना दिसे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए चरन सीसे, दुरमति मैल धोए। साची मालण तेरे घर आई, सिर ते चुक्की फूल्लां खारी। तेरी रिहा बणत बणाई, गुरसिक्खां लग्गे एह प्यारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अन्तिम ढेरी ढाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरँकारी तन श्रृंगारी किरपा धारी पहली वारी दर दरबारी, निहकलंक नरायण नर अवतारी। गुरमति हरि समझांयदा। मनमति दूर करांयदा। दुरमति मैल सर्ब गवांयदा। धीरज यति इक्क रखांयदा। एका देवे सच्चा तत्त, सोहँ शब्द नाम दवांयदा। आपे रक्खे वेले अन्तिम पति, धर्म राए फंद कटांयदा। साचा बीज बीजे आत्म साचे वत, साची दरगहि साचा फल खवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, घर साचे बण के आया साचा कान्हा। साचा कान्हा आप घनईया। जिस चलाई सभ दी नईआ। चार वरन कराए भैणां भईआ। सृष्ट सबाई लेख लिखईआ। ना कोई कलम दवात, ना कोई रक्खे कोल वहीआ। गुरमुख साचे संत जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी बणत आप बणईआ। गुर संगत तेरी सुण पुकार। प्रभ अबिनाशी आया किरपा धार। होण वाला हरि सच्चा, सच्चे शब्द अस्वार। आपे वेखे चारों कुन्ट बेमुख जीव कच्चा, गुरसिक्खां बाहों फड़ फड़ विच्चों कढ्ढे बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खेल आपणा रचा, बचया रहे ना कोई बच्चा, घर घर रंडी होवे नार। कलिजुग रंडी होई दुहागण। मिल्या हरि सच्चा ना कोई जगत सुहागण। साचा लेख हरि लिखाया, प्रगट जोत पहली माघन। साचा शब्द इक्क उपाया, सोहँ जिस दा नाम रखाया, गुरसिक्खां तन बन्न्हे तागण। एका नाद

३८ ०४

आप वजाया, चार कुन्ट दए सुणाया, सुत्ता कोई रहण ना पाया, हरि जी सच्चा जामा पाया, पुरी घनक भाग लगाया, गुरमुखां धोवे आत्म दागन। भरम भुलेखा दूर कराया। साचा लेखा आप लिखाया, वेखा वेखी जगत भुलाया, गुरसिक्खां पकड़ी बैठा दो हथ्थीं आपे वागन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन नेत्र पेखा लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। आत्म वज्जी सच वधाईआ। नौ निधां अठारां सिद्धां तेरे वस कराईआ। आप कराई साची बिधा, लक्ख चुरासी जिस ने रिद्धा, आपणा भत्ता आप पकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां साचे सिक्खां सच्चा राह इक्क वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग पाईआ। एका राह लैणा वेख। जगत छड्डुणा झूठा भेख। मिटदे जाण औलीए पीर शेख़। गुरसिक्खां तन ना लग्गे सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को नर नरायण निराहार, निराधार तिन्नां लोकां करे अकार, लक्ख चुरासी पावे सार, जोत सरूपी एका एक रक्ख टेक, करे बुध विबेक, आत्म दिसे बजर कपाटी, सोहँ शब्द नाल करे छेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणी हथ्थीं लिखे लेख। आपे बणे लेख लिखारा। गुरसिक्खां कर आप प्यारा। साचा देवे नाम अधारा। जो जन मंगण आए पहली वारा। फेर ना भुले विच संसारा। आत्म सर साचा खुल्ह्रे, भरया रहे भण्डारा। ना कोई लैंदा हरि जी मुल्ले, देवे नाम अपर अपारा। आप वसाए काया कुले, सच्चा इक्क मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप रचाए, साची जोत आप टिकाए, जोत जगाए अपर अपारा। ना कोई लवे हरि जी मुल। चरनी सीस गुरसिख निवाए बख्शे पिछली भुल। सिध्धा राह फेर वखाए भाग लगाए साची कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां अमृत साचा सीर प्याए आपणे भर भर चुल। अमृत सीर पींदे जाणा। तन सोहँ धागे नाल सींदे जाणा। दहि दिश भौंदा फिरे मन, गुरमुख साचे गुरचरन बहिंदे जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जाम आप पिलाए, साचा दान झोली पाए, दरगहि साची पींदे खांदे जाणा। अमृत साची धार ठंडी ठार। गुरसिक्खां रोग गंवाए तृष्ना लाहे अग्न बुख़ार। साचा जोग नाम दवाए, रोग सोग फंद कटाए, मानस जन्म लेखे लाए, मात कुक्ख सुफल कराए, गर्भवास फेर ना होए दूजी वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मुख चुआए, किरपा कर अपर अपार। साचा मेघ हरि बरसांयदा। गुरमुखां तृखा मिटांयदा। दर घर साचे मंगण साची भिक्खा, हरि जी साची झोली आप भरांयदा। साची सिख्या सोहँ शब्द लैणी सिक्खा, दुरमति दूई मैल प्रभ सारी आपे लाहिंदा। साचा लेख हरि जी लिखा, ना कोई फेर मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया गुरसिक्खां माण दवांयदा। गुरसिक्खां मिल्या साचा माण। घर चल आया हरि भगवान। सोहँ दित्ता शब्द धुरदरगाही आप बबाण। साचा

दान कर इशनान, चरन धूढ़ लाण। बेमुख जीव अन्तिम होए मूढ़, चारों तरफ पैणे जूड़, आप शब्द वेलणे पीड़े साचे बूड़, गुरसिख बणाए चतुर सुजान। अमृत चले सच फुहारा। गुरमुखां देवे साची धारा। गुरसिख साचे संत जनां तेरे हथ्थ फड़ाया सोहँ आरा। दोहीं हथ्थीं खिची जाईं, सृष्ट सबाई आरा पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हिरदे हरि वास रखाए, तेरा दास आप बण जाए, साचा देवे इक्को बल प्यारा। देवे बल वडा बलकारी। मारे विच मैदाना शब्द कटारी। वेखो हुन्दी जगत ख्वारी। निहकलंक कलि जामा पाया, होण वाला चिट्टे अस्व अस्वारी। साचा शब्द संग रलाया, गुर संगत तेरा पल्लू आपणे नाल बंधाया, ना छुट्टे अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां देवे जीआ दान हो मेहरवान, दोए जोड़ गुर चरन सरन करो निमस्कारी। अमृत रस साचा चट्ट, काया चोली झूठी माटी। कलिजुग जीवां अन्तिम पाटी। गुरमुख साचे संत जन दर घर साचे साचा लाहा लैण सच्ची खट्टी। घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा हट्ट खुलाया, तकड़ वट्टा ना कोई रखाया। सोहँ शब्द उपजाए गुरसिक्खां दे हथ्थ फड़ाए बहाए साची हट्टी। साची हट्टी साचा नत। ना कोई खेल बाज़ीगर नट। गुरसिक्खां तन श्रृंगार कराए, आत्म साची जोत जगाए, वसे घट घट। अमृत मेघ आप वरसाए, जोत जगाए लट लट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला विच मात तेरे घर साचे दर लाहा लए खट। गुरमुख विरले दर साचे लाहा खट्टणा। सोहँ साचा शब्द इक्क लगाए वट्टणा। साचा शब्द स्वास चलाए, एका रस साचा चट्ट,णा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस जोत जगाई, भुली रही सर्ब लोकाई, इक्को देस इक्को वेस, करे कर आवे भेस, जिस नूं लभ्भदे फिरन प्रगट होया विच पटना। आप संवारे आपणा काजा। जोत प्रगटाए प्रभ देस माझा। बेमुखां हरि जी दिस ना आए, गुरसिक्खां रक्खे प्रभ आपे लाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाए, शब्द रक्खे इक्को ताजा, निहकलंक जोत जगाई, मात करया चानणा। गुरसिक्खां हरि दए वधाई, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानणा। आपे तारे फड़के बाहीं, दरगहि साची होवे जामना। कलिजुग लग्गी झूठी छाही, आपणी हथ्थीं आप पूर कराया कामना। बेमुखां गूढ़ी नींद सवाई, उत्ते माया चादर पाए गुरसिक्खां पूरन बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा हरि, आपणा भेव वड देवी देव आपे रिहा छुपाई। निहकलंक निराहार। जोत सरूपी इक्क अकार। शब्द रक्खे खण्डा दो धार। पाउँदा जाए वंड नौ खण्डां पृथ्मी देंदा जाए सभ नूं दंडां, मिटाए भेख नंगीआं होईआं सभ कंडां, ना कोए देवे किसे सहार। बेमुखां आत्म होया रंडा, घर घर जीव फिरन घमंडा, प्रभ अबिनाशी हथ्थ हथौड़ा आप उठाया। सोहँ जिस दा नाम रखाया। कलिजुग तेरे सिर विच लाया। घर साचे विच्चों बाहर

कढाया। कलिजुग वेला अन्तिम आया। तेरा ना कोई दिसे नगर खेड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ सारा भेव दए खुल्हाया। सारा भेव आप खुल्हाए। नौ खण्ड पृथ्मी जो वरताए। सत्त दीप वड महीप, खाली कोई रहण ना पाए। कलिजुग अन्तिम चलाए इक्क साची रीत, सोहँ शब्द सुणाए सुहागी गीत, गुरसिक्खां बन्न्हाए चरन प्रीत ना कोई छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान, सच्चा झुलाए इक्क निशान, उत्ते लिखे लेख महान, साची धारा आप बन्न्हाए। साची धार बन्न्हे सृष्ट सबाई कर्म विचार। कलिजुग अन्तिम आई हार। विच मात डिग्गा मूंह दे भार। उत्तों वज्जे शब्द मार। लक्ख चुरासी कीती मात जिस ख्वार। गुरमुखां आत्म हरि जी रक्खे भीन्नी, अमृत बख्शे साची धार। एका दात वड करामात सच सुगात हरि जी साचे दीनी, आप मिटाए आत्म अन्धेरी रात। गुरसिख साचे संत जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए, प्रगट होए स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए, बैठा इक्क इकांत। इक्क इकल्लड़ा वसे साचे थां, ना फड़े बेमुखां बांह, गुरमुख साचे संत जनां आत्म दर दुआरे अग्गे हरि जी साचा खलड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दानी दान, गुरसिक्खां देवे चरन ध्यान सच्चा इशनान, आत्म जोत जगाए तेज रखाए कोटन भानना। होए जोत सच्ची प्रकाश। बाकी रहि गए दो मास। गुरसिक्खां करे बन्द खलास। आत्म बैठ साचे घर, हरि जी पावे साची रास। कलिजुग अन्तिम नेड़े आया, गुरसिक्खां करे बन्द खलास। बेमुखां हरि धक्का लाया, दर घर साचे बेमुख कोई रहण ना पाया, गुरसिक्खां होया आपे दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल आप रचाया। जोत सरूपी जामा पाया। पड़दा उहला आप रखाया। रेख रूप ना कोई रखाया। बेमुखां हरि दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। नरायण नर धरनी धर। आपणी करनी रिहा कर। गुरसिक्खां देवे साचा वर आप खुल्हाए आत्म दर। सर्ब भण्डारे देवे भर। सच नुहावे अमृत साचे सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए, गुरसिक्खां रिहा बणत बणाए, साचा भाणा सिर ते जर। भाणा मन्नणा हरि भगवान। तिन्नां लोकां झुल्ले इक्क निशान। जोत धराए श्री भगवान। मारे फड़ फड़ हँकारे बेमुख जीव बेईमान। गुरसिक्खां पैज संवारे, बणया रहे दर दरबान। जोत सरूपी जामा पाया, आपणा भेव ना किसे वखाया, गुरमुख साचे तेरी आत्म सेजा हरि जी डेरा लाया। बेमुख लभ्भदे फिरन चार कुन्ट ना मिले वाली दो जहान। ना हरि नीला ना हरि काला ना हरि पीला ना हरि लाल गुलाला। जोत सरूपी इक्को जगे जोत गुरसिख करो हीला, हरि बणया आप दलाला। ना कोई वरन ना कोई गोत, दुरमति मैल रिहा धोत, विच मात धर जोत, साचा हरि दीन दयाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आत्म वास रखाए, ना वसे किसे

मन्दिर ना धर्मसाला। गुरसिख तेरी काया सच्ची धर्मसाल। जिथ्थे बैठा हरि जी आत्म जोती रिहा बाल। गुरसिख साचे संत जन विच मात लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भे आप अनमुल्लड़े लाल। एका मुल आप पवाए, दूजा कोई ना परखण आए, आपे बणया विच दलाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द इक्क चलाए, सतिजुग तेरी बणत बणाए, महिंमा अगणत गणी ना जाए, चार वरन दे वसे कोल। खलो के खिड़ खिड़ हस्से। शब्द तीर एका कसे। झूठे बाणे झूठे ताणे आप मिटाए, कोई रहण ना पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व आया कसे। हरि जी साचे तंग कसाया। शब्द घोड़ा दर बहाया। देण वर साचे घर गुरसिख तेरी आत्म डेरा लाया। जिस दा खुल्ला रहे दर, देंदा रहे सच्चा वर, चरन लाग जाणा तर, पूरन भाग, धोया दाग चुक्कया डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा घर जिस इक्क वखाया। साचा घर इक्क वसेरा। गुरसिक्खां वसे नेरन नेरा। चारों तरफ शब्द घेरा। अन्तिम वेला कलिजुग आया आपे करे नबेड़ा। गुरसिक्खां माण ताण रखाया, आपे बन्ने सेहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप लिखाया, सृष्ट सबाई लग्गे इक्क उखेड़ा। इक्क उखेड़ा आपे लाया। मक्का मदीना पहले ढाहया। मक्का मदीना जाणा ढठ्ठ। आप झुकाए वडा भठ्ठ। सृष्ट सबाई गिड़ाए उलटी लठ्ठ। माझा देस पार ब्यासों आवे नठ्ठ।
४१ ०४ निहकलंक अग्गे मिले जोत सरूपी पिण्ड भंडाली करे इक्ट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा हाली साचा पाली, गुरमुखां करे आप रखवाली, ना वसे किसे तीर्थ ना वसे किसे तट। ना कोई तीर्थ ना कोई तट। हरि जी वसे घट घट। गुरमुख एका झाती मार, आपणी काया मट। प्रभ अबिनाशी खोल्ही बैठा ताकी, अग्गे जोत जगे लट लट। लेखा आप चुकाए, गुर गोबिन्द जो होए तैथों आकी। निहकलंक कलि जामा पाया, बेमुखां चोली सारी पाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डंक शब्द सुणाया। चार कुन्ट डंक वजाया। उठो सिक्खो बल धारो, निहकलंक जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। रक्खे भाणा आपणे हथ्थ। सृष्ट सबाई पकड़ी नत्थ। चारों कुन्ट रिहा मथ्थ। गुरमुख साचे संत जनां, बाहों पकड़ आप चढ़ाए सोहँ साचे रथ। कलिजुग अन्तिम बेमुखां हरि जी पाए नत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई रसना कोई रहे ना खाली, महिंमा जगत अकथ्थ। सच दरबार सच सुल्तान। सच घर बाहर सच निशान। सच शब्द सच अस्वार सच मेहरवान। साची देवे नाम धार विच संसार, किरपा कर महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवान देवे दान, गुरसिख बाल अञ्याण, बणाए चतुर सुजान वाली दो जहान। निहकलंक वड बली बलवान। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त आप उठाए सत्तर लक्ख पठान। फड़ फड़

बाहों वक्ख कराए, माझे देस सिध्धे आण। माझे देस भक्ख कराए, गुरसिख साचे रक्ख वखाए। आप रखाए आपणी आण। जोत सरूपी जामा पाया, धारे भेख श्री भगवान। माझे देस जोत जगाई। बेमुखां सार कोई ना पाई। गुरमुख साचे संत जनां हरि आप मिटाए आत्म तृखा, अमृत सीर बूंद स्वांत रिहा प्याई। साची देवे हरि जी सिक्खा, नाल रखाए सोहँ शब्द तीर तिक्खा, दुरमति मैल रिहा लाही। कलिजुग तेरी झूठी विखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरे बहाई गुरसिक्खां रिहा गंवाई।

✻ ८ चेत २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी हरिसंगत दे नवित्त ✻

वड बली बलवान हरि निरँकार, एका बख्शे गुरसिक्खां चरन ध्यान, देवे शब्द आप महान है। आप मिटाए आत्म तृखा, जो जन मंगण आए साची भिखा, देवे नाम गुणवन्त गुण निधान है। साचे लेख हरि जी लिखे, आत्म लाहे झूठी विखे, सोहँ शब्द तीर तिक्खा रसना खिच्च चलाए इक्क तीर कमान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ वजाए डंक सच्चा हरि शाह सुल्तान है। सच्चा हरि गुरमुख जाण लै। मात जोत सच धराई, माझे देस करे रुशनाई, लै के आया साची कान। बेमुखां रिहा भुलाई, आत्म पर्दा झूठा पाई, होए अन्ध अंध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए अन्तिम वेले इक्क मुकान। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त। भुले फिरन जीव जन्त। ना कोई बणाए किसे बणत। मेल मिलावा किसे ना होया गुरमुख विरला विच मात आप जगाया। हरि जी सोया दुबिधा होई नासे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्का दात वड करामात सच सुगात गुरसिक्खां झोली पाया। आप पढ़ाए इक्क सच्ची जमात, गुरसिक्खां पढ़या इक्को अक्खर। लक्ख चुरासी विच्चों कीना वक्खर। बेमुखां अन्त कलिजुग माया पाई तन कीना पत्थर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुरमुखां फड़दा आपे बाहीं। गुरमुखां भरम निवारे। सर्ब जीआं आपे पावे सारे। आप जगाए जोत अपर अपारे। कलिजुग वेला अन्तिम आया, निहकलंक कलि जामा धारे। गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम बेड़ा पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी इक्का बैठा गुरसिक्खां अवाजां मारे। आत्म बैठा तत्त ज्ञानी। साची देवे शब्द निशानी। इक्को मारे साचा तीर, वज्जे गुरमुख तेरे हिरदे कानी। आप प्याए अमृत साचा नीर, दूई द्वैत देवे चीर, वेला अन्त कलि अखीर, मिटदे जाण पीर फकीर, चारों तरफ पए वहीर, गुरसिक्खां बणे आपे बानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुर संगत तेरी गांदी। गुर संगत हरि देवे माण। देवे साचा शब्द दान। गुरमुख साचे संत

जनां मेल मिलाए हरि मेहरवान। आपे बैठा हरि जी वेखे कलिजुग जीव भाण्डे काचे विच जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल रचाए विच मात महान। गुरमुख साचे लए रक्ख, हरि मेहरवान है। बेमुखां पाए नत्थ फड़े हथ्थ, गुरमुखां देवे माण है। गुरमुख साचे नेत्र पेख आत्म उतारे तृख, अमृत प्याए बूंद महान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, चरन रखाए माण ताण है। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। लक्ख चुरासी होई मात ख्वारी। तट्ट तीर्थां बैठे ठग चोर यारी। मिटाए कलि साचे सीरथा, धीआं भैणां करन ख्वारी। ना रहे कोई साचा नीरथा, कलिजुग होए दुराचारी। जोती जोत सरूप हरि, धरत मात साचे दर बहाए, अन्तिम कलि जामा धारी। धरत मात दर पुकारे। कलिजुग जीव सर्ब हँकारे। आत्म अन्धे पापी गन्दे, भुल्लया हरि दातारे। माया लग्गे झूठे धन्दे, ना कढ्ढे कोई बाहरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किरपा कर साचे हरि, मेरे उत्तों लाह पापां भारे। धरत मात हरि दर साचे वैण पावे। मेल मिलावा प्रभ अबिनाशी, तेरे बिनां केहड़ा दुरमति मैल बेमुखां दी मात धोवे। आप प्याए अमृत साचा सीर, साचा दीपक हरि आप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी लग्गी छाही वेले अन्त आपे सृष्ट सबाई मल मल धोवे। धरत मात आई दर अग्गे। हरि जी साचे विच मात लग्गी बड़ी अग्गे। बेमुख जीव चारों कुन्ट उठ उठ वेखण, सारे बद्धे

४३ ०४ एका धग्गे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, लाड़ी मौत मात धर, इक्को मार मारे लावे सारे अग्गे। धरत मात सुण पुकार। निहकलंक कलि ल्या अवतार। पुरी घनक आया वारो वारी जामा धार। चिट्टे अस्व हो अस्वार। साचा डंक जिस वजाया, सृष्ट सबाई दए सुणाया, पड़दा उहला ना कोई रखाया, जोत सरूपी जामा पाया, गुरसिक्खां आत्म डेरा लाया, साची जोत जगाए अपर अपार। गुरसिक्खां हरि घेरा पाया, शब्द सरूपी मेल मिलाया, आप आपणी किरपा धार। एका गेड़ा दए दवाया, पहली कूट दे सजाया। कलिजुग अन्तिम बेमुखां पैंदी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे दुःख मिटाए, पूर्ब कर्म विचार। धरत मात तेरी वंड वख कराए। गुरसिख साचे लैणे रक्ख, तेरी गोद बहाए। तेरी आत्म उपजाए सुख, बेमुख हरि धर्म राए दे दर बहाए। बचया कोई ना रहे विच मात कुक्ख, साचा हरि जी गए भुलाए। उल्टे दस मास रखाए। बेमुख जूठे झूठे कलिजुग अन्तिम गए थक्क, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। अमाम मैहन्दी बण के आया। पल्ले दाम ना कोई ल्याया। करे कराए जो मन भाया। भेव ना रक्खे कोई राया। सतिजुग साचे साधां संतां लए बुलाया। शब्द गंढु देवे वंड, झोली दए भराया। आपे पाए सीने ठंड, लग्गी प्रीत जाए निभाया। गुर पूरा देवे ना कदे कंड, बाहों पकड़ पार कराया। बेमुखां करे खण्ड खण्ड। आप कराए विच

४३ ०४

नौ खण्डां वंड। कलिजुग जीव देण दुहाई, रोवे घर घर नार रंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे
आप वरताया। कलिजुग तेरी पाई चाल। बेमुख ना सके मात संभाल। सभ दे भन्ने हरि जी डाल। लक्ख चुरासी देवे
गाल। एका दीपक लए बाल। आप तनाया लक्ख चुरासी जाल। विच बन्न के लयावां शब्द डोर नाल। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, एका तणया माया जाल। माया जाल हरि तणाया। लक्ख चुरासी विच फसाया। शब्द डोर नाल बंधाया।
कलिजुग रो रो पावे वैण, वेला अन्तिम गया किसे हथ्थ ना आया। आपणे दर दए दुरकाया। एका धक्का दए लगाए, हरि
जी आपणा खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई खाए जिउँ मौत डैण, बेमुखां
मानस जन्म गंवाया। गुरमुखां हरि ल्या वर, बेमुख सुत्ते पैर पसार। अन्तिम कलिजुग पैणी मार। हरि जी आया जामा
धार। बेमुख डोबे अद्धविचकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्ना लोकां पावे सार, तिन्न लोक चौदां हट्ट। हरि
जी वसे घट घट। दुरमति मैल रिहा कट। आप लपेटे साचे पट्ट। दूई द्वैती गए फट। साचा लाहा गुरमुख साचे, प्रभ
दर लैण खट्ट। प्रभ अबिनाशी आत्म जोत जगाए लट लट। आप बणे बणाए साक सज्जण सैण, सोहँ शब्द साचा रसना
४४ लैणा चट्ट,। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख कलिजुग जीआं अन्तिम वेले आपे भन्ने काया झूठा मट। झूठा मट ४४
०४ देवे भन्न। कलिजुग अन्तिम आया बेमुखां लाए डन्न। गुरसिक्खां साचा शब्द विच सुणाए कन्न। सोहँ शब्द जिस रसना ०४
गाया, बेड़ा देवे बन्न। सतिजुग साचा मात धराया, बेड़ा उठाया कन्नृ। धरत मात दी गोद बिठाया, साचा बचन रिहा
मन्न। गुरमुख साचे संग रलाया, बेमुखां देवे डन्न। आत्म मेवा इक्क लगाया, भाण्डा भरम प्रभ दित्ता भन्न। करोड़ तेतीस
सुरपति राजा इन्द चरन टिकाया। निक्का बाला अग्गे लाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा दोषाला एका एक
गुरमुख साचे तेरी काया चोली उत्ते पाया। सुरपति राजा इन्द चरन द्वारया। हरि आप उठाए बन्नृ बेड़ा, दरस दिखाए
कृष्न मुरारया। आप चढ़ाए साचे चन्दे, जगे जोत अगम्म अपारया। गुरसिख जगाए बण जाए प्रभ साचे दी साची बिन्दे,
भरम भुलेखा दूर करा रिहा। बेमुख जीव कलिजुग अन्तिम हँकारे करन निन्दे, पर्दा उहला इक्क रखा रिहा। प्रगटी जोत
हरि मृगिन्दे, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे अन्तिम कलि गुरमुखां आप लिखा
रिहा। इक्क इक्क इक्क अकार है। दूजे बंधे शब्द साची धार है। तीजे तीजा नेत्र खोलृे, बूझ बुझाए दस्म दुआर है।
चौथे घर साचे विच बोले, गुरमुख तेरी आत्म बैठा सुत्ता पैर पसार है। पंचम् गुरमुख मुखों कोई ना बोले, प्रभ सोहँ शब्द
तन पहनाई सच्ची इक्क कटार है। छेवें घर पड़दे देवे खोलृे, ना करे कोई उधार है। सतवें सत्तां दीपां आपे करे चोलृे,

जोत हरि निरँकार है। अठवें अट्ठे पहर रहाए विच काया चोले, ना जाणे जीव गंवार है। नावां नावें दर ना वसे किसे घर, चार कुन्ट आवे डर, ना मिले हरि मेहरवान है। दसवां दस्से साचा राह। आत्म देवे खोटा भरम मिटा। प्रभ अबिनाशी किरपा करे देवे वरे, साचा शब्द झोली पा। दस चेत दिवस विचार। प्रभ अबिनाशी करे सच्चा एह विहार। जगत साची बणत बणा, देवे चेत महीने सच धार। गुरबाणी दी नींह रखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। दस चेत जाणा जाग। प्रभ अबिनाशी लाए भाग। इक्क सुणाए शब्द राग। किरपा करे गुरमुखां लाहे पिछला धो पापां दाग। अमृत साचा जाम प्याए, आप बणाए हँस काग। आत्म तृखा हरि बुझाए लग्गी ना रहे तन विच आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध संत जीव जन्त लाहुंदा आया पापां दाग। साध संत सच सुहेले। जुगां जुगां दे विछड़े दस्म चेत करे मेले। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी विच मात दे खेले। लेखे लाए मानस जन्म जोत जगाए बिन बाती बिन तेले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी काया फल लगाए इक्को बार। सच्चा फल जाए लग्ग। आत्म जोती जाए जग। शब्द सरूपी गुरमुखां बन्न्हे तग। बेमुख जीव कलिजुग मारे, आप लगाए धर्म राए दे अग्गे वग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग आपे पकड़े बेमुखां दी शाह रग। शाह रग पाए हथ्थ। बेमुखां हरि सोहँ पाए नत्थ। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई जिउँ रामा घर दसरथ। राम, राम रूप अवतार। त्रेता जिस ने किया पार। रावण किया जिस ख्वार। निमाणयां पाई सार। जाए भीलणी दित्ती तार। चरन छुहाया साची सिला, अहल्लया उडी मार छाल। बैठा रहे इक्क इकल्ला, जोत सरूपी हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, मातलोक कलि आवे जावे वारो वार। द्वापर आया हरि मुरारी। मातलोक खेल न्यारी। साची कीती आपे कारी। हथ्थ ना फड़े कोए कटारी। एका करे रथ सवारी। फड़ हथ्थ वाग प्यारी। जन भगतां होया चोबदारी। जोत सरूपी जोत हरि, आपे करे आपणी कारी। कलिजुग अन्तिम ल्या विचार। हरि जी किया खेल अपार। जोत सरूपी जामा धार। बेमुख सुट्टे मूंह दे भार। आपे पावे दो हथ्थां दा भार। गुरसिक्खां देवे इक्क प्यार। आप बहाए सच दरबार। जिथ्थे वसे हरि निरँकार। जोत सरूपी हरि वडा वड शाहो भूपी, खड़े रहण दर दरबार। एका दिसे हरि सच्चा सति सरूपी, जन भगतां रिहा तार। ना कोई जगाए ना कोई वखाए किसे रंग रूपी, जोत सरूपी हरि हिरदे रिहा विचार। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, ना कोई पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे एका एक सच्चा नाम अधार। इक्क सच्चा हरि सुहाना। ना कोई जाणे बिरध बाल जवाना। सर्ब

जीआं दी आपे जाणे आपे देवे माणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए विच मात सिख स्याणा। चरन कँवल जिस जन सेव कमाई। मानस जन्म लेखे लाई। चरन कँवल मिले वड्याई। लक्ख चुरासी हरि दए टिकाई। चरन कँवल गुरमुखां हिरदे रिहा मवल, आत्म जोत करे रुशनाई। देवे माण उप्पर धवल, विच मात सच्ची वड्याई। आप उलटाए नाभ कँवल, अमृत बूंद उत्तों इक्क चुआई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती दे जगाई। आत्म जोती निकले लाट। पूरा करे गुरमुख तेरा पिछला घाट । अग्गे कर गुर चरन वसेरा, तेरे आप जगाए एका सच्ची जोत ललाट। अन्तिम वेला आया नेड़ा, कलिजुग चोला गया पाट। सतिजुग साचे विच मात लाया डेरा, सोहँ शब्द रसना रस गुरमुख साचे चाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए, दूसर होर ना दिसे कोए, भाग लगाया काया माट। अमृत तेरी धार, रंग अपारया। गुरमुखां देवे कर प्यार, ठंडी ठारया। मानस जन्म जाए संवार, ना आए दूजी वार विच वरभण्डया। आप बहाए सच दरबार, ना होवे कदी रंडीआ। गुरमुखां ल्या वक्त विचार, सोहँ फड़ी हथ्थ विच डण्डीआं। सोहँ शब्द देवे तार, प्रभ पाई साची वंडीआ। गुरमुख साचे संत जनों, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ के राहे पाए धुरदरगाहे ना देवे कंडीआ। सोहँ कंडा उठाया। जिस दा दिसे इक्को डण्डा, विंग ना कोई विच रखाया। गुरमुख तेरा अन्तिम वेखे पिण्डा, जोत सरूपी विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जगत अमोला गुरमुखां बणे गोला विच मात दे आया। साचा तोल हरि जी तोले। गुरमुखां दे आत्म बोले। बेमुखां दे पर्दे खोल्हे। गुरमुखां देवे शब्द झकोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका माया पर्दा पाया, आत्म अन्धेर जगत रखाया, आपे वसे उहदे ओहले। माया पड़दा पा, आपणा आप ल्या छुपा। किसे ना दिसे सच्चा थां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हिरदे वसे दिसे किसे ना लग्गे भोग साचे सीर। आपे कढ्ढे विच्चों पीड़। गुरमुख साचे संत जनां, अमृत आत्म देवे सच्चा सीर। साचा नाम देवे हरि सोहँ शब्द धन धना, ना मिले कोलों किसे अमीर वज़ीर। साचा शब्द सुणाए हरि कन्ना, बज़र कपाटी देवे चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रसना नाम जपाए, सोहँ शब्द देवे साची धीर। सच्ची धीर सच निशाना। आप चलाए वाली दो जहाना। ना सके कोई अटकाए, बेमुखां लग्गे बाना। चारों कुन्ट करन हाए हाए, ना छुडाए अन्तिम मेरी माए, जूठा झूठा हथ्थीं बद्धा गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा देवे नाम निधाना।

❋ ६ चेत २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी हरिसंगत नवित्त ❋

हरि चरन हरि ही जाण। हरि चरन गुरसिख साचा माण। हरि चरन गुरसिख लग्ग, दुःख दर्द सभ मिट जाण। हरि चरन चुक्के मरन डरन, मेल मिलावा हरि भगवान। हरि चरन साची सरन, बन्द ख़लासी हरि करान। हरि चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधान। हरि चरन अमृत धारे। हरि चरन गुरमुखां आत्म करे उज्जयारे। हरि चरन गुरमुखां मिटाए आत्म लग्गी अग्न, काया करे ठंडी ठारे। हरि चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना होए जगत ख्वारे। हरि चरन जोड़ जुड़ईआ। हरि चरन चाढ़े गुरमुख साची नईआ। हरि चरन घर साचे पड़, बन्द कवाड़ प्रभ आप खुलईआ। हरि चरन अग्गे शब्द करे वाड़, जगे जोत बहत्तर नाड़, जोती दीपक आप जगईआ। हरि चरन परे हटाए झूठी धाड़, पंजां चोरां चब्बे दाढ़, शब्द मारे काड़ काड़, साचा मार्ग आप दिसईआ। हरि चरन दुरमति मैल देवे झाड़, हरि चरन बज़र कपाटी देवे पाड़, हरि चरन आत्म अग्न बुझाए तत्ती हाढ़, देवे अमृत ठंडी ठार, जोत प्रकाश करे कोट रवि ससि आत्म जाए वस, गुरमुख गुर चरन आए नस्स, आपे बणे पिता मईआ। गुर चरन सरन निराली। गुर चरन मिले हरि धरनी धरन, करे मात रखवाली। हरि चरन चुक्के मरन डरन, हरि बणे सच्चा पाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत गुरमुख तेरी आत्म बलोए, आप मिटाए कलिजुग रैण काली। गुर चरन साचा चन्द। गुर चरन अमृत बूंद मुख चुआए, खुशी कराए बन्द बन्द। गुर चरन साचा सुख आप दवाए, इक्क वखाए परमानंद। गुर चरन गुरसिख तेरी आप भराए, आत्म झोली हरि बख्शंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर पिलाए, गुरमुखां लगाए बत्ती दन्द। अमृत लग्गे बत्ती दन्दीं। विच्चों वासना कढ्ढे गन्दी। साचा हरि किरपा कर विस लाहे, सोहँ रण्दे नाल जाए रण्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अमृत साचा मुख चुआए, काया तृष्ना भुक्ख गंवाए, आप कटाए धर्म राए दी फंदी। शब्द सच्चा बाण निरगुणहार दा। गुरमुख विरले पायण विच जहान, भेव सच्ची सरकार दा। चारों कुन्ट दिसण बेईमान, ना कोई सुणे शब्द कान, झूठे करन सारे काम, आत्म जोती गुण निधान, सच्चा राह ना कोई वखाणदा। एका जोत हरि भगवान, देवे सच्चा शब्द ज्ञान, आप चुकाए धर्म राए दी कान, दरगहि साची सच घर आप वखांयदा। मेल मिलावा हरि भगवान, मदिरा मास जो तज जाण, पी अमृत प्रभ दर रहि जाण, प्रभ आत्म तृखा बुझांयदा। गुर चरन आयण भज्ज, गुरमुख साचे साचे थान जाण सज, प्रभ अबिनाशी रिहा गज्ज, अन्तिम वेले पड़दे लए कज, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। ना कोई करे अज पज, जगत ख्वारी देणी तज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा।

शब्द डोर हथ्थ करतार। चरन जो आयण कर प्यार। पाए सार हरि निरँकार। प्रभ चरन लगाए पहले फेरे, गुरमुख उधरे दूजी वार। जो जन आयण दौड़े, प्रभ अबिनाशी ना जाणे मिट्ठे कौड़े, जो जन करन चरन सरन निमस्कार। गुरमुख तेरी आत्म एका प्रेम धार, अमृत बरखे किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन ध्यान हरि भगवान, गुरमुख करन विचार। मदिरा मास रसन तजाउणा हउमै दुखड़ा नास कराउणा। हरि जी साचा पिण्ड काचा, आपणा आप निवास रखाउणा। बेमुख जीव दर दर जाए नाचा, घर घर कोए ना मिले शब्द साचो साचा, अन्तिम मात हलकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम निधान, उपजे एका ब्रह्म ज्ञान, सोहँ शब्द जो जन रसना खाणा। सोहँ शब्द साचा जप। आपे मारे तीनो तप। नेड़ ना आए कोई पप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दात झोली पाए, गुरमुख साचे सोहँ शब्द दिवस रैण अट्ठे पहर रसना जप। रसना जप उत्तम जाती। आत्म लाए शब्द बाती। दरस देवे सुत्यां रातीं। आप प्याए दया कमाए, गुरमुख उठाए बूंद स्वांती। गुरमुख साचे संत जनां आत्म डेरा हरि जी लाए, अन्दर वेखो मार झाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा आप चुकाया, अग्गे फड़ के राहे पाया, कोई ना मंगे अन्तिम बाकी। गुरमुख तेरी धन्न कमाई। गुर पूरे लेखे लाई। घर आए भाग लगाए। पिछली मैल दूर कराए। जो लग्गी जन्म जन्म दी छाही, अन्तिम दूर कराए। आत्म लग्गी प्यास, तृष्ना अग्न बुझाए। एका शब्द डोर रखाए, आप उठाए फड़ के बाहों। सोहँ शब्द रुण झुण लगाए, एका सच्चा राग सुणाए, गुरमुख हँस काग बणाए, ल्याए सच्चे थाएँ। आपणे हथ्थ वाग रखाए, जोत सरूपी जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे ठंडी छाँए। भगत द्वार लग्गा भोग। सोहँ बख्शे प्रभ साचा जोग। सच्चा माण ताण विच जहान, आप रखाए ना होए कदे विजोग। साची दात वड करामात बंधाए नात पुच्छे वात आत्म कटे रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी आत्म सीर पिलाईआ, मिटाए अन्ध अन्धेरी रात एका साची जोत। जगे जोत होए प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। गुरमुख तेरी साची रास। अठां तत्तां करे नास। साचे वतां देवे मतां, सोहँ शब्द गाओ स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति मेहरवान गुण निधान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण, गुरमुखां होया दास। आपे होए दासन दासी। जोत सरूप घनकपुर वासी। आप कटाए जम की फाँसी। बेमुख जीव ना दर बहाए, जो होए मदिरा मासी। गुरमुखां अन्तिम सच्ची सरनाए, एका शब्द ज्ञान दवाए, ना पंडत जानण जो बैठे विच काशी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सुरत नाम शब्द ज्ञान, जगत ज्ञान शब्द उडान, विच मात पताल अकाशी। गुरसिख तेरी सच्ची वड्याई। मात उडारी होवे तिन्नां लोकां बाहरी। जिथ्थे जगे जोत अपारी।

निहकलंक नरायण नर अवतारी। सिँघ सिँघासण हरि जी बैठे, अग्गे दोवें भुजां पसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणे चरन लगाए, अन्तिम कलिजुग बेड़ा पार कराए, गुरसिख गुर बल बलिहारी। बलि बलि बलिहारे गुर चरन, जिथ्थे मिली सच्ची सरन। चुक्के मरन डरन, खुल्ले हरन फरन। किरपा करे साचा हरे, घर आया करनी करन। गुरमुख साचे संत जनां साचा मेल मिलाया पड़दा लाहया, ना जाणे कोई गोत वरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश सीस तेरे चवर करन। कलिजुग अन्तिम वार रक्खी अवल्लड़ी चाल। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ आपे लए भाल। मेल मिलावा साचे कन्त, विच रक्खया शब्द दलाल। आप बणाए साची बणत, देवे नाम सच्चा हरि शब्द धन माल। महिंमा अगाध बोध बोध अगाध अगणत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा सुरत संभाल। सुरत संभाले पावे सार। साचा फल लगाए गुरसिख तेरी काया डार। ना कोई झाड़े अद्धविचकार। शब्द कुठाली हरि दए अंचन, सोहँ इक्क फुंकारा मार। आप बणाए तेरी काया कंचन, गगन मण्डल थाली, तेरे तन पहनाए शब्द शृंगार। सच वस्त हरि जोत, गुरमुख साचे विच मात भाली, हरि देवे इक्क सच्चा प्यार। बेमुख जीव चारों तरफ कढ्ढण गालीं, ना करे कोई विचार। गुरमुखां हरि बण जाए आपे पाली, साचा माली करे रखवाली, घर साचे खिड़ी गुलज़ार। कलिजुग सतिजुग दोवें बैल बणाए, आप बणया सच्चा हाली, गुरमुखां आत्म बीज रिहा डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर आप बंधाए गुरमुख तेरी आत्म सच्ची धार। आपे बन्ने धार राह वखांयदा। आपे पावे सार, फड़ बाहों मगर लगांयदा। ना करे हरि विचार, जो जन चरनी सीस झुकांयदा। डुब्बदा बेड़ा जाए तार, विच मँझधार ना किसे गुरसिख डुबांयदा। आपे आप मेल मिलाए सति करतार, गुरसिख नार साची सेजा हरि आपे आप सवांयदा। एका रक्खे शब्द धार ना विचार, साची धुन आप उपजांयदा। करदा रहे सच्ची कार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लग्गी प्रीत चरन तोड़ निभांयदा। ना कोई दिसे उच्च मुनारा। जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। किसे दिसे ना मीत मुरारा। किसे दिसे ना मन्दिर मसीत, ना मिले गुरदुआरा। गुरमुख तेरी वसे आत्म अन्दर, जेहड़ा इक्को इक्क चुबारा। एह काया डूंघी कन्दर, कलिजुग जीव भौंदे बाहर बन्दर, ना कोई तोड़े आत्म जन्दर, ना पाए कोई सार गोरख मच्छन्दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां किरपा कर, साचा हरि आपे खोल्ले दस्म दुआरा। खुल्ले दस्म दुआर करे लोअ। प्रभ अबिनाशी अमृत साची धार, गुरसिख तेरी कँवल नाभ रिहा चो। एका कर चरन प्यार सच वपार, हरि जी जाए पैज संवार, अन्तिम कलि होर ना दिसे को। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, देवे वर किरपा कर, दुरमति मैल पापां लग्गी देवे धो। दुरमति

मैल लाहे दाग। आप बुझाए तृष्ना आग। काया कुले लग्गे भाग। ना कोई लग्गे मुल्ले, प्रभ आप सुणाए सोहँ शब्द सच्चा राग। कलिजुग जीव रहे भुले, केहड़ा पकड़े अन्तिम वाग। जगत अन्धेर सारे रुले, पाणी प्या काया चुल्ले, गुरमुख विरला विच मात अन्तिम कलि गया जाग। प्रभ अबिनाशी दर दुआरे वड भण्डारे सदा खुल्ले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात गुरमुख झोली पाए, आप बंधाए चरन नात। चरन नाता लैणा बन्न। भाण्डा भरम लैणा भंन। साचा देवे हरि नाम धन। कोई ना लावे मात संन्न। गुरमुख आत्म जाए मन्न। बेमुख जीव होए अन्न्न। गुरसिख तेरी आत्म धार, सच्ची दिसे जगत प्यार, नेत्र नीर वगे छम्म छम्म। प्रभ अबिनाशी पाए सार, किरपा धार वेख विचार सर्ब नर नार, लग्गी प्रीत तोड़ निभाए तेरी गुरमुख तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग दए मिटाए, बेमुखां दए आप सजाए, कोई ना लए किसे छुडाया, चारों कुन्ट होए दुहाया, आपे लाहे सभ दा चम्म। कलिजुग जीव वड गंवार। अन्तिम बद्धा पापां भार। कलिजुग जूठे झूठे माया लूठे, मूधे होए ठूठे आत्म भरया इक्क हँकार। बेमुख सारे प्रभ दर ते रूठे, ना करे कोई विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका खण्डा शब्द डण्डा, मारे विच वरभण्डां कर कर वंडां, सत्त दीपां कर विचार। नौ खण्ड देवे वंड। आप चलाए चण्ड प्रचण्ड। बेमुखां अन्तिम देवे कंड। प्रभ आप मिटाए करे खण्ड खण्ड। शब्द कटारी इक्को लाए, सभ दीआं गंढ्ढां देवे वढ्ढ। सिर ते जूठा झूठा पाप चुकाए, बेमुखां देवे कंड। धर्म राए दे दर बहाए, आपे लाए डाहढा दंड। उठाए कंधा कवाड़ खुल्ल्हाए, प्रभ अबिनाशी गुरमुखां दया कमाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव रहण ना देवे विच ब्रह्मण्ड। धर्म राए हो त्यार। प्रभ अबिनाशी मातलोक आया जामा धार। तेरा अन्तिम फल कलिजुग पक्का, लक्ख चुरासी होई त्यार। अन्तिम वंड हरि जी पाई, अन्तिम वेले करे ख्वार। आपे पाउँदा जाए फाही, बेमुखां फड़ के दोवें बाहीं, घर तेरे विच दित्ता वाड़। तूं अग्गों करे नाही, दस्सी बैठा इक्क घर बाहर। जमदूतां नूं हुक्म सुणाई, बैठा वेखीं थाउँ थाँईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया सति सरूपी खेल रचाया, बेमुखां जाणे कोई नाहीं। बेमुख की जाणे हरि दी सार। पापां नदी एका वगे , बैठे डूंघी चुभ्भी मार। एका शब्द चोट लग्गे, चार कुन्ट होण ख्वार। कलिजुग अन्तिम तत्ती वा वगे, बेमुखां हरि देवे साड़। पहली कूट करे सफाई, दूजी कूटे मारे चिट्टे बग्गे, अन्तिम देवे बाहर झाड़। गुरसिख तेरी आत्म जोत साची जगे, प्रभ अबिनाशी दूई द्वैती देवे पड़दे पाड़। जोत सरूपी साचा हरि, देण आया सच्चा वर, प्रगट जोत बैठा अग्गे, बेमुख जीव रहे झक्ख मार। एका तन लग्गे अग्गे, बेमुखां कोए ना करे काया ठंडी ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, देवे सच्ची

नाम दात विच मात पुच्छे वात पूर्ब कर्म विचार। पूर्ब लहणा जिस जन लैणा। गुर संगत रल के साची बहिणा। प्रभ दरस दिखाए तीजे नैणा। दूई द्वैती पर्दे लाहे, गुर संगत बणाए भाई भैणां। एका रंग हरि रंगाए, दूजा आपणा संग निभाए, जो चले हरि के कहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बणे मात पित, करे साचा हित्त नित नवित्त, राखो चित वडा साक सज्जण सैणा। रक्खणा चित चितारना। प्रभ अबिनाशी साचा मित, ना कदे विसारना। ना कोई वेला वार थित्त, सोहँ शब्द सद रसन विचारना। आपे बणे साचा मित, करे साचा हित्त, मानस जन्म जाणा जित्त, लक्ख चुरासी गेड़ निवारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेला कलिजुग नेड़े आया, बेमुखां दर दुरकारना। प्रभ साचे लाज रक्खणी। भाग लगाए कुक्ख सुलक्खणी। कृष्ना शुक्ला पख दोवें, वेखे मार झाती दिशा दखणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए रिदे वसाए, कोई रहे ना विच मात भुलखणी। दोए जोड़ अर्ज़ गुजारे, प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। देवे दान हरि भगवान, ना होए मात ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात हरि झोली पाए, देवे शब्द नाम इक्क अधारे। नाम शब्द जगत अधार। गुरमुखां बेड़ा कर जाए पार। आप मिटाए दुक्खां भुक्खां, इक्क वखाए साचा सुखा, डूंघी भवर गुरसिख गहर गवर कर रिहा विचार। मानस जन्म जाए सवर, प्रभ अबिनाशी अन्तिम वेले गुरसिक्खा सिर करे चवर, धर्म राए ना करे ख्वार। गुरमुख ना जाए मढ़ी मसाण ना बैठे विच कबर, आप लै जाए हरि सच्चे दरबार। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, करे आत्म इक्क ध्यान, साची देवे नाम निशानी आप बहाए चरन द्वार। सोहँ कानी साची बानी, साचा राग साचा रस प्रभ दर मानी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर आपे पाए सार। सच दात हरि दर मंगी। गुरमुखां आत्म साची रंगी। आपे कटे गुरसिक्खां घर घर जाए तंगी। साची वस्त कितों हथ्थ ना आए, सृष्ट सबाई भुक्खी नंगी। अठसठ तीर्थ नुहाए गंगी। ना मैल कोई गंवाए, प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे दात इक्को मंगी। साचा नाम रंग चढ़ाए, गुरमुखां काया चोली। सोहँ शब्द सच्चा बोल, पूरे तोल हरि जी तोली। गुरमुख गुरसिख साचा बणया रहे दर साचे दी साची गोली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारया, एका लड़ हथ्थ फड़ाए, नाल तोरी जाए हौली हौली। आपणा लड़ हथ्थ फड़ाया। फड़ के बाहों सिध्धा राह इक्क वखाया। निहकलंक कलि जामा पाया। माझे देस भाग लगाया। जगी जोत करे रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणा भेव वड देवी देव शब्द सर्ब खुल्हाया। देवी देव करनी सेवा। गुरमुख रसना जपणा जिह्वा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाप जपाए, हउमे विच्चों पाप गंवाए, तीनो ताप मार

मुकाए, इक्क अकार आप रखाए, बिरथा ना जाए गुरसिख तेरी सेवा। सेवा तेरी सच्चा दान। आदि अन्त जुगा जुगन्त मंगे हरि भगवान। करे कोई साध संत, बणदी रही जगत बणत, मेल होए भगत भगवन्त, प्रगट होए वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, हरि जी साचा कन्त, देवे साचा दान हरि मेहरवान। हीरा रत्न अमोल नाम अपार है। पूरे रिहा तोल तोल, हरि विच संसार है। सच वस्त गुरमुखां देवे प्रभ आपणी गंढु खोल्ह, बेमुखां देवे दर दुरकार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द ढोल वजाए गुरमुखां सद वसे कोल, जोत सरूपी आत्म पसर पसार है। चरन प्रीती साची नीती मानस जन्म जाओ जग जीती, दस्से एका सच्ची धार है। चरन कँवल हरि सरनाई। गुरमुख साचे कलिजुग चरन लाग अन्तिम तरन, आप कटाए जम की फाही। ना पछाणे ना जाणे हरि गोत वरन, नीच ऊँच ऊँच नीच ना भेव रखाई। ना जाणे राजे राणे वड जरवाणे, ग़रीब निमाणे गले लगाई। जो जन चले हरि के भाणे, आत्म देवे हरि जोत सवाई। कलिजुग जीव अन्धे काणे बेमुहाणे, दिस ना आवे हरि रघुराई। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ स्याणे, वेख वखाणे जन साची सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लेखे लाई। गुरमुख साचा चतुर स्याणा। आत्म दीआ शब्द बाना। इक्को तीर हरि चलाए, बज़र कपाटी चीर वखाए, लग्गा सच निशाना। गुरमुखां आत्म पीड़ कढाए, आत्म साचा सीर पिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान आत्म बाती। गुरमुखां देवे दरस हरि विच माती। अन्तिम कलिजुग कर रिहा तरस, प्याए बूंद स्वांती। अमृत मेघ हरि जी रिहा बरस, बैठा इक्क इकांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दान गुरमुखां बंधाए चरन नाती। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। गुर संगत तेरी फूलां खारी। हरि चुक्कदा जाए वारो वारी। कलिजुग तेरी तत्ती वा, वगदी चार चुफेरे। बेमुखां मिले ना कोई थां, पाए माया घेरे। ना कोई पछाणे पुत्तां मां, हरि वसे केहड़े खेड़े। अग्गे होए कोए ना मिलदा , कलिजुग जीव अन्तिम वेले नेड़े। बिन गुर पूरे कोई ना पकड़े तेरी बांह, ना बहाए सच्चे थां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाए होए सहाई देवे ठंडी छाँ। ठंडी छाँ गुरसिख माण। गुरमुखां दया कमाए आप बिठाए विच शब्द बबाण। निहकलंक कलि जोत जगाई वज्जी वधाई सुणे लोकाई, बेमुख जीव सर्ब पछताण। गुरमुखां हरि फड़दा बाहीं चांईं चांईं, देवे नाम अमृत धार। अन्तिम कलिजुग नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। पुरी घनक हरि जामा पाया। अचरज खेल कर वखाया। रंग रूप ना कोई रखाया। गुरमुख तेरे विच समाया। आत्म जोती इक्क जगाया। तिन्नां लोकां बूझ बुझाया। चौदां लोक हट्ट खुल्हाया। दुरमति मैल देवे कट, साचा राह इक्क वखाया। वसे हरि जी घट घट, कलिजुग वेखे तीर्थ तट्ट दूई द्वैत

देवे कट, सोहँ शब्द तन वसाया। आत्म जोत जगे लट लट, काया जीव झूठे मट, करे खेल हरि रघुराया। बेमुख जीव भौंदे फिरदे अट्ठ सट्ठ तीर्थ तट्ट, हरि जी साचा किसे हथ्थ ना आया। गुरमुख साचे संत जन प्रभ दर लाहा लैण खट्ट, सतिजुग साचे दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, ना कोई रक्खे पड़दा, उहला दए चुकाया। पड़दा उहला देवे वढ्ढ, भरम भुलेखा देवे कढ्ढ। साचा शब्द गुरमुख तेरे हिरदे देवे गड्ड। अट्ठे पहर तेरे विच समाए, जोत जगाए हरि रघुराए वास रखाए, सोहँ शब्द प्रगट होए, दूई द्वैती महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सच्चा वर किरपा कर, वसे साचे घर, बेमुखां दर आवे डर। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी देवे वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप नुहाए गुरमुख साचे आत्म सर। आत्म साचा सर। जोत सरूपी प्रभ अबिनाशी किरपा कर। गुरमुख तेरे आत्म वड़, साची जोत देवे धर, ना कोई वेखे अमीर फ़कीर है। आप चुकाए जम का डर, लक्ख चुरासी कटे भीड़ है। दर घर साचे देवे सच्चा वर, ना मिल्या किसे वज़ीर हकीर है। गुरमुख साचा सरन जाए पढ़, प्रभ करे शांत सरीर है। जोत सरूपी गुरमुख तेरे आत्म दर दुआरे अग्गे खड़्, शब्द मारे तीर है। आपे जाए तेरे अन्दर वड़, कढ्ढे विच्चों हउमे पीड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका गोत, हरि रघुराए करे रुशनाई, ना कोई जाणे हस्त कीड़ है। इक्क जोत हरि निरंकारया। ना कोई वरन ना कोई गोत, लक्ख चुरासी विच पसारया। दुरमति मैल देवे धोत, आत्म जोती दीप जगा रिहा। बेमुख अन्तिम कलिजुग, ना मिले जोत हरि बनवारया। एक अन्धेरे रहे सोत, ना जपया हरि मुरारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद आप सवा रिहा। एका जोत जगत जगदीस। सृष्ट सबाई जाए पीस। भेव चुकाए वड देवी देव, गुरमुख साचे संत जन आपणी सेवा लगाए ना कोई लए फीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां अन्तिम वड्याई साची देवे, जोत जगाई करे रुशनाई ना कोई पढ़ाए शरअ हदीस। शरअ हदीस ना कोई पढ़ाए । शब्द दात झोली पाए। मिटाए अन्धेरी रात, साची जोत आप जगाए। बैठा दिसे विच इकांत, जोत सरूपी डगमगाए। गुरसिक्खां प्याए अमृत बूंद स्वांत, आत्म ठंडी ठार कराए। बेमुखां आत्म होई अन्धेरी रात, अन्तिम कलि माया रूपी छाही लाहे। ना पुच्छे कोई वात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धराई, कलिजुग अन्तिम देवे जगाई, सतिजुग साचा मात धराई, सोहँ दात झोली पाई, वड करामात विच मात चार वरन हरि दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म सेजा अट्ठे पहर, ना कोई सन्झ सवेर रखाए, बैठा ताड़ी लाए। आत्म ताड़ी हरि जी लाए। अट्ठे पहर डगमगाए। जोत सरूपी दिस ना आए। बेमुख जीव चारों कुन्ट भौंदे फिरदे कोई ना भिच्छया

५४ ०४

पाए। गुरमुख गूढ़ी नींद सौंदे, प्रभ अबिनाशी अमृत जाम प्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर साचे घर वसे हरि, दूई द्वैती पड़दा आपे लाहे। दूई द्वैती देवे चीर। एका मारे शब्द तीर। गुरमुखां देवे साची धीर। बेमुखां हथ्थ ना आवे नीर। कलिजुग तेरा अन्तिम आया, भेव किसे ना पाया, सृष्ट सबाई रिहा चीर। निहकलंक कलि जामा पाया, छोटा बाला अग्गे लाया, गुरसिख साचा सोया लए जगाया, आप प्याए अमृत साचा सीर। बेमुख गूढ़ी नींद सवाया, उत्ते पड़दा डाहढा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए पीर फ़कीर। पीर फ़कीर मारन धाह। अन्त वेले कलिजुग, ना होवे कोई सहा। लक्ख चुरासी अन्तिम फाँसी मदिरा मासी, धर्म राए गल पाए फाह। जेहड़े करदे जगत हासी, प्रगट जोत घनकपुर वासी, दूसर कोई ना। गुरसिक्खां हरि आत्म वासी जोत प्रकाशी, एका घर वखाए सच्चा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण वाली दो जहान, इक्क झुलाए सच निशान। चार वरन साची सरन आप रखाए, वड बलवान देवे माण जगत ताण विच जहान, सभनां फड़े बांह। फड़ बांह राह वखांयदा। उच्चा सुच्चा शब्द हरि जी सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। ना कोई पिता ना कोई मां, ना कोई रखाए भैण भ्रा, जोत सरूपी हरि जामा पांयदा। बेमुखां हरि दिसे ना, गुरमुख साचे संत जनां आत्म सेजा सुत्ता अट्ठे पहर दरस दिखांयदा। जुगा जुगन्त जन भगतां रक्खे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम बाणा, साचा राणा शाह सुल्ताना, वड बली बलवाना, गुण निधाना विच जहानां आपे आप रंगांयदा। कलिजुग तेरा काला सूसा। मेट मिटाए हरि ईसा मूसा। साची धार इक्क बंधाए, इक्क दूजे दे संग रलाए, आप उठाए चीना रूसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, वज्जे वधाई जीव रिहा भुलाई, गुरमुख साचे संत जनां हरि देवे जोत सवाई करे रुशनाई, प्रभ अबिनाशी आत्म पड़दा दूर करांयदा। गुर संगत दया कमाए थाउँ थाएँ, साचा नाम इक्क जपांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुरमुख साचे संत जनां, चार जुगां दा भेव खुल्हांयदा। भेव खुल्हाए चार जुग। भाग लगाए पिण्ड बुग्घ। गुरसिख तेरा नाम विच मात रहि जाए उग्घ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट बेमुख मारे चुग चुग। बेमुखां अन्तिम आया काल। आत्म होई सभ दी बेहाल। आपणी हथ्थीं आप गंवाया, आत्म अनमुल्लड़ा हरि जी लाल। वेला गया किसे हथ्थ ना आया, कलिजुग जीव आत्म होया कंगाल। गुरमुखां हरि दे मति रिहा समझाया, वेला अन्त लैणा संभाल। सोहँ दान शब्द ज्ञान, देवे हरि भगवान विच जहान, साची दात धुरदरगाही सच करामात, विच मात गुरसिक्खां पुछे वात, कमलापात चरन बंनाए नात, साची रीत जगत चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई

विच मात, गुरमुखां देवे शब्द वड्याई। मिटे अन्धेरी रैण अन्तिम वारया। गुरमुखां मिल्या हरि सच्चा साक सज्जण सैण, किरपा करे अपर अपारया। आप चुकाए लहिण देण, पूर्ब कर्म जिस विचारया। आप खुल्हाए तीजा नैण, बज़र कपाटी चीर वखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां चरन प्रीती साची रीती, मानस जन्म जाण विच जहान जीती, एका राह सच्चा आप वखालया। सच्चा राह हरि दिखाए। औझड़ राह ना किसे पाए। कलिजुग अन्तिम नेड़े आए। कल्गीधर हरि जगदीश, जोत सरूपी खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक डंक वजाया। आप उठाए राउ रंक, इक्क सुहाए द्वार बंक, जोत सरूपी दर्शन पाया। दरस दिखाए हरि भगवान। करे तरस जीव निधान। अमृत मेघ देवे बरस, गुरमुख बणाए चतुर सुजान। आप मिटाए जगत हिरस, देवे नाम शब्द ज्ञान चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा गुरमुखां करे आप पछाण। गुरमुखां हरि आप पछाणे। सर्ब जीआं दा जाणी जाणे। आप आपणा भेव छुपाणे। दिस ना आए किसे राजे राणे। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म जोत जगाए महाने। साचा देवे नाम निधान। गुरमुख वड्याई विच जहान। साचा शब्द सुणाए कान। उपजे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए जम की कान। देवे एका नाम गुरमुखां साची शब्द उडान। साचा शब्द हरि उडारी। गुरमुखां देवे कर प्यार, आप बहाए चरन द्वारी। गुरमुख आउँदे जाण वारो वारी। निहकलंक नरायण नर अवतारी। कलिजुग अन्तिम वेख वखाणे जीव जन्त साध संत भेव कोई ना जाणे जीव जन्त। आपणा भेव आप छुपाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हिरदे वसे, भाण्डे काचे जोत सरूपी अन्दर नाचे, मेल मिलावा साचे कन्त। हरि भगवन्त जोत जगाए सच महान जगे जोत अगम्म अपार। गुरमुख साचा जाए तार। जोत सरूपी जामा धार। हरि जीअ किया इक्क प्यार। गुरमुख तेरी आत्म शब्द टिकाया इक्क ध्याना, शब्द बबाणा आप चढ़ाए सच्चा अस्वार। तख्तों लाहे राजा राणा, ना कोई सुघड़ ना स्याणा, बेमुखां जीवां कुछ हथ्थ ना आए भुला सर्ब संसारा। गुरमुख साचा चरन लगाणा। फड़ के बाहों राहे पाणा। आपणा भेव हरि खुल्हाणा। जोत सरूपी दरस दिखाणा। कान्हा कृष्ना बण के आया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन लगाणा। वाली हिन्द उठ कर ध्यान। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई जगत महान। माझे देस वज्जी वधाई प्रगटे हरि बली बलवान। बेमुखां तन अग्ग लगाई, चारों कुन्ट कुरलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक राखो टेक, करे बुध बबेक, देवे सच सची सरनाई। सच सरनाई जोत निरंकारया। देवे शब्द हरि अपारया। आत्म दीपक जोत आप जगाए मिटाए अन्ध अंध्यारया। वरन गोती ना कोई रखाए, दिस ना आए, जगे जोत मुराराया। वेख वखाणे दस अठ्ठ अठारां प्रभ पाए सारा, दिवस रैण

५५ ०४

अट्ठे पहर साचे लेख लिखा रिहा। मेट मिटाए चार यारां करे ख्वारा, वेला अन्तिम नेड़े आ रिहा। गुरमुख तेरी आत्म लग्गी रहे बहारा, खिड़ी रहे सची गुलज़ारा, प्रभ फूलन सेजा आप सुहा रिहा। आपे सुत्ता हरि जी पैर पसारा, जोत सरूपी हरि निरंकारया। अचरज भेव हरि न्यारा, विच संसारा गिरवर गिरधारा, गुरमुख साचे संत जनां जोत सरूपी दरस दिखा रिहा। साचा हट्ट हरि खुल्हांयदा। शब्द दात विच रखांयदा। बैठा विच इकांत, जोत सरूपी जोत जगांयदा। गुरमुखां कलिजुग अन्तिम पुच्छे वात, फड़ बाहों चरन लगांयदा। आप बंधाए चरन नात सोहँ दात आत्म झोली पांयदा। प्याए बूंद स्वांत, गुरमुख अन्दर वेख मार झात, प्रभ साचा डगमगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा दान चरन प्रीती तोड़ निभांयदा। लग्गी प्रीत चढ़ जाए तोड़। गुरसिख कोई ना देवे तैनूं अद्ध विच्चों तोड़। अट्ठे पहर हरि जी चढ़या रहे शब्द घोड़। धुरदरगाही साचा माही अन्तिम कलि कर वल छल, जंगल जूह पहाड़ उजाड़ां, घर तेरे विच आए दौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाह लाए एका पौड़। साचा घोड़ा जोड़ा दर मंगाया। आपणी हथ्थीं तंग कसाया। सोहणा आसण उत्ते लाया। पंचम् जेठ कलिजुग तेरे सिर विच मारे पौड़। शब्द घोड़ा हरि संसारा। आया दौड़ अपर अपारा। इक्को लगाया तिन्नां लोकां पौड़, ना कोई चरन लगाया अद्धविचकारा। ना एह लम्मा ना एह चौड़ा, ना कोई पावे सारा। ना हरि मिट्ठा ना हरि कौड़ा, सर्ब जीआं दा इक्क सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच चलाए इक्क शब्द निशान चार वरन विच संसारा। सच्चा हरि द्वार निरगुणहार दा। सच्चा हरि द्वार सरगुण रूप अपार दा। सच्चा हरि द्वार लक्ख चुरासी पसर पसार दा। सच्चा हरि द्वार तिन्नां लोकां जोत अकार दा। सच्चा हरि द्वार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच्ची सरकार दा। सच्चा हरि द्वार सभनी थाईआं। सच्चा हरि द्वार बेमुखां दिसे नाहीआ। सच्चा हरि द्वार गगन जगन रिहा विचार, सृष्ट सबाई सुण पुकार, धरत मात होई ख्वार, हरि आप जोत जगाईआ। कलिजुग अन्तिम लए विचार पावे सार, आप डुबाए वहन्दी धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ साचे लेख लिखाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे धाह। कोई ना दिसे मात राह। प्रभ अबिनाशी अग्न जोत लगाए थाउँ थाँईं, खाली छड्डे ना कोई थां। एका शब्द बाण लगाए, रसना खिच कमान चलाए, किसे ना मिले ठंडी छाँ। माण ताण सर्ब मिटाए, मुगल पठाण सर्ब उठाए मेट मिटाए वड शैतान। एका आण हरि रखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नूर सच्चा तूर, शब्द सरूर हरि भरपूर, वड दाता वडा सूर एका धाम रहाए। इक्को इक्क हरि अलाह। सृष्ट सबाई इक्क मलाह। बेमुख भौंदे गूढ़ी नींद सौदे ना मिले सच्चा राह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम कलि बाहों फड़, आप बंधाए साचे लड़ साचे थां। वडा दाता साचे घर। खुल्हा

दर धाम अचल एका राह। गुरमुख आत्म दर खलोता, गुरसिख उठाया कलिजुग सोता, जोत सरूपी अग्गे रिहा खड़। कलिजुग तेरी अन्तिम रुत्त। पंचम् जेठ प्रभ एका जोत जगाए करे रुशनाए वज्जे वधाए चार कुन्ट। जीव जन्त साध संत पूरन भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त बणाए बणत, गुरमुखां मिले साचा कन्त। इक्क सुणाए शब्द छंत, सोहँ पट्टी रिहा पढ़ाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी मेरी अन्तिम वेरी पाए फेरी, निहकलंक वजा डंक राउ राजान रंक मिटे शंक। साची देवे नाम इक्क वड्याई। वज्जे डंक चार कुन्ट हरि दे वजाया। सुणे राउ रंक निहकलंक पुरी घनक जोत जगाया। आप सुहाया थान बंक एका शब्द रखाया अंक, कुरान अञ्जील सर्ब मिटा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेद पुरान खाणी बाणी, कर ध्यानी चतुर सुजानी, ब्रह्म ज्ञानी अठारां ध्याए साची गीता साचा मीता वक्ख कीता, परखे नीता अन्तिम दए मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग बेमुख तेरी झोली साची डोली, अन्तिम वेले बेमुख जीव धर्म राए दे बणे गोले, आपणी हथ्थीं दए बहाए। धर्म राए आया चल द्वार। निहकलंक ल्या मात अवतार। दित्ता हरि इक्क प्यार। लक्ख चुरासी घले तेरे घर साचे दर, खोल्हीं आपणा इक्क कवाड़। प्रभ अबिनाशी किरपा रिहा कर, धरत मात मंगे वर, बेमुख जीव अन्तिम अन्त कल आपणा आप गए हर। ना कोई तीर्थ ना कोई सर, ना कोई मन्दिर ठाकर द्वार, ना कोई गुरद्वार, जूठे झूठे बैठे सारे माया लूठे अन्दर वड़। निहकलंक जामा पाई, धरत मात पाए दुहाई, उत्ते आए चांईं चांईं, पंचम् जेठ नेड़े आई, सृष्ट सबाई दए सुणाई, चिट्टे अस्व साचे घोड़े हरि जी बैठा आसण लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम कलि विच दे मति रिहा समझाई। देवे मति हरि किरपा कर, मानस जन्म लक्ख चुरासी विच्चों मिलणा, गुर चरन लाग जाणा तर। गगन पताली पाए सार ढूंडे जाए मन्दिर, जो जाए विच उजाड़ डूंघी कन्दर, ना कोई गढ़ किलया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक सच शब्द तीर चलाए, आप मिटाए बूरे कक्के बिलया। बूरे कक्के बिल्ले। पंचम् जेठ सारे हिल्ले। आप खोल्हे विच पतालां बद्धे किल्ले। सभ दे गाने होए ढिल्ले। शब्द तीर इक्क चलाया खिच्चे सोहँ रसना चिल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, चारों तरफ डगमगाए, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वड महीप इक्क निशान रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडा शाहो भूपी जोत सरूपी, सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, अन्तिम कलि देवे फल, हरि का भाणा ना जाए टल, कलिजुग सतिजुग कर इक्ठे, दोवें बैल होयण मट्ठे, हौली हौली हरि जी चलाए हल। हरि जी साचा हल चलाए। पहली कूट पहला फेरा पाए। हेरा फेरा जगत अन्धेरा, एका एक कराए। आप पाए चारो तरफ घेरा, शब्द सरूपी लाए डेरा, दिस किसे ना

आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्नी जोत चार चुफेरे आपे आप लगाए। अग्न जोत जाए लग्ग। पहली कूट जाए दग। गुरमुख विरला संत जन, निहकलंक तेरे चरन साची सरन जाए लग। बेमुख जीव अन्तिम अन्त माया पाई कल बेअन्त, देवे आत्म धीरज तग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी जोत जगाई, आपे पकड़े शाह रग। शाह रग पावे हथ्थ। बेमुखां हरि पावे सथ। गुरमुखां देवे सोहँ शब्द साची वथ। आप चढ़ाए साचे रथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि मातलोक आया जामा धर, देवे वर किरपा कर, आप वखाए सच्चा घर। जिथ्थे वसे साचा हरि, जोत सरूप सर्ब समरथ। सर्ब समरथ सर्ब घट जाणे। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला हरि जी आण पछाणे। जुगा जुगन्त लिखदे आए वेद पुराने। कलिजुग जीव होए बेमुहाणे। माया रूपी पाया जाल, आपणा तणया झूठा ताण, बेमुख होए अन्ध अंध्यान, ना सके हरि पछाण। ना मिले हरि मदीने मक्के, आत्म बैठा साचे घर, गुरसिख साचे साचा कर ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हिरदे वाचा बेमुख जीव देह भाण्डा काचा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे ना जाना। आत्म भुक्ख उतरे दुःख मिले गुण निधानया। गुरमुख साचे संत अट्ठे पहर सुक्खणा सुक्ख, देवे दरस कर तरस हरि मेहरबानया। सुफल कराए मात कुक्ख, वड मनुक्ख करे चरन निधानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मात जोत जगाए चारों तरफ धूंएं रहे धुक्ख, पंचम् जेठ फूक लगाया। धूंआं धुक्खे विच संसार। चारों कुन्ट होए विचार। साचा भाणा कोई ना जाणे, सारे वेखण राजे राणे, ना पावे कोई सार। कलिजुग अन्तिम हरि जी साचा लाहुण आया मकाणे, गुरमुख साचे संत जन नाल लए सच दुलार। आपे चले आपणे भाणे, तणदा रहे ताणे, जीव जन्त सुणे हरि पुकार। ना कोई वेखे अन्न्हे काणे। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणे। उतरे पार जो जन करे चरन ध्याने। अन्तिम करे पार, एका मारे शब्द बाणे गुण निधाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल्गी धर, साचा हरि नरायण नर, हरि हरि हरि हरा करतारे। चारों तरफ हरि जी वेखे। पहली कूट, शब्द तीर जाणा छूट, सृष्ट सबाई नेत्र पेखे। गुरमुख साचे संत जन शब्द पंघूड़ा रहे झूट, आप मिटाए औलीए पीर वड वड शेखे। आप लगाए गुरमुख मात साचे बूटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी मात लगाई साची मेखे। सतिजुग साचा मात धराया। पहली माघी जन्म दवाया। सति सरूपी विच समाया। बेमुखां आत्म रही सोती, अन्तिम वेले देण दुहाया। गुरमुख लग्गा सच्चा नेंह, अमृत बरसे साचा मेंह, आत्म देवे धीर धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त ना कोई होए होर सहाया। तेरा होए ना कोई सहाई। चारों कुन्ट दए दुहाई। भैणां छड्डुण आपणे भाई। मावां पुत्तां सुध ना राई। हरि जी वढ्ढे नक्क गुत्ता, बेमुखां मुख लाए

छाही। पाउण ना देवे किसे जुत्ता, चारों तरफ रिहा शब्द चलाई। कलिजुग तेरी आप सुहाई रुत्ता, देवे तेरी अलख मुकाई। दर घर साचे होया बेमुखा, जूठा झूठा कुत्ता ना मिले किते वड्डयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग उठाया सुत्ता, देवे मात जन्म दवाई। सतिजुग उठ उठ बलधार। धरत मात करे पुकार। कलिजुग जूठा झूठा अन्तिम होया वड ख्वार। मूधा होया पापां ठूठा, ना कोई पावे सार। गुरमुखां मिले नाम रस अनूठा, देवे आप हरि करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे फड़ के बाहों गले लगाए, करे ठंडे ठार। सतिजुग उठ कर त्यारी। लक्ख चुरासी विच मात होई बड़ी ख्वारी। दिवस रैण अट्ठे पहर, दोए जोड़ धरत मात करे पुकारी। कोई ना बणदा मेरा साक सज्जण सैण, अट्ठ सट्ठ तीर्थ बेमुख जीव रहे झक्ख मारी। ना कोई वेखण भाई भैण, धीआं पुत्तां होए ख्वारी। निहकलंक जामा धार कर विचार विच संसार, अन्तिम कलि आई हार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सभ दी सारी। सतिजुग साचे सुरत संभाली। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, कर मेरी रखवाली। मैं जावां मात गुरसिक्खां दर साचे घर बणां जा सवाली। मंगां सच्चा वर विच मात जावां तर, निहकलंक जिस तेरी सेव कमा ली। इक्क बणावां सच्चा सर, चार वरन आए दर, दूजा रक्खे ना कोई घर, मस्तूआणा साची जोत जगा ली। अट्ठ सट्ठ तीर्थ गए हर, आपणा कीता लैणा भर, चारों कुन्ट आउणा डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लेख लिखाए, मेख सतिजुग तेरी आपणी हथ्थीं आप लगा ली। लिखाया लेख सतिजुग तेरा, प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी जामा धार निहकलंक पहली वेरां, साचा हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी डंक वजाए, सिँघासण बैठा डेरा लाए, आपणी खेल आप रचा ली। रसना खिच्चे इक्क कमान, सोहँ तीर चलाए। बेमुख जो जीव वड शैतान हरि उठाए। जो जन होए बेईमान, रण भूमी हरि विच ल्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच हरि आप समाए। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई जाणे राजा राणा ना किसे भेव चुकाया। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, ना कोई जाणे वेद पुराना, खाणी बाणी रहे सभ गाया। ना कोई जाणे अञ्जील कुराना, ना कोई जाणे शाह सुल्ताना, ना कोई जाणे बाल अञ्याणा, साचा हरि एका घर इक्को इक्क स्याणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड मेहरबान निगाहबान करे ध्यान चार कुन्ट एका शब्द उडान वाली दो जहान रिहा आप लगाया। शब्द उडारी आप लगांयदा। बेमुखां होए ख्वारी, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। मुकदी जाए चार यारी, संग मुहम्मद आप रलांयदा। पहली कूट आई भारी, उत्ते फेरे सोहँ तिक्खी आरी, दो धड़ आप करांयदा। लेखा देणा पैणा सभ नूं वारो वारी, उहला पड़दा ना कोई रखांयदा। लाड़ी मौत घर घर दए बहारी, खोल्ह बन्द कवाड़ सभ दे अन्दर,

जीव जन्त नर नार ना कोई बचांयदा। पंचम् जेठ नेड़े आंयदा। ना किसे दिसे पिछा अगाड़, पिच्छे लग्गी वडी धाड़ जूठे झूठे मार मुकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका लाए शब्द वाढी, लक्ख चुरासी वढ्ढे पहली हाढ़ी, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी पक्की हाढ़ी। कलिजुग जीव किस्मत माढ़ी। प्रभ अबिनाशी जामा पाया दिस ना आया, लभ्भदे फिरने विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। माझे देस लग्गा भाग, घनकपुर हरि वास रखाया। साची जोत दए जगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द ज्ञान सच निशान सिध्धा तीर इक्क चलाया। इक्क चल्ले सिध्धा तीर। चार कुन्ट होए वहीर। किसे हथ्थ ना आवे नीर। आप मिटाए शेख़ औलीए पीर दस्तगीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राणा पहने चिट्टा बाणा, पंचम् जेठ वक्त अख़ीर। पंचम् जेठ जोत जगाए। जोत सरूप डगमगाए। बेमुखां हरि दिस ना आए। अन्तिम वेले गुरसिक्खां होए सहाए। फड़ के बाहों राहे पाए। कटे गलों जम की फाहे। धर्म राज हरि दर साचे घर रिहा शरमाए। गुरमुख साचे संत जनां सच घर वास, प्रभ होए आप सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाणी जाण इक्क ल्याए शब्द बबाण, गुरमुख साचे अन्तिम कलि मातलोक उप्पर आप चढ़ाए। इक्को इक्क सिध्धा तीर बेमुखां रिहा चीर, आपणीं हथ्थीं आप चलाए। तीर निशाना जाए छुट्ट। काया माटी भाण्डा काचा, अन्तिम जाणा फुट्ट। गुरमुख साचे चरन लगाए, अमृत साचा सीर प्याए, गुरसिख पीण प्रभ दर रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघासण डेरा लाए, गुरमुखां विच रिहा सज्ज। सच सिँघासण सच अस्थान। जोत सरूपी बैठा हरि भगवान। सृष्ट सबाई आत्म वेखे, करे कराए जो मन भाए, सर्ब जीआं हरि जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे शब्द निशान। गुर संगत सद सद बलिहारया। चल आए हरि चरन द्वारया। मिले सच्ची सरनाई मिटाए कलिजुग छाही, सोहँ साबण नाल धवा लया। आप कटाए जम की फाही, लक्ख चुरासी दए छुडाई, साचा अमृत जाम प्याई, जो जन चरन ध्यान रखाई। गुरमुख बेमुख दोहां रक्खे थाउँ थाँईं। करे पहचान हरि भगवान सर्ब जीआं दा जाणी जाण, भेव रक्खे नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दर आई देवे वर बैठा सच्चे घर, अमृत फुल्ल साचे घर रिहा बरसाई। अमृत मेघ वसे धार। गुरसिख झिरना झिरे तेरी आत्म सच सच्चे घर बाहर। प्रभ अबिनाशी घर आए तेरे कारज सरे भण्डारे भरे, निखुट्ट ना जाए विच संसार। चुकाए जम का डरे, नुहाए अमृत सुहाए साचे घरे, गुरमुख साचा ना जन्मे ना मरे, जोत सरूपी जोत हरि चरन प्रीती निभाए नाल। पूरे कारज घर घर करे। जोत सरूप नर हरि हरि नरे। गुरमुख विरला विच मात संत दर घर साचे लैण वरे। हरि का भाणा अन्तिम अन्त साचा संत जरे। साचा हुक्म हरि सुनाणा, मदिरा मासी दंड अन्तिम

भरे। धर्म राए विच अद्ध दे फड़े, डूंघी कन्दर रहे अन्दर वड़े, लेखा काढे ना देवे किसे छड्ड, हड्ड हड्ड करे अड्ड अड्ड, वड्ड वड्ड चित्रगुप्त अग्गे धरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लै जाए सचखण्ड आपणे दरे। गुर संगत संगत गुर, मेल मिलावा लिख्या धुर। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, पिण्ड लिखाए घनकपुर। तीन लोक वज्जे वधाई, चरन आए करोड़ तेतीसा सुर। ब्रह्मा विष्न महेष होए दर दरवेश, विष्नूं इक्क अकार जोत कराई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम साध संगत जो जन आए दर साचे मंगत, दरगहि साची मिले वड वड्याई। दरगहि साची मिलदा माण। जो जन करे चरन ध्यान। आप लगाए इक्क बाण। इन्दलोक ब्रह्मलोक शिवलोक तजाए, आप टपाए चौदां लोक, लोक परलोक जोती मेल मिलान। गुरमुख तैनूं कोई ना सके रोक, जमदूत दोए जोड़ तेरे चरन सीस झुकाण। इक्क सुणाया शब्द सलोक, सोहँ शब्द जो जन रसना गाण। अन्तिम मिलणा साची जोत, लक्ख चुरासी फंद कटाण। ना होणा कदे कोई विच मात दोख, देवे दरस हरि भगवान। सुफल कराई मात कुक्ख, झुलाए इक्क सच्चा निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप मिटाए जम की कान। गुर संगत गुर दर वेख। जोत सरूपी एका भेख। सृष्ट सबाई लिखाए साचे लेख। साचे मार्ग आपे पाए, शब्द घोड़े दए चढ़ाए, विच आत्म लाए साची मेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए, पढ़ पढ़ थक्के पंडत ब्रह्म ज्ञानी वड ध्यानी उच्च इशनानी, किसे ना मिले सच्चा हरि इक्क निशानी, गलीं पाई फिरन गानी, वड वड औलीए पीर शेख़। औलीआ पीर शेख़ वड मुलाना। किसे हथ्थ ना हरि जी आणा। पढ़ पढ़ थक्के चारे वेद कोई ना पाए भेद, विचारे दस अट्ठ अट्ठ दस पुराना। प्रभ अबिनाशी अछल अछेद, किसे दिस ना आए वडा शाह सुल्ताना। सृष्ट सबाई होए खेद, बेमुखां आत्म सुंञ मसाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां खोल्हे साचा भेद, देवे शब्द सच्चा इक्क ज्ञाना। शब्द ज्ञान धुर फ़रमाण, हरि भगवान देवे विच जहान। जीवां जन्तां साधां संतां देवे दान। जो जन चरन सीस निवाए कर ध्यान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, हिरदे वाचा देवे नाम गुणवन्त गुणी निधान। पुरख अबिनाशी सर्ब घट वासी, सृष्ट सबाई करे दासी। चार वरन आए सरन, चुकाए मरन डरन हरि निरँकारी। बेमुख जीव जूठा झूठा पाणी भरन, अन्तिम वेले सारे मरन, धर्म राए दी जायण सरन, दुःख लग्गे भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां आत्म साची जोत बलोए, अज्ञान अन्धेर रहे ना कोए, करे इक्क उज्जयारी। आत्म होए इक्क उज्जयार। दीपक जगे जगे जोती, गुरमुख बण गया माणक मोती, आप उठाए आत्म सोती, दुरमति मैल जाए धोती, सोहँ शब्द रसन उचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नर हरि साचा देवे शब्द अपार। शब्द अपार अगम्म अथाह। ना

६१
०४

कोई पावे सार, ना जाणे धार कर विचार, विच संसार डुब्बे मँझधार, ना दिसे सच्चा राह। गुरमुखां हरि साचा जाए तार, कर कर प्यार, देवे शब्द अपर अपार, जोत जगाए हरि अपार, इक्क दिखाए सच्चा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव दर दर फिराए, फिरन हलकाए, साची वस्त कितों हथ्थ ना आए, घर घर भौंदे फिरन दर दर उडदे दिसण कां। ना कोई सुणाए साचा राग। बेमुखां लग्गा आत्म जूठा झूठा दाग। कलिजुग जीव अन्तिम वेला नेड़े आया, बाहों पकड़ ना किसे जगाया, साचे राह ना किसे पाया, होए माढ़े भाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जामा आपे पाया। जोत सरूपी खेल रचाया। मात पिता ना कोई बणाया। भैणां भईआ नात चुकाया। नित नवित्त जोत जगाया। गुरमुख साचे राखो सदा चित, वेले अन्त होए सहाया। मानस जन्म लैणा जित्त, एथों चले गए कित, साची वस्त किसे हथ्थ ना आया। ना कोई वार ना कोई थित्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर गुरमुख साचे विच समाया। वार थित्त हरि ना जाणे। नित नवित्त आप चलाए जोत जगाए, सर्ब रखाए आपणे भाणे। सृष्ट सबाई राजे राणे सुघड़ स्याणे गुरमुख साचे पार लँघाए बेमुख जीव अन्तिम कलि आप भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणे, ना कोई दए छुडाए। गुरमुख साचा रंग प्रभ दर माणे, आत्म तृखा दए बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम मात धराए। धरया मात नाम निधान। बद्धा नात विच जहान। सतिजुग साचे मिली दात देवे हरि भगवान। चार वरन एका सरन, बणाए धीआं पूत धरनी धरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी इक्क इकांत। इक्क इकांत सदा इकेला। गुरमुख सुहाए तेरा अन्तिम वेला। पंचम् जेठ नर नरायण, भिन्नड़ी रैण गुरमुक्खां लाए साचा मेला। साध संगत गुर चरन रल मिल बहिण, दरस दिखाए तीजे नैण, रसना सके ना किसे कहण, अचरज़ खेल पारब्रह्म कल खेला। गुरमुखां सोहँ शब्द तन पहनाए गहिण, बेमुख जीव चार कुन्ट भौंदे फिरन पौंदे वैण, हरि जी किते दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत इक्को रंग दिसे संग, नेड़ा दूर दूर नेड़ा इक्को थां रहाए। ना दूर ना नेड़े। अन्दर बैठा करे नबेड़े। जिस दे खुल्हे सदा वेहड़े। बेमुख जीव करदे झेड़े। ना धीर धराए साचे वेहड़े। ना कोई वेखे ना पछाणे, हरि जी वसे आत्म नगर साचे खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे सच्चो सच हको हक्क करे नबेड़े। सच नबेड़ा देणा कर। कलिजुग तेरा होया बन्द दर। बेमुखां आत्म होई अन्ध, ना दिसे साचा हरि वस्सया साचे घर। विच होई आत्म पापां कंध, ना कोई प्याए अमृत आत्म साचा सीर। बेमुखां दुखी होया बन्द बन्द, इक्क हँकार प्रभ दित्ता वड। गुरमुख साचा हरि चढ़ाए साचा चन्द, देवे साचा वर। आप उपजाए परमानंद, ना आवे किसे डर। मदिरा मास जो जन लाउँदा रहे बत्ती दन्द, प्रभ

भन्ने फड़ फड़। सभ दे अन्दर बैठा वड़, देवे भन्न जो लए घड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़। आपणा लड़ गुरसिख तेरी चोली दित्ता बन्न। तेरे आत्म दर दुआरे, जाए हरि जी खड़। साचा शब्द सुणाए कन्न, तेरी काया मन्दिर डूंघे अन्दर हरि जी वड़। पंजे चोर बाहर कढ्ढे बाहों फड़। आत्म जाए तीर लग, बेमुखां नाल अट्ठे पहर रिहा लड़। किसे ना दिसे छप्परी छन्न, अन्तिम कलिजुग देवे डन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त तेरी झोली पाए कोई ना लाए संन्। चोर यार ना कोई लुट्टे माल शब्द धन ना कोई करे ख्वार। गुरमुख विरले बेड़ा लैणा बन्न, बेमुख जीव रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर हरि अवतार। नर हरे निराधार। किरपा करे विच संसार। आसा वरे गुरसिख साचा होया पार। आत्म जोती साची धरे, जगाए अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द जगत चलाए वरताए, सृष्ट सबाई भरे रहण भण्डार। भरया रहे हरि भण्डारा। सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी बणया रहे वरतारा। ना मुक्के ना सुक्के ना रुके सद भण्डार अतुट्टे, खुल्हे रहण दुआरा। बेमुखां जड़्ह आपे पुट्टे, शब्द तीर दोवें रक्खीआं तिक्खीआं धारां। कलिजुग तेरी चोग निखुट्टे, जूठा झूठा फड़ फड़ हरि कुट्टे, फड़ फड़ कढ्ढे बाहर चरन दुआरा। सतिजुग तेरी पहु फुट्टे, गुरसिख साचा लाहा लुट्टे, अमृत पीए पहली घुट्टे, दिसे दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप वखाए आपणा इक्को इक्क दरबारा। इक्को इक्क सच्चा दरबार। जिथ्थे वसे हरि निरँकार। होए प्रकाश कोट रवि सस्से अगम्म अपार। शब्द घोड़े तंग कसे, पंचम् जेठ होए अस्वार, बेमुखां आत्म रहे दुःखे, रैण अन्ध अंध्यार। गुरमुखां राह सचा दस्से, बन्न्हे साची धार। कलिजुग जूठा झूठा मातलोक विच्चों नस्से, शब्द डण्डा लग्गे भार। सतिजुग साचा धरत मात तेरी झोली वसे, गुरमुखां कलि वेख वेख हस्से, बेमुख दर तों जायण नस्से, जो रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग सतिजुग दोवें इक्ट्ठे कराए, इक्क दूजे नूं रहे हथ्थ मिला। कलिजुग सतिजुग दोवें द्वार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। कलिजुग झूठा जूठा, प्रभ चरन डिग्गा मूंह दे भार। चौथा जुग रिहा रूठा, लक्ख चुरासी बणया मुट्ठा, धर्म राए दर करे पुकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा धरत मात तेरी गोद दए बिठाल। कलिजुग सतिजुग दर दरबान। अग्गे खड़े हरि मेहरवान। दोवें करन चरन ध्यान। अन्तिम वेला कलिजुग होया वेद अथर्बण अल्ला अलाही भरया पूर, जोत धरे प्रभ पूरा वड सूरा निहकलंक वज्जा डंक हरि रघुराया। सतिजुग साचा खुशी मनाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। साची वस्त झोली पाए, सोहँ नाम प्याए जाम, अट्ठे पहर सन्झ सवेर, कर कर मेहर, एका धार रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग कलिजुग दोहां धिरां दा तोड़ विछोड़ा,

अन्तिम अन्त विच मात आपे आप कराए। कलिजुग तेरे कढ्ढे खोट। गुरमुख साचे संत जन, लभ्भे विच्चों कोट। लक्ख चुरासी पाई फाँसी, धर्म राए दी होए दासी, सोहँ शब्द नगारे लग्गे चोट। वेख वखाणे मदिरा मासी, जोत जगाए घनकपुर वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क ब्रह्मण गौड़। सतिजुग साचा चिट्टा दुध्ध, निर्मल नीर है। गुरमुखां करे उत्तम बुध, हउमे कढ्ढे विच्चों पीड़ है। आप दवाए साची सुध्ध, चिट्टे अस्व उत्ते मार छाल बहे कुद्द, चलाए एका शब्द तीर है। दूर दुराडे पहली कुन्ट हुन्दा वेख युद्ध, ना देवे कोई किसे धीर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहीं हथ्थीं कलिजुग तेरा काला चोला रिहा चीर है। कलिजुग तेरा काला चोला। सृष्ट सबाई होए दुःखदाई, एका वज्जे शब्द गोला। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, शब्द सरूपी खेल रचाई, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सवाई, बेमुख जीवां दिस ना आए वसे कोल कोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे शब्द जणाई, आत्म साची मिले वधाई, आप सुणाए इक्को साचा ढोला। सच्चा ढोला सुहागी गीत। निहकलंक तेरी साची रीत। चार वरन तेरी सरन पाणी भरन, परखे सभ दी नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए ना दिसे मन्दिर विच मसीत। मन्दिर मसीत ना दिसे हरि, बेमुख जीव भौंदे दर दर, ना कोई सहाए। काया कन्दर साचा मन्दिर जगे जोत महाने, बेमुख जीव भौंदे फिरदे बन्दर, मायाधारी हथ्थ फड़ी नकेल, आप नचाए जिउँ रिछ कलन्दर, ना कोई भेव किसे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, सभ दे अन्दर रिहा समाए। चिट्टी चादर हरि जी करदा सभ दा आदर। प्रगट होया जोत सरूप सिँघ शेर शेर बहादर। निहकलंक कलि जोत जगाए करता कादर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणत बिहा बणाई, गुरमुख साचे संत जनो देवे सच्चा आदर। देवे माण विच जगत जहान। भगत वछल भगवान गुण निधान चतुर सुजान, एका देवे शब्द बबाण। गुरमुख साचे संत जन पहली वंड विच ब्रह्मण्ड नाथ त्रैलोकी कोल कराण। बेमुख जीवां तोड़े घमंड, घर घर भन्ने कच्चे अंड, विच जहान ना फड़े तीर कमान। बेमुख जीव देवे वंड, कलिजुग अन्तिम आई कंड, चारों कुन्ट चले चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई होई बेईमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाई होई रुशनाई, सर्ब गुणा हरि जाणी जाण। सतिजुग तेरा चिट्टा रंग। प्रभ दर सच्ची इक्क मंग लई मंग। एका रंग मजीठ चढ़ाए ना होए कदे कच्चा, साची वस्त लई मंग। मानस जन्म ना होए भंग। गुरमुख साचे लेखे लाए। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ आपणी हरि जी सरन बहाए। आपे जाणे गुण अवगुण, सभ दे लेखे रिहा लिखाए। विच्चों मात छाण पुण, इक्क बाला सच्चा लाला सिँघ मनजीत सभ दे अग्गे लाए। इक्क बणाया शब्द दलाला रंग गुलाला, दरगहि साची दए बहाए। साचा रंग चढ़ाए

६४
०४

होए सर्ब रखवाला। फड़ के उंगली चले नाल सिँघ पाला। प्रभ अबिनाशी सुरत संभाला। जोत जगाए जिउँ जगे जोत ज्वाला। किरपा करे प्रभ गोपाला। इन्द्रपुरी राह वखाणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग सुरपति राजे इन्द करोड़ तेतीस जोती लए मिलाए। कलिजुग अन्तिम गया ढुक्क। सुरपति राजे इन्द करोड़ तेतीस तेरा दाणा पाणी गया मुक्क। सच सरोवर सति धार, तेरे दर तों जाए सुक्क। प्रभ अबिनाशी निहकलंक कलि जामा धार कर विचार, छोटा बाल दो हथ्थीं ल्या चुक्क । पंचम् जेठ बन्ने धार विच संसार, सतिजुग साचे तेरा कर विचार, कलिजुग बेमुख डिग्गे मूंह दे भार, चारों कुन्ट पए थुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साचा माण ताण रखाए, मदिरा मासी कोई रहण ना पाए, आप मिटाए जो बत्ती दन्द रहे चुक्क। सतिजुग साचे तेरा साचा बाणा। मदिरा मासी कोई रहण ना पाणा। घनकपुर वासी सर्ब मिटाणा। गुरमुख साचे संत जनां, चिट्टा दुध्ध अमृत रस रसन चुआणा। आप मिटाए तृष्ना दुःख, धीरज यति सति संतोख सच मोख इक्क दवाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी हथ्थीं पंचम् जेठ आपे बन्ने गाना। चिट्टा दुध्ध चिट्ट चिटाण। धुरदरगाही सच सुगाती, विच माती आप ल्याया हरि नुराती, जन भगतां पुच्छे बाती, सुत्या राती देवे दाती, दरस दिखाए हरि भगवान। अमृत बूंद प्याए स्वांती, इक्क वरताए ठंडी शाती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाण। रसन गायण गुण गहर गम्भीर। अमृत मिले साचा सीर। आत्म देवे साची धीर। बज़र कपाटी काया माटी, प्रभ अबिनाशी रिहा चीर। साचा शब्द लगाए साची हाटी, लग्गी विच सरीर। बेमुखां काया चोली पाटी, कलिजुग अन्तिम होई लीर लीर। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, सभ दी तुट्टी धीर। एका रस गुरमुख लैण प्रभ चरन चाटी, कढ्ढे हउमे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे जीआ दान चरन धूढ़ इशनान, मूर्ख मुग्ध अञ्याण बणाए चतुर सुजान, देवे साची दाती देवे दात अपार भण्डार अतुल्ल है। आपे पाए सार विच संसार, सच भण्डारा गया खुल्ह है। गुरसिक्खां रिहा तार कर विचार, किरपा धार हरि निरँकार, देवे शब्द धार ना लाए कोई मुल्ल है। बेमुख जीव रहे झक्ख मार, चारों कुन्ट होए ख्वार आप डुबाए विच मँझधार, कलिजुग अन्तिम वेला नेड़े आया गुरमुख साचे हरि चरन चुभ्भी मार, अमृत धार कर प्यार, झिरना झिरे अपर अपार, तेरी काया महल मुनार जोत जगाए हरि निरँकार, गुरमुख साचे अन्तिम वेले तेरी काया आप उठाए चुक्क लै जाए सच्चे दरबार, दरगहि साची जाए वाड़ी। गुरमुख लाए अग्गे पिच्छे आप सज्जे खब्बे अग्गे चारों तरफ होए वहीरा वारो वारी। चोरां ठग्गां देवे दर दुरकारी। रक्खे लाज जिन्हां छुहाईआ गुर चरन चिट्टी दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत तन बलोए करे लोए, गुरमुख उठाए सोए जोत जगाए

बहत्तर नाड़ी। बहत्तर नाड़ी उब्बल रत। जोत जगाए हरि कमलापत। गुरमुक्ख साचे साचा बीज तेरी आत्म इक्क बिजाए, कलिजुग अन्तिम वेखे वत। साची दात सोहँ शब्द विच टिकाए, आपे जाणे गति मितक। साची जोत इक्क टिकाए देवे साची मति। कलिजुग अन्तिम वेला टल ना जाए, बेमुख सुट्टे धर्म राए दे डूंघे खात। वल छल कर आपणा आप रिहा छुपाए, गुरमुख तेरे हिरदे आसण लाए, जिस उत्ते ना कोई छप्परी ना कोई छत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बंधाए एका साचा नत्त। साचा नात चरन गुर। गुरमुख गुरसिख दोहां बण जाए इक्को सुर। आप मिटाए आत्म अग्न लग्गी तृख, मेल मिलाए लिख्या धुर। किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, दर दर मंगदे फिरदे भिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां साचे लेख लिखाई, जन भगत आत्म तन वजदी रहे वधाई, सोहँ शब्द गाउँदे रहण चांई चांईं, सतिजुग साची खिड़ी गुलज़ार, साचे संत साची वेल कल विच मात दे लाई, फूलन हार तन शृंगार, हरि निरँकार सोहणा हार इक्क गुंदाई। गुरमुख साचे संत जनां चरन धूढ़ मातलोक लग्गी इक्क क्यारी, साचे फुल्ल ल्याया तोड़। सोहँ धागे शब्द रागे रिहा जोड़ जोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुरमुखां रक्खे साया हेठ, घनकपुरवासी लाहे उदासी, मिटे जम का डर घर सच्चे रहण ना देवे मदिरा मासी, कल्गीधर साचा हरि आवे वागां मोड़। वागां मोड़े चढ़े घोड़े। गुरमुख प्रीती चरन जोड़े। साचा फल विच मात, हरि जी इक्को लोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नात पुरख बिधाता आपणे चरन जोड़े। गुर गुर गुर दरवेश। जन भगतां दर रहे हमेश। सतिजुग तेरा साचा बाणा खुल्ह्ड़े रहण केस। कोई ना रहे राजा राणा, इक्को सच नर नरेश। सर्ब जीआं आपे माणा ताणा, आपे करे सर्ब प्रवेश। आपे चले चलाए आपणे भाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि नर, आवे जावे वारो वारा। आवे जावे वारो वारी। खेल करे हरि निरँकारी। सतिजुग साचे जोत प्रगटाई पहली, सनक सनंदन सनातन संत कुमार नाउँ रखाई। दूजी वार लए अवतार, बराह रूप हरि जी धार, धरत मात पतालों कढ्ढी बाहर, एका कीती हरि आपणी कार। कोई ना पावे प्रभ दी सार। निहकलंक नरायण नर आवे जावे वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि कराए जल थल। सृष्ट सबाई भुलाए कर वल छल। जोत प्रगटाए घड़ी घड़ी पल पल। बेमुख वेखण नेत्र पेखण, दिस ना आए हरि रघुराए, कोई ना जाणे अज्ज कल्ल। महाराज शेर सिँघ देवे साचा दान, चरन धूढ़ सच्चा इशनान, जाए बलि बलि। बलि बलि बलि बलिहारी। गुर संगत प्रभ जाए तारी। रैण सबाई हरि जस गाए आए चरन द्वारी। आत्म झोली हरि भराई। जिन्हां आस इक्क रखाई। साची वस्त विच टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल रहे ना

राई। करे आस कर अरदास। प्रभ अबिनाशी होए दास, हिरदे सभ दे रक्खे वास। प्रभ अबिनाशी पुरीआं तिन्नां लोआं करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सच्चा दान सर्ब गुणवन्त हरि गुणतास। हरि गुणतासा, वेखे जगत तमाशा। कलिजुग अन्तिम वेला मौत डैण चबाए, खाए कर कर हासा। लक्ख चुरासी छुट्टे नाता, भाई भैण साक सज्जण सैण खाली फड़े हथ्थ विच कासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टभुज मारे धुज, शब्द लिखाए पंचम् जेठ गुझ, आप उठाए मात पताल अकासा। अष्टभुज उठ हो खबरदार। शस्त्र बस्त्र आपणे पहन कर तन शृंगार। धरत मात करे पुकार। लक्ख चुरासी पापां भरी, पाए आए भार। प्रभ अबिनाशी देवे साची वरी, जोत रखावे विच संसार। निहकलंक कलि जामा पाया, पंचम् जेठ लोकमात लाए इक्क सच्चा दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग सतिजुग मौत लाड़ी खिच ल्याए चरन द्वार। लाड़ी मौत आउणा दर। लै के जाणा सच्चा वर। प्रभ अबिनाशी आपे देवे नर नरायण बल बल धार। चारों कुन्ट आवे डर, प्रगट होया नर हरि, पैण स्यापे घर घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जागण भाग, उपजे राग धोए दाग, पहली माघ देवे सच्चा वर। लाड़ी मौत उठ विचारे। हरि जी केहड़ा करे तन शृंगारे। लक्ख चुरासी करां दासी, इक्को वार बेमुख सारे बणा मेरे लाड़े। धर्म राए तेरी सुण पुकार, हरि दातार, माझे देस करे
६७ वेस। जोत सरूपी आपे लाए सच सच्चे अखाड़े, इक्को सच नर नरेश। खुल्ले रक्खे आपणे केस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ६७
०४ भगवान, इक्क घर साचे वसे जोत सरूपी गुरमुख साचे विच प्रवेश। लाड़ी मौत चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी मेरे बख्शीं ०४
सभ गुनाह। फड़ के बांह साचा खेल करीं विच ब्रह्मण्डी, जिथ्थे होए वड पखण्डी, इक्क दिखावीं सच्चा राह। आपणी हथ्थीं फड़ चण्डी, वढ्ढी जाईं वक्खो वक्ख करीं थाउँ थां। आप उठाईं धरत मात दी गोद सवाईं, बेमुख कलिजुग जीवां ना देवे कोई ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वर तेरी झोली पाया, पर्दा उहला ना कोई रखाया, शब्द डोला तेरे नाल धराया, गुरमुख साचे संत जनां लैणा विच बहा। लाड़ी मौत करे पुकार। हरि जी साचे किरपा धार। मेरी पैज देणी संवार। मैं जावां विच मात, अन्तिम कलि बेमुखां करां ख्वार। सिर मेरे हथ्थ रक्खीं हरि समरथ, मैं जावां तेरे सिक्खां चरन द्वार। मेरे आवण नाल, फड़ावां तेरे हथ्थ, मेरा उतरे सिर तों भार। तेरे सिक्खां तन शब्द पहनावां साचा हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए लाड़ी मौत राहे पाए, बेमुख जीव दिस ना आए, त्रैलोकी नाथ सगला साथ तेरा आप निभाए विच संसार। लाड़ी मौत हो त्यार। आई हरि दर सच्चे दरबार। प्रभ अबिनाशी दित्ता दोहीं हथ्थीं सच्चा प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ करे अकार। लाड़ी मौत तेरा सीस गुंदाए। शब्द

टिक्का मस्तक लाए। बेमुखां दे नाल व्याहे। फड़ के बाहों डोली पाए। धर्म राए दी बण गई गोली, अठाई कुण्डा दे भराए। बेमुख जीव मारन बोली, जोत सरूपी कोई सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विहारा हरि करतारा, निहकलंक नरायण नर साध संगत तेरे विच कराए। लाड़ी मौत तेरे सिर पाउणी सग्गी। एका जोत निहकलंक विच मात दे जगी। चारों कुन्ट उठ उठ वेखो तत्ती वा वगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल आप रचाए, मंगण दर ना किसे जाए, ना कोई रूप रंग रेख रखाए, एका बणे संगी अंगी। ना कोई संग सुहेला। जोत सरूपी इक्क इकेला। तीन लोक आप रचाया। माया रूपी सति सरूपी, वडा शाहो भूपी ना कोई रंग ना कोई रूपी, एका एक हरि अनूपी, आप कराया सच्चा मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्त कराया, साचा वेला मात ल्याया, होया सतिजुग वेला। चरन कँवल सदा सुहेले। चरन कँवल गुरसिक्खां मेले। चरन कँवल कँवल चरन जगे जोत बिन बाती बिन तेले। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाग बणे सज्जण सुहेले। चरन कँवल चरन धूढ़। चरन कँवल तराए गुरमुख आत्म मूढ़। चरन कँवल आप कटाए जम का जूड़। चरन कँवल एका रंग चढ़ाए आत्म साचा गूढ़। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई अन्तिम अन्त दिसे कूड़ो कूड़। चरन कँवल चरनार बिन्द। चरन कँवल अन्तिम वेले आए वाली हिन्द। चरन कँवल कँवल चरन शाह मृगिन्द। चरन कँवल उप्पर धवल रहे मवल, रिहा तरस सुरपति राजा इन्द। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर गुरसिक्खां आप पिलाए, बेमुख जीव करदे फिरदे निन्द। चरन कँवल गुरमुक्खां मिले मात। चरन कँवल मिटे आत्म अन्धेरी रात। चरन कँवल गुरमुखां मिले मात सच सुगात। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचा नात। चरन कँवल हरि अवतारी। चरन कँवल गुरसिख साचा, जाए बल बलिहारी। चरन कँवल एका रीत, सच प्रीत मात सच्ची धारी। चरन कँवल पतित पुनीत, साचा मीत हरि बनवारी। चरन कँवल लाग गुरसिख साचे मीत, मातलोक आउण ना देवे हारी। चरन कँवल काया होई ठंडी सीत, अमृत बरखा लग्गे भारी। चरन कँवल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लाग धो दाग खुल्हे दसम दुआरी। चरन कँवल गुरमुख लग्गे। आत्म साची जोत जगे। नर हरि साचा सदा रहे पिच्छे अग्गे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द उपजाया, गुरसिख बन्न्हाया साचा धग्गे। चरन कँवल पेख नैण। प्रभ अबिनाशी वेख, सज्जण सुहेल तीजे नैण। जोत सरूपी धारे भेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणे साक सैण। चरन प्रीती जगत निराली। आत्म मिटे घटा काली। करदा रहे सदा रखवाली। बणया रहे गुरसिक्खां पाली। प्रभ अबिनाशी साचा माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, सर्ब जीआं पुत्तर धीआं करे सदा सदा रखवाली। चरन प्रीती जाए जुड़। खाली हथ्थ हरि समरथ, कोई ना जाए मुड़। प्रभ अबिनाशी सच ल्याया शब्द रथ साची वथ, धुर दरगाहों आया तुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मुख लगाए, कलिजुग साचा जोग दवाए, हउमै विच्चों रोग गंवाए, कलिजुग धार विच संसार, गुरसिख ना जाए रुढ़। सच्चा नाम शब्द अपार। रसना देवे जीव अधार। मानस जन्म जाए सुधार। पूर्ब कर्म रिहा विच विचार। आउणा जाणा लेखे लाए, साचे राहे आपे पाए, मेल मिलाया विछड़यां करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जम का फाहा गलों लाहे, सोहँ कंगण तन पहनाया, विच मात देवे वस्त तन सच्चा शृंगार, नार भतार इक्क सच प्यार, होए दुख्यार, ना पाई सार, विच डिग्गा आत्म डूंघी धार। निहकलंक राह दिखाए। शब्द सच ज्ञान दवाए। सोया जीव आण जगाए। गुरमुख साचा संत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरी आस देवे धरवास दया कमाए। पूरी आस हरि भरवासा। रसना गाओ स्वास स्वासा। गुरमुख रसन ना लाए मदिरा मासा। प्रभ अबिनाशी फेरा पाए, जोत सरूपी चारों तरफ सृष्ट सबाई वेखे आप तमाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वर आए घर जाए तर जूठा झूठा भन्ने हँकारी कासा। चरन लाग जाणा जाग। आत्म धोणा दाग। गुरमुख बणाए हँस काग। आप बुझाए तृष्ना आग। दो हथ्थीं हरि समरथी पकड़े गुरसिख तेरी वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दात झोली पाए, आत्म लाए साची जाग। साचा नाम झोली भर। किरपा कर साचे हरि। आत्म खुल्हे साचा दर। मिल्या धुर दरबार साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भण्डारे सच भराए, अमृत साचा सीर देवे भर। साचा देवे नाम हरि, गुरसिख आत्म सीने विच्चों देवे कढ्ढ इक्को पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए साचा तीर, बज़र कपाटी देवे चीर। साचा शब्द रसना गाना। मदिरा मास दयो तजा, आपणी बणत लए बणा। साचा कन्त जीव जन्त, आपणी सरन लए लगा। आदि अन्त जुगा जुगन्त, होए सहाई सभनी थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दान हरि भगवान, आपे पकड़े गुरमुखां बांह। पकड़े बांह होए सहारा। लक्ख चुरासी गेड़ निवारा। आत्म दीपक साची जोत करे उज्जयारा। गुरमुख बणाए साची गोती, दुरमति मैल हरि दर धोती, काया सच्चा महल्ल मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लाया सच्चा इक्क दरबारा। सच दरबार मातलोक हरि साचे लाया किरपा धार। सच वस्त हरि झोली दए पाया, मंगण आया बणया लेख लिखार। नगर खेड़े देवे थेह कराया, शब्द चलाया अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अमृत मुख दे बरसाया, काया करे ठंडी ठार। गुर पूरा हरि निरँकार है। वड सूरा विच संसार है। सर्बकला भरपूरा देवे तार है। आत्म देवे जोती नूरो नूरा, मिटाए

६६ ०४

अन्ध अंध्यार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आपे पाए सार है। साचे दर होए सुहाना। करे चरन हरि ध्याना। सोहँ शब्द रसना गाना। आप मिटाए चुकाए जम की काना। एथे ओथे साची थाएँ, दरगहि साची बहि के खाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा देवे नाम गुण निधान नाम निधान निरहार। आप बणाए बणत गुणवन्त गुण निधान, किरपा कर विच संसार। हरि मेहरवान पावे सार कर प्यार। एका साची दस्से तिक्खी धार। सोहँ शब्द रसन विचार। आत्म पर्दा देवे पाड़, दिसे हरि सच्चा निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सरन आप रखाए ल्याए चरन द्वार। हरि दस्से राह सुखाला। छड्डुणा पए जगत जंजाला। आत्म होणा पए कंगाला। तन मन्दिर बणे सच्ची धर्मसाला। प्रभ अबिनाशी वसे अन्दर, देवे नाम सच्चा धन माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपे प्रितपाला। औखा राह औखी घाटी। जिथ्थे खुल्हे बज़र कपाटी। मातलोक इक्को इक्क सच्ची हाटी। साचा राह गुरमुख साचे खुल्हा साची घाटी। बेमुखां अन्तिम वेले गल प्या फाह, ना दिसे कोई सच्चा राह, कलिजुग रैण अन्धेरी घाटी। गुरमुखां हरि फड़े बांह, रसना रस सोहँ शब्द साचा चाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए तेरी काया झूठी माटी। सच द्वार
७० सच्चा थाउँ। एथे ओथे हुन्दा सच न्याउँ। दरगहि साची पावे सार, गुरमुखां देवे ठंडीआं छाउँ। आप बिठाए शब्द बबाण, ७०
०४ आपणी गोद उठाए जिउँ बालक मांओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल रहे ना राओ। ना भुलणा जगत ना रुलणा, ०४
दरगहि साची पैंदा मुलणा। मानस जन्म मात फलना फुलना। पाया नाम दर निधाना। गुरमुख ना बणना फेर अञ्याणा। प्रभ अबिनाशी दूर दुराडा वेखे, मारे शब्द निशाना। इक्क इक्क फड़े बणया साचा गाडी, ना कोई भेव छुपाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाडी, काया महल सदा अटल्ल जिस रखाना। महाराज शेर सिँघ गुरसिख ना मनो भुलाना। अगला पिछला मिलदा लेखा। बिधना लिखे जेहड़ी लेखा। विच मात ना मिले दात सच सुगात, किसे धारी भेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सरनाई मिले वड्याई करे बेनन्ती आप लिखाए साचे लेखा। करे बेनन्ती दर दरबार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर देवे वर फल लगाए साचे डार। भुल्ल ना जाणा रुल ना जाणा साची वस्त कितों हथ्थ ना आए विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच समाए, जोत सरूपी डगमगाए, सभ नूं देवणहार दातार। देवे दान वड वड दानी। जो जन करे चरन ध्यानी। अन्तिम कढ्ढे सर्ब माणी। करे चरन धूढ़ इशनानी। इक्को वज्जे तीर शब्द कानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए, तेरे डाले फल लगाए करे मेहरबानी। साचा लग्गे डाल फल। सच दुआरे आउणा चल। ना करे कोई वल छल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप प्याए अमृत घुट्ट अमृत

सीर साचा जल। शब्द जैकारा लैणा बोल। हरि जी चुकाउँदा अगला पिछला मूल। कलिजुग माया वडी छाया, अन्तिम ना जाणा भूल। जिस ने अन्धा जगत बणाया। उल्टे धन्दे फड़ के लाया। आत्म अन्धे पापी गन्दे साचा राह ना किसे वखाया। गुरमुखां अन्तिम प्रभ सोहँ रंदे आपे रंदे, दूई द्वैती पड़दा लाहया। आप चढ़ाए साचे चन्दे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेख लिखाए लेख, गुरमुख गुरसिख एका धाम बहाया। शब्द नाम सच्चा गहणा। गुरमुख साचे दर घर साचे इक्को बहिणा। साचा तन शृंगार आप कराए हरि रघुराए, आपे चुकाए लहणा देणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साची धार बन्ह्राए, शब्द कटार हथ्थ फड़ाए, दरस दिखाए तीजे नैणां। शब्द नाम जगत अनमुल्लड़ा। सुक्का करे हरया चाम, वसे काया कुलड़ा। ना लग्गे कोई दाम, जो दर आए गुरमुख भुल्लड़ा। प्रभ प्याए अमृत साचा जाम, आप लगाए साचा बुल्ल्हड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए काम देवे नाम गुरमुख साचा विरला कोई विच पूरे तोल तुलड़ा। दयावान दए दिलासा। जो जन तजाए मदिरा मासा। हिरदे हरि जी रक्खे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां चोरां करे नासा। करे नास पंजे चोर। साचे घरों कढ्ढे बाहर हरामखोर। अट्ठे पहर भौंदे रहण पाउँदे शोर। साचा शब्द ज्ञान चरन ध्यान, देवे दात वड करामात, आप चुकाए मोर तोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया डूंघी कन्दर साचे मन्दिर वसे अन्दर, आप मिटाए अन्ध घोर। अन्ध घोर मिटाए सच्चा जोगी। सोहँ शब्द साची दात ल्याया, कटे हउमे रोगी। गुरमुखां साचा मेल मिलाया, मिल्या हरि सच्चा धुरदरगाही सच संजोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा माण ताण रखाए सच्चा रस प्रभ अबिनाशी होया वस, राह साचा जाए दस्स, साचा सुख विच मात भोगी। देवे सुख सहज सुभाए। गुरमुख साचे आस रखाए। होए दास चरन सरन हरि सभ रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीस इकीस इकीस बीस भेव चुकाए। साचे घर दिसे ख्वारी। दुखी होई नर नारी। बिरध बाल जवान होए, ना कोई पावे किसे सारी। आत्म होई सर्ब बेईमान, विच्चों गया सच निशान मार उडारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर ध्यान सुण सच्ची पुकारी। ना कोई ताणा ना कोई पेटा। ना कोई मित मात पित, ना कोई भैण भाई ना कोई बेटा। कलिजुग जीव, हरि इक्क सच्चा खेवट खेटा। बाहों फड़ के पार लगाए, साचे राहे आपे पाए, रंग रंगाए इक्क रंगेटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धारी सच्चा सूत्र, काया तन बद्धा मन जिस दे विच लपेटा। ना कोई तन्द ना कोई ताणा, ना कोई सुघड़ स्याणा। ना दर सीस किसे झुकाणा। गुरमुख विरले जाणा, प्रभ अबिनाशी तेरा भाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची अंस। आप बन्ह्राए पंज दुष्ट दुराचार, हँकार विकार मार मुकाए, जिउँ कान्हा कंस दए

खपाए। जोत सरूपी जोत हरि, सभ दे हिरदे रिहा समाए। आत्म देवे साची मति। साची रसना गुरसिख, चरखा लैणा कत्त। एका गेड़ा आप दवाए, घर दा झेड़ा आप चुकाए, साचा बीज सभ दी आत्म देवे घत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा देवे बन्न, जन रसना कहे धन्न, आत्म जाए साची मन बीजे बीज साचे वत। साचे संत हरि उपजांयदा। विच मात जन्म दवांयदा। साची वस्त झोली पांयदा। शब्द डोली विच पांयदा। दर आपणे दी सच्ची गंढु, संत हरि बन्नांयदा। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म धुरदरगाही, बैठ विच मात शब्द सरूपी आप सुणांयदा। साचे संत हरि ध्यान। अट्ठे पहर रसना गान। दूर दुराडा हरि जी वसे सदा सदा मेहरबान। उत्ते बैठा हरि जी हस्से, थल्ले वेखे संत जन किवें पाउँदे वैण। जोत सरूपी जोत हरि सुण पुकार किरपा धार साचे संतां आप खुल्हाए तीजा नैण। साचा हरि साचे संतां विच मात देंदा शब्द धार है। सचखण्ड निवासी सच धाम वसे वड अतुल्ल अडुल्ल सर्ब गुण भरपूर है। जन संत विच मात झूठी ख़ाक रुले प्रभ देवे कर तरस अन्तिम हरि हज़ूर है। हरि संतां पावे आपे मुल्ल, विच मात लगाए साचे फुल्ल, बेमुख दुरकारे दूर दूर है। जोती जोत सरूप हरि, एका एक संत अनेक देवे नाम रस सच सरूर है। संतां देवे नाम अधार। आप बैठा इकल्ला अचल निरँकार। संत जनां हिरदे हरि विचार। दोए जोड़ दिवस रैण करन निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, अमृत बूंद झिरना झिरे अपर अपार। डिग्गे बूंद खुल्हे कँवल, संत जनां दी आत्म जाए मवल, खुल्हे दस्म दुआर। मिले माण उप्पर धवल, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे शब्द धार। शब्द धारी कलि विच आए। संत जनां दे कन्न सुणाए। साचा दर खोल्ह वखाए। बज़र कपाटी चीर वखाए। अमृत साचा सीर प्याए। नाभ कँवल हरि उलटाए। संत जनां दी तृखा बुझाए। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघासण बैठ सभ दी रिहा आस पुजाए। काया अग्न दिवस रैण। सौखा साह ना देवे लैण। औखा होया चलण फिरन, ना देवे किते बहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि दुखी होई आत्म निमाणी रो रो पावे वैण। अंग अंग लग्गा दुःख। ना कोई तेह ना कोई भुक्ख। सुकदा जाए काया रुक्ख। बाहर आया होया सुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर प्याए, आप उपजाए साचा सुख। दुःख दर्द जीव होए दूरा। हाकन डाकन प्रभ करे चूरा चूरा। साचा नाम गुण निधान रसना गाओ, होए काया नूर नूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा बन्न वखाए, आप लँघाए पहले पूरा। अमृत तेरी ठंडी धार। दुःख रोग चिन्ता सोग जगत वियोग दए निवार। दरस अमोघ किरपा कर देवे नर निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव निमाणा होए निताणा आए सच दरबार। हड्ड हड्ड नाड़ी नाड़ी। अग्न जोती रही साड़ी। जगत दिसे किस्मत माढ़ी। प्रभ अबिनाशी

दया कमा, अमृत देवे मुख चुआ, दुःख मिटाए बहत्तर नाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खां रोगां आपे देवे झाड़ी। दुक्खां रोगां छुटे तन। प्रभ अबिनाशी लए फड़ अन्दर वड़, जूठे झूठे देवे भन्न। शब्द तीर चले कड़ कड़, पवण मसाणी रिहा लड़, अमृत देवे साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म बख्शे साचा नीर। लग्गी रहे पीड़ तन। प्रभ अबिनाशी देवे बन्न। दुक्खां रोगां देवे डन्न। झूठा भाण्डा देवे भन्न। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राग सुणाए कन्न। लग्गे रोग तन खिट्टा। प्रभ साचा शब्द देवे दात, पड़दा पाए चिट्टा। साचा लेख हरि फेर लिखाए, बिधना लेख मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख रोग सोग सर्ब मिटाए जो लग्गा रहे तन हट्टा। गुर सरन जगत वड्याई। गुर संगत रल मिल बहिणा साचे थाँईं। आत्म जाए ना किसे हिल्ल, ना जाए कोई शरमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख पीड़े जिउँ कोहलू तिल, वेले अन्त कलिजुग आई। लिखे लिख्त लेख हरि मेहरवान। देवे वर हरि भगवान। गुरमुख साचा सच विहाजे, देस माझे जगे जोत महान। चरन कँवल वड राजन राजे, नीच ऊँच ऊँच नीच भेव सर्ब मिट जाण। चार वरन हरि साजण साजे, आप चढ़ाए शब्द ताजे, गुरमुखां संवारे मात काजे, नर हरि श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां देवे सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान। शब्द बाण
७३
०४
तिखा तीर। दुरमति मैल रिहा चीर। विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़। आत्म पड़दा झूठा वढ्ढे दिसे गहर गम्भीर। आप लड़ाए साचे लड्डे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे शांत सरीर। आप प्याए बूंद स्वांती। कोई ना जाणे जाती पाती। दरस दिखाए हरस मिटाए, गुरमुख सोया आप जगाए सुत्तयां राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची जोत बिलोए तिन्नां लोए, ना कोई तेल ना बाती। आत्म तीर्थ कर इशनान। सोहँ मिले साचा दान। रसना गाउणा हरि भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। गुरमुखां तारे हरि समरथ। बेमुखां विच्चों कीने वक्ख। सृष्ट सबाई अन्तिम कलि लाउँदे दिसण भक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम कलि लए रक्ख। देवे नाम वड बलकारी। फड़ फड़ बाहों जाए तारी। काया तन रिहा श्रृंगारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म करे साची कारी। नाम निरवैर वड हरि दीना। गुरमुखां देवे दाना बीना। गुरमुख साचे विरले रसना चीना। आप नुहाए सच सरोवर जिउँ जल मीना हरि जी भीन्ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरमुख साचा साचे राहे पाया, बाहों फड़ के वक्ख कीना। छोटे बाले जन्म दवाया। जन्म कर्म धर्म, हरि जी आपणे हथ्थ रखाया। आप मिटाए चिन्ता रोग, साचा राग दए सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ चरन सरन जिस जन सीस झुकाया।

दसवें मास होया वास। पूरी कीनी हरि जी आस। गुरमुख साचा होया उदास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम रसना जपया स्वास स्वास। नाम स्वासा एका कर गुर चरन भरवासा देवे धर। आत्म होए गुरमुख तेरी रहिरासा, प्रभ अबिनाशी देवे किरपा कर। रसना तजणा मदिरा मासा, शब्द भण्डारे देवे भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नर हरि जन्म दवाया। मात घर भाग लगाया। साची शब्द लग्गे जाग, साचा वक्त हरि सुहाया। बुझे तृष्ना आग, अमृत साचा सीर पिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ बलबीर नाम धराया। दोए जोड़ करे चरन निमस्कारी। प्रभ अबिनाशी तुटी जोड़, आए दर द्वारी। कलिजुग बेड़ा रिहा रोड़, ला पार किनारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार चुफेर करे शब्द वाड़ी। गुरमुख करे दर पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। बिरध बाल जवान अञ्याणे, सारे देवे तार। मदिरा मास जो रसन लगाए, मारे डाहढी मार। शब्द हथौड़ा हथ्थ रखाए, ना कोई सके सहार। मिट्ठा कौड़ा वेख वखाए, आत्म करे विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सरन चुक्के मरन डरन, साचा देवे नाम अधार। आत्म शब्द लग्गे डंग। वास होए अंग अंग। मानस जन्म होए भंग। सदा सहाई अंग संग। गुरमुखां कटे भुक्ख नंग। साचा शब्द तन पहनाए, गुरमुख ना जाणो कच्ची वंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड मेहरवान चिट्टे अस्व कसी बैठा तंग। हाकन डाकन सिर मुंडवाए। शब्द डण्डा सिर लगाए। वढ्ढी जाए कंडां, जोत सरूपी शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म होए जिस दी रंडा, विच नव खण्डां बीर बेताले मगरों लाहे। आपे लाहे बीर बेताल। फेर ना वज्जे किसे ताल। आपे तोड़े जगत जंज़ाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम रसना गाए आत्म साची जोत जगाए, जिउँ दीपक विच थाल। गुर पूरा दया कमांयदा। गुर संगत साची बणत बणांयदा। दर घर साचे आए। रसना हरि जी ल्या ध्याए। नेत्र नैण रहे तृखा बुझाए। चरन धूढ़ मस्तक लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत दित्ता साचा वर, साचे फूल कन्त कन्तूहल आपे आप बरसाए। संगत आई सच दुलारी। दूजी रली नाल भिन्नड़ी रैण प्यारी। तीजे इक्ट्ठे होए भाई भैण, बद्धी सच्ची धारी। चौथे कोए ना रहे खाली गुर दर बहिण, देवणहार सर्ब वरतारी। पंजवें इक्ट्ठे होए बहिण, ना कोई वेखे उल्टे नैण, गुर दर सर्ब नर नारी। छेवें शरअ ना कोई हदीस, सच्चा शब्द इक्क अतीत, देवे हरि नर निरँकारी। सतवें सति संतोख ज्ञान, एका जोड़े चरन ध्यान, हरि मेहरवान गुरसिक्खां किरपा धारी। अठवां अट्ठे तत्त, गुरमुखां देवे मति, सच शब्द बीज सोहँ साचे वत, गुरमुख तेरी काया कलि क्यारी। नावें नौ निध, गुरमुखां कारज करे सिद्ध, आत्म तीर इक्क चलाया, जोती जोत सरूप हरि, खेल अपर अपारी। दसवें दहि

दिश धावे, शब्द डोरी प्रभ अबिनाशी गुरमुख तेरा मन बंधावे, पंज चोर तेरे आत्म घर ना करन ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दसवें घर साचे दर साचे सर, अट्ठे पहर वास रखाए। इक्क दस दस इक्क ग्यारां। मिल्या हरि सच्चा भतारा। देवे वर किरपा कर मातलोक जाणा तर। दस दो दो दस बारां। लग्गीआं गुर दर बहारां। गुरमुखां खिच्चीआं प्रभ आत्म तारां। देवे आत्म जोत हरि, पावे सभ दीआं सारां। दस तिन्न तेरां। प्रभ अबिनाशी गुर संगत तारे कर कर आपणीआं मेहरां। चार दस दस चार चौदां, जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर ना होए कहर, गुरमुख साचा सदा गाउँदा । दस पंज पन्दरां । हरि जी वसे तेरी काया कन्दरां। ना भुल रुल बेमुख बण बन्दरा। जोती जोत सरूप हरि, आपे तोड़े तेरा आत्म वज्जा जन्दरा। छे दस दस छे सोलां। गुरसिख तेरी आत्म सेजा सुत्ता रहे कोल कोला। सत्त दस दस सत्त सतारां। प्रभ अबिनाशी विच मात सोहँ शब्द तेरीआं दोवें रक्खीआं तिक्खीआं धारां। गुरसिक्खां बेड़ा पार कराए, बेमुख डोबे विच मँझधारा। अट्ठ दस दस अट्ठ अठारां। गुरमुख लभ्भे विच्चों लक्खां ते हज़ारां। साचे हरि विच मात बाग़ लगाया, गुर संगत मन्दिर साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, उत्ते अमृत आत्म बरसे साची धारा। नौ दस दस नौ उन्नी। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ सोहँ शब्द सिर धरी सच्ची चुन्नी। बेमुख अन्तिम अन्त कल, चोटी उत्तों मुन्नी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लाले बाले आपे पाले, सृष्ट सबाई छाणी पुंनी। दस दस बीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, गुरसिख साचे संत जनों तेरी कोई ना करे रीस। सच वर हरि दर मंगदे फिरन कोटन कोट अपारा, देवणहार सच्ची सरकार इक्क दातार, ना लाउँदा कोई फीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण भेव चुकाए बीस इकीस। पहली चेत हरि विचारी। मातलोक जोत धारी। साध संगत साची तारी। चेत दो आई वारी। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे संत जनां आत्म पाए साची सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दर इक्क खुल्हाया, सिध्धा राह इक्क वखाया, गुरमुक्खां बाहों फड़ फड़ जाए वाड़ी। तीजे चेत तिन्न दिन। प्रभ अबिनाशी करे खेल भिन्न। गुरमुख साचे मात गिण गिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाए करे रुशनाए छिन्न छिन्न। चार चेत चार रंग। पंचम् जेठ बणे संग। चिट्टा काला सूहा लाल, प्रभ बणाए शब्द दलाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रंगाए इक्क रंग। पंचम् चेत पंचम् राणी। प्रभ अबिनाशी तेरे दर साचे घर, अट्ठे पहर भरे पाणी। गुरमुखां दित्ता सच्चा वर, जगत तृष्ना चुक्के जम की कानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुगात वडी दात कलिजुग मिटे माया राणी। छे चेत गुरमुख तेरी आत्म खेत। प्रभ अबिनाशी नेतन नेत आप खुल्हाए करे छेक। इन्दलोक ना पायण देवी देव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जंगल जूह

उजाड़ पहाड़ वेंहदे फिरदे कलिजुग वेत। सत्त चेत सच्ची सरकार। खेल करे अपर अपार। गुरमुखां तार देवे विच मँझधार। शब्द देवे हरि निरँकारे, खोल्हे बन्द कवाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़। अट्ठ चेत अट्ठे तत्त। प्रभ अबिनाशी देवे मति। रसना चरखा लैणा कत्त। सोहँ बीज साचा लैणा आत्म घत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे डाल फल लगाए मातलोक ना झड़न पत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दे समझावे मति। नौ चेत निरगुण रूप। जोत सरूपी हरि वड भूप। गुरमुखां मिटाए आत्म अन्धेर अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच जगाए करे रुशनाए, एका दिसे सति सरूप। दस चेत हरि दरस दिखाया। कर तरस अमृत मेघ आप बरसाया। गुरमुखां मिटाए हरस, बेमुखां तन अग्न लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जूठे झूठे जीव अन्तिम कलि नग्न रखाया। दस चेत दस्म दुआरी। गुरमुखां खुल्हाए हरि निरँकारी। रसना गाए भरम चुकाए, नर हरि हरि नर सिरजण हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां करे सद प्यारी। साध संगत सच वखानयां। प्रभ अबिनाशी दर आयां देवे माणयां। हउमे रोग जगत विजोग दए चुकाई, देवे नाम वड महानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आयां देवे माण दो जहानयां। मंगणी भिक्ख सच दुआरे। उतरे तृख पीओ अमृत धारे। लथ्थे विस कलिजुग लग्गी भारे। साची सिख्या लैणी सिख, सोहँ शब्द रसन उचारे। सच लेख प्रभ देवे लिख, मानस जन्म संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची वस्त हरि झोली पाए, गुरमुख ना मंगण जाए दूजे किसे होर दुआरे। शब्द नाम सच पंघूड़ा। रंग चढ़ाए तन गूढ़ां। चतुर सुजान बणाए बेमुख मूढ़ा। आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाए जो जन मस्तक लाए चरन धूढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए कलिजुग कटाए जो पाई बैठा जूड़ा। हरि साचा तन वसाणा। मन झूठा आप समझाणा। हथ्थीं फड़ी फिरदा ठूठा, साची वस्त खैर किसे ना पाणा। साचे दर तों फिरदा रूठा, ना फेर किसे मनाणा। धर्म राए टंगाए कर कर पुठ्ठा, देवे दुःख महाना। गुर पूरा गुरमुखां तुठा, देवे नाम निधाना। बेमुख रहण ना देवे लुकया किसे गुठ्ठा, शब्द डण्डा मगर लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे नाम निधाना। आप चुकाए पिछली बाकी। आत्म खोल्हे गुरमुखां ताकी। अन्दर बैठा मारे झाकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा बाणा इक्क रखाया, कोई ना अग्गे रहे आकी। अन्दर वड़या सच्चा शाह। लेखा लवे पंजां चोरां, बाहीं फड़ के पावे फाह। कलिजुग जीव किसे दिस ना आए, अन्दर अन्ध अन्धेरा डूंघा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां बेड़ा बन्न्हे देवे ला। मन पंखी लाए उडारी। दहि दिश भरमे जाए वारो वारी। गुरमुख गूढ़ी नींद

७६
०४

सौंदा जाए, प्रभ अबिनाशी करे रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों फड़ फड़ तोड़े किल्हे हँकारी। गढ़ अन्दर वड़ साचे राहे पाउँदा जाए। तन मन मन चैंचलहारा। पंचां नाल करे प्यारा। प्रभ अबिनाशी शब्द डण्डा साचा कंडा इक्को देवे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां आप बन्हाए आत्म साची धार। सुरत शब्द मेल मिलावा। गुरमुख रक्ख साचा दाअवा। कलिजुग ना पाउणा झूठा हावा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे गले लगाए दया कमाए गुरमुखां फड़ के बाहां। सुरत शब्द मेल मिलाए। सुरत शब्द सुन्न मुन्न खुल्हाए। सुरत शब्द धुन इक्क उपजाए। सुरत शब्द गुण अवगुण जन कढाए। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुरदरगाही सुरत शब्द सच्ची उडारी। सुरत शब्द खोल्हे बन्द कवाड़ी। सुरत शब्द दिखाए वारो वारी। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे संत जनां आप खुल्हाए दया कमाए, जो जन करे चरन प्यारी। तीजा नैण नेत्र अपर अपारा। अट्ठे पहर अमृत रूपी जल रहे धारा। साचा दिसे हरि सच सरूपी, जोत सरूपी निहकलंक निराहारा निराधारा। ना कोई रंग ना कोई रेख, एका जोत जगे अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दस्म दुआरी खोल्हे, देवे अमृत धारा। दस्म दुआर हरि जी खोल्हे। अन्दर बैठा हरि जी बोले। गुरमुख गुर दोवें दिसण कोल कोले। ना कोई पड़दा ना कोई ओहले। आपे वसे गुरसिख तेरे काया चोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म पड़दे सारे खोल्हे। खुल्हे दस्म दुआर जोत अकारया। दीपक जोत कर उज्जयार, चलदी दिसे इक्को धार, जगे विच ललाट अपर अपार है। आप कराए पूरा घाट, विच्चों पर्दा रिहा काट है। जगे जोत काया माट, खुल्हे इक्को साचा हाट, देवे सुरत हरि नर निरँकार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह वडा शहनशाह आपणा आप वखाल है। वेखो राह हरि बलवान दा। दस्से केहड़ा थां, रंग गुरसिख केहड़ा माणदा। जिथ्थे रहन्दी ठंडी छाँ, लेखा चुक्के पीण खाण दा। आप उठाए गुरसिक्खां आपणी उत्ते बांह, साचे पालन हरि जी पालदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, इक्को हरि इक्को नर धारया भेख श्री भगवान दा। दस्म दुआर निकले लाट। काया बज़री जाए पाट। जन भगतां गुरमुखां नेड़े आई वाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए, नेत्र तीजे वास रखाए, झूठा पर्दा जाए पाट। देंदा जाए नाम भण्डारा। मंगण आए गुरसिख दुआरा। आप मिटाए तृष्ना भुक्ख, इक्क उपजाए साचा सुख, भुल ना जाए जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए, गुरमुख आत्म सुन खुल्हाए, रसना गाए सोहँ शब्द अपर अपारा। कलिजुग डूंघी दिसे भवर। अक्खीं वेख्या गहर गवर। चरन लाग धोणा दाग, मानस जन्म जाए सवर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को

७७ ०४

इक्क गुण निधान, ना दिसे कोई अवर। भिन्नी रैनड़ीए तेरी रुत्त सुहञ्जणी। भिन्नी रैनड़ीए गुर संगत गुर चरन मजनी। भिन्नी रैनड़ीए पी अमृत रस गुरमुखां राह साचा दस्सणी। भिन्नी रैनड़ीए जगी जोत कलि इक्क निरँजणी। सभ दे हिरदे वसी, बणी दु:ख दर्द भंजनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ साची देवे नेत्र साचा अंजनी। भिन्नी रैण गुर चरन दुआरे। भिन्नड़ी रैण दोए इक्ढे साचे संत आप बणाए साचे दुलारे। भिन्नी रैण गुर संगत तेरी बणे साची भैण, आप बहाए सच दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे जीआ सच्चा दान, जगाए जोत महल मुनारे। भिन्नड़ी रैण वक्त सुहेला। भिन्नड़ी रैण हरि दुलारी, गुर संगत साचा मेला। भिन्नड़ी रैण जोत सरूपी जोत सरूप, साचा खेल हरि जी खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आप चुकाया वक्त दुहेला। भिन्नड़ी रैण हरि दुलारी। विच मात आई करन बेचारी चरन निमस्कारी। गुर संगत साचे सच द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरे सीस छत्र झुलारी। भिन्नड़ी रैण राज राणी। भिन्नड़ी रैण गुरसिख साचे साची माणी। भिन्नड़ी रैण वड चतुर सुघड़ स्याणी। बेमुख गूढ़ी नींद सवाए, गुरमुखां प्याए अमृत जल सुच्चा पाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी धार इक्क बन्न्हाए इक्क चलाए सोहँ शब्द सच्ची बाणी। अमृत अमृत अमृत धारा। सचखण्ड निवासी तेरा अपर अपारा। सच जोत मात प्रकाशी, मिटाए अन्ध अन्धयारा। सृष्ट सबाई होई चरन दासी, देवे नाम शब्द अपर अपारा। सोहँ शब्द जप स्वास स्वासी, लाहे जूठा झूठा तन अफारा। जो जन तजाए मदिरा मासी, प्रभ देवे सच्चा इक्क दुआरा। बेमुखां गल पाए अन्तिम फाँसी, देवे दर दुरकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर प्याए काया करे ठंडी ठारा। अमृत नीर नीर वरोल्लया। प्रभ अबिनाशी साचा सागर, वड गागर आपणी हथ्थीं भर लया। बाशक नाग दित्ता गेड़ा, आपे खिच्चे लाए गेड़ा, चौदां रत्न कढ्ढे देवे आप अमोल्लया। चिट्टा घोड़ा ऐराप्त हाथी कामधेन अमृत विख शराब मद बिरख पारजात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप खुल्ल्हाए ताक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ सोलां कलां चौदां लोक रसना आपणी बोले। अमृत पी अमर पद पाए निर्मल होए जी गुरमुख साचे सद हरि जी आपणे घर बहाए, प्रभ चरन बलि बलि थीं। आप बणाए पुत्तर धी, साची दया कमाए, सतिजुग बंधाए साची नींह। गुरमुखां मुख चुआए, अमृत बरखे साचा मींह। तृखा अग्न बुझाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दीपक जोती जगण, विच गगन करे रुशनाई।

❇ ११ चेत २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी ❇

हरि निरँकार भेख अपार जोत अधार। लक्ख चुरासी पसर पसार। लोकमात आवे जावे वारो वार। साचा खेल आप रचाए, सृष्ट सबाई पावे सार। बेमुख जीव अन्त खपावे, जुगा जुगन्तर जामा धार। जन भगतां साचे राहे पावे, देवे शब्द अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक लै मात अवतार। जन भगतां राह वखांयदा। सोहँ शब्द तन वसांयदा। आत्म जाए मन, भाण्डा भरम देवे भन्न, पंजां चोरां देवे डन्न, फड़ बाहों बाहर कढांयदा। गुरमुख साचे संत जन रसना कहण धन्न धन्न, प्रगट होए जोत सरूपी वडा शाहो भूपी, सति सरूपी दरस दिखांयदा। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, दिस ना आए हरि जी साचा सति सरूपी, बेमुख जीव होए हलकाए, जोत सरूपी जोत हरि मातलोक आया जोत धर, निहकलंक नरायण अवतार नर, बेमुखां दिस ना आंयदा। हरि करे प्यार, साची देवे शब्द धार। एका सच्ची देवे नाम उडार। कलिजुग जीव काया झूठी माटी, साचा प्रभ भन्ने अन्तिम वार। एका जोत हिरदे वसे तेरे सच्चो सच्च, मिटाए अन्ध अंध्यार। चार कुन्ट अग्न माया विच फसी, ना कोई काया करे ठंडी ठार। कलिजुग जीव जूठे झूठे अट्ठे पहर करन पुकार, ना देवे कोई शब्द अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाए, जोत सरूपी जामा धार। जन भगतां हरि माण दवईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। साचा शब्द बबान उडाए दरगहि साची माण दवईआ। जोती जोत सरूप हरि, किरपा आपणी जाए कर, चरन लाग जाए तर, आपे चुक्के जम का डर, एका जाए साचे घर, जिथ्थे वसे हरि निरँकार। जन भगतां जगत उपाना। डूंघी भवर संसार सागर, ना कोई जाणे वञ्झ मुहाणा। झूठी माया काया माटी गागर, विच अमृत भरया हरि बेमुहाना। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां फड़ के बांह अन्तिम कलि साचे राहे पाना। अन्तिम कलि होए अख़ीर। बेमुखां लथ्थण अन्तिम चीर। चारों कुन्ट होए वहीर। आप मिटाए शाह गौंस औलीए पीर दस्तगीर। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आप वरताए, किसे हथ्थ ना आए नीर जन भगत सहज सुख दाती। देवे दरस हरि सुत्तयां राती। मिल्या साचा हरि शब्द मिली सच्ची सुगाती। अमृत भण्डारा गया भर, गुरमुख आत्म साची बाती। आप वखाया साचा घर, जिथ्थे बैठा सच्चा हरि, जोत सरूपी इक्क इकांती। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अमृत बूंद प्याए स्वांती। जन भगतां हरि जगत गुर दाता। गुरमुखां मिल्या पुरख बिधाता। सोहँ देवे साचा शब्द धुरदरगाही सच सुगाता। कलिजुग अन्तिम मिल्या साचा माही, आप मिटाए अन्धेरी राता। आपणी हथ्थीं लाहे छाही, जन भगतां पुच्छे वाता। जोती जोत सरूप हरि, भगत जन जन भगत आपे होए पित माता। जन भगत हरि मात पित। मात जोत प्रगटाए

८०
०४

करे साचा हित्त। जोत सरूपी दरस दिखाए आए नित नवित्त। बेमुखां हरि दिस ना आए, केते भौंदे चार कुन्ट लभदे फिरदे वार थित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा हरि इक्को सच्चा वर एका देवे दर, गुरमुख साचे संत जनां इक्को सच्चा मित। जन भगतां मिल्या हरि सच्चा मीतला। जन भगतां एका देवे सच्चे मेवे, सोहँ शब्द साचा सीतला। गुरमक्ख विरला प्रभ दर आवे नेड़े, जगत चलाई साची रीतला। अट्ठे पहर सोहँ शब्द जो जन रसना सेवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, वड देवी देवे लक्ख चुरासी परखे सभ दी नीतला। लक्ख चुरासी वेख वखाणे। जन भगतां हरि आप पछाणे। आत्म साची जोत जगाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाने। एका नाम रिदे वसाए, मिल्या मेल भगत भगवाने। जोती जोत सरूप हरि, देवे सच्चा वर सोहँ शब्द सच्चा दाने। सोहँ दान शब्द भगत भण्डारा। देवे भगवान हरि निरँकारा। बणाए चतुर सुजाण बण मेहरबान, आत्म दीप करे उज्जयारा। साचा लाए शब्द बाण, चुकाए जम की कान, लक्ख चुरासी गेड़ निवारा। सच्चा देवे पीण खाण चरन धूढ़ी सच्चा इशनान, निहकलंक साचा हरि जुग द्वापर कृष्न मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत इक्को गोत, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जिउँ त्रेता राम अवतारा। राम अवतारी हरि निरँकारी। इक्को जोत आवे वारो वारी। दुरमति मैल गुरमुखां जाए धोत, साची देवे शब्द दात, बीजे अमृत आत्म इक्क क्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, मातलोक एका जोत धर, गुरमुखां चुकाए झूठा जम का डर, अट्ठे पहर हिरदे विच रिहा समाई। जन भगतां शब्द चोट हरि लगाई। आपे कढ्ढे हउमे खोट, देवे नाम सच्ची रुशनाई। एका रक्ख गुर चरन ओट, शब्द बबाण लए चढ़ाई। दर घर सच्चा ना आवे कदे तोट, अतुट भण्डारा आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, माझे देस जोत जगाई। निहकलंक कलि जामा धारया। माया रूपी पसर पसारया। बेमुखां वहाए वहन्दी धारया। गुरमुखां चुक्क ल्याए चरन द्वारया। वरन बरन हरि सच्चा सर्ब मिटा रिहा। एका निहकलंक तेरी साची सरन, सृष्ट सबाई आप रखा रिहा। आप चुकाए मरन डरन सरनी सरन, किरपा कर साचे राहे पा रिहा। गुरमुखां खुल्लाए हरन फरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच टिका रिहा। साची जोत काया मन्दिर। करे प्रकाश डूंघी अन्धेर कन्दर। हरि करे वास, गुरसिख तेरा आत्म वज्जा तोड़े जन्दर। अट्ठे पहर होया रहे दास, बैठा रहे तेरे अन्दर। जोती जोत सरूप हरि, बेमुख जीवां दिस ना आए, चारों कुन्ट भौंदे फिरदे बन्दर। कलिजुग जीव बेमुहाना। दिस ना आए हरि भगवाना। उल्टे राहे पाए, ना कोई बूझे राणा। गुरमुख साचे आप उठाए, देवे दरस महाना। जोत सरूपी दया कमाए, जोती जोत हरि भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे

सोहँ शब्द सच्चा दाना। मिले दान हरि दुआरे। सर्ब जीआं हरि पावे सारे। देवे शब्द ज्ञान चरन ध्यान हरि मेहरवान, जो जन सरन चरन निमस्कारे। साचा रंग इक्क रंगान, बणे सच्चा इक्क ललारे। देवे नाम गुण निधान वड बली बलवान, झुलाए निशान विच मात अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी कर पछाण, गुरमुख साचे तारे। बेमुखां दर दुरकारे, गुरमुखां देवे ठंडी छाँ। बेमुखां कोई ना फड़े बांह। बेमुखां होए सहाई ना। बेमुख एका धाम वसाए, पाए आपणे आप राह। धन्न धन्न धन्न गुरसिख प्यारा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख जिस मिल्या सच दुआरा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिस देवे शब्द अपर अपारा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख जिस मिल्या अमृत भण्डारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख एका मंगया सच्चा हरि दुआरा। धन्न धन्न धन्न गुरमुख मेल मिलावा साचे कन्त हरि भगवन्त जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर अवतारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, मिली साची भिक्ख, मिटे आत्म तृख, सच लेख प्रभ जाए लिख, तन चाढ़े रंग अपर अपारा। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, आप उतारे कलिजुग माया लाहे विख। कलिजुग जीवां हथ्थ ना आए साचा राह, लभ्भदे फिरदे मुन रिख। गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा धन शब्द बोध अगाधा, साची सिख्या लैणी सिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां, आदि अन्त साचा कन्त हरि भगवन्त देवे निथाविआं थां। फड़ फड़ साची बांह, आपणी
८१ हथ्थीं सीर पिलाए। हउमे विच्चों पीड़ कढाए। साची धीर शब्द बन्न्हाए। अमृत साचा सीर पिलाए। बज़र कपाटी चीर ८१
०४ वखाए। औखी घाटी आप चढ़ाए। जोत ललाटी विच जगाए। काया माटी होए रुशनाए। नेड़े आई वाटी कलिजुग तेरा ०४
पन्ध मुकाए। गुरमुख साचे साचा रस रसना चाटी, दुरमति मैल गंवाए। गुरमुखां तन झूठी माटी, कोए ना अन्त रहाए। साचा लाहा गुरसिख साचे घर गुर चरन अन्तिम खाटी, धर्म राए दे फंद कटाए। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोती मेल मिलाए। जाणो भगत वक्त सुहेला। प्रभ अबिनाशी आप कराया आपणा मेला। सर्ब घट वासी, घनकपुर वासी साचा राह वखाए। सोहँ जपणा स्वास स्वासी, लाहे उदासी, गुरमुख कोए ना होए मदिरा मासी, मानस जन्म होए रहिरासी, अन्तिम करे बन्द ख़लासी, शब्द बबाण लए चढ़ाए। बेमुख जीव करन हासी, अन्तिम पावे गल विच फाँसी, सृष्ट सबाई होए अन्धी कोई ना किसे छुडाए। गुरसिख हरि अंग संग सदा सुहेला, प्रभ अबिनाशी इक्क इकेला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत अन्तिम कलिजुग बाहर कराए। जन भगतां जगत विछोड़ा। हरि जी देवे फिर शब्द घोड़ा। घर साचे सच राह वखाए, आप चढ़ाए साचे पौड़ा। प्रगट होए दरस दिखाए, गुर पूरे गुर पूरा बौहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लग्गी प्रीत तेरी आप निभाए गुरसिख तोड़ा। तोड़ निभाए दीना नाथ दयानिध। गुरमुख साचे संत जनां हरि कारज

करे सिद्ध। साचा नाम वसाए तन, देवे इक्क सच्चा धन, वस कराए नौ निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तीर चलाए, गुरसिख तेरी आत्म जाए विध। चले तीर शब्द निराला। गुरमुख आत्म मालो माला। कलिजुग जीव होए कंगाला। अन्तिम वेला ना किसे संभाला। फल ना लग्गे काया किसे डाला। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म जोती दीपक बाला। गुरमुख साचे संत जनां, सतिजुग बणे आप रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्तिम अन्त लाहे सूसा काला। सूसा काला देवे लाह। चिट्टा बाणा पंचम् जेठ आपणे तन लेवे पा। सृष्ट सबाई हरि रघुराई, गल विच शब्द सरूपी पाउँदा जाए फाह। वेले अन्त ना कोई छुडाई, राउ उमराउ सृष्ट सबाई शहनशाह। प्रभ अबिनाशी इक्क रघुराई, सभ नूं रक्खे थाउँ थां। गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर द्वार गुर चरन देवे सच्चा थां जगत निमाणयां। फड़े अन्तिम बांह, गुरमुख जगत निमाणयां। करे ठंडी छाँ, बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां। ना कोई पुत्त संभाले मां, सुध रहे ना किसे राजे राणयां। सभ दे लेखे रिहा लिखा, जोती जोत सरूप हरि, सिँघ आसण बैठा हरि भगवानयां। लेखा लिखे हरि निरँकारा। जोत सरूपी भेख अपारा। वेख वेख भुले जीव गंवारा। झूठी माया अन्दर रुले, अन्तिम पाए ना कोई मुले, ना जानण इक्क जोत आदि अन्त हरि गिरधारा । इक्को
८२ ०४ कन्त मेल मिलावा करे साचे संत, बेमुख जीव रहे झक्ख मारा। हरि जी पाए आप माया बेअन्त, आप भुलाए सर्ब संसारा। ८२ ०४
गुरमुखां सुणाए एका शब्द सलोक, जन संतां देवे नाम जगत अपारा। जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती करे गुरसिख उज्जयारा। दीपक जोती दए जगा। सोहँ फुंकारा इक्को ला। सच दुआरा दए दिखा। अमृत भण्डारा हरि वरता। जोत निरँकारा करे रुशना। अन्ध अन्धयारा काया महल्ल मुनारा, किते दिसे ना। आपे बणे भगत वणजारा, आए चल हरि दुआरा , एका सच करे सच प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साची दरगहि लाए नां। अमृत ताल सुहञ्जणा, हरि काया विच रखाए। कराए साचा मजना, गुरमुखां दए दिखाए। बणे साक सैण साचा सज्जणा, इक्को तारी आप लवाए। साचे तीर्थ गुरसिख कराए साचा मजना, अन्तिम प्रभ साचे पर्दा कज्जणा, बन्द कवाड़ आप खुल्हाए। झूठी धाड़ परे हटाए। शब्द वाड़ इक्क कराए। बहत्तर नाड़ जोत जगाए। घर साचे देवे वाड़, बज़र कपाटी दो हथ्थी पाड़, साचा सीर मुख चुआए। बज़र कपाटी औखी घाटी। बिन गुर पूरे गुरमुख साचे संत जनो, कोई ना विच मात दिसे घाटी। साध संत जीव जन्त रिख मुन सुन, इक्क धुन साचा मंगण नाम दान, चरन धूढ़ इशनान गुर पूरे घर इक्को सच्चो हाटी। किरपा कर देवे हरि भगवान वाली दो जहान हरि मेहरवान गुण निधान, पंजे मारे फड़ शैतान

८३ ०४

बेईमान, इक्के देवे नाम निधान शब्द उडान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे अमृत साचा सीर पिलाए, दुरमति मैल जाए काटी। कटे मैल लग्गी तन। धर्म राए ना दए सजाए, ना लग्गे कोई डन्न। साचा अमृत मुख चुआए, दुःख मिटाए सुख उपजाए, भाण्डा भरम हरि देवे भन्न। मात कुक्ख सुफ़ल कराए, आत्म तृष्ना अग्न बुझाए, एका लग्न चरन रखाए, सोहँ शब्द सुणाए कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दे मति समझाए, फड़ फड़ बाहों राहे पाए, जोत सरूपी दरस दिखाए, बेमुख गूढ़ी नींद सवाए, दर आयण पर्दा हरि जी पाए, आत्म करे अन्नृ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कढ्ढे भरम भुलेखा दूई द्वैती जन। आए दर आत्म हँकारी। गुर संग बैठे रहे ख्वारी। जीव कुलखणी नार, ना मिले हरि भतार देवे दुरकारी। ना पावे हरि जी सार, मारे शब्द डाहढी मार, अट्ठे पहर रहे दुख्यारी। आत्म वेखे गुर सर्ब नर नार, हरि सच्ची करे विचार, ना बहावे दर द्वार, होए जीव जो विभचारी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां सद वसे दर द्वारी। आत्म घर सच खेड़ा। हरि जी रक्खे खुल्हा वेहड़ा। शब्द सरूपी देवे इक्को गेड़ा। बेमुखां करे अन्तिम अन्त, कलि आप नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत प्रगटाई, आप मिटाए कलिजुग सतिजुग दोहां धिरां दा झेड़ा। फूलनहार तन कलीरे। गुरसिख साचे प्रभ देवे दात, विच्चों मात लभ्भे साचे हीरे। देवे नाम शब्द दात सच्ची धीरे। मिटाए अन्धेरी रात, पाए सार अख़ीरे। प्याए बूंद स्वांत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीरे। साचा हार हरि भुजा संवार। सतिजुग तेरी बध्धी धार। कर विचार पाई सार हरि निरँकार। तेरे तन वसाए, गुर संगत संग रलाए, पंचम् जेठ दिवस विचार। धरत मात तैनूं गोद उठाए, गुरमुख साचे संत जन तेरी झोली पाए, किरपा कर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पाए आपे सार। साचा हार तन श्रृंगारे। आप बुझाए आत्म तत्ती हँकार अन्गयारे। हथ्थी बन्नृे शब्द साचा गाना, अन्तिम कलि ना कोई खुल्हारे। सतिजुग साचे हरि साचा चुण पंचम् जेठ, हरि मेले गुरसिख दुलारे। गुर संगत बैठ बेड़ा देवे बन्न, सिरों लाहे आपणे भारे। आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखाए, होए शब्द घोड़ असवारे। गुरमुखां कराए साचा जोड़, बेमुखां दए विछोड़, पंचम् जेठ कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। जो जन आए चरन दौड़, प्रभ अबिनाशी अन्तिम वेले पए बौहड़, बेमुख जीव कलि अन्तिम होए ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द करे खेल अपर अपारे । गुर गोबिन्द एका धारा । गुर गोबिन्द करे खेल अपर अपारा। गुर गोबिन्द गुरमुख विरला पावे सारा। गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर दोहां मेल शब्द अपारा। गोबिन्द गोबिन्द हरि निरँकारा। गुर गुर गुर मात आए जामा धारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द जोत सरूपी खेल अपर अपारा।

गुर गुर गुर आत्म वत्त हरि बीजे शब्द अपर अपारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रूप रंग रेख भेख ना कोई विचारा। गुर गुर गुर एका रहे हरि शब्द अधारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द आदि अन्त जुगा जगंत जोत सरूपी निराधारा। गुर गुर गुर विच मात मंगे हरि जी कोलों इक्क शब्द वस्त करामात, आत्म भरे हरि भण्डारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द चतुर्भुज शब्द अस्व रहे अस्वारा। गुर गुर गुर राह साचा तक्के, अट्ठे पहर विच मात ना थक्के, मंगे दरस हरि गिरधारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तिन्नां लोकां वसे बाहरा। गुर गुर गुर मातलोक जामा पाए हरि जन्म दवाए विच वस्त टिकाए अपर अपारा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई मन्दिर ना कोई अन्दर ना कोई पारावारा। गुर गुर गुर विच मात बैठा रहे, हरि नर तेरे दर मंगे अट्ठे पहर, बण भिखारा। गोबिन्द हरि निरँकार गुर रहे सद भिखार देवणहार हरि निरँकारा। गुर मंगदा रहे दोवें भुजा पसारा। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे साचे घर, मातलोक आवे जोत धर, सृष्ट सबाई दस्से राह अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा। लग्गे भोग हरि निरँकार दा। गुरमुख दर घर आए अन्तिम कलिजुग तारदा। आप पछाणे थाउँ थाँईं, ऊँच नीच जात पात वरन गोत ना कोई पछाणदा। आप वसाए साचे थांएँ जित्थे कोई जाए नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त पार लँघाए, दरगहि साची माण दवाए, विख पाप सर्ब उतारदा। लाया भोग साचे हरि। जोत सरूपी किरपा कर। दर घर आयां साचा देवे वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द भण्डारा, जगत न्यारा गुरमुखां देवे वारो वारा, जावे तर पावे सारा, हरि नर भतार विच दरबारा, पावे सारा हरि निरँकारा, पूरी आस गुरमुख कर। पूरी होई आस सेव कमाईआ। शब्द सरूपी वज्जे ताल, सोहँ चोट हरि लगाईआ। आपे कड्ढे आत्म काला खोट जगत जंजाल, सच वस्त हरि झोली पाईआ। गुरमुख होया मालो माल, साचा दित्ता माल धन, ना भेव कोई रखाईआ। मातलोक विच्चों लभ्भा इक्क गुरमुख सच्चा लाल, प्रभ अबिनाशी ल्या भाल। सतिजुग साचे तेरे बूटे साचा माली आपणी हथ्थीं आप लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान चतुर सुजान, गुरसिख साचे संत जनां फड़ फड़ तारे बाहींआ। निर्मल धाम अटल्ल हरि निरँकार दा। निहचल धाम अटल्ल, जोत सरूपी हरि मेहरवान दा। निहचल धाम अटल्ल, बिन रंग रूपी हरि गिरधार दा। निहचल धाम अटल्ल, मानस जन्म संवारदा। निहचल धाम अटल्ल, ना करे कोई वल छल एका साचा रंग निराधार दा। निहचल धाम अटल्ल, जन काया साचा फल सोहँ शब्द पैज संवारदा। निहचल धाम अटल्ल, निहकलंक नरायण नर जोत सरूप हरि सच्ची सरकार दा। निहचल धाम अटल्ल, सच अस्थान। निहचल धाम अटल्ल, दिसे इक्को इक्क भगवान। निहचल धाम अटल्ल, गुरमुख

विरला करे पछाण। निहचल धाम अटल्ल, जोत जगे इक्क महान। निहचल धाम अटल्ल, बेमुख जीव कलिजुग भुले बण नादान। निहचल धाम अटल्ल, सिँघ सिँघासण बैठा मल, सृष्ट सबाई शब्द बान। निहचल धाम अटल्ल, प्रभ जाओ बलि बलि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह कलि कुलवन्त गुणवन्त गुण निधान दा। निहचल धाम अटल्ल, गुर चरन कोल। निहचल धाम अटल्ल, पूरे तोल रिहा तोल। निहचल धाम अटल्ल, जोत जगाए अन्धेरी डल, दीपक साचा बाला। निहचल धाम अटल्ल, शब्द सरूपी इक्को चलाए हल्ल, सोहँ बीज साचा डाला। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहचल धाम अटल्ल, सच अस्थूल। निहचल धाम अटल्ल, कलिजुग जीव ना जाणा भूल। निहचल धाम अटल्ल, हरि जी बैठा मल्ल, ना कोई पावा ना कोई चूल। निहचल धाम अटल्ल, पावे सार जल थल, हरि सच्चा कन्त कन्तूहल। निहचल धाम अटल्ल, गुरसिख विरला दर आए चल, प्रभ आप चुकाए पिछला मूल। निहचल धाम अटल्ल, बेमुख वेखण अज्ज ते कल, पैंदे रहण काया सूल। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर देवे वर, हरि वड दूलो दूल। निहचल धाम अटल्ल, सर्ब सिक्खाणदा। निहचल धाम अटल्ल, वड प्रबल, जीआं जन्तां सर्ब पछाणदा। निहचल धाम अटल्ल, सोहँ शब्द रसना हरि वखाणदा। निहचल धाम अटल्ल, कलिजुग अन्तिम सतिजुग साचे हरि पछाणदा। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला रंग साचा दर घर साचे माणदा। निहचल धाम अटल्ल, जगत रुशनाई। निहचल धाम अटल्ल, गुरमुखां मिले वड्याई। निहचल धाम अटल्ल, जन भगतां रिहा बणत बणाई। निहचल धाम अटल्ल, हरि मिलदा अग्गे हो के फड़दा दोवें बाहीं। निहचल धाम अटल्ल, बेमुखां जाए दल, शब्द सरूपी खेल रचाई। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर हरि साचा रघुराई। निहचल धाम अटल्ल, जोती डगमगांयदा। निहचल धाम अटल्ल, गुरमुख साचे माणक मोती आपणी हथ्थीं आप चुगांयदा। निहचल धाम अटल्ल, दुरमति मैल जाए धोती, सोहँ साबण हरि जी लांयदा। निहचल धाम अटल्ल, ना कोई वरन ना कोई गोती, राउ रंक इक्क थां रखांयदा। निहचल धाम अटल्ल, सृष्ट सबाई रही सोती निहकलंक कलि जामा पांयदा। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस भाग लगांयदा। निहचल धाम अटल्ल, इक्क अकार है। निहचल धाम अटल्ल, इक्क शब्द जैकार है। निहचल धाम अटल्ल, गुरमुख साचे संत जनां हरि करे सद प्यार है। निहचल धाम अटल्ल, दो जहानी सच्चा करे इक्क विहार है। निहचल धाम अटल्ल, जोती जगे अपर अपार है। निहचल धाम अटल्ल, कलिजुग सतिजुग दोवें खड़े रहण दर दरबार है। निहचल

धाम अटल्ल, चारे जुग वारो वार, प्रभ दर करदे रहण पुकार है। निहचल धाम अटल्ल, ब्रह्मा वेखे चारे मुख अट्ठे नेत्र लए उग्घाड़ है। निहचल धाम अटल्ल, ब्रह्मा रक्खे आपणी कुक्ख, पाटी नाभी होए उज्जयार है। निहचल धाम अटल्ल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव कोई ना पावे सार है। निहचल धाम अटल्ल, इक्क रखांयदा। निहचल धाम अटल्ल, जोती जोत सरूप हरि सृष्ट सबाई बणत बणांयदा। निहचल धाम अटल्ल, हरि आपणा आप उपांयदा। निहचल धाम अटल्ल, जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मा प्रगट दित्ता कर, चारे वेद चहुं युगा साचा भेद आपणा आप खुलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उपजे धुन खुले सुन्न मुन्न, साची धार बन्नांयदा। हरि साचे बद्धी साची धार, सुरसती आई नक्कों बाहर, सच्ची बीना हथ्थ शृंगार, राग छत्ती गाउँदी। प्रभ कन्न सुणाउँदी। साचा आपणा ताल वजाउँदी। चरनी सीस निवाउँदी। प्रभ तेरे दर घर साचे वेख, साचा राग सुणाउँदी। जोत सरूपी सच्चा हरि किरपा कर देवे वर। ब्रह्मा लाड़ा विच मात बणाउँदी। ब्रह्मा सुरसती होए लेख। नारद सुत पैदा होया, हरि जी रंगे, आपणे रंग रूपी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा दित्ती मात कर, आपे बणे सज्जण सुहेल। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जीव नादान है। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, सिर रक्खे हथ्थ समरथ, जिस होए मेहरबान है। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, दर देवे साची वथ, सोहँ शब्द चढ़ाए साचे रथ बबाण है। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, हउमे अग्न देवे मथ्थ, पूरन करे चरन ध्यान है। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, शब्द सरूपी पाए नत्थ, महिंमा जगत दिसाए अकथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटां घट जाणी जाण है। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जोत अधारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, साचा देवे नाम इक्क अपारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, मानस जन्म दए संवारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, लक्ख चुरासी जम की फाँसी देवे हरि उतारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, अन्तिम करे बन्द ख़लासी, कर किरपा पार उतारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, कलिजुग अन्तिम वेख बेमुख करन हासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई जन भगत बणाए दासी, जन्म मरन संवारया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, कलि बणत बणाए। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, गुरमुख साचे संत उपजाए। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, भगत भगवन्त मेल मिलाए। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, बेमुखां माया पर्दा पाए। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां विच्चों, गुरमुख साचे सोए लए आप जगाए। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, दया कमांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जोत सरूपी जामा पांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, कलिजुग जीव, अलख अभेव वड देवी देव, क्यों भुल कलिजुग माया रुल वक्त गवांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, प्रभ साचा पाए मुल्ल, पूरे तोल जाणा तुल, अमृत आत्म ना जाए डुल्ल,

अन्तिम साचे लेखे लांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, सोहँ चढ़ाए साचे रथ, जन भगतां झोली पाए साची वथ, विच काया मन्दिर आप टिकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला समरथ, रक्खे सिर दे के हथ्थ, लग्गी प्रीत चरन तोड़ निभांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जिस मानस जन्म दवाया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, सर्बकला समरथ, क्यों कलिजुग जीव मनों भुलाया। इक्क चढ़ाए सोहँ साचे रथ, साची दरगहि दए बहाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा धार भेखा पंचम् जेठ लए लिखाया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, लेख लिखांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, वेख वेख नेत्र पेख भरम गवांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, वड वड औलीए पीर शेख़ आप मिटांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, लिखे लेख ना कोई अन्त मिटांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, कलिजुग जीव रहे वेखी वेख, प्रभ जोत सरूपी धारे भेख, वेला गया किसे हथ्थ ना आंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस सच्चा राह गुण निधान हरि मेहरबान, जो जन आए सीस झुकांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, देवे सच्चा दान। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, दरगहि साची देवे माण। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, गुरमुख विरला जाणे चतुर सुघड़ सुजान। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, बेमुख जीव भुले कलिजुग बणे अन्त नादान। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, भाग लगाए तेरी आत्म, कलि देवे साचा नाम धन पीण खाण। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए जम की कान। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, सर्ब सुखदाईआ। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, गुरमुखां देवे अन्त वधाईआ। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, साची रिहा बणत बणाईआ। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साची सेवा लाईआ। साची देवे दया कमा। शब्द मेवा दए खुआ। वड देवी देवा दया कमा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत सति सरूपी, वडा शाहो भुपी दरस दए दिखा। देवे दरस हरि अपारा। गुरमुख तेरे आत्म दर दुआरा। इक्को मंगो नाम रंगो, सच्चा बण भिखारा। दर घर साचे कोए ना संगो, मानस जन्म ना होवे भंगो। देवे दान अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा साचा डण्डा शब्द उठाए दया कमाए दोवें रक्खे तिक्खीआं धारा। दोवें तिक्खी धार हरि रखाईआ। साचे लेख जाए लिखी, साचा शब्द आप चलाईआ। ना कोई घाटी दस्से औखी मदिरा मास जन दए तजाईआ। आपे लाहे आत्म दुखी, सोहँ शब्द लै धार तिक्खी, दुरमति मैल परे हटाईआ। फेर पाए साची भिक्खी, गुरमुख साचे संत आत्म रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे आयां दए वड्डुयाईआ। मिले वड्याई हरि द्वार। जो जन आए चरन द्वार। बेमुखां जीवां देवे दर दुरकार। गुरमुखां देवे तार। आत्म रक्खे जो हँकार, दर घर साचे कोई ना पावे सार। जो जन हिरदे हरि साचा

वाचे, देवे दरस हरि निरँकार। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, गुरमुख मानो साचो साचे, कलिजुग अन्तिम आप विचार। भगत जनां हिरदे वाचे, बेमुखां शब्द मारे डण्डा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच घर सच्चा हरि बैठा सच दरबार। सच दरबारा हरि आप लगाया, सच घर बाहरा। निहकलंक नर अवतारा। सृष्ट सबाई पावे सारा। शब्द उठाए खण्डा दो धारा। चारों कुन्ट अस्व भजाए, शब्द घोड़े हो अस्वारा। पैंरी जोड़ा किसे पाउण ना देवे कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाए, त्रैलोकी नाथ सगला साथ तिन्नां लोकां पाए सारा। शब्द खण्डा हरि हथ्थ कटारी। बेमुखां मारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। गुरमुखां पार उतारे, तन पहनाए सोहँ करे श्रृंगारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर इक्को सच्चा दरबारी। सच दरबार विच मात लगाया। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, अन्तिम हरि दए मिटाया। उत्ते वेखे मार झात, लक्ख चुरासी हरि रक्खे वास, जन भगतां होया रहे दास, पहरेदार आप अख्वाया। अन्तिम कलि करे बन्द ख़लास, सच घर कराए वास, एका जोत मात प्रकाश, आवण जावण दए कटाया। गुरमुख विच मात उपजाए जिउँ इन्द्र दर पारजात, बारां मास फल लगाया। आपे पुच्छे अन्तिम वात, जिस जन इक्को आस निहकलंक रखाया। मिल्या अन्तिम पुरख अबिनाशी, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी, गुरमुखां मानस जन्म कराए रासी, साचे धाम दए बिठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि जोत धर, किरपा कर, साचा मार्ग सतिजुग तेरा आपणीं हथ्थीं दए लगाया। सतिजुग तेरी बन्न्ही धार। विच मात हरि निरँकार। राजा राणा तख्तों उतार। सुघड़ स्याणा ना जाणे सार। वेद पुराना पावे सार। कुरान अञ्जीलां करे ख्वार। खाणी बाणी डिग्गी मूंह दे भार। माया राणी बेमुहानी शब्द तान उत्ते होई अस्वार। उत्ते चिट्टी चादर बैठी ताणी, कलिजुग आत्म होई अन्धी काणी, ना कोई करे सच विचार। कलिजुग तेरा अन्तिम होया, कोई ना तैनूं देवे हथ्थीं पाणी, प्रभ अबिनाशी मारे डाहढी मार। सतिजुग साचे तेरी इक्को सोहँ सच्ची बाणी, प्रभ अबिनाशी रसना रिहा उचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर जामा पाए कलिजुग सतिजुग दोहां करे विचार। माया राणी कलिजुग जीव करे हँकारन। घर घर बैठे जूठे झूठे, प्रभ अबिनाशी ना विचारन। आत्म मूधे होए ठूठे, लक्ख चुरासी माया राणी भरे इक्क भण्डारन। जोती जोत सरूप हरि, दित्ता वर गई तर, कलिजुग अन्तिम आपणा करे पूरा कामन। माया राणी होए जवान। बेमुखां दे लाहे घाण। फड़ फड़ मारे बेईमान। कलिजुग जीव जो शैतान। आप उठाए वड बली बलवान। साचा शब्द हुक्म आप सुणाए, दहि दिश विच फिराए, छुपे कोई रहि ना जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग माया तेरे उत्ते पड़दा

ਪਾਇਆ, ਆਪ ਚੁਕਾਏ ਤੇਰੀ ਕਾਨ।

पाया, आप चुकाए तेरी कान। माया राणी बली बलवान। बेमुखां दे गई द्वार। आत्म हो गई आप अस्वार। इक्क भुलाया सच्चा सच दरबार। कलिजुग माया विच रलाया, डिग्गा मूंह दे भार। इक्क हँकार नाल रखाया, जूठा झूठा दर बहाया, कोई ना देवे सच्ची धार। निहकलंक कलि जामा पाया, सोहँ शब्द संग ल्याया, देवे शब्द सच्ची धुन्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम सर्ब करे ख्वार। कलिजुग अन्तिम होया ख्वार। धरत मात ना चुक्के तेरा भार। आत्म होई अन्धेरी रात ना कोई पुच्छे बात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग झूठा दए मिटाए। सतिजुग साचा मात धराए, सोहँ दात झोली पाए, गुरमुखां देवे शब्द दात। सहिँसा सागर डूंघी धार। जीव काया गागर अमृत विच अपार। निर्मल कर्म होए उजागर, आया चल सच दरबार। दरस दिखाए करता कादर, देवे नाम अपर अपार। साचे घर बण सच सुदागर रत्न अमोलक हीरा नाम जोती देवे डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम बेड़ा कर जाए पार। हीरा नाम रत्न अमोल, प्रभ अबिनाशी इक्क उपजाया। सृष्ट सबाई रिहा मौल, बेमुख किसे हथ्थ ना आया। झूठी ख़ाक रहे फोल, गुरमुख साचे आत्म तीर्थ चुभ्भी लाया। विच्चों मिले लाल अनमोल, प्रभ साचा दए दिखाया। तेरे वसे सदा कोल, आत्म कुण्डा आपे दए खोल्ह, दीपक जोती दए आप जगाया। शब्द सरूपी विच्चों पए बोल, सुन समाधी जो रखाया। इक्क वजाए सोहँ साचा ढोल, लग्गी सुन्न दए तुड़ाया। साचा लाहा गुरसिख रोल, प्रभ अबिनाशी रिहा दया कमाया। दस्म दुआरी दए खोल्ह, साची नाम हाटी प्रभ साचे खोल्ह, छिन्न भंगर दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनो, साचा रिहा शब्द सुणाया। आत्म कुण्डा हरि जी खोल्हे। गुरसिख वसे तेरे तन काया चोले। बेमुख रक्खे प्रभ पड़दे ओहले। गुरमुख साचे संत जनां सच घर शब्द सरूपी बोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आप उपजाए कलिजुग जीव जन भाले भोले। आत्म सर सच्ची तारी। आत्म दर अग्गे दिसे हरि दरबारी। आत्म घर जगे जोत अगम्म अपारी। देखे निहकलंक नरायण नर अवतारी। चरन लाग तर मानस जन्म जाओ संवारी। एका एक प्रभ अन्तिम दए कर, ऊँच नीच भेव निवारी। आप वसाए एका घर, लगाए इक्क सच्चा दरबारी। आप वसाए एका घर, गुरमुख साचे नर नारी। नौ खण्ड पृथ्मी बन्द कराए सभ दे दर, निहकलंक करे खेल अपर अपारी। एका शब्द वजाए डंक, देवे पवण अस्वारी। ना कोई दिसे राउ रंक, एका रंग सृष्टी सारी। गुरमुख उधारे जिउँ भगत जनक, बख्शे चरन प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरे लेख मुकाए जो लिखे लेख सच दरबारी। सच दरबार आप लगाउणा। वेला वक्त आप सुहाउणा। जिउँ भगत जनक सिर हथ्थ रखाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल अन्तिम कलि आपे

आप रचाउणा। आपणा खेल आप रचाए। करोड़ तेतीस देवी देव, साचा हुक्म कलि आप सुणाए। प्रभ अबिनाशी लाए साची सेव, निक्का बाला तोड़ जगत जंजाला, साचे घर दए बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इन्दलोक शिवलोक देंदा आए सभ नूं माणा। कलिजुग अन्तिम हरि विचारे। ब्रह्मा तेरी पाए सारे। जेहड़ा वसे इक्क चुबारे। अन्तिम कलिजुग आई हारे। निहकलंक कलि जामा धारे। गुरमुख साचे संत जनां वसाए, तेरे घर सच्चे दुआरे। साचा माण ताण रखाए, सतिजुग लग्गे विच संसारे। ब्रह्मे वक्त हरि आप चुकाया। साचा भाणा अन्त वरताया। किसे साध संत ना रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल अन्तिम कल, आपणा आप रिहा वरताया। साध संत ना जाणे प्राणी। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी। ना कोई जाणे वेद पुरानी। ना कोई जाणे अंज़ील कुरानी। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे तेरी दस्से, सोहँ सच्ची कलिजुग अन्तिम इक्क निशानी। कलिजुग अन्तिम दित्ता इक्क निशान। गुरमुख साचे संत जन आत्म सुख साचा पाण। बेमुख अन्तिम सहणा पए दुःख, आत्म लग्गे शब्द बाण। कलिजुग जीव उल्टे होण रुक्ख, प्रभ भन्ने जवानी डाहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेख सच्चा वेस, जोत धरे नर हरि श्री भगवान। खुल्ले रक्खे केस, गुरमुखां मिल्या सच्चा हरि, बणया रहे दर दरवेश। सभ नूं जोती देवे लावे आपणी सेव, शिव शंकर दर गणेश। महाराज शेर सिँघ
९० विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त एका नर नरेश। वेद पुरानां आया घाटा। कलिजुग ९०
०४ तेरी मुक्की वाटा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा। एका शब्द सोहँ चार वरन रखाए हरि जी इक्को बाटा। महाराज शेर ०४
सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सभ दा काटा। खाणी बाणी रही पुकार। गुरमुख वेखो कर विचार। नानक किया सच विहार। गुर गोबिन्द बणया लिखार। शब्द आवे इक्को सच्ची धार। दस जामे देवे इक्को जोत हरि निरँकार। साचा लेख आप लिखाए, गुर गोबिन्द कलि अन्तिम वार। निहकलंक कलि जामा पाया, जीव जन्त ना पावे कोई सार। एका डोर आपणे हथ्थ रखाए, वखाणे सर्ब नर नार। बेमुख चारों तरफ शोर पायण, वड़न ना देवे दर सच्चे दरबार। अग्गे अन्धघोर दिखाए, शब्द फड़े हथ्थ कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आया जामा धार। नानक गुर निरंकारया। मंगण गया इक्क द्वारया। दर दुआरे जाए खलोता, दोए जोड़ करे निमस्कारया। जोत सरूपी नर नरायण सिँघ सिँघासण साचे सोता, उठे दोवें भुजा पसारया। आ नानक मैं तेरे जोगा, तेरी सुणा इक्क पुकारया। तेरे दर दा कुण्डा खोल्लां, मातलोक करीं सच विहारया। साचा मेल हरि गुर नानक जोती, सतिनाम मन्त्र साचा जन्तर, साचा बीज विच जगत बिजा रिहा। गुरमुखां बणाई साची बणतर, पहली करे खेल निरंतर, इक्क सुरंगा सच सितार गुर दर साची

पाई सार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खिच तार आप वजा रिहा। इक्क पुकारे निरँकार निरँकार, बेमुखां भुला रिहा। कलिजुग जीव ना पायण सार, बेमुखां नाम भुला रिहा। गुर नानक कर विचार, मारी इक्क उडार, मक्के मदीने करे मुलां काजीआं ख़बरदार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए साचा डंक इक्क वजाए साचा बचन लिखा लया। एक उपजाए सच्चा रंग ना कोई जाणे राउ रंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन एका थां बहा लया। जिस किया अकार सोई जाणदा। कलिजुग जीव क्यों भरया मन हँकार, ना आपणा आप पछाणदा। आए सच दरबार, प्रभ सर्ब जीआं दी पाउँदा सार, सतिजुग साचे लै अवतार, निहकलंक गुण अवगुण सृष्ट सबाई विचारदा। बावन भेख धर बण भिखार, ना झोली अग्गे डारदा। कदे बणे नर नरायण, बालक ध्रू पैज संवारदा। कदे बणे कपल मुन, जगन्नाथ तेरी सार पांवदा। कदे बणे बराह, धरत मात विच्चों जल बाहर निकालदा। कदे बणे हाव गरीव, कैंटब दैंत पार उतारदा। कदे लै पृथु अवतार, राणे परलो इक्क वखाणदा। कदे कच्छप रूप धार मन्दिराचल, चुक्क आपणी पिट्ठ चौंदां रत्न मथ सागर विच्चों आप निकालदा। प्रभ दी महिंमा जगत अकथ्थ, जुगा जुगन्त सर्ब संवारदा। कदे बणे धनंतर वैद, दुःख रोग सर्ब निवारदा । कदे लए नर अवतार, गुरमुखां पार उतारदा। सतिजुग साचे तेरे अन्दर साचे मन्दिर, दस नौ उन्नी इक्को रक्खी हरि जी चिट्टी चुन्नी, वार अठारां जामा धारदा। सतिजुग साचा गया बीत। गौतम रिख चलाई रीत। अहिल्या कीती ठंडी सीत। आपणा बचन गया जीत। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां जाणे आपे नीत। साचा जुग मात उल्टाया। प्रभ अबिनाशी अन्तिम कलि जामा पाया। राम रूप सति सरूप बण के आया। परस राम दित्ता तार, एका जोती दए जगाया। अन्तिम पूरन करे काम, रामा राम रावण दुष्ट नष्ट कराया। त्रेते तेरे त्रै गुण, रिग वेद पुकार सुण, सच्चा खेल आप करा लया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा करदा आया। त्रेता दित्ता मात मुका। द्वापर दित्ता मात धरा। युजर वेद संग रला। अन्तिम अन्त कान्हा कृष्ना आया जोत जगा। जोती जोत सरूप हरि, आपे बहे सच्चे थां। द्वापर अन्तिम अन्त जोत गिरधारी। बण के आया कृष्न मुरारी। सृष्ट सबाई जिस करी ख्वारी। आपणी हथ्थीं आप मिटाया, दुर्योध्न हँकारी। जन भगतां माण दवाया, इक्क अर्जन हरि समझाया, अठारां ध्याए गीता रसन उचारी। जोती जोत सरूप हरि, विच मात आवे जावे वारो वारी। वेद व्यास किया अभ्यास। अठारां पुरान कर ध्यान, बणया लेख लिखास। जोती जोत सरूप हरि, गगन मण्डल विच पाउँदा रहे रास। द्वापर हरि वक्त चुकाया। कलिजुग विच मात धराया। हथ्थ फड़ाए जूठा झूठा ठूठा, मदिरा मास दए हथ्थ फड़ाया। दर घर साचे रिहा बैठा रूठा, प्रभ अबिनाशी मुख छुपाया। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, साचा भेख जुगा जुगन्त विच मात आए जाए रघुराया। कलिजुग अथर्बण इक्क अकार। कलिजुग रूप कलि लए धार। ऐड़ा अक्खर जिन इक्को इक्क अल्ला नाल ल्याया। ऐड़ा अल्ला दर साचा मल्ला। किरपा कर साचे हरि, इक्क मुहम्मद मात घल्ला। साचा हुक्म हरि सुणाया, बेमुखां फड़ाईं आपणा पल्ला। इक्का लड़ तेरे हथ्थ फड़ाया, इक्क मचाई जा के हल्ला। अचरज खेल हरि वरताया। कलिजुग की करे विचारा, इक्क इकल्ला। इक्क मूसा इक्क ईसा। हरि जी पढ़ाए आप सुणाए, दस्से उलटी रीता। साचा शब्द कन्न सुणाए, कलिजुग जीव दए भुलाए नूरी कीता। कुँवारी कन्यां कुक्खों जन्म दवाए, करे कराए हरि जगदीशा। जोती जोत सरूप हरि, सभ नूं देवे आपे वर, कोई ना देवे बेड़ा भर, कलिजुग आपणी करे कार। बेमुखां आत्म रिहा विचार। ईसा मूसा हरि जी नाल दए उत्तों मात उतार। जोती जोत सरूप हरि, देंदा आए सभ नूं वर, संग मुहम्मद घल्ले चार यार। मुहम्मद लै के आया वर। प्रभ अबिनाशी आत्म भण्डारा दित्ता भर। इक्क अल्ला नूर सच्चा तूर खुल्हावे आत्म दर। आप कराया सर्बकला भरपूरा, चाली बरस हरि जिस ध्याया, इक्क ल्याया नाल नाम अल्ला। दूजा फड़या हथ्थ मसल्ला। तीजा करया वल छला। एका मारे सभ नूं भल्ला। सुट्टी जाए डूंघी डला, कलिजुग की करे इक्क इकल्ला। प्रभ अबिनाशी साचे हरी। संग मुहम्मद चार यार कर ख्वारी। जीआं जन्तां आई हारी। साधां संतां करे मारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। मातलोक जन्म दवाया नानक निरँकारी। साची वस्त झोली पाया, सतिनाम बण वपारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी वेखे खेल कर कर न्यारी। कलिजुग तेरा खेल अपारा, इक्क हँकार नाल ल्याया। सच्चा यार एह बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणी कारे रिहा लाया। नानक करी अन्त पुकार। कलिजुग जीव ना जानण सर्ब गंवार। अन्तिम गया नानक हार। तजाई देह होई खेह, जोत जगाई अंगद दे विचकार। अंगद लाया आपणे अंग। एका चाढ़े नाम रंग। साचा दर ल्या मंग। जोती जोत सरूप हरि, वड दाता सूरा सरबंग। गुर अंगद करी त्यारी। अमरदास पावे सारी। साची जोत विच पसारी। अन्तिम गया मात हारी। रामदास आई वारी। सति सरोवर अमृत सर करे उसारी। कलिजुग जीव भुले रुले धीआं भैणां करन ख्वारी। पंचम् गुर आया धुर, एका शब्द एका सुर, चरन प्रीती गई जुड़, लग्गी प्रीत निभी तोड़, बाणी बोध आप अख्वाया। अगाध बोध शब्द रखाया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीआं माया पड़दा इक्क रखाया। अर्जन अन्तिम आई हार। बेमुखां सिर पाई छार। हरि गोबिन्द हो त्यार। मीरी पीरी पहन कटार, बेमुखां मारे डाहढी मार। जन भगतां हरि जी रिहा तार। एका जोत एका गोत, आवे जावे वारो वार। छेवें गुर, लेख लिख्या धुर, सुलक्खणी दित्ता तार। सतवें सति सत्त हरि राए। आपणी जोती आप जगाए।

सत्त दीपां करे रुशनाए। कलिजुग जीव सुध कोई ना पाए। इक्क घर इक्क दर दरवाजा इक्क खुल्ला, इक्क बन्द हो जाए।
अचरज खेल विच मात कर, राम राए उल्टे राहे पाए। अष्टम् गुर अष्टम् वारी। बाल अवस्था करे खेल अपारी। दिल्ली
जाए चरन छुहाए, हुक्मे अन्दर जोत समाए। तेग बहादर साची चादर करदा आदर, साचा हुक्म हरि सुणाया। आपणा
सीस आप कटाया। दिल्ली जाए चरन छुहाया। बेमुखां अन्त भुलाया। कलिजुग वेला वक्त सुहेला किसे हथ्थ ना आया।
जोती जोत सरूप हरि, अपणा खेल आपे खेला, भेव आपणे हथ्थ रखाया। गुर गोबिन्द वड बलकारी। बणया सच्चा लेख
लिखारी। निहकलंक कलि जामा धार, सम्बल देस करे वेस उल्टे भेस, कलिजुग जीव होण मुग्ध गंवारी। खुल्हे रक्खे
केस, गुरसिख साचे विच प्रवेश, माया पड़दा पाया भारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल पावे साची सारी। साचा
लेख लिखांयदा। आप आपणा भेख वटांयदा। आपे जोती आप जगांयदा। साचा कर्म आप करांयदा। आया कलिजुग अन्तिम
जोत सरूपी भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म धुरदरगाही इक्को इक्क सुणांयदा। निहकलंक ल्या
अवतार। पंच जेठ दिवस विचार। बेमुख सुत्ते पैर पसार। इक्क उठाया गुर पूरे सच्चा संत सरदार। मेल मिलाया साचे
कन्त, कीता ख़बरदार। आप बणाई साची बणत, ल्या खिच चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना पावे
६३ ०४ तेरी सार। संत मनी सिँघ आप उठाया। जोत सरूपी दरस दिखाया। कान्हा कृष्ना बाल अवस्था नज़री आया। ब्रह्मा ६३ ०४
विष्ना जिस नूं रहे ध्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोया पूत कलिजुग आपणा आप जगाया। उठ सुत हरि दुलार
निहकलंक कलि आया जामा धार। साचा राह आप वखाए देवे शब्द अपार। साचे मार्ग आपे लाए, देवे इक्क धुन सच्ची
धुन्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप छुपाया, दिस ना आया किसे विच संसार। विच संसार आपणा
आप छुपांयदा। बेमुख जीव गंवार, हरि साचा आप भुलांयदा। साचे संतां पावे सार हो शब्द अस्वार, आत्म सोया आप
उठांयदा। दरस दिखाए जोत नर अवतार, इक्क अकार, एका एक डगमगांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, बेमुख सुत्ते
पैर पसार, हरि किसे दिस ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार, शब्द मारे डाहढी मार, सच्चा राह किसे हथ्थ ना
आंयदा। कलिजुग भुले जीव गंवार नर नार, बिरध बाल जवाना ना कोई अन्त छुडांयदा। ख़ाक रुलाए शाह सुल्तानां राज
राजानां, अमीर वजीर फ़कीर एका थां बहांयदा। एका दर घर साचा देंदा साचा माणा, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम
बहांयदा। हथ्थीं बन्ने सोहँ शब्द गाना, साची जोत करे प्रकाश कोटन भाना, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दे मती आप समझांयदा। इक्क शब्द सच्चा सुल्तान। दरगहि साची देवे माण। लक्ख

चुरासी गेड़ कटान। कलिजुग जीव भाग मन्द, दर आए जो शरमाण। गुरमुख साचे अन्तिम चढ़ना साचा चन्द, जोती जगे महान। प्रभ अबिनाशी खुशी करे बन्द बन्द, आप उपजाए परमानंद बण के आया कान्हा। जो जन रसना तजायण मदिरा मास गन्द, सोहँ शब्द समाए बत्ती दन्द, आपे ढाहे पापां कंध, दूई द्वैती पड़दा लाहन। सोहँ शब्द रंदे देवे रंद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मदिरा मास जो जन तजाए। मानस जन्म रहिरास हरि आप कराए। सोहँ शब्द स्वास स्वास रसना गाए। हउमे ममता रोग दुखड़ा नास गुर दर कराए। जन होया रहे दास, सिर हथ्थ हरि आप टिकाए। सदा वसे आस पास, अन्तिम वेले होए सहाए। फेर ना होए गर्भवास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनी सीस झुकाए। गर्भवास ना होए फेरा। लक्ख चुरासी करे नबेड़ा। आप कटाए जम का जेड़ा। गुरमुखां बन्ने आप बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा देवे नाम धना, वसदा रहे तेरा काया नगर खेड़ा। सच्चा नाम जगत निशाना। गुरमुखां देवे गुण निधाना। गुरमुख बणाए चतुर सुजाना। हिरदे हरि जी सदा वसाना। आत्म दु:ख सदा कटाना। देवे मति कर साचा हित्त, साचे राहे पाना। रसना चरखा लैणा कत्त, सोहँ शब्द सदा गाना। आप निभाए चरन नत्त, लग्गी तोड़ आप निभाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दान वड मेहरबान गुरमुखां सच सुगाता। हरि का नाम अन्तिम
६४ ०४ मोख। गुरमुखां कटे आत्म दोख। साची धार विच संसार कर विचार देवे तार होए सहाई वेले औखा। महाराज शेर सिँघ ६४ ०४
विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जन झोली पाए देवे अन्तिम मोख। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश। पंजां तत्तां अन्दर हरि जी रक्खे वास। पंजे चोर विच बहाए, बेमुख कराए उहदे दास। गुरमुखां हरि जी दया कमाए, सोहँ शब्द कन्न सुणाए, करे दुखड़े नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए आत्म रक्खे वास। नेत्र खोल्ह ना शब्द उचारना। उच्चा बोल ना कदे पुकारना। जे कोई दूजा दिसे कोल, ना उस दे कन्न सुणावणा। हरि हिरदे वसे, साचा तीर एका कसे, खोल्हे दस्म दुआरना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर, सोहँ शब्द जाप जपावणा। गुरमुख साचे संत जन हरि हरि हिरदे विचारना। कर नेत्र बन्द। कलिजुग जीव होए अन्ध, खिच्ची जाए परमानंद। साची जोती इक्क आप उपजाए, दए जगाए करे रुशनाए, काया गगन पताल विच चढ़ाए साचा चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सदा सदा सद बख्शंद। एका राखो हरि की सरना। झूठा दु:ख ना कदे भरना। साचा सुख देवे सरना। सोहँ शब्द रसना उचरना। बन्द खलासी आपे करना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आपणा आपे करना साचा हुक्म शब्द फ़रमाण। देवे हरि नर श्री भगवान। दर आए लैण वर, प्रभ किरपा देवे कर, पंचम् जेठ वेख वखान। चरन लाग

जाए तर, कुक्ख हरी देवे कर, जन चरनी डिग्गे आण। उज्जल मुख साचा सुख देवे साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सुरत शब्द बन्ने डोर, गुरसिख बैठा विच अन्धघोर। दूसर किसे ना वेखे ना कोई दिसे होर। इक्को हरि आत्म घर पेखे, नेड़ ना आयण पंजे चोर। प्रभ अबिनाशी मुकाए लेखे, कढ्ढे भरम भुलेखे, तोले पूरे तोल। हरि जी सच्चा इक्क स्याणा। सोहँ देवे नाम निधाना। पाए सार बिरध बाल अञ्याणा। एका देवे गल दा हार, दुक्खां दर्दां चुक्के काना। सच शब्द सच घनघोर। निज घर वास जोत प्रकाश, ना दिसे कोई होर। कलिजुग माया करे नास, शब्द बन्ने साची डोर। एका जोत बलोए मात पताल अकाश, गुरमुख हिरदे रसना जप स्वास स्वास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए मोर तोर। एका देवे नाम निधान। आप मिटाए जम की कान। दए ना दुखड़ा कोई आण। उज्जल मुख विच जहान। सोहँ शब्द जो जन रसना गान। होए सहाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। शब्द भण्डारा हरि दए वंड। गुर घर ना देणी फेर कंड। लग्गे शब्द सच्ची चण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा राह वखाए लग्गी तोड़ जाए हंढ। किशना शुक्ला पक्ख। जीव वेख ना कोई मेट सके दुःख। दुःख रोग जगत विजोग रहे भोग, ना रहे कोई सुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए, रोगां सोगां दए मिटाए, सोहँ शब्द साचा जाम प्याए, गेड़ चुकाए उलटा रुक्ख। एका होए खट्टा पीड़ा। दुखी होया जीव जीअड़ा। सदा दुःख हड्डी रीड़ा। एका दुःख डाहढा लग्गा, जूठा झूठा एका दिसे काया खेड़ा। प्रभ सरनाई आए मिले वड्याई, आप मिटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया लग्गी पीड़ा। काया लग्गी पीड़ जीव दुख्यारड़ा। कोई ना बन्ने बीड़ ना होए कोई सहारड़ा। अट्ठे पहर रहे पीड़, ना आवे किसे विचारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सच्चा जाम आप प्याए, अमृत साचा सीरड़ा। नाम निधान तीर गुरमुख विरले वजदा। कलिजुग अन्त अख़ीर दर साचे कोई सजदा। हउमे अग्न रहे पीड़, बेमुख उठ उठ दर तों भज्जदा। गुरमुखां प्रभ आपे कटे भीड़, सभ दे पर्दे कज्जदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप रचाए, सृष्ट सबाई दए मिटाए, अन्तिम अन्त जो घड़या सो भज्जदा। गुरमुखां प्रभ आपे कटे भीड़, पी अमृत गुरमुख रज्जदा। जो घड़या सो भज्जणा। ना कोई लाए अज्जना पज्जना। गुर दर गुर संगत मल, गुरमुख साचे मजना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मुख चुआए, रसना पी पी रज्जणा। गुर दर आए होए निमानणा। आत्म देवे प्रभ साचा चानणा। करे जोत प्रकाश, हरि हिरदे रक्खे वास कोटन भानणा। हउमे दुखड़ा करे नास, घनकपुर वासी देवे सच्चा ब्रह्म ज्ञानणा। अन्तिम करे बन्द ख़लास, सोहँ शब्द चलाए स्वास स्वास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा। जोत सरूपी इक्क समाए। तिन्नां

९५ ०४

लोकां एका रथ बणाए। माया रूपी तणया जाल, तिन्ने लए बंधाए। आप बणाए साची रास, गुरमुख साचे संत जनां हरि साचा हुक्म सुणाए। रसन ना लाउणा मदिरा मास, वेला गया हथ्थ ना आए, अन्तिम कलि सर्ब पछताए। वेले अन्त होणा सभ ने नास, निहकलंक कलि जोत जगाए, करे रुशनाए भुल कोई ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए दास। दर आए जन होए निमाणा। प्रभ अबिनाशी रक्ख साचे थाएँ, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। रोग सोग सर्ब मिटाए, चुकाए जम की काना। सोहँ शब्द सच्चा जाम इक्क प्याए, बख्शे चरन ध्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव सुक्का रुक्खड़ा तन हरया फेर कराए। आए सच्चे घर, आत्म विकार है। ना मिले कोई वर, ना पाए कोई सार है। ना खुल्हे आत्म दर, चारों तरफ आए डर, फिरे घर घर, रिहा झक्ख मार है। ना कोई नुहाए साचे सर, किरपा कर काया होए ना ठंडी ठार है। आत्म रिहा हँकार भर, झूठे दिसण सारे घर, बेमुख भव सागर डुब्बा डूंघी चुभ्भी मार है। कराए करे करनी कर, आत्म जोत बैठा धर, वसे साचे घर पूर्ब रिहा कर्म विचार है। ना कोई ठग चोर यार हरि, सच्चो सच इक्क दरबार है। निहकलंक हरि अवतार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा साचा लेखा साचे घर रिहा निवार है। सरगुण जो जाणदा। पूरा हरि विच मात पछाणदा। निरगुण हरि जोत सरूप रंग रेख भेख ना कोई

९६
०४

वखाणदा। सरगुण सति सरूप मात आवे जावे जामा पावे ना धरावे, एका शब्द गावे गुण निधान दा। जोती जोत सरूप हरि, दोहां रंगां एका सुख, आपणा आप माणदा। साची मालण जोत निरँकार है। इक्क अकालण सच्ची पालण, सिर बद्धी सच्ची दस्तार है। गुरमुखां अन्तिम अन्त साचे फूल बणाए हड्डां बालण, आप लै के आए सोहँ सच्चा हार है। गुरमुख साचे संत जन सच दात विच मात संभालन, प्रभ देवे तन श्रृंगार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे सच्चा प्यार है। साची जोत हरि जगाई है। गुरसिख तेरा सच्चा पालण कलिजुग अन्तिम, प्रभ रिहा सिर उठाई है। गुंद ल्याया सोहणा हार, प्रभ अबिनाशी गल विच दित्ता डार, रोग सोग सर्ब गंवाई है। आपे बन्न्हे साची धार, किरपा करे निरँकार, अमृत मेघ साची बूंद रिहा बरसाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा नाम देवे सच्ची सर्ब दवाई है। सच्ची दवा देवे हरि देवा। रसना गाए गुरसिख, वसे साची जिह्वा। आत्म फल इक्क लगाए, हरि नाम सच्चा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा भार वंडाए, फूलन खारी सिर उठाए अलख अभेवा। गुरमुखां रिहा हरि भार वंडाए, फूलन खारी सिर उठाए, वेले अन्त ना देवे कंड। सृष्ट सबाई होए खण्ड खण्ड, चारों कुन्ट पैणी डण्ड, बेमुखां तोड़े घुमंड, कच्चे भन्ने हरि अंड। गुरमुख साचे आप उठाए गले लगाए विच नवखण्ड वरभण्ड। बेमुख जूठे झूठे दर दुरकाए,

९६
०४

जो पाउण झूठी डण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलिजुग बेमुखां देवे कंड। शब्द कटार हथ्थ उठाईआ। जिस दी तिक्खी धार दो हथ्थीं रिहा हुलार, सृष्ट सबाई दो फाड़ कराईआ। परखे चंगे माढ़ गुरमुख बणाए साचे लाड़, दरगहि साची वेले अन्तिम देवे वाड़, होए आप सहाईआ। बेमुखां होए भाग माढ़, दर घर साचे लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, साचा शब्द ना कोई रसना गावे बेमुहाना चले काड़ काड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम देवे सख्त सजाईआ। सच वस्त वड भण्डार है। विच मात धराए हरि निरँकार है। बेमुखां आप डन्ने, जोत सरूपी जामा धार है। कलिजुग जीव आत्म नार होई रंड, ना मिल्या सच्चा कोई भतार है। चारों कुन्ट नेत्र खोल्ह वेखो ना दिसे कोई धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द दात गुरमुख तेरी आत्म झोली पाए, मिटाए अन्ध अंध्यार है। काया लग्गे रुक्खड़ा। ना मिटे कदे दुखड़ा। ना लग्गे तन भुक्खड़ा। ना दिसे उत्ते मुखड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना साचा सीर प्याए, गुरमुख साचा रसना गाए, किरपा करे भिन्नड़ी रैण आप रघुराए, कटया जाए लग्गा तन काया तेरा दुखड़ा। गुर संगत खुशी मनाई। रैण सबाई भिन्नड़ी संग रलाई। प्रभ साचे आत्म बिधी, शब्द तीर रिहा चलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आयां देवे सच्ची आप वड्याई। गुरमुख तेरा माण ताण इक्क भगवान, दूसर ना कोई विच जहान। अन्तिम अन्त मात पित भैण भाई, साक सज्जण सैण सर्ब छड्ड जाण। इक्को हरि जी रहे मीत, भगत बिठाए विच शब्द बबाण। गुरमुख साचे सद राखो चीत, साचा मित अन्तिम जोती मेल मिलान। निहकलंक कलि जामा पाया। भेव छुपाया दिस ना आया। सृष्ट सबाई रिहा भुलाया। गुरमुख साचे लए जगाया। आत्म जोती दीप जगाया। तेल बाती ना कोए रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह दए दिखाया। गुर संगत सर्ब सुखदाईआ। देवे हरि किरपा कर आप वधाईआ। आए साचे दर साचे घर, रैण खुशीआं नाल लँघाईआ। जूठे चुक्के डर साची आए सरना, मिल्या काया साचा घर सर्ब दुःख गंवाईआ। गुरमुख साचे जाण तर, जिन्हां रक्खया एका डर, दोए जोड़ चरन सरन हरि रखाईआ। जो जन रहे बचन मोड़, प्रभ लग्गी देवे तोड़, लक्ख चुरासी दए भुआईआ। आत्म काया चले कोढ़, दर साचे तों देवे रोड़्, लग्गे मथ्थो कालख छाहीआ। एका परखे मिट्ठे कौड़, चढ़या फिरदा शब्द घोड़, माण हँकार सभ दा रिहा तोड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे विच ना कोई आईआ। अछल अछेदा, कोई जीव ना पावे तेरा भेदा। गा गा थक्के चारे वेदा। दस अट्ठ पुरान करन ध्यान गुण निधान, ना दिसे किसे राह सिध्धा। खाणी बाणी हरि शब्द मधाणी। गगन पतालां विच्चों छाणी। फेर बणाई कलिजुग राणी। बेमुख ना जानण सुघड़ स्याणी। जूठा झूठा होया घर लग्गा दुःख, रसन

ना गायण गुर अर्जन तेरी बाणी। झूठे ज्ञानी आत्म ध्यानी बण गए ब्रह्म ज्ञानी। कोई ना देवे नाम इक्क निशानी। इक्को भरया आत्म हँकार दूजी रली बेईमानी। तीजी प्रभ दित्ती माया राणी, दर घर साचे सच बीज शैतानी। जो जन करे ना अन्त कलि विचार, दुःख लग्गे काया फानी। सच्चा दर द्वार एथे क्या कोई मारे भानी। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारे शब्द साची कानी। भुला फिरे सर्ब संसार। कलिजुग जीव झूठा चम्म अन्तिम होणा काग, ना पाउणी किसे सार। क्यों गंवाया मानस जन्म, पासा आया हार। झूठे रक्खे मन विच भरम, जोत सरूपी बैठा भेख धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। गुर संगत गुर दर आईआ। हरि साचा माण दवाईआ। धन्न धन्न धन्न जणेंदी माई जिस जम्मे लाल दुलार, आए गुर सरनाईआ। अग्गों मिल्या सच्चा इक्क प्यार, किरपा करे आप रघुराईआ। आपे तारे नर निरँकार कर विचार पावे सार, जोत सरूपी सभ दे विच समाईआ। आत्म झाती वेखो मार, एका जोत हरि निरँकार, काया महल वसे अटल्ल करे इक्क अकार, तन बुत कोई नज़र ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे फूल आपणी हथ्थीं भेंट चढ़ाईआ। ज्ञान गुरू के हथ्थ, जीव नादान है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, जीव तेरी काया सुंञ मसाण है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, कलिजुग जीव उडदे फिरदे जिउँ भूत प्रेत पवण मसाण है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, जन संतां देवे चरन सरन ध्यान है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, गुरमुख प्रभ पूर कराए चरन सेव, उडदे शब्द सच्ची उडान है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, समरथ जन भगतां रहे अट्ठे पहर निगाहबान है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, आपे देवे माण ताण है। ज्ञान गुरू के हथ्थ, बेमुखां पाई बैठा नत्थ, गुरमुखां सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर्शन दर घर साचे पान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा हरि वड बली बलवान है। वड बली हरि बलवाना। अट्ठे पहर नौजवाना। जोत सरूपी इक्को पहरे सच्चा बाना। जीव जन्त ना कोई पछाणे ना कोई जाणे, हरि जी वसे किस टिकाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए, सिर आपणा हथ्थ टिकाए, दसम दुआर बूझ बुझाए, बज़र कपाटी खोल्ह वखाए, जगाए जोत इक्क महाना । सोहँ साचा हरि लयावे । सतिजुग साचा राह दिखावे। चार वरन कन्न सुणावे। सोहँ साचा जाप जपावे। चार कुन्ट डंक वजावे। सोहँ साचा सीर पिलावे। एका साचा रंग चढ़ावे। जोत सरूपी मस्तक लावे। सोहँ साचा शब्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कन्न सुणावे। सोहँ शब्द विच संसार। आप जपाए पहली वार। आप बंधाए साची धार। गुरमुखां करे इक्क प्यार। दूजा देवे नाल चरन सरन हरि दातार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जाप जपाई, गुरमुखां अन्तिम दए वड्याई, रसना रहे जीव उचार। सोहँ शब्द साचा

जापा। गुरमुखां मारे तीनो तापा। प्रगट होए आपे आपा। कलिजुग अन्तिम अन्त दर घर वर दे रिहा बिधाता। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लग्गी मैल लाहे गुरमुखां पापा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक हरि रघुराई सृष्ट सबाई माई बापा। माई बाप आप करतार। सतिजुग साचा लग्गा मात, किरपा करे हरि दातार। गुरमुखां देवे शब्द सुगात, आप मिटाए अन्धेरी रात, दीपक जगाए करे उज्जयार। चरन बंधाए नात, सर्ब उठाए आप, पूर्ब कर विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ सो पुरख निरँजण गुरमुखां पाए शब्द साचा अंजन, पूर्ब कर्म कर विचार। सोहँ शब्द अपर अपारा। चार वरन ऊँच नीच करे इक्क विचारा। मसीत मन्दिर किते ना मिले ना मिले किसे गुरदुआरा। अजपा जाप स्वास नासी, त्रिकुटी करे आप वासी, सरगुण रूप दिखाए। निरगुण करे विच वास, दीपक जोती आप जगाए। सोहँ शब्द रसना गाए। प्रभ अबिनाशी आपे आप, गुरमुखां सार संभालदा। काया सच्ची पालदा रक्खे ठंडी छाया, जो जन रसन उचारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारदा। सोहँ सदा सहाई सच्चा सीर है। दित्ती हरि वड्याई, सतिजुग दात झोली पाई, धरत मात खुशी मनाई, देवे सच्ची धीर है। पाणी आई बाहर लछमी, चरन झस्से हरि रघुराईआ। सागर मथन कर बाहर बहाई, प्रभ आपणे दर सुहाई, करे खेल रघुराईआ। गुर दर मिले ना किसे वड्याई धी जवाई, उतरे पार जिस चरन सेव कमाईआ। निहकलंक नरायण नर अवतार, चौहां वरनां करे प्यार, ना कोई जाणे सिख सरदार, ना कोई जाणे चूहड़ा चम्यार, ना कोई पिछली सार, सर्ब जीआं इक्को यार, देवे सर्ब वड्डयाईआ। बेमुख जीवां पाई वंड, विच मात प्रभ वढ्ढी बैठा कंड, घर घर पई लड़ाईआ। कलिजुग जीव होए खण्ड खण्ड, अन्तिम दित्ती हरि जुदाईआ। होई आत्म सभ दी रंड, इक्को भरया विच घुमंड, धीरज धर्म वाली टुट्टी गंढ, होए फिरदे जगत शुदाईआ। थां ना मिले किते विच नव खण्ड ब्रह्मण्ड, धर्म राए अद्ध विच अटकाईआ। ओथे मारे डाहढी फंड, ना हरि विचारया विच वरभण्ड, देवे अन्तिम सख्त सज़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां फड़ बांह, दर घर साचे आप बहाईआ। सोहँ शब्द चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी दित्ता लेख लिखा। सतिजुग साचे पूरा दित्ता साथ रला। विच मात सति सुगात, धरत मात तेरी झोली पा। गुरमुखां पुच्छणी वात, बेमुखां करनी अन्धेरी रात, ना मिले कोई थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दो हथ्थीं फड़ीं सभनां बांह। सोहँ शब्द संत प्यारया। गुरमुखां दर दरबार जाह, आत्म करे इक्क विचारया। ना कोई जाणे पिता मां, गुरमुखां आपणे आप बणा रिहा। दरगहि साची लावे नां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम सिँघ सिँघासण बैठा साचा समां सुहा रिहा। सोहँ शब्द सतिजुग उठया प्रभात। कलिजुग झूठी

गई रैण, नाल आई सुहञ्जणी रात। तीजे रले संत जन तिन्नां मिल बाणी इक्क बरात। प्रभ अबिनाशी तिन्नां लोकां विच्चों लए चुण, देवी देवत सुरपति राजा इन्द उप्पर बैठे, थल्ले रहे मार झात। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, पुरीआं लोआं होए रुशनाई, बैठा मिले इक्क इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जात ना कोई पात। ना कोई जात ना कोई पाती। ना कोई पिता ना कोई माती। ना कोई भैण ना कोई भ्राती। ना कोई दिवस ना कोई राती। ना सोए ना कोई जगाती। ना रोए ना कोए हसाती। गुरमुखां मैल पापां धोए, देवे बूंद स्वांती। आप उठाए कलिजुग सोए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क सच्चा हरि सच्चा घर, जिथ्थे वसे जोत सरूपी उत्तम जाती। उत्तम जात जोत सरूपा। ना कोई रंग ना कोई रूपा। क्या कोई जाणे वडा शाह भूपा। हरि जी सच्चा इक्को सति सरूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई, सृष्ट भुलाई अचरज खेल रचाई, करे खेल जगत अनूपा। मिटे जगत अन्धेर जोत जगाईआ। ना कोई जाणे सन्झ सवेरा, अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। चुकाए अन्धेर मिले मेल पहली वेर, गुरमुख साचे संत जनां चरन बहाए ना लाए देर, बेमुखां दिस ना आईआ। प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेर, गुरमक्खां वसे आत्म नेरन नेर, बेमुखां दूर दिसाईआ। सृष्ट सबाई आप भुलाई कर कर हेर फेर, राह वक्खो वक्ख दिखाईआ। सतिजुग साचे उठ हो दलेर, बण साचा शेर, चार वरन एका सरन निहकलंक रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दान सर्ब जीआं एका एक रघुराईआ। हरि तोड़ जगत जंज़ाला। गल पा शब्द माला। धो कलिजुग दाग काला। अग्गे दस्स राह सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा फल लगाए आत्म साचे डाला।

❋ १२ चेत २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी विहार होया ❋

जगत भेखा अन्ध अंध्यान है। साचा लेखा मुकाए श्री भगवान है। जो जन रहे वेखी वेखा, ना मिले कोई थान है। धन्न धन्न गुरमुख साचे नेत्र पेखा, मिले जगत वड्याई है। मिटदी जाए झूठी रेखा, साचा लेखा दए लिखाई है। जोत सरूपी धारे भेखा, अचरज खेल खेले आप रघुराई है। गुरमुख तेरी आत्म मारे सोहँ शब्द साची मेखा, दूई द्वैती चीर वखाई है। ना कोई जाणे पीर शेखा, भुली सर्ब लोकाई है। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत मात जगाई है। जगत भुलेखा अन्ध अंध्यार है। बेमुखां लग्गी अग्न, तन होई झूठी छार है। गुरमुख आत्म जोती जगण, देवे जोत अपर अपार है। बेमुख माया दे विच मग्न, ना पावे कोई सार है। गुरमुख गुर चरन साचे लगण, देवे नाम अपार है। बेमुख वहन्दी धार वगण,

हरि देवे धक्का मार है। गुरमुखां मुख लगाए सोहँ साचा सगन, देवे दात अपर अपार है। बेमुख जीव कलिजुग फिरन नग्न, शब्द पड़दा ना देवे कोई डार है। गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए इक्क प्यार है। जगत भुलेखा अन्ध अंध्यानी। ना कोई जाणे जीव निधानी। आत्म रक्खे अन्ध अज्ञानी। मारे शब्द हरि सच्चा इक्को कानी। प्रगट होए हरि दो जहानां वाली। गुरमुख साचे संत जनां करे आप रखवाली। देवे सच्चा नाम जिन्हां गुरमुखां, तिन्हां आत्म झोली भरा ली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां फूल लगाए डाली डाली। जगत भुलेखा जगत भुलाए आप मुकाए कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा। सृष्ट सबाई ख़ाक मिलाए चारों कुन्ट जो जन धारी फिरदे भेखा। प्रभ अन्तिम नष्ट कराए, सच्चा हरि जिस जन ना आत्म नेत्र पेखा। हउमे रोग दए गंवाए प्रभ आप चुकाए पिछला लेखा। साचे राहे पाए, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग दित्ती वधाई, माया राणी संग रलाई, बेमुखां आत्म रही छाही, ना कोई चुकावे अन्तिम लेखा। कलिजुग तेरे अन्तिम नाल। बेमुख जीव कलिजुग रक्खे संभाल। सतिजुग रखाए हरि साची नीव, बेमुखां आत्म होई कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख काया गगन मण्डल साची जोत जगाए, जिउँ दीपक विच थाल। जगत भुलेखा अन्ध घोर। बेमुखां लुट्टी जांदे दिन दिहाड़े पंजे चोर। जड़्ह पुट्टी जांदे, अट्ठे पहर चढ़दे रहण काया घोड़। शौह दरयाए सुट्टी जांदे, चारों कुन्ट दौड़ दौड़। साचा माल ख़ज़ाना लुट्टी जांदे, बेमुखां आत्म हुन्दी जाए कौड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेख विचारे बेमुखां उत्ते कीता गौर। भरम भुलेखा झूठी चिन्दा। कलिजुग जीव करदे निन्दा। एका जोत एका गोत एका पूत एका बिन्दा। बेमुख दर दर बहे रोत, ना मिले गुणी गहिंदा। झूठी माया जगत बिन्दा। पूत होया आत्म अन्धा। दुरमति मैल गुरमुख विरले धोत, आत्म गंवाए दया कमाए हँकारी निन्दा। आप वखाए गुरमुखां जोत जगाए साचा चन्दा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जन भगतां सद बख़्शिंदा। जगत भुलेखा डूंघी गार। मनमुख डुब्बे जीव अंध्यार। डूंघे वहिण कलिजुग खुभे, कोई ना कढ्ढे बाहर। इक्को कुण्डा हँकारी वज्जा, आत्म दुःख लग्गा भार। गुरमुख साचे संत जन आत्म सति सरोवर मारन चुभ्भे, प्रभ करे ठंडया ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी इक्को बन्न्हे साची धार। जगत भुलेखा अन्ध अन्धेर है। ना कोई जाणे सन्झ सवेर है। कलिजुग जीव भुले रुले माया डुल्ले, ना लथ्थे मैल तन है। अग्न लग्गी रहे काया कुले, ना वसे नगर खेड़ है। आत्म प्याले बेमुखां डुल्ले, प्रभ आप पुआए चुरासी गेड़ है। सच दुआरा एका खुल्ल्हे, निहकलंक सच्चा शायर है। जो जन आए हरि दर भुल्ले, प्रभ लहणा देणा दए नबेड़ है। सद भण्डारे रहण खुल्ह्े, प्रभ

१०१
०४

रक्खे खुल्हे वेहड़ है। ना कोई लैंदा हरि जी मुल्ले, देवे शब्द रसना हरि हरि सच लबेड़ है। जोती जोत सरूप हरि, बेमुखां लाए इक्को इक्क उखेड़ है। जगत भुलेखा दूरन दूर। मुक्के लेखा हरि हज़ूर। एथे टुट्टे माण गरूर। अग्गों मिले शब्द तूर। जगे जोत सच्चा नूर। बेमुखां लाए शब्द डण्डा, करे चूरो चूर। रहण ना देवे मन किसे घमंडा, सर्बकला हरि भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा सभ दी रिहा पूर। जगत भुलेखा अंध्यारी रैण। कलिजुग तेरे नाल रली विच मात रैण काली भैण। दोहां चाल साची चली, बेमुखां फड़ लैण। आत्म खुल्हे ना किसे कली, घर घर दर दर पैंदे वैण। गुरमुखां मिलदा हरि गली गली, बणे साक सज्जण सैण। आत्म कोठी हरि साचे इक्को मल्ली, दरस दिखाए तीजे नैण। क्या कोई करे वल छली, भरम भुलेखे सर्ब मिटेण। क्या कोई करे हिली जुली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर नर नरायण जगत भुलेखा धुर विछोड़ा। दो जहानी ना होए चरन जोड़ा। मुल ना पाए बेमुखां इक्क दवानी, ना मिले शब्द घोड़ा। गुरमुखां आत्म हरि पछानी, धुर दरगाहों आए दौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द विच मात धराया, इक्क रखाया पौड़ा। जगत भुलेखा हरि हरि रखणा। गुरमुख विरोले, जिउँ दुध्ध विच्चों मक्खणा। बेमुख होए अन्तिम कलिजुग गोले, तन भाण्डा दिसे सक्खणा। पंज तत्त हँकारी विच्चों बोले, ना पड़दा किसे रखणा। सच

१०२ वस्त ना किसे कोले, मुल ना पैणा कक्खणा। जोत सरूपी सृष्ट सबाई आपणे तोल साचे तोले, गुरमुख लभ्भे विच्चों इक्क १०२

०४ लाल लक्खना। बेमुखां अन्तिम कलिजुग आत्म डोले, चारों तरफ लाउँदे भक्खना। गुरमुखां हरि वसे कोले, अमृत रस ०४

रसना साचा चक्खणा। जोत सरूपी हरि वसे सदा कोले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रक्खणा। जगत भुलेखा जीव गंवारी। चरन धूढ़ ना मिले जीव हँकारी। शब्द सरूपी पाए जूड़, कलिजुग जीव अन्तिम वारी। गुरमुखां रंग चढ़ाए गूढ़, देवे शब्द घोड़ अस्वारी। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, एका अटल जोत निरँकारी। आपे पीड़े जिउँ वेलने बूड़, ना किसे होया कोई सहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भुलेखा एका पाया सृष्ट सबाई होई ख्वारी। नेत्र पेख सुरत संभाले। नेत्र पेख करे प्रितपाले। नेत्र पेख ना बण कंगाले। नेत्र पेख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े जगत जंजाले। नेत्र पेख नर निरँकार। नेत्र पेख जोत सरूपी हरि निराधार। नेत्र पेख नर हरि हरि नर करे खेल अपर अपार। नेत्र पेख लिखाओ लेख, ना मानस जन्म आवे दूजी वार। नेत्र पेख प्रभ अबिनाशी साचा ना भुल जीव गंवार, नेत्र पेख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे दरस अगम्म अपार। नेत्र पेख नर निर्मोह। नेत्र पेख दुरमति मैल लैणी धो। नेत्र पेख एका हरि दूजा नाही को। नेत्र पेख गुर चरन जाण छोह। नेत्र पेख प्रभ अबिनाशी राह चलाए दो। नेत्र

पेख बेमुखां प्रभ रिहा कोह। नेत्र पेख गुरमुखां सुणे हरि साची सो। नेत्र पेख सृष्ट सबाई वेख, शब्द सरूपी हल रिहा जो। नेत्र पेख लिखे लेख मिटाए भेख, साचा बीज गुरमुखां आत्म रिहा बो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सद सद मेहरवान, गल्लों कटे जगत जंज़ाला बेमुखां पुच्छे नाही को। नेत्र पेख नैण मुँधार। नेत्र पेख विच संसार। नेत्र पेख जोत अकार। नेत्र पेख सर्ब जीआं हरि पावे सार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्ता साधन संता आदिन अन्ता बन्ने साची धार। नेत्र पेख जिथ्थे धार। देवे शब्द इक्क अपार। गुरमुख साचे संत जन इक्क सोहँ करन अहार। आप चुकाए भेव दोआँ, इक्को जोत हरि निरँकार । नेत्र खोल्ह वखाए तरै लोआँ, मिटाए अन्ध अंध्यार। चौथे घर गुरमुख साचे इक्को जाणे सोहँ, ना कोई होर अकार। जोती जोत सरूप हरि, सच बैठा उत्ते हो अस्वार। पंचम् होया आप अस्वार। चारे घर थल्ले लग्गा दरबार। संत जनां दी सुण पुकार। घर साचे वाड़ी जाए वारो वार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, अग्गे करे शब्द सच्ची वाड़। साची जोती आत्म धर हरि नर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंजां देवे साड़। सच्ची जोत इक्क अकालन ना कोई सके नाल छोह, परे हटाए पंजां धाड़। बेमुखां वधाया झूठा मोह, अन्तिम भाग आए माढ़। सर्ब थां प्रभ लए खोह, बाहर कढ्ढे झाड़ झाड़। चौबलद सुहागा हरि लैणा जो, बेमुख खपाए ना वेखे चंगे माढ़। अन्तिम कलिजुग लए ढाह, चबाए आपणी हेठां दाढ़। आब ना किसे हथ्थ आंयदा, बेमुख तपाए जिउँ अग्न हाढ़। गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँ, मात उपजाए साचे लाड़। लाड लडाए जिउँ पुत्तां मां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई जंगल जूह विच पहाड़। नेत्र पेख रंग करतार दा। गुरमुखां पैज संवारदा। बेमुखां भाण्डा भन्ने हँकार दा। दर साचे डन्ने वेला रिहा ना कलिजुग तेरे अन्त हुदार दा। लक्ख चुरासी घड़े वेले अन्तिम प्रभ जी भन्ने, मारे शब्द डाढी मारदा। घरों चुक्कणा ना मिले थाली छन्ने, शब्द फुंकारा इक्को मारदा। झूठा छुट्टे पीण खाण अन्ने, आया वक्त निहकलंक सच्चे अवतार दा। गुरमुख विरले तेरी आत्म मन्ने, कलिजुग भरया पापी हँकार दा। वेले अन्तिम कलि गुरमुखां बेड़े बन्ने, बेमुखां दर दुरकारदा। आप चढ़ाए साचे चिल्ले, रसना तीर इक्को मारदा। कलिजुग जीव आत्म अन्ने ना हिरदा मन्ने, ना जाणे भाणा सच्ची सरकार दा। जोत सरूपी गुरमुखां तारे जिउँ माल चराए धन्ने, आदि अन्त जन भगतां पैज संवारदा। गुरमुखां भार उठाए आपणे कन्ने, फड़ फड़ बाहों कलिजुग अन्तिम विच्चों तारदा। बेमुखां जड़ उखड़े जिउँ उखड़े जड़ गन्ने, प्रभ एका शब्द हुलारा मारदा । खड़ी रहे ना किसे दी फन्ने, शब्द कुहाड़ा इक्को मारदा। सृष्ट सबाई हंने बन्ने, निहकलंक विच मात जामा धारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला जाणे खेल अपर अपार दा। नेत्र पेख भगत

१०३
०४

भगवानया। टुट्टे माण ताण मिले थाउँ ना विच जहानयां। बणाए चतुर सुघड़ स्याण, देवे नाम शब्द निधानया। आप रखाए आपणी आण, दरगहि साची देवे माण, होए सहाई हरि भगवानया। सृष्ट सबाई पुण छाण, विच्चों लभ्भे गुरमुख लाल बाल निधान, मारे शब्द तीर निशानया। साचा शब्द नाम गुरमुख पीण खाण चुक्के कान, देवे दान वड वड मेहरबानया। चरन धूढ़ करन इशनान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया, वाली दो जहानया। नेत्र पेख सच द्वार गया खुल्ह, सच्चा विच संसार। नेत्र पेख मिले नाम इक्क अनमुल्ल, जिस दे कोई ना दिसे तुल्ल, कर साचा जीव वणज वपार। कलिजुग अन्तिम गया हुल, किसे डाल ना दिसे फुल्ल, गुरमुख तेरी आत्म लग्गे सच बहार। भाग लगाउणा आपणी कुल, कलिजुग माया विच ना जाणा रुल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द दात जगत करामात झोली पाए वड वड अनमुल्ल। सच दर दरवाज़ा। जिथ्थे वसे ग़रीब निवाजा। अट्ठे पहर अन्दर बैठा वसे, जिउँ जन रक्खे लाजा। पंजे चोर दर तों जायण नस्से, एका जागे हरि साचा शाहो शाबाशा। गुरमुखां हरि हिरदे वसे, अन्तिम कलिजुग रक्खे लाजा। बेमुखां पैरां हेठ झस्से, चारों कुन्ट पैण भाजा। गुरमुखां राह इक्को साचा दस्से, अन्तिम आप संवारे काजा। आप बंधाए शब्द डोर वडे रस्से, जोत सरूपी शब्द मारे साची अवाज़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाई, प्रगट होए देस
१०४ विच माझा। माझे देस प्रगट होणा। सृष्ट सबाई बहि बहि रोणा। राती मिले ना किसे सौणा। वांग बक्करे बेमुखां कोहणा। १०४
०४ काया तन झूठा कप्पड़ फेर किसे ना मिले धोणा। कलिजुग डुब्बे माया डूंघे छप्पड़, साचा बीज ना किसे बोणा। गुरमुखां ०४
हरि जाए अप्पड़, शब्द सरूपी विच ताउणा। सोहँ शब्द तन शृंगार पहनाए साचा कप्पड़, कलिजुग अन्त गुरमुख तेरे गलों ना किसे लाहुणा। ना कोई माई ना कोई बप्पड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां फड़ फड़ मारे दो हथ्थीं धौणा। माझे देस जोत जगाए। गुरमुख विरला हरि आप उठाए। बेमुख सोए ना कोई जगाए। गुर गोबिन्द वाली हिन्द जो बचन लिखाए। निहकलंक पूर कराए। गुर पूरा हरि साचे दी साची बिन्द, इक्क जोत इक्क गोत भेव ना कोई राए। प्रगट होए गुणी गहिंद, किसे दिस ना आए। सुरपति राजे इन्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आपणा आप कराए। कलिजुग अन्तिम प्रभ करे विचार। दुखी होए साध संत, ना कोई पावे सार। कलिजुग माया वधी बेअन्त, सृष्ट सबाई आत्म कढ्ढे हँकार। चारों तरफ रोवण जीव जन्त, दुखी होए नर नार। किसे ना मिले साचा कन्त, सच्चा हरि भतार। इक्को जोत आदि अन्त, जुगा जुगन्त गुरमुख विरले जानण संत, कलिजुग जीव होए ख्वार। इक्को इक हरि भगवन्त, महिंमा गणे जगत अगणत, सृष्ट सबाई बणाए बणत, आपणी करे आप विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि

जोत प्रगटाई, गुर गोबिन्द तेरे बचन पूर कराई, आया अन्तिम वार। गुर गोबिन्द एह बचन लिखाया। सम्बल देस वास रखाया। ज्ञानी ध्यानी वड विद्‌वानी भाल थक्के, तेरा किसे भेव ना पाया। सम्बल देस केहड़ा वेस केहड़ा भेस, ना भेव किसे खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठ माझे देस, गुर गोबिन्द तेरा पिछला लेखा दए चुकाया। सभना पाए सार, निहकलंक लै अवतार, गौड़ ब्रह्मण जो अख्वाया। वेद व्यास, सर अमृत तेरे वसे आस पास, पंचम् जेठ गुर नानक तेरा लग्गा खेत, गुरसिक्खां पूरी करे आस, सम्बल देस सूरबीर। उठे जोधा इक्क चलाए शब्द तीर। सृष्ट सबाई अगाध बोधा, आप मिटाए पीर फ़कीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे संतां देवे शब्द धीर। सम्बल देस सार संभाले। गलों लाहे सूसे काले। पहलों पहने चिट्टे बाणे। गुरमुख बणाए साचे राणे। शब्द फड़ाए तीर कमाने। खिच्चे रसना वाली दो जहाने। गुर गोबिन्द तेरे लिखे बचन, हरि पूरे पूर कराने। जोत सरूपी जामा धार, अचरज खेल मात करे, बेमुखां मारे बेमुहाने। सम्बल देस सिध्धा राह। राहे देवे पा। अग्गे हरि जी नरायण नर खलोता, नेत्र खोल्ह दए दिखा। कलिजुग जीव जो गूढ़ी नींद रिहा सोता, ना मिले कोई थां। आदि अन्त जुगा जुगन्त एका जोत हरि पुरख निरँजण होता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल अनमुल्लड़े संसार सागर डूंघर विच्चों लभ्भे, मारया एको गोता। संसार सागर डूंघी गार। निहकलंक जोत सरूपी चुभ्भी मार। दोहीं हथ्थीं धरत मात तेरा पेट फिरोले, विच्चों लभ्भे सिख दुलार। आप मिटाए काया माया पड़दे ओहले, जगाए जोत अपर अपार। गुरमुखां देवे शब्द, ना मात डोबे, किरपा करे हरि निरँकार। बेमुखां हरि वसे कोले, ना दिसे सच्चा यार। अन्दर बैठा हरि हौली हौली बोले, देवे शब्द सच्ची धुन्कार। पहलों मारो झाती काया चोले, जिथ्थे वसे नर निरहार। बण गए जीव भोले भाले, मानस मिल्या जन्म अपार। पूरे तोल हरि साचा तोले, ना करे कोई उधार। एका शब्द रसना सच्चा बोले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंक उठे सूरबीर। सोहँ शब्द चलाए सच्चा तीर। इन्द्रपुरी होए वहीर। सुरपति राजा इन्द, सिँघ सिँघासण उत्ते बैठा कढ्ढी जाए लकीर। सोलां मग्घर खेल रचाए। छोटे बाले उत्ते हरि चिट्टा पड़दा पाए। फड़ के बाहों साचे राहे आप रखाए। सिँघ सिँघासण दए तजाए, उत्ते बैठा सिँघ मनजीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ नीह रखाऐ, पहली हाढ़ उसारी लाए, पूर कराए सतारां हाढ़ साची बणत आप बणाए, आप चलाए सच्ची इक्को रीत। पंचम् जेठ नींह रखावणी। गुर संगत सेवा सच कमावणी। सतिजुग तेरी सच्ची नींह, आपणी हथ्थीं आप बन्न्हावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले जगत दलाले दित्ती इक्क सुनावणी। छोटा बाला गया भज्ज। मातलोक नूं गया तज। सिँघ सिँघासण बैठा सज।

करोड़ तेतीस तेरे पर्दे लए कज्ज। निहकलंक जामा पाया, प्रगट होए कल कि अज्ज। गुरसिख साचे संत जनां विच मात जन्म दवाया, सच दुआरे रहे सज्ज। साचा हुक्म एका इक्क सुणाया, मैं रक्खण आया तुहाडी लज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई, अमृत पीओ विच जा के मात रज्ज। करोड़ तेतीस चढ़े चाअ। सिँघ मनजीत तेरे अग्गे देवण सीस झुका। दस्सीं साची रीत असीं जाईए केहड़े थां। केहड़ा गाईए सुहागी गीत, केहड़ी बणाईए जा के मां। केहड़ा परखे नीत, केहड़ा देवे ठंडी छाँ। असीं आपणा आप लईए जीत, दस्सी सच्ची थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, पुरी घनक भाग लगाया, सम्बल देस नाम रखाया, अग्गों पकड़े तुहाडी बांह। करोड़ तेतीस करन विचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। जन्म दवा विच संसार। साचे संत आप बणा खिच ल्या सच दरबार। आपणी सेव आप लगा, कर सच्चा इक्क प्यार। अमृत मुख इक्क चुआ, होईए ठंडे ठार। दरगहि साची दा दर आपणीं हथ्थीं आप खुल्हा, करीए एथे सच बहार। अन्तिम जोती जोत मिला, तिन्नां लोकां होईए बाहर। इक्को गोती गुरसिख माणक मोती सभनां मिलदा सच्चा थां, करोड़ तेतीस करन पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर पंचम् जेठ शिव शंकर पुरी शिव हरि भेव खुल्हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। ब्रह्मा तैनूं वेखे जेहड़े वसे इक्क चुबारे, चन्द सूरज हरि पावे सार। सति शब्दी जो अस्वार। सत्त वारां बन्न्हे लेखा, ऐत सोम मंगल क्यों बणाए विच संसार। बेमुखां अन्तिम पाए संगल, गुरमुखां करे आत्म सुध्ध, चले शब्द तीर, बेमुख हथ्थ ना आवे, ना कोई पावे सार। लुकया कोई ना रहे दक्खण पच्छिम पूर्ब उतर, प्रभ मारे शब्द मार। बुध वीर शुक्कर हरि करे विचार। छन्न छनिच्चरवार बेमुखां लग्गी तन अग्न, होए जीव गंवार। प्रभ अन्तिम करे सच्चा लेख लिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होए सेवादार। सच्ची सेवा आप कमाए। देवी देव हरि रघुराए। कलिजुग अन्धेरी रात कुलक्खणी नार वड कमजात, ना कोई सार पाए। ना कोई जाणे भैण भ्रा पित मात, प्रभ चरन ना नाता कोई बंधाए। गुरमुख दिसे इक्क इकांत, अमृत बूंद प्याए स्वांत, आप खुल्हाए आत्म ताक, जोत सरूपी दरस दिखाए। साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। पुरख बिधाता दया कमांयदा। कलिजुग अन्धेरी राता, साचा दीपक शब्द जगांयदा। आपे बणे पिता माता, गुरसिख गोदी बाल उठांयदा। देवे शब्द सच्ची सुगाता, आत्म झोली हरि भरांयदा। आप मिटाए अन्धेरी राता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दयानिध कर जाए कारज सिध्ध, साचे राहे पांयदा। प्रभ कारज करे पूरे। प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूरे। सभना चिन्ता करे दूरे। होया सच संजोग, देवे नाम रस सच्चा भोग, कटे हउमे रोग, उतरे सगल वसूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां

सद वसे नेड़े, बेमुखां दिसे दूर दूरे। दूर दुराडा दिसे शाह। बेमुख बैठे हिस्से पा। अन्तिम वेला कोई ना जाणे, अन्तिम मिलणा किसे थां। जगे जोत इक्क भगवाने, चार वरन पकड़े बांह। सोहँ शब्द देवे दाने, सतिजुग लगाया तेरे नां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँच नीच नीच ऊँच, चार वरन एका सरन माणे ठंडी छाँ। चार वरन इक्क द्वार। चार वरन इक्क घर बाहर। चार वरन इक्क निरँकार। चार वरन जोत अधार। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क देवे चरन प्यार। चार वरन इक्को जाती। इक्को पिता इक्को माती। इक्को करे साचा हित्ता, नित नवित्ता, देवे सच्ची दाती। मानस जन्म गुरसिक्खां जित्ता, प्रभ मिल्या साचा मिता, ऊँच नीच नीच ऊँच अन्तिम कलि प्रभ साचे इक्को कीता, मिटाए कलिजुग अन्धेरी राती। राउ रंक शाह सुल्तान एका सच्चे कीता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे शब्द दाती। हरि सच्चा कर्म कमांयदा। सच्चा धर्म जगत चलांयदा। पंचम् जेठ नींह रखांयदा। अमृत साचा सीर आप बणांयदा। गुरमुखां देवे धीर मुख चुआंयदा। कलिजुग वेला अन्त अख़ीर, दे मती हरि समझांयदा। सृष्ट सबाई अन्तिम होई भीड़, ना कोई किसे छुडांयदा। प्रभ शब्द सरूपी रिहा पीड़, हरि भाण्डा भन्न वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पांयदा। पहली देवे अमृत धार। दूजा दस्से चरन प्यार। तीजा वसे आत्म घर नर निरँकार। चौथे चोरां यारां ठग्गां, करदा रहे ख्वार। पंचां साचीआं देवे मतां, रक्खे पतां, जता सता धीरज धरे विच संसार। छेवें आया पाड़ गगन दीआं छत्तां, आपे जाणे मितां गतां, सर्ब रिहा कर्म विचार। सोहँ शब्द नाम जपाए दीपां सत्तां, एका इक्क रखाए साचा तत्ता, आप बन्ने साची धार। अठवां अड्ड सड्ड तीर्थ वेख, झूठा दिसे कलिजुग भेख, लग्गी रहे ना किते मेख, कलिजुग दित्ती जड़ उखाड़। नौवां निरगुण रूप पछाण। धरे जोत बली बलवान। जोत सरूपी दिस ना आए, पवण सरूपी देह मसाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दहि दिश आप विचारे, गुरमुखां लभ्भे लाल प्यारे, खिच्च ल्याए चरन दुआरे। गुर गोबिन्द वाली हिन्द, प्रगट होया विच संसारे। जोत सरूपी जामा पाया, आपणा भेव आप छुपाया, गुरमुखां लए आप जगाया, देवे अन्त सच्ची धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, वसे दस्म दुआरे। दस्म दुआर वेख जोती। गुरमुख पछाणे विच्चों कलिजुग, अन्तिम बेमुख जीवां आत्म खोटी। अन्तिम वेला कलिजुग आया, प्रभ आप कटाए बोटी बोटी। बेमुख दए खपाया, किसे हथ्थ ना आवे दाणा अन्न रोटी। साचा हरि, गुरमुखां देण आया वर, साचा शब्द तन पहनाए, साध संत अठसठ तीर्थ लभ्भदे उत्ते, कोटन बैठे मूंड मुंडाए, तन खाक लगाए, कोई बन्नी फिरन लंगोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा राह वखाए, पूरा हरि, रखो उहदी ओटी। एका रक्खो ओट। हरि शब्द

लाए चोट। घर कदे ना आवे तोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मुख चुआए, गुरमुखां देवे भर पोट। अमृत तेरी धार निराली। कलिजुग चलाई हिन्द दे वाली। गुरमुखां बणत बणाई जगाई जोत अकाली। महिंमा अगणत गणी ना जाए, चारों तरफ रहे भाली। साध संत भेव ना आए, जो मंगदे झूठी माया विच दलाली। गुरमुख विरला साचा कन्त घर साचे पाए, दर आए दोए जोड़ बणे सवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे गुरमुखां करे रखवाली। इक्क इकल्ला हरि वसदा। दूजा राह सतिजुग साचा दस्सदा। तीजा गुरसिख कोलों कदे ना नस्सदा। चौथे हिरदे अन्दर आपे वसदा। पंजवें तीर शब्द साचा कसदा। छेवें छेवें घर वेख, गुरमुख तेरी काया दे विच वसदा। सत्तवें देवे सति उपदेश नर नरेश, गुर संगत दुआरे आए हासे हस्सदा। अठवां उठ उठ नेत्र लए पेख, चारों तरफ हरि जी लए वेख, गुरमुख साचा केहड़े पासे वसदा। नावें नौ निध गुर दर परवाना। आउणा बण हो निधान निमाणा। प्रभ अबिनाशी किरपा करे गुरमुखां झोली भराना। दसवें दिवस रात रात दिवस हरि विचारे। दस मास गर्भ वास, उलटा स्वास नर नरायण रसन पुकारे। होया रहे दास, ना मिले सुख गर्भवास, एका अमृत बुझाए सच्ची रास। करे जीव पुकारे। बाहर आया रसना लाए मदिरा मास, मानस जन्म गंवाया। कलिजुग झूठे कीना वास, पूरा हरि भुलाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां
१०८
०४
करे बन्द खलास, अमृत साचा देवे मुख चवाया। सिर रक्खे दे कर हाथ, चरन लिआंयदा। सिर रक्खे दे कर हाथ, मातलोक दया कमांयदा। सिर रक्खे दे कर हाथ, साचा शब्द जाम हरि एका आप पिलांयदा। सिर रक्खे दे कर हाथ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम आप करांयदा। सिर रक्खे दे कर हाथ, जिस कराया साचा मेलड़ा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, बणे सज्जण सुहेलड़ा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, आप सुहाए अन्तिम वेलड़ा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, गुरमुखां धाम बहाए जिथ्थे वसे इक्क इकेलड़ा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, आत्म चानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, देवे शब्द सच्चा ज्ञानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, करे प्रकाश कोटन भानना। सिर रक्खे दे कर हत्थ, गुरमुख साचा विच मात हरि आप पछानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, लाए नाम सच्चा बानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, गुणवन्त गुणी निधानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, झोली पाए सोहँ साची वथ शब्द महानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, कलिजुग दुखड़े जायण लथ्थ, आप चढ़ाए शब्द बबानणा। सिर रक्खे दे कर हत्थ, सोहँ शब्द चलाए सच्ची गत्थ, गुरमुख चढ़ाए सच्चे रथ, आप चलाए वड बली बलवानणा। बेमुखां पाए नत्थ, अन्तिम कलिजुग नठ्ठ, सृष्ट सबाई होई भठ्ठ, मारे शब्द बाण श्री हरि भगवानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां

साचे जानणा। सिर रक्खे दे कर हथ्थ, बणत बणांयदा। सिर रक्खे दे कर हथ्थ, मानस जन्म लेखे लांयदा। सिर रक्खे दे कर हथ्थ, भरम भुलेखे सर्ब गवांयदा। सिर रक्खे दे कर हथ्थ, गुरमुख अन्तिम चढ़या रथ, साचे राहे आपे पांयदा। सिर रक्खे दे कर हथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सतिजुग साचे तेरे नाल रखांयदा। सतिजुग साचे उठ ललकार। कलिजुग हो जाए घर तेरे विच्चों बाहर। गुरमुखां देवे साचा वर, सोहँ शब्द अपार। सतिजुग साचा उठे, प्रभ गुरमुख करे इक्ठे मुठ्ठ, पावे साची सार। बेमुख गए दर तों रुठ्ठ, प्रभ आप टिकाए धर्म राए घर पुठ्ठ, ना होए कोई सहार। सतिजुग साचे प्रभ अबिनाशी गया तुठ, जन भगत उपजाए कलिजुग अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क खुल्हाए सच्चा सच दरबार। सच दरबारा आप खुल्हांयदा। नीच ऊँच एका घर बहांयदा। एका रक्खे पल्ला भारा, सदा सदा सदा रखांयदा। दूजा चलाए शब्द अपारा, गोरख टिल्ला आप हिलांयदा। चौथे मारे बूरा कक्ढा बिल्ला, हरि आपणी खेल उपांयदा। पंजवें वेखे कच्चा पिल्ला, फड़ फड़ आपणी हथ्थीं ढाहिंदा। छेवें कर पुण छाण, गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों विच्चों आपे बाहर लिआंयदा। गुरमुख साचे वेख सतिगुर फड़ाए लड़, बेमुख जूठे झूठे मरन लड़ लड़ ना कोई छुडांयदा। अठवें अठ्ठ दस अठारां, गया वेला चार यारां, ना रहीआं कलि बहारां, सतिजुग तेरी खिड़ी सच्ची गुलजारा, प्रभ साचे मात लगाईआ। नावें निव निव झातीआं मारे। ब्रह्मा बैठा उत्ते चुबारे। निहकलंक कलि जामा धारे। मेरी पावे अन्तिम सारे। इक्क उपजावे आपणा सच्चा लाल दुलारे। कलिजुग अन्तिम अन्त खिच्च बहाए चरन दुआरे। सच्चा देवे माण ताण, मैनूं कढ्ढ बाहरे। चुक्के कलिजुग अन्तिम काण प्रभ, ब्रह्मा हरि जी रिहा पछाणे। चारे मुख जिस चारे वेद विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां आप उलटाए, निहकलंकी जामा पाए। गुरमुख साचे मात पुकारदे। बेड़ा अन्तिम पार उतारदे। प्रगट जोत देवे दरस कल्गीधर, अठ्ठे पहर दिवस रहण गुरमुख चितारदे। कलिजुग डुबदा जाए चलदे वहिण, गुरमुखां खुल्हे रहण नैण, विछड़ जाण भाई भैण, कर किरपा शब्द अधार दे। गुरमुख साचे संत जन भाणा साचा सैहन्दे, रसना कहन्दे प्रगट हो गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर गोपाल दर भगत उधार दे। जोती जोत सरूप हरि, सुणीए एका बैठा साचे घर, निहकलंक विच मात जोत अकार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द सच्ची दात, धुरदरगाही इक्क सुगात, जन भगतां विच संसार दे। गुरमुख साचा संत पुकारया। कलिजुग वेला अन्त नेड़े आ रिहा। लिख्या लेख सतिगुर, गुरमुख तेरे हिरदे विच समा रिहा। जपया नाम इक्को शब्द, जोती दीपक एका आप जगा रिहा। मिल्या मेल लिख्या धुर, साचा लेख आप लिखा रिहा। प्रभ अबिनाशी चरन प्रीती जाए जुड़, मानस जन्म लेखे ला रिहा। सच घर

१०६
०४

सच्चा दरबार, निहकलंक नर अवतार कोई खाली ना जाए मुड़, प्रभ आत्म भण्डारे सर्ब भरा रिहा। एका चढ़या फिरदा शब्द घोड़ पंचम् जेठ वागां मोड़, विच मात आ रिहा। आप मिटाए वड वड सेठ, ग़रीब निमाणयां गले लगा रिहा। कलिजुग जीव कौड़े रेठ, प्रभ पैरां नाल भन्ना रिहा। गुर रंगे आपणी काया फड़, लड़ आपणे नाल बन्ना रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व तेरा तंग आपणी हथ्थीं कसा रिहा। चिट्टे अस्व कस्सया तंग। गुरमुखां कर पुकार, हरि द्वार मंगी सच्ची मग। प्रभ आपणा कर तन शृंगार, हथ्थ फड़ शब्द कटार, उत्ते होण लग्गा अस्वार, चार कुन्ट लगाए जंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी उलटी वहाए गंगा। कसे तंग हरि साचे घोड़ा। पैंरी पौण ना देवे किसे जोड़ा। पंचम् जेठ धुरदरगाही साचा माही, सिर लगाउण वाला तोड़ा। गुर गोबिन्द भाग लगाए विच मात हिन्द, सचखण्ड निवासी पंचम् जेठ आए दौड़ा। पहला कर्म हरि आप कमाए, अस्व हो अस्वार दिखाए, शब्द हथ्थ कटार उठाए, तिक्खीआं धारां दो रखाए, सच्चे घोड़े वाग उठाए, अगले सुंम उप्पर उठाए, कलिजुग तेरे अन्तिम लेख लिखाए, मारे सिर विच पौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर गुरमुखां आए बौहड़ा। कच्चा तन्द शब्द डोरी। बन्ने बन्द बन्द, वस करे सच जोरी। दिखाए निजानंद, नाल जाए हौली हौली तोरी। जो जन मदिरा मास लायण बत्ती दन्द, प्रभ पाए नर्क घोरी। गुरमुख आत्म होए ना अन्ध, ढह जाए भरमां कंध, ना पायण पंज कोल शोरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनो, आपणे हथ्थ रखाए डोरी। देवे हार तन शृंगार। किरपा कर अपर अपार। एका फल एहदा कोई ना पाए मुल्ल, ना तुल सके किसे तुल, गुरमुखां दर सच रहे प्यार। गुरमुख किया सच्चा इक्क प्यार। इक्का हार किया त्यार। गुर पूरे गल विच दित्ता डार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। आपणे गलों लए उतार। प्रभ अबिनाशी देवे तार। गुरसिक्खां तन पहनाए, कराए सति शृंगार। कलिजुग लग्गे ना तत्ती वा, करे काया ठंडी ठार। वेले अन्तिम फड़े बांह, ना डोबे अद्धविचकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उच्चा सुच्चा इक्को इक्क दरबार। गुरमुख तेरी प्यारी याद सोहणा हार। सच्चे दरबार करे निरँकार। जन भगतां पाई सार, हरि निरँकार। पावे सार विच संसार। देवे माण आदि जुगादि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क सोहणा सच्चा हार, गुरमुख हिरदा धोणा गल सच्चे विच देवे डार। होवे तन सुक्का हरया। जो चल आए साचे टिलया। प्रभ देवे साचा भर सच भण्डारा, इक्को वरतारा हरि निरँकारा गुरमुखां दिसे अग्गे खड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे साचा दान हरि मेहरवान अमृत भण्डार साचा भरया । साचे फूल गुरसिख ना जाणा भूल । चुकाउणा पिछला मूल। मिलाउणा

कन्त कन्तूहल। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल। प्रभ अबिनाशी आप बहाए। गुरसिख उठाए फूलां थल्ले सेज विछाए। करोड़ तेतीस गण गंधर्ब, उत्तों रिहा आप वरखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आप बहाए जिस दी ना कोई पावा ना कोई चूल। तन श्रृंगार भरम गंवासी, जिस तन लग्गा सच्चा हार। दुखड़ा नासे, प्रभ देवे शब्द अधार। किरपा कर घट घट वासी, दर आए जो नर नार गुर चरन करे प्यार। मानस जन्म होए रहिरासे, मानस जन्म ना पावे दूजी वार। लक्ख चुरासी देवे गेड़ निवार। खिच्च लयावे सच्चे सच दरबार। खुल्हे रक्खे सद किवाड़। गुरमुख साचे संत, प्रभ अन्दर देवे वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे धाम आप बहाए, छत्त गगन दी पाड़। गुरसिख तेरा धाम न्यारा। जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। जोत सरूपी इक्क अकारा। शब्द सरूपी सच्ची धुन्कारा। बिन रंग रूपी वडा शाह भूपी, अठ्ठे पहर एका जोत जगे अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हथ्थ आपणे रक्खे डोर, जिध्धर चाहे लए तोर, कलिजुग होया अन्धघोर, ना दिसे कोई किनारा। वड भण्डार हरि निरँकार देवणहार। बेमुखां पाए माया बेअन्त, कलिजुग अन्तिम रहे झक्ख मार। जोत सरूपी हरि आपे जाणे आपणी सार। जगत धार हरि निराली। जगदी रहे इक्को जोत, नर नरायण इक्क अकाली। कलिजुग जीव चारों कुन्ट, भाण्डे दिसण काया ख़ाली। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ साचा फल

१११

०४

लगाए आत्म सच्ची डाली, साचा माण आप दवाए, गुरमुख सच्चा आप उठाए देवे मस्तक सच्ची लाली। दर घर साचे माण दवाए, शब्द बबाण आप बिठाए ना मंगे कोई दलाली। ना कोई मंगे विच दलाल। गुरमुख साचे आपे लभ्भे अनमुल्ले लाल। प्रगट होए विच मात झब्बे, शब्द घोड़े उत्ते मार छाल। गुर संगत विच गुर साचा बोले, गुरमुखां हरि आत्म जोती देवे बाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा कटण आया अन्त जंज़ाल। कलिजुग तेरा कट जंज़ाल। सतिजुग साचा होए हट्ट, गुरमुख रक्खे विच साचे लाल। तन पहनाए सोहँ साचा पट्ट, उत्ते देवे शब्द दोषाल। जगे जोत काया मट, वसे हरि जी घट घट, आप निवारे अमृत सुहाए साचा ताल। मस्तक जोती लट लट, मेटी जाए काया फट्ट, ढाहुन्दा जाए आत्म हट्ट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्ची जोत जगाए, देवे नाम सच्चा धन माल। जगे जोत अपर अपारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। निहकलंक नर अवतार, वज्जे डंक शब्द अपारी। राउ रंक आयण चरन द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां घर दए बहारी। आए दर राजा राणा। बण जाए ग़रीब निमाणा। देवे माण गुण निधाना। रक्खे आण विच जहान, देवे चरन ध्याना। सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा। बिरध बाल हरि जवाना। सृष्ट सबाई करे पछाण, तीर चलाए सच्चा बाणा। सच्चा राणा हरि सुल्तान। दूसर ना कोई होर जहान। निहकलंक वड

बली बलवान। एका अंक राउ रंक, चरन डिग्गण आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए, वडे वड राज राजान। हथ्थ ना आए राजे राणे। कलिजुग लभ्भण बेमुहाने। गुरमुख साचे गुर दर सज्जण, जो होए चरन निमाणे। आप कराए साचा मजन, चरन धूढ़ इशनाने। साचे ताल दो हथ्थीं वज्जण, गुरसिख सिख गुर एका रंग रंगाने। बेमुख दर तों भज्जण, पर्दे आपणे कज्जण होए रहे बेईमाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ शब्द नाम निधाने। नाम दात झोली भराईआ। गुरमुखां मिले सच सुगात, ल्याया धुरदरगाहीआ। ना कोई पुच्छे जात पात, चरन प्रीती इक्क रखाईआ। आपे पुच्छे सभ दी वात, जिस गुरमुख तेरी बणत बणाईआ। इक बन्न्हाए चरन नात, तोड़ विछोड़ ना कोए कराईआ। सतिजुग चलाए साची गाथ, सोहँ शब्द चार वरन जपाईआ। साचे लेख लिखावे विच मात, प्रभ अबिनाशी त्रैलोकी नाथ, गुरमुखां दे वड्डयाईआ। आप निभाए सगला साथ, सोहँ शब्द चढ़ाए साचे राथ, दरगहि साची दए बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को नूर सच्चो सच हरि अलाहीआ। इक्को नूर हरि निरँकार है। इक्को नूर गहर गम्भीर है। इक्को नूर तेरा कलिजुग अन्त अख़ीर है। प्रगट होया सर्बकला भरपूर, बेमुखां करे चूर है। कलिजुग जीवां दिसे दूर, गुरमुखां हाज़र हज़ूर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्ची जोती इक्को सच्चा नूर है। सज्जण संत प्यारे खुशी मनाउँदे। बण सच दुलारे विच संसारे, प्रभ अबिनाशी रसन ध्याउँदे। जगे जोत काया महल मुनारे, लाहे तन अफारे रोग सोग सर्ब मिटाउँदे। जो जन सच्चा नाम धन मंगण आए दुआरे, वर घर सच्चा हरि जी पाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन रसना चांईं चांईं गाउँदे। रसना गायण हरि नरायण। दुक्खां डेरा आपणा ढाहिण। होए अन्त नबेड़ा चुकाए लहिण देण। चुक्के जगत झेड़ा, दरस पेखे साचे नैण। कलिजुग अन्तिम आउण वाला गेड़ा, घर घर पैणे वैण। झूठा ढहिण वाला नगर खेड़ा, ना सुरत संभाले कोई भाई भैण। कलिजुग जीवां करे नबेड़ा, मौत लाड़ी दर खलोती वेखे डैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन तेरा भाणा सिर आपणे ते सहिण। लाड़ी मौत नैण उग्घाड़े। चारों तरफ उठ उठ वेखे परखे चंगे माढ़े। जो जन रहे भरम भुलेखे, करी जाए कलिजुग अन्तिम दो फाड़े। आप मिटाए अन्तिम वेखे इक्को वार, कटे कलिजुग तेरी फ़सल हाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग तेरे कच्चे फल शब्द डण्डे नाल झाड़े। शब्द डण्डा हरि रिहा हुलार। पंचम् जेठ देवे मार। कलिजुग जीव डिग्गण मूंह दे भार। उप्पर पाए हरि जी भार। खण्डा वज्जे सोहँ सच्ची धार। बेमुख थल्ले रो रो पुकारन, ना सुणे कोई पुकार। कलिजुग जीव होए हँकारन, डुब्बे मञ्झधार। सतिजुग पाए साची सारन, मात जन्म दवाया हरि निरँकार। सतिजुग

साचा वड बली बलकारन, कलिजुग उत्ते हो बैठा अस्वार। सतिजुग साचा धक्के मारे, कलिजुग हो जा लोकमात विच्चों बाहर। जूठे झूठे तेरे कच्चे फल प्रभ अबिनाशी हथ्थीं झाड़े, रहण ना देवे डाल। धर्म राए दे फड़ बाहों घर विच बहावे, ना लए कोई सुरत संभाल। इक्क उठाए अगम्मी धाड़े, जोत सरूपी तिन्नां लोकां मारे इक्को छाल। चारों कुन्ट होए काड़ काड़े, ना झल्ले कोई झाल। सृष्ट सबाई प्रभ आप चबाए आपणी दाढ़े, गुरमुखां रिहा आपणी हथ्थीं पाल। सृष्ट चबाए, बेमुख खपाए, गुरमुख बचाए आपणी गोद उठाए, हिरदा देवे सोध साची जोत जगाए, शब्द लिखाए अगाध बोध, कुरान अञ्जील खाणी बाणी वेद पुरानी कितों हथ्थ ना आए। प्रभ अबिनाशी वड जोधन जोधा तीर कमान ना कोई हथ्थ रखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी उलटी लठ गिढ़ाए।

✻ १३ चेत २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी रेशम सिँघ दे गृह ✻

सतिगुर पूरा सर्ब सुखदाईआ। सतिगुर पूरा, गुरमुखां देवे विच मात वड्डयाईआ। सतिगुर पूरा मिटाए आत्म सगल वसूरा, साची देवे जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा एका शब्द देवे अनहद साची तूरा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जोत सरूपी जामा धारे वड दाता वड सूरा, ना कोई भेव रखाईआ। सतिगुर पूरा जोत सरूपी इक्को नूरा, लोकमात जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक एका शब्द वजाए डंक, फड़ फड़ उठाए राउ रंक, सृष्ट सबाई दए हिलाईआ। राउ रंक हरि उठाउणा। शब्द तीर इक्क चलाउणा। चार कुन्ट होए वहीर, ना धीर किसे धराउणा। आपे लाहे कलिजुग तेरे अन्तिम चीर, ना पर्दा उत्ते किसे पावणा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां साचे संत जनां, अन्तिम कलि आपे होए जामना। कलिजुग तेरा झूठ विहारा। दर साचे गया रूठ, ना मिल्या हरि निरँकारा। एका फड़या ठूठा झूठ, मंगदा फिरे दर दर दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि निहकलंक नरायण नर हरि लए मात अवतारा। निहकलंक कलि जामा धार। लक्ख चुरासी पावे सार। गुरमुखां करे बन्द ख़लासी, देवे शब्द अपर अपार। मानस जन्म कराए रहिरासी, लेखा लिखे विच संसार। आत्म लाहे जगत उदासी, प्याए अमृत साची धार। प्रगट होए घनकपुर वासी, निहकलंक नरायण नर अवतार। सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी, तन काया लाहे आत्म अफार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर हरि सच्चा अवतार। हरि सच्चा अवतार चरन बलहारया। मात आया जामा धार, ना किसे विचारया। जन भगतां पाए सार, आए चल द्वारया। आप लुहाए कलिजुग झूठा सिर तों भार, सोहँ शब्द तन शृंगार पहना

रिहा। वेला वक्त मुक्क जाए चार यार, पंचम् पंचाइन हरि बणावे, सृष्ट सबाई होए ख्वार दर दर रोवे नर नार, बिरधां बालां ना कोई धीर धरांयदा। इक्क उठाए हरि शब्द कटार, मारी जाए वारो वार, बेमुखां सुट्टी जाए मूंह दे भार, गुरमुखां सोहँ शब्द डण्डे नाल रिहा ताड़, साचे लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त गुरमुख विरले साचे संत, फड़ बाहों राहे पांयदा। साचे राह जाणा लग्ग, आत्म जोती जाए जग। दुरमति मैल जाए धोती, ना तुट्टे काया तग। आप उठाए गुरमुख तेरी आत्म सोती, काया मिटाए तृष्ना अग्ग। एका देवे नूर जोती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि बेमुख पछाड़े आपे परखे चंगे माढ़े, अग्न जोत हरि साचा साड़े। लाड़ी मौत लक्ख चुरासी मंगे लाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि बेमुखां शब्द सरूपी चक्की दल, धर्म राए घर जाईं वाड़े। कलिजुग अन्तिम घर घर वेख हासा, निहकलंक कलि जोत जगाई, चारों कुन्ट तेरा वेखे आप तमाशा। जीव जन्त किसे दिस ना आई, साची जोत रिहा जगाए मात पताल अकाश, वरन गोत ना कोई रखाए, गुरमुख हिरदे रक्खे सद वासा। दुरमति मैल रिहा धो, जन जपे स्वास स्वासा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संत जनां मानस जन्म कराए रासा । मानस
११४ जन्म होए रास। सोहँ शब्द सच्चा जीव, काया भाण्डा कच्चा, जपणा स्वास स्वास। अन्तिम कलिजुग रहे ना कोई बचा, ११४
०४ धर्म राए घर कलिजुग झूठा पापी कच्चा ना पावे सार। लोकमात चारों कुन्ट अग्न जोती भांबड़ मच्चा, रसना करे बचन ०४
सच्चा निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात आए जामा धार। ल्या अवतार पुरख अबिनाशी, सृष्ट सबाई आया कर्म विचार। जोत सरूपी भेख ना जाणे कोई जीव गंवार। करे विचार पावे सार नर नार। प्रगट होए घनकपुर, वस्सया डूंघी भवर डुब्बा संसार। मानस जन्म ना जाए सवर, घर घर रोंदे धाहां मार। ना कोई अन्तिम लाए पार। बेड़ा डुब्बे विच मँझधार। कलिजुग पापी वड प्रतापी फलया फुलया विच संसार। कलिजुग जीवां अमृत आत्म डुल्लया, प्रभ अबिनाशी एका घर सभ नूं भुल्लया, दर दर होए भिखार। इक्क भण्डारा निहकलंक सच्चा खुल्ह्या, फल लगाए साचे डाल। कलिजुग बूटा जेहड़ा फुलया, आपे लए सुरत संभाल। ना लावे कोई मुल्लया, अमीर वज़ीर कंगाल। एका रंग साचे ढलया, ना कोई जाणे ऊँच नीच वड सरदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं पावे सार। पावे सार सुरत संभालदा। देवे सच्चा नाम अधार, मानस जन्म संवारदा। लक्ख चुरासी बेड़ा कर जाए पार, जगत बन्न्हे साची धार, डुब्बदा जाए सर्ब संसार, गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों तारदा। करे सच्चा इक्क प्यार, जोत सरूपी हरि निरँकार, ऊँच नीच भेव निवारदा। राउ रंक इक्को इक्क हरि सच्चा करतार, साचे लेख वखाणदा। जोती जोत सरूप हरि, देंदा

रहे सदा वर, वसदा रहे साचा घर, जिथ्थे चुक्के जम का डर, अमृत नुहावे साचे सर, गुर चरन लाग गुरमुख साचे जाण तर, कलिजुग बेड़ा पार करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा शब्द ज्ञान चरन ध्यान धूढ़ इशनान जोत महान दीपक आप जगांयदा। जगाए जोत हरि निरँकारा। गुरमुख साचे संत जन संग करे सच्चा इक्क प्यारा। देवे सच्चा नाम धन कराए वणज वपारा। भाण्डा भरम हरि भन्न, रक्खे वस्त तन, इक्क हरि थारा। आप चढ़ाए साचा चन्न, जगाए जोत अपर अपारा। सोहँ शब्द सुणाए गुरमुखां कन्न, आप खुल्हाए दस्म दुआरा। गुरमुख विरले कलिजुग अन्तिम इक्को हरि दित्ता वर, बेमुख फिरदे दर दर गंवारा। कलिजुग अन्तिम प्रभ देवे डन्न, सुट्टे डूंघी गारा। गुरमुखां बेड़ा हरि जी बन्न, फड़ बाहों लाए पारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार सच्ची सरकारा। गुरमुख विरला पावे सार हरि करतार। दो जहानां करे सच विहार। भरम भुलेखे दए निवार। साचे लेखे आप लिखाए, गुरमुखां विच संसार। सोहँ शब्द पहनाए तन शृंगार। हउमे रोग हरि दए आप निवार। चिन्ता सोग सर्ब गंवाए, जो जन आए सच दरबार। आत्म जोती आप जगाए, देवे शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप बंधाए एका धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

११५ ०४ पंचम् जेठ प्रगट होणा माझे देस, करना वेस धारे भेख, कल्गीधर निहकलंक नर अवतार। माझे देस वज्जणी वधाई। पंचम् जेठ हरि जोत प्रगटाई। सृष्ट सबाई प्रभ साचा दए हिलाई। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, बेमुख बहिण केहड़ी थांई। सृष्ट सबाई नेत्र पेखे, ना पुच्छे किसे कोलों कोई सलाही। आप मुकाए वड वड औलीए पीर गौंस शेखे, जो जन आत्म हँकार रखाई। मदिरा मासी लाए लेखे, कोई संसार रहण ना पाई। कलिजुग अन्तिम सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखे, निहकलंक सच्ची तेरी इक्क वड्याई। आप मिटाए कलिजुग तेरी काली रेखे, सोहँ शब्द तीर तिक्खा हरि मात संग लयाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां साची देवे धीर धराई। देवे धीर धर्म ज्ञान। गुरमुखां वेख पूर्ब कर्म आप संवारे, मानस जन्म करे मात पछाण। कढ्ढे आत्म झूठा भरम, सुक्का करे हरया हरि काया चर्म, देवे नाम शब्द बबाण। इक्को करे अन्तिम वरन, चार कुन्ट दिसाए इक्को सच ब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क द्वार, कलिजुग अन्तिम सर्ब होण ख्वार, सतिजुग साचा मात आए, निहकलंक कलि जोत जगाए, आपे बणाए सच्ची सरकार। सच्चा शब्द डंक वजाए, चार कुन्ट हरि आप सुणाए आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जूठे झूठे माया लूठे, अन्तिम अन्त डोबे डूंघर मँझधार। कलिजुग झूठे तणया जाल, बेमुखां आत्म होई कंगाल, ना देवे कोई साचा लेखा, हरि हथ्थ ना आया अनमुल्लड़ा लाल। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जन विच मात रक्खे अन्तिम आपणी सरन बहाल।

लाए सरन सर्ब गुणवन्ता। चुकाए मरन डरन हरि आदिन अन्ता, चार वरन लाग चरन कराए मेल मिलावा साचे कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत जगत निराली, इक्क अकाली आवे जावे आदिन अन्ता। आदि अन्त हरि आणा जाणा। ना कोई भेव पाए राजा राणा। कलिजुग गूढ़ी नींद सवाए, साचा हरि ना किसे पछाणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पहने आपणा बाणा। धरे बाणा भेख धारी। राजा राणा क्या कोई करे विचारी। सुघड़ स्याणा सभ दी आत्म देंदा जाए बहारी। अन्तिम कलि होया अन्धा काणा बेमुहाणा, ना कोई पावे सारी। गुरमुख विरला हरि आप बचाणा। देवे नाम शब्द बबाना। आप उडाए इक्क उडाना। गुणवन्त हरि गुण निधाना। जोती जोती सरूप हरि, सच्चा देवे नाम दाना। नाम दान हरि भण्डार है। प्याए सच्चा जाम, आत्म तृखा दए निवार है। पूर कराए काम, जोत सरूपी हरि दातार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क आदि अन्त, जुगा जुगन्त पूरन भगवन्त, सच्चा इक्क अकार है। इक्क अकार हरि निरंकारया। इक्क द्वार हरि सिरजणहारया। इक्क भण्डारा सृष्ट सबाई आप वरता रिहा। इक्क घर बाहरा चार वरन एका धाम बहा रिहा। इक्क संसारा वरन गोत भेव मिटा रिहा। इक्को इक्क हरि सिरजणहार पावे सारा, जो जन आए चरन दुआरा, साचे रंग रंगा रिहा। इक्को इक्क पुरख अपारा, देवे नाम शब्द कर कर प्यारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हउमे चिन्ता रोग सोग जगत विजोग विच मात आप गंवा रिहा। चिन्ता रोग वडा दुःख। प्रभ अबिनाशी आत्म कढ्ढे गुरमुखां भुक्ख। एका नाम दात शब्द, आत्म झोली पाए, उज्जल कराए विच मात मुख। जोती जोत सरूप हरि, आपणी करनी रिहा कर, गुरमुखां देवे साचा हरि, प्रगट जोत नर हरि, साचे लेख लिखांयदा। लेखा लिखे लिखणहार। लक्ख चुरासी पावे सार। करे बन्द ख़लासी, जो जन मंगण आए सच द्वार। प्रगट होए घनकपुर वासी, साची जोत मात प्रकाशी, जगे जोत अगम्म अपार। जो जन दर घर साचे आए करन हासी, कलिजुग अन्तिम होए गंवार। गुरमुख साचे संत प्रभ होए रहे दासी, देवे वड्याई विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत हरि अमुल्ल अतुल्ल अडुल्ल एका वडा वड भण्डार। वडा वड भण्डार हरि निरँकार दा। इक्को सच्चा सच द्वार, हरि परवरदिगार दा। इक्को जोत अकार, तिन्नां लोकां पावे सार, चौदां लोक हरि पसर पसार, ना कोई सके रोक, ना कोई सके टोक, आउणा जाणा मात पताल अकाश, खेल अपर अपार दा। साचा शब्द सुणाए इक्क सलोक, अन्तिम देवे सच्ची मोख, मिटाए कलिजुग अग्न तृष्ना भुक्ख, जोत सरूपी दरस दिखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरगुण निरगुण रूप एका जोती आपे आप जाणदा। निरगुण रूप निर निरवैर है। सरगुण सरूप सतिगुर पूरा विच मात हाज़र हज़ूर है। निरगुण रूप साचा नूर,

इक्को शब्द तूर है। सरगुण रूप जगत अनूप, सतिगुर पूरा सर्बकला भरपूर है। दोवें खेल करे हरि वडा शाहो भूप एका एक सति सरूप है। जगत बन्ने साची धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाई, सृष्ट सबाई आप भुलाई, गूढ़ी नींद सवाई। गुरमुख सोए लए उठाई। आत्म जोती दए जगाई। काया सोती लए उठाई। बन्द कवाड़ पंजे चोर बन्द कराए, अग्गे करे शब्द वाड़ होए आप सहाई। जगे जोत बहत्तर नाड़। अट्ठे पहर एका रंग रंगाई, घर साचे विच देवे वाड़। इक्का ठंडी छाँ, ना तत्ती लग्गे हाढ़। साचे धाम बहाई, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पार उतारे विच संसारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे साचे राहे पाए। साचा शब्द जगत संदेश। कलिजुग अन्तिम प्रगट होणा कल्गीधर हरि दशमेश। बेमुखां वेले अन्तिम रोणा, ना जानण हरि का भेस। गूढ़ी नींद ना किसे सौणा, छड्डणा पए झूठा देस। गुरमुख विरले साचा बीज आत्म बोणा, खांदा रहे हमेश। बेमुखां हरि वांग बक्करे कोहणा, प्रगट होए नर नरेश। कलिजुग दाग ना किसे धोणा, घर घर बैठे दर दरवेश। एका हल प्रभ साचे जोणा, धरत मात तेरा इक्क बणाउणा खेत। कलिजुग सतिजुग दोवें फड़ के अग्गे जोणा, सोहँ शब्द मारे सिर विच बैंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत धर बेमुख दए खपाए दया कमाए जिउँ कान्हा मारे कंसा दैंत। मारे मार करे

११७ ०४ ख्वार। शब्द डण्डा प्रभ रिहा उलार। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार। सृष्ट सबाई आप कराउणी दो फाड़। गुरमुख साचे ११७ ०४

आप तराए चार तरफ कराए शब्द वाड़। बेमुख जीव फिरन हलकाए, नीर हथ्थ ना आया महीने हाढ़। गुरमुखां देवे ठंडी छाँए, जिउँ बालक माए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचे लाड़। गुरमुख साचा लाड़ घोड़ चढ़ाया। चरन प्रीती लई जोड़, तोड़ निभाया। धुरदरगाही आया दौड़, गुरमुखां रिहा बौहड़, बेमुखां आत्म होई कौड़। कलिजुग वेला अन्तिम हरि साचा मनो भुलाया। पहला मारे सिर विच पौड़, प्रगट होए ब्रह्मण गौड़, कलिजुग जीव भुले बैठे रीठे कौड़, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार, बन्ने साची धार विच संसार, कर विचार सर्ब निरँकार, नर नार लक्ख चुरासी विच समाया। लक्ख चुरासी हरि जी वसे, अन्तिम कलिजुग जोत धर, गुरमुखां राह साचा दस्से, लाड़ी मौत कोल खड़, बेमुखां वल्ल वेख वेख खिड़ खिड़ हस्से, जोती जोत सरूप हरि, शब्द तीर अन्त अख़ीर एका कसे। शब्द तीर इक्क चलावणा। निहकलंक बली बलवान, कल्गीधर हरि जगदीश आप अख्वावणा। वाली हिन्द गुर गोबिन्द बण के आए साचा कान्हा सृष्ट सबाई मिटाए चिन्द, देवे नाम शब्द निधाना, गुरमुख बणाए साची बिन्द, उडाए विच शब्द बबाणा। जो जन करन दर निन्द, अन्तिम अन्त प्रभ साचे ख़ाक मिलाणा। दूर दुराडा रिहा तरस

सुरपति राजा इन्द, प्रभ अबिनाशी मुख छुपाणा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम किरपा कर, प्रगट होणा निहकलंक अवतार नर, इक्क खुल्हाए साचा दर, अमृत आत्म सति सरोवर, आप वखाए साचा सर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां विच मात लैणा वर, आपणे चरन लगाणा। हरि हरि जगत रघुराईआ। हरि हरि हरि चार कुन्ट बन्द होए दर, भुली सर्ब लोकाईआ। हरि हरि हरि ना वसे किसे घर, ना दिस किसे आईआ। हरि हरि हरि मात जोत आया धर, इक्क खुल्हाया साचा दर, आप चुकाए जम का डर, गुरमुखां दए वड्डयाईआ। चरन लाग जायण तर, विच मात नारी नर, रक्खे पत पुरख बिधाता बन्न्हे नाता, जोती जोत सरूप हरि, सभ थाँईं होए सहाईआ। होए सहाई आप रखवाल, गुरमुखां मन वधाईआ। प्रगट होए दीन दयाल, रसना गायण चांईं चांईंआ। आत्म देवे अनमुल्लड़े लाल, आप बहाए थाउँ थाँईंआ। चरन प्रीती एका जोड़े, साचे दर तों हरि जी होड़े, चारों तरफ फिरन दौड़े, ना सकण सुरत संभाल। गुरमुख प्रभ साचे दी साची लोड़े, वेले अन्तिम कलिजुग बौहड़े, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक बली बलवान। वड बली बलवान नौजवान विच जहान है। जोत सरूपी हरि भगवान, वड मेहरवान भगत जनां करे पछाण, देवे नाम निधान है। आप बहाए विच बबाण, जगाए जोत इक्क महान, झुल्ले सच्चा इक्क निशान, आत्म जोती दए जगाई है। गुरमुख

११८
०४

तेरी वधदी जाए शान, बेमुख वहन्दे जाण विच संसार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक करे जोत रुशनाई है। साची जोत होए रुशनाईआ। गुरमुखां मन वधाईआ। अन्तिम वेले फड़ फड़ तारे, दोवीं हथ्थीं हरि जी बाहींआ। गुरमुख बेमुख आप पछाणे, वड दाता बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई पावे सारे, जोत सरूपी विच बैठा आसण लाईआ। ना करे किसे अधारे, वसे काया महल्ल अटल्ल अपारे, बैठा साची जोत जगाईआ। आत्म खुल्हाए दस्म दुआरे, मिटाए अन्ध अंध्यारे, आत्म जोत आप जगाईआ। झिरना झिरे अपर अपारे, उल्टे कँवल खेल अपर अपारे, स्वांती बूंद विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, काया अन्दर डूघी कन्दर साचे मन्दिर, साची जोत करे रुशनाईआ। करे जोत आत्म प्रकाश , अज्ञान अन्धेर जाए विनास। एका शब्द चले स्वास स्वास। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां साचे संत जनां, मानस जन्म करे रहिरास। मानस जन्म हरि संवारदा। मिटाए आत्म भरम वेखे साचे कर्म, तोड़े किला गढ़ हँकार दा। भगत वछल गिरधार, जुगा जुगन्त है। वल छल विच संसार, कर कर जाए साचा कन्त है। वल छल कर के जगत भुलाए, माया पड़दा पाए बेअन्त है। गुरमुख विरला चल सरनाई आए, अमृत फल साचा खाए, बणाए साची बणत है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां माण दवाए, वेले अन्तिम होए सहाए, लए छुडाए दया कमाए, देवे वड्याई विच जीव जन्त है। देवे हरि सच्चा वड्डयाईआ।

गुरमुख साचे सद हिरदे रिहा भाग लगाए, तन भाण्डा कच्चा, सच वस्त हरि विच टिकाईआ। बेमुख अग्न जोत मच्चा, अठसठ दए दुहाईआ। गुरमुख जानण इक्क हरि साचो साचा, साची जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए जोत बलोए ना जाणे कोए, गुरमुख उठाए सोए, साचा शब्द कन्न सुणाईआ। देवे तन सच्ची धुन्कार। कलिजुग तेरी अन्तिम सुण पुकार। आप चुकाए तेरी मेरी मेरी तेरी, तोड़े माण सर्ब हँकार। निहकलंक पाए फेरी ना लाए देरी, प्रगट होए विच संसार। गुरमुखां हरि पाई जाए घेरी, मारे शब्द डाहढी मार। अन्तिम कलि होणा ढह ढह ढेरी, झूठे महल मन्दिर दए उसार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि आया जामा धार। निहकलंक जोत जगईआ। कलिजुग डोबे तेरी नईआ। अन्तिम अन्त नेड़े आया, भैणा छड्डुण भईआ। जगत झेड़ा दए मुकाया। आपे बणया लेख लिखारा, बैठ सच दरबारा, चित्रगुप्त लेख लिखईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, जोत अधार हरि निरँकार, कलिजुग तेरी रेख मिटईआ। करे करावे विच संसार, आवे जावे वारो वार, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखईआ। गुरमुख विरले खिच्च ल्याया ,आपणे चरन दुआरा, देवे नाम शब्द अपारा, साचे बेड़े आप बन्ऌईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए चतुर सुजान, एका देवे नाम दान कर ध्यान, साचा बख्शे चरन धूढ़ इशनान, ब्रह्म ज्ञान साचे राहे आपे पाईआ। साचे राहे पाए शब्द जणांयदा। गलों लाहे जम के फाहे, शब्द डोरी नाल बंधांयदा। दरस दिखाए थाउँ थांएँ, गुरसिक्खां हरस मिटांयदा। सदा रक्खे ठंडी छाँए, कलिजुग अग्न पऱे हटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां सोहँ शब्द मुख लगांयदा। कलिजुग खेल निराली, महिंमा अपार है। प्रगट होए दो जहानां वाली, जगाए जोत अपर अपार है। कलिजुग रैण घटा काली, होए अन्ध अंध्यार है। ना कोई करे किसे रखवाली, कलिजुग जीव भुले माया ममता डुल्ले रुले ना दिसे सन्झ सवेर है। प्रगट होए प्रभ अबिनाशी सच्चा माली, गुरमुख साचे सच्चे बूटे रिहा पाली, सतिजुग साचे मात धर, आपे नाल रलांयदा। अन्तिम वेला कलिजुग, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक विच मात जामा धार जोत जगांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेख। प्रभ प्रगट होया जोत सरूपी धार भेख। दर घर साचे आए कलिजुग दस्सया, निहकलंक मेरी आप लिखा मिटी अगली लिखी रेख। कलिजुग जीवां पाप जो विच मात दे बोया, नैण मुँधारी करे विचारी। नेत्र खोलॖ आपे वेखे, गुरमुख उठाया विच मात सोया, निहकलंक कलि प्रगट होया, करे इक्क शब्द अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारे कुन्टां आपे पावे सारी। शब्द उडारी इक्क उडान। इक्क शब्द सच्चा बबाण। बैठा रहे विच हरि सच्चा गुण निधान। चार कुन्ट हरि साचा वेखे, नौ खण्ड सत्त दीप वड महीप करे इक्क ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, भेव कोई ना पाए, नेत्र दिस किसे

१२० ०४
१२० ०४

ना आए, भुल्लया आत्म सर्ब जहान। आत्म प्या भरम भुलेखा। घर घर दर दर आपणा बहि के लिखदे लेखा। जोती जोत सरूप हरि, कर ध्यान अञ्जील कुरान, वेद पुरान गीता ज्ञान, खाणी बाणी कलिजुग राणी करे सर्ब पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए वड बली बलवान। वड बली बलवान विच संसार है। गुणवन्त गुण निधान, कलिजुग अन्तिम अन्त निहकलंक ल्या अवतार है। गुरसिख बणाए चतुर सुजान, देवे माण विच जहान, आत्म जोती लए जगाई है। आप बिठाए शब्द बबाण, दरगहि साची देवे माण, आवण जावण गेड़ कटाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी साची बणत रिहा बणाई है। सतिजुग साचे तेरी साची बणत बणाए। गुरमुख साचे संत जन, प्रभ अबिनाशी आपणे संग रलाए। मेल मिलाए साचे घर, भरम भुलेखे दूर कराए। भुले फिरन जीव जन्त साध संत, जोत सरूपी वड वड भूपी बिन रंग रूपी सति सरूपी दिस किसे ना आए। अन्तिम कलि रैण अन्धेरी, माया पड़दे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर आपणा भेव पंचम् जेठ आपे आण खुल्हाए। पंचम् जेठ हरि निरंकारया। गुर पूरे मारी झात, विच मात बख्शी दात, वड करामात सोहँ शब्द अपर अपारया। आत्म मिटी अन्धेरी रात, मिली साची इक्क सुगात, ना कोई पुछे ज़ात पात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणे तन शृंगार कराए, दोहीं हथ्थीं गुरमुखां तन पहनाए, कलिजुग अन्तिम वारया। गुरमुखां रंगे चोली। कलिजुग तेरी अन्तिम व्याहे बोली। धर्म राए दे दर दी बण जाए झूठी गोली। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ अबिनाशी चरन प्रीती तेरे तन मन घोल घोली। साचा शब्द बबाण ल्याया, गुरमुख साचा लए चढ़ाया, आप बणाए साची डोली। निहकलंक कलि जामा पाया। जोत सरूपी खेल रचाया। दूर दुराडा किसे दिस ना आया, आपे वसे तिन्न सौ सठ्ठ हाडा, अंग अंग संग संग रहाया। गुरमुखां उपजे अनन्द, जिस ने रसना गाया। बत्ती दन्द मुख ना लाया मदिरा मास गन्द, साचा चढ़ाए चन्द, निहकलंक कलि जामा पाया। गुरमुख तेरा धाम अवल्लड़ा। दस्से राह इक्क सुखल्लड़ा। फड़ के बांह आप बहाए, जिथ्थे वसे इक्क इकल्लड़ा। निहकलंक जोत प्रगटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ रक्खे साया हेठ, गुरसिक्खां भारा कराए पलड़ा। गुरमुख आत्म गुण ज्ञान, गुर बलहारया। प्रभ बणाए चतुर सुजान हरि भगवान, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी होए मेहरवान, विच जहान देवे माण वड संसारया। आप चुकाए जम की कान, धर्म राए यमराज तेरे सारे साज बाज, गुर दर आए जाण शरमाए। गुरमुखां संवारे काज रक्खे लाज मारे अवाज़, सिर पहनाए सच्चा ताज, ना दए कोई लाहे। सृष्ट सबाई होई मुहताज, वेला दिसे कल कि आज, कलिजुग तेरा डुब्बण वाला जहाज़, प्रभ इक्को धक्का लाए। सृष्ट सबाई रिहा साजन

साज, एका शब्द उडाए बाज़, जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे आण वरताए। आपणा भाणा आपे जानया। जोत सरूपी हरि भगवानया। अन्तिम अन्त कलि आप भुलानया। माया विच रुलाया, साचा राह किसे हथ्थ ना आया, कलिजुग जीव होए बेमुहानया। प्रभ पूरे भेव छुपाया। कलिजुग जीवां दुःख उठाया। साचा सुख आत्म किसे हथ्थ ना आया। चारों कुन्ट रोए सर्ब मनमुख, अठसठ दए दुहाया। भाग लग्गा ना किसे मात कुक्ख, साचा शब्द ना रसना किसे गाया। अन्तिम सहिणा पए दुःख, कलिजुग होण वाला हलकाया। कलिजुग बूटे जाणे सुक्क, प्रभ पाउण वाला सभ दे गल विच फाहया। ना भाणा सके रुक, कलिजुग वेला अन्तिम आया ढुक्क, जूठे झूठे जाण मुक्क, अन्तिम पैणा मूंह विच थुक्क, ना होए कोई सहाया। दूर दुराडा साचा माही पैंडा जाए मुक्क, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। कलिजुग तेरी वध्ध गई वेल। पंचम् जेठ तेरा अन्तिम इशनान प्रभ आप कराए, चोवे सच्चा तेल। बेमुखां नाम निशान मिटाए, एका बाण शब्द चलाए, तीर कमान ना कोई हथ्थ उठाए, आप घलाए धर्म राए दी जेल्ह। जोती जोत सरूप हरि, देण आया साचा वर, गुरमुख साचे तेरे साचे घर, बण साचा सज्जण सुहेल। साचा सज्जण सुहेल गुरमुखां मिलाए मेल। सोहँ शब्द दस्से साचा राह, आत्म जोती जगाए बिन बाती तेल। बेपरवाह अगम्म अथाह, अचरज पारब्रह्म कलि खेल। वडा शहनशाह,
१२१ ०४ वेले अन्त किसे ना होणा मेल। मूंह दे भार डिग्गण आ, प्रगट होणा सिँघ शेर शेर दलेर। निहकलंक रखाउणा नां, पंचम् १२१ ०४
जेठ पहली वेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए मेर तेर। पंचम् जेठ उठणा जाग। माझे देस लग्गणा भाग। जिस फड़नी गुरमुखां दी वाग। फड़ फड़ गुरमुख साचे संत जनां धोए जूठे झूठे दाग। सोहँ साचा शब्द इक्क सुणाए राग। झूठा जन कढाए झूठे तन एका लाए शब्द सच्ची जाग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, चरन बहाए दया कमाए हँस बणाए काग। बणाए हँस कागा। इक्क सुणाए शब्द रागा। गुरमुखां होया वड वड भागा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार सोया मात जागा। प्रभ अबिनाशी देवे दोंह हथ्थां दा इक्क प्यार, जो जन आए सरनी लागा। एथे ओथे ना करे कोई उधार, फड़ाए लड़ दर गुरसिक्खां फड़े अग्गों वागां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बूंद मुख चुआए, आप मिटाए तन लग्गी तृष्ना आगा। जगत तृष्ना अग्ग जगत जलनयां। अट्ठे पहर कलिजुग जीव रहे दग, आत्म होई अन्न्हया। तुट्टा आत्म धीरज तग, झूठा रहि गया तग, ना बेड़ा किसे बन्न्हया। सभ दे सिर तों लथ्थी पग्ग, बण गए गुरमुख साचे अन्तिम कलिजुग कग, मदिरा मास घर घर दिसे थाली छन्नया। निहकलंक जोत जगाई कलिजुग तत्ती वा चार कुन्ट जाणी वग, बेमुखां पकड़े शाह रग, अन्तिम अन्त कलिजुग देवे डन्नया। गुरमुख साचे संत जन गुर

चरनी जायण लग्ग, दीपक जोती जाण जग, आप पाए साचे तग, ना कोई रक्खे उहला बन्न्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक वड सुल्तान, वसे साचे घर सच्चा हरि जिस दी कोई ना छप्पर छन्नया। निहकलंक घर घर वेखे, लिखदा जाए सभ दे लेखे, कलिजुग जीव रहे भरम भुलेखे, आप रखाए दया कमाए, सतिजुग तेरी साची नींह, मारी साची मेख। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी आत्म बैठ सृष्ट सबाई आपे परखे वेखे। वेख वखाणे सभ किछ जाणदा। ना कोई भुलाए कलिजुग जीव होए निधाने, एका रसन हलकाए वधीआ पीण खाणे, आत्म भुल्लया इक्क भगवाने, ना मिले घर साचे दर साचा माने, वेला अन्तिम आया कलिजुग पछोताणदा। गुर गोबिन्द जो बचन लिखाया, निहकलंक पूरा दए कराया, पंचम् जेठ सारा भेव दए खुल्हाया, आप चुकाया वक्त कलिजुग तेरा वड बलवाल दा। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, पुरी घनक भाग लगाया, माझे देस दयो वधाया, पूरी आस हरि आप कराया, लक्ख चुरासी वेख वखाणदा। जगे जोत इक्क रघुराया, तिन्नां लोकां होए रुशनाया, ब्रह्मा ब्रह्मलोक दोए जोड़ करे निमस्कारदा। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीस दर दुआरे रिहा पुकारे, शिव शंकर जटा जूट धार एका जोत ओट रखांयदा। निहकलंक कलि आया जामा धार, सारे निउँ निउँ रहे झातीआं मार, केहड़ी कूटे करे विचार, जिथ्थे जगे जोत अगम्म अपार, सृष्ट सबाई आप लगाए एका अग्न। घर घर होए जीव दुखिआर, गुरमुखां साचा मुख लगाए सगन। साचा करे तन श्रृंगार, जो जन साचा नाम दान मंगण। लक्ख चुरासी दए निवार, संसार सागर पार लँघण। पूर्ब कर्म रिहा विचार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रहे मग्न। निहकलंक जोत जगाईआ। चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। साचा भेव वड देवी देव, पंचम् जेठ दए खुल्हाए, गुरमुख साचे संत जन आप लगाए आपणी चरन सेव, बेमुखां देवे दर दुरकार, सोहँ शब्द देवे साचा फल, अमृत रस्स साचा भोग रसन लगाईआ। प्रगट होए अलख अभेव, साची जोत जिस जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां दए वधाईआ। जगे जोत जगत अकालण। आपे बणे हरि जगत मालण। गुरमुखां अन्तिम अन्त तन श्रृंगार कराए साचा फूल फूलण। सोहँ शब्द तन पहनाए, दरगहि साची माण दवाए। बेड़ा लए बंध, कन्न्ह उठांयदा। गुरमुख आत्म जाए मन्न, लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। कढ्ढे जूठा झूठा जन, धर्म राए ना लाए डन्न, राह साचे आपे पांयदा। एका शब्द वसाए तन, सच्चा मिले नाम धन, दो जहानां माण दवांयदा। जो जन होए कलिजुग अन्तिम अन्ध, भाण्डा काया हरि जी देवे भन्न, ना कोए अन्त छुडांयदा। धर्म राए दए डन्न, करे खंन खंन अठाई कुण्डां विच फिरांयदा। गुरमुख साचे संत जनां बेड़ा देवे बन्न, दरगहि साची साचे धाम बहांयदा। दरगहि साची देवे चाढ़्ह, घर साचे विच देवे वाड़, सृष्ट

सबाई आप चबाए प्रभ अबिनाशी आपणी दाढ़, साचा लेख हरि लिखाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वेख रेख पंचम् जेठ नेड़े आए, जगत मिटदा जाए भेख, जोती जोत सरूप हरि, साचा अलख अलेख। कलिजुग तेरा कर ध्यान। प्रभ अबिनाशी शब्द फड़या हथ्थ विच बाण, चार कुन्ट हरि विचारी, जोत सरूपी निगाह मारी, बेमुख दिसण बेईमान। गुरमुख विरला पावे सारी हरि निरँकारी, आत्म गंवाए माण ताण, अन्तिम बाज़ी सभ ने हारी, कलिजुग काल आया खाण, खेल करे हरि निरँकार, नाल ल्याए मौत लाड़ी, गुरमुखां शब्द कराए वाड़ी। खिच्ची फिरे विच संसार रहे पिछे अगाड़ी। आपे फड़ फड़ जाए परखे नीत चंगी माढ़ी। कलिजुग जीव प्रभ अबिनाशी एका वारी वढ्ढे तेरी हाढ़ी। ना कोई लए छुडाए, गुरमुखां साचे संत जनां, साचा शब्द घोड़ी जाए चाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव उठ हो त्यार निहकलंक कलि आया जामा धार। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला नेड़े आया। लक्ख चुरासी ना कोई होए सहाया, दर दर घर घर धीआं भैणां करन वपार, प्रभ अबिनाशी जामा पाया। आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख साचे संत साची सेवा आप लगाया। आप कराए वणज वपार, लक्ख चुरासी परखण आया। सोहँ शब्द सच संदेश हरि जी नाल लै के आया। गुरमुख साचे साचा लाहा जाण खट्टी, दर साचे आण सीस झुकाया। आत्म रस साचा चट्टी, सोहँ शब्द साचा ल्याया। जगे जोत काया
१२३ मटी, अठ्ठे पहर डगमगाया। इक्क खुल्हाए हरि जी हट्टी, सोहँ शब्द विच वस्त रखाया। बेमुखां चाढ़े भट्ठी, निहकलंक १२३
०४ साचा बालन जोत सरूपी आप जलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द गेड़ा मुकाए झेड़ा, खुल्हा करे धरत मात ०४
तेरा वेहड़ा, लहन्दी कूटे आपे फेरा पाया। लैहन्दी कूट लई विचार। प्रभ अबिनाशी कर विचार। शब्द सरूपी डंक वजाए हथ्थ फड़ाए इक्क कटार। उडदे जाण चढ़दे जाण मात विच बबाण, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरमुखां करे आप पछाण। शब्द उडाए इक्क उडान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त लाहुण आया तेरी इक्क मकाण। कलिजुग तेरी लौहण आया मकाणे। शब्द मारे खिच बाणे। तख्तों लाहे राजे राणे। सारे होए बेमुहाणे। निहकलंक ना कोई पछाणे। एका जोत जगे महाने। ना कोई वरन ना कोई गोत, चार वरन इक्क कराने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाए, चार वेदां लेख लिखाए, दस अठ्ठ अठारां पुरान वक्ख वक्ख सलोक लिखाए, गुर नानक तेरी साची मोहर लगाई, बेमुखां ना कलि पछाणे। गुर गोबिन्द साची कलम चलाई, अन्तिम करे विच खेल प्रभ किसे हथ्थ ना आई। निहकलंक कलि जामा पाया, पिछला भेव प्रभ फेर खुल्हाई। गुर गोबिन्द जो गया लिखाए। ज्ञानी ध्यानी विद्वानी लभ्भ लभ्भ थक्के किसे हथ्थ ना आए। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी, ना कोई जाणे वड इशनानी, ना कोई सार पाए। कलिजुग जीव लभ्भ

लभ्भ थक्के, हरि मिले ना मदीने ना मक्के, जोत सरूपी निहकलंक विच मात जामा पाए। जामा पाए अमाम मैहन्दी, सृष्ट सबाई वेखो किवें गहंदी, इक्को गाहे सारे। पहलों वेखे दिशा लहन्दी, हथ्थीं लाए खूनन मैहन्दी। सृष्ट सबाई वेखो किवें गहिंदी। खुशी हो हो मौत राणी प्रभ दर अग्गे बहंदी। मैं लयावां चुण चुण कलिजुग जीव आपणे हाणी, कलिजुग भार सिर ते रही सैहन्दी। पीण देवां ना किसे पाणी, जोती जोत सरूप हरि, दोए जोड़ चरन करन निमस्कारी, रसना बोल बोल एह कहन्दी। लाड़ी मौत हरि पुकारे। नर हरि हरि गिरधारे। इक्को दे सच प्यारे। मैं विच मात दे जावां। बेमुख फड़ फड़ खावां, आपणी अग्नी भुक्ख बुझावां। साचे सगन फेर मनावां। कलिजुग तेरा लेख मिटावां। निहकलंक तेरे साचे चरन जाए सेव कमावां। कलिजुग तेरा लेख मिटावां। गुरमुख साचे संत वेख दोए चरनी सीस निवावां। जोती जोत सरूप हरि, अग्गों फड़े कर के लम्मीआं बाहवां। लाड़ी मौत उठे ललकार। कलिजुग जीव होणा ख़बरदार। बेमुखां फड़ फड़ मारे डाहढी मार। घर घर जाए फड़ फड़ उठाए बिरध बाल जवान नारी नार। बचया कोई रहण ना पाए, सिर दे उत्ते रही छाए,
१२४ उठे कलि ललकार। जोत सरूपी निहकलंक ल्या अवतार। लाड़ी मौत सगन ल्या मनाया। विच गगन दे हरि जी ध्याया। १२४
०४ लग्गी साची अग्न निहकलंक तेरी चरन प्रीत लिखाया। कलिजुग जीवां तन काया लग्गी अग्न ना कोई बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जन कर दरस तेरा दीपक जोती विच जगाया। लग्गी साची लग्न, बेमुख जीव भौंदे फिरदे नग्न, सच शब्द पर्दा ना किसे तन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम वेख निहकलंक लए जोत जगाया। कलिजुग सोया अन्तिम रोया। हन्झूआं हार परोया। काला मुखड़ा किसे दाग ना धोया। लक्ख चुरासी रही सोया। जेहड़ा करे बन्द खलासी, उहनूं कहन्दे कऊ ना कोया। रसना लाण मदिरा मासी, साचा बीज किसे ना बोया। रसना; जपया ना हरि साचा शाहो शाबाशी, ना होया प्रकाश साची लोया। अन्तिम पाए गल विच फाँसी, छुडाए नाही कोया। लाड़ी मौत बेमुखां कोल खलो के हस्से, ना सहाई कोई किसे होया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात प्रगट इक्को होया। लाड़ी मौत उठ ललकारे। आपणा तन रही शृंगारे। बेमुखां नूं अवाजां मारे। आओ मेरे चल दुआरे। मैं मातलोक आई अन्तिम कलि सच्चा जामा धारे। निहकलंक मिली सरनाई देवे वड्याई आई चांईं चांईं विच संसारे। फड़ फड़ उठावां बाहीं। भैणां छुडावां भाई, पूत हथ्थ ना आवे माई, दर दर सर्ब पुकारे। जोती जोत सरूप हरि, दित्ती दात किरपा धारे। लाड़ी मौत कर निमस्कार। उठ उठ उठ बलधार। कर विचार विच संसार। बेमुखां पाईं सार। डोबीं विच अद्धविचकार। ना देवे कोई सहार। इक्को मार सिर कटार। करीं जाईं दर दर दो फाड़। अग्न लग्गी

पहली हाढ़। चबाए एका आपणी दाढ़। किसे ना मिले कन्त नार। ना कोई हंढाए सुहागण नार। गुरमुख साचे संत जन घर साचे देवे वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे करे शब्द वाड़। लाड़ी मौत वड बलकारन। पहलों मारे फड़ फड़ वड बली बीर हँकारन। अड्ड कराए सिर धड़, धड़ सिर चलाए तीर इक्क कमानन। चारों कुन्ट होए कड़ कड़, आवण अकाश बबान चढ़, सृष्ट सबाई मरे लड़ लड़, ना सके कोई छुडाइन। कलिजुग कच्चे बेर डिग्गण झड़ झड़, ना सके कोई उठालन। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे आपे पालन। लाड़ी मौत चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी फड़ के बाहों राहे पा। साचा राह इक्क वखा। मैं पहलां जावां केहड़े थां। सिर मेरे ते हथ्थ रखाईं, रक्खी ठंडी छाँ। कलिजुग जीवां गोद उठावीं, धर्म राए दे दर बहावां डूंघी कन्दर देवां पा। जोती जोत सरूप हरि, साची किरपा देवे कर, इक्को देवे साचा वर, मेरी फड़ी रक्खीं बांह। देवे वर हरि निरँकार। पहलों वेख इक्को दर, जिथ्थे भरया होवे हँकार। पहली कूट कर सर, फिर आवीं दर सच्चे दरबार। दूजा देवां वर, घर बूरे कक्के लैणे मार। सच भण्डारे देवां भर, धर्म राए तेरे द्वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, कलिजुग अन्तिम तेरे कर्म विचार। लाड़ी मौत होई त्यार। करे अर्ज गुर चरन द्वार। एका दात झोली पा, नाल दे शब्द कटार। मैं जावां गल विच पावां फाह, उत्तों मारे शब्द डाहढी मार। बेमुख कलिजुग जीव इक्को तेरा सच्चा राह, मूर्ख मुग्ध होए जीव गंवार। किसे ना मिले सच्चा थां, दर दर रहे झक्ख मार। ना कोई फड़े किसे बांह, जूठा झूठा कलिजुग तेरा वणज वपार। नाता तुटा पिता मां, ना कोई भैण ना कोई भ्रा, ना कोई करे किसे प्यार। जोती जोत सरूप हरि जन भगतां आपे रिहा तार। साचा हट्ट हरि खुल्हाया। सौदा इक्को विच रखाया। सोहँ साची वथ धुर दरगाहों आप ल्याया। गुरमुखां फड़ाए आत्म दस्त, चढ़ाए शब्द हस्त चार कुन्ट लए फिराया। अट्ठे पहर रहे मस्त, जोत सरूपी जोत हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख साचे साची खट्टी खट्टी, आए चल सरनाई। ना कोई सुर ना कोई किली, एका रसना गाणा साचा माही। आत्म जोत जगे लट लटी, करे रुशनाई। वसे घट घटी, देवे शब्द वडी वड्याई। कलिजुग तेरी काया जीव फटी, ना कोई शब्द धागे नाल सवाई। साचा लाहा गुरमुख साचे जाण खट्टी, दुरमति मैल गंवाई। बेमुखां जड़्ह जाए पुट्टी, ना सके कोई लगाई। निहकलंक कलि जामा पाया, ना जाणो खेल बाज़ीगर नटी, वेला गया हथ्थ ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल आपणी आप रचाई। साचा हट्ट आप लगांयदा। चौदां लोक विच वसांयदा। त्रैलोकी माया जाल बन्न्हांयदा। ब्रह्मलोक शिवलोक इन्दलोक तिन्ने विच आप टिकांयदा। उत्ते रक्खे आपणा लोक जेहड़े धाम सद

रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच समांयदा। साची हट्टी गुरमुख वणजारा। मंगण आए सच दुआरा। प्रभ अबिनाशी अमृत बरखे साची धारा। बज़र कपाटी आर पारा। जोती जगे लट लाटी, आत्म होए उज्जयारा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, इक्को दिसे इक्क किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे शब्द दान गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, आप खुल्हाए दस्म दुआरा। खुल्हे दस्म दुआर, जोत जगाईआ। पड़दा लए उतार, शब्द खण्डा तिक्खा मार, दूई द्वैती पर्दा लाहीआ। इक्को दस्से साची धार, गुरमुख आत्म कर विचार, विच ताड़ी साची लाईआ। जगे जोत अपर अपार, झिरना झिरे ठंडा ठार, एका बूंद हरि मुख चुआईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत, जोत सरूप बज़र कपाटी चीर वखाईआ। खुल्हया हट्ट सच्ची सरकार दा। ज़ात पात आदि अन्त ना कोई विचारदा। कर किरपा पावे सार, कलिजुग जीवां पार उतारदा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, सच्चा खेल परवरदिगार दा। बेमुख जीव रहे वेखी वेख, गुरमुखां लिखदा जाए लेख, मानस जन्म संवारदा। बेमुखां सिर इक्को शब्द खण्डा मारदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे शब्द सच्चा दान, जो जन आए चरन निमस्कारदा। निमस्कार गुर दुआर। नर हरि किरपा देवे धार अपर अपार। साचा देवे नाम वरी, उज्जल मुख विच संसार। ना लग्गे काया दुःख, ना रहे तन अफार। साची
१२६ ०४ खुल्हे आत्म कली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे विचार। हो जाए पहरेदार, आप फिरे गलीओ गली, १२६ ०४
गुरमुख साचा हरि समझांयदा। शब्द डोर हथ्थ फड़ांयदा। लग्गी प्रीत तोड़ निभांयदा। देवे जोड़ ना कोई तुड़ांयदा। चढ़ाए घोड़ गुरमुख साचे ना कोई उत्तों लाहिंदा। इक्क लगाया सच्चा पौड़, विच डण्डा इक्क रखांयदा। गुरमुख चरन आए दौड़, फड़ बाहों तिन्नां लोकां पार करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचे धाम बहांयदा। साचा धाम इक्क न्यारा। जिथ्थे होवे खेल अपारा। जगे जोत अगम्म अपारा, बैठा दिसे इक्क निरँकारा। गुरमुखां आया हिस्से विच मात पहली वारा। बेमुखां मूल ना दिसे, आत्म होई अन्ध अन्धयारा। कलिजुग जीव तेरी जूठी झूठी चक्की पीसे, अन्तिम होए दो फाड़ा। अन्तिम कलि माया फसे, ना लथ्थे तन अफारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे सोहँ शब्द नाम अधारा। नाम शब्द जगत अधार है। गुरमुख साचे संत जन करन सच्चा इक्क वपार है। मिले सच्चा नाम धन, ना होयण कलिजुग ख्वार है। कोई ना देवे होर दुःख, सिर रक्खे हथ्थ करतार है। जोती जोत सरूप हरि, जामा धारी विच संसारी हरि निरँकारी होई पहरेदारी है। पहरेदार वड जवाना। जोत सरूपी हरि सुल्ताना। वडा शाहो शाह राज राजाना। जोती जोत सरूप हरि, साचे संत जनां सोहँ बन्न्हे हथ्थीं गाना। शब्द गाना बन्न्हे हथ्थ। प्रभ अबिनाशी

सर्बकला आपे समरथ। जोत सरूपी घनकपुर वासी सिर रक्खे दे कर हथ्थ। आत्म करे बन्द खुलासी, सोहँ देवे आत्म साची वथ। कोए ना दिसे मदिरा मासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि सभना पाए नक्क नत्थ। पाए नक्क नत्थ हथ्थ डोर। जूठे झूठे कलिजुग जीवां जिध्धर चाहे लए तोर। अग्गे दिसे थां नीवां डूंघी कन्दर अन्धेर घोर। साढे तिन्न हथ्थ आउणी सीआं, क्यों बणे हराम खोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखा आत्म कढ्ढे हरि फड़ वडे पंज तत्ती चोर। आत्म झूठा चोर पंज तत्त है, एह किसे ना बज्झे डोर, एह पींदा रहन्दा रत्त है। दिवस रैण आपणी देंदा रहन्दा मति है। पाउँदा रहे शोर, ना कोई सके एहनूं होड़, आपणा बीज बेमुखां आत्म रिहा घत्त है। अन्तिम वेले कोई ना सके होड़, जमदूत उत्तों मारन सिर विच लत्त है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे देवे वर, रक्खे अन्तिम पति है। रक्खे पत हरि भगवन्ता। जो दर आए साचे संता। आप बणाए साची बणता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत राम शाम आदिन अन्ता। इक्को राम जोत अकार है। प्रगट होया विच संसार है। जोत सरूपी जामा धार, करे खेल अपर अपार है। भुले जीव सर्ब नर नार, अन्तिम बाज़ी गए हार। मानस जन्म ना आउणा दूजी वार। लक्ख चुरासी आप भवाईआ, बेड़ा डुब्बे विच मँझधार। डूंघी गार ना कोई पार कराईआ। गुरमुखां मानस जन्म जाए संवार। रसना गायण गहर गम्भीर, फड़ बाहों जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त तेरे कर्म रिहा विचार। कर्म विचारे नीर वरोले। कलिजुग झूठा मूल ना अग्गों बोले। मूधा होया ठूठा, पल्ले नाही कुछ होया भार हौले। प्रभ दर तों अन्तिम रूठा, प्रभ आप बिठाए झूठे डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, कलिजुग तेरा भेख मिटाया, पंचम् जेठ नेड़े आया आप उतारे तेरे काले चोले। काला चोला देणा साड़। कलिजुग तेरा भाग माढ़। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़। जोती जोत सरूप हरि, चबाई बैठा आपणी दाढ़। काला चोला होए सुआह। बेमुख जीव मारन धाह। कोई ना फड़े किसे बांह। गुरमुख साचे संत जनां, हरि देवे ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गोद उठाए गले लगाए जिउँ पुत्तां मां। सुहाए थान चरन छुहांयदा। सुहाए थान जोत प्रगटांयदा। सुहाए थान गुर संगत संग रलांयदा। सुहाए थान गुरमुख साचे संत जन नाल मिलाए जिउँ नानक अंगद, एका जोती दीपक जगांयदा। सुहाए थान देवे माण शब्द बबाण इक्क ध्यान चरन रखांयदा। गुरमुख साचे रल मिल रसना गावण प्रभ दर पावण साचा माण, हरि साचा धाम वसांयदा। सुहाए थान होया हरिभगत भगवान, दूई द्वैती आपे पड़दे लाहंदा। सुहाए थान कराए इशनान, गुण निधान कर ध्यान, गुरमुख साचे संत जनां अमृत सीर मुख चवांयदा। सुहाए थान हरि मेहरवान वड निगाहबान, सर्ब जीआं दा

जाणी जाण, मदिरा मासी दर दुरकांयदा। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान, चरन धूढ़ सच्चा इशनान, दर मंगण सच्चा नाम दान, आत्म झोली आप भरांयदा। आप चुकाए जम की कान, गुरसिख शब्द बबाणे आप चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुहाए थान दवाए सच्चा माण जिस थाँईं चरन छुहांयदा। सुहाया थान गुर संगत संग रलाई, साची बणत बणाई, इक्क बिठाए हरि बबाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। सुहाया थान चरन छुहाया। गुरमुख सोया आप जगाया। मैल पापां धोया, सोहँ साबण साचा लाया। अग्गे बीज साचा बोया, मदिरा मास दए तजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए आपे होए सहाया। देवे दरस दीन दयाल, वड कृपाल है। मिटाए आत्म हरस, आत्म जोती नीर लए बरस, सुखी होए वाल वाल है। अमृत मेघ देवे बरस, अमृत भरे भण्डारा काया सुहावे ताल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कटे अन्तिम जगत जंज़ाल है। कटे जगत जंज़ाला। राह दस्से इक्क सुखाला। ना लग्गे हड्डां पाला। ना दिसे अन्धेरी खड्डा डूंघी डल्ला। इक्को दिसे हरि जी वड वडा, अन्तिम लए संभाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे फल लाए, गुरमुख तेरी काया डाला। फल लगाए काया डाल। दरगहि साची दए खवाल। लग्गी प्रीती निभे नाल। मानस जन्म जाए जग जीती, ना होणा अन्त कंगाल। एका दस्से साची रीती, आत्म शब्द झूठी काया डाली रक्खणा सद संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे गुरसिक्खां प्रितपाल। गुर संगत सति सति सति कमाईआ। संगत सति हरि रक्खे पत, धीरज यति देवे सति, साची मति आप समझाईआ। चरन बंधावे नत्त, एको राखो चित्त नर हरि आप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बैठा सर्ब सुहाईआ। आत्म बैठा वेख विचारे, गुण अवगुण हरि निरँकारे। गुरमुखां उपाए शब्द धुन, खिच्ची ल्याए चरन दुआरे। सृष्ट सबाई छाण पुण, लक्खां विच्चों लभ्भे गुरसिख सच दुलारे। कवण जाणे हरि तेरे गुण, कलिजुग जीव गंवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत भगत जन एका वस्त दोए दुआरे। इक्क दूजे नूं मिल मिल हस्सण, करन सच्चा प्यार। पंज चोर साचे घर वलों नस्सण, होण बड़े दुखिआर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख तेरी मेरी मेरी तेरी इक्को तार। दोए जोती इक्क धारा। इक्का दर इक्का दुआरा। इक्का सर सरोवर अमृत सच्चा सच्ची जल धारा। जोती जोत सरूप हरि, भगत जन जन भगत दोए वसण इक्क दुआरा। इक्का द्वार सच्चा अस्थान। भगत जन तेरी काया मन्दिर विच बैठे हरि भगवान। एका खोल्हे हँकारी वज्जा जिन्दर, किरपा करे महान। बेमुख जीव घर घर भौंदे फिरदे बन्दर, ना कोई पावे सच्चा दान। जोत सरूपी हरि सच्चा वसे अन्दर, लभ्भदे फिरन जगत बेईमान। किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर तन

मूंड मुंडान। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत शब्द डोरी नाल बंधान। शब्द डोरी हरि जाए बज्झ। किसे कुन्ट ना जाए भज्ज। अन्तिम अन्त जन भगतां पड़दे लए कज्ज। देवे दरस साध संत, अमृत मुख चुआए पीण रज्ज रज्ज। काया अग्न तृष्ना भुक्ख गंवाए, आप रखाए विच मात लज। जोती जोत सरूप हरि गुरमुख साचे संत जन, तेरे आत्म दर द्वार बैठा पहरेदार रिहा सज्ज। आत्म बैठा पहरेदार। अट्ठे पहर करे ख़बरदार। कलिजुग वेला अन्तिम आया, गुरमुखां विच संसार। निहकलंक कलि जामा पाया, खण्डा फड़या दो धार। बेमुखां वढ्ढी जाए, मारे मार आप निरँकार। गूढ़ी नींद दए सवाया, धरत मात तेरी सुण पुकार। सतिजुग जगाया उत्ते मारे तेरे छाल, पावे भार। साचा माण हरि दवा रिहा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। कलिजुग अन्तिम गल पल्ला पा। दर घर साचे आए मारे धा। अन्तिम वेला नेड़े आया, प्रभ अबिनाशी मैनूं कोई ना दिसे थां। सज्जण सुहेला संत जन ना कोई बणाया, ना कोई पकड़े मेरी बांह। जूठा झूठा मेला विच मात लगाया, घर घर उडाउँदा रहे कां। चार वरन ना किसे समझाया, हरि जी वसे केहड़े थां। फड़ फड़ बाहों ना किसे हलूणया, ना ल्या किसे जगा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि जामा धार कर ख्वार, मावां पुत्तां पाए औझड़ राह। इक्क दर नस्से मां प्यारी। दूजे पासे होए पूतां ख्वारी। तीजे पासे जाए तारी। चौथे पासे बेमुख डिग्गे मूंह दे भारी। आत्म बैठा हरि जी वेखे, करे खेल अपारी। बेमुखां कलि मूल ना दिसे, सन्झ सवेर प्रगट होणा सिँघ शेर शेर दलेर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारी। मावां पुत्तां तुट्टा नाता। भैणां छड्डुण संग भ्राता। नारी छड्डे कन्त सुहागा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग इक्को इक्क कराए तेरी अन्धेरी राता। कलिजुग अन्त होणा अन्धेर है। ना दिसे सन्झ सवेर है। प्रगट होणा सिँघ शेर शेर दलेर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक चौथे जुग पहली वेर है। तिन्न जुग ना हरि जी आए। आपणी जोत किसे गोत विच टिकाए। सतिजुग तेरी साची रीत चलाए। हरि जी जामा पाए। फेर त्रेते आप उपाया। एका सच्चा राम एका सच्चा नाम विच मात दे आया। जोती जोत सरूप हरि, रावण आपणी हथ्थीं मार, त्रेते आया विच संसार। जोत सरूपी ल्या अवतार। करे खेल अपर अपार। त्रेते जुग आई हार। त्रेता कराया अन्तिम फानी, जोती जोत सरूप हरि, कोई ना पावे तेरी सार। त्रेते होए राम अवतार। इक्क हरि इक्क राम निरँकार। कलिजुग कोई ना करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त वारो वार। मातलोक करदा रहे विचार। फिर द्वापर मात धराया। कान्हा कृष्ना बण के आया। अन्तिम जुग जिस कराया। बण रथवाही आपणे हथ्थीं रथ चलाया। सृष्ट सबाई साचा माही, अर्जन गीता ज्ञान सुणाया। जोती जोत

सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणा भेख विच मात रखदा आया। द्वापर आए दो अवतार। वेद व्यास ते कृष्न मुरार। कृष्ना गीता गाए रसना दए अठारां ध्याए उचार। वेद व्यास करे कयास अठारां पुरान दए लिखाए। जोती जोत सरूप हरि, इक्को जोत सभ दे विच टिकाए द्वापर तेरा अन्तिम अन्त, कान्हा घनईआ तेरी डोबे नईआ। अचरज खेल हरि करईआ। नाल लड़ाए भैणां भईआ। इक्क दा गेड़े आप पईआ। दूजा विच धरत मात गडईआ। आपणा रथ एका धाम रखईआ। जिस दा नाउँ गुड़गाउँ रखईआ। सिँघ बिशन ओथे वसईआ। निहकलंक कलि जामा पईआ। आपणा सिर हथ्थ रखईआ। तीजा लोचण खोल्ह वखईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणा मेल बिन बाती बिन तेल आपणा आप करईआ। चौथे जुग होई वंड। विच मात आत्म होई सभ रंड। किसे ना मिले सच्ची दात, नंगी होई सभ दी कंड। जूठ झूठ जगत वसाया, बेमुखां नूं रिहा वंड। निहकलंक अन्त कलिजुग जामा पाया, करे खण्ड खण्ड। निहकलंक कल्गीधर अवतार। वजाए शब्द डंक, सुणे सर्ब संसार। इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच भेव न्यार। आप सुहाए द्वार बंक, जगाए जोत अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एको एक वेखे सच्चा दर दरबार। सच्चा लाए दरबार हरि निरंकारया। करे सच विहार जमन किनारे चरन छुहा रिहा। वाली हिन्द हो उठ ख़बरदार, निहकलंक कलि जामा पाया। देवे शब्द

१३० ०४ अपर अपार, राजे राणे सोए आप जगा रिहा। आप बंधाए सतिजुग तेरी सच्ची धार, शब्द डोरी नाल बंधाया। बेमुखां सुट्टे १३० ०४

डूंघी गार, ना किसे छुडाया। गुरमुखां करे प्यार, आपणे नाल बंधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप वरताए, आपणा चरन लए उठाए, पार ब्यासों टिकाया। चरन रक्खे चरन ब्यासों पार। होए ख्वारी आर पार। चले दो धारी खण्डा देवे पाड़। फेरी जाए आरी हड्डो हड्डी नाड़ी नाड़। फड़ फड़ बाहों दर घर साचे विच्चों जाए कढ्ढी, बेमुखां होए भाग माढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अग्न जोत लगाए जिउँ तत्ती अग्न हाढ़। कलिजुग तप्पया अन्त तन्दूर। प्रभ अबिनाशी साची कलि आप चलाई लक्ख चुरासी विच बहाई अमृत छिड़के ना लाहुण वाला पहला पूर। देवे इक्क गुरमुख वड्याई। ऊँचों नीच करे सच्चा हरि रघुराई। बेमुखां करे चूरो चूर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला नेड़े आया, मुक्कण कलिजुग तेरे झेड़े, धरत मात तेरे खुल्ह होण वेहड़े, बेमुखां देवे मार। बेमुखां दिसे दूर दुराडी वाट है। आपे जाणे हरि हज़ूर औखी घाट है। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, झूठा रस रहे चाट है। अन्तिम कलिजुग पैणा जूड़, मानस जन्म आई हार है। आपे पीड़े शब्द वेलणे बूड़, काया चोली जाणी पाट है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अमृत प्याए साचा सीर दुरमति मैल रिहा काट है। भिन्नड़ी रैण जगत वणजारीए। कलिजुग अन्तिम

खोल्हे नैण, इक्क इक वारीए। गुरसिक्खां दी बण जाए सच्ची भैण, बन्न्हे नाता अपर अपारीए। हरि जी बणे साक सज्जण सैण, वसे इक्क दरबारीए। धन्न धन्न धन्न गुरमुख साचे संत जन, रसना नाउँ साचा लैण, सुहाई नाल भिन्नड़ी रैण, निहकलंक नरायण नर अवतारीए। बेमुखां मौत खाण आई डैण, डुबदे जाण जूठे झूठे वहण, हरि इक्को धक्का देवे मारीए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत आदि अन्त नर नरायण निरँकारीए। भिन्नड़ी रैण सुरत संभाले। गुरमुख साचे संत जन, संग रलाए विच्चों मात लभ्भे अनमुल्लड़े लाले। गुर चरनी ल्या बहाए, प्रभ उत्ते पाए शब्द चिट्टे दुशाले। गुरसिख तेरा पर्दा कोई ना लाहे, कलिजुग जीव आत्म होई सर्ब कंगाले। सच वस्त हरि झोली पाए सोहँ दात, गुरसिख होए मालो माले। मिट गई कलिजुग अन्धेरी रात, चरन प्रीती निभे प्रभ नाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी शब्द घोड़े चढ़, मात विच गया वड़। शब्द घोड़े आप चढ़ाया। चारों कुन्ट लए फिराया। ना कोई सके रोक, ना किसे दिस आया। गुरमुखां सुणाए इक्क सच्चा सलोक, सोहँ शब्द धुरदरगाही आया। सतिजुग साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं झोली पाया। सतिजुग तेरा सच संदेश, प्रभ अबिनाशी गुरमुखां कन्न सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम बेड़ा बन्न वखाया। आत्म पर्दा दए हटाया। हथ्थ विच फड़या शब्द तिक्खा तीर, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। बिन रंग रूपी जोत सरूपी डगमगाया। गुरमुखां आत्म खोल्हे सोत, नज़री आवे हरि रघुराया। बेमुख दोवें नैण मल मल रहे रोत, साचा राह हथ्थ ना आया। भरम भुलेखे भुले विच वरन गोत, ब्राह्मण शूद्र शत्री वैश हरि जी ना कोई भेव रखाया। सभ दे विच इक्को इक्क वसे हमेश, कलिजुग जीवां बंनां आपणा आपे पाया। अन्तिम करे सच्ची इक्क पैमाइश, उचे टिल्ले डूंघे कन्दर उजाड़ पहाड़ सारे दए ढाहया । घर साचे इक्क कराए सच्ची रिहायश, ऊँच नीच वडा छोटा खरा खोटा ना कोई रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार, सतिजुग साचे तेरा बेड़ा बन्न्हण विच मात दे आया। कलिजुग मुकाए तेरा झेड़ा। सोहँ साचा तेरा नगर खेड़ा। कलिजुग मिटाए ख़ाक रुलाए सिर छार पाए, दोहीं हथ्थीं उडाए, चारों तरफ धरत मात तेरा खुल्हा दिसे वेहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत जगाई। सृष्ट सबाई सच्ची चक्की आप बणाई। कलिजुग पुड़ थल्ले रक्ख, उत्ते सतिजुग दित्ता रक्ख, किली सोहँ शब्द दोहां विच रखाई। आपणा हथ्थ लाया डण्डा, मुड्ड वाहवा घुट्ट के पाई। पंचम् जेठ नेड़े आई आप दए भवाई। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत विच मात करे रुशनाई। साची चक्की आप चलाई। सृष्ट सबाई कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़ एहनां विच पिसाई। गुरमुख साचे संत जन, निहकलंक तेरे चरन बहिणा जुड़, दोए जोड़ भुल बख़्शाई। बेमुख कलिजुग

जीव मायाधारी जाण रुढ़, दर दुआरे आत्म हँकार इक्क रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान कलिजुग तेरे अन्तिम कराए अन्त निशान, आपणी हथ्थीं प्याए पाणी। कलिजुग अन्तिम पी लैणा पाणी। चारों कुन्ट घर घर हाणीआं छड्डणे हाणी। आपे वेखे दुरजन जीआं आत्म होई अन्धी काणी। सति सरूपी जामा पाया, सोहँ डण्डा नाल लए लगाया, धरत मात दे विच गडाया। गुरमुख तेरा साचा ब्रह्म आप आपणी हथ्थीं खिची जाए, बेमुख छाण विच ख़ाक रुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग तेरी चलदी जाए चक्की। सज्जे हथ्थ देवे गेड़ा, खब्बे हथ्थ नाल जाए धक्की। कलिजुग मुकदा जाए झेड़ा, दूर दुराडा तक्के हरि जी, एका वेखो खोल्ह ताकी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आया जामा धार, कलिजुग फसल तेरी पक्की। फ़सल हाढ़ी होई त्यार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। केहड़ी लभ्भां साची धार। केहड़ा डण्डा हथ्थ उठावां, कलिजुग जीवां देवां मार। केहड़ा कुण्डा लाह वखावां, औखा ओथों लँघणा पार। धर्म राए दा दर वखावां, उत्तों मारां डाहढी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आत्म वेखे सर्ब विचार। लग्गे भोग सतिजुग सरदार दा। दस्से साची जुगत, मानस जन्म संवारदा। अन्तिम मिलदी मुक्त, जो जन हरि हरि रसन उचारदा। जोती जोत सरूप हरि, कर किरपा पार उतारदा। भोग लगाया हरि रघुराया।
१३२ ०४ गुरमुखां दए मुख लगाया। चिन्ता सोग आत्म दुःख दए मिटाया। हउमे कटे रोग, सुक्की कुक्ख हरी दे कराया। कदे ना होए विजोग, तृष्ना भुक्ख दए मिटाया। लिख्या धुर संजोग, सोहँ शब्द सच सुहागी गीत सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख तेरा आउणा जाणा लेखे लाया। हरि भोगी वड भगवान है। आप खवाए साचे घर, अमृत बूंद मुख चुआन है। गुरमुखां भण्डारे देवे भर, देवणहार दातार है। निहकलंक नरायण नर विच संसार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म तन आपे पाए सोहँ धागे नाल परोए, गल लटकाए है। गुरमुख साचे लए परोए। दुरमति मैल पापां धोए। मिल गुर गुरसिख एका जोत दोए होए। एका मंगी नाम भिक्ख, भुक्ख रहे ना कोए। साची सिख्या लैणी सिख, मदिरा मास खाए ना कोए। आत्म लथ्थे ना कदे विक्ख, ना होए सच्ची सोए। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलिजुग सभनां सीखां विच परोए। लाया भोग दर परवानयां। मिटया विजोग विच जहानयां। होए सति संजोग, जगी जोत महानयां। कटे हउमे रोग, देवे नाम निधानयां। रसना रस साचा लैणा भोग, आत्म होए ब्रह्म ज्ञानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। रसना लाए रस सच दरबार है। गुरमुखां होया वस आया नस्स, मातलोक जामा धार है। राह साचा जाए दस्स, गुरमुख चल्लण हस्स हस्स, ना मारे कोई मार है। हरि हिरदे जाए वस, अमृत

१३३
०४

आत्म देवे साचा रस, अट्ठे पहर रहे सदा ख़मार है। बेमुख दर तों जायण नस्स, शब्द तीर मारे कस, होयण अन्त दुख्यार है। सृष्ट सबाई होणी भस, कोई ना चले किसे दा वस, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लीला अपर अपार है। हरि भोग भगतां दान है। मात जोत धरे किरपा कर, देवे गुण निधान है। अमृत साची दात अमृत सर सरोवर भर, आत्म तृखा आप मिटान है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, देवे नाम जगत निधान है। लग्गे भोग सति संतोख्या। कटे हउमे रोग मिटे रोगया। गुरमुख विरले रस रसना लैण भोग, मिले सच्चा जोग बेमुखां होए विजोगया। देवे दरस हरि अमोघ, जोत सरूपी वड भोगण भोगया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भेव ना जाणे, हथ्थ ना आए किसे राजे राणे सुघड़ स्याणे वड महाराणे, चारों कुन्ट भौंदे फिरदे, धारे भेख वड वड योगीआ। जोगी जटा जूट धार। नंगी पैरीं होण ख्वार। सिर चुक्की फिरदे भार। हरि ना दिसे ना आए किसे विचार। गुरमुखां पाए साचे हिस्से, निहकलंक तेरे साचे दरबार। तीजे लोयण हरि जी दिसे, जगे जोत अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत आत्म झिराए झिरना, काया करे ठंडी ठार। काया ठंडी ठार सीतल सीत है। पूर्ब कर्म लए विचार, मिल्या मीत सुहाए दर आए जो नर नार है। प्रभ आप दिखाए सच्ची रीत है। इक्को इक्क सच विहार है। रसना गाउणा सच्चा हरि मीत है। झूठा जूठा रसन अहार तजौणा, एह बणाई जगत अनीत है। गुरमुखां बख़्शे चरन प्यार, परखे नीत है। दस्से शब्द साची धार, मानस जन्म जाणा जीत है। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचे लए विचार, आप बंधाए आपणे चरन प्रीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए गुरदुआरे मन्दिर विच मसीत है। हरि साचा भोग लगाए रसन छुहांयदा। शब्द घोड़े कसे तंग, चाढ़े रंग गुरसिख मंगण साची मंग, हो अस्वार हरि आपे आंयदा। कटे भुक्ख नंग, शब्द वजाए इक्क साचा मृदंग, चोट आपणी हथ्थीं लांयदा। इक्क चढ़ाए मजीठी रंग, सदा वसे अंग संग, ना मूंह कदे भवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा धार, कर विचार गुरमुख साचे राहे पांयदा। साचे राह जाणा चल। निहचल धाम इक्क अटल्ल। पार कराए जल थल। आवे जावे घड़ी घड़ी पल पल। बेमुख वक्त लँघावे ना हरि ध्यावे, विचारे अज्ज कि कल अन्तिम कलि होए ख्वारे, ना कोई पावे सारे प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई जोण वाला इक्को हल। इक्को हल आप चलाए। साचा हाली बण के आए। दोहीं हथ्थीं उत्तों भार पाए। जड़ किसे दी रहण ना पाए। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां उचे टिब्बे वाहुंदा जाए। सोहँ शब्द सुहागी गीत साचा माहीआ रसना नाल सुणाउँदा जाए। सतिजुग बण जाए तेरी रीत, कलिजुग बेमुखां गूढ़ी नींद सवाउँदा जाए। बंधाउँदा जाए चरन प्रीत, बण जाए साचा

१३३
०४

मीत, बेमुखां दर दुरकाउँदा जाए। काया करदा जाए ठंडी सीत, गुरमुख साचे संत जनां, बेमुखां अग्न आपणी हथ्थीं लाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जामा धार, मातलोक विच्चों कढ्ढे बाहर, सतिजुग उत्तों आए संसार, गुरमुखां आत्म सोधे शब्द कुठाली डार, निहकलंक ल्या अवतार, सच विहार आप कराउँदा जाए। सच विहार आप करावणा। सतिजुग साचा विच मात आप धरावणा। कलिजुग अन्तिम मारे डाहढी मार, घरों बाहर कढावणा। बेमुख होण नाल ख्वार, इक्क दूजे दा संग ना किसे निभावणा। कलिजुग जूठा झूठा यार, अन्तिम जिस ने पिछा वखावणा। कलिजुग जीव क्यों भुले गंवार एका हरि, कलि अन्तिम जिस ने सिर हथ्थ रखावणा। दोवें राह होए दोफाड़। प्रभ अबिनाशी आपे देवे पाड़। कलिजुग जीव धर्म राए दे दर देवे वाड़। गुरमुख बणाए साचे लाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां करे शब्द साची वाड़। गुरसिख पूरे रसना रस्स वखानयां। गुरसिख पूरे हरि समझानयां। कलिजुग अन्तिम अन्त, आप चलाए आपणे भाणयां। मेल मिलाए साचे संत, देवे आत्म ब्रह्म गयानयां। मेल मिलावा साचे कन्त, ना होए विछोड़ा दोए जहानयां। जोत सरूपी आदि अन्त, देवे माण भगत भगवानयां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त आपणा भेव आपणे हथ्थ रखानयां। भुले फिरदे जीव जन्त, सच वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। गुरमुखां मिल्या हरि साचा कन्त, साची जोत जगाईआ। शब्द पाए तन साची वस्त, हुन्दी जाए दिनो दिन रुशनाईआ। महिंमा जगत अगणत, ना किसे गणी जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणे हथ्थ रक्खे वड्डयाईआ। आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई, कन्त कन्तूहल। दर घर साचा ना जाणा भूल। अग्गे फड़ के मार्ग पाए, शब्द पंघूड़ा लैणा झूल। साचे धाम आप सुहाए, बहाए जिथ्थे बैठा आसण लाए, जोत सरूपी डगमगाए, सिँघ सिँघासण हरि जी बैठा ना कोई पावा ना कोई चूल। जगे जोत हरि निरँकारी। ना कोई दिसे चार द्वारी। आपे वसे सभ तों बाहरी। वेखे विगसे करे विचारी। लक्ख चुरासी जिस पसारी। कलिजुग जीव क्यों भुले रुले काया डुल्ले, अन्तिम जाणा बाजी हारी। भाग लगाउँणा आपणी कुले, सच वस्त हरि झोली पाए, कोई ना लैंदा मुल्ले। गुरमुख साचे संत जन पूरे तोल तुल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना डोले ना डुल्ले। ना डुल्ले हरि ना डुलांयदा। ना किसे कोलों तुल्ले, ना कोई तुलांयदा। सृष्ट सबाई कलि अन्त तुलांयदा। ना कोई पाए मुले, सृष्ट सबाई इक्को नाउँ आपणा मुल्ल चुकांयदा। अन्तिम कलि वेखे थाउँ थाँईं, गुरमुख प्यारा भगत किथ्थे नज़री आंयदा। अग्गों हो के फड़दा बाहीं, फड़ फड़ गले लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मतीं आप समझांयदा। गुर सज्जण गुरसिख मीत प्यारा। एका दस्से राह गलों कटे भगत जंजाला फाह, देवे नाम शब्द अपारा।

जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरला मंगे सच्चा इक्क दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुल्ल अतुट्ट निखुट्ट भरया रहे भण्डारा। हरि भण्डारा वड भण्डार है। बणया आप वरतारा, मंगण आए सर्ब संसार है। ना करे कोई विचारा, एका वेखे आत्म प्यार है। ना कोई जाणे शाह सुल्तान राज राजान वड सरदार, ग़रीब निमाणयां पाउँदा आए सार, भुले प्रभ साचे दा सच्चा इक्क विहार, दर आयां देंदा माण है। इक्को इक्क वखाए सच्चा घर बाहरा, जिथ्थे वसे आप हरि भगवान है। उच्चा लम्मा चौड़ा ना कोई चुबारा, जोती जोत सरूप हरि, एका डगमगान है। किसे हथ्थ ना आवे कोई किनारा, थक्क थक्क गए विच मात कई अवतार ना करे कोई ब्यान है। जोत सरूपी भेद अभेदा अपर अपारा, ना रसना सके किसे वखान है। ना कोई जाणे ना वखाणे, किवें बन्ने त्रैलोकी धार, ना कोई थम्म दिसे विच जिमी अस्मान है। ना कोई जाणे प्रभ अबिनाशी किवें प्या जम्म, ना कोई पिता ना कोई मां है। अमृत मेघ गुरसिख तेरी आत्म बरसे छम्म छम्म, एका कर चरन ध्यान है। सुक्का होए हरया काया चम्म, आत्म निकले सुखाला साह है। घर आए भगवान, लै बबान है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सदा सदा मेहरवान है। मेहरवान मेहरवान मेहरवान है। जन भगत देंदा माण, जो जन होए निताणयां ताण है। गुरमुख साचे अमृत फल साचा खाण है। रसना शब्द सच्चा गाण है। बेमुखां फल ना दिसे कलिजुग आत्म डाहण, वांग सिंमल प्राणी उठ जाण है। सर्ब जीआं हरि जाणी जाण, गुरमुखां आपे करे पछाण है। गुणवन्त गुण निधान गुरमुख साचे चतुर सुजान, सच्चा देवे शब्द इक्को ब्रह्म ज्ञान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जामा धारे, राम अवतारे कृष्न मुरारे, अन्तिम कलि जोत सरूपी श्री भगवान है। अमृत तिक्खी धार हरि निरँकारदा। दर आए जो नर नार, आत्म सभ दी ठारदा। बिरध बाल जवानां पाए सार, पूर्ब कर्म कर विचार, हउमे रोग सर्ब निवारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा आप खुल्हाया, गुरमुखां दए मुख चुआया, अन्तिम रंग इक्क चढ़ाया, सच सच्ची सरकार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीआं जन्तां साधां संतां, आदिन अन्तां आपे आप विचारदा। विचारे कर्म सिरजणहारया। साचा दिसे एका धर्म विच संसारया। कोई ना करे आत्म भरम, एका जोती हरि निरंकारया। एह काया झूठा चर्म, कम्म ना आए अन्तिम वारया। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी किरपा कर, अमृत साचा जाम आपणी हथ्थीं आप पिला रिहा। पीणा अमृत जाम रोग निवारदा। पूरी करे आस मानस जन्म संवारदा। दुरमति मैल गुर दर आए जो जन धोयण, सच्चा रंग आप चढ़ाए, ना फेर कोई उतारदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर, मातलोक जामा धारे भेख श्री भगवान दा। श्री भगवान साजण मित्तया। सृष्ट सबाई आप भुलाई, गुरमुख

विरला बैठा विच मात मानस जन्म जित्तया। बेमुखां अन्तिम देवे ख़ाक रुलाई, ना सके कोई बचाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणी काया हथ्थ रखांयदा। काया रक्खी खेल पेख। सृष्ट सबाई वेख वेख। जोत सरूपी धारे भेख। विच मात लग्गी मेख। सतिजुग साचे लए उपजाए। मातलोक दए लगाए। धरत मात दी गोद बिठाए। चिट्टे अस्व हो अस्वार, पंचम् जेठ मात विच आए। जोत सरूपी जोत हरि, सृष्ट वाग आपणे हथ्थ रखाए। गुरमुखां धोए साचे दाग। सोया गुरमुख जाए जाग। माझे देस लग्गा भाग। सृष्ट सबाई इक्को करन वाला सच्चा शब्द जोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाई, बेमुख जीवां दिस ना आई, चारों कुन्ट आपणे हथ्थीं लाउँदा फिरदा आग। लाए अग्ग मारे फुनकारया। कलिजुग जीव आत्म होए हंकारया। उठ उठ बल धारे आए विच संसारया। जोत सरूपी जोत हरि, आपणी किरपा रिहा कर, बेमुख जीवां उल्टे वहण वहा रिहा। उल्टे वहिण बेमुख वहणे। गुर वखाए हरि साचे नैणे। वेला अन्तिम नेड़े आया, आपे लाए बेमुखां दी चोली काया छुडाए, झूठे दिसण साक सैणे। मात पित भैण भ्रा सर्ब रवाए, इक्क दूजे ना कोई चुकाए लहिणे देणे। इक्को थां सर्ब रवाए, करन हाए हाए, धर्म राए अग्गे लेखे देणे पैणे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखा दरस दिखाए आत्म तृखा बुझाए बज़र कपाटी खोल्ह तीजे नैणे। तीजा नैण जाए खुल्ह। गुरमुख चरन प्रीती जाए घुल्ल। पूरे तोल विच मात जाए तुल। सोहँ देवे साची दात सच सुगात विच मात अनमुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां भाग लगाउणा आपणी कुल। लग्गे भाग गुरसिख प्यारया। धोणा आपणा दाग परिवार सुधारया। सुणया सच्चा राग, तन बुझाई आग, सोया गया जाग, आत्म जिंदा आप तुड़ाया। बुझाए तृष्ना आग, अमृत मेघ हरि आप वरसा रिहा। जो जन चरनी गए लाग, प्रगट होए स्वच्छ सरूपी वडा शाहो भूपी दरस आप दिखा रिहा। हिरदे हरि रक्खे वास, हरि होए दास। गुरमुख साचे संत जनां सद सद बलि बलि जास। साची देवे दात सोहँ शब्द वडा धना, मानस जन्म होए रास। इक्क सुणाए शब्द कन्ना, हउमे दुखड़ा होवे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनो, हरि दुलारयो जन्म सुधारयो, अन्तिम करे बन्द खलास। बन्द ख़लासी प्रभ साचे करनी, बेमुख जूठे झूठे कलिजुग भरदे पाणी। अन्तिम होए खाली ठूठया, ना दिसे अन्न दाणी। दर घर साचे जो गया रूठया, फल लग्गे ना उहदी डाहणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण दोए रूप कर वखाए, वेला गया सर्ब पछताए, हथ्थ ना आए किसे चतुर सुघड़ वड स्याणया। चतुर सुघड़ वड स्याणया। कलिजुग अन्तिम हथ्थ ना आउणा, पए डूंघे वहिण बिन वञ्झ मुहाणया। ना कोई बणना साक सज्जण सैण, ना देणा किसे माण

अन्त निमाणया। आपे बणे मात पित सुत भैणा भाई, जो जन आए दर हरि भगवानया। करे साचा हित्त बणे साचा मित, जोत प्रगटाए नित नवित्त देवे दान सोहँ शब्द वड ब्रह्म ज्ञानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि, गुरमुख विरले कलि पछाणयां। कलिजुग इक्क इकल्ला, की करे विचारा। उजड़ जाए एहदा महल्ला, ढहिण वाला वड मुनारा। शब्द फड़या हथ्थ विच सोहँ भल्ला, बेमुखां कलि सीने मारा। वगे लहू धार बेमुहार सच करतार ना वार किसे झल्ला, करे पहला हल्ला, ना पावे भेव कोई संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वसे निहचल धाम अटल्ला, रहे इक्क इकल्ला, इक्को इक्क निरँजण जोत नरायण नर निरँकारा। निरँजण जोत निरँकार है। मातलोक आए शब्द घोड़े हो अस्वार है। जुगां जुगां दे विछड़े चरन आपणे जोड़े, पूर्ब कर्म रिहा विचार है। गुरसिख दर दुआरे दौड़े, दूर दुरेडे वसंदड़े, चरन प्रीती रंग रंगदड़े, प्रभ अबिनाशी किरपा कर देवे वर चढ़ाए साचे पौड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा दान हो मेहरवान वेले अन्तिम कलिजुग प्रभ अबिनाशी साचा बौहड़ है। गुरमुखां आप पछाणे कर्म विचारदा। सर्ब घटां घट आपे जाणे आत्म भरम निवारदा। आप पहनाए आपणे शब्द बाणे, सच्चा तन श्रृंगारदा। चुकाए जम की काणे, सच बबाणे, आपे चाढ़दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा माण ताण विच जहान, सृष्ट
१३७ सबाई पुण छाणदा। छाणे पुणे गुरमुख विरले विच्चों चुणे। क्या कोई जाणे हरि तेरे गुणे। उधरे पार जो दर आए सच्चा १३७
०४ राग कन्न सुणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां इक्क उपजाए शब्द धुने। उपजे शब्द धुन सच्ची ०४
धुन्कार है। गुरसिख तेरी तुट्टे सुन्न मुन्न होए उज्जयार हे। आपे तोड़े लग्गी मुन, मिटाए अन्ध अंध्यार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक जोती आप जगाए करे रुशनाए, अपर अपार है। जोती दीपक विच काया मन्दिर जगणा। हरि हिरदे वेख अन्दर इक्क लगाओ लग्ना। आपे तोड़े हँकारी जन्दर, साचा शब्द रसन लग्गा साचा सगन। जोती जोत सरूप हरि, हरि वसे काया डूंघी कन्दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझाए तृष्ना अग्न। तृष्ना अग्न विच जहान है। सृष्ट सबाई रही दग, आत्म होई बेईमान है। मानस देही बणाई हँस कग, ना जाणे गुण गुण निधान है। लक्ख चुरासी धर्म राए दे अग्गे लाउणा जूठा झूठा वग, कुम्भी नर्क आप भवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा सहाई मेहरवान है। गुर संगत तेरा प्यार अमृत नीर है। करना सच विहार, वक्त अख़ीर है। मानस जन्म लैणा सुधार, फिर ना देवे कोई धीर है। पैणी अन्त डाहढी मार, ना होए कोई सहाई पीर फकीर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां कटण आया भीड़ है। कटे भीड़ दुःख मिटांयदा। सिर आपणे चुक्के बीड़ भार

उठांयदा। ब्रह्मा तोड़े हड्डी रीड़, मूंह दे भार सुटांयदा। अट्ठे पहर लग्गी रहे हउमे पीड़, ना दुःख कोई मिटांयदा । प्रभ शब्द सरूपी रिहा पीड़, लहू मिझ घाण कलिजुग तेरा अन्तिम वार वहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां संत दुलारिआं अमृत धार ठंडी ठार मुख चवांयदा। अमृत धारी ठंडी ठारी गुरमुखां लग्गे प्यारी। देंदा जाए वारो वारी प्याउँदा जाए शाह अस्वारी। दीपक जोती जगाउँदा जाए किरपा धारी। बेमुखां अन्ध अन्धेर कराउँदा जाए, गुरमुखां साचा राह वखाउँदा जाए, उंगली फड़ के आप दिसाए पार किनारी। दोहां धिरां दा मेल मिलाउँदा जाए। गुर संगत एका धाम बहाउँदा जाए। ऊँच नीच जात पात राउ रंक आपणा रंग रंगाउँदा जाए। एका बंधाए चरन नात, अन्तिम पुच्छे आपे वात, गुरमुख आत्म वेख मार झात, साचा आसण आत्म सेजा आपणी हथ्थीं विछाउँदा जाए। कलिजुग मिटाए अन्धेरी रात, सतिजुग साची फूलन सेजा तेरी आपणी हथ्थीं आत्म आप बणउँदा जाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को डेरा सद वसेरा तेरी आत्म वसे नेरन नेरा दस्म दुआर खुलाउँदा जाए। दस्म दुआर खोलू ताकी। आप चुकाए पिछली बाकी। बिन सिख तेरा मन ना होए आकी। निरगुण सरगुण रूप दोवें विच्चों आए, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप खुलाए आत्म ताकी। आत्म ताकी देवे खोलू। विच्चों हरि जी पए बोल। जेहड़ा वसे सदा कोल। कलिजुग जीव सुत्ते अनभोल। अन्तिम वेले सारे गए डोल। निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुख साचे तोले पूरे तोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डंक आप वजाए ना कोई रक्खे पड़दा उहल। पड़दा उहला देवे वढ्ढ। काया चोली देवे छड्ड। गुरसिख बणाए साची गोली, रच्चया हड्ड हड्ड। इक्क बणाई साची डोली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई वेख विचार सारी दित्ती छड्ड। आपणी काया ना करी प्यारी, गुरसिख काया आण श्रृंगारी। गुरसिख रच्चया तेरी बहत्तर नाड़ी। कलिजुग जीवां आई किस्मत माढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़िमी अस्मान आपे बैठा पाड़ी। आपणी देह आप तजाई। गुरसिख साचे तेरी काया जोत जगाई। सृष्ट सबाई दए दुहाई निहकलंक प्रगट होया केहड़े थाँईं। केहड़ा देस केहड़ा वेस, ना कोई जाणे ना पछाणे, पुछदे फिरन जांदयां राही। साध संत ना मिले कन्त, ना फड़दा कोई बाहीं। कलिजुग माया पाई बेअन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिसे किसे नाही। आपणी काया दित्ती तज। सिँघ पूरन विच वड़या भज्ज। गुरमुखां पड़दे रिहा कज्ज। अमृत प्याए रज्ज रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ प्रगट होए विच मैदाना पए गज्ज। काया छड्डया झूठा चोला। गुरसिख तेरी आत्म हरि जी मवला। सृष्ट सबाई उत्तों कीता पर्दा उहला। एह काया झूठी जीवां जन्तां दिसे, एह पाया रोल घचोला। सृष्ट सबाई खिड़ खिड़

१३८
०४

हस्से, राह आपणा ना किसे दस्से, गुरसिख साचे चरन बहा के आप बणाए भोले भाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे तोल आपे तोले। आपणा छड्डुया काया बाणा। गुरसिख बणाया साचा राणा। जोत सरूपी विच टिकाणा। सृष्ट सबाई हरि वेखे, बेमुख किया अन्धा काणा। राजे राणे रहे भुल। भाग लगा केहड़ी कुल। सभ दी आत्म अमृत गया डुल्ह। काया पाणी प्या चुल्ह। गुर चरन फुल्ल फुलवाड़ी लाए, लग्गे साचे फुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं बूटे लाए लाल लाल लाल अनमुल्ल। लाल अनमुल्लड़े गुरसिख हीरे। इक्क दूजे दे बण जाओ साचे वीरे। सिध्धे हो जाओ वांग तीरे। दूई द्वैती प्रभ पड़दा चीरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जाम इक्क पिलाए जिउँ बालक माता सीरे। सच्चा सीर मुख चवांयदा। आत्म धीर इक्क दवांयदा। अमृत नीर मुख रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड पीरन पीर आप अखवांयदा। गुर संगत वडी वड्याई, विच संसार है। सारे रल मिल बहिणा बण के भैण भाई, ना बणना जीव गंवार है। लज पति पति लज एका सांझ रखाई, गुर गोबिन्द प्याई अमृत धार है। क्यों आपणा आप बैठे भुलाई, कल्गीधर ल्या अवतार है। चिट्टे घोड़े बैठा तंग कसाई, उत्ते होण वाला अस्वार है। साची रुत्त नेड़े आई, लग्गण वाली मात बहार है। गुरमुख साचे संत लए उपजाई, जेहड़े पहले रक्खे चरन द्वार है। वसदे जाण नगर खेड़े, जिस जाए चल द्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात पहली वार हे। गुण गाउँदी आई। गुर पूरे कन्न सुणाउँदी आई। आपणी बणत बणाउँदी आई। जोती जोत सरूप हरि, मिल्या मेल शब्द डोर आपणी हथ्थीं पाउँदी आई। गुर संगत गुण विचारया। इक्क उपजाई शब्द धुन, उपजे प्रेम अपारया। साचा राग कन्न सुण, मिटे अन्ध अंध्यारया। कोई ना जाणे तेरे गुण अवगुण, जोत सरूपी खेल अपर अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक पुरी घनक विच मात जामा धारया। संगत गुर, गुर संगत गाए सुहागी गीत। प्रभ अबिनाशी मिल्या साचा रागी, धुरदरगाही सभ दा वागी, बणया रहे सभ दा मीत। किस्मत सोई कलिजुग जागी, मानस जन्म जाणा जीत। चारों कुन्ट वा तत्ती लागी, ना कोई करे ठंडी सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए, ना मिले मन्दिर गुरदुआरे विच मसीत। सच्चे मन्दिर गुरूदुआरे। बैठे जीव वड वड हँकारे। मायाधारी की करन विचारे। इक्क दूजे दा करन प्यार वारो वारे। चढ़या रहे तईआ तापा। ना उतरे कदे बुखारे। कलिजुग वेले अन्तिम काया सर सरोवर रामदास तेरे सच सच्चे दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, पावे सभ दी सारे। गुर संगत गुर वड्याई। आपणी रसना दए वधाई। रैण सबाई मंगल गाया चांईं चांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया आप बहाए सभना थाउँ थाँईं।

१३६
०४

मिटे अन्धेरी रैण, मिटाए घनकपुर वास्सया। मिटे अन्धेरी रैण, प्रभ पुरख अबिनाशया। मिटे अन्धेरी रैण कलिजुग अन्धेर विनास्सया। मिटे अन्धेरी रैण, गुरमुख साचे वेखो खोल्ह नैण, निहकलंक बलि बलि जास्सया। मिटे अन्धेरी रैण, गुरमुख साचे संत मिल गुर चरनी बहिण, करे बन्द खुलास्सया। मिटे अन्धेरी रैण, रसना गीत सुहागी गायण, जन भगतां मानस जन्म रहिरास्सया। मिटे अन्धेरी रैण प्रभ अबिनाशी साचा बणे मात पित भैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रीत चलास्सया। हरि साची रीत चलांयदा। सृष्ट सबाई परखे नीत, इक्को गीत सोहँ शब्द सुणांयदा। बणे साचा मीत, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रीत चलाईआ, गुर संगत दर आई मंगत चाढ़े नाम रंगत, काया झोली दोहीं हथ्थीं आप भरांयदा। काया झोली देवे भर। अमृत सर सरोवर आप नुहाए साचे सर। एका रंग रंगाए साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनो आत्म भण्डारे देवे भर। भरे भण्डारा हरि भगवान। खोल्हे दुआरा गुरमुख बणे वणजारा, विरला साचा संत दर आए बण भिखारा। प्रभ वंडे शब्द अपारा। मिटाए आत्म तृखा, अमृत देवे धारा। बेमुख विच मात फिरे अवारा। ना मिले कोई सच्ची धारा। ना सिक्खी साची सिख्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान साची देवे दात सोहँ नाम साची भिच्छया। साची भिख्या हरि जी पाई। गुरसिक्खां लेखा रिहा सुणाई। सोहँ शब्द तीर ल्या तिक्खा, आत्म विक्खा रिहा लाई। साचा लेख धुरदरगाही आपे वेख, लेखा चुक्के जम की फाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग पार उतारे गुरमुखां फड़े बाहीं। फड़ बाहीं पार उतारदा। ना आवे पासा हार दा। गुरमुख साचा संत जन जो रसन उचारदा। तन मन्दिर तोड़े गढ़ किला हँकार दा। गुरमुखां दस्से राह इक्का राह सच्चा परवरदिगार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क द्वार सच्चा घर बाहर सर्ब नर नार वेखे हरि निरँकार दा। हरि निरँकार निज घर वास है। गुरमुख आत्म वेख दर द्वार सच्चा धरवास है। काहनूं भज्जे फिरदे बाहर, हरि होया बैठा तेरा दास है। ना कोई गाए शायरी शायर, महिंमा अगणत पुरख अबिनाश है। गुरमुखां तारे कर कर आपणी मेहर, हरि जोत सरूपी आत्म पाउँदा रास है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द रसन चलाए सुणाए मात पताल अकाश है। मात पताल गगन। गुरमुख लग्गे एक लग्न। गुरमुख साचे संत जनां आत्म जोती दीपक जगण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सुरत शब्द बंधाए, इक्क दूजे दा संग रलाए, बैठे कोल कोल फबण। सुरत शब्द हरि जोड़ जुड़ाईआ। दोहां धिरां दा मेल मिलाईआ। इक्क बणाए साची नईआ। गुर संगत बणाए भैणां भईआ। फड़ फड़ बाहों उप्पर चढ़ईआ। शब्द चप्पू इक्क लगईआ। कलिजुग तेरा डूंघा डूंघर प्रभ अबिनाशी पार करईआ। जोती जोत सरूप

हरि, इक्को इक्क पार किनारा गुरमुखां नेड़ आप वखईआ। इक्को इक्क किनार हरि वखांयदा। ना कोई पावे सार, दु:ख उठांयदा। गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों पार उतारदा। जाए तार हरि निरँकार, शब्द धार इक्क रखांयदा। जो जन होए जीव मुग्ध गंवार, दर दर फिरन झक्ख मार हथ्थ किसे कुछ ना आंयदा। साचा करन विहार, हरि करतार पावे सार सर्ब नर नार, पड़दा उहला ना कोई रखांयदा। मिल्या कन्त हरि भगवन्त सच्चा भतार, सुखी होए नर नार, आत्म जोती लेखा लिखे अपर अपार, जोत सरूपी जामा धार, गुरमुख साचे ल्याए दर द्वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्न वखांयदा। आए चल द्वार। हरि साचा सुण पुकार। कलिजुग अन्तिम वहणा डूंघी धार। प्रभ का भाणा सिर ते सैहणा पैणा, ना करे कोई उधार। गुरमुख साचे संत वेखण नैणां, बेमुखां पैंदी मार। आप पहनाए तन साचा गहणा, सोहँ शब्द तन शृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए गुरसिक्खां सार। सोहँ शब्द तन शृंगारया। गुरमुख साचे संत आप आपणे उत्तों वारया। आपे बणे माई बापा, आपे मारे तीनो तापा, सोहँ देवे सच्चा जापा, हरि अपर अपारया। आपे धोए दाग पापां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारया। कलिजुग जीव पापी पाप कमाउँदे। प्रभ अबिनाशी मनों भुलाउँदे। माया जूठे झूठे धन्दे आपणा मूल गंवाउँदे। अमृत आत्म ना सच्चा सीर कँवल नाभ उपजाउँदे। विच्चों निकले हउमे पीड़, दु:ख रोग सोग ना कोई मिटाउँदे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात आया जोत धर, दर घर साचे आए शरमाउँदे। दर सच्चा हरि द्वार है। कोई ना एथे वसे दुष्ट दुराचार है। गुरसिक्खां संग पूरा वसे, बैठा रहे दर द्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे सच्चा इक्क प्यार है। इक्क प्यार दए दिलासा। अमृत प्याए सच्चा जाम, गुरसिख मानस जन्म होया रासा। कोए ना लग्गे एथे दाम, पूरे होवण सारे काम, जो जन तजाए मदिरा मासा। प्रगट होया घनईआ शाम, इक्को जोत रमईआ राम, निहकलंक बलि बलि जासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत जगत बलोए, तिन्नां लोक आप बसोए, मात पताल अकासा। तिन्नां लोकां कर उज्जयार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मातलोक हरि पावे सार। गुरमुखां दर आए, पूर्ब कर्म विचार। मिटाए तृष्ना भुक्खा, ना रहे तन दु:खा, सुफ़ल कराए मात कुक्खा, जन भगतां पावे साची सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरे देवे वरे सच्चा इक्क भण्डार। इक्क भण्डारा आपणा भर। सोहँ शब्द लैणा वर। गुरमुख साचे जाणे तर। आप खुल्हाए साचा दर। अग्गे बैठा दिसे हरि। जोत सरूपी जोत धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा अन्तिम वसे साचे घर। आत्म साचे घर घर वसेरा। कलिजुग जीव तन काया भाण्डे काचे, दिसे अन्ध अन्धेरा। हरि जी साचा हिरदे वासे, होए लोअ

चार चुफेरा। बेमुख दर ते आए नाचे, सार ना पाए पहली वेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए साचो साचे, ना कोई करे हेरा फेरा। हेरा फेरा ना दलगीरी। पहली वेरां कलिजुग तेरी मिट जाए पीरी फ़कीरी। शब्द सरूपी पाया घेरा, दोहीं हथ्थीं जाए चीरी। उठया शेर शेर दलेरा, वधदी जाए सभ दी पीहड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत सर्ब रखाए, ना जाणे हस्त कीड़ी। इक्को जोत सर्ब टिकाईआ। थाउँ थाँईं लक्ख चुरासी आपे आप बहाईआ। गुरमुखां करे बन्द खलासी, देवे नाम शब्द वड्ड्याईआ। जो जन होए मदिरा मासी, दर साचे रहण ना पाईआ। जो जन गाए स्वास स्वासी, करे जोत सच्ची रुशनाईआ। साची बणत गुरसिक्खां आप बणाईआ। बणत बणाए हरि जगदीश। गुरमुख साचे तेरी कोई ना करे मात रीस। साचा शब्द आप चलाया, साचा ताज आप पहनाया, आप बन्न्हाए तेरे सीस। साज बाज ताज आपणे हथ्थ रखाया। अन्तिम वेले रक्खे लाज, माझे देस मारे आवाज़, चारों तरफ पैणी भाज, गुर संगत तेरा इक्का इक्ठ्ठ कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम पंचम् जेठ देवे चढ्ढ कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम होणी चठ , आप कराए तेरी आपणी हथ्थीं हरि समरथ। सच्चा इक्क तन्दूर बणाए, सभ तों वडा भट्ठ। लक्ख चुरासी इक्को पूर बणाए, विच पाए करे कट्ठ। थल्ले अग्ग मट्ठी मट्ठी डाहे, ना बाहर जाए कोई नठ्ठ। चारों कुन्ट वारो वार मुकाए, अन्तिम पाए सभ नूं इक्को वडे भट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां धीर धराए, देवे शब्द सच्चा हट्ठ। सच्चा शब्द हथ्थ हथौड़ा। बेमुखां सिर आपे मारे, भन्ने रीठा कौड़ा। गुरमुखां प्रभ पावे सारे, धुरदरगाही आए दौड़ा। प्रगट होए चरन छुहाए जमन किनारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले गुर पूरा बौहड़ा। हरि होया जगत दीवाना। कलिजुग जीव कन्न सुणाना। जिस ने कीना इक्क निशाना। सोहँ फड़या तीर कमाना। कोई ना अग्गे इस दे अड़या, सभ दा सीना छाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बणे आपे दाना बीना। हरि बणया शाह फ़कीर है। बेमुख जानण कोई हकीर है। वेले अन्त हथ्थ ना आउणा नीर है। चारों कुन्ट उठ उठ वेखण वड वड औलीए पीर गौंस, घर घर बैठे सारे मारन धौंस, ना कोई जाणे की होणा अन्त अख़ीर है। कलिजुग तेरी उलटी रौंस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द वेलने रिहा पीड़ है। शब्द वेलणा आप बणाया। अचरज सारा खेल रचाया। आपणा तन ख़ाक रुलाया। दूजे गुरमुख साचे विच काया डेरा लाया। तीजी संग रलाई साध संगत, तिन्ने मिल इक्ठ्ठे बहिण, साचा मार्ग जगत चलाया। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी पहली कूट फेरा पाया आपे दए ढाहया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं इक्को गेड़ा आप दवाया। आपे पीड़े पीड़ पिड़ाए। गुरमुखां अमृत साचा सीर प्याए। बेमुख तन लग्गा, दुःखा

ना कोई हटाए। मात गर्भ उल्टे होए रुक्खा, ना कोई छुडाए। गुरसिख गुर चरन प्रीती भुक्खा, प्रभ अमृत मुख चुआए। इक्क उपजाए साचा सुखा, निजानंद विच समाए। उज्जल होए गुरसिख तेरा मुखा, तेरी रसना सोहँ शब्द गाए। सुफल होए मात कुक्खा, गुर चरन सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपे होए सहाए। होए सहाई जिस बणत बणाई। क्यों रहे शरमाई गाओ चांईं चांईं। रसना जिह्वा साची लाई। भरम भुलेखे कोई रक्खया नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को हरि इक्को घर इक्को दर इक्को देवे सच्चा वर, नीती परखे थाउँ थाँईं। परखे नीत सर्ब विचारदा। जिस जन होए चरन प्रीत, फड़ बाहों कलिजुग तारदा। करे काया ठंडी सीत, कढ्ढे अफार तन हँकार दा। दरस दिखाए साचा हरि जोत सरूपी जामा धारदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, रसना आपणी हरि उचारदा। काया होए ठंडी सीत, कर दरस निहकलंक अवतार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे डुबदे पत्थर फड़ फड़ तारदा। गुर पूरा गुण निधान है। गुर पूरा चतुर सुजान है। गुर पूरा मेहरवान है। गुर पूरा देवे जीआ दान है। गुर पूरा गुरमुख विरला आए लेवे, किरपा करे आप भगवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता मेहरवान है। गुर पूरा गुणी गहीर है। गुर पूरा गुरमुखां देवे साची धीर है। गुर पूरा वड वड पीर फ़कीर है। गुर पूरा आत्म हँकारी कढ्ढे हउमे पीड़

है। गुर पूरा जोती जोत सरूप हरि, इक्क चलाए शब्द सच्चा तीर है। गुर पूरा गुरमुखां माण देवे शब्द सच्ची दात विच जहान है। गुर पूरा गुरसिख तेरा सच्चा दीन ईमान है। कलिजुग माया विच ना रुल, ना बणना अन्त निधान है। गुर पूरा वडा शाहो शाह सुल्तान है। गुर पूरा दरगहि साची गुरमुख तेरे नाउँ लाए सच्चा थाउँ मकान है। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान है। गुर पूरा गुर गोपाल। गुर पूरा दीन दयाल। गुर पूरा भगत वछल रछक कृपाला। गुर पूरा ना कोई करे बचन अधूरा, बण जाए मात सूरा उतरे पूरा, जोती जगे नूरो नूरा जिउँ कोहतूरा, मिल्या हरि सच्चा सर्बकला भरपूरा ना वसे दूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता वड वड वड सूरा। तन मन्दिर अपर अपारा। मन बन्दर फिरे दहि दिश धारा। ना पाए कोई शब्द भण्डारा। ना सिर धराए एहदे आरा। जोत सरूपी वसे अन्दर, आपे पाए सारा। मति मन बुध हरि विच टिकाई। गुरमुख विरले आई सुध, कलिजुग जीव आत्म होई हलकाई। पंजे चोर अड्डे पहर करदे रहण युद्ध, लग्गी रहे तेरे घर सच्चे लड़ाई। मन चँचल हारा उत्ते वसे बुध, मति थल्ले रही शरमाई। दूजी वस्त हरि रक्खी नाल बुध, मार लफ्फड़ थल्ले देवे लाही। रसना जपया साचा नां, चिट्टा होया दुध्ध, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाई। निर्मल होए गुरसिख तेरी बुध, सुरत शब्द मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सच्ची डोरी

आपे दए बन्न्हाई। वस ना आवे एह मन विच्चों तन भरम भुलेखा निकले जन। उत्ते पाए शब्द छप्परी छन्न। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्दर बैठा सभ नूं लाए डन्न। एका रक्खणा चरन ध्यान। रक्खणी ओट श्री भगवान। शब्द गाउणा खिच्च कमान। नेत्र बन्द कराउणा, कन्न ना सुणना कोई शब्द अन्ध अंध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए जोत सरूपी वड मेहरबान। सोहँ शब्द रसना गाए। स्वास स्वास हरि ध्याए। तन खेड़ा वसाए, मास ग्रास मुखों आप छुडाए। हरि हिरदे करे वास, लग्गे काया रोग गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता सोग सर्ब मिटाए। एका गाए शब्द स्वासा। मानस जन्म होए रासा। काया तन दुःख रहे ना मासा। रसना कहे धन्न धन्न गाउँदी रहे कर कर हासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर आत्म रक्खे वासा। अन्तिम अन्त नाम मिली वड्याई। भुल्लया रुल्लया जीव जन्त, ना होया कोई सहाई। इक विछोड़ा प्या कन्त, ना कोई मेल मिलाई। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे सभनीं थाँईं। वेखे हरि पवण मसाणा। इक्को मारे शब्द बाणा। जोत सरूपी साचा राणा। भूत प्रेतां वस कराना। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार शब्द डोरी नाल बंधाना। गुर नानक तेरा लिख्या शब्द, कलिजुग जीआं हथ्थ ना आना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रसना आपे गाणा। गुर नानक एह शब्द अलाया। विच बंगाले एह सुणाया। मरदाना बणया भेडू, गुर पूरे आप छुडाया। सारे रोवण कढु कढु लकीरा, ना सके कोई छुडाया। एका इक्क निरँकार, करोड़ उनन्जा एका शब्द बणाया। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश शब्द चलाया। उस दा फल एह रखाया। त्रैलोकी नूं आप बंधाया। आपे बन्न्हे मन चित सुरत लाया। नाम निरबाण तीर चलाया। जेतीआं मुशकलां तेतीआं असान कराया। मसाण पौणा का रूप, शब्द डोर नाल बंधाया। किंगर किंगर उत्तों ढाहया । नानक तेरा लिख्या शब्द ना किसे मिटाया। जम का बेटा बन्न वखाया। कालका मात दए दुहाया। नानक चल के किधरों आया। शब्द फाह जिस ने पाया। लोहे दे संगल नाल बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, नानक तेरी रसना चल्लया तीर, प्रगट होए निहकलंक देवे फेर लिखाया। गुर नानक बद्धे सारे पीर। इक्क चलाए शब्द तीर। सभनां पाए आप वहीर। मरदाने दित्ती इक्को धीर। सभ दे पड़दे देवे चीर। गुर नानक तेरी कौण मिटाए, चिट्टे उत्ते लग्गी काली लकीर। पहले मदिरा मास तजाउँणा। दूजे रसना नाल गाउणा। तीजे नेत्र तीजे नैण दरस दिखाउणा। चौथे पौड़े साचे घर उप्पर चढ़ साचे धाम वास रखाउणा। पंचम् पंचा राणी कलिजुग माया बेमुहाणी काया विच्चों बाहर कढाउणा। जोती जोत सरूप हरि आपणा आपे मेल मिलाउणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर शब्द डोर नाल गुरमुख साचे आप बंधाउणा। काम क्रोध लोभ

१४५
०४

मोह हँकार ना तुट्टे जंजाल, होया कंगाल तन ना बणाया सच्ची धर्मसाल। ना मिल्या हरि अनमुल्लड़ा लाल। ना बणया कोई विच दलाल। जेहड़ा देवे सच्चा थां वखाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लए सुरत संभाल। इक्क नाम सर्ब प्रधान। पंचां चोरां मारे इक्क शब्द बाण। आपे बन्ने साची डोर, गुरमुख रक्खे चरन ध्यान। दु:ख रोग जाए निवार, दीपक जगे नूरो नूरा, ना आत्म दिसे सुंञ मसान। मिट जाए अन्ध घोरा, चुकाए जम की कान। पंचे जूठे झूठे पाउँदे रहण अन्दर शोर, ना सुणन शब्द सच्चा कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा नाम रिदे वसाए कारज सिध्धे आप कराए, आत्म विधे तीर चलाए आपे करे आत्म ध्यान। जोत जगाए बहत्तर नाड़। बाहर कढ्ढे झूठी धाड़। माया अग्न विच देवे साड़। जोती जोत सरूप हरि, पंचां चोरां बाहर रक्खे दर दरवाजिउँ झाड़। तन चढ़या रहे अफार। ना लथ्थे उत्तों भार। ना आवे किसे सार। दु:ख लग्गा अपर अपार। जोत सरूपी किरपा कर आए चल द्वार। लग्गे तन अफारा उल्टे साह। दुखी रहे जीव विचारा, कोई छुटकारा करावे ना। प्रभ अबिनाशी पावे सारा, सोहँ देवे साची धारा, जो जन रसना लए गा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द स्वामी सारा दु:ख दर्द दए बाहर कढा। चरन कँवल उप्पर धवल रहे मवल, प्रगट होए कान्हा सवल, बेमुखां आत्म होई बवल, ना आत्म खिड़या किसे कँवल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा मवल। सच दुआरा मंगी साची भिच्छा। जोत सरूपी हरि करतारा, करे पूरी इच्छा। देवे नाम शब्द भण्डारा, साची देवे सिक्खा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख दर घर साचे आपे देवे लिक्खा। शब्द गाउणा प्रभ अबिनाश साचा पाउणा। सर्ब घट वास रिदे वसाउणा। होए बन्द खलास महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर सन्झ सवेर रिदे वसाउणा। मिली सच वस्त रक्खणी जगत संभाल। कलिजुग वेला अन्तिम आया, ना होणा कदे कंगाल। सच दात हरि झोली पाए, सोहँ शब्द वडा धन माल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बणया सच्चा विचोला जगत दलाल। चरनी सीस निवाई जा। रसना नाल गाई जा। हिरदे विच वसाई जा। हउमै रोग गंवाई जा। आत्म जोत जगाई जा। अज्ञान अन्धेर मिटाई जा। स्वच्छ सरूपी प्रगट होया, दर घर साचे साचा दर्शन पाई जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना नाल ध्याई जा। रसना ध्याउणा पन्ध मुकाउणा। आत्म पड़दा साचा लाहुणा। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए दर घर साचे मन्दिर काया अन्दर दरस दिखाउणा। तन माटी इक्क बणाया। अचरज खेल हरि रचाया। दूजा मेल मन कराया। तीजे काया मन्दिर विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां वेख विचारे पावे सारे, आत्म दुखड़ा देवे लाहया। तन मन दोए होए रोगी।

आत्म होई जगत विजोगी। कोई ना लग्गे सच्चा भोगी। अट्ठे पहर बणया रहे आत्म रोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां विच्चों पीड़ पिड़ाए, अमृत साचा सीर प्याए, कटे हउमे रोगी। जोत जगाए तेरी विच ललाट। आप कराए पिछला पूरा घाट। साचा रस रसना लैणा चाट। तीजे लोयण पड़दा जाणा पाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं रिहा काट। हरि नेत्र नीर विरोले। तेरा तीजा नैण खोल्हे। विच्चों बैठा हरि जी बोले। जेहड़ा वस्सया रहन्दा ओहले। काया डूंघे अन्धेर भड़ोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बणाए, ना विच मात दे डोले। एका देवे जोती नूर। शब्द देवे साची तूर। प्रभ अबिनाशी वडा दाता सूर। आत्म तेरी हरस मिटाए सर्बकला भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा सभ दी पूर। चरन प्रीती लैणी जोड़। दर घर साचे आए गुर पूरा, किसे ना देवे मोड़। साचे राहे आपे पाए, ना करे तोड़ विछोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए चढ़ाए शब्द साचे घोड़। सच्चा शब्द पवण अस्वारा। वसदा रहे काया महल मुनारा। राह साचा दस्सदा रहे, उठ सोया जीव गंवारा। हरि हिरदे सदा वसदा रहे, जोत सरूपी निराहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे वर, जाणा तर नहाउणा अमृत साचे सर, कलिजुग अन्त भुल ना जाणा। नाम सच्चा सच सुगाती। आत्म साची जोत जगाए, ना कोई रक्खे दीवा बाती। जोती

१४६ ०४ जोत सरूप हरि, आप मिटाए कलिजुग तेरी अन्धेरी राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाण सो जन होए चतुर १४६ ०४

सुजान विच लोकमाती। सिर पैरां तन लग्गी अग्ग। तत्ती वा रही वग। गुर पूरे साचे किरपा कर, मुख लगा सोहँ शब्द सच्चा सग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोग सोग सर्ब मिटाए वड दाता सूरा सरबग। दुःख दर्द हरि देवे भन्न। सोहँ शब्द सुणावे कन्न। आप वसावे तन मन्दिर साचे तन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोगां सोगां चिन्ता कर्म वियोगां लाए डन्न। जीव अञ्याणा होए बंवरा। प्रभ आप पछाणे गहरा गंवरा। अन्दर बाहर बाहर अन्दर इक्क रोग इक्क सोग, मानस जन्म ना अजे संवरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेटे चार चुफेरे जो लग्गा रहे दवरा। दुःख पीड़ आप बंधाई। साची बीड़ इक्क रखाई। देवे पीड़ शब्द वेलणा रिहा चलाई। गुरमुख साचा आया दर, चुक्कया डर आपे लए हरि छडाई। औखा दिसे राह विच संसार। एथे मिलदा फाह, जे कोई जाए भुल गंवार। जो जन रसना गाए साहो साह, बेड़ा करदा पार। चरन लाग जे कोई अग्गों करे नाह, मारे शब्द डाहढी मार। गुरसिख मन्ने साचा भाणा करे हां हां, फड़ फड़ बाहों कलि जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, औखी घाटी आप दिसाए, मदिरा मास रसना तजाए, ना कोई करे अहार। मदिरा मास जिस जन तजाउणा। गुर दर साचे फेर आउणा। पहलों दोए जोड़ सीस झुकाउणा। पिछली

भुल दर बख्शाउणा। अग्गे राहे आपे पाउणा। देवे मति देवे धीरज यति, भुल्लयां आप समझाउणा। शब्द बीजे साचे वत, सोहँ बीज आपणी हथ्थीं आप बिजाणा। आपणी रसना चरखा लैणा कत्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर आप ध्यावणा। पी अमृत पूरी होए आस। आप बुझाए तेरी लग्गी सच्ची प्यास। साची दात विच रलाए आपणा आप, तेरे मुख लगाए होया रहे दास। एका सुख तन उपजाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे सुखाले सास ग्रास। इक्क इकल्ला अरज गुजारे। प्रभ पावे सारयां सारे। खिच्चे विच्चों इक्क भरया हँकारे। करे बेनन्ती इक्क दुआरे। हउमे विच्चों सभ दे मारे। भैणां भईआं माता पिता, इक्को बख्शे साचा इक्क प्यारे। पुत्तां धीआं साचा जीआं, इक्को रक्खे साची धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आपे लाहे सर्ब अफारे। रखणा चरन ध्यान। अग्गे मिले शब्द बबाण। साचा दर घर गुरमुख विरले पाण। चल के आयण दर करन चरन धूढ़ इशनान। सच भण्डारा आत्म दुआरा हरि देवे भर, बणाए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां झोली पाए जो जन मंगे शब्द सच्चा दान। रोग अवल्लड़ा काया अन्दर। ना जीवड़ा होए सुखलड़ा, ढहिंदा जाए झूठा मन्दिर। प्रभ अबिनाशी फड़या पलड़ा, रोग सोग मिटाए वड़या रहे विच अन्दरे अन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई जूह जंगल विच पहाड़ डूंघी कन्दर। शब्द दान जिस जन मंगया।

१४७ ०४ १४७ ०४

दर घर साचे मूल ना संगया। साचा शब्द तन सुहाए, सोहँ शब्द साचा कंगणा। इक्को राम नज़री आए, दूजा दर ना कोई मंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखाए हरस मिटाए, मानस जन्म ना होण देवे भंगणा। मंगो मंग इक्क करतार। देवे सच्चा रंग सोहँ शब्द अपर अपार। होए सहाई अंग संग, कलिजुग अन्तिम देवे तार। आपे कटे भुक्ख नंग, वड दाता हरि दातार। अमृत साचा सीर प्याए गंग, काया रक्खे ठंडी ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम अधार। पहले आपणा मन समझाउणा। दर घर साचे फेर आउणा। लोक लाज नूं गलों लाहुणा। साचा ताज हरि साचे सिर पहनाउणा। मारे शब्द अवाज़, गुरसिख सोया गूढ़ी नींद प्रभ अबिनाशी आपे आप उठाउणा। सच्चा देवे धुर दरगाही राज, लक्ख चुरासी गेड़ कटाउणा। आप संवारे गुरसिख तेरे काज, दर दरबान आप मेहरवान अख्वाउणा। प्रगट होया शेर सिँघ सच्चा महाराज, निहकलंक जिस नाउँ रखाउणा। आत्म देणा इक्क दिलासा। गुर पूरे चरन रक्खणा भरवासा। चुकाए मरन डरन, खुल्हाए हरन फरन, मानस जन्म कराए रासा। गुरमुख विरले विच मात तरन, लाग सरन रसना रस तजाउणा मदिरा मासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा नाम जाम प्याए, भरया रहे गुरसिख तेरा काया कासा। अमृत पीणा सच्चा जाम। सोहँ देवे सच्चा नाम। पूर कराए आपे काम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

इक्को सच्ची नीती परखे, मंगे ना कोई दाम। ना रक्खे विच विचोला। पूर कराए काम, जो जन चरन होए गोला। प्रगट होया घनईआ शाम, सृष्ट सबाई किया पड़दा उहला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द इक्को बोला सच्चा बोला। गुरमति सच पछाण। गुरमति इक्क वखाए सच्चा तत्त मूर्ख मुग्ध बणाए चतुर सुजान। गुरमुख सोहँ शब्द रसना रट, तेरी ना उब्बले काया रत, किरपा करे महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस वाली दो जहान। पहलों करनी इक्क सलाह। कलिजुग अन्तिम बणे केहड़ा सच्चा मलाह। दर उहदे ते फबीए, पार कराए फड़ के बांह। हड्ड मास ना रसना चबीए, बत्ती दन्द दए भन्ना। अन्त पाए धर्म राए दे बन्दीए, जमदूतां हथ्थ हथौड़े दए फड़ा। बेमुखां काया ढाहुन्दे जाण जिउँ रेत कंधीए, ना होए कोई सहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचा हुक्म सुणाए, जो जन सोहँ शब्द रसना गाए, आपणी बणत लए बणा। आपणी बणत जिस जन बणाउणी। लग्गी प्रीत तोड़ निभाउणी। कलिजुग हरि वढ्ढण वाला हाढ़ी साउणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को वाढी इक्के वार पाउणी। सुक्कया हरया होवे तन। साचा शब्द जाए मन। प्रभ बेड़ा देवे बन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए हरया तन। भाई भाईआं रहे जुदाई। ना कोई दूजा मेल मिलाई। तीजे होए आप सहाई। इक्को थां दए बहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

१४८
०४

एका बुद्धी साची सुध्धी सभ नूं दे समझाई। गुर पूरा सेव कमांयदा। दर देवे सच्चा मेवा, सोहँ फल खवांयदा। प्रगट होया वड देवी देवा, जोती सच्ची आप जगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दर साचे माण दवांयदा। सेवा करे हरि दातार। गुरमुखां सीस छत्र रिहा झुलार। प्रगट होया हरि जगदीश जोत सरूपी निराधार। भेव चुकाए बीस इकीस सदी बीस कर विचार। क्या कोई करे गुरमुख तेरी रीस, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणया रहे सेवादार। सेवा करे सच्ची सरकारा। गुरमुखां आए चल दुआरा। आप मिटाए लग्गी भुक्खा, देवे आपणे हथ्थां नाल प्यारा। इक्क उपजाए सच्चा सुखा, जगाए जोत काया महल मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण आया गुरसिक्खां दा दर दुआरा। गुरमुखां दर हरि जी आए। आपणी झोली अग्गे डाहे। सच प्रीती कोई झोली पाए। भुल बख्शे जो पिछे कीती, अग्गे मार्ग पाए। कलिजुग औध अन्त गई बीती, सतिजुग मात धराए, काया करे सीतल सीती, अमृत सच्चा जाम प्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आयां पूरी इच्छया आप कराए। दर सच्चे दरबार। दोए जोड़ कर निमस्कार। किरपा कर साचा हरि दुःख दर्द दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तारे नारी नार। नर नारी हरि तरांयदा। कराए गुरसिख गुर संगत प्यारी, साची रीत इक्क चलांयदा। करे खेल विच

संसारी, किरपा कर अपर अपारी, शब्द डोरी नाल बंधांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा माण विच जहान आपे आण रखांयदा। रक्खे माण हरि विच जहाना। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी साचा छत्र सीस झुलाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए वड बली बलवाना। निहकलंक छत्र झुलांयदा। आप सुहाए थान बंक, गुर संगत संग रलांयदा। इक्को रखाए इक्को अंग, सोहँ गीत सच्चा रसना जाप जपांयदा। मात पित छड्डण भैणां भाईआं ताईं, भाई सका राह अड्डो अड्ड रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणे चरन लगांयदा। महिंमा अगणत अपार सर्ब सुखदाया। क्या कोई करे विचार, साची खेल इक्क रघुराया। दुक्खां रोगां पाए सार, भूत प्रेतां बन्न वखाया। फड़ फड़ विच्चों कढ्ढे बाहर, शब्द डण्डा रिहा लगाया। लग्गा सच्चा इक्क दरबार, रोगां सोगां कोई रहण ना पाया। काया दुखड़े दए निवार, क्या कोई जाणे जीव गंवार, ना दिसे किसे नज़र आया। आपे पावे सार, जिस साची बणत बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द कटार हथ्थ उठाया। साचा दर हरि खुल्हाए। अट्ठे पहर ना बन्द कराए। दूजी ना कोई विच कंध रखाए। भाग मन्द ना दर ते आए। प्रभ अबिनाशी सद बख्शंद, गुरमुखां लए तराए। खुशी कराए बन्द बन्द, अमृत साचा मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम गुरसिक्खां आप वसाए।

१४६
०४

गुरमुख वसण साचे थां। जिथ्थे मिले ठंडी छाँ। दुःख ना रहे विच काया किल्हे, आप बन्न्हे शब्द डोरी नाल। वड काया अन्धेरी खड्डे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप पछाणे कोई पाए हिस्से ना। आत्म ध्यान करे विचारे। वेख विचारे दुःख लग्गे भारे। जोत सरूपी साचा हरि, आपणी किरपा आपे धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे भन्ने आपे डन्ने, आपे घड़े आपे भन्ने, साचा शब्द सुणाए कन्ने, करे खेल अपारे। साची शब्द लग्गी सट्ट, वज्जा काया सच्चा फट्ट, झूठा भज्जण लग्गा मट, जोत जगण लग्गी लट लट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खां रोगां फेरे आरी विच्चों जाए कट। कटे रोग कर तिक्खी धारी। विच्चों हड्डां नाड़ां कढ्ढे बाहरी। लहू मिझ खाण ना करन कोई होर अहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डोरी इक्क बंधाई, वाग आपणे हथ्थ रखाई, आपणा करे सच विहारी। बीर बैताले होए बेहाले। भज्जण लग्गे झूठे डाले। टुट्टण लग्गे जगत जंजाले। छुट्टण लग्गे काया दुशाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया बैठा सभ दी सुरत संभाले। पावे सार कर विचार। अमृत बरखे ठंडी धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए एका आपणी सच्ची कार। गुर संगत मिल मंगल गाया। कलिजुग वज्जा संगल, प्रभ अबिनाशी गलों तुड़ाया। अन्तिम वेले फड़या लड़, आपणे नाल बन्न्हाया। दर घर साचे बैठा सृष्ट सबाई नाल रिहा लड़, शब्द सरूपी खेल रचाया। सचखण्ड

१४६
०४

निवासी विच मात गुरमुख साचे अन्दर बैठा वड़, आपणा भेव छुपाया। मारी रक्खी डाहढी दड़, अन्तिम लए फड़, ना सके कोई छुडाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। गुर संगत गुर दर खुशी मनाईआ। वाह वाह मिली सच्ची वड्डयाईआ। देवे निथाविआं थां आपणे चरन बहाईआ। आपे बणे पिता मां, आपणी गोद रिहा उठाईआ। आपे फड़े गुरमुखां बांह, पार किनारा इक्क रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां विच मात देण आया वधाईआ। मातलोक दए वधाई। गुर संगत खुशी मनाई। चढ़ी रहे साची रंगत, ना सके कोई लाही। बण जाए साची संगत, मदिरा मास रसना तजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले कलिजुग होए आप सहाई। गुर संगत गुर पूरा पाया। रसना हरि हरि साचा गाया। दर घर साचे आप सुहाए, रल मिल एका नाम सच्चा राम, आपणी रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि, दर घर साचे पाया। सच्चे घर मिल्या शाह। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह। लेख लिखाए अन्तिम अथाह। धारी बैठा जाणे कोई ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए नां। आपे बोले बोल बुलाए। विच विचोला ना कोई रखावे। पड़दा उहला सर्ब हटावे। काया डोला वेख वखाणे, अन्तिम दुःख उठावे, छड्डणा पैणा देही चोला, ना कोई अन्त छुडावे। इक्क मिले नाम अनमोला, दुक्खां रोगां पार करावे। महाराज

१५०
०४

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरे तोल तोला, आपणा कर्म आप करावे। गुरसिख तार तार। कर कर प्यार। आत्म सभ वेख विचार। दर बैठे नर नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपे पाए सार। घनकपुर वास्सया। लाहे काया तन एका लग्गी अट्ठे पहर उदास्सया। दर घर साचे देवे पैज संवार, करे बन्द खुलास्सया। साचा शब्द देवे तन शृंगार, मानस जन्म होए रहिरास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्ने साची धार। साचा नाउँ जगत वणजारा। मिले एका सच्चा थाउँ, ना लभ्भे किसे होर दुआरा। सदा पीओ खाओ, दुःख भुक्ख ना लग्गे भारा। तन काया नाल हंढाओ, अन्तिम उतरे पारा। प्रभ अबिनाशी पूरा पाओ, पाए अन्तिम सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मंगण आए चरन दुआरा। चरन द्वार सच्चा धाम। चरन द्वार पूरन होए काम। चरन द्वार इक्क पिलाए सच्चा जाम। चरन द्वार आप मिटाए अन्ध अन्धेरी शाम। चरन द्वार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आयण चल दरगहि साची, हरि आप रखाए नाम। दरगहि साची सच टिकाना। गुरमुख विरला जाणे जिस मिल्या नाम निधाना। जो जन चले प्रभ के भाणे, आत्म देवे सुख महाना। कलिजुग जीव होए अन्धे काणे, भुल्लया हरि भगवाना। आपे फड़े फड़ स्याणे, काया डूंघर ताल ना कोई रक्खे वञ्झ मुहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आपे जाणा। आपे जाणे वेख विचारे, बेमुख

भुंने जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। शब्द फुंकारा देवे मार। गुरमुख साचा रंग साचा माणे डिग्गे चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। अवतार नर हरि वेख वखाणे। दर घर जंगल जूह पहाड़, वेखे विच उजाड़, नेत्र पेखे आप रखाए, सभ नूं डोर शब्द नाल बंधे पीर औलीए गौंस शेखे, बीर बेताले खड़े रहण दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे रिहा कर। भाणा रक्खे हथ्थ सच्चा राणा हरि करतार। गुरमुख साचे सुख साचा माणा, मिल्या कन्त सच्चा भतार। सोहँ शब्द लाए आत्म बाणा, बज़र कपाटी चीर होए पार। आप पहनाए तन चिट्टा बाणा, सोहँ शब्द कर श्रृंगार। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे जो जन रसना रहे उचार। दर घर साचे रंग साचा माणा, उतरे सिर दा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न भट्ठी इक्क तपाई, सभ नूं विच देवे डार। अग्न भट्ठा रिहा तप। प्रगट होए तिन्ने तप। बेमुख जीवां शब्द सरूपी लड़ना सोहँ इक्को सप्प। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां माण ताण रखाए एका देवे सच्चा जप। सच्चा जाप आप जपाउणा। आया आप आपणा आप वखाउणा। मारे तीनो ताप, वड प्रताप दु:ख रोग सर्ब मिटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शे पाप सराप जो जन दर आए भुल बख्शाउणा। पापी बन्दे आत्म अन्धे। कलिजुग होए भाग मन्दे। काया चोली होए गन्दे। इक्क गंवाया परमानंदे। झूठे लग्गे माया धन्दे।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगाए आप बणाए साचे बन्दे। चरन लाग होए चतुराई। गुरमुख साचे परमगत पाई। आप रखाए धीरज यति संतोख, देवे सुख कलिजुग अन्तिम होए मोख, लए आप छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए सुक्की कुक्ख करे आप हरयाई। इक्क इक्क आवे गुरसिख उठ। प्रभ अबिनाशी इक्क इक्क देवे भर भर मुट्ठ। दर घर साचा कोए ना जाए रुट्ठ। गुरमुख साचा लुकया रहे ना कोई गुट्ठ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम गया तुठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां हथ्थ फड़ाए जूठे झूठे ठुट्ठ। प्रभ अबिनाशी पाए वंडी। गुरमुख वेखे विच नौ खण्डी। आप चलाए साची डण्डी, सृष्ट सबाई होई रंडी। आत्म होई सर्ब घमंडी। चारों तरफ चमके चण्डी। घर घर दिसे नार रंडी। बेमुखां वढ्ढी जाए कंडी, सुट्टी जाए राह डण्डी। करी जाए खण्ड खण्डी। भन्नी जाए कच्चे अंडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम रहण ना देवे जीव कोई पखण्डी। साचा नाम बणे वरतारा। गुरमुखां झोली पाए कर कर प्यार अपर अपारा। दोहीं हथ्थीं आप वरताए, बणया हरि सच्चा वरतारा। तोट कोई ना आए, अतुट रहे भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, कोटन कोट मंगदे रहण दुआरा। प्रभ अबिनाशी वडा भूप। ना कोई रंग ना कोई रूप। गुरमुख साचे विच पसारे इक्को इक्क जोत सरूप। निहकलंक नर अवतारा शब्द

दात पाए झोली, गुरमुख टिकाए तेरी काया डोली, आप बणाए दर घर साचे दी साची गोली। कलिजुग अन्तिम वक्त सुहाए, बेमुखां व्याहे बोली। भिन्नड़ी रैण राणी संग रलाए, पूरे तोल अन्तिम तोली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रंगे काया चोली। वंडी जाए नाम अपारा। आपे बणे सच भतारा। गुरमुख बणाए साची नारा। मेल मिलावा कन्त प्यारा। आत्म सच्चा सुत्ता पैर पसारा। कलिजुग जीव बाहर भौंदे फिरदे, विच ना वेखे हरि गिरधारा। गुरमुखां आप सुहाए साची रुत्ता, देवे शब्द अपर अपारा। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्तां, करे अन्त ख्वारा। कलिजुग जीव अन्तिम रहि जाए सुत्ता, ना पावे कोई सारा। गुरमुख साचे हरि आपे पाले जिउँ पालण मावां पुत्तां, बणाए सच दुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। वंडी जाए नाम वड प्रबीन। पूर कराए काम, होया गुरमुखां अधीन। कलिजुग तेरी अन्धेरी शाम मिटाए, मिलाए रूसा चीन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थाउँ थाँईं आपे भन्ने सभ दी हँकारी बीन। वंडी जाए नाम निधाना। गुरमुख दर आए करे परवाना। सोहँ देवे इक्को इक्क सच्चो सच निशाना। साचा झण्डा आप झुलाए, वड बली बलवाना। सत्ते रंग आप लिखाए, सतिजुग साचे तेरा एह निशाना। तिन्ने लेख लिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। वंडी जाए नाम दात। गुरमुखां सच सुगात। भाग लगाए विच मात। मरन डरन चुकाए हरि कमलापात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कलिजुग तेरी अन्धेरी रात। वंडी जाए नाम निधान। गुरमुख साचे पीण खाण। एथे ओथे तोट ना आए, मिले दरगहि साची माण। विच्चों हउमे खोट गंवाए, जो जन रसना गाण। बेमुख कलिजुग जीव आलूणिउँ डिग्गे बोट, ना कोई उठाए, अन्तकाल पछतान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सोहँ आत्म चोट लगाए चढ़ाए शब्द बबाण। उठया सिख बली बलवान। हरि दर बैठा होया नौजवान। साचे लेख हरि साचे लिख्या, दूसर होर ना विच जहान। साची लिख्त हरि आप लिखाई, ना सके कोई मेट मिटान। सतिजुग साचा रंग तेरे नेत्र दयां वखाल, सृष्ट सबाई ख़ाक रुलान। तेरी आत्म वज्जदी रही सच्ची वधाई, बैठा दिसदा रहे भगवान। रसना गाउँदे रहणा चांईं चांईं, बणया रहीं प्रभ पूरे दा बाल निधान। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सतिजुग बण जा छोटा बाला। सिर दित्ती दस्तार, गुर संगत विच किया श्रृंगार, तुड़ाया जगत जंजाला। गल पाया फूलां हार, अन्तिम कलि राह दस्से सुखाला। पूर किया गुर गुरसिख प्यार, बणया आप रखवाला। सतिजुग बन्न्हे साची धार, सोहँ शब्द आप प्याए अमृत काया भर प्याला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दान तेरी झोली पाए, गुरसिख कदे ना होए कंगाला। तेरी आत्म इक्क टिकाया, हरि अनमुल्लड़ा लाल। इस दा मुल्ल ना किसे चुकाया, ना कोई बणया विच दलाल। साचा

लाल किसे हथ्थ ना आया, आप लपेटयां तेरी काया सच सच्चे रुमाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजी वस्त नाल रलाई, अमृत सुहावा ताल। अमृत सुहावा ताल तारी ला। उठ गुरमुख मार छाल, दुरमति मैल सारी लाह। आत्म जोती आपणी बाल, अज्ञान अन्धेर दए मिटा। अन्तिम कलिजुग सुरत संभाल, सतिजुग साचा दए दिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा लिख्त दए लिखा। लिखी लिख्त ना कोई मोड़े। लग्गी प्रीत ना कोई तोड़े। साची बणत हरि मिल्या सच्चा मीत, ना होण तोड़ विछोड़े। आदि अन्त जुगा जुगन्त करदा आया साची रीत, जन भगतां घर वागां आपे मोड़े। आपे बणे साचा मीत, पंचम् जेठ चढ़ के साचे घोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख संत प्यारयां आपे बौहड़े। गुरमुख मंगण हरि दुआरा। साचा शब्द डंक वजाए अपर अपारा। आत्म इक्को तनक लगाए, खिच्च ल्याए चरन दुआरा। द्वार बंक आप सुहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम अपर अपारा। गुरसिख साचे साची सेव कमाई, चरन छुहाई दाढ़ी। प्रभ अबिनाशी आपणी सेवा आपे लाई, फिरदा रहे सज्जे खब्बे पिच्छे अगाड़ी। जोत सरूपी नज़री आए, प्रगट होए दरस दिखाए, चारों तरफ शब्द सरूपी करे वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दर भाग लगाया, बेमुखां किस्मत होई माढ़ी। बेमुख रोवण रो रो पुकारन। आत्म होया रहे हँकारन। वेले अन्त ना होए कोई सहारन। साची डोली जो तन बणाई, वेले अन्त ना बणे कोई कहारन। धर्म राए घर होई गोली, बेमुख जीव नार गंवारन। गुरमुखां रंगदा साची चोली, चढ़ाए रंग अपर अपारन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती घोल घोली आपे पाए सारन। जिस जन होए ना कोई सहारा। प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर देवे पहरा। खड़ा रहे आत्म दर दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां रहे इक्क प्यारा। गुरसिख तेरा होए दरबान। जोत सरूप हरि भगवान। आप बहाए शब्द बबाण। दरगहि साची देवे माण। झुल्ले सच्चा इक्क निशान। निहकलंक बली बलवान। जगे जोत इक्क महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

१५३ ०४

❇ १४ चेत २०११ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह मेरठ ❇

कलिजुग मिटाए हरि अन्धेरी राता। गुरमुखां ल्याए दर साचे घर, देवे वर पुरख बिधाता। सच भण्डार देवे भर, मातलोक जाए तर, चरन प्रीत बंधाए साचा नाता। आप चुकाए जम का डर, जो जन सरनी जाए पड़, खुल्ला रक्खे सदा दर, देवे सच्चा शब्द सच्ची सुगाता। गुरमुख विरले संत जन आत्म झोली लैण भर, अन्तिम कलि ना जायण मर, एका नहायण साचे सर, ना कोई पुच्छे जात पाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा नाम दान धुरदरगाही सोहँ शब्द सच्ची

१५४
०४

इक्क सुगाता। शब्द दान देवे हरि। बण गुण निधान गुरमुख साचा विच मात जाए तर। बणे सुजान जोती जोत हरि मेल मिलाए, हउमे सहिंसा रोग गंवाए, बैठा हरि इक्क इकांता। इक्क इकांता वेख विचारे। अमृत देवे बूंद स्वांता, गुरमुखां आत्म ठारे। कलिजुग मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग चढ़े चन्द अपारे। गुरमुखां मेल मिलाए कर कर बहु बिध भांतां, देवे दरस अगम्म अपारे। आपे पाड़ आए गगन दीआं छातां, गुरसिख कुरलायण वैण नैण पायण विच मात सच दुलारे। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि मात जामा धारे। गुरसिख साचा विच मात पुकारदा। अट्ठे पहर रो रो, मुख आपणा सच्चा धो धो, प्रभ साचे वाजां मारदा। आत्म बीज सचा बो बो, बण गया भिखारी सच्चे परवरदिगार दा। आपे सुणे साची सो, प्रगट खड़ा होवे अग्गे हो, देवे दरस जोत सरूपी रंग हरि निरँकार दा। दुरमति मैल जाए धो धो, गुरमुख साचे संत फड़ फड़ बाहों तारदा। सच शब्द दात महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आत्म झोली डारदा। गुरमुख तेरा मूल चुकाउणा। पिछला लिख्या लेख प्रभ आया आण मुकाउणा। जोत सरूपी धारे सच्चा भेख, दिस किसे ना आउणा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, सोहँ वटे नाल घसाउणा। फिर लाए साची मेख, विच मात आप गडाउणा। ना कोई जाणे पीर औलीआ शेख, प्रभ साचे आप मिटाउणा। सृष्ट सबाई रही वेख, निहकलंक केहड़ी कूटे आउणा। जोती जोत सरूप हरि, धर भेख बेमुखां अन्त खपाए मिटाए जिउँ रामा रावणा। गुरमुख साचे तेरी आत्म सजी। साची जोत गुरमुख हिरदे तेरे जगी। बैठा पड़दे कजी। विच रहण ना देवे काया खोट, एका जोत माझे देस जगी। लभ्भदे फिरन कोटन कोट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जोत सरूप आदि अन्त जुगा जुगन्त गुरमुख साचे इक्को राखो हरि ओट। इक्को ओट हरि निरँकार। मारे चोट डंक डफार। ना आवे कदे तोट, भरे रहण सद भण्डार। दर खड़े रहण कोटन कोट, देवणहार आप दातार। बेमुखां कलिजुग अजे भरी ना पोट, जूठ झूठ रहे झक्ख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत अन्तिम कलि आपे पावे सार। गुरमुख गुरसिख दुलारया। साची मंगी नाम भिक्ख, देण आवे हरि निरंकारया। साची सिख्या लैणी सिख, साचा नाम आत्म झोली आप भरा रिहा। आप मिटाए आत्म लग्गी तिख, अमृत नाम सच्चा शब्द गुरमुखां मुख चुआ रिहा। आप मिटाए दु:ख भुक्ख, इक्क उपजाए सच्चा सुख, रोग सर्ब गंवा रिहा। गुरमुख हरि सुखणा सुक्ख, प्रभ आप कराए उज्जल मुख, दर घर आए दरस दिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मातलोक आया जामा धार, देवे वर चुकावे डर, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। गुरमुख साचे उठ उठ संत। प्रभ बणावण आया तेरे घर तेरी बणत। चरन लाग जाणा तर, दु:ख होए ना वेले अन्त आप नुहाए साचे सर, ना कोई जाणे

जीव जन्त। खाली भण्डारे रिहा भर, मेल मिलावा साचे कन्त। ना कोई वेखे नारी नर, ना कोई वेखे देव दंत। एका शब्द धार साची मात देवे धर, बेमुखां माया पाए बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जोत आवे जावे, विच मात रहावे, बेमुखां नूं अन्त खपावे, चार वरन इक्क ध्यान रखावे, ना कोई जाणे वरन गोत। वरन गोत हरि निराला। इक्का जोत जगे अकाला। गुर गोबिन्द हरि सच्चा दीन दयाला। गुरसिख बणाए आपणी साची बिन्द, करदा रहे सदा प्रितपाला। बेमुख कलिजुग अन्तिम करन तेरी निन्द, गल प्या जगत जंज़ाला। आप वहाए डूंघी धार सागर सिंध, ना होए कोई रखवाला। गुरमुख साचे लाए पार वडा शाहो हरि मृगिन्द, फड़ फड़ बाहों देवे तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे आपणा सच्चा इक्क चरन प्यार। गुरमुख जाण हरि साचे दी साची रीत, ना कोई पवण ना कोई मसाण। ना किसे जंगल जूह विच बीआबान। ना किसे मिले गुरदुआरे मन्दिर मसीत विच कुरान। फड़ फड़ राह सारे दस्सण, ना कोई जाणे गुरमुख धाम केहड़े वसण, मेल मिलावा इक्क भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे जीआ दान। गुरमुख लैणा सच्चा दान। सच्चा भाणा सिर ते सहिणा, मेल मिलावा हरि भगवान। आप चुकाए लहणा देणा, दरस दिखाए तीजे नैणां, जोत जगाए आप महान। बण बण बहिणा भाई भैणां, अन्तिम कलिजुग बेमुखां खाए दए खपाए, जिउँ
१५५ लाड़ी मौत डैण। ना कोई छुडाए, गुरमुखां चुकाए लहणा देणा, शब्द पहनाए तन साचा गहणा, अन्तिम होए सहाए। जोती १५५
०४ जोत सरूप हरि, फड़ फड़ बाहों आपे राहे पाए। साचा धाम जिथ्थे वसे हरि दयाला। शब्द तीर एका कसे, तोड़े जगत ०४
जंज़ाला। गुरमुख सद हिरदे वसे, चरन प्रीती आप निभाए आपणे नाला। आत्म बैठा हरि जी खिड़ खिड़ हस्से, कलिजुग जीव होए कंगाला। अन्तिम वेले सारे जाण इक्क दूजे दे पिच्छे नस्से, ना कोई सके सुरत संभाला। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां फल लगाए काया आत्म तन साचे डाला। तन काया सच्चा डाल। विच सुहाया अमृत साचा ताल। प्रभ अबिनाशी हथ्थीं आप भराया बणया रहे रखवाल। अट्ठे पहर हरि आपणा पहरा लाया, बेमुख ना सके भाल। गुरमुखां साचा शब्द रसना गाया, प्रभ अबिनाशी साचा फल दए खवाल। करे कराए जो मन भाया, हरि रघुराया दिस ना आया, जोत सरूपी जामा पाया, गुरमुखां आपे करदा रहे विच मात प्रितपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, लक्ख चुरासी खाण आया बण के अकाला काल। लक्ख चुरासी हरि जी खाए। आपणा तोसा आप बणाए। नाल मंगे पाणी कोसा, सत्त समुन्दर दए तपाए। इक्को मारे शब्द झोसा, धरत मात दए हिलाए। दीवा बत्ती दिस ना आए, अन्दर बारां कोसा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा काला सूसा उत्तों देवे लाहे। काला सूसा देणा लाह। बेमुखां गल

पैणा फाह। किसे ना फड़नी अन्तिम बांह। घर घर रोणे पुत्त मां। किसे ना मिलणा सच्चा थां। गुरमुख साचे संत जनां देवे एका एक सच्चा नां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त प्रगट जोत आपे पकड़े हत्थीं बांह। हत्थीं बांह लए फड़। आपे बन्ने आपणे लड़। शब्द घोड़े जाए चढ़। सृष्ट सबाई जाए हड़। गुरमुख साचा दर साचे घर साचे जाए वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गूढ़ी नींद आप सोया, सृष्ट सबाई ना जाणे कोया, बैठ रिहा मार सोहणी दड़। मार रक्खी दड़ बैठा रिहा चुप्प। कलिजुग जीव जाणे सड़, लगणी जेठ हाढ़ी सच्ची धुप्प। मुलां मुलाणे वेद पुरानी ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी जो वडे वडे पोप। एका रक्खे शब्द निशानी। आत्म मारे साची कानी। ना कोई जाणे जीव निधानी। अन्दर वसी बेईमानी। एका सुझे मात शैतानी। ना कोई दारा शाह इरानी। ना कोई दिसे वड सुल्तानी। मिटदे जाण राज राजानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सृष्ट सबाई सच्चा बानी। अन्तिम कलि जगत वैराना, जूठे झूठे रहे पल, ना लगणा फल किसे डल। प्रभ जोड़ी बैठा हल, प्रगट होया कल। सोहँ रखया तिखा फल। बेमुखां आत्म जाणी गल। प्रभ अबिनाशी जूठी झूठी मक्की देवे दल। हँकारी परछावां जाणा ढल। ना होए कोए सहाए। गुरमुख साचे दर आयण चल, घर साचा बैठण दर गुर पूरे मल, अन्तिम होए हरि सहाए। आप कराए जल थल थल जल ना सके कोई अटकाए। मायाधारी होए ख्वारी। मूल ना चुक्कणा मिले सिर भारी। शब्द अन्धेरी जाए चल, इक्को मारे हरि उछल गुरसिख माणक मोती संसार सागर विच्चों कढ्ढे बाहरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे जीआ दान निहकलंक वडा दर दरबारी। इक्को मारे जगत उछाल। शब्द सरूपी आपणा खेल करे कमाल। बिन रंग रूपी किसे हत्थ ना आए, चारों कुन्ट रहे भाल। गुरमुखां हरि आया हिस्से, आपे लभ्भे अनमुल्लड़े लाल। कलिजुग जीआं मूल ना दिसे, जूठे झूठे उठ उठ मारन छाल। वेला गया हत्थ ना आउणा किसे, ना सके कोई सुरत संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूठी झूठी चक्की पीसे, आत्म होई सर्ब कंगाल। आत्म होई कंगाल। ना मिल्या हरि दलाल। जेहड़े परखे सच्चे लाल। सृष्ट सबाई खाण आया अन्तिम बण के काल। साचे राहे पाण आया, देवे शब्द उडान। सृष्ट सबाई गाहुण आया, पावे पहला गाहण। मुगल पठाण खपाण आया, ब्यासा हद्द टपाण आया, इक्क दूजे नूं वेखण बेईमान। सच्चा शब्द बबाण ल्याया, गुरमुखां हरि लए चढ़ाया, अट्ठे पहर ध्यान रखाया, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हरि हरि विष्नूं भगवान। हरि हरि हरि भगवाना। हरि हरि हरि सच्चा दर मिले वर, जो जन करे चरन ध्याना। हरि हरि हरि किरपा रिहा कर, सोहँ देवे सच्चा दाना। हरि हरि हरि गुरमुख विरला जाए तर, जिस मिल्या नाम निधाना। हरि

हरि हरि भण्डारे रिहा भर, खुला रहे सदा दर, दुःख रोग भुक्ख गंवाणा। हरि हरि हरि आप नुहाए साचे सर, अमृत बूंद मुख चुआणा। हरि हरि हरि आपणी करनी रिहा कर, गुरमुख साचे लए वर। सृष्ट सबाई आप भुलाणा। हरि हरि हरि जोत सरूपी जामा धार, आपे वसे गुरसिख साचे घर, ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा। अन्तिम कलि बेमुखां होई बेमुख बुद्धि, चारों तरफ टप्पे मारे छालां रही कुद्दी, साचा जाप ना कोई जपे। मनमुखां आत्म भरी तपे। माया रूपी काया बद्धी, सृष्ट सबाई आत्म तपे। ना जपया कोई साचा जपे, ना आत्म होई सुध्धी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, आपे झेड़ा आप चुकाए, आत्म खेड़ा आप वसाए, पंजां चोरां नाल करन देवे युधी। पंचां चोरां होए ख्वारी। मिल्या हरि सच्चा दरबारी। देण आया सच्चा वर, पूरन किरपा जाए कर, देवे नाम शब्द उडारी। सच भण्डारे जाए भर, गुरमुख साचा जाए तर, आए चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका घर साचा दस्से, जिथ्थे हरि साचा सदा वसे, आवे जावे मात वारो वारी। आवे जावे खेल निराला। जोत सरूपी दीन दयाला। सोहँ शब्द रसना गावे, किरपा करे भगत रखवाला। दरगहि साची लाए नामे, होए अन्त रखवाला। आपे रक्खे ठंडी छावें, करे हरि प्रितपाला। फड़ फड़ बाहीं गले लगावे, जिउँ बालक माता बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दस्से राह इक्को इक्क सुखाला। गुरसिख सुखी वसन्दया। तेरे पूर कराए काज, कलिजुग दिसे झूठा धन्दया। सोहँ देवे सच्चा दाज, बेमुख होए भाग मन्दया। आप संवारे दर घर काज, विच्चों कढ्ढे पाप गन्दया। अन्तिम वेले रक्खे लाज, जिस बणाए साचे बन्दया। एका देवे सच्चा राज, शब्द नाम मार अवाज़, गुरमुख चढ़ाए साचे चन्दया। कलिजुग अन्तिम पैणी भाज, सभ दे छुट्टणे साज बाज राज ताज, कलिजुग जीव होए अंध्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दरगहि साची आप बहाए, चुकाए आपणे कंध्या। आपणे कंधे लए उठा। साचे बन्दे लए बणा। बेमुख मदिरा मासी दए खपा। गुरमुखां दुरमति मैल दए गंवा। सोहँ साचा जाप जपा। गुरसिख ना जाए, धर्म राए ना पाए फंदे, जम का झेड़ा दए कटा। बेमुख जीव भागां मन्दे आत्म अन्धे, गल प्या चुरासी फाह। झूठी माया लग्गे झूठे धन्दे, ना अन्तिम होए कोई सहा। इक्क गंवाया प्रमानंदे, मुख रखाण अहार गन्दे, इक्क भुलाया सच्चा नां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत जनां सुहाए बहाए सच्चे थां। सच दुआरा निज घर वेख। जिथ्थे मिटे बिधना लिखी रेख। जोत सरूपी अन्दर वसे, एका राह सच्चा दस्से, धारी रक्खे भेस। आत्म अन्ध अन्धेरी जिउँ चन्द मस्से, कलिजुग रहे वेखा वेख। एका शब्द तीर हरि जी कसे, सृष्ट सबाई नेत्र लैणा पेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे आपे बुध बबेक। दुखी जीव सदा कुरलाए। तन पैरां

रोग सताए। खिटा लग्गा एका कीड़ा, दिवस रैण सताए। टुट्टी पई हड्डी रीड़ा, आपे बन्ने हरि जी बेड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया आप कमाए। गुर संगत गुर एका राह। दोवें वसण एका थां गुर संगत होए निमाणी, प्रभ अबिनाशी पकड़ी बांह। एका रक्खे चरन ध्यानी, अन्तिम लेखा कोई मंगे ना। एका देवे नाम निशानी। वड मेहरबानी विच मात कदे छुट्टे ना। जो जन होए वड अभिमानी, आत्म लेखा मुक्के ना। गुरमुखां करे आप पछाणी, दर घर साचे जायण अद्धविचकार कोई रुके ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे बूटे मात लगाए, कलिजुग अन्तिम सुक्कण ना।

❇ १४ चेत २०११ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ❇

कटे हउमे रोग हरि भगवान। लिख्या धुर संजोग, मेल मिलाया आण। ना होए कदे विजोग, एका जोती होए दोए भगत भगवान। लिख्या धुर संजोग, गुरसिख साची नार हरि कन्त प्यार आपणे रंग रंगान। देवे शब्द साचा जोग, सोहँ नाम विच जहान। प्रगट होवे देवे दरस, रोग चिन्ता सोग सर्ब मिट जाण। जोती जोत सरूप हरि, एका जोती मेल मिलाए,
१५८ ०४ अन्तिम आपणे दर बहाए, दूजा दर ना कोई सहाए, नर हरि हरि मेहरबान। हरि अवतार भगत अधारदा। पावे साची सार १५८ ०४
विच संसार, आत्म दर द्वार सर्ब वेख विचारदा। वसे सच्चे घर बार, ना होए कदे बाहर, आपे जिंदा मारदा। पार कराए चरन लगाए नर नार, ना आए पासा हारदा। पूर्ब कर्म कर विचार, प्रभ अबिनाशी बन्ने धार, देवे नाम चरन प्यार दा। जोती जोत सरूप हरि , महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग सच्ची सरकार दा। धारे भेख जगत पित हरी। गुरमुखां जाणे मित गति गति मितक आपणा भाणा करी। आप समझावे दे मति, रक्खे पति देवे साची वरी। चरन बन्नाए नत, शब्द आत्म देवे बीज साचे वत, काया क्यारी आपे करे हरी। गुरमुख साचे तेरा धीरज यति उत्ते रहे मात धरत, देवे वर किरपा कर, जोत सरूपी नर हरी। नर हरि हरि निरँकार। गुरमुख साचे संत जनां, जोत अधार देवे शब्द अपर अपार। कलिजुग अन्तिम वेला, प्रभ बणे सज्जण सुहेला ना होए कदे ख्वार। आपे गुर आपे चेला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे पावे सार। गुर गुर गुर चेला, चेला गुर गुर चेला इक्का थाएँ होए मेला। इक्क जोत दोए थां, अन्तिम होए इक्क इकेला। आप फड़े बांह, बणे सज्जण सुहेला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। करे खेल अपर अपारया। मिलाए मेल वड संसारया। वधे वेल गुरमुख फुलवाड़या। जोती जोत

सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, शब्द सरूपी करे वाड़या। सच्चा पीर सुल्तान इक्क अलाह है। सृष्ट सबाई बणया रहे आप मलाह है। ज़ात पात दीन मज़्ब ना मन्ने किसे ईन, इक्को इक्क बेपरवाह है। भन्ने हँकारी जो वजावण झूठी बीन, साचे लेख रिहा लिखा है। सृष्ट सबाई सच्चा नूर नुरानी रिहा वेख, जूठयां झूठयां गल पाउणा फाह है। रहण ना देवे कोई जीव शैतानी, दर घर साचे जो करदे रहे गुनाह है। जोती जोत सरूप हरि, वसे इक्क इकल्लड़ा, धुरदरगाह सच्चा थां है। धुरदरगाह सच थां अवल्लड़ा। वसे इक्क अलाही नूर खुदाए इक्क इकल्लड़ा। कलिजुग जीव गए भुलाए, पै गए औझड़ राहे, इक्क दूजे दा छडया पलड़ा। जोत सरूपी हरि जोत जगाए। निहकलंक नाम रखाए। अमाम मैहन्दी बण के आए। सृष्ट सबाई एका थां बहाए। दूई द्वैती पड़दे आप वढाए। इक्को सच्चा नूर, इक्को सच्ची तूर सभ दे कन्न सुणाए। जो जन करदे आत्म गरूर, करे चूरो चूर, अन्तिम भन्न वखाए। जोती जोत सरूप हरि, इक्को राह सच्चा थां सृष्ट सबाई नेत्र नाल वखाए। सच्चा थां धाम अपार है। ओथे मिले ठंडी छाँ, हरि परवरदिगार है। आपे बणे पिता मां, जोत सरूपी सच्चा यार है। जन भगतां फड़े बांह, करे सच्चा इक्क प्यार है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात आए जामा धार है। नूर नुरानी इक्क खुदाया। आत्म होई सर्ब गुमानी, सच अल्ला मनो भुलाया। सारे फिरदे वाहो दाह, साचा राह किसे हथ्थ ना आया। प्रगट होया साचा हरि, जोत धर दोहां धिरां दा एह मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा राह इक्को इक्क रखाया। इक्को सिध्धा राह जगत दिसांयदा। अक्खीं दए दिखा, कलिजुग लेख लिखांयदा। अग्गों किसे ना करनी नाह, शब्द डण्डा जिस लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समांयदा। आपणा भाणा आपे जाणे। चार कुन्टां वेख वखाणे। दहि दिशा दे विच भवाणे। आत्म परखे नेत्र पेखे, बिरध बाल जवाने। आपे लाए साचे लेखे, तख्तों लाहे राजे राणे। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, कलिजुग जीव ग़रीब निमाणे। आपे रक्खे ठंडी छाँए, देवे माण निमाणे निताणे। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। गल कवाए हरि जी पाए। पंचम् जेठ रंग रंगाए। अमाम मैहन्दी बण के आए। सृष्ट सबाई झूठी इक्क दूजे नाल ऐवें खहन्दी, करे कराए आप खुदाए। इक्ठे हो हो ना इक्क थां पुत्त मां भैण भ्रा ना बहिंदी, आत्म दए सर्ब रुलाए। जोती जोत सरूप हरि, कर खेल वड वड सज्जण सुहेल साचे लेखे दए लगा। वेख विचारे वेद पुराना। पावे सार कुरान अंज़ील अंजील कुराना। सारे दस्सण इक्को राह, इक्क खुदाई इक्क भगवाना, कलिजुग जीव पए औझड़ राह, भुल्लया हरि जिस ने दित्ता पीणा खाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सभनां जीआं दा इक्को बीना दाना। सृष्ट सबाई इक्क दातार। सृष्ट सबाई करे प्यार। ऊँच नीच ज़ात पात

भेव निवार। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, प्रभ अन्तिम करे ख्वार। सभ दे अन्दर वेखे मार झात, इक्को नूर इक्को जोत अपर अपार, धुर दरगाहों ल्याया इक्क सुगात, एका शब्द अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक मात लए अवतार। निहकलंक लए अवतारा। चार वरन करे प्यारा। बेमुखां कलि करे ख्वारा। मारी जाए वारो वारा। फेरी जाए हरि शब्द आरा। जन भगतां पावे सारा। मंगण जाए चल दुआरा। अग्गे झोली आपणी डाहे, गुरमुख साचा भिख्या पाए, इक्को चरन प्यारा। साची सिख्या आप दवाए, दूई द्वैती मेटे पाड़ा। साचा लेखा लिख्या ना कोए मिटाए, आप मिटाए झूठी धाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई तेरे विच समाए, जोत जगाए रच्चया रहे तेरी बहत्तर नाड़ा। साचा सखी हरि सुल्तान। होया रहे मेहरवान। बेमुखां रिहा कलिजुग छाण। दूर दुराडा वसे, कर रिहा सच्ची पछाण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर चलाए, बेमुखां हरि चीर वखाए, मारे सच्चा बाण। आपे पीर आप मुलाना। आपे बणे दस्तगीर, देवे धीर नाम निधाना। बेमुखां लाहे चीर, करे वहीर शब्द तीर, इक्क चलाना। गुरमुखां कटे भीड़, दर घर साचे माण दवाना। जोती जोत सरूप हरि, आपे पहरे आपणा बाणा। पहरे बाणा पहरे भेख। सृष्ट सबाई लिखाए हरि जी सच्चा लेख। चारों कुन्ट अन्दर वड़ वेखे करे सर्ब पछाणा पीर औलीए शेख़। ना कोई लाए वञ्झ मुहाणे, ना कोई
१६० वेखे राजे राणे वल सुल्ताने, आपणी हथ्थीं जो पहले लिखी रेख। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए दरस दिखाए, धर १६०
०४ धर भेस, नर नरेश माझे देस सृष्ट सबाई लैणा वेख। सृष्ट सबाई बंधे एका डोर। आपणे चरन बहाए खिच्च ल्याए गुरमुखां ०४
निभाए लग्गी तोड़। तोड़ विछोड़ा ना कोई करे, शब्द घोड़ा इक्क ल्याए आपे पए बौहड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तृखा बुझाए, अमृत मुख चुआए, आत्म लग्गी डाहढी औड़। गल माला हथ्थ विच गानीआं। कलिजुग तेरीआं आउँदीआं जांदीआं अन्त निशानीआं। करे खेल हरि अपार विच संसार, गुरमुख साचे लए तार, कर कर वड मेहरबानीआं। साचा तन कराए इक्क शृंगार, साचा बख्शे चरन प्यार, देवे दान वड वड दानीआं। सुखी कराए नर नार, पावे सार जो जन आए चरन द्वार, ज़ात पात ऊँच नीच भरम निवार, देवे माण भगत भगवानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे बणे सच्चा बानीआ। सच्चा बणे बानी पहरे बाणा। नाल रलाए सतिजुग तेरी चरन प्रीत सच्ची राणी, आपे बणे सच्चा राणा। चार वरन इक्क थां बहाए, इक्वा प्याए पाणी, इक्को रक्खे सच्चा ताणा। सृष्ट सबाई आपे बणे सच्चा बानी, सोहँ शब्द इक्क सुखाणा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा रिहा कर, देवे माण हरि जो जन जगत निमाणा। हथ्थीं पाए हरि कलीरे। चार वरन कराए हरि इक्क दूजे दे भैण भाई साचे वीरे। आपे बणे साक

सज्जण सैण वेखे नैण, साचा शब्द चलाए तीरे। बेमुख भाणा अन्तिम सहिण, डूंघे वहिण वहिण, किसे हथ्थ ना आउण नीरे। गुरमुख साचे सच्चा नाउँ खुदाए रसना कहण, अन्तिम कटे भीड़े। जोती जोत सरूप हरि, एका तन लगाए बेमुखां दे पीड़े। बेमुखां लग्गे तन पीड़। आत्म खाए इक्क हँकारी कीड़। ना कोए छुडाए खाधी जाए काया हड्डी रीड़। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त शब्द वेलने रिहा पीड़। साचा हार हथ्थ निरँकार। चार वरना इक्का देवे साचा चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे निहकलंक, शब्द वजाए इक्क डंक, थां बहाए राउ रंक, ना कोई करे विचार। जन भगतां पकड़ बाहों भव सागर तारे, पावे सारे विच संसारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, बेमुख होण सर्ब ख्वारे, गुरमुख साचे संत जन, हरि मिल्या सच भतारे। आत्म पड़दा देवे भन्न, देवे नाम अपर अपारे। साचा नाम सुणाए कन्न, आत्म लाहे सर्ब अफारे। अन्तिम वेले बेमुखां देवे डन्न, शब्द कुहाड़ा सिर विच मारे। जूठे झूठे देवे भन्न, ना अन्तिम बणे कोई रख्वारे। गुरमुख साचे रसना कहण धन्न धन्न, प्रभ अबिनाशी साचा तन गुरमुखां आपणी हथ्थीं आप शृंगारे। गुरमुखां तन शृंगारदा। आपणा आप उत्तों वारदा। देवे सच्ची दात, राह दस्से इक्क परवरदिगारदा। अग्गे मिलदा कर के लम्मीयां बाहां, जोत सरूपी धार भेख हरि निरँकार दा। आप बहाए थाउँ थाँई, सृष्ट सबाई आत्म वेख विचारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां फड़ बाहों पार उतारदा। उतरे पार गुरसिख दुलारा। मिल्या हरि निरँकार, करया भेख जगत न्यारा। सृष्ट सबाई लैणा वेख, कलिजुग जीव बणे गंवारा। भेव ना पाए कोई वड वड शेख, वेद पुराना वसे बाहरा। ना कोई रूप ना कोई रेख, जोत सरूपी गुरसिख पसारा। आप लिखाए गुरसिक्खां लेख, तन पहनाए सोहँ सोहणा हारा। विच मात लगाए साची मेख, ना दए कोई उखाड़ा। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, गुरसिख बणाया कलिजुग नारी तेरा सच्चा लाड़ा। कलिजुग लाड़ी लई प्रना। गुरसिख लाड़ा ल्या बणा। आपणी हथ्थीं बन्ने सिहरे, पंचम् जेठ देवे फेरे, चौड़ा गेड़ा कलिजुग तेरा दए मुका। आपे करे आपणी मेहरे। ना कोई वेखे सन्झ सवेरे। वक्त आउँदा जाए नेड़े। जगत मुकदे जाण झेड़े। खुल्हे दिसण चारों तरफ धरत तेरे वेहड़े। गुरमुखां बन्न्हे अन्तिम बेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणीं हथ्थीं कलि जिहड़े मात सहेड़े। कलिजुग नारी तेरा सीस हरि गुंदाया। सोहणा हार तेरी गुत्ते, आपणी हथ्थीं आप बन्न्हाया। गुरसिख उठाए मात सुत्ते, जांञी लाड़े गुरसिख संग नाल रलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग नारी तेरी सेवा दर दर घर घर साचे दए बन्न्हाए। कलिजुग नारी तेरी सीस पाए सग्गी। साची जोत माझे देस जगी। तत्ती वा चारों तरफ लग्गी। गुरमुख साचे संत जनां, मूल तन

ना लग्गी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक डोर रखाए कच्ची तगी। सोहणा हार हरि गुदांयदा। कलिजुग नारी कर त्यार, हथ्थ कलीरे आप पहनांयदा। बेमुख जीव एहदे बणे झूठे वीरे, डोली उहनां कंधी आप उठांयदा। मातलोक विच्चों जाण पैंडा चीरे, धर्म राए अग्गे बैठा मुख तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम वेले कलिजुग तेरा वाहवा सोहणा काज रचांयदा। कलिजुग तेरा काज रचाया। बेमुखां हड्डां बालण सच्चा दाज, तेरी झोली पाया। गुरमुखां सिर देवे सच्चा ताज, तन श्रृंगार आप कराया। आप सुहाए अन्तिम तेरा काज, ना कोई होर रक्खे तेरी लाज, चारों कुन्ट बेमुख जाणे भाज, ना संग किसे निभाया। जोती जोत सरूप हरि, जोत मात कलि धर, आपणा भेख आप वटाया। वेखे खेल हरि बनवारया। करे खेल अपर अपारया। कलिजुग सतिजुग दोए होए इक्ठे, हरि साचा वेखे करे विचारे, मैं पहलां करां किहदी चट्ठे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क तपाए सृष्ट सबाई तेरा सच्चा भट्ठे। सृष्ट सबाई भट्ठ तपाउणा। लक्ख चुरासी विच पकाउणा। जोत सरूपी जोत धर, आपणा भाणा आप वरताउणा। सिँघ सिँघासण हर जी बैठ, दोवें हथ्थीं फड़ फड़ खाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण गंवाए राजा राणा। हरि जी आप बणाए लक्ख चुरासी इक्को रोटी, दोहीं हथ्थीं आप पकाए। घड़ घड़ सोहणी टिकी, धरत मात तेरे उत्ते आप टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, कोटन कोटी इक्को वार दए तपाए। गुर संगत आई घेरे। हरि करे सच नबेड़े। बेमुख झूठे उठ खलोवण, बाहर जावण खुल्ले वेहड़े। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां फिरे चार चुफेरे करे नबेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जानण दूर दुराडा, गुरमुखां सद नेड़न नेड़े। गुर पूरे घेरा पाया। शब्द डोरी नाल बंधाया। इक्को गेड़ा आप दवाया। शब्द मारे इक्क लफेड़ा, जिस ने कुक्ख भवाया। आपे देवे बैठा गेड़ा, जो जन सोहँ शब्द लए भुलाया। आपे डोबे अद्ध विच बेड़ा, ना सके कोई तराया। उजड़या रहे काया नगर खेड़ा, दीपक जोती दए बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म दूजी वार इक्क सुणाया। गुर संगत होणा ख़बरदार। अन्तिम वार बेमुख भुआणा, दर घर साचे विच्चों होणा बाहर। चरन प्रीती लग्गी तोड़ निभाउणा, प्रभ देवे सच्चा इक्क प्यार। औझड़ राहे हरि जी पाउणा, रसना मदिरा मास जिस जन लगाउणा, बैठा रहे अद्धविचकार। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत तेरे चार चुफेरे शब्द सरूपी लाए इक्क लकार। गुर संगत हरि आख सुणाए। फल लगाए साचे डाल, अमृत फल पूरा आपे लए पाल, कर रखवाल साचे बूटे हरि जी लाए। चरन प्रीती निभाए नाल नाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए। गुरमुख साचे विच्चों मात लभ्भे अनमुल्लड़े लाल, अन्तिम लेखा आप चुकाया, तोड़े जगत जंज़ाल साचे लेखे आपे लाए। गुरसिख कदे ना होए कंगाल, सोहँ सच्चा धन्न माल, प्रभ अबिनाशी

१६२
०४

झोली पाए। गुरमुख तेरा मस्तक लालो लाल, आत्म जोती दए जगाए। इक्का चाढ़े रंग गुलाल, उत्तर कदी ना जाए। इक्को उठो मारो छाल, शब्द बबाणा हरि ल्याए। आप अमृत सुहाए ताल, दुरमति मैल सर्ब गंवाए। आपे तोड़े माया जाल, शब्द डोरी नाल बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन साची वस्त रक्खे संभाल, अन्तिम वेले संग निभाए। साचा कर्म कमाउँदा जाए। गुरमुख सोया विच मात, फड़ फड़ बाहों आप उठाउँदा जाए। गुरमुख मैल पापां दाग धोया, चिट्टा बाणा इक्का तन पहनाउँदा जाए। साचा बीज हरि जी बोया, साचा फल आपणी हथ्थीं आप खवाउँदा जाए। गुरमुख अवर ना जाणे कोया, निहकलंक साचा डंक वजाउँदा जाए। कलिजुग अन्तिम बेमुख रोया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे हार गल विच फाहीआं पाउँदा जाए। कलिजुग तेरे गल विच फाही। अन्त ना लए कोई छुडाई। बेमुखां मुख लग्गी छाही। अन्तिम मिले ना कोई मलाही। गुरमुख साचे संत जनां, इक्का शब्द शृंगार तन सोहणा हार आप पहनाई। सोहणा हार गुर पूरे हथ्थ सजदा। गुरमुखां गुरसिक्खां जेहड़ा पड़दे कज्जदा। जिस जन तन छुहाए दया कमाए, कलिजुग अन्तिम मूल ना भज्जदा। साचा फूल कन्त कन्तूहल गुरमुख तेरी सेजा आपणी हथ्थीं आप बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरमुख साचा संत उत्ते गूढ़ी नींद दए सवाए। गूढ़ी नींद गुरसिख सौणा। फूलां थल्ले सेज विछाउणा। शब्द दुशाला उत्ते पाउणा। आप बनाउणा सच्चा लाला, चिट्टे रुमाल बन्न वखाउणा। लाल अनमुल्लड़ा हरि जी भाला, इक्को छोटा निक्का बाला, साचा राह जिस वखाउणा। गुरमुखां अन्तिम करदा जाए माल माला, भज्जा जाए मारी छाला, निहकलंक कलि दरस दिखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि मेहरवान सिँघ मनजीत साचे धाम आप बहाउणा। छोटे बाले चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, दस्से साचा थां। सत्त महीने तिन्न दिन विच मात लए लँघा। मैं लँघाए गिण गिण, ना लग्गी प्यारी मां। सृष्ट सबाई मिण मिण, मैं चारे कुन्टां दिआं वखा। फूलन सेज हरि जी चुण चुण, उत्ते दित्ता आप टिका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा हौला भार, कलिजुग अन्तिम वार विच मात दित्ता करा। गुर संगत तेरा हौला भार कराया। छोटा बाला अग्गे लाया। सत्तां दीपां करे रुशनाया। तिन्नां लोकां बाहर रखाया। इक्क सुणाया शब्द सलोका, दर घर साचे जाए राह विच ना किसे रोका, हरि चरनी लए बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले तोड़ जंजाले, बाहों फड़ आपणे लड़, सोलां मग्घर नाल बन्न्हाया। मेरी इक्को छाल शब्द उडारया। सुखी होया वाल वाल, छड्डे मात पित प्यारया। मिली दर घर साचे इक्क सुगात, सोहँ शब्द अपर अपारया। कलिजुग मिटी अन्धेरी रात, गया धुरदरगाह सच दरबारया। अग्गे वेख्या ठंडा थां, जगे जोत हरि निरंकारया।

प्रभ अबिनाशी अग्गों फड़ी बांह, धरत मात दे लाल दुलारया। जोती जोत सरूप हरि, आपणी चरनी आप बहा रिहा। आपणी चरनी आप लगाया। दूजा हुक्म फेर सुणाया। उठ लाल हो त्यार, प्रभ अबिनाशी तेरा बेड़ा बन्न वखाया। कलिजुग अन्तिम आई हार, इन्द्र हो जाए इन्द्रपुरी चों बाहर, ख़ाली सिँघासण आप वखाया। निहकलंक कलि लै अवतार, आपणी किरपा दित्ती धार, तिन्नां लोकां पावे सार, छोटा बाला सिँघ सिँघासण फड़ के आपणे हथ्थीं गुर पूरा दए बहाया। सिँघ सिँघासण गया सज। मार छाल चढ़या भज्ज। कलिजुग तेरा झूठा ताल अन्तिम जाणा वज्ज। फल ना रहणा किसे डाल, जोत सरूपी रिहा गज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि खेल रचाए, लाउण ना देवे अज्ज पज्ज। गुर दर गुरमुख जाण। जिथ्थे होवे सच पछाण। गुरमुख गुर दर जाण, ना बणना कलि निधान। एथे चुक्के जम की कान। गुरमुख गुर पछाण। मिले दरगाह सच्चा मान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान। बली बलवान जोधा सूर। सृष्ट सबाई बन्नी बैठा सच्चा बेड़ा इक्को पूर। इक्को पाया नाम जेड़ा, अन्त छुडाया जम का जूड़। कलिजुग तेरा अन्त करे नबेड़ा, इक्को देवे जगत गेड़ा, करे चूरो चूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा देवे पूर। सिर उठाया फूलां खारा। गुरमुखां चुकया हरि जी भारा। मंगण आया चल दुआरा। जोत सरूपी भेख धारा। वेख वेख भेख भेख भुल ना जीव गंवारा। गुरमुखां आप लिखाए साचे लेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सिर उठाई फूलां खारी। मालन आई जोत विचारी। गुरमुख उठाया हरि जी बालन, अन्तिम थल्ले डाहे कर त्यारी। गुरमुख साचा फले फुले, मुल्ल पवाए हरि जी भाग लगाए साची कुले, बाहों पकड़ जाए तारी। साचा तोल गुरमुख तुले, मानस जन्म ना जाए हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे कारी। फूलन खारी हरि उठाईआ। पहली वार चौथे जुग निहकलंक जोत जगाईआ। शब्द वजाए साचा डंक, सुणे सर्ब लोकाईआ। सर्ब उठाए राउ रंक, घर घर सारे देण दुहाईआ। गुरमुखां मिटाए आत्म शंक, देवे सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां रिहा भार वंडाईआ। गुरमुखां भार लवां चुक्क। कलिजुग अन्तिम आया ढुक। प्रभ अबिनाशी लिखाया लेख लाउँदा जाए इक्क मेख, प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख, गुरसिख तेरी उतरे भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे भाग लगाया, गुर संगत दूजी संग रलाया आप दवाया सारा सुख। आपे चुक्के फूलन पंड। हरि जी आपे देवे पक्की गंढ। खुल्ह ना जाए विच ब्रह्मण्ड। गुरसिख ना होए रंड। प्रभ अबिनाशी ना देवे अन्तिम वेले कंड। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तोड़े हँकारी गंढ। चुक्के भार हरि दातार। गुरमुखां दिसे सच प्यार। अन्तिम वेले होए सहार। जोत सरूपी हरि करतार।

ना कोई रंग ना कोई रूपी, जोत सरूपी इक्क अकार । भुले फिरन शाहो भूपी, होई आत्म अन्ध कूपी, ना कोई पावे सार। गुरमुख आत्म सति सरूपी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्का दिसे साची धार। दस्से साची धार जगत गुसाईंआ। सिर उठाया आपणा भार, गुरमुखां ल्या वंडाईआ। दरगहि साची पावे सार, होए आप सहाईआ। बाहों फड़ कलि जाए तार, बेड़ा पार कराईआ। धर्म राए ना मारे डाहढी मार, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। इक्क पहनाए तन शृंगार, गुरमुखां देवे कर प्यार, जोत सरूपी हरि रघुराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्ची कार विच मात चलाईआ। फूलन खारी लई उठाल। पहली मारी इक्को छाल। गुरमुखां बणे आप रखवाल। बेमुखां दले जिउँ दो फाड़े दाल। गुरमुखां दे अन्दर वड़े, दीपक जोती देवे बाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन विच्चों मात लभ्भे अनमुल्लड़े लाल। हरि साचे खेल रचाईआ। गुरमुख साचे संत जनां साचे लेख लिखाईआ। नेत्र लैणा वेख सुणना हरि कन्ना, प्रभ सोहँ डंक रिहा वजाईआ। झोली पाए साचा नाम धना, तृष्ना भुक्ख अग्न गंवाईआ। गुरमुखां आत्म जाए मना, अमृत बूंद स्वांती आप पिलाईआ। बेमुखां लग्गे अग्ग तनां, दर घर साचे रहण ना पाईआ। आप कढाए सर्ब जनां, जोत सरूपी हरि रघुराईआ। भाण्डा भउ भरम देवे भन्ना, शब्द हथौड़ा आप उत्ते लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख

१६५ साचे संत जनां बेड़ा बन्न वखाईआ। बेड़ा बंधे होए सहारा। जिउँ माल चराए धन्ने, आपणी हथ्थीं मोड़े आप क्यारा। पीए १६५

०४ छाछ विच छन्ने, भोग लगाए कर खेल अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आए गुरसिक्खां चल ०४

दुआरा। जिउँ धन्ने पाई सार। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, ना जाणे मूर्ख मुग्ध गंवार। प्रगट होया हरि रघुराई, किया सच्चा इक्क प्यार। दित्ती दात जगत वड्याई, कर किरपा दित्ता तार। जोत सरूपी जोत हरि, अचरज खेल विच मात करदा जाए, ना रक्खे भेव कोई, आए जाए वारो वार। नर नरायण करे खेल अपर अपारा। ध्रू बाल जिउँ पार उतारा। रक्खे लाज जिउँ प्रहलाद हरनाक्ष दैंत करे ख्वारा। मंगण आए बल दुआरे, भेख धारे अपर अपारा। दुरबाशे तोड़े माण, रक्खे पति अमरीक विचारा। जनक कीता इक्क प्यार। प्रभ अबिनाशी दित्ता तार। दित्ता सच्चा इक्क नाम भण्डार। राणी तारा उतरी पार। गुर संगत किया प्यार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार जोड़ी इक्क बणाई, भेव ना रख्या राई, सृष्ट सबाई रिहा समझाई, किरपा करी अपर अपार। साचे हरि दया कमाई, महल अटारी दुर्योध्न हँकारी आप तजाई, जाए बिदर द्वारी कृष्न मुरारी ख़ाकी सेजा हरि बणाई, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देंदा रिहा वड्याई। जन भगतां देवे सच्चा माण। बिदर सुदामा बाल अञ्याण। हरि जी करनी जाण पछाण। आया चल द्वार सच्चे घर बाहर, हरि जी डिग्गे चरन आण।

जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे साचा माण। साचा हरि दया कमाए। जै देव तेरा पिछला लेखा पूर कराए। इक्को दिसे दूर वाटा, शब्द लेख आप लिखाए। जोती जोत सरूप हरि, इक्क इक्क पतर इक्को वेर कोटां कोटी नाम जपाए। जै दिओ नामा दित्ता तार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। वेखे विगसे करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, क्या कोई पावे एहदी सार। भगत त्रलोचन होया पार। तीजा लोचण खोल्ल्या बोल्लया हरि निरँकार। पूरे तोल तोल्लया, सुणी सच्ची पुकार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां पावे सार। उतरया पार रविदास चुमारा। रसना जपया जिस निरँकारा। तिन्न आए बण भिखारा। रविदास तेरे दर दुआरा। ब्रह्मा विष्न नारद खेल करी अपर अपारा। छोटी बाली तिन्न साल अवस्था उडी मार उडारा। जोती जोत सरूप हरि, तोड़दा रहे सर्ब हँकारा। गुर का शब्द अपार, जोत जगांयदा। गुर देवे कर प्यार, गुरमुखां झोली पांयदा। आपे बन्ने साची धार, चरन नाता इक्क बन्नांयदा। पावे अन्तिम सार कर्म विचार, लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। जगत होणा अन्त ख्वार, दर घर साचे पैणी मार, अग्गे होए ना कोई छुडांयदा। कर्म धर्म हरि सच्चा लए विचार, बणया रहे लेख लिखार, एका एक लेखा सर्ब चुकांयदा। गुरमुख साचे संत जन दर होए रहण भिखार, एका मंगण वस्त नाम अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाण्डे सर्ब भरांयदा। सच भण्डारा आप वरताए। इक्क दातारा आप अख्वाए। मंगण आए कोट दुआरा, पूरन इच्छया सर्ब कराए। अग्गे पिच्छे किसे ना आवे हारा, सच भण्डारा आप रखाए। सृष्ट सबाई पावे सारा, लक्ख चुरासी जोत जगाए। एका करे जोत अकारा, दूसर ना कोई संग रलाए। प्रगट होए विच संसारा, तीजे नैण डेरा लाए। सरगुण निरगुण खेल अपारा, उप्पर पड़दा माया पाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अचरज खेल कलि कराए। दोवें रूप हरि निरँकार। इक्को सच्चा शाहो भूप, करे खेल अपर अपार। ना कोई रंग ना कोई रूप, निरगुण रूप कलिजुग जीव विचार। इक्को रूप दिसे सति सरूप, जगे जोती अगम्म अपार। महिंमा जगत हरि अनूप, आवे मात वारो वार। कलिजुग अन्तिम वेला आया, निहकलंक कलि लै अवतार। जोत सरूपी जामा पाया, गुरमुख साचे विच समाया, भरम भुलेखा डाहढा पाया, चौथे जुग अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान गुरमुख साचा चतुर सुजान, आपणी हथ्थीं आप बणाया, जोत सरूपी एका धार। तिन्नां लोकां करे पसार। शब्द सरूपी जाए तार। आप किसे दिस ना आया, सृष्ट सबाई रिहा सुरत संभाल। भरम भुलेखा डाहढा पाया, कलिजुग अन्तिम खाण आया, साचा लेखा आप लिखाया, जोत सरूपी भेख धराया, गुरमुख साचे संत जन आपे लए सुरत संभाल। वेखा वेखी जगत भुलाया, साचा राह किसे दिस ना आया , फल ना दिसे

किसे डाल। कलिजुग जीआं तन इक्को वस्सया झूठा जन, ना किसे भन्नया भाण्डा भरम आत्म अन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे हरि रघुराया। निरगुण वेख जोत निराली। जगे जोत इक्क अकाली। ना कोई वरन ना कोई गोत, सृष्ट सबाई सार समाली। जोती जोत सरूप हरि, तेरा भाणा क्या कोई जाणे राजा राणा, कलिजुग जीव चतुर सुघड़ स्याणा, तेरी खेल आदि अन्त मात निराली। करे खेल निराली हरि निरंकारया। सृष्ट सबाई साचा हाली साचा पाली, बेमुखां कलि भुला रिहा। कलिजुग जीव कढ़ुण गाल्ही, झूठी मंगण विच दलाली, जन भगतां निहकलंक करे रखवाली, गुरमुखां बणे साचा वाली, धुरदरगाही साचा माली साचे बूटे मात लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, सोहँ शब्द साचे झूले दोहीं हथ्थीं गुरसिक्खां आप झुला रिहा। देवे झूटा इक्क हुलार। शब्द सरूपी कर प्यार, तिन्नां लोकां करे बाहर। अग्गे बैठा हरि निरँकार, जोत सरूपी इक्क अकार। गुरमुख साचे संत जनां दरगहि साची पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, इक्को इक्क करे अकार। इक्को इक्क अकार जगत अकार दा। अचरज़ भेव हरि सच्ची सरकार, ना जाणे कोई खेल हरि निरँकार दा। किसे दिस ना आए देवी देव, एका सच्चा धाम अपर अपार दा। सारे करदे रहण सेव, विरले लग्गे किसे मेव, खवाए फल दर आए चल एका अमृत अपर अपार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वसे धाम अटल्ल ना जाए कदे हल्ल, सदा सदा प्रबल, धारे भेख कलिजुग अंतम वेख तेरे लेख वेख हरि निरँकार दा। सरगुण रूप सच पछाण। पंजां तत्तां हरि देवे माण। विच धरे जोत आपणी आप महान। खोल्हे आत्म सोत मारे शब्द मार। जोती जोत सरूप हरि, गुर पूरे वल करे ध्यान। गुर पूरा शब्द अधार है। देवे शब्द जोत सरूपी हरि निरँकार है। गुर पूरा भरया रहे भण्डार है। देवणहार इक्क दातार है। गुर पूरा मात जामा धार, अन्तिम अन्त बणया वरतार है। इक्को इक्क सच्चा सति देवे मति उत्तों बंधी रक्खे शब्द धार है। गुर पूरा गुरमुखां देवे मति कर प्यार है। जोती जोत सरूप हरि, कर किरपा गुर पूरे देवे शब्द सच्चा अस्व अस्वार है। हरि सच्चा शब्द चलांयदा। गुर पूरे हिरदे विच वसांयदा। गुर पुरा दया कमांयदा। गुर संगत ताईं सुणांयदा। जोत सरूपी इक्को इक्क डगमगांयदा। इक्को जोत विच मात पंज तत्त विच रहांयदा। फड़ फड़ बाहों सृष्ट सबाई आपे राहे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका राह वखांयदा। इक्को जोत हरि निरँकारी। गुर पूरे विच करे सच्ची अस्वारी। इक्का देवे शब्द साची धारी। आत्म करे ठंडी ठार, गुर पूरा रसना जाए उचारी। जोत सरूपी रिहा तार, अमृत बरखे ठंडी धार, गुर पूरा पाए गुर संगत सार, रसना रिहा नाम उचारी। हरि देवे शब्द अपार। गुर पूरा सुणे सच्ची धुन्कार, साची धुन रसना कढ्ढे बाहर, जगत बणत बणांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, कोई भेव ना पांयदा। जोत सरूपी निहचल धाम अटल्ल। गुर पूरा हरि विच मात उपजाए आत्म जोती देवे घल। आपणा आप ना किसे बूझ बुझाए जेहड़े वसे जल थल। आवण जावण लेख लिखावण गुर पीर शेख़ मुसायक औलीए पीर दस्तगीर शाह हकीर मुलां काज़ी शाह ताजी अस्व अस्वारा वेद पुरानी ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी पंडत पांधे थक्के मांदे आत्म अन्धे ना कोई पावे सार। चार वेद पए पुकारन। चौह जुगां नूं अवाज़ां मारन। दस अट्ठ अठारां करन पुकारां। प्रभ अबिनाशी तेरीआं दस्सण सच्चीआं धारां। कुरान अञ्जील मात कुरलाई। इक्को दिसे साचा माही। जोत सरूपी हरि जोत जगाई। निहकलंक नरायण इक्को जोत मातलोक गुरमुख साचे विच समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई। गुर पूरे करी विचार। प्रभ अबिनाशी आपणी किरपा दित्ती धार। इक्का जोत मात गुर नानक आया, शब्द सरूपी जामा धार। पूरी करी फेर विचार। केहड़ी करां मात कार। बेमुखां मारां शब्द मार। गया चल हरि द्वार। अग्गों मिल्या जोत सरूपी नर निरँकार। दोहां भुजां उत्ते उठाया, किरपा करी अपर अपार। गुर नानक आपणे तन लगाए, जोत सरूपी करे प्यार। एका शब्द दात झोली पाए, सोहँ शब्द हरि निरँकार। इक्क ओंकार सतिनाम मिली दात वड करामात, लोकमात आए दूजी वार। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपार। नानक मंगया इक्क दुआरा। जोत सरूपी इक्क अकारा। आत्म भरया इक्क भण्डारा। वंडी जाए विच संसारा। लौहन्दा जाए आत्म सर्ब अफारा। मिटाउँदा जाए जीव जो मन रक्खे हँकारा। इक्को सच्चा गीत सुणाउँदा जाए निरँकार निरँकारा। फड़ फड़ बाहों राहे पाउँदा जाए, ना कोई जाणे जात पात रक्खे भेव न्यारा। गूढ़ी नींद सवाउँदा जाए अमृत जाम प्याउँदा जाए। जोती नाल जोत मिलाउँदा जाए। दुरमति मैल धोंदा जाए। गुरमुख साचे संत जनां एका रंग रंगाउँदा जाए। गुर नानक कीती सच्ची कार। शब्द सरूपी चारे कुन्टां मारी उडार। वंडी जाए आप दातार। जोती जोत सरूप हरि, किरपा आपणी देणी कर, सच भण्डारा दित्ता भर, जोत आई ना दूजी वार। घनकपुर वासी हरि जामा धार। ल्या लोकमात विच अवतार। पिता जवंद सिँघ नाम लिखाए, माता ताबो लए गोद उठाल। साचा लेखा आप लिखाए, अन्तिम करे कलिजुग सतिजुग दोहां दी आप संभाल। जोती जोत सरूप हरि, आपणी चले चलाए उलटी चाल। जामा धार ल्या अवतारा। किया खेल अपर अपारा। विच संसारा पहली वारा सृष्ट सबाई पड़दा पाया सुट्टे मूंह दे भारा। संत मनी सिँघ इक्क जगाया, दित्ता शब्द अपारा। बाहों पकड़ आप जगाया, करया खेल विच संसारा। दीपक जोती आप जगाया, तेल बाती ना कोई रखाया, किया सच उज्जयारा। शब्द सरूपी मेल मिलाया, सिँघ साहिब महिताब सिँघ जो आख सुणाया। बीस बरस ना हरि उठाया। आपणा वेला पूर कराया। जोती जोत सरूप

१६८
०४

हरि, लोकमात हरि जोत धर, पहला सरगुण रूप बणाया। संत मनी सिँघ ल्या जगाए। शब्द सरूपी अवाज़ लगाए। वडा हरि शाहो भूपी, सच सिँघासण डेरा लाए। दिसे ना किसे सति सरूपी, गुरमुख साचे तेरे निज घर आप रखाए। प्रगट होया घनकपुर वासी, संत मनी सिँघ दूर दुराडे तेरी लथ्थी मनों उदासी, आया चल द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपारी। सरगुण रूप धार हरि अपारया। कलिजुग करी विचार, आपणा भेव आपे आप छुपा रिहा। किसे दिस ना आए देवी देव शिव शंकर गणेश ब्रह्मा वसे आपणे देस, प्रभ अबिनाशी विच मात कर के आया आपणा भेस, भाणा आपणे हथ्थ रखा लया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात मार झात, साची जोत जगा रिहा। पहली कीती खेल अपारी। बाल अवस्था हरि गिरधारी। साचे संत दित्ती नाम खुमारी। जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर रहे नर निरँकारी। बाल अवस्था बाल अञ्याण। संत मनी सिँघ विच मात बणाया सुघड़ स्याण। जिस बुलाया हुक्म सुणाया राजा राणा। उठ उठ बल धारो। आत्म मन विचारो। जगत जीव ना हो गंवारो। निहकलंक जोत सरूपी जामा पाया, करे खेल अपर अपारो। संत मनी सिँघ शब्द धुन्कारी। आउँदी रहे अट्ठे पहर वारो वारी। छोटा बाला ना सुरत संभाला, देवे शब्द सच्ची धारी। कलिजुग जीव तेरा तोड़न आया जंजाला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरगुण रूप करे खेल अपर अपारी। छोटी अवस्था दो साल। करे खेल हर कमाल। संत मनी सिँघ उठ, प्रभ अबिनाशी प्या तुठ्ठ, तेरा बणे विच दलाल। जोती जोत सरूप हरि, इक्को इक्क लभ्भा धरत मात विच्चों अनमुल्लड़ा लाल। संत मनी सिँघ खुशी मनाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। गुरमुखां संग रलाई। सर अमृत आया चांईं चांईं। गुर अर्जन तेरा साचा धाम, राम दास तेरा सच सरोवर मिलदा सच्चा जाम, वेखे थाँईं थाँईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे दिसे किसे नाही। आया संत गुरूद्वार। पहली कीती इक्क विचार। निहकलंक बाल अवस्था मंजा साहिब उत्ते दित्ता बहाल। अग्गों उठे वड पुजारी। जो बैठे विच हँकारी, मारी डाहढी मार। संत मनी सिँघ कलम चलाई, सर अमृत तेरा लेख लिखाई, कलिजुग अन्तिम ढहिणा दूजी वार। साचा कर्म हरि कमाए। दूजी वार हुक्म सुणाए। पुरी अनन्द राह वखाए। पंज साल अवस्था आपणी आप लिखाए। जोत सरूपी जोत हरि संत मनी सिँघ साचे संत इक्को सच्चा साथ निभाए। पुरी अनन्द किया घर सच वास। गुर गोबिन्द जिस दी आप बणाई साची रास। साचा वक्त आप सुहाया बैठा रहे छे मास। जोती जोत सरूप हरि, माया पड़दा इक्का पाया, मात पताल अकाश। होए शब्द अपारे, संत मनी सिँघ उठ बल धारे। पुरी अनन्द विच अवाज़ां मारे। सोए जागो, उठ उठ भागो, चरनी लागो, वेला गया फेर पछताए, जोती जोत सरूप हरि, माया पड़दे सभ नूं पाए, ना कोई सुरत संभाले।

तीजा हुक्म हरि सुणाया। संत मनी सिँघ फड़ उठाया। नीला चोगा इक्क रंगाया। पंज साल अवस्था होई, गुर पूरे दे तन पहनाया। आपणे कंधे लए उठाए, पुरी अनन्द दे विच फिराया। उठो मुस्लमानो नौजवानो अमाम मैहन्दी बण के आया। अन्तिम कलि मौत राणी दो हथ्थां नूं लावे मैहन्दी। कलिजुग जीव गुमानी वड सवाणी, पीहड़े डाह डाह थले बहिंदी। उत्तों वेख मौत राणी, कलिजुग जीव वाहवा साचे हाणी, बाहों फड़ फड़ नाल लैंदी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर देवे वर, अट्ठे पहर दर ते कहन्दी। प्रभ अबिनाशी पड़दा पाया। संत मनी सिँघ ज़ोर लगाया। हिन्दू सिख ईसाई मुस्लिम कोई उठण ना पाया। उठ मनी सिँघ होया त्यार। साची करी इक्क विचार। संत मनी सिँघ लिखे लेख, राजे राणे करे ख़बरदार। निहकलंक कलि जामा पाया, आई चल सच्ची सरकार। आपणा भेव आप छुपाया, दिस किसे ना आया, भरम भुलेखे रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, भरम भुलेखे झूठे लेखे सभ दे रिहा विचार। राजे राणे ना करन विचारे। अन्तिम वेले होए ख्वारे। साचे लिखे लेख बण गुरसिख लिखारे। विच मात कलि वेख लग्गी मेख ना कोई उखाड़े। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम दर दर घर घर मौत लाड़ी मगर लगाए देंदी जाए बहारी। सिर उत्तों लाहे बाणा। कलिजुग बणाया अन्धा काणा। सिँघ सिँघासण बैठा हरि जी आपणा किया सच्चा भाणा। जोती जोत सरूप हरि, दूजा पड़दा आपे लाहे, तख्तों लथ्थे राजा राणा। साची खेल आप रचाए। हथ्थों कंगण एह भी लाहे। राउ उमराउ दर दर मंगण भिख कोई ना पाए। गुरमुख साचे साची दात इक्को मंगण, साचा नाम हरि झोली पाए। दर घर साचे मूल ना संगण, शब्द डोरी नाल बंधाए। कलिजुग अन्तिम ना होयण नग्न, शब्द पड़दा उत्ते पाए। दीपक जोती आत्म जगण, जोत सरूपी डगमगाए। इक्क लगाए गुरसिक्खां मुख सोहँ साचा सगन, आपणे नाल लए प्रनाए। पंचम् जेठ सोहणा निराला लग्न, सतिजुग तेरी धार बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं आपणी कार आपे आप कराए। करे तन श्रृंगार भेख वटांयदा। ना कोई जाणे जीव गंवार, निहकलंक जामा पांयदा। प्रगट होया विच संसार पहली वार, शब्द डंक इक्क वजांयदा। आप मिटाए कलिजुग तेरा अन्धेर, दीपक जोती इक्क जगांयदा। गुरमुख तारे करे आपणी मेहर ना लाए देर, अमृत सीर प्यांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा राणा हरि सुल्तान है। सृष्ट सबाई इक्क भगवान है। वेले अन्त लए छुडाई, चारों तरफ निगाहबान है। ना कोई सके भेव छुपाई, खोटे खरे परखे बेईमान है। आत्म जोती सभ दे धरे, नाल रक्खे पंज शैतान है। शब्द डोरी नाल बंधाए, गुरमुख तेरे वस कराए अन्तिम देवे हाण है। बेमुखां दहि दिश दे विच फिराए, ना सके कोई उठान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्क सच्चा नाम निधान

है। मिले नाम निधाना। गुरमुख होए चतुर सुघड़ स्याणा। इक्को जोत जगे महाना। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, हथ्थीं बन्ने साचा गाना। आत्म जोती देवे धर, सच्चा देवे ब्रह्म ज्ञाना। ना कोई वेखे नारी नर, बिरध बाल इक्क जवाना। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं दा दाना बीना। सर्ब जीआं एका राखा। जोत सरूपी सच्चा साखा। साचा राह गुरमुख विरले विच मात दे भाखा। अन्तिम कलिजुग नेड़े आया, निहकलंक जन तेरा होया राखा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम निधान गुणवन्त हो। मेहरवान हरि नर नर हरि अलखणा अलाखा। देवे नाम हरि मेहरवान। गुरमुख साचे आप बणाए चतुर सुजान। देवे दान एका शब्द सुणाए कान, मारे शब्द तीर सच्चा बाण, आत्म सभ दा विन्ह वखाए जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म बैठा डेरा लाए। आत्म डेरा लाया रूप अपार है। बेमुखां पड़दा पाया होया अन्ध अंध्यार है। गुरसिख सोया आप जगाया, दीपक जोती किया उज्जयार है। फड़ फड़ बाहों राहे पाया, सिध्धा राह इक्क रखाया, जिथ्थे वसे हरि निरँकार है। विच राह ना कोई अटकाया, धर्म राए बैठा शरमाया, चितुर गुप्त ने मूंह भवाया, सिध्धा जाए विच दरबार है। साचा लेखा हरि चुकाया, लहणा देणा आप मुकाया, साचा गहणा तन पहनाया किया सच्चा इक्क श्रृंगार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले अन्तिम कलि गुरमुखां तन पहनाए फूलण सोहणा सच्चा हार है। फूलणहार गुरसिक्खां गल विच डाले। आपणी गोदी आप उठाए, आपे आप लपेटे चिट्टे विच रुमाले। बेमुख कलिजुग जीव तन काया पहने सूसे काले। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी दीप जगाया, बेमुखां कलि दिस ना आया, अन्तिम करे बाहों फड़ फड़ मूंह काले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डण्डा हथ्थ उठाया, सोहँ जिस दा नाम रखाया, उचे डाहण दए चढ़ाया। फल किसे दा रहण ना पाया। सोहँ डण्डा हथ्थ उठाए। बेमुखां दी कंडां उत्ते आप लगाए। करी जाए उत्तों झण्डां, पाउँदा जाए जगत वंडां, करी जाए खण्ड खण्डां, आत्म पाए ठंडां, एका दात झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डण्डा आपणे हथ्थ रखाए। सोहँ डण्डा उठे हो त्यार। निहकलंक करे तेरे तन श्रृंगार। गुरमुखां दी आत्म वसीं करीं सच्चा इक्क प्यार। इक्को राह सच्चा दस्सीं, निहकलंक लोकमात आया जामा धार। बेमुखां दे कोल खलो के खिड़ खिड़ हस्सीं, देवीं धक्का मार। मुड़ के उत्तों फड़ के कसीं, शब्द डोरी खिचीं दोवें भुजां पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुख विरला पाए सार। शब्द डण्डा हरि हथ्थ ललकारे। निहकलंक नूं अवाजां मारे। आ मात मेरी सच्ची सरकारे। लक्ख चुरासी होई बड़ी ख्वारे। कलिजुग पापी फड़ फड़ सभ नूं धक्के मारे। मिले ना माण ना किसे मदीने ना मक्के, ना कोई रक्खे माण बूरे कक्के, जोती

जोत सरूप हरि, किसे बैठा रहण ना देवे उचे सुच्चे किसे चुबारे। महल मुनारे देणे ढाह। आपे पाउणा इक्को गाह। सृष्ट सबाई आपे करे सफा। गुरमुख साचे लए बचा। सरन सरनाई लए लगा। उत्ते पड़दा शब्द पा। प्रेम डोरी नाल बंधा। रसना गंढु दए दवा। सोहँ जो जन रहे गा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम अन्त कलि गुरमुखां फड़े बांह। सोहँ डण्डे उठ कर इशनान। उठ के वेखे मार ध्यान। जोत सरूपी जामा पाया भुले फिरन जीव निधान। साचा हरि किसे दिस ना आया, आत्म भरया वड गुमान। एका आत्म हँकार रखाया, ना कोई जाणे जोत सरूपी हरि भगवान। माझे देस भाग लगाया। सोहणा वेस इक्क रखाया। खुल्ड़े केस रहे कराया। पंचम् जेठ दिन सुहाया। चारे वेस कर वखाया। चिट्टा बाणा तन छुहाया। सूहा बाणा नाल रलाया। तीजा बाणा लाल रंगाया। चौथा काला तन लै पाया। बेमुखां कढ्ढे दवाला, ना होए कोई सहाया। गुरमुखां दस्से राह सुखाला, निहकलंक विच मात दे आया। बेमुखां लग्गे हड्डीं पाला, सोहँ डण्डा प्रभ हथ्थ उठाया। आत्म होई जिन्हां कंगाला, सच्चा माल धन्न किसे हथ्थ ना आया। ना कोई तोड़े जगत जंज़ाला, ना कोई करे गुरमुखां प्रितपाला, आपणी गोदी लए उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया।
१७२ सोहँ डण्डा उठ ललकारे। मातलोक पहली वारे। पहली कूट मारे मार करे ख्वारे। गुरमुख साचे सच पंघूड़ा रहे झूट, १७२
०४ देवे आप हुलारे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे तेरी आत्म वसे सच्चे इक्क चुबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०४
निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुखां रक्खे पैज संवारे। गुरमुखां पैज संवारदा। रातीं सुत्तयां वाजां मारदा। करे कम्म पहरेदार दा। ऊँच नीच ना कोई विचारदा। एका मारे ध्यान, वेखे प्रेम चरन प्यार दा। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं हरि आपे जाणदा। सोहँ डण्डा खुशी मनाए। मैं आया विच वरभण्डा, निहकलंक आपणे हथ्थ उठाए। पाउँदा जाए सभ दीआं वंडां, फड़ फड़ चरनां नाल लगाए। आपे वेखे सत्त दीप नौ खण्डां, नारां रंडां सर्ब वखाए। तोड़ी जाए सर्ब घमंडां, भन्नी जाए कच्चे अंडां हरि जी भन्ने दोहीं हथ्थीं ठोकर रिहा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दिस किसे ना आए। सोहँ डण्डे खुशी मनाई। वाहवा सोहणी सेवा हरि जी लाई। बेमुखां नूं फल खवाई। इक्को मेवा सिर उत्ते लगाई चांईं चांईं। ना कोई होए सहाए देवी देवा, थाउँ थाँईं बैठे मारन धाईं। गुरमुख विरले रसना हरि जी जपया जिह्वा, वेले अन्तिम होए सहाई। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोकां पाए सार, मेट मिटावे सभनीं थाँईं। सोहँ डण्डा उठ ललकारे। आया दर सच्चे दरबारे। दोए जोड़ करे निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मैं जावां बेमुखां दे दर दुआरे। इक्को देवीं सच्चा वर, मैं जाए करां सभ नूं सर, बेमुखां करां चीर दो फाड़े। चारे कुन्टां आउणा डर, घर

घर रोवण नार नर, किसे ना मिले साचा वर, अन्तिम भाग होए माढ़े। गुरमुखां हरि जी ल्या वर। चरन लाग गए तर, आप बणाए साचे लाड़े। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी अन्दर बैठा आपे वेखे चंगे माढ़े। आपे आप हरि पछाणदा। जीवां जन्तां साधां संतां आदिन अन्ता वेख वखाणदा। गुरमुखां मिले साचा कन्ता बणाए बणता, ना आए पासा हारदा। औखे होए जीव जन्ता, जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए अवतार नर भेख धारे श्री भगवान दा। धर धर भेख जगत भुलांयदा। गुरमुख साचे संत जन आत्म वेख चरन प्रीत बन्ह्नांयदा। लिखदा जाए साचे लेख, मिटाउँदा जाए बिधना रेख, सोहँ डण्डे नाल घसांयदा। गुरमुख साचे नेत्र लैणा पेख, मिटदे जाण वड वड सेठ, प्रभ साचा खेल रचांयदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समांयदा। गुर संगत खुशी मनाईआ। साचा हरि रसना गाए चांईं चांईंआ। मिल जाए दूजा सच्चा वर, वसणा सच्चे घर, आत्म हँकार सर्ब तजाईआ। मिलणा अवतार नर, चुकाए भरम डर, साचे धाम बहाईआ। किरपा आपणी देवे कर, आत्म साची जोत धर, करे जीव रुशनाईआ। इक्को इक्क रिहा कर, जोत सरूपी जामा धर, नीच ऊँच भेव मिटाईआ। आप खुल्हाए साचा दर, इक्क वखाए साचा सर, आत्म तीर्थ सच इशनान कराईआ। इक्क वखाए साचा घर, वेले अन्तिम लैणा वर, भुल भुलेखे आउणा दर, मस्तूआणा साचा धाम हरि विच मात उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल लई कर, किसे मंगण ना जाणा दर, शब्द सरूपी रिहा जगाईआ। राणे संगरूर आवे डर, प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी उत्ते बहे चढ़। आप चुकाए पिछला लहिण देण, दोहीं हथ्थीं लए फड़। सौखा साह फेर ना लैणा, एथे अग्गे जाए अड़। हरि ना दिसे दोए नैणा ना दिसे केहड़े राह अन्दर गया वड़, पहरेदार खड़े चुफेरे, चारों तरफ मारन गेड़े, जोती जोत सरूप हरि, सभ नूं बाहर गया छड्ड। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, आपणा भेव आप खुल्हाए, राजे राणे सरन लगाए जो मारी बैठे दड़। राणा संगरूर आप उठावणा। आत्म तोड़ सर्ब गरूर, कर कर चूरो चूर एका नूर फेर वखावणा। जेहड़ा दिसे दूरो दूर, प्रगट हो स्वच्छ सरूपी दरस दिखावणा। आसा मनसा जाए पूर, शब्द सरूपी रिहा घूर, इक्क उपजाए साची तूर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका राह साचा थां चरन वखावणा। राणा संगरूर उठ विचारे। केहड़ा एहनूं वाजां मारे। केहड़ा पाई बैठा उत्ते भारे। दोहीं हथ्थीं जोर लगाए, उत्तों ना उतरे हरि निरँकारे। आपणी खेल आप वरताए, पाउँदा जाए होर भारे। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल विच संसारे। राणा संगरूर धारे बल। केहड़ा अन्दर आया करे वल छल। मैं आपणा कवाड़ बन्द रखाया, खुल्हाया केहड़ी कल। आउँदा जांदा कोई नज़र ना आया, जेहड़ा रिहा मैंनूं दल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, उत्ते

भार पाए, रिहा दबाए दम सुकाए मूंहों मंगे जल। राणा संगरूर करे पुकार। लग्गी तृखा कोई देवे निवार। ओथे ना कोई सुणे पुकार। प्रभ अबिनाशी प्रगट होवे किरपा धार। सिर दे उत्ते हथ्थ रखाए, अमृत झिरना इक्क झिराए, आत्म करे ठंडी ठार। इक्को बूंद मुख चुआए, कँवल नाभ हरि आप उलटाए, खिड़े कँवल सच्ची गुलज़ार। उप्पर धवल माण दवाए, चरनी हरि जी सीस निवाए, वेखे रंग सच्चे करतार। दस्म दुआरे बूझ बुझाए, माया पड़दे आपे लाहे, सोहँ डण्डे नाल हटाए, सोहँ खण्डे नाल वडाए, करे लोअ अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर, आपणी किरपा आपे धार। दूजा देवे इक्क प्यार। जगे जोत अगम्म अपार। राजा डिग्गा मूंह दे भार। दोए जोड़ गुर पूरे, तेरे चरन करे निमस्कार। सिर उत्ते हथ्थ धरे धरनी धरन, चरन लाग सारे तरन खिच्ची आए वारो वार। आपणे हथ्थ रक्खे वाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणाए दर सर्ब भिखार। राजे मंगण बण भिखारी। किरपा कर हरि गिरधारी। देवे इक्को नाम खुमारी। मारी सच्ची इक्क उडारी। हउमे विच्चों जाए बिमारी। चरनी लग्गीए कर प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप बंधाए आपणी धारी। आपणी धार हरि बन्नाए। राजा राणा सरन लगाए। देवे नाम निधाना, आत्म दीपक जोत जगाए। भगवन्त हरि भगवाना, बेमुखां दिस ना आए। गुरमुखां बद्धा हरि दर गाना, विच्चों मात लए उठाए। सच्चा देवे नाम निशाना ब्रह्म ज्ञाना
१७४ ०४ हरि ध्याना, सोहँ रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे पल्लू नाल बंधाए। सिँघ पूरन की करे बेचारा। १७४ ०४
विच वड़ बैठा जोत सरूपी हरि निरँकारा। सृष्ट सबाई मारे धक्के, ना निकले विच्चों बाहरा। तट्ट तीर्थां लभ्भ लभ्भ थक्के, कई लभ्भदे फिरदे मदीने मक्के, डिग्गे मूंह दे भारा। कक्के बूरे सारे अक्के, ना मिले खुदाई नूर प्यारा। हार थक्के ईसा मूसा, सभ दा होवे काला सूसा, कलिजुग अन्तिम आप पुकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क नरायण नर रसना सारे कहण तिन्नां लोकां पाए सारा। गुर संगत तेरा मुल्ल पवाया। सोहणा सच्चा तोल तुलाया। सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। शब्द डण्डे नाल बंधाया। विच वरभण्डां हरि जी आया। नव खण्डां नूं लए तुलाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आपणे दर आप बहाया। गुर संगत किया सच प्यार। बेकुंठ निवासी आया गुरमुखां दे द्वार। नेत्र बन्द रखाए ना वेखे मदिरा मासी, दर हुन्दे रहण ख्वार। गुरमुख साचे आत्म साचे करन हासी, प्रभ रिहा कर्म विचार। जोती जोत सरूप हरि, बेमुखां मारे डाहढी मार। गुर संगत किया सच विहारा। रसना गाया हरि निरँकारा। दर्शन पाया पहली वारा। प्रगट होया जगत दातारा। जिस नूं लग्गे झूठा भेख, आए चल दुआरा। प्रभ अबिनाशी आपे लए वेख, लाहे तन अफारा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द डण्डा रिहा हुलारा। सभ दी वेखे आत्म खोटी। कटी जाए बोटी बोटी। साचे

दर जो जन आए, भरम भुलेखा सभ दा गंवाए, भुला कोई रहि ना जाए, कोटन कोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, ना वेखो काया खोटी। एह काया हरि दातार। विच वसे हरि निरँकार। राह साचा दस्से, पावे साची सार। जो जन दर आए हस्से, शब्द तीर एका कसे, तोड़े सर्ब हँकार। फड़ फड़ बाहों गुरमुखां राह साचा दस्से, बेमुखां चरनां हेठ झस्से उत्ते पावे डाहढा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए, ना करे कोई उधार। भरम भुलेखा होए जिस जन, आए चल द्वार। साचा लेखा आप चुकाए तन, गंवाए सर्ब हँकार। साचा लाए विच गुर संगत डन्न, शब्द खण्डा रिहा हुलार। झूठी काया भाण्डा देवे भन्न, लाहे तन अफार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन जाणे जीव गंवार। ना एह जीव ना बाल निधाना। ना एह बुढ्ढा बिरध ना एह नौजवाना। जोत सरूपी इक्का रंग इक्का रूप श्री भगवाना। तिन्नां लोकां वडा शाहो भूप, फड़ी बैठा शब्द सरूपी हथ्थीं तीर कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई तेरा इक्को इक्क करे सच निशाना। सच निशाना चले तीर। बेमुखां आत्म जाए चीर। चार कुन्ट होए वहीर। ना कोई दिसे पीर फ़कीर। मिटदे जाण दस्तगीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं रिहा चीर। पावे सार वेद पुराना। पढ़ पढ़ थक्के कलिजुग जीव, ना मिल्या सच्चा इक्क निशाना। अन्तिम कलिजुग सारे थक्के,
१७५ ०४ चारों कुन्ट पैण धक्के, मुख भवाए हरि भगवाना। धर्म राए दे घर विच धक्के, इक्को वारी बन्द कवाड़ आप कराना। महाराज १७५ ०४
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां गुर संगत मेल मिलाए साचा देवे नाम निधाना। गुर संगत गुर दर सच्चा धाम। रल मिल बहिणा प्रभ अबिनाशी दस्से साचा राह, गलों कटे जम का फाह, दरस दिखाए प्रगट होए दूसर कोई ना। ना कोई पिता ना कोई मां। पहलां आपणा तन जलाया। कलिजुग जीवां डन्न लगाया। साचा शब्द इक्क उपजाया कन्न सुणाया। जोत सरूपी जामा धार विच संसार पंचम् जेठ प्रगट होए विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच समाया। आपणी देह हरि तजाई। दूजी चोली आप उपाई। वस्सया काया चोली बणाई दर दी गोली, ना जाणे कोई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव रिहा छुपाई। हरि साचा भोग लगाए, पूर कराए भावनी। गुरमुखां चोग चुगाए, मिटाए काया झूठी कामनी। साचा जाम प्याए, मिटाए अन्धेरी शामनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्न्हाए साची दामनी। गुरमुखां चोग चुगांयदा। भोरा भोरा मूंह विच पांयदा। थोड़ा थोड़ा दु:ख वंडांयदा। गुरमुखां जोड़ा जोड़ा कर बहांयदा। शब्द घोड़े फिर चढ़ांयदा। धुरदरगाही अग्गे आया दौड़ा, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि वखाए इक्को सच्चा पौड़ा, तिन्नां लोकां जो लगांयदा। गुरमुखां प्रभ साचा बौहड़ा, अन्तिम कलि बांह फड़ांयदा। आपे भन्ने कलिजुग

जीव रीठा कौड़ा हरि हथौड़ा सिर लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची साचा धाम साचा माण दवांयदा। लाए भोग भुक्ख गंवाए। सहिंसा रोग दुःख मिटाए। आप उपजाए आत्म सुख जो जन चरन ध्यान लगाए। उज्जल करे मात मुख, जो जन रसना गाए। सुफल कराए मात कुक्ख, मानस जन्म लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुलाए। लग्गे भोग हरि बनवारया। मिल्या धुर संजोग, मिल्या नर अवतारया। ना होए अन्त विजोग, किरपा कर हरि निरंकारया। मिटाए चिन्ता सोग, देवे शब्द अपर अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा मेल मिलाया, चरन नाता इक्क बणाया, कलिजुग अन्तिम पहली वेरया। लग्गे भोग सुख वखांयदा। देवे साचा नाम जोग, तृष्ना भुक्ख गवांयदा। कटे हउमे रोग, शब्द दात आत्म झोली पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरमुखां आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। सच कमान आप उठांयदा। तीर भथ्था पिछे बन्ह्रांयदा। दोवें हथ्थीं खिच्च वखांयदा। मारे बेमुखां दे सीने विच विन्ह्र विन्ह्र पार करांयदा। गुरमुख साचे संत जन चरन ल्याए खिच्च, अमृत सीर प्यांयदा। जोती जोत सरूप हरि, रसना तीर इक्क चलांयदा। रसना खिच्चे तीर सच कमान है। ना कोई देवे किसे धीर, ना करे कोई सच ध्यान है। ना मिले किसे सीर, ना हथ्थ आउणा नीर, अन्तिम कलि सर्ब पछतान है। गुरमुखां प्रभ मिलदा दूर दुराडा पैंडा चीर, अमृत मुख चुआए साचा सीर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जामा धार, गुरमुखां कटण आया भीड़ है।

१७६ ०४

❇ १४ चेत २०११ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ❇

धन्न कमाई भगत जन, गुर दर बहंदे। धन्न कमाई संत जन, हरि नाउँ ध्याँदे। धन्न कमाई भगत जन, सच कर्म करंदे। धन्न कमाई संत जन, हरि नाम रसना दिवस रैण ध्यांदे। धन्न कमाई भगत जन, साचा धर्म विच मात चलांदे। धन्न कमाई संत जन, हउमे तृष्ना रोग गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, प्रेम सितार इक्क वजांदे। धन्न कमाई संत जन, दूई द्वैती पड़दा लौहन्दे। धन्न कमाई संत जन, आपा विच्चों हउमे रोग गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, दुरमति मैल गुर दर गवांदे। धन्न कमाई संत जन, रल मिल सखीआं मंगल गांदे। धन्न कमाई भगत जन, भुले अवगुण हरि दर बख्शांदे। धन्न कमाई संत जन, नैण मुँधारी रिदे धिआंदे। धन्न कमाई भगत जन, जगत जंजाला आप कटांदे। धन्न कमाई संत जन, दे शब्द ज्ञान बेमुखां समझांदे। धन्न कमाई भगत जन, इक्का ओट हरि रखांदे। धन्न कमाई संत जन, शब्द

चोट तन वजांदे। धन्न कमाई भगत जन, अन्दरों खोट सर्ब गवांदे। धन्न कमाई भगत जन, आत्म दूई द्वैती लगा फट्ट आपणी हथ्थीं आप सुआंदे । धन्न कमाई संत जन, जूठा झूठा मोह विच मात आपणा आप तजांदे। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द सुणन कन्न आत्म जाए सभ दी मन्न, एका चरन ध्यान रखांदे। धन्न कमाई संत जन, माया ममता जगत जंजाल आपणे तनों लाहुंदे। हरि भगवान देवे वड्याई, संतां भगतां दोहां मेल मिलान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया देवे सोहँ सच्चा इक्क ज्ञान। धन्न कमाई भगत जन, विच मात संसार। धन्न कमाई संत जन, गुर चरन करन प्यार। धन्न कमाई भगत जन, एका दिसे शब्द सच्ची धुन्कार। धन्न कमाई संत जन, एका बैठ सेवा लाए अट्ठे पहर रहे ध्याए, हउमे रोग सर्ब निवार। धन्न कमाई भगत जन, दोए जोड़ करदे रहण हरि दर तेरे सच्चे घर सदा सदा निमस्कार। धन्न कमाई संत जन, एका मंगण साची मंग बण बण जगत भिखार। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म जाए सुधार। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी रसना रिहा उचार। धन्न कमाई भगत जन, दूजा शब्द वसाए तन, तीजा आत्म जाए मन, चौथे घर साचा हरि जोत जगाए अपर अपार। धन्न कमाई संत जन, भाण्डा भरम देवे भन्न, अग्गे आयण मूल ना संग, साचा देवे शब्द अस्वार। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई संत जन, दोहां बेड़ा देवे बन्न, निहकलंक नरायण नर अवतार। धन्न कमाई भगत जन, हरि रिदे विचारे। धन्न कमाई संत जनां, कारज सिध्धे आप करे कराए आप हरि निरँकारे। धन्न कमाई भगत जन, लग्गे चोट एका शब्द तन नगारे। धन्न कमाई संत जन, एका रक्खण ओट हरि गिरधारे। धन्न कमाई भगत जन, विच्चों कढ्ढण खोट हउमे चिन्ता रोग निवारे। धन्न कमाई संत जन, मंगदे रहण दुआरे। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्याई संत जन देवे सच्चा नाम धन्न निहकलंक नरायण नर अवतारे। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म अनमोल । धन्न कमाई संत जन, पूरे तुल्ले तोल। धन्न कमाई भगत जन, वेले अन्त ना जायण डोल। धन्न कमाई संत जन, प्रभ वसे आत्म सदा कोल। धन्न कमाई भगत जन, सोहँ शब्द वजदा रहे अट्ठे पहर ढोल। धन्न कमाई संत जन, प्रभ आत्म पड़दे देवे फोल। धन्न कमाई संत जन, करे कराए आपणे चोहल। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दे अन्दर रिहा बोल। धन्न कमाई भगत जन, शब्द तूरा। धन्न कमाई संत जन, मिले जोती नूरा। धन्न कमाई भगत जन, हरि पाया गहर गम्भीरा। धन्न कमाई संत जन, होए शांत सरीरा। धन्न कमाई भगत जन, कटे हउमे पीड़ा। धन्न कमाई संत जन, बन्ने आपणा बीड़ा। धन्न कमाई भगत जन, चुकाए जगत झेड़ा। धन्न कमाई संत जन, आप वसाए काया नगर खेड़ा। धन्न कमाई

भगत जन, प्रभ अबिनाशी दिसे नेड़न नेड़ा। धन्न कमाई संत जन, प्रभ आत्म रक्खे खुल्हा वेहड़ा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर शब्द लैण, रसना कहण धन्न धन्न, अन्त ना मारे करे ख्वारे आपे देवे साचा गेड़ा। धन्न कमाई संत जन, अन्त ना लग्गे मूल डन्न, इक्को मिले माल नाम धन्न, मिटे जगत झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदिन अन्ता गुणी गुणवन्ता बन्न्हदा जाए बेड़ा। धन्न कमाई भगत जन, गुर चरन दुआरा। धन्न कमाई संत जन, जगे जोत अगम्म अपारा। धन्न कमाई भगत जन, वेखण हरि कन्त सच्चा भतारा। धन्न कमाई संत जन, मिल्या नाम सच्चा भण्डारा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ प्रगट होए दरस दिखाए वारो वारा। धन्न कमाई संत जन, शब्द दात प्रभ झोली पाए बणे आप वरतारा। धन्न कमाई भगत जन, दूजा मंगण ना कोई होर दुआरा। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी किरपा कर खोल्हे दस्म दुआरा। धन्न कमाई भगत जन, एका जोत हरि बलोए दर्शन देवे तीजे लोए आपणा भेव निवारा। धन्न कमाई संत जन, नेत्र अवर ना दीसे कोए एका दीसे हरि गिरधारा। धन्न कमाई भगत जन, अन्तिम मिल्या हरि करतारा। धन्न कमाई संत जन, आत्म किया सच पसारा। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई संत जन, दोहां मिल्या महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क सच भतारा। धन्न कमाई भगत जन, दर साचा मंगण। धन्न कमाई संत जन, काया चोली आपणी रंगण। धन्न कमाई भगत जन, दर घर साचे मूल ना संगण। धन्न कमाई संत जन, एका तन शृंगार लगायण सोहँ शब्द साचा कंगण। धन्न कमाई भगत जन, भाण्डा भरम झूठा भन्नण। धन्न कमाई संत जन, साचा नाम हरि झोली पाए लग्गे मात ना संन्हन। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द हरि उपजाए इक्क सुणाए कन्नन। धन्न कमाई संत जन, कलिजुग जीव होए अन्न्हन। धन्न कमाई भगत जन, दोवें बण गए सच्चे भाई निहकलंक तैनूं मन्नण। धन्न कमाई भगत जन, हरि दए दिलासा। धन्न कमाई संत जन, प्रभ आप मिटाए आत्म लग्गी तृष्ना प्यासा। धन्न कमाई भगत जन, अन्तिम जन्म कराए रहिरासा। धन्न कमाई संत जन, लक्ख चुरासी करे विनासा। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ अबिनाशी होए दासन दासा। धन्न कमाई संत जन, आत्म वेखण हरि तमाशा। धन्न कमाई भगत जन, जोत सरूपी अन्दर बैठा पाउँदा रहे रासा। धन्न कमाई संत जन, इक्को दित्ता सच्चा नाम ना तोला ना मासा। धन्न कमाई भगत जन, इक्को मंगण सच्चा दान अग्गे डाहिण काया चोली सच्चा कासा। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी करे बन्द खलासा। धन्न कमाई संत जन, धन्न कमाई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दोहां विच इक्को जिहा रक्खे वासा। धन्न कमाई भगत जन, हरि हाज़र हज़ूर। धन्न कमाई संत जन, आत्म होए भरपूर। धन्न कमाई भगत जन, पंजां चोरां

करना दूरो दूर। धन्न कमाई संत जन, सोहँ शब्द रसना गायण आत्म मिटे गरूर। धन्न कमाई भगत जन, धन्न कमाई संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां दस्से इक्को थां, आपे फड़े दोहां बांह, प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूर। धन्न कमाई भगत जन, हरि सच पछाणा। धन्न कमाई संत जन, करया गुर चरन ध्याना। धन्न कमाई भगत जन, हरि देवे सच्चा दाना। धन्न कमाई संत जन, उपजे ब्रह्म ज्ञाना। धन्न कमाई भगत जन, शब्द सुणाए हरि काना। धन्न कमाई संत जन आप पहनाए दया कमाए शब्द सरूपी चिट्टा बाना। धन्न कमाई भगत जन मन्नण साचा भाणा। धन्न कमाई संत जन, मिल्या हरि भगवाना। धन्न कमाई भगत जन, वड वड्याई संत जन दोहां दिसे इक्क निशाना। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या सच्चा राह। धन्न कमाई संत जन, मातलोक बैठे वेखण सचा थां। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर भाणा रहे मन्न कदे ना मुख चों निकले ना। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी रक्खे ठंडी छाँ। धन्न कमाई भगत जन, आपणी गोद उठाए जिउँ बालक मां। धन्न कमाई संत जन, दरगहि साची देवे ला साचे नां। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्याई संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दोहां दा आपे बणे पिता आपे मां। धन्न कमाई भगत जन, हरि साचा दिसे। धन्न कमाई संत जन, विच मात वंडायण आपणे साचे हिस्से। धन्न कमाई भगत जन, बेमुख कलिजुग जीव पिसे। धन्न कमाई संत जन, कोई ना करे इस दी रीसे। धन्न कमाई भगत जन, मिटदा जाए भेव बीस इकीसे। धन्न कमाई संत जन, हरि सोहँ शब्द छत्र झुलाए सीसे। धन्न कमाई भगत जन, देवे वड्याई नाम धन्न, चरन लगाए मूसे ईसे। धन्न कमाई संत जन, भेव खुल्हाए साचे तन, एका शब्द सुणाए सपारे तीसे। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्याई संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा नाम दान, आए दर हरि भगवान, हो मेहरवान देवे सच्चा इक्क निशान, साचा गुण निधान छत्र झुलाए सीसे। धन्न कमाई भगत जन, हरि मिल्या सज्जण मुरारा। धन्न कमाई संत जन, पायण दरस आत्म अपारा। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या मेल कृष्न मुरारा। धन्न कमाई संत जन, मिल्या जोत सरूपी राम अवतारा। धन्न कमाई भगत जन, नेत्र पेखण साचे तन इक्को जोत हरि निरँकारा। धन्न कमाई संत जन, आत्म दीपक जोती होए मात उज्जयारा। धन्न कमाई भगत जन, दर आए लेखे लाए मानस जन्म सुधारा। धन्न कमाई संत जन, मिल्या पुरख अगम्म अपारा। धन्न कमाई भगत जन, हउमे दुखड़ा लाहे भारा। धन्न कमाई संत जन, देवे शब्द अपर अपारा। धन्न कमाई भगत जन, मंगण आयण चल दुआरा। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी आपणी हथ्थीं बणे आप वरतारा। धन्न कमाई भगत जन, आत्म झोली लैण भराए खुल्हया इक्क दुआरा। धन्न कमाई संत जन,

मिल्या मेल हरि निरँकारा। धन्न कमाई भगत जन, मिले वधाई संत जन, दोहां मेल मिलाया इक्को जोती हरि निरँकारा। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म सुधारया। धन्न कमाई संत जन, हरि पाया अपर अपारया। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म मात सुधारया। धन्न कमाई संत जन, सच्चा मिल्या हरि भतारया। धन्न कमाई भगत जन, देवे सच्चा नाम धन्न, जोत जगाए साचे तन खोल्ले दस्म दुआरया। धन्न कमाई संत जन, मिले सच्चा नर, आपणी किरपा कर जोत देवे धर करे उज्जयारया। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्याई संत जन, दोवें मंगण इक्क द्वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारया। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या सच्चा राह। धन्न कमाई संत जन, गलों कटया जम का फाह। धन्न कमाई भगत जन, अग्गे वेखण सच्चा थां। धन्न कमाई संत जन, ना कुछ पीण ना कुझ खाण। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्याई संत जन, दोहां धिरां दा इक्को नां। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ देवे आत्म धीरे। धन्न कमाई संत जन, सोहँ शब्द मिल्या साचा सीरे। धन्न कमाई भगत जन, विच मातलोक बणे साचे हीरे। धन्न कमाई संत जन, इक्क दूजे दे साचे वीरे। धन्न कमाई भगत जन, इक्को चोट शब्द लाए अक्खीं चले नीरे। धन्न कमाई संत जन, चलदे रहण धीरे धीरे। धन्न कमाई भगत जन, हरि पाया गहर गम्भीरे। धन्न कमाई संत जन, झूठी माया विच्चों काया प्रभ अबिनाशी आपे चीरे। धन्न कमाई भगत जन, इक्क वसाया शब्द तन, हउमे विच्चों कढ्ढी पीड़े। धन्न कमाई संत जन, वसे सच्चे थां, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवान इक्क प्याए अमृत दोहां सच्चा सीरे। धन्न कमाई भगत जन, हरि सच्चा भालया। धन्न कमाई संत जन, विच रक्खण नाम सच्चा दलालया। धन्न कमाई संत जन, गलों लाहया सूसा कालया। धन्न कमाई संत जन, तन काया मन्दिर आपणा आप सुहा लया। धन्न कमाई भगत जन, हरि साचा रिदे वसा लया। धन्न कमाई संत जन प्रभ अबिनाशी घरों पा लया। धन्न कमाई भगत जन दीपक जोत आपणा आप जगा लया। धन्न कमाई संत जन, लाल अनमोलक साचा मोती आपणे गल विच लटका लया। धन्न कमाई भगत जन, आत्म उठाई कलिजुग सोती, सोहँ रसना गा लया। धन्न कमाई संत जन, दोहां दी बण गई इक्को गोती जोती जोत मेल मिला लया। धन्न कमाई भगत जन, सृष्ट सबाई रही सोती हरि जी किसे दिस ना आ रिहा। धन्न कमाई संत जन, हिरदे वास रखा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, हरि तोड़े आत्म जन्दर, सोहँ चाबी ला लया। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्याई संत जन दोहां आपणे थां बहा रिहा। धन्न कमाई भगत जन, तन क्यारा। धन्न कमाई संत जन, विच पंच दूत सोहँ अपर अपारा। धन्न कमाई भगत जन, हल चलाए

रसना गाए, सिध्धी राहल इक्क रखाए, अग्गे दिसे सच किनारा। धन्न कमाई संत जन, इक्को पाणी आपणी हथ्थीं पायण अमृत साची धारा। धन्न कमाई भगत जन, आत्म सच्चा होए हरया, प्रभ अबिनाशी किरपा करया, मिल्या इक्क दुआरा। धन्न कमाई संत जन, सोहणी वाड़ी आप लगाई, हाढ़ी साउणी इक्क बणाई, इक्को इक्क आत्म क्यारा। जोती जोत सरूप हरि, देवे वड्याई भगत जन साचा फल अन्तिम दए खुआई। जन भगत तेरी धन्न कमाई आत्म लाया बूटा। संत जनां नूं दयो वधाई, इक्को लैण शब्द झूटा। भगत जन तेरी वड वड्याई, लक्ख चुरासी आउणा जाणा विच मात दे छूटा। जन भगत तेरी वड वड्याई होए चारे कूटा। धन्न कमाई भगत जन, धन्न वड्याई संत जन, दोहां धिरां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपणा नां। जन भगत धन्न कमाई, आत्म तृखा इक्क रखाई। जन संत तेरी धन्न कमाई, इक्को आस चरन रखाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी दया कमाई। जन संत तेरी धन्न कमाई, प्रभ मिलण आया प्रगट जोत कलिजुग अन्तिम साचा माही। जन भगत तेरी धन्न कमाई, हरि देण वाला वड्याई। जन संत तेरी धन्न कमाई, हरि फूलन सेज रिहा विछाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, दोहीं हथ्थीं हरि जी रिहा तेरी सेव कमाई। जन संत तेरी धन्न कमाई, वेले अन्त कलिजुग प्रभ उत्ते देवे आप सवाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी उत्ते फूलन बरखा लाई। जन संत तेरी धन्न कमाई, करोड़ तेतीस दर खलोते रहे शरमाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ अबिनाशी गूढ़ी नींद रिहा सवाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, पवण उनन्जा सिर छत्र झुलाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, साचा लेखा दए लिखाई। धन्न कमाई संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणे नाल लए उपजाई। जन भगत तेरी धन्न कमाई, हरि मिल्या सच्चा शाह। संत जन तेरी धन्न कमाई, लभ्भ ल्या इक्क नां। जन भगत तेरी धन्न कमाई, प्रभ दर आए पकड़े बांह। जन संत तेरी धन्न कमाई, प्रभ मिल्या अगम्म अथाह। जन भगत तेरी धन्न कमाई, औखी घाटी कोई दिसे ना। जन संत तेरी धन्न कमाई, सोहँ साचा रसना चाटीं, गाउँदा रहीं सच्चा नां। धन्न कमाई भगत जन, जन संत वड वड्याई, मेल मिलावा दोहां धिरां होया प्रभ अबिनाशी तेरे घर सच्चे थां। जन भगत आए चल दुआरे। संत जनां नूं वाजां मारे। कलिजुग अन्तिम अन्त दोहां दे काज आप संवारे। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, इक्क वसाए सच सुच्च आपणे चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ दे वड्याई, साधां संतां मेल वखाई। काया महल मुनारे। पंज जेठ दरस दिखाउणा। गुर संगत सोहणा सच्चा मेल मिलाउणा। जो जीव आवे दर ते कच्चा, बाहों पकड़ बाहर कढाउणा। प्रभ अबिनाशी साचा जीव भाण्डा काचा, अन्तिम

१८२ ०४

भन्न वखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा नाम सच्चा जाम गुरमुखां आपणी हथ्थीं आप प्याउणा। इक्को ध्यान हरि निरँकारा। दोए जोड़ करो निमस्कारा। मंगण आए सच दुआरा। अमृत भरे हरि भण्डारा। खोलू दुआरा मिटया अन्धयारा। वखा घर जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण आए चरन दुआरा। मंगण आए बण भिखारी। प्रभ अबिनाशी वड भण्डारी। साची दात झोली पा, कलिजुग अन्तिम होई ख्वारी। गलों कटे चुरासी फाह, दे चरन सच्ची सरदारी। इक्क वखा सच्चा थां, जिथ्थे वसे हरि बनवारी। अग्गे होए फड़ लै बांह, आत्म होई सभ दुखिआरी। ना कोई समझावे पुत्तां मां, निहकलंक आया मात जामा धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुखां पार उतारी। मंगणा इक्क द्वार हरि निरँकार दा। होर होणा सर्ब ख्वार, कलिजुग वेला आया हार दा। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ कोई ना पावे सार, बणे यार तट्टां घट्टां पार उतारदा। वेद पुरानां शाह सुल्तानां, प्रभ अन्तिम अन्त आप निवारदा। प्रगट होया वाली दो जहानां, जोत सरूपी हरि नर रंग सच्चे करतार दा। जन भगत सज्जण सुहेले। प्रभ मंगण आए साचा दान, कलिजुग अन्तिम होए मेले। देवे सच्चा माण ताण चरन ध्यान, बण जाए सच्चा सज्जण सुहेले। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म अन्तिम कलिजुग आप खेले। मंगण आए हो निमाणे। प्रभ अबिनाशी कर ध्याने। इक्को देवे सच्चा नाम, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाने। चरन धूढ़ करा हरि इशनान, दुरमति मैल आप धवाने। आत्म मार शब्द कटार, आप चुका जम की कान, लक्ख चुरासी फंद कटाने। जोती जोत सरूप हरि, चरन सरन आए तेरी भगवाने। मंगण आए हरि निरँकार। साची भिच्छया झोली पा, आत्म तृखा दे निवार। साचा राह इक्को दे वखाल, जिथ्थे वसे हरि भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग गुरसिक्खां वंडण आया भार। गुरसिक्खां हरि भार उठाए। सोहणी खारी सिर उठाए। गुरसिख संत जन साचे हार चारों तरफ लए लटकाए। अग्गे पिच्छे गुरमुख साचे संत जन, विच हरि जी बैठा डेरा लाए। बेमुख जीवां पड़दा पाए, दिस किसे ना आए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे माणक मोती सोहणा हार आप परोए। सोहणे हारां तन शृंगारया। गुरमुखां देवे इक्क प्यारया। प्रभ आपणी हथ्थीं आप गुंदाया, सोहणा सच्चा हारया। सिर आपणे उत्ते आप लगाया, गुरसिक्खां चुक्कया भारया। पर्दा उहला जगत रखाया, अचरज भेख हरि वखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणी सेव लगा रिहा। गुरमुख साचे हार परोए। दुरमति मैल आपे धोए। कलिजुग जीव ना जाणे कोए। आप उठाए फड़ फड़ सोए। सोहँ सोहणा सच्चा धागा, रसना नाल परोए। आपे फड़ी फिरदा वागां, मार ना सके कोए। फड़ फड़ कलिजुग तेरा झूठा लाहे दागा, सच्चा नाम लए

धोए। गुरमुख विरला कलिजुग जागा, बेमुख गूढ़ी नींद सवाए। किसे ना उपजे सच्चा रागा, ना होए सहाई कोए। सतिजुग लग्गे पहली माघा, कलिजुग अन्धेर मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, आपणे तन साचे हार परोए। गुरसिख तेरी साची लड़ी। प्रभ दर लग्गी रहे झड़ी। इक्को जोती हरि जगाए, गुरसिख माणक मोती लभ्भ ल्याए, किरपा करनी आप बड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां रिहा घाड़न घड़ी। घाड़न घड़े हरि न्यारा। सोहँ कुठाली प्रखणहारा। सच कुठाली नाम पाए, प्यार सुहागा लाए हरि गिरधारा। खोट कोई विच रहि ना जाए, नेत्र पेखे आए दुआरा। गुरमुख साचे संत बणाए, देवे नाम अपर अपारा। प्रभ अबिनाशी कन्त मिलाए, जोत जगाए अपर अपारा। जन भगतां संतां बणत बणाए, इक्क वखाए घर बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, क्या कोई पावे सारा। आपे गोपी आपे कान्हा। करया खेल जगत महानां। सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। क्या कोई जाणे राजा राणा। भौंदे फिरन शाह सुल्तानी ज्ञानी ध्यानी, ना कोई जाणे सच्चा इक्क निशाना। आपणे आपणे राह मंगण, ना जानण गुणवन्त गुण निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग सभना मेट मिटाना। इक्क चलाए सिध्धा तीर। गुरमुखां आत्म जाए चीर। अमृत प्याए साचा सीर। आपे देवे शब्द धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचे लेख लिखाए खिच्ची जाए इक्क लकीर। गुरमुख साचे जन्म दवाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। गर्भवास फंद कटाया। पूरे होए ना दस मास, प्रभ जोती दए जगाया। निज घर बैठा करे वास, दिस किसे ना आया। सच घर सद रक्खे वास, अंग संग होए सहाया। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी मात लए उपजाया। गुरमुख साचे हरि जन्म दवाए। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, गुरसिख साचे आपणी गोद उठाए। प्रभ अबिनाशी आपणी गोद उठाए। आपे बणे पिता मां, सोहँ मंमा मुख रखाए। आपे रक्खे ठंडी छाँ, शब्द झूले आप झुलाए। विच मात देवे सच्ची दात चरन नात, ना अन्तिम कोई छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां हरि देवे लोरी, फड़ बाहों गुर संगत नाल रलाए। जाए तोरी, अन्दर वेखे वड़ वड़ सृष्ट सबाई कोलों करे चोरी। जेहड़े रक्खे घड़ घड़, आपणे हथ्थ गुरसिक्खां डोरी। कोई ना सके अग्गे अड़, गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए शब्द घोड़ी। गुरमुख साचे संत जन आपणी गोद उठाए दए हुलारा। मातलोक झूठा दिसे, दरगहि साची पार किनारा। गुरमुखां दे आउणा हिस्से, प्रभ अबिनाशी बणया आप वरतारा। कलिजुग जीवां मूल ना दिसे, जोत सरूपी हरि निरँकारा। कलिजुग झूठी चक्की पीसे, अन्तिम होए दो जहानी दोए दोए जिउँ दाल दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा

१८४
०४

संत जन आपणी हथ्थीं आप श्रृंगारे, मातलोक बणाए साचा लाड़ा। गुरमुखां हरि करे प्यार। इक्को देवे शब्द अधार। साची बणत आप बणाए, भव सागर तों जाए तार। महिंमा अगणत गणी ना जाए, ना कोई पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर नित नवित्त आवे विच संसार। साचे बाले आप खिडाए। गुरसिख साचे लाले आपणी गोद उठाए। तोड़े जगत जंजाले, दस्से राह इक्क सुखाले। फड़ फड़ उंगली आपे लाए, आत्म होए ना कदे कंगाले। सोहँ शब्द सच्चा नाउँ, एथे ओथे होए रखवाले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप बहाए साचे थाएँ। गुरसिख हुन्दा जाए जवान। कलिजुग मिटदा जाए निशान। प्रभ अबिनाशी मार ध्यान। किथे बैठे बेईमान। फड़ फड़ मारे वड शैतान। गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाम इक्क प्यार। सच्चा नाम रिहा वंड। गुरमुखां आत्म पाए ठंड। आत्म देणी सच्ची गंढु। चरन प्रीती जाए हंढ। वेले अन्त ना देवे कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चरन लाग गुरमुख साचे संत जन, तेरी होए ना आत्म रंड। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। गुरमुख साचे संत जन दूर दुराडे बैठे वेखे, जोत सरूपी तनक लगाए। जोती जोत सरूप हरि, जे कोई आपणे नैण वेखे दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनों साचा देवे नाम इक्क रघुराए। कलिजुग जीव होए गंवार, धीआं भैणां घर घर तक्कण, ना पावे कोई किसे सार। ज्ञानी ध्यानी सारे थक्कण, जो बैठे मल गुरूद्वार। बण बण आवण हाजी मक्कण, ना दिसे कोई किनार। प्रभ अबिनाशी तेरी महिंमा कहण ना सकण, आत्म भरया इक्क हँकार। झूठे प्याले लहू वाले कलिजुग जीव लक्कण, आत्म भरया रहे इक्क हँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम नेड़ा वेख भेख निहकलंक कलि जामा धार। दुःख पाप हरि हरि नास कराया। आपणा वास विच रखाया। पहले हरि प्रसादि वरताया। कलिजुग पापी बाहर कढाया। सतिजुग साचा वक्त सुहाया। गुर संगत आत्म धीर धराया। अमृत मेघ आप बरसाया। रसना मुख दए चवाया। सुक्की कुक्ख हरी कराया। इक्का सुख आप उपजाया। उज्जल होया मुख, जो जन चल आया सरनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट हो सिँघ सिँघासण बैठा डेरा लाया। सच्चा कीना आप विहारा। प्रसादि वरताया हरि करतारा। कलिजुग पापी कढाया बाहरा। गुर संगत बैठी रहे दुआरा। आपे लाहे तन अफारा। साचा देवे नाम अधारा। गुर चरन प्रीती साची नीती, जोत सरूपी हरि निरँकारा। मानस जन्म जाए जग जीती, कर दरस निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरमुख काया कीनी सीतल सीती, अमृत देवे आप भण्डारा। पिछली औध गई बीती, अग्गे दस्से राह अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा आप खुल्हाया, कलिजुग

अन्तिम जामा पाया पहली वारा। तिन्न जुग ना हरि जी उठे। सुत्ता रहे किसे गुट्ठे। जेहड़े गए धुरदरगाहों रुठे। प्रभ फड़ फड़ कुट्टे। गुरमुख उपजाए आप बंधाए एका मुट्ठे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ नेड़े आए। गुरमति सच्ची धार विच संसार है। गुरमति साची कार दस्से नर नार है, पूर्ब कर्म विचार है। गुरमुख सच्ची धार, प्रभ अबिनाशी पाए सार, हउमे रोग दए निवार, सोहँ देवे शब्द अपर अपार है। रसना गाए हरि निरँकार, जोत सरूपी जामा धार, कलिजुग अन्तिम लए विचार, सतिजुग साचा मात धराए है। बणे लेख लिखार, जूठा झूठा माया लूठा भन्न वखाए, ना कोई बचाए पैणी डाहढी मार है। गुरमुख साचे संत जनां हरि लए बचाए, चरन बहाए कलिजुग अन्तिम वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क वखाए सच्चा सच दरबार है। कलिजुग मारे इक्क उछाल। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ आपे लए संभाल। बेमुखां खाण आया काल, वेले अन्त ना होए कोई सहाया, सभ दे भन्ने काया डाल। गुरमुखां बेड़ा बन्न वखाया, सच्ची डोरी नाल बंधाया, आपे होए रखवाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे सदा प्रितपाल। कलिजुग अन्तिम हरि जी वेखे। जन भगतां लिखे साचे लेखे। सच दात हरि झोली पाए, आत्म साची जोत जगाए, दूर दुराडा दिस किसे ना आए, गुरमुख साचा नेत्र पेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत देवे साचा नाम, आत्म तोड़े झूठा माण, बेमुखां कढ्ढे भरम भुलेखे। भरम भुलेखे रहे भुल। झूठे तोल जाणा तुल। अन्तिम वेले जाणा हुल। दर घर साचे जाणा रुल। अन्तिम वेले कोई ना पैंदा किसे मुल्ल। गुरमुख साचे संत जन सोहँ साचा रसना गायण, हस्सदे रहण बुल्ह। प्रभ अबिनाशी वेखण तीजे नैण, विच मात लगाए आपणीं हथ्थीं फुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलि जामा पाया सच भण्डारा गया खुल्ह। सच भण्डारा हरि खुल्हाया। गुरसिख दुलारा सर्ब बणाया। देवे शब्द हुलारा, दस्से सच प्यारा, एका नाम झोली पाया। कलिजुग तेरा अन्त किनारा , निहकलंक ल्या अवतारा, गुरमुख साचे संत जनां साचा नाल ल्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा दान, सोहँ दात झोली पाया। सच्चा दान हरि वरता रिहा। शब्द सुणाए कान, गुरमुख साचे संत प्यारया। तोड़े जगत माण, मिटे अन्ध अंध्यारया। करे जाण पछाण, गुरसिख गुरमुख दोवें बैठण इक्क द्वारया। मेल मिलाए आण हरि बनवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां माण दवा रिहा। इक्का दर भगत भण्डार है। आत्म झोली लैणा भर, देवणहार दातार है। एका लैणा साचा वर, साचा नाम अपर अपार है। कलिजुग अन्तिम जाण तर, प्रभ बेड़ा कर जाए पार है। आप नुहाए आत्म सर, अमृत साचे झिरना झिरे अपर अपार है। जो जन चल के आए द्वार, बख्शणहार दातार है। इक्को इक्क रिहा कर, ऊँच नीच भरम निवार है। इक्को

रक्खे टेक हरि, वेले अन्तिम पाए सार है। साची जोत आत्म धर, मिटाए अन्ध अंध्यार है। गुर संगत बणाए गोती, बंधे एका धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, चारां वरनां करे इक्क प्यार है। सभ दे रिहा कर्म विचार, ना कोई जाणे नीच गंवार, ना कोई जाणे वड सरदार, आत्म बैठा सभ नूं वेखे, गुण अवगुण सभ दे रिहा विचार है। बेमुख रहे भरम भुलेखे, ना दिसे हरि निरँकार है। सर्ब देवे साची दाती, प्रगट होए लोकमाती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार है। निहकलंक कलि जामा पाया। वरनां बरनां दए मिटाया। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई अन्तिम वेले इक्क कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँचां नीचां विच समाया। ऊँच नीच ना करे विचार। इक्को सूरा हरि निरँकार। बेमुखां अन्तिम होणा कूचा, सोहँ वज्जे डंक डफार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया वड वड बलकार। जोत सरूपी हरि निरँकारा। इक्को एक साची दिसे हरि सच्ची सरकारा। बेमुख पाउँदे फिरदे हिस्से, अन्तिम मिटणे इक्के वारा। प्रभ अबिनाशी किसे ना दिसे, चीर चिराए करे दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी चारों तरफ वेखे, ना कोई रहे भरम भुलेखे, जंगल जूह विच पहाड़ां। कलिजुग जीआं अन्त मुकाए। लेखा रहि गया बाकी, साचा खण्डा हथ्थ उठाए। आपणी हथ्थीं वढ्ढे कंडी बेमुख मूंह दे भार सुटाए। मगर लगाई हाकण डाकण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम नईआ, आप चढ़ाए सच्चे राकी। गुरमुख साचे हो अस्वार। शब्द मिले इक्क अपार। इक्को मारी वडी उडार। प्रभ अबिनाशी कर दरस, निहकलंक कलि आया जामा धार, कर दरस हरस मिटा वेख जोत हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां आत्म लाहे बुख़ार। आत्म लाहे सर्ब बुखारा। तोड़े माण ताण वड हँकारा। साचा खण्डा हथ्थ उठाया, फेरी जाए वारो वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जोती अग्न लगाए, साड़ी जाए बहत्तर नाड़ा। प्रभ अबिनाशी अन्तिम कलि चबाई बैठा आपणी हेठां दाढ़ा। गुरमुख साचे लए बचाई, शब्द सरूपी करे वाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जूठे झूठे कलिजुग देवे झाड़ा। कच्चे फल आपे झाड़े। अन्तिम कलि बेमुखां ने कढ्ढुणे हाढ़े। प्रभ अबिनाशी देवे इक्को धक्का, धर्म राए दे घर विच वाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को माता पिता सका, जो जन रसन उचारे। गुरमुख साचे सुरत संभाल। लैणा नाम सच्चा धन्न माल। कलिजुग वेला अन्तिम आया, ना होए कोई रखवाल। साचे संतां वक्त सुहाया, आदि अन्त जोत जगाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात चले अवल्लड़ी चाल। चले चाल निराली, कलिजुग जीव कढ्ढुण गाली। जोत सरूपी अन्दर वड़या, करदा फिरे सच दलाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेला

कलि सुहाए, गुरमुखां नूं आप वखाए, बेमुखां घर दिसण खाली। पावे सार जगत निमाणयां। तख्तों दए उतार राजे राणयां। करे सच विहार, हरिभगतां देवे नाम अपार शब्द ज्ञानया। जो जन मंगण आए द्वार, आत्म घर हरि भरानयां। कदे ना होए ख्वार, इक्क ओट हरि रखानयां। आपे पाए सार, कलिजुग अन्तिम बेमुहानयां। शब्द देवे सच्ची धार कर विचार, गुरमुख साचे तेरे भाणयां। बेमुखां डोबे डूंघी धार, वञ्झ मुहाणा किसे हथ्थ ना आनया। गुरमुखा भव सागर जाए तार, करे पार, देवे नाम इक्क निशानयां। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानयां। देवे नाम सच्ची सिक्दारया। जो जन मंगण आए दर भगवान, किरपा करे आप बनवाल्या। खाली मुड़ कोई ना जायण, चरन सरन जो जन निमस्कारया। पूरन आस हरि करान, देवणहार वड संसारया। दरगहि साची देवे माण, वेले अन्तिम होए सहारिआं। सच्चा देवे इक्क बबाण, गुरमुख लगाए सच्ची इक्क उडानयां। आप चुकाए जम की कान, गुरमुख ल्याए सच द्वारया। ओथे जोत जगे महान, एका इक्क निरंकारया। गुरमुख साचे ना कुछ पीण ना कुछ खाण, नेत्र वेखण नैण मुधानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरमुख साचे संत जोती मेल मिलानयां। आत्म जोती लैणा मेल। गुरमुखां बणे सज्जण सुहेल। आप लै जाणा आपणे घर, वसे इक्क इकल्लड़ा रंग नवेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ करे कलिजुग खेल।
१८७ गुर संगत दर साचे आई। प्रभ दर बणे मंगत, सच दात हरि झोली पाई। इक्क चढ़ाए नाम रंगत, शब्द डोरी नाल बंधाई। १८७
०४ होए सहाई जिउँ नानक अंगद, साची जोत दए जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा नाम जो रहे रसना गाई। ०४
पावे सार हरि भगवानया। जाए तार बिरध बाल जवानया। खिच्च ल्याए चरन द्वार, गुणवन्त गुण निधानयां। इक्क कराए वणज वपार, देवे नाम निधानया। ना कोई वेखे नर नार, सभना इक्क प्यार, निहकलंक बली बलवानयां। सर्ब जीआं दा इक्क भतार, गुरमुख साचे साची नार, मिले मेल हरि भगवानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलिजुग अन्तिम विच मात पहरे बानया। गुर संगत हरि समझाईआ। साची वस्त झोली पाईआ। आप चढ़ाए शब्द हस्त, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। तन पहनाए साचे बस्त्र, इक्को रंग रंगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां गुर संगत साचा मेल मिलाईआ। गुर संगत रक्खणी साची आस। प्रभ अबिनाशी पुरख अबिनाश। सर्ब घट वासी सदा वसे आस पास। जो जन तजाउण मदिरा मास। सोहँ शब्द गायण स्वास स्वास। मानस जन्म हरि कराए, वेले अन्तिम रास। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, दुखड़े करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सहाए दया कमाए, निज घर आत्म रक्खे वास। गुरमुख गुरसिख सिख गुर सच कर जानणा। गुरमुख गुरसिख एका इक्क भगवानणा। गुरमुख एका

दस्से जोती चानणा। सिख गुर गुरसिख मेल मिल्या लिख्या धुर, प्रभ दर्शन को लोचण सुर, धन्न कमाई प्रभ दर सेव कमाई,
अन्तिम जोड़ी गई जुड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दात झोली पाई। कलिजुग अन्तिम ना जाए थुड़। नर
नारी हरि समझांयदा। जोत सरूपी दया कमांयदा। वेखे विगसे करे विचारी, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग जीव लभ्भ
लभ्भ थक्के गए हारी, सच्चा राह ना कोई वखांयदा। प्रगट होया निहकलंक नर अवतारी, फड़ फड़ बाहों राहे पांयदा।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभनां जीआं इक्क अधारी, साची बख्शे चरन प्यारी, शब्द दात झोली पांयदा। शब्द
लिखाए हरि निरँकारे। कच्चा तन्द फड़या हथ्थ, करे खेल अपर अपारे। गुरमुखां बंधे बन्द बन्द, पंचां चोरां करे ख्वारे।
इक्क उपजाए प्रमानंद, अमृत बख्शे साची धारे। जो जन गायण बत्ती दन्द, आत्म तृखा आप निवारे। जो जन रसना
मदिरा मास लायण कलिजुग गन्द, प्रभ साचा दर दुरकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे।
गुरमुख आयण चल दुआरे। प्रभ अबिनाशी वाजां मारे। उठ उठ बल धारो दर्शन पाओ निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान, साचा धाम इक्क रखाया। जोत सरूपी नरायण नर अवतारे। प्रभ अबिनाशी करे ध्यान। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान।
गुरमुख साचे संत जन आउण दर लैण वर, प्रभ देवे सच्चा दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा
१८८ ०४ पाया, आया बण के सच्चा कान्हा। कलिजुग अन्तिम डोबे नईआ। गुर संगत बणाए भैणां भईआ। जोती जोत सरूप हरि, १८८ ०४
आपे पिता आपे मईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, जोत
सरूपी गुरसिख समाए, ना कोई रक्खे कलम दवाती ना कोई रक्खे सईआ। साचा लेख लिखाए मानस जन्म गुरमुख साचे
संत जनो आपणा दरस कराउणा। सच्चा लैणा नाम धन, साचा शब्द सुणना कन्न, प्रभ अबिनाशी ना मनों भुलाना। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धारे भेख सृष्ट सबाई रिहा वेख, जोत सरूपी पहरे बाना। गुर संगत सच्चा इक्क विहार। गुरमुख
आए चरन द्वार। दोए जोड़ करे निमस्कार। गुर चरन प्रीती बख्शे सच्चा इक्क प्यार। इक्क इक्क फुल्ल देवे झोली डार।
एहदा किसे ना चुकउणा मुल्ल, ना कोई जाणे जीव जन्त गंवार। भाग लगाउणा आपणी कुल, मिलणा सच भतार। महाराज
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा आप खुल्हाया, बणया आप वरतार। गुरमुख आयण चल द्वारी। उठ उठ वारो वारी।
करदे जाण निमस्कारी। आत्म तृखा प्रभ जाए निवारी। साची सिख्या देवे हरि बनवारी। धुरदरगाही लिख्या लेख, मेल
मिलाया अन्तिम वारी। जोत सरूपी धारे भेख, मिटदी जाए चार यारी। गुरमुखां लिखदा जाए साचे लेख, पंचम् बणे सच्ची
सरकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, साची करे जगत विहारी। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी

पहरे बाणा। मिटदा जाए जगत निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप खिलाणा। सतिजुग तेरा सच्चा वेस, रक्खे खुल्हड़े केस, खुल्हड़े केस हरि रखाए। विच मातलोक झूठे देस, साची जोत जगाए। कर कर आवे भेस किसे दिस ना आए। भुले फिरदे नर नरेश, नरायण माया पर्दा आपे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्त कराए। कलिजुग तेरी अन्त निशानी। प्रभ भुलाए वड ज्ञानी। आत्म तुटी धीर, होए जगत निधानी। बण बण बैठे घर पीर, आई तेरी इक्क निशानी। दस्म गुर जो रीत चलाई। कलिजुग जीवां सभ भुलाई। ऊँच नीच ना भेव रखाई। निहकलंक कलि जामा पाई। इक्का जोत हरि रघुराई। चार वरनां इक्क थां बहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा साचा लेख आपणी हथ्थीं रिहा लिखाई। लिख लिख लेखा जगत मिटाउणा। जेहड़ा बणया झूठा बन्दा, प्रभ अबिनाशी आपे ढाहुणा। दूजा कोए ना रहणा अन्दर, शब्द घोड़ा मगर लगाउणा। कोई ना मारे अन्दर जन्दर, प्रभ आपणी हथ्थीं आत्म जिंदा लाहुणा। ना कोई जाणे बिरध बाल जवान करे खण्ड खण्डा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार, एका राह सभ नूं आप वखाउणा। अन्तिम वेला हरि वखाए। भरम भुलेखा ना कोई रखाए। सच्चा लिखाए आप लेखा, फिर मात वरताए। ना कोई जाणे पीर औलीआ शेखा, वेद पुरानां हथ्थ ना आए। खाणी बाणी पई पुकारे। प्रभ अबिनाशी वेख विचार कुरान अंजील दोहां डोबे अद्धविचकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राह शाह सुल्तान, शब्द करे तीर निशान, सृष्ट सबाई आर पार पार आर आपे आप कराए। इक्को करे जगत जहान। खिच्चे तीर रसन कमान। मिटदे जाण बेईमान। गुरमुख साचे उठ चल आयण, करन गुर चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट होया देवे सोहँ सच्चा दान। लै के दान घर नूं जाणा। प्रभ अबिनाशी ना भुलाणा। सर्ब घट वासी आपणे रिदे वसाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ चिट्टा पहरे बाणा। चिट्टा बाणा तन शृंगारना। गुरमुखां काज संवारना। देणा सच्चा राज धुर दरगहि, ना करे कोई अधारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तीर चलाए, राउ रंक इक्क कराए, ऊँच नीच भेव निवारना। जिस जन होए हँकार। चल के आए सच दुआर। भरम भुलेखा दए निवार। वेखा वेखी भुल ना जाए कलिजुग जीव गंवार। जोत सरूपी पहरे बाणा, किया इक्क अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्को इक्क सच्चो सच्चा सरदार। सच्चा हरि सच्चा सरदारा। इक्को इक्क तिन्नां लोकां बणे सच्ची सरकारा। राज ताज जगत काज साज बाज करे खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नरायण नर अवतारा। प्रभ अबिनाशी कर रिहा विचार। शब्द घोड़े रिहा शृंगार। इक्का चरन आप उठाया होण वाला अस्वार। दूजा

सिँघ सिँघासण आप लगाया। सृष्ट सबाई वेखे झाती मार। गुरमुख साचे संत जन किथे बैठे साचे साथी, पहलां करां विचार। एका भेज्जया शब्द राथी, फड़ बाहों करां अस्वार। प्रगट होया नाथ अनाथी, निहकलंक कलि जामा धार। साचा बणे आत्म साथी, ना आवे कदे हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई इक्को सच्चा हरि निरँकार। भेख धर हरि भगवाना। मातलोक करे ध्याना। एका चरन हरि उठाया, मातलोक जामा पाया, धरत मात तेरी गोद भाग लगाया, सतिजुग साचा दित्ता दाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, सतिजुग साचे संत जनां साचा देवे नाम निधाना। नाम निधान गुणी गहीरा। सोहँ बद्धा सिर तेरे चीरा। गुरमुख लाल अनमुल्लड़ा प्रभ आप बणाए साचा हीरा। सोहँ शब्द तन पहनाए, कलिजुग चोली होई लीरां लीरां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत एका धाम वसाए, साचा नाम इक्क जपाए, इक्क दूजे दे बण जाओ वीरा। इक्को सुख सच प्यार। दूजा वेखो हरि निरँकार। तीजी दस्सी साची धार। चौथा आउणा हरि दरबार। पंचम् वेख निहकलंक अवतार। छेवें दस्से साचा जाप। सत्तवें पाए साचे राह, आपे बणे माई बाप। अठवें हरि जी उठ उठ वेखे, गुरमुखां रिहा थापन थाप। नौवां नौ घर किसे ना देखे, बेमुखां आत्म भरया पाप। दसवें घर गुरमुख साचा सच वस्खे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट होए आपे

१६०
०४

आप। दस इक्क ग्यारां, गुर संगत लग्गीआं गुर दर बहारां। दो दस दस दो बारां, गुरमुखां प्रभ अबिनाशी रोग सोग मिटाए कर कर आपणीआं मेहरां। दस तिन्न तेरां, प्रभ अबिनाशी तारे कर कर आपणीआं मेहरां। बेमुखां हरि भुलाए कर कर हेरा फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा पाया। चारों कुन्ट पाए घेरा। दस चार चौदां, गुरमुख साचा चांईं चांईं गाउँदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, आत्म दीपक जोती आप जगाउँदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा बाहों पकड़ अन्तिम कलि आपे आप उठाउँदा। दस पंज पन्दरां, प्रभ वेखे सभ दे अन्दरा। दस छे सोलां, प्रभ अबिनाशी पर्दा खोल्ह्या। सत्त दस सतारां, गुर दर साचा सगन मनाया, इक्ठे बैठे नारी नारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को देवे सच्चा नाम अधारा। दस अठ्ठ अठारां, अन्तिम वेले होए ख्वारा। कोई ना बन्न्हे किसे धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक ल्या अवतारा। दस नौ उन्नी, प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई छाणी पुणी। गुरमुख विच्चों लभ्भे कोट कोटी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा धारी, गुरमुखां पुकार सुणी। दस दस बीस, सृष्ट सबाई जाए पीस। गुर संगत तेरी किसे ना करनी रीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका छत्र झुलाउणा तेरे सीस। बीस इक्क इक्की। गुर संगत दिसे निक्की। प्रभ अबिनाशी सोहँ शब्द खण्डा फड़या, रक्खी धार तिक्खी। गुरमुखां देवे आत्म

१६०
०४

सुखी। बेमुखां नूं भाज कराए, गुरमुखां दी सांझ कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख जाए लिखी। लिखे लेख बण बण लिखारा। गुरमुखां वेखे कर विचारा। बन्ह्दा जाए साची धारा। फिरदा जाए शब्द आरा। जोत सरूपी जोत हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक खोल्हे सच्चा इक्क दुआरा। सच दुआरा गया खुल्ह। लग्गे कोई ना एथे मुल्ल। जो जन प्रभ चरन तेरी लग्गे, गुर संगत विच फब्बे, आप फिरे पिच्छे अग्गे, गुरसिख ना जाए डुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन धरत मात तेरी गोद बहाए, जिउँ सागर कँवल फुल्ल। गुरमुखां सिर बद्धा हरि चिट्टा रुमाल। कलिजुग झूठी नारी अन्तिम होए बेहाल। दर दर फिरे होए ख्वारी, खुल्हे गल विच वाल। कोए ना बणे अन्त सहाई, आत्म सभ दी होई कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, जन भगतां करे आप संभाल। कलिजुग नारी तेरी खुल्ही गुत्त। मारे मार प्रभ अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त। अन्तिम वढ्ढे तेरी नक्क गुत्त। गुरसिक्खां हरि दर अग्गे दिसण, बेमुखां पैंदे डाहढे जुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप उपजाए, आप बणाया साचा सुत। कलिजुग नारी होई बेहाल। जिस ने चली उलटी चाल। लुटयां गया धन माल। खुल्हे दिसण गल विच वाल।
१६१ किते ना लभ्भे सच्चा लाल। जूठा झूठा एका रख्या नाल दलाल। प्रभ अबिनाशी गुर मिल्या इक्को सच्चा, अन्तिम लए सुरत १६१
०४ संभाल। बचया रहे ना कोई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे डाहणे लग्गे फल सोहँ डण्डे नाल देवे झाड़। कलिजुग ०४
नारी तेरे सिर विच पई शार। रो रो पुकारे धाहां मारे, कोई ना पावे सार। मन्दिर कन्दर सागर ढूंडे, किसे ना दिसे अन्दर, होई अन्ध अंध्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुखां मिल्या सच भतार। कलिजुग नारी पावे वैण। अन्तिम डुबी डूंघे वहिण। कलिजुग जीव जूठे झूठे सारे छड्ड गए साक सैण। अन्तिम खाली होए भाण्डे ठूठे, कोई ना दिसे भाई भैण। दर घर साचे तों गए रूठे, प्रभ अबिनाशी जामा धार चुकाउण आया लहिण देण। गुरसिख बन्ह्ाए एका मुट्ठे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणे साक सज्जण सैण। गुर दर हरि दर्शन पाउँदे जाणा। सोहँ गीत गाउँदे जाणा। मिल्या सच्चा मीत परखे नीत, ना मिले किसे मन्दिर गुरदुआरे मसीत, आप बंधाए चरन प्रीत, सतिजुग दस्से साची रीत, चार वरन इक्को नाता जोड़ जुड़ाउँदे जाणा। काया करे ठंडी सीत, मानस जन्म जाणा जीत, नेत्र खोल्ह गुरमुख साचे संत जनो जांदी वारी दर्शन पाउँदे जाणा। जोत सरूपी जामा धारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा दूर कराउँदे जाणा। खुशी खुशी गाउँदे जाणा। शब्द डंक वजाउँदे जाणा। राउ रंक सुणाउँदे जाणा। बेमुखां आत्म अग्न लगाउँदे जाणा। गुरमुखां मुख सोहँ शब्द सगन लगाउँदे जाणा। आप जगाउँदे जाणा। दु:ख रोग मिटाउँदे जाणा।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवाना, रसना इक्क ध्याउँदे जाणा। नेत्र खोल्ह लैणा वेख। अन्तिम कलिजुग धारे भेख। ना कोई रूप ना कोई रेख। जोत सरूपी हरि जी बोले। इक्क शब्द सुणाए, गुरमुखां दे रिदे वसाए, गुरमुख साचा कदे ना डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया, साचा डण्डा नाल रखाया, सृष्ट सबाई आपे तोले, तोलणहारा विच संसार, गुरमुखां होया भारा भार पहली वार है। बेमुख होए ख्वार, दुखी होए नर नार है। अन्तिम वार ना पाई किसे सार, ना मिल्या सच्चा कन्त भतार है। गुरमुख विरला संत, प्रभ अबिनाशी तेरे चरन आए द्वार है। बणदी जाए साची बणत, देंदा जाए प्यार है। महिंमा जगत अगणत, निहकलंक नरायण नर अवतार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आया जामा धार है। जोत सरूपी जामा धर धर। आपणा वेस हरि जी कर कर। गुरमुखां चल आए दर दर। अमृत भण्डार जाए भर भर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर नर। नर नर हरि निराकारया। गुरमुख साचे संत जनां दर्शन पेख्या, बेमुख डुब्बे डूंघे वहिण विच मँझधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्ध अन्धेर कराए ना बुज्झे कोई संसारया। बेमुखां आत्म होए अन्धेरा। गुरमुखां दरस दिखाए पहली वेरा। एका सच्चा जाम प्याए, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाए, ना कोई रक्खे सन्झ सवेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनो अन्तिम वसे नेरन नेरा। वड दाता वड मेहरबान। पुरख बिधाता श्री भगवान। मिटाए अन्धेरी राता, देवे सच्चा दान। गुरमुखां देवे सच सुगाता, चरन धूढ़ कर इशनान। आपे बणे पिता माता, आपे देवे पीण खाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को देवे शब्द बबाण। गुर गुरमुखां सेव कमांयदा। इक्क इक्क फुल्ल भेंट चढ़ांयदा। अतुल्या तोल साचा मेल मिलांयदा। गुरमुख ना जाणा भूल, अन्तिम आपे आण छुडांयदा। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, इक्क हुलारा आप दवांयदा। आप कराए सूलीउँ सूल, देवे इक्क इक्क फुल्ल, लक्ख चुरासी पार करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आप बहांयदा। इक्क इक्क फुल्ल हरि देवे वंड। गुरमुख तेरी कदी ना नंगी होवे कंड। आत्म तेरी सदा सुहागण, ना मात होवे रंड। दर आए होए वड वड भागण, तुट्टा सर्ब घमंड। गुरमुख सोए कलिजुग जीव भन्ने कच्चे अंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा शब्द दान, चरन प्रीती लग्गी तोड़ जाए हंढ। छोटे बाले सुरत संभाल। सच्चा दित्ता धन माल, बणया आप रखवाल। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम अधार। माल धन नाम सच ख़ज़ीना। देवे हरि वड प्रबीना। गुरमुख साचे रसना चीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ठंडा ठार कराए कलिजुग अन्तिम सीना। इक्क इक्क फुल्ल वरताया। पिछला चुकाया सारा मुल्ल, अग्गे हौला भार रखाया। देवे नाम शब्द अनमुल्ल,

उत्ते फूलन बरखा लाया। गुर संगत मूल ना जाणा भुल, इक्को इक्क घर दर भाग लगाउणा आपणी कुल, झूठा दाग हरि दए धवाया। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल्ह, प्रभ बूंद बूंद दए चुआया। धुर दुआरा गया खुल्ह, आत्म जोती दए जगाया। जो जन दर आए भुल्ल, गुर संगत हरि दए रलाया। जोत सरूपी जोत हरि सदा अतोल अतुल्ल, सदा अडोल ना सके कोई डुलाया। कलिजुग जीव बैठे भुल, प्रभ अबिनाशी मनों भुलाया। गुरमुख साचे संत जन आप उपजाए साचे फुल्ल, पाए मुल्ल, फूलन बरखा साचा हरि किरपा कर उप्पर सीस लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दया कमाई, आत्म वज्जे सच वधाई, गाउँदे जाणा साचा माही, खुशी खुशी जाणा आपणी थाँईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दित्ता साचा वर पूर कराया। पूर कराया तेरा घर। दरगहि साची संत जनां प्रभ अबिनाशी लैणा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क खुल्हाए आत्म दर। आत्म दर जिस खुल्हाउणा। सोहँ साचा रसना गाउणा। मदिरा मास हथ्थ ना लाउणा। वेखा वेखी ना दर ते आणा। जो जन करे चरन ध्याना। देवे सच्चा नाम निशाना। आत्म तोड़े सर्ब अभिमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। आपे वेखे ठग चोर यार। चारों तरफ हरि जी अन्दर बैठे जो दिसण बाहर। गुरमुख साचे संत जनां दरस दिखाए पहली वार। बेमुख जूठे झूठे देवे दर दुरकार। गुरमुखां आत्म

१६३
०४

देवे शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल्गीधर अवतार। कल्गीधर सारे कहन्दे। इक्क दूजे दे नाल खहन्दे। प्रभ दा भाणा ना सिर ते सहन्दे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर सच्चा गुरमुख विरले दर ते बहिंदे। गुरमुख दर होए परवान। देवे नाम निधान दर आए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता दानी दान। वड दाता विच संसार है। जोत महाना नर निरँकार है। गुण निधाना जोत सरूपी आया जामा धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा मेल मिलाए, इक्को सोहणा शब्द सुणाया, फड़ के बाहों राहे पाया, आपे हो जाए विच्चों बाहर है। देवे नाम शब्द अपारा। गुर पुरा हरि वरतारा। वड सूरा हरि निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करन करावणहारा। करन करावण जोग हरि निरँकार है। कटे हउमे रोग, जो जन आए चरन द्वार है। इक्को देवे साचा रसना भोग, सोहँ शब्द अपर अपार है। कलिजुग अन्तिम ना होए विजोग, प्रभ पाउँदा रहे सार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक तेरे अन्तिम अन्त आया चवीआं अवतार है। पंचम् जेठ लिख्त अपार। खोल्हे भेव चौवीआं अवतार। चार जुग जो आए वारो वार। वेद पुरान रहे पुकार। नानक गोबिन्द बणे सच लिखार। जोत सरूपी जामा पाए अन्तिम अन्त निहकलंक नरायण नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पावे सार।

१६३
०४

चवीआं अवतार भेव खुल्हाए। करोड़ तेतीस सेव लगाए। ब्रह्मा ब्रह्मपुरी विच्चों बाहर कढाए। गुरमुख साचा विच बहाए। सतिजुग साची बणत बणाए। प्रभ अबिनाशी आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाए। अन्तिम कलि भगत धू तेरा वक्त चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, पुरीआं लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां आपे दए उलटाए। धू तेरा वक्त चुकाउणा। चौथा जुग ख़त्म कराउणा। गुरमुख सच्चा इक्क उपजाए, सिँघ सवरन नाउँ रखाउणा। चेत सिँघ दा सुत बणाउणा। अन्तिम वेले जोत मिलाउणा। साचे धाम जा बहाउणा। इक्क बबाण आप रखाउणा। जोत भगवान जोत सरूपी अग्गे डगमगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी धार आप बन्ह्हाउणा। साची रीत हरि चलाए। इन्द्रपुरी अन्तिम कलि आपणी हथ्थीं खाली जा कराए। करोड़ तेतीस सुरपति राजा इन्द अन्तिम मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे बणत बणाए। राजे बल दित्ती वड्याई। अमृत कढुया आप हिलाई। चौदां रत्न हरि जी कढ्ढे, पंचम् जेठ साचे लेख लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले सुरपति राजा इन्द सिँघ सिँघासण उप्परों देवे लाही। चौथा जुग अन्त अख़ीर। वजदा जाए तीर। नाथ त्रैलोकी सृष्ट सबाई सारी झोकी, इक्को अग्गे लाया छोटा बाला निक्का वीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी वडा शाहो भूपी, वड दाता सूरबीर। राजे इन्द टुट्टा माण। वड मृगिन्द, प्रगट होया इक्को सच्चा
१६४ ०४ पहलवान। भाग लगाया विच हिन्द, रसना फड़े तीर कमान। बेमुख जो करन निन्द, अन्तिम वेले लए पछाण। महाराज १६४ ०४
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आप बहाए छोटे बाल निधान, सिँघ मनजीत दित्ता माण आप बिठाया विच बबाण। गुर संगत सारी संग रलाई। सोलां मग्घर खेल रचाई। अचरज खेल हरि वरताई। सोहणी सेजा आप विछाई। गुर संगत संग ल्याया चांईं चांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां आपे वेखे चौदां हट्टां बैठा थाउँ थाँईं। छोटा बाला कर त्यार। उत्ते दित्ता हरि प्यार। शब्द कीता इक्क अस्वार। मातलोक चों होया बाहर। गया घर सच्चे दर निरँकार। अग्गे लाए हरि निरँकार। किरपा आपणी देवे धार। बाहों फड़ लाए पार। इक्को घोड़ा हरि मंगाया, अठारां माघ देह छुडाया, उत्ते कर देवे अस्वार। सिँघ तेजा सेव कमाया, प्रभ अबिनाशी लेखे लाया, मुड़ के गांधी जन्म दवाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। घोड़ा गया सच्चे घर। अग्गे वेखे इक्को हरि। प्रभ अबिनाशी खुल्हा दर। दूजा मिल्या सच्चा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी निहकलंक नरायण अवतार नर। घोड़ा गया सच दुआरे, अग्गे खड़्हा हरि निरँकारे। शब्द सरूपी वाजां मारे। छोटे बाले कर त्यारे। प्रभ अबिनाशी बाहों फड़, उप्पर कराए तैनूं अस्वारे। अग्गे बैठा हरि जी दिसे, पिच्छे बाल निधान प्या पुकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी सुण इक्क

पुकारे। निक्का बाला करे पुकार। मेरी सुण हरि दातार। एका बख्श चरन प्यार। मातलोक ना मुड़ के जावां दूजी वार। अट्ठे पहर मेरा तेरा तेरा मेरा इक्क प्यार। चारों तरफ पाईं घेरा, शब्द रक्खीं पहरेदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। छोटे बाले सुण पुकारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। साची देवे इक्क अस्वारी। पूरन हरि साचे घर सिँघ सिँघासण बैठा कीती सच त्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक देवे वड्याई जिस साची बणत बणाई, आए चल द्वारी। छोटा बाला आप उठाया। फड़ के बाहों राहे पाया। इन्द्रपुरी दा राह वखाया। कलिजुग तेरा अन्तिम आया। सुरपति राजा इन्द हरि जी तख्तों लाहया। एका एक आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। चार जुग अन्तिम बीते, प्रभ अबिनाशी आपणा भेव आपे आप खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सिँघ सिँघासण उत्ते बिठाया। सिँघ सिँघासण बैठा हरि दुलार। करोड़ तेतीस करन निमस्कार। साडी पाई एथे सार। अग्गों बोले शब्द अपार। सिँघ मनजीत सुणे पुकार। निहकलंक कलि जामा पाया, खोल्हे सच्चा इक्क द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हरि दातार। करोड़ तेतीस करन पुकार। सानूं दस्सीं साची धार। चार युग गए बीत बैठे इक्क इकलड़े थां, ना होए कोई रख्वार। भोग अपच्छरां तन मन सड़या, इक्के वेर अमृत मिल्या सच्ची धार। गुर चरन ना सेव कमाई, ना मिली अन्त वड्याई, ना मिल्या हरि निरँकार। साचा राह दईं वखाईं, निहकलंक वसे केहड़े थाँईं, दोए जोड़ दूर दुराडे बैठे करीए चरन प्यार। उत्ते बैठे निउँ निउँ झाती मारन, कलिजुग वेला अन्तिम होया, होई अन्धेरी रात। कलिजुग जीव ना कोई जाणे अन्तिम सोया, गुरमुख तेरे आत्म दिसदी रहे सदा प्रभात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा राह दिखाए दक्खण दिशा कुफल खुल्हाए इक्को रक्खे ताक। दक्खण दिशा साचा जोड़ा। अग्गे दिसे चिट्टा घोड़ा। प्रभ अबिनाशी हो अस्वार, मातलोक विच आए दौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, जोत सरूपी जामा पाया, ना कोई जाणे जाण पछाणे किन्ना लम्मा किन्ना चौड़ा। करोड़ तेतीस करन पुकारन। प्रभ अबिनाशी वाजां मारन घनकपुर वासी साडी पाईं अन्तिम सारन। साडी करीं बन्द ख़लासी, खिच्च लयाईं चरन द्वारन। दूरों वेख चार जुग पई रही इक्को फाँसी, अन्तिम कलि होई आत्म हँकारन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, आईए चल तेरे द्वारन। सिँघ मनजीत शब्द गाया। करोड़ तेतीस कन्न सुणाया। बीस इकीस नेड़े आया। सभ दा सीस दए कटाया। राकश बंस वक्त चुकाया। एका सोहँ शब्द गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। जामा धार तिन्नां लोकां करे विचार। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक पैरां थल्ले दए लताड़। महाराज शेर

१६५
०४

सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी एका अग्न जोत लगाए, घर घर बैठे देवे साड़। घर घर साड़े करे सवाह। अन्तिम वेले देवे फाह। किसे ना मिले कोई राह। सारे फिरन वाहो दाह। मां पुत्तरां होए विछोड़ा, ना कोई वेखे भैण भ्रा। इक्को मारे शब्द कोड़ा, ना कोई छुडाए कर के अग्गे बांह। प्रभ अबिनाशी तेरा सति फरमान कलिजुग जीवां अन्तिम मोड़ा, ना मिले ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चढ़न वाला शब्द घोड़ा पंचम् जेठ उठ दौड़ा, घर घर उडाउँदा जाए कां। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम जोती दए जगाए। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्का गोती दए बणाए। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म सोती लए जगाए। सतिगुर पूरा जाणीए, दुरमति मैल जाए धोती दर्शन पाए। सतिगुर पूरा जाणीए, जोत सरूपी जोत हरि अवर ना दिसे कोए। सतिगुर पूरा जाणीए, वडा शहनशाह। सतिगुर पूरा जाणीए, आप कटाए जम का फाह। सतिगुर पूरा जाणीए, फड़ फड़ बाहों राहे देवे पा। सतिगुर पूरा जाणीए, दरगहि साची सच मलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे निथाविआं थां। सतिगुर पूरा जाणीए, माणो ठंडी छाँ। सतिगुर पूरा जाणीए, हँस बणाए कां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट होए सच्चा दस्से शब्द नां। सतिगुर पूरा जाणीए, कटे गल फाँसी। सतिगुर पूरा जाणीए, रसन तजाए मदिरा मासी। सतिगुर पूरा जाणीए, दरस दिखाए प्रगट होए घनकपुर वासी। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्तिम अन्त
१९६
०४
करे बन्द ख़लासी। सतिगुर पूरा जाणीए, माया ममता दर तों जाए नासी। सतिगुर पूरा जाणीए, कट्टण आया कलि चुरासी। सतिगुर पूरा जाणीए, मानस जन्म कराए विच मात रहिरासी। सतिगुर पूरा जाणीए, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द ज्ञान। सतिगुर पूरा जाणीए, मेल मिलाए भगत भगवान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच्चा दान। सतिगुर पूरा जाणीए, करे कराए आत्म तीर्थ इशनान। सतिगुर पूरा जाणीए, शब्द मारे इक्को बाण। सतिगुर पूरा जाणीए, बज़र कपाटी औखी घाटी आपे आप चढ़ान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम इक्क निधान। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म जोती आप जगाए गुरमुख आत्म आप महान। सतिगुर पूरा जाणीए, साचा शब्द सुणाए कान। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे चरन ध्यान। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सतिगुर पूरा जाणीए, सदा सुखदाई। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे मात वड्याई। सतिगुर पूरा जाणीए, एथे ओथे होए सहाई। सतिगुर पूरा जाणीए, गर्भवास अन्तिम अन्त दए कटाई। सतिगुर पूरा जाणीए, घट घट रक्खे वास, अन्तिम होए सहाई। सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां होया दास, दर दरस दिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दए आप वधाई। सतिगुर पूरा गुण निधान है। सतिगुर पूरा चतुर सुजान है। सतिगुर पूरा वड वड मेहरबान है। सतिगुर पूरा इक्को देंदा सच्चा दान है। सतिगुर पूरा,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए जम की कान है। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे धीर धरवासा। सतिगुर पूरा जाणीए, बख्शे चरन भरवासा। सतिगुर पूरा जाणीए, रसना गाईए स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म वेख विचार। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द सच्ची धार। सतिगुर पूरा जाणीए, मुन सुन आप खुल्हार। सतिगुर पूरा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों चुण, खिच्च ल्याए चरन द्वार। सतिगुर पूरा जाणीए, करे छाण पुण, आत्म कढ्ढे सर्ब हँकार। इक्को दस्से साचा गुण, नर हरि हरि नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदिन अन्ता पाउँदा रहे सार। सतिगुर पूरा जाणीए, सहिज सुभाओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच्चा नाउँ है। सतिगुर पूरा जाणीए, हरि इक्क अगम्म अथाहो है। सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता बेपरवाहो है। सतिगुर पूरा जाणीए, पुरख बिधाता, गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, ना आवे किसे दाओ है। सतिगुर पूरा जाणीए, आपे पिता आपे माउँ है। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे ठंडी छाउँ है। सतिगुर पूरा जाणीए, जोत अकारया। सतिगुर पूरा जाणीए, दस्से राह सच्चा दरबारया। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म तोड़े गढ़ किला हंकारया। सतिगुर पूरा जाणीए, अन्दर जाए वड़ जोत जगाए अपर अपारया। सतिगुर पूरा जाणीए, दर दुआरे रहे
१६७ खड़, देवे दरस अगम्म अपारया। सतिगुर पूरा जाणीए, पंचां चोरां नाल रिहा लड़, कढ्ढे बाहर दर दुरकारया। सतिगुर १६७
०४ पूरा जाणीए, वेले अन्तिम बांह लए फड़, सतिगुर पूरा जाणीए, साचा घाड़न रिहा घड़, गुरमुख ना भज्जण अन्तिम वारया। ०४
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां फड़ाए आपणा लड़, खिच्च ल्याए सच दरबारया। सतिगुर पूरा जाणीए, सच देवे मती। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे धीरज सती। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे विच्चों रोग गंवाए जोत टिकाए इक्को रती। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लग्गण देवे ना वा तत्ती। सतिगुर पूरा जाणीए, सच वखानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे जोती चानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द नाउँ वड ब्रह्म ज्ञानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, गुणवन्त गुण निधानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्त पछानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, जन भगतां देवे सोहँ सच्चा दानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा। सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता गहर गम्भीर। सतिगुर पूरा जाणीए, करे शांत शरीर। सतिगुर पूरा जाणीए, अमृत प्याए साचा सीर। सतिगुर पूरा जाणीए, बज़र कपाटी देवे चीर। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्को हाटी साची घाटी आप चढ़ाए अख़ीर। सतिगुर पूरा जाणीए, अग्गे नेड़े आई वाटी, पैणी अन्तिम भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, लक्ख चुरासी विच

समाए, ना कोई जाणे हस्त कीड़। सतिगुर पूरा जाणीए, वड वड पीर। सतिगुर पूरा जाणीए, कढ्ढे हउमे पीड़। सतिगुर पूरा जाणीए, आत्म देवे साची धीर। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे शब्द तीर। सतिगुर पूरा जाणीए, कलिजुग अन्तर। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे शब्द सच्चा गुर मन्त्र। सतिगुर पूरा जाणीए, जेहड़ा बणाए सच्ची बणतर। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को जोत इक्को गोत आदि अन्त जुगा जुगन्तर। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे सच संदेश। सतिगुर पूरा जाणीए, आवे जावे विच मात प्रगट होए सद हमेश। सतिगुर पूरा जाणीए, माण गंवाए विच जहान नर नरेश। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क जोत डगमगाए, बेमुख जीवां दिस ना आए, भुले फिरदे कर कर वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, होया माझे देस। सतिगुर पूरा जाणीए, ना होए पखण्डी। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क दिखाए साची डण्डी। सतिगुर पूरा जाणीए, सुख साचा माणीए आत्म होए ना फेर रंडी। सतिगुर पूरा जाणीए, साची दात अठ्ठे पहर जाए वंडी। सतिगुर पूरा जाणीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां ना देवे कंडी। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। प्रगट जोत हरि रघुराई। गुरमुख दुरमति मैल आपणे दर लुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच द्वार आए चल दुरमति रही शरमाई। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। कलिजुग तेरी दुरमति कलिजुग जीआं करे ख्वारी। भुले फिरदे वड वड सुरपति, आत्म होई हँकारी। जोती जोत सरूप हरि, एका पाए सर्ब सारी। दुरमति आई दर दरबार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मेरा लाह तन बुख़ार। चढ़या रहे कलिजुग अन्तिम वार। बेमुखां दे हिरदे वसी, तप तप होई अन्गयार। इक्को राह सच्चा दस्सीं, मैं जावां तेरिआं सिक्खां दे दरबार। जोत सरूपी किरपा कर निहकलंक नरायण नर अवतार। दुरमति विचारी की करे गंवारी। कलिजुग जीआं किस्मत माढ़ी। प्रभ अबिनाशी वड किरसाना वढ्ढुण वाला इक्व्वी हाढ़ी। कोई ना जाणे प्रभ का भाणा, भुले फिरदे राजा राणा, किसे हथ्थ ना आणा भज्जे फिरन पिच्छे अगाड़ी। प्रभ अबिनाशी शब्द तीर इक्क चलावणा, चार कुन्ट फड़ उठावणा, फड़ फड़ मारे शाह सुल्तानां, मगर लाए मौत लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति तैनूं दए वधाई। कलिजुग सेवा तूं कमाई। बेमुखां नूं आई भुलाई। अन्तिम खेल हरि रचाई। सिर तेरे रक्खे हथ्थ देवे हरि वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि तेरी औध मुकाई। दूजी किरपा रिहा कर। मन मति सदाए आपणे घर। धीरज यति जिस गंवाए, बेमुख फिराए दर दर। किसे ना दित्ती साची मत, रोंदे फिरदे नारी नर। साचा शब्द ना बीज्जया साची वत्त, मानस जन्म गए हारी, रसना चरखा लैणा कत्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त मिटाए, शब्द डण्डा हथ्थ उठाए, मौत लाड़ी संग रलाए, मार

मिटाए घर घर। मनमति होई कुड़यारी, जूठयां झूठयां जीवां। कलिजुग आत्म तुट्टी हारी। आई सच दरबार मैं पाणी किथे पीवां। होई अन्त दुख्यारी, किते ना मिलदी सच्ची छाँ। चारों कुन्ट कलिजुग जीव बैठे हँकारी, विरला गुरमुख दिसे, उहदे आया हरि जी हिस्से, जिस दा आत्म होया नीवां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आई दर चरन प्रीती इक्को लाईं, बलि बलि तैनूं थीवां। मनमति पई पुकारे। आई हरि तेरे दुआरे। कलिजुग जीव छड्ड मैं आई, चाढ़ आई तन अफारे। एका वस्त जूठी झूठी तन काया अन्दर गड्ड मैं आई, ना कोई जड़ उखाड़े। गुरमुख साचे संत जनां दे दरस कराईं, मेरी तृखा हरि मिटाईं, दोए जोड़ कढदी फिरदी हाढ़े। मनमति आई सच घर बाहर। दोए जोड़ करे बेनन्ती, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। जोत सरूपी जोत हरि, इक्को देवे वर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं जावां तेरे सिक्खां दरबार। प्रभ अबिनाशी दस्सीं राह। मैं उठ के जावां केहड़े थां। कलिजुग मिली ना ठंडी छाँ। औखी होई धरत मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्को इक्क चरन दिसे सच्चा थां। कलिजुग तेरा वक्त चुकाया। सतिजुग तेरा जन्म दवाया। कलिजुग पापी बाहर कढाया। सतिजुग साचा सति उपजाया, कलिजुग पापी हरि दुरकाया। सतिजुग साचा सति उपजाया, धरत मात तेरी गोद बिठाया, जन भगतां लए बुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
१६६
०४
भगवान, साचा कर्म धर्म दोहां दा आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग उठ कर विचार। सतिजुग सच्चा जागया, विच मात पहली वार। कलिजुग कलंकी नार, दुष्ट दुराचार ना पावे सार। सतिजुग साचा सति संतोख, विच मात धराया हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, दोहां बणया लेख लिखार। कटे हउमे रोग, दया कमांयदा। कटे हउमे रोग, अमृत साचा जाम प्यांयदा। कटे हउमे रोग, साचा नाम जपांयदा। कटे हउमे रोग, अमृत धारी इक्क चवांयदा। कटे हउमे रोग, सोहँ रक्खे तिक्खी धारी दुरमति मैल पापां लाहिंदा। कटे हउमे रोग, लिख्या धुर संजोग, सच्चा मेल मिलांयदा। कटे हउमे रोग, रस रसना सच्चा भोग, माया ममता तन जलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पांयदा। कटे हउमे रोग, तन अफारया। मिटाए चिन्ता सोग, जन आए चल द्वारया। कदे ना होए विजोग, हरि रक्खे चरन प्रीती विच संसारया। सोहँ शब्द चुगाए साची चोग, आत्म भरे भण्डारया। साचा रस रसना लैणा भोग, साचा शब्द जपणा हरि निरंकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार बणे आप वरतारया। कदे ना होए विजोग विच जहान। गुरमुख साचे संत जन दर घर साचे पावण माण। इक्को मिले नाम धना, चुक्के जम की कान। साचा सुणे राग कन्ना, छतीस राग दर्शन पाण। इक्को जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छतीस राग एह अलाउँदे। अट्ठे पहर हरि ध्याउँदे।

चार जुगां पावे सार कीते हिस्से चार, इक्क जुग जुग नूं नौ नौं आउँदे। नौ खण्ड पृथ्मी नौ खण्ड इक्क इक्क वास रखाउँदे। वासा करन विच वरभण्ड, कलिजुग जीव सार ना पाउँदे। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलिजुग देवे वर, गुरमुख विरले संत जन आपणी बणत बणाउँदे। सुणे पुकार सर्ब दातार है। पाए सभ दी सार है। जो जन आए चरन द्वार, बेड़ा कर जाए पार है। मंगण नाम बण भिखार, देवणहार दातार है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां तारनहार है। आत्म वेखे सभ किछ जाणदा। ना कोई रहे भरम भुलेखे, किल्ले तोड़े आत्म हँकारदा। आप लिखाए साचे लेखे, धुरदरगाही सच्चा माही गुरमुख साचे जाणदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरला संत जन, रंग तेरा माणदा। गुरमुख माणे रंग, हरि चलूल। सृष्ट सबाई मानस जन्म होया भंग, अन्तिम वेले गए भूल। धर्म राए दर देवे टंग, एका मारे शब्द त्रसूल। अन्तिम वेले होए नंग, कोई वस्त ना दिसे कोल। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी आप उठाए, सुत्ते रहे अनभोल। साचा कन्त दया कमाए, गुरमुख साचे संत आपणी सरन लगाए, देवे नाम अनमोल। आप बणाए साची बणत, देवे वड्याई विच जीव जन्त, साचा राग कन्न सुणाए, होए सहाई अन्तिम अन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, होए सहाई अन्तिम वारया। गुरमुख साचे संत जनां, आए चल द्वारया। साचा नाम वसाए हरि धन्ना, जगाए जोत अपर अपारया। आत्म मिटाए सर्ब जनां, देवे दात जगत अपारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतारया। मंगण आए दर गुरमुख वणजारे। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, भरदा जाए भण्डारे। तोट ना आवे साचे घर, कोटन कोट मंगदे रहण दुआरे। आप खुल्ाए आपणा दर, ना करे बन्द कवाड़े। इक्क खुल्ाए साचा सर, गुरमुख साचे संत जन फड़ फड़ बाहों अन्दर वाड़े। चरन लाग कलि जायण तर, गुरमुख साचे संत जन, दोए जोड़ करन बेनन्ती प्रभ अबिनाशी किरपा कर ना वेखीं चंगे माढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा सिहरा सीस गुंदाया, कलिजुग अन्तिम आप बणाए गुरमुख साचे लाड़े। सिहरा बन्ने सीस हरि निरंकारया। किरपा करे आप जगदीश, गुरमुख संत प्यारया। तेरी कोई ना करे रीस, सुहाउँदा रहे चरन द्वारया। कलिजुग वेला अन्तिम आया मिट जाणे राग छतीस, एका नाउँ सभनीं थाँईं, चार कुन्ट वजणा डंक, सारे सुणन राउ रंक, निहकलंक नरायण नर अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारया। एका नाउँ डंक वजावणा। राजा राणा सोया आप जगावणा। करे कराए आपणा भाणा, ना कोई जाणे शाह सुल्ताना, एका राह फड़ फड़ सभ नूं पावना। तोड़ी जाए सभ दा माणा, जोत सरूपी पहरे बाणा, रसना तीर इक्क चलावणा। आप हिलाए गोरख ते मच्छन्दर, तेरा उच्चा टिल्ला इक्के शब्द नाल हिलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत

जनां, आप वड्याए विच बहाए शब्द बबाणा। उचे टिल्ले आप हिलाए। जूठे झूठे अक्खों बिले, दूजी कूटे मार मुकाए। ना कोई वेखे कच्चे पिल्ले, इक्के वारी सारे ढाहे। ना कोई करे हरि जी छिल्ले, आपणा भाणा इक्क कराए। सृष्ट सबाई सारी हिल्ले, रसना तीर चढ़ाया चिल्ले, आप कराए अन्त ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा दान, गुरमुख साचे संत जन, जो आए चल सरनाए। छुट्टे तीर रसन कमाना। होए जगत वहीर ना कोई धीर धराना। किसे हथ्थ ना आउणा नीर, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साचा दान, सोहँ शब्द इक्क निधाना। गुर संगत तेरा इक्क जैकारा। तिन्नां लोकां वसे बाहरा। हरि जी साचा सुणे पुकारा। पाउँदा रहे आत्म सारा। वजाउँदा रहे शब्द नगारा। ढाउंदा रहे झूठा महल मुनारा। इक्का पाउंदा रहे, जोत जगत जगाउंदा रहे, अन्तिम अन्त आउँदा रहे निहकलंक नरायण नर अवतारा। इक्को इक्क कराउँदा रहे। दूई द्वैती मिटाउँदा रहे। शरअ शरायत चलाउँदा रहे। इक्क हदायत सुणाउँदा रहे। ज़ात पात मिटाउँदा रहे। सोहँ दात झोली पाउँदा रहे। गुरमुख साचे संत जनां साचा मेल मिलाउँदा रहे। आप बणाए शब्द डोली, गुरमुख साचे विच चढ़ाउँदा रहे। पूरे तोल जाए तोली, सोहँ कंडा हथ्थ उठाउँदा जाए। चरन प्रीती घोल घोली, पूरा मुल्ल पवाउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर गुरमुखां सदा वसाउँदा रहे। सुण पुकार सिरजणहारा गुरसिख पुकारे, विच मात कलि अन्धयारा। उत्तों मारे थल्ले झात, गुरसिख होया कलि दुख्यारा। होए अन्धेरी रात, साधां संतां ना पावे कोई सारा। प्रगट होया साचा कन्त, निहकलंक नर अवतारा। जन भगतां बणाए साची बणत, देवे नाम शब्द अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम प्याए, गुरमुखां करे ठंडा ठारा। ठंडा ठार आत्म शांती। इक्क प्याए बूंद स्वांती। खोल्ह वखाए आत्म ताकी। विच बैठा मारे झाती। वेख वखावे जो रहि गया बाकी। कोई ना रहणा अग्गे आकी। सृष्ट सबाई तेरी सेजा, हरि आप बणाई धरत मात ख़ाकी। गुरमुख साचे संत जनां, सोहँ शब्द तन पहनाए चिट्टी इक्क पुशाकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर पिलाए, हउमे विच्चों पीड़ कढाए, एका साची धीर धराए, बणया साचा साकी। सच्चा साकी तन प्याला। देवे जाम हरि गोपाला। पूर कराए काम, गुर दर जन भगतां तोड़े कलिजुग जंज़ाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा आप कराए, गुरमुखां दे मुख चुआए, आत्म सहिंसा आप गंवाए, इक्को सुख हरि उपजाए, साचा नाम धन झोली पाए, करे सर्ब माल माला। देवे दान दीनां नाथ। होए सहाई सगला साथ। हरि रघुराई त्रैलोकी नाथ। जोत जगाई चलाए साची गाथ। गुरमुख चढ़ाए साचे राथ। साचे लेख लिखाए माथ। प्रभ अबिनाशी सिर रक्खे हाथ। सगल वसूरे जायण लाथ। हाज़र हज़ूर

अकथ्थना अकाथ। ना वसे दूर गुरसिक्खां साथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, जिउँ रामा घर दसराथ। बन्ने बेड़ा होए सहारा। दए खेड़ा तन अपारा। मुक्के झेड़ा अमृत धारा। खुल्ला वेहड़ा हरि दुआरा। बन्ने बेड़ा अन्तिम वारा। निहकलंक नर अवतारा। राउ रंकां इक्क भण्डारा। सुहाए द्वार बंक आए दुआरा। राउ रंक इक्क दातारा। एका अंक हरि शब्द अपारा। वज्जे डंक सुणे संसारा। निहकलंक नरायण नर अवतारा। शब्द डंक हरि आप वजाए। मन का मणका आप फिराए। शब्द सरूपी तनक लगाए। दाणा कनक जोत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक एका थां बहाए। एका धाम राजा राजान। एका धाम शाह सुल्तान। एका धाम बिरध बाल जवान। एका धाम हरि भगवान। एका धाम सच निशान। एका धाम कच्च जहान। जोत सरूपी हरि भगवान। गुरमुख साचे संत प्यारे। मिल्या मेल हरि कन्त भतारे। सज्जण सुहेला विच संसारे। गुर संगत मेला हरि निरँकारे। गुर चेला इक्क दुआरे। निहकलंक कलि जामा धारे। पूरी करदे आस, हरि बनवारया। साची जोत कर प्रकाश, मेट अंध्यारया। हरि हिरदे रक्ख वास, दीपक जोती कर उज्जयारया। हउमे दुखड़ा होवे नास, एका बख्शीं चरन प्यारया। शब्द जपिए स्वास स्वास, दुक्खां रोगां करीए कारया। मानस जन्म होवे रास। मात गर्भ ना आईए दूजी वारया। अन्तिम कर बन्द खुलास, सुण पुकार हरि निरंकारया। जन होए तेरा दास, दोए जोड़ चरन सरन करन निमस्कारया। दोए जोड़ चरन निमस्कारदे। गुरमुख साचे संत जन हरि तैनूं सदा पुकारदे। एका बसाईं नाम धन, दूजा दरस अपार दे। तीजे कहणा जाईं मन, चौथे घर विच वाड़ दे। पंचम् मिल निकले जन, स्वच्छ सरूपी दर्शन हरि निरँकार दे। छेवें वसे साचे घर, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, सच्चा महल्ल उसार दे। सत्ते सति सति आत्म यति यति, सोहँ सच्चा पत, विच तन काया वाड़ दे। अठवें अठसठ तीर्थ भौं भौं थक्के, दुरमति मैल उतार दे। नावें नौ दर बहि बहि सारे अक्के, चारों तरफ पैंदे धक्के, ना सानूं दुरकार दे। दसवें दहि दिश उठ उठ धाए, चारे कुन्टां मुख भवाए, हरि जी साचा किसे दिस ना आए, गुरमुख साचे संत जन दोए जोड़ दर सच्चे आए पुकार दे। अमृत बूंद प्याउँदा जा। हउमे विच्चों कढु पीड़, अमृत बूंद स्वांती प्याउँदा जा। जोती जोत सरूप हरि, दुक्खां रोगां चिन्ता सोगां, बाहर कढाउँदा जा। आत्म दुःख मिटाई जा। साचा सुख उपजाई जा। सुक्के होए कलि काया रुक्ख अमृत उत्ते पा हरे कराई जा। कलिजुग जीव होए बेमुख, गुरमुख साचे राहे पाई जा। आप मिटा तृष्ना भुक्ख, साचा जाम पिलाई जा। गुरमुख साचे संत जन सद सुक्खणा रहे सुक्ख, प्रगट हो जोत सरूपी आपणा दरस दिखाई जा। अमृत मुख हरि चुआया। कलिजुग लग्गा हउमे दुःख, आपणी हथ्थीं आप गंवाया। बहत्तर नाड़ी होए सुख, जिस जन रसना

गाया। उज्जल होए मात कुक्ख, मात सुलक्खणी भाग लगाया। धन्न धन्न जणेंदी गुरसिख तेरी माया। आत्म मिल्या इक्को सुख, जगत जंजाला मिटया दुःख, निहकलंक तेरा दर्शन पाया। अमृत प्याए साचा सीर। कलिजुग अन्तिम कितों हथ्थ ना आए, फिर फिर थक्के अठसठ नीर। गंगा गुदावरी कोई ना देवे धीर। अन्तिम कलिजुग लथ्थे चीर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अमृत साचा जाम प्याए, बज़र कपाटी रिहा चीर। अमृत पीआ हरि दुआरे। निर्मल होया जीआ, लथ्थे तन अफारे। साचा बीज हरि जी बीआ, काया बणाए सच्चा इक्क क्यारे। सोहँ छट्टा सच्चा दीआ, उत्ते चले अमृत इक्क फुहारे। बेमुखां आत्म रक्खी फट्टा, अन्तिम सिर विच पैणा घट्टा, ना कोई पावे सारे। प्रभ किसे ना मिले तीर्थ तट्टा, झूठी होई काया मट्टा, जोत ना जगी लट लटा, होया अन्ध अंध्यारे। गुरमुखां लाहा साचा खट्टा, साचा शब्द रस रसना चट्टा, देवे रस अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। अमृत मुख चुआए दया कमाए, दुःख गंवाए दया कमांयदा। साचा सुख उपजाए हरि रघुराए, गुर संगत सेव कमांयदा। छड्ड सिँघासण हरि जी आए, त्रैलोकी नाथ आप अख्वाए, सगला साथ गुर संगत तेरा तोड़ निभाए, ना कोई छुडांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा देवे जीआ दान, विच जहान हरि मेहरबान, कर किरपा पार लँघांयदा। अमृत बूंद गुर दर पी। सदा सदा गुरमुख साचे संत जन, विच मात दे जी। निहकलंक कलि जामा पाया, साचा कर्म आप कमाया, सतिजुग तेरी बन्न्हदा जाए साची नींह। इक्क भण्डारा आपणे हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई मंगण आए चल दुआरा, सोहँ बणे सच वरतारा, अचरज खेल हरि रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत सरूपी जामा पांयदा। अमृत तेरी चले धार। विच संसार कलिजुग अन्तिम वार। गुरसिक्खां करे ठंडा ठार। बेमुखां आत्म तन देवे इक्क अफार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। अमृत तेरी अमर कहाणी। इक्क पछाणे भिन्नड़ी रैण सच सवाणी। बेमुख कलिजुग जीव गूढ़ी नींद सुत्ते, ना मिले अन्तिम किसे पाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप चुकाए जम की काणी। उठ जीव जाग कलिजुग अंध्यारया। उठ जीव जाग, कर दरस निरंकारया। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग, आत्म छड्ड हंकारया। उठ जीव जाग, आत्म धो दाग, प्रभ अबिनाशी आपणी हथ्थीं आपे लाह रिहा। उठ जीव जाग सुण साचा राग, हउमे रोग गंवा रिहा। उठ जीव जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक साचा डंक वजा रिहा। उठ जीव जाग अन्त अखीर। उठ जीव जाग अन्तिम किसे ना देणी धीर। उठ जीव जाग, वज्जण वाला कलिजुग तीर। उठ जीव जाग, चारों कुन्ट किसे हथ्थ ना आउणा नीर। उठ जीव जाग, ना कोई

२०४
०४

सहाई पीर फ़कीर। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी चरनी लाग, कढ्ढे हउमे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साची धीर। उठ जीव जाग, अनभोल। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी इक्क सुणाए सच्चा बोल। उठ जीव जाग, साचे तोल रिहा हरि तोल। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी वसे तेरे आत्म कोल। उठ जीव जाग, प्रभ दूई द्वैती पर्दे देवे खोल्ह। उठ जीव जाग, साचा नां वजाए इक्को ढोल। उठ जीव जाग, मानस जन्म हथ्थ ना आउणा, लक्ख चुरासी विच्चों अनमोल। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती घोली घोल। उठ जीव जाग, जगत हंकारया। उठ जीव जाग, निहकलंक कलि जामा धारया। उठ जीव जाग, शब्द वज्जण वाला इक्क कटारया। उठ जीव जाग, सृष्ट सबाई होई अंध्यारया। उठ जीव जाग, सोहँ डण्डा कलिजुग तेरे सीस धरा रिहा। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई चीर दो फाड़ करा रिहा। सृष्ट सबाई होए दो धड़। इक्क दूजे नाल मरन लड़ लड़। प्रभ अबिनाशी आपे वेखे, दूर दुराडा खड़्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तीर चलाए, दिस ना कोई आए किला गढ़्ह। तोड़े किला गढ़्ह महल अटारीआ। जोत सरूप हरि जी खड़, करे खेल अपर अपारया। शब्द घोड़े जाए चढ़, चारों कुन्ट फेर फिराया। कोई ना सके अग्गे अड़, शब्द तीर इक्क चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव बेमुखां, फड़ फड़ कलिजुग भट्ठी विच पा रिहा। कलिजुग भट्ठी गई तप। प्रगट होया जगत अप। लड़न वाला बेमुखां सप्प। साचा छड्डया जप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जणाए आपणा अप। बेमुखां जीआं होए जुदाई। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि साचा दए दिखाई। गुरमुखां बणे सज्जण सुहेला, साचा मेल मिलाई। शब्द सुहागी गीत गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आयां देवे सच्ची वड्याई। आए दर दर परवान, किरपा करे हरि भगवान। आपे तारे बिरध बाल जवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए शब्द आन। आए तारे जो जन घर साचे नर नारी। साचे लेखे आपे लाए, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। नेत्र खोल्ह सभ नूं वेखे, पूर्ब कर्म रिहा विचारी। गुरमुख साचे संत जन प्रभ दरस दर आए पेखे, उतरे पार अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां, आपे बणे लेख लिखारी। बाली बुध बुध अञ्याणी। कलिजुग तेरा भरया पाणी। भुल्ली अर्जन तेरी बाणी। काया होई अन्न्ही काणी। रसना गाउँदी मदिरा मास खाणी। ना गाया बत्ती दन्दीं हरि प्राणी। आत्म अन्धी बेमुहाणी। झूठे धन्दे अन्त पछतानी। छड्डणे पैणे हाणीआं हाणी। किसे ना लभ्भे राजे राणी। किते ना दिसे ठंडा पाणी। अर्जन भुली तेरी साची बाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, करे फेर जगत पछाणी। पारब्रह्म जन राखो चीत। पारब्रह्म प्रभ एको

२०४
०४

साचा मीत। पारब्रह्म साचा हरि परखे साची नीत। पारब्रह्म प्रभ परमेश्वर, रसना गाओ सुहागी गीत। जगत पित आप जगदीश्र, करे काया सीत। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग मिटाए सतिजुग चलाए साची रीत। सतिजुग साची रीत चलावणी। आपणी हथ्थीं नींह रखावणी। उत्ते बरसे अमृत मींह, गुरमुख तेरी साची ख़ाक दोहां मेल मिलावणी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी बणत आप बणावणी। सतिजुग तेरा जन्म दवाणा। सतिजुग साचा सतिगुर बनाणा। हरि दर आपणा सोध, दे मति आप समझाउणा। विच्चों मिटाउणा काम क्रोध, एका नाम मन वसाउणा। सोहँ शब्द वड जोधन जोध, तेरे नाल रखाउणा। शब्द लिखाए अगाध बोध, भेव किसे ना आउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मात धराउणा। सतिजुग तेरी बन्नी धार। शब्द सरूपी चारों तरफ, इक्को करनी सच्ची वाड़। सच वस्त तेरी झोली पाउणी, परे हटाउणी झूठी धाड़। साची सिख्या इक्क सुनाउणी, ना कोई वेखे चंगे माढ़। इक्को पट्टी सर्ब पढ़ाउणी, दर घर साचे देणा वाड़। साची खट्टी मात कमाउणी, जोत जगाउणी बहत्तर नाड़। गुरमुख साचे संत जनां आपणे चरन बहाए, माण दवाए ठंडी छाँए, बेमुखां देवे झाड़। सतिजुग तेरे सिर हथ्थ टिकाए। गुरमुख साचे घेर घेर तेरे विच बहाए। आप मिटाए चुकाए मेर तेर, तेर मेर जगत अन्धेर, सिध्धा राह इक्क वखाए। आपे करे आपणी मेहर ना लाए देर, गुरमुख साचे संत जनां दे मति आप समझाउणा। साचा पाए माल धना, आत्म झोलीआं आप भराउणा। इक्क सुणाए नाम कन्ना, साचा राग इक्क उपजाउणा। कलिजुग मिटाए झूठा जना, साचा राह इक्क दखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक रंक राजान, शाह सुल्तान वड वडा बलवान, वरन चार एका धाम बहाउणा। सतिजुग तेरा धाम निराला। आप रखाए हरि गोपाला। जिथ्थे बैठ साया हेठ, गुरमुखां करे प्रितपाला। कलिजुग जीव भन्ने कौड़े रेठ, फल रहे ना किसे डाला। मिटदे जाण वड वड सेठ, मिट जाण झूठे धन्न माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, किसे ना वक्त संभाला। कोई ना सक्कया वक्त संभाल। कलिजुग अन्तिम खाणा काल। मारन वाला इक्को छाल। भन्नी जाए सभ दे जवानी डाल। जोती जोत सरूप हरि, इक्को पाउण वाला वडा घाण। इक्को घाण पाए घाणी। दूजा गेड़ा आप दवाए, विच पाए तत्ता पाणी। तीजा फेरा फेर लगाए, लहू मिझ मिझ लहू दी धार वहाणी। चौथा गेड़ा फेर लगाए, कलिजुग जीवां मिटे निशानी। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग तेरा आपे बणे सच्चा बानी। सतिजुग तेरा चिट्टा बाणा। प्रभ अबिनाशी चिट्टा इक्क रखाणा। बेमुख जीव अन्त पिट्टण होया बेमुहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ साचा खेल आपणा आप रचाना। निमस्कार करो गुरदेवा। बिरथा ना जाए गुर की सेवा। साचा फल लगाए अमृत मेवा। जो जन

गाए रसना जिह्वा। दरस दिखाए वड देवी देवा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवा। पूर कराए गुरसिख सेवा। मात लगाए साचा थेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना हरि साचा सेवा। वड्डी वड्याई, दर साचे खुशी मनाई, घर जाणा चांईं चांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्को वसे साचे थाँईं। साचा भेव हरि खुल्लावणा। कलिजुग वेला नेड़े आवणा। कलिजुग जीव फेर पछतावणा। प्रभ अबिनाशी ना चरन लगावणा। घनकपुर वासी आपणा आप फेर छुपावणा। एका जोत मात प्रकाशे, गुरमुखां हिरदे दीपक जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसन स्वासी सच जपावणा। भिन्नड़ी रैण मंगलाचार। गुर संगत बणाए भाई भैण, दूजा विच्चों रोग निवार। इक्का देवे सच्चा लहिण देण, लेखा लिखणेहार। एका सज्जण साक सैण, प्रभ अन्तिम अन्त वार। जोती जोत सरूप हरि, एका जोती करे अकार। इक्का जोती इक्को गुण। गुरमुख साचे माणक मोती, हरि लए पुकार सुण। आत्म उठाए आप सोती, लक्ख चुरासी विच्चों चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क उपजाए शब्द धुन। देवे धुन्कार, खुल्ले सुन्न होए उज्जयार। कवण जाणे हरि तेरे गुण, गुरमुखां पा रिहा सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारा इक्क खुल्लाया, वड भण्डारा आप रखाया, बणया रहे वरतार। हरि वरतार विच संसार। मंगण आए जन द्वार। देवे नाम धन अपार। बेड़ा जाए बन्न, कलिजुग अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा मेल मिलाया, दर घर साचे माण दवाया, इक्क बणाया सजण सुहेल। गुर संगत धन्न कमाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कीनी, दए मात वड्डयाईआ। साचा नाउँ रसना चीनी, होए जोत रुशनाईआ। काया रक्खे हरि जी भीन्नी, अमृत धार वहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां एका सच्चे धाम बहाईआ। गुर संगत गुण गाउँदी आए, दर घर पाया माण चतुर सुजानया। मिल्या मेल हरि भगवान, मिल्या सच्चा दानया। चरन धूढ़ किया इशनान, आत्म तुट्टा मानया। एका रक्खणा चरन ध्यान, देवे दरस आप भगवानया। जो जन रसना गाण, आत्म जोत जगाए महानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम निधान, आत्म मारे सच्चा बानया। वज्जे बाण तीर निराला। गुरमुख साचे संत जनां, पहला वार आप संभाला। आपे देवे नाम धना, दीना नाथ दीन दयाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, होए सद सदा रखवाला। गुरसिख गुरमुख दोवें होए वडभागी। आत्म मिटायण कलिजुग तृख, काया सोई जागी। साची सिख्या लैणी सिख, धोणा पिछला दागी। किसे हथ्थ ना आवे मुन रिख, गाउँदे फिरदे वड वड रागी। भुले फिरदे जगत मनुक्ख, धारन वड वड स्वांगी। गुरमुखां मिल्या प्रभ अबिनाशी आत्म सुखणा साची सुक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साची लागी। लग्गे

चरन प्रीत तोड़ निभाईआ। आपे परखे साडी नीत, होए वड गुनाहीआ। अचरज दिसे तेरी रीत, जोत सरूपी साचा माहीआ। आपे बण जाए साचा मीत, देवे ठंडी छाईंआ। इक्क जपाए सच सुहागी गीत, सोहँ नाम रखाईआ। मानस जन्म जाणा जीत, गुर चरन सीस निवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची सिख्या आपे देवे, बणे रहण भैण भराईआ। भैण भाईआं साचा नाता। दोहां मिल्या पुरख बिधाता। सच्ची देवे इक्क सुगाता। आपे बणे पिता माता। अन्तिम वेले पुछे वाता। आत्म बैठा अट्ठे पहर, वेखे मारे झाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कलिजुग अन्धेरी राता। मिटे अन्धेरी रैण, चानण चानणा। घर घर पैणे वैण, ना किसे होणा जामना। कोई ना पेखे नेत्र नैण, इक्क दूजे ना पछानणा। प्रभ आप चुकाए लहिण देण, कलिजुग तेरा लेख लिखावणा। देणा पए सभ नूं देण, अग्गे होए ना किसे छुडावणा। जूठे झूठे इक्ठे हो सारे बहिण, सच्चा नाउँ ना रसना वखानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग जामा धार, जोत सरूपी लाए डानणा।

२०७
०४

❁ १८ चेत २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❁

सच्च धाम अटल्ल, इक्क जोत अकार है। सच धाम अटल्ल, हरि निरँकार है। सच धाम अटल्ल, जोत सरूपी हरि निराधार है। सच धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग सच्ची सरकार है। सच धाम अटल्ल, इक्क प्रकाश है। सच धाम अटल्ल, एका हरि एका घर, एका पुरख अबिनाश है। सच धाम अटल्ल, एका हरि सर्ब गुणतास है। सच धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घट वास है। निहचल धाम अटल्ल, सदा अवल्लड़ा। निहचल धाम अटल्ल, हरि वसे इक्क इकल्लड़ा। निहचल धाम अटल्ल, गुरमुखां दिसे भारा पलड़ा। निहचल धाम अटल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरे अग्गे खलड़ा। कलिजुग तेरा वक्त सुहावणा। पंचम् जेठ हरि सगन लगावणा। सतिजुग सोया फिर उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा वक्त सुहावणा। हरि साचा तख्त बराज्जया। वल शाहो राजन राज्जया। कलिजुग अन्तिम अन्त, जन भगतां रक्खे लाज्जया। भुले फिरदे वड वड संत, ना मिल्या हरि ग़रीब निवाज्जया। ना मेल मिलावा होया साचे कन्त, जिस जन साजन साज्जया। भुले फिरदे जीव जन्त, प्रभ अबिनाशी जोत जगाई प्रगट होए विच देस माज्झया। आत्म घोर अन्धेर कलि अंध्यारया। ना कोई जाणे हरि दा हेर फेर, ना कोई जाणे प्रभ के भाणया। आप चुकाए गुरमुखां मेर तेर, दरस दिखाए हरि भगवानया। चरन बहाए घेर घेर, देवे नाम निधान

२०७
०४

गुणवन्त गुण निधानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी निहकलंक पहरे बानया। जोत सरूपी जामा धार। अचरज खेल करे करतार। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म देवे जोत अधार। साचा देवे नाम धना, शब्द चलाए अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत सरूपी जामा धार। शब्द सरूपी हरि निरंकारया। कलिजुग अन्तिम आया कर कर वेस, अपर अपारया। प्रगटाए जोत हरि माझे देस, बेमुखां आप भुला रिहा। भुले नर नरेश, साचा राह किसे हथ्थ ना आ रिहा। लभ्भदे फिरन श्री दस्मेश, जोत सरूपी भेख वटा रिहा। दर खड़े रहण ब्रह्मा विष्न महेष वड गणेश, प्रभ चरन आस रखा रिहा। कलिजुग अन्तिम धारे भेस, आप रक्खे खुल्हड़े केस, कलिजुग माया जगत रुला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ कर के आए वेस, बाणा राणा छत्र आपणे सीस झुला रिहा। साचा बाणा तन छुहाणा, ना कोई दीसे राजा राणा, सुघड़ स्याणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को मारे शब्द बाणा, अन्तिम कलि वेख वखा रिहा। अथर्बण अल्ला आई हिस्से। प्रभ अबिनाशी किसे ना दिसे। सिँघ सिँघासण बैठा, हरि जनां पाए हिस्से। कलिजुग जीव झूठी चक्की पीसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा छत्र झुलाए सीसे। ऐड़ा अल्ला आई हार। अन्तिम कलिजुग ल्या विचार। चारे कुन्टां पैंदी मार। कलिजुग जीव होए गंवार। धरती दब्बी पापां भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत जोत सरूपी लए अवतार। अल्ला राणी आई, दर कुरलाई गल विच पलड़ा पा। प्रभ दर दए दुहाई, गलों कट वेले अन्तिम फाह। मुख धो पापां छाही, सौखा निकले ना मेरा साह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन ना सके कोई छुडा। अल्ला राणी कुरलावे कीरने पावे। कलिजुग बन्न्हे झूठे दाअवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर जोत निरँजण आदि अन्त जुगा जुगन्त सद आवे जावे। अल्ला राणी करे पुकार। कलिजुग जीव छड्डणा पए हाणीआं हाणी, अन्तिम पैणी डाहढी मार। माया राणी होई काणी, अट्ठे पहर रही झक्ख मार। सुघड़ सवाणी नौजवानी वड विद्‌वानी, डिग्गी मूंह दे भार। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरानी, वड ज्ञानी, ना पायण प्रभ दी सार। मुल्लां मुलाणे शेख़ मुसायक पीर गौंस औलीए पढ़न हदीस कुरान अंजील। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर चारों कुन्ट ना दिसे किसे, ना कोई सके वखानीए। पंडत पढ़न पुरान, हरि ध्यौंवदे। ज्ञानी करन ज्ञान, रसन वखानदे। गुरमुख विरले ध्यानी करन ध्यान, प्रभ अबिनाशी रंग साचा माणदे। कलिजुग जीव होए सर्ब शैतान, प्रभ अबिनाशी मूल ना जाणदे। ना चुक्के जम की काण, अन्तिम आई हाण, जूठी झूठी ख़ाक छाणदे। एका वज्जे शब्द बाण, भुले पीण खाण, किल्हे तोड़े कुफर हँकार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख विरले विच मात

२०८
०४

रंग तेरा सच्चा माणदे। अल्ला तेरा चमके नूर। भरया वाह वाह वडा पूर। वेला नेड़े आया, जिस नूं जानण दूर। कलिजुग तेरा नगर खेड़ा प्रभ आपणी हथ्थीं ढाहया , जो तपे वांग तन्दूर। दोहीं हथ्थीं गल विच देवे फाहया। लक्ख चुरासी हरि कराए चूर। वेले अन्त होए सहाया, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़। गुरमुख साचे लए बचाया, जिस जन देवे चरन धूढ़। सोहँ साचा जाप जपाया, सुघड़ स्याणे बणाए बेमुख मूढ़। सच वस्त हरि आत्म झोली पाया, इक्क चढ़ाए रंग गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पाए अन्तिम कलि जोत सरूपी काया जूड़। अल्ला राणी होई निमाणी। गुरमुखां दा भरे पाणी। वेले अन्तिम कलिजुग हाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द रसन अलाया। साचा भेव आप खुल्हाया। सतिजुग साचे सोहँ शब्द तेरी हथ्थीं वंडे, शब्द भण्डारा नाम आप वरताया। शब्द भण्डारा नाम भगत अधार है। देवणहार दातार आप करतार है। होवणहार गुरमुख साचे संत जन, मंगण आए चरन द्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अमृत आत्म देवे सच्ची धार है। साची धारा, गुरसिक्खां देवे हरि कर प्यारा। गुरमुख विरला कलिजुग दोए जोड़ करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेव है, मंगदे रहण कोटन कोट दुआरा। गुरमुख विरला रसन सेव है, जिस जन प्रभ अबिनाशी देवे नाम अधारा। सोहँ शब्द वस्त साची लेवे, देवे हरि निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
२०६ अन्तिम कलि चार वरन चार कुन्ट इक्क खुल्हाए सचो सच्चा दर, आत्म धार शब्द अपारा। गुरसिख विचार, देवे हरि नर २०६
०४ नर निरँकार। जोत सरूपी कर अकार। वडा शाहो भूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अपर अपार। किरपा करे अपर अपारा। सच्चा देवे नाम धन, सोहँ शब्द खण्डा देवे मारा। गुरमुखां आत्म जाए मन, साचा मिले इक्क भण्डारा। आत्म जोत जगे तन, खोल्हे दस्म दुआरा। पंचां चोरां देवे डन्न, जोत सरूपी गिरधारा। आत्म बेड़ा देवे बन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। बेड़ा बन्न्हे बन्न्हण वेला। आपे बणे सज्जण सुहेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरा बचन अन्त कराए, पंचम् जेठ भेव खुल्हाए, आपे गुर आपे चेला। गुर गोबिन्द एह बचन लिखाया, कलिजुग जीवां भेव ना पाया, श्री दस्मेश जोत हमेश, हो हो नीवां दीप जगाया, अन्तिम कलि खुल्हड़े केस, हरि बणे दर दरवेश। जोत सरूपी भेस वटाया, आवे जावे मात नित नवित्त हमेश। माया पड़दा वाह वाह पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दे वड्याई भेव खुल्हाई, पंच जेठ नेड़े आई कर अवल्लड़ा भेस। आपे गुर आपे चेला। पंचम् जेठ लगणा मेला। प्रभ अबिनाशी सज्जण सुहेला। गुरमुखां अमृत फल खवाए सोहँ साचा केला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए साचा मेला।

❇ १ विसाख २०११ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच विहार होया ❇

हरि का रूप अगम्म निज घर वास है। ना दिसे किसे करे आपणा काम है। एका एक अवल्लड़ा रक्खे धाम है। ना जन्मे ना जाए मर, जोत सरूपी सच्चा राम है। ना हस्से ना रोए छम्म छम्म, आपे करे आपणा काम है। ना मंगे किसे कोलों दाम, देवणहार सच्चा नाम है। सृष्ट सबाई आपे पाए विच भरम, गुरमुख साचे संत जन आपे बूझ बुझान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता मेहरबान है। उठे जोधा बली सूर। कलिजुग भरया वडा पूर। दूर दुराडा हरि जी वेखे, लक्ख चुरासी देवे सच्चा नूर। पंचम् जेठी हाज़र हज़ूर। गुरमुखां लाए साचे लेखे, बेमुखां आत्म धन भरया गरूर। दिस ना आए किसे औलीए पीर शेख़े, ना जगे जोत किते कोहतूर। बेमुख भुले कलिजुग भरम भुलेखे, प्रगट होया निहकलंक सर्बकला भरपूर। गुरमुख विरला संत जन नेत्र नैण पेखे, प्रभ देवे सच्चा नूर। मानस जन्म लाए लेखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर। इक्क शब्द सुणाए साची धुन, ना कोई जाणे रिख मुन, सृष्ट सबाई मारे चुण चुण, लक्ख चुरासी करे चूर। लक्ख चुरासी गेड़ निराली। एका जोत नूर अकाली। सृष्ट सबाई आप भुलाई, पाई माया जगत जंज़ाली। झूठे धन्दे आपे लाई, आत्म रक्खी सर्ब कंगाली। गुरमुख साचे लए जगाए सोहँ देवे सच्ची दात हरि सच्चा धनवाली। आपे पाए साचे राहे, अन्तिम बणे सच्चा वाली। लक्ख चुरासी धर्म राए गल पाए फाहे, चारों कुन्ट उठ उठ वेखण दिसण हथ्थ खाली। वेले अन्त ना कोए छुडाए, ना कोई देवे सच्चा नाम विच दलाली। गुरमुख साचे संत जन आपणी सरन लगाए दया कमाए, अट्ठे पहर दिवस रैण करे हरि रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सरन जिस रखा ली। हरि राखे सभनी थाउँ है। दरगहि साची सच तख्त, सुल्तान करे सच निआउँ है। लक्ख चुरासी आई हाण, किसे ना मिलणा दर सच्चा माण है। बाल बिरध नौजवान ना कोई भैण भाई, ना कोई पित ना कोई माई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि निहकलंक साची जोत मात प्रगटाई है। साचा शब्द नाद धुन उपजांयदा। गुरमुख साचे लए साध, आत्म सुन तुड़ांयदा। शब्द लिखाए बोध अगाध, गुण अवगुण जणांयदा। जो जन रसना लए अराध, मुन सुन आप खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों लाध, आपणी सरन लगांयदा। आप मिटाए वाद विवाद, सच दात हरि झोली पांयदा। प्रभ अबिनाशी माधव माध, जोत सरूपी राम रहीम आप अखवांयदा। साची देवे शब्द दाद, मानस जन्म लेखे लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत सरूपी हरि लोकमात जामा पांयदा। साचा नाद शब्द वड्याई। गुरमुख साचे संत जनां दर पूरे पाई। साचा मिल्या नाम धना, हउमे रोग गंवाई। इक्क सुणाया शब्द घना, दूई द्वैती मेट मिटाई। आत्म भाण्डा

भरम भौ भन्ना, साची देवे जोत रुशनाई। ना कोई लावे अन्तिम संन्ना, पंजे चोर ना सके चुराई। धर्म राए ना दए डन्ना, प्रभ अबिनाशी वेले अन्त होए सहाई। धन्न धन्न कमाई संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस तेरी सेव कमाई। सच शब्द सहिज सुख धारी। मेल मिलावा हरि गिरधारी। प्रगट होए दरस दिखाए, सति सरूपी नैण मुँधारी। दया कमाए घनकपुर वासी, इक्को दस्से शब्द उडारी, बेमुख घर घर करन हासी, जो नर नार दिसदे मासी, वेले अन्त होण ख्वार। गुरमुखां मिल्या हरि शाहो शाबासी, निहकलंक सच भतार। मानस जन्म कराए रहिरासी, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। सोहँ गायण स्वास स्वासी, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। अट्ठे पहर गुरमुख साचे संत जन, दोए जोड़ चरन सरन करन निमस्कार। गुरमुखां हरि सद बलि बलि जासी, अट्ठे पहर करदे रहण इक्क पुकार। सृष्ट सबाई अन्त विनासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त रिहा पैज संवार। सच शब्द सच्चा धन माल। गुरमुक्ख साचा संत जन, ना होए मात कंगाल। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साचा फल लगाए काया डाल। घनकपुर वासी देवे वर, आत्म जोती देवे बाल। मंगण आए सच्चा दर, साचा शब्द इक्क लवाए तिन्नां लोकां साची छाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचे लए भाल। साचा शब्द संत जणाई। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर, किरपा कर चुकाए डर, देवे सच रुशनाई। इक्क नहाए आत्म साचे सर, गुरमुख काया ठंडी ठार रखाई। दूजा मंगण ना जाए दर, जो जन निहकलंक आए तेरी सरनाई। इक्क वजाउणा शब्द डंक, चार कुन्टां शब्द जणाई। इक्क कराउणा राउ रंक, राजा राणा तख्तों लाही। इक्क सुहाउणा द्वार बंक, गुरमुख आत्म सेजा इक्क बणाई। देवे वड्याई जिउँ भगत जनक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर साचा हरि, अन्तिम कलि हरि साची जोत प्रगटाई। नाम रत्न गुर देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। अमृत देवे साचा फल, सोहँ साचा मेवे। आप नुहाए अमृत ठांडे जल, प्रभ अबिनाशी वड देवी देवे। पूर कराए अज्ज कल, गुरमुख तेरी मानस जन्म वाली सेवे। दूर दुराडा आया चल, सच द्वार ल्या मल, अमृत भरया खाली खल, बेड़ा कीता पार। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, ना कोई करे वल छल, गऊ ग़रीब निमाणयां प्रभ चुक्कण आए भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा हरि जन दर आए साचे घर, फड़ बाहों बेड़ा कर जाए पारा। बेड़ा करे पार सतिगुर पूरा। आप मिटाए लक्ख चुरासी वाला झेड़ा, प्रभ अबिनाशी साचा सूरा। आप कटाए आवण जाण गेड़ा, सर्बकला भरपूरा। इक्क वसाए काया नगर खेड़ा, देवे सच्ची जोती साचा नूरा। कलिजुग मिटदा जांदा झेड़ा, प्रभ भरया डोबे पूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म दर सुहाए वसे हाज़र हज़ूरा। उठ बल धार

२११
०४

गुर चरन निमाणयां। मानस जन्म लै संवार, एह वक्त किसे हथ्थ ना आए राजे राणयां। प्रभ देवे शब्द धार करे पार, ना कोई वञ्झ मुहाणयां। एको मार शब्द उडार, आप रखाए सच टिकाणयां। बहिंदा जाए चरन द्वार, जगे जोत हरि भाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जिस कलिजुग अन्त पछाणयां। आए दर हो निमाणा। प्रभ अबिनाशी देवे माणा। ना कोई जाणे अन्धा काणा। गुरमुख साचे संत जनां धुरदरगाही साचा राणा। इक्को मिल्या साचा माही, फड़ फड़ साचे दर बहाना। साचे घर दिसण गुरमुख, उहनां चांईं चांईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना सदा गाणा। नैण हीण जगत अन्धेरा। ना कोई जाणे सन्झ सवेरा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, आप चुकाए मेरा तेरा। इक्क खुल्हाए साचा दर, आत्म घर करे हेरा फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ प्रभ भेव खुल्हाए, गुर गोबिन्द बचन लिखाए, आपे गुर आपे चेरा। चेरा गुर गुर चेरा। इक्को जोत तेरा मेरा। तेरा मेरा चारों तरफ घेरा। काया कोट नगर खेड़ा खुल्हा वेहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर कलि जोत प्रगटाई, वज्जी वधाई सुणे लोकाई, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला। औखी घाटी सौखा राह। प्रभ अबिनाशी पार कराए फड़ के बांह। एका सच्चा नाम जपाए, सदा रक्खे ठंडी छाँ। दरगहि साची माण दवाए, साचे थाएँ लेखे लाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप गोद उठाए जिउँ बालक मां। आपणी गोद हरि आप उठावणा। गुरमुख सोया आप जगावणा। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलावणा। प्रभ अबिनाशी गुण जाणे कवण, इक्को इक्क कलिजुग अन्त निशान झुलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट सृष्ट सबाई गुरमुख साचे संत जनां, पंचम् जेठ दए सुनेहड़ा, चलदी चलदी साची पवणा। सच सुनेहड़ा सच घर, सतिगुर साचे देणा घल्ल। गुरमुख साचे संत जन आओ चल। उठ उठ साचा मिले नाम धन, जाओ बलि बलि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अमृत सच लगाया काया फल। सच कर्म हरि आप कराए। गुरमुखां साचा जन्म दवाए। जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखाए। अन्तिम वेले प्रगट जोत, आत्म सभना भरम चुकाए। ना कोई वरन ना कोई गोत, जोत सरूपी डगमगाए। दुरमति मैल जाए धोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम आपणी दया कमाए। दुरमति मैल जाए उतार। गुरमति साची दस्सी धार। हिरदे वसे करे प्रकाश कोट रवि सस्से, जाए तार। हरि जी साचा हिरदे वसे, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। शब्द तीर एका कसे, सृष्ट सबाई आर पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए तिक्खीआं रक्खे दोवें धार। दोवें धार रक्खे तिक्खी। साचा लेख जाए लिखी। ना कोई जाणे मुनी रिखी। साची दात किसे हथ्थ ना आए ना कोई पावे साची भिखी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क

सरन, साची धार विच संसार आप बंधाए, ऊँच नीच एको जाणे साची सिक्खी। चार वरन इक्क दुआरा। एका शब्द इक्क अधारा। एका कन्त इक्क भतारा। बणदी जाए बणत, जन आए चल दुआरा। महिंमा जगत अगणत, ना पाए कोई सारा। आवे जावे आदि अन्त, जुगो जुग वारो वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग अन्तिम कलि किया खेल अपर अपारा। जोत सरूपी किया खेल। गुरमुख साचे लए मेल। आपे बणे सज्जण सुहेल। बेमुख झूठे माया लूठे, अन्तिम होए मूदे ठूठे, आप धकाए धर्म राए दी जेल्ह। गुरमुख साचे संत जनां आत्म जोती दीप जगाए, शब्द बत्ती इक्को लाए, ना कोई दूजा पाए तेल। ना कोई तेल ना कोई बाती। जगे जोत इक्क इकांती। गुरमुख आत्म मार झाती। निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुखां चुकाउण आया बाकी। सोहँ साचा डंक वजाया, गुरसिख उठाए सुत्या राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, बाहर वसे जाती पाती। गुरसिख आत्म गहर गम्भीर। इक्को दित्ती प्रभ साचे धीर। ना कोई सके मात चीर। ना कोई तक्के अन्त अख़ीर। पंजे चोर शब्द डण्डे बाहर धक्के, कढ्ढे हउमे पीड़। ना हरि मिले मदीने मक्के, लभ्भदे फिरन पीर फ़कीर। ईसा मूसा किसे हथ्थ ना आए बूरे कक्के, नेत्र वगण सभ दे नीर। दाणा पाणी सभ दा चुक्के, होए वक्त अख़ीर। हरि का भाणा ना कोई डक्के, सृष्ट सबाई दोहीं हथ्थीं रिहा चीर। ना होणा किसे सहाई भाई भैण सके, लग्गे सोहँ शब्द साचा तीर। इक्क शब्द नकेल पाए बेमुखां नक्के, ना कोई देवे धीर। लाड़ी मौत मगर लगाई, धर्म राए दे घर विच धक्के, किसे हथ्थ ना आउणा नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया ल्या अवतार, गुरमुख साचे जाए तार, देवे दरस कर तरस करे शांत सरीर। शांत सरीरा आत्म धीरा। मिल्या हरि वड पीरन पीरा। एका शब्द रसन प्याया साचा सीरा। गुरमुख साचा साची जोत मिलाया, बणाया साचा हीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि गुरमुख साचे संत जनां कटण आया भीड़ां। संत जन करन पुकारी। प्रभ अबिनाशी कर विचार, कलिजुग अन्तिम वारी। प्रगट हो घनकपुर वासी, पाईं साची सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ चरन सरन करन निमस्कारी। जन भगत सदा पुकारदे। शब्द सरूपी वाजां मारदे। जोत सरूपी दरस हरि निरँकार दे। अठ्ठे पहर करीं तरस, अमृत मेघ साचा बरस, तप्या सीना ठार दे। आप मिटा कलिजुग वाली हरस, पंचम् जेठ पूरे होए दस बरस, साचा दरस सिरजणहार दातार दे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी वडा शाहो भूपी, ना कोई रंग ना कोई रूपी, एका नाम अधार दे। देवे नाम शब्द अधारा। गुरमुख देवे नाम अपारा। जोत जगाए मिटाए अन्ध अन्धयारा। दुरमति मैल धोत वखाए, करे इक्क उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा

कर साचा हरि खोल्ह् वखाए दस्म दुआरा। दस्म दुआरा गुरसिख खुल्हे। शब्द पंघूड़ा साचा झूले। मिल्या हरि वड दूल्हो दूल्हे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाए गुरमुख तेरे काया चोले। संतां बन्न्हे शब्द डोर। जिध्धर चाहे लए तोर। जगत होए अन्धेर घोर। गुरमुख साचे संत जनां अट्ठे पहर जोत सरूपी, धुन शब्द शब्द धुन पौंदी रहे शोर। सच पुकार लए सुण, आप चुकाए मोर तोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा वास रखाए, आप आपणा दरस दिखाए, नेड़ ना आयण पंजे चोर। पंजां चोरां देवे कढ्ढ। आप खुल्हाए साचा हट्ट। कलिजुग बेमुखां जीवां, काया झूठा मट। साढे तिन्न हथ्थ आउणी सीआं, खेल जिउँ बाजीगर नट। जन भगतां मिलदा हो के नीवां, वसे घट घट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए जोत जगे लट लट। लट लट जगे जोत विच ललाट। जन संतां पूर कराए पिछला घाट। वखाए अग्गे नेड़े वाट। बज़र कपाटी जाए पाट। औखी घाटी साचा रस रसना चाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दुरमति मैल दो हथ्थीं रिहा काट। दुरमति मैल आप धवाए। अमृत साचा मुख चुआए। जगत तृष्ना भुक्ख गंवाए। एका सुख हरि उपजाए। सुफल कराए मात कुक्ख, जो जन सरनाई आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची साचे धाम आप वसाए। कलिजुग तेरी अन्तिम नईआ। चार वरन हरि जी बणाए भैणां भईआ। साचे लेख लिखाए एका हुक्म इक्क दीबाण। जोत सरूपी भेख वटाए, दिस किसे ना आयण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा आप बन्न्हाए, जगत झेड़ा अन्त चुकाए, गुरमुख साचे संत चढ़ाए, बेमुखां डोबे झूठी नईआ। गुरमुख साचे जाण चढ़। बेमुख झूठे जाण हड़्ह। गुरमुख साचे अन्दर जाण वड़। कलिजुग जीव झूठे बन्दर, धर्म राए लए फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप अट्ठे पहर गुण अवगुण नाल रिहा लड़। साची नईआ जगत नबेड़ा। गुरसिख आत्म वसे खेड़ा। अन्तिम बन्न्हे हरि जी बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखाए अन्तिम ढाहे केहड़ा। साची नईआ लाए तारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। संसार सागर कच्ची गागर, प्रभ अबिनाशी पार उतारी। निर्मल कर्म होए उजागर, जन आए चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चप्पू आप लगाए, धक्की जाए वारो वारी। सोहँ चप्पू दित्ता ला। साचे राहे दित्ता पा। गुरसिख कोई ना करे नाह। अग्गे मिले सच्चा थां। प्रभ अबिनाशी पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, वड शाहो भूप साचे धाम लए वसा। नईआ चले डूंघर नीर। कलिजुग सागर रही चीर। घती जाए इक वहीर। मिलाउँदी जाए संतां संत विछड़े वीर। बणाउँदी जाए साची बणत, मारी जाए शब्द तीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बेड़ा पार लगाए, कलिजुग अन्त अख़ीर। बेड़ी चले डूंघे वहिण।

गुरमुख साचे संत जन, इस दे उत्ते बहिण। जूठा झूठा माल धन, ना जानण कोई भाई भैण। साचा शब्द लैणा सुण, हरि बणे साचा साक सज्जण सैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए गुरसिख तीजे नैण। साची नईआ अन्त लहर। कलिजुग वरते डाहढा कहर। ना कोई दिसे नगर खेड़ा, ना कोई दिसे शहर। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा, गुरसिक्खां हरि बन्ने बेड़ा, कर कर आपणी मेहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा चप्पू आप लगाए, वञ्झ मुहाणा हथ्थ रखाए, साचा राणा दया कमाए, गुरमुखां चढ़ाए ना लाए देर। नईआ तेरा उच्च मुनारा। मिटदा जाए जगत पसारा। चार वरन आई हारा। ना कोई दिस्सया पार किनारा। चार कुन्ट भौंदी रहे, वाहो दाहो झूठे साक बणाउँदी रहे, अन्तिम आई हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खोल्हे सच्चा इक्क दुआरा। साची नईआ शब्द वञ्झ मुहाणा। ना कोई चढ़े राजा राणा। ग़रीब निमाणा हरि जी फड़े, आप बहाए दस्से सच टिकाणा। दूजा अन्दर ना कोई वड़े, प्रभ अबिनाशी दर दुरकाणा। दूर दुराडे देखण खड़े, संसार सागर ना किसे पार कराणा। कलिजुग फल अन्तिम झड़े, दूजी वेर ना किसे डाल लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिक्खां पूरी घाल आपे लेखे लाणा। कलिजुग नईआ तिक्खी धार, सृष्ट सबाई करे दो फाड़। साची करनी करे पहली हाढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी झूठी नईआ विच मात दो हथ्थीं देवे पाड़। हरि सज्जण साचा कन्त। जगत सुहेला, सोहँ शब्द सुणाए साचा छंत। आप कराए सच्चा नबेड़ा, कलिजुग वेला अन्त। हरि दिसे इक्क इकल्लड़ा, गुरमुख विरला पाए संत। अचरज खेल विच मात प्रभ खेलड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम निधान ब्रह्म ज्ञान अन्तिम अन्त। धन्न कमाई संत जन, हरि रसन ध्याउँदे। धन्न कमाई भगत जन, प्रभ दर्शन पाउँदे। धन्न कमाई संत जन, चरन प्रीत सेव कमाउँदे। धन्न कमाई भगत जन, देवी देव एका पुरख मनाउँदे। धन्न कमाई संत जन, मिले वड्याई भगत जन, दोवें जोती इक्को गोती, प्रभ अबिनाशी साचा पाउँदे। धन्न कमाई संत जन, आत्म चानण। धन्न कमाई भगत जन, मिल्या नाम सच्चा दानण। धन्न कमाई संत जन, मिले चरन धूढ़ इशनानण। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोत जगी होया ब्रह्म ज्ञानण। धन्न कमाई संत जन, मिले वड्याई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां हथ्थीं बन्ने गानण। धन्न वड्याई संत जन, मिल्या हरि सच्चा भरपूर। धन्न कमाई भगत जन, होए आत्म रुशनाई जिउँ कोहतूर। धन्न कमाई संत जन, मिले वड्याई भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां धिरां दी आसा मनसा पूर। जाणा सच द्वार सच्चा धाम है। ना कोई किला ना कोई द्वार, दिसे साचा राम है। ना अन्धेरा ना शाम, इक्को जोत अकार है। ना सुक्का ना हरया चाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को

तूर इक्को नाम है। गुर संगत तेरी पूरी घाल। प्रभ अबिनाशी आपे लए सुरत संभाल। सर्ब घट वासी, अट्ठे पहर करे प्रितपाल। सोहँ जपणा स्वास स्वासी, चरन प्रीती निभे नाल। अन्तिम कलि किसे ना लभ्भणा पंडत विच काशी, माझे देस बैठा जोती बाल। लक्ख चुरासी देवे फाँसी, गुरसिख दस्से राह सुखाल। अन्तिम ढाहे मदिरा मासी, कलिजुग खाए काल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार चले अवल्लड़ी चाल। चले चाल सृष्ट सबाई, आपे बण जाए साचा हाली। वाहुन्दा जाए ढाहुन्दा जाए, गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों उठाउँदा जाए, सतिजुग बूटे लाउंदा जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लक्ख चुरासी अन्दर वसे, कोई हिरदा दिसे ना खाली। काया अन्दर, साचा मन्दिर डूंघी कन्दर। प्रभ अन्दर वड़ मार दड़ मारी बैठा जन्दर। बेमुख जीव चारों वरन, चारों कुन्ट भौंदे घर घर बन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि नर, वेले अन्त किसे हथ्थ ना आउणा गोरख मच्छन्दर। गोरख मच्छन्दर गोपी नाथ। त्रैलोकी नाथ सगला साथ। साचा लेख लिखाए माथ। सोहँ चढ़ाए साचे राथ। अन्तिम रक्खे दे कर हाथ। जगत चलाए साची गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सगल वसूरे जायण लाथ। लगाए भोग हरि भगवान। गुरमुखां देवे साचा माण। शब्द सुणाए साचा कान। चरन धूढ़ कराए इक्क इशनान। आत्म मूढ़ रंग चढ़ाए गूढ़, बणाए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भोग भगवान भगत अधार। जी जहानी जगत सुधार। माण ताण विच जहान शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे अपर अपार। नाम निधान जगत दात। गुरमुखां देवे धुरदरगाही साची सुगात। गुरमुख विरला लेवे, दर घर साचे ना कोई जाणे जात पात। अट्ठे पहर रसना सेवे, आप मिटाए अन्धेरी रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सच्चा आसण लाए, जोत सरूपी डगमगाए, बैठा रहे इक्क इकांत। इक्क इकांत ठंडा ठार। बैठा रहे हरि द्वार। गुरमुख विरला भाणा सिर ते सहे, जिस देवे शब्द अधार। गुर संगत जो रल मिल रहे, प्रभ अबिनाशी बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब कर्म मानस जन्म दोवें रिहा संवार। नाम निधान वड बलकारा। गुरमुखां बन्ने साची धारा। बेमुखां डन्ने विच संसारा। कलिजुग अन्तिम भन्ने, चौथे जुग पहली वारा। किसे हथ्थ ना आउणा थाली छन्ने, दर दर फिरन भिखारा। कलिजुग जीव आत्म अन्ने, आत्म भरया इक्क हँकारा। आपे करे खंन खंने, मारे शब्द खण्डा दो धारा। आपे घड़े आपे भन्ने, जोत सरूपी हरि निरँकारा। बेमुखां वेले अन्तिम डन्ने, लाहे तन अफारा। गुरमुखां बेड़ा आपे बन्ने, चुक्के भार सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क सरन, सतिजुग साचे खोले इक्को इक्क दुआरा। नाम निधान जगत सुखदाई। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट

वासी, गुरमुखां आत्म दए वधाई। गलों कटे जम की फाँसी, हथ्थीं लाहे कलिजुग छाही। साचा नाम जपाए स्वास स्वासी, दरस दिखाए थांउँ थाँईं। पंडत लभ्भदे फिरन कांशी, माझे देस होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, तिन्नां लोकां एका शब्द दए जणाई। नाम निधान जगत संदेश। प्रभ अबिनाशी साचा देवे, कलिजुग अन्तिम करे भेस। जोत सरूपी वड देवी देवे, खुल्हे रक्खे केस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म दर खड़ा रहे अट्ठे पहर बण दरवेश। दर दरवेश दर पुकारे। आसण बैठा लाए भारे। शब्द सरूपी वाजां मारे। जोत सरूपी हरि चमत्कारे। ना कोई रंग ना कोई रूपी, कलिजुग जीव ना कोई पावे सारे। वडे भुले शाहो भूपी, आत्म होए अन्ध अंध्यारे। इक्को जोत सति सरूपी, निहकलंक नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चार कुन्ट आप कराए जै जै जैकारे। सोहँ चले जगत जैकारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। बेमुखां सिर धरया आरा। आपे चीर चिराए, करे दो फाड़ा। गुरमुखां धीर धराए, प्रभ अबिनाशी पहली हाढ़ा। शाह सुल्तान पीर फ़कीर हकीर बणाए, धरत मात बणाए इक्क अखाड़ा। सृष्ट सबाई ना कोई धीर धराए, नारां छड्डण साचा लाड़ा। बालक मात ना सीर प्याए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एको शब्द सच्चा सोहँ, कलिजुग लाया सिर कुहाड़ा। सोहँ शब्द सच कुहाड़ी। कलिजुग जीआं सिर रिहा पाड़ी। हो हो नीवां पकड़े दाढ़ी। किसे ना दिसे पिछा अगाड़ी। पहली कूट आई हिस्से, उम्मत नबी रसूल दी कटी जाए दिन दिहाड़ी। जूठी झूठी जीव चक्की पीसे, लुकया रहण ना देवे कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। आपणा भेव ना किसे दस्से, गुरमुखां वसे नाड़ी नाड़ी। माया फाही सारे फसे, धर्म राए दर जाए वाड़ी। लाड़ी मौत दर घर वेख वेख हस्से, कलिजुग तेरी पक्की वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दित्ता वर, मैं गई मात भर, जावां घर घर, चार कुन्ट दिसावां इक्को इक्क उजाड़ी। चार कुन्ट होए उजाड़। बचया रहे ना कोई जंगल जूह विच पहाड़। लहणा देणा आपे लए, सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेटे मेट मिटाए, लक्ख चुरासी जो घड़या घाड़। लक्ख चुरासी घाड़न घड़या। वेले अन्त ना कोई अड़या। प्रभ अबिनाशी एका खण्डा सोहँ हथ्थ विच फड़या। साचा मारे सिर विच डण्डा, कोई ना रहे अन्दर वड़या। साचा खेल करे विच वरभण्डा, शब्द सरूपी घोड़ी चढ़या। आपे पाउँदा जाए वंडां विच नवखण्डा, अड्ड कराए सिर धड़या। चारों कुन्ट चले चण्ड प्रचण्डा, गुरसिक्खां पाए ठंडा, दर दुआरे आए खड़या। घर घर रोवण नारां रंडा, कलिजुग जीव झूठा धड़या। आत्म तोड़े सर्ब घमंडा, जोत सरूपी साचा लड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे पार उतारे, चरन आए जो निमस्कारे, आपे फड़े

गुरसिक्खां लड़या। गुरसिक्खां लैणा लड़ फड़। हरि की पौड़ी जाणा चढ़। तोड़ देणा किला हँकारी गढ़। इक्क महल्ल सच अटारी, गुरमुख साचे अन्दर जाणा वड़। निहचल धाम साचे राम जुगो जुग अटल्ल, आप लै जाए बाहों फड़। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, अवतार नर किरपा करे साचा हरि देवे वर, गुरमुख साचा राह विच ना जाए अड़। दर आए करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मानस जन्म दे संवार। दर्शन पाया पहली वार। जोत सरूपी हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, किरपा कर काया करे ठंडी ठार। दुक्खां दर्दां करे नबेड़ा। सुख वखा काया नगर खेड़ा। कलिजुग अन्तिम वेला, प्रभ अबिनाशी बन्ने बेड़ा। आपे बणे सज्जण सुहेला, लक्ख चुरासी मिटाया गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोत सरूपी साचे हरि दित्ता वर, वेले अन्त करे नबेड़ा। आत्म दु:ख कटे फाही। काया लाहे झूठी छाही। मिल्या हरि साचा माही। अग्गों मिल्या कर के लम्मीआं बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सर्ब वेखे थाउँ थाँईं। मंगण आया इक्क दुआरा। प्रभ अबिनाशी सच्चो सच सच्ची सरकारा। घनकपुर वासी प्रगट जोत, साचा देवे नाम अधारा। आप कराए बन्द ख़लासी, आत्म लेखा पावे सारा। रसना गावे स्वास स्वासी, खुल्ले दर दुआरा। मानस जन्म कराए रहिरासी, अमृत झिरना आप झिराए, काया करे ठंडी ठारा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं

२१८
०४

भगवान, साचा हरि किरपा कर लाहे तन अफारा। आत्म लग्गा दु:ख भारा। कलिजुग देवे ना कोई सहारा। दिवस रैण अट्ठे पहर आत्म रोवे करे हाहाकारा। हन्झू नाल मुखड़ा धोवे, ना सुणे कोई पुकारा। साचा बीज हरि जी बोवे, गुरमुख आए चल दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निमाणयां निताणयां बेमुहाणयां आपे होए सहारा। आपे होए सहार जगत निमाणयां। देवे सच्चा नाम ब्रह्म ज्ञानयां। देखे सच्चा नाम वाली दो जहानयां। सुक्का हरया करे चाम, देवे दात शब्द वड भगवानयां। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेले हथ्थ ना आए किसे राजयां राणयां। आत्म आया दर भिखारी। प्रभ अबिनाशी पाए सारी। दुक्खां रोगां करे कारी। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, कर किरपा पार जाए उतारी। पार उतारा देवे कर। विच संसार मिल्या वर। शब्द अधारा साचा हरि। जगत पसारा चुकाए जम का डर। इक्क वखाए सच्चा घर। जिथ्थे वसे साचा हरि। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, अमृत आत्म आप पिलाए, दूई द्वैती मिटाए दु:ख लग्गा भारा। पूर्ब कर्म हरि विचारे। जोत सरूपी वाजां मारे। देवे साची शब्द धुन, आए चल दुआरे। लक्ख चुरासी विच्चों जन, आत्म तोड़े सर्ब हँकारे। कवण जाणे हरि तेरे गुण, कलिजुग जीव होए गंवारे। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए, आप मिटाए आत्म अन्ध अंध्यारे। आत्म मिटे अन्धेर जोत प्रकाशया। गुरसिख ना जाणे सन्झ सवेर,

२१८
०४

मिल्या हरि पुरख अबिनाशया। प्रगट होए दरस दिखाए ना लाए देर, रक्खे वास सर्ब घट वास्सया। दर घर हरि चरन बहाए घेर, गुरमुख साचे सद बलि बलि जास्सया। आपे तारे कर कर मेहर , करे बन्द खलास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए स्वास स्वास्सया। रसना गाए गुर गोबिन्दा। आप मिटाए आत्म चिन्दा। गुरसिख बणाए साची बिन्दा। देवे वड्याई सरन लगाए सुरपति राजे इन्दा। होए सहाई आत्म तोड़े जिंदा। बेमुखां दए सजाई, कलिजुग अन्तिम जो करन निन्दा। गुरमुख तेरी आत्म वज्जदी रहे वधाई, मिल्या हरि गुणी गहिंदा। दर घर साचे आए चांईं चांईं, आदि अन्त जगत बख्शिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम आप वसंदा। बहत्तर नाड़ी तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़े। लग्गा काया दुःख कोड़े। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर इक्क चढ़ाए शब्द घोड़े। हड्डी नाड़ी लग्गे ताड़ी। आस पास हिरदे वास, ना दिसे किसे पिछे अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खां रोगां दर बहाए दया कमाए, शब्द डण्डे नाल जाए झाड़ी।

२१६
०४

✻ ५ विसाख २०११ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह पिण्ड वैरोवाल ज़िला अमृतसर ✻

जगत ग़रीब निमाणयां, देवे चरन सहारा। आप चलाए आपणे भाणयां, देवे नाम अधारा। देवे माण विच वडे राजे राणयां, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। आप बणाए सुघड़ स्याणयां, आत्म भरे शब्द भण्डारा। गुरमुख विरले कलि पछाणयां, निहकलंक ल्या अवतारा। जिस जन आत्म मारे बाणयां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए अपर अपारा। अगम्म अपार हरि करतार। आपे वेखे करे विचार। गुरमुख साचा नेत्र पेखे, प्रभ अबिनाशी दर दरबार। बेमुख रहे भरम भुलेखे, कलिजुग अन्तिम आई हार। आप मिटाए बिधना लिखी रेखे, साचा बणे लेख लिखार। जोत सरूपी धार भेखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण अवगुण सर्ब रिहा विचार। आप विचारे दर दरबारे। प्रगट जोत जोत सरूप, जन भगतां देवे जोत अधारे। ना कोई रंग ना कोई रूप, साची देवे शब्द उडारे। प्रगट होया माझे देस विच अन्ध कूप, कलिजुग रैण अन्ध अंध्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, पकड़ बाहों अन्तिम वेले पार उतारे। पार उतारनहार हरि समरथ है। देवे शब्द अधार विच संसार, आत्म दुखड़े जायण लथ्थ है। बख्शे चरन प्यार, अन्तिम वेले लाए पार, भाणा रक्खे आपणे हथ्थ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका दात शब्द वड करामात, सच्ची सुच्ची वथ है। देवे वथ सच सुल्ताना। आत्म वसूरे जायण लथ्थ, किरपा करे हरि भगवाना। बेमुखां

२१६
०४

जाए मथ्था, कलिजुग अन्तिम ना पछाना। जगत चलाए साची गत्थ, सोहँ शब्द वड महाना। आप चड़्हाए शब्द रत्थ, गुरसिख उडाए विच बबाणा। अन्त रक्खे दे कर हथ्थ, जोत सरूपी हरि भगवाना। बेमुखां हरि जाए मथ्था, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुणी निधाना। गुणवन्त गुणी निधानी। साची देवे नाम निशानी। अमृत प्याए आत्म सच्चा पाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा राग सुणाए, हथ्थ ना आए विच्चों किसे खाणी बाणी। खाणी बाणी करे पुकार। जोत सरूपी हरि निरँकार। गुरमुख साचे कर विचार। प्रभ अबिनाशी सच भतार। लोकमात आया जामा धार। साचा वक्त सुहाया, जन भगत द्वार। गुर संगत साची संग रलाया, आत्म दुखड़ा दए निवार। पुरख अबिनाशी साचा पाया, रसना किया मंगलाचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी देवे दरस अगम्म अपार। गऊ ग़रीब दर निमाणा। आपे करे हरि पछाणा। ना कोई जाणे राजा राणा। ना कोई परखे सुघड़ स्याणा। अमृत मेघ साचा बरखे, गुरमुख जाणे हरि बाल अञ्याणा। अन्तिम वेले हरि जी रक्खे, वसे सच टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां लाए आप इक्क उडाना, आप चढ़ाए शब्द बबाना। शब्द बबाणे जाए चढ़। सृष्ट सबाई आप वहाए वहन्दे हड़। ना कोई दीसे किला गढ़। आप उखेड़े सभ दी जड़। दुष्ट दुराचारी वड हँकारी मायाधारी, कोई ना सके अग्गे अड़। चारों कुन्ट होए

२२० ०४ ख्वारी, पंचम् जेठ पहली वारी, कच्चे फल जाणे झड़। जोत सरूपी हरि निरँकारी, गुरमुख आत्म दर दुआरे खड़। आपे ०४ २२०

कटे दुक्खां भुक्खां कारी, प्रभ अबिनाशी बाहों फड़। वेले अन्त ना आए हारी, इक्को अक्खर सोहँ जो जन लए पढ़। गुर चरन सरन जाओ बलिहारी, साचे अन्दर जाए वड़। प्रभ अबिनाशी जाए तारी, आप बंनाए आपणे लड़। चरन लगाए वारो वारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे भन्ने आपे लए घड़। भाण्डा भउ हरि हरि भन्नणा। गुरमुख आत्म साचे मन्नणा। हरि हिरदे वाचे बेड़ा बन्न्हणा। प्रभ अबिनाशी साचो साचे, दूजा दर कोई ना मंगणा। लक्ख चुरासी वंग काची, गुरसिख काया साचा कंगणा। आपे ढाले साचे ढांचे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म ना होए भंगणा। मानस जन्म आप संवारे। आए चल हरि दुआरे। किरपा करे साचा हरि देवे वर, गुरमुख साचा जाए तर, मिले शब्द भण्डारे। कलिजुग अन्तिम जाए तर, आप नुहाए साचे सर, इक्क खुल्हाए आत्म दर, देवे दरस अगम्म अपारे। निन्दया करन घर घर, अग्गे आवण आए डर। शब्द सरूपी हरि जी सच्चा रिहा लड़। निहकलंक नरायण नर अवतार, कोई ना सके अग्गे अड़। अड्डो अड्ड करे सीस धड़। आप उखाड़े आपणी हथ्थीं जड़। जो जन आत्म भरे हँकारे, लुकया रहे ना अन्दर वड़, रहण ना देवे जो रसना लाउँदे नड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक हरि जामा पाए, मन हँकारा तन अफारा

आए ना चल हरि दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होया नर निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे वड्याई सदा सहाई, आदि अन्त जुगा जुगन्त रिहा बणत बणाई, देवे नाम अपर अपारा। नाम अपार हरि दातार। पूर्ब कर्म रिहा विचार। जन्म मरन रिहा संवार। झूठा भरम रिहा निवार। सच लिखाए कर्म, कलिजुग अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण बैठा सच सच्चे दरबार। लेखा लिखे लिखणहार। पूर्ब कर्म रिहा विचार। बन्नृदा जाए साची धार। विच संसार पहली वार। कलिजुग भुले नर नार। होए गंवार अन्ध अंध्यार। गुरमुखां करे हरि उज्जयार। पावे सार सोहँ देवे शब्द धार। बेमुखां सिर रक्खे आरा। आपे चीर चिराए करे दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए, साचा शाहो बेपरवाहो पहली हाढ़ा। कलिजुग तत्ती वा जगत अन्धेर है। कोई ना देवे ठंडी छाँ, माया राणी मारे घेर घेर है। ना कोई समझावे पुत्तां मां, प्रगट होया सिँघ शेर शेर दलेर है। दरगहि साची देवे थां, सदा वसे नेरन नेर है। घर घर उडदे झूठे कां, ना कोई चुकाए मेर तेर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती इक्क बंधाए, बाल अवस्था दया कमाए, ना लाए कलिजुग देर है। बाल अवस्था बाली बुध। प्रभ अबिनाशी कीनी सुध्ध। शब्द घोड़े आप चढ़ाए, गुरमुख साचा मारे छाल चढ़े कुद्द। साचा देवे नाम निधान, पंजां चोरां करे युद्ध। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल करे बुध। बुध निमाणी चतुर सुजानी। दर घर साचे पीवे पाणी। सोहँ गाए रसना बाणी। आप चुकाए जम की कानी। सतिजुग बणाए साची राणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए शब्द बबाणी। शब्द बबाणे दे उडारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। जूठा झूठा दाग आत्म धोए, निर्मल करे काया जगे जोत अपर अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान हरि भगवान, अट्ठे पहर नाम खुमारी। नाम खुमारी दिवस रैण। आपे बणे साक सज्जण साचा सैण। चरन धूढ़ करे साचा मजन, दोए तारे भाई भैण। आत्म ताल साचे वज्जण, प्रभ अबिनाशी रसना कहण। पी पी अमृत घर साचे रज्जण, गुर संगत साची मिल के बहिण। कुल आपणी दे पड़दे कज्जण, दरस पेखण साचे नैण। बेमुख दर तों डरदे भज्जण, प्रभ अबिनाशी खाण आया बण के डैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तन श्रृंगार पहनाए, आपणी दया आप कमाए, गुरमुखां आत्म जोती दीवे दीपक साचे जगण। जगे दीप काया मन्दिर। प्रभ अबिनाशी दिसे अन्दर। आपे पाए साचे हिस्से, दरस दिखाए डूंघी कन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आपे तोड़े तोड़ तुड़ाए जूठा झूठा आत्म वजा जन्दर। हरि दरस प्यासा, भगत जन दिवस रैणी। मिल्या हरि सर्ब गुणतासा, दर्शन पेखे नैणी। गुरसिख साचा जिउँ कंचन पासा, गुर संगत

साची बहिणी। अन्तिम वेखे जगत तमाशा, गुर पूरे दी मन्नों कहणी। जपे जाप स्वास स्वासा, औझड़ राह सृष्ट पैणी। मानस जन्म कराए रासा, आप चुकाए लहिणी देणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि साक सज्जण साचा सैणी। जन भगतां आत्म बिल्लाए। दर्शन देवे श्री हरि राए। कलिजुग लग्गा अन्तिम निहों तोड़ निभाए। जोत सरूपी वड वडा महां दिउ निहकलंक कलि नाम रखाए। जोत सरूपी अलक्ख अभेओ, ना फेर किसे जगाए। आपे बणे मां प्यो, गुरसिख बाले गले लगाए। अन्तिम रक्खे ठंडी छाँओ, दरगहि साची लए बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती मेल मिलाए। भगत भिखार बणे भिखार बणे दातारा। कलिजुग अन्तिम हरि, गुर धाम बणाए बणत विच संसारा। वड्याए साध संगत नैण मुँधारा। मिल्या मेल साचे कन्त, जन भगत साची नारा। मात होई सुहञ्जणी रुत्त बसंत, आत्म खिड़ी रहे गुलज़ारा। इक्क सुणाए सोहँ साचा छंत, चार वरन चार कुन्ट जैकारा। एका एक करे हरि कन्त, दस अठ्ठ भेव निवारा। गुरमुखां बणदी जाए बणत, आयण चल चरन दुआरा। कलिजुग भुले जीव जन्त, होए मूर्ख मुग्ध गंवारा। पकड़ पछाड़े हरि देव दंत, आत्म भरया कलि हँकारा। झूठे ढोल मृदंग वजन्त, कलिजुग झूठा चढ़या खारा। गुरसिख साचे हरि दर बहंत, देवे शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआं दान जो जन आए दुआरा।
२२२ ०४ आए चल द्वार दरस पेख्या। मानस जन्म ल्या संवार, लिखाया साचा लेख्या। तन मिल्या शब्द श्रृंगार, मिटया भरम भुलेख्या। २२२ ०४
सतिजुग दस्से साची धार, धुरदरगाही साची मेख्या। लक्ख चुरासी गई हार, औलीआ पीर शेख्या। सोहँ खण्डे तिखी धार, नेत्र खोलू हरि जी वेख्या। सृष्ट सबाई हिस्से चार, वारो वार चुकाए लेख्या। बेमुखां सिर पाए छार, रहे भरम भुलेख्याा। गुरमुख हरि जाए तार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आए नैण नेत्र पेख्या। जन भगत अधारा साचा मीत। देवे दरस अपारा, परखे नीत। वसाया काया महल्ल मुनारा, दस्से साची रीत। साचा देवे शब्द भण्डारा, सोहँ सुहागी गीत। अमृत झिरना झिरे अपारा, मानस जन्म जाए जीत। ना कोई जाणे शाह दारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दस्से चरन प्रीत। शाह दारा ना कोई सुल्तान है। वड हँकारा विच संसारा, ना कोई बलवान है। अस्त्र शस्त्र ना कोई भारा, साचा बस्त्र हरि इक्क तन पहनाण है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मेहरबान है। जन भगत जगत वड्याई। प्रभ अबिनाशी दे मति रिहा समझाई। सर्ब घट वासी साची मति रिहा समझाई। घनकपुर वासी, साचे वत्त सोहँ बीज रिहा बिजाई। सोहँ जपाए स्वास स्वासी, अमृत फल रिहा लगाई। जो जन होए मदिरा मासी, साचे दर रिहा दुरकाई। जन भगतां हो रिहा दासी, आत्म बैठा जोत जगाई। किसे पंडत ना मिले विच काशी, माझे देस रिहा भाग

लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म तृष्ना अग्न दे बुझाई। जगत तृष्ना अग्न भाह। प्रभ अबिनाशी मगरों देवे लाह। पूरे गुर बलि बलि जासी, देवे सच्चा थां। हरि सच्चा शाहो भूपी, जपाए साचा नां। अंग संग सद वसे आस पास, अन्तिम वेले पकड़े बांह। जोत सरूपी पुरख अबिनाशी, ना कोई पिता ना कोई मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सद रक्खे ठंडी छाँ। ठंडा ठारा हरि गिरधारा। शब्द दस्से साची धारा। पूर्ब कर्म रिहा विचारा। मानस जन्म दर संवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लाए पार, सोहँ देवे जगत सहारा। साचा शब्द होए सहाई। अन्तिम वेले दए हिलाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। साचा कन्त लए छुडाई। धर्म राए ना दए सज़ाई। सच धाम साचा थान, दरगहि साची माण दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म जोती दए जगाई। आत्म जोती जगे। शब्द बत्ती इक्को लग्गे। सोहँ बन्ने कच्चे तगे। चढ़ के आए अस्व बग्गे। दाग लग्गण ना देवे चिटी पग्गे। गुरसिख हँस बणाए कग्गे। पंचम् जेठ सरन जो लग्गे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत जगाए सृष्ट सबाई दगे। भगत भण्डारा नाम। प्रभ अबिनाशी देवे सच्चा राम। हरया होया सुक्का चाम। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम। अमृत प्याए साचा जाम। इक्क वखाए सच्चा धाम। जिथ्थे वसे रमईआ राम।

२२३ ०४ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, पूर कराए आपणा काम। करे काम आपणा पूरा। प्रभ अबिनाशी ०४ २२३

वडा सूरा। लिख्या बचन ना कोए हदूरा। चारों कुन्ट उडे धूढ़ा। गुरमुखां रंग चढ़ाए गूढ़ा। लाड़ी मौत अन्तिम हथ्थीं पाए जूड़ा। बेमुख जीव मौत लाड़ी झूलण इक्क पंघूड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी इक्को उच्चा सुच्चा, सृष्ट सबाई दिसे कूड़ कूड़ा। कूड़ कुड़यारी चार यारी। वेले अन्तिम कलि हारी। दर घर होए ख्वारी। डर डर भज्जण नर नारी। गुरसिख पी अमृत रज्जण, गुर चरन द्वारी। गुर संगत बहि के सज्जण, सोहँ रसना जै जैकारी। आपणे पड़दे आपे कज्जण, दर्शन पाया हरि मुरारी। कलिजुग जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, शब्द डण्डा हरि रिहा हुलारी। झूठे ताल कलिजुग वज्जण, आत्म होए सर्ब हँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साची दया कमाए, खिच्च ल्याए चरन द्वारी। चरन दुआरा सच घर बाहरा महल्ल मुनारा। प्रभ अबिनाशी आप उसारा। सर्ब घट वासी आप अपारा। गुरसिख बणया दास दासी, देवे शब्द अधारा। कलिजुग जीव करन हासी, निहकलंक नरायण नर अवतारा। वेले अन्त पाए फाँसी, ना होए किसे छुटकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां खिच्च ल्याए चरन दुआरा। चरन प्रीती देवे बन्न। पंचां चोरां देवे डन्न। भरम भुलेखा कढ्ढे जन। सोहँ शब्द माल धन। साचा राग सुणाए कन्न।

२२४
०४

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम बहाए, किला कोट ना कोई रखाए, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न। दर घर साचा हरि अस्थूल। जोत सरूपी साचो साचा, ना जाणा मात भूल। कलिजुग भाण्डा झूठा काचा, ना कोई चुकावे मूल। जिस जन हिरदे वाचा, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सच सुल्तान सच तख्त बिराजे, जन भगत ना जाणा भूल। देवे नाम दान जगत सुगात, किरपा करे हरि भगवान। मिटाए अन्धेरी रात, ना कोई पुच्छे जात पात, देवे दात गुण निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा साची देवे कर, जो जन सोहँ रसना गाण। मिले नाम हरि दरबारे। गुरमुख ना मन विसारे। आपे ढाले साचे ढांचे, शब्द भट्ठी साची चाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूठ झूठ तन काया मन्दिर कढाए बाहरे। काया मन्दिर साची डोली। अन्दर वसे भाओ भोली। बेमुख जानण झूठी चोली। हरि जी बैठा बण के गोली। दर दर भौंदे फिरदे बन्दर, आत्म ताकी किसे ना खोल्ही। प्रभ अबिनाशी तोड़े जन्दर , सोहँ शब्द मारे हथ्थौड़ा हौली हौली। प्रगटे जोत अन्दरे अन्दर, चरन प्रीती जिस घोल घोली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम निधान पूरे तोल रिहा तोली। सदा सदा कृपाल, राम दयाल है। ना खाए कदे काल, तोड़े जगत जंजाल होए सदा रखवाल है। आत्म जोती देवे बाल, फल लगाए साचे डाल, दस्से इक्क अवल्लड़ी चाल, पूरी घालणा लैणी घाल, सोहँ शब्द वजाणा ताल, चरन प्रीती निभे नाल है। आत्म ताल लाई छाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची सच्चा धाम देवे अन्त वखाल है। सच्चा धाम धर्म दी जड़्ह। सोहँ शब्द लैणा पढ़। प्रभ दर दुआरे रिहा खड़्ह। आत्म तोड़े किला हँकारी गढ़्ह। चरन प्रीती जोड़े, जोत सरूपी अन्दर वड़। आप चढ़ाए शब्द घोड़े, गुरसिक्खां वाग लए फड़। वेले अन्तिम हरि जी बौहड़े। गुरमुख साचा साचा लोड़े। साचे पौड़े जाए चढ़, जो जन चरन आए दौड़े। प्रभ आपणी हथ्थीं बन्न्हे लड़, मिट्ठे होए दर कौड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाई पंज तत्ते धाड़े। धन्न धन्न जणेंदी मां, जगत वड्याईआ। धन्न धन्न धन्न सुहाए थां, जिस थान गुर चरन छुहाया। धन्न धन्न धन्न गुर पूरा जिस पकड़ी बांह, साची रचना जिस रचाया। विच मात रखाया साचा नां, ठाकर सिँघ उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, द्वापर विछोड़ा कलिजुग जोड़ा दुरबाशा रिखी भेख वटाया। दुरबाशे चली अवल्लड़ी चाल। दुर्योधन हँकारी दित्ता सिक्खाल। पंजे पांडव देणे गाल। साचा रिखी होया भिखी, दर आया बण कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां रिहा सुरत संभाल। दुरबाशा आए दर दरबारे। धर्म पूत, सुण सच पुकारे। साध संत बिल्लायण, दुखी भुक्खी करन हाहाकारे। भोजन दर तेरे ते पायण, मंगणा इक्क भण्डारे। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां

आपे पावे सार। दुरबाशा पुकारे सुण सच्ची सरकार, आए चल दुआरे बण भिखार। आत्म तृष्ना भुक्ख निवारे, दे सच्चा इक्क भण्डार। धर्म पुत्त साचे सुत, रिखी रसना चल्ले तिक्खी तलवार। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणया पावे सारे। साचा बचन रिखी अलाया। सुण युधिष्टर मन विशिष्ट, इक्को इष्ट कृष्न ध्याया। खुल्ही दृष्ट, प्रभ आपणे दर दुआरे अग्गे नज़री आया। दुरबाशे आत्म होई भृष्ट, कान्हो कृष्ने खेल रचाया। बैठा वड गुर वशिष्ट, प्रभ अबिनाशी भेव ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां पावे सार, सिर हथ्थ जुगो जुग रक्खदा आया। आया कृष्न भगत दुआरे। दोए जोड़ धर्म सुत, करे निमस्कारे। धन्न सो वेला धन्न सुहञ्जणी रुत्त, घर आया कृष्न मुरारे। पंजे पांडो खाली दिसण बुत, आत्म मुनारे करन विचारे, प्रभ अबिनाशी सदा चेत, चेतन्न सता सदा विचारे। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां देवे जगत सहारे। बोले हरि सन्मुख। भगत दर पुच्छण आया दुःख। इक्को देवे सच्चा वर, उज्जल करे मुख। सच भण्डारा देवे भर, रिखीआं मुनीआं उतरे भुक्ख। इक्क खुल्हाए साचा सर, आत्म अग्न बुझाए जो रही धुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जन भगतां कराए सुफल मात कुक्ख। धर्म सुत अग्गे हरि बिल्लाया। दुरबाशा रिखी दर मंगण आया। साचा मंगे दान भिख, बीस सहँसर संत बिल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे किरपा कर, पड़दा उहला ना कोई रखाया। साचा भोजन दर पकाणा। घर नहीं कोई अन्न दाणा। जेहड़ा बहि के संतां खाणां। दुरबाशा रिखी किस रजाणा। धुर दरगाहों किस्मत केहड़ी लिखी, हरि श्री भगवाना। औखी दिसे धार तिखी, टुट्टदा जाए सर्ब दा माणा। दर दुआरे आवण वाला रिखी, नाल लै संत रिख चतुर सुजाना। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर देवे वर, होए दर निमाण निमाणा। दित्ता वर हरि मुरारी। किरपा आपणी आपे धारी। अचरज खेल करे हरि बनवारी। दुरबाशे रिखी चढ़दी जाए खुमारी तन अफारी। लहन्दी जाए आत्म लग्गी हँकार बिमारी। काया झूठी वहन्दी जाए, उडदा जाए माण हँकारी। पंजे पांडो संग द्रोपद वेंहदी जाए, पायण दरस नैण मुँधारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपारी। भीमा गया हरि द्वार। दोए जोड़ करे निमस्कार। सुणो रिखी हरि गिरधार। चरन छुहाओ दर साचे आओ, भोजन भरे भण्डार, सहिंसा लाहो आत्म तृष्ना भुक्ख गंवाओ, आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, सभ दे कर्म रिहा विचार। अग्गों रिखी उठ पुकारे। चढ़दा जाए तन अफारे। सुकदा जाए मुख, ना देवे कोई सहारे। मात गर्भ उलटा रुख, आत्म तुटे हँकारे। जोती जोत सरूप हरि, करे कराऐ जो मन भाए, जन भगतां पावे सारे। दुरबाशा दए दुहाई। कौण लेवे अन्त छुडाई। ना होए कोई सहाई। फड़दा कौण बाहीं। दूर दुराडे वेखण थाउँ थाँईं। जोत सरूपी जोत हरि, जन भगतां दर सुहाया

२२५
०४

आसण लाया चांईं चांईं। तन अफारा वडा चढ़या। जोत सरूपी हरि जी फड़या। ना जाणे अन्दर की कुछ वड़या। काया झूठा मन्दिर लग्गा भन्नण, जिस ने घड़या। जोती जोत सरूप हरि, कोई ना रहे अग्गे अड़या। उठे उठ उठ बलधारे। साध संगत संग रलाए आए चरन दुआरे। जिस घर साचे चरन छुहाए, नज़री आए कृष्न मुरारे। तन अफारे सारे लाहे, चरनी डिग्गे मूंह दे भारे। रो रो दर ते मारे नाअरे। अवगुण बख्श हरि जी सारे। जोत सरूपी हरि निरँकारे। अवगुण बख्श दूजी वारे। जामा धार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, द्वार बंक कलिजुग सुहाया, गुरसिख बहाया चरन दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, आपणा किया सच विहारे। कृष्न कान्हा हरि मुरारी। करे खेल विच संसारी। द्वापर तुटी कलिजुग गंढ़ी अन्तिम वारी। दुरबाशा रिखी रक्खी शब्द धार तिक्खी होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे पाए सारी। सच सरनाई चरन गुर पूरे। आत्म तृखा दए बुझाई, उतरे सगल वसूरे। साची सिख्या दे मति समझाई, सर्बकला भरपूरे। देवे नाम संगत वड्याई, आत्म जोती साचा नूरे। घर साचे मिलदी रहे वड्याई, आसा मनसा हरि जी पूरे। आप कटाए जम की फाही, प्रगट होया प्रभ हाज़र हज़ूरे। कलिजुग मिटे झूठी छाही, किरपा करी वड सूरे। गुरसिक्खां प्रगटाए थाउँ थाँईं, ना जाणे दूर नेड़े। अन्तिम तारे फड़ के बाहीं, वस्सया रहे आत्म नगर खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
२२६
०४
भगवान, लक्ख चुरासी एका गेड़ गेड़े। साचा माण जगत गुर दवाया। जो जन चरनी डिगे आण, आसा मनसा प्रभ पूरया। आपे करे जगत पछाण, देवे माण शब्द साची तूरया। आप चुकाए जम की कान, सोहँ शब्द चलाए बाण, जोती नूरो नूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदि जुगादि आसा मनसा पूरया। हाज़र हज़ूर हरि निरँकारा। जोत सरूपी खेल अपारा। वेखे विगसे करे विचार, लक्ख चुरासी सर्ब पसारा। गुरमुखां होए दासन दासी, जो जन आए चल दुआरा। माण गंवाए मदिरा मासी, बेमुखां अन्तिम करे ख्वारा। प्रगट होए घनकपुर वासी, शब्द डण्डा हथ्थ विच भारा। गुरसिख साचे संत जनां मानस जन्म करे रासी, साचा देवे नाम रंग अपारा, जो जन मंगण आए चल दुआरा। करे सच प्यार वड जोधन जोध, अन्तिम कलि जामा पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आसा मनसा पूरा। पूरी आस हरि दुआरे। चरन धरवास गुरसिख प्यारे। दुष्टां दूतां करे नास, मारे शब्द कटारे। जोत सरूपी सभ दे अन्दर रक्खे वास, बेमुख आत्म अन्ध अंध्यारे। इक्को जोत मात पताल अकाश, लक्ख चुरासी विच पसारे। प्रभ अबिनाशी पुरख अबिनाश, निहकलंक कलि जामा धारे। घनकपुर रक्खे वास, कलिजुग करे सर्ब ख्वारे। गुरमुख विरला रसना गाए स्वास स्वास, जिस देवे नाम अधारे। हरि हिरदे रक्खे वास, जोत सरूपी नर नरायण नर हरि हरि नर निरँकारे। नर नर निरंकारया।

२२६
०४

जोत जोत वड पसारया। जोत अधार खेल अपारया। कलिजुग अन्तिम वारया। सतिजुग साचे देवे सच्ची सिक्दारया। सच सुल्तान सच्चा शाह सोहँ ताज सिर पहना रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारया। अछल अछल्ल कर वल छल सृष्ट सबाई आपे आप भुला रिहा। आप चलाए जगत रीत। बेमुखां परखे मात नीत। गुरसिक्खां बणे हरि जी मीत। मानस जन्म गुरमुख साचे जीत। एका गाओ सोहँ सच्चा गीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे सदा सदा अतीत। गुर पूरा चतुर सुजानयां। गुरसिख आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानयां। साचा देवे चरन ध्यान, कर कर वड मेहरबानयां। अमरा पद गुरमुख साचे पाण, हरि देवे नाम निशानयां। दर घर साचे शब्द सरूपी आपे लए सोध, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जगत भगत पछानयां। भगत पछाणे हरि भगवान। दरस दिखाए हरस मिटाए, आत्म जोत जगाए महान। अमृत आत्म मेघ बरस वखाए, तेज कराए कोटन भान। प्रगट हो दरस दिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए चतुर सुजान। चतुर सुजान हरि भगवान। आप चुकाए जम की कान। सच्चा देवे नाम रस पीण खाण। इक्क प्याए अमृत जाम, मारे शब्द बाण महान। हरा कराए चाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए चरन ध्यान। दर घर मन्दिर तन सुहाया। हरि वसे काया साचे अन्दर, सुख आसण डेरा लाया। आपे तोड़े आत्म जन्दर, शब्द हथौड़ा इक्क रखाया। करे प्रकाश काया अन्धेरी कन्दर, जोत सरूपी डगमगाया। मूंड मुंडाए गोरख ते मच्छन्दर, हरि की सार कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, वसे आत्म अन्दर, निज घर आसण लाया।

२२७ ०४

❋ २५ विसाख २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल दरबार विच विहार होया ❋

सतिजुग साचा तेरा रथ। आप चलाए हरि समरथ। तिन्नां लोआं पाए नत्थ। पिछला भेव हरि खुलाए, सतिजुग साचे मानस देही लम्मी इक्की हथ्थ। साचा हरि हरि गुणवन्ता। खेल जाणे वक्त पछाणे जन भगवन्ता। भेव खुलाणे साचे संत जगाणे, चोग चुगाए आदिन अन्ता। त्रेता भेव आप जणाए, मानस देही चौदां हथ्थ रखाए, प्रभ अबिनाशी साचा कन्ता। दर दरबाना, करे खेल हरि बण बण कान्हा। सृष्ट सबाई आपणी हथ्थीं बन्ने गाना। चतुर सुजान हरि भगवान करे खेल जगत महाना। जोती जोत सरूप हरि, पिछला भेव आप खुलाए मानस देही विच द्वापर सत्त हथ्थ रखाना। कलिजुग कूक कूक पुकारे। दर घर साचे विच्चों होणा बाहरे। मुलां मसीते अल्ला हू लावण नाअरे। निहकलंक तेरी कोए ना पावे सारे। कृष्न लिखाई अठारां ध्याए गीता, पंडत पढ़ पढ़ थक्के सारे। प्रभ अबिनाशी किसे ना दिस्सया, अठारां पुरान वेद

ब्यास उचारे। अन्तिम कलिजुग निहकलंक प्रगट जोत, साढे तिन्न हथ्थ मानस देही लेख लिखारे। साढे तिन्न हथ्थ मानस देही जामा। अन्तिम पूर कराए हरि आपणा कामा। गुरसिक्खां लेखे लाए, मानस देही साचा जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ संत मनी सिँघ तेरा पहने गल विच चिट्टा बाणा। साढे तिन्न हथ्थ रक्ख लम्बाई। पौणे दो कर चौड़ाई। सोलां तणीआं नाल गुंदाई। चारों कुन्ट चारे चार बणाई। इक्को चिट्टा बाणा आपणी हथ्थीं जा पहनाई। चिट्टे अस्व सोहे चिट्टा बाणा, उत्ते शाह अस्वार बिठाई। हरि वरते अन्तिम आपणा भाणा , पंचम् जेठ वक्त सुहाई। सृष्ट सबाई आपे लाए वञ्झ मुहाणा, डूंघर संसार किसे हथ्थ ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ साचे घोड़े आप चढ़ाई। चिट्टे घोड़े चिट्टा दोषाला। वाग फड़े हरि तेरा सच्चा संभाला। लग्गा फल विच मात काया सच्चे डाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर वेस माझे देस पंचम् जेठ, बेमुखां आया करन मूंह काला। मूंह काला सिर छाही पाई। प्रगट होए हरि साचा माही। दूरों वेखण जांदे राही। गुरसिक्खां दरस दिखाए थाउँ थाँईं। आपणी चरन सरन रखाए, उत्ते रक्खी ठंडी छाईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घोड़ चड़ाईं अग्गे जा चांईं चांईं। सोलां कलीआं हरि पाए वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत दीप नौ खण्ड खोल्हे गंढु। पंचम् जेठ प्रभ अबिनाशी किरपा कर अड्डो अड्डी

२२८ ०४ जाए वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण बैठ लक्ख चुरासी देवे दंड। हरि देवे साची मती। घर आया साचा पती। चरन बन्न्हाए साची नत्ती। धीरज धीर रखाए आत्म जती। अमृत सीर प्याए करे सती। हउमे पीड़ गंवाए, वा ना लग्गे तत्ती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए, पंचम् जेठ वक्त सुहाए, केसर लयाउणा सवा रत्ती। प्रभ सच लगाए हट्टी। एको एक हट्ट रखाए, शब्द कंडा इक्क लगाए, ना कोई रक्खे धड़ी वट्टी। सोहँ डण्डा उप्पर लगाए गुरमुख बेमुख दोवें तोले काया झूठी सच्ची मिट्टी। अन्तिम वेला नेड़े आया, गुरसिख भरे ना किसे चट्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति समझाए पंचम् जेठ वक्त सुहाए इक्क लयाउणी मौली अट्टी। कलिजुग तेरी धार वहन्दी। सृष्ट सबाई इक्क दूजे दे नाल खहन्दी। चारों तरफ पए दुहाई, भेख धारे हरि अमाम मैहन्दी। गुर संगत आए चरन सरनाई, नेड़े हो हो बहिंदी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा हुक्म आप सुणाए, पंचम् जेठ खुशीआं नाल मनाए, सवा पंज तोले नाल लयाउणी मैहन्दी। हरि जी वरते सच्चा भाणा। करे खेल जगत राणा। साचा हुक्म धुर फरमाणा। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा। गुरमुखां देवे साचा माणा। खुशीआं नाल हुक्म मनाणा। नीला चोगा मसा सिँघ खरीद लयाणा। घर दा खद्दर उत्ते लाणा। सति बटन उप्पर रखाणा। सत्त उंगली खाली रखाणा। दूजा साता फेर छुहाणा। प्रभ अबिनाशी

किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ तन छुहाणा। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण। चारों दिशा दिसे सक्खण। गुरमुख साचे प्रभ आप विरोले, जिउँ विच्चों छाछ मक्खण। चरन बहाए साचे गोले, अमृत रस साचा चक्खण। बेमुखां दिसण आले भोले, लजपति आपणी कलिजुग रक्खण। आप बिठाए शब्द डोले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मुल्ल पवाए ना कोई चुकाए लक्खण। ना कीमत ना कोई मुल्ल। गुरमुख विरला तुले, गुर चरन पूरे तोल। लोकमात साचा सूरा, भाग लगाए आपणी कुल। रसना गाए हरि सर्बकला भरपूरा, आत्म पड़दा जाए खुल्ह। हरि वसे हाज़र हज़ूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खिड़ाए कँवल फुल। कँवल फुल मुख उग्घाड़। उतरे भुक्ख मिले अमृत धार। उपजे सुख कर दरस जोत निरँकार। उज्जल होए मुख विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर चरन प्यार। काया डूंघा वहिण, हरि वहांयदा। गुरमुख विरले भाणा सहिण, जिन सिर हथ्थ रखांयदा। प्रगट होए दरस दिखाए आत्म साचे नैण, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। गुरमुख साचे संत जन पंचम् जेठ गुर संगत मिल बहिण, प्रभ लेखा सर्ब चुकांयदा। बण आपे सच्चा साक सैण, शब्द रथ उप्पर आप चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम कर कर वक्ख, गुरमुखां चरन धूढ़ इशनान करांयदा। चरन धूढ़ इशनान करांयदा। चिट्टा काला सूहा लाल साचा
२२६ ०४ रंग वटांयदा। अन्तिम कलिजुग सुहाए ताल, अमृत हरि भरांयदा। गुरमुख साचे विच मारन छाल, माणक मोती नूरी जोती २२६ ०४
सोहँ कढ्ढ वखांयदा। फल लगाए काया डाल, मुख साचा रस चवांयदा। तोड़ जगत जंजाल भगत रखवाल, साचे मार्ग पांयदा। गुरमुख साचे मात संभाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ आपणी गोद उठांयदा। आपणी गोद हरि रक्खे चुक्क। गुरसिख बूटा ना जाए सुक्क। धुरदरगाही दाणा पाणी ना जाए मुक्क। कटे गलों जम दी फाही, वेला नेड़े आया ढुक्क। बेमुखां मुख लाए छाही, मूंह विच पाए थुक्क। कलिजुग जीव झूठे राही, अद्ध विच जाण रुक। मेल विछोड़ा भैणां भाई, इक्क दूजे दा भार ना सके चुक। गुरमुखां तारे कर प्यार थाउँ थाँईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मुख पाए थुक्क। इक्क इक्क प्रभ एका एका। दूजी रखाए सृष्ट सबाई चरन टेक। तीजा दया कमाए नेत्र लोयण, गुरसिख साचा लए वेख। चौथे चार कुन्ट बणाए रण खेत। खेतर उठाए मिटाए औलीए पीर शेख़। पंजवें नर नरायण पेख। प्रभ अबिनाशी जगत लिखाए साचे लेख। छेवां रहे दर दरवेश। माझे देस कर कर भेस, सत्तां दीपां लिखाए लेख, मिटाए पिछली रेख। अठवां उठे जागे, चारों कुन्ट भागे, धर अवल्लड़ा भेख। नौवां नौ खण्ड प्रभ पाए वंड, विच ब्रह्मण्ड गुरसिख बणाए, साचे लाल शब्द जोती आपे वेख, दसवां दहि दिश उठ धाए। अट्ठ दस अठारां माण चुकाए, वेद पुराना सर्ब मिटाए,

खाणी बाणी अन्त हो जाए, अंज़ील कुरान दए दुहाए, सुघड़ स्याणी जगत राणी आत्म बुध गुरसिक्खां विच रखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी साचा भेख। यारवां आए सच्चा यार। निहकलंक लै अवतार। चिट्टा घोड़ा हो अस्वार। शब्द डण्डा पहरेदार। सृष्ट सबाई पाउँदा जाए वंडां, गुरमुखां करे ख़बरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल जन भगतां मेल, पंचम् जेठ करे करतार। पहली जेठ हरि कर जोत प्रकाश। सचखण्ड करे सच सुच्चा वास। विच ब्रह्मण्ड शब्द सरूपी पावे रास। बेमुखां देवे कंड, अन्तिम कलिजुग गुरसिक्खां होए दास। जेठ दूजे गुरसिक्खां करे रीझे, लेखे लाए जन्म दस मास। जेठ तीजे हरि पतीजे, सोहँ साचा बीज गुरमुखां आत्म बीजे, बणाए इक्क सच्ची जमात। चार वरनां आत्म काया श्रृंगारे, हरि सच सच्ची सरकारे। जेठ चार हरि दिवस विचार। आपणा करे आप विहार। गुर संगत तेरे आए चल द्वार। अग्गों मिले हरि जी हरे, शब्द घोड़े हो अस्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पाए सारन तरनी तारन, गुरमुख खड़े अद्धविचकार। चार जेठ खेल निराली। करे हरि घनकपुर वासी जो जन आवण बण सवाली। देवे वर जगी जोत इक्क अकाली। आत्म भण्डारे देवे भर, गुरसिख रहे ना कोई खाली। चारों वरन एका एक दिसे, ऊँच नीच राउ रंक, शाह सुल्तान विच जहान, बिरध जवान ना कोई बाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मस्तक जोत जगाए, जिउँ जगे जोत ज्वाली। चार जेठ होए दिवस वड भागी, चिट्टे बस्त्र हरि तन पहनाए, कलिजुग तेरे धोवे दागी। गुरसिक्खां बेड़ा बन्न वखाए, सृष्ट सबाई फेरे सुहागी। आप बिन छप्परी हरि छन्न रहाए, करे स्वांग वड स्वांगी। बेमुखां हरि डन्न लगाए, गुरसिख बणाए हँस कागी। भाण्डा भरम भउ हरि भन्नाए, चरन प्रीत जिस जन लागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि किरपा जाए कर, विच मात आए जोत धर, करे खेल जन भगतां मेल, बण सज्जण सुहेल, मक्के जाए बण के साचा हाजी। साचा बाणा तन छुहा। साचा राणा दीन मुहम्मदी मंगे इक्क दुआ। वेले अन्त ना किसे छुडाउणा, शब्द सरूपी गल पाया फाह। पंचम् जेठ हरि वरते भाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लेख आपे रिहा लिखा। पंचम् जेठ सच दरबारा। नर नरायण लए अवतारा। बणे आप सच्ची सरकारा। दस्से जाप सोहँ अपर अपारा। मारे तीनों ताप, तन लथ्थे अफारा। जमराज जाए कांप, खोल्ह बन्द कुआड़ा। कलिजुग वध्या अन्तिम पाप, उठे शब्द सच्ची धाड़ा। प्रगट होए प्रभ आपे आप, नौ खण्ड पृथ्मी जंगल जूह विच पहाड़ा। उजाड़ पहाड़ विच लाए ढेर पहली हाढ़ा। पाए फेरा सृष्ट सबाई चबाए दाढ़, शब्द सरूपी पाए घेरा। गुरमुखां जोत जगाए बहत्तर नाड़, दुक्खां भरमां ढाहे डेरा। अग्न जोत हरि दए साड़, उठे शाह वड दलेरा। कलिजुग फल हरि देवे झाड़, चलाए

मेरा तेरा। दूई द्वैती हरि देवे पाड़, सतिजुग वक्त सुहाए नेड़ा। पंचम् जेठ सुहञ्जणी रात, वस्सया पुरी घनक साचा नगर खेड़ा। प्रगट होए हरि विच मात, खुल्हा कराए धरत मात तेरा वेहड़ा। गुर संगत बणाए नाल बरात, जांञी लाड़ा लभ्भे केहड़ा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वात, लक्ख चुरासी देवे गेड़ा। बैठा रहे इक्क इकांत, चौथे जुग चुकाए झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द तीर चलाए, सृष्ट सबाई लाए उखेड़ा। सृष्ट सबाई होए चानणा। दीपक जोती आप जगावणा। आत्म सोती हरि उठावणा। वरन गोती सर्ब मिटावणा। सृष्ट सबाई रही रोती, ना मिल्या हरि भगवानणा। गुरमुखां मैल दुरमति धोती, दरगहि साची सुख साचा मानणा। पंचम् जेठ हरि चुणे गुरसिख माणक मोती, हथ्थ बन्न्हे साचा गानणा। निहकलंक नरायण नर, नूर नुरानी जोत करे प्रकाश कोटन भानणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां आपणा आप सुहानणा। चरन कँवल चरन गुर पूरे। उप्पर धवल कर दरस उतरे सगल वसूरे। आत्म जाए मवल, दुःख कलेश होण दूरे। खिले सच्चा फुल्ल कँवल, प्रभ दिसे हाज़र हज़ूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा रसना गाए कारज होण पूरे। काया दुःख आत्म अन्धेरा। अट्ठे पहर धूंए रहे धुख, ना मिटे भरमां डेरा। रैण दिवस ना मिले सुख, काया तन तन काया दुक्खां रोगां घेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दर्द दुःख हर, कर कर आपणी मेहरा। दुःख दर्द प्रभ पूरे कड्ढ। होण सुखाले निमाणे हड्ड। किरपा कर भगवान, डिग्गे कलिजुग डूंघी खड्ड। चरन धूढ़ कर इशनाने, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मदिरा मास दईए छड्ड। मदिरा मास जन तजाए। प्रभ अबिनाशी रसना गाए। सोहँ साचा जाप जपाए। प्रगट होए आप दया कमाए। उतारे तीनों ताप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप रघुराए। अष्टम् जेठ लाउणा जग। संत मनी सिँघ प्रभ पूरे दे पकड़े पग। घनकपुर वासी सृष्ट सबाई लावण जाणा अग्ग। ना चले किसे चतुराई, घर घर बैठे जाण दग। प्रभ हथ्थ सच्ची वड्याई, बेमुखां पकड़ पछाड़े शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा लाए, बुझाए तृष्ना अग्ग। गुर संगत संगत गुर जेठूवाल। साचा शब्द हरि सुणाए, रक्खणा गुरसिख संभाल। अचरज खेल आप वरताए, गुरसिख बणाए साचे लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जेठ अष्टम् चले अवल्लड़ी चाल। अष्टम् जेठ पके पकवान। गुर संगत रल मिल, प्रभ अबिनाशी रसना गाण। सृष्ट सबाई जाए बल, बेमुख जीव सर्ब पछताण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारन जाए शब्द बाण।

२३१
०४

❇ १ जेठ २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल अमृतसर दरबार विच ❇

पहली जेठ खुशी मनाउँदे। प्रभ रक्खीं साया हेठ, दिवस रैण ध्याउँदे। कलिजुग भन्नी जीव कौड़े रेठ, घर घर वैण बहि बहि भाई भैण सुणाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सुहाए साचे दर, मिल मंगल साचा गाउँदे। पहली जेठ उठे बलकारी। जेठा पुत बणे गुर संगत, देवे मात सच्ची सरदारी। चाढ़े आत्म साची रंगत, दिवस रैण रहे खुमारी। दूजा दर ना जाणा मंगण, निहकलंक चरन सरन बलिहारी। आपे रक्खे आपणे अंगण, जिउँ बालक मां प्यारी। शब्द पहनाए साचा कंगण, जगत चले चाल न्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब कर्म रिहा विचारी। पहली जेठ हरि हो त्यार। तिन्नां लोकां कर विचार। सुणाए शब्द सलोका, खाणी बाणी वसे बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली पहल करे विच संसार। पहली जेठ पहली वार, करे खेल हरि न्यारी, लिख्या लेख जो गोबिन्द निरँकारी। प्रगट होया हरि साचा विच हिन्द, राउ उमराउ सुत्ते पैर पसारी। गुरमुख उपजाए, बेमुख डुबाए करन जो निन्द, मारे खण्डा दो धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख पुरखोतम ना कोई जाणे जीव गंवारी। पहली जेठ पहला वर। गुर संगत साचा लैणा कर। इक्को घर जिथ्थे चुक्के जम का डर। अमृत साचा सोमा वगे आत्म साचे सर। तत्ती वा ना कलिजुग लग्गे, निहकलंक आए तेरे दर। प्रभ अबिनाशी फिरे पिछे अग्गे, गुरसिक्खां रिहा किरपा कर।

❇ २ जेठ २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार विच ❇

एका एक पुरख अबिनाशा। तिन्नां लोआं करे प्रकाशा। खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभण्ड, जोत सरूपी वेखे जगत तमाशा। विच नौ खण्ड जेरज अंड, अन्तिम होए नासा। सृष्ट सबाई होई रंड, गुरमुख विरला दासन दासा। शब्द चले चण्ड प्रचण्ड हरि पाए वंड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख मानस जन्म करे रहिरासा। जेठ दूजा गुर पूरा बूझा। आत्म भेव खुल्हाए गूझा। सच विहारा अन्तिम कर, निहकलंक नरायण नर एका सूझा। चार वरन खुल्हाए इक्क दर, कलिजुग हटाए तेरी अन्तिम पूजा। सच इशनान करे आत्म सरोवर सर, चरन प्रीती जो जन झूजा। आप चुकाए जम का डर, साचा सगन मुख लगाए पंचम् जेठ मिसरी कूजा। लगाए मुख हरि मिठास। शब्द चलाए स्वास स्वास। हउमे दुखड़ा करे नास। जोत सरूपी कर प्रकाश। बिन रंग रूपी होए दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेखे आप लिखाए, मात पताल अकाश। लेख लिखाए मात पताल अकाशा। वेख वेख गुरसिख जगाए, चरन करे दासा। मात कुक्ख सुफल कराए, आत्म

भरया साचा कासा। हउमे रोग चिन्ता सोग दुःख गंवाए, निज घर रक्खे वासा। विच मात उज्जल मुख कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा कंचन जिउँ सोना पासा। गुरमुख रंग रंग चलूल। प्रगट जोत निहकलंक, चुकाए पिछला मूल। शब्द वजाए इक्क डंक, इक्क कराए राउ रंक, गुरमुखां शब्द पंघूड़ा लैणा झूल। सोहँ शब्द तेरा साचा रंग, गुरसिख तेरी आत्म सेजा हरि वछाए, चुण चुण साचे फूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कर वखाए, साचे आसण डेरा लाए, बेमुख जीवां दिस ना आए, लक्ख चुरासी रक्खे वासा। नौ लक्ख विच जल टिकासा। दस लक्ख अंडज वासा। ग्यारां लक्ख ढिड्ड भार रिड़ासा। बीस लक्ख बनास्पत उगासा। तीस लक्ख चार पाउँ विखासा। चार लक्ख मानस देही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ भेव खुलासा। लेख लिखणा हरि करतार। चौथे जुग पहली वार। पूर्ब कर्म आप विचार। प्रगट हो के जाणा विच पिण्ड बुग्ग, तरन तारन सोहँ शब्द जैकार। बेमुख मारे चुग चुग, सतिजुग बन्ने तेरी धार। सच फ़रमान धुर दी बाण, पंचम् पंचम् पंचम्, पंज फुल्ल गल पाए फूलनहार। फूलनहार दर द्वार गुर पंज। खिलाए मिटाए मुहम्मद यार, लेख लिखाए तेग बहादर सीस गंज। चिट्टे अस्व शब्द अस्वार, गुर संगत संसार सागर पार कराए, शब्द रक्खे मुहाणा वञ्झ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सोहणा दिवस चढ़ाए, इक्क
२३३ कराए सवेर सन्झ। पंचम् हार एका लग्गा तन छुहाए, हरि वड दाता सूरा सरबंगा। चार जुग भेव खुल्हाए, कलिजुग वजाए २३३
०४ इक्क मृदंगा। पूरन इच्छया आप कराए, जो दर साचे मंगण आए, पंचम् जेठ भुक्खा नंगा। आत्म रंग इक्क चढ़ाए, शब्द ०४
सच्चा सीर प्याए, माण गंवाए हँकारी गन्दा। इक्को सच्चा सीर पिलाए, नौ खण्ड चीर वखाए, पहली कूट लगाए दंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे दरस दान, दर घर साचे आए मंगा। चिट्टा अस्व पावे शोर। दूजा वेख मात अन्ध घोर। प्रभ अबिनाशी रखीं साया हेठ लोकमात छेती बौहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग अन्तिम वारी, चारे वागां आपणे हथ्थ रक्खी डोर। आपणे हथ्थ रक्खीं डोरी। आप चढ़ीं शब्द घोड़ी। गुर संगत नाल जाईं तोरी। संगत गुर गुर संगत, दोहां बण जाए इक्को जोड़ी। दर गुर साचे मंगण आए, नाम रंगत शब्द डण्डा साची पौड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेला कलिजुग नेड़े, प्रगट जोत छेती बौहड़ी। चिट्टा अस्व चब्बे दाणा। पहलां मारे राजा राणा। फेर वेखणा शाह सुल्ताना। मार मुकावां नौंजवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ हो अस्वार, बन्न्हण आए हथ्थीं गाना। परम पुरख दी एका जात। सृष्ट सबाई एका नात। सोहँ शब्द साची दात। आदि अन्त जुगा जुगन्त, गुरमुखां देवे वड करामात। अन्तिम कलि आत्म अन्धेर मिटाए, मिटे अन्धेरी रात। साची जोत दीप जगाए, बैठा रहे इक्क

इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी काया महल पसर पसारे, गुरमुख आत्म मार झात। आत्म मार गुरमुख झाकी। प्रभ चुकाउण आया बाकी। गुरमुख साचे जगाउण आया, आत्म खोल्हे ताकी। फड़ फड़ बाहों राहे पाउण आया, चार वरन कोई ना दिसे आकी। बेमुखां अन्त मिटाउण आया, सोहँ शब्द चढ़या राकी। सतिजुग साचा विच मात, चार वरन कर उत्तम जात, अमृत प्याए साचा साकी। साचा साकी हरि सुल्तान। जोत प्रगटाए वाली दो जहान। इक्को सच्चा राह वखाए, ऊँच नीच भेव मिट जाण। दर द्वार अलख जगाए, गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान। लक्ख चुरासी विच्चों वख कराए, साचा देवे जीआ दान। कलजुग अन्तिम वेले सिर हथ्थ रखाए किरपा कर श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुर संगत देवे साचा माण। पहली दूजी आई तीज। सोहँ आत्म बीजे बीज। गुरसिख तन मन सिंचे जाए सीज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ सोलां कर शृंगार, गुरसिक्खां पूर कराए रीझ। सोलां कलीआं करे तन शृंगार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सतिजुग बन्न्हे तेरी साची धार। पूर्ब कर्म रिहा विचार। जोत सरूपी हरि निरँकार। खाणी बाणी वसे बाहर। पंचम् रैण साची राणी, निहकलंक लए अवतार। सृष्ट सबाई आप पछाणे, गुरमुख बेमुख दोहां कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त करे सच प्यार। सच प्यार दीना नाथ। आप निभाए सगला साथ। जन भगतां लेख लिखाए पंचम् जेठ कलिजुग जीव कौड़े रेठ, भन्न वखाए सोहँ चलाए साची गाथ। गुरमुखां धन जणेंदी माई, कर दरस सगल वसूरे गए लाथ। अन्तिम वेले रक्खे ठंडी छाईं, साचे शब्द चढ़ाए राथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी भेव खुल्हाए, प्रगट होए त्रैलोकी नाथ। सच सुणाए राग छतीसा। मेट मिटाए ईसा मूसा। ना कोई मुहम्मदी छत्र झुलाए सीसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ भेव खुल्हाए बीस इकीसा। बीस इकीसा खुल्हे भेव। प्रभ अबिनाशी वड देवी देव। सर्ब घट वासी, गुरमुखां पूर कराए सेव। आत्म लाहे जगत उदासी, जन गाए रसना जेहव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुरमुखां मुख लगाए सोहँ सच्चा मेव। साचे मेव लग्गे मुख। आप मिटाए आत्म दुःख। जगत तृष्ना जाए भुक्ख। हरी कराए मात कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ खुशीआं नाल मनाए, गुरमुख जागण नौ खण्ड। शब्द सरूपी प्रभ साची दात जाए वंड। वड वड शाहो भूपी वढाई बैठे कंड। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, ना कोई सुहागण ना कोई रंड। एका जोत सति सरूपी, जन भगतां पाए आत्म ठंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ भेव खुल्हाए, चारों कुन्ट चले चण्ड प्रचण्ड। चले चण्डी विच वरभण्डी। ना कोई दीसे करीर जंडी। प्रभ वढुदा जाए सभ दी गंढी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका

२३५
०४

सच्ची जोत बलोए, ना कोई दीसे जगत पखण्डी , ना कोई धरे झूठा भेख। प्रभ अबिनाशी लए वेख। लक्ख चुरासी लिखाए लेख। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ वक्त सुहाए, गुरमुखां लिखाए साची रेख। पंचम् जेठ रैण सुहञ्जणी। जगे जोत हरि निरँजणी। गुर संगत चरन धूढ़ इशनान कराए साची मजनी। सोहँ साचा दान झोली पाए, अमृत आत्म मुख चुआए, गुरसिक्खां आत्म रजनी। चिन्ता रोग सोग कर्म विजोग गंवाए, गुरमुखां पड़दे कज्जणी। लिख्या धुर संजोग कलिजुग अन्त मिलाए, हरि मिल्या सच्चा साक सैण सज्जणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आप उपाई, कलिजुग वेले अन्तिम भज्जणी। सोया जागे भगत निधाना। प्रभ आप बुझाए तृष्ना आग, देवे नाम निशाना। हँस बणाए काग, गुणवन्त गुणी निधाना। आत्म सर सच सरोवर। कराए हरि इशनाना। इक्क सुणाए सच्चा रागण, आत्म मारे सोहँ बाणा। गुर संगत गुरमुख वड वडभागी, पंचम् जेठ मिले श्री भगवाना। अन्तिम कलिजुग हथ्थी बन्ने गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। हथ्थीं गाना देवे बन्न। बेमुखां देवे डन्न। कच्चे आंडे देवे भन्न। बेमुख जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक चढ़या चन्न। उठे संत हरि दुलारा। वेखे अग्गे सच्ची सरकारा। आत्म चढ़े रंग रूप अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबग्ग शब्द खण्डा हथ्थ उठाए, तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा। शब्द कटारी रसन चलाई जा। सोहँ आरी संग रलाई जा। मौत लाड़ी हथ्थ बहारी, आपणी हथ्थीं फराई जा। चारों कुन्ट फेरे वारो वारी, दे मति आप समझाई जा। ना कोई जाणे नर नारी, बिरध बाल जवाना सुरत भुलाई जा। कलिजुग अन्तिम होवे ख्वारी, निहकलंक जोत धारी, गुरमुख सोए आप उठाई जा। पंचम् जेठ देवे सच्ची सरदारी पहली वारी, उच्चा सच्चा वरना बरना, एका संग रलाई जा। प्रभ अबिनाशी धरनी धरना, गुरमुख विरले आए सरना, साचे संत साची सेव कमाई जा। खुल्ला रहे हरना फरना, आप चुकाए मरना डरना, साची तरनी गुरमुख तरना, एका ओट रखाई जा। प्रभ का भाणा सिर ते जरना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी रसन ध्याई जा। रसना गाओ गहर गम्भीर। आत्म वज्जे शब्द तीर। अन्तिम वेले प्रभ पड़दे कज्जे, जन भगतां देवे साची धीर। शब्द बाण आत्म वज्जे, सृष्ट सबाई जाए चीर। साचा घाड़न घड़े सर्ब जग भज्जे, काया माटी किसे ना दिसे नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ दया कमाए, जगत लेख आप लिखाए, ना दिसाए शाह हकीर। ना कोई शाह फ़कीर सुल्ताना। अन्तिम कलिजुग लथ्थे चीर, लक्ख चुरासी बेईमाना। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, देवे नाम निधाना। सतिजुग तेरी बन्ने साची बीड़, झुल्ले सच निशाना। ना कोई जाणे हस्त कीड़। , एका रंग हरि भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ साचा भेव

२३५
०४

आप खुल्हाए, जोत सरूपी पहरे बाना। जोत सरूपी पवण मसाणी। भिन्नणी रैण साची राणी। जन भगतां बणे साक सज्जण सैण, चुकाए जम की काणी। कलिजुग सतिजुग लहिण देण चुकाए, सतिजुग लिखाए साची बाणी। समरथ गुर सिर हथ्थ है। देवे सच्चा नाम, शब्द प्याए सच्चा जाम, सगल वसूरे जाण लथ्थ है। रक्खे हथ्थ सिर निरँकारा। पाए शब्द नत्थ, तिन्नां लोआं करे इक्क बहारा। सृष्ट सबाई जाए मथ, निहकलंक लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां माण दवाए, आपणी दया कमाए, जिउँ सनक सनंदन सनातन संत कुमारा। बंधन कटे हरि द्वार। अमृत रस साचा चट्टे,, खुल्हे बन्द कवाड़। जगे जोत काया मटे, जिउँ अग्नी तपे हाढ़। जोत सरूपी वसे घट घटे, करे प्रकाश बहत्तर नाड़। बेमुख जीव कलिजुग जिउँ बाजीगर नट्टे, सृष्ट सबाई चबाई बैठा हेठां दाढ़। साचा नाम मिले तूर दर साचे हट्टे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैती पड़दा पंचम् जेठ देवे पाड़। अमृत रस आत्म रसीला। गुरमुख पीता कर कर हीला। सदा सदा जग विच जीणा, ना कोई रंग दिसे काला पीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुरमुखां आत्म धार चलाए, दीन मुहम्मदी नूर गंवाए, पहने चोला नीला। नीला चोला लग्गे तन। संग मुहम्मद लग्गे डन्न। पहली कुन्ट कर ख्वार, मेट मिटाए छप्परी छन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा शब्द सुणाए कन्न। अंग संग सदा सुहेला। जन भगतां कराए आपे मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ भेव खुल्हाए, साची लिख्त भविख्त कराए, बण वखाए आपे गुर आपे चेला। जगत जोत इक्क भगवान। जीआं जन्तां देवे दान। आदिन अन्ता हरि साचा कन्ता, बणाए बणता वाली दो जहान। देवे माण गुरमुख साचे संता आत्म दर खड़े, काया अन्धेरी कन्दर वड़े, बेमुखां दिसे सुंञ मसाण। गुरमुख साचा अन्दरों फड़े, अट्ठे पहर दिवस रैण लड़े, दरस करे जोत महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम वरे, अन्त बिठाए विच बबाण। दरगहि साची जाए वड़े, चरन बहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चार जेठ चार द्वारी। गुर संगत करे प्रभ शब्द वाड़ी। चाढ़े नाम रंगत, फिरे पिच्छे अगाड़ी। दूजे दर ना होणा मंगत, देवे दरस जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी। मानस जन्म ना होए भंगत, प्रभ लाज रखाए गुरसिख चरन छुहाई दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा पंचम् जेठ लाए सच्ची फुलवाड़ी। कँवल फुल्ल उपाए प्रभ साचा कल। सोहँ कंडे तोल तुलाए भाग लगाए पहली हाढ़ी। आप अडुल्ल गुरसिख अडोल, शब्द अन्धेरी जाए झुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर वर नर हरि विरला गुरमुख पाए, जो दर आए पंचम् जेठ भुल। पंचम् जेठ चार जुग, चहुं वरनां सच्ची मां। गुरमुख साचे संतां देवे ठंडी छाँ। एका बख्शे नाम धना, जगत देवे

सच्चा थां। सच सुणाए नाम कन्ना, झूठा कढाए मन जना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़े सच्ची बांह। पकड़ बांह रक्खे लज्ज। शब्द तीर जग जाणा वज्ज। सृष्ट सबाई रिहा चीर, पंचम् जेठ साचा हाजी मक्के करे हज्ज। कोई ना किसे देवे धीर पीर फ़कीर, हथ्थ ना आए नीर, बेमुखां बेड़ा जाए भज्ज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर गुर संगत विच जाए सज।

❇ ४ जेठ २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल दरबार विच विहार होया ❇

प्रभ साचा हुक्म सुणांयदा। वाली दो जहान, विच मात दया कमांयदा। जन भगतां रक्खण आया माण, साची सेवा लांयदा। संग ल्याया शब्द बबाण, फड़ उप्पर आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई चुका डर, धुर फरमाण हरि भगवान, गुर संगत कन्न सुणांयदा। धुर फ़रमाण ना किसे मोड़ा। साचा मेल गुर पूरे जोड़ा। सृष्ट सबाई तोड़ विछोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा लेखे लाई चरन छुहाए चिट्टा जोड़ा
२३७ चरन जोड़ा जाए लग्ग। सृष्ट सबाई तुट्टे तग। प्रभ पकड़ उठाए शाह रग। एका जोत जगाए प्रगट होए, दो जहानी २३७
०४ विच्चों जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजा हुक्म आप सुणाए, गुरसिक्खां सेवा लेखे लाए, सिर धर आपणी चिट्टी ०४
पग। चिट्टी पग हरि दस्तार। गुर संगत चरन प्रीती गई लग्ग, धुरदरगाही हो त्यार। सृष्ट सबाई जाए दग, घर घर रोवे नारी नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप करे सच्चा इक्क विहार। सिर दस्तार पैर जोड़ा। शब्द सरूपी प्रभ इक्क मंगवाए चिट्टा घोड़ा। बिन रंग रूपी दिस ना आए, आए जाए चार वरनां विच रहाए, चौथे जुग कौण चुकाए, कोई ना सके मोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग जीवां पापी काया भन्ने फोड़ा। गुर पूरा शब्द अमोला। सच विहार हरि करतार, प्रभ बणया साचा तोला। वेख वखाणे सर्ब घट जाणे करे सर्ब विचार, आपे जाणे झूठा बोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच्च सेवा लेखे लाए, तन छुहाए गुर संगत चोला। गुर संगत चोला कर अरदास। जोत प्रकाशे, रक्खे घनक पुर वास। बेमुखां वक्त गंवाया हासे, अन्तिम कलिजुग होणा नास। गुरमुखां नाम जपाए स्वास स्वासे, मात गर्भ ना लटके दस मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म गुरमुखां कराए रहिरास। गुर संगत हरि देवे आदर। धरे जोत हरि करता कादर। गुरसिख साचा संग रलाए, घर लै जाए कर कर आदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान, तन छुहाए चिट्टी चादर, पूरा हरि ना कदे तोट।

बेमुखां प्रभ आत्म कढ्ढे खोट। एका शब्द लगाए, चार कुन्ट साची चोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पंजवां तन छुहाए, ना रखाए किला कोट। किला कोट काया चार दीवारी। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ होया रहे अट्ठे पहर पहरादारी। साचा माण ताण विच जहान गुर संगत रक्खे, दर आए नर नारी। सृष्ट सबाई एका गाह गहे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ लिख्त लिखाए अपर अपारी। हरि चले चाल निराला। आत्म लाया फल काया सच्चे डाला। दर दुआरे जन आए चल, प्रभ देवे शब्द दुशाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े जगत जंजाला। भगवा भेख वेख भगवान। नेत्र लैणा पेख, हरि जोत महान। आप मिटाए पिछली रेख, चुकाए भेव फेर महान। जोती जोत सरूप हरि, मातलोक हरि जोत धर, बण के आया साचा कान्हा। रंग रंगीला चिट्टा बाणा छैल छबीला। अन्तिम वेला प्रभ मिलण दा, कलिजुग जीव कर लओ हीला। जोती जोत सरूप हरि, साचे बाणे तन छुहाए, सूहा लाल संग रलाए नीला। नीला बाणा तन छुहाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। भेख मिटाए कलिजुग बाणा। इक्को इक्क सच्चा शाह अख्वाणा। निहकलंक सच्चा राणा। सभना ठंडी छाँ रखाणा। चार वरनां एका देवे नाम बबाणा। जोती जोत सरूप हरि, नेत्र वेख हरि भगवान, भेख मारे मेख मिलावे सच टिकाणा। सच शब्द आत्म लगाए भबूती। दुरमति मैल जाए धोती। इक्को जगे सच्ची जोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर पूरे सीस निवाया, आप उठाए तेरी आत्म सोती। मंगया दान हरि मेहरबान है। देवे दान गुण निधान, आप विच जहान है। चरन धूढ़ कराए सच इशनान, हरि भगवान है। आत्म सर साचे आप नुहान है। शब्द तीर चिल्ले चढ़े अपारे, सिध्धा जाए निशान है। सच्चा झुलाए इक्क निशाना, लिखाए लेख हरि भगवान, सोहँ जाप वड महान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सच वखाणा। काका मनजीत गुरसिक्खी दी साची रीत, चढ़या सच बबाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए, गुर संगत दया कमाए, गुर पूरे अग्गे झुलदा जाए, इक्को सच निशाना। कलिजुग चढ़या अन्तिम तापा। झूठा पाप जगत कापा। धरे जोत हरि आपे आपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जपाए सच्चा जापा। सच्चा जाप हरि जपावणा। गुर संगत संग आप निभावणा। नाम रंग इक्क चढ़ावणा। दासन दास जो जन होए प्रभ दरस दिखावणा। कटे भुक्ख नंग, सगला साथ आप निभावणा। जोती जोत सरूप हरि, चिट्टा बाणा साचा राणा तन छुहाए, संत मनी सिँघ हुक्म सुणावणा। संत मनी सिँघ सुण कान। चरन कँवल कर ध्यान। धरे जोत श्री भगवान। गुर संगत देवण आया सच्चा दान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा जोड़ा शब्द पुशाका। प्रभ रखाए एका वारका। प्रभ अबिनाशी सृष्ट सबाई एका शब्द, ना कोई दिसे

सज्जण साका। गुरमक्खां वसे अंग संग, चुकावण आया पंचम् जेठ बाका। सचखण्ड निवासी पंचम् जेठ बाका। सचखण्ड निवासी सच दरबार, चिट्टे अस्व कसाए तंग उत्ते चढ़े, द्वार बंक खड़े सृष्ट सबाई दिन दिहाड़े मारे डाका। दिन दिहाड़े जाए लुट्टी। बेमुखां जड़ जाए पुट्टी। शब्द हथौड़ा हत्थ हरि फड़या, अट्ठे पहर जाए कुट्टी। कलिजुग जीव कोए ना अड़या, अन्तिम वेले चोग निखुट्टी। गुरमुख साचे संत जन, गुर दर लाहा जाण खट्टी। संत मनी सिँघ चल द्वार। शब्द घोड़ा कर त्यार। चिट्टा जोड़ा हरि निरँकार। सचखण्ड निवासी आया दौड़ा, जन भगतां सुण पुकार। आप चढ़ाए सच्चे पौड़ा, जोत सरूपी हरि निरँकार। अग्गे अग्गे संत मनी सिँघ दौड़ा, प्रभ चरन करे निमस्कार। संत मनी सिँघ किस्मत जागी। प्रभ बण के आया गुरसिक्खां दा सच्चा वागी। हत्थ डंगोरी हौली हौली जाए तोरी, तुट्टी प्रीत चरना नाल जाए जोड़ी, धोंदा जाए सच्चा दागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे बाणे तन पहनाए, गुरसिक्खां माण दवाए, पंचम् जेठ लिख्त लिखाए, गुरसिक्खां बणाए बणत रक्खे लाजी। बणे काग गुरसिख हँस। प्रभ आ बणाए साचा बंस। सतिजुग तेरी साची अंस। साची लिख्त लेख लिखाए, भेव ना पाए कोई विच सहँस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मातलोक जोत धरे बेमुख पछाड़े जिउँ कान्हा कंस। द्वापर करया खेल अपारया। वेद व्यास लिखे लिख्त, नरायण नर भगत बनवारया। अन्तिम कलि जोत धर विच मात मिटाए ज़ात पात, ऊँच नीच भेव चुका रिहा। सोलां कलीआं शब्द दुशाला। प्रभ परखण आया विच्चों मात लाला। गुर संगत बणे इक्को जमात, ना कोई वेखे रंग निराला। चार वरन एका सरन, इक्क रखवाला। बेमुखां होई अन्धेरी रात, अन्तिम कलिजुग चारों कुन्ट दिसे मूंह काला। गुरमुखां देवे सच सुगात नाम दात, पंचम् जेठ हरि दस्से राह सुखाला। अन्तिम वेले पुच्छे वात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां तोड़े जगत जंजाला। जगत जंजाला जाए तुट्ट। शब्द तीर जाए छुट्ट। सतिजुग तेरी बणत बणाए सुहाए रुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा इक्क भण्डारा रक्खे अतुट्ट। सच भण्डारा हरि आप लगावणा। शब्द वरतारा आप अख्वावणा। सोहँ साचा नाउँ जपावणा। चार वरनां एका सरना ठंडी छाउँ रखावणा। साक सैण भाई भैण आप अख्वावणा। बेमुखां खाए कलिजुग माया डैण, अन्तिम वेले सर्ब पछतावणा। गुरमुख साचे दर्शन पेखण नैण, सृष्ट सबाई आप वहाए वहन्दे वहिण, दाणा अन्न किसे हत्थ ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि किरपा कर, जोत धर देवे वर, गुरसिक्खां बेड़ा बन्न वखावणा। तेरा बेड़ा बन्ने अन्तिम वारी। कलिजुग पासा आया हारी। जगत तमाशा वेखे, करे खेल अपर अपारी। बेमुखां दिसे ना हत्थ कासा, चारों कुन्ट दिसे नासा, जोत निरँकारी। जन भगतां करे रहिरासा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, शब्द घोड़ा संग रलाया, दक्खण दिशा बन्न वखाए कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। चार दर हरि दुआरे। पूर्ब पच्छिम दक्खण उत्तर, चारे कुन्टां वेख विचारे। पूर्ब मिले अमृत फल, पारजात खड़ा झुलारे। पच्छिम मिले आत्म सर सरोवर, गुरसिख साचा काया करे ठंडी ठारे। उत्तर रहे ऐराप्त हाथी झुलदा रहे, दक्खण दिशा चिट्टा घोड़ा प्रभ साचे दा साचा जोड़ा, अट्ठे पहर मंगे दरस करतारे। चिट्टा घोड़ा करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। कलिजुग वेला अन्तिम होया, लक्ख चुरासी होई ख्वार। गुरसिक्खां वक्त दुहेला होया, कोए ना सुणे पुकार। निहकलंक कलि जामा पाया, अन्तिम साचा मेला होया पंचम् जेठ हो आए त्यार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व सुण पुकार। सुण पुकार हरि दातार। उत्ते होण वाला अस्वार। पंचम् जेठ कर त्यार। चारे वागां कलिजुग तेरीआं, आपणी हथ्थीं रिहा संवार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे रंग इक्क अपार। सतिजुग तेरी सुणी पुकारी। त्रेते तेरी बधी धारी। द्वापर भेख हरि बनवारी। कलिजुग जगी जोत ज्वाले, ईसा मूसा आप उपाए। संग मुहम्मद चार यार दस अवतार जोत जगाए। अन्तिम वेला अन्तिम आया। जोत सरूपी जोत जगाया, पुरी घनक डंक वजाया, आप उठाए राउ रंक जन भगतां सार समाले। साचा शब्द डंक वजावणा। राजा राणा सर्ब उठावणा। एका बाणा आप रखाणा। जन भगतां दया कमाणा। बेमुखां गूढ़ी नींद सवाणा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंचम् जेठ जोत धर, अन्ध अन्धेर मिटाणा। कलिजुग तेरी अन्तिम वेरी। प्रभ अबिनाशी पाए फेरी। चारे कुन्टां जाए घेरी। कोई ना करे हेरी फेरी। गुरमुख विरला बणे साची चेरी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्त मिटाए आपणीं हथ्थीं ढेरी। सृष्ट सबाई आप कराए, प्रभ अबिनाशी इक्क मुट्ठ। गुरमुख साचे संत जनां धीर धराए, एका देवे शब्द रथ। बेमुखां अन्तिम चीर लुहाए, गुरमुख साचे संत जन तेरी सरन आयण नठ्ठ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ सतिजुग साचे तेरी गुर संगत संग रलाए, करन आया चट्ठ। संत मनी सिंघ शब्द लिखाया। राणा संगरूर आप समझाया। अन्तिम वेले होणा चूर, निहकलंक करे जोत रुशनाया। बेमुख वेला जानण दूर, अन्तिम नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी करे चूर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्बकला भरपूर, पंचम् जेठ पिण्ड बुग्घे होए उग्घे, सिंघ प्रेम तेरे झुग्गे डेरा लाया। झुल्लदा जाए इक्क निशाना। करे खेल हरि भगवाना। गुर संगत साचा मेल मिलाना। नारी नर देवे दाना। दरगहि साची देवे माणा। बेमुखां तोड़े आत्म अभिमाना। गुरमुखां चरन प्रीती जोड़े, आप दिसाए आपणा भाणा। प्रभ अबिनाशी चढ़या घोड़े, शब्द सरूपी पहरे चिट्टा बाणा। चिट्टा बाणा पहने तन, गुर संगत मन्न जाए मन्न, आत्म कढ्ढे झूठा जन, जोत सरूपी फेरा पाया। साचा शब्द सुणाए कंन, अज्ञान अन्धेर दए मिटाया। साची जोत जगे तन, अन्धेरी

कन्दर होए रुशनाया। भाण्डा भरम देवे भन्न, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठाया। बेमुख जीवां देवे डन्न, निहकलंक कलि जामा पाया। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, जिथ्थे आसण सच्चा लाया। चार कुन्ट हरि का वास। गुर संगत वसे आस पास। जोत सरूपी होया दास। जोत जगाए विच मात पताल अकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पुरी घनक जोत धर, शब्द चलाए गुरमुखां स्वास स्वास। फड़े वाग संत दुलारे। गुर संगत करे प्यारे। दर खलोता वाजां मारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ आप आपणी किरपा धारे। संत मनी सिँघ वाग फड़। सृष्ट सबाई कोई ना सके अग्गे अड़। पुटी जाए सभ दी जड़। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी चार कुन्ट रिहा लड़। दए चीर करे दो फाड़े। आप मिटाए सुटाए जंगल जूह विच पहाड़े। तेरे लेख आप लिखाए, सतिजुग साचे ना कोई वेखे चंगे माढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ साचा लेख लिखाए, सृष्ट सबाई चबाए आपणी दाढ़े। चिट्टा जोड़ा शब्द घोड़ा हरि जगदीश। धुरदरगाही आया दौड़ा, नाम कल्गी रक्खे सीस। ना लम्बा ना चौड़ा, दर घर साचे इक्का पौड़ा, भेव चुकाए बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना मिट्ठा ना कौड़ा, ना कोई करे रीस। हरि साची मालण भगत दलालण, हथ्थीं बन्ने साचे गानण। दर दरबान विच जहान, देवे सच्चा मानण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत धरे सृष्ट सबाई करदा जाए चानण। पंचम् हार पंचम् वंडे। चौथे जुग तुट्टी गंढे। वेला अन्तिम नेड़े आया। गुर संगत खड़ी साचे कंढे। कलिजुग झेड़ा दए मिटाया, जोत सरूपी डेरा लाया विच वरभण्डे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप रचाया, शब्द घोड़े तंग कसाया, गुर संगत साची संग रलाया, मातलोक हरि वागां मोड़े। वाग मोड़े करे त्यारी। निभाए तोड़ अन्तिम वारी। सृष्ट सबाई जाए रोढ़ी कर ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा शब्द तन पहनाए, गुर संगत जाए श्रृंगारी। चार कुन्ट हरि वेख विचारे। गुरमुख विरले सिख प्यारे। शब्द सरूपी वाजां मारे। वड शाहो भूपी बिन रंग रूपी, शब्द घोड़े हो अस्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, खिच्च ल्याए चरन दुआरे। पच्छिम दिशा हरि विचारी। निहकलंक पहली वारी। साची करे हरि अस्वारी। देवे वर मौत लाड़ी, आई दर नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए। फेरी जाए जगत बहारी। दक्खण वेखे लखमी नरायण। लिखाए लेखे बण साक सज्जण सैण। कलिजुग मिटाए रेखे, अन्तिम वेलड़े पाए वैण। जो जन रहे भरम भुलेखे, लाड़ी मौत खाए डैण। मिटदे जाण औलीए पीर शेखे, गुरमुखां वखाए प्रभ साचे नैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोड़ जुड़ाया, गुर संगत बणाए भाई भैण। पूर्ब पूरा गुर अवतार। जोत सरूपी जामा

धार। कल्गी तोड़ा नाम अधार। चिट्टा जोड़ा शब्द अस्वार। सृष्ट सबाई पहलां मारे पौड़ा, करे दो फाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत चार चुफेरे करे शब्द वाड़। उत्तर पर्बत टिल्ले। अन्तिम वेले सारे हिल्ले। प्रभ तन ख़ाक छुहाई, साचा शब्द चढ़ाया चिल्ले। उच्चे बुरज जावे ढाही, कलिजुग जीव कच्चे पिल्ले। गुरमुखां दरस दिखाए थाउँ थाँईं, ना कोई कराए वडे शिले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ लेखा आप लिखाए, मिटाए कक्के बिल्ले। गुर बेड़ा आप उठाया। आपणे सीस हरि धराया। गुर संगत दुःख ना लग्गे राया। दूजा दर ना जाए मंगत मिल्या नर हरि सच्चा घर आया। लाज रखाए जिउँ नानक अंगद, साचा पल्लू आप बंधाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक पिण्ड बुग्घे वक्त सुहाया। पिण्ड बुग्घे वज्जे वधाई। जगे जोत हरि रघुराई। बेमुख सारे रहे रोत, घर घर देण दुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी कटण आया जम की फाही। जम की फाँसी देवे कट। शब्द पहनाया तन साचा पट्ट। साचा लाहा गुरमुख साचे, पंचम् जेठ लैण खट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तोला लाया, इक्क खुल्ह्राया साचा हट्ट। लग्गे तोला संत दुलारा। प्रभ अबिनाशी गल पाया चोला, करे खेल जगत न्यारा। सोहँ शब्द गावे ढोला, कराए जै जै जैकारा। लक्ख चुरासी मेट मिटाए, लहू मिझ बणाए गारा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, निहकलंक लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचे संत जनां, खिच्च ल्याए चरन दुआरा। गुरसिख आओ चल दुआरे। अमृत बख्शे साची धारे। खुल्हे कँवल आत्म होए उज्जयारे। मिले वड्याई उप्पर धवल, निहकलंक वज्जा डंक सुणे सर्ब संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द तेरी पुरी अनन्द, लेख लिखाए अपर अपारे। सच सुच्च सच धरवासा। अमृत पी मिटे प्यासा। निज घर आत्म गुरसिख होए वासा। दरस अमोघ हरि दिखाए, अट्ठे पहर वेख तमाशा। चिन्ता रोग आत्म सोग दए मिटाए, जगत दुखड़ा कर नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूजा हुक्म फेर सुणाए, गुरमुख साचे दया कमाए, हत्थ फड़ाए साचा कासा। साचा कासा हरि सच प्याला। मुख लगाए हरि गुर गोपाला। गुर संगत तोड़े जगत जंज़ाला। सोहँ देवे सच्चा नाम धन माला। आत्म कढ्ढे जन, भाण्डा भरम देवे भन्न, एका दस्से राह सुखाला। गुरमुख आत्म जाए मन, प्रभ बेड़ा देवे बन्न, साची जोत जगाए जिउँ जगे ज्वाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मुख लगाए, गुरमुखां प्याए सच्चा इक्क प्याला। तीजी वारी तीजा लेख। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख, मातलोक धरया भेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सोए आप जगाए लक्ख चुरासी विच्चों वेख। अमृत देवे साची धारी। गुर संगत हरि कर प्यारी। आए दर बण भिखारी। देवे वर नर निरँकारी। चुक्के डर, मारे शब्द

उडारी। आत्म भण्डारे जाए भर, खुल्ले सच्चा सर, निहकलंक किरपा धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचे लेख लिखाए, गुर संगत जाए तारी। चौथे जुग चौथी रात। गुर संगत बणी सच बरात। साचा लाड़ा हरि जी वेखण, बैठा रहे इक्क इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम प्याए, चरन प्रीत बंधाए साचा नात। पंचम् उठे उठ उठ जागे। गुर संगत धोए पापां दागे। चरन सरन जो जन साची लागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत अमूल दूई द्वैती पड़दे देवे खोल्ह, एका शब्द वजाए ढोल, देवे मात सच्ची सुगाते। परम पुरख दी उत्तम जाति। ना कोई पिता ना कोई माती। ना कोई भैण ना कोई भ्राती। ना कोई साक सजण सैण, ना कोई बराती। ना कोई रसना सके कहण, बैठा रहे इक्क इकांती। गुरमुख विरला पेखे तीजे नैण, जिस आत्म जोत जगाई बाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुर संगत प्रभ देण आया वडीआं दाती। देवे दात धुर दरबारी। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँच नीच भेव न्यारी। गुर संगत सद वड करामात, आदि जुगादि जुग जुगन्तर सचखण्ड निवासी देवे सच्ची सरदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब विहारा आप कराए, पंचम् जेठ होए सहाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। लोकमात हरि निरँकारा। करे भेख विच संसारा। माझे देस गिरवर गिरधारा। गुरमुख साचे विच प्रवेश, रूप रंग ना कोई पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची लाए लेखे जो जन आए चल दुआरा। चौथे जुग तेरा साचा चन्द। सोहँ शब्द इक्क अनन्द। खुशी कराए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला वक्त आप सुहाए, गुर संगत साचे मार्ग पाए, दूई द्वैती ढाहे कंध। दूई द्वैती होई दूर। प्रगट होया हरि हाज़र हज़ूर। देवे जोत हरि सच्चा नूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बेड़ा पार कराए वड दाता सर्ब गुणां भरपूर। कलिजुग माया हो भिखारन। मंगण चढ़ी प्रभ सच द्वारन। काया ममता झूठी गढ़ी होई भुक्ख नंगन। किरपा करी प्रभ साचे साची घड़ी, गुर संगत चाढ़े नाम रंगण। कलिजुग माया पड़दा पाटा। गुर संगत पूर कराया तेरा घाटा। हाज़र हज़ूर दरस दिखाया, ना कोई जाणे खेल बाज़ीगर नाटा। एका शब्द तूर उपजाया, जगाए जोत काया माटा। वेला दूर नेड़ कराया, साची जोत जगाए विच ललाटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क सरन एका नाम प्याए काया सच्चे बाटा। कलिजुग माया चिट्टी चांदी। वेले अन्तिम थक्की मांदी। प्रभ अबिनाशी दर साचे बांदी। अठारां माघ खेल रचाया, गुरसिख घोड़े देह छुडाया, लेखे लाया कलिजुग गांधी। मंगे नाम दात चरन द्वारया। मिटे अन्धेरी रात, जगे जोत अगम्म अपारया। अन्दर वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी साचे मन्दिर विच सुहा रिहा। बैठा रहे इक्क इकांत, दिवस रैण अट्ठे पहर साचे लेखे आप लिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, तेरी काया चोली सच्ची डाली, विच मात लेखे ला रिहा। देवे नाम शब्द हुलारा। एका बख्शे चरन दुआरा। आत्म खोल्ह्ले दर दुआरा। वखाए सच्चा घर, जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। ना जन्मे ना जाए मर, निहकलंक जो आए तेरे चरन दुआरा। आत्म खोल्ह्ले दर दुआरा। वखाए सच्चा घर, जगे जोत इक्क अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात झोली पाए, भरया रहे तेरा भण्डारा। तेरा भेख जगत अनोखा । पूरे घर कदे ना होवे धोखा। अन्तिम वेले प्रभ साचा बख्शे तैनूं मोखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोती मेल मिलाए, औझड़ राह ना अन्तिम पाए, ना कोई दस्से राह औखा। वेले अन्त होए सहाई। साध संत गुर चरन बहाई। बणे बणत हरि सरनाई। जीव जन्त विच देवे वड्याई। मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म जोती दे जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त, निहकलंक कलि जामा पाई। पहली कूट कर ख़बरदारे। दूजी कूटे पाए सार हरि निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए सच सुच्च दरबारे। तीजे कूट जाए वेखी। दर घर एका सच्चा साचा गुर सिक्खी। गुरमुख साचे संत जनां, साची सेवा लाए दया कमाए होए वडभागे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथी कूटे इक्क सुणाए सच्चे रागे। भिन्नड़ी रैण राज कुमारी। उठाए हरि पहली वारी। कलिजुग तेरी मिटे अन्ध अंध्यारी। सतिजुग जागे होए वडभागे, करे

२४४

०४

मेहर भारी। बुझाए तृष्ना आगे, गुरसिख तेरी काया अजे कुँवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सच्ची जोत बलोए, दुरमति मैल पिछली धोए, फेर करे उज्जयारी। भिन्नड़ी रैण रंग साचा माण। होया मेल भगत भगवान। शब्द वजाए डंक, आप उठाए राउ रंक, ऊँच नीच भेव मिटान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी फेर करे पछाण। भिन्नी रैनड़ीए तेरी धन कमाई। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे संत जनां प्रभ दर मिले वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए साचा मिलदा नाम धन्नां, इक्क सुणाए राग कन्ना, अज्ञान अन्धेर दए मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत अन्तिम कलि विच मात प्रगटाई। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्ह्ले। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, प्रभ अबिनाशी किथे बोले। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, बेमुखां रक्खे पड़दे ओहले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राणा वक्त सुहाणा, तन पहनाए साचे चोले। साचा चोला तन छुहाए। आदि अन्त जुगा जुगन्त साचा भेखी भेख धरदा आए। आप बणाए साची बणत, गुरमुखां आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बैठा हरि इकांत कलिजुग जीवां दिस ना आए। एका कन्त आप नर हरी। गुरमुख विरले किरपा करी देवे वरी। दर घर आए भरम भुलेखा दूर करी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता साधन संता पूरन भगवन्ता, एका अंग एका संग एका मंग जन भगतां देवे साचा

वरी। आदि अन्त इक्क अकार है। ना कोई दूजा होर विहार है। ना तीजा रक्खे कोई अहार है। चौथे घर ना होए बाहर है। पंजवां हरि आप सरदार है। छेवां छे घर वेखे दूर दुराडा, कोई ना लँघे पार है। सतवां सत्तां दीपां रिहा विचार है। अठवां उठ उठ वेखे गुरमुख साचे संत जनां, पूर्ब कर्म आपे रिहा विचार है। प्रभ नौवें दर दुआरे सृष्ट सबाई करे ख्वार है। दसवां दहि दिश उठ उठ धाए। गुरमुख साचे आप जगाए। भिन्नड़ी रैण संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत जगाए, बिन बाती बिन तेल आपणे भाणे विच समाए। दस इक्क ग्यारां, गुर दर लग्गी रहे बहारा। दस दो बारां, वेले अन्तिम पाए सारा। दस तिन्न तेरां, तेरां कर वखाए। दस चार चौदां, चौदां हट्ट चौदां लोक खुल्हाए। दस पंज पन्दरां, प्रभ सभ दीआं जाणे अन्दरां, क्या कोई भेव छुपाए। दस छे सोलां, गई रैण आई प्रभाती। जगी जोत इक्क इकांती। कलिजुग मिटे अन्धेरी राती। गुरमुखां मिले सच सुगाती। सोहँ देवे वडी दाती, प्रगट होया कमलापाती। ना कोई पुच्छे जात पाती। अन्तिम वेले पुच्छे बाकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त इक्क बन्न्हाए चरन नाती। चरन नाता देवे बन्न। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न। साचा राग सुणाए कन्न। गुरसिख बणाए धर्म राए ना लाए डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मन्दिर आप वसाए, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न। ना कोई दिसे छप्परी छन्ना। ना कोई दिसे किनारा बंना। सृष्ट सबाई रिहा जगाई, कलिजुग वेला नेड़े आया, प्रभ अबिनाशी देवे डन्ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जगाए सतिजुग चढ़ाए सच्चा चन्ना। सतिजुग चढ़े साचा चन्न। प्रभ अबिनाशी आप उठाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म तृखा भुक्ख निवार, सुखी होए बन्द बन्द।

२४५
०४

✻ ५ जेठ २०११ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर गुरपूर्ब उत्ते ✻

हरि जोत जगत रुशनाई है। प्रभ अबिनाशी एका एक जगाई है। जन भगतां बख्शे चरन टेक, सेक ना लग्गे राई है। गुरमुखां बुध करे बिबेक, दर घर साचे मिले वड्याई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आया देण वधाई है। जगे जोत जगत निराली। सति सरूप हरि वडा शाहो भूप, सृष्ट सबाई रही सवाली। करे प्रकाश विच अन्ध कूप, ना कोई मंगे विच दलाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, जन भगतां करे आप

रखवाली। हरि जोत जगत अकारा। आपणा करे सच विहारा। निहकलंक नर अवतारा। लक्ख चुरासी गल पाए फाँसी, ना होए छुटकारा। गुर पूरे गुरमुख साचे बलि बलि जासी, सोहँ शब्द चार कुन्ट कराए जै जै कारा। कलिजुग अन्धेर अन्त विनासी, मिटे धुंदूकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए पंचम् जेठ निहकलंक नरायण नर अवतारा। हरि जोत सदा इकागर। गुरमुखां कर्म करे उजागर। साची वस्त विच टिकाए, गुरसिख तेरी काया गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाए, गुरमुख साचे पार कराए, विच मात संसार सागर। हरि जोत जगत दिवाली। कलिजुग अन्धेरी रात घटा काली। किसे फुल्ल ना दिसे डाली। गुरमुख साचे संत जनां, पंचम् जेठ प्रगट होए आप करे रखवाली। दुरमति मैल पापां धोए, दूसर अवर ना दिसे कोए, आपे बणे सच्चा माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वेस माझे देस, चार कुन्ट उठ उठ वेखे, बेमुख सारे कढ्ढण गाली। बेमुखां आत्म होई अन्ध। दूई द्वैती माया कंध। बेमुख लायण रसना मदिरा मास गन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले भन्ने बत्ती दन्द देवे तोड़। चढ़ के आए शब्द घोड़। गुरमुखां जोड़ लए जोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बणाए, तन पहनाए चिट्टे बाणे, आपे परखे कलिजुग जीव मिट्ठे कौड़। आपे परखे मिट्ठे कौड़े। निहकलंक कलि जामा पाया, अचरज खेल आप रचाए, वेले अन्तिम गुरसिक्खां बौहड़े। पंडत पांधे भुले फिरदे, कलिजुग माया रुले फिरदे, सर्ब सुणाउँदे, प्रगट होणा घर ब्रह्मण गौड़े। जोती जोत सरूप हरि, कलि कल्कि अवतार गुर गोबिन्द बणया आप लिखार, विच संसार हरि जी बौहड़े। आदि पुरख निरँजणा। पुरख पुरखोतम दर्द दुःख भय भंजना। जुगा जुगन्त हरि साचा साक सैण सज्जणा। माण रखाए साध संत, हरि साचा कन्त बणत बणाए विच मात पर्दे कज्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल आप रचाए, लक्ख चुरासी भाण्डा तेरा अन्तिम वारी भज्जणा। चार जुग हरि कथा वखाणे। आप लिखाए आपणे बाणे। चार जुग हरि भेख वटाणे। भुले फिरदे राजे राणे। सार ना पायण सुघड़ स्याणे। कलिजुग डोबे पूर, ना कोई हथ्थ आए वञ्झ मुहाणे। बेमुख जानण हरि वसे दूर, गुरमुखां आत्म हरि समाणे। एका जोत साचा नूर, जन भगतां रंग साचा माणे। जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर खड़या रहे सरहाणे। आत्म सेजा वेख विचार। प्रभ अबिनाशी पहरेदार। खड़्हा रहे दर द्वार। अट्ठे पहर वाजां मारे करे ख़बरदार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी पसर पसार। लक्ख चुरासी हरि उपाई। साची जोत हरि टिकाई। गुरमुख विरले बूझ बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता एका जोत हरि रघुराई। लक्ख चुरासी हरि उपाए। सारा भेव दए खुल्हाए। चवी जामे प्रगट कर, कलिजुग

तेरा अन्त कराए। आपे वसे साचे घर, दिस किसे ना आए। गुरमुखां चुकाए जम का डर, आपणी दया कमाए। आप नुहाए अमृत आत्म साचे सर, दूई द्वैती मैल गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहला जामा सतिजुग साचे सनक सनंदन सनातन संत कुमार उपाए। पहला जामा पहला रूप। करे कराए हरि वडा भूप। ना कोई जाणे रंग रूप। इक्का जोती इक्का गोती, तिन्नां लोकां सति सरूप। करे कराए हरि वडा भूप। तिन्नां लोकां हरि सतिवादी। सदा रहे इक्क अनादी। सृष्ट सबाई जिस ने साधी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी जोत आप जगाए ना कोई मात पिता ना कोई दादा दादी। मात पिता ना हरि रखाए। साचा सीर ना कोई प्याए। इक्को मिता जिस मानस जन्म जित्ता, चरन प्रीती सेव कमाए। जोत सरूपी जोत हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि इक्को जोत इक्को गोत आदि अन्त जुगा जुगन्त विच मात रखाए। दूजा जामा हरि जी पाए। बराह रूप भेख वटाए। दुष्ट दैंत आप खपाए। धरत मात विच्चों पताल बाहर ल्याए। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणे भाणे सद समाए। तीजा लै हरि अवतार। आपणे खेल करे अपार। यज्ञे पुरष नाम करतार। क्या कोई जाणे इस दी सार। आदि अन्त जुगा जुगन्त आपे करे आप अकार। जगत रीती आप चलाई। लक्ख चुरासी जिस उपाई। नौ लक्ख विच जल टिकाई। दस लक्ख अंडज विच रखाई। ग्यारां लक्ख ढिड्ड भार रिड़ाई। वीह लक्ख बनास्पत उपाई। तीह लक्ख चार पाउँ लिखाई। चार लक्ख मानस देही उपजाई। आदि अन्त साचे भगवन्त आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजे जामे जग करन दी आपणी आप रीत चलाई। किया यज्ञ हरि भगवान। साधां संतां देवे दान। एका नाम करे पछाण। जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द सुणाए आत्म जाए मान। चौथा ल्या अवतार हाव गरीव नाम रूप करे करतार। लाल रंग सच्ची सरकार। ब्रह्मा वेद होए ख्वार। कैंटब दैंत खड़े विच धरत मात मञ्झधार। प्रगट हो आए दरे, विच्चों पताल कढ्ढे बाहर। जोती जोत सरूप हरि, क्या कोई पावे सार। आदि अन्त आपणा करे आप विचार। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोकां करे आपणा पसर पसार। पंजवां जामा नरायण नर पाया। बदरी केदार नाथ डेरा लाया। तप करन दा राह वखाया। सतिजुग साचे तेरा साचा राह, आपणी हथ्थीं आप बणाया। देवे माण थाउँ थाँईं आप विहाया। जोती जोत सरूप हरि, वेला वक्त आप पछाणे किसे दूसर भेव ना पाया। छेवां जामा हरि लिखाए। कपल मुन नाम रखाए। मुन्न सुन्न आप तुड़ाए। कवण जाणे हरि तेरे गुण, आवे जावे भेख वटाए। एका माता सक्ख योग, साचा राह आप वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त आपणा अंक आपणे संग आप निभाए। सतवां जामा लेख लिखावणा। दता त्रै नाम लिखावणा। यदू बंसी जिस उपजावणा।

२४७
०४

आपणा आप जगत उपावणा। आवण जाण जाण आवण खेल रचावणा। भगत भगवान देवे जीआ दान, माया पड़दा हरि जी लाहवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द आदि अन्त जुगा जुगन्त भेख धारी, हरि नर निरँकारी, आवे जावे वारो वारी, ना लेखे किसे लिखावणा। ना कोई लेखा लिखा हिसाब। ना कोई वेखे विच किताब। ना कोई जाणे ख़ाकी बन्दा आप। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे सच्चे घर, दूसर कोई ना झल्ले ताब। अठवां जामा हरि लिखाए। रिखव देव नाम धराए। उजैन मति विच आप उपजाए। आपे जाणे मित गत, जुगो जुग आवे जावे। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे विच आप समाए। नौवां जामा नां पुकारे। पृथु रूप खेल अपारे। मंथन करी धरत, अन्न देवता बाहर निकाले। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आदि अन्त जुगा जुगन्त प्रभ अबिनाशी नर निरँकारे। दसवां जामा दस वखाणे। मत्स नाम हरि भगवाने। सत्त बरत राजे हरि परलो आप वखाने। जोती जोत सरूप हरि, आपे चले आपणे भाणे। ग्यारवां जामा हरि जी पाया। कच्छप रूप नाम लिखाया। मंधरा चल पिट्ठ उठाया। सत्त समुन्दर बाशक नागी नेत्रा आपे पाए, सागर संसार रिड़क वखाणयों चौदां रत्न बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। बाहरवां जामा आख सुणाए। मोहणी रूप हरि वटाए। सुर असुर वक्ख वक्ख कराए। राजे बल तेरा वक्त सुहाए। तेतीस करोड़ देवते आपणे हथ्थीं आप बणाए। अमृत साचा जाम मुख लगाए। बेमुख जीव होए असुर, मदिरा जिन्हां मुख छुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे पूरा तोल, गुरमुख विरला तुल तुल जाए। करे भेख हरि निरँकारी। तेरवां जामा भेख बावन, मंगण आए चल द्वारी। कोई ना जाणे प्रभ साचे तेरी साची सारी। दूर दुराडे सारे तकण, वेखण जीव गंवारी। चार वेद रसन उचारे ना कोई पावे तेरी सारी। झूठी चढ़ी जगत खुमारी। जोती जोत सरूप हरि, इक्का दित्ता सच्चा वर, आप चुकाया जम का डर, राजे बल आया द्वारी। चौधवां जामा पाए भगवान। धनंतर वैद नाम वखान। जगत औषधि मारे बाण। आपे जाणे प्रभ अबिनाशी आपणी आण। पन्दरवां जामा गुर पूरे पाया। नर सिँघ रूप आप वटाया। भगत प्रहलाद जगत तराया। हरनाक्ष दुष्ट मार खपाया। जोत सरूपी जोत हरि, अचरज़ भेख मात वटाया। सोलवां जामा सरगुण धारे। पंखी रूप करे करतारे। प्रगट जोत सति सरूप नाम हँस करे उज्जयारे। मातलोक माण गंवाए, रिखीआं मुनीआं सरन लगाए। ज्ञानीआं ध्यानीआं वड वड दानीआं आत्म सहिँसा हउमे रोग गंवाए। गुरमुख साचे संत जनां साचे शब्द मुख साची चोग चुगाए। जोती जोत सरूप हरि, हँसा अवतार आपणा नाम आप रखाए। सतारवां अवतार नरायण प्रभ धारे। बालक ध्रू दे दरस खड़या चरन दुआरे। मिटी जगत हरस, लग्गी प्रीत

चरन कमलारे। अमृत आत्म रिहा बरस, उलटा कँवल नभलारे। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वारे। अठारवां जामा हरि जी पाया। गज ग्राह आण छुडाया। सुण पुकार हरि रघुराया। ताणा तणया दित्ता तोड़, चरन प्रीती लई जोड़, जोती जोत सरूप हरि, बेड़ा बन्न वखाया। उन्नीआं जामा हरि लिखाए। परसराम भेख वटाए। राजे क्षत्री इक्की वार हराए। जोती जोत सरूप हरि, आपणी कल धार सृष्ट सबाई वेख विचारे। वीहवां जामा राम अवतारा। आप अख्वाए राम अवतारा। होए उज्जयारा मातलोक खेल अपारा। दहिसर दुष्ट आपणीं हथ्थीं मारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धारा। इक्कीआं जामा हरि जी पाए। कुंवारी कन्यां मां बणाए। सप्त रिखी जिस पार लँघाए। वेद व्यास नाउँ रखाए। अठारां पुरान जिस लिखाए। चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक लिखाए। श्री मधु भगवत अन्तिम इक्क रखाए। कल्गीधर अवतारा सारा भेव खुल्हाए। बाईवां जामा हरि गिरधार। प्रगट होया कृष्न मुरार। निमाणयां निताणयां होया आप सहार। बिदर सुदामा तारया द्रोपद लाई पार। अन्त दुरबाशा रिखी हंकारया, आत्म लाहया इक्क बुख़ार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दित्ता वर, अठारां ध्याए गीता लई उचार। अवतार तेईसवां जगत आया महात्म बोध। नाम बोध वड धन धना, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीवां कर सच ना किसे मन्ना। कलिजुग हुन्दा गया अन्धेरा। मिटदा गया कलिजुग सवेरा। प्रभ करे खेल अचरज़, लक्ख चुरासी भुलाए कर कर हेरा फेरा। ईसा मूसा आप उपजाए, तीजा राह जगत दिसाए, एका जोत वसे नगर काया खेड़ा। कलिजुग सुणी फेर पुकार। दित्ता वर हरि दातार। मुहम्मद उपजाया नाल ल्याया चार यार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धार। नानक गुर जगत उपाया। एका जोत भेख वटाया। दसवें घर खेल रचाया। सच्चा नाम डंक राउ रंक सर्ब सुणाया। एका ओट रक्खी एका रंग, गुर नानक गुर गोबिन्द कल्गीधर अवतार सच करतार, कलिजुग वेले अन्तिम जामा पाया। चवीआं अवतार सचखण्ड हो त्यार, विच आए वरभण्ड ला तन श्रृंगार। फड़े हथ्थ शब्द चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई करे दो फाड़। बेमुखां हरि वढ्ढे कंड, अग्न जोत साड़े जिउँ अग्ग लग्गी हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, शब्द डण्डा हथ्थ विच फड़या, लक्ख चुरासी तिन्नां लोकां लोआं पुरीआं रिहा ताड़। पहली पुरी हरि आप वखाणी। ब्रह्मा करे चरन ध्यानी। प्रभ चुकाए अन्तिम कानी। चौथे जुग आए हानी। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठ निहकलंक विच मात जामा पाया, भाग लगा सुहञ्जणी रैण साची राणी। साची राणी चढ़या चाअ भिन्नड़ी रैण। दूजा मिले प्रभ अबिनाशी साचा साक सज्जण सैण। तीजी रले नाल गुरसिक्खां देवे माण किसे रसना सके ना कहण, घर घर पैंदे वैण। गुरमुख विरले विच मात दे रहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द

डण्डा हथ्थ उठाया, घर घर उडाए काग। घर घर उडदे दिसण काग। गुरमुख विरले गए जाग। बेमुखां माढ़े होए भाग। ना कोई धोवे कलिजुग लग्गे दाग। ना कोई बुझाए आत्म तृष्ना आग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन बणाए हँस काग। हँस काग शब्द उडारी। आओ चल हरि द्वारी। पंचम् जेठ प्रभ सुणे पुकारी। वड वड सेठ चारों कुन्ट करन हाहाकारी। प्रभ अबिनाशी भन्ने कौड़े रेठ, शब्द हथौड़ा रिहा मारी। निहकलंक नरायण नर, पंचम् जेठ बख़्शे चरन सच्ची सरदारी। सच्चा सरदार हरि सुल्तान। प्रगट होया विच जहान। निहकलंक बली बलवान। नेत्र खोल्हे चार कुन्ट वेखे वाली दो जहान। गुर संगत तेरे आत्म बोले, ना कदे डोले वसे काया चोले, ना रक्खे पड़दे ओहले, चुकाए जम की कान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा हथ्थ विच फड़या, आप मिटाए कलिजुग जीव बेईमान। वेद व्यास बण लिखारी। विष्नूं बंसी वड सरबंसी लिखाए लेख अपर अपारी। सतिजुग त्रेता द्वापर बीतिओ, किसे ना बंधी एका सच्ची धारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग दित्ती सच्ची दात इक्क सुगात, तिन्नां जुगां भेव खुल्हारी। आप खुल्हाया पिछला भेदा। तोल तुलाया चारे वेदा। प्रभ अबिनाशी अछल अछल्ल अछल अछेदा। जोती जोत सरूप हरि, द्वापर किरपा कर पुरान अठारां संग रलाए चार वेदा। अठारां पुरान वेद व्यास लिखाए। पहला माण ब्रह्म दवाए। वीह हज़ार सलोक बणाए। दूजा पदम आख सुणाए। पचवंजा हज़ारी लेख लिखाए। तीजा विष्नूं नाल रलाए। तीह हज़ार सलोक रलाए। चौथा शिव आप उपजाए। चवी हज़ार जिस दे अक्खर, कर कर वक्खर सारे भेव खुल्हाए। पंजवां भगवन्त कर ध्यान, चतुर सुजान अठारां हज़ार बणाए। छेवां पुरान नारद जाण, पंझी हज़ार सलोक आप उपजाए। सत्तवाँ वेखे चार कुन्टे मारकण्डे, जेहड़ा चढ़ाए साचे डण्डे, नौ हज़ार सलोक हरि चिट्टे उत्ते आप लिखाए। अठवां अग्नी लगा बाण, प्रभ अबिनाशी कर ध्यान, पन्दरां हज़ार चार सौ सलोक संग रलाए। नौवां भविक्ख वेख विचार, हरि गिरधार विच संसार चौदां हज़ार पंज सौ दए उपजाए। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, वेद व्यास वसे पास ब्रह्म वैवरत अठारां हज़ार लिखाए। ग्यारवां लिंग पुरान, ग्यारां हज़ार सलोक लिखाए। हरि भगवान बारवां बराह पुरान आप उपजाया। चवी हज़ार सलोक बणाया। तेरवां सुकंद नाम रखाया। अकासी हज़ार इक्क वाह वाह सोहणा जोड़ जुड़ाया। पन्दरवां बावन नाम उपजाया। दस हज़ारी माण दवाया। सोलवां कुकर्म कर्म कमाया। सतारा हज़ार सलोक रखाया। सतारवां गरुड़ संग रलाया। उन्नी हज़ार कर विचार धर्म राए दे सच द्वार अठाई कुण्डां चित्रगुप्त सारा भेव खुल्हाया। अठारवां दस अट्ठ अठारां, सलोक लिखे हज़ार बारां। ब्रह्मण्ड नाम रखाया। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ अबिनाशी जोत धर सारे दए

मिटाया। वेद पुरान सर्ब पुकारन। प्रभ साचे नूं वाजां मारन। प्रगट जोत प्रभ विच मात आप बन्ने साची धारन। जोती जोत सरूप हरि, एका जाणे आपणा कारन। आपणा कारन हरि आपे जाणदा। आपणा भेव हरि आप वखाणदा। धरे नर हरे भेख श्री भगवान दा। जिस जन किरपा करे, सोई जन विच मात पछाणदा। आत्म जोत साची धर, मारे खण्डा ब्रह्म ज्ञान दा। प्रभ अबिनाशी गुरमुख विरला वरे, करे ध्यान चरन भगवान दा। दर घर आयां कारज सरे, निहकलंक दर दुआरे अग्गे खड़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत आत्म चाढ़े रंगत लक्ख चुरासी भगत उदासी सर्ब जीआं दी जाणदा। जन भगतां मन उदासीआ। प्रगट होए घनकपुर वासीआ। साचा जाप इक्क जपाए, सोहँ शब्द स्वास स्वासीआ। साचे घर वास रखाए, ना कदे आप विनसे ना गुरसिख विनासीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक देवे माण ताण विच जहान, गुरसिख बिठाए शब्द बबाण, वड शाहो शाह शाबास्सया। वडा शाह शाह शाबासे निज घर आत्म रक्खे वासे। जगे जोत मात पताल अकाशे। जन भगतां दर दुआरे खड़ा रहे बण दासन दासे। आपे वसे साचे घर, जोत सरूपी पावे रासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगी नरायण नर हरि निरँकारे, बेमुख जीव जगत गंवार करन हासे। कलिजुग जीव अन्त होए ख्वारी। भुले फिरन सर्ब नर नारी। पासा आया अन्तिम हारी। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठ फड़े शब्द हत्थ सच्ची कटारी। पाया हत्थ सच्ची कटार। सोहँ शब्द तिक्खी धार। फड़ी हत्थ सच्ची सरकार। सृष्ट सबाई करे आर पार। पहला वार एका कर, लोकमात जोत धर, चीर चिराए करे दो फाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा आपणा आप वरताए, साचा राणा सच सुल्तान, सच तख्त बैठ सच राज कमाए, खेल वरताए पहली हाढ़ा। सच सुल्ताना हरि मेहरबाना। गुरमुखां बन्ने हत्थीं गाना। बेमुखां लाए शब्द तीर, इक्को बाना। चार कुन्ट होए वहीर, तख्तों लाहे राजा राणा। चार कुंट होए भीड़, मात पित भाई भैण ना सके कोई पछाणा। वाहो दाही राहो राही सारे फिरन, ना कोई किसे मिलाना। गुरमुखां मिले साचा माही, प्रगट होए वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवाना। वड बलवान जगत उजागरा। चारों कुन्ट डूंघा सिंध वड वड सागरा। गुरसिख तेरी काया सच्चा घर, ना झूठी गागरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साधू सिँघ तेरा वेखे गुर विच जाए आगरा। आगरे जावे मारे शब्द उडार। दूजा कोई ना पावे सार। दयाल बाग हरि पूर्ब करे विचार। देवे शब्द लिख्त अपार पहली हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, इक्क इकल्ला वसे सच महल्ला, दूजे किसे ना हत्थ फड़ाए पल्ला, ना कोई चोबदार। प्रभ अबिनाशी होए बेहाला। बेमुखां आत्म

करे कंगाला। गुरमुख लभ्भे साचे लाला। आत्म देवे शब्द दुशाला। फल लगाए साचे डाला। देवे शब्द नाम धन, करे माल माला। गुरमुख आत्म जाए मन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी बन्न्हण आया हथ्थीं मौत गाना। चौदां रत्न निकाले समुन्दर सागर मथ्था। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, थांउँ थाँईं लए रक्ख। आप रखाए भेव खुल्हाए साचे दर, प्रभ दी महिंमा अकथ्थना अकथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक वज्जे डंक, उठे राउ रंक, नर हरि सर्बकला समरथ। नर हरि निरंकारया। कलिजुग झूठे जुग खेल करे अपर अपारया। भाग लग्गा पिण्ड बुग्घ, खुल्हड़े केस दर दरवाज़े दर दरबारया। आवे जावे जगत हमेश, भुले फिरन नर नरायण ना पावे कोई सारया। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल करे, साची जोत मात धरे, आवे जावे ना जन्मे ना मरे। एका सच्चे धाम रहावे, ना कोई भन्ने ना कोई घड़े। लक्ख चुरासी आप उपावे, आपणे भाणे विच रखावे, शब्द खण्डा हथ्थ रखावे, अग्गे कोए ना हरि दे अड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जामा पाया, बेमुख झूठे फल शब्द डण्डे नाल झड़े। शब्द डण्डा देवे झाड़। प्रभ अबिनाशी मारे काड़ काड़। शब्द सरूपी उठे धाड़। लुकया कोई रहण ना देवे, अन्दर जंगल विच पहाड़। अन्दर किसे बहिण ना देवे, शब्द सरूपी रिहा साड़। रसना किसे कहण ना देवे, लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म देवे नाम धना, दूई द्वैती रिहा पाड़। दूई द्वैती पड़दा पाड़े। गुरमुखां तारे पहली हाढ़े। लग्गे भाग विच उजाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा इक्क निशान झुलाए, सिँघ मनजीत जिथ्थे साड़े। जिथ्थे सड़या बाल अञ्याणा। ओथे करे खेल महाना। जगत जगदीश सिँघ संग रलाणा। दोवां मेल हरि मिलाणा। सच दरबार आप सुहावणा। पहली हाढ़ कराए चरन धूढ़ इशनाना। तिन्नां लोकां हरि एका रक्खे आणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाए, राजा राणा पकड़ उठाए , आप आपणी सरनी लाणा। राजे राणे उठ उठ वेखण। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखण। जोत सरूपी धारे भेखण। आप मिटाए बिधना रेखण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, दर घर साचे मंगल गाए, संत रलाए वड वडभागी। वड वडभागी सुहञ्जणी रैण जागी। गुरसिख बणे हँस कागी। दोए जोड़ चरन प्रीती प्रभ लागी। आप बणाए भाई भैण। भाई भैण आप भ्राता। साचे दर मिले इक्क सच्ची सुगाता। कलिजुग मिटे तेरी अन्धेरी राता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सारी संग रलाई, कलिजुग तेरी अन्त मुकाण आपे लाही, जगत तुट्टा नाता। जगत नाता दित्ता तोड़। चढ़ के आया शब्द घोड़। दूर दुराडा गया बौहड़। पहला मारे शब्द तीर विच कूट दीन मुहम्मद होवे चौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डण्डा एका झण्डा, पाई पहली वंडा, चढ़

के शब्द घोड़। साचा घर जिथ्थे कोई जाए ना। ना कोई पिता ना कोई मां। सदा रक्खे ठंडी छाँ। अमृत साचा सीर प्याए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई रक्खे मज्झ गां। साचा सीर आप प्यावणा। गुरमुख सोया आप जगावणा। फड़ फड़ बाहों राहे पावणा। सिध्धा राह इक्क वखावणा। चार वरन एका सरन, निहकलंक कलिजुग अन्त रखावणा। भेख वेख हरि भगवन्त, मेल मिलावा साचे कन्त, राजा राणा आप उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख धर, मस्तूआणे भाग लगावणा। मस्तूआणा सम्बल देस। भुले फिरदे जगत नरेश। राणा संगरूर हरि पकड़ उठाए, शब्द डण्डा सिर लगाए, ना कोई होए सहाए, रो रो कुरलाए, नंगीं पैरीं जाए दर दरबारे, गल विच खुल्ह़े केस। सत्तां दीपां हरि वंड कराए। भारत खण्ड डेरा लाए। जम्बु दीप जोत जगाए। लक्खण दीप शब्द चलाए। करौंच दीप डंक बजाए। पुष्कर दीप सुन लगाए। कुशा दीप होए हलकाए। सलमल दीप होए रुशनाए। सान दीप हरि आप तड़फाए। इक्का जोत सत्तां दीपां करे खेल हरि रघुराए। नौ खण्ड हरि पाए वंड, पहला हिस्सा कुला खण्ड। दूजा हिस्सा इलाबुत। तीजा हिस्सा किं पुरख। चौथा हिस्सा हरिवरख। पंजवां हिस्सा हिरणयमह। छेवां हिस्सा केतमाल। सतवां हिस्सा रमक। अठवां हिस्सा भदर। नौवां हिस्सा भारत खण्ड। नौवां खण्डां प्रभ जाए वंडी। औझड़ राह औखी डण्डी। चारों कुन्ट जीव पखण्डी। कलिजुग जीवां आत्म होई अन्तिम रंडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सभ दीआं कंडां जाए वढ्ढी। बेमुखां हरि वंड कराए। अन्तिम कलिजुग डण्ड लगाए। आपणी हथ्थीं खण्ड खण्ड कराए। चारों तरफ होए रंड, नार सुहागण कोई दिस ना आए। बेमुखां सिर चुक्की पापां पंड, ना कोई लुहाए। कलिजुग औध बेमुखां नाल गई हंढ, सतिजुग साचा प्रभ अबिनाशी मात धराए। जगे जोत विच वरभण्ड, निहकलंक कलि जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्भुज जेरज सेत्ज अंडज़ विच रहाए। चारे खाणी चारे बाणी, पंचम् जेठ भिन्नड़ी रैण प्रभाती वेला, सभना उत्ते सच्ची बाणी। प्रभ अबिनाशी बणया सज्जण सुहेला, मुख लगाए अमृत फल केला, गुरसिक्खां दया कमाए, गुर पूरे मिले जीव पुरानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दर दरबारा आप खुल्ह़ाया, सिँघ सिँघासण डेरा लाया, देवण आया नाम सच्चा दानी। देवे सच्चा नाम दान। किरपा कर हरि भगवान। एथे ओथे दो जहानी, गुरमुख साचे बहि के खाण। एका मारे शब्द कानी, चुक्के जम की कान। सोहँ शब्द जपाए सच्ची बाणी, करे प्रकाश काया कोट तेज भानण भान। फल लगाए सच्ची डाहणी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा बली बलवान, मंगण आए सच्चा शाह। वसे सच घर, हरि दाता बेपरवाह। खुल्ह़ा रक्खे सदा दर, कदे ना होवे ना। लक्ख चुरासी देवे वर, चरन सरन

जो जन जाए पड़, अग्गे होए पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अमृत साचा सीर प्याऐ, जिउँ बालक माता मां। अमृत सीर मुख चुआए। बज़र कपाटी चीर वखाए। साची हाटी आप खुल्हाए। तीर्थ ताटी आत्म सर एका एक दिखाए। आप चढ़ाए औखी घाटी, पंचम् जेठ दया कमाए। गुरमुख साचे चरन लगाए। मिटे कलिजुग अन्धेरी रैण, लाली पाटी, सतिजुग करन आया रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरा साचा लाहा खाटी, वेले अन्त होए सहाए। वेले अन्त होए सहाई। गुर पूरे मिलणा चांईं चांईं। देवे माण थांउँ थाँईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण अट्ठे पहर रसना गाई। रसना गाउणा हरि भगवाना। नौ निध अठारां सिद्ध प्रभ साचे घर उपजाणा। आत्म जाए विध, शब्द तीर इक्क चलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ मिलण दी दस्से बिध, सोहँ सुहागी गीत गाणा। सोहँ गाओ सुहागी गीता। मिले प्रभ हरि साचा मीता। जगत देवे माण ताण, काया करे ठंडा सीता। आप बिठाए, शब्द बबाण इक्क उडाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी नेत्र पेख, गुरसिक्खां परखण आया नीता। गुरमुखां परखे आपे नीती। जिन्हां बख्शे चरन प्रीती। अमृत बख्शे साची धारा, काया करे ठंडी सीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरसिक्खां मिल्या हरि साचा माही। हरि साचा मीत मुरार है। मानस जन्म जग जाणा जीत, करना शब्द प्यार है। सतिजुग बणे तेरी साची रीत, ऊँच नीच भरम निवार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए जिवें सतिजुग बन्ने तेरी धार है। पंचम् जेठ मात प्रभाती। गुरमुखां प्याए बूंद स्वांती। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, खोल्हे आत्म ताकी। साचा लेख आप मिटाए, देवण आया कलिजुग तेरी बाकी। गुरमुख साचे रसना सेवण आया, प्रभ मिल्या भांतन भाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लै के आया शब्द घोड़ा सच्चा राकी। शब्द घोड़े हरि अस्वारा। अमृत देवे साची धारा। गुरमुख विरला सेवे, देवे दरस अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे फल सच्चा मेवा। अमृत वेला हरि सुहाया। अमृत साचा मुख चुआया। हउमे रोग तृष्ना भुक्ख, प्रभ दए गंवाया। काया लग्गे झूठे दुःख, काया कोढ़ दुःख जोड़ जोड़, प्रभ अबिनाशी दए मिटाया। निहकलंक कलि वागां मोड़, कलिजुग अन्धेरा डाहढा पाया। गुरसिख गुर चरन प्रीती जोड़, ना कर तोड़ विछोड़, चढ़या घोड़ धुर दरगाहों आया दौड़, प्रभ अबिनाशी नेत्र खोल्ह, गुरसिक्खां पाया वैण प्रभ पूरे हो सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक देह तजाई, अग्नी भेंट आप चढ़ाई। मात पिता ना कोई रखाई। गुरमुख साचे विच जोत टिकाई। ना कोई भाई ना कोई भैण, ना कोई दिसे धी जवाई। एका गुर संगत तेरी चरन प्रीत प्रभ साचे भाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत मिलण

आया साचा माही। मिलण आया चल दुआरे। गुरमुख साचे संत जन विच मात पुकारे। बेमुखां लाए डन्न, भाण्डे देवे भन्न, जो घड़या लक्ख चुरासी बण ठठयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आप बणाए, काया भाण्डे सर्ब मिटाए, ना कोई रक्खे कोल ठठयारे। सोहणे साचे थेवे लाए, ना कोई संग सुन्यारे। ना कोई सुन्यार धार हरि करतार। ना कोई वेखे चूहड़ा चम्यार। ना कोई वरन ना कोई गोत, एक रंग अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम वेख विचार। प्रभ आया जामा धार। ग़रीब निमाणया आपे पाए सार। ग़रीब निमाणा गले लगाणा। राजा राणा तख्तों लाहणा। चार कुन्ट एका शब्द डंक वजाणा। राउ रंक सर्ब उठाणा। द्वार बंक गुरमुखां आप सुहाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक फेर अख्वाणा। दिल्ली जाए तख्त साचे चरन छुहाणा। प्रगट होए देस माझे, आप संवारे आपणे काजे, निहकलंक नरायण नर, तेरा सच्चा साजन आपे साजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां दए वधाई ख़ुशी मनाई, अनहद वजाए वाजे। अनहद शब्द तेरी सच्ची तूर। प्रभ अबिनाशी आसा मनसा देवे पूर। सर्ब गुणां हरि भरपूर। बेमुखां दिसे दूर दूर। गुरमुखां आया हिस्से सदा दिसे हाज़र हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, देवे साचा वर, साची जोत जगाए, गुरसिख तेरी काया विच टिकाए, होए रुशनाई जिउँ कोहतूर। गुर पूरा भोग लगांयदा। गुरमुखां चोग चुगांयदा। गई रैण सवेर आंयदा। दिन दिहाड़े प्रभ अबिनाशी पेखणा नैण, सोए पूत गुरसिख आप जगांयदा। सृष्ट सबाई वहाए वहन्दे वहिण, धर्म राए जमदूत चारों कुन्ट दुड़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिन दिहाड़े साचे लाड़े शब्द घोड़ी आपे चाढ़े, परम पुरख परमेश्वर साची लाड़ी नाल व्यहंदा। सच दिवस मिले वधाई। पंचम् जेठ रुत्त सुहाई। जोत सरूपी जामा धर, गुर संगत मेल साचा कर, करे खेल हरि रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए, दिन दिहाड़े चोले तन छुहाई। हरि आत्म रत्न अमोल है। पहला तोले पूरा तोल है। वसे गुर संगत कोल है। शब्द वजाए डंक आदि जुगादी, सद ब्रह्मादी रिहा पड़दे खोल्ह है। साचा नाम सदा अनादी, सच वस्त गुरसिक्खा लाधी, पंचम् जेठ सृष्ट सबाई सुत्ती अनभोल है। आपे मथ्थो मथणहारा। करे खेल अपर अपारा। राजे बल तेरी पाए सारा। प्रगट हो मोहणी रूप ल्या अवतारा। दूजा बावन भेख धर, मंगण गया दुआरा। तीजा धनंतर वैद बण, दुक्खां रोगां पाए सारा। दोवें हथ्थीं चले नेत्रा, इक्क बणाया साचा खेत्र, प्रभ अबिनाशी तेरी कोई ना होए झूठी बणतर। पहला रत्न हरि निकाला। नाम विक्ख इक्क प्याला। शिवजी गल पाए कंठ माला। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल जगत निराला। दूजा रत्न हरि विरोले। काम धेन विच्चों बोले।

२५५
०४

अमृत सीर साचा कढ्ढे, प्रभ अबिनाशी मक्खण विच्चों कढ्ढे, साचे धाम आप बहाई, देवतयां दा कुण्डा खोल्हे। जोती जोत सरूप हरि, दूजा गेड़ा आप दवाया। तीजा रत्न कढु वखाया। चिट्टा घोड़ा बाहर आया। दक्खण दिशा आप बहाया। जोत सरूपी जोत हरी, आपणा भाणा आपणे हत्थ रखाया। कढ्ढे रत्न त्रैलोकी नाथी। बाहर निकलया ऐराप्त हाथी। प्रभ साचे दा बणया साथी। पूर्ब दिशा खड़े खड़ोता दोए वक्त सीस झुकाया, खड़ा दर ते टेके मथ्था। पंजवां रत्न कढु बाहरे। कलिजुग जीव होए गंवारे। कवण जाणे तेरी खेल अपारे। सतिजुग करे खेल न्यारे। जोती जोत सरूप हरि, सच सुच्च आपणा भेव आप खुल्हारे। साची करे खेल निराली। विच्चों निकल लछमी गल पाई फूलां माली। प्रभ अबिनाशी किरपा कर साचे धाम आप बहाली। अट्ठे पहर झस्से चरन, दिवस रैण रहे मतवाली। जोती जोत सरूप हरि, आप करे रखवाली। पूरन किरपा हरि साचे करी। बाहर आई अरंभा परी। गंधरब वास में जाए तरी। साचा देवे वर हरी। आपणी किरपा आपे करी। नेत्रा चले वारो वार, अमृत कढ्ढी साची धार, विच्चों मदि होई बाहर, चक्र सुदर्शन हरि हत्थ छुहाया, चारों कुन्ट फिराया सच्चा रत्न आया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, किरपा करी गिरवर गिरधारी। धरत मात हरि साचे तोली। विच्चों निकली नाल संजीवनी बूटी। जोती जोत सरूप हरि, चौदां रत्नां भेव खुल्हाए, गुरमुख विरला सेव कमाए, दर घर साचे दर्शन पाए, कर दरस जिस आत्म त्रैकुटी छुट्टी। माया मोह जगत जंज़ाला। हरि बिन अवर ना दिसे को, सृष्ट सबाई होई कंगाला। अमृत आत्म कोई ना देवे चो, ना दस्से राह सुखाला। साचा बीज कोई ना देवे बो, फल लग्गे आत्म डाला। लक्ख चुरासी रही रो, कलिजुग हड्डां लग्गे पाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा पहले दे, पिच्छे प्रगट आवे हो। सच सुनेहड़ा दे कर घल्ले। एका शब्द धार विच संसार गुर निरँकार जामा धार तलवंडी खेड़ा नानक मल्ले। करया सच विहारा, शब्द थार चलदा रिहा कलम कले। जोती जोत सरूप हरि, गुर सेवा लाई ना जाए छलया ना कोई छले। नानक जोत जगे निराली। कलिजुग मेटे शाही काली। साची जोती दीपक बाली। चार वरनां दा सच्चा बानी, दर दुआरा इक्क रखाया, कोई ना जावे खाली। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सच्चा राह इक्क वखाया, आपे बणया पाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नानक गुर लिख्या लेख धुर, सच प्रीती गई जुड़, मिल्या नर हरि बनवाली। नानक नाम निधान जगत चलाया। गुरमुख विरले किया परवान कन्न सुणाया। बेमुखां आत्म भरया माण ताण, वेला गया किसे हत्थ ना आया। आपे करे पुण छाण। मारे शब्द सच्चा बाण। चार दिशा अट्ठ अट्ठ दुआरे चार उदासीआं, आपे लए करे खेल महान। जोती जोत सरूप हरि, साची सेवा आपे लाई, किरपा कर श्री भगवान। किरपा करे नानक निरँकारी। सृष्ट सबाई जाए तारी।

वंडी जाए नाम, ग़रीब निमाणे गले लगाए, बेमुखां जाए दर दुरकारी। साचा माण ताण आपणे चरन रखाए, गुर पूरे दी बूझ बुझाए, जिथ्थे जगे जोत निरँकारी। गोरख मच्छन्दर बैठे अन्दर, मारन जन्दर ना कोई बूझ बुझारी। एका राह साचा दस्से, जिथ्थे हरि जी साचा वसे, काया डूंघी कन्दर इक्क महला सदा अटल्ला, सदा अटल्ल काया महल अटारी। महल मुनारा दे प्यारा विच संसारा। हरि गिरधारा पावे सारा। करे खेल अपर अपारा। पाए भेख नानक जोत निरँजण निराकारा। नानक निरँकार दस्से धार। चार वरनां इक्क प्यार। धुरदरगाही साचा माही विच संसार। हथ्थ विच फड़ी साची फाही, सतिनाम सतिनाम गुरमुखां गल रिहा डार। गुरमुखां मुड़ मुड़ वेखे, गुण विचारे किरपा धारे, चार कुन्ट चार चुफेरे उठ उठ वाजां मारे, जगी जोत निरालम आओ द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत इक्क अकार। चारों कुन्ट पैण धक्के, ना कोई देवे माण बूरे कक्के, रोड़ां उप्पर सेज विछाई रहे सुत्ता। बेमुख जीव जानण कलिजुग गंवारी, नंगी पैंरी चलदा फिरदा, बाबर शाही रुलदा फिरदा, झूठा शाह अग्गे मुठा। जोती जोत सरूप हरि, मक्के मदीने हुक्म सुणाए, निहकलंक कलि जामा पाए, बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्ता। नक्क गुत्त देवे वढ्ढ। दर घर विच्चों देवे कढ्ढ। ख़ाली घर कोई ना देवे छड्ड, फड़ करे हड्ड हड्ड। शब्द खण्डा देवे वढ्ढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत प्रगटाए, गुरमुख साचे संत जनां आपणी गोद बिठाए, आप लडाए लड। नानक तेरा चल्लया तीर। प्रभ अबिनाशी जोत धर, वडा पैंडा आया चीर। सृष्ट सबाई करे सर, सोहँ शब्द चलाए तीर। किसे कोलों ना जाए डर, मेट मिटाए औलीए पीर, दस्तगीर शाह हकीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राणा सच्चा भाणा आपणे हथ्थ रखाए, किसे हथ्थ ना आए नीर। बेमुखां मुख होया काला निकले दवाला, गुरमुखां हरि साचा हुक्म सुणाया, जगे जोत जिउँ ज्वाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा सच्चा हल बणाया, सोहँ रक्खया तिक्खा फाला। धरत मात इक्क क्यारी। चले हल वारो वारी। प्रभ अबिनाशी पहली रहिल, मक्के मदीने मारी। आपे करे पहलों पहल, वेखो हुन्दी किवें ख्वारी। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघासण बैठा चारों कुन्ट पावे सारी। सुत्ता अन्त ना कोई उठे, बेमुखां ना कोई मनावे, लुकया रहण ना देवे गुठ्ठे, शब्द डण्डा मगर लगावे। धर्म राए दे दर टंगावे पुठ्ठे, हाहाकार करन ना कोई छुडावे। गुरमुखां प्रभ साचा तुठे, लाल अनमुल्लड़े लभ्भे इक्को इक्क मुट्ठे, साचे तोल तुलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सदा अडोल, ना कदे कोई डुलावे। ना डोले ना डोलणहारा। ना तुले, सृष्ट सबाई तोलणहारा। ना भुले, शब्द अगाध बोध बोलणहारा। भाग लगाए गुरमुखां कुले, जो चल आयण चरन दुआरा। पाए पंचम् जेठ मुल्ले, खोल्हे अमृत साचा भण्डारा। बेमुख जीव रहे भुल्ले, निहकलंक

कलि लै अवतारा। जन भगत विच मात फले फुले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे खड़े दर दुआरा। आत्म तन जिस जन हँकार। आए चल हरि द्वार। भरम भुलेखे दए निवार। ना कोई दिसे झूठा यार। तिन्नां लोका इक्को यार। लक्ख चुरासी जिस उपाई, साची जोत विच टिकाई, ब्रह्मा विष्न महेष सेवा लाई। वेंहदा रहे हरि करोड़ तेतीस, देण दुहाई, इन्द्रपुरी हाहाकार मचाई। सिँघ मनजीत दरस साची रीत, सतिजुग साचे पुरी घनक जन्म दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरन मिले वड्याई। हरि सरन मिले वड्याईआ। धरनी धरन गुरमुखां चुकाए मरन डरन, साची डोली आप चढ़ाईआ। आप खुल्हाए हरन फरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सच्चा डेरा लाईआ। गुरमुखां आत्म डेरा लाया, पंचम् जेठ दए वड्याई, आत्म अन्धेरा जाए चुक्क। कलिजुग फेरा जाए मुक्क। अन्तिम वेला गया ढुक्क। ना कोई रोके ना सके रुक। बेमुखां मुख पाए थुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट कर ख्वारी हाहाकारी, मौत लाड़ी फेर बहारी, दर दरबारी शाह सुल्तान जाईं मारी, विच मैदान निहकलंक दरस करीं आण दोहां हत्थां दए प्यारी। पहली कूट दीन मुहम्मदी कर ख्वारी। दूजी कूट चिट्टे फरंगी आवीं जावीं जावीं आवीं मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करी भुक्खी नंगी, ना देवे कोई सहारी। भुक्खी नंगी सृष्ट, लुट्टया माल धन। ना कोई जाणे प्रभ साचे दा साचा इष्ट, ना साचा शब्द सुणे कन्न। राम अवतार गुर वशिष्ट, सृष्ट सबाई चुकाया लहिण देण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेखे नैण। कलिजुग डन्ने बेमुख भन्ने आत्म अन्ने। पाणी मिले ना किसे छन्ने। गुरमुखां आत्म एका मन्ने। अट्ठे पहर दर द्वार खलोता होए सहाई, जिउँ माल चराए धन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आदि अन्त आपे घड़े आपे भन्ने। घड़े भन्ने भन्नणहारा। ना वसे किसे छप्परी छन्ने, जोत सरूपी खेल अपारा। सृष्ट सबाई हंने बन्ने, चले शब्द तीर करारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे नाम दान साचा शब्द सच्ची सरकारा। सच्चा मीत मुरार पुरख करतार है। साल ब्यासी पहले अमृत मेघ दित्ता बरख, चल्ली सच्ची धार है। कलिजुग तेरा लेख परख, सिँघ मताब बध्धी सिर दस्तार है। संत मनी सिँघ कर विचार, दर दर ना होणा मात ख्वार है। सौं जा घर पैर पसार, निहकलंक लए अवतार है। हरि गोबिन्द तेरी सुण पुकार, छेवां जामा सिँघ मताब साचे घर करे प्यार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तेरी रक्खी ओट, साचा शब्द डंक वजायण इक्क अपार है। इक्क नगारा जगत वजाउणा। निहकलंक हरि नाउँ रखाउणा। राउ रंक द्वार बंक एका अंक, चरन टेक सृष्ट सबाई आप रखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सोया तैनूं आप जगाउणा। संत मनी सिँघ सुत्ता पैर पसार। अट्ठे पहर

दिवस रैण, आत्म करे इक्क विचार। दरस पेखण जाए नैण, घनकपुर आए हरि जामा धार। दर दुआरे सच्चा बहिण, चार कुन्ट होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत देवे लहिण देण करे सच प्यार। निहकलंक नरायण नर कल्गीधर शब्द तोड़ा। कलिजुग जीव लभ्भण नीला घोड़ा। दूर खलोते वेखण बांके वाला केहड़ा पैरीं पाया जोड़ा। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ देवे वड्याई, विच मात दित्ती दात वड करामात हरि साचा बौहड़ा। संत मनी सिँघ शब्द जणाया। उन्नी सौ अठताली बिक्रमी जोत जगाया। चुप्प चुपीता साचा संत दर घर साचे आए, भरम भुलेखे गए दूजी वेर दर्शन पाया। प्रभ कर कर हेर फेर दरस दिखाया। दरस कर हरि गिरधारी। संत मनी सिँघ उतरे पारी। दिवस रैण अट्ठे पहर चढ़ी रहे नाम खुमारी। छड्डी आए भाई भैण, देस मालवे छड्डी महल्ल अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा राणा लभ्भा, जिथ्थे मिली सच्ची सरदारी। साचा राणा हरि भगवाना। दर घर आया हो निमाणा। प्रभ अबिनाशी एका देवे धुर फ़रमाणा। सोहँ शब्द आस पास रखाए, आत्म धरवास रखाए चढ़ाए सच बबाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ पूरा गुर इक्को इक्क पछाणा। संत मनी सिँघ कर पछाण। दर घर साचे मिल्या आण। उठ संत वड बलवन्त, प्रभ अबिनाशी चुक साचा कन्त, साचा नाम झुल्ले इक्क निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत खेल करे महान। संत मनी सिँघ शब्द जणाई। निहकलंक हुक्म सुणाई। आपणे हथ्थ डोर रखाई। उठे संत नाल साचा कन्त, सर अमृत नूं करे धाई। जोती जोत सरूप हरि, हरि मन्दिर जाए डेरा लाई। हरि मन्दिर दे वड पुजारी। दुष्ट दुराचार नर नारी। संत महंता होए ख्वारी। मिटदे जाण वारो वारी। लिख्या लेख संत कलम चलाई भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द डण्डा अग्गे डाहया, जिस दा कन्ना आप रखाया, ना कोई सके पछाड़ी। किया खेल हरि गिरधारे। साचा शब्द फेर उपजावे, पुरी अनन्द चल डेरा मल, संत मनी सिँघ वाजां मारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था करे खेल न्यारे। अनन्दपुरी डेरा लाया। चारों तरफ घेरा पाया। चारे राणे दूर दुराडे नेत्र वेख, साचा हुक्म आप सुणाया। निहकलंक प्रगट होया माझे देस, आओ चल सरनाया। अन्तिम अन्त लैणा वेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छड्डे देह निमाणी जगत राणी आए हानी, जोती खेल रचाया, साचा खेल करे कराया। संत मनी सिँघ सहिज सुख धारया। पूर्ब कर्म आप विचारया। मानस जन्म जिस सुधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका हरि रसना नाल उचारया। रसना गाए गोबिन्द गीत। झूठा तन काया छड्डी इक्क प्रीत। मानस जन्म ल्या जगत कलि जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाई रक्खे सदा अतीत। रक्खे सदा अतीत, जगत निशान है। बणया

सच्चा मीत, वाली दो जहान है। चलाए सच्ची रीत, देवी देवत फुल्ल बरसान है। इक्क महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणाए सुहागी गीत, सोहँ रसन वखान है। साचे संत लिख्त लिखाई। बणे बणत निहकलंक तेरी सरनाई। मेल मिलाए पूरे भगवन्त, मिले जगत वड्याई। ना कोई जाणे जीव जन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम होए आप सहाई। संत मनी सिँघ देह तज। सच सिँघासण चढ़या भज्ज। अमृत पीता जा के रज्ज। शब्द ताल गया वज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर साचे घर आप बहाया, पड़दे रिहा कज्ज। करे पुकार रूह निमाणी अमृत प्या सच्चे पाणी। दूई द्वैती पड़दा लाह, भेव खुल्हा खाणी बाणी। साचा छत्र सिर झुला, आत्म जोत जगा महानी। जोती जोत सरूप हरि, इक्को दे सच्चा घर, अन्त चुका जम की कानी। सुण पुकार पुरख अबिनाशया। गुरमुख तार कर प्यार, साची जोत कर प्रकाशया। आपे पुरख आपे नार हरि करतार, आपे देवे शब्द सवास्सया। आपे चुक्के गुरसिक्खां भार हो त्यार, मानस जन्म करे रहिरास्सया। कलिजुग लाहे तन बुख़ार, मारे शब्द कटार पहली वार हो हो त्यार, करे बन्द खुलास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दर दुआरे बण भिखारे सच वणजारे कलिजुग जाए तार। मंगी मंग इक्क उमंग। प्रभ अबिनाशी चाढ़े रंग। शब्द तरंग वसणा अंग संग। कटी भुक्ख नंग। प्रगट होए दरस दिखाया, तीजे लोयण चाढ़ रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट सरन तकाई आए सरनाई, आप वजाई शब्द मृदंग। निहकलंक नरायण नर, सच्चा दुआरा ल्या मंग। आत्म वज्जे मृदंग ढोल नगारा। चढ़े सच्चा रंग, चले शब्द अपर अपारा। साचे शब्द घोड़े कस्सया तंग, गुरमुख साचे हो त्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म पड़दा लाहे इक्क वखाए सच्चा दर दुआरा। सच्चा दर द्वार नेत्र खोल्हे। गुरमुख साचे वेख विचार। प्रभ अबिनाशी आपे बोले, ना होए कदे बन्द कवाड़। ना साड़े धुप्प हाढ़, प्रभ अबिनाशी फिरे पिछे अगाड़। आपे बणे सच्चा तोले, जोत जगाए बहत्तर नाड़। दूई द्वैती बज़र कपाटी देवे पाड़। साची हाटी इक्क खुल्हाए, गुरमुखां साचा राह वखाए, दर घर साचे देवे वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा माण दवाए बणाए साचे लाड़। साचे लाड़े चढ़ घोड़ी। गुर चरन प्रीती साची जोड़ी। लग्गी प्रीत ना किसे तोड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूह निमाणी देवे पाणी, प्रभ अबिनाशी मिल्या इक्को सच्चा हाणी, आप बुझाए तृष्ना अग्ग कलिजुग लग्गी औड़ी। तृष्ना अग्ग लग्गी जग। गुरमुख साचे संत प्रभ अबिनाशी पकड़े तेरे पग। सृष्ट सबाई गई दग। घनक पुर वासी लाह उदासी, शब्द चलाया स्वास स्वासी, चरन प्रीती गई लग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कर बन्द खलासी, पंजां चोरां मार मिटाई आत्म पकड़ शाह रग। पंजां

चोरां वज्जे तीर। घत्ती जाण वहीर। एका देवे साची धीर। करे शांत सरीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दित्ता वर, आया दर ठंडा भए सरीर। आत्म ठंड हरि वरता रिहा। साचा नाम देवे वंड, खुल्ही गंढु बंधा रिहा। गुरसिख आत्म कदे ना होए रंड, सद सुहागण आप रखाईआ। आप उठाए दुक्खां पंड, चरन प्रीती जिस लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नीत गुरमुख परख, शब्द घोड़े दए चढ़ाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार। रसना गाउणा हरि करतार। सोया भगत जिस उठाउणा, आए चल द्वार। फड़ फड़ बाहों राहे पाउणा, अन्तिम कलि ना करे कोई अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्रीती गुरमुख साचे सच प्यार। सच प्यारा जगत विहारा। चरन दुआरा नारी नारा एका धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा तीर चलाए, अमृत सीर मुख चुआए, चलदी रहे सच्ची धारा। अमृत धार वगे तन। ठंडा ठार करे मन। ना आवे हार विच संसार, गुरमुख आत्म जाए मन्न। प्रभ अबिनाशी पसर पसार जोत अकार, साचा शब्द सुणाइन कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए, जो जन चल सरनाई आए, बेड़ा देवे बन्न। बेड़ा बन्ने कंध उठाए। खुशी बन्द बन्द कराए। परमानंद विच समाए। निजानंद सोझी पाए। एका छन्द शब्द सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बख्शिंद, दर घर आयां माण दवाए।

२६१ ०४ आपे बख्शे बख्शण योग। देवे दरस हरि अमोघ। विच्चों कटे हउमे रोग। साचा मेल मिलाया लिख्या धुर संजोग। महाराज २६१ ०४

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी काया ना होए विजोग। साचा रस लैणा चट। जगे जोत काया मट। होए प्रकाश घट घट। आपे ढाहे पापां वट। अग्गे दिसे साचा हट्ट। जोत सरूपी साचा हरि इक्को पहन बैठा साचा बाणा चिट्टा पट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लाहा लैणा खट्ट। साचा लाहा लैण खट्ट, बण वणजारा। प्रभ अबिनाशी करे तरस, देवे नाम अधारा। अमृत मेघ जाए बरस, एका वगे वहिण वडी धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर किसे हथ्थ ना आए, लक्ख चुरासी फिरे हलकाए, निहकलंक नरायण नर, तेरे खड़ा रहे आत्म दर दुआरा। आत्म दर सच्चा दरवाजा। जिथ्थे वसे ग़रीब निवाजा। गुरमुखां रक्खण आया लाजा। आप संवारे आपणा काजा। चारों कुन्ट पैण भाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाया, निहकलंक जोत जगाए, संत मनी सिँघ संग रलाए, पूरा लेखा आप चुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत विच मात देवण आया सच्चा दाजा। गुरसिख आत्म बिल्लाईआ। दर घर साचे दए दुहाईआ। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, एका हरि साचो साचे, करे सर्ब रुशनाईआ। गुरमुख विरला हिरदे वाचे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस साची बूझ बुझाईआ। जगत अन्धेरा आप हटावणा। सन्झ सवेर

इक्क करावणा। शब्द घोड़ा चारों कुन्ट रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आत्म सेजा डेरा लावणा। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारी। निहकलंक नरायण नर अवतारी। एका जोत जगे अटल्ल, काया महल्ल अटारी। सृष्ट सबाई आप भुलाए, कर कर वल छल, ना कोई जाणे निहचल धाम जिथ्थे वसे हरि मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए मंगी मंग पहली वारी। मंगी मंग हरि दए दिलासा। निज घर आत्म रक्खे वासा। साची जोत करे प्रकाशा। एका जोती विच टिकाए ना तोला ना मासा। ना कोई तोले तोल तुलाए, बेमुख जीव करन हासा। कलिजुग अन्तिम जामा पाया, लक्ख चुरासी वेखण आया, आपणी अक्खीं आप तमाशा। सच पुरी हरि तजाईआ। ब्रह्मलोक ना देवे वड्डयाईआ। शिवलोक शिव शंकर गणेश महेष नेत्र खोल्ह रहे तकाईआ। पुरी इन्द्र करोड़ तेतीस देवण दुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, घर साचे मात जोत प्रगटाईआ। मातलोक लोकमात। हरि देवण आया सच्ची दात। गुर संगत बणाए इक्क जमात। ना कोई पुछे ज़ात पात। साचा शब्द देवे दात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे धुरदरगाही इक्क ल्याया नाम सुगात। नाम सुगात जाए वंडी। आप मिटाए भेख जगत पखण्डी। चिट्टा बाणा तन रखाए, सृष्ट सबाई डन्न लगाए, गुरसिक्खां बेड़ा बन्न वखाए, चुक्की फिरे आपणी कंधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ बाहों राहे पाए, सचखण्ड निवासी इक्को लाया साचा डण्डी। सच्चा डण्डा गया लग्ग। गुरमुख धरना संभल पग। जगत अन्धेरी जाणी वग। जोत अग्न जाणी लग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ खेल रचाए, कूजा मिसरी संग रलाए, केसर तिलक मस्तक लाए, संत मनी सिँघ ना कोई करे अज पज। संत मनी सिँघ दित्ता माण। जगाए जोत हरि भगवान। खुल्हे सोत साचा शब्द कन्न सुनाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा चुकावण आया, दे जोत श्री भगवान। संत मनी सिँघ मुख लग्गे सगन, अट्ठे पहर रहे मग्न। किरपा करे साचा हरि, जो जन चरनी मेरी लग्गण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चो सच करे विहारा, विच संसारा बन्न्हे धारा, गुरमुख धुर दरगहि कोई ना दिसे नग्न। नंगा जाए ना दोज़ख़ भाह। धर्म राए ना लए अटका। जम राए दोए जोड़ अग्गे सीस दए झुका। निहकलंक जिध्धर पेखे, साचे राहे देवे पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ माण दवाए, गुर संगत इक्क बहाए सच्चे थां। सच्चा थां इक्क निरँकार। गुरमुखां मिले विच संसार। सृष्ट सबाई करना हाहाकार। अन्तिम वेला जिन्हां खोहणा, ना होवे कोई सहार। गुर चरनी जिन्हां बहिणा, धर्म राए ना मारे डाहढी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर कल्गीधर अवतार। संत मनी सिँघ तिलक लगाया। साची किलक नाद वजाया। चार कुन्ट

२६२
०४

दए सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। होया दरवेश दर दरबार प्रगट जोत श्री भगवाना। ना कोई वरन ना कोई गोत, एका झुल्ले शब्द निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत प्रगटाई, प्रगट होया जिउँ द्वापर कृष्ना कान्हा। कृष्न कान्हा हरि मुरारी। करे खेल विच संसारी। द्वापर तुट्टी कलिजुग गंढ्ढी अन्तिम वारी। दुरबाशा रिखी शब्द धार, तिक्खी होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जन्म दवाया, सिँघ ठाकर नाम रखाया, करे खेल अपर अपारी। सिँघ ठाकर हरि रत्नागर। काया भरे अमृत गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वणज कराए, गुरसिख बणे सच सुदागर। उठ वणज कर वणजारया। गुरसिख पूरे हरि दुलारया। प्रभ अबिनाशी नंगे सिर सीस धर दस्तारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेला वेख तेरा मानस जन्म संवारया। निहकलंक नरायण नर, दूजा जामा फेर दुआया द्वापर रिखी हंकारया। संत मनी सिँघ चुग साची चोग, साचा रस लैणा भोग, इक्को शब्द सच्चा जोग, जगत झूठा माया लूठा वडा रोग, अन्तिम होया मूधा ढूठा होए कर्म विजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप निभाए धुरदरगाह सच्चा सच संजोग। धरी सीस

२६३ ०४ सच्ची दस्तारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। पूर्ब कर्म विच मात विचारे। दित्ता साचा जरम मिटाए भर्म, दरस दिखाए अगम्म २६३ ०४

अपारे। ना कोई रक्खे दूजी शर्म, काया झूठी झूठा चरम, एका जोत हरि गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे जीआ दान करे पार उतारे। नाल भतार तरे नार। एका दस्से हरि प्यार। हिरदे वसे कर विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए, साची सेवा लाए, ना आए कदे हार। दु:ख दर्द जाणे ढैह। साध संत जाणा पैरी पै। अट्ठे पहर दर दुआरे चरन निमस्कारे दूजे थां ना कोई रहे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा माण ताण जन भगतां दए। देवे माण भगत निमाणयां। रक्खे आण चरन ध्यानया। वज्जे बाण सच निशानयां। चुक्के काण विच जहानया। सच्चा देवे पीण खाण, सोहँ नाम इक्क भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन पूरा सतिगुर जाणया। पूरा सतिगुर हाज़र हज़ूर। लिख्या धुर घर आया तुर ना वसे दूर। चरन प्रीती जाए जुड़, आसा मनसा प्रभ साचा पूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म सहिँसा करे दूर। सति सतवन्ती घर रक्खे वास। अट्ठे पहर रहे उदास। करदी रहे आपणा वास। दर खलोती खिड़ खिड़ हस्से, ना आवे गुरसिख तेरे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ चरनां हेठ झस्से, मिटे अन्धेर करे प्रकाश कोट रवि सस्से। ब्रह्मे मिली मात वड्याई। सुरसती नार जिस उपाई। विच्चों नासकां कढ्ढ वखाई। लै के बीना बाहर आई। छत्ती राग रही सुणाई। नारद सुत आप उपजाई। जोती जोत सरूप

हरि, कवण जाणे तेरी वड्याई। नारद सुत कर तप। इक्क जपा साचा जप। तन काया ना कोई रहे चढ़या तप। जोती जोत सरूप हरि, आप बुझाए प्रगट होया आपे आप। नारद होए जगत अनादी। वेखे खेल जगत ब्रह्मादी। जुड़या रहे जोड़ माधव माधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुख आत्म जाए साधी। नास केस बाल यह जन्मा। अट्ठ वर्ष रहे विच भरमा। आपे जाणे आपणे कर्मा। देवे वर किरपा कर माण दवाए ब्रह्मा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त चरन प्रीती इक्क रखाए। सतिजुग त्रेता खेल अपार। द्वापर प्रगट होया कृष्न मुरार। गऊ ग़रीब निमाणयां पावे सार। देवे नाम सच्चा वञ्झ मुहाणयां। बेड़ा करदा जाए पार। माण गंवाए राजे राणयां, हँकारी दुर्योधन मार। जोती जोत सरूप हरि, बिप्पर सुदामे पाए सार। बिधर सुदामा वड कंगाला। ना कोई सच्चा दिसे धन्न माला। फस्सया विच जगत जंज़ाला। अट्ठे पहर हड्डीं पाला। ना कोई निकले साह सुखाला। जोती जोत सरूप हरि, साचे भगत झूठी माया तेरा कट्ठे आप दवाला। झूठी माया गई रुठ। दर घर साचे भगत वसेरा, मिले ना आटा मुट्ठ। प्रभ अबिनाशी खेल रचाया, बिप्पर सवाणी गई रुट्ठ। साचा मिहणा सीने लाया, कृष्न नगीने वड हसीने विच द्वारका बंक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगत भगत जन आपे दए सच्ची सरनाया। बिप्पर सुदामा कर विचार। दर घर साचे हो त्यार। वज्जे शब्द तमाचा हरि हिरदे राचा चढ़या नाम खुमार। काया वेखे भाडा काचा, हरि जी दिसे साचो साचा, जाए दर कृष्न मुरार। जोती जोत सरूप हरि, वड भूप सिँघ सिँघासण डेरा लाए बैठा पैर पसार। सिँघ सिँघासण हरि आप बिराजे। भगतां खड़े दर दरवाजे। दर दरबान अग्गे आया, दोवें जोड़ करे पुकार। ग़रीब निमाणे भुक्खा ब्रह्मण इक्क तसाया, कृष्न मुरारे मारे अवाज़े। बिप्पर सुदामा नां सुणाया। नेत्र वेखा आपे आप, जोती जोत सरूप हरि, छड्ड सिँघासण जन भगतां रक्खण आया लाजे। आया चल भगत द्वार। वड सिँघासण हरि जी मुरार। दोए जोड़ करे निमस्कार। लई प्रदखणा बिप्पर सुदामा खड़ा विचकार। आपणी गोद उठाया हरि दया कमाया , सिँघ सिँघासण डेरा लाया, दित्ती पैज संवार। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जन भगतां साचे संतां करदा आया सच प्यार। बिप्पर सुदामे आई लज। बहुते करे अज्ज पज्ज। केहड़ा दस्से मैं जावां भज्ज। दर दरबार साचा लग्गा कवण देवे पड़दे कज्ज। जोती जोत सरूप हरि, अग्गे होए खलोता बिप्पर सुदामे दर्शन कर लै रज्ज। दर्शन कर हरि मुरार। लथ्थे तन दलिद्र भार। जोती जोत सरूप हरि, आत्म वेखे वेख विचार। आया दर लै के पूजा। रख्या भेव आत्म गूझा। साचे राह प्रभ साचे सूझा। जोती जोत सरूप हरि, आप चुकाए भेव एका दूजा। कृष्न मुरारी रिहा बोल। बिप्पर सुदामे गंढ्ढी खोल्ह। केहड़ी वस्त तूं रक्खी कोल। जोती

जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे भगत जन आपणी गोद उठाए करे चोल्ह। बिप्पर सुदामा की करे विचारा। पल्ले ना कोई दाम, इक्को सुक्का दिसे चाम, दूजा पीणा नाम जाम, अमृत चले सच फुहारा। चारों कुन्ट दिसे राम घनईआ शाम। जोत सरूपी पसर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे खोल्हे गंढु देवे वंड, पल्ले बन्न्हे जो तन्दल भारा। तन्दल तिल भगत भगवान। दोए गए मिल, सृष्ट सबाई गई हिल्ल, शब्द तीर चढ़या चिल्ल, जोती जोत सरूप हरि, इक्को नाम साची मेख लगाए धरत मात तेरे विच किल्ल। साचे दर मेरी वड्याई , मुड़या घर चांईं चांईं। दोए जोड़ करे बेनन्ती, एका अर्ज़ आप सुणाई। किरपा करी अन्त भगवन्ती, चरन सेवा फेर कराई। घर वेखे मेरी नार सतवन्ती, अट्ठे पहर रहे भुक्खी तिहाई। टिकाणा मिले ना जीव जन्ती, इक्को ओट तेरे चरन रखाई। जोती जोत सरूप हरि, साचा सुखन जन भगतां अग्गों रिहा सुणाई। जन भगत हरि दुलारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। कलिजुग वरते विच संसारे। ईसा मूसा लायण नाअरे। संग मुहम्मद चार यारे। दस गुर लए अवतारे। चारों कुन्ट करन पुकारे। शब्द खण्डा विच वरभण्डा मारे अपारे। कलिजुग जीव कोई ना जाणे, अन्तिम होए सर्ब गंवारे। निहकलंक नरायण नर कलि कल्की अवतार चौथे जुग जामा धारे। प्रगट हो गुर गोबिन्द विच हिन्द, करे खेल अपर अपारे। बेमुख रुढ़ाए सागर सिंध, वहाए वहन्दी धारे। गुरमुख बणाए साची बिन्द वड मृगिन्द, बेमुख करन निन्द, ना कोई पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिप्पर सुदामे दित्ता वर साचे घर, द्वापर तेरी अन्तिम वारे। दित्ता वर हरि निरँकार। बिप्पर सुदामा दित्ता तार। कलिजुग वरया विच संसार। प्रगट होया हरि निरँकार। सोहँ शब्द रहे रसन अपार। आत्म लथ्थे तन अफार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, फड़ फड़ बाहों जाए तार। बिप्पर सुदामे जामा पाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। साचा नगर खेड़ा खुल्हा वेहड़ा इक्क रखाया। चौथे जुग दित्ता गेड़ा, गुरमुख साचा आप उपाया। मातलोक मुकाए झूठा झेड़ा, गुरमुखां बेड़ा बन्न वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिप्पर सुदामे साचे रामे विच मात जन्म दवाया। मात जन्मे मिटे भरमे वडे होए कर्मे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाया, इक्क ध्यान चरन लगाया। ना जन्मे ना मरे, बिप्पर सुदामे लेख लिखाए। दूजा जामा मात दवाए। सिँघ प्रीतम नाम रखाए। सिँघ पाल तेरी रक्खे लाज, सोहँ शब्द मार उडार, दूती दुष्ट जायण भाग, शब्द तीर इक्क चलाए। शब्द सरूपी रिहा गज्ज, गुरसिख तेरी आत्म मारे इक्क अवाज़, साचा डेरा आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया देस माझ, गुरसिक्खां संवारे आप काज, निहकलंक नरायण आप आपणा काज संवारे। प्रीतम सिँघ प्रीत निभाईआ। बिप्पर सुदामे सेव कमाईआ। कलिजुग अन्त मिले वड्डुयाईआ।

चार कुन्ट होए रुशनाईआ। निहकलंक वजा डंक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। वेखो उठ उठ राउ रंक, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। शब्द लगाए ठनक, दिनो दिन करे दूण सवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा देवे ना आवे तोट, अतुट्ट भण्डार वंडण आईआ। विच संसारा जन भगतां करे आप प्यारा। देंदा जाए वारो वारा। चारों कुन्ट वेंहदा जाए, लक्ख चुरासी पावे सारा। चारे कुन्ट उठ उठ वेखे, निहकलंक नर अवतारा। बेमुखां कढ्ढे भरम भुलेखे, जो जीव होए हँकारा। वेद पुरान खाणी बाणी बेमुखां तोड़े जगत हँकारा। बन्न्हे सीस सच्चा दस्तारा। संत मनी सिँघ भरया पाणी, निहकलंक छड्ड देह दूजी वार बणया हाणी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म रिहा संवारा। मानस जन्म दए संवार। मनी सिँघ जन्म दवाया शब्दी धार। आपणी देह आप तजाई, घनकपुर दे विच जलाई। इक्क समाध आप रखाई। जगत विवाद सर्ब मिटाई। एका नाद शब्द वजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणे लोकाई। आपणी देह हरि तजा के। बेमुखां तों मुख छुपाया, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया, गुरसिक्खां एका सुख वखा के। प्रगट होया निहकलंक बली बलवान, जोत सरूपी जामा पा के। ना हथ्थ फड़े तीर कमान, चले इक्क रसन कटार, चारों कुन्ट राजे राणे डिग्गण चरनी आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द कन्न सुणाए वाली हिन्द फड़ उठा के। वाली हिन्द उठ हो त्यार। निहकलंक कलि आया जामा धार। दिल्ली तख्त सुत्ता पैर पसार। प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर लिखाई जावे लिख्त, संत मनी सिँघ बण लिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाया, इक्क लाए सच्चा दरबार। इक्क लाए सच दरबारा। वाली हिन्द आए दुआरा। निहकलंक बैठे चरन दुआरा। देवे जोत प्रभ शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां बूझ बुझाए, चौथा घर फेर वखाए जिथ्थे वसे हरि निरँकारा। पंचम् शब्द सच निशान है। देवे कन्त इक्क भगवान है। सोहँ बणाए जगत बणत, आदि अन्त विच जहान है। चारे बणे सच्चे यार, चार कुन्ट खड़े रहण दर दरबान है। जोती जोत सरूप हरि, पंजवें देवे इक्का वर, सभनां उप्पर रक्खे बली बलवान है। पंजवां इक्क चोट नगारा। चलदी रहे शब्द धारा। डिगदी रहे कँवल मझारा। उल्टे नाभी कँवल खिले गुलज़ारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां खोल्हे दस्म दुआरा। प्रभ अबिनाशी दया कमाई जांदा। हथ्थ आपणे छत्र उठाई जांदा। गुरमुखां सिर झुलाई जांदा। साची जोत विच टिकाई जांदा। महिंमा हरि अगणत, गुरमुख साचे साचा भेव खुल्हाई जांदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका थां दोहां धिरां मेल मिलाई जांदा। साचा हरि साचा घर साचा देवे वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे साचा माण दवाए दया कमाए, आपणी हथ्थीं सीस

छत्र झुलाई जांदा। छत्र सीस हरि जगदीश। भेव खुल्हाए भिन्नड़ी रैण बीस इकीस। साचे लेख लिखाए, कोई ना करे प्रभ साचे दी रीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जन जपो शब्द साचा एका दस्से शरअ शरायत, ना कोई पढ़ाए दूजी हदीस। ना कोई पढ़ाए होर हदीसा। मेट मिटाए मूसा ईसा। रक्खे लाज गुरसिख तेरे केसां सीसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर जोत जगाए, आपणा डंक सच्चो सच वजाए श्री हरि नर गुर दस्मेसा। गुर दस्मेस जोत अकाली। प्रगट हो करे रखवाली। गुरमुखां बणे साचा पाली विच मात पताली। कलिजुग वेला अन्तिम नेड़े आया, नगर खेड़ा ढाहवण आया, फुल झाड़े बेमुखां लग्गे पत डाली। पत डाल जाए झड़। खाली दिसण सारे धड़। शब्द उठाए मगर लगाए इक्क वहाए आपणा हड़। बेमुख जीव सर्ब रुढ़ाए, लाड़ी मौत तेरे अग्गे लाए, धर्म राए दर जाण वड़। गुरमुख साचे चरन बहाए अन्तिम वेले बाहों फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा खण्डा हथ्थ फड़ाया, पंजां चोरां नाल रहे लड़। संत जनां होए सहाई। पंजां चोरां दए सजाई। अन्दर बैठे हाहाकार पुकारन, ना सके कोई छुडाई। बेमुखां नूं वाजां मारन, जन संतां रहण सरनाई। काम क्रोध हँकार लोभ मोह बेमुखां नाल प्रनाई। गुरसिख तेरी आत्म साची जोत करे रुशनाई। पंजां चोरां आवे डर, मौत देवे हर। साचा धर्म ना छड्डीं, जाणा साचे घर। चुकाई जाए हरि साचा जम की कान, एका नाम वक्ख कर। गुरमुख साचा आप पछाणे, लक्खां ताईं कक्ख कर। सतिजुग साचे तेरा चिट्टा चोला, प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा व्याहवण आया अन्तिम बोला, शब्द घोड़ चढ़ांयदा। सोहँ सुणाए सच्चा ढोला, गुर संगत संग रलांयदा। संत मनी सिँघ हरि पड़दा खोल्हा, बहिणा देण चुकांयदा। किया भेंट प्रभ साचे अग्गे चोला, हरि साचा तन छुहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखारी आपणी बणत आप बणांयदा। आप बणाए सच्चा सिक्दार। करे न्याउँ धर्म दरबार। सोहँ शब्द रक्खे ठंडी छाउँ विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ करन आया सच्चा इक्क विहार। संत मनी सिँघ सच दरबारी। देवे नाम शब्द उडारी। निहकलंक होया पहरेदारी। सृष्ट सबाई करी जाए ख़बरदारी। गुरमुख साचे तारी जावे वारो वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां इक्क सरन रखाए, सतिजुग साचा मार्ग लाए, ना कोई जम्मे पुत्त धी कुँवारी। सच्चा मार्ग हरि प्रभ लाणा। अठारां बरनां भेव चुकाणा। छत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई अख्वाणा। गैल गुंड दोवें अन्त मेट मिटाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दस्से सच टिकाणा। चार वरन सच दुआरे। सतिजुग साची बज्झे धारे। संत मनी सिँघ तेरे सोहण बंक दुआरे। प्रभ अबिनाशी कर कर वेस, धर धर भेस दर दर घर घर वाजां मारे। खुल्हे रक्खे हरि जी केस, दर दरवेश

२६७
०४

करे भेख अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा बाणा तन छुहाया, संत मनी सिँघ माण दवाया, सतिजुग साचे रूप वटाया। सच दुआरे देवे माण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए चतुर सुजान। भेंट चढ़ाया चिट्टा दुप्पटा। बेमुखां सिर पाए घट्टा। गुरमुखां साचा लाहा खटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आत्म जोत जगाए जगे लट्ट लट्टा। चिट्टा दुपट्टा साची चुन्नी। कलिजुग दी जिस चोटी मुन्नी। प्रभ अबिनाशी आपणा खेल आप रचाए, बेमुख चारों कुन्ट जाए भुन्नी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जन भगतां पुकार आपे सुणी। सुणे पुकार भगत प्यारा। जामा धार हरि अवतारा। निहकलंक नरायण नर सतिजुग साची बन्ने धारा। दरस पेखे जो जन नैण, मन तन उतरे अफारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर प्याए पंजवें छेवीं रैण दोवें इक्क थां बहाए। पंज छे हो इक्ट्ठे। आप गिढ़ाए उलटी लट्ठे। कलिजुग तेरे तपे भट्ठे। प्रभ अबिनाशी रैण सबाई अग्नी डाहे मट्ठे मट्ठे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण भिन्नड़ी साची आवे, छेवां रूप हरि वटावे, गुर संगत करी दर इक्ट्ठे। अद्धी रात रैण विहावे। प्रभ अबिनाशी दया कमावे। चरन धूढ़ घोल गुरमुखां दे मुख चुआवे। आपे वसे आत्म कोल, दूर दुराडा ना डेरा लावे। आत्म पर्दे देवे खोल्ह, तिन्न सौ सट्ठ हाडी डाढा जोड़ जुड़ावे। जगत वाड़ी आपणे हथ्थीं वढ्ढ वढ्ढ, धर्म राए तेरे दर घर बण बण गाडी आप पुचावे। बणे गाडी हरि निरँकारी। धरे वाढी विच संसार, ना कोई माण ताण रखाए घर घर रोवे नर नार, बेमुखां मात लोक विच्चों जाए बाहर काढी। फड़या हथ्थ खण्डा दो धार, पुरीआं लोआं कर अकार, पुरीआं लोआं पाए सार, ब्रह्मा ब्रह्मलोक विच्चों हो जाए बाहर, सिँघ पाल उठ दुलारे प्रभ अबिनाशी देवे इक्क सच्ची सरदारी। सच्ची कर हरि चरन निमस्कारी। आपे होवे पहरेदार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक वजाए डंक, तिन्नां लोकां कराए हाहाकारी। हाहाकार जगत बिल्लाया। शब्द खण्डा दो धार, हरि करतार पंचम् जेठ आपणे हथ्थ उठाया। संत मनी सिँघ तेरी लेख लिख्त अपार, विच दिल्ली बैठ तिन्न साल कलम चलाया। राणे संगरूर तेरा कर्म विचार, साची सेव कमाया। प्रभ अबिनाशी पावे सार, राजे राणे फड़ फड़ मूंह दे भार सुटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका झण्डा ऊँच नीच, दूसर कोए ना सीस झुलाया। सच दरबार हरि निरँकार। कूड़ कुड़यावे कलिजुग जीव रिहा विचार। बेमुख बन्न्हण झूठे दाअवे, अन्तिम वेले बाज़ी जाण हार। ना कोई छुडावे पिता मांवे, झूठे करन जगत प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए, मदिरा मास जो रसना लाए, गुर दर अग्गे ना तजाए, बेमुखां विच नां रखाए, दर घर साचे विच्चों हो जाए बाहर। मदिरा मास जिस रसना लाउणा। बेमुख जीव कलिजुग वेले अन्त ना किसे छुडाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

२६८ ०४

नेत्र लैणा पेख, औलीआ पीर शेख़ जिस मिटाउणा। बेमुख जीव जगत कंगाल। कलिजुग अन्तिम होए बेहाल। आत्म रुल्लया अनमुल्लड़ा लाल। प्रभ अबिनाशी भुल्लया, फल ना लग्गे काया डाल। गुरमुख विरला पूरे तोल तुल्या, प्रभ तारे बिरध जवान बाल। सच भण्डारा प्रभ साचे दा साचा खुल्ह्या, गुरमुखां रिहा सुरत संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाण आया जोत सरूपी बण के काल। काल रूप हरि काला वेस। प्रगट जोत करे हरि माझे देस। भुल्ले रहे नर नरेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरा लेखा आण चुकाया, ना कोई रक्खया भरम भुलेख। लाल रंग हरि वटाया। धरत मात दए दुहाया। कलिजुग होए अन्धेरी रात, पाप वध्या दूण सवाया। मार मात हरि साचे झात, बेमुखां मेरे उप्पर पड़दा पाया। क्यों बैठा इक्क इकांत, सन्झ सवेर किसे दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर लाल चीरा सिर बंधाया। बन्न्हे सिर लाल चीरा। भैणां मिले ना किसे वीरा। प्रभ अबिनाशी पंचम् जेठ चलाए इक्को तीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए मेट मिटाए पीर फकीरा। पीर फकीर सखी सुल्तान। मिटदे जाण विच जहान। डुब्बदी जाए नाल कुरान। मारे फड़ फड़ बेईमान। साचा झुले इक्क निशान। प्रभ अबिनाशी साचे दर दुआरे गया खड़, धरत मात झुल्ले लाल अन्धेरी होए सुंञ मसाण। लहू मिझ घाण साचा विच मात दे दिसे, प्रगटे जोत सिँघ सिँघासण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा चोला तन छुहाया। कलिजुग तेरा डोला प्रभ रंग रंगाया। विच सुहाया हरि भोला भाला, दिस किसे ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को शब्द गोला नाल ल्याया। शब्द ताल काल साचा वज्जे। कलिजुग जीव लाउँदे पज्जे। अन्तिम वेला धरत मात तेरे पड़दे हरि जी कज्जे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट उठ उठ वेखे सज्जे खब्बे। सज्जे खब्बे हरि भगवान। चारे कुन्टां हरि वखान। लाल बाणा धरे श्री भगवान। कलिजुग जीव फेर पछतान। धरत मात तेरी सच तलाई, प्रभ अबिनाशी चोली पाई, बेमुखां तन विच ख़ाक रुलाई, गुरमुखां आया गोद उठान। लाल रंग लाल अनमुल्लड़ा। गुरसिख रखाया इक्क इकल्लड़ा। आप फड़ाया आपणा पलड़ा। सच दुआरा एका मलड़ा। सिँघ मनजीत अग्गे लाया, करोड़ तेतीस सरन बहाया, दर दरबारे देण दुहाया, देवी देवत सर्ब पुकारे, गुरमुखां करे भारा पलड़ा। साची चोली हरि जी रंगी। आप मिटाए शाह फरंगी। चारे कुन्ट उठ उठ वेखे, केहड़ी कूट दिसे नंगी। साचा बाणा हरि जी तन छुहाया, पंचम् जेठ वड वडभागी। लेख लिख्त लिखाए कलिजुग अन्तिम पाए वंडा नर अवतारे। बेमुखां वढ्ढे कंडां, करे खण्ड खण्डा, ना देवे कोई सहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग लाल रंगाया। गुरसिख साचा लाल अनमुल्लड़ा लपेट वखाया। पूरे तोल जो जन तुलड़ा, पंचम् जेठ छाया हेठ

रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल रंगण इक्क चढ़ाया। ना कोई मुलां ना कोई शेख़ शिख़ाना। ना कोई जाणे शाह सुल्ताना। इक्को जोत श्री भगवाना। ज्ञान ध्यान ना कोई विचारे। चरन धूढ़ ना पावे सारे। गुर की बाणी जम की खाणी ना कोई विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग सभ नूं दित्ती आणी, ना कोई पावे सारे। आणा जाणा पीणा खाणा कलिजुग मुक्क जाण। हरे फुल्ल सर्ब सुक्क जाण। घड़ी घड़ी पल पल करे खेल आप भगवान। आप कराए जल थल थल जल, जंगल पहाड़ सर्ब मिट जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तेरा सच निशान, गुरमुख विरले संत जन जगत रहि जाण। लाल रंग गुर संगत जेठूवाल। हरि वसे अंग संग, अट्ठे पहर रिहा सुरत संभाल। आत्म कसी रक्खे तंग, ना होण कदे नंग, देवे माल सच्चा धन, बेड़ा जाए बन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फ़ल लगाए साचे डाल। फुलना फुलना, विच मात फुलना। पूरा कंडा साचा डण्डा, निहकलंक पाए वंडा, साचे तोल तुलना। तोड़े आत्म सर्ब घमंडा, चरन प्रीती घोल घुलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म सुणाए सतिजुग साचे सति दुआरा एको खुल्हणा। इक्क दुआरा जाए खुल। कोई ना लाए हरि जी मुल्ल। देवे माण जो दर आए भुल्ल। अमृत साचा सीर प्याए, भाग लगाए आपणी कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए, चरन प्रीती दस्से मानस देही लेखे लाए, देवे नाम शब्द अनमुल्ल। उची कूके दे दुहाईआ। प्रगट होया साचा माहीआ। साची बणत विच मात जिस बणाईआ। वंडण आया सच्ची दात, साचा तक्कड़ हथ्थ उठाईआ। सोहँ कंडा उत्तम ज़ात, जन भगतां दए गवाहीआ। लभ्भण आया मात, पंचम् जेठ मिले वड्डयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणया तोलणहारा पूरे तोल रिहा तुलाईआ। पूरा तोल तोले तोलणहार। गुर संगत तेरा वेख चरन प्यार। मातलोक ला जाए मेख, ना कोई उखेड़े आपे रक्खणहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच संगत सोहणे फल, कोई ना मुल, मात बगीचा लग्गा भारा। मात लग्गी फुलवाड़ी। गुरमुखां करे शब्द वाड़ी। बेमुखां पकड़े दाढ़ी। हलूणे दे दे हथ्थ उठाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत पूरे तोल रिहा तुलाई। साचा कंडा प्रभ दर पुकारे। आओ सिक्खो उतरो पारे। प्रभ अबिनाशी हथ्थ विच फड़या, दूजा कोई ना एथे चढ़या, गुरमुख साचा पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंचम् जेठ खलोता माझे देस, कर कर वेस शब्द सरूपी वाजां मारे। माझा देस उठ उठ जाग। प्रभ अबिनाशी लाया भाग। सुणाउण आया साचा राग। धोण आया गुर गोबिन्द तेरे लग्गे दाग। उठ उठ वाली हिन्द, प्रभ अबिनाशी वरते सांग। सृष्ट सबाई छपंजा करोड़ गुरसिख आप जगाए। पहलों आप जाए जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

चारों कुन्ट आपणी हथ्थीं आप लगाया बाग़। शब्द फूल जगत बहार है। हरि मिल्या कन्त कन्तूहल, सच्चा मीत मुरार है। आदि अन्त ना जाए भूल, सदा रहे पहरेदार है। गुरमुख विरले शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, प्रभ करन आया ख़बरदार है। कलिजुग तेरा अन्त चुकाया मूल, तेरी कलिजुग भन्नी चूल, सतिजुग सचखण्ड विच्चों आया बाहर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुगां इक्क सच्चा सरदार है। सतिजुग बणाए इक्क सच्ची सरदारी। पंचम् जेठ कर विहार, प्रभ अबिनाशी पहली वारी। ना कोई जाणे शाह दारा, कलिजुग जीव सर्ब गंवार है, प्रभ अबिनाशी फड़या आरा, सोहँ डण्डा जाए पाड़ी। शब्द रक्खे तिक्खी आरी, नर निरँकारा पिच्छे अग्गे मौत लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा माण दवाए, अंग संग आप हो जाए, दूतां दुष्टां जगत हंकारिआं वड गवारिआं प्रभ साचा जाए पाड़ी। नरायण नर गुर गोपाल। नरायण नर भगत रखवाल। नरायण नर तोड़े जगत जंज़ाल। नरायण नर साचा देवे माल धन्न, गुरमुख दर आए कंगाल। नरायण नर पंचम् जेठ देवे साचा वर, गुरमुखां सुरत लए संभाल। नरायण नर फल लगाए साचे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उपजाए साचे लाल। नरायण नर नर हरी। पंचम् जेठ आसा वरी। दर घर आए किरपा करी। गुर संगत साची दर बहाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, देवे दात शब्द सुगात वड करामात, सोहँ शब्द लाए झड़ी। मन्दिरां मसीतां सारे ढाहे, उत्ते किसे ना दिसे कड़ी। नरायण नर निराधार। नरायण नर जोत अकार। नरायण नर चार कुन्ट उठ उठ वेखे, शब्द सरूपी कर पसार। नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची शब्द धुन रिहा सुनार। नरायण नर बंधे धारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। गुर संगत तेरी पैज संवारी। प्रभ अबिनाशी चाढ़े रंगत मंगण आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक देवे सच्ची सरदारी। नरायण नर दर दर बोले। नरायण नर हरि पड़दे खोले। गुरमुख साचे संत जनां आप सुणाए सोहँ सच्चे ढोले। गुरमुख साचे सर्ब उठाए, चारों तरफ आप बणाए दर दे गोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर वेस माझे देस, पंजे रंग आप रंगाए बणाए सच्चे चोले। पहला रंग हरि वखाणे। चिट्टा बणे साचा बाणे। सच सुल्तान सच तख्त बराजे, तिन्नां लोकां लाहुण आया आप मुकाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा जोड़ा पैरीं पाया करया खेल महाने। साचा बाणा तन छुहंदा। वासी पुरी घनक सुरपति राजा इन्द माण गवंदा। गुरमुखां करे बन्द खलासी, छोटे काके बाल अञ्याणे माण दवंदा। बेमुख मारे मदिरा मासी, दर घर आए करन निन्दा। गुरमुख साचे आत्म जोत सदा प्रकाशी, देवे दरस हरि गुणी गहिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जन भगतां सदा बख्शिंदा। साचा किया जगत पसारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। चार कुन्ट करे ख्वारा। धर्म कंडा

आपे लाया, प्रभ अबिनाशी तोलणहारा। गुरमुख तेरी आत्म वज्जे मृदंग ढोल नगारा। वसे तेरी काया चोले, जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए विच संसारा। नरायण नर साचे घर। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, आप खुल्हाए साचा दर। चार कुन्ट बेमुखां जीवां पहली हाढ़ी आवे डर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां साचे संत जनां आप बहाए साचे घर। साचा घर गुर दर वेख। प्रभ अबिनाशी धारे भेख। लग्गी मेख माझे देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे तख्त सुल्तान बराजे वडा नर नरेश। सच्चा नर सच्चा राजा। प्रभ अबिनाशी ग़रीब निवाज़ा। थल्ले रक्खे शब्द घोड़ा सच्चा ताजा। चार कुन्ट चार चुफेर आप संवारे आपणे काजा। बेमुख मारे घेर घेर, गुरमुखां अन्तिम रक्खे लाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आप उपाई, अन्तिम वेले दए मिटाई, गुरमुखां साची बणत बणाई, अनहद शब्द धुन्कारी, आप वजाए अनहद वाजा। सृष्ट सबाई छाण पुण, विच्चों लभ्भे लाल, प्रभ अबिनाशी करे साची कारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे मात देण आया तैनूं सच्ची सरदारी। सतिजुग साचे सच्ची सरदारी। देवे आप हरि निरँकारी। निहकलंक जोत अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सच्ची सरकारी। आपे बणे सच्ची सरकारा। साचे तख्त चरन छुहाए, जाए दिल्ली दरबारा। साची खेल फिर वरताए, सृष्ट सबाई करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा फड़या हथ्थ दो धारा। शब्द खण्डा हथ्थ रिहा सज। गुरमुख साचे संत जनां पड़दे लए कज्ज। पंचम् जेठ खुशी मनाई, दर्शन कर लओ रज्ज। कलिजुग वेला नेड़े आया, ना करन देवे अज्ज पज्ज। जोत सरूपी डेरा लाया, सच सिँघासण रिहा सज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा माण दवाया, दर दुआरे आण बहाया, आपे रक्खे पत लज। नर नरायण नूर नुरान है। एका लेख लिखाए अंजील कुरान है। ईसा मूसा मात उपाए, किरपा करी श्री भगवान है। सच मुहम्मद आप उपाए, देवे शक्त महान है। चार यार संग रलाए, हथ्थ फड़ाए शब्द कटार है। कलिजुग अन्तिम वेला नेड़ ल्याए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल करी जगत अपार है। मुहम्मद मंगया वर सच्चे दरबार है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, कलिजुग साचे तोड़ निभाईं मेरा साथ है। चारों कुन्ट आवे डर, सृष्ट सबाई करां बेमुख, कलिजुग जीव होण सर्ब बेहाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले जामा पाई, सदी चौधवीं मेरा माण ताण शान आपणे चरन रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण बण अमाम मैहन्दी पंचम् जेठ सारा भेव खुल्हाई। नीला चोला हरि रंगाया। संत मनी सिँघ तेरा बचन पूर कराया। पुरी घनक जो लिखाया। अनन्दपुरी जा डंक वजाया। हिन्दू मुस्लिम दोहां सुणाया। निहकलंक आपणे सीस उठाया। गली कूचे होका दे दे आपे दए दुहाया। जोती जोत सरूप

हरि, प्रगट जोत निहकलंक कलि जामा पाया। उठो भाई अमाम मैहन्दी, लज पति मात किसे ना रहन्दी, सच्चा हरि करे नबेड़ा। कलिजुग तेरा उजड़े खेड़ा। धरत मात मंगे वर, प्रभ अबिनाशी खुल्ह्रा करे तेरा वेहड़ा। गुरमुख साचे आए दर, दोए जोड़ सरनी गए पड़, प्रभ अबिनाशी पंचम् जेठ बन्न्है बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम भेख धर, लक्ख चुरासी मुकावण आया झेड़ा। कलिजुग झेड़ा मुकदा जाए। बेमुखां साह सुकदा जाए। गुरमुखां पैंडा मुकदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जामा धारे, कलिजुग बूटा सुक्कदा जाए। पंचम् जेठ ठंडा ठार है। जन भगतां मिल्या सच भतार है। खुशी होई सच्ची सरकार है। अमृत साचा मुख चुआए, गुरमुखां करे प्यार है। चिन्ता रोग दु:ख मिटाए, साचा सुख इक्क उपजाए, दर दरबार बिरध बाल जवान रिहा तार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां कला समरथ हाज़र हज़ूरा, तन पहने सोलां शृंगार है। सोलां शृंगार तन शृंगारे। शब्द अधार इक्क संसारे। गुरमुख साचे संत जन, कर किरपा पार उतारे। बेमुखां लाए डन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खां रोगां गुरमुखां पावे सारे। दुक्खां रोगां डेरा ढठ्ठा। किसे ना दस्से ताप मठ्ठा। प्रभ आपणे चरन सारे दुक्खां करे इक्ठ्ठा। पंचम् जेठ पड़दा पाए, उत्ते रक्खे चिट्टा लठ्ठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत साची कर इक्ठ्ठी, नर नारी पर

२७३ ०४ उपकारी, इक्क रखाए आत्म हथ्था। आत्म हथ्थ गुरसिख सुहेला। प्रभ अबिनाशी मिल्या छैल छबीला। एका शब्द नाम रंगीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत जगाई, गुरमुख साचे संत जनो अन्तिम सच्चा मेला। कर कर हीला करो मेला। उठो धारो बल, प्रभ अबिनाशी साचा पाओ, दिवस रैण रसना गाओ। आत्म सर सरोवर लैणा वर, अन्तिम वेले होए सहाई। साचा माण रखाए शब्द घोड़े चढ़, अन्दर बैठा मारे वाजां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरसिख होए ना कदे भलाओ। ना भुल्लणा, माया कलिजुग गुरसिख ना रुलणा। साचा धाम आप सुहाए, भाग लगाए पिण्ड बुग्घना। वेले अन्त किसे कोई ना पाए मुल्लना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को इक्क सच दुआरा सृष्ट सबाई तेरे अन्दर खुल्ह्रना। सृष्ट सबाई इक्क दुआरा खुल्हे। प्रभ अबिनाशी पावण आया मुल्ले। गुरमुखां साचे संत जनां दर द्वार खुल्हे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिक्खां भाग लगाए, धन्न धन्न जणेंदी माए, मिले वड्याई साची कुले। साची कुल उधरी पार। पाया मुल्ल सच्ची सरकार। ना कोई किया अन्त उधार। गुरमुख साचे संत जन हो जायण पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जूठयां झूठयां देवे दर दुरकार। दर दुरकारे नर नारे, मदिरा मासी होयण ख्वारे। आओ चल सच महल्ल, निहचल धाम इक्क अटल्ल, जिथ्थे वसे हरि निरँकारे। ना कोई वेखो अज्ज

२७३ ०४

कल्ल, कलिजुग पापी जाए जल, अन्तिम वेले पकया फल, प्रभ अबिनाशी सोहँ डण्डे नाल झाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरा बणाए इक्को इक्क अखाड़े। धरत मात तेरा बणे अखाड़ा पहली हाढ़ा। अग्गे लग्गा साचा लाड़ा। आप चबाए सृष्ट सबाई हेठ दाढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए ज़िमी अस्मानी तुटा पाड़ा, ना ज़िमी ना अस्मान। प्रभ अबिनाशी जोत महान। जिथ्थे वसे मेहरबान। शब्द तीर एका कसे, चार कुन्ट मारे बाण। दूर दुराडा खिड़ खिड़ हस्से, कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे हिरदे वसे, आत्म कर पछाण। आत्म कर पछाण हरि निरँकार है। देवे जीआ दान भरे भण्डार है। जगत रक्खे लाज हरि मेहरवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दित्ता पीण खाण सच्चा नाम, गुरमुखां नाम निधान है। गुण निधान गुणवन्ता। भाग लगाए गुरसिख तेरे दर, देवे माण साचे संता। साचा मिल्या मेल श्री भगवन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी दए वड्याई गुरसिख साचे लाल उपजाई, चरन सरन इक्क रखाई आदि अन्त एका धाम रहंदा। अमृत शब्द भण्डार हरि वरतांयदा। गुर संगत आत्म ठंडी, प्रभ अबिनाशी आप करांयदा। बैठ सच सच्चे दरबार, पिछला लेखा आप चुकांयदा। इक्क वखाए सच्चा घर बाहर, जोत सरूपी जोत आप जगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बाल अञ्याणयां आपणी गोद उठांयदा। उठाए गोद बाल निधान। आत्म जाए सोध, देवे माण तान। प्रभ अबिनाशी वड जोधन जोध, शब्द फड़े तीर कमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चिल्ला आप चढ़ाए, खिच्चे रसन कमान। रसन कमाना दए खिच। वज्जे तीर मदीने विच। धरत मात लाल रंग हरि उप्पर पाए, तेरी काया दए सिंच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट करे ख्वारी खाली थां ना छड्डे इंच। चार कुन्ट होए ख्वारा। मिटदा जाए मुहम्मद यारा। चौथे जुग आई हारा। पीर फकीर लग्गे धक्का भारा। शाह हकीर हथ्थ ना आवे नीर, ना देवे कोई सहारा। प्रभ अबिनाशी लाहया चीरा, प्रगट होया वड पीरन पीरा, मारे शब्द सच कटारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत जगाई, कलिजुग सतिजुग तेरी बणत रिहा बणाई, आपे बणे लाड़ी लाड़ा। गुर पूरे कीती चरन प्यारी। दित्ती सच्ची दात धुरदरगाही सच सरदारी। आपे पुच्छे वात, कलिजुग अन्धेरी रात, जिउँ सुदामा कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे लज पति, जिउँ द्रोपता नंगी नारी। रक्खे लाज आप भगवान, तेरे पड़दे लए कज्ज, तेरा झुल्लदा रहे निशान। शब्द ताल सच्चा गया वज्ज, चरन प्रीती निभी नाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सिहरा सीस गुंदाया, आपणा लाल लए बणाया, दूजा जामा फेर दवाया, चली अवल्लड़ी चाल। मानस जन्म हरि दवाए। गुरसिख साचा इक्क उपजाए, मथ्थो तिलक आपणी

हथ्थीं विच मात आप लगाए। प्रगट होए वासी पुरी घनक, गुर गोबिन्द जो गए लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाए।

✻ ६ जेठ २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

कलिजुग सालस आप प्रभ, करे हक्क नबेड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां बन्न्हे आपे बेड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुखां लाए शब्द उखेड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, लक्ख चुरासी देवे एका गेड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आप वसाए तेरी काया नगर खेड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, वडा शाह शहाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, सच्चो सच करे वखाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुख जीआं करे अन्त पछाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां बन्न्हे आत्म शब्द सरूपी हरि जी गाना। बेमुख जीव आप खपाए, मारे शब्द तीर निशाना। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे आप जगाए, करे प्रकाश कोटन भाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुखां आत्म पड़दा पाए होए अन्ध अंध्याना। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरसिख साचे चरन लगाए, बणाए चतुर सुजाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुख गूढ़ी नींद सवाए, ना मिल्या हरि भगवाना। सतिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग साचे मार्ग लाए, देवे नाम सच्चा निशाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, सृष्ट सबाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे सच दलाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, सृष्ट सबाई बणया माली। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां करे हरि रखवाली। सतिजुग सालस आप प्रभ, अन्तिम वेले प्रगट होया हिन्द बाग़ दा वाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, कच्चे फल तोड़े, कलिजुग तेरी झूठी डाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुखां चरन प्रीती जोड़े, अन्तिम निभे नाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, साचा दर साचा घर कोए ना जावे खाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, मिटाए रैण काली। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां पंचम् जेठ आत्म जोती साची बाली। कलिजुग सालस आप प्रभ, करया सच न्याउँ। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख जगाए थाउँ थाउँ। कलिजुग सालस आप प्रभ, वेले अन्तिम रक्खे ठंडी छाउँ। कलिजुग सालस आप प्रभ, प्रगट होए निहकलंक जन भगतां पकड़े बाहों। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख खपाए दर दर फिराए, जिउँ सुंञे घर काउँ। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे वड चतुराई। कलिजुग सालस आप प्रभ, आपणा भेव रिहा छुपाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, निहकलंक नरायण जोत

सरूपी खेल रचाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, तिन्नां लोकां देवे सच सलाही। कलिजुग सालस आप प्रभ, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक सभ थाँईं रक्खे सोहँ नाम सहाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां चरन प्रीती तोड़ निभाई। सतिजुग सालस आप प्रभ, करन करावण जोग। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां बख्शे साचा दरस अमोघ। कलिजुग सालस आप प्रभ, कटण आया हउमे रोग। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां आप मिटाए चिन्ता सोग। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुखां आत्म कराए विजोग। कलिजुग सालस आप प्रभ, सतिजुग साचे माण दवाए, गुरमुख साचे साचा रस प्रभ दर्शन पाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई चार वरन, इक्क सुणाए सोहँ साचा जोग। कलिजुग सालस आप प्रभ, चारे कुन्टां वेख विचारे। सतिजुग सालस आप प्रभ, ऊँच नीच नीच ऊँच एका जोत जगे करतारे। कलिजुग सालस आप प्रभ, राउ रंकां भेव निवारे। कलिजुग सालस आप प्रभ, साधां संतां पावे सारे। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुखां माया पाए बेअन्त सुत्ते गूढ़ी नींद पैर पसारे। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां फड़ फड़ बाहों तारे। कलिजुग सालस आप प्रभ, सृष्ट सबाई वेख सभ्भे। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे संत जनां दर घर जाए लभ्भे। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुख दर तों जायण नस्से। कलिजुग सालस आप प्रभ, होई अन्धेरी रैण सच सुच्च दिस ना आए जिउँ अन्धेरी रैण मस्से। कलिजुग सालस आप प्रभ, आत्म जोत जगाए करे प्रकाश कोट रवि सस्से। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे खेल अपार। कलिजुग सालस आप प्रभ, बन्न्हे साची धार। कलिजुग सालस आप प्रभ, निहकलंक कल्की अवतार। कलिजुग सालस आप प्रभ, लक्ख चुरासी पावे सार। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुखां गल पाए फाँसी अन्तिम वेले आई हार। कलिजुग सालस आप प्रभ, जन भगतां होए दासन दासी, आए चल द्वार। कलिजुग सालस आप प्रभ, आप मिटाए मदिरा मासी, चारों कुन्ट शब्द खण्डा मार। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे संत जनां साचे तोल तुलाए, सोहँ कंडा लग्गे डण्डा, अन्तिम वेले विच संसार। आप चढ़ाए सच बबाण सतिजुग साचे लेख लिखार। खण्डां वरभण्डां विच कलिजुग ना मिले तेरा निशान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई बद्धा गाना, गुरमुखां देवे जोत भाना, करे खेल अपर अपार। साचा झण्डा जाए चढ़। गुरमुख तेरी आत्म दर आपे वेखे सिँघ सिँघासण उप्पर खड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण अट्ठे पहर शब्द सरूपी रिहा लड़। अट्ठे पहर मारे धाड़े। प्रभ अबिनाशी शब्द चले काड़ काड़े। बेमुख जीआं अन्तिम कलि दिन आए माढ़े। प्रभ का भाणा ना जाए टल, वरते पहली हाढ़े, सृष्ट सबाई साड़े।

वक्ख वक्ख करे फड़ फड़, मुख नाल जो लाउँदे नड़। मदिरा मासी कोई रहण ना पाए, आपे मारे फड़ फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरे उत्ते जोत धर, सृष्ट सबाई जाए छड़। कलिजुग सालस आप प्रभ सखी सुल्ताना। कलिजुग सालस आप प्रभ, लिखाए लेख वाली दो जहानां। कलिजुग सालस आप प्रभ, जूठा झूठा मिटे निशाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, साचा माण मात धराए सच सुच्च लग्गे विच जहाना। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क झुलाए सच धर्म दा सच्चा झण्डा, चार कुन्ट वेखे प्रगट होणा जिउँ द्वापर कृष्ना कान्हा। कृष्न मुरारया, जामा धारया विच संसारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आए गुरमुख साचे संत चल दर द्वारया। कलिजुग सालस आप प्रभ, हरि रंग रंगीला। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे सच न्याउँ, बैठ साचे थाउँ, कर कर साचा हीला। चारे कुन्ट प्रभ अबिनाशी जोती अग्न लाए एका तीला। प्रगट हो घनकपुर वासी, तन छुहाया बाणा, चिट्टा सूहा लाल काला नीला। गुरमुखां मानस जन्म करे रहिरासी, कर कर साचा हीला। बेमुखां आत्म लाहे उदासी, डंक वजाए असराफीला। अन्तिम गूढ़ी नींद सवाए, मगर लगाए अज़राईला। सच सुनेहड़ा आप सुणाए, मातलोक विच आए बण फरिश्ता ज़बराईला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द इक्क वरताया, गुरसिक्खां आत्म आप
२७७ ०४ धराया, देवे सच्ची रोज़ी राज़क रहीमा, रहीम करीमा गुणी गनीमा, नाल रखाया मेकाईला। चार फ़रिसते आयण दर। साचा २७७ ०४
मंगण प्रभ दर वर, प्रभ अबिनाशी किरपा कर। उम्मत नबी रसूल दी, आपणा आप गई हर। सृष्ट सबाई अन्तिम वेले झूरदी, आत्म गया हँकार वड़। ना जाणे सार कन्त कन्तूहल दी, काया काची हँकारी गढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वर झोली पा। कलिजुग सालस आप प्रभ, किल विख पाप गंवाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे जगत उपाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, विछड़यां हरि मेल मिलाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरसिख आत्म भुक्खड़यां प्रगट जोत दरस दिखाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, मात गर्भ उल्टे रुक्खड़यां प्रभ लक्ख चुरासी फंद कटाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुखां कलिजुग लग्गी भुक्खड़या, प्रभ अमृत साचा सीर पिलाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, उज्जल कराए मुखड़या, जो जन सरनाई आए। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ सोहँ सच्चा गीत सुहागी आपे गाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुख विचारे आत्म मन्दे। कलिजुग सालस आप प्रभ, लाए झूठे धन्दे। कलिजुग सालस आप प्रभ, दर रहण ना पायण मदिरा मासी गन्दे। कलिजुग सालस आप प्रभ, आत्म हँकारीआं आपे मारे झूठे जंदे। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख झूठे जगत वणजारया, दुखी रक्खे बन्द

बन्दे। कलिजुग सालस आप प्रभ, कलि बणे विचोला। गुरमुख साचे संत जनां आप सुणाए साचा बोला। साचा देवे नाम धन्ना, पहलां तन छुहाया चिट्टा चोला। आत्म गुरसिख जाए मन, प्रभ अबिनाशी होए चरन गोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अचरज खेल खेला। आप आपणा खेल रचाया। भोला भाला बण के आया। साचा डोला नाल ल्याया। साची दरगहि लए बहाया। सृष्ट सबाई रही रो, प्रभ का भेव किसे ना पाया। आपे गुरसिख माणक मोती सोहणे हार कंठ बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भेव आप समाया। कलिजुग सालस आप प्रभ, चारों कुन्ट उठ उठ तक्के। कलिजुग सालस आप प्रभ, वेख वखाणे मदीने मक्के। कलिजुग सालस आप प्रभ, उम्मत नबी रसूल दी चारों कुन्ट पैण धक्के। कलिजुग सालस आप प्रभ, गौंस मजौर पीर फ़कीर आपे जावण धक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली कूट हुक्म सुणाए, साचा डंक आप वजाए, राउ रंक सर्ब उठाए, धर्म राए दर सारे धक्के। पहली कूट तीर तुफंग। प्रभ अबिनाशी वेखे रंग। वगे सच्ची धार, लहू मिझ भरी जाए गंग। प्रगट हो हरि विच संसार, चारों कुन्ट करावे जंग। गुरमुख साचे जाए तार, मानस जन्म ना होए भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट हो गुरमुखां कटण आया भुक्ख नंग। भुक्ख नंग आपे कटे। आपे मेटे दूई द्वैती फट्टे। साचा संत आप लपेटे शब्द पट्टे। पंचम् जेठ जोत जगाए काया मट्टे। बेमुख सारे गए रुट्ठ, गुरसिख बन्ने एका मुट्ठे। बेमुख कलिजुग जीव झूठी माटी झूठी मते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुणे छाणे बेमुख दर तों जायण नट्ठ। कलिजुग सालस आप प्रभ, दए दुहाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, साची रचना मात रचाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, साचा कंडा हथ्थ विच फड़या, सोहँ डण्डा उत्ते धरया, साचा तोल रिहा तुलाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे खेल विच वरभण्डा, पड़दा उहला उहला पड़दा ना कोई रखाई। कलिजुग सालस आप प्रभ, सृष्ट सबाई आपे घड़े आपे भन्ने, अट्ठे पहर लड़े, शब्द तीर रिहा चलाई। कोई ना अग्गे आए नेड़े अन्दर जायण वड़, किला कोट ना कोई अटकाई। गुरमुख विरला अग्गे हो हो फड़दा, जिस जन पूरन बूझ बुझाई। बेमुख कोई ना अग्गे अड़दा, प्रभ मूंह दे भार सुटाई। वेखो खेल सच्चे नर हरि दा, सृष्ट सबाई लए उठाई। कादर करता वड धरनी धरता, आपणे भाणे रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर, सच नयां कराई। कलिजुग सालस आप प्रभ, हरि छैल छबीला। प्रगट हो निहकलंक विच मात लगाए साचा कीला। इक्क लगाए शब्द डंक, गल पहने चोला नीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सगन मुख लगाए, पंचम् जेठ दुःख मिटाए, अमृत भण्डार गुरमुख विरला पाए, दर आए कर हीला। कलिजुग सालस आप प्रभ, धुरदरगाही सच्चा जामन। कलिजुग सालस आप

२७८
०४

प्रभ, जिउँ सतिजुग भेख धारे बावन। कलिजुग सालस आप प्रभ, वेख विचारे किरपा धारे, जिउँ त्रेते रामा रावण। कलिजुग सालस आप प्रभ, जिउँ द्वापर कृष्न मुरार, पंजां पांडो पकड़े दामन। कलिजुग सालस आप प्रभ, आपे पूर करे भगतां कामन। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच चलाए एका सच्चा नाम निशानन। कलिजुग सालस आप प्रभ, जग साचा मीता। कलिजुग सालस आप प्रभ, प्रखण आया सृष्ट सबाई वेले अन्तिम नीता। कलिजुग सालस आप प्रभ, साचा शब्द इक्क सुणाए, सतिजुग साचा मार्ग लाए, माण रखाए जिउँ अठारां ध्याए गीता। सतिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे लए उपाए, विच मात जन्म दवाए, सतिजुग सालस आप प्रभ, सति सरूपी साची जोती विच टिकाए, वरन गोत भेव चुकाए, आप चलाए साची रीता। कलिजुग सालस आप प्रभ, हथ्थ हथौड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, लक्ख चुरासी आपे वेखे परखे कलिजुग जीव मिठ्ठा कौड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख उपजाए आप चढ़ाए उच्चा सुच्चा इक्को पौड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, शब्द सरूपी पंचम् जेठ चढ़ के आए, चिट्टे अस्व साचे घोड़ा। कलिजुग सालस आप प्रभ, आप वखाए साचा हुक्म सुणाए, वक्त रहि गया थोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंडत पांधे विच काशी प्राग लभ्भदे फिरदे, प्रगट होणा घर ब्रह्मण गौड़ा। ना कोई वेखे वेख वखाणे। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणे। गुरमुख विरले प्रभ अबिनाशी आप पछाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् बाणे तन छुहाए। आपणी दया आप कमाए। पंचम् जेठ वक्त सुहाए। वड वड सेठ दए मिटाए। गुरमुखां रक्खे साया हेठ, कलिजुग भन्ने कौड़े रेठ, ना कोई अन्तिम छुडाए। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त सच निउँ कराए। कलिजुग सालस आप प्रभ, सुखी सरवर। कलिजुग सालस आप प्रभ, चारों कुन्ट जाए दर दर घर घर। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख जगाए बाहों फड़ फड़। कलिजुग सालस आप प्रभ, बेमुख मिटाए मरन लड़ लड़। कलिजुग सालस आप प्रभ, गुरमुख साचे संत उठाए शब्द सरूपी अन्दर वड़ वड़। कलिजुग सालस आप प्रभ, कलिजुग जीव दए खपाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्ख कराए सिर सिर धड़ धड़। सिर सिर धड़ धड़ होयण वक्ख। चारों कुन्ट लाउँदे भक्ख। गुरमुख साचे संत जनां, पंचम् जेठ किरपा कर, प्रभ अबिनाशी लए रक्ख। प्रगट होए घनकपुर वासी। गुर संगत करे चरन दासी। ना कोई बहाए दर मदिरा मासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे वेखे वेख वखाणे, बेमुख जीवां काया भाण्डे होए सक्ख। काया भाण्डे होए सक्खणे। अन्तिम वेले ना किसे रक्खणे। गुरमुख साचे संत जन प्रभ अबिनाशी किरपा कर, कलिजुग कीने वखरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को झेड़ा आप चुकाए, शब्द उखेड़ा

एका लाए, नीला बाणा तन छुहाए, सयद मुहम्मद दीन दरस दिखाए उत्ते रोड़ी सखरे। रोड़ी सखर हरि करे वक्खर। प्रभ अबिनाशी इक्क लिखाए अक्खर। नीला चोला आप पहनाए, आप आपणा खेल रचाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे जंगल जूह वड वड पत्थर। कलिजुग सालस आप प्रभ, करे खेल अपार। कलिजुग सालस आप प्रभ, नीला चोला तन छुहाए, निहकलंक कल्गी अवतार। चारे कुन्ट उठ उठ वेखे, करे सोलां तन शृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ दया कमाए, आपणा भाणा आप वरताए, दीन मुहम्मद सोया हरि जगाए, प्रगट होया विच माझे देस। इबराहीम वड गनीम बलख बुख़ारे लए जगाए। बल्ख़ बुख़ारा हरि विचारा। जिथ्थे बैठा ऐली अल्ला नूर प्यारा। अट्ठे पहर रहे इकल्ला, मल्लया इक्क दुआरा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, धुरदरगाही घलया। सोहँ शब्द चढ़या चिल्लया। काबल कंधारी मारे धाड़ा, जूह जंगल उजाड़ पहाड़ प्रभ अबिनाशी लाहे उचे टिलया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल हरि करतार, बावन भेख किया भगवान, राजे बल दीआ दान, समुंद सागर रिड़कया। कढ्ढे चौदां लाल रत्न भगवान, अमृत मेघ चुआया मुख, करोड़ तेतीस देवत बण जाण, बेमुख मुख मदिरा आप लगाया, वेले अन्त आप पछतान। मोहणी रूप हरि वटाया। पापी गन्दे आत्म अन्धे आपणा आप डुलाया। किरपा करी श्री भगवान चतुर सुजान, सतिजुग साचे सच न्याउँ कराया। कलिजुग सालस आप प्रभ, बणे दिशा लहन्दी। कलिजुग सालस आप प्रभ, करोड़ तेतीस रसना कहन्दी। कलिजुग सालस आप प्रभ, धरत मात खुशी हो हो बहंदी। कलिजुग सालस आप प्रभ, लक्ख चुरासी भाणा प्रभ का सहन्दी। कलिजुग सालस आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत महान, कलिजुग जीव भुल्ले निधान, आत्म आए ना किसे ज्ञान, घर घर झूठे झुलदे निशान, आत्म वध्या सभ दे माण, ना कोई सके पछाण, प्रगट होणा सदी चौधवीं बुढ्ढा सयद अमाम मैहन्दी बुढ्ढा शेख़ मुलां काज़ी। सदी चौधवीं लए वेख, प्रभ साचा आप चढ़ाए उत्ते शब्द ताज़ी। प्रभ साचा भेख आप वटाए, मारे वड वड गाज़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, उम्मत नबी रसूल दी जिस हरि साचे आपे साजी। बुढ्ढा शेख़ हथ्थ डंगोरा। कोई ना लभ्भे उत्ते चढ़न नूं विच मात घोड़ा। सदी चौधवीं तेरा वेला वक्त रहि गया थोड़ा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मारन आया मक्के मदीने पहला पौड़ा। रोवे रो रो धाहां मारे। संग मुहम्मद चार यारां पुकारे, अन्त भज्जणा रीठा कौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुरदरगाही साचा माही विच मात आया दौड़ा। रो रो पुकारे अमाम मैहन्दी। हथ्थीं लगाई जो रक्खी मैहन्दी। उम्मत नबी रसूल दी इक्क दूजे दे नाल खैहन्दी। भाणा हरि ना कबूलदी, खेल करे दिशा लहन्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा तेरा दर द्वार गुर संगत मिल

मिल बहिंदी। मक्का मदीना वड प्रबीना ए, वडा अमाम तन सुक्का पिंजर आ गया सदी चौधवीं सुक्का चाम, नेत्र नीर वहा गया। प्रभ दर आए भुल्ल बख्शा गया। प्रभ पूरे करे काम, सच मुहम्मद जो लिखा गया। अल्ला हू तेरा सच्चा नाअरा विच मात दे ला गया। निहकलंक प्रगट जोत, सोहँ खण्डा म्यानो कढु आपणे हथ्थ उठा गया। वेखो उलटी वगे नदी नूह, सारे इक्को वार रुढ़ा गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा साचा राणा ग़रीब निमाणा सिँघ सिँघासण गुर साचा बैठ विच मात वरता गया। होया बुढ्ढा आया बुढापा। सदी चौधवीं चढ़या तापा। कलिजुग पाप तेरा कांपा। प्रगट जोत इक्क सुणाया सच्चा जापा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई मूल ना भुलो, पूरे तोल तुलो, ना कोई माई ना कोई बापा। माई बाप ना होए प्यार। ना कोई भाई भैण ना कोई साक सैण, ना कोई पावे सार। गुर दर साचे गुर संगत खिड़ी सच गुलज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप चुकाए लहिण देण, धरया भेख नर अवतार। अन्धा शेख़ हथ्थ डंगोरी। लक्ख बहत्तर आप उठाए हौली हौली आए तोरी। साचा हुक्म आप लिखाए, ना कोई करे चोरी। वेले अन्त ना कोई रक्ख वखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे ना दिसे अन्ध घोरी। अन्ध घोर होया संसार। जोत सरूपी खेल न्यार। धरे भेख गिरवर गिरधार। नेत्र लैणा पेख जो वरते वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नंगी पैरीं भज्जा फिरदा आप उठाए वड वड सूरबीर सरदार। नंगी पैरीं चल चाल। गुरमुख लभ्भे साचे लाल। बेमुखां खाए अन्त जम काल। प्रभ अबिनाशी देवे गाल। किसे रहण ना देवे फल डाल। सृष्ट सबाई आप कराए दो फाड़े दाल। गुरमुख आत्म करे रुशनाई, सृष्ट सबाई सुरत संभाल। कोई ना चले किसे दानाई वड चतुराई, आत्म होई सर्ब कंगाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम कटण आया झूठा जगत जंज़ाल। जगत जंज़ाला देवे तोड़। ना कोई सके अग्गों मोड़। कलिजुग जीव काया कौड़। प्रगट होया निहकलंक घर ब्रह्मण गौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी तेरी पट्टी कर जाए चौड़। गौड़ ब्रह्मण जो जन जाणे। प्रभ अबिनाशी फेर पछाणे। तीजे लोयण वेख वखाणे। चौथे घर आप मिलाए, पंजवें संग तोड़ निभाए, छेवें छे शास्त्र माण गंवाए, सतवें सतां दीपां जोत जगाए, अठवां उठ उठ वेखे गुरमुख साचे संत जगाए, नौवां नौ दर वेखे गुरमुख साचे आप कढाए, साचे दर बहाए, बेमुख जीव ल्याए अन्धे काणे। दसवां दहि दिश धाए, दसवें साल जामा धार प्रभ अबिनाशी अन्त दए कराया। सदी बीस साल ग्यारवां जाए चढ़, एका हड़् दए रुढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन लक्ख चुरासी विच्चों फड़ आपणे चरन बहाया। वड मौलवी वड मौलाणा। गल पाए तसबीआं हथ्थ बन्न्हे गाना। हथ्थ डंगोरी बगले पकड़े कुराना। नाल लै के

आया अट्ठी मौली, उम्मत नबी रसूल दी तैनूं बन्ने गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे तख्त आप बराजे, वड शाहो शाह शहाना। हथ्थीं गाना बन्न के जाए पूर कराए मंग मंगी। काली चोली प्रभ करे नंगी। साची डोली आप बणाए, कुहार बणाए शाह फरंगी। अचरज़ खेल हरि वरताए, साचा रंग रिहा रंगी। दोहां धिरां हरि मेल मिलाए, वड दाता सूरा सरबंगी। बिन बाती बिन तेल जगाए, वेले अन्त ना कोए छुडाए, ना कोई दिसे साचा संगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां धिरां रल मिल आपणी हथ्थीं वाहिण आया कंघी। दोवें नारां होईआं मुटयांर। प्रभ अबिनाशी खेल रचाए, नेत्र नैणी आप वखाए, शाह मुहम्मद संग चार यार। अहिमद मुहम्मद हरि दोवें नाम उपजाए, करे सच विहार। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला नेड़ा करे आज अपर अपार। इक्क पासे शाह फरंगी। दूजे पासे करे कटार रूसा नंगी। विच आई उम्मत नबी रसूल दी भागां मन्दी। साचा दर ना गेंहदी, होई वाशना गन्दी। सच पंघूड़ा धुर दरगाही ना झूलदी, पड़दा माया पाया काला सूसा, होई अन्तिम आत्म अन्धी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत जगाई, उम्मत नबी रसूल दी आप मिटाए, मुड़ के चढ़े ना चन्द नौ चन्दी। चन्द सूरज भए अवतारा। ऐतवार रवी सूरज साचे रथ होए अस्वारा। सोमवार नाम चन्द्रमा उत्ते हरन आसण रखे भारा। मंगल हरि जी भेव खुल्हाए, उत्ते भेडू खेल न्यारा। बुधवार कर विचार, उत्ते घोड़े होए अस्वारा। अग्गे आवे वीरवार, गुर पूरा करे सच विहारा। शुक्रवार शुकर परोहित बल दुआरे भरे अस्वारे उत्ते बैल, प्रभ अबिनाशी खोल्हे भेव अपारा। छनिचरवार उत्ते कच्छ अट्ठे पहर करदा रहे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे आपणी सच्ची धारा। एह काला सूसा आप रखाए। ईसा मूसा दूजे पासे शाह रूसा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उम्मत नबी रसूल दी आप उडाए, जिउँ उडे भूसा। काले सूसे तेरी एह निशानी। मंगण आया बण के दानी। साची चोली रंगण आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल रंग इक्को मंगे। मूल ना संगे कलिजुग जीव होए निधानी। लाल चोली लई रंग। आप कराए साचा जंग। हथ्थीं बन्ने सच्चे गाना, कलिजुग जीव भन्ने जिउँ काची वंग। चिट्टे अस्व हो अस्वार, दोहीं हथ्थीं कसे तंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे आपणा रंग। कस्सया तंग ना होए ढिल्ला। शब्द सरूपी हो अस्वार, तोड़े झूठा किला। वेख वखाणे बूरा कक्का बिला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पड़दा उहला रखाए, ना किसे भोरे पाए, ना कराए चालया छिला। सच पुकारे सच वरतारे। निहकलंक नरायण नर अवतारे। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा झण्डा हथ्थ विच फड़या, अग्गे उहदे कोई ना अड़या, उठे रूसा धाड़े। उठे रूसा लशकर भारी। चारों कुन्ट करे ख्वारी। गुरमुखां

आत्म जोत जगाए जिउँ जगे जोत दीवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा उप्पर पड़दा पाए गुरसिक्खां करे आप रखवाली। काले झण्डे शब्द हुलारा है। देवे हरि नर अवतारा है। बन्ने सीस आपणे इक्क लाल दस्तारा है। मिटदा जाए संग मुहम्मद नाल चार यारां है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया, उत्ते झण्डा काला लाया, करदा जाए आरा पारा है। आरा पारा वंडी जाए चार यारां, उम्मत नबी रसूल दी आया पासा हारा है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहीं हथ्थीं फड़ी दोहीं हथ्थीं रिहा पाड़ा है। सिध्धा पाए हरि जी चीर। कोई ना देवे किसे धीर। भैणां मुड़ मुड़ तक्कण, किधर गए साडे वीर। प्रभ अबिनाशी वटाए भेखण, किसे हथ्थ ना आवे नीर। मिटदे जाण औलीए पीर शेख़न, आप मिटाए तेरी अन्तिम लिखी रेखन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपे कढ्ढे हउमे पीड़। काला सूसा सच मसल्ला। आप उठाए दया कमाए नूर नुरानी जोती अल्ला। ना कोई बणाए वरन गोती, प्रगट होया इक्क इकल्ला, चार कुन्ट रही सोती, वसे इक्को इक्क गुर संगत तेरा सच महल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग साचा समां सुहाए, गुरमुखां आप दया कमाए, आप फड़ाए आपणा पल्ला। साचा पला लैणा फड़। साची पौड़ी जाणा चढ़। प्रभ ढाहुन्दा जाए मेट मिटाउँदा जाए, कोई ना दिसे किला गढ़। सृष्ट सबाई वहाए वहन्दी धार, बेमुख रहे वेखी वेख हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़, विच वरभण्ड सर्ब पछताउँदा जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उच्च दुआरे वड मुनारे ढाहुन्दा जाए। ढाहे उच्च मुनारया। करे खेल नर नरायण नर अवतारया। किसे ना मिले रसना कहण, वेद पुराना सर्ब विचारया। कुरान अंजील इक्ढे हो हो बहिण, प्रभ अबिनाशी केहड़ी कूटे जामा धारया। किसे ना दिसे साचे नैण, आत्म होई सर्ब हंकारया। आप वहाए एका वहण, साचा भेख कर अपर अपारया। मुकाउण आया लैहण देण, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। कोई ना दिसे साक सजण सैण भाई भैण, काला सूसा सभ दे उप्पर पड़दा पा रिहा। काला सूसा काली रात। दोहां बणी इक्क जमात। साचा तुटा चरन नात। पल्ले रही ना नाम दात। वेले अन्त कोए ना पुच्छे वात। धरत मात प्रभ दर कुरलाई, प्रगट होया विच मात। चारों कुन्ट पए दुहाई, प्रभ अबिनाशी वेखे मार झात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौदां तबक आप मिटाए, साचा भेख तन कर वखाए, सत बटन उप्पर लाए, सत्त उंगल विच रखाए, विच्चों बन आप वखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां धिरां नूं उत्तों बद्धा सत्त बटन थले लाए, चौदां तबक कौण छुडाए। सत्त ज़िमी सत्त अस्मानां। प्रगट होया कृष्ना कान्हा। करे खेल वाली दो जहानां। एका झण्डा नाम झुलाए, झुल्ले जगत निशाना। दूजा कोई दिस ना आए, सत्तां दीपां तोड़े माणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तेल अज्ज

चढ़ाया, एह विच रखाया सोहणा काना। सोहणा काना नाल कलीरे। इक्क दूजे तों विछड़न वीरे। अन्तिम वेले लथ्थे चीरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी सच्ची नारी बन्नृण आया हथ्थीं गाना नाल कलीरे। हथ्थ बन्न कलीरे। तैनूं तोरन आए तेरे वीरे। अन्तिम वेला नेड़े आया, तैनूं कोई ना देवे धीरे। उम्मत नबी रसूल दी कढ्ढु हउमे पीड़े। साचा दर जे इक्क कबूल दी, क्यों टुट्टदी हड्डी रीढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्नृण आया सतिजुग साची बीड़े। आपे ग़रीब निमाणा है। आपे बाल अञ्याणा है। आपे नौजवाना है। आपे बिरध निधाना है। हरि आपे चतुर सुजाना है। आपे ब्रह्म ज्ञाना है। आपे चरन धूढ़ इशनाना है। आपे सृष्ट सबाई आपणी हथ्थीं बन्ने गाना है। आपे इक्को तीर चलाए, रसना खिच्च तीर कमाना है। बूरे कक्के काले बिल्ले मार मुकावे, मेटे जगत निशाना है। मन्दिर मसीतां सारे ढाहे, आप झुलाए शब्द निशाना है। लक्ख चुरासी लाए फाहे, धर्म राए वड बली बलवाना है। वेले अन्त ना कोई छुडाए, प्रभ अबिनाशी आपणा मुख छुपाना है। गुरमुख साचे लए बचाए, जिन्नां देवे सोहँ नाम हरि भगवाना है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जगाई जोत विच मात महाना है। मातलोक होए प्रकाश। कलिजुग तेरा अन्ध अन्धेर जाए विनास। आप चुकाए मेर तेर, ना कोई दिसे सन्झ सवेर, शब्द सरूपी एका मण्डल एका रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत

२८४
०४

सर्ब रहाए मात पताल अकाश। मात पताल अकाशा। हरि रक्खे साचा वासा। जन भगतां होया दासा। हथ्थ फड़े सच्चा कासा। शब्द जपाए स्वास स्वासा। मानस जन्म कराए रहिरासा। पंचम् जेठ शाह शाबाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए दासन दासा। दासन दास ग़रीब निमाणा। प्रभ अबिनाशी हरि भगवाना। गुरमुखां दया कमाए लभ्भे सच टिकाणा। तिन्नां लोकां सार ना पाए, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, आप आपणी जोत जगाए, नाल ल्याए शब्द बबाणा। गुरमुख साचे संत उठाए, अन्तिम वेले लए मिलाए, बाहों फड़ फड़ उप्पर हरि चढ़ाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा धाम गुर संगत अन्तिम वार वखाना। साचा धाम हरि न्यारा। जिथ्थे जगे जोत अपारा। क्या कोई जाणे जीव गंवारा। एका रंग अपर अपारा। पहलों मंगे नानक राए सच्चा सच अपारा। सच नाम हरि झोली पाए, भरया सच भण्डारा। मातलोक विच डेरा लाए, सरगुण करे खेल अपारा। सतिनाम मन्त्र दृढ़ाए, लक्ख चुरासी भुल्ले जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तेरी ओट रखाई नर हरि निरँकारा। निहकलंक दए मात दुहाई। सुत्ती रही जगत लोकाई। किसे ना मिल्या साचा माही। अन्तिम वेले पाए फाही। किसे ना सके कोई छुडाई। साचा देस साचा भेस भुले नर नरेश आप दए दुहाई रसन पुकारदा। प्रभ पंचम् जेठ खुशी मनाई, जन भगतां तारदा। जो जन आए चांईं चांईं, कर किरपा पार

उतारदा। पंचम् जेठ दरस दिखाए दया कमाए, जो जन आए दूर दुराडा चरन निमस्कारदा। गुर पूरे जो जन निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। दर्शन देवे अगम्म अपारे। दूर नेड़े ना हरि विचारे। नगर खेड़े काया घर पसारे। खुल्हे रक्खे वेहड़े सच्चे दर दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। नरायण नरया, गुर संगत बेड़ा पार करया। बेमुखां दर आए डरया। गुरमुख साचे साध संत आसा मनसा पूर करया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरले विच मात दे वरया। आसा मनसा हरि जी पूरे। जो जन चल आए हज़ूरे। आत्म जोती देवे नूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेख आप वटाया, साचा लेख लिखाया, सतिजुग करे कारज पूरे। कारज पूरा हरि करावणा। झूठा तख्त राज काज प्रभ अबिनाशी आप मिटावणा। सतिजुग तेरा साचा साजण साज, सच्चा धर्म आप चलावणा। प्रभ अबिनाशी माझन माझ, शब्द अवाज़ इक्क लगावणा। सिर पहनाए साचा ताज, शब्द बाज गुरसिख तेरी आत्म इक्क उडावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वारी धारी भेख, जिउँ बल दुआरे बावना। अमाम मैहन्दी की करे विचारा। दिशा लहन्दी होए ख्वारा। निहकलंक नरायण नर ल्या अवतारा। वेला अन्त ना कोई छुडाए, हथ्थीं पैरीं जंज़ीर वज्जा भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अपर अपारा। वज्जा जंज़ीर तन बध्या। पूरा हरि किसे ना लध्या। आपणे दर घर वली सखी सुल्तान हरि साचे साचा सद्दया। चार कुन्ट जाए कर सर, आप वहाए इक्को लाल नदीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट सोहँ शब्द धागे नाल बध्या। सोहँ शब्द तेरी साची डोरी। पीर फ़कीर कोई ना सके तोड़ी। अग्गे कोई ना सके एहनूं बौहड़ी। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी कलिजुग थक्के अक्के पए, कोई ना फड़े चढ़ के साची पौड़ी । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जोत धर तिन्नां लोकां इक्क लगाई सोहँ सच्ची पौड़ी। पैरीं बेड़ी हथ्थकड़ी है। बुढ्ढे शेख़ मूंह विच नड़ी है। शब्द कटारी निहकलंक माझे देस हथ्थ विच फड़ी है। फेरी जाए आप बहारी, साचे तोल तोले ना कोई रक्खे सेर धड़ी है। ना कोई अग्गों उठ के बोले। प्रभ अबिनाशी वस्सया विच नीले चोले। अगाध बोध भेव भेखणी सारे खोल्हे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह सुल्तान वड राजान बेईमान बन्न ल्याए बणाए चरन गोले। चरन गोले लए बणा। साचे ढोले शब्द सुणा। नीले चोले प्रभ अबिनाशी तन छुहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उम्मत नबी रसूल दी आपणे भाणे लए चला। साचा भाणा हरि चलाणा। दूजा ना कोई विच रखाणा। तीजा ना कोई दिसे टिकाणा। चौथा यार आप मिटाणा। पंजां सिर हरि ताज रखाणा। वाली हिन्द सरन लगाणा। प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंद, चार वरना माण दवाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण बैठ सृष्ट सबाई तेरा लेख आपणी

हथ्थीं आप लिखाणा। दिल्ली तख्त हरि बराजे। पहलों करे खेल देस माझे। फेर उठाए राजन राजे। सोहँ शब्द मारे वाजे। आप चढ़ाए चिट्टे ताजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा आपे साजण साजे। दिल्ली जाए चरन छुहावणा। साध संत सर्ब उठावणा। साचे कन्त मेल मिलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी रैण अन्धेरी, धूंआं धार सर्ब संसार, आपे आप हटावणा। पैरीं वज्जे जंज़ीरा। वेखे हाल हरि फ़कीरा। आपे बणे शाह हकीरा। उत्तों सिर तों लथ्था चीरा। ना देवे कोई धीरा। बुढ्ढी होई सदी चौधवीं, लक्कीं होण पीड़ां। तुरया जाए ना मुड़या जाए, कलिजुग अन्तिम वेले रुढ़या जाए, आत्म लग्गा हँकारी कीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा बन्नॄण आया बीड़ा। पहले हथ्थ हथ्थकड़ी खोल्ले। जोत सरूपी हरि जी बोले। भाग लग्गा नीले चोले। आप बणाए धर्म राए दे सारे गोले। पहली हाढ़ी पाए सारे धर्म राए साचे डोले। आपणी हथ्थीं तुलाए, मुल्ल कोई ना पाए, जिउँ भो छोले। ना कोई मुल्ल ना कोई कीमत, प्रभ अबिनाश प्रगट होया वड गुणी गनीमत। परखण आया सच घसवटी, नाल ल्याया कलिजुग पापी तेरी ज़ीनत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बाणा आपे पाया, अन्धा काणा आप अखवाया, किसे घर ना दिसे कोई ज़ीनत। प्रभ अन्धा जगत अन्धेरा। कलिजुग तेरा भाग मन्दा, निहकलंक पाया फेरा। आपे परखे पापी गन्दा, चुकाए हेरा फेरा। गुरमुखां तोड़े आत्म जंदा, आत्म आसण लाए डेरा। आप उपजाए परमानंदा, ना लाए देरा। नाल ल्याया सोहँ शब्द साचा रंदा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए सन्झ सवेरा। खब्बे मुहम्मद सज्जे ईसा। दोहां दा नंगा दिसे सीसा। प्रगट होया हरि जगदीशा। भेव खुल्लाए अन्त कराए, साचे लेख लिखाए बीस इकीसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चार कुन्ट एका छत्र झुलाए सीसा। लाल रंग शाह फरंगी। अन्तिम वेले आए तंगी। पिच्छों पिट्ठ होई नंगी। साची दात ना प्रभ दर मंगी। आपे भन्ने कच्ची वंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची फाँसी गल विच पाई जिउँ कृस्तू आई तंगी। चढ़या फाँसी मरीआ जाया। इक्को पूत खुदा ने जाया। साचा सूत ताणा पेटा इक्क रखाया। धुरदरगाही विच मात खेल खलाया। हरि साचा दूत उठे, गेड़ा जगत दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आपणा आपे खेल रचाया। काला मुहम्मद काली धार। चलदी जाए विच संसार। अन्तिम पैणी डाहढी मार। हाडी हाडी करे करतार। बणे सच्चा गाडी, चुक्क लै जाए धर्म राए दे द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा आप चुकाए, ना करे कोई उधार। ना करे कोई उधारा। नाल रखाए चार यारा। संग होए ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द फेरे चार चुफेरे तिक्खा आरा। प्रगट होए घनकपुर वासी। दोहां धिरां चाढ़े फाँसी।

बेमुख हस्सण कर कर हासी। नाल रलाए आप फरांसी। मेट मिटाए मदिरा मासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा होया दासी। आप उठाए शाह फरांसी। एधर उठण पंडत कांसी। भारत मात निहकलंक मंगण आई साची दात, होए चरन दासी। एका दे शब्द वड करामात, लाह मेरी कलिजुग अन्तिम उदासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क अटल्ल अचल्ल सृष्ट सबाई अन्त विनासी। अन्त विनासे सृष्ट सबाई। चारों कुन्ट पए दुहाई, निहकलंक तेरी वड वड्याई। एका जोत होई रुशनाई। कलिजुग जीवां कोई सार ना पाई। हन्झूआं मूंह धोवन, ना कोए लए बचाई। सिर दे वाल सारे खोहवण, कुरान अंजील वेद पुरान खाणी बाणी ना कोई होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को नाम चार कुन्ट करे दुहाई। वेद पुरानां तुट्टा लक्क। प्रभ अबिनाशी मातलोक विच्चों बाहर कराए धक्क। कोए ना होए सहाए, सारे गए थक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी पाउण आया, शब्द सरूपी नकेल नक्क। कुरान अंज़ील सर्ब पुकारे। अन्तिम वेले धाहां मारे। दोवें बाहवां कर कर वाजां मारे। होणा दर दर घर घर सर्ब ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। कुरान कुरलाई दए दुहाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। निहकलंक नरायण नर साची जोत मात जगाई। नीला चोला तन छुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव भविख्त आपणा आप रिहा खुल्लाई। गुर संगत गुर चरन ध्यान रखावे। पूरन इच्छया प्रभ आप करावे। सोहँ शब्द सच दात हरि झोली पावे भिच्छया, खाली कोई ना जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ दर आई संगत जुगां जुगां दी विछड़ी रुठड़ी आपे आण मनावे। आप बणाए गुरसिख दुलारा। किरपा कर हरि निरँकारा। देवे वर सोहँ शब्द अपर अपारा। आत्म भण्डारा देवे भर, ना खाली दिसे गुरसिख तेरी काया तन सच्चा गुरदुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जिथ्थे वसे ला आसण भारा। आए दर बण भिखारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। पंचम् जेठ पहली वारी। साची देवे नाम सुगात वड दात, बणे आप जन भगत चरन पनिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे बिरध बाल नौजवान अञ्याणयां बुढी मां नौजवान मुटयांर धी कुँवारी। सारे रंग आपे वसे। इक्को राह साचा दस्से। चरन प्रीती साची रीती, दो जहान मिले सच्ची सरदारी। दो जहानां देवे माण। पहलों बख्शे चरन ध्यान। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। जो जन मंगण आए सोहँ दान। आत्म काया रंगण आए, प्रभ अबिनाशी अग्गे बण के सच्चा कान्हा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मजन आप कराया। साचा सज्जण आप अख्वाया, चरन धूढ़ कराए सच्चा इशनान। चरन धूढ़ी साची नुहाओ। सोहँ शब्द रसना गाओ। परम पुरख परमेश्वर प्रभ अबिनाशी साचा पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, घर

जाए भुल्ल ना जाओ। घर जाए मूल ना भुलणा। कलिजुग माया विच ना रुलणा। भाग लगाउणा आपणी कुलना। प्रभ धोवे सच्चे झूठे दाग, ना लैंदा कोई मुलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा हट्ट खुल्हाए, चौदां लोकां माण दवाया दर दुआरा एका खुल्हणा। निहकलंक नरायण नर, सोहँ कंडे गुरमुख साचे संत जनों, कलिजुग अन्तिम वेले पूरे तोल तुलना। प्रभ दोवें भुजा उठांयदा। तीजी गुर संगत नाल रलांयदा। चौथा मनी सिँघ माण दवांयदा। चारे भुजां हरि करतार, चतुर्भुज आप अखवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच विहारा किया पंचम् जेठ खुशीआं नाल लोकमात मनांयदा। उठाए भुज वड बलकारी। निहकलंक नर अवतारी। शब्द खण्डा फड़े हथ्थ दो धारी। सतिजुग साचा इक्को अक्खर पढ़े, सोहँ शब्द अपर अपारी। पंजे चोर दर दुआरे रहण खड़े, करदे रहण निमस्कारी। साचे पौड़े गुरसिख साचा चढ़े, प्रभ खिच्च ल्याए चरन द्वारी। कलिजुग जीव वहन्दे वहिण हड़े, आप वहाए वहन्दी धारी। शब्द सरूपी राजे राणे फड़े, गल कुआए पाए भारी। गुरमुखां रक्खे एका धड़े, ना आए पासा हारी। सच चुबारे आपे चढ़े, शब्द हलूणा देवे भारी। बेमुख अन्तिम सारे झड़े, दूर दुराडे पाए सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरी कारी। सच सिँघासण मात धराया। प्रभ अबिनाशी फेरा पाया। धरत मात तेरा दीपक सच्चा, सच्चा थाल विच मात रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, चारों तरफ फेरा लाया। फिरे हरि चार चुफेरे। सृष्ट सबाई आई घेरे। निहकलंक कलि जोत प्रगटाए, आप दवाए उल्टे गेड़े। साचा शब्द डंक वजाई, उजड़ जाण नगर खेड़े। राउ रंक ख़ाक मिलाई, साचा भेड़ हरि जी भेड़े। गुरमुख आत्म ताक खुल्हाई, करे रुशनाई काया वेहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरी सुण पुकार निहकलंक आया करन नबेड़े। करे नबेड़ा सच्चा जोगी। साचा रस प्रभ दर भोगी। मिटाउण आया हँगता रोगी। मिलाउण आया भगत संजोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए। धरत मात दए वड्याए। सतिजुग साचा पूत तेरी गोद बिठाए। नाल रलाए सोहँ शब्द साचा दूत, चार कुन्ट डंक वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समाए। धरत मात हो खुशहाल। प्रभ लभ्भण आया साचे लाल। गुरमुख साचे लए संभाल। तोड़ी जाए जगत जंज़ाल। चरन प्रीती जोड़ी जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निभाए आपणे नाल। निभदी जाए लग्गी तोड़। वेले अन्त ना हरि छुट्टे, ना करे तोड़ विछोड़। बेमुखां हरि आपे कुट्टे, मारे शब्द हथौड़। दोवें हथ्थीं करे, आपे झुगा चौड़। कलिजुग जीवां चोग निखुट्टे, ना सके कोई बौहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अन्तिम दया कमाए, अमृत मेघ आप बरसाए, कलिजुग अन्तिम लग्गी औड़। आपे मुलां आपे काज़ी। बण के आया

सच्चा हाजी। पंचम् वेले पढ़े निमाज़ी। मेट मिटाए वडे वडे शाह गाज़ी। इक्को सच्चा राह वखाए, सृष्ट सबाई जिस साजन साजी। दूसर कोई दिस ना आए, पंचम् जेठ चार कुन्ट सोहँ शब्द प्रभ भेजे भाजी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण ताण रखाए, जो जन आए दर्शन पाए, खुशीआं नाल जाए घर, आपे रिहा राजी। आपणा घर जिस पछाना। दो जहानां विच माना। जिथ्थे वसे हरि भगवाना। इक्को घर इक्को दर, जोत सरूपी खेल महाना। कलिजुग जीव भुल्ले फिरदे, माया झूठी अग्न लूठी मुधी होई आत्म ठूठी, ना कोई करे पछाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द पिलाए, आत्म जोती रक्खे सदा मस्ताना। साची जोती लाए घोटा। हथ्थ विच फड़या सोहँ सोटा। ना एह पतला ना एह मोटा। तेरा बन्ने हरि लंगोटा। विच्चों मात कढ्ढे बाहर, मार मार हँकारी सोटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि परखण आया धरत मात तेरा केहड़ा सपूत खरा खोटा। खोटा खरा आपे परखे। धरत मात अन्तिम वेले मूल ना हरि रक्खे। आप चढ़ाए सोहँ शब्द साचे चरखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ढाहे चार चुफेरे कंधां, गुरमुखां आत्म अमृत बरखे। बरखे अमृत आत्म धार। डिग्गे कँवल मझार। कँवल नाभ होए उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। गुरमुख अन्तिम कर विचार। शब्द डंक वज्जे संसार। प्रभ अबिनाशी खेल किया पंचम् जेठ अचरज़ अपार। आप मिटाए वड वड सेठ, सोहँ डण्डा सिर लग्गे भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी कोई ना पावे सार। आप समझावे देवे मति। सोहँ शब्द दस्से साचा तत्त। सच्चा बीज बिजाए गुरमुख साचे तेरी आत्म वत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सूत्र आपे कत्ते सोहँ चरखा कत। साची सेवा गुर पूरे लाई। शब्द डण्डा गुर संगत लयाई। तरन तारन भेंट चढ़ाई। अचरज खेल हरि वरताई। धरत मात तेरे उत्ते रक्ख, तीर कमान सोहणी बणाई। इक्को रगढ़ा आपे लाया, जगत झगढ़ा वाह वाह पाया। ना कोई सके मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे क्या कोई पछाणे, करे कराए खेल आपणे आप रघुराई। तरन तारन कर विहारा। फेर होया घोड़ अस्वारा। संत मनी सिँघ तेरा मल्लया आण दुआरा। चारों कुन्ट उच्च महल्ल मन्दिर अटारी, ना वस्सया किसे मन्दिर मसीत गुरदुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राह इक्क चलाया, चौहां वरनां ऊँचां नीचां साधां संतां दस्से इक्क प्यारा। सच्चे घोड़े हो अस्वार। चिट्टी चादर सोलां कलीआं तन श्रृंगार। प्रभ अबिनाशी वलीआ छलीआ, कोई ना पावे सार। सृष्ट सबाई होए दुखिया, प्रभ अबिनाशी आपे चीर करे दोफाड़। पाए हार तन श्रृंगार चोला हरि सोलां कलीआं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। सोलां कलीआं, सोलां कला हरि बतावे। पहलां आपणे तन छुहाए। चिट्टे घोड़े

२८६
०४

तेरा आसण, गुरसिक्खां उत्ते पर्दा पावे। आपे होए दास दासन, बाहों फड़ के गले लगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को सच्चा तट्ट तीर्थ, चरन प्रीती चरन धूढ़ी आत्म मूढ़ी, चढ़े रंग गूढ़ी, सति इशनान कराए। एका संगत गुर पूरे आप बणाईआ। ना होर दूसर किसे थाँईंआ। तीसर तीजे लोयण बूझ बुझाईआ। भेख पखण्ड कर कर बहु थक्के, प्रभ तेरी सार किसे ना पाईआ। बेमुख करदे आपणे धक्के, ना जाणे पैणे धक्के, ना सके कोई छुडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ एका संगत दर द्वार बहाईआ। सच्चा दर दुआरा संगत मेल है। चार कुन्ट करे पुकारा, ना मिलदा सज्जण सुहेल है। गुरमुख बणया सच वणजारा, आया चरन दुआरा, जोत जगाए बिन बाती बिन तेल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म हंकारया जीव गंवारया घल्ले धर्म राए दी जेल है। आत्म हँकार मन ललचाए। प्रभ अबिनाशी तैनूं केहड़ा आण भुलावे। आप अडोल अडुल्ल अडुल्ला, सृष्ट सबाई डुलाए रुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा हुक्म सुणाए, ना कोई साचा संत सति वखाए। एका मति श्री भगवाने। दूजा नाही कोई तत्त, ना मिले किसे टिकाणे। आपे जाणे मित गति, जिस दित्ता जीआ दाने। एका हरि सच्चा जानो, हरि जी साचे संत, सृष्ट सबाई झूठी ख़ाक छाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गुणवन्त हरि सच्चा गुण निधाने। जे कोई करे जगत

२६० वड्याई प्रभ पाए गल विच फाही। ना लवे कोई छुडाई। अन्दर बैठा दए दुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी २६०

०४ संगत जिस तजाई। सोहे संगत जिस तजाई। सोहे संगत जिस घर वसे सतिगुर पूरा। दूजा दर क्यों मंगे जो होए अधूरा। ०४

प्रभ आत्म ज्ञान बख्शे अनहद तूरा। बेमुखां एका भरया आत्म अभिमान, प्रभ दर तों जायन दूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए तीर निशान, करे चूरन चूरा। साध संत क्या पछाणे। कलिजुग माया झूठी छाया भुल्ले जीव अञ्याणे। माया ममता मोह रचाया। प्रभ अबिनाशी तेरे दर आए, झूठा ध्रोह इक्क कमाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी आत्म वेखे फोल फरोले, सच्चा झूठा टोह वखाया। साचा साईं सैनापत। लक्ख चुरासी देवे यति। एका ताणा साचा तणया, आपणी हथ्थीं साचा सूत्र कत्त। चिट्टा बाणा उप्पर धरया, गुरमुख ना डोले तेरा आत्म यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची संगत आप बणाई, साचा बीज रिहा बिजाई, पंचम् जेठ साचे वत्त। हरि दस्तारा पाड़ वखाया। साची धारा जगत बंधाया। सोहँ डण्डे तेरा सच्चा तीर कमाना आप बणाया। आप चढ़ाए साचे चिल्ले, पहली दिशा आपे हिल्ले, लग्गे रहण ना किसे किल्ले, प्रभ अबिनाशी मक्का मदीना देवे ढाहया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणा भेव आपे आण खुल्लाया। दूजा चले तीर निराला। फरंगीआं होए मूंह काला। फल ना दिसे किसे

डाला। कोई ना झल्ले एहदी झाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे पाली माली, आपे करे रखवाली, बेमुखां पाए चाली, आपे चले नाल नाला। तीजा तीर तीर तुफंगा। विच पताल लहू गंगा। साचा रंग हरि जी रंगा। मैहन्दी लावे घोड़े तंगा। वड दाता हरि सूरा सारंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तीर आप चलाया, डूंघी धारे भन्ने अंग अंगा। हथ्थीं मैहन्दी पंज निशान। हथ्थीं फड़े तीर कमान। चारों तरफ मारे बाण। बेमुखां लाहे घाण। पाउँदा जाए नाम आण। झुलदा जाए सोहँ सच्चा इक्क निशान। मिटदी जाए अन्त कुरान, खाणी बाणी वेद पुरान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे श्री भगवान। मैहन्दी चाढ़े मजीठी रंग। उलटी वहाए गोदावरी गंग। कलिजुग जीव होए नंग। अठसठ तीर्थ होए भंग। इक्को चढ़े महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी चरन धूढ़ मस्तक साचा रंग। चाढ़े रंग जोत निराली। जगी जोत माझे देस इक्क अकाली। दुरमति मैल रिहा धोत, जो जन आए सवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप खपाए, शब्द सरूपी खेल रचाए, हथ्थ हथिआर ना कोए उठाए, गुरमुख वेखो हथ्थीं सारे खाली। ना कोई तीर ना तलवार। ना कोई बरछा ना कटार। ना कोई संख ना कोई चक्र ना कोई गदा धार। एका शब्द चले अंकर, ढाहे कंकर नगर खेड़े दए उलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द तेरा सच्चा तीर चलाए, रसना खिच्च कमान, विच जहान मिटाए शैतान बेईमान, कोई ना देवे धीर। गुरसिख गुर एका जोग, कलिजुग अन्तिम दोहां होया इक्क संजोग। भेव मिटाए दोआँ दोआ, सोहँ शब्द देवे सच्चा जोग। बिन गुर पूरे कोए ना जाणे कोया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ दया कमाए आप मिटाए चिन्ता सोग। माण दित्ता तेरे थांउँ। प्रभ अबिनाशी आपे बणे पिता माउँ। कृष्न मुरारी वड बलकारी वेले द्वापर माणी ठंडी छाउँ। साचे दर चल्लया राही, पहुंचया आण गुड़गाउँ। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल इक्क वरताई, ऊधो ताईं आप समझाई, एथे रथ खलारो थाउँ। कलिजुग तेरा अन्त विचार। किया खेल कृष्न मुरार। रथ खलोता विच गुड़गाउँ, जिथ्थे बणया तेरा घर बाहर। अन्तिम वेले जामा पाया, निहकलंक नरायण नर अवतार। गुरसिख तेरी सच अटारी। धरे चरन आप बनवारी। अन्तिम कलि तेरे संग नाल तरे बलवन्त नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नेत्र बन्द कराया, सृष्ट सबाई अन्ध कराया, गुरमुख खुशी बन्द बन्द कराया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त देवे ब्रह्म ज्ञान, आत्म उज्जयार आप कराया। आत्म करे हरि उज्जयारी। गुरसिख तेरी पैज संवारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। नाल तरे तेरी सुलक्खणी नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप चुकाए, लिख्या कृष्न मुरारी। कृष्न मुरारी लेख मुकाई। निहकलंक प्रगट हो, वारो वारी वेख औलीए पीर शेख़

मिटावां, पहलों अन्ध अन्धेर कर, आप करावां सृष्टी नंग। नेत्र नीर वगे धार। तेरा मेरा सांझा होया इक्क प्यार। द्वापर विछड़े कलिजुग मिले यार। ना कोई घड़े ना कोई भन्ने, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ चारे कुन्टां दए फिरा, करे खेल अपर अपार। गुरमुख तेरी सच वड्डुयाईआ। संत मनी सिँघ सेव कमाईआ। फिर मिली जगत वड्याई, जोत जगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे ब्रह्म ज्ञान, इक्क चरन ध्यान, दिवस रैण जोत दूण सवाईआ। गुरसिख झूठ कदे ना बोले। प्रभ अबिनाशी पूरे तोल तोले। आपे वसे काया चोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा माण दवाया, आपणी चरनी आपे लाया, सदा वसे कोल कोले। गुर संगत चार दिवारी। सच महल प्रभ रिहा उसारी। रहे अटल्ल विच संसारी। कलिजुग कर कर वल छल, करे खेल न्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत विच लोकमात बणाई इक्क क्यारी। गुर संगत चार चुफेरे। हरि साचा आया विच घेरे। राह कोई ना दिसे गुरमुखां आया हिस्से, पंचम् जेठ ना जाए कर के हेरे फेरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती इक्क जुड़ाए भेव खुल्हाए तेरे मेरे। मेरे तेरे तेरे मेरे हरि का भेव जाए खुल्ह। गुर संगत तेरा पै जाए मुल। कलिजुग जीव गए हुल। भाग लगाए सुलक्खणी कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे तोल आप तुलाए, गुरमुख साचा जाए तुल। गुरमुख साचा वंडे हिस्सा। दूसर किसे ना हरि जी दिसा। कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़ चक्की, बेमुख जीव विचकारे पिसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप खुल्हाए, सृष्ट सबाई अन्त कराए, बीस इकीसा। पंचम् जेठ साची राणीए। गुर पूरे दी साची पुत्तरी कन्या धी ध्याणीए। गुरमुख साचे संग रलाईं, ना झूठे वणज कराईं, एका मंगी वडा शाह बाणीए। थांउँ थाँईं जा जगाईं, जोत सरूपी दरस दिखाईं, दे मति जा समझाईं, निहकलंक नरायण नर माझे देस जगी जोत चार कुन्ट आप वखानीए। पंचम् जेठ कर रुशनाई। चार कुन्ट दे दुहाई। निहकलंक माझे देस जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा आपे देवे माझे देस वज्जी वधाई। माझे देस वज्जी वधाईआ। पंचम् जेठ साची खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे संत जनां वाह वाह सोहणा मंगल गाईआ। कलिजुग तेरा वज्जा संगल, आपणी हथ्थीं आप तुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ किसे हथ्थ ना आईआ। हरि मिले ना हरिद्वार, ना तरबैणी ना प्राग। ना कासी ना डूंघी वहिणी, गुरमुख साचे संत जनां आप बुझाए तृष्ना आग। पंचम् जेठ दरस दिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लाए जाग, गुरसिक्खां पकड़न आया वाग। आप चुकाए लहणा देण। गुरसिख उठाए फड़ उत्ते धवल। चारों कुन्ट शब्द सुणाए दए सुनेहड़ा पवण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तिम आया, हरि बिन बेड़ा बन्न्हे लाए

कवण। साचा बेड़ा केहड़ा बन्ने, संत मनी सिँघ तेरी कुड़माई। प्रभ अबिनाशी आपणी हथ्थीं आण कराई। तिन्न दिन पहले सोहणा सगन तेरे मुख लगाई। अट्ठे पहर रहे लग्न, रही हरि शरनाई। जोत सरूपी होया मग्न, भुल्ली सर्ब लोकाई। अष्टम् जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर दुआरे जा पूरी लिख्त कराई। साचा करे सगन विहारा। प्रभ अबिनाशी गुर करतारा। ना कोई जाणे जीव जन्त संसारा। निहकलंक नरायण नर, सतिजुग बन्ने आपे धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरी पाउण आया साची सारा। संत मनी सिँघ प्या उडीके। प्रभ अबिनाशी अष्टम् जेठ बण के मुलज़म, भुगतण आया इक्क तरीके। सृष्ट सबाई दए दुहाई, तेरा बचन हरि पूर कराई, जो जन दर घर साचे जाए आए अमृत पी के। अमृत आए लहन्दी धार। छत्ती मील बणे हरि लेख लिखार। छत्ती राग हरि गुणवन्त दए उचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ माहणा आप विच दए खल्हार। अग्गे बुड्ढा पिछे बाला। हीरा कुण्ड तेरा बणे हरि रखवाला। सतिजुग साचे प्रभ साचा माण दवाए, नौ खण्ड पृथ्मी करे उजाला। अमृत सर सरोवर भरे, मिटाए दाग़ जो लगा कलिजुग काला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग बेमुख जीवां कढ्ढण आया अन्त दवाला। संत मनी सिँघ हरि दित्ता नाम सच्चा धन्न माला। सच दात हरि झोली पाई, लग्गा फल साचे डाला। कलिजुग अन्तिम विच मात देवे वड्याई, तेरा आप होए रखवाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण करे प्रितपाला। होए रखवाला पहरेदार। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार। होका दे के वाजां मारे, आओ चल द्वार। निहकलंक नरायण नर प्रगट होया, जगत जीव ना भुल्ल गंवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां इक्क सच्चा सरदार। गुर पूरे सेव कमाईआ। पूरन घाल अन्तिम वेले प्रभ साचे लेखे लाईआ। साचा दीआ नाम धन माल, आत्म ख़ज़ाना इक्क बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सारी रल मिल तेरे धाम आईआ। आए चल हरि निरँकार। दूजी कीनी प्रभ अबिनाशी नाल संगत त्यार। प्रगट होए घनकपुर वासी, गुरमुख संत जन आप बणाए नर नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे आप बणाया सच्चा सरदार। पूरे गुर करो प्रदक्खणा। कोई जाए ना दर तों सक्खणा। अन्तिम वेले कलिजुग, गुरमुख विरला विच मात दे लभ्भणा। चार कुन्ट चार चुफेरे, प्रभ अबिनाशी मारे गेड़े, कलिजुग तेरा हो सहाई किसे ना रक्खणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी करे हासी, मदिरा मासी मुल्ल ना पाए कक्खणा। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुर संगत कीनी वक्ख। इक्क उपजाए शब्द धुन, गुरमुखां आत्म होए सुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा कोई ना जाणे निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी कहणा मुख। मनी सिँघ मन्न साचा कहणा। निहकलंक सरनी रहणा। गुर

संगत दा भार सहिणा। ऊँच नीच नीच ऊँच ना रसना किसे कहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां आप वखाणे दर्शन वेख नैणा। ना कोई जाति जात पात। इक्को बन्नी चरन नात। प्रभ अबिनाशी लभ्भे सच्चा मात। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया देवण आया सच्ची दात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरना सोहँ वड करामात। चार वरनां इक्क भण्डारा। निहकलंक नरायण नर अवतारा। संत मनी सिँघ खड़े दुआरा। गुरमुख आवण वारो वारा। भरे रहण सद भण्डारा। खुल्या रहे दर दुआरा। प्रगट होया नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां पसर पसारा। पसर पसारी हरि निरँकारी गुर संगत करे इक्क प्यारी। आपे करे चरन पनिहारी। फड़ फड़ बाहों कलिजुग अन्तिम वेले प्रभ साचा जाए तारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द तेरी बणाई रक्खे सरदारी। पंच बणाए हरि सरदारा। होए आप पहरेदारा। घनकपुर वासी नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारा। सूरज देवता करे निमस्कार। गुर संगत तेरा वेखे मुक्खड़ा, लथ्थे दुखड़ा चढ़या रहे जो बुखार। तिन्नां लोकां चहुं जुगां होया भुक्खड़ा, अन्तिम वेले कलिजुग प्रभ अबिनाशी पाई सार, उज्जल कराए रवी तेरा मुखड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर्शन पेखे नेत्र वेखे गुरसिख साचे संत जन विच मात सच्चे सरदार। सूरज देवता करे सलाम। कलिजुग केहड़ा आया राम। गुर संगत देवे सच्चा धाम। ग़रीब निमाणयां जगत निताणयां पकड़न आया दाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग लाई जेठ दोपहर गुरसिच मानण ठंडी छाँ। कलिजुग तेरी अग्नी घोर। पंचम् जेठ लग्गी दोपहर, गुर संगत हौली हौली लए तोर। दर घर साचे कोई ना पावे शोर। आप खपाए अग्न लगाए लाहौर शहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां इक्क वहाए वगाए अमृत साची नहिर। निहकलंक नर अवतारा। गुरमुखां पाए सारा। चल आए हरि दुआरा। संत मनी सिँघ तेरा लेखा आप चुकाया, आप बणाए सच्ची सरकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सेवा घाल पाई आप कराए तैथों चरन निमस्कारा। अमृत धार ठंडी ठार है। गुरमुखां रही तार है। प्रभ पावे साची सार है। कलिजुग लाहुण आया अन्त बुख़ार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां बेड़ा करे पार है। साचा अमृत लैणा पी। गुरमुख साचे संत जनों मात विच रखाई साची नींह। सतिजुग साची रीत चलाई, अमृत बरखे साचा मींह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा बीज गुरसिख आपणी हथ्थीं लैणा बी। साची बख्शे अमृत धार। उत्तों चले इक्क फुहार। संत मनी सिँघ ठंडा ठार। खुल्या बन्द इक्क कवाड़। काया चोला दित्ता साड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाया, लक्ख चुरासी बेड़ा लाए पार। साचे

संत मिली वड्याई। मातलोक हरि खेल वरताई। सतिगुर पूरा दए वड्याई। आप कराए सर्ब गुण भरपूरा, पड़दा उहला ना कोई रखाई। इक्क उपजाए शब्द तूरा, गुर संगत तेरा होए सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया आप कमाए, दुखड़ा भुक्खड़ा रोग गंवाए, दोहां भाईआं मेल मिलाई। धरत मात खुशी मनाईआ। पूरन इच्छया प्रभ कराईआ। साची भिच्छया झोली पाईआ। करे रच्छया वेले अन्त प्रगट होया रघुराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाह वाह सोहणी बणत बणाईआ। धरत मात खुशी मनाउँदी। पंचम् जेठ गीत सुहागी गाउँदी। जुगां जुगां दी साची रीत, चरन धूढ़ तेरी निहकलंक लाउँदी। इक्क बन्ह्आए सच प्रीत, गुरमुखां मस्तक जा समाउँदी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर निहकलंक रसना गाउँदी। धरत मात जाए बलिहारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। पंचम् जेठ कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां पावे सारी। आपे साड़े तहिसीलां थाणयां, मारे तीर सच्चा बाणयां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। धरत मात गीत सुहागा। सोहँ सुणया सच्चा रागा। निहकलंक लोकमात हरि साचा जागा। चारों कुन्ट उठ उठ वेखे, बेमुख जाए दर तों भागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला पार उतारे जो जन सरनी लागा। धरत मात चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, आपणा चरन दित्ता छुहा। अचरज खेल हरि वरताई, सच सुहागण नार बणाई, आपणा भेव दए खुल्ह्आ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात होई सुहागण सूहा वेस लए करा। धरत मात तेरा सूहा वेस। प्रगट होए प्रभ माझे देस। जोत सरूपी धारे भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी व्याहवण आया कर कर अवल्लड़ा भेस। गुरसिख मंगे दात, अन्त अन्धेर है। प्रभ अबिनाशी पुच्छे वात, कर देवे आपणी मेहर है। साची देवे नाम करामात, ना लाए कोई देर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत रूपी बद्धा नात, मिटावे हेर फेर है। धुरदरगाही सच सुगात तेरी काया अन्दर करे ढेर है। एका रंग हरि आप समाए, मैं तूं तूं मैं कढ्ढे एका वेर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाए, ना लाए देर है। प्रभ पूरे करी बुध बबेक। गुरमुखां हरि रक्खी टेक। साचा नाम तन वसाए, कलिजुग माया ना लाए सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त होए एका एक। काया चोली चढ़या रंग। प्रभ अबिनाशी साचे घर मंगी इक्को मंग। शब्द घोड़े हो अस्वार, मात आया पहली वार कस्सया तंग। गुरमुखां जाए हरि द्वार कटी भुक्ख नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म तेरा लेखे लाया, आपणा बाणा तेरे तन छुहाया, अन्तिम वेला ना होए भंग। सति सागर नीर विरोल। तेरी सुक्की काया गागर, आत्म पड़दे देवे खोल्ह्। होए नाम जगत उजागर, हरि वसे सदा कोल। बण जाए दर सच्चे

दा सच सुदागर, नाम लए वस्त अनमोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी साची धीर बंधाए, अन्तिम तोले पूरे तोल। प्रभ अबिनाशी ना डोले ना कोई डुलाए। प्रभ अबिनाशी तेरी आत्म बोले, अट्ठे पहर विच समाए। काया दिसे अन्धेरी डोली, सृष्ट सबाई दिस ना आए। गुरमुखां वसे काया चोले, जोत सरूपी डगमगाए। गुरसिख बणाए चरन गोले, शब्द डोले लए चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बण बण साचा तोला आपे तोला, अगला पिछला लेख लेखा सर्ब चुकाए। उठ सिख हो हुशिआर। हरि मिल्या कमलापाती, बण दर घर साचे दी साची नार। एका साचा आसण लागे हरि नारी बैठे सच भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म करे सच उज्जयार। आत्म करे उज्जयार हरि गुरदेवा। किया चरन प्यार, प्रभ अबिनाशी साची सेवा। बध्धी जगत धार, मानस जन्म दित्ता संवार, सोहँ फल लाया साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन गाया रस रसना साची जिह्वा। सनक सनदन सनातन संत कुमारा। बराह रूप अपर अपारा। यज्ञे पुरष हरि निरँकारा। हाव गरीव भेख धारा। नरायण नर जोत पसारा। कपल मुन मोहण धारा। दता त्रै मात मझारा। रिखव देव भेख न्यारा। पृथू रूप अगम्म अपारा। मत्स बन्ने आपणी धारा। कच्छप रूप हरि पसारा। मोहणी रूप बल दुआरा। नर सिँघ हरिभगत अधारा। धनंतर वैद दु:ख लाहे सारा। बावन रूप चोज अपारा।
२९६ हँस पंखी प्रभ निरँकारा। नरायण नर ध्रू पार उतारा। हरी हरि गज दए सहारा। परस राम क्षत्री सँघारा। राम अवतारी २९६
०४ दहिसर मारा। वेद व्यास बणे लिखारा। कृष्न मुरार युद्ध कराए भारा। गौतम बुद्ध साचा धर्म चलाए विच संसारा। कलिजुग ०४
तेरी अन्तिम वारी, निहकलंक लए अवतारा। वेद व्यास किरपा धारी। पुरान अठारां लेख लिखारी। पहला ब्रह्म ल्या विचारी। फेर पदम पाई सारी। विष्नूं तेरी आई वारी। शिव तेरी बुद्धी धारी। श्री भगवत धर संसारी। नारद मुन तेरी करे जोत उज्जयारी। मारकण्डे हरि भेव खुल्हारी। अग्न देवता बण पुजारी। भविख्त पुरान दए उचारी। ब्रह्म वैवरत पावे सारी। लिंग पुरान होवे पारी। बराह तेरी खेल न्यारी। सुकंद पुस्तक बन्नी भारी। बावन पुरान राजे बल किरपा धारी। कूरम हरि जी पावे सारी। मत्स तेरी कल विचारी। गरुड़ रहे तेरे चरन द्वारी। ब्रह्मण्ड तेरा बणया आप लिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव खुल्हाए कलि अन्तिम वारी। चार वेद हरि लिखाए। पहला साम मुख रखाए। छत्ती राग विच भराए। दूजा रिग वेद चलाए। कला काल जिस नाल उपाए। तीजा युजर नां रखाए। औषधिआं दी बिध बणाए। चौथा अथर्बण कलिजुग आए। विद्या सागर आप लिखाए। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग वेले अन्त आपणी झोली सारे पाए। झोली पाए हरि गिरधारा। भेव खुल्हाए जन भगतां सारा। आदि अन्त होए सहारा। देवे नाम कर प्यारा। जोत

सरूपी प्रभ अबिनाशी क्या कोई जाणे जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत उधारे। बणाए बणतर विच संसारे। इक्क जपाए साचा मन्त्र, कराए जै जैकारे। जोती जोत सरूप हरि, क्या कोई पावे प्रभ दी सारे। ध्रू प्रहलाद जिस उधारया। संग अमरीक राजे बल करे प्यारया। राजे जनक पूरा कर्म आप विचारया। तारा राणी सुख साचा माणी, देवे चरन ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे माणयां। बिदर सुदामा आपे तारे। द्रोपद लाज रक्खे मुरारे। जैदिउ हरि लेख अपारे। नामदिउ हरि पार उतारे। धन्ने जट्ट पावे सारे। ग़रीब रविदासा उतरे पारे। सैण नाई दर जाए निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती एका गोती ना जाणे जीव गंवारे। पापण पूतना दित्ती तार। गनका नाल किया प्यार। अजामल पापी उधरया नाल। जोत सरूपी आदि अन्त जन भगतां रिहा पैज संवार। किरपा कर बधक तारे, मारे तीर कृष्न मुरारे, देवे दरस अपर अपारे, जन भगतां आपे पावे सार, तारे भगत हरि भगवाना। करे खेल जगत महाना। शब्द हथ्थीं बन्ने गाना। गुरमुख साचे आपे रक्खे, शब्द चले इक्क निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्त जोत सरूपी पहरे बाणा घनईआ शामा। कलिजुग तेरे लेख लिखाए। पहला माण बुद्ध दवाए। ईसा मूसा आप उपाए। सच मुहम्मद जन्म दवाए। चार यार संग रलाए। नौ दर घर वणजारा, दसवें दी ना बूझ बुझाए। वरते कहर विच संसार, किरपा कर हरि निरँकार, गुर नानक हरि मात उपाए। सिर रक्खे हथ्थ दातार, अन्तिम वेले गया हार, दूजी जोत अंगद पाए। अंगद किया इक्क विचार। खडूर विच्चों होया बाहर। अमरदास सेव कमाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। साची मति जगत चलाई। राम दास दित्ती वड्याई। सर अमृत नींह रखाई। पंचम् गुर शब्द निधानी। मिली चरन प्रीती, सच्ची सेव कुरबानी। मिल्या नाम अपार, अन्तिम वेले उहदा आया कलिजुग जीव ना समझे गंवार, साची सेवा हरि कमाई। भाई गुरदास संग रलाई। ना कोई जाणे जीव गंवार, भुल्ली रही सर्ब लोकाई। अन्तिम वेले देह तजाई। हरि गोबिन्द जोत जगाई। मीरी पीरी कटार गल विच पाई। साची जोत कर अकार, बेमुखां डन्न रिहा लाई। अन्तिम जोती मेल मिलाई। श्री हरि राए माण दवाई। साची जोत कर अकार, साचे लेख रिहा लिखाई। अठवें जामे हरि कृष्न छोटे बाले बल वधाई। दिल्ली जाए मुख छुपाए, उत्ते सीतला आए भारी। अन्तिम वेले लेखे लाए, गुर संगत साचा हुक्म सुणाए, पिण्ड बकाला दे वखाई। साचा हुक्म इक्क सुणाया। गुर तेग बहादर बाहर कढाया। हिन्द दी चादर जगत बणाया। दिल्ली सीस दित्ता करते कादर, आपणे भाणे सर्ब समाया। फिर उठाया गुर गोबिन्द, माण दवाया वाली हिन्द दुष्ट सँघारे फड़ खण्डा दो धारे, जो करन निन्द। जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा बख्शिंद।

गुर गोबिन्द ज्ञान तुम्हारा। एका ओट रक्खी करतारा। वज्जे डंक शब्द अपारा। राउ रंक आप उठाए, करे खेल अपर अपारा। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरमुखां देवे नाम अपार। पूरन काम आप कराए, करे सच विहार। सुक्का चाम हरा कराए, जो जन आए चल द्वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार। तणने आया प्रभ साचा ताणा। बन्नूण आया राजा राणा। चिट्टे अस्व पा पलाणा। सोलां कलीआं लड़ रखाना। सत्त दीप नौ खण्ड दोहां मेल इक्क मिलाणा। इक्क इक्क कली हरि देवे वंड, डाढी गंढु आप बंधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा बद्धा ना किसे छुडाणा। सच पलाणा हरि जी पाया। उत्ते पहलों आसण लाया। फेर आपणे हथ्थ रखाया। धरत मात तेरे उत्ते दए भजाया। चारे कुन्टां बन्न वखाया। सोलां लड़ हरि रखाया। जोत सरूपी घर घर जाए वड़, दिस किसे ना आया। शब्द सरूपी रिहा लड़, हथ्थ हथिआर ना कोई उठाया। चार कुन्ट वक्ख वक्ख करे सिर धड़, इक्क दूजे दा संग तुड़ाया। शब्द गोला वज्जे कड़ कड़, धूंआंधार जगत कराया। बेमुख जीवां देवे छड़, मोहले धार शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरे अग्गे खड़, सारा भेव खुल्हाया। सच्चा चोला सोलां कली। होका देवे गलीओ गली। कलिजुग औखी आई घड़ी। किसे कंध उत्ते ना दिसे कोई कड़ी। जोती जोत सरूप हरि, लाई इक्को शब्द झड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राह इक्क वखाए, ना कोई मुख लगाए हुक्का नड़ी। सोलां कलीआं हरि श्रृंगार। सतिजुग तेरे साचे संत आप बणाए सच दुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ निहकलंक ल्या अवतार। सोलां कलीआं वेख बगे। नाले रोवे नाले हस्से। गुरमुखां राह साचा दस्से। बेमुखां पैरां हेठ झस्से। चारों कुन्ट जाण नस्से। धर्म राए वाजां मारे, माया जाल सारे फसे। मौत लाड़ी शब्द बहारी हथ्थ आपणे कसे। अन्तिम वेले होए ख्वारी। कलिजुग भारी मौत लाड़ी फिरे पिच्छे अगाड़ी। प्रभ आप चबावण आया आपणी दाढ़ीं। ना होवे कोई सहाई, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धार विच मात ल्या अवतारी। सोलां कलीआं सोलां राह। चारों कुन्टां पाए फाह। कोई ना लग्गे किसे दाअ। ज्ञानीआं ध्यानीआं मरनी मां। वड वड शैतानीआं करन जगत बेईमानीआं, घर घर उडण कां। गुरमुखां देवे पंचम् जेठ सच निशानीआं, वेले अन्तिम करे ठंडी छाँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए गुरमुखां दरगहि साची लाए नां। सोलां कलीआं हरि हथ्थ कलीरे। गुरमुख उपजाए साचे हीरे। इक्क दूजे दे बण गए वीरे। पंचम् जेठ प्रभ दर आए, प्रभ अबिनाशी कढ्ढे आत्म हउमे पीड़े। बेमुख जीवां कलिजुग काया लग्गे हँकारी कीड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग लाहया तेरा बाणा, बेमुखां आपणी हथ्थीं पीड़े। जम्बु दीप

हरि पाए गंढु। पहली कूट हरि, दए वंड। लक्खण दीप होए रंड। करौच दीप तोड़े घमंड। पुष्कर दीप पाए डण्ड। कुशा दीप होए खण्ड खण्ड। सलमल दीप कच्चे भज्जण अंड। सान दीप घर घर दिसे नार रंड। निहकलंक कलि जामा पाया, सिँघ सिँघासण बैठ पंचम् जेठ धरत मात तेरी पाए वंड। सत्तां दीपां वंड कराई। धरत मात प्रभ दर कुरलाई। बुद्धी माता दए दुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ किरपा कर, निहकलंक जोत जगाई। कलिजुग मथ्थो लग्गे छाही। साचा नाउँ किते दिसे नांहीं। मन्दिर मसीतां गुरदुआरे झूठे बैठे पाई फाही। अट्ठ सट्ठ तीर्थ ना मिले साचा नीरथ, वढ्ढी खायण फड़ फड़ गाईं। इक्क पिला अमृत साचा सीरथ, धरत मात दए दुहाई। धरत मात तेरी सुण पुकारी। हरि जू आया कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। चारे कुन्टां वेख वखाने, ना कोई करे जूए बाज़ी, ना कोई रंडी दिसे नारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे वेख वखाणे, शब्द सरूपी फेरे आरी। धरत मात दर कढ्ढे हाढ़े। कलिजुग दिन आए माढ़े। लाड़ी मौत मंगे वर, लक्ख चुरासी सारे लाड़े। प्रभ अबिनाशी किरपा कर देवे दात पहली हाढ़े। आप चुकाए आपणा डर, मैं चबावां आपणी दाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ प्रगट हो गुर संगत आया दर दुआरे। धरत मात हरि दर कुरलाई। दोहां नैणां नीर वहाई। औखी होई कलिजुग अन्धेरी रैण, ना होए कोई सहाई। नाता तुट्टा भाई भैण, ना जाए कोई बंधाई। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर पंचम् जेठ जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची जोत विच मात जगाई। सत्तां दीपां हरि वंड कराई। नवां खण्डां दी वारी आई। कुला खण्ड हरि भन्न वखाई। इला बुत्त हरि खेह उडाई। हरि वरख कुछ दीसे नाही। हरणमय दी जोत बुझाई। केतमाल अन्धेर कराई। रमक रोवे सर्ब लोकाई। भदर कुछ हथ्थ ना आई। भारत खण्ड प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। सोलां कलां हरि संपूरा, सोलां वंडा बणत बणाई। बचन होए ना मात अधूरा, जो रिहा लेख लिखाई। प्रगट होया वड जोधन सूरा, हथ्थ कटार ना कोई उठाई। इक्क उपजाए जोती नूरा, सोलां खण्डां करे रुशनाई। शब्द चले साची तूरा, पवण सुनेहड़ा लै लै जाई। बहिश्तां छड्डुण बैठीआं हूरां, निहकलंक कलि जोत जगाई। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, जूठ झूठ लक्ख चुरासी तेरी झोली पाई। कूड़ा धर्म राए घर सांभ लै जाई। गुरमुखां मस्तक लाई धूढ़ा, आए चल सरनाई। इक्क रंग चढ़ाए गूढ़ा, उत्तर फेर ना जाई। गल पाया चोला रंग लसूड़ा, साची दया हरि कमाई। वासी घनकपुर साची बणत बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची चोली तन छुहाई। सूहा वेस हरि रंग रंगावे। धरत मात तैनूं लाया भाग, तेरा भेख हरि मिटावे। धरती मां सुत्ती जाग, लक्ख चुरासी तेरे पूत प्रभ व्याहवण आया कर कर दाअवे। सोहँ शब्द नाल लै आया दूत, दोहां धिरां दा मेल मिलावे। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग सतिजुग दोहां धिरां दा हो विचोला पंचम् जेठ जोत जगावे। कलिजुग तेरी मां प्यारी। तूं हैं एहदी धी कुँवारी। व्याहवण आवे सतिजुग साचे मातलोक विच एका नारी। लक्ख चुरासी कीनी जिस प्यारी। धरत मात होए सुभागण, सूहा वेस करे तेरी अन्तिम वारी। निहकलंक नरायण नर साची डोली अन्तिम वेले ल्याया कर त्यारी। विच विचोला मारे फेरे। सतिजुग साचे बन्न लै सिहरे। प्रभ दवाए चौथे जुग चार गेड़े। अन्तिम वेला नेड़े आया, कलिजुग मिटाए हरि जी झेड़े। साची नारी इक्क व्याही, छुडाई धर्म राए दे साचे खेड़े। लक्ख चुरासी आपणी गोली आप बणाई, सुंञे कराई घर घर वेहड़े। प्रभ अबिनाशी फेर ध्याईं, आवे तेरे दर साचा हरि बन्नी जाए बेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, पंचम् जेठ दिवस सुहाया। सृष्ट सबाई भेड़ भेड़े। सूहा वेस सूही वेल। अचरज़ किया हरि जी खेल। लक्ख चुरासी कर त्यारी, नाल चले कलिजुग नार, सिर उठाए पापां भार, धरत मात एह करी पुकार, निहकलंक ल्या अवतार, अन्तिम घल्ले धर्म राए दी साची जेल्। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किया रंग नवेल। सूहा रंग हरि रंगाया। चोला सोहणा गल विच पाया। डोला साचा आप ल्याया। सोलां तणीआं नाल बंधाया। चिट्टे घोड़े उत्ते पाया। आपणी हथ्थीं सीस गुंदाया। उत्ते लाड़ा इक्क सजाया। निहकलंक नां रखाया। शब्द
३०० ०४ नगारा इक्क वजाया। तरन तारन तेरा मुनारा पहले ढाहया । सिँघ ऊधम तेरा इक्क चुबारा, जिथ्थे हरि जी भेस वटाया। ३०० ०४
चिट्टा बाणा तन छुहाया। धुर दरगाही हुक्म सुणाया। दूजा जोड़ा पैरीं पाया। तेज भान जो बणाया। चरन धूढ़ जो इशनान कराया। गुर संगत संग रलाया। अंग संग होए सहाया। कटे भुक्ख नंग, चलदा आया वाहो दाहया। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, उत्ते आसण लाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, संत मनी सिँघ घर बहाया। धन्न धन्न धन्न तेरी संगत, जिस ने सेव कमाया। धुर दरगाहों उतरी निहकलंक तेरी जोत तेरे सिख समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले हो त्यार, चरन रकाब आपणा आप छुहाया। चरन रकाब आप छुहाया। हंने हथ्थ उत्ते पाया। तिन्नां लोकां फड़ हिलाया। दूजा कदम नाल उठाया। चिट्टे अस्व पार कराया। धरत मात तेरा गेड़ा पहली वार लगाया। चारों कुन्ट लग्गे उखेड़ा, पहला पौड़ चिट्टे अस्व धरत मात तेरे सिर टिकाया। चौथे जुग चारे वागां चिट्टा रंग हरि रखाया। संत मनी सिँघ होया संगी, चिट्टे घोड़े हथ्थ लाया। नाल चले पैरीं नंगी, साचा जोड़ा आप तजाया। प्रभ दर मंगी साची मंग, राणे संगरूर जेल् विच पाया। एका चाढ़े नाम रंगत रंग, भुल्ल कदे ना जाया। अमृत वगायण साची गंग, चरन धूढ़ इशनान कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग, शब्द धार जन्म दवाया। घर आपणे हरि जन्म दवाए। आपणी सेवा

लेखे लावे। अन्तिम साची खेल रचाए। काया झूठी देह तजाए। अन्तिम अन्त प्रगट होए जोत सरूपी जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म खोल्ले वज्जी ताकी, संत मनी सिँघ दया कमाए। संत मनी सिँघ फड़ी डोर। कलिजुग होया अन्ध घोर। गुरदुआरे मन्दिर लुट्टण चोर। घर घर बैठे वढ्ढी खाण हराम खोर। प्रभ अबिनाशी मनों भुलावण, झूठा पावण शोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ माण दवाया, पंचम् जेठ वाग फड़ाया, हौली हौली संग आपणे रिहा तोर। हौली हौली आप चलईआ। साचा संग आप निभईआ। आपे बणे साचा पिता साची मईआ। कलिजुग तेरा भरया पूर, वेले अन्तिम डोले नईआ। प्रगट होया वड दाता सूर, राम अवतारी कृष्न घनईआ। लक्ख चुरासी करे चूर, गुरमुखां पाड़े हथ्थीं वहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला भरपूर, संत मनी सिँघ साचा रूप आप वटईआ। साचा देवे माण जगत वड्डयाईआ। जगी जोत महान खुशी मनाईआ। पंचम् जेठ वक्त सुहाण, गुर संगत रल मिल सोहणा संग बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा सच निशान, आपणी हथ्थीं आप झुलाईआ। सतिजुग तेरा सच निशान, लेख लिखाए हरि भगवान। सोहँ दित्ता साचा दान। निहकलंक बली बलवान। संत मनी सिँघ इक्क दूजे दी करन पछाण। कलिजुग वेला अन्तिम आया, नाल रलाया सिँघ मनजीत छोटा बाला नौजवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर दिवस रैण सन्झ सवेर चरन धूढ़ इक्क कराए इशनान। हरि का रूप अगम्म, खेल अपार है। हरि का रूप अगम्म, जोत अधार है। हरि का रूप अगम्म, एका एक अकार है। हरि का रूप अगम्म, आदि अन्त निराधार है। हरि का रूप अगम्म, जुगा जुगन्त निराहार है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पावे सार है। हरि का रूप अगम्म, एका जोत अपर अपार है। हरि का रूप अगम्म, खिड़ी रहे सच्ची गुलज़ार है। हरि का रूप अगम्म, एका शब्द साची धार है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, एका रंग एका अकार है। हरि का रूप अगम्म, भेव छुपांयदा। हरि का रूप अगम्म, किसे देवी देव दिस ना आंयदा। हरि का रूप अगम्म, ब्रह्मा चारे वेद विचारे, अन्त कोई ना पांयदा। हरि का रूप अगम्म, अठारां पुरान पए पुकारे, वेद व्यास बणया लिखारे, पासा कोई दिस ना आंयदा। हरि का रूप अगम्म, खाणी बाणी कलिजुग राणी दिस किसे ना आंयदा। हरि का रूप अगम्म, अञ्जील कुरान लिख लिख थक्के बहि बहि मक्के, दूजे पासे बूरे कक्के, अन्तिम वेले दोवें बण गए भाई सके, प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत मातलोक विच्चों बाहर धक्के, जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद समांयदा। हरि का रूप अगम्म, कोई ना जाणे। हरि का रूप अगम्म, हरि चले आपणे भाणे। हरि का रूप अगम्म, दिस आए ना किसे राजे राणे। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, आपणा रंग

आपे माणे। हरि का रूप अगम्म, खेल निराली। हरि का रूप अगम्म, दो जहानां बणे वाली। हरि का रूप अगम्म, दिस किसे ना आए चारो कुन्टां दिसण ख़ाली। हरि का रूप अगम्म, तिन्नां लोकां बणे पाली। हरि का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी जिस उपा ली। हरि का रूप अगम्म, साची जोत विच टिका ली। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग वेला अन्तिम होया, चारों कुन्ट दिसे रैण काली। हरि का रूप अगम्म, बेपरवाह है। हरि का रूप अगम्म, वसे हरि हर थां है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पिता ना कोई मां है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई भैण ना कोई भ्रा है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई धुप ना कोई छाँ है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, एका एक अकारी सच्चा नाउँ है। हरि का रूप अगम्म, निरवैर है। हरि का रूप अगम्म, ना सके कोई थम्म्ह, किसे दर ना सके ठहर है। हरि का रूप अगम्म, किसे मात घर ना पए जम्म, एको नूर नुरानी सच्ची लहर है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई हड्डी ना कोई चम्म, जोत सरूपी आपे वसे आपणे शहर है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई छत ना कोई थम्म्ह, जिथ्थे बैठा रहे अट्ठे पहर है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी तिन्नां लोकां आपे करदा सैर है। हरि का रूप अगम्म, इक्क रुशनाई है। हरि का रूप अगम्म, किसे विरले बूझ बुझाई है। हरि का रूप अगम्म, सार किसे ना पाई है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम आपणा आप बैठा सद लुकाई है। साचा घर हरि सुल्तान। सच घर जोत महान। सच घर प्रकाश कोटन भान। सच घर एका जोत जगे, ना दिसे कोई होर निशान। सच घर शब्द घनघोर। सच घर ना लग्गे कोई चोर। सच घर ना दिसे कोई हराम खोर। जोत सरूपी जोत हरि, एका एक ना कोई मोर तोर। सच घर सच अटारी। जिथ्थे वसे एका पुरख एका नारी। सच घर जोत सरूपी रिहा जोत अधारी। सच घर एका जोत जगे अगम्म अपारी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी धार कर उज्जयारी। सच घर सच अस्थान है। सच घर जोत भगवान है। सच घर हरि मेहरवान है। सच घर लक्ख चुरासी मिलदा जीआ दान है। सच घर एका शब्द सच्ची धुनकान है। जोती जोत सरूप हरि, एका एक शाह सुल्तान है। सच घर सच निशानी। सच घर एका जोत जगे नुरानी। सच घर ना कोई किला कोट ना छत्त छतानी। सच घर एका वज्जदी रहे शब्द चोट, साची सुण सुणानी। सच घर एका जगे साची जोत, प्रभ अबिनाशी पुरख सुजानी। सच घर जोती जोत सरूप हरि, एका वड बलवानी। सच घर सीतल धार। सच घर शब्द अपार। सच घर रंग करतार। सच घर जगे जोत लक्ख चुरासी पसर पसार। सच घर साचा भेखा। एका हरि अलक्खणा अलेखा। ना कोई रूप ना कोई रेखा। एका जगे साची जोत, ना कोई दिसे वरन गोत,

साचा घर जिस जन साचे देखा। साचा घर सदा अडुल्ल। सच घर सदा अटल्ल। सच घर अमृत फल। सच घर धाम अचल्ल। सच घर जगे जोत घड़ी घड़ी पल पल। साचा घर सच्चा राह। साचा घर हरि मलाह। सच घर होए इक्क सलाह। सच घर जगे जोत एका थां। जोड़ा जोड़े सच जोड़। ना कोई सके मात तोड़। वेले अन्त पए लोड़। प्रभ अबिनाशी चढ़या घोड़। धुरदरगाही आया दौड़। कलिजुग भन्ने रीठे कौड़। चिट्टा अस्व मारे पौड़। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां कलिजुग वेले अन्तिम घरे घर जाए बौहड़। जोड़े घोड़े मेल मिलाया। साची डोरी प्रभ हथ्थ रखाया। कलिजुग अन्ध अन्धेर अन्ध घोरे, हरि साचा किसे दिस ना आया। कलिजुग जीव हराम खोरे, मदिरा मास रसन लगाया। अट्ठे पहर लग्गे रहण पंजे चोरे, साचा नाम धन्न माल ख़जीना, आत्म नाम लुटाया। ना मिल्या हरि प्रबीना, जिस जीआ दान दवाया। प्रभ सच ना रसना चीना, आत्म जोती जिस साचा नूर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आपणा मेल मिलाया। मिल्या मेल गुर दरबार। पंचम् जेठ पहली वार। आत्म तुट्टे सर्ब हँकार। ना चोग निखुट्टे विच संसार। पंजां चोरां प्रभ आप कुट्टे, तन काया विच्चों कढ्ढे बाहर। आत्म बीज साचा बोए, सोहँ शब्द अपार। पंचम् जेठ अमृत वेले पहु साची फुट्टे, निहकलंक तेरे दर द्वार। इक्क प्याए अमृत घुट्टे, खुल्ले कँवल खिड़े गुलज़ार। लक्ख चुरासी तेरी छुट्टे, मिले जोत नाल भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर प्रगट होए गुरमुख साचे संत जनां पंचम् जेठ जाए तार। पंचम् जेठ जेठा पुत्त। गुर संगत बणे साचा सुत। कलिजुग सुहाई तेरी रुत्त। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त। दर दर भौंदे फिरन कुत्त। ना होए मेल मिलावा, प्रभ अबिनाशी हरि अचुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुख साचे आप संभाले, आपणी गोद आप उठाए जिउँ मां पुत्त। साची सेवा हरि निरँकारा। आत्म मेवा दरस अपारा। प्रभ अबिनाशी सेवा अमृत वगे साची धारा। देवे वड्याई वड देवी देवा, गुरमुख बहाए चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैती पड़दा पाड़े सोहँ फेरे उत्ते आरा। दूई द्वैती पड़दा पाटे। पूर कराए हरि जी घाटे। जोत जगाए विच ललाटे। होए रुशनाई काया माटे। अमृत रस साचा चाटे। साचा लाह प्रभ दर खाटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा समां सुहाए पंचम् जेठ दया कमाए, अग्गे नेड़े रहि गई थोड़ी वाटे। चरन जोड़ा ढोर चम्म। रक्खे सुखाले तेरे दम। अन्तिम वेले आए कम्म। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे इक्क सहारा सोहँ शब्द काया मन्दिर साचा थम्म्। काया मन्दिर दए सहारा। साचा शब्द हरि गिरधारा। कलिजुग लग्गे ना धक्का भारा। साचा फल अन्तिम पक्का, ना डिग्गे किसे झाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां चारों तरफ शब्द सरूपी करे वाड़ा।

✻ ७ जेठ २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड, गगन पर्बत पाताल। चार कुन्ट पृथ्मी नौ खण्ड, प्रभ अबिनाशी रिहा सुरत संभाल। तीर तुफंग चण्ड प्रचण्ड, वज्जे एका ताल। सभ होवण खण्ड खण्ड, ना सके कोई सुरत संभाल। कच्चे भज्जण अंड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया रूपी तणया जाल। माया रूपी पाए घेरा। बिन रंग रूपी ना आवे घेरा। होई वरभण्ड सर्ब अन्ध कूपी, ना कोई गुरू ना कोई चेरा। आत्म भरया सर्ब घमंड, करदे मेरा मेरा। प्रभ अबिनाशी सर्ब ब्रह्मण्ड, चुकाए हेरा फेरा। ना कोई पूजे करीर जंड, प्रगट होया सिँघ शेर शेर दलेरा। कलिजुग जीवां बाल जवानी गई हंढ, अन्तिम वेला आया नेड़ा। होई सुहागण नार रंड, कलिजुग उजड़े नगर खेड़ा। सिर उठाई पापां पंड, अन्तिम भार वंडाए केहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया अन्तिम फेरा। निहकलंक कलि पाए फेरी। सत्त दीप बणाए चेरी। सुर नर गंधरब गन सभ होवण ढेरी। जन भगतां गुर चरन प्रीती गई बण, चुक्के मेरी तेरी। सच सपूत धरत मात लए चुण, कलिजुग तेरी अन्तिम वेरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम पाई फेरी। अन्तिम आया हरि बलवाना। कलिजुग पहन ग़रीबी बाणा। शब्द ल्या तीर कमाना। सिध्धा रक्खे इक्क निशाना। आपे मारे करे ख्वारे, वडे वडे शाह सुल्ताना। उचे मन्दिर ढाहे चुबारे, इट्ट नाल इट्ट रहण ना पाए, बेमुख जीवां आए हारे, आप भुलाए पीणा खाणा। एका शब्द कराए जै जै जैकारे, हथ्थीं बन्ने गाना। दूती दुष्ट आप सँघारे, एका कर ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भाणा। आपणा भाणा हरि वखाणे। मेट मिटाए राजे राणे। सिर ते ताज ना कोई रखाए, चारों कुन्ट कराए भाज, सृष्ट सबाई होए बेमुहाने। शब्द छुट्टे एका बाज, कलिजुग जीव जिस ने मार मुकाने। साचे रिहा साजन साज, लक्ख चुरासी कलिजुग जीव होए अन्धे काणे। अन्तिम वेले गुरमुख साचे संत जनां देवण आया सच्चा दाज, सोहँ शब्द इक्क महाने। पुरी सच्ची दा सच्चा राज, जिथ्थे वसे हरि भगवाने। अन्तिम वेले रक्खे लाज, चरन धूढ़ जो जन करे इशनाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा सुख गुर चरन माणे। गुर चरन सहिज सुख दाया। कलिजुग तेरा अन्त कराया। निहकलंक कल्गीधर नर अवतार विच मात दे आया। एका एकी रिहा कर, ऊँच नीच दा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, राउ रंकां इक्क कराया। राउ रंक इक्क दुआरे। ऊँच नीच ना कोए विचारे। साध संत होए पनिहारे। प्रभ अबिनाशी मिल्या साचा कन्त, देवे दरस अगम्म अपारे। आप बणाए कलिजुग बणत, देवे नाम अपर अपारे। प्रभ महिंमा तेरी अगणत, ना कोई जाणे जीव संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी

जामा धारे। जोत सरूपी जामा धार, करे खेल अवल्लड़ा। प्रभ अबिनाशी हरि गिरधार, वसे इक्क इकल्लड़ा। आपणी किरपा करे पहली वार, गुरमुखां फड़ाए आपणा पलड़ा। ना कोई हथ्थ फड़े तीर कटार, सच अखाड़ा हरि जी मल्लड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका जोत आदि अन्त इक्क इकल्लड़ा। इक्क इकल्लड़ा चारों ओट। ढाहुन्दा जाए किला कोट। गिराउँदा जाए आहलणयां विच्चों बोट। बेमुख जीवां अजे ना भरी पोट। आत्म तन सोहँ शब्द अजे ना लग्गी चोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप बख्शे चरन ओट। चरन ओट हरि ध्याना। देवे सच्चा नाम निधाना। गुरसिख आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सतिजुग मैल साची धुप, जाए मिटे नाम निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द सुणाए, आदि अन्त इक्क रखाए देवे सच्चा इक्क माणा। आदि अन्त देवे माण, प्रभ अबिनाशी चतुर सुजान। घनकपुर वासी देवे सोहँ दान। सच्ची जोत मात प्रगटाई, करे प्रकाश कोटन भान। बेमुखां लाहे उदासी, आप मिटाए मदिरा मासी, शब्द सरूपी कर ध्यान। पंडत पढ़ पढ़ थक्के कांशी, गीता ज्ञान वेद पुरान। अट्ठे पहर रहे उदासी, ना मिल्या श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए माझे देस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कांशी पंडत पढ़ पढ़ थक्के। अक्के मजौर मदीने मक्के। चार कुन्ट पैण धक्के। किसे ना दिसे बूरे कक्के। कलिजुग फल अन्तिम पक्के। दूर दुराडा धर्म राए राह एका तक्के। निहकलंक कलि जामा पाया, सिर मेरे ते हथ्थ रखाया, लक्ख चुरासी केहड़े वेले घर मेरे विच धक्के। धर्म राए मारे झाती। प्रभ अबिनाशी खोल्ही ताकी। अन्त मिटाए तेरी बाकी। कोई ना होवे अग्गे आकी। शब्द ल्याया साचा राकी। मेट मिटाए बन्दे ख़ाकी। गुरमुखां अमृत प्याए जाम, पुरख अबिनाशी बणे साकी। प्रगट होया रमईआ राम, मुकावण आया पिछली बाकी। इक्का जोत घनईआ शाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाउँ जगत जपा के। एका राम रहीमा आया। प्रभ अबिनाशी वड करीमा, मातलोक विच जामा पाया। वड गुण गुणी गणीमा नाम रखाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया। निहकलंकी भेख न्यार, वज्जे शब्द डंकी धुन्कार। द्वापर संगी आप सहाए, आए चल द्वार। राउ रंक आप उठाए, करे खेल अपर अपार। शब्द लाए एक धनकी, खिच्च ल्याए चरन द्वार। पैज राखे प्रभ अबिनाशी जन की, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक ल्या अवतार। पैज संवारे अन्तिम वेला। प्रभ अबिनाशी सज्जण सुहेला। साचे घर अन्तिम वेले किया मेला। गुर पूरे सद बलि बलि जासी, अमृत फल खवाए केला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीआं करया वक्त दुहेला। वक्त दुहेला होए दुहागण नार। कलिजुग जूठे झूठे, ना मिल्या सच भतार। झूठी माया लूठे, होवण

अन्त ख्वार। मूधे होए ढूठे, ना मिले अमृत धार। निहकलंक तेरे दर तों रूठे, कोए ना दिसे सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी एका किया अकार। नर नरायण जोत हरि धरया। साक सज्जण सैण, गुरमुखां साचा वरया। बणाए भाई भैण, प्रभ आए साचे दरया। आप चुकाए लहिण देण, ना आवे पासा हरया। रसना हरि हरि कहण, चुकाए जम का डरया। बेमुख झूठे वहिण वहिण, माया राणी पाणी तेरा भरया। अन्तिम वेले फिरन मड़ी मसाणी, मानस जन्म हरया। सतिजुग तेरी साची राणी, पंचम् जेठ रैण सवाणी, प्रभ अबिनाशी किरपा करया। इक्क तणाए साची ताणी, नाल धोए सोहँ शब्द सच्ची बाणी, प्रभ अबिनाशी आसा वरया। गुर पूरे मिले जीव प्राणी, जम की कान आप छुडानी, लाग चरन जग तरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सच भण्डार, गुरमुख साचे भरया। सच भण्डारा हरि भरीजे। गुरसिख आत्म फेर पतीजे। देवे दरस हरि नैण तीजे। तन मन आपणी काया बीज साचा बीज, गुरसिख आपणी देही आत्म बीजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख भेख चारों कुन्ट कीजे। चारों कुन्टां इक्क अकारा। जोत सरूपी खेल अपारा। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां, आपे वसे बाहरा। अंडज जेरज उत्भज सेत्ज, रक्खे जोत अधारा। गुरमुखां दर जाए भज्ज भज्ज, तिन्नां लोकां पाए सारा। गुरमुखां हरि पड़दे कज्ज कज्ज, पाए पड़दा भारा। कलिजुग जीव जूठा झूठा भाण्डा जाणा भज्ज, भेव ना पाए गंवारा। अग्न जोत विच जाणा दज, दु:ख लग्गे भारा। गुरमुखां अमृत प्रभ दर पीणा रज, आत्म दुखड़ा लथ्थे सारा। सच सुच्च विच जाणा सज्ज, मदिरा मास कर किनारा। शब्द ताल जाए वज्ज, सोहँ सच्ची धुन्कारा। भाण्डा भरम जाए भज्ज, वज्जे चोट सच नगारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखाए निहकलंक नर अवतारा। दरस दिखाए दीन दयाला। गुरमुख तेरी आप करे प्रितपाला। अट्ठे पहर होया रहे रखवाला। जोत सरूपी साची सेजा माणे, जन भगतां आत्म मृगशाला। आप चलाए आपणे भाणे, तोड़े जगत जंज़ाला। आप भुलाए राजे राणे, आत्म करे कंगाला। भज्जे फिरन बेमुहाणे, फल ना दिसे किसे डाला। लभ्भदे फिरदे सुघड़ स्याणे, बेमुखां मूंह होया काला। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ साचा जाप जपाए, सोहँ शब्द सुखाला। देवे सच्चा नाम धन्ना, करे माल माला। शब्द सुणाए सच्चा कन्ना, तोड़े हँकारी शाला। धर्म राए ना दए डन्ना, प्रभ अबिनाशी साचा भाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सच दलाला। सच दलाल होए गुर पूरा। करे हलाल शब्द धुन तूरा। आत्म बख्शे साचा लाल, सोहँ शब्द साचा नूरा। आत्म होए माला माल, किरपा करे सतिगुर पूरा। फल लगाए साचे डाल, किसे हथ्थ ना आवे विच बहिश्ती हूरा। लक्ख चुरासी खाए काल, ना मिल्या साचा नूरा। गुरसिख मारो इक्को छाल। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, कर के जाए कारज पूरा। काल काल काल महांकाल। काल काल काल ना कोई सके सुरत संभाल। काल काल काल लए नाम धन ना सच्चा माल। काल काल काल बेमुखां लाए डन्न, वजाए झूठा ताल। अन्तिम कलि करे खंन खंन, भन्ने जवानी डाल। बेमुख जीव आत्म अन्न्ह, ना रहे वस्त संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया रूपी तणया एका जाल। काल काल काल कुलवन्ता। काल काल काल प्रभ आप कराए, सृष्ट सबाई हरि भगवन्ता। काल काल काल नेड़ ना आए गुरमुख साचे संता। काल काल काल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी झोली पाए, एका डोली आप चलाए, बेमुख उत्ते सर्ब चढ़ाए चारों कुन्ट जीव जन्ता। जगत जंज़ाला माया धरोह। कलिजुग जीव कंगाल, जगत नाता झूठा मोह। ना रिहा वक्त संभाल, अट्ठे पहर रिहा रो। अन्तिम वेले होए कंगाल, पल्ले धन्न ना दिसे को। डूंघी कन्दर मारे छाल, दर सच्चे ना सके छोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी काया आप तजाई, वीह सौ बिक्रमी छब्बी पोह। छब्बी पोह देह तजाई। अचरज़ खेल हरि वरताई। चार महीने नौ दिन गिण गिण लँघाई। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठ अचरज़ खेल मात वरताई। पंचम् जेठ जोत जगाई। विच मात करी रुशनाई। गुरमुख साचे लए जगाई। घनकपुरी हरि दया कमाई। गुर संगत साची संग रलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत अवल्लड़ी रीत चलाई। पहला साल हरि गुजारे। करे जोत सति चमत्कारे। साचा हुक्म आप सुणाए, बणाए दरबार इक्क अपारे। चार दर दरवाजे अठ्ठ बारे। जोती जोत सरूप हरि, सतारां हाढ़ पलँघ डाहया सच दरबारे। सच दरबार आप सजाया। चार दरवाजे कुन्ट चारे मुख रखाया। वेख विचारे सृष्ट सबाई तेरे दुःख, पड़दा उहला ना कोए रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा साचा राणा आपे रिहा जणाया। दूजे साल दया हरि धारे। गुरमुखां देवे नाम अधारे। खाणी बाणी रसन उचारे। कुरान अञ्जीलां पावे सारे। वेद पुरानां पढ़ पढ़ हारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपारे। तीजे साल तिन्ने लोक। एका चले शब्द सलोक। कोई ना सके अग्गों रोक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपारे, आपणा गेड़ा आपे लाया, सृष्ट सबाई रिहा झोक। चौथे साल चरन गुर धरे। अन्तिम खेल आपे करे। सच दुआरे हरि जी खड़े। लेख लिखाए, वेख वेख सर्ब उठाए, पहली माघी भेव खुल्हाए, गुरसिख अग्गे सीस झुकाए, प्रभ अबिनाशी किरपा करे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस आपणे कारज आपे करे हरे। आपणा काज आप रचाया। तिन्न अस्सू नींह रखाया। सोहणा मन्दिर इक्क बणाया। काला रखाया हरि जी अन्दर, अन्ध अन्धेरा जगत कराया। बेमुखां आत्म वज्जा जन्दर, ना किसे तुड़ाया। घर घर रोवण गंवारी बन्दर, हाहाकार करे बिल्लाया।

माझे देस तेरी हद्द पुरी घनक आप बणाया। पुरी घनक हरि खिच्च लकीरे। फिरे हाल वांग फ़कीरे। नींह रखाए धीरे धीरे। सिरों लाहे सभ दे चीरे। इक दूजे नालों विछड़न वीरे। हउमे लग्गे सभ नूं पीड़े। संत मनी सिँघ लेख लिखाया, निहकलंक बन्ने बीड़े। साचा शब्द लिखाए आप, उठाए हस्त कीड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां आपे पीड़े। चौथे साल खेल निराली। आप उठाए घटा काली। बैठी रहे हथ्थां ख़ाली। लुट्टी जाए वड वड धन माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दूजे दी करे चाली। चले चाल हरि निराली। ना कोई जाणे जोत ज्वाली। ना कोई बूझे जीव अकाली। बैठे लभ्भण धर्मशाली। फल ना दिस्सया किसे डाली। चारे कुन्टां होया ख़ाली। करे खेल दो जहानां वाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपे सार समाली। पंज साल पंज प्यारा। करे खेल अपर अपारा। साची जोत आप जगाए, माझे देस करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए आपणा खेल अपर अपारा। छेवें साल हरि माझे देसे। जोत सरूपी हरि प्रवेशे। साचा शब्द करे आदेसे। भुल्ले फिरन नर नरेशे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेसे। साल सतवें खेल रचाया। पंचम् जेठ मात सुहाया। सप्तम जेठ ख़ुशी मनाया। सिँघ सवरन अग्गे लाया। धुर दी बाण माण गंवाया। सच दुआरे आसण लाया। भगत भगवान मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाणी बाणी राह चलाया। अठवें साल हरि दया कमाई। दसवें चेत करे रुशनाई। गुरबाणी दी नींह रखाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणी रचना आप रचाई। नावें नौका इक्क चलाई। संसार सागर विच टिकाई। काया पाणी गागर आप भराई। गुरमुख विरले होए उजागर, आए हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ बाहों उप्पर लए चढ़ाई। दसवें साल दहि दिश विचारे। धरत मात तेरे पाए हिस्से, करे खेल अपारे। जोत सरूपी ना किसे दिसे, भुल्ले जीव गंवारे। जूठी झूठी चक्की पीसे, ना दिसे हरि करतारे। भेव मिटाए बीस इकीसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। साल यारवें मिल्या यार। प्रभ अबिनाशी सच भतार। गुर संगत करन आया प्यार। दर घर साचे होया मंगत, मंगे भिक्ख नाम अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साल ग्यारवें करे खेल अपर अपार। साल ग्यारवें मिटदी जाए चार यारी। फिरदी जाए घर घर बहारी। रोंदे फिरन नर नारी। ढौहन्दी जाए उच्च उसारी। वहन्दे वहिण वहन्दी जाए सृष्टी सारी। बेमुखां नींह बहिंदी जाए, इक्को लग्गे धक्का भारी। इक्को गाह गहिंदी जाए, उत्ते लग्गे सुहागा भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल हरि निरँकारी। चढ़या सच पंच प्रधाना। मातलोक होए हरि परवाना। हथ्थीं आया बंनण गाना। फड़ फड़ शब्द तीर कमाना। सोहँ चलाए सच निशाना। आप उठाए बली बलवाना।

विच बिठाए शब्द बबाणा। चारों कुन्ट अग्न मेघ, हरि आप बरसाना। इक्क चलाए शब्द तेग, फतिह डंक आप वजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अंक रखाना। एका अंक अंक अकारा। वज्जे डंक शब्द अपारा। प्रगट होए घनकपुर वासी, जगत कराए हाहाकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा आप चुकाए, सिरों लाहे आपणा भारा। भारा तेरा हरि लाहवणा। संत मनी सिँघ तेरा लिख्या लेख, पूर करावणा। आपणे नेत्र लैणा पेख, ना कोई किसे छुडावणा। आपे फड़ फड़ बन्ने औलीए पीर शेख़, मुलां मसीतों बाहर कढावणा। आपे धारे जोत सरूपी भेख, लाल रंगीला साचा माही धरत मात लाल करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ सच्चा रंग गुलाल, गुरमुखां आत्म आप चढ़ावणा। रंगे रंग लाल, बण हरि ललारी। गुरमुख वेखे साचे लाल। करे शब्द प्यारी। आत्म जोती देवे बाल, हउमे कढ्ढे जगत बिमारी। आपे बणे हरि प्रितपाल, जाए पैज संवारी, आत्म सुहाए साचा ताल, अमृत भरे भण्डारा भारी। गुरमुखां करे माला माल, देवे शब्द खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। लाल रंग रंग रंगीला। कलिजुग आया कर कर हीला। नाल ल्याया शब्द तीला। ढाउण आया उच्चा टीला। हिलाउण आया हँकारी किला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी छैल छबीला। हरि उठाई गुरसिक्खां खारी है। गुर संगत सच्ची रही कयारी है। घर
३०६
०४
३०६
०४
घर दवाउँदी गई बहारी है। बिरध बाल जवानां लग्गी तन ख्वारी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, आए चल द्वारी है। सच्चा रोग इक्क गंवाणा। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाणा। हउमे विच्चों रोग गंवाणा। झूठी ममता कढ्ढ वखाणा। साचे दर बणाए इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोगां सोगां चिन्त मिटाणा। हउमे रोग जो गंवाए। साचा जोग झोली पाए। दरस अमोघ हरि दिखाए। कर्म विजोग मेट मिटाए। सति संजोग आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाए। लग्गा रोग आत्म भारा। अट्ठे पहर हाहाकारा। दिस ना आए हरि निरँकारा। जीआं जन्तां लग्गा प्यारा। आदिन अंत सच भुलाया, वध्या मोह हँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची हिकमत आपे जाणे, रोग गंवाए साचा करतारा। साची देवे नाम दवाई। गुरमुख साचे रसना खाई। काया रोग सर्ब मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर रसन ध्याई। इक्क मम्गाया नाम कृपाल है। सुखी होवे वाल वाल है। धीआं पुत्तर भैण भाई, झूठे दिसे जगत जंजाल है। चारों कुन्ट दिसे खाली, वेले अन्त कंगाल है। गुरमुख साचे संत जन, तेरे अन्दर सच्चा माल है। काया भाण्डा कच्चा विच आपणी संभाल है। इक्को राम हरि जी सच्चा, करे अन्त रखवाल है। माया अग्न जगत मच्चा, दुखी वाल वाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क सुणाए बचन सच्चा, चरन प्रीती निभे

नाल नाल है। मंगो मंग इक्क भिखारी। चरन प्रीती अन्तिम वारी। चहु जुगां तों रहे न्यारी। तिन्नां लोकां वसे बाहरी। खिच्च लै जाए सच दरबारी। दुःख रोग ना लग्गे भारी। तन ना छोहे कोए बिमारी। आत्म निवारे दुखड़ा भारी। जगे जोत हरि निरँकारी। किरपा करे प्रभ आप गिरधारी। जो जन आए चल द्वारी। करे उज्जयारी काया महल्ल सच अटारी। छत्ती राग आप उपजाए, गुरमुख तेरे कन्न सुणाए, अट्ठे पहर रहे धुन्कारी। मुन सुन तेरी आप पुण छाण, छाण पुण हरि दए कराए। आपे लाहे दूई द्वैती वडी बिमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए, एका मंगे चरन प्यारी। चरन प्रीती साचा नाता। घर घर बैठयां देवे सच्चीआं सुगातां। ना कोई भाई ना कोई भैण भ्राता। रसना किसे ना सके कहण, अन्तिम वेले पुच्छे बातां। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ अबिनाशी आपे पिता आपे माता। प्रभ अबिनाशी चिट्टे अस्व हो अस्वार, आवे जावे पुरख बिधाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची इक्को हुक्म सुणाए, मंगो सोहँ साचा जापा। सच बीमार वडा रोगी। अट्ठे पहर धुरदरगाही सच संजोगी। भुक्ख तृष्ना बलदी अग्ग है। तत्ती वा वगदी जग है। काया कुले रहे दग है। गुरमुख आए तेरे दर, दूर दुराडे सद है। अग्गे बैठा हरि जी दिसे, सिँघ सिँघासण रिहा सज्ज है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ गुर संगत तेरी रक्खण आया लज है। साचा रोग किवें गंवाई दा। पहलों चरन प्यार पाई दा। फिर करना दरस सच्चे माही दा। फिर मस्तक जोती नूर जगाई दा। वेखो रंग हरि रघुराई दा। बहत्तर नाड़ां हरि वसाई दा। जंगल जूह विच पहाड़ां, आपणे संग रखाई दा। तन साड़े जेठ तत्ती अग्नी हाढ़, अमृत ठंडी धार वहाईदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना नाल जो ध्याई दा। रसना गाओ सहिज सुभाओ। हउमे रोग सर्ब गंवाओ। किरपा कर हरि रघुराउ। माता कुक्खड़ी सुफल कराउ। भुक्ख लहि जाए, उज्जल मुखड़ी विच मात कराउ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाउ। गहर गम्भीरा आपे करे ठंडा सरीरा। शब्द देवे साची धीरा। विच्चों मारे हउमे कीड़ा। खाई जाए हड्डी रीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा बन्नृण आया बीड़ा। रोग तन जगत वधाया। प्रभ अबिनाशी इक्क भुलाया। झूठा नाता जगत बंधाया। साचा दाता दिस ना आया। बैठा रहे इक्क इकांता, काया कोठड़ी डेरा लाया। नेत्र मीट अन्दर मारो झाता, जोत सरूपी डगमगाया। पाड़ आया गगन दीआं छातां, गुरमुख साचे विच समाया। कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम प्याया। हउमे रोग गुर दर गंवाणा। सिर ते मन्नणा पैणा भाणा। शाह सुल्तान वड राज राजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरे जोत श्री भगवाना। रोगीआं रोग गंवाई जा। अमृत जाम प्याई

३१० ०४

जा। सोहँ साचा नाम ध्याई जा। फड़ फड़ बाहों उठाई जा। साचे राहे पाई जा। संत मनी सिँघ तेरा दुआरा, आपणे हथ्थीं वखाई जा। आप वखाईं घर बाहर, जिथ्थे हरि जी बहाईदा। अमृत वगे सोमा धार, काया ठंडी ठार कराई जा। कँवल नाभ होए उज्जयार, अमृत मुख चुआई जा। उत्तों लथ्थे सिर दे भार, चरनीं सीस निवाईदा। प्रभ अबिनाशी मिले सच भतार, अग्गे बहि दर्शन पाईदा। गुरमुख सुलक्खणी नार, साची सेजा कन्त हंढाई जा। प्रभ अबिनाशी दस्से धार, किवें पीआ मनाई दा। निहकलंक ल्या अवतार, पंचम् जेठ खुशीआं नाल मनाई दा। साची करे हरि जी कारी। देवे नाम सच्ची इक्क खुमारी। लाहे तन जूठ झूठ हरि बिमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चल द्वारी। लाहे दुःख हरि भगवाने। बिरध बाल जवान ना कोई पछाने। एका जाम सर्ब पिलाने। ना कोई मंगे दाम। सुक्के चाम हरे कराए पूर कराए काम। जो जन चरन ध्यान रखाए, मिटे अन्धेरी शाम। आत्म साची जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया तन अन्दर साचे मन्दिर, एका जोती राम। साचा रोग गुर दर गंवाईए। पूरे गुर दा दर्शन पाईए। गुर संगत सेव कमाईए। भैण भाई सर्ब बण जाईए। नेत्र खोल्ह ना किसे तकाईए। काम क्रोध दूर कराईए। हिरदा सोध गुर चरन आईए। अगाध बोध शब्द कन्न पाईए। वड दाता जोधन जोध, एका सरन रखाईए। साचा शब्द देवे धरवास, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईए। निज घर आत्म रक्खे वास, आत्म जोती आप जगाईए। लाए कौल विच प्रभास, काया चन्दन रक्ख बणाईए। अन्तिम वेला होणा नास, प्रभ अबिनाशी ना मनो भुलाईए। अट्ठे पहर रहीए दास, जिस दा दित्ता पीए खाईए। रसना जपीए स्वास स्वास, मानस जन्म कराईए रास, सिर साचा छत्र झुलाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर आत्म रक्खे वास, अन्दर बैठा दर्शन पाईए। अन्दर वेख विचारो। प्रभ अबिनाशी सच भतारो। आत्म आसण साची सेजा, सुत्ता पैर पसारो। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनों, करो सच्चा इक्क प्यारो। आत्म सेजा हरि विछाईआ। उत्ते सुत्ता हरि रघुराईआ। माया पड़दा इक्क रखाईआ। बेमुखां दिस ना आईआ। गुरसिक्खां आत्म वजे वधाईआ। जिस दूई द्वैती दूर कराईआ। ना कोई शरअ ना हदाइती, ना कोई औखा मार्ग लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ सच्चा इक्को राग, सभनां सिर रक्खे वड्डयाईआ। सोहँ राग इक्क सुणाया। राग छतीसा माण गंवाया। ना कोई करे प्रभ साचे दी साची रीसा, राज ताज साज बाज जगत काज आपणे हथ्थ रखाया। जिस जन मारे शब्द अवाज़, सोया लए जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि प्रगट होया देस माझ, बेमुखां गूढ़ी नींद सवाया। साची डोली हरि बणाईआ। चार कुहार चारे जुग रखाईआ। उत्ते लाल पाए पड़दा, साचा चोला तन छुहाईआ। कलिजुग लक्ख चुरासी झूठी नारी,

३११
०४

३१२
०४

एहदे विच बहाईआ। हरि चुकाए पंड भारी, ना सके एह उठाईआ। तोरी जाए वारो वारी, चारे कुन्ट फिराईआ। फेरी जाए मगर बहारी, लाड़ी मौत मगर लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ माया आपणी आप वरताईआ। लक्ख चुरासी नारी, डोले पाई रोनी। इक्क इकल्ली जूठ झूठ दिसे नाल इक्को चुन्नी। अन्तिम वेले ना कोई सुहेल बनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, आपे घड़े आपे जाए भन्नी। डोली चुक्कण चार कुहार। लक्ख चुरासी रोवे धाहां मार। कर बन्द ख़लासी, हरि करतार। पई फांसी, धर्म राए दे सच द्वार। कलिजुग करदे रहे हासी, मदिरा मासी, निहकलंक ल्या अवतार। बणे धर्म राए दी दासी, सिर चुक्कया डाहढा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को धक्का आपे लाया, सके ना कोई खल्ह़ार। लक्ख चुरासी पावे हावे, वेले अन्त ना कोई छुडावे। झूठे बद्धे कलिजुग दाअवे। धर्म राए अठाई कुण्डां आप भरावे। छोटा बाला सिँघ मनजीत, आपणी हत्थीं बूहा लाहवे। लक्ख चुरासी गया जीत, इन्द्रपुरी विच डेरा लावे। आपे ढाहे मन्दिर मसीत, निहकलंक साचा डंक इक्क वजावे। जगत चलाए साची रीत, पहली हाढ़ी नींह रखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ दिन खुशीआं नाल मनावे। पहली हाढ़ी नींह रखाउणी। सति सरूपी इट्ट लगाउणी। सिँघ गुरमुख जो लाई मेख, प्रभ अबिनाशी पूर कराउणी। साढे तिन्न हत्थ धरती वेख, चारों तरफ लकीर लगाउणी। नेत्र लैणा वेख, चढ़दे पासे मुख रखाउणी। साची बणत हरि बणा, लाल चोली गल विच पाउणी। गुर संगत साची सेव कमा, पक्की रहे तेरी हाढ़ी साउणी। चरन प्रीती एका दिसे, ना होर कोई अड़ाउणी। आप तोड़े जगत जंज़ाल, जिस ने साची बणत बणाउणी। गुर संगत ना होए कदे कंगाल, साची झोली नाम भराउणी। फल लगाउणा साची डाल, पहली हाढ़ दया कमाउणी। सृष्ट सबाई दले जिउँ दाल, अचरज़ खेल कर वखाउणी। आपे चले अवल्लड़ी चाल, गुर संगत रक्खे नाल नाल, बेमुख जीवां ख़ाक उडाउणी। सिँघ मनजीत धोए दाग छोटे बाल, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, तेरी इक्क बणत बणाउणी। साची नींह देवे रक्ख। लक्ख चुरासी विच्चों वक्ख। चारों कुन्ट दिसण भक्ख। गुरमुख साचे लए रक्ख। सृष्ट सबाई जाए मथ्था। शब्द सरूपी पाए नत्थ। गुरमुख साचे संत जनां, सगल वसूरे जायण लथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जोत जगाई, सर्बकला समरथ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मन साचे धीर धरीजे। सोहँ देवे साचा वर, आत्म जीव फेर पतीजे। साची वस्त विच धर, सोहँ बीज साचा बीजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर गुरसिख साचे तेरी खड़या रहे आत्म दर दहिलीजे। शब्द भण्डारा वंड, आत्म दुःख दुःखदाई है। आत्म तोड़ घमंड, काम क्रोध हँकार कवाई है। काया तन झूठा घमंड, आत्म वस्त पराई

३१२
०४

है। नार सुहागण सदा रंड, साची सेज ना कन्त हंढाई है। अन्तिम वेले हरि देवे दंड, ना लए कोई छुडाई है। करे खेल विच ब्रह्मण्ड, साची जोत जगाई है। बेमुखां वढ्ढण आया कंड, शब्द तेग हथ्थ उठाई है। जूठे झूठे पावण वंड, वेले अन्त करे सफ़ाई है। कच्चे भन्ने घर घर अंड, छुप्या रहे ना कोई थाँईं है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपणी सरन रिहा बहाई है। नाथ त्रैलोकी रचन रचांयदा। जोत सरूपी शब्द सलोकी इक्क सुणांयदा। साचा भाणा जो वरताए ना सके कोई रोकी, विच मात भेव खुल्हांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां बणत बणांयदा। सच त्रैलोकी आप बणाई। मात पताल अकाश लिखाई। उप्पर रक्खे हरि जी वास, अचरज धाम रचाई। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक चरनां हेठ रखाई। जोती जोत सरूप हरि, चौदां हट्टां चौदां भवन इक्क दुकान रखाई। चौदां लोक हरि भेव खुल्हारे। विच धरत ना कोई उसारे। इक्क वखाए काया महल्ल मुनारे। जिस दे अग्गे पड़दे लग्गे भारे। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच्चे इक्क चुबारे। चौदां हट्ट सर्ब खुल्हाए। साचा भेव आप सुणाए। समेरू विच सर्ब रखाए। सच समेरू कवण वखाए। किस दा नां रखाए। वेद पुरान सर्ब पुकारे, विच मेल साचे सागर, हरि जी आप टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत पंचम् जेठ साचा भेव खुल्हाए। ना उह समेरू ना उह सागर। चौदां हट्ट काया गागर। एका जोत करे उजागर। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाए, गुरमुख साचा बणे सुदागर। त्रैलोकी हरि बणाईआ। हरि हथ्थ आपणे विच लटकाईआ। उत्ते अकाश हरि रहाईआ। बिनां थम्म्हां गगन टिकाईआ। चन्द सितारे दीपक साचे सूरज जोत जगाईआ। आपे वसे साचे उप्पर महल्ल मुनारे, जोती दूण सवाईआ। कदे ना लग्गे किसे किनारे, उच्च अटल्ल हरि प्रबल, एका धाम वसाईआ। थल पताल हरि पसारे, बाशक सेजा सुत्ता पैर पसारे, लछमी चरन झस्सण लाईआ। निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा दित्ती कर, काला चोला गुर संगत बणा लिआईआ। त्रैलोकी दी दस्सां धार। मृतु लोक एह संसार। आपे बद्धा अद्धविचकार। लक्ख चुरासी पसर पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भाणे आप वरताए बेमुखां अन्तिम आई हार। लक्ख चुरासी लाए फाँसी। वेखो लटकण मदिरा मासी। वेद पुरानां सार ना पाई, पढ़ पढ़ थक्के पंडत कांशी। कुरान अंज़ीलां अन्तिम हार आई, ना कोई जाणे भेव राई। खाणी बाणी दए दुहाई। ओहो जाणे जिस सृष्टी साजी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ निहकलंक नरायण नर, चढ़ के आया शब्द घोड़े चिट्टे ताजी। शब्द घोड़े हो अस्वार। सृष्ट सबाई वेख गुर संगत रिहा तार। बण के आया पहरेदार। लक्ख चुरासी पई लटके अद्धविचकार। प्रभ अबिनाशी साचा माही, एका दए हुलार। आपे करे बन्द ख़लासी, धर्म राए

ना करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना हथ्थ फड़े कोई कटार। ना कोई खण्डा ना तलवार। एका शब्द कराए लक्ख चुरासी आर पार। आपे बैठे इक्क किनार। धर्म राए दा खोलॣ कवाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काला सूसा तन पहनाए ईसा मूसा आण मिटाए, जोत जगाए अग्न लगाए बहत्तर नाड़। काले सूसे तेरी वारी, चौथे जुग कर ख्वारी। गुरसिख पुरे किरपा धारी। निहकलंक प्रगट होया नरायण नर अवतारी। प्रगट होया चिट्टे अस्व कर अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर चार चुफेरे वेंदा जाए देंदा जाए सर्ब बहारी। देवे आप बहारी। बेमुखां करे ख्वारी। घर साचे विच्चों कढ्ढे बाहरी। ना कोई अटके विच संसारी। शब्द खण्डा एका फड़े, मारे वारो वारी। राजे राणयां आत्म फड़े निहकलंक वडा वड बलकारी। आप कराए पार अटकों, मगर जाए करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे अग्गे कोई ना अटके, सोहँ चले तिक्खी आरी। तिक्खी आरी जाए वढ्ढी। राज ताज जाण छड्डी। कोई ना देवे नाम वढ्ढी। प्रभ इक्क खुलॣाए साचा दर, बेमुखां जाए वढ्ढी। बेमुख सुट्टे मूंह दे भारे, उत्तों जाए दब्बी। घर घर रोवण नर नारे, चारों तरफ धाहां मारे, दाढ़ां हेठ जाए चब्बी। साची खेल आप रचाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए अन्तिम दिन बाकी रहि गए छब्बी। इक्क सौ ग्यारां दिन प्रभ जाए वंडी। नौ खण्ड पृथ्मी वढ्ढे कंडी। घर घर पाउँदा जाए वंडी।
३१४
०४
ना कोई सुहागण ना कोई रंडी। आप चमकाए साची चण्डी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क वखाए साची डण्डी। पहला खेल करे अकाश है। साची जोत करे प्रकाश है। ब्रह्मा अन्तिम होए नास है। सिँघ पाल होया प्रभ दास है। मानस जन्म होया रास है। हरि जपया स्वास स्वास है। दित्ती दात सच्ची वड्याई, प्रभ अबिनाशी पुरख अबिनाश है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक करे प्रकाश है। दूजी खेल हरि रचाए। भगत ध्रू जोत मिलाए। सिँघ सवरन आप उठाए। बाहों पकड़ दर बहाए। अट्ठे पहर सेवा लाए। दिवस रैण दरस दिखाए। शब्द डण्डा हथ्थ फड़ाए। साचे डण्डे आप चढ़ाए। धुरदरगाही एका खण्डा, हथ्थ उठाए। बेमुखां करन आया झडां, निहकलंक जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इदरपुरी फेर जगाए। इन्द्र पुरी पाया फेरा। सिँघ मनजीत तेरा वेखे सच्चा डेरा। जिथ्थे कराया हरि वसेरा। चारों तरफ घुंमर पैंदी अपच्छरा देणा गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करोड़ तेतीस तेरा बन्नॣण जाए बेड़ा। शिव पुरी हरि चरन छुहाए। शिव शंकर अग्गों सीस झुकाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। गलों नाग काले लाहे। जगत जगदीश सिँघ सेवा लाए। प्रभ अबिनाशी चरन धूढ़ी मस्तक लाए। साचा हुक्म दए फ़रमान, मोहणी रूप आप वटाए। प्रभ अबिनाशी निहकलंक, सोहणी सूरत, इक्क बणाए। एका जोत दिसे अकाल मूर्त, मातलोक हरि जामा पाए। नाल रखाए शब्द तूरत, तिन्नां लोकां

आप सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी आसा पूरत, पुरीआं लोआं आप समाए। संत मनी सिँघ देग चढ़ाउणीआ।
लक्ख चुरासी विच पकाउणीआं। सिँघ प्रीतम सेवा लाउणीआं। अग्ग मट्ठी मट्ठी डाहणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
अन्तिम वेले कलिजुग तेरे गुर संगत रिंन्ह खवाणीआं। मट्ठी मट्ठी अग्नी बाल। साची देग लैणी उबाल। संत मनी सिँघ प्रगट
होवे, साचा संत साचा लाल। कलिजुग तेरा मुखड़ा धोवे, सिर ते बन्न्हे चिट्टा रुमाल। काला सूसा तन पहनाए, जो ल्याए
गुरमुख पाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीपक देवे बाल। साची देग देणी चाढ़। आप उठाए साची धाड़।
गुर संगत तेरा होए सहाई, फिरे पिच्छे अगाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई अन्त खपाए, उचे टिल्ले
फुल्ल रहण ना पाए, शब्द डण्डे नाल देवे झाड़। उब्बल देग चिट्टा रंग। सृष्ट सबाई कच्ची वंग। अन्तिम वेले होए भंग।
चारों कुन्ट दिसण नंग। गुर संगत तेरा साचा संग। प्रभ दर मंगी साची मंग। संत मनी सिँघ साचा गुर, अन्तिम देवे
रंग। निहकलंक लेख लिखाया, लिख्या लेख धुर, चढ़ के साचे घोड़े आया। चिट्टे अस्व तंग कसाया। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले, साचा पूत साचा दूत, आपे आण उठाया। संत मनी सिँघ उठे जागे। घनकपुर
३१५ विच लग्गे आगे। सड़दे जाण कोल वागे। कोए ना धोए पिछला दागे। आप सुणाए साचा रागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ३१५
०४ भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए, आपणी खेल आप रचाए, सृष्ट सबाई उठ उठ भागे। उब्बल देग मारे उछल्ल। सृष्ट ०४
सबाई जाए हल्ल। बैठे आप निहचल धाम अटल्ल। साचा वेला आण सुहाया, वेले अन्तिम कल्ल। सृष्ट सबाई आप भुलाया,
कर कर वल छल्ल। गुरमुखां बेड़ा बन्न वखाया, फल लगाए साचे डाल। अन्तिम वेले कंध उठाया, पल्लू पाया गल।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत जाए बलि बलि। उब्बल देग पाणी गढ़के। प्रभ अबिनाशी
सृष्टी रिड़के। जेठ दोपहर डाहढी कड़के। लक्ख चुरासी आपे मरे, इक्क दूजे दे नाल लड़के। बेमुख जीवां नीत खोटी,
धुर दरगाहों फिटके। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरसंगत तेरा माण रखाया, साचा
लेख आप लिखाया, विच मात कोई ना मेटे। प्रभ साचे खुशी मनाईआ। गुर संगत दए सुणाईआ। जो सच दान आए
मंगत, सच नाम दात, हरि भिच्छया झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुक्खयां नंगिआं पूरन आस कराईआ।
पंचम् जेठ हरि जोत जगावे। जो जन आवे राजी जावे। खुशीआं नाल मंगल गावे। प्रभ अबिनाशी ना भुलावे। प्रभ अबिनाशी
सहिज समावे। घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे चरन धूढ़, अमृत आत्म तीर्थ गुरमुख साचा
सदा सदा नुहावे। आत्म तीर्थ साचे नुहाओ। दुरमति मैल तन गंवाओ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जो रही फैल, प्रभ दर आए दूर

कराओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटा हरस, सुखी वसंदड़े घर नूं जाओ। रचनां साची आप रचाईआ। जोती पूरे सिख विच टिकाईआ। दुरमति मैल पहलों धोती, काया माटी साफ कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोती एका आप जगाईआ। साची जोत किया उज्जयारा। निहकलंक विच मात ल्या अवतारा। कदे गुप्त कदे प्रगट कदे होवे जाहरा। गुर संगत चार चुफेरे प्रभ अबिनाशी देवे पाहिरा। अक्खीं किसे दिस ना आए, बेमुख फिरन सर्ब हलकाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, गुर संगत तेरे लेख लिखाए, भरम होवे तेरे विच्चों बाहरा। सर्ब ज्ञाता आप प्रभ, सर्ब घट जाणे। आत्म राम सर्ब पछाणे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, गुरमुख साचे आप पछाणे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, एका जोत जगे महाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, कलि मिटाए अन्ध अंध्याने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, कलिजुग तेरी लाहुण आया मकाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, चोजी चोज करे भगवाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, कढ्ढे खोज लक्ख चुरासी फोल वखाणे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, नाम झुलाए सच निशाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, गुरमुखां हत्थीं बन्ने गाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, धरत मात खुशी मनाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, लक्ख चुरासी व्याही जाए, धर्म राए दे घर रखाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाल चोली सच्ची डोली नाल बन्ने शब्द कलीरे सच्चे गाने। सर्ब घट दाता आप प्रभ, वक्त विचारे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, कलिजुग तेरी पाए सारे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, करे खेल रंग अपारे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, धर्म राए तेरा बणया संग, लक्ख चुरासी बण भतारे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, विआउण आया जगत नारे। सर्ब घट दाता आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पेईए सहुरे दोवीं थाँईं काज संवारे। मातलोक तेरे कवण मापे। धर्म राए पित साचा जापे। लक्ख चुरासी बुज्झ आपणा आपे। अन्तिम वेले पैणी फाँसी, अट्ठे पहर चढ़ना तापे। खड़े तक्कण मदिरा मासी, वेख वेख धरत मात कांपे। प्रगट होया घनकपुर वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जन्म कराए रहिरासे। लक्ख चुरासी कलिजुग कन्या। नेत्र वेख धर्म राए ना मन्नया। विच रल गए पीर औलीए शेख़, झूठा बेड़ा जिन्हा बन्नया। प्रभ उखाड़े मातलोक लग्गी मेख, अग्गे देवे डंनिआ। कलिजुग रोए धी निमाणी माढ़े होए आपणे लेख, धर्म राए डाहढा बन्नया। करदी आपणे झूठे भेख, आत्म राम अजे ना मन्नया। अन्तिम वेले नेत्र रही वेख, मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण, हुन्दे जाण खंन खंनिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त जुगां जुगन्त जिहड़ा घड़या सो भंनिआ। लक्ख चुरासी नीर वहावे। अग्गे कोई ना धीर धरावे। धर्म राए दे सजाए। रुस्सया पती कौण मनाए। आत्म जती कोई दिस ना आए। वा तत्ती सर्ब जलाए। दे मती हरि समझाए। टुट्टा

नत्ती हरि रघुराए। डूंघे कुंदर जाए घत्ती, अठाई कुण्डां आप खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लाल बाणा तन छुहाए। लक्ख चुरासी होए निमाणी। धर्म राए ना मिल्या हाणी। रुढ़दी जाए ऐवें जवानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, माया राणी जाल विछाया, वडा शाहो भूपी विच फसाया, अन्ध कूपी कलिजुग कराया, दिस किसे ना आया, लक्ख चुरासी हो निमाणी। धर्म राए तेरा भरे पाणी। वेले अन्तिम होई अन्धी काणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, फल रहण ना देवे किसे डाहणी। प्रभ साचे रंग रंगाया। रल मिल सईआं मंगल गाया। मात पित भैणां भईआं मिली वधाईआ। धरत तेरी नईआ, अन्तिम अन्त डुलाईआ। प्रगट होया शाम घनईआ, साची अंगी तन छुहाईआ। चूड़ा लटकाए साची बईआं, लाल रंग कराईआ। लक्ख चुरासी विधा कराए, सिध्धा राह इक्क वखाए, मिल मिल अंक सहेलड़ीआं मैहन्दी लाए, दो हथ्थीं गिध्धा आपे पाए, चली इक्क अकेलड़ीआ, ना बणया कोई बेलड़ीआ, वेले अन्त पछताईआ। जन भगतां पुरख अबिनाशी साचा मेल मेलड़ीआ, निहकलंक कलि जामा पाए, लक्ख चुरासी मिली सहेली जगत विछुन्नीआ। कलिजुग अन्तिम होई दुहेली, ना हरि रिहा सुहाग, चोटी गई मुनीआ। एका तुट्टा धीरज ताग, होई कच्ची भुन्नीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी पकड़न आया वाग, पंचम् जेठ चिरी विछुन्नीआं। लक्ख चुरासी पाए वहीर। इक्क दूजे नूं वेखण, किधरे भैण ते किधरे वीर। रुढ़दे जाण पंडत शेख़ण, ग्रन्थीआं किसे हथ्थ ना आउणा नीर। लक्ख चुरासी मिटे दोखण, चले सच्चा शब्द तीर। सतिजुग लग्गे साची मेखन, प्रगट होए गुणी गहीर। गुरमुख साचे नेत्र पेखण, कलिजुग अन्त अख़ीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ प्रगट होए, गुरमुखां कटण आया भीड़। लक्ख चुरासी भौं भौं तक्के। प्रभ अबिनाशी पिच्छों हक्के। उच्च मुनारे ढहिंदे जाण, पहले गाह गहिंदे जाण, उम्मत नबी रसूल दी झूठे वहिण वहन्दे जाण, आपणा लहणा लैंदे जाण, नाल मिलाए जामन बूरे कक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डे आपे झाड़े, कलिजुग अन्तिम फल तेरे पक्के। फल गया पक्क लग्गे डाल। दूरों हरि जी रिहा तक्क, उठे मारे पहली छाल। पहली कूट लाउँदे भक्ख, चुल्हे चढ़ी रहि जाए दाल। बद्धा भार ना कोई सके चक्क, दर दर फिरन होए कंगाल। नबेड़ा करे प्रभ हक्को हक्क, शब्द सरूपी पाए जाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, केहड़ा झल्ले एहदी झाल। घड़ी विछोड़ा पाईं ना। चरनों परे हटाईं ना। आत्म हँकार विकार चलाईं ना। विच संसार झूठी माया जाल विछाईं ना। एका देवीं शब्द अधार, भरम भुलेखे गुरमुखां भुलाईं ना। फड़ फड़ बाहों लाईं पार, दे धक्का जगत वहिण वहाईं ना। आत्म अन्धे ना दिसे कोई किनार, दर साचे

हरि दुरथाँईं ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेला तेरा आया, गुरसिख निमाणा गऊ ग़रीब आत्म विच्चों भुलाई ना। गऊ ग़रीब निमाणा है। होए सुघड़ स्याणा है। जिस देवे चरन ध्याना है। वडा प्रेम निभाणा है। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना है। अट्ठ सट्ठ तीर्थ मेट मिटाना है। खाणी बाणी वक्त चुकाणा है। वेद पुरानां अन्त पछताणा है। कुरान अंज़ीलां बद्धा गाना है। सोहँ शब्द चढ़या विच बबाना है। नाल ल्याए सच कमाना है। आप चलाए विच जहानां है। जन भगतां देवे सच्चा माना है। आत्म ज़िंदा इक्क तुड़ाना है। झूठी चिन्दा हरि मिटाना है। गुर गोबिन्दा मेल मिलाणा है। सुरपति राजे इन्दा सरन लगाणा है। करोड़ तेतीस संग रखाणा है। शिव शंकर तीर त्रसूल चलाणा है। धूंआंधार होए महाना है। हनवन्त बीर आप उठाना है। राम रमईआ आप अख्वाना है। अर्जन रथ हरि आप चलाना है। कृष्न घनईआ हत्थ आपणे वाग रखाना है। कलिजुग तेरी डोबे नईआ। प्रगट होए हरि भगवाना है। मिलण ना आए तेरी साची मईआ, निहकलंक बली बलवाना है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ वक्त सुहाना है। नील कंठ जो अख्वाई है। दूजे रक्खे नाल पार्बती माई है। कलिजुग तेरी वगी वा तत्ती, दूआ आसण दित्ता हलाई है। उठे शिव सच्चा जती, पिठ त्रसूल उठाई है। पार्बती तेरा साचा पती, लै अंगढ़ाई है। शब्द सरूपी देवे मती, ना कोई बूझ बुझाई है। धरत मात होई सती, देवे
३१८ अन्त दुहाई है। कलिजुग वेला अन्तिम आया, शिव सुन्न समाध खुल्हाई है। नेत्र खोल्हे पवण बोले, निहकलंक जोत जगाई ३१८
०४ है। साचा भेव नाथ भोला खोल्हे, पार्बती रिहा समझाई है। प्रगट होया राम रमईआ, लछमण जती नाल उपजाई सीता ०४
माई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर कलिजुग तेरे अन्तिम वेले, झूठे जग लक्ख चुरासी करन आया कुड़माई है। धृगकार धृगकार धृगकार। बेमुख निन्दक चुगल दुराचार। काया होई नष्ट, अट्ठे पहर रहे बुख़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मारन आया पंचम् जेठ डाहढी मार। दुष्ट दुराचार जीव वड कामी। प्रभ दर आए होए हरामी। आपे परखे अन्तरजामी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरे सुकाए काया चामी। झूठा चम्म गया सुक्क। प्रभ अबिनाशी मुख पाए थुक्क। डाहण जवानी जायण टुट्ट। जगत चोग जाए निखुट्ट। सत्तां पीड़ीआं जड़्ह देवे पुट्ट। शब्द तीर रसना जाए छुट्ट। बेमुख दुष्ट दुरजनां धुरदरगाही बाहर कढ्ढे कुट्ट। बेमुखां जड़्ह जहानों देवे पुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिन दिहाड़े देवे लुट्ट। दिन दिहाड़े मारे डाका। घर ना दिसे बाल काका। जगत जहानों तुट्टा नाता। प्रभ अबिनाशी ना पछाता, होई नार वड कमज़ाता। गई जहानों सक्खणी, ना मिले सच्ची दाता। लज पति किसे ना रक्खणी, ना बणे कोई साथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखाए त्रैलोकी नाथा। नर नारी होए चोर। प्रभ अबिनाशी

आपे पाए नर्क निवासी अन्ध घोर। वेले अन्त ना कोए छुडाए, अद्ध विच टुट्टी डोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शौह दरया देवे रोढ़। चोरी करे नार दुहागण। मातलोक ना होए सुहागण। शब्द सरूपी लड़े नागन। सोए मौत ना फिर जागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तीर रसना चलाया, घर उडदे दिसण कागण। उडण काग घर बनेरे। प्रभ अबिनाशी साचा घेरे। सुंञ मसाणी होण डेरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ करे हक्क नबेड़े। ठग्गी चोरी करी प्यारी। प्रभ दर भुली आए नारी। वेले अन्तिम होए ख्वारी। घर साचे विच्चों होए बाहरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे शब्द कटारी। मारे मार हरि अचुत्त। घर ना रहे दुध्ध पुत्त। जगत जहानों नाता तुट्टा, वढ्ढे नक्क गुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती आप खिचाए, खाली रहि जाए बुत्त। चोर यार ठग वणजारे। काम क्रोध लोभ हँकारे। प्रभ सारे लए सोध, मारे शब्द खण्डा दो धारे। जोत सरूपी वड जोधन जोध, दूती दुष्ट आप सँघारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां घर कराए हाहाकारे। हाहाकार होए घर कच्चे। खाली करे कक्ख ना रसन जपे। साचा जाप किसे ना पचे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द हथौड़ा इक्को मारे भन्ने अंडे कच्चे। शब्द हथौड़ा दित्ता मार। नर नारी सुट्टे मूंह दे भार। दर घर साचे होए विभचार। कुकर्म कमाया धर्म गंवाया मानस जन्म आई हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारे शब्द सच्ची कटार। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, पापी आत्म अन्धा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, लोभी झूठा पापां मन्दा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, मदिरा मासी कलिजुग गन्दा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, हरि ना गाया बत्ती दन्दा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, आत्म विच झूठा जंदा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, अग्गे होई पापां कंधा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लाए झूठे धन्दा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, आत्म विकारी। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, दुष्ट दुराचारी। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, जूए बाजी आपणी हारी। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, पापां पंड चुक्की सिर भारी। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, घर आपणे फेरन आप बहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मनों विसारी। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, आत्म भुल्ला। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, विच माया रुला। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, वस्सया रहे ना काया कुला। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, मिट जाए पहले बुल्ल्हा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, काया फल अन्तिम हुल्ला। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, बुज्झे अग्नी काया चुल्ल्हा। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, दर घर साचे आया भुल्ला। बेमुख मुग्ध अञ्याण है, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद दुआरा रहे खुल्ल्हा। बेमुख मुग्ध अञ्याण, प्रभ अबिनाशी ना पछाणयां। बेमुख मुग्ध अञ्याण घनकपुर वासी आप भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणयां। झूठी काया अन्त विनासी, रो रो पछोताणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, शब्द तीर साचा मारे बाणयां। शब्द बाण साचा वजे। कवण तेरे पड़दे कज्जे। बेमुख दर घर साचे मूल ना आई लजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा मगर लगाए काया भाण्डा तेरा भज्जे। बेमुख आत्म खोटी है। प्रभ मास तुड़ाए बोटी बोटी है। किते हथ्थ ना आउणी रोटी है। कलिजुग मुन्नी गई चोटी है। सिर वज्जे शब्द सोटी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया भाण्डा देवे फोटी है। बेमुख मूर्ख अज्ञानीआं। दर घर आए जायण कर कर बेईमानीआं। साचा लाहा लैण तूं आया, झूठी लै ली नाल निशानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारे तीर शब्द सच्ची कानीआं। प्रभ साचे दया कमाई जा। बिधना लिखी रेख मिटाई जा। साचा लेखा फेर लिखाई जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे आप समाई जा। लिख्या लेख बण लिखारी। मंगण आए दर भिखारी। किरपा कर हरि गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे कोए ना मारी। आपे रक्खे आप ज्वाले। आपे रक्खे स्वास सुखाले। पंज सठ सठ पंज प्रभ साचा लेख लिखा ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुट्टी गंढु वखाले। प्रभ पूरे खेल रचाईआ। देवण आया जगत वधाईआ। पंचम् जेठ जामा धर, जोत सरूपी जोत जगाईआ। बेमुख लभ्भण दर दर, साची जोत किसे हथ्थ ना आईआ। आपे वसे साचे घर, बेमुखां बूझ ना पाईआ। विरला गुरमुख आवे दर, जिस प्रभ दया कमाईआ। प्रगट जोत नारी नर, चरन धूढ़ी मस्तक दए छुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले साची जोत जगाईआ। जगे जोत हरि निरँकारे। प्रगट होया विच संसारे। बेमुख जीव कलिजुग डोबे विच मञ्झधारे। गुरमुख साचे रसना गाउँदे, मिल्या पुरख अपारे। अट्ठे पहर चित ध्याउँदे, जगाए जोत अपर अपारे। अमृत साचे तीर्थ नुहाउँदे, दुरमति मैल रिहा उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, वड बली बलकारे। वड बलकार हरि निरँकार। तिन्नां लोकां बन्ने धार। फिर फिर वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेला कलिजुग आया, प्रगट होया विच माझे देस, कर कर अवल्लड़ा भेस, आप बणाए सच्ची सरकार। सच्ची सरकार सच विहारया। जोत सरूपी जामा धार, करे खेल अपर अपारया। प्रगट हो नर नरायण, चार कुन्ट करे जोत अकारया। प्रभ अबिनाशी धरनी धर, भरम भुलेखे जगत भुला रिहा। गुरमुखां मिल्या वरनी वर, आत्म बूझ आप बुझा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी गए पड़, लक्ख चुरासी गेड़ कटा लया। लक्ख चुरासी कटे गेड़ा। कलिजुग तेरा अन्त मिटाए झूठा झेड़ा। शब्द सरूपी जोत जगाई, धरत मात तैनूं देवे पुट्ठा गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग निहकलंक जामा पाया, वक्त रहि गया थोड़ा। कलिजुग पापी करे विचार। बेमुख जीव होए विभचार। घर घर बैठे नर

३२० ०४

नार। मदिरा मासी दुष्ट दुराचार। प्रभ अबिनाशी जामा धार, धरत मात करे पुकार। गुरमुखां कर सच प्यार। साची लाई इक्क फुलवाड़ी, बेमुखां वढ्ढीं पहली हाढ़ी, करीं खेल अपर अपार। बेमुखां फड़ फड़ खोहीं दाढ़ी, शब्द मारीं डाहढी मार। अग्गे लाईं मौत लाड़ी, धर्म राए दे घर बहाईं, पिच्छे लाईं डण्डा भार। अन्दर वाड़ करीं बन्द किवाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, अग्न जोत विच देवे साड़। निहकलंक जामा पाया। सोहणा बगीचा इक्क लगाया। गुरमुख साचा विच महिकाया। जोती दीपक आप जगाया। एका सच्चा राग सुणाया। धोया दाग अन्धेर मिटाया। पकड़ी वाग होया सहाया। चरन प्रीती गई लाग, आपणा बिरध निभाया। पूरन होए वड वडभाग, पंचम् जेठ जो सरनी आया। बेमुखां तन लाए आग, जोती अग्न दए जलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेस अवल्लड़ा आप रखाया। मातलोक खेल रचाईआ। बण मालण हरि जी आईआ। डाली डाली पत्त पत्त इक्क इक्क कली तोड़ लयाईआ। गुरमुखां मिल्या साचा माली, अमृत पाणी मुख चुआईआ। करे आप सच्ची रखवाली। सोहणा हार इक्क गुंदाईआ। गुरसिख साचे दो जहानी ना होण खाली, विच विचोला निहकलंक नरायण हरि रघुराईआ। पूरा तोल जिस ने तोला, सोहँ कंडा मात लगाईआ। विच लगाया शब्द डण्डा, पड़दा उहला ना कोई रखाईआ। इक्क सुणाया शब्द ढोला, सोहँ सच्चा नाउँ रखाईआ। आप बणया सच्चा गोला, मातलोक जोत प्रगटाईआ। प्रभ पहन के आए चिट्टा लाल सूहा नीला काला चोला, कलिजुग तेरे सारे भेख वटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, बेमुखां सिर पाए छाहीआ। बेमुख जगत वणजारा। मानस जन्म जिस ने हारा। मदिरा मासी जीव गंवारा। ना कोई करे बन्द खलासी, मानस जन्म ना किसे विचारा। घर घर बैठे करन हासी। करे खेल हरि अपारा। गुरमुख विरला होए चरन दासी, जिस देवे दरस अगम्म अपारा। मानस जन्म करे रहिरासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। बेमुख देवे जगत दुहाई है। कलिजुग तेरी अन्धेरी राती, सभ दे उत्ते छाई है। आप मुकाए बण बण डैण, भैणां छड्डे भाई है। लक्ख चुरासी वहे डूंघे वहिण, ना सके कोई बचाई है। ना कोई मात पित ना भाई भैण, साक सज्जण सैण वेले अन्त मुख छुपाई है। प्रभ अबिनाशी जामा धारे, गुरमुख वेख जिस जन ल्या मिलाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी साची जोत जगाई है। कलिजुग तेरा वेख लेखा। प्रभ अबिनाशी धारे भेखा। सृष्ट सबाई आप भुलाई, पाया भरम भुलेखा। माता बिधना दए दुहाई, निहकलंक मिटाए मेरी लिखी रेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ खुशीआं नाल मनाई, मिटदे जाण औलीए पीर शेख़ा। औलीए पीर शेख़ मुलाणे। कलिजुग तेरे अन्तिम वेले घर घर सर्ब

बिल्लाणे। प्रभ अबिनाशी करे ख्वारी, बगले रहे कुराने। प्रगट होया नर अवतारी, हथ्थ मसला इक्क इकल्ला मुहम्मद संग चार यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग सतिजुग दोहां मेल मिलाए, दोहां धिरां दा सच भतारे। हरि साची सेव कमांयदा। गुरमुखां छत्र झुलांयदा। फूलन बरखा आप बरखांयदा। आत्म तृखा सर्ब बुझांयदा। जिस जन आए दरस पेखा, प्रगट जोत दरस दिखांयदा। धन्न कमाई गुरसिख तेरी पंचम् जेठ खुशीआं नाल मनांयदा। प्रभ अबिनाशी सोहँ तीर हथ्थ विच फड़या तिक्खा, कलिजुग तेरी भुक्ख मिटांयदा। आत्म लाहे माया राणी झूठी विक्खा, गुरमुखां दया कमांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणे भाणे विच समांयदा। आपणा भाणा हरि जी जाणदा। जन भगतां आप पछाणदा। मारे खण्डा शब्द ब्रह्म ज्ञान दा। चढ़ाए साचा डण्डा, दरस कराए गुण निधान दा। कोए ना दिसे अग्गे कन्ढा, प्रभ अबिनाशी मेहरवान दा। जोत प्रकाश करे विच वरभण्डां, वाली दो जहान दा। पाए साचीआं वंडां, तोड़े किला आत्म हँकार दा। खड़काए चण्ड प्रचण्डा, आपणी बिध हरि आपे जाणदा। चार कुन्ट रोवण नारां रंडां, सुहागी कन्त ना कोए हंढावदा। प्रभ तोड़े सर्ब घमंडा, राजे राणे पकड़ हरि आप वखाणदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, धारे भेख श्री भगवान दा। धारे भेख श्री भगवान है। धरी जोत विच जहान है। करन आया सुंञ

३२२ ०४ मसाण है। जन भगतां देवण आया सच्चा नाम दान है। साधां संतां बख्शे चरन ध्यान है। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता सृष्ट सबाई आप जगावे सदा सदा निगहबान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा भेख मिटाए, आपे मेटे बेईमान है। कलिजुग अन्त कुरान कुरलाई है। अट्ठे पहर दए दुहाई है। सच मुहम्मद तेरी सदी चौधवीं आई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाई है। कुरान पुकारे धाहां मारदी। ढहिंदे जाण महल्ल मुनारे, वेखे खेल सच्ची सरकार दी। छुट्टा संग चार यारे, ढेरी ढहे बेईमान दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उखाड़े जड़ अन्दर वड़, उलटी मति बाहर कढ्ढे फड़, किले कोट जो उसारदी। मुक्के वक्त अन्त कुराना। प्रभ अबिनाशी मारे शब्द बाना। दीन मुहम्मदी प्रभ बन्नूण आया हथ्थीं गाना। धरत मात कलिजुग तेरे अन्तिम वेले कहन्दी, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मार वड शैताना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले दीन मुहम्मदी देवण आया तैनूं हाना। प्रभ अचरज भेख वटाया। कलिजुग तेरा वेख लेख, नीला चोगा आप रंगाया। पुठ्ठी मति होई औलीए पीर शेख़, साचा राह सर्ब भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिटावण आया अन्तिम रेख, सदी चौधवीं वक्त चुकाया। नीला चोला गल विच पाए। शब्द गोला इक्क चलाए। साचा डोला इक्क ल्याए। पूरा तोला साचा तोल इक्क तुलाए। दीन मुहम्मदी होया गोला, प्रभ अबिनाशी ३२२ ०४

गए भुलाए। निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कलिजुग जामा पाए। नीला चोला तन छुहाए। जोत सरूपी भेख वटाए। अमाम मैहन्दी नाम रखाए। उम्मत नबी रसूल दी वहन्दी धार जाए वहन्दी, पिच्छों जाए धक्का लाए। कुरान अञ्जील इक्ठी हो हो बहन्दी, इक्क दूजे दे घर जावण मता पकाए। पहला गेड़ा लाए दिशा लहन्दी। मारे भेड़ भिड़ा के। उम्मत नबी रसूल दी इक्को गाहे गैहंदी, रूसा चीना नाल रलाए, दीन मुहम्मदी वक्ख कीना संत मनी सिँघ तेरी कलम चला के। नाल रलाए शाह फरंगी वड नगीना, अन्तिम पिड्ड वढ्ढी जाए भन्ने हँकारी बीना, निहकलंक कलि आया जामा पा के। साचा राज ताज जगत काज जिस दीना, बैठे मनों भुला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए ख़ाक रुला के। लहन्दी दिशा उडे ख़ाक। ना कोई दिसे जीव पाक। अन्तिम बन्द होवे ताक। प्रभ अबिनाशी आप लिखाए पहले भविख्त वाक्। संग मुहम्मद शाह फरंगी, इक्क दूजे दे बण गए साक। अन्तिम वेले आई तंगी, मिटदे जाण जगत फरंगी, मगर लगाए डाकन हाक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, इक्को इक्क सच्चा सुच्च पाक। पहली दिशा आप तकाईआ। लाड़ी मौत सोई उठाईआ। हथ्थ बहारी आप फड़ाईआ। कन्या कुमारी मातलोक विच आईआ। धर्म राए तेरी सच दुलारी, लक्ख चुरासी दूल्हा वेखण आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले कर के सूहा वेस करन आया कुड़माईआ। लाड़ी मौत उठी बलकारन। आई चल द्वार प्रभ दर करे निमस्कारन। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दे वर सच्ची सरकारन। मैं जावां घोड़ी चढ़, मारां वड वड हँकारन। बन्न लयावां फड़ बाहवां, धर्म राए दे दर द्वारन। कोई ना सके अग्गे अड़, अड्ड अड्ड करावां सीस धड़, कलिजुग फल जाण झड़, अन्तिम भाग होए माड़, इक्क दूजे दे नाल मरन लड़, फल ना दिसे किसे डाल, दूर दुराडा वेखे हरि जी खड़्ह, मैं बन्न्हण जावां साचे गानण। पहले वहिण जायण हड़्ह, जो जन होए अन्त बेईमानण। कोई ना दिसे जो मुख लगायण नड़, भुल्लया हरि भगवानण। शब्द गोला वज्जे कड़ कड़, धूंआंधार होए अस्मानण। वक्ख वक्ख दिसण सिर धड़, चले जगत चाल निरालन। गुरमुख साचा एका अक्खर जाए पढ़, सोहँ सच्चा नाम निशानण। सच दरबारे जाए वड़, मातलोक करदा जाए चानण। प्रभ अबिनाशी अग्गों बाहों लए फड़, कराए चरन धूढ़ इशनानण। बेमुख जीव कलिजुग तेरी अग्नी जाण सड़, आत्म होई सर्ब कंगालण। ना कोई दिसे किला गढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द रसना चिल्ले तीर चढ़ाया वज्जे पहला बानण। सच निशाना हरि जी तक्के। पहला वजे मदीने मक्के। गौंस औलीए पीर शेख़, फड़ फड़ बाहर धक्के। बेमुखां प्रभ आत्म वेख, आप विछोड़े भाई सके। जोत सरूपी धारे भेख, धरत मात राह साचा तक्के। प्रभ अबिनाशी आ नेत्र पेख, वेख कलिजुग फल अन्तिम

वेले पक्के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द तीर आप चलाए, सिध्धी धार इक्क रखाए, जड़ अमरीका पतालों तेरी चक्के। पुट्टे जड़ दए उखेड़। चिट्टीआं चम्मड़ीआं दए उधेड़। कलिजुग वधाए तेरा झेड़। आप दवाए एका गेड़ा, मारे शब्द इक्क लफेड़। लक्ख चुरासी गाहुण आया, बीर बैतालया पाई मेड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सिँघासण चुप्प चुपीता बैठा रिहा छेड़ां छेड़। छेड़ां छेड़े हरि कल धार। ना कोई जाणे जीव गंवार। ना कोई करे सच विहार। भाणा वरते हरि करतार। उप्पर धरत मिटदे जाण चार यार। इक्क दूजे दे नाल लड़ लड़ मरदे, अन्तिम होए सर्ब दो फाड़। गुरमुख विरले भाणा जरते, प्रभ जोत जगाए नाड़ नाड़। किया खेल कादर करते, जूह जंगल विच उजाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, सृष्ट सबाई चबाए आपणी दाढ़। लक्ख चुरासी आप चबांयदा। कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़, चक्की सच बणांयदा। इक्क दूजे दे नाल गए जुड़, बेमुख विच टिकांयदा। चढ़ के आया शब्द घोड़, उत्ते चिट्टा आसण पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ डण्डा साचा हथ्थां विच लांयदा। साचे हथ्थां आप जुड़ाए। पहला गेड़ा आप दवाए। उम्मत नबी रसूल दी करदी हाए हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा डण्डा हथ्थ विच फड़या, उत्तों रिहा दबाए। देवे गेड़ा लाए ज़ोर। लक्ख चुरासी पाए शोर। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, हौली हौली तोर। अग्गे आवे सानूं डर, नर्क प्या अन्धघोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, गुरमुखां पकड़े हथ्थीं डोर। गुरमुखां सुरत संभालदा। अकाल मूर्त रंग भगवान दा। शब्द तूरत सुरत संभालदा। एका नूरत मेहरवान दा। सृष्ट सबाई दिसे कूड़त, एका झुले सच निशान श्री भगवान दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी पुण छाणदा। लक्ख चुरासी पुणे छाणे। तख्तों लाहे राजे राणे। गले लगाए ग़रीब निमाणे। राउ रंक इक्क कराने। ऊँच नीच भेव चुकाने। गुरमुख साचे सेव लगाने। प्रभ अबिनाशी वड देवी देव, किरपा करे अन्त महाने। सोहँ देवे साचा मेव, आत्म होए ब्रह्म ज्ञाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जपणा साची रसना जिह्वा, गुणवन्त हरि गुण निधाने। राजा राणा कर ख्वार। खिच्च ल्याए चरन द्वार। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, बेमुख सुत्ते पैर पसार। प्रगट होया सति सरूपी, निहकलंक नरायण नर अवतार। ना कोई रंग रेख रूपी, एका शब्द अधार। जम की कान गुरमुखां चुक्की आए सरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेले फड़ फड़ बाहों जाए तार। पहला खेल हरि रचाउणा। चरन ब्यासों पार टिकाउण। राजे संगरूर दरस दिखाउणा। अमृत मेघ बरस, आत्म ठंडी ठार कराउणा। कर कर मेहर देवे दरस, गुरमुख चरनी सीस झुकाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर मस्तूआणे भाग लगाउणा।

मस्तूआणे जाए चल। सम्बल देस धाम अटल्ल गुर गोबिन्द जो लिखाया, कलिजुग प्रगट होवे अन्तिम कलि। प्रभ अबिनाशी भेख वटाया, सृष्ट भुलाए कर कर वल छल। निहकलंक कलि जामा पाया, करे कराए जल थल। साचा शब्द डंक वजाया, वाह वाह सोहणा खेल रचाया ना कोई सके झल्ल। राउ रंक इक्क कराया, द्वार बंक आण सुहाया, प्रगट होए जोत सरूपी घड़ी घड़ी पल पल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां आण सुहाया, गुर संगत जाए बलि बलि। मस्तूआणा माण दवाणा। साचा लेख आप लिखाणा। राजा राणा सरन लगाणा। गुर संगत हरि संग रखाणा। प्रभ अबिनाशी देवे वर, मंगी मंग हरि पूर कराना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीपक जोत जगाणा। जोती दीप होए प्रकाश। कलिजुग अन्धेर जाए विनास। शब्द सरूपी प्रगट होवे, जोत सरूपी पावे रास। गुरमुखां मैल पापां धोवे, करे बन्द ख़लास। लक्ख चुरासी दर दर रोवे, अन्तिम होवे नास। गुरमुख साचा चरन धूढ़ मल मल धोवे, किरपा करे पुरख अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, संगत तेरा होया दास। राणा संगरूर चरनी लग। चरनां उप्पर धरे पग्ग। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, आत्म साची जोत धर लग्गी रही अग्ग। निहकलंक अवतार नर, इक्क खुल्ाए साचा सर, हँस बणाए कग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। वड दाता सूरा सरबग्ग। राणे संगरूर वड देवी देव दया कमांयदा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेव, माया पड़दा लाहिंदा। पूरन होई तेरी सेव, साची घाल थाएँ पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दे के वर, साचा चरन उठांयदा। साचा चरन आप उठाए। गुर संगत सारी संग रलाए। राणा संगरूर सेव कमाए। प्रभ अबिनाशी साचा पल्लू आप फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे जाए डेरा लाए। जमन किनारे डेरा लग्गे। एका पवण जगत वगे। सृष्ट सबाई कलिजुग दगे। दीपक जोती साची जगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे फिरे पिच्छे अग्गे। जमन किनारे चरन सुहाना। साचा शब्द हरि चलाना। साधां संतां पकड़ उठाना। जोत सरूपी खेल रचाना। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ एका रंग साचा संग आप निभाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग नाम चढ़ाना। साचा संग आप निभांयदा। डूंघी कन्दर फोल फुलांयदा। गुरदुआरा मन्दिर वेख वखांयदा। बैठा कोई लुकया रहे ना अन्दर, जो जन प्रभ साचा ध्यांयदा। उचे टिल्ले फड़ फड़ हिलाए गोरख मच्छन्दर, आपणी सरन बहांयदा। गुरमुखां जोत जगाए अन्दरे अन्दर, शब्द सरूपी दरस दिखांयदा। आत्म तोड़े आपे जन्दर, दूई द्वैती पड़दे लाहिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दए सुनेहड़ा जांदी पवण, साधां संतां पकड़ उठांयदा। उठो संतो करो त्यारी। आओ चल जमन किनारी। निहकलंक जगी जोत, कलिजुग तेरी अन्तिम

वारी। आप मिटाए चिन्ता सोग, हउमे कटे तन बिमारी। एका देवे दरस अमोघ, पक्की सच्ची यारी। आपे देवे सच्चा जोग, सोहँ शब्द नाम खुमारी। कदे ना होए जगत विजोग, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। अन्तिम होए सच संजोग, गुरमुखां मिले साचा पिया। बण जाए साची नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे चीरे, चीर कराए करे दो फाड़ी। साधां संतां दए हुलारा। प्रभ अबिनाशी हरि गिरधारा। खेल अपारा जोत सरूपी इक्क अकारा। चारों कुन्ट पावे सारा। ना कोई वेखे धुंदूकारा। अट्ठे पहर इक्क उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप उठाए सरन ल्याए दया कमाए शब्द सुणाए अपर अपारा। उठ उठ संत खुशी मनाउँदे। प्रभ अबिनाशी रसना गाउँदे। धन धन होया वक्त सुहेला, कलिजुग काली रैण मिटाउँदे। गुर पूरे घर होए मेला, इक्क दूजे नूं दुःख सुणाउँदे। आपे बण जाए गुर चेला, साचा लेख कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणा आप मिटाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसन ध्याउँदे। प्रभ अबिनाशी दया कमाईआ। सर्ब घट वासी साची जोत जगाईआ। माया राणी कर दासी, बेमुखां झोली पाईआ। दूर खलो के करन हासी, झूठे धन्दे लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दे मति सच्ची समझाईआ। साची दया हरि कमाया। संतां भगतां मेल मिलाया। खेल करन हरि जी आया। साचा खण्डा हथ्थ उठाया। सोहँ डण्डा विच लगाया। पावे साची वंडा, पड़दा उहला ना कोई रखाया। जे कोई पावे झूठी वंडा, प्रभ अबिनाशी दए मिटाया। आपे डोबे डूंघे सागर, घुंमण घेर रुढ़ाया। प्रभ करे खण्ड खण्डा, शब्द सच्चा हथ्थ उठाया। जिस आत्म होई रंडा, झूठा रहे मन घमंडा, प्रभ पूरे भेव खुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज वरती आपणी माया। अचरज खेल किया करतारे। संत भगत दोए इक्क दुआरे। इक्क दूजे दा करन विचारे। प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बख्शे इक्को धारे। भगवन्त बोले भगत वड्याई। शब्द पूरा तोल तोले, देवे भेव खुल्हाई। प्रभ अबिनाशी फेर बोले, दोहां धिरां दा मेल मिलाई। साचा दर ना बणना गोले, जोत सरूपी रिहा सुणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सच्चा तोला, सच नबेड़ा रिहा कराई। साचा तोल तोलण आया। कूड़ कुड़यारा फोलण आया। वड वणजारे हरि गिरधारे साचा लाल खरीदण आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संतां भगतां आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता साचा संग निभावण आया। साचा संत सहिज सुभाए है। वसे एका सच्चे थाएँ है। जिथ्थे होवे सच निआए है। ना कोई पिता ना कोई माँए है। एका जोत होए रुशनाए है। जोत सरूपी जोत हरि प्रगटाए है। आत्म साचा भेव खुल्हाए है। संत बन्न्हे आपणा मन, प्रभ अबिनाशी देवे साचा नाम धन। आप सुणाए इक्को राग कन्न। भाण्डा भरम भौ , भुलेखा प्रभ देवे

भन्न। जोती जोत सरूप हरि, जूठयां झूठयां लाउँदा आया अन्तिम डन्न। आपे डन्ने आपे भन्ने। काया भाण्डे काचे छन्ने। गुरमुखां होए सहाई पैज रखाई, आत्म दर दुआरे आई, जिउँ माल चराए धन्ने। प्रभ अबिनाशी की करे विचारा। जन भगतां खिच्च ल्याए दुआरा। गुरमुख थल्ले करे हाहाकारा। उत्तों आवे शाह अस्वारा। शब्द सरूपी अन्दर बोले, सुणे सच पुकारा। साची जगे जोत अमुले। जोत सरूपी हरि उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। मातलोक परखण आया सोहँ घसवटी लै के आया, कोई ना दिसे झूठा सुन्यारा। भगत तेरी धन्न कमाईआ। आत्म सेजा इक्क विछाईआ। उत्ते प्रेम पटोली पाईआ। प्रभ साची डोली बणाईआ। चढ़ जाए हौली हौली, अचरज रीत एह चलाईआ। गुरमुख आत्म तेरी मौली, प्रभ अबिनाशी देवे शब्द एह वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पैज रखाईआ। संत जना हरि दए दिलासा। एका नाम सच भरवासा। बेमुख करन जगत तमाशा। झूठी पाउँदे मानस रासा। ख़ाली दिसे काया कासा। जोत ना लभ्भे कितों मासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दोहां धिरां आपे वेखे जगत तमाशा। भगत जन जग लाए प्रीत। प्रभ अबिनाशी परखे नीत। आत्म घर साचे आए, बण के साचा मीत। अमृत साचा जाम प्याए, खण्डा धार इक्क रखाए करे काया ठंडी सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी निहकलंक किसे ना मिले मन्दिर विच मसीत। संत जनां हरि कर प्यारा। शब्द देवे साची धारा। एका बख्शे चरन प्यारा। आपे मिले यार प्यारा। किसे वेले ना करे उधारा। अट्ठे पहर दए सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा, दोहां धिरां दा सांझा यारा।

❈ ८ जेठ २०११ बिक्रमी हीरा घाट नहिर दे कन्ढे घविंड वाले खेतां विच (कल्सीं) ❈

(एह लिख्त बाबा मनी सिँघ दे पृथाए अते स: सरूप सिँघ दी काकी अमरजीत दी देह छुडाउण दे नवित्त सारी संगत दे सौं जाण तों बाअद सतिगुरां आप इकलयां बैठ के लिखी सी)

आप दुध्ध आपे पाणी। आपे शब्द आपे बाणी। आपे राजा आपे राणी। आपे वेद आप पुरानी। आपे जाणे अञ्जील कुरानी। आपे आप शाह सुल्तानी। आपे आप वाली दो जहानी। आपे आप जोत सरूप हरि देवण आया मातलोक सच्ची निशानी। आपे दुध्ध आपे हरि पाणीआ। दोहां एका मेल मिलानीआ। शब्द पाए विच मधानीआ। रिड़कण आया बण सवाणीआ। मेल मिलाया हाणी हाणीआ। अचरज खेल वरताया, संत मनी सिँघ तेरा जाणया। निहकलंक कलि जामा पाया, मिटाए

बाणी खाणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लक्ख चुरासी तेरी काणीआ। पाणी दुध्ध आप विरोले। जोत सरूपी साचा पूरा तोल तोले। वडा शाहो हरि वडा भूप, जन भगतां देवे शब्द झकोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ अष्टम् जेठ तैनूं आप चढ़ाण आया शब्द सरूपी साचे डोले। साचा डोला कर त्यार। निहकलंक नर अवतार। चुक्क ल्याया बण कुहार। मातलोक हरि लए अवतार। अष्टम् जेठ करे अस्वार। गुर संगत सारी हो त्यार। आपे लाए तन शृंगार। काया करे ठंडी ठार। उत्तों पाणी देवे वार। दुध्ध वहाए सीतल धार। जगे जोत अगम्म अपार। सतिजुग तेरी बन्ने धार। संत मनी सिँघ तेरी करे विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट हो करन आया आप आपणे नाल तैनूं मात त्यार। उठ संत कर त्यारी। तेरी आई अन्तिम वारी। लिख्या लेख बण लिखारी। वासी पुरी घनक प्रगट जोत आया चल द्वारी। शब्द वजाए तेरा डंक, चार कुन्ट होका देवे अवाजां मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टम् जेठ तेरी पाए कीमत सारी। चिट्टा दुध्ध अमृत धार है। निर्मल करे बुध, किरपा करे अपर अपार है। कारज करे सिद्ध, बण आया हरि भिखार है। चिट्टे अस्व मार छाल चढ़या कुद्द, जोत सरूपी खेल अपार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कल्गीधर अवतार है। अमृत जल ठंडा सीर। गुरसिक्खां कट्टण आया भीड़। कलिजुग तेरे अन्तिम वेले बन्नण आया साचा बीड़। संत मनी सिँघ गुरसिख तेरे साचे साक सज्जण सुहेले इक्क दूजे दे बण जाण वीर। अष्टम् जेठ करे मेले, माया राणी लाहे चीर। खेल वरताए जोत जगाए आपे बणे गुर चेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए शब्द तीर। प्रभ अबिनाशी नेत्र खोल्हे। संत मनी सिँघ तेरी आत्म बोले। आपणी काया हरि तजाई, जोत सरूपी खेल रचाई, वड शाहो भूपी दिस किसे ना आई, साची जोत जगाए तेरी साची काया चोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अगला पिछला लहणा देणा साचा भेव खोल्हे। गुर संगत गुर इक्क बणाईआ। दोहां विच भेव ना राईआ। एका शब्द सर्ब जणाईआ। एका जोत करे रुशनाईआ। एका धार हरि रखाईआ। एका कार दए कराईआ। चरन प्यार फेर वधाईआ। विच संसार दए वड्डयाईआ। सुखी रक्खे नर नार, जो सरनाई आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता बेपरवाहीआ। अमृत धार सहिज सुख धारी। प्रभ देवे कर प्यार, जन आए बण भिखारी। आपा आप देवे उत्तों वार, गुर संगत माण दवाए वड दाता विच संसारी। माण ताण जगत रखाए, हरि शाहो वडा सिक्दारी। एका आण सर्ब जणाए, निहकलंक चरन द्वारी। शब्द बाण आप चलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। साचा अमृत साचा सीरा। गुरमुखां देवे आत्म धीरा। विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

निहकलंक कलि जामा पाया, कटण आया दुखियां भीड़ा। ना कोई घर ना कोई टिकाणा। ना कोई दर ना कोई मकाना। ना कोई सर ना कोई इशनाना। जिथ्थे देवे हरि साचा वर, उजाड़ बीआबाना। ना कोई महल्ल ना कोई अटारी। ना कोई मन्दिर किया त्यारी। वेख जंगल डूंघी कन्दर, धर्म राए तेरा टुट्टा जन्दर, प्रगट होया नर अवतारी। कलिजुग जीव फड़न आया झूठे बन्दर, शब्द डोरी फड़ अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तैनूं देण आया सच्ची सरदारी। अष्टम् जेठ प्रभ आए दुआरे। पूरन भगती साचे संत पुरी होई विच संसारे। प्रभ अबिनाशी मिल्या साचा कन्त, देवे माण सच दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया दुखियां भुखीआं गुरमुखां प्रभ साचे घर पावे सारे। साचा मन्दिर इक्क बणाउणा। झण्डा सच्चा इक्क झुलाउणा। संत मनी सिँघ तेरा थांउँ, सतिजुग साचे आप सुहाउणा। आप सुहाए साचा थांउँ, जंगल डेरा आप कराउणा। सृष्ट सबाई उडे काउँ, घर घर दीवा आप बुझाउणा। देवण आया संतां ठंडी छाउँ, हीरा घाट आप सुहाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लिख्या लेख पूर कराउणा। लेख लिख्या जिहड़ा बहि के। भाणा प्रभ दा सिर ते सहि के। संसार अन्तिम जाए झूठे वहिण वहि के। निहकलंक कलि

३२६ जोत प्रगटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे रुशनाए साचे सिँघ सिँघासण बहि के। उत्ते पड़दा हरि जी पाया। ३२६

०४ लक्ख चुरासी तेरा कफ्फन हरि जी आप सवाया। करन आया तैनूं दफन, सति संग नाल ल्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ०४

भगवान, वाह वाह सोहणा खेल रचाया। चुक्कण आया बण कुहार। आपे कढ्ढे घर चों बाहर। भाण्डा भन्ने अद्ध विचकार। उत्तों पाणी देवे वार। लक्ख चुरासी गई हार। मदिरा मासी होण ख्वार। संत मनी सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट होवे विच संसार। निहकलंक कलि जामा पाया, बन्न्हण आया सिर दस्तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरा करे आपणा अन्त विहार। संत मनी सिँघ बन्न्हे धार। प्रगट हो विच संसार। चौबलद सुहागा रिहा जोह, होणा खबरदार। धरत मात रही रोह, आया सुण पुकार। सिर दे वाल रही खोह, उची कूके कूक पुकार। देह छड्डी छब्बी पोह, किया खेल अपर अपार। जगत जंज़ाला तुट्टा मोह, पुत्तर धीआं ना किया प्यार। तीर चलाया सच्चा सो, हँ किया आकार। दोए एका जोती गए हो, भरम भुलेखा आप निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम वेले आपणा किया सच विहार। संत मनी सिँघ सेव कमाई। अट्ठे पहर कलम चलाई। दिवस रैण चरन लिव लाई। झूठे साक सज्जण सैण भैण भाई। गुर चरन मिट्ठा साचा बहिण, नर भतार प्रीत ना लगाई। आत्म रोवे पा पा वैण, झल्ली जाए ना हरि जुदाई। पूर्ब जन्म दा लहणा देण, मेरी सेवा पूरी लाई। कलिजुग अन्तिम वहिणा झूठे वहिण, सिर मेरे ते हथ्थ रखाई। गुरमुख भाणा सच सहिण, चरन

प्रीती तोड़ निभाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर प्रगट जोत आप आपणी दया कमाई। संत मनी सिँघ कार कमावे। शब्द अधार इक्क रखावे। चरन प्यार रसना गावे। परम पुरख अपार ना कदे डुलावे। लक्ख चुरासी दब्बी पैरां हेठ, उत्ते भार डाहढा पावे। लिखाए लेख औलीए पीर शेख़, अन्तिम वेले ख़ाक रुलावे। फल लग्गे अष्टम् जेठ, प्रभ अबिनाशी भोग लगावे। रक्खण आया साया हेठ, जोत सरूपी जोत जगावे। भन्नण आया कौड़े रेठ, दोहां धिरां दा भेड़ भिड़ावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा भाणा आप जणावे। संत मनी सिँघ चरन हज़ूरी। इक्का नाम सबर सबूरी। सच्चा बद्धा पल्ले नाम, ऐका शब्द जोत नूरी। हरया होवे सुक्का चाम, प्रभ आसा मनसा करे पूरी। जोत जगाए साचा राम, आसा मनसा करे पूरी। प्रगट होए घनईआ शाम, गुरमुखां मुख लगाए चूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप चुकाए, संत मनी सिँघ दया कमाए, तेरी लिख्त ना होए हदूरी। संत मनी सिँघ सेवा लग्गा। शब्द पाया एका झग्गा। माण गंवाया झूठे जगा। इक्क बुझाए तृष्ना अग्गा। दर्शन पाया वड सूरा सरबग्गा। भाण्डा भरम भौ भन्नाया, शब्द जोती साचा जगा। पूर्ब कर्म हरि कराया, सोहँ पहनाया तन साचा झग्गा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा आपे लाई, आप लगाया आपणे पग्गा। संत मनी सिँघ रसना गाए। दिवस रैण रसना ध्याए। तीजा लोयण हरि खुल्हाए। अट्ठे पहर ना दए सौण, साची शब्द धुन चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच तन सीत कराए। संत मनी सिँघ रसना गाउँदा। दरस अमोघी साचा पाउँदा। साचा जोगी जोग कमाउँदा। रसना भोगी जगत तजाउँदा। सच संजोगी कन्त हंढाउँदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चरन लाग हउमे आपणा रोग गंवाउँदा। संत मनी सिँघ घाल घाले। चरन प्रीती निभे नाले। प्रभ अबिनाशी आपे पाले। घनकपुर वासी जिउँ माता बाले। मानस जन्म करे रहिरासी, उत्ते देवे शब्द दोशाले। आत्म जोत सच्ची प्रकाशी, काया सच्चे शिव दवाले। आत्म अन्धेर जाए विनासी, फल लग्गा साचे डाले। लक्ख चुरासी चढ़ाउण आया फ़ासी, अस्व चढ़ चार चुफेरे भाले। धर्म राए तेरी करे दासी, बेमुखां मुख करे काले। मेट मिटाए मदिरा मासी, फसे माया जगत जंजाले। गुरमुख विरला गाए स्वास स्वासी, सोहँ शब्द सच्चा गा ले। पंडत पढ़दे वेद पुरानां काशी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ साचा गुर तेरी अन्तिम सार समाले। संत मनी सिँघ साची कारा। अट्ठे पहर नाम अधारा। दिवस रैण चरन प्यारा। बणया रहे लेख लिखारा। लिखे लेख सर्ब संसारा। किरपा करे हरि गिरधारा। देवे दरस हरि मुरारा। जाईं कर कलिजुग अन्तिम वारा। प्रभ अबिनाशी आए घर, चिट्टे अस्व हो अस्वारा। खुल्हा रक्खीं एका

३३०
०४

३३१
०४

दर, अमृत भरे हरि भण्डारा। आप वखाए साचा सर, चले एका सच्ची धारा। आवण जावण चुक्के डर, मेल मिलावे सच भतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, संत मनी सिँघ देवे वर, वसदा रहे इक्क दुआरा। संत मनी सिँघ चरन धूढ़ी, एका रंग चढ़या गूढ़ी। सृष्ट सबाई लिख्या लेख, शब्द वेलणे आपे रक्खे तिखी बूड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, राजे राणयां पाए जूड़ी। संत मनी सिँघ साचा संग, एका चढ़या नाम रंग। अट्ठे पहर मंगे मंग। प्रभ अबिनाशी तेरा संग। मानस जन्म ना होए भंग। चिट्टे अस्व कसे तंग। चारों कुन्ट कराईं एका जंग। लक्ख चुरासी भन्न वखाईं, धर्म राए दी कच्ची वंग। चारों कुन्ट अन्धेर कराईं, लक्ख चुरासी करीं भंग। चरन प्रीती सेव कमाईं, मँगीए मंग। निहकलंक दित्ती वड्याई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टम् जेठ तेरी काया चोली आप चढ़ावण आया साचा रंग। संत मनी सिँघ शब्द अधारा। मंगया एका हरि दुआरा। बणया रिहा नाम भिखारा। लिखदा रहे लेख अपारा। निहकलंक नरायण नर, एका बख्शे शब्द अधारा। आप खुल्हाया तीजा नैण, देवे जोती चमत्कारा। सच चुकावण आया लहिण देण, तन पहनाए साचा गहिण, सोहँ साचा शब्द अपारा। लाज रक्खणी गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्से सच विहारा। संत मनी सिँघ सच भतार। प्रभ अबिनाशी इक्क प्यार। घनकपुर वासी इक्क सच्चा यार। अन्तिम वेले पाए सार। प्रगट जोत निहकलंक, शब्द सरूपी जामा धार। इक्क वजाए साचा डंक, चारे कुन्टां करे ख़बरदार। राउ रंक खिच ल्याए तेरे चरन द्वार। साची गुर संगत कर त्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा माण दवाए, आपे बणे पहरेदार। संत मनी सिँघ दर्शन पांयदा। कर दरस तृखा बुझांयदा। बीस बरस जो रिहा तरस, आत्म तृप्त करांयदा। अमृत मेघ प्रभ साचा बरस, अट्ठे पहर दर तेरे बिल्लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, खुशीआं नाल मनांयदा। संत मनी सिँघ चढ़या चाअ। एका वेख्या सच्चा थां। जेहड़ा पकड़े अन्तिम बांह। होए सहाई सभनी थां। भैण भाई बणे पिष्ता मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी माणे सदा सदा सदा ठंडी छाँ। गुर संगत धन्न कमाईआ, संत मनी सिँघ तेरी सेव लाईआ। गुर संगत धन्न कमाईआ, साची रुत्त आण सुहाईआ। गुर संगत धन्न कमाईआ, अष्टम् जेठ खुशी मनाईआ। गुर संगत धन्न कमाईआ, मिटदे जाण वड वड सेठ, गुर संगत धन्न कमाईआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देण आया चिट्टे अस्व हो अस्वार गुर संगत तैनूं इक्क वधाईआ। गुर संगत सच वधाईआ। संत मनी सिँघ तेरी अन्तिम खुशी मनाईआ। लक्ख चुरासी कच्ची गागर, शब्द हथौड़ा हरि जी उत्ते लाईआ। प्रभ दर आए माया राणी नाची, गुर संगत फड़ के बाहों विच अग्नी आप जलाईआ। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरी लिख्त साची करन आया रघुराईआ। लिखदा रिहा अन्दर वड़। लक्ख चुरासी पुट्टदा रिहा जड़। साची कलम चलाउँदा रिहा, राजे राणे मारे फड़ फड़। चरन प्रीती लाउँदा रिहा, अट्ठे पहर ध्याउँदा रिहा, साची सेव कमाउँदा रिहा, शब्द घोड़े साचे चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टम् जेठ पहरेदार होए, आप फड़ावण आया आपणा लड़। इक्क गुर इक्क गोबिन्द करतार है। दोहां धिरां दा इक्क प्यार है। गुर संगत वसे विचकारे, प्रभ रक्खे ठंडी ठार है। चारों तरफ मारे कारे, शब्द घोड़े हो अस्वार है। पार उतारे नर नार है। बुढ्ढा बिरध बाल जवान लंगढ़ा लूला अन्धा काणा जीव निमाणा, जो आया चल द्वार है। तख्तों लाहे राजा राणा, वासा किया विच उजाड़ है। आप चलाए आपणा भाणा, सभ दी देवे जड़ उखाड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दर घर घर दर साचे विच देवे वाड़ है। प्रभ फिरदा चार चुफेरे, सिँघ शेर शेर दलेर है। गुर संगत रक्खी घेर है। आपे वसे नेरन नेर है। बेमुखां करे ढेर है। कलिजुग तेरी अन्तिम वार है, आप भुलाए कर कर हेर फेर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ तारन आया लक्ख चुरासी मारन आया, चौथे जुग अन्तिम वेर, आप भुलाए कर कर हेर फेर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण लर, कलिजुग अन्तिम जामा पाया, संत मनी सिँघ तेरा लेखा आप चुकाया, चुकाए मेर तेर है। अष्टम् जेठ सतिगुर आया चल हरि घर। संत मनी सिँघ खुल्हे साचा दर। हीरा घाट बणे साचा सर। निहकलंक संगत संग चरन जाए धर। शब्द वजाए इक्क डंक, राउ रंक इक्क कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक शब्द कर। गुर संगत संग प्रभ धुरदरगाही। प्रभ अबिनाशी साचा माही। कलिजुग रैण अन्धेरी दीपक जोत जगाई। कर के हेरी फेरी लीला खेत्र लाई। लेख लिखाया महीने चेत्र, अष्टम् जेठ पूर कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ विच मात तेरी करे सच्ची कुड़माई। लाए मुख शब्द छुहारा। सृष्ट सबाई आई कलिजुग किनारा। मारन आया धक्का भारा। काला बूरा कक्का मदीना मक्का सुट्टे मूंह दे भारा। गुरमुख पूरा फल साचा पक्का, प्रभ आया दर दुआरा। जोत सरूपी किरपा कर, गुरसिक्खां लाए पार किनारा। पार किनारा नेड़े वाटी। चाढ़न आया औखी घाटी। नुहावण आया हीरा घाटी। बज़र कपाटी गुरसिख पाटी। जगे जोत विच ललाटी। करे रुशनाई काया माटी। अट्ठे पहर रसना रस साचा चाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचा सर सरोवर चार वरन चार कुन्ट तीर्थ ताटी। हीरा घाट खेल अनमोला। अमृत मील छत्ती प्रभ साचे तोला। जो जन लाए दन्दी बत्ती, आत्म पड़दा प्रभ साचे खोल्हा। आत्म देवे धीरज जती, ना रक्खे रोल घचोला। वा लग्गण ना देवे तत्ती, सुणाए शब्द सच्चा

३३२
०४

३३३ ०४

सोहला। दे समझावे मती, गुरसिख भोला भाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरा बणया जगत विचोला। जगत विचोला हरि निरँकार। हीरा घाट करे त्यार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंक नर अवतार। अष्टम् जेठ दिवस विचार। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी शुक्रवार। शाम वेला सत्त अठ्ठ विचकार। जिथ्थे बणे सच्चा इक्क दरबार। छत्र झुल्ले विच संसार। जो जन आयण भुल्ले, मिले घर सच्ची सरकार। कोई ना लेवे मुल्ले, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। सदा रहण भण्डारे खुल्ले, अमृत भरे हरि भण्डार। साचे तोल गुर संगत तुले, जो चल आई चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हीरा घाट नींह रखाई कलिजुग तेरी अन्तिम वार। नींह रखाई हीरा घाट। सृष्ट सबाई जाए पाट। आपे पाए डूंघे खाट। ना कोई चढ़ावे कलिजुग घाट। ना कोई दिसे अग्गे वाट। गुरमुखां जोत जगाए विच ललाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे रुशनाई काया माट। हीरा घाट दए माणा। सतिजुग साचे आप उपजाणा। साचा सीर विच रखाणा। अन्ना काणा राजी कराणा। दो जहानां नाम रखाणा। लक्ख चुरासी गेड़ कटाणा। घनकपुर वासी अमृत सीर पिलाना। एका निर्मल नीर कर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ भेव चुकाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरोवर इशनान कराना। देवे माण सर्ब गुणवन्ता। विच ना पावे माण हँगता। दया कमाए उप्पर संगता। भिच्छया पाए जो आए भुक्खा नंगता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब रोग सोग जगत विजोग खण्डता। दुःख खण्डे नाम वंडे। विच लाए छत्ती डण्डे। हीरा घाट तेरे कन्ढे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मील मील ते गड्डे झण्डे। झूलन झण्डे जगत निशान। उत्ते लिख्या होवे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ नाल चतुर सुजान। काका मनजीत सिँघ बाल निधान। प्रभ अबिनाशी गुण निधान। किरपा करे आप भगवान। छत्ती रागां गंवाए माण। छत्ती पदार्थ रस साचा पाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा जीआ दान। इक्को इक्क झुल्ले निशान। सच्ची चले इक्क दुकान। सति संतोखी विच जहान। अन्तिम मोखी रंग महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए साची वंड। गुर संगत हरि पाए ठंड। कोई ना दीसे नार रंड। सतिजुग साचे तेरी साची वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां ना देवे कदी कंड। हीरा घाट सच निशानी। अग्गे खला संत मनी सिघ तेरा सच्चा बानी। पिछे बैठा काका मनजीत सिँघ बाल बुध अञ्याणी। विच कारज करे सुध, माहणा सिँघ गुण निधानी। तिन्नां मिल्या सच संजोग, प्रभ अबिनाशी गुण निधानी। साचा रस सृष्ट सबाई लैणा भोग, ना कोई मरे विच जवानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी धार बन्ह्नानी। ना कोई मरे बाल अञ्याणा। माता पिता सुख उपजाना। जगत निशाना हरि झुलाना। सच धर्म दी जड़्ह लगाना। हीरा घाट तेरे

अन्दर वड़, प्रभ अबिनाशी करे टिकाणा। हरिसंगत तेरे दर दुआरे खड़, वेखे खेल श्री भगवाना। बेमुखां पुट्टे जड़, मारे तीर शब्द निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो भन्ने सो लए घड़, मारे सच निशाना। हीरा घाट साचा हीरा। भैण ना विछड़े साचा वीरा। निर्मल करे प्रभ साचा नीरा। कारज होयण सुध, जो आया चल वांग फ़कीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे रहण ना देवे किसे काया पीड़ा। नौ खण्ड पृथ्मी करे रुशनाए। सत्तां दीपां बूझ बुझाए। खण्ड ब्रह्मण्डां वरभण्डां माण दवाए। सेत्ज उत्भज अंडज़ जेरज मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अजर अमर दी शक्त भराए। अजर अमर आप कराए। दर आए जो इशनान कराए। अमृत सीर मुख चुआए। कटी जाए भीड़, ना जम राज सताए। सतिजुग तेरी बध्धी बीड़, अष्टम् जेठ वीह सौ ग्यारां बिक्रमी लिख्त लिखाए। लिख्त लिखाई विच उजाड़। जगत खेल आप रचाए पहली हाढ़। सिँघ मनजीत तेरे चार चुफेरे शब्द कराए साची वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सच घर देवे वाड़। साचे तीर्थ लाए तारी। चुरासी छुट्टे पहली वारी। पंजां चोरां कुट्टे, काया कढ्ढे बाहरी। एका अमृत जो जन मुख लाए घुट्टे, आत्म होए ठंडी ठारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका माण दवाए जगत नर नारी। नारी नारां दए माणा। चरन धूढ़ जो करे इशनाना। आत्म मूढ़ होए चतुर सुजाना। रंग चढ़े गूढ़ श्री भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधाना। हीरा घाट हरि की पौड़ी। छत्ती मील लम्मी सौ गज़ चौड़ी। एथे साचा प्रगट होवे ब्रह्मण गौड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द धुरदरगाही लाए एका पौड़ी। पहली पौड़ी सिँघ मनजीत है। अद्ध विचकारे माहणा सिँघ करे प्रीत है। अन्त बैठा संत मनी सिँघ करे ठंडा सीत है। साची बाणी अंक सहेली नाल अमरजीत है। सच सहेली सच घराने, जाए चढ़ विच बबाने, सिँघ मनजीत तेरी हथ्थीं बन्ने गाने, जगत चले साची रीत है। जगत चले साची रीत सतिजुग विच जहाने। भैण भ्रावां साचा नाता दुखड़ा कोई ना माने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हीरा घाट इशनान कराने। हीरा घाट हरि की लाट। शब्द टिकाई साची खाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल रचाए तिन्न लोक चौथे जुग नेड़े वाट। संत मनी सिघ तेरा जैकार। चार कुन्ट चले विच संसार। निहकलंक शब्द डंक वजाए भार। राउ रंक उठाए, खिच्च ल्याए चरन द्वार। पिछला लेखा लेखे लाए, नर नरायण निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा आप सहार। संत मनी सिँघ तेरी सच निशानी। सृष्ट सबाई होई निधानी। घर घर वधदी बेईमानी। झूठी वगे जगत नदी, रुढ़दे जाण वड ज्ञानी। झूठी माया वा तत्ती लग्गे, विच सड़ गए ब्रह्म ज्ञानी। लग्गा दाग चिट्टी पग्गे, मुख काला होया दो जहानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची मंगे जगत इक्क निशानी।

❃ ६ जेठ २०११ बिक्रमी नहिर उत्ते हीरा घाट घविंड बाड़े विच (कल्सीं) ❃

धन्न कमाई संत जन, हरि रसन ध्याईए। धन्न कमाई संत जन, एका लिव लाईए। धन्न कमाई संत जन, हउमे ममता रोग गंवाईए। धन्न कमाई संत जन, चिन्ता सोग रोग मिटाईए। धन्न कमाई संत जन, जगत विजोग आप कराईए। धन्न कमाई संत जन, सच संजोग इक्क हंढाईए। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, विच आत्म रिहा समाईए। धन्न कमाई संत जन, आत्म बद्धे। धन्न कमाई संत जन, आप मिटाए दूई द्वैती कंधे। धन्न कमाई संत जन, दुरमति मैल शब्द रंदे आपे रंदे। धन्न कमाई संत जन, एका सच्चा गायण नाउँ साचा शब्द साचा छन्दे। धन्न कमाई संत जन, वेखण सच्चा थांउँ, जिथ्थे वसे हरि गोबिन्दे। धन्न कमाई संत जन, सद मानण ठंडी छाउँ, निज आत्म परमानंदे। धन्न कमाई संत जन, इक्क बणाए पिता माउँ, प्रभ अबिनाशी सद बख्शंदे। धन्न कमाई संत जन, फड़दा अन्तिम बाहों, मेट मिटाए सगली चिन्दे। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी रसना कहण आत्म जाए मन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप चढ़ाए साचा चन्दे। धन्न कमाई संत जन, एका लिव लाई। धन्न कमाई संत जन, सृष्ट सबाई जिस तजाई। धन्न कमाई संत जन, एका इष्ट हरि बणाई। धन्न कमाई संत जन, साची दृष्ट आप खुलाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणाई। धन्न कमाई संत जन, एका लिव लावे। धन्न कमाई संत जन, अमृत आत्म अट्ठे पहर नुहावे। धन्न कमाई संत जन, आत्म खोल्हे साचा दर सच महल्ले बूझ बुझावे। धन्न कमाई संत जन, एका साचो साचा घर, नर नरायण जोत सरूप जिथ्थे डेरा लावे। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, प्रगट हो दरस अमोघ दिखावे। धन्न कमाई संत जन, सच वहन्दे वहिणी। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी दर्शन पेखण साचे नैणी। धन्न कमाई संत जन, हरि सच्चा साक सज्जण सैणी। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आत्म देवे साचा वर, अन्तिम सार जिस लैणी। धन्न कमाई संत जन, जगत विछोड़े। धन्न कमाई संत जन, इक्क प्रीत चरन जोड़े। धन्न कमाई संत जन, वेखे एका दर चढ़े शब्द घोड़े। धन्न कमाई संत जन, ना जन्मे ना जाए मर, एका वर हरि जी लोड़े। धन्न कमाई संत जन, अमृत भण्डारे प्रभ जाए भर, देवे वर जिहा लोड़े। धन्न कमाई संत जन, साची तरनी जायण तर, लक्ख चुरासी बंधन तोड़े। धन्न कमाई संत जन, आप चुकायन जम का डर, जोती जोत सरूप हरि, एका मंगण तेरी लोड़े। धन्न कमाई संत जन, जग साची रीता। धन्न कमाई संत जन, एका मेल साचे मीता। धन्न कमाई संत जन, आत्म रहे सदा अतीता। धन्न कमाई संत जन, मानस जन्म जग विच जीता। धन्न कमाई संत जन, एका शब्द रसना गायण, माण गंवायण अठारां ध्याए गीता।

धन्न कमाई संत जन, चरन प्रीती एका लायण, दिवस रैण हिरदे वसायण, रक्खण साची प्रीता। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी दर्शन पायण, सर्ब घट वासी रिदे वसायण, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, मानस जन्म जाए जग जीता। धन्न कमाई संत जन, हरि साचा सज्जण सुहेला। धन्न कमाई संत जन, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता साधन संता आप कराए साचा मेला। धन्न कमाई संत जन, साची जोत आत्म धारे। धन्न कमाई संत जन, दर्शन लोड़े हरि गिरधारे। धन्न कमाई संत जन, देवे दरस हरि अपर अपारे। धन्न कमाई संत जन, जगे जोत अलख अभेव इक्क अपारे। धन्न कमाई संत जन, एका वंड जगत वणजारे। धन्न कमाई संत जन, एका प्रीत चरन कँवलारे। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे रंगे काया चोला विच संसारे। धन्न कमाई संत जन, रंगी काया चोली। धन्न कमाई संत जन, शब्द बैठे साची डोली। धन्न कमाई संत जन, काया माटी रुत्त मौली। धन्न कमाई संत जन, औखी वाटी दूर घाटी, जिन्हां रोल घचोली। धन्न कमाई संत जन, जोत जगे इक्क ललाटी, जोती जोत सरूप हरि, इक्क सुणाए साची बोली। धन्न कमाई संत जन, नाम वणजारा। धन्न कमाई संत जन, देवे सच्चा नाम धन्न हरि प्यारा। धन्न कमाई संत जन, आपे कढ्ढे झूठा जन, पंजां चोरां कर ख्वारा। धन्न कमाई संत जन, भाण्डा भरम देवे भन्न, साचा दीपक करे जोत उज्जयारा। धन्न कमाई संत जन, धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी होए रख्वारा। धन्न कमाई संत जन, साचा शब्द सुणाए कन्न, देवे अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, अन्त ना पारावारा। धन्न कमाई संत जन, हरि साचा संगी। धन्न कमाई संत जन, इक्क वस्त दर साचे मंगी। धन्न कमाई संत जन, ख़िमा ग़रीबी भिखी अंगी। धन्न कमाई संत जन, एका चोली नाम रंगी। धन्न कमाई संत जन, साची लिख्त लिखाई सिँघ मनी मिटदे जाण फरंगी। धन्न कमाई संत जन, कलिजुग नेड़ ना आए मात तंगी। धन्न कमाई संत जन, गुरमुख सच सुहेले साची दात एका मंगी। जोती जोत सरूप हरि, बेमुख जीवां मानस जन्म करे भंगी। धन्न कमाई संत जन, हरि रसना गावे। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी साचा ध्यावे। धन्न कमाई संत जन, सच घर आत्म दुखड़ा लाहवे। धन्न कमाई संत जन, एका घर सच महल्ल सोहणी सेजा आसण लावे। धन्न कमाई संत जन, साचा हरि साचा नर साचा रंग रंगावे। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, दोहां मेल इक्क करावे। धन्न कमाई संत जन, हरि मिले गहर गम्भीर। धन्न कमाई संत जन, होए शांत सरीर। धन्न कमाई संत जन, रसना चलायण शब्द साचा तीर। धन्न कमाई संत जन, संत मनी सिँघ तेरा वक्त अख़ीर। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे मेट मिटाए शेख़ गौंस

औलीए पीर फ़कीर। धन्न कमाई संत जन, वसे सच टिकाणा। धन्न कमाई संत जन, साचे चढ़े शब्द बबाणा। धन्न कमाई संत जन, कोई ना वेखे राजा राणा। धन्न कमाई संत जन, देवे वड्याई गऊ ग़रीब निमाणा। धन्न कमाई संत जन, साचा देवे नाम निधाना। धन्न कमाई संत जन, इक्क प्याए अमृत जाम। धन्न कमाई संत जन, चरन धूढ़ कराए इशनान। धन्न कमाई संत जन, मिल्या मेल साचे शाम। धन्न कमाई संत जन, सोहँ बन्ने हरि साचा गान। धन्न कमाई संत जन, पूरन होए कलिजुग काम, साचा मिल्या एका दान। धन्न कमाई संत जन, कोई ना लग्गे एथे दाम। धन्न कमाई संत जन, मिले जोत हरि भगवान। धन्न कमाई संत जन, सुक्का हरया होवे चाम, अमृत प्याए हरि मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साची जोत जगाए, करे प्रकाश कोटन भान। धन्न कमाई संत जन, हरि हाज़र हज़ूरे। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी आसा मनसा पूरे। धन्न कमाई संत जन, एका शब्द बख्शे धुन, अनहद शब्द अनाहद तूरे। धन्न कमाई संत जन, सृष्ट सबाई छाण पुण विच्चों लभ्भे साचे सूरे। धन्न कमाई संत जन, इक्क जणाए हरि तेरे गुण, एका बख्शे साचा नूरे। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे बख्शे सर्बकला भरपूरे। धन्न कमाई संत जन, मस्तक धूढ़। धन्न कमाई संत जन, चरन प्रीती देवे गूढ़। धन्न कमाई संत जन, चतुर सुजान विच जहान करायण बेमुख मूढ़। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, एका रंग चढ़ाए गूढ़। धन्न कमाई संत जन, हरि मिल्या छैल छबीला। धन्न कमाई संत जन, एका रंग रंगाए ना जाणे चिट्टा लाल सूहा पीला। धन्न कमाई संत जन, प्रभ मिलण दा साचा किया हीला। धन्न कमाई संत जन, एका जोत अग्न लाया तीला। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम रंगीला। धन्न कमाई संत जन, आत्म साचा सुख। धन्न कमाई संत जन, कलिजुग माया ना लाए दुःख। धन्न कमाई संत जन, आत्म मिटी तृष्ना भुक्ख। धन्न कमाई संत जन, मात सुफ़ल कराए कुक्ख। धन्न कमाई संत जन, जन भगत उज्जल होए मुख। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, मात गर्भ ना होए उलटा रुख। धन्न कमाई संत जन, आत्म कुण्डा खोल्हे। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी अन्दर बोले। धन्न कमाई संत जन, चरन प्रीती घोल घोले। धन्न कमाई संत जन, प्रभ दर बहाए दया कमाए, दर घर सच बणाए गोले। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आप चढ़ाए शब्द डोले। धन्न कमाई संत जन, आत्म साचा चाउ। धन्न कमाई संत जन, काया माटी भाण्डा कच्चा रहे ना किसे थाउँ। धन्न कमाई संत जन, आपे बणे छोटा बच्चा, प्रभ अबिनाशी पिता माँउ। धन्न कमाई संत जन, हरि साचा काया रचा, एका वेखण साचा नाउँ। धन्न कमाई संत जन,

जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए सच्चा थाउँ। धन्न कमाई संत जन, आत्म मिटे अन्धेरा। धन्न कमाई संत जन, ना होवे सन्झ सवेरा। धन्न कमाई संत जन, चुक्के मेरा तेरा। धन्न कमाई संत जन, चारों तरफ चार चुफेरे शब्द सरूपी घेरा। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, सदा वसे आत्म नेरन नेरा। धन्न कमाई हरि साचे संता। धन्न कमाई संत जन, मिल्या मेल हरि भगवन्ता। धन्न कमाई संत जन, सच संजोग प्रभ साचे कन्ता। धन्न कमाई संत जन, साचा रस भोग हरि गुणी गुणवन्ता। धन्न कमाई संत जन, इक्क चुगाए रसना चोग साचा शब्द आदिन अन्ता। देवे दरस हरि अमोघ, आप बणाए साची बणता। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, सच दए वड्याई, लक्ख चुरासी जीव जन्ता। धन्न कमाई संत जन, निर्मल कर्म उजागर। धन्न कमाई संत जन, अमृत भरया काया गागर। धन्न कमाई संत जन, एका वेखण साचा सागर। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, साचा वणज आप कराए, गुरमुख साचे लए जगाए, साचे करे नाम सौदागर। धन्न कमाई संत जन, आत्म धुन। धन्न कमाई संत जन, आत्म तुट्टे लग्गी मुन। धन्न कमाई संत जन, प्रभ अबिनाशी सच पुकार लए सुण। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, कवण जाणे हरि तेरे गुण। धन्न कमाई संत जन, चले हरि हरि भाए। धन्न कमाई संत जन, देवे दरस आप रघुराए। धन्न कमाई संत जन, अट्ठे पहर प्रभ अमृत रिहा बरस। तृष्ना अग्गन बुझाए। धन्न कमाई संत जन, लक्ख चुरासी विच्चों लए परख, जोत सरूपी जोत जगाए। धन्न कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, एका एक ध्याए। धन्न कमाई संत जन, एका एक हरि ध्यावणा। धन्न कमाई संत जन, दूजे नाही सीस झुकावणा। धन्न कमाई संत जन, तीजे नैण मेल मिलावणा। धन्न कमाई संत जन, चौथे घर पंजां तत्तां हरि जोड़ जुड़ावना। धन्न कमाई संत जन, छेआं घरां भेव गूझ खुल्हावणा। धन्न कमाई संत जन, सत्तां दीपां पार करावणा। धन्न कमाई संत जन, अट्ठां तत्तां बणत बणावणा। धन्न कमाई संत जन, नौवां दरां बन्द करावणा। दसवें घर गुरमुख साचा आप बहावणा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, सुखमन नाड़ी टेडा रस्ता सौखा राह वखावणा। निरगुण साची जोत धर, ईड़ा पिंगल आप खुल्हावणा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां साचा दरस दिखावणा। एका सेव हरि गुर लाई। संत मनी सिँघ तेरी आत्म वज्जी वधाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच साची जोत टिकाई। जगी जोत अगम्म अपार। आत्म मिटया अन्ध अंध्यार। एका होया सच उज्जयार। तिन्नां लोकां पाई सार। एका वेखे सच दरबार। जिथ्थे वसे हरि निरँकार। जगे जोत अगम्म अपार। आत्म मिटया अन्ध अंध्यार। रूप रंग ना रेख ना कोई भेख एका खेल अपर अपार। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख होया

ठंडा ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर पंचम् जेठ लोकमात लए अवतार। संत मनी सिँघ शब्द कमाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। आत्म भेव गूझ खुल्हाई। एका दूजा भेव चुकाई। गुरमुख साचे आत्म चढ़या चाओ, प्रभ अबिनाशी वेखे सभनी थाँईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दर्शन पाया चांईं चांईं। दर आए प्रभ तोड़े आत्म हँकारी जिंदा। गुरमुख बणाए साची बिन्दा। प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए, सरन लगाए करोड़ तेतीस सुरपति राजे इन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंचम् जेठ जामा पाया वड वड गुण गहिंदा। वड वड गुणी गहीर है। कलिजुग तेरे अन्तिम वेले लथ्थे चीर है। गुरमुख साचे सज्जण सुहेले, इक्क दूजे दे आप बणाए वीर है। पंचम् जेठ करे मेले, सोहँ शब्द चलाए तीर है। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेले, बेमुख जीवां कोई ना देवे धीर है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप मिटाए शेख़ सुल्तान पीर हे। आप मिटाए शेख़ सुल्ताना। हथ्थीं बन्न्हे एका गाना। शब्द तीर मारे, मिटदा जाए जगत निशाना। प्रगट होया निहकलंक बली बलवाना। जोत सरूपी जामा पाया, किया खेल हरि भगवाना। बेमुख जीवां दिस ना आया, प्रभ अबिनाशी कृष्ना शामा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला जिन भगतां आण सुहाया। कलिजुग रैण अंध्यारी। सृष्ट सबाई सुत्ती पैर पसारी। चार कुन्ट दर दर घर घर वधी ठग्गी चोरी यारी। बेमुखां पाप जर, धरत मात दर साचे जा पुकारी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लोकमात बणी भारी। कोई ना दिसे साचा घर, चार कुन्ट झूठी सारी। कोई ना देवे किसे वर, भुल्ले सर्ब नर नारी। निहकलंक नरायण नर, पंचम् जेठ जोत सरूप प्रगट होए विच संसारी। धरत मात दर कढ्ढे हाढ़े। कलिजुग जीआं अन्तिम वेले दिन आए माढ़े। लाड़ी मौत हरि आप उठाए, लक्ख चुरासी बणाए साचे लाड़े। फड़ फड़ बाहों राहे पाए। धर्म राए दे वाड़े वाड़े। आपणा वेला आपे जाणे, पहली हाढ़े सारे साड़े। ना कोई छुडावे पिता माई, रुलदे फिरन विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़े। गुरमुखां पकड़े आपणे बाहीं, फिरे पिच्छे अगाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई चबाउण आया आपणी दाढ़े। कलिजुग तेरा सच निशाना। अन्तिम वज्जा विच जहाना। तिक्खा रक्खया मुखड़ा बाना। जोती जोत सरूप हरि, दित्ता वर श्री भगवाना। कलिजुग तेरी काल अन्धेरी। चढ़ी रहे चार चुफेरी। बेमुखां रहे अट्ठे पहर घेरी। बेमुख जीव झूठे वहिण वहे, आत्म होए अन्धेरी। प्रभ का भाणा विरला गुरमुख सहे, जोती जोत सरूप हरि, चुकावण आया तेरी मेरी मेरी तेरी। कलिजुग तेरी तत्ती वाउ। वेले अन्त वगी सारे थाउँ। कोई ना दिसे साध संत, चारों कुन्ट उडण काउँ। जूठे झूठे जीव जन्त, ना कोई पुत्त समझावे माउँ। वाह वाह तेरी बण

गई बणत, ग़रीब निमाणयां कोई ना देवे छाउँ। प्रभ अबिनाशी महिंमा अगणत, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां एका पिता एका माउँ। कलिजुग तेरी घटा काली। चारों कुन्ट चार चुफेर दहि दिश दिसे ख़ाली। बेमुख झूठी चक्की पिसे, फल ना दिसे किसे डाली। सुंञे दिसण आत्म वेहड़े, मस्तक दिसे ना किसे लाली। जूठे झूठे जगत झेड़े, धीआं भैणां मंगण विच दलाली। सच ना दिसे किसे खेड़े, सृष्ट सबाई होई बेहाली। कलिजुग अन्तिम आया नेड़े, प्रगट होवे दो जहानां वाली। जोती जोत सरूप हरि, बेमुख जीआं अन्तिम कलि धर्म राए घर करे चाली। कलिजुग तेरी उलटी लट्ठ। तुटा माण तीर्थ अट्ठ सट्ठ। अन्तिम वेले होए भट्ठ। जूठे झूठे माया धारी मठ । पापी गन्दे मदिरा मासी बैठे कर इक्ट्ठ । जोती जोत सरूप हरि, मार मुकाए आत्म अन्धे, शब्द सरूपी हरि वड्डा शाहो भूपी सृष्ट सबाई इक्क तपाए वड्डा भट्ठ। कलिजुग तेरी उलटी चाल। लक्ख चुरासी दित्ती गाल। अन्तिम वेला कलिजुग आया, प्रभ अबिनाशी जामा पाया लै के आया सच्चा काल। लाड़ी मौत हुक्म सुणाया, फड़ के बाहों राहे पाया, धरत मात दए दुहाया, मातलोक विच डेरा लाया, पहली मारे इक्को छाल। मक्का मदीना दए ढाहया । शाह फरंगी रहण ना पाया। सभ दी पिट्ठ होई नंगी, प्रभ अबिनाशी पाए तंगी, धर्म राए दे घर जाए टंगी, ना कोई दए छुडाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग

३४०
०४

तेरा अन्तिम वेला आपे आण सुहाया। कलिजुग पापी वध्या वड प्रतापी, चारों कुन्ट किते ना दिसे गुरमुख सच्चा जानी। बेमुखां दे आया हिस्से, संग मुहम्मद चार यारां मिली सच्ची गुलामी। घर घर रोवण रंडीआं नारां, किसे बाल ना लभ्भे बाली। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात अन्तिम काली। कलिजुग काला रूप कर अपारा। चारों तरफ उठ उठ वेखे, करे आपणी कारा। संग रलाए औलीए पीर शेख़े, नाल मुहम्मद चार यारा। आप भुलाए भरम भुलेखे, जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी सोहँ आरा। संग मुहम्मद चार यारी। अन्तिम होए कलि ख्वारी। मिटदी जाए उम्मत सारी। नबी रसूल ना चुक्कणा भारी। सदी चौधवीं ना होई कबूल, सभ दी मति गई मारी। झूठे झूले रही झूल, अन्तिम देवे इक्क हुलारी। प्रभ अबिनाशी गई भूल, आत्म चढ़ी हँकार खुमारी। अन्तिम वेले गई फल फूल, प्रभ अबिनाशी तोड़न आया शब्द लिआया नाल खारी। आपे कन्त सच्चा कन्तूहल, मेटी जाए वारो वारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल जन भगतां मेल बणे सज्जण सुहेल निहकलंक नरायण नर अवतारी। कलिजुग तेरा काला मुख। सच धर्म दी पै गई भुक्ख। घर घर सारे वध्या दुःख। हरे रुखड़े गए सुक्क। भाग ना लग्गे किसे माता कुक्ख। सच सुहाग ना कोई हंढावे, आत्म धूंएं घर घर रहे धुक्ख। सच राग ना कोई सुणावे, उज्जल कराए मुख। पिछला दाग़ ना कोई धुआए, जोती जोत सरूप

३४०
०४

हरि, कलिजुग तेरा अन्तिम वेले जन भगतां कटण आया भुक्ख। कलिजुग तेरी निकले ललाट। अन्तिम वेले हीरा घाट। नौ खण्ड पृथ्वी जाए हारी, अग्गे नेड़े आई वाट। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट। साचा तीर्थ प्रभ अबिनाशी आप प्याए, बज़र कपाटी जाए पाट। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे दया कमाए, रसना रस लैणा चाट। कलिजुग तेरी काली कंधी चारों तरफ सो आवे मन्दी। बेमुख जीव घर घर रहे रो, प्रभ अबिनाशी रसना ना गाया बत्ती दन्दी। गुरमुख विरला दिसे को, जिस पाया प्रभ अबिनाशी मिल्या परमानंदी। आपे पुरख निरँजण सच वड दाता गुणी गहिंदी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहला खेल आप रचाए, धरत मात तेरी दिशा लहन्दी। वेख विचारे निहकलंक नर अवतारे। जोत सरूपी जामा धारे। शब्द सरूपी खेल अपारे। वज्जा डंक इक्क किनारे। राउ रंक उठण सारे। द्वार बंक खुल्हे रहण घर घर चुबारे। आप मिटाए सभ दे शंक, शब्द उठाए खण्डा दो धारे। गुरमुखां देवे आप वड्याई। जिउँ राजा जनक, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पुरी घनक जामा धारे। कलिजुग तेरा काला रूप। लोकमात हरि साचा भुल्ले, वड वड शाहो भूप। कलिजुग झूठी माया रुले, होई अन्ध कूप। किसे भाग ना दिसे कुले, ना मिल्या सति सरूप। सभ दे पाणी प्या चुल्ले, रुढ़्दे जायण पहले बुल्ले, जगत अन्धेरी एका

३४१ ०४ झुल्ले, करे खेल हरि सति सरूप। गुरमुख विरला विच मात अन्तिम फले फुल्ले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक ३४१ ०४

नरायण नर, आत्म जोती देवे धर, वरन गोती एका कर, गुरमुख माणक मोती सोहँ शब्द साची चोग कर। कलिजुग तेरी काली रैण। नाता तुट्टा भाई भैण। ना कोई मीत प्यारा दिसे, ना कोई साक सज्जण सैण। ना कोई सच निशाना दिसे, प्रभ अबिनाशी वेखण आया नैण। कलिजुग झूठा भेख भिखारा, ना दिसे निहकलंक नरायण नर आया जोती जोत तपायण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुख साचे संत जन अन्तिम वेले कलिजुग तेरी चरन सरन प्रभ रहण। कलिजुग तेरा काला वेस। घर घर फिरन दर दरवेस। भुल्ले फिरन वड वड नरेश। किसे हथ्थ ना आए श्री दस्मेश। पंडत पढ़न विचारन वेद, गीता ज्ञान वखानण, हथ्थ ना आवे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश। कुरान अंजीलां लैणां जामन, ना कोई देवे नाम निशानण, शब्द सच्चा जामन घर घर प्या कलेश। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर कलि जामा पाया, सृष्ट सबाई बन्न्हे झूठे दाअवे। आवे जावे जोत जगावे। जुगा जुगन्त जामा पावे। नित नवित्त खेल रचावे। साचा मित आप अख्वावे। साची मात धरत बण जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, बेमुख भुल्ले भरम भुलावे। कलिजुग तेरा काला भेख। सारे भुल्ले औलीए पीर शेख़। अमृत आत्म सभ दे डुल्हे, ना कोई सके

वेख। लग्गी अग्ग काया कुले, मिटदी जाए झूठी रेख। शाह सुल्तान सारे भुल्ले, नेत्र लैणे पेख। एका सच्चा दुआरा खुल्हे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया जोत सरूपी धारे भेख। कलिजुग तेरा कर्म विचार। धरत मात तेरी सुण पुकार। ग़रीब निमाणे करन हाहाकार। राजे राणे जूठे झूठे होए मात ख्वार। कामी क्रोधी माया लूठे, भरया इक्क हँकार। आत्म होए मूधे ठूठे, बणे कूड़े कुड़यार। धुरदरगाही बेमुख झूठे, मदिरा मास करन अहार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए जामा धार। कलिजुग तेरा कर्म विचारे। निहकलंक हरि जामा धारे। बेमुख लग्गे झूठी कारे। साचा सुख ना विच संसारे। माया ममता वधी भुक्ख, घर घर कुरलावे नर नारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले जोत सरूपी जामा धारे। जामा धार ल्या अवतारा। निहकलंक खेल अपारा। वजे डंक चार कुन्ट जै जैकारा। आप उठाए राउ रंक, कलिजुग मिटे धुंदूकारा। इक्क सुहाए द्वार बंक, संत मनी सिँघ तेरा सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द सरूपी बणे लिखारा। साचा बणे हरि लिखारे। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। सतिजुग भेव खुल्हाए सारे। गुरमुख साचे संत जन, आप बणाए सच दुलारे। साचा देवे नाम धन, मेल मिलाए कन्त प्यारे। अन्तिम बेड़ा देवे बन्न, लाए पार किनारे। भाण्डा भरम हरि

३४२ ०४ देवे भन्न, शब्द हथौड़ा इक्को मारे। गुरमुखां कदे ना देवे डन्न, प्रभ अबिनाशी होए रखवारे। शब्द कंगण पहनाए तन, ३४२ ०४

काया दुखड़े लथ्थण सारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, राजयां राणयां करे ख्वारे। जोत सरूपी पहरया बाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। साज बाज तख्त ताज किसे रहण ना पाणा। प्रगट होवे देस माझ, जोत सरूपी भेख वटाणा। सम्बल देस लाया भाग, साचा धाम इक्क सुहाना। लिखे लेख हरि जी वेस, राणा संगरूर पकड़ उठाना। खुल्हे रक्खे आपणे केस, जोत सरूपी दरस दिखाणा। बेमुख भुल्ले लभ्भण श्री दस्मेश, जोत सरूपी एका रंग श्री भगवाना। निहकलंक नरायण नर, एका जोती एका गोती चार वरन एका धाम बहाना। चार वरन इक्क दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। साचा शब्द इक्क चलाए, सतिजुग तेरी साची धारे। राउ रंक इक्क थां बहाए, एका दूआ भेव निवारे। ऊँच नीच ज़ात पात भेव चुकाए, प्रभ अबिनाशी किरपा करे, देवी देवत शिव शंकर गणेश महेष एका आप अख्वाए, दूसर ना कोई दिसे किनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जामा धारे। प्रगट होवे साचा राणा। वक्त चुकाए वेद पुरानां। गीता तेरा साथ ना किसे निभाणा। कुरान अंज़ील मेट मिटाना। खाणी बाणी वक्त चुकाना। कलिजुग अन्तिम आई हानी, अन्तिम झंडा इक्क झुलाना। सोहँ डंडा साचा लाया, सतिजुग साचा मार्ग लाना। संत मनी सिँघ संग रखाणा।

चारों कुन्ट आप फिराना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क ल्याए धुरदरगाही सच्चा सच बबाणा। जोत सरूपी पहरे बाणा। जन भगतां देवे साचा माणा। साचा रंग इक्क चढ़ाना। शब्द घोड़े तंग कसाना। चिट्टा अस्व सोलां कलीआं नाल गुंदाना। सोलां कलां समरथ हरि हो अस्वार आप आए। सृष्ट सबाई वाग पकड़े हत्थ, चौथे जुग खेल रचाए। बेमुखां पाए नत्थ, धर्म राए दे दर फिराए। सृष्ट सबाई होई सक्ख, गुरमुख विरला रहि जाए। जिउँ रामा घर दसरथ, करे खेल कलिजुग महाने। प्रभ की महिंमा जगत अकत्थ, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी किसे भेव ना पाया, ज्ञान ध्यान कोई ना जाणे, ना कोई करे हरि पछाने। आवे जावे जावे आवे आदि अन्त श्री भगवाने। आपणा भेव ना किसे जणावे। वड वड भुल्ले साध, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पावे, गुरमुख साचे संत तरावे, मेल मिलावा पूरन भगवन्त। राजा संगरूर सरन लगाउणा। जमन किनारे डेरा लाउणा। अचरज खेल हरि वरताउणा। साधां संतां संग निभाउणा। वाली हिन्द पकड़ उठावणा। वड दाता गुणी गहिंद, जोत सरूपी मेल मिलाउणा। बेमुख जीव चारों कुन्ट करन निन्द, हरि दा भेव किसे ना पाउणा। वड दाता गुणी गहिंद, जोत सरूपी मेल मिलाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट दए शब्द सुनेहड़ा, गुरमुख विरले दर्शन पाउणा। गुरमुख साचे संत जनां देवे राह इक्क महल्ले। बेमुख जीव चारों कुन्ट अन्तिम वेला रहि गए इकल्ले। कलिजुग तेरी ढलदी जाए छाया, झूठी माया ना कोई फले ना कोई फुल्ले। साचा राह किसे हत्थ ना आया, सोहँ वक्खर एका अक्खर विच मात चलाया। ना कोई चढ़या चोटी सिखर, जित्थे हरि जी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, जीआं जन्तां एका रूप सभना विच समाया। एका जोत हरि निरँकारी। लक्ख चुरासी आप पसारी। वेखे परखे करे विचारी। ना कोई जाणे बिरध बाल जवान नर नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होवे कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। आदि पुरख आदि गुरदेवा। आदि अन्त एका जिह्वा। कलिजुग फड़े बसंतर, प्रभ अबिनाशी करे तेरी सेवा। होए रुशनाई विच गगनंतर, उठे सुरपति राजा देवा। सोहँ शब्द मात विच साचा मन्त्र, आप जपाए, प्रभ अबिनाशी अलक्ख अभेवा। सर्ब जीआं दी जाणे अन्तर, ना कोई करे भरम भुलेवा। सतिजुग बणाए तेरी बणतर, इक्क लगाए फल सोहँ सच्चा मेवा। शब्द उठाए साचा शस्त्र, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग लाए, साचा नाम जपाए, गुरमुख साचे संत जनां साची रसना जिह्वा। एका जोत करे रुशनाई। लक्ख चुरासी विच टिकाई। आदि अन्त भेव ना राई। साचा कन्त दे वड्याई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, होए आप सहाई। आपणा खेल आपे करे। जुगा जुगन्तर देवे वरे। ना कदे जन्मे ना कदे मरे। वसदा रहे साचे घरे।

हस्सदा रहे गुरमुखां दर दरे। नस्सदा रहे बेमुखां वेख डरे। अमृत मेघ वसदा रहे, चरन प्रीती जो जन करे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा राह दस्सदा रहे, आदि अन्त साची जोत धरे। पहली जोत हरि निरँकारा। सनक सनंदन सनातन संत कुमारा। दूजी जोत हरि जी बराह ल्या अवतारा। तीजी जोत हरि जी धरे, यज्ञे पुरख भेव न्यारा। चौथी जोत हरि जी हरि हरे, हाव गरीव रूप न्यारा। पंचम् जामा साचा करे, नरायण नर नर अवतारा। छेवें जामा एका वरे कपलमुन मुनी मुन धारा। सतवां भेख हरि जी धर, दता त्रै नाउँ उचारा। अठवां रंग आपे करे, रिखव देव खेल अपारा। नौवां खेल हरि करे, पृथु रूप अगम्म अपारा। दसवां खेल दहि दिशा मत्स नाम रक्खे, अचरज खेल करे करतारा। दस इक्क ग्यारां कच्छव रूप हरि जी धारा, वड़े विच जले। दस दो बारां, धनंतर वैद आया बाहरा, समुंद सागर मथन आप करे। दस तिन्न तेरां, मोहणी रूप जोत धरे देवां दंतां किनारा करे। दस चार चौदां नर सिँघ रूप नर हरे। भगत प्रहलाद रक्खे लाज आए दर घरे। दस पंज पन्दरां प्रभ सभ दी जाणे अन्दरा, बावन रूप हरि जी बल दुआरे हरि हरे। दस छे सोलां हँस पंखी बणे देवे ज्ञान सर्ब संसारे। सत्त दस दस सतारां, प्रभ अबिनाशी तेरी सच्ची धारा। नर नरायणी जामा धार, बालक ध्रू किया प्यारा। दस अट्ठ अठारां, प्रभ प्रगट होया विच संसारा। गज गराह आप अधारा। दस नौ उन्नी, परस राम हरि जामा धारे, क्षत्रीयां दी चोटी मुन्नी। दस दस बीस, होया राम अवतार हरि जगदीस, रावण दहिसर जिस ने मारा। बीस इक्क इक्की, धारी जोत इक्क निक्की, वेद व्यास अठारां पुरान लिख्त जिस ने लिक्खी, किया खेल हरि गिरधारा। बीस दो बाई, साची होई मात रुशनाई। कान्हा घनईआ कृष्न मुरारी जगी जोत सवाई। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका जोत एका गोत विच मात आपणी दए उपजाई। बीस तिन्न तेई, प्रभ अबिनाशी प्रगट होया बोध नाम रखाई। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे तिन्नां लोकां सार भेव ना जाणे कोई। चौवीवें जामे तेरी वारी। जूठ झूठ वध्धी संसारी। गुरमति गई जगत तों रुठ, दुरमति बैठी पैर पसारी। मन्दिर मसीतां गुरदुआरे बेमुख जीव कलिजुग अन्तिम रहे झक्ख मारी। एका भुल्ले हरि निरँकारे, धीआं भैणां करन ख्वारी। राम दास तेरा साचा सर सरोवर गुर अर्जन तेरी सच अटारी। अन्तिम वेला कलिजुग होया, लगदी दिसे उथ्थे यारी। गुर गोबिन्द बणया लेख लिखारी, साची लिखी धारी। पूर्ब कर्म आप विचारी। कलिजुग जीवां अन्तिम वेला आत्म पड़दा पाया भारी। झूठे लगदे दर घर साचे मेले, झूठे वणज वपारी। इक्ट्ठे करदे पैसे धेले, इक्क बणाउण सच्ची सरदारी। अन्तिम जाणा धर्म राए दे घरे, ना होए कोई सहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होया चौवीआं अवतारी। राम दास तेरे सच दुआरे। खाली

३४४
०४

दिसण सर्ब चुबारे। आत्म होई सर्ब हँकारे। माया सुत्ती पैर पसारे। कलिजुग तेरी अन्तिम राती, आत्म होई अंध्यारे। दुरमति मैल पापन भरे तत्ती, करे खेल चैंचलहारे। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे वेख विचारे। राम दास तेरा नाम निशाना। गुर अर्जन तेरा शब्द बबाना। चारे दर द्वार रखाना। चारे वरनां मिले माणा। साची धार इक्क रखाए, एका दीआ सर्ब माणा। ऊँच नीच ना कोई जणाए, जो जन आए होए निमाणा। मदिरा मासी ना कोई चरन छुहाए, ना करे तीर्थ इशनाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, वेले अन्त लए उठाए, आपे मारे शब्द बाना। अन्तिम वेले होए वहीर। हथ्थ ना आउणा किसे नीर। झूठे लथ्थे माया चीर। इक्क दूजे दे विछड़न वीर। चारों कुन्ट भज्जे फिरन, ना कोई शाह ना कोई फ़कीर। माया रूपी चार दुआरी। अन्दर पापी पाप करन, ना कोई करे रख्वारी। जोती जोत सरूप हरि, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया, तिक्खी रक्खे दोवें धारी। राम दास तेरा सच अस्थाना, अमृत भरया आप महाना। कलिजुग अन्तिम कलिजुग जीवां दित्ता सच्चा दाना। बेमुखां माया पाई बेअन्त, भुल्लया हरि भगवाना। झूठा होए साध संत, आत्म वध्या इक्क अभिमाना। रसन ना जपया एका साचा मंत, श्री धर श्री भगवाना। मेल मिलावा ना होया साचे कन्त, ज्ञान ध्यान झूठ वखाना। जोत सरूप आदिन अन्त, सति सरूपी रक्खे सद्द टिकाणा। आप बणाए आपणी बणत, पंचम् गुर वाली दो जहानां। जोती जोत सरूप हरि, साचे गुर जोत धर, सच धर्म दा आप झुलाए सच्चा इक्क निशाना। सच निशाना वेला जाग निधाना, दया कमाना, विच बबाणा आप बिठाया। शब्द बाणी बद्धा गाना, साचा हुक्म सुणाया। भरया तेज कोटन भाना, अट्ठे पहर रहे रुशनाया। साचा बख्शे हरि इशनाना, दुरमति मैल दए गंवाया। गुरमुख विरले आत्म माना, जिस धीरज यति साचा तत्त आपणा आप निभाया। बेमुखां मारी गई मत, मदिरा मास रसन लगाया। सच ना बैठा आत्म वत्त, झूठा रसना हल चलाया। हथ्थ ना आया साचा मित, पंजां तत्तां झेड़ा लाया। कोए ना रक्खे अन्तिम पति, निहकलंक कलि जामा पाया। बेमुखां नक्क पाए नत्थ, चारों कुन्ट लए फिराया। जोती जोत सरूप हरि समरथ, शब्द ताल लै आया वथ, कलिजुग तेरा वक्त सुहाया। प्रभ दी महिंमा अकथ्थ, सृष्ट सबाई जाए मथ, कलिजुग तेरी लाहे माया। राम दास तेरा सच दुआरा। जगे जोत अगम्म अपारा। उच्चा दिसे महल्ल मुनारा। धरी नींह हरि आप गिरधारा। सेवा करे बण भिखारा। साचा मेवा अन्तिम लेवे, जो जन आए चल दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीवां अन्तिम इक्क विसारा। साची कार हरि कमाई। साची सेवा सृष्टी लाई। वड देवी देव प्रगट होए, गुर अर्जन देव दरस दिखाई। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल आप रचाई। साची कार हरि कमांयदा। साचा राग कन्न सुणाउँदा। साचा बाज शब्द उडाउँदा।

साचा राग सर्ब सुणाउँदा। गुर अर्जन दर दरबान रखाउँदा। खाणी बाणी शब्द बबाणी आप चढ़ाउँदा। एका किया चरन ध्यान, जोती मेल मिलाउँदा। आपे बणया ब्रह्म ज्ञानी, आपणी रसना आप अलाउँदा। आपे मारे शब्द निशान, वेद पुरानां ढाह वखाउँदा। आप चुकाए जम की कान, अट्ठ सट्ठ माण गंवाउँदा। इक्क उठाए नाम निशान, प्रभ अबिनाशी जो जन गाउँदा। साचा किया हरि वखिआण, गऊ ग़रीब निमाणयां साचा बेड़ा बन्न वखाउँदा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् गुर लिख्या धुर, चरन प्रीती गई जुड़, आत्म पड़दा सारा लौहन्दा। गुर अर्जन इक्क इकल्ला, विच वस्सया हरि निरँकार है। दोहां बणी सच्ची धार है। चले शब्द इक्क अपार है। लिखाए लेख अपर अपार है। मातलोक बणाए सच्ची सरकार है। कलिजुग तेरी बन्नृण आया आपे सच्ची धार है। नाम रंगण जग रंगण आया, राग छतीस उचार है। प्रेम प्रीती मंगण आया, बण के हरि भिखार है। साची नीती रंगण आया, चढ़ के शब्द अस्वार है। जोती जोत सरूप हरि, दोहां धिरां दा इक्को सांझा सदा प्यार है। गुर अर्जन एह लेख लिखाया। सृष्ट सबाई मार्ग लाया। सारंगधर भगवान बीठला, हरि का भेव आप खुल्ाया। रसना गाओ परम पद पाओ। आत्म सुख सहिज समाओ। निजानंद विच समाया, आत्म विकार हँकार काम क्रोध लोभ मोह चण्डाल गंवाओ। सच ध्यान रिदे लगाया । हरि जू हरि मन्दिर आवे दया कमावे दरस दिखावे, साचा दरस दर साचे पाओ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले चरन छुहा साचे निर्मल जल तीर्थ साचे थांउँ। संत मनी सिँघ सेव कमाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। शब्द सरूपी धुन उपजाई। साचे तन होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क प्रीत चरन लिव लाई। चरन प्रीती हरि जी लागे। आत्म धोया झूठा दागे। सोया संत फेर जागे। बण गई बणत विच देस माझे। प्रगट जोत घनकपुर वासी, रक्खण आया साची लाजे। सृष्ट सबाई करे दासी, छेड़ छिड़ाए पहली वागे। कलिजुग जीव भुल्ले रुल्ले, कोई ना जाणे साचा रागे। घर घर दिसण मदिरा मासी, गुरमुख विरले होए सुभागे। सोहँ शब्द जपण स्वास स्वासी, सतिजुग तेरी साची जाग कलिजुग वेले अन्तिम लागे। आपे करे बन्द खुलासी, झूठे तोड़े माया तागे। मानस जन्म कराए रहिरासी, गुरमुख साचा संत बणे सुहागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर वरते स्वांग बण वड स्वांगी। साचे संत हरि साचा पाया। काया माटी भाण्डा काचा, सच वस्त हरि विच टिकाया। आपे ढाले काया ढांचा, नाम कुठाली साची पाया। अग्नी जोत देवे आंचा, अट्ठे पहर रिहा जलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ साचे गुर सच उपदेश इक्क सुणाया। संत मनी सिँघ लिखी जाओ लेख संसारे। वेखी जाओ जीव गंवारे। भेख मिटाओ कलम चलाओ,

निहकलंक कलि जामा धारे। कलिजुग झूठी रेख मिटाओ, सतिजुग साची मेख लगाओ, मिटी रैण धुंदूकारे। औलीए पीर शेख़ मिटाओ, वेख वेख के सर्ब उठाओ, आत्म होई सर्ब हँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाया, बेमुखां दे सिर विच मारे। संत मनी सिँघ नूर नुरानी। मिल्या वाली दो जहानी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, हथ्थ फड़ाई इक्क कानी। सृष्ट सबाई करनी सर, लिखणा लेख चढ़ जवानी। लेख लिखारा इक्क दर, जिथ्थे जोत जगे भगवानी। इक्क बणाउणा साचा सर, हीरा घाट नाम निशानी। सतिजुग बणे साचा घर, छत्ती मील शाम कटानी। जोती जोत सरूप हरि, साचा खेल हरि वरताए। सतिजुग साचे माण दवाए। एका झण्डा नाम, दूजा मील मील ते डण्डा आप लगाए। पाउँदा जाए साची वंडा, राग छतीस माण चुकाए। तोड़न जाए सभ दीआं गंढ्ढां, कुरान हदीस ना कोई पढ़ाए। गुरमुखां पाउँदा जाए ठंडा, सोहँ सुहागी गीत सुणाउँदा जाए। सत्त दीपां करे खण्ड खण्डा, दर दर घर घर दिसण नारां रंडां, कन्त सुहागी ना कोई हंढाए। आत्म तोड़े सर्ब घमंडा, शब्द हथौड़ा उत्तों लाए। आप छुडाए महला, मन्दिर झुग्गी वास ना कोई रखाए। चुक्कणा भार ना मिले किसे पंडा, शब्द तीर इक्क चलाए। एका चले चण्ड प्रचण्डा, लक्ख चुरासी भेड़ भिड़ाए। कच्चे भन्ने अंडा, देवी देव ना होए सहाए। हथ्थ विच फड़या सोहँ शब्द डण्डा, कलिजुग फल सर्ब झड़ाए। महाराज
३४७ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा खेल करे रघुराए। संत मनी सिँघ सच वखानयां। प्रभ अबिनाशी ३४७
०४ साचा जाणया। मिल्या शब्द जगत महानयां। मिटाए सुख राजे राणयां। कर कर भेख हरि भगवानयां। आवे जावे विच ०४
जहानयां। सर अमृत जाए चरन सुहानयां। पुजारी दुष्ट दुराचारी आत्म होई सर्ब हँकारी, लिखे लेख बण लिखारी, संत मनी सिँघ मारी कानीआ। प्रभ अबिनाशी प्रगट होए वाली दो जहानयां। घर घर होए ख्वारी, रोए नर नारी, धीआं पुत्त ना कोई पछानीआ। फेरी जाए सर्ब बहारी, चारों कुन्ट वारो वारी, मारे बाण सच निशानीआं। जगे जोत इक्क निरँकारी। कलिजुग मिटे धुंदूकारी। गुर गोबिन्द साची लिख्त लिखाई भविख्त, करे खेल हरि निरँकारी। प्रगट होवे वाली हिन्द गुणी गहिंद वड मृगिन्द, जन भगतां जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे करे आपणी सच विहारी। एका मारे शब्द चोसा। आपे पाड़े कलिजुग तेरा काला सूसा। एका जोती अग्नी लाए, सत्तां सागर पाणी करे कोसा। गगन पताली जी जहानी खाणी बाणी वेद पुरानी अंजील कुरानी कोई रहण ना पाए, ना कोई बैठा ना कोई सोता। गुरमुख विरला जाए चरन कुरबानी, जिस देवे नाम निशानी। बण जाए झूठा रोसा। संत मनी सिँघ सच दुलारया। आप आपणा उत्तों वारया। सेवा लाए हरि जी प्यारया। अट्ठे पहर लिखदा रहे चले कलम अपर अपारया। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्नी शब्द धार संत मनी सिँघ तेरा मानस जन्म संवारया। संत मनी सिँघ सेव कमाई। दिल्ली जाए चरन टिकाई। साल तिन्न रकाब गंज आपणा बैठा भेव छुपाई। साचा लेख लिखदा रहे, निहकलंक शब्द सरूपी रिहा शब्द चलाई। मस्तूआणा साचा धाम, सच निशान आपणी हथ्थीं आप टिकाई। प्रगट होए रमईआ राम, कलिजुग तेरे अन्त वेले साचा धाम आप बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर प्रगट होए, होए सहाई सभनीं थाँईं। संत मनी सिँघ लिख्त अपार। उठे दुष्ट दूत दुराचार। दर दरबारे जाए करी पुकार। उठया राणा संगरूर, आत्म भरया इक्क हँकार। सद सद सद महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दित्ती शब्द धूढ़, फड़या संत मनी सिँघ झूठी सरकार। ना जाणे खेल करतार। की जाणे संत गंवार। पिच्छे लग्गा शब्द डण्डा भार। वज्जी जाए वारो वार। खोल्ही जाए बन्द कवाड़। दस्म दुआरी स्वास चाढ़े, जगे जोत बहत्तर नाड़। माया अग्नी देवे साड़। दूई द्वैती देवे पड़दे पाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दया कमाए, गुरसिख बणाए सतिजुग साचा लाड़। संत मनी सिँघ दए दुहाई। मेरी नहीं कोई वड्याई। निहकलंक कलि जामा पाई। जोत सरूपी रिहा लिखाई। साची सेवा मेरी लाई। दिवस रैण मैं कलम चलाई। शब्द देवे सभनीं थाँईं। अट्ठे पहर सौण ना देवे। मार मार रिहा उठाई। रसना मेरी हरि जू सेवे, दूसर किसे दिसे नाही। राणे संगरूर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, अन्तिम आउणा पए हज़ूर, लैणी पए सच्ची सरनाई। सुण राजे राज द्वार। निहकलंक ल्या अवतार। राजे राणयां करे ख्वार। लिख्या लेख संत अपार। अन्तिम पैणी डाहढी मार। झूठे जाणो बंक द्वार। घर घर फिरो बण भिखार। झूठे करो वणज वपार। प्रभ अबिनाशी साचा हुक्म सुणाया। धुर फ़रमान लेखा लिखण सिँघ मनी सिँघ घर साचे आया। चढ़ शब्द बबाण, सिँघ मनी सिँघ साचा धनी आप बणाया। आत्म खुल्हाई इक्क सच्ची दुकान, साचा माण ताण जगत रखाया। दित्ता माण ताण, एका राग कन्न सुणाया। भुल्लया पीण खाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। अन्तिम वेले करे सर्ब पछाण, संत मनी सिँघ करे सिक्दार। राणे संगरूर मन कर विचार। अन्तिम वेला आए, राउ रंकां पावे सार। तख्त राज ना किसे रहणे, ना कोई लाए झूठा दरबार। कलिजुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक कल्कि अवतार। आप चुकाए लहिणे देणे , प्रगट हो सच्ची सरकार। गुरमुखां तन पहनाए शब्द गहिणे, सोलां करे शृंगार। गुर संगत बणाए भाई भैणे, सांझा करे इक्क प्यार। आप वखाए साचे नैणे, ना भुल्ले जीव गंवार। लेखे अन्तिम देणे पैणे, चित्र गुप्त बणया रहे लिखार। धर्म राए डन्न सहिणे पैणे, अठाई कुण्डां तपे अन्गयार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होवे अन्तिम वेले जोत सरूपी

जामा धार। संत मनी सिँघ खुशी मनाउँदा। एका गीत सुहागी गाउँदा। सच प्रीत चरन निभाउँदा। प्रभ अबिनाशी साचो साचा मीत, जगत जीव ना झूठ दिसाउँदा। आदि अन्त अचरज रीत, लज पति आपणे हथ्थ रखाउँदा। साचा संत वेले अन्त आप उठाउँदा। परखण आया साची नीत, लोकमात फेरा पाउँदा। मानस जन्म गया जग जीत, साची सेवा संत कमाउँदा। एका किया हरि जी मीत, अट्ठे पहर ना कदे भुलाउँदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर साचा हरि, साचे घर मानस जन्म पूर कराउँदा। वाह वाह साची सेवा लाया। वाह वाह साचा अमृत फल खवाया। प्रगट होए वड देवी देवा, साचा राग कन्न सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा भेख आप वटाया। संत मनी सिँघ दए दुहाए। चरन प्रीती तोड़ निभाए। एका साचे मार्ग पाए। एका राग कन्न सुणाए। साची नईआ आप चढ़ाए। फड़ाए बहीआं दया कमाए। कान्हा घनईआ दरस दिखाए। आत्म साची सेजा लेटा, सोया आसण लाए। नर नारी इक्क थां बहाए। साचा मेल मिलाए। धर्म राए ना करे ख्वारे, साचा माण आप दवईआ, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा पाए। जोत सरूपी जोत जगाई। बिन रंग रूपी दिस ना आई। गुरमुख साचे होए सहाई। अट्ठे पहर विच समाई। शब्द धार इक्क रखाई। पुरीआं लोआं बूझ बुझाई। चौदां लोकां हट्ट खुल्हाई। खण्डां ब्रह्मण्डां आपणी बूझ आप बुझाई। सदा सुहागण वड वड भागण गुरमुख आत्म ना होए रंड, साचा कन्त हरि सच मनाई। बेमुख पाउँदे झूठीआं वंडां, आत्म होई सर्ब घमंडा, सच वस्त किसे हथ्थ ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अष्टम् जेठ देण आया सच्ची वड्याई। साची सेवा लेखे लाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। भरम भुलेखा दूर कराए। औलीआ पीर शेख़ा सर्ब मिटाए। कलिजुग तेरी मिटदी जाए रेखा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाए। लक्ख चुरासी नेत्र वेखा, जूठ झूठ कलिजुग फिरे हलकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जामा धर, संत मनी सिँघ माण रखाए। कलिजुग होया अन्ध अन्धेर। ना कोई शाम ना सवेर। सृष्ट सबाई करे हेर फेर। प्रगट होया सिँघ शेर शेर दलेर। चारों कुन्ट बेमुखां मारे घेर घेर। एका खण्डा हथ्थ उठाया, सोहँ शब्द सच्ची शमशेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप मिटाए मेर तेर। संत मनी सिँघ सेव कमाउँदा जा। प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर ध्याउँदा जा। शब्द सुनेहड़ा आपणा आप सुणाउँदा जा। बेमुखां पकड़ घर घर काग उडाउँदा जा। सृष्ट सबाई चारों कुन्ट बेमुख जीव सुंञ मसाण कराउँदा जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चरनी सीस झुकाउँदा जा। संत मनी सिँघ सच दुलारे। पहलां

कर इक्क विहारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। तीजा नैण आपे खोले, आपे जोत सरूप करे चमत्कारे। हरि जी सद वसे कोले, बेमुखां दिसे पड़दे ओहले, कोई ना पावे सारे। पूरा तोल साचा तोले, सद वसे काया चोले, जोत सरूपी अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ देवे दरस हरि निरँकारे। संत मनी सिँघ देवे वर। कलिजुग अन्तिम किरपा कर सतिजुग साची जोत धर। जगे जोत ललाटी शोहले, संत मनी सिँघ मन वधाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। आत्म चिन्ता सोग मिटाई। हउमे विच्चों रोग गंवाई। सच संजोग साचे कन्ता, आपणा आप बणाई। मेल मिलावा आदिन अन्ता, फिर विछड़ ना जाई। एका रंग चढ़े बसंता, साची रुत्त आप सुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची मात वज्जी वधाई। देवे मात सच्ची वड्डयाईआ। चरन बन्हाए साचा नात, विछड़ कदे ना जाईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, चार वरन एका गोत बणाईआ। मेट मिटाए चार वरन, प्रभ अबिनाशी धरनी धरन, शूद्र क्षत्री ब्राह्मण वैश ना कोए अखवाईआ। आपे होए सरनी सरन, नेरन दूर ना कोए बणाईआ। आपे होए हरनी फरनी, हरन फरन आप खुलाईआ। हरि पूरे दी लोड़ सरन, जन्म मरन हरि कटाईआ। गुर पूरे दी राखो सरन, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईआ। बेमुख आपणा किया भरन, प्रभ देवे अन्त सजाईआ। प्रभ का भाणा सिर ते जरन, ना सके कोई छुडाईआ। गुरमुख साचे चरन प्रीती करन, देवे दरस आप रघुराईआ। मानस जन्म अतीत कर, जगे जोत दूण सवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचे गुर साचे घर चरन प्रीती गई जुड़, चढ़ के आया शब्द घोड़, देवण आया वधाईआ। मातलोक देवे वधाई। धरत मात खुशी मनाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। निहकलंक कल्कि होई रुशनाई। वज्जा डंकी चारों कुन्ट पए दुहाई। राउ रंकां सुध रहे ना राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाम धना, साचा राग सुणाए कन्ना, अन्तिम वेले बण साचा सज्जण सुहेल, जोती जोत लए मिलाई। संत मनी सिँघ पाए सार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। देवे दरस अगम्म अपार। जगाए जोत अपर अपारा। गुरमुख विरला आत्म वेखे तीजे नैण लए वेख, प्रभ किरपा करे अपर अपार। गुर संगत रल मिल सभ प्रभ अबिनाशी रसना कहण, आपे बणे साक सज्जण सैण, देवे नाम शब्द उडार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द तीर इक्क चलाए सृष्ट सबाई पाए वैण, ना कोई दीसे बेमुख जीवां सज्जण सैण मुरार। एका एक हरि साचा पुरख निरँजण सर्ब जीआं दी जाणे सोए जन्म पूत वडा बलकारी। आत्म चल्ले शब्द अपारी। हथ्थ होवे शस्त्र, तन पहने सच्चा बस्त्र, उत्ते चढ़े सच्चे अस्त्र, प्रभ अबिनाशी देवे सच्ची सरदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरी गोद सुहाई,

धरत मात दी सच सपुत्री सच दुलारी। सच सपुत्री सच दुलारी। चरन धूढ़ मस्तक लाई, गुर संगत चढ़ी वडी भारी। पहली वारी हीरा घाट वाग गुंदण साची आई सिँघ मनजीत तेरी छोटी भैण प्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ तेरा बेड़ा बन्नॄण आया, भेंट चढ़ाए कन्या धी कुँवारी। हीरा घाट हरि की पौड़ी। भैण भ्रावां बण गई जोड़ी। गुर संगत सारी अक्खीं वेखे दोवें चढ़े सच्ची घोड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेवा तन लगाया, कलिजुग तेरी विच्चों कढुण आया वेल कौड़ी। कुँवार कन्या अञ्याण बाल। आपणी सके ना अजे सुरत संभाल। किरपा करी नर गोपाल। जगत अवल्लड़ी चली चाल। सतिजुग साचे तेरी साची धीर धराए, नींह रखाए भेंट चढ़ाए अनमुल्लड़े लाल। वाह वाह सोहणा वक्त सुहाए, गुर संगत साची संग रलाए, आत्म जोती आप खिचाए, साचे धाम आप बहाए सदा करे रखवाल। संत भगत ना कोए कराए। एका नाम रंग चढ़ाए। साची गंग हीरा घाट सच सरोवर आण नुहाए। सच्चे अस्व कस तंग, सच अस्वारा आसण लाए वड दाता सूरा सरबंग, निहकलंक नरायण नर, आपणा लेखा आण लिखाए अन्त मुकाए। साचा लेखा लिखदा रह। विहला ना कोई बह। एका वाह वगदी रैह। सच सच्च दी सदा जै। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख विरला छावें बह। सच्ची छाँ जिस जन माणी। चहुं जुगां दी साची राणी। सिँघ सरूप धी निमाणी।

३५१ ०४ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए जम की कानी। घर घर जम ना आए नेड़े। प्रभ अबिनाशी करे सच्चे नबेड़े। ३५१ ०४

साचे घर आप वसाए, संत मनी सिँघ तेरे नगर खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे बन्नॄे जन भगतां बेड़े , धी धन माल बेगाना। लै के जाए श्री भगवाना। सच्चा कन्त शाह सुल्ताना। बण गई साची बणत विच दो जहानां। महिंमा जगत अगणत, झुलदा रहे जगत निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा लेखे लाए, गुणवन्त गुणी निधाना। सहिजे सहिज सुख धारी। साची करे आप विहारी। मात पिता दी धी प्यारी। खिच्च लै जाए चरन द्वारी। आप बहाए सच्ची विच महल्ल अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। धी निमाणीए साची मात राणीए। चुक्की जम की काणीए। ना आई अन्तिम हाणीए। वड सोहणी सुघड़ स्याणीए। साचा रंग सज्जण सुहेले रंग तेरा साचा माणीए। गुर संगत करन आई मेले खुशीआं साची माणीए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए प्रगट होए वाली दो जहानीए। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाया। फूलण हार संग ल्याया। सच्चो सच विहार जाणे करतार, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। संत मनी सिँघ तेरे सच दरबार, हरि निरँकार इक्क इक्क फुल आप वरताया। चुकावण आया अगला पिछला लेखा, सोहणा गहणा सदा रहणा, धी निमाणी तन पहनाया। खुशी हो हो बहिणा, ना वैण

पाउणा नैणां, मन्नणा प्रभ पूरे दा कहणा, सोहणा सच्चा चन्न चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां खुशी बन्द बन्द कराया। साचा सिख इक्क बलकारी। सेवा कीती गुर दर भारी। उत्ते रक्खे हरि सवारी। जिउँ गरुड़ हरि मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संग गुरमुख गुरमुख सिँघ चरन प्रीती बख्शे भारी। मन तन गुर सेवा लाए। आपणे कंध रिहा उठाए। बन्द बन्द खुशी रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मार अड्डी सैनत नाल समझाए। वज्जे अड्डी होए इशारा। उत्ते बैठा हरि अस्वारा। नाल रक्खे शब्द आरा। वागां खिच्चे वारो वारा। तुणका लाए नाम भारा। प्रेम खिची जाए जंगल जूहे विच उजाड़ पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सवारी हरि जी करे, गुरमुख साचा सेवा करे, उत्ते बैठा शाह अस्वारा। प्रभ अबिनाशी सिर ते चुक्के, वांग विचोले मारे फेरे, चारों तरफ पाए घेरे कदे ना रुके। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाग फेर लगाया, गुरमुख काया खुल्हे वेहड़े। साची सेवा हरि कमाई। चरन प्रीती तोड़ निभाई। साची नीती प्रभ साचा परखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी किरपा कर साची जोत फेर जगाई। साची जोत कर अकारे। चवी साल ना पाई सारे। साल पंझीवें किरपा धारे। खिच्च ल्याए चरन दुआरे। निहकलंक चौवीआं अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी आपे जाणे ना कोई पावे सारे। आपे पाए
३५२ गल विच रसा। एका राह सच्चा दस्सा, चरनी गुरसिख आया नस्सा। नां रखाया सिँघ मस्सा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ३५२
०४ भगवान, आत्म करे प्रकाश कोट रवि सस्सा। साचा जन्म हरि दवाए। आप आपणी सरन बहाए। गुर संगत साची सेवा ०४
लाए। अट्ठे पहर प्रेम वधाए। रिद्ध सिद्ध वस कराए। करे कारज सुध, अन्तिम अन्त आपे जाए बणत बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत जाए दरस दिखाए। अवल्लड़ी चाले हरि कृपाले। वेख वखाणे बाल अञ्याणे सिँघ पाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सर्ब जीआं दी आपे जाणे। साधू सिँघ सहिज सुख धारी। आत्म ख़िमा ग़रीबी भारी। भगत बैणी दी नार प्यारी। भुक्खी नंगी प्रभ अबिनाशी आप बणाए तेरी साची यारी। साची वस्त ना दर किसे तों मंगी, निहकलंक बणे भिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, खिच्च ल्याए चरन द्वारी। चरन द्वार जो जन जाणे। गुरमुख साचा खुशीआं माणे। देवे दान हरि भगवान, गुरमुख वेखे बाल अञ्याणे। चरन धूढ़ कराए इशनान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग समाणे। साचा रंग शब्द चढ़ाया, नाल रलाया चोला नीला। गुरमुखां साचा कन्त हंढाया, सूहा काला लाल पीला। रंगे रंग रंगीला, आपे कर कर गुरसिख हीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर दिवस रैण जुगा जुगन्त आदि अन्त सदा रहे छैल

छबीला। ना बुड्ढा ना हरि जवान। अट्ठे पहर जोत सरूपी हरि बलवान। बिन रंग रूपी वड शाहो भूपी एका एक जगत टेक रक्खे शब्द मान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे नाम वड्याई, आप चुकाए जम की कान। प्रभ अबिनाशी साची गोद, धी निमाणी बहि के जा। साचा देवे दाज माल धन, दरगहि साची बहि के खा। शब्द सुण साचा राग कलिजुग अन्तिम गई जाग, सारयां ताईं कहि के जा। गुर पूरे दी पकड़ी वाग, मातलोक जाए चरनी पैंदी जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा इक्क सुनेहड़ा, धर्म राए नूं कहन्दी जा। धर्म राए नूं जा जणाई। निहकलंक कलि जामा पाया, हीरे घाट डेरा लाईं, कलिजुग तेरी औखी वाट, प्रभ अबिनाशी गया पन्ध मुकाई। रसना रस साचा चाटी, अमृत मुख चवाई। आपे बन्ने साची घाटी, संत मनी सिँघ फूल चढ़ाई। जगे जोत इक्क ललाटी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची बणत रिहा बणाई। साचा बणे धाम न्यारा। सतिजुग तेरी पहली वारा। आप कराए साची कारा। सेवा लाए सच्ची सरकारा। वाली हिन्द उठ उठ करे चरन निमस्कारा। निहकलंक कलि जोत जगाए, अट्ठ पहर अटल्ल रहे तेरा इक्क मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मन्दिर आपणा अन्दर एका उच्च मुनारा। हीरा घाट जोत जगाए हरि भगवान है। प्रगट होवे सच्चा कान्हा है। प्रभ अबिनाशी आपे रंगे, सत्तां रंगां हरि रंगान है। चौथे लेख हरि भगवान, पंजवें नेत्र लैणा पेख निशान है। प्रभ अबिनाशी निहकलंक प्रगट होया बली बलवान है। घनकपुर वासी जागया सोया आप उठया हरि भगवान है । दुरमति मैल गुरसिक्खां धोया, अमृत साचा हरि प्याण है। धुर दरगाही सच विचोला, हथ्थ फड़ी शब्द कमान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भाणा कोए ना जाणे भुल्ले राज राजान है। राजे राणे वड हँकारी। सुत्ते पैर पसारी। उत्तों आए अन्तिम वारी। छुट्टे लाल इक्क अनायारी। कलिजुग जीव चारों कुन्ट राह ना दिसे घर घर होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे कन्ढे डेरा लाया, अखीरी डण्डा एह लगाया, जिथ्थे वसे धी कुँवारी। साचे डण्डे गई चढ़। रुढ़ी ना कलिजुग तेरे हड़। साचे अन्दर गई वड़। संत मनी सिँघ तेरे दर दुआरे अग्गे आई हड़। निहकलंक कलि जामा पाया, बाहों ल्याया फड़। सतिजुग तेरे साचे अन्दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप फड़ाया आपणा लड़। साचा गहणा आप पहनाया। सोहँ कंगण तन छुहाया। साची चोली हरि रंगाया। एका रंगण मजीठ रंगाया। शब्द घोड़े तंग कसाया। हो अस्वार हरि जी आया। प्रगट होए दरस दिखाया। संत मनी सिँघ तेरा डेरा अन्तिम वारी आण सुहाया। बारां साल कर कर हेरा फेरा, तैनूं ख़ाक दे विच दबाया। निहकलंक नरायण नर फेर बध्धी तेरी ढेरी, हीरा घाट दए रुढ़ाया। कलिजुग अन्तिम पाए फेरी, साचा चन्द चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद

बख्शिंद, गुरमुख तेरा बेड़ा बन्न वखाया। बन्ने बेड़ा चाल निरालीआ। कलिजुग तेरी घटा कालीआ। प्रगट होया हिन्द दा वालीआ। गुर संगत बणया पालीआ। खूंडी भूरी आप उठालीआा। चारों कुन्ट करे रखवालीआ। दीपक जोती जगे दीवालिीआा। गुरमुख मस्तक चढ़े लालीआा। साची मति प्रभ साचे अन्तिम कलि मात विच पालीआा। रक्खे सास सुखाले जिस प्रीती निभे नालीआ। ना दगन कलिजुग आग, आप तोड़े जगत जंज़ालीआ। हरि आपणी गोद आप उठालीआ। सच्चा दित्ता नाम धन, ना होए अन्त कंगालीआ। फल लगाए साचे डाले, फुल्ल चढ़ाए हरि बनवालीआा। सारे दिसण हथ्थों ख़ाली, निहकलंक नरायण नर जन भगतां अमृत मुख चवालीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म आप साचा भोगी सच संजोगी बणालीआ। गुर गोबिन्द तेरी दुलारी। मुक्तसर दी मुक्त अधारी। माता भागो कर्म विचारी। कलिजुग अन्तिम आई निहकलंक चरन द्वारी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, सिर उत्तों लाही पंड भारी। जगत विचोली साची डोली, बैठी भोली धी कुँवारी। ना कोई मारे गुरसिख बोली, प्रभ अबिनाशी आपे वरते आपणी धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेजा आप सवाया, सिर चुथाँईं फूलां खारी। साची खारी सिर उठाउँदी जा। प्रभ अबिनाशी रसना ध्याउँदी जा। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तज, सचखण्ड निवास रखाउँदी जा। गुरमुखां साचे सच सुनेहड़े साचे हार, प्रभ अबिनाशी भेंट चढ़ाउँदी जा। इक्क इक्क फूल कोए ना मुल्ल कर विचार हरि भतार चरनां नाल छुहाउँदी जा। दस्सी जाए सच पुकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, तिन्नां लोकां एका धार, चरन प्यार जांदी वार सिक्खाउँदी जा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, जन भगतां आप पछाणदा। देवे माण दो जहान दा। चढ़े झण्डा ब्रह्म ज्ञान दा। वजे खण्डा शब्द निशान दा। हीरा घाट एह तेरा कन्ढा, चरन धूढ़ इशनान दा। निहकलंक कलि जामा पाया, पुरी घनक विच पिण्ड घविंडा, सूरबीर वड दाते बलवान दा। हीरा घाट तेरा बन्न बन्नांयदा। आप मिटाए अट्ठ सट्ठ तीर्थ तट्ट, कलिजुग अन्त करांयदा। गंगा गोदावरी सीना गया पाट, अमृत धार बाहर कढांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद प्रभ आप सुहाया डोली खाट, गुरसिक्खां कंध उठांयदा। चुक्क ल्याए साचे ताट, वहन्दी धार वहांयदा। गुरमुखां देवे सीत प्रसाद, पहले आपणी रसन लगांयदा। प्रभ अबिनाशी बोध अगाध, साचा शब्द लिखांयदा। साचा वज्जे नाद, चिट्टे अस्व शब्द डंक वजांयदा। गुर संगत सारी रक्खणा याद, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जोत सरूपी जामा पांयदा। चौथे जुग जामा धारे। निहकलंक नरायण नर अवतारे। माझे देस जगी जोत , तिन्नां लोआं करे उज्जयारे। बेमुख कलिजुग रहे सोत, ना पायण सारे। गुर संगत सारी संग रलाई, चिट्टे घोड़े तंग कसाई, उत्ते आसण सोहणा लाया, आया

नहिर किनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घाट आप बणाया। संत मनी सिँघ अग्गे डाहया। छोटी बाली गोद बिठाया। चढ़ जाए लाली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भाणे आप समाया। सच दर आ के गया रुक। कलिजुग तेरा भार चुक्क। बेमुखां मुख पाए थुक्क। अन्तिम वेला आया ढुक्क। प्रभ का भाणा ना जाए रुक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग रुक्खड़े हरे कराए, अन्तिम वेले गए सुक्क। आया हरि छैल छबीला। चोला पाया गल विच नीला। दीन मुहम्मदी आत्म तेरी लावण आया तीला। धरत मात कम्बदी थल्ले रो रो पुकारे, निहकलंक कलि जामा धारे, अन्तिम वेला मिल लओ कर कर साचा हीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ भेख वटाया, सोहणा रंग आप रंगाया, चिट्टा लाल सूहा पीला। साची भेंटा आप चढ़ांयदा। संत मनी सिँघ साचा बेटा वड खेवट खेटा, बेड़ा बन्न्हण आंयदा। प्रभ अबिनाशी वड वड थेटा, नगर खेड़ा इक्क वसांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हीरा घाट पहली सेवा तेरी आपणी हथ्थीं आप करांयदा। शब्द घोड़े हो अस्वार। पहुंचे आण सच किनार। संत मनी सिँघ हो त्यार। सतिजुग आई तेरी वार। अमृत जल सरोवर साचा कर, सतिजुग मिट्ठी धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए दूजी कर साची कार। तीजा हुक्म आप सुणाए। गुर संगत सारी दया कमाए। पल्ले बध्धी गंढ खोल्ह् वखाए। धुरदरगाही पाए ठंड, दाणा पाणी मुक्क ना जाए। आपणी हथ्थीं रिहा वंड, गुरमुख साचे लए उठाए। बेमुखां पाउँदे कलिजुग डण्ड, दाणा हथ्थ किसे ना आए। चारों कुन्ट चले चण्ड प्रचण्ड, दीन मुहम्मदी मिटदा जाए। करन आया खण्ड खण्ड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुहागी गुरमुख नार सुलक्खणी आप उठाए। सतिजुग आई तेरी वारी। मिट्ठी होई जल धारी। सतिजुग तेरी नींह अपारी। बक्करी शींह इक्क द्वारी। ऊँच नीच दा भेव न्यारी। राउ रंक दर दरबान वड सुल्तान चरन करे पनिहारी। आपे होए राज राजान हरि मेहरबान, चिट्टे अस्व हो अस्वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरे साचे फुल्ल चढ़ावण आया, कलिजुग अन्तिम गुर संगत नाल कर त्यारी।

✻ ६ जेठ २०११ बिक्रमी चेत सिँघ दे गृह पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✻

चेत सिँघ तेरे सच दुआरे। प्रभ अबिनाशी साचा आया, गुर संगत कर नाल त्यारे। एका नाम रंगत चाढ़े, खिड़ी सच्ची गुलज़ारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर प्रगट होया विच संसारे। सिँघ सवरन वज्जी वधाई। प्रभ दर आया चांईं चांईं। साचा लेखा हरि लिखाए, चरन बहाए फड़ के बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

३५५ ०४

अष्टम् जेठ खुशी मनाई। सिँघ सवरन हरि दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। देवे सच्ची नाम दात, अट्ठे पहर दरस अपारे। सच्चा झुल्लया नाम निशान, तेरे सच महल मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए आप कराए जै जै जैकारे। साचा चले शब्द जैकारा। प्रभ अबिनाशी पावे सारा। मंगण आया बण भिखारा। भगत जनां दा हरि लिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किया जोत सच विहारा। सिख साची सेव कमाईआ। चरन प्रीती तोड़ निभाईआ। देवण आया भगत वड्डयाईआ। आपे परखे कलिजुग नीती, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। मात जन्म गया जग जीती, साचे धाम डेरा लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुआरे आया गुरमति नाल रलाईआ। संगत सारी बलि बलि जाओ। प्रभ अबिनाशी साचा पाओ। सति सरूपी साची मोहर नाम लगाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस अन्तिम वेले लक्ख चुरासी गेड़ कटाओ। सिँघ चेत अन्त विचारया। प्रभ अबिनाशी पार उतारया। घनकपुर वासी मानस जन्म कराए रहिरासी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। करन आया बन्द ख़लासी, मिटावण आया मदिरा मासी, हथ्थ फड़ खण्डा दो धारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुरमुख साचे संत जन बेड़ा पार उतारया। सिँघ सवरन सच दुलारा। गया चढ़ हरि दुआरा। अग्गे खड़ा हरि निरँकारा। देवे दरस अगम्म अपारा। मातलोक बध्धी धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा आपे लाई, अट्ठे पहर रहे दर दरबान नर निरँकारा। प्रभ अबिनाशी जगत जंजाल तोड़े, चरन प्रीती जोड़े दरस दिखांयदा। प्रभ अबिनाशी वाग मोड़े, चढ़ के आए शब्द घोड़े तरस कमांयदा। गुरमुख दरस दान दर लोड़े, प्रभ अबिनाशी कदे ना मोड़े, दयावान दयानिध दया नित कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर विच मात जामा पांयदा। जामा पाए कल्गीधर नर अवतार। पूरन कर्म जाए कर। सृष्ट सबाई कर जाए सर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर। आप आपणी कार कमावे, शब्द सरूपी खेल रचावे, जोत सरूपी बण बण साचा कान्हा। झुलाया सच निशान। मात जोत प्रगटाए मिटाए बेईमान। शब्द सरूपी ना कोई छड्डे, गुरमुखां करे पछाण। प्रभ बाहों पकड़ चरन बहाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। शब्द तीर इक्क चलावे, इक्क रखावे चरन ध्यान। अमृत साचा सीर पिलावे, आप चुकावे जम की कान। लक्ख चुरासी फंद कटावे, विच बिठाए शब्द बबाण। दर घर साचे माण दवावे। सच्चा देवे पीण खाण। तृष्ना भुक्ख अग्न बुझावे, साचा शब्द सुणावे कान। अनहद धुन सहिज धुन उपजावे, सृष्ट सबाई पुण छाण। लाल अनमुल्लड़ा साचा हीरा गुरमुखां पकड़ लयावे, निहकलंक नरायण नर मातलोक जोत धर, राजे राणे वड जरवाणे, बाहों पकड़ आप उठावे हरि निरंकारया। चारों कुन्ट मिलदा रहे

सर्ब संसारया। शब्द तीर इक्क चलाए, वज्जे साचा बाणया। तट्ट तीर्थ माण गंवाए, तख्तों लाहे राजे राणयां। साचा सीरथ किसे हथ्थ ना आए, कलिजुग जीव भुल्ले वड ज्ञानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी धारे भेख प्रगट होया विच जहानया। जोत सरूपी जामा पाए। शब्द कल्गी सीस टिकाए। नाम तोड़ा आप लगाए। चिट्टा घोड़ा पौण बणाए। उत्ते सोहणा आसण पाए। सोलां कलीआं जड़त जुड़ाए। सत्तां दीपां नौवां खण्डां चारों तरफ आप दुड़ाए। प्रभ पाए जा जा वंडां, सच विहारा आप कराए। बेमुखां देवण आया दंडां, वेले अन्त होए दुःखदाए। आत्म तोड़े सर्ब घमंडा, हँकार विकार सर्ब गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द कटारी हथ्थ उठाए। फड़े शब्द कटार तिक्खी धारे। चारों कुन्ट जाए वारो वारी, मारे डाहढी मारे। पूरन पुरख नर अवतार, रूप रंग अगम्म अपारे। साचे घोड़े हो अस्वार, फिरदा चार चुफेरे। आपे वेख काबल कंधार, सत्तर लक्ख करे ख़बरदारे। पूर्ब कर्म सर्ब रिहा विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होया विच संसारे। चले नाम तीर निशाना। आप उठाए वड बली बलवाना। साचा हुक्म आप सुणाए, मेट मिटाए जीव शैताना। चारों कुन्ट अग्न लगाए, आप बिठाए विच बबाना। वाहवा डाहढा भेड़ भिड़ाए, जगत विकारा होए धुंदूकार ज़िमी अस्मानां। पहली हरि जी छेड़ छिड़ाए, मक्का मदीना पहले ढाहुणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया बण के आया साचा कान्हा। साचा कान्हा कृष्न मुरार है। प्रगट होया जोत सरूपी जामा धारे, नर नरायण ल्या अवतारे, गुरमुख वेखण तीजे नैणे करे सच विहार है। इक्क दूजे दे छुट्टण साक सैणी, धीआं भैणां ना कोई करे प्यार है। गुर चरन प्रीती साची दित्ती, अन्तिम पावे साची सार है। जोत जगाए लहिणी देणी अन्तिम पावे साची सार है। निहकलंक नरायण नर जोत सरूपी ल्या मात अवतार है।

❇ ६ जेठ २०११ बिक्रमी मनी राम दे गृह पिण्ड सिद्धवां ज़िला अमृतसर ❇

प्रभ सुहाए थान, चरन छुहांयदा। प्रभ सुहाए थान, माण दवांयदा। सच्चा नाम जगत निशान वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग इक्क चढ़ांयदा। प्रभ सुहाए थान, अन्तिम अन्त साचा संग प्रभ अबिनाशी आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां पैज रखांयदा। साचा धाम आप सुहाया। प्रभ अबिनाशी जामा पाया। निरगुण सरगुण दोवें रंग कर हरि वखाया। ना कोई दिसे सति सरूप, भेव किसे ना पाया। एका जोत सति सरूपी, गुरमुख साचे विच समाया। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, भरम भुलेखे सर्ब भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी जामा पाया। जामा धारे

श्री भगवाने। करे खेल जगत महाने। शब्द चलाए तीर कमाने। चारों कुन्ट प्रभ अबिनाशी आपे करे वैराने। प्रगट होया घनकपुर वासी, जन भगतां होया दास दासी, आप चढ़ाए शब्द बबाणे। एका आत्म रक्खे वास, साची जोत जगाए महाने। सोहँ शब्द जपे स्वास स्वासे, गुरमुख साचे माण दवाने। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, अचरज खेल करे विच मात जहाने। निहकलंक कलि जामा धारे। जोत सरूपी जामा धारे। नर नरायण विच संसारे। गुरमुख विरले लाहा लैण, जिस देवे नाम अधारे। आपे बणे साक सज्जण सैण भाई भैण, आपे होए पहरेदारे। आप चुकाए लैण देण, गुरमुख साचे संत दुलारे। बेमुख जाण वहन्दे वहिण, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। गुरसिख साचा लाहा लैण, आए चल दुआरे। लक्ख चुरासी गेड़ कटायण, जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे नाम अधारे। देवे नाम निधान, साचा बख्शे चरन ध्यान है। मानस जन्म जाए संवार, प्रभ अबिनाशी वड दाता मेहरबान है। एका देवे शब्द सच्ची धार, आदि अन्त जुगा जुगन्त सच्चा निगाहबान है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आत्म साची जोत जगाए, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटान है। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। सन्झ सवेरा इक्क कराए। दीपक साचा इक्क जगाए। अट्ठे पहर डगमगाए। दिवस रैण करे रुशनाए। इक्का दिसे साची नाए। वेले अन्त आप चढ़ाए। गुरमुखा फड़ के बाहीं, दरगहि साची माण दवाए। जिथ्थे कोई जाए नाही, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम जोती मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, आवे जावे खेल रचावे, भेव कोई ना पाए। आपे आवे आपे जावे, जगत रहावे पूरन भगवन्ता। विरले गुरमुख भेव चुकाए साचे संतां। साचा नाम झोली पाए, मेल मिलावा साचा कन्ता। बेमुख बन्नृण झूठे दाअवे, मदिरा मास मुख लगाउणा, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आदि जुगादी बणाए साची बणता। आदि अन्त बणत बणाए। महिंमा अगणत गणी ना जाए। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ अबिनाशी चरनी लाए। आप कराए साची कारी, साची सेवा लाए। पंडत पढ़न विद्या कांशी, प्रभ अबिनाशी हथ्थ ना आए। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला चारों कुन्ट दिसण मदिरा मासी, हरि का नाम गए भुलाए। प्रगट होया घनकपुर वासी देवे सज़ाए। धर्म राए कर त्यार फ़ाँसी, लक्ख चुरासी तेरे दर बहाए। अन्तिम वेले कर कर हासी, बेमुख सारे गए भुलाए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचा नाम जपाए स्वास स्वासी, वेले अन्त लए छुडाए। वेला अन्त आप सुहावणा। गुरमुक्ख साचा संत जगावणा। जोत सरूपी दरस दिखावणा। जोती जोत सरूप हरि, हरि चरन प्रीती तोड़ निभावणा। उठ जीव जाग वक्त दुहेला। कलिजुग अन्तिम आ गया , प्रभ मिलण दा वेला। जन भगतां साचा वक्त सुहा लया, कलिजुग अन्धेरा छा गया, चारों कुन्ट होए वा वेला। निहकलंकी

३५८
०४

जामा पा गया, आपे इक्क इकेला। चारों कुन्ट शब्द डंक वजा लया, अपे बणे सज्जण सुहेला। राउ रंक सर्ब उठा गया, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। जोती जोत सरूप हरि, चार वरनां एका सरना सतिजुग साचा राह वखा गया। भगत वछल गिरधार सर्ब सुखदाई है। आपे बख्शे चरन प्यार, साची रीत चलाई है। दूजी दिसे शब्द धार, साचा राग सुणाई है। तीजे कर्म लए विचार, पूर्ब लहणा आप चुकाई है। चौथे शब्द घोड़े कर अस्वार, तिन्नां लोकां फेर फिराई है। पंजवें परम पुरख अपार, साची जोत मेल मिलाई है। छेवें खेल वेख करतार है। करे खेल रघुराई है। सतवें सत्तां दीपां पाए सार, जोत जगाई है। अठवें उठे शब्द लेख लिखार, डंक रिहा वजाई है। नावें नौ खण्ड पृथ्मी प्रभ अबिनाशी सोई आप जगाई है। दसवें दहि दिशा आत्म घर साचे दर जोत सरूपी डेरा लाई है। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समाई है। आपणा भाणा आपे जाणे ना कोई राजा राणे। आत्म होए अन्धे काणे। प्रभ अबिनाशी कवण पछाणे। अन्तिम वेले सारे सुत्ते बाहवां हेठ रक्ख सरहाणे। निहकलंक कलि जामा पाया, फड़ के बाहों बाहर सुट्टे, मातलोक रहण ना पाणे। धर्म राए दे अग्गे फड़ फड़ कुट्टे, देवे दुःख महाने। डूंघी कन्दर नर्क निवास सुट्टे, अग्नी अग्ग जलाने। बेमुखां जड़्ह आपे पुट्टे, जामा धार श्री भगवाने। कलिजुग अन्तिम चोग निखुट्टे, ना मिले किसे कोई दाणे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक

३५९
०४

नरायण नर, भेख धरे श्री भगवाने। बेमुख जगत अंध्यार है। एका वेखे रसना सुख, आत्म रहे हँकारी दुःख, अट्ठे पहर रहे बुख़ार है। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ अबिनाशी इक्क उपजाए साचा सुख, आत्म सर सरोवर नुहावे, करे भगत उधार है। उज्जल कराए जगत मुख, मानस जन्म ना आए हार है। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, प्रभ अबिनाशी जो जन रसना रिहा उचार है। प्रगट होवे घनकपुर वासी, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले निहकलंक कल्गीधर अवतार है। संत जनां हरि आसा पूर। आत्म देवे जोती नूर। दुरमति मैल प्रभ साचे धोई, शब्द देवे साची तूर, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त सदा सदा भरपूर। संत जनां धन कमाई है। साची सेवा प्रभ चरन कमाई है। देवे दरस वड देवी देवा, जोत सरूपी जामा पाई है। एका हरि अलख अभेवा, बेमुखां दिस ना आई है। सोहँ जोती मेल अमृत मेवा, काया ठंडी ठार रखाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन गाया रसना जिह्वा, लक्ख चुरासी गेड़ कटाई है। संत जनां हरि सद बलिहारे। एका देवे नाम अधारे। शब्द सरूपी वाजां मारे। सोहँ देवे सच्चा ताजा, नर हरि नरायण निरँकारे। आप संवारे आपणा काजा, गुरमुख साचा पार उतारे। प्रगट होए देस माझा, निहकलंक वड बली बलवान सच्ची सरकारे। शब्द उडाए सच्चा बाजा, चार कुन्ट कराए जै जै जैकारे।

आप रखाए तेरी लाजा, देवे दरस अगम्म अपारे। चारों कुन्ट कराए भाजा, शब्द खण्डा मारे भारे। लक्ख चुरासी जिस साजन साजा, सर्ब जीआं हरि पावे सारे। आपे मक्कण आपे हाजण, दूजा काअबा ना कोई विचारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धारे। संत जनां हरि साचा गाया। प्रभ अबिनाशी साचा पाया। हउमे ममता रोग गंवाया। कर्म विजोग ना रहे राया। सति संजोग प्रभ अबिनाशी संग निभाया। देवे दरस अमोघ, जोती दीपक आप जगाया। सोहँ शब्द चुगाए साची चोग, गुरमुख साचा हँस बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, एका आपणे रंग समाया। ना कोई पिता ना कोई माए। गुरमुखां करे हित्ता, साची बणत बणाए। आपे बणे साचा मिता, वेले अन्त होए सहाए। साचा माण दवाए अठारां ध्याए गीता, चरन प्रीती जो जन लाए। काया करे ठंडी सीता, आत्म धार हरि करतार आप रहाए। आपे परखे लक्ख चुरासी नीता, भगत जनां दी लाज रखाए। सतिजुग चलाए साची रीता, कलिजुग अन्तिम मेट मिटाए। चार वरन प्रभ एका कीआ, ऊँच नीच दा भेव मिटाए। साचा माण ताण सतिजुग साचे देणा, गुरमुख साचे संत जन उपाए। गुरमुख साचे अन्त काल कलि मानस जन्म मिल्या, दिवस रैण अट्ठे पहर प्रभ अबिनाशी रसना गाए। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी विच समाए। संत जनां हरि देवे नाम अनमोल। गुरमुख साचे संत जन, उतरन पूरे तोल। साचा देवे नाम धन, गुरमुख अन्त ना जाए डोल। साचा हरि दूई द्वैती देवे पड़दे खोल्ह। धर्म राए ना लाए डन्न, प्रभ अबिनासी वसे कोल। अन्तिम बेड़ा जाए बन्न, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां लोयण तीजा देवे खोल्ह। संत जनां हरि लोयण तीजा खोल्हे। जोत सरूपी किरपा कर, पड़दा लाहे रक्खया ओहले। साची देवे जोत धर, जगे जोत इक्क अमोले। आत्म नुहाए साचे सर, गुरमुख साचा कदे ना डोले। आप वखाए साचा घर, प्रभ अबिनाशी जिथ्थे बोले। रंग चढ़ाए अपर अपार, गुरमुख साचे काया चोले। जोत जगाए चरन लाग जाए तर, प्रभ दर आए होए गोले। चरन सरन जो जन आए, जोती जोत सरूप हरि, भेव अवल्लड़ा एका आपणा खोल्हे। संत जनां हरि देवे नाम निधाना। जिस जन आत्म जाए सीज, मिटे अन्धेर, प्रकाश कराए कोटन भाना। जन भगत कराए रीझ। जगत चलाए सच निशाना। जोती जोत सरूप हरि, साचा मेल मिलाए गुरमुख साचे संत जनां आदि अन्ता हरि भगवन्ता, गुणवन्ता गुण निधाना। संत जनां हरि कर प्यार। आत्म देवे साची धार। शब्द सरूपी इक्क धुन्कार। बिन रंग रूपी हरि करतार। वडा शाहो भूपी, दरस दिखाए अगम्म अपार। एका जोत सदा सति सरूपी, प्रगट होए काया मन्दिर साचे अन्दर डूंघी कन्दर हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। संत जनां हरि वसे पासे। मानस जन्म कराए रहिरासे।

साचा नाम हरि झोली पाए। शब्द चलाए स्वास स्वासे। साची डोली आप चढ़ाए। करे बन्द ख़लासे। तोरी जाए हौली हौली, निज घर आत्म कराए आप वासे। सच घर आत्म दर हरि देवे खोल्ह, आपे तोले पूरे तोल, गुरमुख साचे संत जनां काया माटी भाण्डे काचे। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत सर्ब घटां घट रक्खे वासे। हरिजन दोए एक है। जन भगतां करे बुध बबेक है। सोहँ शब्द दस्से साची एका टेक है। कलिजुग अग्न तन ना लाए सेक है। जोती जोत सरूप हरि, आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता, साधन संता साचा कन्ता, जीवां जन्तां बणाए बणता, आप मिटाए बिधना लिखी रेख है। धन कमाई भगत जन, हरि चरन प्यासा। धन कमाई भगत जन, रसन तजाए मदिरा मासा। धन कमाई संत जन, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासा। धन कमाई भगत जन, प्रभ मिलण दी रक्खे आसा। धन कमाई संत जन, निज घर आत्म नर नरायण रक्खे वासा। धन कमाई संत जन, दरसन पेखे तीजे नैण, मानस जन्म कराए रहिरासा। धन कमाई संत जन, जोती जोत सरूप हरि, आपे होए दासन दासा। धन कमाई भगत जन, हरि वेखण साचे थाउँ। धन कमाई भगत जन, हरि प्रभ अबिनाशी देवे ठंडी छाउँ। धन कमाई संत जन, दरगहि साची लग्गी एका नाउँ। धन कमाई भगत जन, लक्ख चुरासी फंद कटाओ। धन कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, किरपा करे अगम्म अथाहो। धन कमाई भगत जन, हरि रसन उचारे। धन्न कमाई भगत जन, साचा मेल मिले प्रभ अबिनाशी कन्त भतारे। धन कमाई संत जन, आप बहाए निहचल धाम अटल्ल अटल्ले, सच्चा दिसे इक्क महल्ल मुनारे। जिथ्थे वसे हरि इक्क इकल्ले, दूसर ना कोई पावे सारे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख तेरे आत्म दर, आपे वसे साचे घर, साची जोत करे उज्जयारे। साची जोत कर उज्जयार। गुरमुख साचा जाए तार। अज्ञान अन्धेर दए निवार। शब्द सरूप अवाज़ मार। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग रंगे करतार। आपणे रंग रंगे करतारा। साचा संग चले सच भतारा। प्रभ दर इक्क मंगे मंग, चरन प्यारा। शब्द घोड़े हरि तंग कसे, पंचम् जेठ होए अस्वारा। धरत मात वेख वेख हस्से, निहकलंक लए अवतारा। भगत जनां राह साचा दस्से, आओ चल दुआरा। बेमुखां शब्द तीर कसे। लग्गे खण्डा भारा। चारों कुन्ट फिरन नस्से, घर घर होवण ख्वारा। कलिजुग होए अन्धेर जिउँ चन्द मस्से, होए अन्ध अन्धयारा। निहकलंक नरायण नर, जामा धार लाहवण आया आत्म हँकारा। प्रभ अबिनाशी वढ्ढे नक्क गुत्ते, चिट्टे अस्व हो अस्वारा। प्रभ अबिनाशी बिरख उल्टे रक्खे, कोई ना पावे सारा। आप ल्याए साची रुत्ते, पंचम् जेठ निहकलंकी लै अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, चौथे जुग सभ दी जोती खिच्चे, आई तेरी वारा। चौथे जुग तेरी आई वारी। चारों कुन्ट करे ख्वारी। गुरमुखां राह सच दिसाए, जिथ्थे मिले हरि मुरारी।

जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होया विच संसारी। कलिजुग तेरा कर्म विचारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। मदिरा मासी जीव हँकारे। पढ़ पढ़ वेद थक्के कांशी, प्रभ अबिनाशी ना कोई विचारे। चारों कुन्ट घर घर फिरदे करन हासी, प्रभ अबिनाशी मनों विसारे। जोती जोत सरूप हरि, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार जामा धारे। कलिजुग तेरा काला वेस। घर घर फिरन लभ्भदे श्री दस्मेश। ना कोई होए सहाई, किसे ना चले पेश, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जामा धार चारों कुन्ट रिहा वेख। चारों कुन्ट हरि वखाए, भुल्ले फिरदे राजे राणे। बाहों पकड़ आप उठाए, करे दर निमाणे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख सचे संत जनां, आपे बणे वञ्झ मुहाणे। साचा खण्डा शब्द चलाया। इक्को डण्डा विच रखाया। विच वरभण्डां प्रभ सुहाए थांएँ पाए वंडां, साची वंड हरि कराया। घर घर दिसण नारां रंडां, कन्त सुहाग ना किसे हंढाया। साचा भेव किसे ना पाया। आप खड़काए चण्ड प्रचण्डा, प्रभ खेल अपर अपारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ जामा धार लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई तेरा भेख मिटाया। गुर चरन जो जन निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी पावे सारे। लक्ख चुरासी पार उतारे। जोती जोत सरूप हरि, थिर घर वासी आप बहाए सच चुबारे। गुर चरन सुख सहिज सुभाए। गुरमुख विरला प्रभ दर पाए। आत्म तृखा अग्न बुझाए। साची मंगे नाम भिक्खा, हउमे रोग दुःख सोग गंवाए। सच लेख प्रभ साचे लिखा, लिख्या लेख ना कोई मिटाए। आप गंवाए कलिजुग काया झूठी विक्खा, अमृत साचा जाम प्याए। सोहँ शब्द तीर ल्या तिक्खा, दूई द्वैती पड़दा लाहे। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां होए आप सहाए। गुर चरन गुरमुख साची धूढ़ी। प्रभ अबिनाशी आप बणाए साचे संत मूर्ख मुग्ध मूढ़ी। मेल मिलावा साचे कन्त, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ी। दरस दिखाए आदिन अन्त, जोती जोत सरूप हरि, बेमुख जीवां आपे पीड़े शब्द बूड़ी। गुर चरन हरि भरवासा। अन्तिम करे बन्द ख़लासा। निज घर साचे दर आप कराए वासा। आप नुहाए अमृत साचे सर, मिटे तृष्न प्यासा। एका देवे साचा वर, गेड़ कटाए लक्ख चुरासा। गुरमुख साचा जाए तर, रसन तजाए मदिरा मासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गाए स्वास स्वासा। चरन कँवल जगत वड्डयाईआ। गुरमुख आत्म जाए मवल, होए सर्ब रुशनाईआ। उलटा होए नाभ कँवल, अमृत बूंद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। गुर चरन आसा मनसा पूरे प्रभ अबिनाशी किरपा कर, शब्द देवे साची तूरे। साची जोत आत्म धर, एका देवे साचा नूरे। आप वखाए साचा घर, प्रगट होए हाज़र हज़ूरे। आप वसे सद अन्दर बाहर, बेमुख जानण दूरे। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी आत्म पाए साची रास। बेमुख जीवां दिस ना आए, गुरमुखां

हरि होया दास। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका जोत जगाए मात पताल अकाश। मात पताल अकाशया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास्सया। सृष्ट सबाई चबाए दाढ़, प्रगट होए लक्ख चुरासी करे नास्सया। आप तपाए अग्नी हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां होए दासन दास्सया। कलिजुग अग्न लग्गे तत्ती। कोई ना दिसे आत्म यती। झूठी होई सर्ब मती। एका नाता प्रभ अबिनाशी तेरे चरन नत्ती। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई वेख वखाणे, साचा नाम ना दिसे रत्ती। लक्ख चुरासी वेख वखाणे। गुरमुख साचे विच्चों लभ्भे बाल अञ्याणे। साचा देवे नाम निधाने। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला आपे आप स्याणे। कलिजुग तेरा वेला अन्त, निहकलंक श्री भगवन्त जोत जगाए। उठाए गुरमुख साचे संत, जोत सरूपी दरस दिखाए। मेल मिलावा साचे कन्त, जन भगतां हरि तरस कमाए। जगे जोत आदि अन्त, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाए। कलिजुग तेरा वक्त चुकाउणा। ईसा मूसा ख़ाक रलाउणा। चार यार संग मुहम्मद धरत मात दी गोद बहाउणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा राह वखाउणा। सतिजुग साचा करे विहारा। प्रभ अबिनाशी हरि गिरधारा। राउ रंक भेव न्यारा। राजा राणा करे ख्वारा। सुघड़ स्याणा हरि वरतारा। एका जाणे शब्द बाणा, चार वरनां कर प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, करे खेल अपर अपारा। चार वरनां एका धारे। राउ रंक इक्क दुआरे। आत्म जोती कर उज्जयारे। ज़ात पात हरि भरम निवारे। इक्क इकांत जोत सरूपी हरि निरँकारे। आत्म वेखो मार झात, अट्ठे पहर रहे उज्जयारे। जन भगतां मिटाए आत्म अन्धेरी रात, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे संत जनां आपे काज संवारे। सतिजुग तेरी नींह रखाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। अमृत मेघ हरि बरसाई। शब्द खण्डा हथ्थ उठाई। बेमुखां सिर जाए लाई। आपे पाउँदा जाए वंडां, भुल्ली सर्ब लोकाई। आपे तोड़े सर्ब घमंडां, भरम भुलेखे दूर कराई। कच्चे भन्ने कलिजुग अंडां, हथ्थ हथौड़ा शब्द रखाई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, बणे बणाए आप कसाई। आपणा भाणा हरि वरतावणा। कलिजुग तेरा लेख मिटावणा। सतिजुग साचे नेत्र पेख, प्रभ अबिनाशी दया कमावणा। अन्त मिटाए औलीए पीर शेख़, अन्त बगल कुरान ना किसे उठावणा। दूर दुराडा रिहा वेख, पहली कूटे फेरा पावणा। कलिजुग तेरी मिटदी जाए रेख, मक्का मदीना पहले ढाहवणा। गुरमुख साचे संत जनां नेत्र लैणा पेख, लाड़ी मौत पहला फेरा एथे पावणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गाह जगत गाहवणा। लाड़ी मौत उठ ललकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। धर्म राए दी सुण पुकार। लक्ख चुरासी

३६३
०४

कर ख्वार। गल विच पाउणी घर घर फाँसी, संगल पाई गल विच अपार। एका दर कर दासी, सिर चुकावा डाहडा भार। धर्म राए अग्गों करे हासी, खोल्हे बन्द कवाड़। सृष्ट सबाई अन्त विनासी, लग्गे अग्न पहली हाढ़। कलिजुग विरला दिसे रसन स्वासी, बेमुख जीवां झूठी धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, मगर लगाए मौत लाड़। लाड़ी मौत खुशी मनाउँदी। मातलोक आए चांईं चांईं गाउँदी। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला राजे राणयां फड़ उठाउँदी। दीन मुहम्मदी कर त्यार, दूजा फरंगी नाल रलाउँदी। इक चुकाए वडा भार, फड़ फड़ बाहों अग्गे डौहन्दी। शब्द वेलणे पीड़ पिड़ाउँदी। उत्ते पाए सोहणा चिट्टा लट्ठा, अन्तिम वेला आप सुहाउँदी। ताप चढ़ाए मट्ठा मट्ठा, आत्म विकार सर्ब रखाउँदी। लक्ख चुरासी कर इक्ट्ठा, अचरज खेल मात वरताउँदी। प्रभ अबिनाशी धुरदरगाही साचा माही विच मात दे आया नठ्ठा, धरत मात जा कुरलाउँदी। माण तुट्टा तीर्थ अठ्ठ सट्ठां, प्रभ दर जाए कन्न सुणाउँदी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धर, नेत्र पेख धार भेख, लक्ख चुरासी की कमाउँदी। लाड़ी मौत खिड़ खिड़ हस्से। बेमुख राह साचा दस्से। अन्तिम वेले लक्ख चुरासी मेरी आई हिस्से। बेमुख कलिजुग जीव जूठी झूठी चक्की पीसे। सतिजुग बन्न्हे हरि जी साची नींह, प्रगट होया हरि जगदीसे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप मिटाए मूसे ईसे। ईसा मूसा होए ख्वारी। मिटदी जाए चार यारी। कुरान अञ्जील दर पुकारी। मातलोक हाहाकारी। कलिजुग जीव होए हँकारी। आत्म होई दुष्ट दुराचारी। एका भुल्ले हरि निरँकारी। आत्म डुल्ले जीव गंवारी। लग्गी अग्ग काया कुले, कोई ना करे ठंडी ठारी। झूठे तोल कलिजुग जीव तुले, ना पाई साची सारी। अन्तिम कलिजुग कोई ना पैणा मुल्ले, प्रभ अबिनाशी आपे बणे लेख लिखारी। पाणी पैणा काया चुल्ले, अग्न जोत बुझे अन्धयारी। प्रभ अबिनाशी सद भण्डारे रहण खुल्हे। गुरमुख लाहा लैण आयण चल्ल द्वारी। जुग चौथे जीव झूठी माया रुल्ले, एका भुल्लया हरि गिरधारी। गुरमुख विरले पूरे तोल तुले, रसना गाए पुरख अपारी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धर, करे खेल अपर अपारी। आप मिटाए मुहम्मदी दीना। पहली कूटे वक्ख कीना। संग रलाए रूसा चीना। झूठी भन्ने हँकारी बीना। वखाए रंग नक्को फीना। काले सूसे पाटे सीना। ईसा मूसा होए अधीना। प्रगट होया वड दाता शाह प्रबीना। जोत सरूपी जामा धर, अचरज खेल विच मात निहकलंक कलि कीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे जाणे सर्ब जीआं दा दाना बीना। कुरान कुरलाए दए दुहाए। अन्तिम वेला कौण सहाए। झूठे धन्दे बेमुख लाए। प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। अन्तिम वेले भरया पूर, निहकलंक दए डुबाए। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, प्रभ अबिनाशी दे मति समझाए। गुरमुख

विरला आत्म रंग चढ़ाए गूढ़, हरि सरनाई आए। मस्तक लाए चरन धूढ़, धर्म राए दी जेल कटाए। धर्म राए ना पाए जूड़, बन्द खलासी आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर मातलोक जामा धार खेल रचाए। अन्तिम वेले आई हानी। ना कोई जाणे अञ्जील कुरानी। निहकलंक चिल्ले चढ़ी शब्द कानी। सृष्ट सबाई दिसे फानी। प्रगटी जोत हरि भगवानी। एका नूर सच नुरानी। शब्द तूर दो जहानी। सर्ब गुणां भरपूर, जन भगतां देवे नाम निशानी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जामा धर, वेख वखाणे वेद पुरानी। वेद पुरान वेख वखाणे। खाणी बाणी आप पछाणे। अंजील कुरान तुटा माणे। अन्तिम कलिजुग आई हाणे। इक्क दूजे ना दिसे संग, कलिजुग डुब्बा बेमुहाणे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, गुरमुखां पार कराने। आपणी सेवा लाए, जन भगत बाल अञ्याणे। कुरान अञ्जील नाता तुट्टा। शब्द तीर साचा छुट्टा। दोहां धिरां विच पै जाए फुटा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, आपणी खेल कलि चलाए, कोए ना जाणे जीव गंवार, लक्ख चुरासी कोटन कोटा। चार यार करन पुकार। संग मुहम्मद तुट्टा प्यार। वेले अन्तिम आई हार। कलिजुग दिसे वहिंदी धार। रुढ़दे दिसण नर नार। बिरध बाल जवानां, ना कोई पावे सार। घर घर दिसण जीव शैताना, आत्म भरया

३६५ ०४ वड हँकार। बीज बीज्जया बेईमाना, फल ना लग्गा डार। देवे ना कोई माणा, आत्म रहे इक्क बुख़ार। प्रभ अबिनाशी ३६५ ०४

पुण छाणा, शब्द मारया तीर बाणा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा धर, नरायण नर अग्नी जोत हरि देवे साड़। चार यारी अन्त कुरलाई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। पहली कूट पए दुहाई। झूठा नाता पुत्तर धी जवाई। मात पिता सुध ना आवे किसे भैण भाई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जामा धर, शब्द तीर रिहा चलाई। शब्द तीर आप चलाए। कलिजुग वहीर आप कराए। अमृत सीर किसे हथ्थ ना आए। कलिजुग तेरे लथ्थे चीर, पड़दा अन्त ना पाए। लक्ख चुरासी तूं इक्क इकल्लड़ा, ना कोई धीर धराए। आत्म लग्गी पीड़, ना रोग कोई गंवाए। कलिजुग अन्तिम आई भीड़, प्रगट हो ना कोई छुडाए। तुट्टी हड्डी तेरी रीड़, पापां भार ना कोई उठाए। प्रभ अबिनाशी बन्नॄण आया बीड़, कलिजुग तेरी रेख मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, आपणे भाणे सद समाए। बगल कुरान हथ्थ मुसल्ला। इक्क मुहम्मद फिरे इकल्ला। वक्ख होया नूरी अल्ला। मातलोक होया झल्ला। कोई ना दिसे सच्चा महल्ला। मक्के मदीने परछावां ढल्ला। जोती जोत सरूप हरि, जामा मात धर, आपणे भाणे आप समाए अचल अचल्ला, एका चढ़ाए शब्द चिल्ला। चिल्ला चढ़े शब्द कमान। छड्डे तीर हरि भगवान। दीन मुहम्मदी

जाए चीर, आप मिटाए बेईमान शैतान। मिटदे जाण औलीए पीर गौंस दस्तगीर शेख़ान। अन्तिम वेले आई हार, प्रभ अबिनाशी करे ख्वार, ना कोई पावे अन्तिम सार, ना कोई मन्ने अमाम दीन। जोती जोत सरूप हरि, प्रभ अबिनाशी लोकमात हरि जोत धर, एका एक मनाए ईन। गुर संगत धन कमाईआ। हरि दर्शन करन आईआ। देवे हरि सच्ची वड्डुयाईआ। भिन्नड़ी रैण खुशी मनाईआ। बण बण साचे साक सज्जण, दर घर साचे मंगलाचार रसना गाईआ। अमृत पी पी आत्म रज्जण, तृष्ना अग्न बुझाईआ। प्रभ अबिनाशी आया पड़दे कज्जण, जन आया चल सरनाईआ। कलिजुग जीव भाण्डे अन्तिम भज्जण, ना होए कोई सहाईआ। ना कोई मात पित भाई भैण सजण, मात पित हरि रघुराईआ। साचे ताल दोवीं हथ्थीं वज्जण, गुर संगत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, भिन्नड़ी रैण तेरा अन्तिम अन्त साचा वक्त सुहाईआ। गुर संगत प्रभ भए अनन्दा। आत्म देवे परमानंदा। साचा सुख उपजाए निज घर वासी निजानंदा। आत्म सहिंसा रोग गंवाए, वड दाता गुणी गहिंदा। वड दाता साचा हरि, सुरपति राजे इन्दा। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, शब्द जाम सच पिलंदा। गुर संगत साचा बन्न्हया बेड़ा। आत्म वसे साचा नगर खेड़ा। पंजां चोरां चुक्के झेड़ा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, आत्म जोती देवे धर, साचा समां सुहाए दया कमाए करे हक्क नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग अन्तिम मिटाउँण आया झूठा झेड़ा। गुर संगत सहिज सुखदाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साची जोत हरि प्रगटाईआ। साचा देवे नाम वर, नर नरायण रसना सद ध्याईआ। आप खुल्हाए आत्म दर, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आप नुहाए साचे सर, अमृत धार वहाईआ। जो जन आए सरनी पढ़, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आप बहाए साचे घर, जगे जोत अलाहीआ। अन्तिम वेले प्रभ अबिनाशी लए बाहों फड़, धर्म राए ना दए सजाईआ। शब्द घोड़े जाणा चढ़, सचखण्ड निवास रखाईआ। गुरमुखां वाग लए फड़, भज्जा जाए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जोत धर, कलिजुग तेरी मेटण आया झूठी शाहीआ। झूठा शाह झूठा सुल्ताना। एका भुल्लया हरि भगवाना। झूठे दिसण महल मुनारे झूठा जगत शहाना। झूठे दिसण कलिजुग जीव प्रभ अबिनाशी ना रसना गाना। जोती जोत सरूप हरि, वसे काया मन्दिर अट्ठे पहर जोत महाना। उचे टिल्ले फड़ फड़ लाहे गोरख ते मच्छन्दर, एका बख्शे चरन ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धर, प्रगट होए श्री भगवाना। श्री भगवान सहिज सुख धारे। तिन्नां लोकां रखा ल्या साचा शब्द खुल्हारे। चौदां हट्टां पाए सारे। तीर्थ तट्टां सच वखारे। आत्म सरोवर साची धारे। प्रभ अबिनाशी वसे घट घटां, बाहर भुल्ले फिरन गंवारे। बेमुख जीवां कलि

३६६
०४

खेल जिउँ बाज़ीगर नटा, ना जानण खेल भतारे। शब्द सरूपी आपे मेटे दूई द्वैती फट्टां, सोहँ पट्टी बन्ने अपारे। दूई द्वैती मैल देवे कट, जो जन रसना उचारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, गुरमुख साचे संत जनां, हरि चुक्कण आया भारे। गुरमुखां बेड़ा बन्ने। होए सहाई जिउँ माल चराए धन्ने। बेमुखां मारे साची मार, ना कोई जाणे साचा राग ना कोई सुणे कन्ने। प्रभ अबिनाशी कलिजुग दाग धो वखाणा, अमृत प्याए काया छन्ने। शब्द घोड़े वाग फड़ाए, अन्तिम वेले होए सहाए, धर्म राए मूल ना डन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा बन्ने। बेड़ा बन्ने हरि गोबिन्दा। आप मिटाए सगली चिन्दा। बेमुख करदे फिरन निन्दा। कोए ना तोड़े आत्म जिंदा। निहकलंक नरायण नर, जन भगतां सद सद बख्शिंदा। सदा सदा हरि बख्शण जोग। गुरमुख साचे संत जनां देवे दरस अमोघ। साचा देवे नाम दान, कटे हउमे रोग। साचा संग निभाए तिन्नां मिटे विजोग। गुरमुख साचे संत जनां, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच शब्द चुगाए चोग। साची चोग चुगांयदा। जन भगतां दया कमांयदा। कलिजुग माया परे हटांयदा। साची छाया आप रखांयदा। शब्द नईआ आप चढ़ांयदा। आपणी बहीआ आप फड़ांयदा। धर्म राए ना मंगे लेखा, झूठी वहीआ ना कोई वखांयदा। एका नौका नाम चढ़ईआ, बेड़ा पार करांयदा। सतिजुग साचा माण दवईआ, सोहँ गीत सुणांयदा। चार वरन कराए भैणां भईआ, ऊँच नीच भेव चुकांयदा। सच सरकार इक्क बणईआ, साचा हुक्म सुणांयदा। गुरमुख साचे संत जनां मिले साचा मीता, साची जोत जगांयदा। जोत सरूपी जोत जगईआ, राम रहीम कान्हा घनईआ, एका रंग रंगांयदा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, कलिजुग अन्तिम अन्त करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां एका साचा मार्ग आप वखांयदा। साचा मार्ग एक चलाए। एका दूआ भउ चुकाए। आप आपणी दया कमाए। आपे रक्खे हरि सरनाए। हरि जी दिसे सभनीं थाएँ। चार वरन एका सरना नात निभाए। आप चुकाए मरन डरन, गुरमुखां खोले हरन फरन, जो जन सरनाई आए। गुरमुखां मिले तरनी तरन, द्वार दसवें बूझ बुझाए। प्रभ अबिनाशी धरनी धरन दर साचे डेरा लाए। गुरमुख साचे आपणी करनी भरन। अमृत मेवा फल खवाए। बेमुख भाणा सिर ते जरन, धर्म राए दे सजाए। धन्न धन्न जणेंदी माए जो प्रभ दर आए सरन, वेले अन्तिम होए सहाए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां दया कमाए। मनी राम मन साचा मानया। प्रभ अबिनाशी साचा जाणया। प्रगट होए दरस दिखाए, नर हरि हरि भगवानया। जन्म मरन हरि निवारे, वाली दो जहानया। आत्म अन्धेर अन्ध गंवाए, गुणवन्त गुण निधानया। सन्झ सवेर इक्क कराए, जगे जोत वड महानया। विच्चों मेर तेर गंवाए,

शब्द मारे सच्चा बाणया। चरन प्रीती तोड़ निभाए, देवे दरस हरि भगवानया। शब्द घोड़े हरि चढ़ाए, कर कर वड मेहरबानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा देवे आत्म धन, साचा शब्द सुणाए कन्न, आत्म बेड़ा देवे बन्न, प्रभ आपणे कंध उठानया। आपणे कंध आप उठाए। दूई द्वैती पड़दा लाहे। एका शब्द शरअ शरायती, हरि आप सुणाए। दूजी ना कोई होर हदायती, मदिरा मास रसन तजाए। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट हो साचे घर, आप खुल्हाए बन्द कवाड़, साची जोत करे रुशनाए। बन्द कवाड़ आपे खोल्हे। गुरमुख तेरी आत्म बोले। आपे वसे काया चोले। साचा राह एका दिसे, कलिजुग अन्त ना डोले। करे प्रकाश कोट रवि सस्से, जगे जोत इक्क अमोले। गुरमुख साचा प्रभ दर हस्से, आप मिटाए पड़दे ओहले। बेमुख दर तों जायण नस्से। लग्गी अग्ग काया चोले। माया नागनी ना डस्से, गुरमुखां सद वसे कोले। गुरमुखां सज्जण सुहेला आदिन अन्ता करे साचे मेले। माण दवाए साचे संता। वड दाता गुणी गहिंदा, देवे वड्याई हरि भगवन्ता, गुरसिख ना रहे अकेला। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। अचरज खेल करे खिलाड़ी। गुर संगत लाए सच्ची फुलवाड़ी। सति सरूप करे वाड़ी। रक्खे लाज अन्तिम वेले, चरन छुहाई दाढ़ी। जोती जोत सरूप हरि, आपे फिरे पिछे अगाड़ी। जन भगतां माण दवांयदा। साचा धाम इक्क वखांयदा। जोती राम इक्क जगांयदा। साचा गोती आप बणांयदा। दुरमति मैल गई धोती, प्रभ सरनाई आंयदा। आप उठाए आत्म सोती, हरि साची दया कमांयदा। इक्को जगे आत्म जोती, अट्ठे पहर डगमगांयदा। सृष्ट सबाई रही रोती, प्रभ अबिनाशी हथ्थ ना आंयदा। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, गुरमुख साचे संत जनां, साचा माण दवांयदा। देवे माण सच्ची वड्याई। साची सेवा हरि कमाई। आत्म दर हरि खुल्हाई। मिल्या वर हरि सरनाई। गया तर दरस कर, जोत सरूपी नरायण नर, एका प्रीत चरन लाई। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात जामा धर, आपे कटे जम की फाही। गुरमति गुर दरबार है। बणी रहे सदा भिखार है। प्रभ अबिनाशी साचा देवे जन भगतां कर प्यार है। गुरमुख साचा प्रभ दर लेवे, करे चरन प्यार है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, ऊँच नीच एका जोत अकार है। गुरमति गुणां गुणवन्त है। गुरमति मेल मिलाए साचे कन्त है। गुरमति गुर पूरा देवे गुरमुख साचे संत है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धर, प्रगट होवे जुगा जुगन्त है। गुरमति हरि चरन दुलारी है। गुरमति गुरमुख साचे आत्म करी प्यारी है। साचा देवे धीरज यति, ना होए हँकारी है। आत्म दिसे एका नत्त, चरन प्रीती भारी है। साचा बीज बीजे आत्म साचे वत्त, खिड़े सच्ची गुलज़ारी है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर,

३६९
०४

प्रगट होए हरि बनवारी है। गुरमति गुणी गहीर है। गुरमुखां करे ठंडा सरीर है। विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़ है। दूई द्वैती पर्दा लाहे, करे लीरो लीर है। साचा दर कदे ना छड्डे, अमृत पीवे ठंडा सीर है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे धीर है। गुरमति साची राणी है। गुरमुखां मात पछाणी है। हिरदे सच वखाणी है। साची देवे मत, धीरज धीर रखानी है। एका रक्खे गुरमुख पति, करे ब्रह्म ज्ञानी है। इक्क दिसाए प्रभ अबिनाशी चरन नत, सच्ची जगत निशानी है। साचा लाहा लए खट्ट, एका लिव हरी हरि लगानी है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगानी है। गुर संगत गुर का रंग है। जन भगतां देवे साचा संग है। सदा सदा कटे भुक्ख नंग है। मानस जन्म ना होए भंग है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द घोड़े कस्सया तंग है। शब्द घोड़े हरि अस्वार। नरायण नर हरि अवतार। जन भगतां करे मेल सच दरबार। साची जोत जगाए बिन बाती बिन तेल, करे सच्चा उज्जयार। आप बणे साक सज्जण सुहेल, प्रभ अबिनाशी सच भतार है। गुरमुक्खां मेल मिलाए अन्तिम वेले कर विचार। लक्ख चुरासी शब्द वेलने देवे पीड़, होई दुहागण कुलखणी नार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां पावे सार। गुणवन्त वड वड वडानी है। गुरमुख विरला जाणे ब्रह्म ज्ञानी है। जिस जन आत्म लग्गी साची कानी है। गुरमति साची वडी मत, विच मात वडी दानी है। प्रभ अबिनाशी चरन बणाए साचा नत्त, मेल मिलाए साचा बानी है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे सच निशानी है। गुरमति भगत वणजारी। अट्ठे पहर वेखे परखे, बणे सच्ची सुन्यारी। आप चढ़ाए साचे चरखे, तन्द खिच्चे वारो वारी। अमृत मेघ साचा बरखे देवे शब्द भारी। अन्तिम वेले हरि जी परखे, गुरमति सोभावन्ती नारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां कराए मेल चरन द्वारी। गुरमति सच विहार है। एका मिल्या सच भतार है। दस्से राह जगत अपार है। आत्म वसे हस्से रसे, जगाए जोत अगम्म अपार है। दूई द्वैती कोलों नस्से, जोत सरूपी करे जोत उज्जयार है। शब्द बाण एका कसे, पंजे मारे दुष्ट दुराचार है। गुरमुखां सद हिरदे वसे, लाए रंग अपार है। माया राणी पैरां हेठ झस्से, उत्ते पाए डाहढा भार है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्से शब्द साची धार है। गुरमति जगत अनमोल है। देवे नाम शब्द अतोल है। सदा रहे जगत अडोल है। आत्म पड़दे देवे खोल्ह है। साचा शब्द कन्न सुणाए, अट्ठे पहर वजाए ढोल है। आत्म झूठा जन कढाए, दिवस रैण अट्ठे पहर करे कलौल है। भाण्डा भउ भरम भन्न वखाए, आत्म काया जाए मौल है। गुरमुखां बेड़ा बन्न वखाए, बेमुख मिटाए फड़ फड़ धौण है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका काया

चोली मात रंगौण है। गुरमति चरन ध्यान। प्रभ अबिनाशी कर पछाण। सृष्ट सबाई अन्तिम विनासी, कलिजुग जीव फेर पछताण। आप मिटाए मदिरा मासी, निहकलंक बली बलवान। धर्म राए दर टंगी फाँसी, फड़ फड़ बाहों दे लटकाण। गुरमुखां होई गुरमति चरन दासी, प्रभ अबिनाशी साचा देवे दान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे भेख श्री भगवान। गुरमति साची नईआ है। चार वरन कराए भैणां भईआ है। एका राह सच वखईआ है। साचे मार्ग आप लवईआ है। दरगहि साची साचे नाउँ आपे आप लगईआ है। मिले मेल अगम्म अथाह, आपे बणे साचा सईआ है। जोत सरूपी बेपरवाह, शब्द सरूपी चलाए साची नईआ है। होए सहाई सभनी थां, आपे भैण आपे भईआ है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे लेख लिखईआ है। दुरमति दुष्ट दुराचार है। बेमुखां संग करे प्यार है। अन्तिम भन्ने कलिजुग जीव भाण्डे काचे, ना होए कोई सहार है। चारों कुन्ट बेमुख नाचे, प्रभ अबिनाशी देवे दुरकार है। गुरमुखां हरि ढाले साचे ढांचे, शब्द कुठाली गाल है। सर्ब जीआं हरि हिरदे वाचे, रिहा सुरत संभाल है। गुरमुख विरला साचो साचे, जिस मिल्या नाम धन्न सच माल है। जोत सरूपी हरि आप आपे, ना होए कदे कंगाल है। सर्ब जीआं हरि हिरदे वाचे, रिहा सुरत संभाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणे आप रखवाल है। जन भगतां करे रखवाली। बण जाए साचा पाली। साची दस्से धार सुखाली। ना मंगे कोई दलाली। सच दात हरि झोली पाए, गुरमुख ना जाए कोई खाली। साची डोली हरि आप चढ़ाए, शब्द सरूपी हरि गोपाली। साची गोली आप बणाए, गुरमुख साचे हरि बनवाली। पूरे तोल तोली जाए, सोहँ कंडा मात लगा ली। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आप रखवाली। होए रखवाल सभनी थाँईं। गुरमुख माणे ठंडी छाईं। आप वखाए साचा धाम, वसे राम, पूरन काम, प्याए जाम, रंगण नाम रंगाई। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां बेड़ा पार कराई। बेड़ा बन्न्हे बन्न्हणहारा। आपे लाए पार किनारा। खिच्ची जाए वारो वारा। गुरमुख आयण चल दुआरा, एका साचे धाम वसाए, निहचल धाम अटल्ल मुनारा। एका जोती जगाए, जगे जोत अगम्म अपारा। आपणा गोती आप बणाए, जोत सरूपी हरि निरँकारा। दुरमति मैल धो वखाए, शब्द लगाए साबण भारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्तिम होए सहारा। होए सहाई हरि गोबिन्दा। आप मिटाए सगली चिन्दा। गुरमुख उपजाए साची बिन्दा। साचा माण हरि दर घर साचे देवे, वड दाता गुणी गहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, वड दाता सूर वड मृगिन्दा। सूरबीर मृगिन्द गुणी गहिंद। चरन लगाए सुरपति राजा इन्द। मेट मिटाए बेमुख निन्द। पकड़ उठाए वाली हिन्द। प्रभ अबिनाशी

सद बख्शिंद। एका राह वखाए गुरमुख उपजाए साची बिन्द। निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, आपणी रचना आप रचाए। जगत रचना आप रचाए। लक्ख चुरासी जीव उपाए। जोत सरूपी कार कमाए। शब्द सरूपी धार बंनाए। पवण सरूपी स्वास चलाए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा वक्त आण सुहाए। साचा वक्त हरि सुहांयदा। अमृत आत्म धार आप चलांयदा। गुरमुखां कर प्यार, अमृत बूंद मुख चवांयदा। काया करे ठंडी ठार, तृष्ना अग्न आप बुझांयदा। कँवल करे उज्जयार, शब्द सरूपी हरि उल्टांयदा। झिरना झिरे अपर अपार, बूंद सुहञ्जणी आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां, हरि उज्जल मुख आप करांयदा। अमृत आत्म रस है। प्रभ अबिनाशी सतिगुर साचा होवे सदा वस है। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, गुरमुख साचा रसना लाए, जगत अन्धेरा सर्ब मिट जाए, धर्म राए ना देवे फ़ास है। जन भगतां साची दया कमाए, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले मेट मिटाए मदिरा मास है। अमृत आत्म देवे धीरा। विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़ा। साचा सोमा एका फुट्टे, वगे साचा नीरा। गुरमुख पीवे पहली घुट्टे, बन्ने साचा बीड़ा। साचा लाहा प्रभ दर लए खट्टे, कलिजुग अन्त आए अख़ीरा। ठग्गां चोरां फड़ फड़ कुट्टे, तन ना रहे कोई लीड़ा। सतिजुग पौह साची
३७१ फुट्टे, सतिगुर बन्नृण आया साचा बीड़ा। रसना तीर कमानों छुट्टे, कलिजुग कोई ना जाणे झूठा जीअड़ा। बेमुखां जड़ ३७१
०४ आपे पुट्टे, गुरमुखां बन्नृण आया बीड़ा। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, एका जोत सर्ब समाए, क्या हस्त ०४
क्या कीड़ा। हस्त कीड़ एका हरि जाण। एका जोत श्री भगवान। लक्ख चुरासी जीआ जन्तां, रंग चढ़ाए हरि महान। जन भगतां होए दासन दास, वाली दो जहान। मेट मिटाए मदिरा मासी, कलिजुग अन्तिम कर पछाण। प्रगट होए घनक पुर वासी, साची खोल्हे इक्क दुकान। चार वरनां हरि बलि बलि जासी, जोत जगाई निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धर, आत्म वज्जे सच्चे बाण। हरिभगत हरि भण्डार है। देवणहार इक्क करतार है। अतोट अतुट्ट विच संसार है। ना जाणे कलिजुग जीव, प्रभ अबिनाशी किरपा धार है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलि बेड़ा करे पार है। बेड़ा करे पार, हरि गिरधारया। अन्तिम पाए सार, पूर्ब कर्म विचारया। साची बन्ने धार विच संसारया। बख्शे चरन प्यार, एका टेक हरि निरंकारया। देवे शब्द अधार, सोहँ अपर अपारया। आत्म होए उज्जयार, दीपक जोत इक्क जगा रिहा। मिटे अन्ध अंध्यार, साची बाणी नाम उचारया। जोती जोत सरूप हरि, चल आए जन भगत द्वारया। भगत जनां हरि पावे सारे। जोत सरूपी जामा धारे। किरपा करे हरि गिरधारे। देवे माण विच संसारे। प्रगट होए कृष्न

कान्हा खड़ा रहे दर दुआरे। मिले नाम देवे हरि किरपा कर, आए साचे दर, आत्म खुल्हाए अमृत साचा सर, करे खेल अपर अपारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे पावे सारे, गुरमुख साचे कर ध्यान। प्रभ अबिनाशी देवे सच्चा माण। मानस जन्म करे रहिरासी, आप मिटाए जम की कान। आप बणाए चरन दासी, साची दरगहि देवे माण। अन्तिम करे बन्द ख़लासी, गेड़ कटान। साची जोत मात प्रकाशी, कलिजुग मिटे अन्ध अंध्यान। सतिजुग साचे बलि बलि जासी, देवे वर हरि भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप मिटाए कलिजुग जीव बेईमान। बेईमान वड शैताना। कलिजुग अन्तिम वक्त वखाना। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ शब्द चार वरन हरि इक्क समाना। दुरमति मैल धोत वखाना। साचा देवे शब्द बबाणा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे किरपा कर, इक्क वखाए सच टिकाणा। आत्म साची जोत जगाई। किरपा कर हरि गिरधार, अट्ठे पहर रहे रुशनाई। आत्म होए जीव उज्जयार, जोती जोत सरूप हरि, दर घर आए होए सहाई। आप कराए साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। आप कराए आपणा मेला। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप सुहाए अन्तिम वेला। अन्तिम वेले होए सहाई। देवे दरस हरि रघुराई। मिटाए हरस कर दरस, पूरन बूझ बुझाई। अमृत मेघ रिहा बरस, आत्म तृखा अग्न बुझाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां देवे आप वड्याई। नाम वडा वड भण्डार। देवणहार हरि निरँकार। गुरमुखां पाए आत्म सार। बेमुखां देवे दर दुरकार। मदिरा मासी जीव गंवार। हरिजन साचे उदरे पार, जो जन होए स्वास स्वासी, आत्म चले सच्ची धुन्कार। मानस जन्म करे रहिरासी, खोल्हे बन्द कवाड़। सृष्ट सबाई अन्त विनासी, प्रगट जोत हरि आप जपाए आपणी धार। एका पुरख हरि अबिनाशी, आदि अन्त एका जोत एका कार। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपार। करे खेल अन्तिम वारी। कलिजुग झूठी बाजी हारी। चढ़ के आया साचे ताजी, चिट्टे अस्व हरि अस्वारी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, हरि का खेल अपर अपारी। हरि का रूप अगम्म, अलख अभेव है। हरि का रूप अगम्म, वड देवी देव है। हरि का रूप अगम्म, गुरमुख विरला जाणे, जिस आप लगाए आपणी सेव है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जोत धर, गुरमुखां देवे सच्चा नाम धन, जपाए रसन स्वास स्वास है। हरि का रूप अगम्म, गुरमुख जाणया। हरि का रूप अगम्म, चले चलाए आपणे भाणयां। हरि का रूप अगम्म, दिस ना आए राजे राणयां। हरि का रूप अगम्म, ना कोई परखे ना कोई वेखे, बण बण बैठे वड वड सुघड़ स्याणयां। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, जिस सिर हथ्थ रक्खे भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे साचा दानया। देवे दान भगत भगवान। कलिजुग झुल्ले

गुरमुख साचे एका सच निशान। बेमुख जीव माया रुले, भुल्लया नाम निधान। लग्गी अग्ग काया कुले, चारों कुन्ट होए बेमुख जीव सुंञ मसाण। अमृत आत्म सभ दे डुल्ले, मिटदा जाए सर्ब निशान। मदिरा मासी भुल्ले, प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवान। पाणी पैणा काया चुल्ले, बेमुख जीव फेर पछतान। जन भगतां हरि देवे भण्डारे खुल्हे, अट्ठे पहर आवण जाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे भेख श्री भगवान। धरया भेख अगम्म रूप अपार है। पूर कराए काम, लोकमात हरि जामा धार है। कलिजुग जीवां अन्तिम मेटे भरम, शब्द खण्डा फेरे दो धार है। लक्ख चुरासी लाहे चम्म, अन्तिम आपणा आप गई हार है। ना मिले साचा दाम, विसरया करतार है। बेमुख अन्तिम रोवण नीर वहावण छम्म छम्म, धर्म राए ना सुणे पुकार है। जोती अग्नी लए थम्म, काया करे ना ठंडी ठार है। निज्झ मावां घर पए जम्म, ना मिल्या नाम मुरार है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जोत धर, जन भगतां पाउँदा सार है। जन भगतां होए सहारा। देवे नाम अपर अपारा। पूर कराए काम, होए अन्त सहारा। पल्ले बन्न्हे साचा दाम, साचा नाम हरि गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचा करे वणज वपारा। साचा वणज कर वपारे। गुरमुख साचा सच दुआरे। कलिजुग भुल्ले जीव गंवारे। आत्म होई अन्ध अंध्यारे। घर घर रोवण नार, किसे ना दिसे कन्त भतारे। चारों कुन्ट अन्धेर दिसे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। गुरमुखां हरि आया हिस्से, आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक जोत धर, जन भगतां पूर्ब कर्म रिहा विचारे। पूर्ब कर्म विचारे, सर्ब कुछ जाणदा। आत्म सेजा पैर पसारे, अचरज खेल श्री भगवान दा। बेमुखां दिसे ना कोई किनारे, भुल्ले दर हरि निगाहबान दा। गुरमुख विरला पावे सारे, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, माया जाल सृष्ट सबाई उत्ते ताणदा। माया रूपी तणया ताणा। विच फसाया राजा राणा। आत्म अन्धा पापी गन्दा, जूठा झूठा वज्जा जिंदा, हरि ना गाया बत्ती दन्दा, मदिरा मासी झूठा बन्दा, भुल्लया हरि भगवाना। आत्म होई दूई द्वैती कंधा, ना दिसे सच टिकाणा। ना कोई सुणाए साचा छन्दा, भुल्लया हरि भगवाना। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लोकमात जोत धर, नाल ल्याया सोहँ शब्द दूई द्वैती मेट मिटाना। दूई द्वैती आपे कटे। गुरमुख विरला साचा रस रसना चट्टे। प्रभ जोत करे उज्जयारे, प्रभ अबिनाशी काया झूठे मट्टे। सोहँ शब्द तन छुहाए, सोहँ शब्द साचा पट्टे। गुरमुख साचा आदि अन्त हंढाए, ना चोग अन्त जगत निखुट्टे। अन्तिम वेले होए सहाए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां चढ़ाए साचा फट्टे। बेमुखां हरि दए हुलारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। चारों कुन्ट हाहाकारा। किसे ना दिसे कोई किनारा।

३७४ ०४

प्रगट होवे निहकलंक नरायण नर अवतारा। जोत सरूपी जामा पाया, शब्द खण्डा हथ्थ दो धारा। राजा राणा सर्ब उठाया, ना कोई जाणे जीव गंवारा। आपणा भाणा आप आपणे हथ्थ रखाया, प्रभ अबिनाशी सच भतारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अचरज खेल आप रचाया। अचरज खेल किया करते। वरते कहर उप्पर धरते। बेमुख जीव लड़ लड़ मरते। गुरमुख विरले आयण दर ते। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच इशनान कराए गुरमुख साचे संत जनां, आत्म साचे सर ते। बेमुखां बद्धा कलिजुग झेड़ा। प्रभ अबिनाशी एका देवे उलटा गेड़ा। धरत मात तेरा खुल्ला कराए वेहड़ा। शब्द सरूपी खेल रचाया चारों तरफ छेड़े छेड़ा। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाया, जन भगतां बन्ने बेड़ा। हरि का नाउँ जिस रसन ध्याया, वसदा रहे काया नगर खेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सृष्ट सबाई लाए इक्क उखेड़ा। इक्क उखेड़ा जाए लग। तत्ती वा जाए वग। बेमुख जीव जायण दग। कलिजुग वेला अन्तिम होया, बणे हँस कग। साचा हल किसे ना जोया, रसना ना जपया वड दाता सूरा सरबग। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, बेमुख कलिजुग जीवां अन्तिम पकड़े शाह रग। आपे पकड़े पकड़ उठाए। अग्न लगाए बहत्तर नाड़े। अग्न जोत हरि दए साड़े। करे खेल पहली हाढ़े। बेमुखां दिन आए माढ़े। फिरन भौंदे विच उजाड़े। चारों तरफ फिर फिर थक्के, मूंह दे भार सुट्टे, उत्ते पावे भारे। बेमुखां मुख पैण थुक्के, प्रभ का भाणा ना कोई विचारे। आपे परखे चंगे माढ़े, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए एका साची धाड़े। उठे धाड़ वड हँकार, चारों कुन्ट होए ख्वार, ना कोई सके सुरत संभाल है। सृष्ट सबाई होए दो फाड़, खाण आया जम काल है। बेमुख जीवां देवे झाड़, फल दिसे ना किसे डाल है। जोत अग्न विच देवे साड़, ना होए कोई रखवाल है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, आपणी गोद लए उठाल है। शब्द तीर चढ़या चिल्ले। सृष्ट सबाई मात हिल्ले। जूहां जंगल उच्च पहाड़ टिल्ले। धरन मात तेरा बणे अखाड़ा, ढहिंदे जाण मन्दिर महल, वड वड जो दिसण किल्ले। कलिजुग बणया अन्तिम लाड़ा, लक्ख चुरासी पाई छिले। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जोत धर, आप मिटाए बूरे कक्के बिले। बूरे कक्के पैण धक्के। शेख़ मुसायक पीर गौंस मक्के मदीने धक्के। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द डण्डा हथ्थ विच फड़या, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे जूठे झूठे फल पक्के। कलिजुग फल होया त्यार। माया राणी तेरी सची खिड़ी इक्क गुलज़ार। प्रगट होवे वाली दो जहानी, करे खेल अपर अपार। शब्द मारे एका कानी, चारों कुन्ट दहि दिश धार। कोई ना दिसे राजा राणी,

३७४ ०४

मिले ना नार कन्त भतार। मिटदी जाए वेद पुरानी, कुरान अंजील अंजील कुरानी खाणी बाणी अन्तिम होई दुख्यार। दुरमति कलिजुग जीवां अन्दर वसी, आत्म भरया इक्क हँकार। गुरमुखां दे दर तों नस्सी, भुल्लया इक्क करतार। मनमति कलिजुग जीआं आए हिस्से, चारों कुन्ट दहि दिश रहे झक्ख मार। जूठी झूठी चक्की पीसे, अन्तिम होए दो फाड़। प्रभ अबिनाशी किसे ना दिसे, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आया जामा धार। गुरमुख साचे संत जनां आप बणाए साचे लाड़। गुरमुखां मेल मिलान है। जिस मिल्या हरि भगवान है। दित्ता जीआ दान है। झुल्लया नाम निशान है। फलया फुल्लया विच जहान है। पूरे तोल तुल्या, देवे साचा दान है। गुरमुख साचा मिटाए आवण जाण, फल लगाए साचे डाल है। कलिजुग फल अन्तिम हुलया, ना सके कोई पछान है। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चौथे जुग आदि अन्त जुगां जुगन्त, करे खेल श्री भगवान है। आदि अन्त जुगा जुगन्त एका कार है। तिन्नां लोआं पावे सार है। चौदां हट्टां इक्क बज़ार है। सृष्ट सबाई होई रंडा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। चारों कुन्ट चले चण्ड प्रचण्डा, अष्टम्भुज होए आप अस्वार है। धर्म राए दर खोल्हे कुण्डा, छोटा बाला भुयंग कुमार है। लक्ख चुरासी कलिजुग जीव अन्तिम होया लंगढ़ा लूल्हा टुंडा, चढ़या रहे तन बुख़ार है। मौत लाड़ी विच मात आई, बेमुखां आपणे चुक्के कंधे, पाणी देवे उत्तों वार है।

३७५
०४

जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपार है। जोत सरूपी जामा पाए। कलिजुग किसे दिस ना आए। नौ खण्ड पृथ्वी साचे हिस्से, शब्द सरूपी रिहा कराए। किसे छत्र ना दिसे सीसे, राजे राणे ख़ाक रुलाए। जोती जोत सरूप हरि, एका एक शब्द जणाए। शब्द डंक इक्क लगांयदा। राजा राणा सरन लिआंयदा। गऊ ग़रीब निमाणा गले लगांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, दूजा ना कोई साथ रखांयदा। तणदा रहे साचा ताणा, लक्ख चुरासी विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात जोत धर, आपणा खेल करे भगवाना। कलिजुग जीव ना भुल्ल, अन्तिम वार है। झूठी माया विच ना रुल, ना कोई पावे सार है। पूरे तोल जाणा तुल्ल, एका शब्द नाम अधार है। दरगहि साची पावे मुल्ल, ना होवे कोई उधार है। भाग लगाए आपणी कुल, प्रगट होए विच संसार है। सच भण्डारा गया खुल्ह, प्रगट होया हरि गिरधार है। कोई ना लग्गे एथे मुल्ल, चरन प्रीती इक्क विहार है। जो दर आए भुल, बख्शणहार हरि करतार है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अपर अपार है। हरि का खेल अपर अपारा। आदिन अन्ता जोत सरूपी भेव भेख न्यारा। साचा राह किसे ना सुझे, बेमुख रहे झक्ख मारा। भेव खुल्हाए आत्म गूझे, देवे दरस अगम्म अपारा। भेव चुकाए एका दूजे, एका बन्न्हे साची धारा। दरस दिखाए नैण तीजे, लोयण खोल्हे हरि करतारा। तन मन

काया सीजे, अमृत वरखे ठंडी ठारा। गुरमुख फेर पतीजे, प्रगट होए हरि निरँकारा। आपणा कारज आपे कीजे, ना मंगे कोई सहारा। साचा दरस दान जन भगतां दीजे, आए चल दुआरा। दरगहि साची करे रीझे, आप चढ़ाए शब्द घोड़े कर सोलां शृंगारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जोत सरूपी वडा शाहो भूप, खेल अपर अपारा। खेल अपर अपार वाली दो जहानया। क्या कोई जाणे जाण पछाणे, सृष्ट सबाई आपे बानीआ। गुरमुख विरले आप चलाए आपणे भाणे, देवे नाम गुणवन्त गुण निधानीआ। आप भुलाए राजे राणे, अन्तिम वेले सर्ब पछतानीआ। साचा माण गुरमुख विरला प्रभ दर पाए, जिस होवे आत्म ब्रह्म ज्ञानीआ। सो जन होए सुघड़ स्याणे, जिस जन करी चरन धूढ़ इशनानया। आप चढ़ाए शब्द बबाणे, सच उडान उडानया। गुरमुख साचे एका रंग रंगाने, कलिजुग तेरी अन्त निशानया। दर घर एका सेवे, देवे सजण आत्म वथ आप रखानया। बेमुख हरि लाए डन्न, ना किसे कोई छुडानया। कलिजुग अन्तिम होए अन्ध, राम रहीम ना किसे पछानया। पंचां तत्तां लाई अग्ग, तन भरया इक्क अभिमानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाम निधानया। देवे सच्चा नाम निधाना। वाली दो जहानां हरि भगवाना। प्रगट होवे कृष्ना कान्हा। जोत सरूपी पहरे बाना। चले चलाए आपणे भाणा। इक्क चलाए सतिजुग सोहँ सच्ची बाना। सतिजुग साचे शब्द अपार। सोहँ चले विच संसार। चार वरनां इक्क दर, राउ रंक ना कोए विचार। सर्ब जीआं दा इक्क दातार। एका जोत लक्ख चुरासी पसर पसार। आप कराए आपणी दासी, ना कोई दिसे होर द्वार। प्रगट होए घनकपुर वासी, खेल करे अपर अपार। मेट मिटाए मदिरा मासी, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। रसना गाए पुरख अपार। मानस जन्म कर रहिरासी, जिस जन देवे किरपा धार। बेमुख दर दर घर घर करन हासी, भुल्लया हरि नर करतार। गुरमुख साचे संत जनां, सदा बलि बलि जासी, आत्म जोत सच्ची प्रकाशी, मिटया अन्ध अंध्यार। भरम भुलेखा दूर करासी, एका शब्द स्वास चलासी, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, ना कोई बणे सज्जण सुहेला, कलिजुग जीआं वक्त दुहेला, जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपार। आपणी खेल जाए कर। आपे गुर आपे चेल। प्रगट होए गुर गोबिन्द, सरन लगाए वाली हिन्द, जोत सरूपी दरस दिखाए वड दाता गुणी गहिंद। भरम भुलेखा दूर कराए, आप मिटाए आत्म चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा खेल आप रचन्द। चरन धूढ़ इशनान करांयदा। दुरमति मैल किरपा कर, साचा हरि दूर करांयदा। अठसठ तीर्थ रही फैल, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, साचा मेघ बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग जगत लगांयदा। चले चाल जगत निराली।

प्रगट होवे दो जहानां वाली। चार कुन्ट उठ उठ वेखे, घर घर दिसण खाली। गुरमुख विरला आपे वेखे, फल लगाए साची डाली। मिटदे जाण औलीए पीर शेख़े, कलिजुग तेरी घटा काली। आप मिटाए लिखी रेखे, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अग्नी जोत एका बाली। भगत वछल गिरधार दया कमांयदा। देवे नाम शब्द अपार, रिदे वसांयदा। घर साचे विच देवे वाड़, गुरमुखां साची बूझ बुझांयदा। आत्म खोल्हे बन्द कवाड़, माया पड़दा पांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़, साचा भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचे मार्ग पांयदा। साचे मार्ग जो जन चले, प्रभ अबिनाशी साचे हरि छत्र छाया हेठ पले, अन्तिम किरपा कर दरगहि साची साचे घर बहांयदा। आप वसाए साचे दर आपणे इक्क महल्ले। इक्क वसाए निहचल धाम अटल्ले। दूजा ना कोई वड़े, जोती जोत सरूप हरि, फड़ फड़ साचे संत जनां, साचा माल धन बन्न्हाए पल्ले। बख़्शे नाम ख़ज़ाना। प्रभ अबिनाशी दाना बीना। गुरमुख विरले रसना चीना। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे माल धन, गुरमुखां आत्म जाए मन, प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न, आप आपणे घर बहांयदा। बेड़ा बन्न्हे बन्न्हणहारा। घड़े भन्ने भन्नणहारा। आपे डन्ने डन्नणहारा। शब्द सुणाए कन्ने, साचा राग सुणावणहारा। साची जोत जगाए तने, जोती दीप करे उज्जयारा। आप वसे ना किसे छप्परी छन्ने, जोत सरूपी भेख अपारा। भगत जनां हरि बेड़ा बन्न्हे, प्रगट होए विच संसारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त, एका एक एकँकारा। गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों लाए पार किनारा। मेल मिलाए साचे संत, खिच्च लिखाए चरन दुआरा। आप बणाए साची बणत, अमृत चले नाम फुहारा। प्रभ दी महिंमा बड़ी अगणत, क्या कोई जाणे जीव गंवारा। एका जोती आदिन अन्त, आवे जावे वारो वारा। आपे पकड़े देव दंत, जन भगतां बणे लिखारा। साचा शब्द सुणाए छंत, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। गुरमुख विरला मानस जन्म जाए जीत, हउमे रोग निवारा। लक्ख चुरासी होए भस्मंत, लग्गे अग्नी इक्क अपारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां बणे आप सहारा। जन भगतां होए सहाई दया कमांयदा। फड़ फड़ बाहों पाए राहे, जूठ झूठ नष्ट करांयदा। दरस दिखाए सुत्या राती, फड़ फड़ बाहों रातीं उठांयदा। बेमुख जीव कलिजुग रुट्ठा, प्रभ अबिनाशी दिस ना आंयदा। अन्तिम वेले वढ्ढे नक्क गुत्ता, ना कोई सहारा अखवांयदा। कलिजुग अन्तिम तेरी आप सुहाए रुत्ता, पूरन भगवन्त जोत सरूपी जामा पांयदा। सतिजुग बणाए साची बणत, सच्ची धार जगत चलांयदा। प्रगट होवे हरि साचा कन्त, निहकलंक नरायण नर अवतार साचा लेखा आप गिणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समांयदा। भाणा जाणे हरि भगवन्ता। जोत सरूपी आदिन अन्ता। बिन रंग रूपी साचा कन्ता। भुल्ले हरि वड वड शाहो

भूपी, बण बण बैठे वड वड दंता। ना कोई जाणे सति सरूपी, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे विच रहंता। जामा धारे हरि निरंकारया। कलिजुग तेरा वेख भेख, पावे साची सारया। बणदा जाए झूठा लेख, भुल्ले जीव गंवारया। लक्ख चुरासी नेत्र लैणा पेख, अन्तिम वेले आई हारया। जोत सरूपी जामा धारे खुल्हे रक्खे केस, सतिजुग साचा दर दरवेश, एका एक ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, अन्त ना पारा वारया। एका जोत नूरो नूर साची तूर, शब्द अगम्म अपारया। सर्ब गुणां भरपूर, बेमुख जानण दूर, गुरमुखां दर द्वार आत्म सेजा साची आसण ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भेव आप खुल्हा रिहा। आपणा भेव आपे खोल्हे। पूरे तोल सृष्ट सबाई तोले। आप अडोल कदे ना डोले। हरि अभुल्ल जोत सरूपी साचा बोले। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पड़दे आपे खोल्हे। बेमुखां अन्तिम देवे दंड। घर घर रोवे नार रंड। वेले अन्तिम आई कंड। मेटी जाए जगत पखण्ड। कच्चे भन्ने हरि जी अंड। तोड़े आत्म सर्ब घमंड। चले चण्ड प्रचण्ड, आपे पावे साची वंड। गुरमुखां रक्खे आत्म ठंड। शब्द बन्न्हाए सच्ची गंढ। कलिजुग तेरी बाल जवानी बिरध अवस्था गई हंढ। निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द डण्डा नाल ल्याया, साचा कंडा इक्क वखाया, सोहँ डण्डा अग्गे लाया, लक्ख चुरासी करे खण्ड खण्ड। लक्ख चुरासी हरि जी खण्डे। अन्तिम वेले वढ्ढे गंढे। चारों कुन्ट वेले अन्त पए दुहाई विच वरभण्डे। ना कोई सके किसे छुडाई, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां सोहँ दात साची वंडे। सोहँ वंडे साची दात नाम अपार है। गुरमुख आत्म होए ना रंडे, मिले माण विच वरभण्डे, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। आप चढ़ाए सोहँ साचे डण्डे, तिन्नां लोकां करे बाहर है। करे खेल हरि विच ब्रह्मण्डे, जोत सरूपी इक्क अकार है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे आपणी सार है।

❋ १० जेठ २०११ बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड भुच्चर ज़िला अमृतसर ❋

हरि साचे संत दुलारया। प्रभ बख्शे चरन प्यारया। साची देवे जोत, आत्म करे अकारया। दुरमति मैल हरि जी धोत, एका रंग चढ़ा रिहा। निर्मल कराए जात गोत, चौहां वरनां रक्खे बाहरया। कलिजुग जीव रहे रोत, ना मिले हरि भतारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे शब्द अधारया। साचा संत शब्द अधार है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, देवे अपर अपार है। आत्म साची जोती धर, मिटाए अन्ध अंध्यार

है। आप वखाए साचा दर, खोल्ले बन्द कवाड़ है। नज़री आवे एका घर, जोत सरूपी साचा वसे लाड़ है। धरत मात करी सच्ची त्यारी। चल आई निहकलंक तेरी चरन द्वारी। भेव खुल्लाए राउ रंक, देवे माण आप गिरधारी। देवे वड्याई विच मात जिउँ राजा जनक, साचे दर मिले सच्ची सरदारी। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। सच्ची मात धन कमाईआ। संत मनी सिँघ तेरी सेव कमाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साची जोत जगाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम होए सर्ब सहाईआ। आपे बणे सज्जण सुहेल, आपे पिता माईआ। गुरमुख साचे संत जनां बैठा गोद उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरी वड्डयाईआ। ना एह बिरध ना एह बाल जवान। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भा हरि जी इक्क अनमुल्लड़ा लाल। एका रंगण नाम चढ़ाई, साची चोली तन रंगाई, रंग कराया लाल। साची माई तेरी अन्तिम वार खुशी मनाई, प्रभ अबिनाशी धारया भेख साचा रंग दए चढ़ाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती मेल मिलाई। जगे जोत अगम्म अपारया। आप वसाए साचे घर हरि निरंकारया। पूर कराए कलिजुग काम, बख्शया चरन प्यारया। उज्जल मुख जगत, इक्क झुलाए नाम निशानया। ना कोई मंगे अन्तिम दाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क प्याए अमृत सच्चा जामया। अमृत आत्म आप प्याया। भरम भउ भुलेखा कलिजुग अन्तिम बाहर कढाया। प्रभ अबिनाशी लिखण आया साचा लेखा, जोत सरूपी भेख वटाया। आप मिटाए बिधना लिखी तेरी रेखा, साचा माण जगत दवाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दरगहि साची दए बहाया। सच्ची माता धन कमाई है। गुरमुख विरले सेव कमाई है। आप मिटाए आत्म चिन्द, ना करे कोई निन्द, हरि रघुराई है। प्रगट होया गुणी गहिंद, एका बख्शे चरन सरनाई है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत साचे संत जनां, अन्तिम अन्त देण आया वधाई है। अन्तिम देवे हरि वधाई। गुर संगत साची संग रलाई। दोहां धिरां दा मेल मिलाई। आप चुकाए लहणा देणा, शब्द पहनाए तन गहणा, कलिजुग कूड़ा आप मिटाए आत्म चिन्द, निहकलंक जोत जगाई। दर घर साचे एका बहिणा। धर्म राए ना दए सजाई। कलिजुग जीव जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, ना होवे कोई सहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त देवे सदा सदा वड्याई। साचा संत नाम अधारा। सच वस्त हरि पावे झोली, इक्क कराए वणज वपारा। शब्द देवे तिक्खी धारा। साचा लेख प्रभ जाए लिखी, उज्जल कराए विच संसारा। सच वस्त हरि झोली पाए, गुरमुख बणया सच वणजारा। साचे संत हरि दए वड्याई, एका दर बणया सच भिखारा। साचे संत मित गत गति मितक हरि ना जाणी, मेल मिलावा हरि निरँकारा। साचे संत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

निहकलंक नरायण नर, आत्म बूझ बुझारा। साचे संत मिले हरि जगदीश। साचे संत क्या कोई तेरी करे रीस। साचे संत किरपा कर, इक्क पढ़ाई शब्द हदीस। साचे संत आत्म साची जोत धर, आप मिटाए बीस इकीस। साचे संत आप खुल्हाए आत्म दर, साचा राग सुणाए पंजां तत्तां जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा छत्र झुलाए सीस। साचे संत इक्क चढ़ाए नाम रंग। मानस जन्म ना होए भंग। प्रभ दर मंगण एका मंग। शब्द घोड़े कसे तंग। चारों कुन्ट बेमुख जीव फिरन नंग। निहकलंक नरायण नर, शब्द घोड़े हो अस्वार, सच्ची वजाए इक्क मृदंग। लक्ख चुरासी पावे सार, प्रगट होए विच संसार, जोती जगे अपर अपार, चारों कुन्ट दिसण कुरंग। निहकलंक नरायण नर, बेमुख जीवां अन्तिम अन्त, धर्म राए दर देवे टंग। साचे संत आत्म सच मन्ने। प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्न्हे। साचा नाम सुणाए कन्ने। गुरमुख साचे आत्म मन्ने। धर्म राए मूल ना डन्ने। प्रभ अबिनाशी होए सहाए, आप उठाए आपणे कंधे। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी जामा धर, आपे बेड़ा बन्न्हे। साचे संत चरन प्यार है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, एका देवे सच्ची धार है। गुरमुख विरला प्रभ दर जाए तर, कलिजुग अन्धेरी रात है। अट्ठे पहर रसन उचर, सोहँ शब्द अपार है। इक्क जपाए रसना जिहवे, देवे अमृत फल आत्म साची धार है। आत्म बीज साचा बोवे, गुरसिख आत्म मारे सर्ब हँकार है। अमृत जाम साचा पीवे, चरन प्रीती एका अपर अपार है। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़ कलि जाए तार है। साचा संत सर्ब का ज्ञाता। मिल्या मेल हरि पुरख अबिनाशी पुरख बिधाता। प्रगट होए घनकपुर वासी, कलिजुग मिटाए अन्धेरी राता। सृष्ट सबाई करे दासी, इक्क बंधाए चरन नाता। मेट मिटाए मदिरा मासी , चार वरन इक्क कराए ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता। साची जोत मात जगाई, जोती जोत सरूप हरि, माण गंवाए, शब्द तीर चलाए, राउ रंक इक्क कराए, शब्द डंक इक्क वजाए। भुल्ले फिरन पंडत काशी, पंडत पढ़न वेद पुरान वखाण दे। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, कलिजुग जीव आत्म भुल्ले रुले डुल्ले, ना कोई पछाणदे। खाणी बाणी कर विचार, बेमुख डुब्बे मँझधार, अन्त ना पाई साची सार, झूठी ख़ाक छाणदे। अंज़ील कुरानी आई हानी, झूठी होई अन्त निशानी, आत्म भरया इक्क हँकार दे। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, सोहँ सच्चा डंक वजाया, गुरमुख साचे संत जनां फड़ फड़ बाहों जाए तार दे। संत दुलारे हरि शब्द ढंडोरे। शब्द सरूपी साचा बोले, प्रभ अबिनाशी चढ़ के घोड़े। मदिरा मासी कढ्ढे दर दर घर घर कुट्ट, आत्म बीज कौड़ा रीठा भन्ने जोड़े। लक्ख चुरासी प्रभ दर जाए छुट्ट, प्रभ अबिनाशी जामा धर, वागां आया मोड़े। घर घर पैंदी दिसे फुट्ट, शब्द सरूपी मारे सिर हथौड़े। गुरमुखां देवे शब्द भण्डार अतुट, शब्द तीर रसना जाए

छुट्ट, आप चढ़ाए साचे पौड़े, बेमुखां नीरथ जाए मुक्क, शब्द कटार देवे टुक्क, ना कोई अन्तिम बौहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आप आपणी सरन लगाए, दरगहि साची माण दवाए, अन्तिम जोती जोत जोड़े। गुरमुख साचे चरन बलिहारी। साची दित्ती नाम इक्क खुमारी। दूजी दात हरि दरस अपारी। तीजा नैण खोल्ह वखाणी। चौथे घर पावे सारी। पंजवें साचा मेल मिलाए, छेवें घर आप बहाए, मिली सच्ची सरदारी। सत्तवें सति सरूप वखाए, जगे जोत अगम्म अपारी। अठवें अट्ठ सट्ठ तीर्थ गंवाए, अमृत आत्म बख्शे भारी। नौवें दर बन्द कराए, शब्द अग्गे डण्डा भारी। दसवें घर जो जीव पछाणे, जिथ्थे वसे हरि निरँकारी। निहकलंक नरायण नर, प्रगट हो साचा देवे नाम धन्ना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी बणे आप सहारी। साचे संत हरि प्रितपाले। आप बणाए साची बणत, प्रभ दया कमाए। बण बण आए हरि साचा कन्त, गुरमुख सुहागण नार हरि आप उपजाए। लक्ख चुरासी जीव जन्त, बेमुख प्रभ का भाणा दिस ना आए। जन भगतां बणाए साची बणत, चरन प्रीती इक्क कराए। प्रभ की महिंमा बड़ी अगणत, कोई जीव भेव ना पाए। जूठे झूठे मायाधारी माया लूठे संत, ना जानण खेल मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साची देवे शब्द उडारी। शब्द उडारी हरि उडांयदा। आप वसाए सच महल अटारी, जिथ्थे आसण लांयदा। शब्द सुणाए इक्क धुन्कारी, दीपक जोती इक्क वखांयदा। देवे आप सच्ची सरदारी, तिन्नां लोकां माण गवांयदा। प्रभ अबिनाशी गुर पूरे किरपा धारी, चौदां हट्ट चौदां लोक पैरां हेठ रखांयदा। जन भगतां पाए आपे सारी, आत्म जोती इक्क टिकांयदा। साची देवे शब्द धारी, सुन समाध खुल्हांयदा। शब्द खण्डा फड़ दो धारी, दूई द्वैती पड़दा वढ्ढ वखांयदा। दरस दिखाए हरस मिटाए, जगे जोत अगम्म अपारी, प्रभ अबिनाशी डगमगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चे धाम बहांयदा। साचा धाम इक्क रखाया। गुरमुख साचा विच बहाया। चारों कुन्ट चार चुफेर, शब्द सरूपी पहरा लाया। कलिजुग जीव भुल्ले, वड वड शाहो भूपी, किसे हथ्थ ना आया। ना कोई दिसे रंग रूपी, एका जोत सति सरूपी, नर नरायण हरि रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, प्रभ साचा देवे नाम अथाहया। माहणा सिँघ तेरे काज संवारन आया। माहणा सिँघ मन गया मन्न। आत्म निकलया झूठा जन। एका प्रीत लग्गी तन। आत्म होई ना अन्तिम अन्न्ह। धर्म राए ना लाया डन्न। प्रभ अबिनाशी परखे साची नीत, कलिजुग अन्तिम बेड़ा जाए बन्न। ना कोई मन्दिर गुरदुआरा मसीत, ना कोई छप्परी छन्न। लक्ख चुरासी कलिजुग अन्तिम होई अन्न्ह। प्रभ अबिनाशी आपे घड़े आपे लए भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां इक्क सुणाया सोहँ शब्द सुहागी

गीत कन्न। सच्चा शब्द इक्क सुणाया। फड़ फड़ बाहों राहे पाया। संत मनी सिँघ विच विचोला आप बणाया। दर घर साचे होया गोला, चरन प्रीती सेव कमाया। प्रभ आप रंगाया काया सच्चा चोला, गुरमुखां रंग आप चढ़ाया। इक्क सुणाया शब्द ढोला, जगी जोत इक्क अमोला, आत्म होई रुशनाया। बेमुख जाणण आला भोला, दरगहि साची जिस जाए भाग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, इक्क ल्याया शब्द डोला, गुरमुख साचे संत बहाया। शब्द डोली गया चढ़। प्रभ अबिनाशी फड़या लड़। दर घर साचे गया वड़। राह विच ना गया अड़। अट्ठे पहर दर्शन पाए, प्रभ अबिनाशी दर दुआरे अग्गे खड़़। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा शब्द इक्क फड़ाया, सोहँ अक्खर नाम रखाया, अन्तिम बेड़ा पार कराया, पंजां तत्तां नाल रिहा लड़। पंज तत्त हरि जी खण्डे। एका साचा नाम वंडे। कलिजुग तेरे अन्तिम कन्ढे। हीरा घाट लगाए गुरमुख साचे डण्डे। चरन प्रीती साची लाई, जुगा जुगन्त नाल हंढे। साचे दर सेव कमाई, होए रुशनाई विच वरभण्डे। पूर्ब लहणा आप चुकाई, प्रभ अबिनाशी दया कमाई, तेरी भस्म सुटाई विच नहिर कन्ढे। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लक्ख चुरासी फड़ फड़ मारे चारों कुन्ट करे ख्वारे, आप चलाए चण्ड प्रचण्डे। भस्म ढेरी आप उठाई, सर सरोवर साचे प्रभ आप टिकाई। बेमुख कलिजुग जीवां प्रगट जोत, मुख लावण आया छाही। गुरमुखां आत्म मैल धोत, साची करे रुशनाई। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँच नीच एका रंग रंगाई। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे आए देवे वड्याई। मात मिले वड्याई, नाम निशान है। गुर पूरे दया कमाई, दीआ इक्क शब्द बबाण है। चारों कुन्ट करे रुशनाई, झुले सच्चा इक्क निशान है। साची भस्म हीरा घाट रुढ़ाई, लिख्त लिखाए हरि भगवान है। लक्ख चुरासी फंद कटाई, सिँघ माहणा वड बली बलवान है। गुरसिख पूरे तेरी सच कमाई, पैज रखाई वाली दो जहान है। एका रक्खी हरि सरनाई, अन्त चुकाई जम की कान है। चारों कुन्ट दए दुहाई, बेमुख जीव सर्ब कुरलान है। लक्ख चुरासी पई फाही, ना अन्तिम कोई छुडान है। किसे ना मिल्या साचा माही, रोंदी पई अंज़ील कुरान है। भुब्बां मारन थांउँ थाँईं, वेद पुरानां आई हान है। निहकलंक कलि जोत जगाई, खाणी बाणी होई हैरान है। साचा डंक इक्क वजाई, आप उठाए रंक राजान है। साचा द्वार बंक आप सुहाए, जगाई जोत हरि भगवान है। एका रंग हरि आप रंगाए, सोहँ शब्द महान है। जोत सरूपी तनक लगाए, गुरमुख साचे आत्म जाए मान है। देवे वड्याई जिउँ जनक रघुराए, जगत रखाए नाम निशान है। अन्तिम वेले होए सहाई, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान है। माहणा सिँघ मन भया वैराग। आत्म बुझी तृष्ना आग। कलिजुग सोया गया जाग। प्रभ अबिनाशी चरन प्रीती गया लाग। साचा कन्त इक्क हंढाया, संत मनी सिँघ राह वखाया, कलिजुग बणया

रहे सुहाग। अन्तिम वेले फेरा पाया, निहकलंक कलि जोत जगाया, जन्म जन्म दा कलि धोवण आया दाग़। सच घर सच आसण लाया, गुर संगत सारी संग रलाया, इक्क सुणाया साचा राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, घर साचे लाए भाग। लग्गे भाग होए रुशनाई है। पकड़ी वाग हरि रघुराई है। सोहँ बद्धा तन साचा ताग, तुट्ट कदे ना जाई है। जोत सरूपी हरि धारे भेख, वरते हरि वड स्वांगी स्वांग, कलिजुग जीव ना कोई वेखे आपे रिहा भुलाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवण आया सच वड्याई है। माहणा सिँघ तेरा साचा मूल। आप चुकाए कन्त कन्तूल। शब्द डोली इक्क ल्याए शब्द पघूंड़ा लैणा झूल। चरन गोली आप बणाए, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, ना कोई दिसे पावा चूल। नैण मुँधारी दया कमाए, विच संसार माण रखाए, नाम इट्ट इक्क लगाए, आत्म जोती डगमगाए, हीरा घाट आप चढ़ाए तेरे फूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, जन भगतां चुकाए साचा मूल। संत मनी सिँघ सच राह जणाया। गुरमुख साचा पकड़, धरत मात दा पूत बणाया। सोहँ लाया साचा तक्कड़, एथे ओथे दो जहान पूरो पूर कराया। शब्द डोरी ल्याया जकड़, पंजां तत्तां बन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, बेड़ा बन्न्हण तेरा आया। बेड़ा बन्न्हे बन्न्हण जोग। दीआ दरस हरि अमोघ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, घर घर पैणा सोग। गुरमुखां हरि सज्जण सुहेला, सोहँ शब्द चुगाए साची चोग। बेमुखां वक्त होए दुहेला, हउमे लग्गा काया रोग। जन भगतां करया साचा मेला, सिँघ माहणा तेरा लिख्या धुर संजोग। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, अन्तिम वेले कलि प्रगट जोत, देवण आया सच्ची चोग। साची चोग देवे जुगीशर। साचा तप किया तपीशर। एका किया साचा जप, तुट्टी मुन सुन बणया वड मुनीशर। प्रभ अबिनाशी चरन लाया चुण, प्रभ अबिनाशी हरि जगदीशर। कवण जाणे हरि तेरे गुण, तिन्नां लोकां एका ईशर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे। आपे पाए तेरी सारे। आए चल सच दुआरे। निहचल धाम अटल्ल वसदे रहण चबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, आपे पाए तेरी सारे। जगत पित जगत गुर दाता। आपे बणे पित आपे माता। गुरमुख साचे संत जनां साचा काज रचाए, नाल ल्याए जगत भगत सच्ची बराता। सोहँ दाज झोली पाए, वेखे रंग तमाशा। सच घर हरि आप बहाए, किरपा कर नर हरि पुरख बिधाता। इक्क चुकाए जम का डर, दरस दिखाए इक्क इकांता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क प्रीत गुरसिख बणाई, आप बन्न्हाए चरन नाता। चरन नाता सदा हरि जोड़े। गुरमुख साचा मुख ना मोड़े। उतरे आत्म तृष्ना भुक्ख, काया वेल ना होए कौड़े। इक्क उपजाए

साचा सुख, आप चढ़ाए शब्द पौड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम वेले आपे बौहड़े। एका जोती साचा नूर है। सर्ब गुणां हरि भरपूर है। एका शब्द साची तूर है। सर्ब घटां हरि भरपूर है। जन भगतां हाज़र हज़ूर है। आप बणाए साची बणता, पंजां तत्तां करे चूर है। माण दवाए जीव जन्तां, जगे जोत जिउँ कोहतूर है। गुरमुख साचे संतां, एका देवे शब्द सरूर है। प्रगट होए आदिन अन्ता, बेमुख जानण दूर है। एका हरि साचा कन्ता, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला समरथ, जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, बेमुखां नक्क पाए नत्थ, अन्तिम वेले जाए मथ, गुरसिख चढ़ाए शब्द साचे रथ, कर दरस सगल वसूरे जायण लथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जीवां वंड कराए, अन्तिम आए हिस्से साढे तिन्न हथ्थ है। साची वंड आप कराई। नौ खण्ड पृथ्मी आप जगाई। सत्तां दीपां होए रुशनाई। पंचम् जेठ निहकलंक नरायण नर, मात जोत प्रगटाई। गुरमुख वेखे साचे नैण, बेमुखां दिस ना आई। आप चुकाए लहिण देण, धरनी धर हरि अख्वाई। गुरमुख विरले प्रभ दर लहणा लैण, एका जोती सति सरूपी, नैण साचे देखो, भरम भुलेखा दूर कराई। कलिजुग जीव कौड़े रीठे, शब्द हथौड़ा उप्पर लगाए, इक्क रंग चढ़ाए मजीठे, जो जन आए सरनाई। साची चक्की नाम पीठे, अग्गे तोट ना राई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जन पगतां होए आप सहाई। जन भगतां दरस दिखांयदा। जोत सरूपी जोत धर, आपणा खेल रचांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध संत जन भगत आपे बन्ने लांयदा। रक्खे पैज वक्त सुहांयदा। मेल मिलावा सच्चे सच्च, जन्म मरन फंद कटांयदा। एका रक्खे शब्द खिच, गुरमुख हिरदे वास रखांयदा। गुरमुख जोती देवे साचा तेज, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। गुरमुख आत्म फूल विछानी सेज, साचा कन्त साचा चरन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आदि अन्त जुगा जुगन्त, साचे घर माण रखांयदा। साचे घर माण रखाए। गुरमुख साचे संत जनां, बाहों पकड़ आप लै जाए। पल्ले बन्ने नाम धन्ना, अग्गे बहि बहि गुरमुख खाए। साचा शब्द राग सुणाए कन्ना, आप आपणी बूझ बुझाए। कलिजुग माया ना लग्गे तना, आत्म ठंडी ठार रखाए, भाण्डा भेव भरम हरि भन्ना, एका दूजा भउ चुकाए। अन्तिम वेला बेड़ा आप बन्ना, सिँघ माहणा हरि पैज रखाए। निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो साचे लेख लिखाए। लिखाए लेख लिखणहारा। सच कराया वणज वपारा। एका दीआ नाम अधारा। आत्म दीआ होए उज्जयारा। आपे किया जोत पसारा। सतिजुग तेरी रखाई साची नीहां, गुरमुख साचा भेंटा चाढ़ा। कर कर कर्म

आपणा बीज बीआ, दर घर साचे हरि जी वाड़ा। साचा जाम अमृत पीआ, वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा। प्रभ अबिनाशी चरनी थीआ, धुरदरगाही किया साचा लाड़ा। साचा बीज मात बीआ, अन्तिम पक्कया वाड़ा। कलिजुग उखाड़े तेरी नीहां, चारों कुन्ट लग्गे अखाड़ा। साढे तिन्न हथ्थ किसे ना आवे सीआं, आप उठाए शब्द सरूपी वडी धाड़ा। गुरमुख साचे संत जन आप बणाए पुत्तर धीआं, होए सहाई विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई, आप चबाए आपणी दाढ़ा। धुरदरगाही सच फ़रमाना। शब्द सरूपी कन्न सुनाणा। जोत सरूपी पूर कराना। गुरमुख साचे संत जनां हरि आप जगाना। आप बणाए साची बणता, वाली दो जहाना। साचा मेल आप मिलाया प्रभ अबिनाशी साचे कन्ता, किया खेल जगत महाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ वक्त सुहाना। साचा शब्द हरि वरताया। मातलोक इक्क सुणाया। गुरमुख साचे संत प्यारे, आप बणाए सच सितारे, प्रभ अबिनाशी किरपा धारे, चिट्टा बाणा तन छुहाया। चिट्टा बाणा साचा राणा हरि जी साचा शाह सुल्ताना, आपणे रंग रंगाना। दरगहि साची देवे माणा, गुणवन्त हरि गुण निधाना। निहकलंकी पहरे बाणा। गुरमुख साचे हँस बनाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत पंचम् जेठ शब्द सरूपी चोग चुगाना। चुगे चोग माणक मोती। गुरमुख साचे साची जोती। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, दुरमति मैल दर साचे धोती। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ रहे फैल, कोई ना जाणे गोती। आप खुल्हाए धर्म राए दी जेल्ह, सृष्ट सबाई रही रोती। जन भगत कराए साचे सैल, दर घर साचे सृष्ट सबाई रही सोती। पंचम् जेठ पहली गुर संगत कीती पहल, लक्ख चुरासी रही रोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, गुरमुख साचे संग रलाया, जगाई साची जोती। शब्द बाणा तन श्रृंगारे। गुरमुख साचे संत प्यारे। मेल मिलावा साचे कन्त, करे कराए आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां कलां समरथ, सोहँ शब्द बणाए साचा रथ, आपणी हथ्थीं पकड़ नथ, आप लै जाए उच्च महल सच मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत अकथ्थ, सृष्ट सबाई पाए सत्थ, गुरमुखां सगल वसूरे गए लथ्थ, बेमुखां वेला गया ना आवे हथ्थ, जन भगतां हरि पार उतारे। चिट्टा बाणा साचा चानण। गुरमुखां बेड़ा आया बन्न्हण। जोती सरूपी मातलोक आपे साचा थम्म्हण। साचा माण आप दवाए , आत्म जोती मेल मिलाए, पंचम् जेठ जो जन सरनाई आए, ना मरन ना जम्मण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरोवर आप नुहाए, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, धर्म राए ना कढ्ढे संमण। साचे बाणे तेरी लाज। प्रभ अबिनाशी अन्तिम रक्खे गुरमुखां सिर ताज। चारों कुन्ट अग्नी भक्खे, गुरमुखां संवारे आपे काज। लक्ख चुरासी विच्चों कीने वक्खे, अन्तिम दित्ता

सतिगुर पूरे, चिट्टा बाणा साचा ताज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचे संत जनां, शब्द सरूपी आप उठाया, चरन प्रीती खिच्च ल्याया, इक्क लगाई सोहँ अवाज़। चिट्टा बाणा चिट्टा दुध्ध। करन आया प्रभ कारज सुध्ध। उज्जल कराए गुरमुख बुध। साचा माण विच दो जहान आप दवाए, गुरमुख साचे कन्त, कोई ना दिसे जेवड तुध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धर, आप खुल्हाए भेव गुज्झ। चिट्टा बाणा साची रास। प्रभ अबिनाशी होए दास। सदा वसे आस पास। मानस जन्म कराए रास। सोहँ शब्द चलाए स्वास स्वास। झूठा गेड़ा होया नास। दरगहि साची माण दवाए, एका अन्तिम चरन बहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बिठाए, जोत सरूपी सच अकाश। चिट्टा बाणा रंग रंगीला। बख्शे साचा राणा, पंचम् जेठ कर कर हीला। आपे बणे अन्तिम वेले वञ्झ मुहाणा, नज़री आए हरि साचा चिट्टे अस्व छैल छबीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपणी हथ्थीं आप पहनाया। सोहणा रंग इक्क चढ़ाया। काला दाग किसे दिस ना आया। आपणे हथ्थ पकड़ी वाग, सिध्धा राह इक्क रखाया। पंचम् जेठ होई रात सुहाग, वाहवा सोहणा कन्त मिलाया। गुरमुख विरला गया जाग, जीआ जन्त इक्क भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि हँस बणाया काग, साचे सर सरोवर चरन धूढ़ गुरसिख नुहाया। चिट्टा बाणा मोती अनमोल। गुरमुख विरला रहे अतोल। आप तुलाया साचे तोल। कलिजुग तेरे अन्तिम वेले, गुरमुख साचा संत कदे ना जाए डोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सद ब्रह्मादी, गुरमुख बणाए सदा अनादी, सद वसे हरि जी कोल। सच वस्त विच मात लाधी, आप मिटाए कलिजुग अपाधी, चरन प्रीती साची बाधी, सच सुच्च अमृत प्याए घोल। माया राणी कलिजुग तेरी अन्तिम रिद्ध रिद्ध खाधी। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला ना कोई पिता पूत ना कोई तेरी दादी। एका चरखा आप चलाया, सोहणा सूत्र आप बणाया, चिट्टा ताणा आप तणाया, गुरमुखां कलि तन पहनाया, किरपा कर माधव माधी। अन्तिम वेले होए सहाया, सच निशान एह रखाया, चिट्टा अस्व रंग वखाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दिवस रैण अट्ठे पहर रसन अराधी। चिट्टा बाणा कलिजुग अन्ध घोर। पकड़ पछाड़े पंज चोर। दर घर साचे वाड़े, बाहों फड़ अग्गे लए तोर। साचे घोड़े आपे चाढ़े, हथ्थ आपणे रक्खे डोर। गुरमुख बणाए साचे लाड़े, बेमुख जीव पावण शोर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा विच मात , प्रभ अबिनाशी किरपा धार, तुध बिन पार लँघाए केहड़ा होर। किरपा करी श्री भगवान। साचा दीआ जगत निशान। चिट्टा बाणा तन पहनान। चरन धूढ़ करे इशनान। आत्म दीआ ब्रह्म ज्ञान। निर्मल किया जीआ, मिल्या नर हरि

भगवान। अमृत साचा प्रभ दर पीआ। पंचम् जेठ खुशी मनाण। प्रभ अबिनाशी रक्खे साया हेठ, विच उजाड़ बीआबान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा बाणा तन पहनाया, सतिजुग तेरा मार्ग लाया, निहकलंक नरायण नर, इक्क झुलाए सच्चा सच निशान। हरि साचा हुक्म सुणांयदा। गुर मति दे समझांयदा। आत्म रक्खे धीरज यति, उलटी मति ना कोई रखांयदा। एका साचा नाम नित लैणा रट, चोरां यारां मेट मिटांयदा। चरन प्रीती सच नत्त, तोड़ विछोड़ा जगत गवांयदा। आत्म बीजो साचे वत्त, सोहँ बीज धुर दरगाहों आप लिआंयदा। शब्द सरूपी साची वथ, चरन प्रीती आप दवांयदा। आत्म दुखड़े जायण लथ्थ, जन सरनाई आंयदा। सर्ब घटां हरि समरथ, गुरमुखां सिर हथ्थ टिकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, गुरमुखां साचे मार्ग पांयदा। प्रभ अबिनाशी सच संदेश। जोत सरूपी हरि प्रवेश। प्रगट होया माझे देस। नर नरायण नर नरेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका गोत, आदि अन्त जुगा जुगन्त, आवे जावे नित हमेश। साची वंड हरि करे कराए। नौ खण्ड सत्त दीप प्रभ सारे पाए। आपे करे साची वंड, फल रहे ना राए। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप, आपणा भेव आप खुलाए। जोती जगे सति सरूप, सोलवें दिन भारत खण्ड तेरे हिस्से आए। पन्दरां दिन लँघाए गिण गिण, सत्तां दीपां नवां खण्डां आपे आवे आपे जाए। महाराज

३८७ ०४ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए सोलां वंडां, सत्त सत्त फेरे पाए। साची वंडा आप कराई। नौ खण्ड सत्तां दीपां ३८७ ०४

आप करे रुशनाई। करे खेल हरि विच वरभण्डा, अचरज बणत बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त पूर कराए, पंचम् जेठ दया कमाए, इक्क सौ ग्यारां दिन जो लई लिखाए। इक्क सौ ग्यारां दिन हरि लेख लिखाया। सत्तां दीपां नौ खण्ड पृथ्मी चारों कुन्ट वेख, साचा एह हुक्म सुणाया। अट्ठे पहर जोत सरूपी धारे भेख, अन्दर बाहर गुप्त जाहर किसे दिस ना आया। मिटाउँदा फिरदा कलिजुग तेरी अन्तिम रेख, भारत खण्ड सोलवां दिन तेरे हिस्से आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा हुक्म सुणाया। साचा हुक्म सुणो रघुराई। दे मति रिहा समझाई। पंचम् जेठ जोत जगाई। खण्डां दीपां करे रुशनाई। भारत खण्ड वज्जी वधाई। पूरी वंड आप कराई। सोलां दिन धार बन्नाई। गुर संगत खुशीआं नाल मनाई। चिट्टा बाणा तन छुहाउणा, सवा पहर ना गलों लाहुणा, प्रभ अबिनाशी रसना गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी वेखे परखे आवे जावे खेल रचावे। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखावे। बेमुख बन्नण झूठे दाअवे। गुरमुख विरला चरन धूढ़ मस्तक लावे। आप बणाए साची बणत, साचे धाम पूरन राम साचा दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा हुक्म धुर फरमाण, हो मेहरवान आपणा

आप सुहावे। सुणना हुक्म सहिज धुन अन्दर। तन सुहाए साचा मन्दिर। चिट्टा बाणा तन पहनाए, गुरमुख साचे तेरा चिट्टा रंग रंगाए, आपे वसे तेरी काया कन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा किला गढ़ काया मन्दिर। चिट्टा झण्डा चाढ़ वखाया, आपे तोड़न आया जन वज्जा हँकारी जन्दर।

उस अग्गे अरदास, जो सुणे पुकारे। सद वसे आस पास, साचा गिरधारे। जिस गाईए स्वास स्वास, कारज सर्ब संवारे। जो होया रहे दास, तिस करीए चरन निमस्कारे। जो वसे मात पताल अकाश, हरि साचा कन्त भतारे। निज घर आत्म रक्खे वास, प्रभ अबिनाशी साचा मीत मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा नाउँ, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। सच्ची सच्ची रास, हरि अरदास है। गुरमुखां संवारे काज, जो जन तजाए मदिरा मास है। शब्द सरूपी आत्म बैठा मारे सच्ची अवाज, घट घट रक्खे वास है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी एका पुरख अबिनाश है। गुरसिख साचे लहणा लैण, औखी घाटी जगत जंजाले, प्रभ आपे आप चढ़ाए। सच प्रीत जिस जन घाली, कलिजुग एका नाउँ साचा लए। आपे बणे साचा वाली, डूंघे वहण ना गुरसिख वहे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना कहे। फतिह डंका एका वज्जे। जो घड़े सो पाछे भज्जे। निहकलंक नरायण नर, कलि जोत जगाई, गुरमुखां रहे पिच्छे अग्गे सज्जे खब्बे। रल मिल दयो वधाई, अन्तिम वेले लाज रक्खे। रसना गाओ चांईं चांईं, लोकमात हरि पड़दे कज्जे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चार कुन्ट शब्द नगारा एका वज्जे। शब्द नगारा वज्जे ढोल मृदन्गाया। सृष्ट सबाई प्रभ अबिनाशी इक्क चढ़ाए रंगया। साचे लेख लिखाई, चार वरन इक्क कराई, कोई रहे ना भुक्खा नंगया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा नाउँ ध्याई, मिल्या वर हरि वडा दाता सूरा सरबन्गाया। दूसर थाएँ ना सीस झुकाई, आत्म वहाई साचा गंगया। साचा सर सरोवर गुरमुख साचे नुहाई, होवे सहाई अंग सन्गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज आत्म बैठा सद दर्शन पाई, मानस जन्म ना होए भन्गाया।

❈ ११ जेठ २०११ बिक्रमी सुरजन सिँघ दे गृह पिण्ड भुच्चर ज़िला अमृतसर ❈

गुरसिख साचा सच सरदार है। जिस किया कन्त प्यार है। देवे नाम भगत वड्याई, शब्द सच्ची धार है। भरम भुलेखा दूर कराई, ना कोई रहे मन विचार है। आप मिटाए पिछली छाही, लेख लिखाए अपर अपार है। वेले अन्तिम

होए सहाई, बंधन बंध आप कटाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लज पति पति लज आपणे हथ्थ रखाई, आपे पाए सार है। आपे रक्खे आपे मारे। आपे डोबे आपे तारे। दर द्वार सोई सोभे, जिस जाए हरि मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन छुहाए सर सरोवर आप बणाए, कलिजुग किरपा करे हरि गिरधारे। अति स्याणप थोहड़ी मत। बेमुखां पल्ले बध्धी पापां गट्ठ। गुरसिख विरला जाणे सच्चा जप। प्रभ अबिनाशी आप वखाणे, सर्ब जीआं दी आत्म जाणे, प्रगट होए जोत प्रतक्ख। चरन लगाए ग़रीब निमाणे, गुरमुख साचे बाल अञ्याणे, अन्तिम वेले लए रक्ख। बेमुख होए बेमुहाणे। अन्तिम वेले सर्ब पछताणे, कलिजुग जीव अन्धे काणे, ना कोई सुहेला ना कोई सज्जण ना कोई सक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे घर भाग लगाए, मन्दिर महल्ल आप तजाए, बणे सक्ख। कक्खां कुली गुरमुख तेरी आत्म भिक्खी। चरन प्रीती साची सिक्खी, उज्जल कराए मात कुक्खी। झूठी अग्न जगत दुखी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां सदा रक्खे सुखी। गुरमुख साचे संत दुलारे। दर घर साचे भोग लगाए। दरगहि साची माण दवाए, साचे लेखे आप चुकाए काया रक्खे सुखी। सुखी सुख सुहेला। मीत राम इक्क अकेला। घनईआ शाम बेमुक्खां करे वक्त दुहेला। कलिजुग डोबे नईआ राम, जन भगतां कराए साचा मेला। प्रगट जोत दरस दिखईआ राम एका वसे रंग नवेला। साचे रंग रंगईआ राम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान गुण निधान, जगत चलाए साची नईआ राम। जगत नईआ जाणा चढ़। कलिजुग वहिण ना जाणा हड़। पापां वहिण आप रुढ़ाए, कोई ना सके अग्गे अड़। निहकलंक प्रगट जोत दया कमाए, बाहों फड़ फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान, गुण निधान जगत धराए साची नईआ, गुरमुख साचे जाणे चढ़। साची पौड़ी सच अस्थान। जिथ्थे वसे हरि भगवान। ना कोई दिसे होर निशान। गुरमुखां हरि आया हिस्से, पहली वंड पंचम् जेठ करान। आप मिटाए ईसा मूसा बेईमान शैतान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ सचा तीर खिच्चे रसना तीर कमान। गुरमुख साचे बाल अञ्याणे। आप चलाए आपणे भाणे। दरगाह साची माण दवाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, इक्क रखाए चरन प्यारे। आत्म तन वज्जी वधाई, प्रभ पूरे दया कमाई। आत्म दर वज्जी वधाई, मिल्या मेल गुर संगत भाई। आत्म दर वज्जी वधाई, दर्शन दीआ दर घर साचे माही। आत्म दर वज्जी वधाई, गुरमुख गऊ ग़रीब निमाणे जगत निताणे, सर्ब कटण आया दुक्खां फाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे नाम निशानी, भुल्ले कोई नाही। कलिजुग माया भरम ना भुल्ले। भाग लगाए प्रभ साचे कुले। देवे दात हरि सच वस्त अनमोले। धुरदरगाही सच सुगात, सदा भण्डारे खुल्हे। दुक्खां मिटे अन्धेरी रात,

शब्द सरूपी पवण झुल्ले। एका वेखे मार झात, गुरमुख साचे कलिजुग वेले अन्तिम अन्त, बैठा रहे इक्क इकांत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाग लगाए दया कमाए, दर घर आए गुरमुख साचा सदा फले फुल्ले। फले फुल्ले विच जहान। पत्त डाल ना कोई हुल्ले, प्रभ साचा बीज बिजान। ना कोई लाए मुल्ले, चरन प्रीती एका मंगे दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे आप बणे बानी, शब्द मारे तीर कानी, वाली दो जहान। गऊ ग़रीब निमाणयां, पावे सार बख़्शे चरन ध्यानयां। होए सहारा देवे दुध मधानया। अन्त ना पारावारा, तोट ना आवे दाणया। प्रभ भरे पूरा भण्डारा, देवे वस्त बिरध बाल अञ्याणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्ने लाए, आपे बणे वञ्झ मुहाणया। ख़िमा ग़रीबी चाकरी, प्रभ साचे भाए। निन्दक दुष्ट साकती, प्रभ दर दुरकारे। गुरमुख विरला पाकी पाकती, हरि साचा रसना गाए। कलिजुग सोई आत्म जागती, हरि जोती दीपक आप जगाए। सृष्ट सबाई दर दर भागती, दर घर साचे रहण ना पाए। गुरमुख आत्म एका वर साचा मांगती, दे दरस हरि रघुराए। मिल्या मेल अलक्खणा लाखती, दर घर आए चरन छुहाए। प्रभ साचे भावती, सिध्धा राह इक्क रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कर, अठारां सिद्धां नौ निधां आपे वस कराए। कटे भुक्ख दलिद्दर, उपजे सुख घर भरपूर। सुक्का हरया होवे रुख, वेला नेड़े ना जाणो दूर। झूठे धूंए जो रहे धुक्ख, प्रभ विच्चों कढ्ढे गरूर। उज्जल कराए प्रभ साचा मुख, नेत्र नैण मस्तक देवे साचा नूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्ती जुगा जुगन्ती वड दाता वड सूर। वड सूरा वरयाम हरि, गुरमुखां हरया कराए चाम दर कोई ना मंगे दाम, हरि पूरन साची आस कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम देवे गुरमुखां सुखाले स्वास कर। जोत सरूपी जामा धारे, अचरज खेल वरतावणयो। वेख विचारे किरपा धारे, बाशक पकड़ ल्यावणयो। मन्दराँचल किली गेड़ा विच आप रखावनयो। सच सवाणी साचे पीहड़े बहि के नेत्रा चारों तरफ पावनयो। दोहां मुठां हरि ल्या फड़, सज्जा खब्बा खब्बा सज्जा वाह वाह फेर चलावनयो। सत्त समुन्दर वेखे चढ़, किरपा निध डूंघे वहिण बन्न लगावणयो। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल आपणा आप वरतावणयो। नेत्रा चले अपर अपार। मन्दिर चल खड़ा विचकार। सत्त समुन्दर हरि जी रिड़के, साचा मक्खण लए निकाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप अवल्लड़ी चले चाल। साचे मोती बाहर वरोले। सागर सिंधां पाणी खौले। ना कोई माता ना कोई पिता, ना कोई धराई बिन्दा, करे खेल पड़दे ओहले। जोत सरूपी हरि मृगिन्दा, आपणा भाणा आप कराई आप बणाए चरन गोले। लछमी तन श्रृंगार सोलां पहने, बाहर आई मुखों बोले। जोती जोत सरूप हरि, आप बहाए आपणे साचे डोले, साचा रत्न होया जाहर। लछमी

निकली समुन्दर बाहर। सोलां पहने तन शृंगार। हथ्थ कँवल लाल गुलालड़ा खिड़ी सच्ची गुलज़ार। गुर चरन प्रीती साचा रहण साचा सहिण, दरस नैण मुँधारे। लछमी वसे घर नर नरायण, जोती जोत सरूप हरि, आप कराए इक्क सहारे। लछमी आई सच दरबारे। एका वेखे हरि भतारे। सुलक्खणी साची नार, दोए जोड़ करे चरन निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, चरन प्रीती दे दे वर, मैं रहां दर भिखारे। जोती जोत सरूप हरि, आप वखाया साचा घर जिथ्थे वस्सया हरि करतारे। पूरन किरपा हरि कराई। साची सेवा चरन लाई। दूसर कोई ना वेख वखाई। एका एक हरि जगदीश्र, आत्म लिव सच टिकाई। जोती जोत सरूप हरि, साची बख्शी सेवा चरन झस्सण लाई। चरन झस्से कर प्यार। खिड़ खिड़ हस्से हरि द्वार। नैण अणियाले तीर कसे, आपणीआं भुजां पसार। प्रभ अबिनाशी ना आए वसे, ना सुत्ता पैर पसार। एका राह हरि जी साचा दस्से, आलस निन्दरा नहीं निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग रहे दातार। वध्या माण होया हँकार। लच्छमी आत्म करे विचार। चरन झस्सां हिरदे वसां, सेवा कर अपर अपार। हौली हौली तलीआं मसां, ना पावां डाहढा भार। नैण निराले तीर कसां, मारां खिच्च सच्ची सरकार। सच प्रीतम सद हिरदे वसां, ना होवां कदी बाहर। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा रिहा कर। कोई ना जाणे प्रभ की सार। चरन झस्से खुशी मनाए। हिरदे वसे प्रभ अबिनाशी,
३६१ ०४ सुख आसण गूढ़ी नींद सवाए। प्रेम कटारी साची कसे, झूठे पड़दे लाहे। जोती जोत सरूप हरि, एका बचन साचा दस्से, ३६१ ०४
ना भुल्ले ना कोई भुलाए। हरि जी साचे हुक्म सुणाया। आलस निन्दरा ना मोहे भाया। दर घर साचे कदे ना वज्जे जन्दरा, अट्ठे पहर हरि खुल्हाया। भेव ना जाणे कोई सुरपति राजे इन्द्रा, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश दए उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अभेद अभेदा अछल अछल्ल वल छल कर आप भुलाया। साचा किया तन शृंगार है। मोहणी रूप हरि अपार है। सुर असुर दोवें खड़े हरि द्वार है। धुरदरगाही आया तुर, जन भगतां वंडे भार है। जोती जोत सरूप हरि, देवे शब्द अधार है। फूलन माला सीस गुंदाया। चुण चुण कलीआं हार बणाया। सोहणी मालण हथ्थ लगाया। बणे साची नित दलालण, सुहागी कन्त जिस वखाया। जगत चले चाल निरालन, रंग रंगीले साचे माधव, आपणा भेस वटाया। जगी जोत इक्क अकालण, सृष्ट सबाई बणे पालण, फतिह डंक वजाया। गुरमुखां उठ उठ जाए भालण, बणी रहे सदा रखवालण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साची कारे लाया। तन मन सोहणा आप शृंगारया। आपणा आपा उत्तों वारया। कलिजुग तेरा वध्या पापा, अमृत आत्म देवे ठंडी धारया। आपे पिता आपे माता, भैण भाई ना पूत कोई रखा रिहा। ना कोई पुच्छे जातां पातां, ऊँच नीच राउ रंक एका धाम वसा रिहा। कलिजुग तेरा वंडण आया अन्तिम खाता।

सोहणी वंड करा हिरा। मिटदी जाए रैण अन्धेरी राता, अन्ध अन्धेर दूर करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म पड़दे खोल्ह, विच्चों हरि जी बोल, आपणा भेव चुका रिहा। शब्द साचे तन शृंगारे। गल पाए साचे हारे। गुरमुख साचे संत प्यारे। कंधे लटकण गुरमुख साचे संत प्यारे। प्रगट जोत विच मात उठाए आप सारा भारे। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी जामा धर, सोलां शृंगारी वेस कर, गुरमुखां आया चल्ल दुआरे। नाल शब्द कंधी पट्टी। साचा नाम साची हट्टी। काया माटी जोत लटी। जोती जोत सरूप हरि, सोहणा किया तन शृंगार, सृष्ट सबाई सारी फट्टी। प्रभ साचा पहने चीरे। हथ्थीं लटकण प्रभ अबिनाशी सच कलीरे। आपणे भाणे आप चलाए, नाल चलदा जाए धीरे धीरे। गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों नाल रलाए, आप बणाए इक्क दूजे दे साचे वीरे। कटदा जाए जम के फाहे, दरगाह साची माण दवाए, आप प्याए अमृत साचा सीरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहणा तन शृंगार कर, कलिजुग तेरा अन्त विहार कर, करे खेल वड गुणी गहीरे। हथ्थीं पाए छापां छल्ले। कलिजुग तेरी छाया ढले। गुरमुख साचा प्रभ अबिनाशी तेरी छत्र छाया हेठ पले। साचे रंग आप वसाया, आप वसाए सच महल्ले। फड़ फड़ बाहों चरन लगाया, सोहणा सच्चा बाग़ लगाया, धरत मात हरि आप उपजाया, जिउँ हुक्म सुणाया डल्ले। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे आपणे घर, मातलोक चले चाल अवल्ले। उठ डल्ले वेख विचार। उचे टिल्ले खिड़ी गुलज़ार। ना कोई जाणे बण करीर झाड़। ना कोई वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़। साची दया हरि कमाए, गुर गोबिन्द एह बचन लिखाए, सोहणी खिड़ी जगत गुलज़ार। डल्ला कर निमस्कार। अग्गों कहे हरि दातार। बालू रेत एथे उडे, वगे अन्धेर अन्ध अंध्यार। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म फेर सुणावे, दया कमाए, निहकलंक कलि जामा पावे, गुरमुख साचे संत जनां खिड़ी सच्ची गुलज़ार।

❇ १३ जेठ २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❇

दर घर साचे मंगल गाया। गुरमुख साची नारी, जगत जंजाला, आत्म कंगाला, संगल तन कटाया। चरन प्रीती कलि भारी, तन मन साचा साचे रंगण नाम रंगाया। भाग लगाया काया महल्ल सच विहारी, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, साचे हरि सोहँ शब्द मुख साचा सगन लगाया। जोत मिल्या हरि निरँकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, जाए सद बलिहारी। हरि घर मंगल वज्जी वधाई। गुर संगत सच सुनेहड़ा प्रभ अबिनाशी रिहा घलाई। आप कटाए जम का जेड़ा, दुःख लग्गे ना काई। इक्क वसाए काया नगर खेड़ा, सच समग्री हरि तन लगाई। अमृत फल

लग्गे सोहँ शब्द साचा मेवड़ा, एथे ओथे दो जहानी, गुरमुख साचे बहि बहि खाई। धन्न धन्न कमाई, गुरसिक्खां दर साचे कीनी सेवा, देवे माण दर घर साचे थाँईं। गुर गोबिन्द हरि साचा गाया साचा जीवड़ा, साचे कन्त भतारा मेल मिलाई। प्रगट होए वड देवी देवा, आत्म तृष्ना पूर कराई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, प्रगट देवे वड्याई। दर घर साचे हरि माण रक्खणा। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचा सद हिरदे वसे, साचा शब्द सुणाए कन्नां। शब्द सुणाए हरि साचो साचे, गुरमुखां बेमुख दोहां धिरां दे विच रखाया बंना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला जाण पछाणे, आत्म रलीआं सुख साचा माणे, बेमुख कलिजुग जीव आत्म अन्न्हा। सच समग्री साची रास। काया गगरी कँवल प्रकाश। चरन प्रीती साची लगरी, हरि हरि जी भए दास। गुरमुक्खां सद वसे काया नगरी, सोहँ चलाए स्वास स्वास। एका ओट प्रभ साचे पकड़ी, लक्ख चुरासी होए नास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत बलोए करे प्रकाश, घट घट वास मात पताल अकाश। गुर पूरा दया कमाए। गुरमुख साचे संत जनां साचे मार्ग लाए। साचा देवे नाम धना, तोट रहे ना राए। साची जोत जगाए धन्न धन्ना, अज्ञान अन्धेर मिटाए। धन्न कमाई गुरमुक्खां जिन्ह़ां मन मन्ना, भरम भुलेखा दूर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि, गुर संगत विदा कराए। गुर संगत हरि विदा कराए। सिध्धा राह इक्क वखाए। नौ निधां वस कराए। अठारां सिद्धां चरनां हेठ झसाए। तन मन गुरमुक्खां विध्धा, सोहँ शब्द तीर चलाए। आप बणाई साची बिधा, शब्द सरूपी अवाज़ लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, प्रगट जोत दरस दिखाए। साची ख़ुशी हरि घर मनाई। कलिजुग माया अग्न तनो जलाई। गुरसिख ना होए नग्न, शब्द बस्त्र हरि तन पहनाई। अट्ठे पहर रहे मग्न, हरि रस रसना सद ध्याई। आत्म दीपक साचे जगण, होई रहे रुशनाई। मेल मिलावा उप्पर गगन, लोआं पुरीआं चरन हेठ छुहाई। चाढ़े साची नाम रंगण, रंग मजीठ उत्तर ना जाई। बेमुख जीव कलिजुग माया दे विच दगण, ठंडे ठार ना कोई कराई। गुरमुख साचे साची लाई एका लग्न, पुरख पुरखोतम तेरी सरनाई। दूजा दर ना जाए मंगण, सिर रक्खे हथ्थ रघुराई। मानस जन्म ना होए भंगण, जो जन आए सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आए संत जन दरस ध्याने नाम भिच्छया झोली पाए दान, गुर संगत विदा कराई। नाम नाम नाम, हरि जपणा। काम काम काम, जग कर आपणा। दाम दाम दाम, सच्चा नाउँ आदि जुगादी सद सतना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म साचा जाम प्याए, शब्द बस्त्र तन पहनाए, कलिजुग माया विच ना तपणा। जप ज्वाला जोत अग्न लाट है। काया नगर ना रिहा

३६३
०४

कोट, एका दिसे साचा घाट है। खेल किया जो सोलां मग्घर , सिँघ सिँघासण गया पाट है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देवा अन्तिम अन्त कराई नेड़े वाट है। पुरी इन्द्र इन्द इन्द्रायण, रसना गायण गुणी गहिंद। तरसण पेखण कँवल नैण, नर हरि सदा बख्शिंद। छोटे बाले आप समझायण, प्रगट होया हरि विच हिन्द। पावे सार लोआं पुरीआं कर अकार, गुरमुख साचे संत जनां हरि आप उपजाए, दर घर साचे सच दुआरे बहिण। पुरी इन्द्र सेज सुहाया। सच सुहागी कन्त प्रभ अबिनाशी झोली पाया। मात चल्ली साची रीत, निहकलंक कलि जामा पाया। तिन्नां लोकां एका मीत, एका दूजा भउ चुकाया। सोहँ शब्द सुहागी गीत, सच सुनेहड़ा लै के आया। करोड़ तेतीस रखणा चीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटाया। छोटे बाले जा ललकार। पुरी इन्द्र करे ख़बरदार। निहकलंक कलि जामा पाया, सोहँ शब्द सच चलाया, तिन्नां लोआं बन्न्हे धार। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया, गुरमुखां हथ्थ बन्न्हे गाना। बणाए साचा राणा, थांउँ थाँईं आप बहाना। ब्रह्मा इन्द्र वक्त चुकाना। कलिजुग अन्तिम मेट मिटाना , आपे ब्रह्मा विष्न महेष करोड़ तेतीस मेट मिटाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, आपे रहे आपणे भाना। आप आपणा खेल रचाया, जोत सरूपी पहरे बाना। गुरमुख विरला रंग रंगीला रंग साचा माणा। प्रगट होए जिउँ कृष्ना जादव, बिदर सुहाए राज राजाना। आपे माई हवा आदम, अहिमद मुहम्मद मेट मिटाना। देव पुरी पुरी वड देवा। साचे गुर इक्को वेखण, नेत्र मंगण साची सेवा। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, निहकलंकी डंक वजाया, जपिए साची जेहवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ स्वासी शब्द चलाया, मदिरा मासी दजन कराया, प्रगट होया अलख अभेवा। राज इन्द्र सर्ब सुल्तान। छोटा बाला वेख होए हैरान। पल्ले बन्न्हा नाम सच धन माला, सोहँ शब्द भगवान। लोकमात विच्चों आया मार मार छालां, लगांदा आया जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान। लक्ख चुरासी पहनाए बाणा काला, खिच्च ल्याए विच मैदान। प्रभ अबिनाशी शब्द चलाया साचा राणा, चारों कुन्ट लहू मिझ वहे घाण। सुरपति राजा इन्द सहिणा पैणा, प्रभ अबिनाशी भाणा, तख्त ताज साज बाज सर्ब मिट जाण। राजा इन्द्र करे विचार। अन्तिम वेले आई हार। कोई ना दिसे पुरी इन्द्र विच सहार। छोटे बाले तेरे आई हिस्से, कलिजुग अन्तिम वार। कलिजुग जीवां मूल ना दिसे, सिर रक्खया हथ्थ करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर कलि जामा पाया, शब्द डण्डा इक्क रखाया, तिन्नां लोकां करे इक्क अकार। राजा इन्द्र नीर वहावे नैणां। माण तुट्टा ताण तुटा सभ राजे इन्द, अग्गे दिसे वहिण जिस विच वहिणा। ना कोई बणाए साची बिन्द, प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होया

विच हिन्द, करोड़ तेतीस बीस इकीस पुरी इन्द्र ना रहणा। पुरी इन्द्र जाए मिट। सिँघ मनजीत तेरी लग्गे मात इट्ट। देवी देवत हाहाकार कर पुकारन, रोवण पिट्ट पिट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका सच्चा रंग चढ़ान, उत्ते चादर पाए चिट्ट। लग्गे इट्ट नाल गारा। लहू मिझ मेल अपारा। धरत मात जाए सिंच, चारों कुन्ट चले फुहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल रचाए नींह रखाए पहली हाढ़ा। पहली हाढ़े रक्खी नींह। गुरसिख ना जाणे चंगे माढ़े, इक्क थां बहाए बक्करी शीह। बेमुख बणाए झूठे लाड़े, आप वसाए अग्ग मींह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, बल बली विच मात नींह। रक्ख नींह करे उसारी। ढहन्दी जाए खलकत सारी। वैंहदी जाए वहिंदी धारी। लैंहदी दिशा होए भारी। हथ्थीं मैंहदी नर नारी। एका गाह गैहंदी, उम्मत नबी रसूल प्यारी। इक्खी हो हो बहिन्दी। चारों कुन्ट चार यारी। इक्को वहिण पाप दी वहन्दी, रक्खे तेज धारी। लाड़ी मौत प्रभ अग्गे हो हो कहन्दी, अष्ट भुज फड़ कटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, चिट्टे अस्व अस्वारी। सच्ची नींह चार चुफेरे। सृष्ट सबाई आवे घेरे। उलटी लट्ठ हरि जी गेड़े। सृष्ट सबाई भेड़ भेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आपणी छेड़ आपे छेड़े । प्रभ पूरा मेहरवान, सच घर वास रखांयदा। प्रभ पूरा मेहरवान, दासन दास आप अखवांयदा। प्रभ पूरा मेहरवान, जोत सरूपी हट्ट काया मन्दिर रचांयदा। प्रभ पूरा मेहरवान, सोहँ शब्द स्वास स्वास जपांयदा। प्रभ पूरा मेहरवान, मात पताल अकाश, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश तन बणांयदा। प्रभ पूरा मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच्चे घर, दिस किसे ना आंयदा। ना दिसे हरि नैण मुँधारड़ा। कलिजुग क्या कोई करे हिस्से, गुरमुखां मेल हरि मीत मुरारड़ा। दिवस भागी शब्द लैणा साचा रागी, हरि साचे कन्न सुनारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मार्ग सृष्ट सबाई, अन्तिम अन्त आपे आप लगारड़ा। एका नवां हरि बंस रखाए। दूसर माता ना कोई दिस आए। पिता मां आप बण जाए। सदा रक्खे ठंडी छाए। जुगा जुगन्तर विसरे नाहे। आप बणाए आप बहाए दरगहि साची थाएँ, जिथ्थे कोई ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, अन्तिम अन्त आपणी जोती लए उपजाए। जगे जोत मिटे अंदेशा। ना कोई वरन ना कोई गोत, सोहँ देवे शब्द संदेशा। दर दरबार हरि निरँकारी, मंगण ब्रह्मा विष्न महेष शिव ना मिले किसे गण गंधरब, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सृष्ट सबाई विच प्रवेशा। उचे मन्दिर रक्खी मुनिआद, ढहिंदे जाण गुरदुआरे, मंन्दर मस्जिद शिवदवाल। सभ दे खाली होए अन्दर, मात पताल अकाश दिसण कंगाल। सच्चा नाउँ नहीं किसे डूंघी कन्दर, ना कोई

धर्मसाल। दर दर चारों कुन्ट नच्चदे फिरदे बन्दर, पया जगत जंज़ाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां करे अन्त बेहाल। कलिजुग अञ्याणया बेमुहाणयां, अन्तिम मेट मिटाणया, मिटे जगत अन्धेरा। साचे भगतां प्रभ अबिनाशी पाए फेरा। सोहँ शब्द विच मात धराए साची थित्त, अन्तिम करे नबेड़ा। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, अन्त जोत सरूपी विच लाए डेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान, सोहँ सच करे नबेड़ा। इक्क नाउँ हरि निरँकार है। इक्क थांउँ अगम्म अपार है। एका एक देवे ठंडी छाउँ, नूर नुरानी हरि दातार है। एका नईआ एका नाउँ, दूजा ना कोई मीत मुरार है। जोती जोत सरूप हरि, एका एक सर्ब टेक वसे थांउँ थां है। एका एक एक प्रितपाल। जगत भगत रखवाल। एका एक तन लग्गण ना देवे सेक, तोड़े माया जगत जंज़ाल। एका एक शब्द सरूपी रिहा वेख, अट्ठे पहर सुरत संभाल। एका एक जीआ जहान। एका एक फल लगाए काया साचे डाल। एका एक विच मात आए कर कर भेख, देवे माण ताण ग़रीब कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग एका संग चरन प्रीती जिस जन लई घाल। एका एक हरि नूर नुरानी। एका एक हरि वड सुल्तानी। एका एक हरि वड शाह शाहानी। एका एक हरि अगम्म अथाह, बेपरवाह वाली दो जहानी। एका एक दिसाए साचा राह, सृष्ट सबाई अन्तिम ख़ाली। एका एक दरगहि साची सच लगाए नाउँ, आत्म मारे शब्द कानी। एका एक नूर निरँजण नर नरायण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दिसे ना वेद पुरानी। एका एक हरि इक्क सहारा। एका एक आदि अन्त ना पारावारा। एका एक सद बबेक, साचा कन्त मीत मुरारा। एका एक सृष्ट सबाई रिहा वेख, जोत सरूपी पसर पसारा। एका एक इक्क अकेला मात, जात पात ते रहे न्यारा। एका एक हरि वसेख, ना कोई मात पित भाई भैण मीत प्यारा। प्रगट जोत नित नवित्त भगतां हित्त, शब्द देवे इक्क सहारा। एका एक चरन लाग जग जाए जित्त, एका वेखे सच दुआरा। एका एक अमृत आत्म देवे सिंच, हरया करे काया महल मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक, सद वसे बाहरा। एका एक दयाल सर्ब अकाल है। साचा रंग इक्क गुलाल, गुरमुख विरला करे भाल है। शब्द सरूपी साचा ताल, जगे जोत वस्त कमाल है। काया मन्दिर साची थाल, दीपक जगे जगत निराल है। अन्तकाल ना खाए जम काल, सोहँ शब्द दरगहि साची सच दलाल है। प्रभ पुरख अवल्लड़ी चली चाल, सृष्ट सबाई करे दो फाड़ी दाल है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साची दात वड करामात, चरन प्रीती निभे नाल है। एका एक हरि रघुनाथ। भगत सहाई सगला साथ। आत्म दर वज्जे वधाई, शब्द चलाए साची गाथ। अन्ध अन्धेर ना रहे राई, मिल्या मेल धुर मस्तक माथ। पूरन जोत गुरमुख साचे पाई, शब्द

मिल्या साचा राथ। प्रभ आप कटाए जम की फाही, जन भगतां रक्खे दे कर हाथ। पार लँघाए फड़ के बाहीं, महिंमा जगत अकथ्थना अकाथ। दरस दिखाए थांउँ थाँईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगल वसूरे जाण लाथ। आत्म मिटे दुःख सगल वसूरया। उतरी आत्म तृष्ना भुक्ख, प्रभ वेख हाज़र हज़ूरया। सुफल कराई सुलक्खणी कुक्ख, मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख, आसा मनसा प्रभ साचा पूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता मेहरवान वड सूरन सूरया। वड दाता दयावान, दयानिध है। किरपा करे हरि भगवान, कारज करे सिद्ध है। साचा देवे जीआ दान, घर उपजाए नौ निध्ध है। होया मेल भगत भगवान, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां मिलाए चरन बहाए दया कमाए, कर कर आपणी बिध है। इक्क निरँजण अलख अपार। चरन धूढ़ साचा मजन, प्रभ बख्शे किरपा धार। जन भगतां बणे साक सैण सज्जण, देवे नाम शब्द खुमारी अपार। पी पी अमृत आत्म रज्जण, सुखी सुहाए बहार। प्रभ अबिनाशी आया पड़दे कज्जण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधाए साची धार। साची धार जगत निराली। यति सति धर्म पति, दे मति रक्खे बनवाली। गति मितक मित गति, सोहँ शब्द साचा तत्त, साचे वत्त फल लग्गे साची डाली। रसना चरखा लैणा कत्त, चरन प्रीती साचा नत, शब्द सरूपी धीरज यति, गुरमुख ना दीसे कोई खाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा शब्द देवे नाम सच्चा धन माली।

३६७ ०४

❇ २१ जेठ २०११ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❇

हरि वसेरा सचखण्ड। आप कराई सत्तां दीपां नौवां खण्डां साची वंड। प्रभ अबिनाशी किरपा कर साचे हरि, गुरमुखां आत्म पाई ठंड। कर दरस जायण तर, साचा नाम मिले वर, जगी जोत भारत खण्ड। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा रिहा वंड। साचा नाम संग जाए हंढ। एथे ओथे दो जहानी कदे ना देवे कंड। आत्म जगे जोत महानी, गुरसिख आत्म ना होए रंड। शब्द चले तीर कानी, बेमुखां देवे दंड। निहकलंक तेरी सच निशानी, दिवस सुहेला जगी जोत भारत खण्ड। भारत खण्ड हरि गुसाँईंआ। शब्द चलाए साची नईआ। गुरमुख विरला प्रभ आप तरईआ। बेमुख जीव मञ्झधार रुढ़ईआ। सतिजुग तेरी सच्ची बध्धी धार, एका जोत अकार करईआ। लक्ख चुरासी गुण अवगुण विचार, आपणा भाणा हरि वरतईआ। चारों कुन्ट होणे ख्वार, छुट्टे नाता भैणां भईआ। अग्गे पैंदी डाहढी मार, धर्म राए लेखा मंगे कढ्ढ कढ्ढ वहीआ। कोई ना बेली मीत यार, ना कोई सज्जण साक सैण सईआ। ना कोई मात पित पीआ

३९८
०४

नार, झूठा नाता जगत तुड़ईआ। एका एक गुर चरन प्यार, दरगहि साची माण दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई एका धार आप चलईआ। सच तख्त हरि सुल्ताना। जोत सरूपी पहरे बाना। आपे गोपी आपे कान्हा। आपे राम श्री भगवाना। आपे करे आपणे काम, आपणा आप हरि पछाना। सद वसे अवल्लड़े धाम, प्याए अमृत सच्चा जाम, कोए ना मंगे सच्चा दाम, देवे शब्द सच्चा माणा। सुक्का हरया होवे चाम, सोहँ वजे तन दमामा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। जगत रीती आप चलाई। इक्क अटल्ल हरि रघुराई। जल थल घड़ी घड़ी पल पल दे हिलाई। कर कर वल छल, सृष्ट सबाई आप भुलाई। गुरमुखां आत्म लाया फल, चरन प्रीती जिस जन सेव कमाई। सृष्ट सबाई जाए दल, करे कराए हरि रघुराई। शब्द सरूपी चलाए हल, जड़ किसे रहण ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां कला सपूरा हाज़र हज़ूरा, आपणी वंड आप कराई। आपे पाए मात हिस्से। जोत सरूपी ना किसे दिसे। सृष्ट सबाई एका चढ़ी हँकारी विस्से। चारों कुन्ट पए दुहाई, जूठी झूठी चक्की पीसे। प्रभ पकड़ उठाए थांउँ थाँईं, सौण ना देवे ईसे मूसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, किया खेल अपर अपार, ना कोई जाणे जीव गंवार, क्या कोई करे रीसे। भारत खण्ड भरम भुलेखा लागा। प्रभ अबिनाशी तब ही जागा। गुरसिख बणाए हँस कागा। गुरमुखां सुणाए साचा रागा। फड़ फड़ धोए पिछला दागा। गुरमुख साचा आत्म साची जोत बलोए, सोहँ बन्ने तन साचा तागा। दुरमति मैल पापां धोए, जन सरनाई लागा। गुरमुख साचा निर्मल होए, चिट्टे बस्त्र पहन खलोए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी हथ्थीं पकड़े वागा। पकड़े वाग हथ्थ रक्खे डोरी। आपणे संग हरि जाए तोरी। लक्ख चुरासी विच्चों हरि करे चोरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव खुल्हाए तोड़े मोरी तोरी। खोल्हे भेव नूर नुराना। गुरमुख साचे साची सेव, हरि वडा शाह सुल्ताना। दीआ दान अलख अभेव, तन पहनाया साचा बाणा वड दाता वड गुरदेव, सतिजुग वखाया सच निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, सोहँ शब्द हथ्थ बद्धा गाना। हथ्थ बन्ने गाना सगन मनाए। गुर चरन प्रीती साची लग्न, एका राह वखाए। आत्म दीपक गुरमुख जगण, होए सच रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण नाम चढ़ाए। मिटे रोग जगत अन्धेरा। आत्म रस साचा लैणा भोग, मिटे चुरासी गेड़ा। सोहँ शब्द साचा जोग, आवण जावण मिटाए झेड़ा। होए साचा सच संजोग, वसे काया नगर खेड़ा। कर दरस हरि अमोघ, सद खुल्हा रहे वेहड़ा। ना होए कदे विजोग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आपा करे निबेड़ा। निरगुण निराहार हरि निरँकार है। एक शब्द अधार,

दूजी जोत अकार है। तीजा सर्ब विचार, चौथा पहरेदार, पंचम् पावे नाम हरि, छेवें घर सच्चा सरदार है। सतवें सति सतिवाद शब्द अनाद बोध अगाध, चिट्टे अस्व अस्वार है। अठवें उठ उठ देवे धीरज सति, साचा तत्त, रक्खे इक्क अधार है। नावें चरन नत्त बन्ने मित गति, पावे साची सार है। दसवें दर साचे घर बाहर जोत अकार, पुरख अपार भगत अधार, देवे एका सच्ची मति है। साची मति सजण सुहेले। गुरमुख साचे संत जन, इक्क दूजे दे होवण मेले। साचा देवे माल धन्न, अचरज खेल प्रभ साचा खेले। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भेव ना जाणे गुर चेले। गुर चेला चरन धूढ़ है। बणे चतुर सुजान मूर्ख मूढ़ है। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, सृष्ट सबाई दिसे कूड़ो कूड़ है। शब्द मारे साचा बाण, मस्तक लाए साची धूढ़ है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चेला कटे लक्ख चुरासी गेड़ है। साचा चेला चेतन्न रूप है। मेल मलावा साचे कन्त, प्रभ अबिनाशी साचा भूप है। पार उतारे फड़ फड बाहों, ना कोई रंग ना रूप है। एका जोत अगम्म अथाहो, आदि जुगादि सदा सदा सति सरूप है। जोत सरूपी प्रभ सच्चा वजावे नाद है। गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे शब्द सच्ची दात है। सच तख्त सच सुल्तान। उत्ते बैठा श्री भगवान। लिखाए लेख धर भेख विच जहान। सतिजुग तेरी साची मेख, नेत्र वेख हरि आप लगाए वड मेहरबान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण सच दुआर सच घर बाहर वेख वखान। वेख वखाणे हरि भगवन्ता। सर्ब जीआं बिध आपे जाणे, नर हरि हरि नर लक्ख चुरासी साचा कन्ता। आपे देवे साचा वर, बणाए साचा घर, जगत बणाए साची बणता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब लहणा आप चुकाए, शब्द गहणा तन पहनाए, देवे वड्याई साचे संता। संत सरन हरि साचे आए। कलिजुग अन्तिम प्रभ गले लगाए। जीव जन्त विच दे वड्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा अगणत गणी ना जाए। साचा संत हरि दुलारा। परम पुरख अगोचर हरि निरँकारा। पहली हाढ़ सुहाए रुत्त, पंचम् जेठ बण लिखारा। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, मात बणाए कलिजुग तेरा सच्चा इक्क चुबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सुत भेंट चढ़ाया, सिँघ मनजीत लहू मिझ बणाया गारा। सोलां मघर खेल न्यारी। करी हरि पहली वारी। देवे भगत साची दात कलिजुग अन्धेरी रात, हरि जाए पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले तेरी आप कराए आपणीं हथ्थीं उसारी। सोलां मग्घर हरि लेख लिखाया। छोटा बाला लेखे लाया। तोड़या जगत जंज़ाला, सिँघासण उप्पर हरि बिठाया। नाल रलाया सिँघ पाला, पुरीआं लोआं विच फिराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आपणे हथ्थीं आप बहाया। सिँघासण उप्पर हरि आप टिकाया। गुर संगत सारी संग रलाया। अमृत

भाण्डा भन्ने भण्डारन, सोहणा सगन हरि आप मनाया। कीता सच जगत विचारन, साचा डेरा शब्द घेरा प्रभ आप रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो सुहाए थान दया कमाए अमृत भाण्डा जिथ्थे रुढ़ाया। सोलां मग्घर हरि लिख्त लिखाई, वाक भविख्त कोई बुज्झे नाही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी शब्द सरूपी भेव खुल्हाया। साचा भेव हरि जणाया। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाया। गुर संगत करनी साची सेव, आत्म फल सोहँ मेवा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट चार चुफेर, शब्द घेरा पाया। सच धाम हरि अस्थूल। उत्ते वसे हरि कन्तूहल। गुरमुख साचा संत जन ना जाणा भूल। आप उपाए जणाए मन तन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चुकाए पिछला मूल। बिन रंग रूपी हरि शाहो वडा भूपी, हरि दिस किसे ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरा साचा वक्त सुहाए, दया कमाए सौ सौ कर्म साचा गेड़ रखावणा। पईए सरन श्री धज। होए सहाई जिउँ अन्तिम गज। छोटे बाले दया कमाई, सिँघ सिँघासण चढ़या भज्ज। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, सोलां मग्घर लिख्त लिखाई, छोटे मन्दिर वसे अन्दर दए बणाई, चढ़दे मुख रखाए दरस करना रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहाना हरि साचा सुल्ताना, पड़दे रिहा कज्ज। चढ़दे मुख चार द्वारी देवे दरस नर हरि गिरधारी। सूरज देवता करे चरन निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को गेड़ा लक्ख चुरासी मुकाए झेड़ा पहली वारी। सच घर मन्दिर हरि सच वसेरा। सच घर मन्दिर चार कुन्ट शब्द घेरा। सच घर मन्दिर, प्रभ अबिनाशी आप आपणा पाए फेरा। सच घर मन्दिर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दिसाए कलिजुग अन्तिम वेला। सच घर मन्दिर धाम अस्थूल। सच घर मन्दिर, गुरमुख ना भूल। सच घर मन्दिर, चरन प्रीती भेंटा साचे फूल। सच घर मन्दिर आपे हरि जी मां प्यो बेटा करे सूलीउँ सूल। सच घर मन्दिर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप बिराजे, ना कोई पावा ना कोई चूल। सच घर मन्दिर गुरमुख सोए प्रभ चरन द्वारी। सच घर मन्दिर देवी देवत दर करन बहारी। सच घर मन्दिर गुरमुख साचे बणे जगत पुजारी। सच घर मन्दिर ना कोई जाणे जीव हँकारी। सच घर मन्दिर साचा अमृत तीर्थ नुहावे काया ठंडी ठारी। सच घर मन्दिर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वसे सच महल अटारी। सच घर मन्दिर शब्द धुन्कारा। सच घर मन्दिर प्रभ होए आप रख्वारा। सच घर मन्दिर प्रभ अबिनाशी चारों तरफ रक्खे पहरा। सच घर मन्दिर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी साची काया, हरि वसे सदा अन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर, शब्द सरूपी डण्डा फड़, तोड़े आत्म जन्दर। सच घर मन्दिर देही माटी। सच घर मन्दिर दुरमति मैल जाए काटी। सच घर मन्दिर एका वस्त मिले साची हाटी। सच

घर मन्दिर, गुरमुख साचे लाहा साचा खाटी। सच घर मन्दिर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए सुहाए ना कोई खेल बाजीगर नाटी। सच घर मन्दिर डूंघा ताल। सच घर मन्दिर गुरमुख विरला मारे छाल। सच घर मन्दिर एका मिले नाम माणक मोती अनमुल्लड़ा लाल। सच घर मन्दिर पुरख अबिनाशी जगे जोती, सर्ब जीआं रिहा सुरत संभाल। सच घर मन्दिर ना कोई वरन ना कोई गोती, मिले एका सच्चा नाम धन माल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मन्दिर आप बणाए, विच मात सुहाए दया कमाए, विच बिठाए छोटा बाल।

✻ १ हाढ़ २०११ बिक्रमी समाध दी नींह रक्खण समें पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

कलिजुग तेरा होया स्सयापा। भरया पूर अन्तिम पापां। भुल्लया हरि साचा जापा। चढ़या रहे वडा तापा। लक्ख चुरासी भुल्ली माया रुली, भुल्लया पुरख अबिनाशी सच्चा माही, महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी करनी रिहा कर, जन भगत सहाई सगला साथा। देवे मात भगतन वड्याई। कलिजुग अन्तिम खेल रचाई। गुर दर मन्दिर मसीतां ठाकर दुआरे सर्ब ढाही। चारों तरफ होए ख्वारी, गुरमुख साचे मेले प्रभ अबिनाशी मात सुहेले। लक्ख चुरासी विच्चों भाले। संत जनां तिलक लगाए, लक्ख चुरासी करे कंगाले। बिन हरि नावें होए खाली, करन हाए हाए। गुरमुख साचे संत जनां, एका सच्चा नाम जगत रखाए। चरन प्रीती इक्क सच्ची कमाई है। मानस जन्म लक्ख चुरासी जाणा जीत, घर साचे मिली वड्याई है। अंग संग संग अंग सदा रक्खे ठंडी छाईं है। एथे ओथे लोक परलोक सज्जण सुहेला, महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, साचे सुत साची सेवा लाई है। चौथे जुग पहली वारी। करी खेल अपर अपारी। गुरमुखां देवे सच्ची सरदारी। माण ताण जन भगत दवाए, हरि बहाए टिकाए साची दिशा, सिँघ मनजीत कर त्यारी। गुरमुख पूरा सदा समरथ है। प्रभ अबिनाशी दिवस रैण अट्ठे पहर रक्खे सिर हथ्थ है। घनकपुर वासी आत्म लाहे सर्ब उदासी, कटे जम की फाँसी, देवे शब्द साची वथ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द चलाया, गुरमुख साचे लए चढ़ाया, बणाया सोहणा साचा रथ है। सोहणा रथ हरि रथवाही। सृष्ट सबाई रिहा मथ, लक्ख चुरासी पाए फाही। गुरमुखां पकड़े आपणे हथ्थ नत्थ, आप वखाए पाए साचे राही। सगल वसूरे जायण लथ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेत्र नैण दर्द दु:ख नाही। नैण मुँधार नैणी नैणा। गुरमुख रखाए बहाए सुणाए भाणा सहिणा। साचा बेड़ा नाम बणाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, गुरमुख साचे संत जनां, मिल मिल अन्तिम कलिजुग बहिणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक

नरायण नर अवतार, आपे बणे साक सज्जण सैणा। चौथी कूट हरि दर दरवाजे। एका प्रभ ग़रीब निवाजे। जिस जन तेरा साजन साजे। जोत सरूपी जामा पाए, प्रगट होए देस माझे। शब्द सरूपी डंक वजाए, गुरमुखां रखाए लाजे। एका बंक द्वार सुहाए, जूठयां झूठयां रक्खे लाजे। एका छत्र आपणे सीस झुलाए, एका एक वड शाहो राजन राजे। चौथी कूट हरि चरन पुजारी। अग्गे जोत जगे निरँकारी। वरन गोत तों वसे बाहरी। गुरमुख साचे सिँघ पाल, चरन कँवल केस करे बहारी। महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, साचा माण आप दवाए, विच मात मिली सच्ची सरदारी। छोटा मन्दिर काया तन चुबारा। विच वसे अन्धेरी कन्दर, हड्ड मास नाड़ी पिंजर बणया खेल अपारा। पवण सरूपी स्वास चलाए, शब्द सरूपी दया कमाए, जोत सरूपी करे उज्जयारा। महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, देवे निमाणयां साचा माणा, गुरमुख साचे खड़ा रहे सद तेरे आत्म दर दुआरा। आत्म दर हरि परवान। खड़ा रहे बण दरबान। आपे जाणे आपणी आण। जन भगतां रखाए लोकमात माण ताण। लक्ख चुरासी पुण छाण। निहकलंक कलि जामा पाया, नर हरि श्री भगवान। पचम परम पुरख परमात्म। सर्ब जीआं दी जाणे आत्म। कलिजुग जीव होए बेहाले जगत कंगाले, माया लग्गी वड वड घातम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सति सरूप नर नरायण सच्चा सच हरि सातम। पंचम् देवे हरि वड्याई। आपणी किरपा रिहा कर, जोत सरूपी भेव छुपाई। दर दर घर घर आवे डर, लक्ख चुरासी मानस जन्म गई हर, भुल्ली सर्ब लोकाई। गुर संगत साची गई तर, आई हरि सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सदा अतीत, गुर दर ढोहन्दा जाए मन्दिर मसीत, जोत सरूपी प्रभ खेल रचाई। आए दर सच्चे दरबारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। देवे माण सच्ची सरकारे। मात पताल अकाश तिन्नां लोकां जै जै जैकारे। सचखण्ड निवासी किया सच घर वास, असथिल सोहण हरि चुबारे। जन भगतां होया दास, लोकमात हरि जामा धारे। लक्ख चुरासी करे नास, शब्द सरूपी वाजां मारे। जन भगतां करे बन्द खलास, देवे नाम सच्चा अधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नींह रखाई। अमृत मींह वरखे गुरमुख साचे संत जनां आत्म ठंडी शांत कर, इक्क इकांत दरस आपणा आप दिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां सिक्खां दीआ माण विच जहान, जगत निशान छेवें घरे नाल भगवान, पिछे रिहा कदम उठाई। कवण जाणे हरि तेरी वड्याई। गुरमुखां हरि अग्गे लाई। पिछे हरि जी सेव कमाई। साचा देवे इक्क वर, नर हरि कोई भुल्ल ना जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त होए सद सहाई।

✻ १ हाढ़ २०११ बिक्रमी काका मनजीत सिँघ दी समाध दी नींह रक्खण समें पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

धरत मात तेरी सुण पुकार। कलिजुग झूठे अन्तिम वार। बेमुखां होए मूधे ठूठे, ना पावे कोई सार। दर घर साचे कलिजुग जीव रूठे, होए दुष्ट दुराचार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मातलोक लए अवतार। धरत मात दए दुहाई। चार कुन्ट चारों भुल्ले, लग्गी पापां कालख छाही। बेमुख करदे झूठे हल्ले, माया राणी बध्धी पल्ले, भुल्ले साचा माही। लग्गी रहे अग्ग काया कुले, कोई बुझाए नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जन भगतां कटण आया जम की फाही। धरत मात हरि दए दिलासा। एका देवे चरन भरवासा। गुरमुख साचे संत जन तेरे संग रलाए, हथ्थ फड़ाए शब्द कासा। धुरदरगाही इक्क वस्त साची संग ल्याए, जन भगतां देवे कर कर हासा। नाम रंगण इक्क चढ़ाए, जोत सरूपी रक्खे वासा। दूजा दर ना मंगण जाए, शब्द जपाए स्वास स्वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरी गोद बिठाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, छोटे बाले लेख लिखाए, बण बण आप लिखासा। बणे लिखारी लेख हरि जन भगत तरंदा। लक्ख चुरासी वेख गुरमुख साचे माण दवंदा। जोत सरूपी भेख धर, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठंदा। लक्ख चुरासी वेख कर, पूरे तोल आप करंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

४०३ ०४ साचा दर दरबार सुहाए, जोत सरूपी आसण लाए, कोई दिस ना आए मदिरा मासी पापी गन्दा। धरत मात तेरी रक्खे ४०३ ०४

लाज। शब्द सरूपी मारे वाज। सोहँ देवे साचा ताज। आप कराए हरि जी काज। प्रगट होए प्रभ देस माझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे बाले दया कमाई, सिँघ मनजीत साची सेवा आप लगाई, सृष्ट सबाई पै जाए भाज। छोटा बाला जगत निमाणा। प्रभ अबिनाशी साचा भाणा। सत्तां दीपां नाम उपजाणा। सोहँ साचा लेख लिखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका झण्डा शब्द डण्डा नौ खण्ड पृथमी आप चलाणा। सत्तां दीपां सति सतिवाद। आप चलाए शब्द दाद। भेव खुल्हाए बोध अगाध। गुरमुख साचे लए लाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नींह आप रखाए सृष्ट सबाई रक्खणा याद। सत्तां दीपा सहिज सुखदाई है। देवे नाम सच दात, भगत वड्याई है। सोहँ शब्द सच करामात, तिन्नां लोकां जै जै जैकार कराई है। एका वसे हरि इकांत, शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष, सर्ब सुखदाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली हाढ़ कलिजुग जीवां साड़, जन भगतां कर वाड़, धरत मात तेरी दात तेरे विच टिकाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वेस अनेक, जन भगतां रक्खी टेक, होए सदा सदा सहाई है। चिट्टा बाणा शब्द करामात है। हरि वडा शाहो राज राजाना, जन भगतां देवे इक्क सच्ची दात है। आपे बणे वञ्झ मुहाणा, कलिजुग

अन्धेरी रात है। जोत सरूपी हरि भगवाना, शब्द चलाए विच मात है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले लेखे लाया, जन भगतां पुच्छी वात है। छोटे बाले सच दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। अट्ठे पहर दिवस रैण रंगे रंग करतारे। दरस पेखे साचे नैण, वसे अचल अटल मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत विच संसार तेरी पैज संवारे। गुर नानक तेरी सच सवारी। शब्द सरूपी सच उडारी। रसना नाद इक्क शब्द वज्जे वारो वारी। निहकलंक प्रभ अबिनाशी पाई सार, लोकमात सच्ची उज्जयारी। सोहँ पल्ले बध्धी दात, मिल्या जोत हरि निरँकारी। छोटे बाले इन्द्रपुरी कर त्यारी। उत्तों बैठा मार झात, करोड़ तेतीस करन चरन निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत सतिजुग तेरी बध्धी साची धारी। सतिजुग बन्ने साची धारी, अमृत मेघ बरसांयदा। किरपा कर हरि गिरधारी, साची नींह रखांयदा। चारों कुन्ट फेरे बहारी, सच उसारी आप करांयदा। ख्वार होए नर नारी, हरि इट्ट नाल इट्ट खड़कांयदा। लक्ख चुरासी आई भारी, जोत सरूपी हरि जामा पांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अचरज खेल आप वरतांयदा। जन भगतां देवे शब्द उडारी, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां बेड़ा शौह दरयाए रोड़, जन भगतां पार करांयदा। साची नींह जगत निशान। सतिजुग साचे संत जनां, दर घर साचे मिलणा माण। साचा देवे नाम

४०४ ०४ धना, एका शब्द बहि के खाण। लक्ख चुरासी वडा जोधा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मन्दिर आप सुहाए ४०४ ०४

जोत सरूपी डगमगान। सिँघ मनजीत हरि दया कमाई, ना कोई जाणे जीव निधाना। ना कोई पवण ना कोई मसाणा। जोत सरूपी हरि भगवाना। बिन रंग रूपी सच टिकाणा। हरि वडा शाहो भूपी, सोहँ वजे सच निशाना। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, माया पड़दा पाए नर हरि श्री भगवाना। तेरां विसाख जन्म दवाया, सोलां मग्घर काज रचाया, पहली हाढ़ी माण दवाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी देवे साड़, करे खेल हरि महाना। सतारां हाढ़ी बन्ने गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी देवे वर, जोत सरूपी घनईआ शामा। कान्हा घनईआ हरि बनवारी। जोत सरूपी खेल अपारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा लाए दया कमाए, दर दरबार आप सुहाए, मानस जन्म लेखे लाए, मात गर्भ ना आए दूजी वारी। सिँघ मनजीत मन भया अनन्द। कलिजुग चढ़या सति सरूपी साचा चन्द। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, गुर संगत तेरा भार आपणे सिर उठाई, खुशी कराए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त आप लिखाई, बत्ती धार दए बख्शाई, माता सीर जो लाया बत्ती दन्द। पहली कूट पुरख अबिनाश। दूजी कूट हरि जी वास। तीजी कूट शब्द अकाश। चौथी कूट एका गाए रसना स्वास स्वास।

महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले जन भगतां होए आपे दास। पहली कूटे हरि आपे वंडे। दूजी कूट शब्द झण्डे। तीजी कूट आई गंढे। चौथी कूट सुहागी कन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुहागी कन्त गुरमुखां मेल मिलाया ना होए कदे रंडे। सच सुहागण नार। गुरमुख विरला मिल्या हरि भतार। वड दाता वड सूरा, दो जहानी करे प्यार। शब्द उपजाए साची तूरा। पूर्ब कर्म हरि विचार। पावे सार हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला भरपूर। सिँघ मनजीत सहिज सुभागा। मात धोया आपणा दागा। कलिजुग मोया सोया रोया, सतिजुग साचा जागा। अमृत फल साचा ल्याया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े आप चढ़ाए, आपणे हथ्थ रक्खे वागा। शब्द घोड़े देवे चाढ़। सिँघ मनजीत पहली हाढ़। इन्द्रपुरी दा साचा लाड़। करोड़ तेतीस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द दया कमाए, जोत जगाए नाड़ नाड़। जगे जोत इक्क अकालण। सिँघ मनजीत तेरा बाणा प्रभ अबिनाशी भेखाधारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, बण के आया कीती खेल जगत न्यारी, भुल्ले जीव हरि जगत संसारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाया, ना कोई हड्डीआं जाए उठालण। साची हड्डी साचा रोड़ा। लहू मिज्झ लहू गारा जोड़ा। चारों कुन्ट चार द्वारी, शब्द सरूपी फिरे घोड़ा। दौड़ा जाए वारो वारी, हरि बनवारी वेखी जाए मिट्ठा कौड़ा। जोत सरूपी शाह सवारी, पवण सरूपी नाम अधारी धुरदरगाही एका पौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घेरा आप रखाया, पहली वेर दया कमाया, साढे तिन्न तिन्न हथ्थ ना लम्मा ना चौड़ा। कलिजुग तेरी अन्त निशानी। साढे तिन्न हथ्थ साचा रथ महानी। बेमुखां मारे जिथ्थे शब्द तीर कानी। सर्बकला समरथ एका जोत वाली दो जहानी। चार कुन्ट चाढ़े रंग। चिट्टा लाल सूहा काला जन भगतां ल्या मंग। कलिजुग सतिजुग दोए जुड़, आए दौड़, शब्द घोड़ प्रभ साचे कस्सया तंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारों कुन्ट कर ख्वारी वारी वारी आपे डन्ने, भन्ने जिउँ काची वंग। कलिजुग काली रैण जगत अन्धेर है। नाता तुट्टा भाई भैण, चुक्की मेर तेर है। प्रभ अबिनाशी पाया फेरा, आप वहाए उल्टे वहिण है। प्रगट होया सिँघ शेर शेर दलेर, बेमुखां ना मिले रसना कहण है। उठ जीव जाग वक्त सुहेला। दर घर साचे लग्गा भाग, गुर संगत साचा मेला। हथ्थ पकड़े आपणे वाग, आपे गुर आपे चेला। घर घर उडदे काग, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। गुरमुखां देवे कलिजुग अवाज। आत्म जोती दीप जगाए बिन बाती बिन तेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आदि अन्त बोध अगाधी होए सज्जण सुहेला। सज्जण सुहेला साचा मीत है। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, इक्को इक्क साचा मेल मिलाई, अचरज चलाई रीत है। इक्क थां बहाए आप बणाए भैणां भईआ, लक्ख चुरासी परखे नीत है। जन

भगतां पकड़े दोवें बाहीं, काया करे ठंडी सीत है। शब्द करे ठंडी छांईं, गुरमुख साचा रक्खे चीत है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह इक्क चलाए, लक्ख चुरासी दए जगाए, गुरमुख साचे संत जनां, मानस जन्म जाणा जीत है। मिल्या जन्म जगत वणजारया। चरन कँवल कर साचा हित्त, कर दरस प्रभ परम पुरख अपारया। जामा धारे नित नवित्त, जन भगतां पैज संवारया। ना कोई जाणे वार थित्त, घड़ी पल ना किसे विचारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, मानस जन्म संवारया। मानस जन्म संवार, पार करांयदा। पावे साची सार, धर्म धरांयदा। देवे शब्द उडार, नाम जपांयदा। धुरदरगाही साची मार अवाज, धन्दे लांयदा। सोलां मग्घर कर श्रृंगार, छोटा बाला तोड़ जगत जंजाला, सिँघासण हरि बिठांयदा। मेल मिलाए सिँघ पाला, तिन्नां लोकां आप फिरांयदा। सोहँ दित्ता चिट्टा इक्क दुशाला, पड़दा उप्पर आप पांयदा। दित्ता नाम सच्चा धन माला, साची गंढु बन्न्हांयदा। इन्द्रपुरी साचे धाम बिठाला, मोर मुकट सिर टिकांयदा। करोड़ तेतीस सरन लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमांयदा। देवे वर हरि साचा वरनी वरना। गुरमुख साचा गया तर, आए प्रभ साची सरना। आप बहाया साचे गुर, चुकाया मरना डरना। निहकलंक नरायण नर अवतार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले कलिजुग वरना। गुरमुख तेरी धार, जगत न्यारी है। प्रभ अबिनाशी पावे सार, देवे शब्द उडारी है। मानस जन्म ना आए हार, लक्ख चुरासी गेड़ निवारी है। बाहों पकड़ कलि जाए तार, भरम भुलेखा दूर कराए देवे चरन प्यारी है। सोलां कर तन श्रृंगार, हरि करतार करे खेल अपर अपारी है। दर घर देवे सच्ची सरदारी है। साचा गुर हरि द्वारया। गुरमुखां मिले वर, आए चल द्वारया। अन्तिम भण्डारे देवे भर, प्रभ अबिनाशी किरपा धारया। साचा भाणा सिर ते जर, मिले हुक्म हरि बनवारया। मातलोक ना जाए मर, सदा अजीता आप रखा रिहा। आप नुहाए अमृत साचे सर, साचे पौड़े आप चढ़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, शब्द घोड़े आप चढ़ा रिहा। शब्द घोड़े कर अस्वार। मातलोक हरि करे बाहर। पल्ले बद्धी शब्द दात, ना आवे पासा हार। महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अञ्याणे, गुर संगत उठाया सिर भार। अग्गे लग्गा बाल अञ्याणा। सोहँ तागा तन पहनाणा। कलिजुग माया अग्न विच ना दगा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाणा। बेमुख होए बेमुहाणे, प्रभ अबिनाशी ना पछाणा। ना कोई दीसे सुघड़ स्याणा। घर घर दीसे लग्गी अग्ग, एका भुल्लया हरि भगवाना। दीपक जोती ना किसे जगा, ना मिल्या नाम निशाना। कलिजुग जीव हँस होए कगा, बेड़ा होए बेमुहाणा। गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाई पग्गा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे शब्द बबाणा। शब्द बबाणा सच उडारया। गुरमुख साचा

जावे पहली वारया। अग्गे साची पावे सारी, ना होए ख्वारया। आप चुकाए जम की काण। जोत सरूपी मेल मिला रिहा। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, पहली हाढ़ जन भगतां कर शब्द वाड़, सृष्ट सबाई छेड़ छिड़ा रिहा। छेड़ छिड़ाए पहली हाढ़, प्रभ साचा लयाई। लक्ख चुरासी अग्न जोत हरि देवे साड़। गुरमुख साचे लए बचाई। जोत जगाए बहत्तर नाड़, सृष्ट सबाई चबाए दाढ़, सभना रिहा भुलाई। शब्द वज्जे काड़ काड़, चारों तरफ उठे धाड़, पए सर्ब दुहाई। बेमुखां दिन आए माढ़, गुरमुख साचे बणे लाड़, प्रभ अबिनाशी सिहरा शब्द पहनाई। दर घर साचे लए वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, देवे नाम सच्ची वड्याई। नाम वडी वड्याई जगत निधान। गुर पूरे बूझ बुझाई, झुल्ले इक्क सच्चा निशान। इक्क दूजे भओ चुकाए आप श्री भगवान, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दर घर साचे देवे माण। लथ्थे जगत रोग दु:ख संताप। उतरे काया भुक्ख, मिट जाए पाप। इक्क उपजाए साचा सुख, सोहँ जपावे साचा जाप। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, दया कमाए आपा आप। सुकड़े हरे कराए रुक्ख, अमृत मुख चुआए, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, मारे तीनो ताप। अमृत मुख चुआया ठंडी धार है। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, पहली हाढ़ दिवस विचार है। जो जन चल आए सरनाया, मानस जन्म दए संवार है। प्रभ पूरे लेखे साचे लाया, ना किया कोई उधार है। भरम भुलेखा दूर कराया, शब्द घोड़े शाह सवार है। कलिजुग पोह ना सके माया, चरन प्रीती दस्से साची धार है। एका साचा नाम जपाया, मानस जन्म जाए संवार है। दर घर साचे जिस जन गाया, तन अफार सिर दा भार दे मिटाया, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, तारे नर नार है। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दर घर साचे आया देवे पैज संवार है। संवारे पैज गुर गोपाला। भगत सहाई सदा रखवाला। घर साचे मिले वड्याई, तोड़े जगत जंजाला। कटी जम की फाही, मिल्या राह सुखाला। प्रभ अबिनाशी भुल्ले नाही, सिँघ मनजीत छोटा बाला। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, लाल अनमुल्लड़ा लक्ख चुरासी विच्चों भाला। लाल अनमुल्लड़ा साचा हीरा। सोहँ बद्धा प्रभ साचे सिर साचा चीरा। अमृत साचा सिंचे, मुख चुआया साचा नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुर संगत सारी संग रलाया, कलिजुग बेड़ा बन्न वखाया, अग्गे लाया छोटा वीरा। देवे माण जगत निमाणया। प्रभ अबिनाशी साचा हरि, जिस जन कलि पछाणया। आप चुकाए अन्तिम डर, चलाए साचे भाणया। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, शब्द डोरी अन्ध घोरी आप बंधाणया। जोड़ां पीड़ां टुट्टे नाता। शब्द देवे हरि सच्ची दाता। रसना गाओ मानस जन्म लेखे लाओ, सुफ़ल कराओ कुक्ख माता। मदिरा मास रसन तजाओ, मिले मेल पुरख बिधाता। प्रभ अबिनाशी साचा पाओ, देवे सच सुगाता। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, एका वसे साचे धाम, सदा सदा इकांत

४०८
०४

इकांता। छदौण माई पौण डंक वजाया। माई गौरजां संग रल, किंगरे किंगरे मृदंग वजाया। बाल जवानी गई हंढ, अन्त बुढापा आया। वक्त लँघाया कर कर वल छल, साचा राह किसे हथ्थ ना आया। दुक्खां रोगां सुकाया काया धड़, पवण सिर हिलाया। पवण मसाण बणाया साचा गढ़, घर साचे आसण लाया। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी अन्दर वड़, शब्द डण्डा मगर लगाया। कोई ना सके अग्गे अड़, विच्चों काया अन्दर बाहर कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी ल्या फड़, मानस जन्म लेखे लाया। बिधना लिखी रेख हरि मिटांयदा। दर साचे लग्गी मेख, दया कमांयदा। जोत सरूपी धारे भेख, गऊ ग़रीब निमाणयां साचा माण दवांयदा। प्रभ अबिनाशी चारों कुन्ट रिहा वेख, पड़दा उहला ना कोई रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे आं माण दवांयदा। खिट्टा रोग करे नास। शब्द सरूपी करे वास। नाम जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शुक्ला किशना पक्ख सुफ़ल कराए, दु:ख दर्द मिटाए, हड्ड नाड़ी पिंजर मास। लेखा लिखणहार आपे जाणदा। आपो आपणी वार सर्ब पछाणदा। कदे जित्त कदे हार, खेल गुण निधान दा। फड़ फड़ बाहों जाए तार विच संसार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल श्री भगवान दा। जोत सरूपी प्रभ अबिनाशी धार भेख, भरम भुलेखा दूर कराउणा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, साचा माण आप दवाउणा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, पूर्ब कर्म आप कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म विजोगा आपे आप विच मात वरताउणा। बालक माता सीर बत्ती धार है। दूई द्वैती पर्दे चीर, पावे आपणी सार है। इक्क चलाए शब्द तीर, पंजां चोरां रिहा मार है। अमृत वगे सोमा नीर, चले इक्क फ़ुहार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे बन्ने तेरी धार है। सतिजुग साचे धार बंधाई। गुर संगत रल मिल दयो वधाई। जगे जोत होई रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सच समाधी तेरी आप बणाई। चार जुग हरि आप वखाणे। जोत सरूपी पहरे बाणे। कलिजुग भुलाए राजे राणे। जन भगतां संग सद खुशीआं माणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधाने। साची नींह दए उसार। पहली वार सतिजुग तेरी साची धार। सति पुरख निरँजण दर्द दु:ख भय भंजन, दीआ वार चार कुन्ट चार चुफेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सिर आपणे चुक्कया भार। दूजे वार कर उसारी। प्रभ अबिनाशी चढ़े खुमारी। त्रेते तेरी आई वारी। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्ट सँघारे शब्द खण्डा मारे, बैठ सच अटल्ल अटारी। तीजा वार हरि चुणाया। सोहणा मन्दिर अन्दर आप रखाया। चार कुन्ट अन्धेर डूंघी कन्दर, द्वापर दीपक आप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजे जुग वाहवा साचा भाग लगाया। चौथी वारी चार द्वारी।

४०८
०४

प्रभ अबिनाशी वेखे विगसे चारों तरफ कर विचारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी उत्ते बध्धी धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा घेर आप बणाए, खुल्ला वेहड़ा जगत कराए। करे खेल अपारी। पंचम् वार पत परवाना। साम वेद हरि बद्धा गाना। तन पहनाए चिट्टा बाणा। सतिजुग साचे वक्त सुहाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा। छेवां वार हरि अछल्ल अछेदा। आपे जाणे प्रभ आपणा भेदा। माण गंवाए रिग वेदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी करे खेदा। सतवां वार सहिज सुभागा। वेद युजर सोया जागा। सत्तां दीपां बद्धा सुच्चा धागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्त जुगा जुगन्त सृष्ट सबाई हथ्थ आपणे रक्खे वागां। अठवां वार उठ उठ वेखे। जोत सरूपी हरि धारे भेखे। वेद अथर्बण ऐड़ा अल्ला नूर, हरि लाए लेखे। सर्बकला भरपूर, औलीए पीर कुतब गौंस मिटाए शेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठवें वार कर विचार, वेद अथर्बण कलिजुग तेरी काली धार मिटाए रेखे। नौंवां वार नौ दर ठाक रहन्दा। इक्क बणाए सोहणा सुच्चा घर, छोटा बाला विच बहिंदा। नौ खण्ड पृथ्मी विच मात माण रखंदा। दित्ती नाम शब्द दात वड करामात पुरी इन्द्र करोड़ तेतीस जपंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौवां वार नौ दर धरत मात तेरा इक्क घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मनजीत तेरी गोद साचे आसण लांयदा। उत्ते चले फेर उसारी। करे खेल हरि गिरधारी। पुरान अठारां लेख लिखारी। चार वरनां अठारां बरनां बण पुजारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत बणाए सच्ची इक्क अटारी। अठारां पुरान पुरान अठारां। मिटदे जाण संग चार यारां। गुरमुख साचे संत जनां, हरि आत्म देवे साचा सीर साची धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच उसारी आप कराए उत्ते वार देवे अठारां। वार अठारां औखी घाट। लक्ख चुरासी जाए पाट। जन भगतां मस्तक जोती निकले लाट। सतिजुग खुल्ले एका साचा हाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गहणा तन पहनाया, सिँघ मनजीत शब्द पाट। नौ निधां हरि उपजंदा। अठारां सिद्धां वस करंदा। दोहां धिरां मेल कर, एका बणत रखंदा। साचे दर दरबार जगत जीआं नेत्र आप वखंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परम पुरख परमेश्वर शब्द डोरी बन्न लटकाया, माल धन अन्दर बन्द करंदा। छे शास्त्र भेव खुलंदे। छत्ती राग संग रलाउँदे। अट्ठे पहर हरि जी ध्याउँदे। दोहां धिरां मिल्या मेल, साचा नाम रखाउँदे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक लोकमात पताल अकाश निरगुण सरगुण रूप एका धाम वखाउँदे। चरन कँवल प्रभ साचा पाया। अमृत आत्म साचा सीर प्याया। प्रभ अबिनाशी दाना बीना, सोहँ साचा नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि कृपाला आपणा भेख वटाया। चरन कँवल प्यार, नौ निध पांयदा। एका मिले साची धार, रिद्धां सिद्धां

वस करांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। जोत सरूपी कर अकार, विच संसार हरि दातार, जन भगतां साचे रंग रंगांयदा। देवे शब्द अधार हउमे हँगता रोग निवार, साचे धाम वसांयदा। मानस जन्म ना आवे हार, जोती जोत सरूप हरि, आत्म जोती मेल मिलांयदा। चरन कँवल मन भए अतीता। उप्पर धवल गुरमुख साचा जाए बलि, काया करे ठंडी सीता। जोत सरूपी हरि मवल, लक्ख चुरासी परखे नीता। गुरमुख उपजाए जोग कमाए सरन लगाए, आप बणाए फुल्ल कँवल, बण बण जाए साचा मीता। जोती जोत सरूप हरि, मातलोक हरि जोत धर, एका शब्द कन्न सुणाए, सोहँ साचा गीता। हरि चरन गुरमुख विरला मस्तक नूर सुहांयदा। जोत सरूपी धरनी धरन, लक्ख चुरासी मानस देही जोड़ जुड़ांयदा। ना कोई जणावे गोत वरन, एका रंगण रंग नाम चढ़ांयदा। नूर नुरानी एका साची जोत, जीवां जन्तां विच टिकांयदा। जन भगतां दुरमति मैल रिहा धोत, निज घर आसण साचे लांयदा। बेमुख घर घर रहे रोत, बाहों पकड़ ना कोई उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क खुल्हाए साचा दर, शब्द देवे साचा वर, गऊ ग़रीब निमाणयां फड़ फड़ राहे पांयदा। हरि चरन प्रीत मन भए अनन्दा। नेत्र नीर हरि साचा बरसे, मिले मेल गुर गोबिन्दा। प्रभ अबिनाशी कर तरस, धरे जोत अन्त कलिजुग दहिंदा। अमृत आत्म मेघ रिहा बरस, जन भगत बणाए साचा बन्दा। जोती जोत सरूप

४१० ०४ हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचा माण दवाए, सरन लगाए सुरपति राजे इन्दा। हरि चरन सद बलिहारी। आदि अन्त ४१० ०४

जुगा जुगन्त साध संत, प्रभ अबिनाशी जाए तारी। मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म देवे नाम खुमारी। जगत बणाए साची बणत, तन करे सोलां शृंगारी। जगत महिंमा सदा अगणत, गुरमुख तारे नर नारी। कलिजुग तेरी वार अन्त, निहकलंक नरायण प्रगट जोत हरि गिरधारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट चार चुफेरे, शब्द सरूपी करे वाड़ी। हरि चरन हरि द्वार। गुरमुख साचा संत जन, विरला करे विचार। साचा मिले नाम धन, देवे हरि निरँकार। शब्द सुणाए इक्क कन्न, दूई द्वैती देवे साड़। भाण्डा भरम देवे भन्न, जोत जगाए बहत्तर नाड़। पंजां चोरां लाए डन्न, झूठी कढाए बाहर धाड़। जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द अन्दर देवे वाड़। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए। दया कमाए कलिजुग जीव ना कोई लाए संन्ह। हरि चरन हरि नैण मुँधारा। जोत सरूपी खेल अपारा। नेत्र नैण दोए पेख, वेखे रंग अपर अपारा। आप खुल्हाए साचा भेख, भगत जनां हरि आए दुआरा। जोत सरूपी घर घर बैठे, जगत खेल अपर अपारा। जोत सरूपी सच वस्त हरि झोली पाए, गुरमुख विरला बणे जगत वणजारा। हरि चरन जगत रलाया, जन भगतां मेल मिलाए, प्रभ अबिनाशी पुरख बिधाता। आत्म जोती

दीप जगाए, बैठा दिसे इक्क इकांता। गुरमुख साचे लए जगाए, आत्म मिटे अन्धेरी राता। करे खेल प्रभ अबिनाशी त्रिलोकी नाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे जायण तर, चरन धूढ़ लागे माथा। हरि चरन प्रभ दी जोती। गुरमुख गुर एका गोती। प्रभ चरन हरि दया कमाए, दुरमति मैल जाए धोती। आप आपणे रंग रंगाए, एका साचा संग रखाए, गुर गोबिन्दा एका दात एका जोती। शब्द खण्डा आपणे संग रखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट लक्ख चुरासी आप उठाए सोती। हरि चरन तोड़े जगत जंजाला। हरि चरन आप चढ़ाए शब्द घोड़े, फल लगाए साचे डाला। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े, भेख वटाए वेस कराए चिट्टा सूहा पीला लाल काला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा हल चलाए सोहँ रक्खे तिक्खा फाला। हरि चरन जग साचा मन्दिर। हरि चरन जोत जगाए, प्रभ साचा अन्दरे अन्दर। करे रुशनाए हरि रघुराए, काया डूंघी कन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल वड पताल किसे हथ्थ ना आए उचे टिल्ले, लभ्भ लभ्भ थक्के गोरख ते मच्छन्दर।

✻ ७ हाढ़ २०११ बिक्रमी तेज भान दे गृह मेरठ छाओणी ✻

४११ ०४ निरगुण नर हरि नर हरे। सरगुण रूप कर अकार, जोत सरूपी खेल करे। भरम भुलेखा जगत विचार, अचरज खेल प्रभ आप करे। लक्ख चुरासी होई पार, गुरमुखां सिर हथ्थ धरे। पूर्ब कर्म कर विचार, देवे साचा नाम वरे। पंजां तत्तां मारे शब्द मार, एका वखाए सच घरे। जगाए जोत अपर अपार, आत्म खोल्ह सच दरे। अन्तिम अन्त ना आए हार, हरि चुकाए जम डरे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत आत्म भण्डारा आप भरे। निरगुण होया हरि मेहरबान। सरगुण रूप धरे भगवान। दोहां जोती इक्को गोती, बणे पुरख सुजान। लक्ख चुरासी रही सोती, धरे भेख हरि कृष्ना कान्हा। आप मिटाए वरन गोती, ऊँच नीच ना कोई रंक राजान। जन भगत बणाए साचे मोती, देवे माण गुण निधान, वाली दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण रूप अगम्म, भेव कोई ना पांयदा। आवे जाए ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग समांयदा। एका वसे साचे घर, दूजे दर गुरमुख आत्म दर खुल्हांयदा। जोत सरूपी नूर कर, हरि साचा डगमगांयदा। आत्म खोल्हे साचा सर, सच तीर्थ इशनान करांयदा। एका रूप एका गोत नर हरि हरि नर, वरन बरन विच कदे ना आंयदा। जो जन साची सरन गए पड़, प्रभ अबिनाशी आप चुकाए मरना डरना, लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। जन भगतां खोल्हे हरना फरना, आपे जाणे आपणी ४११ ०४

करना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क अकेला रंग नवेला जगत दुहेला, जन भगतां मेला घर सच वखांयदा। निरगुण रूप नूर जोत अकार है। सरगुण रूप सच पछाणे वरते विच संसार है। शब्द देवे जगत बबाण, गुरमुख साचा होवे विच अस्वार है। बेमुखां अन्तिम आई हार, कलिजुग तेरी अन्तिम दिसे काली धार है। जगत विछोड़ा साचे कन्त, नर नारी होए ख्वार है। भुल्ले फिरन चेला गुर, काया अग्न अन्गयार है। गुरमुखां आत्म सदा भुक्खी, मिले दरस हरि निरँकार है। अट्ठे पहर रहण सुखी, जगे जोत अगम्म अपार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जन भगतां आए चल द्वार है। आए चल द्वार बण भिखारीआ। पावे साची सार, मंगण चरन प्यार, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। ना कोई दिसे ठग चोर यार, गुरमुख साचे संत जनां, कर कर वेखे विगसे कर विचार, नर हरि हरि नर सच्ची सरकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण नाम चढ़ाए, ना अन्तिम पारावारया। जुग जुग बाण भगत गिरधारी। दवाए माण जगत वारो वारी। धुरदरगाही सच फरमाण, एका शब्द नर निराहारी। किरपा कर हरि भगवान, जन भगत बणाए चरन भिखारी। आदि जुगादि निरलेपया। जन भगतां देवे माण विच जहान, शब्द सुरत काया तन लपेटयां। एका बख्शे चरन धारी, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, गुण निधान हरि भगवान, परम पुरख चतुर सुजान, सर्ब जीआं करे जाण पछाण, आपे

खेवट आपे खेटयां। जोती जोत सरूप हरि, नर साचा मात पित करे हित्त नित नवित्त, जन भगत बणाए साचे बेटयां।
४१२ ०४
साचा मिटया कलि अंध्यारन। पाए नर हरि घर साचे सारन। देवे नाम जगत वड्याई, तोड़े किला आत्म हँकारन। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्त आप बणाए साची धारन। साची धार जगत चलांयदा। गुरमुखां कर प्यार, माण दवांयदा। सति पुरख निरँजण अगम्म अपार, दीपक जोत इक्क जगांयदा। भरम भुलेखा हउमे ममता रोग निवार, साचे लेख लिखांयदा। कलिजुग जीव होए गंवार, झूठे धन्दे लांयदा। जन भगतां देवे नाम खुमार, शब्द गहणा तन पहनांयदा। ऊँच नीच ना करे विचार, राउ रंक शाह सुल्तान वड बली बलवान, एका धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत देवे वड्याई, दरगहि साची साचे धाम एका एक बहांयदा। साचा धाम हरि अपारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। कलिजुग तेरा अन्तिम खेल, गुरमुख साचा नेत्र पेखे, सृष्ट सबाई भरम भुलेखे, हरि प्रभ लिखे लेखे, दर दर घर घर होए ख्वारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत नर नरायण नैण मुँधारी। माया बंधन जगत हरि बाधा, आत्म रहे कंगाल है। गुरमुख विरले प्रभ अबिनाशी लाधा, आत्म देवे अनमुल्लड़ा लाल है। रसना गुण गहर गम्भीर हरि साचा अराधा, फल लगाए साचे डाल है। जोत सरूपी माधव माधा, सद होए रखवाल है। आपे बख्शे पीआ खाधा, सद रिहा

सुरत संभाल है। शब्द चलाए बोध अगाधा, चले जगत अवल्लड़ी चाल है। जिउँ कृष्ना जाधव जाधा, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां करे माला माल है। जगत माया अन्धेरी रैण। अट्ठे पहर दिवस रैण, मनमुखां खाए बण बण डैण। आत्म रहे धूंआंधार, ना किया लैण देण। प्रभ दर साचे एका मिले आत्म सुखा, दरस दिखाए तीजे नैण। सुफ़ल कराए मात कुक्खा, आपे बणे साक सैण। इक्क रलाए सुक्खा रुक्खा, गुरमुख ना पए डूंघे वहिण। लहणा देणा जगत अपारा। भाणा सहिणा हरि गिरधारा। गुर संगत साची मिल मिल बहिणा, नर नारी चरन प्यारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण ताण विच जहान दवाए, सोहँ शब्द गुरमुख बन्ने सिर दस्तारा। सोहँ शब्द सिर साचा चीरा। लाल अनमुल्लड़ा गुरमुख साचा हीरा। एका रंग रंगणा हरि रंग, जिउँ रविदास चुमारे गंगा कसीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म धीरज यति तत्त सति सति लिखाए अमृत प्याए साचा सीरा। अमृत साचा सीर हरि मुख लगाए। दूई द्वैती शरअ शरायती, हउमे कड्ढ
विच्चों पीड़, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाए। ना वेखे हस्त कीड़, एका रंग सर्ब समाए। वेले अन्तिम कटे भीड़, जन भगतां होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बध्धी कलिजुग बीड़, बेड़ा आपणे कंध उठाए। आपणे कंध चुक्के हरि भार। जोत सरूपी जामा धार। मातलोक हरि जामा पाया, चिट्टे अस्व हो अस्वार। सोहँ शब्द संग ल्याया, दोवें रखीआं
४१३ तिखीआं धार। नाम खुमारी रंग रंगाया, पंचम् जेठ कर विचार। सदा सदा अंग संग होए सहाया, जन भगत ना डुब्बे ४१३
०४ विच मँझधार। वड सूरा सरबग्ग आप अख्वाया, आपे नैण मुँधार। शब्द घोड़े हरि तंग कसाया, चार कुन्ट मारे इक्क उडार। ०४
लक्ख चुरासी काची वंग हरि भन्न वखाया, दर दर होए ख्वार। गुरमुखां भुक्ख नंग गंवाया, अमृत आत्म भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि आपे जाणे, आदि जुगादी सद ब्रह्मादी, शब्द अनादी वेखो वारे वार। जन्मे जन्म जन्म बहु भरमे। एका हरि सर्ब जीआं दे जाणे कर्मे। ना कोई जाणे जीव गंवार, एका एक साचा धर्मे। अन्तिम होए तन सवाह, एका जोत आत्म ब्रह्मे। चारों कुन्ट कलिजुग तेरी तुट्टी बांह, कलिजुग जीव होए निहकर्मे। किसे मिले ना कोई थां, जूठे झूठे भरमे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए, ना मरे ना मर मर जन्मे। जन्म मरन हरि गेड़ा कटे साचे सर सरोवर आत्म इशनान कराए, ना कोई तीर्थ ना कोई तट्टे। एका जीआ दान दवाए वसे घट घटे। एका नाम निशान झुलाए, लक्ख चुरासी आत्म फटे। जन भगतां शब्द बबाण चढ़ाए, आत्म जोत जगाए लट्ट लट्टे। गुण निधान हरि दया कमाए, विरला गुरमुख दर घर साचे लाहा खट्टे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द दात हरि झोली पाए, भाग लगाए झूठी काया मट्टे। झूठी काया मिटी कच्ची वंग। लक्ख चुरासी आत्म होई भंग। माया

राणी अंक सहेली जगत दुहेली, ना देणा साचा संग। सद वसे इक्क अकेली, दिखाए आपणा रंग। जन भगतां मेल हरि साचा मेली, मानस जन्म ना होए भंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक कलि जामा धार, जोत सरूपी कर अकार, करे खेल वड दाता सूरा सरबंग। नूर नुरानी जोत इकागर। आप जगाए दया कमाए, मिटी काची गागर। अमृत सर सरोवर वगाए नीर, साचा दया नंद वड साचे सागर। सतिजुग साची नींह रखाए, छोटा बाला अग्गे लाए, प्रभ अबिनाशी आप दया कमाए, निर्मल कर्म करे उजागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा तेज आप कराए, शब्द सरूपी हट्ट खुल्हाए, गुरमुख विरला बणे सुदागर। चार वरन जगत वणजारे। दर दरवेशी ब्रह्मा विष्न महेष, जोत सरूपी नैण मुँधारे। गणपत गणेशी रिखी रखेशी, मनी मनेशी चरन पधारे। दर दरवेश जोत प्रवेश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपारे। काया जगत जंज़ाला, झूठा धन माला, वजा हँकारी जन्दर। ना कोई होए विच दलाला, अट्ठे पहर आत्म दिसे कंगाला, दहि दिश उठ धाए, जिउँ दर दर भौंदे बन्दर। एका हरि सच्चा वेले अन्तिम होए सहाया, जोत जगाए जन भगतां काया आत्म साचे अन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिटाए अन्धेर डूंघी कन्दर। हरि चुकाए मूल वक्त सुहांयदा। जुग जुग ना जाए भूल, जन भगतां संग निभांयदा। बण शंकर शिव त्रिसूल, दुष्टां मार मिटांयदा। हरि साचा कन्त कन्तूहल, राम रमईआ आप अखवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कान्हा घनईआ भेख वटांयदा। भेख धर श्री भगवाना। नैण मुँधारी साचा कान्हा। लक्ख चुरासी वेले द्वापर, आपणी हथ्थीं बद्धा गाना। जोती जोत सरूप हरि, आपे खेल करे कान्हा। कान्हा घनईआ राम मुरारी। करे खेल अपर अपारी। एका घर एका दर, वेख विचारे पावे सारी। घर साचे जाण तर, प्रभ चरन सरन निरँकारी। आपणा कर्म अन्तिम जाण हर। आत्म भरया इक्क हँकारी। दरोना चारज साचा गुर, दोहां किरपा रिहा धारी। दरोना गुर वड बलवान। दोहां धिरां फड़ फड़ सिध्धा दस्से इक्क निशान। आपे गज आपे गृह, करे खेल हरि भगवान। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां चुकाए अन्तिम जम की कान। आत्म कढ्ढे वड हँकार, वेखे खेल कृष्न मुरारी। द्वापर तेरी अन्तिम वारी। वेखे खेल कृष्न मुरारी। रक्खे इक्क चरन प्यारी। दर दुर्योध्न आत्म हँकारी। देवे बिदर सच्ची सरदारी। बिप्पर सुदामा हरि जी तारी। द्रोपत नार ना होए ख्वारी। दुरबाशे तन करे खुमारी। अन्तिम डिग्गा प्रभ चरन द्वारी। पंजे पांडो पैज रखारी। श्री नर हरि हरि नर गिरधारी। दुरबाशे हँकार ना भावे, एका पासा दिसे हारी। एका सोहण बिदर चुबारे, एका कुली सुत्ता पैर पसारी। आप सुहाए साची रुत्ते, कँवल नैण नैण मुँधारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारी। दरौना चारज वड वड हंनता।

दोहां बणाए साची बणता। कराए खेल मिलाए मेल, प्रभ अबिनाशी साचा कन्ता। अन्तिम लाए धकेल, धर्म राए दी घल्ले जेल्, बेमुख जीव झूठे जन्ता। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत आदिन अन्ता। अगम्म अपारी खेल करांयदा। वड संसारी भेव छुपांयदा। जूए बाजी पांडो हारी, नग्न नार माण दवांयदा। दुर्योधन पासा आया हारी, पैज आपणे हथ्थ रखांयदा। दोहां धिरां वारो वारी, आपे मेटे मेट मिटांयदा। बणे सार्थी हरि गिरधारी, वाह वाह सोहणा रथ्थ चलांयदा। एका भगत करे अस्वारी, आप अर्जन नाम रखांयदा। ग्यारां कशूणीआं लैणी रक्ख, सत्तां संग लड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे संग समांयदा। दुर्योधन अन्तिम आई हार। सथ्थर लथ्थे भाई करन दरोना सच्चे यार। वेले अन्त ना कोई सहाई, रैण अन्धेरी सिर अन्तिम छाई, ना कठे अस्वार। अस्वथामा माया रुला, दुर्योधन हाहाकार सुणाई, दरोणा सुत सुणे पुकार। पकड़ उठावे दोवें बाहीं, जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपार। अस्वथामे किरपा धारी। दुर्योधन उठाया वड हँकारी। तख्त ताज ना कोई दीसे, जगत मिट गई यार यारी। एका मौत आई हिस्से, दर घर साचे होए ख्वारी। आपणा भेव किसे दस्से ना, जंगल जूह विच पहाड़ी। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, करे खेल भारत वर्ष, जुग द्वापर पहली हाढ़ी। दुर्योधन करे पुकार, नीर वहांयदा। अन्तिम आई हार, तख्त ताज गवांयदा। पंजे पांडो होए बलकार, सिर हथ्थ कृष्न रखांयदा।
४१५ ना कोई दीसे सिपासलार, सभ ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। अस्वथामे कर विचार, तेरी चरनी सीस निवांयदा। पंजे पांडो एका ४१५
०४ धार, आपणी हथ्थीं मार मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुगां जुगां दी साची बाण आपणी आप चलांयदा। अस्वथामा ०४
दए दिलासा। दुर्योधन उठे कर कर हासा। हरि जी वेखे जगत तमाशा। मौत लाड़ी जगत दुहागण, घर घर फिरदी मूल ना डरदी, हथ्थ विच फड़या कासा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल आपे जाणे सृष्ट सबाई करे नासा अस्वथामे किरपा धारी। आए चल गनपत द्वारी। शिव शंकर विच्चों आया बाहरी। वज्जा संख नाद धुन अपारी। हथ्थ त्रसूल नील कंठ फड़ी, करे खेल अपारी। होया युद्ध ढाई घड़ी, अस्वथामा वड बलधारी। जोती जोत सरूप हरि, आप मिटाए सल भारी। शिव शंकर होए दयाला। अस्वथामा मंगे वर, देवे वर गुर गोपाला। ना जन्मे ना जाए मर, प्रभ अबिनाशी होए रखवाला। साचा मंग वर बाण चलाए, रैण अन्धेरी होए जंग ना कोई हटांयदा। लहू मिझ वगी गंग, तिन्न कशूणीआं मार मुकांयदा। द्रोपत सुत पंज, अंग अंग कट वखांयदा। एका एक बलधार कर विचार, दुर्योधन हँकारी अग्गे आण टिकांयदा। वेख विचार अन्तिम आई हार, बेड़ा पाप बन्न लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए शब्द दमामे आत्म चोट लगांयदा। मिटी रैण भहया सवेरा। चारों कुन्ट पैण वैण, उलटा गिड़या गेड़ा। द्रोपत सुत ना दिसे नैण, एका चल्लया साचा झेड़ा। एका

लग्गी अर्जन कहण, अन्तिम वेला आ गया नेड़ा। औखा होया भाणा सहिण, कौण बंधाए मेरा बेड़ा। नाथ त्रैलोकी हरि वेखे वेख वखाए नैण, आप मुकाए जगत झेड़ा। अर्जन तन आत्म बिल्लाया। कवण जाणे तेरे गुण, अचरज खेल मात वरताया। आपे मारे चुण चुण, कोई ना किसे सके बचाया। जोती जोत सरूप हरि, एका धुर फ़रमाण अर्जन आख सुणाया। अर्जन सुण कर विचार। अस्वथामे ना आवे हार। मिल्या वर सच्चे दरबार। सुत ब्राह्मण दरोणा गुर, कर्म विद्या वड भण्डार। उची दिसे बुध ना करे कोई युद्ध, जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख धारे कर कर विचारे प्रभ पाए साची सार। साचा बचन हरि सुणाए। अस्वथामा ना जितया जाए। गणपत गणेश रिहा मनाए। साचा मंगया एका वर, ना कोई मारे ना मर जाए। जोती जोत सरूप हरि, दे मति रिहा समझाए। अर्जन उठ उठ बलधार। दोवें जाईए चरन द्वार। ब्राह्मण गुर गुर ब्राह्मण बण भिखार। जोती जोत सरूप हरि, एका राह आप वखाए, अस्वथामा बचन जाए हर। अससथामा गए दुआरे। इक्क अर्जन दूजा कृष्न मुरारे। करे खेल अपर अपारे। देवे वड्याई विच संसारे। दोए जोड़ करे प्रनाम, पंडत ब्राह्मण गुरू प्यारे। जोती जोत सरूप हरि, भगवान मंगण जाए जीआ दान, कर भेख कृष्न मुरारे। मंगया दान बण भिखारी। महांभारत युद्ध ना होए, जे कोई बचया रहे जीव संसारी। विपर ब्राह्मण मंगी मंग, देवे दर द्वारी। झूठा नाता जगत संग, पूर्ब करो विचारी। जोती जोत सरूप हरि, मंगी मंग आए चरन सरन गुर धारी। दीआ वर जीआ दान। मुड़ आए घर अर्जन, भगत संग भगवान। अन्तिम वेले गया हर, छुटयां तीर इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप मिलाए दया कमाए, नर हरि श्री भगवान। वज्जा तीर अन्तिम काला। हरि जू होए आप रखवाला। अन्तिम वेले संग सुहेला, पावण गया गल विच माला। ना होए वक्त दुहेला, साचा मेला करे खेल जगत निराला। जोती जोत सरूप हरि, साचा बचन आप सुणाए, दयानिध हरि दया कमाए, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले, हरि होए आप रखवाला। द्वापर अन्तिम वार वर घर पांयदा। गया सच द्वार, जोती मेल मिलांयदा। एका जोत सच अकार, जगत अकारा आप करांयदा। आपे पुरख अगम्मड़ा करतार, नर नारी विच समांयदा। काया देही झूठा चमड़ा, दीपक देही सति टिकांयदा। देवे नाम सच्चा दमड़ा, एथे ओथे दो जहानी सदा संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, अस्वथामे साचे जामे कलिजुग अन्तिम वेले आपे पांयदा। अन्तिम कलिजुग हरि करतार। नर नरायण ल्या अवतार। चार वरनां एका बहिनी, एका शब्द उडार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां तराए सदा संग कमाए, ना आए कदे हार। साचा जामा जन्म दवांयदा। पूर कराए आपणा कामा, पिछला लेखा आप चुकांयदा। एका दाम सच्चा हरि नाम, ना कोई कोल रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, घनईआ शाम दीपक

४१६
०४

जोत आप जगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेर विछड़यां मेल मिलांयदा। विछड़े मेल मिलाए हरि आण। आपणी सरन लगाए, चुकाए जम की कान। दरगहि साची माण दवाए, वड शाह हरि राजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जन भगतां देवे वड्याई, सच प्रीत चरन लगाई, नाम उपजाई तेज भान। तेज भान जगत प्रकाश। आत्म अन्धेर जाए विनास। सोहँ शब्द चले स्वास स्वास। जोत सरूपी काया मन्दिर साचे अन्दर, नाम सरूपी पाए रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ ग़रीब निमाणयां जगत निताणयां, अट्ठे पहर होया रहे दास। होए दास नीकन नीका। एका हरि भगवान, सर्ब जीआं का। देवे नाम जगत रस फीका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तक लगाए सोहँ शब्द साचा टीका। तिलक ललाटी मस्तक जोत। औखी घाटी काया माटी, देवे नाम ना आवे तोट। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, एका नाम हरि का राटी, देवे शब्द हरि इक्क जोत। दूई द्वैती काया पाटी, मिल्या नाम साचा हाटी, हउमे कढ्ढे झूठा खोट। नेड़े आई कलिजुग वाटी। रसना रस साचा चाटी। कलिजुग जीव अन्धेरी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई खेल बाज़ीगर नाटी। एका दए शब्द भण्डार, अट्ठे पहर भरी रहे शब्द पोटी। शब्द भण्डारा हरि जी वंडे। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे। लक्ख चुरासी होई रंडे। नाम निधान हरि भगवान हो मेहरवान, भगत जन जन भगतां वंडे। प्रगट होए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूती दुष्ट पखण्डी आप कराए खण्ड खण्डे, चलाए इक्क चण्ड प्रचण्डे। नेत्र नीर नीर निराला। मिटे अन्धेरी रैण पड़दा काला। अग्गे दिसे नर नरायण, चिट्टा बस्त्र दोशाला। चुकाए लहिण देण, करे माल माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीत जो जन पाले, फल लगाए साचे डाला। चरन सरन हरि रंग, सरन सरनाई है। काया चढ़े साचा रंग, आत्म दए वधाई है। कलिजुग वहन्दी धार पार जायण लँघ, इक्क ओट जिस रखाई है। पवन घोड़े हो अस्वार, हरि दातार आपे लए बचाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सच्ची सतार हरि निरँकार गुरमुख साचे संत जनां आत्म रिहा वजाई है। उपजे धुन सच्ची धुन्कार। लए पुकार सुण, हरि गिरधार। मातलोक जन साचे चुण, आप बहाए चरन द्वार। लक्ख चुरासी छाण पुण, इक्क कराए सच्चा नाम वणज वपार। कवण जाणे हरि तेरे गुण, करे खेल जन भगतां मेल, नर हरि सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे साचा वर, जो जन आए चरन द्वार। शब्द नाम अपार, गुरमुख विरला पाए। उतरे पूरे तोल, रक्खे इक्क सरनाए। लोकमात ना जाए डोल, प्रभ रक्खी ठंडी छाए। आत्म पड़दे खोल्ह, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन रखाए। जो जन शब्द रसना रिहा घोल, सोहँ शब्द रसना गुण गीता। आपे बणे हरि साचा मीता। बाणा

ताणा आपे तणे, आपे परखे नीता। जन भगत लोकमात सद रहे, आप चलाए साची रीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, काया करे ठंडी सीता। भिन्नड़ी रैण जगत वणजारी। हरि दर्शन देखे साचे नैण, चढ़ी रहे सद खुमारी। जन भगतां चुकाए लहिण देण, बणे घर सच्चे वरतारी। रसना किसे ना सके कहण, देवणहार नर निरँकारी। गुरमुख साचे सदा इक्क घर इक्क्वे बहिण, ना भेव कोई नर नारी। प्रभ का भाणा सिर ते सहिण, वसण निहचल धाम अटल्ल अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम सच्चा जाम चढ़ी रहे नाम खुमारी। देवे नाम सर्ब सुख दाता। पूरन करे इच्छया काम, निरगुण रूप पुरख बिधाता। ना कोई मंगे साचे दाम, ना कोई पुछे जाता पाता। इक्क प्याए अमृत जाम, अन्ध अन्धेरी मिटाए राता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सेजा आसण लाए, बैठा रहे सद इक्क इकांता। आत्म सेजा चरन पसार। सुत्ता रहे हरि गिरधार। कलिजुग जीव दुहागण नार। गुरमुख विरला संत सुहागण, मिल्या सच भतार। बेमुख जूठे झूठे सोए गुरमुख साचे जागण, आप कराए साचा वणज वपार। लोकमात होए वड वड भागण, आत्म खोल्ले बन्द कुआड़। एका शब्द धुन उपजाए साचा रागण, अट्ठे पहर मीत मुरार। कलिजुग माया ना डस्से नागण, प्रभ अबिनाशी बख्शे चरन प्यार। चरन सेव जन साचे लागण, मेल मिलावा अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि पावे सार। निर्धन जाण निर हरि हरि निरँकारा। करे आप पछाण परम जोत बिन वरन गोत सर्ब लिखारा। आप खुल्लाए दुरमति मैल गंवाए, माया पड़दे लाहे, जगाए जोत अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दरस दिखाए तृखा मिटाए, खोल्ले बन्द कवाड़ा। बन्द कुआड़ हरि आपे खोल्ले। शब्द सरूपी साचा बोले। दूई द्वैती देवे चीर, अमृत चले साचा सीर, साचा नीर विरोले। विच्चों कड्ढे हउमे पीड़, गुरमुख साचा चरन प्रीती घोल घोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि तेरी वारी, लक्ख चुरासी करे ख्वारी, गुरमुख साचे आप चढ़ाए शब्द सरूपी साचे डोले। दर घर साचे मंगलाचार। खुशी मनाई नर नार। मिले वड्याई जगत वधाई विच संसार। मानस देही लेखे लाई, हरि रुत्त सुहाई चरन कँवल कँवल चरन दीआ प्यार। गुरमुख साचा जाए मवल, उप्पर धवल आई सच बहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, गुर संगत मेल मिलाए, अन्तिम बेड़ा बन्न वखाए, कलिजुग तेरा जूठा झूठा भार। आए दर दरगहि परवान। देवे वर हरि भगवान। नुहाए साचे तीर्थ इशनान। जो जन सरनी जाए पड़, मिटी जम की कान। हरि की पौड़ी जाए चढ़, मिल्या गुण निधान। राह विच ना जाए अड़, दरगहि साची देवे माण। प्रभ अबिनाशी अन्तिम लए फड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आए दर जन मुरारी। गुरमुख साचे सज्जण,

४१८
०४

हरि मीत निरँकारी। आपणे पड़दे आपे कज्जण, गावे शब्द साची धारी। पी पी अमृत आत्म रज्जण, देवे कोल सच बहारी। शब्द ताल साचे वज्जण, तोड़े मुन किरपा धारी। भाण्डे भरम झूठे भज्जण, जगे जोत अगम्म अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोआं सच सच्चा दरबारी। साचा दर सच्चा दरबार। जिथ्थे वसे हरि निरँकार। एका जोत अगम्म अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां माण रखाए, इक्क रखाए सति भण्डार। भगत भण्डार हरि वरतावे, शब्द अधार विच संसार। पवण अस्वार सर्ब विचार। भरम भुलेखा जगत लेखा, वेखी वेखा हरि दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर आए चरन सरन करे निमस्कार। निमस्कार नर साचे हरी। मातलोक अन्तिम कलि, बिन वरन गोती जोत धरी। गुरमुखां आत्म लाए फल, भण्डारे रिहा भरी। सदा सदा सद जाओ बल, पूरी किरपा हरि आप करी। बेमुख भुलाए कर कर वल छल, शब्द सोटी हथ्थ फड़ी। गुरमुखां दर आए चल, ना लाए पल घड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साची धार वहाए, काया ठंडी ठार कराए, लग्गी रहे मेघ झड़ी। अमृत मेघ बरसे धारी। खुल्ले कँवल काया सीतल , आत्म होए उज्जयारी। जगे जोत हरि भए भीतल, रूप अगम्मड़ा नर हरि बनवारी। लेखे लाए गुरमुख तेरी काया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि किरपा धारी। काया चमड़ा कल कल कक्ख। अन्तिम वेले प्रभ साचा लए रक्ख। लक्ख चुरासी विच्चों कीने वक्ख। सच शब्द सुहागी गीत, आप सुणाए बण बण साचा मीत, हरि सर्बकला समरथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नईआ आप चलाए, गुरमुख साचे संत चढ़ाए, नाल ल्याए सोहँ शब्द साचा रथ। साचा रथ शब्द घोड़ा। धुरदरगाही आया दौड़ा। किरपा निध प्रभ अबिनाशी दित्ता वर, तिन्नां लोकां लाया इक्को पौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग वेले अन्तिम बौहड़ा। कलिजुग कलि रूप कलि काती। चारों कुन्ट इक्क चलाए जोत सरूप साकी। बेमुख जीवां दिस ना आए, गुरमुखां बन्न्हाए चरन नाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए, जोत जगाए बिन तेल बाती। तेल बाती ना कोई दिया। जगाए जोत कर कर आपणा हीआ। जन भगतां खोल्ले सोत, निर्मल करे जीआ। बेमुख दर दर घर घर रहे रोत, साचा हरि किसे हथ्थ ना आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति मैल रिहा धोत, जन भगतां देवे वड्याई, सतिजुग रखाए साची नीआ। सच नींह जग सहारा। अमृत बरखे मींह, बणे मिट्टी गारा। साढे तिन्न हथ्थ रक्खीं सीं, बणे इक्क चुबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, चारों तरफ देवे वारा। सतिजुग साचे सति परवान। कलिजुग जीवां अन्तिम आई हान। त्रेता भया बली बलवान। साचे दर होए परवान। आत्म तुट्टा साचा माण।

४१६
०४

युग द्वापर सत्तां दीपां सत्तां हथ्थां मिल्या साचा माण। आपे करे मात पछाण। साढे तिन्न हथ्थ दित्ती सीआं, नौ निध गुणी निधान। अन्तिम अन्त कलिजुग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब करे आप पछाण। सर्ब पछाणे राजे राणे होए बेमुहाणे। प्रभ अबिनाशी भुल्ले अन्ध अंध्याणे। गऊ ग़रीब ना जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, आपणा खेल रिहा कर, चार कुन्ट शब्द डंक वजाए, राउ रंक उठाए, जन भगतां देवे माण दर आए निमाणे। माण निमाणयां माण जगत दवांयदा। देवे शब्द बबाण जगत उडांयदा। सच्चा नाम पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख जन भगत जगत प्यारयां, साची सेवा अमृत मेवा फल साचा तन लगांयदा। अमृत फल फले फुल्ले। दरगाह साची कोई ना लगे मुल्ले। जो जन आए चरन द्वार, कलि भाग लगाया काया कुले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम प्याए, आत्म धार कदे ना डुल्ल्हे। आत्म धार सदा अडुल्ले। कलिजुग जीव अन्तिम अन्त होए गुल्ले। एका जोत नर हरी, प्रभ सभ विच धरी, काया मन्दिर सदा उज्जल, गुरमुख विरले मात वरी, रंगण रंग चढ़ाए काया सच्चे चोले। अमृत भाण्डे प्रभ रिहा भरी, गुरमुख साचा कदे ना डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी भेख धर, जोत सरूपी आपे विच्चों बोले। करो वणज जगत वपारा। बिन हरि नामे झूठी धारा। जोत सरूपी पहरे जामे, आदि जुगादि सदा गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वर इक्क दुआरा। दर द्वार हरि निरँकार दा। एका एक घर बाहर वेस अनेक जगत पसारदा। जन भगतां देवे चरन टेक, मूर्ख मुग्धां तन अफारदा। आप कराए बुध बबेक, देवे नाम शब्द अधार दा। हरिजन राखे हरि चरन टेक, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम पावेसाची सारा, कर किरपा पार उतारदा। चरन टेक हरि भगवन्त। कलिजुग अग्न ना लागे सेक, गुरमुख साचे संत। मेट मिटाए लिखी रेख, मेल मिलावा साचे कन्त। जोत सरूपी धर धर हरि नर भेख, जन भगत बणाए साची बणत। नर नरायण नित नैणां पेख, दिस ना आए किसे जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत माया पाए बेअन्त। जगत माया सृष्ट भुलाई, झूठी छाया जगत वैरानी। जन भगत बहाए साचे थांउँ, देवे शब्द सच्चे बबानी। अमरा पद घर साचे पाया, सुणी हरि नर सच्ची बाणी। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साची जोत जगाए, करे प्रकाश कोटन भानी। होए प्रकाश हरि गहर गम्भीरा। आत्म बाणी रसन स्वासी, होए शांत सरीरा। पृथ्मी अकाश वंड करासी, अमृत सीर साची धीरा। गुर पूरा शाह शाबासी, कटे हउमे पीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बलि बलि जाए सदा जीअड़ा। जपो जपो जगत बलिहारी। अमृत आत्म साचा पी, तृष्ना भुक्ख हरि दए निवारी। मात रखाई साची नींह, सीतल धार करे ठंडी ठारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म

जन लेखे लाए, वेले अन्त ना आए हारी। ना आए हार जगत जन साचे। कारज दए संवार, प्रभ अबिनाशी हिरदे वाचे। तिक्खी रक्खे शब्द धार, भगत जनां हरि रक्खे लाजे। शब्द घोड़े हो अस्वार, चार कुन्ट जोत सरूपी लाए तमाचे। पवण शब्द इक्क उडार, ना कोई जाणे जीव काचे। आणा जाणा विच संसार, लक्ख चुरासी झूठी नाचे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए, गुरमुख जाणो साचो साचे। सच्चो सच सच्च विहार हरि जगत खेल महाना। इक्क खुल्लाए नाम दर, शब्द झुल्ले सच निशाना। जन भगत रखाए साचे घर, आप चढ़ाए सच बबाणा। अन्तिम कलि चुकाए डर, इक्क वखाणे श्री भगवाना। ना जन्मे ना जाए मर, अन्तिम जोती जोत मेल मिलाना। भरम भुलेखा दूर कर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाना। आत्म जोती नूरो नूर कर, दीपक साचा जोत जगाना। सर्बकला भरपूर हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सर्बकला भरपूर, हरि हरि गोबिन्द है। एका बख्शे साचा नूर, उतारे जम की चिन्द है। बेमुखां दिसे दूर, दिवस रैण अट्ठे पहर, जन भगतां देवे आत्म सच सरूर है। सदा सदा हरि बख्शिंद, एका शब्द साची तूर है। आत्म देवे वाली हिन्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर नरायण एका दाता, वड दाता सूरबीर है। सूरबीर वड बलवाना। मनमुखां लाहे चीर, कोई ना देवे किसे धीर, लक्ख चुरासी आई हाना। जन भगतां अमृत देवे साचा सीर, एका आपणे रंग रंगाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भेख धारी आप मिटाना। बाणा पहिणे जोत निरंतर। सर्ब जीआं दी जाणे अन्तर। सज्जण साचा शब्द चलाए, सोहँ राग साचा मन्त्र। जन भगतां सदा संग रहाए, आप बणाए साची बणतर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घट घट वासी घनकपुर वासी सर्ब जीआं दी जाणे अन्तर। जोत प्रकाशी पुरख अबिनाशी सर्ब थाएँ सदा रहंतर। सर्ब घटां हरि रक्खे वासा। तीर्थ तट्टां जगत तमाशा। वेखे खेल हरि बाज़ीगर नाटा, शब्द सरूपी फड़या कासा। कोई ना मेटे दूई द्वैती लग्गा फाटा, निरगुण जोत दिस ना आए परम पुरख अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सद होया रहे दासन दासा। दासन दास ठाकर प्रितपाला। सर्ब घट वासी सिंध सागर, परम पुरख गुर गोपाला। निर्मल जोत उजागर, काया गागर लपेटे शब्द सच्चे दोषाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची साचे थाउँ बणे आप दलाला। नाम दलाली जगत वपार। कोई ना दिसे ख़ाली, किरपा करे हरि गिरधार। आपे बणे सच्चा पाली, मानस जन्म रिहा संवार। आत्म जोती देवे मस्तक लाली, चढ़या रहे सद खुमार। चढ़ाए रंग इक्क गुलाली, उत्तर ना जाए अन्तिम वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति सरूप, रंग रूप वडा शाह भूप, दहि दिश ना आवे हार। आवे हार ना पासा ढल्ले। प्रभ पावे सार, आत्म घर महल्ले। एका देवे शब्द

धार, धुरदरगाह संग चले। साचे रंग रंगे करतार, गुरमुख विरला विच मात फले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम भगत वड्याई, सच सुनेहड़ा शब्द सरूपी नर नरेशी वडा भूपी। साचा संग प्रभ संग कीना। पढ़े नाम आत्म रस भीन्ना। नाम हिरदे जाए वस, ठंडी धार होए आत्म सीना। शब्द बाण मार कस, जोत सरूपी दाना बीना। पंजे चोर जायण नस्स , वक्खर अक्खर प्रभ आपे कीना। शब्द देवे दर साचे हस्स, प्रभ अबिनाशी रसना चीना। एका सच्चा राह धुरदरगाही जाए दस्स, देवे अमृत चार जुगां जल मीनां। जगत विकार जाए नस्स, मानस देही ना होए हीना। जोती जोत सरूप हरि, सर्बकला कलि आपे बीना। कल कलवन्ती, कल कलितारी। भगत भगवन्ती खेल अपारी। जोती जोत जगत जगंती, नर हरि हरि निराहारी। मानस देही रंग बसंती, कलिजुग अन्तिम रैण अंध्यारी। मेल मिलावा साचे कन्ती आदिन अन्ती, शब्द सरूपी सच उडारी। जोती जोत सरूप हरि, कर्म करंदा जन भगत तरंदा लाज रखंदा पैज रक्खे बनवारी। रक्खे पैज संवारे काजा। देवे सच्चा नाम सिर पहनाए सच्चा ताजा। निखुट्ट ना जाए दाम, शब्द सरूपी मारे सच्ची अवाज़ा। हरया होवे सुक्का चाम, प्रभ अबिनाशी रक्खे आपे लाजा। मिटे अन्धेरी रैण कलिजुग शाम, किरपा करे ग़रीब निवाज़ा। एका बख्शे सच्चा नाम, जोती जोत सरूप हरि, दर दरवेशां आप संवारे काजा। दर दरवेश दर दरबाना। रंग हमेश हरि भगवाना।
४२२ कर कर वेस हरि जी वेखे, जोत सरूपी पहरे बाना। धारया भेख अलखणा अलेख, रूप रंग कोई दिस ना आना। धुरदरगाही ४२२
०४ लोकमात पुरख बिधाती उत्तम जाति लाए साची मेख, देवे नाम सच निशाना। मेट मिटाए बिधना लिखी रेख, सोहँ बन्ने ०४
साचा गाना। लक्ख चुरासी विच्चों वेख, साचा मेल मिलाए भगत वछल हरि गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप चलाए आपणे भाणा। भाणा मन्ने प्रभ भरम भउ जाए। आप चढ़ाए साचे चन्ने, लोकमात करे रुशनाए। जन भगतां बेड़ा आपे बन्ने, जोत सरूपी दया कमाए। बेमुखां हरि आपे डन्ने, अन्तिम अन्त ना कोई छुडाए। एका राग सुणाए कन्ने, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे लए जगाए। गुरमुख जागे जगत सुहेला। प्रभ अबिनाशी चरनी लागे, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। आपे धोए पिछले दाग़े। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा आपे कर, साचे रंग रंगाए दरस दिखाए इक्क अकेला। इक्क अकेला मीत मुरारा। जन भगतां देवे नाम अपारा। जोत सरूपी दरस अपारा। सच द्वार हरि साचे खलड़ा, जगे जोत अगम्म अपारा। जोती जोत सरूप हरि, देवे दरस मिटाए हरस रूप रंग सद वसे बाहरा। रूप रंग रेख भेख ना जाणे को बूझे। जोत सरूपी हरि हरि भेख, भउ चुकाए एका दूजे। अन्तिम अन्त रिहा वेख, दरगहि साची गुरमुख विरले सूझे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर भेव खुल्हाए आत्म गूझे। भेव खुल्हाए जगत अथाहो।

आप लगाए साची सेव, अन्तिम पकड़े बाहों। सोहँ देवे साचा मेव, दरगहि साची सच्चा थाउँ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे कलिजुग हँस कागा। हँस सरोवर माणक मोती। गुरमुख जगे साची जोती। दुरमति मैल जाए धोती। अन्तिम कलि मातलोक ना होए ख्वारी। सोहँ शब्द साचा मन्त्र बणे जगत वपारी। जोती जोत सरूप हरि, नर नरायण नर, हरि, एका रंग रंगे बनवारी। रंगे रंग हरि मजीठा। गुरमुख विरले मात डीठा। कलिजुग जीव कौड़ा रीठा। अमृत आत्म गुरमुख विरला रस माणे मीठा। जोती जोत सरूप हरि, देवे आप वड्याई, साचा पीसण जिस ने पीठा। रसना गाए रसन रमईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम कर विचार, प्रभ आप चलाए साची नईआ। बेमुखां आई हार गुरमुखां बेड़ा पार करईआ। कर्म धर्म जरम प्रभ रिहा विचार साची नईआ आप चढ़ाईआ। भरम भुलेखे जगत निवार, जोती जोत सरूप हरि, हरि बणे आपे साक सज्जण सैण सईआ। साक सज्जण सैण साचा मीता। नूर निराली निर्मल बाती, आपे परखे साची नीता। आत्म बैठ मारे झाती, देवे नाम सच नगीना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि नर नर हरि सच्चा प्रबीना। हरि हरि मेल वक्त सुहेला। अछल अछल्ल करे कलि खेल, जन भगत मिलाए मेला। आपे होए सज्जण सुहेल, ना होए वक्त दुहेला। जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण सच नाम रंगाए, सद वसे रंग नवेला, साची रंगण नाम चढ़ांयदा। दर मंगण साची मंग, भिच्छया एका वस्त पांयदा। होए सहाई सदा अंग संग, जगत पित आप अखवांयदा। कटे भुक्ख नंग, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। वड दाता हरि सूरा सरबंग, शब्द दात वड करामात, आत्म वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी करे बन्द खुलासी, जो जन रसन ध्यांयदा। रसन ध्यायण हरि बनवारी। अमरा पद पायण, हउमे रोग मिटे हँकारी। दरस दिखाए तीजे नैण, आत्म खोल्हे दर दवारी। आत्म रस गुरमुख साचे रसना लैण, बेमुखां भरया आत्म इक्क हँकारी। गुरमुख जन भगत मिल इक्ठे बहिण, कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। ना कोई साक सज्जण सैण भाई भैण, ना कोई मीत मुरारी। एका हरि मिले वर साचे घर, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त जाए पैज संवारी। एका हरि जगत रख्वारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त, सद सद वसे बाहरा। भेव खुल्हाए साचे संतां, कदे गुप्त कदे जाहरा। मेल मिलावा जन साचे कन्ते, शब्द सुणाए साचा नाअरा। जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल रिहा कर, कलिजुग अन्तिम जाणे सृष्ट सबाई आरा पारा। कलिजुग तेरी वहन्दी धार, जगत रुढ़ांयदा। कोई ना पावे किसे सार, ना कोई धीर धरांयदा। दुखी होए नर नार, अमृत सीर ना कोई पिलांयदा। मिटदी जाए चार यारी, शब्द तीर आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग आप वखांयदा। कलिजुग काल रूप वटाई। चारों कुन्ट पए दुहाई। कोई ना दिसे किसे सहाई। एका

छत्र झुल्ले सीसे, नर हरि सच्चे गुसाँईं। मिटे भेव बीस इकीसे, भुल्ले राजे राणे थांउँ थाँईं। जोती जोत सरूप हरि, एका एक सर्ब टेक, वेस अनेक जाणे कोई नाहीं। ना कोई जाणे भेव, हरि छुपांयदा। वडा वड देवी देव, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरला लग्गे सेव, देवे शब्द सच्चा धन, अमृत फल खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, दयानिध गुण निधान, हरि भगवान पुरख सुजान साचे मार्ग पांयदा। साचा मार्ग हरि चरन ध्याना। एका देवे नाम, सच्चा जगत बबाणा। पूरन होए काम, झुल्ले जग निशाना। अमृत प्याए साचा जाम, दरगहि साची साचा माणा। मिले जोत रमईआ राम, नर हरि विष्नूं भगवाना। मेल मिलावा साचे धाम, साचा वक्त हरि आप सुहाना। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग वड बली बलवाना। वड बली बलवान हरि निरंकारया। एका सच्चा माण सृष्ट अधारया। मारे शब्द बाण, तिन्नां लोकां करे जै जैकारया। चारों कुन्ट आए हाण, लक्ख चुरासी वहे वहन्दी धारया। कोई सके ना किसे पछाण, मारे शब्द डाहढी मारया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे माण ताण, जुगा जुगन्त आपणी किरपा धारया। आपणी किरपा धार, लाज रखांयदा। शब्द घोड़े हो अस्वार, साची जोत जगांयदा। जोत सरूपी खेल अपार, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां पावे आपे सार, नित नवित्त भगतन हित्त जोत प्रगटांयदा। गुरमुख विरले मानस जन्म कलि ल्या जित्त, हरि हरि हरि साची सेवा लांयदा।
४२४ ०४ आपे जाणे गति मितक मित गति, जिस जन दया कमांयदा। शब्द सुणाए साचा तत्त, सोहँ आत्म तीर चलांयदा। अन्तिम दे समझावे मति, जोत सरूपी निहकलंक जामा पांयदा। चार कुन्ट वहाए रत्त नीर साचा सीर किसे हथ्थ ना आंयदा। गुरमुख विरले रक्खे धीरज यति सति तत्त दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सर्ब समांयदा। आपणे भाणे हरि आपे जाणे। कलिजुग भुल्ले राजे राणे। अन्तिम अन्त अन्त कलि होए बेमुहाणे। ना कोई जाणे साध संत, ना कोई जाणे गऊ ग़रीब निमाणे। धरे जोत हरि भगवन्त, मारे शब्द सच्चा बाणे। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, तख्तों लाहे राजे राणे। गुर संगत वक्त संभाल, जगत जुदाई है। हरि देवे अनमुल्लड़ा लाल, मात वड्याई है। आपे करे सच्ची भाल, कौस्तक मनी करे रुशनाई है। तोड़े जगत जंजाल, वड दाता हरि धन धनी है। सभ दी रिहा सुरत संभाल, साचा शब्द सुणाए कन्न है। जो जन आत्म होए कंगाल, प्रभ बेड़ा रिहा बन्न है। साचा देवे नाम धन माल, सृष्ट सबाई आत्म अन्नी है। गुरमुख विरला सद मालो माल, चरन प्रीती साची बन्नी है। आत्म घाल सच्ची टकसाल, जगे जोत अगम्मी है। जोती जोत सरूप हरि, गगन पताली जोती एका थम्मी है। गगन पताल शब्द अपारा। हरिभगत वसल कर अपारा। देवे नाम अनमुल्लड़ा लाल, बणाए सच्चा वणजारा। पहली मारे सच्ची छाल, खुल्हे दसम दुआरा।

फल लग्गे साचे डाल, बरखे ठंडी धारा। चरन प्रीती निभे नाल, प्रभ होए सदा आप रख्वारा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख गुरमुख प्यारयां भरे रहे भण्डारा। भरे भण्डार भरम भउ विनाशे। ना आए हार विच संसार, हरि होए दासन दासे। सोलां कर तन श्रृंगार, मानस जन्म कराए रासे। आपे लाए साची कार, शब्द चलाए स्वास स्वासे। मानस देही बन्ने धार, आत्म जोती ना अन्तिम विनासे। दर घर साचे आए जाए पैज संवार, गुर चरन प्रीती सच भरवासे। जोती जोत सरूप हरि, कर दरस रोग सोग जगत विजोग, कलिजुग माया दुखड़ा नासे। हरि घर सच्चा इशनाना। दर हरि श्री भगवाना। मिले हरि नाम निधाना। गुरमुख साचा साची तरनी जाए तर दो जहानां। आत्म भण्डारे प्रभ रिहा भर, चरन होए निमाणा। आप खुल्हाए साचा सर, अमृत आत्म तीर्थ देवे सच्चा दाना। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे साची मंग, चरन धूढ़ सच्चा इशनाना। चरन ध्यान जन हरि रखाए। शब्द बबाणा प्रभ आप चढ़ाए। सच्चा देवे पीण खाण, नाम महान हरि झोली पाए। मिटदा जाए जगत ताण माण, ताण कोई रहण ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग रंगाए। रंगे रंग काया चोला। साचा देवे शब्द नाम जगत अमोला। चरन प्रीती साची रीती, चरन बलिहारी घोल घोला। काया सीती मानस जन्म जीती, पूरे तोल हरि साचे तोला। हरि की रीती बन बन नेती, आत्म पड़दा साचे खोल्हा। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साची जोत जगाए, शब्द सरूपी देवे सच्चा बोला। शब्द बोला नाम जैकारा। दरगहि साची होए गोला, मिल्या नाम भण्डारा। गुरमुख साचा घोल घोला, बणया शब्द सच्चा वणजारा। मिल्या नाम जगत अनमुल्ला, आत्म फुट्टे सच फुहारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खोल्हे खोल्ह वखाए बन्द कवाड़ा। बन्द कवाड़ आपे तुट्टे। अमृत प्याए प्रभ साचा घुट्टे। जगे जोत होए रुशनाई, पंजां चोरां हरि जी कुट्टे। एका वस्त घर साचे पाई, रहे भण्डार सदा अतुट्टे। देवे माण थांउँ थाँईं, जगत चोग ना कदे निखुट्टे। अन्तिम वेले फड़े बाहीं, गुरमुख विरला लाहा साचा लुट्टे। बेमुखां मस्तक लग्गी छाही, प्रभ अबिनाशी जड़्ह आपे पुट्टे। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां किरपा रिहा कर, सदा सदा रक्खे भण्डार अतुट्टे। अतुल्ल अतुट्ट हरि भण्डार। बणया रहे जगत वरतार। लक्ख चुरासी जीव जन्त, मंगदी रहे चरन द्वार। आपे परखे साची नीत, वेख वखाणे वारो वार। जन भगतां काया रहे सीत, देवे दरस अपार। बण जाए साचा मीत, जोती जोत सरूप हरि, मेल मिलाए नर हरि, गिरवर गिरधार। गुरमति गुरमुख जाण, हरि समझांयदा। गुरमति नाम निधान, हरि साचा तीर चलांयदा। गुरमति गुर चरन ध्यान, धीरज धीर आप बन्न्हांयदा। गुरमति जगत निशान, प्रभ साचा आप झुलांयदा। गुरमति हो मेहरवान, जन भगतां झोली पांयदा। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा

मदिरा मास रसन तजांयदा। गुरमति गुर घर साचे पाईए। दुरमति लग्गी मैल, दर घर साचे आण धवाईए। अट्ठ सट्ठ तीर्थ रही फैल, अन्तिम अन्त मल मल नहाईए। जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर दिवस रैण सदा सदा गुण साचे गाईए। गुरमति गुणवन्त निधानी। गुरमति साची जाण, आई धरत मात जगत निशानी। देवे हरि वड वड करामात, मातलोक कलि साची राणी। सोहँ शब्द साची दात, मिले दान हरि देवे वडा दानी। दरस दिखाए इक्क इकांत, मिटे अन्धेर अन्ध अंध्यानी। काया करे सीतल सीत, जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण सरगुण रूप, एका रंग सच्चा नाम रंग रंगानी। अवतार जगत जोत हरि धरे। किरपा आपणी मात प्रभ करे। जन भगतां देवे दात, सच्चा नाम आत्म घरे। दर घर आए पुछे वात, लक्ख चुरासी विच ना डरे। दरस दिखाए इक्क इकांत, जोत सरूप नर हरे। जन भगतां मारे आत्म झात, प्रभ अबिनाशी दर खड़े। अमृत बूंद प्याए स्वांत, झिरना अपर अपार झिरे। जोती जोत सरूप हरि, मातलोक हरि जोत धर, जन भगतां देवे सच वरे। जन भगतां दरस दिखांयदा। जुगा जुगन्तर अमृत मेघ देवे बरस, हरस मिटांयदा। दर दुआरे निज घर आत्म जन साचे सति सरूपी नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, सृष्ट सबाई वेख कर, गुरमुख विरला भगत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गांयदा। गुरमुखां हरि आप उठावे। बेमुख बन्नण झूठे दाअवे। आत्म अन्धे भागां मन्दे झूठे बन्दे, रोंदे फिरन भरन हावे। गुरमुख साचे संत जन, दर घर साचे पैण भुलावे। प्रभ अबिनाशी दया कमावे। आपे तोड़े आत्म जंदे, जोत सरूपी डगमगाए, साचे दर घर आप बहावे। निज घर आसण लावे, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जामा धर, सोए भगत बाहों फड़ गले लगावे। गले लगाए हरि दीन दयाला। रक्खे ठंडी छाँए, गुर गोपाला। आपे बणे पिता माएं, अट्ठे पहर होए रखवाला। आप बणाए हँस कांए, चोग चुगाए शब्द सच्ची आत्म वखाए सच्ची धर्म साला। दरस अमोघ हरि आप दिखाए, गुरमुख साचे संत जनां, तोड़े जगत जंज़ाला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई जाणे रंग सूहा लाल पीला काला। रंग नवेला हरि आपे वसे। गुरमुखां राह साचा दस्से। आत्म साची जोत करे प्रकाश, होए तेज कोट रवि सस्से। शब्द सरूपी पाए रास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दर दुआरे सद खिड़ खिड़ हस्से। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जामा धर, साचा शब्द तीर चलाए, बज़र कपाटी चीर वखाए, हरि हिरदे जन भगतां सदा वसे। पुरी घनक हरि का पासा। जोत सरूपी हरि प्रकाशा। तिन्नां लोकां करे वासा। शब्द सरूपी पावे रासा। आपे वेखे जगत तमाशा। लक्ख चुरासी करे हासा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां करे बन्द ख़लासा। पुर घनक रमईआ रामा। साचा शब्द चलावे जगत वज्जे इक्क दमामा।

कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर हरि भगवाना। हरि मूर्त जन वेख, सर्ब अकार है। हरि मूर्त जन वेख, सर्ब अधार है। हरि मूर्त जन वेख, रूप अगम्म अपार है। हरि मूर्त जन वेख, वेखण सुणन सुणन वेखण सद वसे बाहर है। हरि मूर्त जन वेख, ना कोई रूप ना कोई रंग अवल्लड़ी धार है। हरि मूर्त जन वेख, आत्म घर साची मेख, जगे जोत निरगुण हार है। हरि मूर्त जन वेख, भरम भुलेखा दए निवार है। हरि मूर्त जन वेख, मानस जन्म आदि अन्त रिहा संवार है। हरि मूर्त जन वेख, काम क्रोध करे भस्मंत, मारे शब्द कटार है। हरि मूर्त जन वेख, जोत जगाए साचे संत, अमृत देवे साची धार है। हरि मूर्त जन वेख, एका रंग हरि साचे अन्त ना पावे कोई जन्त गंवार है। हरि मूर्त जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी पसर पसार है। हरि मूर्त जन वेख, जोत अकाल है। हरि मूर्त जन वेख, मातलोक ना होए कदे कंगाल है। हरि मूर्त जन वेख, देवे दात शब्द वड धन माल है। हरि मूर्त जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, कर रिहा सर्ब प्रितपाल है। हरि रंग जन वेख, रसना रस हरि साचा नाउँ लीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ अबिनाशी होए वस, जन भगतां रहे अधीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ मारे शब्द खण्डा, भन्ने हँकारी बीन है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, एका राह जगत दिखाए, चार वरनां एका थां बहाए, ना कोई होर बणाए दूजा दीन है। हरि रंग जन वेख, जगत वड्याई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत विच टिकाई है। हरि रंग जन वेख, अट्ठे पहर प्रभ एका जोत जगाई है। हरि रंग जन वेख, अज्ञान अन्धेर दए मिटाई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, पूरन बूझ रिहा बुझाई है। हरि रंग जन वेख, रंग अनूप है। हरि रंग जन वेख, प्रभ दिसे सति सरूप है। हरि रंग जन वेख, मेल मिलावा हरि साचे शाहो भूप है। हरि रंग जन वेख, सृष्ट सबाई अन्तिम कलिजुग चार कुन्ट होई अन्ध कूप है। हरि रंग जन वेख, मन भए अनन्दा। हरि रंग जन वेख, उतरे मन की झूठी चिन्दा। हरि रंग जन वेख, एका एक हरि राह वखाए दया कमाए, निज घर आत्म आप उपजाए, बणाए साची बिन्दा। जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा जन भगतां आप बख्शंदा। हरि का रूप अगम्म, शब्द अमोल है। हरि का रूप अगम्म, सृष्ट सबाई एका ब्रह्म, पूरे तोल रिहा तोल है। लक्ख चुरासी पई भरम, अन्तिम कलिजुग रही डोल है। काया माटी झूठा चाम, सच वस्त ना किसे कोल है। अन्तिम बाहर होणे दम, झूठा रहणा काया ढोल है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां लए रखाए दया कमाए, लक्ख चुरासी रही अनभोल है। जन भगतां दया कमाए, राह वखाए, दे मति रिहा समझाए, फड़ फड़ बाहों राहे पांयदा। जोत सरूपी दरस दिखाए, साची शब्द धुन उपजाए, अमृत मेघ बरस

वखाए, आत्म तृखा मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप नुहाए साचे सर, सरोवर इक्क वखांयदा। आत्म सर सच्चा सीर। प्रभ अबिनाशी दित्ता नीर। अमृत बूंद सहाई, जन भगतां देवे धीर। मिटे अन्धेरी राती, जगे जोत साची बाती, माया पड़दे रिहा चीर। गुरमुख विरला मारे झाती, प्रभ आप चुकाए पिछली बाकी, वेला अन्त अख़ीर। जन भगतां आत्म खोल्ह ताकी, आप चढ़ाए शब्द घोड़े साचे राकी, तोड़े हरि जंज़ीर। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां मेख लगाए, प्याए अमृत साचा सीर। साचा सीर हरि मुख लगाणा। आत्म देवे धीर, भाण्डा भरम भन्नाणा। सिर बन्न्हे शब्द साचा चीर, मस्तक तिलक नाम लगाणा। कोई ना जाणे हस्त कीड़, ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान राज राजान एका रंग रंगाया। प्रभ अबिनाशी हो मेहरवान, सच्चा संग आपणा आप निभाया। जन भगतां देवे माण ताण, बेड़ा बन्न पार लँघाया। सोहँ शब्द सच बबाण, गुरमुख साचा प्रभ आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, फड़ फड़ बाहों अन्तिम वार आपणी हथ्थीं पार लँघाया। गुर संगत दर परवान है। संगत गुर एका जगत निशान है। गुर संगत संगत गुर एका रूप हरि भगवान है। गुर संगत मिल्या लिख्या धुर, देवे नाम गुण निधान है। प्रभ दर्शन लोचन सुर, करोड़ तेतीस इन्द इन्द्रान है। प्रगट होए हरि घनकपुर, निहकलंक बली बलवान है। धुरदरगाही आया तुर, झुल्ले सच्चा इक्क निशान है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां मेल मिलाए, बख़्शे चरन ध्यान है। गुर संगत मन वधाई, जग मिटे अन्धेरा। एका हरि जी सच्ची सरनाई, लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा। आपे मेटे कलिजुग छाही, लोकमाती झूठा झेड़ा। वेले अन्तिम पकड़े बाहीं, करे सच नबेड़ा। धर्म राए ना देवे फाही, करे हक्क निबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साची जोत जगाए दया कमाए, हरि वसाए काया नगर खेड़ा। गुर संगत साचा संग निभाया। जोत सरूपी चाढ़्हा रंग। रंग भट्ठी इक्क चढ़ाया, मानस जन्म ना होए भंग। साचा गीत सुहागी गाया, प्रभ दर मंगण एका मंग। जोती जोत सरूप हरि, होए सहाई अंग संग। साचे घर वसे रघुराया। आपे कटे भुक्ख नंग, दुक्खां काया डेरा ढाहया । बेमुखां चोरां देवे दंड, शब्द डण्डा मगर लगाया। शब्द घोड़े कस्सया तंग, अमृत आत्म आप चढ़ाए साचा रंग, सति सरोवर आप खुल्हाया। मानस जन्म ना होए भंग, सरन सरनाई जो जन आया। जोती जोत सरूप हरि, साचे लेखे आपणे आप आपे लाया। गुर संगत साचा संग निभांयदा। आप चढ़ाए शब्द घोड़, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, बेड़ा बन्न वखांयदा। आपे वेखे मिट्ठे कौड़, शब्द हथौड़ा भन्न वखांयदा। जन भगतां प्रभ अबिनाशी गया बौहड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत साचा मेल कर, सच्चा नाम धन पल्ले बन्न्हांयदा। सच दाम पल्ले बन्न्हे। गुरमुख साचे संत जन, धर्म राए ना कदे डन्ने। एका शब्द सुणाए कन्न, जन भगतां

४२८
०४

आत्म साची मन्ने। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे पार उतारे, किरपा धारे हरि निरँकारे, बेमुख जीव मिटाए आत्म अन्ने। रैण अन्धेरी लक्ख चुरासी हेरा फेरी। कोई ना ढाहे भरमां ढेरी। अट्ठे पहर दिवस रैण, करदे रहण मेरी मेरी। ना कोई भाई ना कोई भैण, माया राणी आए घेरी। एका हरि सच्चा साक सज्जण सैण, छुटी काया भरमा ढेरी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम पाई फेरी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, जगे जोत अगम्म अपार। पुरी घनक अन्तिम वार। शब्द वज्जे साचा डंक, प्रगट होए कृष्न मुरार। आप उठाए राउ रंक, ऊँच नीच भेव न्यार। जोती जोत सरूप हरि, हरि नर नर हरि सच्चा करतार। एका रंग हरि रंगीला, लक्ख चरासी आपे लांयदा। आपे कर कर साचा हीला, जोती दीप टिकांयदा। ना कोई वेखे काला पीला, लाल सूहा रंग रंगांयदा। अग्नी जोत दीवा बाला, गुरमुख प्रभ आत्म रस पी ला। अग्न तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। धुरदरगाह साची जीवां, आवण जावण गेड़ कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठ पहन बाणा नीला, खेल रचांयदा। नीला बाणा साचा राणा, जोत सरूपी हरि भगवाना। करे खेल जगत महाना। जोत सरूपी हो अस्वार, लोकमात हरि डेरा लाए, गुर गुर सोया आप जगाना। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी करे जगत बेमुहाना। सच सिँघासण हरि सुल्तान। झुलदा रहे सदा निशान। पूरे तोल तुलदा रहे, होया रहे वड मेहरवान। लोकमात सद भण्डारा खुल्लदा रहे, देंदा रहे सदा भरपूर जीआं दान। चरन प्रीती घोल घुलदा रहे, दर्शन देवे श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण आप बिराजे, जन भगतां पड़दे आपे काजे, रक्खे लाजे आत्म जोत करे प्रकाश कोटन भान। सच सिँघासण हरि अस्वारा। शब्द सरूपी लग्गी बहारा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे साचा वर, आत्म भण्डारे रिहा भर, साचा शब्द करे वरतारा। सच सिँघासण नैण मुँधार। तिन्नां लोआं चौदां हट्टां, आप कराए सच्चा वणज वपार। अट्ठ सट्ठ तीर्थ तट्टां वसे घट घटा, जिस चलाई गंगा धार। जोत जगाए लक्ख चुरासी काया मटा, दूई द्वैती मेट मिटाए करे खेल अपर अपार। गुरमुखां तन पहनाए शब्द साचा पटा, करे आप शृंगार। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण आप बिराजे, आपे पाए आपणी सार। सच सिँघासण हरि वसेरा। सद सद वसे हरि नेरन नेरा। गुरमुखां आत्म वसे, शब्द तीर कसे मुकाए झूठा झेड़ा। एका राह साचा दस्से, करे हक्क नबेड़ा। पंजां चोरां पैरां हेठ झस्से, मिटे चुरासी गेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, एका साची जोत जगाए आप वसाए तेरा काया नगर खेड़ा। सच सिँघासण हरि बलकारी। जगे जोत इक्क अपारी। ना कोई रूप रंग रेख भेख, ना कोई पावे सारी। सृष्ट सबाई रही वेख, जोत सरूपी शब्द उडारी। आप लिखाए साचे लेख, चित्र गुप्त बण लिखारी। गुरमुख साचे नेत्र लैणा वेख, खड़ा

४२६
०४

रहे आत्म दर द्वारी। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, एका एक जन भगतां लिखाए साचे लेख, मारे शब्द मेख, दूई द्वैती पड़दा पाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, सद रहे पिछे अगाड़ी। सच सिँघासण हरि जी बोले। जोत सरूपी पड़दे खोल्हे। काया मन्दिर साचे अन्दर, माटी काची साचे बोले। औखी घाटी जोत ललाटी, साची हाटी वसे काया डोले। गुरमुख साचे संत जन रस साचा चाटी, जगे जोत इक्क अमोले। प्रभ अबिनाशी इक्क सच इशनान कराए, आत्म तीर्थ तट्टी, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी सोहँ कंडे तोले। इक्क खुल्हाए साची हाटी, कलिजुग तेरा अन्तिम दिसे पार किनारा। जन भगतां बणे सज्जण सुहेल, फड़ बाहों पार कराए, हरि साचा साजण मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ सिँघासण चरन लगाए दया कमाए हरि निरँकारा। आत्म घेर तन मन्दिर डोले। ढहि ढहि जाणा होए ढेर, ना कोई भुल्ले ना जाणे हेर फेर, कँवल विचोले जगत छुडावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे पड़दे फोले। काया चोली झूठी पाटी। ढाही कंध मन तन काया माटी। आत्म अन्ध जोती जोत सरूप हरि, अमृत पाए काया चाटी। आत्म डोले सुरत सुहागण। काया होई सड़ सड़ कोले, सोए बीर फेर ना जागण। वज्जे तीर काया चोले, उठ उठ जूठे सारे भागण। जोती जोत सरूप हरि, साचा इक्क हुक्म सुणाए, सोहँ शब्द जन रसना गाए, एका सच्चा रागण। चरन प्रीती मंगे जन, आत्म दरस प्यासा। होए सहाई मीत जन, शब्द सरूपी पावे रासा। आपे पुरख पंच जन, तोल तुलाए तोला मासा। साचा शब्द उपजाए कन्न, वेख विचारे काया कासा। बेड़ा अन्तिम देवे बन्न, आप वखाए जगत तमाशा। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साची जोत धर, मानस जन्म कराए रहिरासा। आत्म जोती हरि उज्जयारे। देवे दरस पुरख अगम्मड़ा रैण अंध्यारे। सुक्का हरया करे काया चमड़ा, पल्ले बुन्हे नाम दमड़ा, ना कोई करे कराए झूठे लारे। एका राह अवल्लड़ा, इक्क वखाए सच दरबारे। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत दरस दिखाए, साचे रंग रंगे करतारे। पुरी लोआं अकार, खण्ड ब्रह्मण्ड है। जोत सरूपी जामा धार, नौ खण्ड पृथमी करे कराए वंड है। चिट्टे अस्व हो अस्वार है। सोहँ फड़ी शब्द कटार है। बेमुखां लाए दंड, जन भगतां बणया साचा यार है। जोत सरूपी हरि निरँकार, बेमुखां आत्म रंड है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल विच ब्रह्मण्ड है। नौ खण्ड पृथमी आपे पाए वंडे। चार कुन्ट चार यारी कर ख्वारी अन्तिम वारी, मगर लगाए शब्द डण्डे। दुखी होए नर नारी जीव गंवारी ना कोई पावे सारी, आत्म होई सर्ब घमंडे। उचे मन्दिर घर घर अन्दर ढहिंदे जाण वारो वारी, कलिजुग अन्तिम जाओ बलिहारी, ना कोई दिसे शाह अस्वारी, कोई ना चुक्के अन्तिम कंधे। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत मात धर, करे खेल विच

ब्रह्मण्डे। विच ब्रह्मण्ड शब्द कटारा। चारों कुन्ट चले चलाए, सृष्ट सबाई वारो वारा। धरत मात दए दुहाई, निहकलंक कलि जामा धारा। बेमुखां देवे अन्त सजाए, आपे चीरे चीर कराए अन्त दो फाड़ा। बेमुखां पैरां हेठ दबाए, कराए खेल महीने हाढ़ा। गुरमुखां आत्म सीर चुआए, ज़िमी अस्मानी तुट्टा पाड़ा। हउमे विच्चों पीड़ गंवाए, जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। बेमुखां कलिजुग चीर वखावे, आप चबाए आपणी दाहड़ा। जोती जोत सरूप हरि, एका एक वेखे सच अखाड़ा। लग्गे सच अखाड़ जीव कुरलानयां। लग्गे अग्न महीने हाढ़, होए फिरन बेमुहाणया। बेमुखां दिन आए माढ़े, वज्जे तीर शब्द कानयां। मौत लाड़ी देवे घोड़ी चाढ़, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआं। जोत सरूपी देवे साड़, धीरज धीर ना कोए धरानया। आप चबाए आपणी दाढ़, लक्ख चुरासी मेट मिटानयां। जन भगतां शब्द सरूपी करे वाड़, कर वड वड मेहरबानीआं। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, देवे दात शब्द करामात सच सुगात, गुणवन्त हरि गुण निधानया। विच वरभण्ड होए बहु भंडी। बेमुखां वढ्ढे हरि जी कंडी। किसे ना दिसे साचा राह, चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्डी। लक्ख चुरासी कोई ना थम्मे, धर्म राए दी पई वंडी। अन्त ना लए कोई छुडाए, सृष्ट सबाई होई रंडी। ना कोई पिता ना कोई माए, आपे करे खण्ड खण्डी। पुरख अबिनाशी जन भगतां होए आप दासी, जोत जगाए विच वरभण्डी, साचा हट्ट जगत खुलांयदा।
४३१ ०४ रक्खे नाम साचा पट्ट, पूरा तोल तुलांयदा। साचा रस गुरमुख विरला रिहा चट्ट,, काया माटी जोत जगांयदा। दूई द्वैती ४३१ ०४
मिटे फट्ट, शब्द धागे जोड़ जुड़ांयदा। दुरमति मैल प्रभ रिहा कट, एका रंग नाम चढ़ांयदा। जगे जोत लट्ट लट्ट, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आत्म घाटी तीर्थ तट्ट, सच सरोवर आप वखांयदा। इक्क खुलाया साचा हट्ट, सच वपार आप करांयदा। गुरमुख साचा लाहा लैणा खट, शब्द उडारी इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौदां लोकां साचा हटा उच्च समेरू उच्चे पर्बत आप समांयदा। चौदां हट्टां विच समरू चौदां लोकां वेख वखाणे। एका रंग सन्झ सवेर, सर्ब रलाए आपणे भाणे। सृष्ट भुलाए कर कर हेर फेर, भेव ना जाणे राजे राणे। जोत सरूपी जोत हरि, भेव ना जाणे राजे राणे बेमुहाणे, गुरमुख साचे आप ल्याए दया कमाए चरन बहाए घेर। जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा जन भगतां वसे नेरन नेर। साचा हट्ट अमोली। दुरमति मैल रिहा कट, गुरमुख साचा रहे ना कोई खाली। शब्द सरूपी मारे सट्ट, उपजे धुन तुटे मुन खुल्हे सुन, मस्तक देवे लाली। गुरमुख साचे मात चुण, मंगे शब्द दलाली। लक्ख चुरासी छाण पुण, बेमुखां काया करे खाली। जन भगतां पुकार लए सुण, जोत सरूप वाली दो जहानी। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, ना कोई सुणाए साची बाणी। जोती जोत सरूप हरि, एका एक रिहा कर, चार वरनां साचा घर, आपे दर दरबान

आपे बणे वडा दानी। दर दरबार हरि दाना बीना। होए आप मेहरबान, गुरमुख साचे रसना चीना। शब्द देवे जीआ दान, शांत कराए सीना। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे लैणा वर, जगत न्यारा भगत अधारा नाम भण्डारा एका सच्चा दीना। नाम भण्डारा आप वरतांयदा। पूर्ब कर्म विचार, लहणा देणा अन्त चुकांयदा। बेमुखां मारे शब्द कटार खण्डा दो धार, दर साचे हरि दुरकांयदा। जन भगतां कर प्यार नाम खुमार, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। ऊँच नीच ज़ात पात राउ रंक ना करे विचार, एका रंग सर्ब समांयदा। शब्द घोड़े कस तंग, चार कुंट दुड़ांयदा। लक्ख चुरासी होई भुक्ख नंग, ना वस्त कोई नाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा साचा राणा शाह सुल्ताना आपणे हथ्थ रखांयदा। भाणा रक्खे प्रभ आपणे हथ्थ। बेमुखां पाए शब्द सरूपी नत्थ। चार कुन्ट दए दुहाई, सृष्ट सबाई पाए नत्थ। गुरमुख साचा लए बचाई, देवे नाम साची वथ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, नर हरि सर्बकला समरथ। सर्बकला समरथ शब्द तुरंग है। इक्क चलाए साचा रत्थ, वड सूरा सरबंग है। महिंमा जगत अकथ्थ, होए प्रगट जिउँ रामा घर दसरथ है। गऊ ग़रीब निमाणयां, लाए आपणे अंग है। जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द चार कुन्ट वजाए साचा मृदंग है। वज्जे मृदंग शब्द नगारा। चढ़े रंग जगत अपारा। कटे भुक्ख नंग, राजे राणयां शाह सुल्तानयां, देवे तख्त आपे जाणे आपणे भाणया, ना कोई पुच्छे थित्त वारा। गुरमुख साचा सुघड़ स्याणा, जिस देवे चरन प्यारा। एका रंग साचा प्रभ दर माणया, मिल्या हरि सच्चा भतारा। बेमुख भुन्ने अन्तिम कलि वांग भठयाले दाणया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया, दोवें रक्खीआं तिक्खीआं धारा। चरन कँवल ध्यान गुर पूरे लाईए। उपजे ब्रह्म ज्ञान, मन मधुर रस पाईए। मिले नाम निधान, घर साचे आसण लाईए। साची एका शब्द उडान, बेकुंठ निवासी दर्शन पाईए। चुक्के आवण जाण, दीपक जोती मेल मिलाईए। सहिंसा चुक्के पीण खाण, निरगुण रूप सद समाईए। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत वक्त जगाईए। एका हरि जोत गुर पूरया। जगत चलाए साची रीत, काया रक्खे ठंडी सीत, वड दाता नाम सूरया। मानस जन्म जाणा कलि जित्त, आसा मनसा प्रभ साचा पूरया। काया मन्दिरा दिहुरा सच्चा मसीत, वेखे जोत साची नूरया। झूठी काया भय भीत, अट्ठे पहर प्रभ अबिनाशी परखे नीत, बेमुख जायण दर तों दूरया। जोती जोत सरूप हरि, चरन प्रीती देवे हरि, आप चुकाए जम का डर, सद वसे हाज़र हज़ूरया। हाज़र हज़ूर बली बलवान है। आसा मनसा पूर, सर्ब जीआं निगहबान है। ना नेड़े ना दूर, साचे आसण पैर पसारे सेजा सुत्ता नर हरि श्री भगवान है। जोती जोत सरूप हरि, वडा शाह भूप रंग अनूप सति सरूप, एका जोती एका नूर है। अमृत धार अपर अपारी। झिरनां झिरे अपार,

डिगे बूंद अपर अपारी। खुल्हे बन्द कवाड़, प्रभ किरपा धारी। माया ममता लाहे हरि, दया करे हरि गिरधारी। उल्टे कँवल जाए मवल, मुख बूंद पए अपर अपारी। जोती जोत सरूप हरि, आत्म जोत कर उज्जयारी। कँवल नाभ आप उलटाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। अमृत बूंद मुख चुआए। काया अन्धेरी कन्दर डूंघे अन्दर करे सच रुशनाए। जोती जोत सरूप हरि, अमृत आत्म सिंच सरोवर तीर्थ तट्ट इशनान जन भगतां आप कराए। अमृत पी अमरा पद पाए। ना मेल होए जीव हरि साचे घर सद लै जाए। साचा बीज लैणा बी, अमृत फल साचा खाए। मातलोक रखाए साची नींह, सच मन्दिर काया आप बणाए। जोती जोत सरूप हरि, अमृत साचा मेघ बरसाए। बरसे मेघ ठंडी धारी। वज्जे नाम शब्द कटारी। काया वसे झूठा चाम, होए पार आर पार उतारी। कोई ना लग्गे दर साचे दाम, जन करे चरन निमस्कारी। पूर कराए प्रभ साचा काम, आप सुहाए प्रभ काया महल अटारी। मिटे रैण अन्धेरी शाम, जगे जोत अगम्म अपारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत सीर आप पिलाए, दुरमति मैल रिहा धवाए, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। अमृत आत्म नीर विरोले, जन भगतां प्याए साचा सीर। हरि वसे साचे चोले, कटण आया कलिजुग अन्तिम भीड़। जन भगत बणाए साचे गोले, बेमुखां तोड़े हड्डी रीड़। मगर लगाए मौत लाड़ी, विच बहाए धर्म राए दे डोले। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अमृत मुख चुआए, आत्म साची जोत विच मात दे मौले। आत्म मवल घर साचे गुलज़ार। घर साचे दर साचे, लग्ग रही सदा बहार। बेमुख दर ते आए नाचे, शब्द डण्डा मगर लग्गा भार। हरि जी हरि हरि रसना जपे नर हरि हरि नर रूप अगम्म पुरख अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा अन्दर जगत मन्दिर आप सुहाए चल आए दर द्वार। आए दर पैज संवारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। घनकपुर वासी जोत प्रकाशी शाह शबाशी, करे खेल जगत न्यारी। मेट मिटाए मदिरा मासी, धर्म राए दी देवे फाँसी, एका धक्का कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी करे हासी पंडत पढ़न वेद वखानण, हथ्थ ना आवण छे शास्त्र, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक हरि जामा पाए, माझे देस भाग लगाए, पुरी घनक भाग लगाए, जगे जोत अगम्म अपारी। वेद व्यास बण लिखारी। अठारां पुरान चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक, लिखी लेख अपर अपारी। श्री मध भगवत अठारां हज़ार सलोक, खोल्हे भेव नर निरँकारी। कलिजुग अन्तिम निहकलंक नरायण नर, गौड़ ब्रह्मण घर मिले सरदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गौड़ ब्रह्मण ना कोई जाणे। भुल्ले जीव कलिजुग महाने। साचा हरि मिल्या वर, आप खुल्हाया साचा दर, धुरदरगाही इक्क फरमाणे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणा रंग आप रंगाने, गुरमुख नाम

गुर गोपाला। ना कोई माता पिता ना किसे दा बाला। ना संग करे किसे हित्ता, जन भगतां होए रखवाला। मानस जन्म विरले कलि अन्तिम जित्ता , आत्म रिहा बण कंगाला। प्रभ अबिनाशी साचा पिता, सोहँ दित्ता सच्चा धन माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत जगाई, आदि अन्त वज्जी वधाई, तिन्नां लोकां होए रुशनाई। सरन लगाई पृथ्मी अकाशा। गुर गुर गुर उपदेशा। जोत सरूपी हरि का वेसा। खुल्ह्ड़े रक्खे सतिजुग साचे केसा। कलिजुग जीव भुल्ले डुल्ले माया रुले, पाणी प्या काया चुल्ह्ले, प्रभ धरे भेख माझे देसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवाना, एका जोत मात लिखाए वड नर नरेशा। ब्रह्मण ब्रह्म रूप ब्रह्माद। प्रगट जोत आदि जुगादि। शब्द वजाए साचा नाद। गुरमुख साचे लए साध। अचरज खेल हरि माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख विरला रिहा रसन अराध। ब्राह्मण रूप समाए। दूजा रंग कोई दिस ना आए। एका रंग सृष्ट सबाई आप कराए। शब्द सरूपी इक्क मृदंग, चार कुन्ट रिहा वजाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव अन्तिम कलि चार कुन्ट चार वरन लक्ख चुरासी आप सुणाए। मन मूर्ख मुग्ध अञ्याण, शब्द चलाई जा। जोत धर श्री भगवान, साचा राह वखाई जा। वड दाता हो मेहरबान, फड़ फड़ बाहों राहे पाई जा। एका बख्शे चरन ध्यान, आत्म जोत दीप जगाई जा। चाढ़े सच्चे बबाण, तिन्नां लोकां बाहर कढाई जा। दरगहि साची देवे माण, सरन चरन चरन सरन जन्म मरन मरन जन्म कटाई जा। एका साचा धुर फरमाण, सोहँ शब्द डंक वजाई जा। सतिजुग साचे प्रगट होए विच मात, राउ रंकां सुन खुल्ह्ाई जा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ ग़रीब निमाणयां दे दे चरन ध्यानयां, मानस जन्म लेखे लाई जा।

४३४ ०४

❋ १३ हाढ़ २०११ बिक्रमी पूरन सिँघ दे घर दरबार विच पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

सच्च घर जोत निरँकारी। सच घर आत्म उज्जयारी। सच घर एका एक वसे, गुरमुख साचा साची नारी। सच घर सच कन्त सद सदा सद हस्से, करे खेल अपर अपारी। सच घर पंच चोर जायण नस्से, वज्जे शब्द कटारी। सच घर आत्म बाण प्रभ साचा कसे, विच मात रैण अन्ध अंध्यारी। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका राह सृष्ट सबाई दस्से, कोई भुल्ल ना जाए कलिजुग जीव जगत गंवारी। सच घर जोत अमोला। सच घर एका शब्द एका कंडा, सोहँ डण्डा हरि जी तोला। सच घर प्रभ आपे वंडा, गुरमुखां देवे शब्द बोला। सच घर बेमुख वखायण कंडां, धुरदरगाहे

होए गोला। सच घर गुरमुख विरला लए वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई संत मनी सिँघ आप बणाया जगत विचोला। संत मनी सिँघ दहि दिश धार। चरन कँवल कँवल चरन करन हरि निमस्कार। मिले माण उप्पर धवल, वड्याई सर्ब संसार। खिड़या मात फुल कँवल, गुर संगत सति गुलज़ार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, तिन्नां लोआं बणे आप सिक्दार। हरि सिक्दार सच सिक्दारी। जन भगतां करे ख़बरदार, होका देवे वारो वारी। कलिजुग जीव ठग चोर यार, ना कोई दिसे नाम वपारी। अन्तिम मानस जन्म जाए हार, बहिणा धर्म राए दे चल्ल द्वारी। गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे दर सच्ची सरदारी। हरि घर शब्द घनघोरा। जन भगत चुकाए मोरा तोरा। चरन प्रीती एका नाता साचा जोड़ा। आपे परखे साची नीती, साचा माही धुरदरगाही निहकलंकी वज्जे डंक कलि विच आए दौड़ा। आपे वेखे वेख वखाणे राउ रंकी, कलिजुग जीव मायाधारी मिट्ठा कौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त अन्त हरि साचा गुरमुख विरले विच मात हरि बौहड़ा। गुरमुख मिले मेल, नाम वड्याईआ। अचरज़ रिहा खेल खेल, सृष्ट सबाई भरम भुलेखे रखाईआ। आपे गुर आपे चेल, चेला गुर एका एक होए धुर ना भेव कोई रखाईआ। भुल्ले रुले करोड़ तेतीस सुर, अछल अछल्ल कर हरि भुलाईआ। गुरमुख साचा चढ़ जाए साचे शब्द घोड़, प्रभ अबिनाशी वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले इन्द इन्द्रासण सच सिँघासण साची सेजा आसण आप लवाईआ। लग्गे आसण दर बिसरामा। शब्द चले स्वास स्वासण, पूरन होए कामा। मानस जन्म लेखे लाए प्रभ अबिनाशण, ना कोई मंगे दामा। एका शब्द चले मात अकाशन, जोत सरूपी साचा जामा। लक्ख चुरासी अन्त विनासण, कोई ना दिसे हरया चामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक डंक वजाए, कलिजुग मिटाए रैण अन्धेरी काली शामा। काली रैण जगत अंध्यारी। बेमुख जीव सुत्ते, कलिजुग तेरी अन्तिम रुत्ते पैर पसारी। खाली दिसण घर घर बुते, आत्म जोती जाए मार उडारी। काया कंचन मास ना खायण कुत्ते, दुखी होए जीव गंवारी। गुरमुख साचे संत जनां हरि साचे धाम बहाए, आप लै जाए दोवें भुजां पसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल जगत माया, जन भगतां रक्खे ठंडा, साचा नर हरि जोत निरँकारी। निरँकार जोत जोत बाती। गुरमुखां कर विचार हरि दातार, आत्म मारे झाती। कर किरपा जाए तार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप चुकाए जुगां जुगां दी पिछली बाकी। अमृत साचा जाम प्याए, धुरदरगाही साचा माही, एका साचा नाम जपाए सोहँ शब्द कोए ना रहे अग्गे आकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, मेट मिटाए लक्ख चुरासी जीव ख़ाकी। मेट मिटाए मेटणहारा। आप आपणे करे रंग वसे संग,

४३५
०४

शब्द घोड़े कसे तंग, बणे जगत वणजारा। इक्क वजाए नाम मृदंग, लक्ख चुरासी देवे रंग, लहू मिझ बणे गारा। ना कोई दिसे अकाल अकाली ना कोई दिसे निहंग, एका चले सोहँ शब्द जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे चरन आप उठाए, ब्यासा उप्पर जा टिकाए, मेट मिटाए वारो वारा। हरि नर भगत दर मिले वर, नाम शब्द भण्डारा। आत्म खुल्हे साचा दर चले अमृत साची धारा। आप सुहाए साचा सर, खोल्हे बन्द कुआड़ा। ना जन्मे ना जाए मर, ना लग्गे अग्न तत्ती हाढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत भगत भगवन्त, आदि अन्त जुगा जुगन्त, गुरमुख बणाए घर साचे दा साचा लाड़ा। जै जै जै जुगा जुगन्तर। सर्ब जीआं हरि जाणे अन्तर। जन भगतां बणाए साची बणतर। एका साचा राह वखाए, शब्द सुणाए साचा मन्त्र। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, मात पताल अकाश सर्ब घट वास रखंतर। सर्ब घट वासी सर्ब नूरी, जन भगतां दुआरे बण भिखारे, होए रहण दासन दासी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, करे खेल अपर अपारे, प्रभ शाहो वडा शाबाशी। कलिजुग भुल्ले जीव गंवारे, गुरमुखां दस्से साची धार, आत्म जोत सच्ची प्रकाशी। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचा राह चलाए, मेट मिटाए मदिरा मासी। जै जै जैकार जगत गुरदेवा। जन भगतां देवे वड्याई, वड हरि देवी देवा। दिवस रैण अट्ठे पहर होए सहाई, आप लगाए करे कराए साची सेवा। एका साचा शब्द जपाए, फड़ फड़ बाहों राहे पाए, अमृत फ़ल खवाए साचा मेवा। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत हरि निरँजण नर हरि गुरमुख विरले रसना सेवा। रसना सेवा नर निरँकारी। देवे शब्द सच्ची उडारी। मरन जन्म जन्म मरन, गुरमुखां सद्द वसे बाहरी। खुल्हा रहे हरन फरन फरन हरन, मिटे रैण अंध्यारी। घर साचे जोती जोत करे मेल अन्तिम वारी। जै जै जैकार जगत गुरदेवा, चारे कुन्ट होए जैकारा। लक्ख चुरासी आप पछाणे हरि, जन भगतां साचे संतां सदा सदा सदा बणया रहे आप सहारा। जै जै जैकार जगत निराली। कलिजुग तेरी अन्तिम घटा काली। चारों कुन्ट वेख वखाणे, चले चलाए आपणे भाणे, फल ना दिसे किसे डाली। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी देवे धर्म राए दी फाँसी, उखाड़े जड़्ह बण बण सच्चा हाली। एका इक्क अकार जगत पसारया। जोत सरूपी जामा धार, दूजा खेल करे करतारया। सृष्ट सबाई करन विचार, गुरमुखां देवे शब्द तीजी धार, सरगुण निरगुण खेल करे निरंकारया। चौथे जुग अन्तिम आई हार, प्रभ मारे शब्द कटार, लक्ख चुरासी गई हार, ना होवे कोई सहारया। निहकलंक नरायण नर अवतार, पुरी घनक जोत जगा रिहा। पंचम् परम पुरख अपार, छेवां देवे शब्द ज्ञान, जन भगतां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान, एका जोत करे रुशनाईआ। सतवें सति दुआरे, गुरमुख साचे आपे आप हरि साचा तारे, देवे नाम जगत वड्डयाईआ। अठवें

उठ उठ वेखण, जोत जगाए रोड़ी सक्खर, पंचम् जेठ मिले वधाईआ। नौंवे नौ दर वेख, जोत कलि धारे भेख, सृष्ट सबाई लिखाए लेख, जन भगतां तन लगाए मेख, दसवें दहि दिश उठ धाए, चार वरनां एका राह दसाए, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर नरायण एका जोत विच मात डगमगाईआ। एका चाल नूर नुरानी। दूजा पाए माया जाल, खिच्चे जोत हरि भवानी। तीजा देवे शब्द ढाल, जन भगतां कराए वड बलवानी। चौथे वेखे पुरख सुजान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, जोती आप जगाए शब्द सुणाए साची बाणी। पंचम् पंचम् पंचम् हरि मारे, दरगहि साची वेख वखाणे एका एक धुन उपजाणी। छेवें छे घर उपदेशे, प्रगट होए नर नरेशे, धरे जोत माझे देसे, जगे जोत जगत महानी। सतवें सत्त सत्त दीप आप चलाए आपणी रीत, जोत सरूपी हरि भगवानी। अट्ठ अठत्तर आए बहत्तर साचा बीज बिजाए दया कमाए, आप उठाए लक्ख सत्तर, चढ़ाए विच बबाणी। नौवां नर नारी हरि वेखे, जन भगतां लिखाए लेखे, बेमुख रहे भरम भुलेखे, ना कोई जाणे चतुर सुजानी। दसवें दर्द दु:ख भय भंजन, जगे जोत इक्क निरँजण, अन्तिम कलि एका शब्द एका तार विच संसार लगाए साची मेखा, लग्गे मेख जगत नुरानी। सतिजुग साचे सति सतिवादी, प्रगट होए जगत चलाए साची बानी। एका नाम डंक वजाए, राउ रंक इक्क कराए, ऊँच नीच हरि भेव चुकानी। साचा द्वार बंक सुहाए,

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगे जोत अचल अटल्ल इक्क भगवानी। जोत अटल्ल अचल अचल्ला। वसे सच महल्ल एका हरि इकल्ला। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, जन भगतां सुनेहड़ा आपे घल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव आप खुल्हाए गुर गोबिन्द जो गया लिखाए, अन्त सुणाए डल्ला। साची सिख्या हरि निरँकारा। वरते वरतावे विच संसारा। आपणी रक्खे तिक्खी धारा। परखे सिक्खी अन्तिम वारा। गुरमुख साचे धुरदरगाही साची लिख्त हरि साचे लिखी, ना कोई मेटे मिटावणहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, आत्म खोल्हे साचा दर, नूर नुरानी करे मेहरबानी साचा दर सतारां हाढ़ा। जगे जोत सतारां हाढ़। मार मिटाए पंचां धाड़। करे रुशनाए गुरमुख साचे नाड़ नाड़। प्रगट होए दरस दिखाए, जंगल जूह विच पहाड़। भरम भुलेखा दूर कराए, साचा लेखा अन्त चुकाए, आपे फिरे पिछे अगाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, लक्ख चुरासी अग्नी जोती देवे साड़। सतारां हाढ़ सर्बकल धारे। करे खेल अपर अपारे। गुरमुख वेखे रंग मुरारे। एका जोती एका गोती वसे भेव न्यारे। गुरमुख साचे माणक मोती, खिच्च ल्याए चरन दुआरे। दुरमति मैल साची धोती, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़े। सृष्ट सबाई रही रोती, लग्गी अग्न तत्ती हाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, धुरदरगाही साचा

माही आप बणाए साचे लाड़े। साचा हरि हरि सरदारा। शब्द घोड़ी चाढ़ा पहली वारा। बेमुखां वक्त आया माढ़ा। एका उठे अगम्मी धाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ लिख्त लिखाए, पूर कराए सतारां हाढ़ा। पंचम् जेठ पंचम् राणी। मातलोक हरि माण दवाए, सोहँ शब्द साची बाणी। साचा कन्त गुरमुख विरला संग हंढाए, दर्शन पाए नैण मुधानी। सृष्ट सबाई रंड हो जाए, नाता छुट्टे भैण भ्रानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डण्डा शब्द खण्डा हथ्थ उठाए, नौ खण्डां वरभण्डां साची वंड आप कराए, ना कोई दिसे जीव शैतानी। ना कोई दिसे जीव शैताना। सोहँ वज्जे साचा बाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। चढ़या घोड़, गुरमुख साचा चरनी जाए जुड़, मिले मेल हरि भगवाना। चरन प्रीती निभे तोड़, आत्म जोत जगे महाना। आप चढ़ाए शब्द घोड़, जोत सरूपी वड बली बलवाना। धुरदरगाही आया दौड़, देवे नाम निशाना। कलिजुग जीव रीठे कौड़, अन्तिम वेले मेट मिटाना। जन भगतां चढ़ाए साचे घोड़, दरगहि साची माण दवाना। बेमुख लभ्भण ब्राह्मण गौड़, वेद व्यास लेख लिखाना। जोत सरूपी हरि निहकलंक कलि जामा पाए, शब्द सरूपी डंक वजाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गौड़ ब्राह्मण ना कोई गौड़ा। तिन्नां लोकां दो जहानी चौदां हट्टां कोई ना दिसे पौड़ा। आत्म रस गुरमुख विरले प्रभ दर पीता, वेख वखाणे आपे जाणे हरि भगवाना, कलिजुग जीव मिट्ठा कौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व तंग कसाया, सच सिँघासण सोलां कलीआं डेरा लाया, मातलोक आया दौड़ा। जल कँवल कँवल जल जान। उप्पर धवल हरिभगत पछाण। जोत सरूपी रिहा मवल, घर साचे देवे माण। जोती जोत सरूप हरि, नर नर हरि श्री भगवान। हरि भगवान नाम गुणवन्ता। देवे दान जन साचे संता। जगत माण मेल मिलावा साचे कन्ता। सतिजुग झुल्ले सच निशान, चढ़या रहे नाम बबाण, प्रभ आप चढ़ाए आदिन अन्ता । करे खेल मात महान, जोती जोत कृष्ना कान्हा, बणे बणाए साची बणता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले विच लक्ख चुरासी जीव जन्ता। जीव जन्त प्रभ सर्ब वरोले। गुरमुख साचा जन भगत पूरे तोल शब्द कंडे तोले। नूर नुरानी जोत धर, परम पुरख परमात्म शब्द सरूपी आत्म बोले। नाम देवे सच्चा वर, अन्त चढ़ाए साचे डोले। अमृत भाण्डा काया तन सरोवर देवे भर, चढ़े रंग जगत अमोले। अन्तिम अन्त आप चुकाए जम का डर, दूई द्वैती बज़र कपाटी पड़दे खोल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुर संगत दया कमाए हाढ़ सोले। सोलां हाढ़ सोलां श्रृंगार। पुरख अबिनाशी जन भगतां होए दास। आप कराए शब्द पहनाए तन साचा हार, निज घर आत्म करे वास। जोत सरूपी गुरमुख साचे जाए तार, पंच पंचायण कलिजुग माया डैण करे नास। शब्द चलाए स्वास स्वास। अमृत देवे साची धार, एका रंग वखाए पृथ्मी अकाश। गगन मण्डल

४३८
०४

हरि पावे रास। पूरे गुर सद बलि बलि जास। पंज तत्त हँकारी जाए मार, सोलां हाढ़ सोलां कल। जन भगतां कराऐ शब्द वाड़, बहाए निहचल धाम अटल्ल। बेमुखां चबाए आपणी दाढ़, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच जल थल। कलिजुग कच्चे फल देवे झाड़, आप सुटाए डूंघी डल। लोकमात दए जड़ उखाड़, शब्द सरूपी चार कुन्ट दहि दिश आप चलाए हल। जन भगतां जोत जगाए करे प्रकाश काया सच महल्ल। दूई द्वैती देवे पाड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुनेहड़ा अन्तिम अन्त कलि रिहा घल। शब्द सुनेहड़ा जगत विचोला। हरि आप चलाए दया कमाए मात उपजाए, चार वरन चार कुन्ट एका तोला। गुरमुख साचे लए जगाए सरन बहाए, दरस दिखाए मोल अमोला। बेमुख जीव रहे कुरलाए, दर घर घर दर करन हाए हाए, दुखी होया काया चोला। गुरमुख आत्म तृष्ना तृख मिटाए, साची सिख्या इक्क सुणाए, चरन प्रीती घोल घोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवण आया लक्ख चुरासी इक्का बोला। लक्ख चुरासी एका बोली। मैली होई काया चोली। माया मोह लभ लोभ हँकार, कहार उठाए फिरन काया डोली। अन्तिम वेले आई हार होए ख्वार, दर दर भिखार करे नर नार, ना कोई सज्जण मीत मुरार, प्रभ अबिनाशी हरि साचा कन्ता मारे शब्द कटार, दुरमति मैल ना किसे धोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे जीआ दान, नाम निशान मात महान विरले सद कोई कोई। सोलां हाढ़ सहिज सुभागा। मात वखाणे अलखणा अलाखा। गुरमुख विरला जन जाणे, लेखा लिख्या धुर माथा। एका रंग हरि साचा माणे, आपे होए प्रभ सगला साथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, जीव जगत बेमुहाणे, भुल्ले फिरन राजे राणे, धरे जोत बिन वरन गोत त्रैलोकी नाथा।

✻ १६ हाढ़ २०११ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरि हरि हरि एका रूप है। रंग अनूप करतार। हरि हरि हरि वडा शाहो भूप है। तिन्नां लोकां पावे सार। हरि हरि हरि एका जोत सति सरूप है, सृष्ट सबाई करे अकार। हरि हरि हरि जगाए जोत विच अन्ध कूप है, निहकलंक अन्तिम कलि मात लए अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां आप उठाए अन्तिम वार। संतन संग रंग हरि चाढ़े नाम रंग। मंगण जाए ना किसे दर, शब्द घोड़े कस तंग। सृष्ट सबाई करे सर, लक्ख चुरासी भन्ने वांग काची वंग। जन भगतां चुकाए जम का डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती अटल। अकाल

सर्ब प्रितपाल, जन भगतां देवे नाम वर। साचा हरि वड वरयामा। आत्म वजाए सच्चा शब्द दमामा। आपणा पूर कराए अन्तिम कलिजुग कामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाथ त्रैलोकी एका जोती, आदि अन्ती जुगा जुगन्ती हरि भगवन्ती रमईआ रामा कृष्ना शामा। कृष्न मुरारे हरि गिरधारे। कलिजुग अन्तिम वारे। पावे सारे चार कुन्ट वेख विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल जन भगतां मेल, आत्म जगे जोती बिन बाती तेल, देवे दरस अगम्म अपारे। अगम्म अपार दरस गुर दीना। करे खेल हरि निरँकार रूसा चीना। शब्द खण्डा पकड़ उठाए भन्ने इक्क हँकारी बीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समाणे, राजे राणे किसे दिस ना आए, ब्रह्म ज्ञानी आप भुलाए, उचे मन्दिर आपे ढाहे, मेट मिटाए मक्का मदीना। आर पार पार आर। इक्क हरि दोहां धिरां पावे सार। करे खेल सच्चा सज्जण, शब्द रक्खे तिक्खी धार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। शब्द फड़े हथ्थ कटार। रूप रंग ना रेख भेख किसे विचार। मेट मिटाए जात पात, ऊँच नीच हरि वसे बाहर। तिन्नां लोकां हरि सरदार। जोत सरूपी खेल अपार। खण्डां ब्रह्मण्डां पावे वंडां आपे बणे लेख लिखार। आप चमकाए चण्ड प्रचण्डा, लहू मिझ वगे धार। बेमुखां देवे घर घर डण्डा, रंडीआं होवण जगत नारां आत्म तोड़े सर्ब घमंडा, मारे डाहढी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ साचे गुर, लिख्या
४४० ०४ लेख पुरख अबिनाशी धुर, मिली दात वड करामात उत्तम ज़ात, एका नाथ हरि सच भतार। आर पार पार किनारे। दोहां वसे हरि जी बाहरे। दूर दुराडा वेख खिड़ खिड़ हस्से, बेमुखां पैणी डाहढी मारे। धरत मात करी पुकारे। जन भगतां राह साचा दस्से, निहकलंकी जामा धारे। शब्द तीर एका कसे, चार कुन्ट करे ख्वारे। कलिजुग मिटे अन्धेरी रैण मस्से, सतिजुग साचा चढ़े चन्द चढ़ाए आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ साचे गुर लिख्या धुर, करी लेख लिख्त अपारे। आर पार पार वसाउणा। एका राह सृष्ट सबाई आप वखाउणा। जन भगतां कटे जम का फाह, लक्ख चुरासी गेड़ कटाउणा। इक्क वखाए सच्चा थां, जोत सरूपी जोत जगाउणा। अन्तिम वेले पकड़े बांह, दरगहि साची माण दवाउणा। आदि अन्त जुगा जुगन्त सद रक्खे ठंडी छाँ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गगन पताली आर पार भेव किसे ना पाउणा। भेव किसे ना पावणा। राउ रंक रंक राजान, प्रभ मारे शब्द बानणा। हरि पहरे चिट्टा बाणा जन भगतां देवे नाम निधाना, मिटे रैण अन्ध अंध्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत भगत जन विरले मात पछाणा। इक्क जणाई शब्द संदेशा। धरे जोत प्रभ माझे देसा। पुरी घनक हरि डंक वजाए, गुरमुख साचे विच प्रवेशा। एका अंक शब्द चलाया, माण गंवाए ब्रह्मा विष्न महेषा। राउ रंक इक्क रंग रंगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

जोत सरूपी अन्तिम कलि धारे भेसा। साचा भेख हरि निरंकारया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, मानस जन्म हारया। गुरमुख साचे नेत्र पेख, मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक वज्जा डंक, जामा लोकमात विच धारया। जामा धारे नर अवतारा। निहकलंकी खेल अपारा। राउ रंक एका रंग एका संग, शब्द घोड़े कसे तंग, चार कुन्ट होए जंग, वज्जे शब्द डंक विच संसारा। लक्ख चुरासी होए भंग, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। गुरमुख विरला मंगे मंग, एका शब्द नाम अपारा। देवणहार वड दाता सूरा सरबंग, आदि अन्त ना पारावारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात चार वरनां करे एका उत्तम ज़ात ऊँच नीच हरि भेव निवारा। भेव निवारे हरि द्वार। जन भगतां देवे शब्द अधार। आत्म साची जोत जगाए, मिटाए अन्ध अंध्यार। वरन गोत ना कोई रहाए, दरस पाए हरि निरँकार। एका मात पित आप अख्वाए, नर हरि सच्ची सरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक पंचम् जेठ बन्ही सच्ची दस्तार। एका खेल आप कराए। शब्द सरूपी बाण चलाए। आत्म तीर सीने लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट चार चुफेरे शब्द पल्लू आप फिराए, बेमुख जीवां दिस ना आए। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, ठंडी छाँ आत्म सुख आपे बणे पिता मात। मिटाए अन्ध अन्धेरी रात। जोत सरूपी चार वरनां जपाए एका जाप। सोहँ शब्द अमृत वेले नाम प्रभात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, मातलोक बणाए उत्तम ज़ात। उत्तम जाती दरगहि परवान। एका नाम शब्द पंघूड़ा, आप चढ़ाए श्री भगवान। रंग चढ़ाए एका गूढ़ा, वाली दो जहान। गुरमुख विरला चरन मस्तक लाए धूढ़ा, आत्म करे इशनान। कलिजुग जीव मूर्ख मुग्ध अञ्याण ना करे पछाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सहिज सुभाए जगत चलाए नाए, गुरमुख साचे लए चढ़ाए, कर कर आप पछाण। संत मनी सिँघ तेरी कलम चोज। भेव खुल्हाया लेख लखाया, कलिजुग अन्तिम वेले गोझ। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, छोटा बाला अग्गे लाया, सिर आपणे उठाया बोझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, भाग लगाए पिण्ड बोघ। हीरा घाट कर रुशनाई। सतिजुग तेरी सच निशानी, आप लिखाए बणत बणाए वाली दो जहानी। गुरमुख साचे शब्द जणाए, करे खेल अटल्ल अचल्ल महानी। चार कुन्ट कराए जल थल, मेल मिलाए भगत भगवानी। हीरा घाट हरि हरि जस गाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साचा राह इक्क वखाया। गुरमुख साचा रस लैण चाट, अमृत फल सच खवाया। बेमुख जानण खेल बाज़ीगर नाट, अन्तिम वेले मानस जन्म गंवाया। वेले अन्तिम आई घाट, ना होए कोई सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख चढ़ाए औखे घाट, शब्द डण्डा एका पौड़ा, आप लगाया। जगत भेख न्यारा हरि निरंकारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जोत

सरूपी जामा धारया। एका एक सच्ची सरकारा, निहकलंक नर अवतारया। लक्ख चुरासी मंगदी रहे दवारा, भरया रहे सदा भण्डारया। देंदा रहे वारो वारा, चारे जुग खेल अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद समा रिहा। आपणे भाणे सद समाए। राजे राणे हथ्थ ना आए। कलिजुग जीव अन्तिम भुल्ले सुघड़ स्याणे, खाणी बाणी किसे दिस ना आए। अन्तिम वेले छडणे पैणे हाणीआं हाणी, किसे हथ्थ ना आए पाणी सतारां हाढ़ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लेख आप लिखाए। कलिजुग कूड़ा फल फल कच्चया। ना कोई सज्जण सुहेल, बेमुखां तन रहे मच्चया। जन भगतां साचा मेल, हरि हिरदे साचे रच्चया। जगे जोत बिन बाती बिन तेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मार्ग लाए दस्से राह सच्चो सच्चया। कलिजुग काल रूप वखाना। जोत सरूपी पहरे बाणा। नीला चोला तन सुहाए, खेल कराए जगत महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जाणे आपणा भाणा। नीला चोला मुहम्मदी दीना। प्रभ अबिनाशी फड़ फड़ बाहों वक्खर वक्ख कीना। मेट मिटाए मदिरा मासी, अन्तिम वेले कलिजुग तेरा पाड़े सीना। प्रभ दर मंगी गुरमुख मंग, इक्क चढ़ाए गूढ़ा रंग, देवे नाम नगीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर नरायण, मात पित साक सज्जण सैणा। गुर संगत दस्से मिल मिल बहिणी, नेत्र वेख साचे नैणी, शांत कराए गुरसिख सीना। सीना शांत
४४२ ०४ आत्म ठंड। पल्ले बन्ने नाम गंढु। शब्द ज्ञानी आत्म ध्यानी, भुल्ली जोत इक्क भगवानी आत्म होई रंड। गुरमुख साचे ४४२ ०४
संत जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए विच ब्रह्मण्ड। विच ब्रह्मण्ड माण निमाणे। गुरमुख साचे आप पछाणे। देवे साचा माण ताण, जोत सरूपी हरि भगवाने। आत्म देवे शब्द बबाण, गुरमुख साचे आप बहाणे। दरगहि साची दर परवान, झुल्लदा रहे नाम निशान, छोटे बाले बाल अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सदा अतीत, मातलोक गया जीत, आप बहाए साचे थां सच टिकाणे। सच टिकाणा दस्से राह। लक्ख चुरासी कटे फाह। आपे बणे पिता मां। शब्द दात हरि झोली पाए, साची डोली आप चढ़ाए, इक्क बहाए सच्चे थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम अन्त आप जगाए साचे संत, घर घर उडदे दिसण कां। उडण काग मार उडारी। बेमुख जीवां मानस बाज़ी अन्तिम हारी। चारों कुन्ट चार चुफेरे कलिजुग तेरी होए ख्वारी। अट्ठे पहर शब्द सरूपी होया रहे पहरेदारी। आपे पहने नीला चोला। गुरमुखां सुणाए साचा बोला। सोहँ शब्द साचा बोला। धुरदरगाही साचा ढोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घोला। सतिजुग चार वेद नौ खण्ड है। सत्तां दीपां खोल्हे भेव, वड देवी देव विच ब्रह्मण्ड है। गुरमुख साचे कीनी साची सेव, कलिजुग जीवां देण आया दंड है। छे शास्त्र अठारां पुरान, प्रभ

अबिनाशी मारे इक्क ध्यान। कलिजुग वेख वखाणे अठारां ध्याए गीता ज्ञान। लक्ख चुरासी मुख आप पछाणे, वरन अठारां मिटे निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख सच्चा संत दुलारा, तेरा झुल्ले इक्क सच्चा निशान। चौदां तबक चौदां हट्ट। चौदां लोक गुरमुख साचे संत जन तैनूं सके ना कोई रोक। सोहँ शब्द इक्क सच्चा सलोक। कलिजुग वेला वक्त सुहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे मति सच्चा जोग। चार कुन्ट चार द्वारी। वार अठारां हरि उसारी। साढे तिन्न हथ्थ रक्खी सीं, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। जन भगतां आत्म बरखे मींह, काया करे ठंडी ठारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रीत जगत चलाई, चरन प्रीती इक्क बंधाई, करे खेल अपर अपारी। दहि दिश सच दुआरे। प्रभ अबिनाशी आप उसारे। गुरमुखां वखाए एका छोटा सच दुआरे। गुरमुख साचे सेवा लाए, जगी जोत जगत अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात हरि जामा पाया, जन भगतां बणया आप नाम वरतारे। नाम शब्द धुन्कार, जगत जैकार है। जोत सरूपी जामा धार, नुहाए सर निरँकार है। लोकमात खेल अपर अपार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। मनमुखां मात आई हार, गुरमुखां मिल्या नाम अधार है। आप कराए तन श्रृंगार, नर नरायण भेखा धार है। आदि अन्त जुगा जुगन्त, करे खेल अपर अपार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पावे सार है। ना कोई पावे सार,
४४३ ०४ भेव ना जाणदा। सृष्ट सबाई होई अन्ध अंध्यार, प्रभ अबिनाशी ना कोई वखाणदा। मुकदे जाण चार यार, अन्तिम वार ४४३ ०४
हो ख्वार, वज्जे तीर निगाहबान दा। सतिजुग साची दस्से धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म धुरदरगाही सच्ची सरकार दा। सच सरकार सच्चा शाहो। जोत सरूपी जामा पाए, आदिन अन्ता बेपरवाहो। आप बहाए साचे थांउँ, नर हरि हरि नर आप अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ चरन बहाए दया कमाए पार लँघाए फड़ के बाहों। बाहों फड़ करे पार। शब्द दस्से साची धार। शब्द घोड़े हो अस्वार। सोहँ शब्द अस्त्र शस्त्र रसना चलाए हरि कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत माया लक्ख चुरासी आप भुलाया, गुरमुख साचे जाए तार। गुरमुख साचे तारे सुरत संभालदा। पंजां चोरां ठग्गां यारां मारे, किला तोड़े गढ़ हँकार दा। सतिजुग दस्से साची धार, सोहँ शब्द हरि भगवान दा। एका राह वखाए सृष्ट सबाई नर निरँकार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धार श्री भगवान दा। हरिजन जन्म अपार, पुरख हरि पांयदा। हरिजन जन्म अपार गुर गोबिन्द दोवें रसन ध्यांयदा। हरिजन जन्म अपार, वड गुणी गहिंद चरन ध्यान लगांयदा। हरिजन जन्म अपार, वड दाता मृगिन्द एका ओट रखांयदा। हरिजन जन्म अपार, बेमुख करन निन्द, बेड़ा आपणा आप तरांयदा। हरिजन जन्म अपार, मिले माण विच

हिन्द, पुरख अबिनाशी दया कमांयदा। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत सागर सिंध आप वहांयदा। हरिजन जन्म अपार, जोत जगाईआ। हरिजन जन्म अपार, लोकमात मिली वड्डयाईआ। हरिजन जन्म अपार, घर घर वजदी रहे वधाईआ। हरिजन जन्म अपार, घर साचे खुशी मनाईआ। हरिजन जन्म अपार, झूठी काया जगत तजाईआ। हरिजन जन्म अपार, मोह माया तृष्न मिटाईआ। हरिजन जन्म अपार, एका ब्रह्म एका ओट रखाईआ। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची आप बहाईआ। हरिजन जन्म अपार, जोत अमोल है। हरिजन जन्म अपार, उतरे पूरे तोल है। हरिजन जन्म अपार, हर हिरदे रक्खे वास वसे सदा कोल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आत्म दर दुआरे वजाए सच्चा ढोल है। हरिजन जन्म अपार, भगत भण्डार हे। हरिजन जन्म अपार, मानस जन्म ना आए हार है। हरिजन जन्म अपार, आपा आप गुर संगत उत्तों दित्ता वार है। हरिजन जन्म अपार, एका मिल्या सोहँ जाप दूजा दिसे ना कोई बोल है। हरिजन जन्म अपार, तन लग्गा ना कोई पाप रिहा जगत अडोल है। हरिजन जन्म अपार, आपे मारे तीनो ताप, आत्म पड़दे रिहा खोल्ह है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आदि अन्त करदा रहे सदा चोहल है। हरिजन जन्म अपार, जोत नुरानया। हरिजन जन्म अपार, मिले मेल पुरख अबिनाश हरि भगवानया। हरिजन जन्म अपार, प्रभ होया रहे दास प्रभ देवे शब्द निशानया। हरिजन जन्म अपार, निज घर आत्म रक्खे वास, मारे तीर निशानया। हरिजन जन्म अपार, मानस जन्म करे रहिरास, इक्क सुणाए शब्द कानया। हरिजन जन्म अपार, जगे जोत मात पताल अकाश, लोकमात करी कुरबानीआं। हरिजन जन्म अपार, शब्द जपे स्वास स्वास, हरि देवे वड वड दानया। हरिजन जन्म अपार, आत्म रस रसना करी रास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे वाली दो जहानया। हरिजन जन्म अपार, गेड़ चुकांयदा। हरिजन जन्म अपार, लोकमात छेड़ छिड़ांयदा। हरिजन जन्म अपार, लक्ख चुरासी एका भेड़ भिड़ांयदा। हरिजन जन्म अपार, शब्द उखेड़ा इक्क लगांयदा। हरिजन जन्म अपार, आप गिड़ाए उलटा गेड़ा, बेमुखां गेड़ गिढ़ांयदा। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे नेरन नेरा आप वखांयदा। हरिजन जन्म अपार, जगत दलाल है। हरिजन जन्म अपार, लोकमात अनमुल्लड़ा लाल है। हरिजन जन्म अपार, प्रभ अबिनशी लक्ख चुरासी विच्चों करे भाल है। हरिजन जन्म अपार, आप लगाए साचा फल काया डाल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त सद चले अवल्लड़ी चाल है। हरिजन जन्म अपार, जोत निरालीआ। हरिजन जन्म अपार, जगी जोत इक्क अकालीआ। हरिजन जन्म अपार, सोहँ

बाणा तन पहनाए, एका देवे शब्द दुशालीआ। हरिजन जन्म अपार, आप बहाए साची नाए, दरगाह साची आप बहा लीआ। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां आत्म रंडी, झूठी काया दिसे खालीआ। हरिजन जन्म अपार, जगत वणजार है। हरिजन जन्म अपार, एका हरि सच्चा भतार हे। हरिजन जन्म अपार, बणया रहे घर साचे दी साची नार है। हरिजन जन्म अपार, वरदा रहे धरदा रहे पुरख अबिनाश सच्चा इक्क सरदार है। हरिजन जन्म अपार, भगत अमोल। हरिजन जन्म अपार, सदा अडोल। हरिजन जन्म अपार, जन भगत सद अतोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे वर, ना जाए हरि देवे शब्द झकोल। हरिजन जन्म अपार, सदा रंग रातया। हरिजन जन्म अपार, प्रभ खोल्हे आत्म ताकया। हरिजन जन्म अपार, आप चुकाए पूर्ब लेखा पिछला बाकीआ। हरिजन जन्म अपार, आप चढ़ाए साचे घोड़े शब्द जणाए साचा राकीआ। हरिजन जन्म अपार, अमृत साचा सीर प्याए, बण बण साचा साकीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए विच मात नाथ त्रैलोकीआ। हरिजन जन्म अपार, रंग चलूल है। हरिजन जन्म अपार, ना जाए भूल है। हरिजन जन्म अपार, मेल मिलावा कन्त कन्तूहल है। हरिजन जन्म अपार, सच सिँघासण डेरा लाए ना दिसे पावा चूल है। हरिजन जन्म अपार, एका शब्द तीर चलाए पुरीआं लोआं मारे त्रसूल है। हरिजन जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मिल्या कन्त कन्तूहल है। हरिजन जन्म अपार, जगत सुधार है। हरिजन जन्म अपार, हरि मिल्या मीत मुरार है। हरिजन जन्म अपार, आत्म जगी जोत काया होई उज्जयार है। हरिजन जन्म अपार, दुरमति मैल गया धोत, मानस जन्म गया सुधार है। हरिजन जन्म अपार, इक्क कराया वणज वपार है। हरिजन जन्म अमोल, मिल्या मेल हरि भगवानया। हरिजन जन्म अपार, लोकमात देवे दात, प्रभ करे पुरख सुजानया। हरिजन जन्म अपार, मिटे अन्धेरी रात, आत्म मारे झात जगे जोत महानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची माण दवाए, साचे धाम आप बहाए, देवे नाम निशानीआं। हरिजन जन्म अपार, आत्म दात है। हरिजन जन्म अपार, दर साचे मिली उत्तम जात है। हरिजन जन्म अपार, चरन प्रीती बद्धा सच्चा नात है। हरिजन जन्म अपार, जगत रीती परखे नीती अन्तिम पुच्छे वात है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दरस दिखाए दया कमाए बैठा रहे इक्क इकांत है। हरिजन जन्म अपार, मेल हरि इक्क इकांतया। हरिजन जन्म अपार, प्रभ देवे अमृत बूंद सवांतया। हरिजन जन्म अपार, प्रभ रिहा पूरे तोल तोल, बंधाए साचा नातया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठारां माघ दया कमाए, गांधी बांधी बन्न ल्याए, बणाए साचा राकीआ। साचा राकी हो त्यार। आया चरन हरि द्वार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। पूर्ब जन्म कर विचार। मानस जन्म आई हार।

मेल मिलावा जगत भुलावा ना मिल्या हरि करतार। झूठा बन्नॣया जगत दाअवा, एका नर हरि हरि नर दर घर सच्ची सरकार। जिथ्थे वसे हरि जी जगे जोत अगम्म अपार। तरदे जाण नारी नर, रूप रंग रेख भेख अपर अपार। आप नुहाए साचे सर, काया दोख दए निवार। आप वसाए साचे घर, जगे जोत अगम्म अपार। निहकलंक नरायण नर, मातलोक हरि जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपार। आए गांधी दर दुआरे। प्रभ अबिनाशी सुण पुकारे। एका खोलॣे बन्द कवाड़े। वीह सौ बिक्रमी पहली हाढ़े। इक्क ग्यारां नाल रलाई, आप बणाए साचे लाड़े। प्रभ अबिनाशी साचा माही, लक्ख चुरासी आपे झाड़े। गुरमुखां फड़े अन्तिम बांहीं, दर घर साचे आपे वाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाई करे रुशनाई बहत्तर नाड़े। काया कूड़ा दिल दिलगीर। शब्द सरूपी बज्झा जंज़ीर। नेत्र नीर वहाए, आत्म वजा तीर। प्रभ दर बद्धा कौण छुडाए, ना कोई देवे धीर। पंडत पांधे रहे पछताए, राउ राज शाह सुल्तान वड बलवान हथ्थ ना आए नीर। निहकलंक हरि बलवान, एका मारे बाण वाली दो जहान, सिध्धा जाए इक्क निशान, सृष्ट सबाई रिहा चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा आप सुहाए, तन सुहाए अवल्लड़े चीर। आए दौड़
४४६ ०४ चरन निमस्कारे। प्रभ अबिनाशी सुण पुकारे। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। निहकलंकी जामा धारे। राउ रंकी सुण पुकारे। ४४६ ०४
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गांधी बांधी आत्म बांधी होए आप सहाए। होए सहारा हुक्म सुणांयदा। देवे शब्द धारा मार्ग पांयदा। वज्जे शब्द नगारा, चार कुन्ट आप सुणांयदा। आया चल्ल हरि दुआरा, सोहणा घोड़ा चिट्टा जोड़ा संग रलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम कलिजुग बौहड़ा, जोत सरूपी भेख वटांयदा। आया दर होया मस्कीन। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, दस्से साचा राह मेल मिलावा रूसा चीन। हरि का भाणा लैणा ज़र, नौ खण्ड पृथ्मी करनी सर, एका भन्ने हँकारी बीन। अन्तिम अन्त जोत धर, जोत सरूपी भेख कर, तख्त ताज साज बाज सृष्ट सबाई लए छीन। गांधी गऊ ग़रीब निवाज़ है। अन्तिम कलिजुग पैंदी मार, मानस जन्म गया हार है। दर साचे आया भाज, मिले प्रभ अबिनाशी पाए सार है। कर विचार आप बणाए ताजी ताज है। छोटे बाले कर अस्वार है। आप फिराए दर द्वार, वेख वखाणे पूरी इन्द्रप्रस्त जिथ्थे सच्चा राज है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, भाग लगाया माझे देस है। माझा देस गुर गोबिन्द लिखाया। कलिजुग भेव किसे ना पाया। सम्बल देस हरि दरवेश, जोत सरूपी खेल रचाया। भुल्ले फिरदे नर नरेश, वड मृगेश, भरम भुलेखे जगत भुलाया। जन भगतां देवे शब्द संदेश, संग रलाया। गुरमुख साचे विच प्रवेश, खुलॣे रक्खे सदा केस, सतिजुग साचा राह वखाया। भुल्ले फिरदे ब्रह्मा विष्न महेष, तिन्नां लोकां दिस ना

आया। निहकलंकी अन्तिम कलिजुग कर कर वेखे वेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ राजान शाह सुल्तान किसे हथ्थ ना आया। राउ रंक दिस ना आए हरि भगवाने। कलिजुग जीव होए निधाने। माया रूपी जगत प्रधाने। गुरमुख साचे बाल अञ्याणे, मेल मिलावा साचे कन्त, आप बणाए साची बणत, जोत जगाए आप महाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत हरि आपे धर, जन भगतां देवे साचा वर, आप उठाए बाल अञ्याणे। दर बांधा हरि पुकारया। ना कोई तन्द ना तांदा, अचरज़ खेल हरि खिला रिहा। ना कोई छन्द ना कोई छाँदा, छत्ती राग ना किसे विचारया। ना कोई जाणे बत्ती दन्दा, दसवें दर ना वेख वखा रिहा। ना कोई जाणे शब्द नादा, साचा हरि साचे घर आप बहा रिहा। झूठी माया जगत बांधा, माया मोह जगत बन्ना रिहा। शब्द चलाए बोध अगाधा, होए सहाई माण रखाया। होए सहाई ताण निताणया, साचा नाम देवे वञ्झ मुहाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोकां डंक वजाया, राउ रंकां आप सुणाया। आए दर दरबानया। लक्ख चुरासी विच्चों पुरख अबिनाशी वक्ख कीना, प्रगट होए घनकपुर वासी। मेट मिटाए मदिरा मासी। मारे बाण शब्द खिच्च, जो जन जपे रसन स्वास स्वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी।
४४७ आए दर बण भिखारी। एका मंगया साचा वर, देवे हरि नर निरँकारी। आपणी किरपा लई कर, कलिजुग तेरी अन्तिम ४४७
०४ वारी। छोटे बाले जोत धर, साचे घोड़े कर अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप फिराए पुरी इन्द्र, सच सिँघासण ०४
वारो वारी। आया दर दरवेशा, गल पलड़ा पाए सीस झुकाए दया कमाए। वड दाता गुणी गुणीता, फड़ फड़ बाहों राहे पाए। चौथे जुग चार कुन्ट आप फिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, दिस किसे ना आए। चौथे जुग चौथा पौड़ा। दर घर साचे आए दौड़ा। शब्द सरूपी बणया घोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, धरत मात हरि दे दे वर, वेले अन्तिम कलिजुग बौहड़ा। हरिजन जन्म अमोल, नाम भण्डार है। हरिजन जन्म अमोल, लोकमात सच्चा वणजार है। हरिजन जन्म अमोल, देवे वड्याई पुरख अगम्मड़ा मीत मुरार है। हरिजन जन्म अमोल, लेखे लाए चम्मड़ा, मानस देही आई हार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक बेड़ा कर जाए पार है। हरिजन जन्म अपार, कलि अधारना। हरिजन जन्म अमोल, जगत अभारना। हरिजन जन्म अमोल, वक्त सुधारना। हरिजन जन्म अमोल, पंचां दुष्टां मार मारना। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए शब्द घोड़े अस्वारना। शब्द घोड़े कर त्यार। मातलोक हरि आए दौड़े, जोत सरूपी कर अकार। जन भगतां अन्तिम वेले बौहड़े, धर्म राए ना मारे मार। आपे परखे मिट्ठे कौड़े, करे नबेड़ा सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाहों पकड़

कलि जाए तार। शब्द घोड़ा मात सिद्धाए। प्रभ अबिनाशी संग रलाए। एका चाढ़े नाम रंगण, रंग चलूल उत्तर ना जाए। दूजे दर ना जाए मंगण, शब्द झूला आप झुलाए। आप रंगाए आपणी रंगण, कन्त कन्तूहल मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत प्रीती चरन नीती साचा संग निभाए। अंग संग संग अंग हो जाए, बेड़ा पार करांयदा। रंगण रंग नाम चढ़ाए, चोली काया आप रंगांयदा। शब्द गहणा देणा लहणा अंग लगाए, तन श्रृंगार करांयदा। साचा शब्द कन्न सुणाए, शब्द मृदंग वजांयदा। तीजे नैण दरस दिखाए, अन्ध अंध्यार मिटांयदा। घर साचे दस्से गुरमुख बहिणा, खुल्ला वेहड़ा आप रखांयदा। झूठा नाता भाई भैणां, अन्तिम अन्त विछोड़ा आप करांयदा। गुरमुखां मन्ने साचा कहणा, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म जोती मेल मिलांयदा। भाणा मन्न हरी करतार। बेड़ा देवे बन्न सच्ची सरकार। रसना कहणा धन धन, आप बहाए सच्चे दरबार। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, देवे शब्द उडार। दिस ना आए किसे गंधरब गन, गुरमुखां रहे दर द्वार। आसण लाए बिन छप्परी छन्न, कर जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग अन्तिम वार आप बणाए सज्जण सुहेले बाहों पकड़ कलि जाए तार। करे पार कलिजुग किनारे। जोत सरूपी जामा धारे। निहकलंकी खेल अपारे। आप सुहाए द्वार बंकी, जोत जगाए अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरां मग्घर खेल रचाई, सोलां मग्घर वज्जी वधाई, गुर संगत तेरे आत्म दर दुआरे। सोलां मग्घर वज्जी वधाई, अचरज खेल रचाईआ। गुर संगत मिल्या साचा मेल, कलि मिली वड्डयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी अचरज खेल मिली भगतां कलिजुग दात जगत वधाईआ। जगत वड्याई भगत वणजारया। आत्म सुखदाई मिल्या हरि निरंकारया। जगत माया तनो तजाई, हरि कीते तन सोलां श्रृंगारया। नाता छुट्टा भैणां भाई, होए घोड़ शब्द अस्वारया। ना कोई पिता ना कोई माई, मिल्या हरि साचा माही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले आप उठाए दोवें भुजां पसारया। भुजां पसारे आप रघुराता। सुणे पुकार तेरी धरत माता। देवण आया सच्ची दात वड करामात, सोहँ शब्द जन भगतां दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जोत जगाई, तिन्नां लोआं करे रुशनाई, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। मिटे अन्धेरी रैण कलिजुग कुड़यार है। हरि मिल्या साक सज्जण सैण, बणया मीत मुरार है। आप चुकाए लहिण देण, ना करे कोई उधार है। दरस दिखाए तरस कमाए साचे नैण, खोल्हे बन्द कवाड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची नींह आप रखाई, कलिजुग तेरी ख़ाक उडाई, बेमुखां सिर छाही पाई। लिख्त लिखाई पहली है। पहली हाढ़ बण लिखारा। कलिजुग तेरा वक्त विचारा। संत मनी सिँघ विच संसारा। बेमुखां हरि दिसे

दूर, गुरमुखां सद हाजर हज़ूर, जोत सरूपी नर निरँकारा। सर्ब गुणां प्रभ आपे भरपूर, बेड़ा डोबे विच मँझधारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली हाढ़े रीत चलाई, उच्चे मन्दिर गुरदुआरे शिवदवाले मस्जिद मसीत सारे ढाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सदा अतीत, सतिजुग चलाई साची रीत, तेरी ख़ाक वड पाकी पाक, प्रभ साचे लेखे लाई। उडे ख़ाक जगत अपारा। हुलारा देवे नर निरँकारा। वजे शब्द डंक नगारा। चार कुन्ट हाहाकारा। वाली हिन्द उठ उठ जाग, निहकलंक वज्जे जैकारा। किसे सिर ना दिसे ताज, ना कोई दिसे छत्र झुलारा। मिटदे जाण साज बाज राज, राउ उमराउ शाहो सुल्तान दर दर फिरन भिखारा। आप संवारे आपणे काज, जन भगतां मारे अवाज़, देवे सोहँ शब्द इक्क हुलारा। सिर पहनाया साचा ताज, पुरी इन्द्र दित्ता राज, मातलोक पई भाज, ना किसे करया वणज वपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर कलि जामा पाया, दस अट्ठ अठारां चार वरनां इक्क खुल्हाया दर दरबारा। दर दरबारा इक्क अकाल है। लक्ख चुरासी माया जगत जंज़ाल है। कलिजुग वेला अन्तिम आया, साचा शब्द ना किसे सुणाया, बाहों पकड़ ना किसे जगाया, आपे गुर आपे गोपाल है। जूठे धन्दे जगत लगाया, मदिरा मासी पंडत काशी ना कोई जाणे सर रवाल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, मातलोक हरि जोत धर, करे खेल आप महान है। करे खेल जगत महाने। जगे जोत श्री भगवाने। जोत सरूपी पहरे बाने। देवे नाम जगत निशाने। चार कुन्ट चार चुफेर जगत वहीर, मारे शब्द निशाना। मेट मिटाए औलीए पीर फ़कीर, दस्तगीर लथ्थे चीर, हरि किसे हथ्थ ना आया, ना कोई देवे जगत धीर, बालक माता छुट्टे सीर, अन्तिम लग्गे डाहढी पीड़, ना धीरज कोई बंधाए, गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, हरि जी देवे नाम निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम अन्त बिठाए विच बबाणा। सच्च बबाण कर त्यार, लोकमात कर विचार, पुरख अबिनाशी छोटा बाला विच बहाया, सिँघ मनजीत हो त्यार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार मारे तीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम भेव खुल्हाए, सतारां हाढ़ घर घर कर कर अख़ीर। हरिजन जन्म अमोल, दरस अमोघ है। हरिजन जन्म अमोल, मिटया हउमे रोग है। हरिजन जन्म अमोल, आपे चिन्ता आपे सोग है। हरिजन जन्म अमोल, आत्म रस साचा रिहा भोग है। हरिजन जन्म अमोल, सोहँ शब्द अन्तिम कलि चुगे साची चोग है। हरिजन जन्म अमोल, ना होए कदे विजोग है। हरिजन जन्म अमोल, मेल मिलावा साचे कन्त लिख्या धुर संजोग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत है। हरिजन जन्म अमोल, जगत बणत बणांयदा। हरिजन जन्म अमोल, हँस बणया काग माणक मोती शब्द चोग चुगांयदा। हरिजन जन्म अमोल, लक्ख

चुरासी रही सोती, गुरमुख विरला प्रभ दरस पांयदा। हरिजन जन्म अमोल, दुरमति मैल प्रभ दर धोती, माया जगत जलांयदा। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे भाणे सद सद चलांयदा। हरिजन जन्म अमोल, जोती अकार है। हरिजन जन्म अमोल, शब्द वेखे साची धार है। हरिजन जन्म अमोल, मानस जन्म लाए लेखे मातलोक ल्या अवतार है। हरिजन जन्म अमोल, बेमुखां रहे भरम भुलेखे, करे खेल हरि करतार है। हरिजन जन्म अमोल, प्रभ अबिनाशी दर्शन पेखे, वेखे नैण मुँधार है। हरिजन जन्म अमोल, मेट मिटाए बिधना लिखी रेखे, सृष्ट सबाई पड़दे रिहा खोल्ह है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए साचे लेखे, उतरे पूरे तोल है। हरिजन जन्म अमोल, अमोल अमुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, पूरे तोल कलिजुग अन्तिम तुल्लड़ा। हरिजन जन्म अमोल, वसदा रहे अन्तिम कलि काया कोट कुलड़ा। हरिजन जन्म अमोल, साचा राह घर दसदा रहे छोटा बाला लाल अमुल्लडा। हरिजन जन्म अमोल, चौदां लोक चरनां हेठ झसदा, गाया पुरख अबिनाशी, ल्या चरनां कोल। हरिजन जन्म अमोल, धर्म राए दर हस्सदा, गया अठाईआं कुंढां कुण्डा खोल्ह। हरिजन जन्म अमोल, दूर दुराडा लम्मा पैंडा बाल अञ्याणा सिध्धा गया शब्द वजाउँदा जाए ढोल। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साची रीती कलिजुग चलाए चरन प्रीती तोड़ निभाए, परखे नीती साचा मीती, काया करे ठंडी सीती, दूई द्वैती पड़दे रिहा खोल्ह। हरिजन जन्म अमोल, साचा राह वखाणयां। हरिजन जन्म अमोल, प्रभ वेखे बाल अञ्याणयां। हरिजन जन्म अमोल, दस्से राह वडा बेपरवाह कलिजुग हरि वडा सुघड़ स्याणयां। हरिजन जन्म अमोल, कटे लक्ख चुरासी फाह, मिले माण दरबानया। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दास घनकपुर वास, अन्त करे पछाणया। हरिजन जन्म अमोल, जीवण जुगत है। हरिजन जन्म अमोल, दर साचे मिली मुक्त है। हरिजन जन्म अमोल, हरि संवारे आपणी भुगत है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर द्वार आप सुहाए, चरन प्रीती तोड़ निभाए, बेमुख जीवां दिस ना आए, सद वसे नेड़ दूर कीड़ हस्त है। हरिजन जन्म अमोल, रीत अटल्ल है। हरिजन जन्म अमोल, सद वसे धाम अचल है। हरिजन जन्म अमोल, साचा मार्ग इक्क वखाए रसना ध्यावे घड़ी घड़ी पल पल है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप लगाए काया अमृत फल है। हरिजन जन्म अमोल, चाल अवल्लड़ी। हरिजन जन्म अमोल, वसे काया इक्क अकल्लड़ी। हरिजन जन्म अमोल, उतरे पूरे तोल, झूठी दिसे जगत चम्मड़ी। हरिजन जन्म अमोल, आत्म गंढ्ढां रिहा खोल्ह, लक्ख चुरासी जूठी झुठी माया लूठी, अन्तिम वेले पले किसे ना दिसे दमड़ी। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपे बणे पिता आपे बण अंमड़ी। हरिजन जन्म अमोल, शब्द भण्डार है। हरिजन जन्म अमोल, जन्म अपार है। हरिजन जन्म अमोल, एका रंग सच्चा संग सच्ची सरकार है। हरिजन जन्म अमोल, मानस जन्म ना होए भंग, लोकमात ना आए दूजी वार है। हरिजन जन्म अपार, आत्म चाढ़े साचा रंग, ना होए मात ख्वार है। हरिजन जन्म अमोल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिल्या नर हरि हरि नर सच्चा भतार है। हरि नर सच्चा भतारा। सच्चा देवे शब्द जाप, रूप रंग रेख भेख ना कोई पावे सारा। आपे मारे तीनो ताप, करे नाम वणज वपारा। आप उतारे कलिजुग जूठे झूठे पाप, शब्द खण्डा मारे दो धारा। आपे बणे माई बाप, राम रमईआ कृष्न मुरारा। धरत मात गई कांप, निहकलंक लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, बणया रहे आप सहारा। आप सहारा सदा सहाई है। छोटे बाले बाल निधाने, तेरी मात वड्याई है। हथ्थीं बन्ह्रे हरि जी गाने, करे सच्ची कुड़माई है। मिल्या कन्त पुरख अबिनाशी वाली दो जहाने, साची नार सुहाई है। एका सेजा रंग रलीआं माणे, आत्म सोहणी सेज वछाई है। होए प्रकाश कोटन भाने, दीपक जोती रिहा जगाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था बाल अञ्याणे, परखे नीती जगत रीती वाहवा मात चलाई है। साचा कन्त नार सुहागण। शब्द सुणाया साचा रागण। गुरमुख सोए विरले जागण। गुरमुख होए वड वड भागण। मिली सच्ची दात सच सुगात, प्रभ अबिनाशी चरन लागण। दरस दिखाए बैठ इक्क इकांत, आपे धोए काया दागण। आत्म वेखो मार झात, पुरख अबिनाश सदा बैरागण। कलिजुग माया डस्सणी नाग, हँस बणाए जीव कागण। गुरमुख साचे वड वडभागण, प्रभ चरनी लागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझाए तृष्ना आगण। आत्म तृष्ना आप निवारे। माया ममता लग्गी भुक्ख, कलिजुग जीव होए गंवारे। किसे ना दिसे आत्म सुख, भुल्लया फिरे सर्ब संसारे। मात गर्भ उलटा रुक्ख, ना होए कोई सहारे। घर घर धूंए रहे धुक्ख, निहकलंक कलि जामा धारे। गुरमुख साचे सुखणा रहे सुख, चल आए हरि दुआरे। उज्जल कराए मात कुक्ख, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों पार उतारे। उठया बाल बली बलवान। बाल अवस्था नौजवान। एका छाल कलिजुग मारी, तिन्नां लोकां होया बाहर, फल लगाए साचे डाहन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी इक्क अनमुल्लड़ा लाल आप ल्या भाल। आपे पाले हरि बनवारी। वेखे विगसे करे विचारी। रूप रंग ना किसे दिसे, गुरमुख इक्क आए हिस्से, झूठी लाहे आत्म विक्खे, जोत जगाए नर निरँकारी। लक्ख चुरासी चरनां हेठ झस्से, करे अन्त ख्वारी। भेव खुल्हाए बीस इकीसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। छोटा लाल लाल दुलारा। पूर्ब

४५१
०४

कर्म हरि विचारा। मातलोक दीआ जरम, सतिजुग वखाए राह न्यारा। इक्क रखाए साचा धर्म, शब्द कराए जै जै जैकारा। चार वरन एका ब्रह्म रूप अपारा। निहकलंक तेरी सरन वज्जे डंक शब्द अपारा। प्रगट होया करनी करन, जोत सरूपी कर अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण आसण लाए, जोत सरूपी दया कमाए, कदे गुप्त कदे ज़ाहरा। छोटा बाला बल बलवाना। मारे तीर शब्द निशाना। चार कुन्ट करे वहीर, साचा सीर किसे हथ्थ ना आना। मेट मिटाए शाह फ़कीर, सुल्तान हकीर तुटे माण अभिमान, बेमुखां बज्झण अन्त जंज़ीर, लाड़ी मौत दूर दुराडा पैंडा आई चीर, मिल्या हुक्म आप भगवाना। सोहँ वज्जे साचा तीर, आप चलाए निहकलंक रसना खिच्चे तीर कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोत सरूपी पहरे बाणा। जोत सरूपी बाणा धार। राजे राणे रिहा वंगार। कलिजुग वेला अन्तिम आया, झूठे दिसण घर घर श्रृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। एका जोत मात जगाई। सत्त दीप नौ खण्ड पृथ्मी , आपणे हिस्से वंड कराई। इक्क सौ ग्यारां दिन साची जोत करे रुशनाई। अलख अलेखा धारे भेखा, लक्ख चुरासी रहे भरम भुलेखा, दिस किसे ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई। सति सतिवादिया, चले शब्द अनाद अनादिआ। भेव कोई ना जाणे बोध अगाध्या। करे खेल माधव माध्या। बेमुखां साधन साध्या। राउ रंक उठाए, गुरमुख विरले आत्म अराध्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चले शब्द जैकार वज्जे नाद धुन धुन नाद सुणाए आप अनादया। नौ खण्ड होए बेहाला। विच वरभण्ड होए कंगाला। बेमुखां देवे दंड, ना कोए सुरत संभाला। घर घर रोवे नार रंड, खुल्हे वाल जगत बेहाला। बेमुखां आत्म आई कंड, पुट्ठी होई चाला। नौ खण्ड नौ दरवाज्जया। एका दर दुआरे साचे वसे, दिस ना आए ग़रीब निवाज्जया। गुरमुख विरला विच मात हस्से, घर घर होवे भाज्जया। जन भगतां आत्म जोत करे प्रकाश कोट रवि सस्से, तुटे माण राजन राज्जया। शब्द तीर एका कसे, झूठा जगत साज साज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत जगाई वज्जे वधाई, प्रगट होए देस हरि माज्झया। काया गढ़ खेल अपारी। पंजां तत्तां साचा धड़ जोत निरँकारी। आपे बैठा अन्दर वड़, करे बन्द कवाड़ी। अट्ठे पहर रिहा लड़, शब्द सरूपी फड़ कटारी। पंजां चोरां पुट्टे जड़्ह, फेरे शब्द बहारी। आप बन्न्हाए आपणे लड़। गुरमुखां अन्तिम वारी। मातलोक ना जाणा हड़्ह, हरि रिहा पैज संवारी। दर घर साचे जायण वड़, मिले शब्द महल्ल अटारी। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, माण दवाए चरन द्वारी। गुरमुख साचा साचे पौड़े जाए चढ़, वेखे जोत नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बहाए चरन द्वारी। काया मन्दिर किला कोट। वजदी रहे

शब्द चोट। जन भगतां कढ्ढदा रहे, अवगुण रती माया खोट। अमृत भण्डार भरदा रहे, लोकमात ना आवे तोट। गुरमुख साचा डरदा रहे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखाए चरन ओट। काया मन्दिर मिट्टी ढेर। अन्तिम वार ना वेखे सन्झ सवेर। झूठे छडणे साक सज्जण सैणा, कोई ना आवे नेड़। एका दर घर साचे बहिणा कलिजुग अन्तिम वेर। सोहँ शब्द तन पहनाए साचा गहणा, गुरमुख साचे चरन घेर। आप चुकाए लहणा देणा, विच्चों चुकाए मेर तेर। शब्द जणाए भाणा सहिणा, काया मिटी झूठा ढेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम आप बहाए दया कमाए पहली वेर। काया कोट काची गागर। अमृत ताल सच सुहावा भरया सिंध सागर। चरन प्रीती साचा दाअवा, गुरमुख निर्मल कर्म उजागर। प्रभ अबिनाशी अग्गों मिले फड़ के बाहवां, साचा नाम जन बणे सुदागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आप वहाए साची धार, वहाए अमृत जल साची गागर। सदा वज्जा रहे जन्दर, मनमुख वसे बाहर। जोत सरूपी वसे अन्दर, जन भगतां देवे जोत अकार। बेमुखां दिसे डूंघी कन्दर, होया रहे अन्ध अंध्यार। दर दुआरे फिरन बन्दर, ना मिले मीत हरि दातार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सच भतार। काया मन्दिर कोट न्यारा। शब्द सरूपी सच क्यारा। चार चुफेर रिहा घेर, अट्ठे पहर देवे पहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वहाए चलाए अमृत साची धार। काया कोट पंज तत्त है। त्रैगुण वेख विचार, अठां तत्तां एका रत्त है। तिन्न सौ सठ हाडी गुण विचार, ताणा पेटा आपे रिहा कत्त है। बहत्तर नाड़ी कर अकार, साचा सूत्र रिहा कत्त है। साचा शब्द दस्से साची धार, पाणा लाए साचा वट्ट है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया गढ़ अन्दर बैठा वड़, आप उसारे सच चुबारे, प्रभ लगाए गारा इट्ट है। काया कोट काची गागर काची माटी। औखी दिसे मात घाटी। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी। एका जोत जगे ललाटी। गुरमुख विरले संत जन, आपे पाड़े बज़र कपाटी। साचा देवे नाम धन्न, चरन दुआरे साची हाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति मैल अट्ठ सट्ठ तीर्थ रही फैल, जन भगतां आत्म रिहा काटी। काया मन्दिर घर घर वास। आत्म जोत हरि प्रकाश। अन्ध अन्धेर करे विनास। शब्द चलाए रसन स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, होया रहे दासन दास। काया मन्दिर सच सिँघासण। साची सेजा हरि बिराजे, एका पुरख अबिनाशण। आपे रक्खे गुरसिख लाजे, देवे शब्द नाम स्वासण। सति सरूप मात गाजे, जोत अकाल मात पताल अकाशण। साचा देवे शब्द दाजे, पुरी इन्द्र भोग बलासण। एका मारे शब्द अवाज़े, चरन हज़ूरे दास दासण। अन्तिम रक्खे हरि जी लाजे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनक पुर वासण। काया मन्दिर डंक डफारा। चढ़या रहे तन

अफारा। हउमे लग्गा रोग भारा। कोए ना धोए आत्म दागा, अमृत मिले ना साची धारा। गुरमुख विरला मात जागा, आए चल्ल दुआरा। इक्क उपजाए शब्द रागा, सुणे हरि पुकारा। आप संवारे आपणे काजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारा। काया मन्दिर कूड़ पसारा। कलिजुग भुल्ला जीव गंवारा। मानस जन्म लक्ख चुरासी मदिरा मासी, अन्तिम वेले जायण हारा। धर्म राए गल पाए फाँसी, वेख वखाए घनकपुर वासी, मारे शब्द कटारा। जन भगतां होए दासन दासी, तन पहनाए फूलन हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे खिड़ी रहे सदा गुलज़ारा। काया कोट शब्द वसेरा। कोई ना बुज्झे, तेरा मेरा मेरा तेरा। भेव खुल्हाए हरि जी गुज्झे, ना कोई जाणे सन्झ सवेरा। लेख लिखाए एका दूजे, लक्ख चुरासी साचा गेड़ा। गुरमुख विरला चरन प्रीती झूजे, करे अन्त निबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा सच घर बूझे, आप सुहाए काया नगर खेड़ा। काया नगर खेड़ा, सच महल्ल है। अन्तिम मुक्के झेड़ा, रहे नाम अटल्ल है। खुल्हा दिसे एका वेहड़ा, निहचल धाम अचल्ल है। बन्नृण आए मात बेड़ा, गुरमुख साचा जाए बलि बलि है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जगत गेड़ा, आप भुलाए कर कर वल छल है। काया कोट गढ़ हँकारा। काम क्रोध अन्दर गया वड़, माण मोह वज्जे जैकारा। कोए ना सके मात फड़, भुल्ले जीव जगत गंवारा। गुरमुख साचे साचे पौड़े जायण चढ़, मिले नाम शब्द अपारा। प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़, सुणदा रहे सद पुकारा। अन्तिम वेले बाहों फड़, लोकमात हरि करे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अञ्याणे सिँघ मनजीत बन्नृया शब्द सच्चा दस्तारा। काया कोट कलर घाट। बेमुखां आई तोट, औखी दिसे वाट। काया चोली गई पाट। ना कोई शब्द खटोला, ना कोई मिले खाट। ना कोई होए जगत विचोला, झूठा नाता काया माट। जन भगतां देवे शब्द ढोला, जगे जोत विच ललाट। ना कोई रक्खे पड़दा उहला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना रस जो जन रहे चाट। काया कूड़ कूड़ कुड़यारी। बेमुखां दिसे मात प्यारी। अन्तिम आए अन्धेरी रात, सुत्ता रहे विच उजाड़ी। गुरमुख विरला खोल्हे ताक, पावे दरस हरि गिरधारी। झूठी मिट्टी झूठी ख़ाक, अन्तिम होए छार छारी। ना कोई मात पित भैण भाई अंग साक, दर दवारिउँ कढ्ढुण बहारी। शब्द सरूपी एका वाक्, अन्तिम मेल नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचे धाम आप वसाए, देवे शब्द उडारी। काया मन्दिर नाभी कँवल। प्रगट होए उप्पर धवल। सृष्ट सबाई जाए मवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन आप उपजाए दया कमाए, मात लगाए फुल्ल कँवल। फुल्ल कँवल मात प्रकाशे। जोत धरे पुरख अबिनाशे। साचा मण्डल साची रासे। हरिजन साचे करे वासे। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग, आपे वेखे जगत तमाशे। जगत तमाशा जूए हार। करे खेल अपर अपार। जन भगतां बणे सज्जण सुहेल, देवे नाम शब्द खुमार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क लगाए शब्द उडार। काया प्रीत जगत तजाईआ। प्रभ मिल्या साच मीत, धुरदरगाहीआ। होई काया ठंडी सीत, कटे जम की फाहीआ। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, दर दुआरा इक्क वखाईआ। आपे परखे घर घर नीत, जन भगतां आत्म वजदी रहे वधाईआ। एका राखो हरि हरि चीत, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंव रहे रघुराईआ। काया मन्दिर खेल अपारा। मन मति बुध तिन्नां दस्से इक्क प्यारा। तिन्न गुण साचे वेख, वेस करे भेख अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अञ्याणे, मानस जन्म मात सुधारा। मिल्या जन्म जन्म गुर दीना। मेल मिलावा साचे घर, लोकमात जिउँ जल मीना। अन्तिम मिल्या साचा वर, शांत कराया हरि जी सीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर बहाया तन मन आत्म होया भीन्ना। साचे दर द्वार घर निमस्कारया। वेखे रंग अपार, जोत निरंकारया। ना कोई पावे सार, हरि गिरधार, जोती जोत समा रिहा। दोए जोड़ हरि दर करो निमस्कार, प्रभ बख्शे बख्शणहारा, आए चल्ल द्वारया। सोहँ शब्द चले जैकार, भरया रहे तेरा भण्डारया। लोकमात ना आवे हारया। चल आया सच दरबारी, मारी इक्क शब्द उडारी, मिल जोत अगम्म अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अञ्याणे सिँघ मनजीत मानस जन्म संवारया। सच द्वार सच्ची सरकार। एका जोती रूप रंग रेख भेख अपार। आप उठाए आत्म सोती, इन्द इन्दासण हरि विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरपति राजे इन्द वड मृगिन्द देवे शब्द हुलार। शब्द हुलारा दे हुक्म सुणांयदा। करोड़ तेतीस टुट्टा नेंह, वेला अन्त मुकांयदा। जन भगतां अमृत मुख चुआए बरखे मेंह, सदा अटल रखांयदा। चरन प्रीती लग्गा नेंह, दो जहानी तोड़ निभांयदा। जन भगतां अमृत मुख चुआए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समांयदा। राणे इन्द्र उठ बलधार। आपणा कर्म आप विचार। मातलोक कलि ल्या जन्म, छोटे बाले रंग अपार। जगत मिटाए झूठा भरम, हरि देवे शब्द दुशाले नाम भण्डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे माण दवाए, इक्क वखाए दर सच्चा दरबार। सुरपति राजे इन्द उठ कर त्यारी। प्रभ जोत जगाई विच हिन्द, निहकलंक वज्जा डंक अपर अपारी। लक्ख चुरासी करे निन्द, दर घर साचे प्रभ आप दुरकारी। गुरमुख विरला प्रभ साचे दी साची बिन्द, उधरे पार जन्म संवारी। प्रगट होए वड मृगिन्द, राजे राणयां करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले बाल अञ्याणे, तेरी सुणे अन्त पुकारी। राजा इन्द्र करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। घनकपुर वासी कर बन्द खुलासी,

भोगी अपच्छरां कई हज़ार। हरि ना जपया स्वास स्वासी, अन्तिम वेले आई हार। साची जोत मात प्रकाशी, निहकलंक लए अवतार। गुरमुख साचे मिल्या वड शाहो शाबाशी, एका जोती जगत अपार। झूठी काया जगत विनासी, आई सच द्वार। मानस जन्म होए रहिरासी, प्रभ कीती किरपा वड संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए, शब्द सरूपी हुक्म सुणाए, इन्द्र इन्द्रपुरी विच्चों हो जाणा बाहर। इन्द्रपुरी छड्ड द्वार। साचा धाम आप वसाए, तख्त ताज सिर पहनाए, मस्तक तिलक लगाए अमृत धार। बाल अञाणे माण दवाए, आप आपणी आण रखाए, सोहँ शब्द चलाए रंग रंगाए अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं सोहँ शब्द करे जै जै जैकार। छोटा बाला तख्त बिराजे। प्रभ अबिनाशी रक्खे लाजे। पूरन होवे मात काजे। देवे वड्याई प्रगट जोत प्रभ देस माझे। आपणे रंग रिहा रंगाई। वेले अन्त रक्खे लाजे। साचा संग रिहा निभाई, आप वजाए अनहद शब्द अनाहद वाजे। शब्द घोड़े तंग कसाई, सच सिँघासण हरि बिराजे। दरस दिखाए थांउँ थाँईं, शब्द सरूपी मारे वाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए भेव कोई ना पाए खेल कराए कल कि आजे।

✻ १७ हाढ़ २०११ बिक्रमी काका मनजीत सिँघ दी समाध त्यार करन दे नवित्त पिण्ड जेठूवाल ✻

सत्त महीने उप्पर एक। परम पुरख की साची टेक। दर घर साचा साचा हरि, नेत्र नैण लैणा वेख। आप लिखाए साचे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारे भेख। सत्त महीने एका अंक। साचा वज्जे शब्द डंक। जोत सरूपी लग्गे तनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा बाला अग्गे लाया, धर्म राए दर कुण्डा खोलॄ, साचा हुक्म आप सुणाया, ख़ाली भरे भण्डार जो करे राजा जनक। सत्त महीने इक्क इकादस। जगत अन्धेर कलिजुग अमावस। अमृत वेला सन्झ सवेर, दर घर साचे विरले पावस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए सहिज सुभावस। एक एक दोए जोड़। दोए मिले निभी तोड़। रसना तीर चढ़े चिल्ले, शब्द फड़े साचा घोड़। चार कुन्ट सर्ब हिल्ले, कोई ना सके अग्गों मोड़। मेट मिटाए अक्खों बिल्ले, आपे भन्न हँकारी फोड़। सभ दे आसण होए ढिल्ले, लग्गी रहे पीड़ जोड़। करदे फिरन चालीए शिले, काया रहे कोढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्त महीने दोए दिवस लग्गी प्रीती निभाए तोड़। एका एक दोए प्रकाश। दोआ दोआँ सर्ब घट वास। ओअँ सोहँ साचा जाप। रसना चलाए स्वास स्वास। मेट मिटाए तीनो ताप। मानस जन्म कराए रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगत प्रकाशे, मिटे अन्धेर काया कोट

अकास। एका दोआ दोआ भाओ। गुरमुख चढ़ाए साचे नाओ। आप वखाए दया कमाए, अन्त बहाए साचे थांउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्त महीने दोए दिवस आपे पग निभाओ। दोए दिवस दिवस राती। जगी जोत मात पताल अकाशी। मिली दात नाम हरि सच्चा शब्द सच्ची सुगाती। भरम भलेखा दूर कराया, मिटाए अन्धेरी राती। आत्म जोत नूर नुरंतर, अमृत बूंद प्याए स्वांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूआ एका एक रंग रंगे बहु भाती। दोआ एका एका दोआ। धुरदरगाही साचा ढोआ। गुरमुख साचा बाल अञ्याणा, लोकमात ना जाणो मोया। एका बख्शे चरन ध्याना, साची सेजा आसण सोया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। अवर ना दिसे कोए जाणे ना कोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती जोत हरि, अमृत आत्म साचा सीर अन्तिम वेले मुखड़े चोया। एका दोआ दोए धर। दोहां धिरां हरि एका सर। अमृत झिरना आप झिराए, वहन्दी धार रही झर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती जोत टिकाए हरी हरि। नर निराहार निराहार निराहार। जोत सरूपी खेल अपार। एका दोआ दोआ एक, साचे रंग करे करतार। अन्तिम करे बुध बबेक, मारे शब्द कटार। कलिजुग माया लाए ना सेक, जूठा झूठा चढ़े ना मात बुखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों जाए तार। एका दोआ तिन्न कल्याणा। ना कोई वेखे मढ़ी मसाणा। साची गढ़ी हरि भगवाना। अट्ठे पहर लाई रक्खे झड़ी, अमृत मेघ हरि बरसाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, हथ्थीं बन्ने आपे गाना। इक्क दो दो तिन्न धारी। चले शब्द अपर अपारी। दूजा रंग हरि आप रंगाए, होए विचोला नाम वपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बहाए दया कमाए, सच महल्ल अटल्ल अटारी। उचे मन्दिर आसण डेरा। चारों कुन्ट शब्द घेरा। जोत सरूपी जोत जगाए, कर कर आपणी साची मेहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दो तिन्न तिन्न दो इक्क, कर कर वेखे जगत हेरा फेरा। इक्क इकादस सतारां हाढ़। सत्त महीने उप्पर वाड़। जोती बाती नाड़ नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए आपणी धाड़। अठारां हाढ़ दूजा पक्ख। पुरख पुरखोतम होए वक्ख। जन भगतां दरस दिखाए, प्रगट होए हरि प्रतक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर रक्खे हथ्थ हरि समरथ, आपे लए रक्ख। तीजे दिवस कर प्यार। तिन्नां लोकां वेख विचार। सत्तां दीपां आप कराए, सच्चा वणज वपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल करे करतार। तिन्न लोक लोआं अकारा। खेल करे हरि अपर अपारा। धरे भेख हरि बण भिखारा। वेखण जाए सर्ब भेख, मंगण जाए इक्क दुआरा। मिटाउण जाए झूठी रेख, चरन कँवल कँवल चरन करे आप सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजे दिवस उन्नी हाढ़, जाए ब्यास

किनारा। सत्त महीने तिन्न दिवस बीते। कलिजुग तेरी परखे नीते। एका सुणे सुणाए सोहँ शब्द सुहागी गीते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए गुरदुआरे मन्दिर मसीते। उन्नी हाढ़ बण वणजारा। परखण जाए लाल अपारा। नाम घसवटी साची रक्खे, मारे दमक जोत अन्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत न्यारा। उन्नी हाढ़ वड गुण गुणी। सोहँ शब्द जाए भिच्छया लैण जगत पित मात, धरत मात तेरी सोहणी चिट्टी चुन्नी। एका मंगे बैठ इकांत, कोई भेव ना जाणे जीव दुनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस तीजे पुण छाण, छाण पुण, आपे वेखे आत्म सुन्नी। आत्म सुन्न सुन समाधा। तुटे मुन चले शब्द अगाधा। सतिगुर पूरा हरि लए चुण, दर घर साचा जिस ने लाधा। कवण जाणे हरि तेरे गुण, शब्द सरूपी जगत सबाई बाधा। पूरन आस आत्म तृप्तास्सया। कलिजुग बुझी प्यास, पाया पुरख अबिनाशया। निज घर आत्म रक्खे वास, मानस जन्म करे रहिरास्सया। सदा सद वसे पास, अज्ञान अन्धेर विनास्सया। काया मन्दिर पताल अकाश, सच मण्डल पाई रास्सया। प्रगट होए घनकपुर वास, जन भगतां करे बन्द ख़लास्सया। मात गर्भ पूर कराए दस मास, देवे नाम आहार शब्द सवास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे ढाले साचे ढांचे जिउँ कंचन पास्सया। सच सुहेला मीत मुरारड़ा। बणे सज्जण सुहेला, देवे नाम अपारड़ा। दरगहि साची साचा मेला, मिल्या कन्त प्यारड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वसे धाम साचे घर, गुरमुख वेखे राह न्यारड़ा। साचा धाम अटल्ल अटल्ला। शब्द जोती इक्क महल्ला। बैठा दिसे नर हरि इक्क इकल्ला। सोहँ शब्द खण्डा रक्खे, तिन्नां लोआं साचा भल्ला। नाम डण्डा मात विच आप लगाए जला थला। सृष्ट सबाई होई भक्खे, अन्तिम लाए कर कर वला छला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा शब्द कन्न सुणाए, भाणा मन्नण राह सुखाला। भाणा मन्न दरगहि परवान। झुलदा रहे शब्द निशान। अन्तिम जोती जोत मिलान। मिले शब्द बबाण। मातलोक ना जाणे कोए, जगे जोत निहकलंक बलवान। बेमुख जीव रहे सोए, वेले अन्त सर्ब पछताण। गुरमुख विरला बीज आत्म साचा बोए, रसना रहे वखान। सच सुहागा हरि जी जोए, लाहुण आया जगत मकाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त बेमुखां देंदा आया हाण। बेमुख मूर्ख मुग्ध गंवारी। घर घर सुंञे नर नारी। उची मारे इक्क उडारी। आप उठाए फड़ फड़ गाजी, चले खण्डा दो धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी नींह मात उसारी। सतिजुग साचे सच उसारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। बेमुखां लग्गे शब्द कटारा। गुरमुखां मिले नाम अपारा। आप मिटाए आत्म दुःख, अमृत देवे ठंडा ठारा। इक्क उपजाए साचा सुख, बणत बणाए हरि निरँकारा। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, जन्म ना

आवे दूजी वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बहाए चरन दुआरा। उची माढ़ी खोल्हे बूहा पहली हाढ़ी। दूजे दर गुरमुख वाड़ी। तीजे नैण बरखे ठण्डी ठारी। चौथे घर संत वाड़ी। पंजवें घर वसे नाड़ नाड़ी। छेवां दिसे साचा घर रिहा उग्घाड़ी। सत्तवां दस्से साचा राह, पुरख अबिनाशी अगम्म अथाह, शब्द कराए साची वाड़ी। अठवां उठ उठ वेखे, गुरमुख साचे संत जन, जंगल जूह विच पहाड़ी। नौ नौं दर हरि वेखे, जोत सरूपी रक्खे भेखे, आपे लिखे साचे लेखे, बेमुखां पकड़ पछाड़े, फड़ फड़ दाढ़ी। दसवें दहि दिशा उठ धाए। साढे तिन्न हथ्थ नींह उसारे। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट चार चुफेरे, शब्द चण्ड प्रचण्ड आप चमकाए। इक्क दस इक्क अकार है। वेखे हरि सच्ची सरकार है। तिन्नां लोआं वसे बाहर है। जोत सरूपी खेल अपार है। गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़ है। जोत जगाए नाड़ नाड़ है। बेमुख जीव बाल अञ्याणे, घर साचे देवे वाड़ है। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, करे शब्द वाड़ है। लोकमात राजे राणे, होए भाग माढ़ है। लेख लिखाए सतारां हाढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अग्न जोत हरि देवे साड़ है। दस दो दो बारां। लग्गीआं रहण जगत बहारां। छत्र सोहण कन्त नारां। गुरमुख साचे संतां, करे वणज वपारा। लक्ख चुरासी जीव जन्तां, रहे तन अफारा। आप बणाए साची बणता, जन देवे नाम अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आप वरताए, सोहँ शब्द सच्चा भण्डारा। दस तिन्न तेरां तेरवीं धारी। सदी चौधवीं प्रभ वखाणी, कलिजुग तेरी साची राणी। अन्तिम कलिजुग आई हानी। लेख लिखाए पहली हाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुल्लां मुलाणे वड ज़रवाणे आप पछाड़े फड़ फड़ दाढ़ी। दस चार चौदां लोक। सोहँ शब्द सुणाए सच्चा सलोक। धुर दरगाही कोए ना सके रोक। लक्ख चुरासी धर्म राए दी देवे फाँसी, अन्तिम वेले देवे झोक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप सुणाए शब्द सलोक। दस पंज पन्दरां। प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे संत जनां, आपे तोड़े आत्म जन्दरा। साची जोत आप बलोए, काया डूंघी कन्दरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आप फिराए, घर घर भौंदे फिरन बन्दरा। दस छे सोलां सोलां प्रधान। सोलां कलीआं जगत निशान। आप झुलाए श्री भगवान। सत्तां दीपां नौआं खण्डां पृथ्वी विच जहान। साचा भेव आप खुल्हाए, सतारां हाढ़ वेख वखान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि जाणी जाण। सोलां कलां कल्गी अवतारा। करे खेल अपर अपारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। गुरमुख विरला दर घर साचे पला, सिर देवे छत्र अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव खुल्हाए, चिट्टे अस्व हरि चढ़ाए, चार कुन्ट रिहा दुड़ाए, पंचम् जेठ हो अस्वारा। साचा

भेव आप लिखाए, दया कमाए सतारां हाढ़ा। सतारां हाढ़ी वदी सुदी। आप जाणे लक्ख चुरासी आत्म बुद्धि। भेव ना रक्खे कोई गुज्झी। एका धार सच्ची सरकार, निहकलंक अवतार विच मात सुज्झी। निहकलंक कल्गी अवतार, गुरमुख साचे तेरी काया चरन प्रीती झूजी। हरि घाट नेड़े वाट है। हरि घाट ना कोई तीर्थ ना कोई ताट है। हरि घाट एका जोत जगे अमोला सच ललाट है। आप मिटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप वखाए दया कमाए, बज़र कपाटी जाए पाट है। हरि घट आत्म सर, साचा तीर्थ साचा ताट है। आप वखाए खोल्हे दर, साची जोत जगे ललाट है। आप मिटाए जम का झूठा डर, आप खुल्हाए साचा हाट है। देवे नाम साचा वर, होए रुशनाई काया माट है। दीपक जोती देवे धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दर वखाए, कलिजुग अन्तिम आण लिखाए, चार वरन बसाए एका घर सर घाट है। आत्म अन्दर एका मारे साचा जन्दर। वेख विचारे किरपा धारे, नर निरँकारे भगत अधारे, जोत अकारे काया कन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साची जोत आप बलोए, अवर ना जाणे कोए, आप उठाए मात सोए, भाग लगाए काया मन्दिर। साचा घाट सखी सुल्तान है। निकले इक्क ललाट, जोत इक्क महान है। कलिजुग तेरी अन्तिम नेड़े आई वाट है। प्रगट होया बली बलवान है। झूठा चोला गया पाट, ना होए कोई सहाई है। एका मारे शब्द झाट, चार कुन्ट मार उडार है। लक्ख चुरासी अन्तिम होणी माट, धरत मात गोद सुहाई है। एका शब्द विकावे साचे हाट, गुरमुख विरला वणज कराई है। आप बहाए दया कमाए आत्म साचे घाट, सोहणी सेजा आप विछाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, लोकमात जोत जगाई है। साचा घाट हरि भगवान। झुल्ले सदा इक्क निशान। कोए ना लग्गे एथे मुल्ले, मिलदा सच्चा इक्क बबान। गुरमुख विरला पूरा तोल तुले, फल लगाए काया डाहन। चरन प्रीती घोल घुल्ले, देवे दरस गुण निधान। कलिजुग जीव झूठी माया अन्तिम रुल्ले, चार कुन्ट होए हैरान। भाग लगाए गुरमुख तेरी काया कुले, किरपा करे महान। दर दुआरे सदा खुल्हे, धरे जोत श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि लोकमात जोत धर, जोती खेल करे भगवान। साचा घाट जगत न्यारा। किसे ना दिसे पार किनारा। कलिजुग तेरी नेड़े वाट, लक्ख चुरासी अन्तिम आई हारा। दूई द्वैती लग्गा फट्ट, आत्म दुखड़ा लाहे भारा। दुरमति मैल कोई ना देवे काट, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थां होए ख्वारा। गुरमुख विरले प्रभ दर रस साचा रहे चाट, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा। दीपक जोत जगाए विच ललाट, देवे नाम शब्द भण्डारा। आप कराए पूरी घाट, गुरमुख बणे दर वणजारा। जोत जगाए काया माट, जगे जोत अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ

४६० ०४

४६१ ०४

विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, नर नरायण रूप अगम्म अपर अपारा। हरि उपदेश संत जैकारया। वेख वखाणे विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश, तिन्नां लोआं पावे सारया। जोत सरूपी धर धर भेख, संत साजन हरि रिहा वेख, खोल्हे बन्द कवाड़या। धुरदरगाही पिछली वेखे रेख, लोकमात घर साचे लेख सतारां हाड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात जगाए लुकया रहण ना देवे कोई जंगल जूह विच पहाड़या। संत जनां हरि सच उपदेशा। जगे जोत हरि माझे देसा। आपे धारे कर विचारे, चवी वारे आपे करे वेसा। निहकलंक नर अवतारे, एका छत्र झुलाए सीसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे भेव मिटाए बीस इकीसा। संत जनां हरि होए दयाला। देवे सच्चा नाम सदा करे प्रितपाला। अमृत देवे साचा जाम, अमृत भरे प्याला। कोई ना लाए एथे दाम, तोड़े जगत जंज़ाला। सुक्का हरा करे चाम, जो जन आए मतवाला। पूर कराए आपणा काम, साल ग्यारवें सुरत संभाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी वेख वखाणे भेख पखण्डां, शब्द डण्डे लाउँदा पासा। शब्द डण्डा हरि जी फड़या। चिट्टे घोड़े हरि जी चढ़या। साध संत दिसे कोई ना अड़या। इक्क रखाए चार कुन्ट, शब्द सरूपी साची धड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आत्म जोती, संतां भगतां जीआं जन्तां, अट्ठे पहर हरि रिहा लड़या। अट्ठे पहर रहे सरनाई। सतारां हाढ़ खुशीआं नाल मनाई। वार अठारवें हिस्से तेरे आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण ताण सर्ब मिटाई। माण ताण सर्ब मिटाए, कलिजुग तेरी लाहे छाही काला दाग़। गुरमुखां भाग गए जाग। प्रगट जोत निहकलंक आप बुझाए आत्म आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ ग़रीब निमाणयां गले लगाए, जिउँ बिदर खाया अलूणा साग। बज्झे शब्द जंज़ीर हथ्थकड़ी है। कलिजुग कटण आया पीड़, कलिजुग लाई वाहवा झड़ी है। जन भगतां बन्न्हण आया बीड़, शब्द सोटी हथ्थ फड़ी है। ना जाणे हस्त कीड़, एका तोल तोले, जोत सरूपी आत्म बोले, ना रक्खे कोई सेर धड़ी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती दीप जगाए, प्रगट होया विच्चों गोर मढ़ी है। गोर मढ़ी जगत मसाणा। प्रगट होया हरि भगवाना। खेल किया जगत महाना। कलिजुग तेरा मिटे निशाना। तोड़े माण वड हंकारया, मारे शब्द निशाना। देवे नाम सच वपारीआ, खोल्हे माल ख़ज़ाना। लाड़ी मौत हथ्थ पसारया, चार कुन्ट आप भवाना। साधां संतां आई वारया, प्रगट जोत निहकलंक बली बलवाना। सतारां हाढ़ जोत जगाए, दया कमाए, साचे धाम रखाए, शब्द सरूपी बचन चलाए करे खेल महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे कोलों मंगण जाए नाम दाना। मंगण जाए नाम दान। अग्गे डाहे झोली, चरन धूढ़ करे इशनान। कलिजुग तेरी व्याहे बोली, आप रखाए माण ताण। सभ दे रिहा पड़दे खोल्ही,

जन संतां मारे आत्म बाण। शब्द सरूपी रिहा बोली, आत्म जोती जगे महान। सद वसे कोल कोले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चारे रंग आप रंगाए, साची रंगण रंग कराए, आपे पाए सूसी काली। पहली चिट्टी चोली गल पाए रंग लाल। जगत विचोले भगत दलाल। कलिजुग जीवां खोल्हे पोले, घर घर वेखे फल लग्गे डाल। काला भेख हरि जी खोल्हे, काल रूप कलि खाए काल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए आप रखवाल। काला चोला तन छुहावणा। कलिजुग तेरा वेस करावणा। धार भेख नर नरेश, चरन ब्यासे जा टिकावणा। सोहणा लग्गे हरि जी वेस, खुल्हे केस कर वखावणा। केहड़ा बुज्झे श्री दस्मेश, आपणा भेव आप खुल्हावणा। हथ्थ ना आवे किसे नर नरेश, माया पड़दा हरि जी पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, भरम भउ चुकावणा। जन भगतां जाणे मित गति। फड़ फड़ बाहों देवे मति। आत्म देवे धीरज साचा यति, शब्द सति विच टिकावणा। चरन प्रीती निभे नत्त, दो जहानी तोड़ निभांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाउँ मंगण जाए झोली डाहे विच सत्थ, पड़दा उहला सर्ब गवांयदा। मंगे नाम बण भिखारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। सोहँ शब्द लेखे लाए मार उडारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व जाए होए अस्वारया। होए अस्वार कलिजुग तेरी मिटे घटा काली। आपे बणे जग खेवट खेटा, कोई दर ना दिसे खाली। गुरमुख साचे संत जन शब्द सूत्र साचे चोले आप लपेटे, ना कोई मंगे दलाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा आपे झाड़े। उचे डाहले लग्गे फ़ल इक्को मारे वडी छाली। अन्तिम वेला वक्त सुहावणा। साचा कन्त आप अख्वावणा। फड़ बाहों हुक्म सुणावणा। अगम्म अथाहो बेपरवाहो, आपणा भाणा आप वखावणा। बण साचा सच्चो शाहो, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहला चरन ब्यास रखावणा। साचा चरन ब्यास रखाए। कल्गीधर जोत प्रगटाए। साचा हरि आप अख्वाए। मंगण जाए साचा दर, संत विचोला विच रखाए। आपे वेखे चौथे घर, जोत सरूपी डगमगाए। किसे कोलों ना रक्खे डर, सभ ते पड़दे रिहा पाए। मंगण जाए नाम वर, काया झोली अग्गे डाहे। ना जन्मे ना जाए मर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटाए। साचे संत नाम कुड़माईआ। प्रभ देवण आया मात वधाईआ। एका जगे जोत होए जगत रुशनाईआ। प्रगट होया जन भगतां वाली, साची बणत बणा रिहा बणाईआ। दोवें हथ्थ रक्खे खाली, सृष्ट सबाई फड़ फड़ाईआ। चरन लगाए हिन्द वाली, अचरज खेल करे रघुराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ खुशीआं नाल मनाईआ। देह काया चोला पाटा है। चारों तरफ दिसे घाटा है। ख़ाली होया काया माटा है। जगे जोत ना विच ललाटा है। झूठा मन्दिर, ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा है। महाराज शेर सिँघ

४६२
०४

विष्नूं भगवान, अचरज खेल मात करे कराए, वेखे वेख वखाणे भेव कोई ना जाणे, भुल्ले राजे राणे, भेखा भेख करे जिउँ बाज़ीगर नाटा है। बाज़ीगर नटूआ नाट। कलिजुग तेरा अन्तिम घाट। एका साची सेज विछाए, उत्ते आसण हरि जी लाए, नाम रखाए आत्म खाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द संग ल्याए, चार वरन खुल्हाए साचा हाट। हरि भेखी सदा पखण्डी है। ना वेखे राह ना कोई डण्डी है। सद पाउँदा रहिंदा वंडी है। बेमुखां काया तन रंडी है। शब्द फड़ी रक्खे चण्डी है। जोत जगदी रहे वरभण्डी है। जन भगतां संत दुलारिआं, पंजां दूतां रिहा खण्डी है। साचा देवे नाम उजआरया। सिँघ सिँघासण बैठा रिहा वंडी है। अचरज खेल करे करतारया, सभ जीआं तोड़े घमंडी है। निहकलंक नरायण नर अवतारया, आपे वसे उत्भज सेत्ज जेरज़ अण्डी है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रक्खे वास, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्डी है। खण्ड ब्रह्मण्ड हरि का वास। जगे जोत निराली, उप्पर गगन अकाश, दीपक जोती साची बाली, लोकमात होया प्रकाश। गुरमुख काया कोई ना दिसे ख़ाली, मिल्या हरि सच्चा पुरख अबिनाश। फल लगावे साची डाली, कटे रोग दस दस मास। बेमुखां करे कलिजुग अन्तिम चाली, लक्ख चुरासी होवे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया जोत सरूपी भेव छुपाया, करे घनकपुर वास। हरि जोती जोत जगांयदा। जगत जुगत आप बणांयदा। वेखण जाए साचा राह, मुक्त दुआरा आप खुल्हांयदा। गुर पूरा अग्गों पकड़े बांह, दर आपणे माण दवांयदा। आत्म तृष्ना अग्न बुझाए शब्द सरूपी करे ठंडी छाँ, दीपक जोती सच जगांयदा। मेल मिलाए दया कमाए इक्क वखाए साचा थां, जिथ्थे हरि बहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उन्नी हाढ़ी बण भिखारी जाए द्वारी झोली अग्गे गुर पूरे डाहिंदा। काला वेस कला कलि धारीआ। शब्द साचा वज्जे डंक, सुणे चार कुन्ट चार द्वारीआ। ना कोई वेखे राउ रंक, एका रंग रंगे करतारीआ। आप सुहाए धाम बंक, मंगी जाए भिक्ख भिखारीआ। एका मंगे शब्द अनक, अनहद शब्द धुन सच्ची धुन्कारीआ। जन भगतां देवे माण वड्याई जिउँ भगत जनक, साची खेल हरि निरँकारीआ। जोती मारे एका तनक, जगे जोत सच अटल्ल अटारीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दर दरवेश, मंगण जाए भेख धर नाम वथ हरि समरथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, सृष्ट सबाई मेट मिटाए अन्ध अंध्यारीआ। मंगे नाम शब्द जैकार है। पूरा करे आपणा काम, ना करे बन्द कवाड़ है। मिटाए अन्धेरी शाम, दया कमाए सतारां हाढ़ है। एका जोत जगे रमईआ राम, धुरदरगाही एका साचा लाड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ जंगल जूह फिरदा रहे अठ्ठे पहर विच उजाड़ है। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां उचे टिल्ले पर्बतां हरि साचा आसण लांयदा।

आपे वेखे वेख वखाणे, गुरमुख परखे बाल अञ्याणे, बहत्तर नाड़ी जोत जगांयदा। दर भगत बणाए सुघड़ स्याणे, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी वाह वाह जोड़ जुड़ांयदा। आपे बणया साचा गाडी, काया रथ आप चलांयदा। जोत सरूपी साचा बाडी, साचा मन्दिर जगत उपांयदा। मात गर्भ बाहर लए काढी, माया पड़दा परे हटांयदा। मात लडाए जगत लाडी, पिता पूत नाता बन्नांयदा। कलिजुग जूठे झूठे जानण वस्त असाडी, हरि का भेव कोई ना पांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, आप बणाए सच दुलारे, साची दरगहि धाम अवल्लड़े साचा माण दवांयदा। माण दवाए भगत किरपा कर हरि निरँकार, आप झुलाया सच निशान। दर घर साचे देवे माण। चढ़ाई जाए शब्द बबाण। आप चुकाए जम की काण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे माण ताण। माण ताण प्रभ हथ्थ है। कलिजुग जीव पछाण, प्रभ सर्बकला समरथ है। सोहँ देवे साचा दान, सतिजुग चलाए साचा रथ है। शब्द उपजाए साचा कान, जोत सरूपी पाए नथ्थ है। तुट्टे माण जगत अभिमाण, सगल वसूरे जायण लथ्थ है। आत्म देवे अमृत साचा पीण खाण, महिंमा करे कराए जगत अकथ्थ है। फल लगाए साचे डाहन, प्रगट होए राम रमईआ जिउँ राजे घर दशरथ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बणत बणाए, सोहँ शब्द चलाए साची गाथ है। सोहँ शब्द भगत वणजारा। एका खोल्हे दर दुआरा। प्रभ अबिनाशी साचा बोल्लया, इक्क चलाए शब्द जैकारा। सृष्ट सबाई पूरे तोल तोल्लया, आपे परखे परखणहारा। जन भगतां आत्म दर दुआरा साचा खोल्ल्हया। सोहँ शब्द सुणाए साचा ढोल्लया, वजदी रहे सदा धुन सच्ची धुन्कारा। शब्द सरूपी कलिजुग सतिजुग दोवें बैल जोह लया, रहण ना देवे कोई धारा। सृष्ट सबाई आपे तोल्लया, भेव मिटाए सतारां हाढ़ा। कलिजुग पापी रिहा पुकार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, अन्तिम आई मैनूं हार, शब्द सरूपी नाद सुन डोल्लया, उच्चे टिल्ले गढ़ किले सर्ब हिल्ले, देवीं माण ताण, मिटाई दीन मुहम्मदी बूरे कक्के बिल्ले चढ़या रहे तन बुख़ार, रसना तीर चले तोड़े सर्ब हँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार, दस बरस रिहा विच शिले, साल ग्यारवें होया आप बाहर। दस साल भेख वटाया। जोत सरूपी दिस ना आया। शब्द डण्डा हथ्थ रखाया। कलिजुग कंडा नेड़ वखाया। आपे पाउँदा जाए वंडां, नौ खण्ड पृथ्मी खेल रचाया। बेमुखां अन्तिम देवे दंडां, धरत मात तेरी गोद सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, चरन प्रीती साची नीती, मातलोक काया रहे शीतल सीती जगत अतीती, दर घर साचे माण दवाया। मिले माण हरि दुआरे। गुरमुख साचे हरि जी तारे। जोत सरूपी हरि निरँकारे। वडा शाहो वडा भूपी, खेल करे अपर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुल्हे रक्खे आपणे केस, मंगण जाए सर्ब दुआरे।

आदि अन्त इक्क अवतारा। महिंमा अगणत खेल न्यारा। ना कोई जाणे जीव जन्त, पुरख पुरखोतम खेल अपारा। एका जोती साचा कन्त, रूप रंग रेख भेख सद वसे बाहरा। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग लोकमात लए अवतारा। सतिजुग साचे पहली वारा। सनक सनंदन सनातन संत कुमारा। आपणा, खेल आपे जाणे, पुरख अबिनाशी हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम सदा वसे, इक्क वखाए सच टिकाणा। दूजा धारे भेख बराह नर निरँकारा। दुष्ट दैंत आप सँघारा। जोती जोत सरूप हरि, धरत मात सुण पुकार, यज्ञे पुरष तीजा अवतारा। किया भेख मात अपारा। जगत लगाई साची मेख, किया जगत अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वारा। हाव गरीव चौथा अवतारा। लाल रंग किया करतारा। वेद पतालों आंदे बाहरा। किया भेख सिर कल्गी, भेखाधारी भेख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारा। नरायण नर पंचम् अवतारा। आपे जाणे आपणी सार। सतिजुग साचे सहिज सुभाए, आवे जावे खेल कराए, छिन्न छिन्न भेख वटाए नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग रंगे करतार। अवतार छे कपल मुन तपीशर। किया भेख प्रभ साचे ईशर। एका माता दए ज्ञान, जगत पित जगदीशर। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख आप वटाए, विरला जाणे रिखी रिखीशर। अवतार सतवां हरि जी लए, नाउँ रखाए दत्ता त्रै। यदू बंस मात उपजाए, जोती जोत सरूप
४६५ हरि, आदि अन्त एका जोती सदा अटल्ल घर साचे रहे। रिखव देव अष्टम् कल धार। मति उजैन धरे संसार। इक्क ४६५
०४ वखाणे साचा तत्त, देवे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वार। पृथु रूप नौवां अवतारा। पुरख अबिनाशी ०४
लए करतारा। साचा दीआ इक्क ज्ञान, पिता पूत हरि पार उतारा। आत्म उपजया ब्रह्म ज्ञान, दूजा द्वैती मिटया धुंदूकारा। एका दस्सया सच निशान, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगे रंग करतारा। दसवां अवतार मत्स गुरदेवा। साची जुगत करी कराई मात सेवा। साचा फल नाम खवाया, भए अलख अभेवा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, एक जोती वडा वड देवी देवा। कच्छप रूप ग्यारवां धार। सत्त समुन्दर पावे सार। मँधराँचल पर्बत उठाए चुक्के पार। बाशक नाग लए जगाए, नेत्रां पाए अद्ध विचकार। साची अमृत जाग लगाए, समुन्दर रिड़के हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेख मात कर, चौदां रत्न कढ्ढे बाहर। वैद धनंतर अवतार बारां। काया पिंजर जाणे अन्तर, खोल्ह भेव गुप्त जाहरा। पंज तत्ती वेखे बणी बणतर, हड्ड नाड़ी मास पिंजर लहू मिज्झ गारा। जोती जोत सरूप हरि, जगत औषधि आपे जाणे करे आप विहारा। अवतार तेरवां हरि दातारी। मोहणी रूप खेल अपारी, राजे बल तेरी अन्तिम वारी। आपे किया वल छल, अमृत प्याए, करोड़ तेतीस बणाए, पुरी इन्द्र देवे सच्ची सरदारी। जोती जोत सरूप हरि, दूजे हथ्थ

मदिरा फड़ी कटोरी। आप चौधवां भेख श्री भगवाना। हँसा रूप चतुर सुजाना। तोड़े माण अभिमान, देवे साचा ब्रह्म ज्ञाना। रिखी मुनी करन ध्यान, पंखी उडे दहि दिश जाना। सर्ब जीआं हरि आपे जाणे, करे जाण पछाणा। जोती जोत सरूप हरि, चिट्टा बाणा तन छुहाए, काग हँस भेख वटाए, करे रंग श्री भगवाना। पन्दरवां भेख हरि प्रभ कीता। भगत प्रहलाद बणया साचा मीता। हरनाशक आप सँघारया, गुरमुख साचा रिहा जीता। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप चलाए, जगत साजन साची रीता। बावन रूप सोलवां अवतारा। मंगण गया बल दुआरा। सतिजुग साचे धरया भेख, वेद वखाणे हरि निरँकारा। करों अढाई मंगी धरत, शुकर परोहित नाल मिलाणा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम वेले दित्ता वर, कलिजुग अन्तिम साढे तिन्न तेरा बणया फेर टिकाणा। सतारवां भेख धरे अवतारे। बालक धू प्रभ पार उतारे। नारद मुन मिल्या विच जूह, दस्से राह इक्क न्यारे। सृष्ट सबाई डूंघा खूह, कोई ना दिसे पार किनारे। जोती जोत सरूप हरि, बिरध बाल जवान बाल अञ्याणयां सदा सदा पाउँदा रहे सारे। अठारवां भेख हरी हरि धार। आपे पाई गज प्रभ सार। शब्द वजे गराह तन्द दित्ती जड़ उखाड़। सभ दे पड़दे रिहा कज्ज, आदि अन्त एका एकँकार। सतिजुग साचे विच मात वार अठारां हरि सज्जण मीत मुरार लए आप अवतार। सतिजुग भेख भेस गया वटा के, लोकमात जुग त्रेता प्रगटाए। उन्नीआं अवतार कल छोटी धार परस राम आप अखवाए। वार इक्की कुल क्षत्री देवे हार, हथ्थ हथौड़ा इक्क उठाए। वल छल करे एका जोती अपर अपार, राम रूप हरि लए वटाए। जोती जोत सरूप हरि, त्रेते जुग अन्तिम अन्त बीसवां अवतार आपे आप वटाए। त्रेता जुग गया मुक। द्वापर मात आया ढुक्क। काया बूटा पिछला गया सुक्क। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे जगत रहावे जोत प्रगटावे नित नवित्त, दया कमावे ना सके कदे रुक। इक्कीआं अवतार वेद व्यासा। कुंआरी कन्या दए दिलासा। मात बणाई कर कर हासा। आपे जाणे आप वखाणे आपणा जगत तमाशा। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत सदा अटल्ल ना होए कदे विनासा। वेद व्यास जोत जगाए। अठारां पुरान लए लिखाए। चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक बणाए। ब्रह्म पुरान मुख रखाए। जोती जोत सरूप हरि, एका कल धार कर विचार, साचा शब्द आप लिखाए। अठारां हज़ार सलोक श्रीमद् भगवत गीता निहकलंक रिहा अलाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे ना कोई सुणे ना कोई जणाए। वेद व्यास बण लिखार। जोत निरँजण नर निरँकार। करे चरन निमस्कार। पुरख अबिनाशी किरपा धार। दूजी वार होए दीदार। मिल्या शब्द अपर अपार। होए मेल कलिजुग अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, वेद व्यास उत्ते ब्यास बणया आप लिखार। बाईआं अवतार हरि कृष्न मुरारी। द्वापर जोत जगाई त्रैलोकी नाथ नैण मुँधारी। ग़रीब

निमाणयां देवे साथ, मारे दुष्ट कंस हँकारी। आप चलाए जन भगतां राथ, करे सच सवारी। इक्क चलाए साची गाथ, देवे ब्रह्म ज्ञान अर्जन हरि अपारी। सगल वसूरे जायण लाथ, अठारां ध्याए गीता एका आप उचारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भेख जगत लेख आवे जावे वारो वारी। आवण जावण खेल अपार। लोकमात हरि वारो वार। जन भगतां देवे साची दात, देंदा रहे नाम भण्डार। एका दिसे उत्तम जात, चरन कँवल प्रीती साची धार। मिले वड्याई विच मात, गुर पूरे जाओ सद निमस्कार। अमरा पद अन्तिम पाओ, जाओ सच द्वार। गुरमुख साचे संत जनां घर साचे सद्द ल्याओ, मेल मिलाओ पुरख अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप कराए जुगो जुग जन भगतां सच्चा वणज वपार। द्वापर तेरा चुक्कया गेड़ा। कलिजुग मात छिड़या झेड़ा। करया खेल हरि आपे, महात्मा बुद्ध करे निबेड़ा। अवतार तेईआं आप उपजाए जोत जगाए वसाया काया नगर खेड़ा। गौतम बुद्ध बुध बल धार। पहल कीनी आत्म सुध, पुरख अबिनाशी करी विचार। दूजी आई मात सुध, एका दूजा भउ निवार। पंजां तत्तां नाल करया युद्ध, अन्तिम तीजे आई हार। चौथे आत्म रस रिहा गुध्ध, हँकारी तुट्टा आत्म बुख़ार। पंजवें सोया उठया कुद्द, अमृत वेख ठंडी धार। जोती जोत सरूप हरि, आपणे खेल करे कराए विच संसार। साचा नाम इक्क जपाया। गऊ ग़रीब निमाणा गले लगाया। छड्डे तख्त राज सिँघासण राणीआं, अलख निरँजण भेख वटाया। जीआं जन्तां दस्से साची बाणीआं, मदिरा मास दए तजाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा खेल आपणे हथ्थ रखाया। ईसा मूसा हरि उपजांयदा। कलिजुग तेरे साचे संगी, मात धार बणांयदा। घर साचे मंगे इक्क मंगी, साचा संग निभांयदा। संग मुहम्मद चार यार कलिजुग तेरी कटी तंगी, हथ्थ नाल हथ्थ मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, वाहवा सोहणा जोड़ जुड़ांयदा। खेल करे हरि करतारा। जीआं जन्तां पावे सारा। मातलोक हरि दया कमाए, गुर नानक आए कल धारा। जोती जोत सरूप हरि, सच शब्द हरि झोली पाए, सतिनाम जगत भण्डारा। साचा नाम जगत भण्डारा। चारों कुन्ट आपे वंडे चार उदासी गुर निरँकारा। कलिजुग जीव घर घर करन हासी, भुल्ले फिरे मूर्ख मुग्ध गंवारा। गुरमुख विरला जाणे शब्द पछाणे रसना गाए स्वास स्वासी, नाम सति साची धारा। आप समझाए पंडत काशी, जगी जोत मात अपारा। जोती जोत सरूप हरि, माया पड़दा जगत पाए, कोई ना पाए साची सारा। जामे दस जोत जगाए। अन्तिम बैठा भेख छुपाए। गुरमुख साचे संत जन, एका साची सेव लगाए। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे नाम धन, अन्तिम बेड़ा देवे बन्न, एका ध्यान गुर चरन टेक रखाए। गुर चरन टेक सच ध्याना। अन्तिम होवे बुध बिबेक, एका उपजे ब्रह्म ज्ञाना। बज़र कपाटी करे छेक, वज्जे तीर शब्द निशाना। माया अग्न ना लाए सेक, शब्द

बन्ने साचा गाना। जोती जोत सरूप हरि, सच सुनेहड़ा देवे घल, करे खेल जल थल। जन भगतां करे साचा मेल, बेमुख भुलाए कर कर वल छल। जोती जोत सरूप हरि, एका वसे साचे धाम, रहे सदा अटल्ल। साचा शब्द जगत गुर दात। देवे साची वथ हथ्थ लोकमात वडी दात। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ, आपे पुछे अन्तिम वात। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेखा आप लिखाए, सिर रक्खे दे कर हाथ। जोत निरँजण जोत जगाए। सतिगुर साचा मात उपजाए। निरगुण सरगुण एका जोती सरगुण भेख मात वटाए। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे जीवां जन्तां आपे समझाए। सरगुण रूप सदा विच मात। निज घर निरगुण रूप रक्खे वास। आपे जाणे आपा आप। सरगुण रूप सर्ब वखाणे, जगत जपाए साचा जाप। खड़ा रहे सद सरहाणे, मेट मिटाए तीनो ताप। गुरमुख साचा रंग साचे माणे, कोटन कोट उतरे पाप। आप चलाए आपणे भाणे, गुर पूरा वड प्रताप। कोई ना वेखे राजे राणे, गुरमुख साचे बाल अञ्याणे, आपे बणे माई बाप। सतिगुर साचा सच वखाणे, भगत जनां दी आपे जाणे, इक्क जपाए साचा जाप। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा रिहा कर, पुरख अबिनाशी आपे आप। निरगुण रूप नर निरँकारा। सद वसे आपणे आप सहारा। लोकमात राह साचा दस्से, सरगुण रूप लए अवतारा। जन भगतां आत्म सदा रसे, खोल्हे बन्द कवाड़ा। शब्द बाण साचा कसे, पंजां चोरां मार मिटाए, पिच्छे

४६८
०४

हटाए झूठी धाड़ा। साचा राह एका दस्से, आत्म जोती काया नाड़ा। जोत सरूपी अन्दर वसे, दिवस रैण अट्ठे पहर लगा रहे सच अखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म दर साचा खोल्हे, शब्द सरूपी विच्चों बोले, फिरदा रहे सद पिच्छे अगाड़ा। सरगुण रूप सदा सुखदेवा। लोकमात हरि नाम जपाए, रसना फल खवाए अमृत मेवा। गुरमुख साचे आप जगाए, मस्तक लाए शब्द थेवा। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, आप कराए साची सेवा। दरस दिखाए थांउँ थाँईं, नाम जपाए साची जिह्वा। जोती जोत सरूप हरि, साची दया आप कमाए, सतिगुर साचा आप उपजाए, जीआं जन्तां रिहा समझाए, आप लगाए साची सेवा। सतिगुर साचा साची सेव कमाए, चरन प्रीती एका लग्गी नाल पुरख गोपाले। हरि पहनाए सिर सग्गी, उत्ते देवे शब्द दुशाले। जोत लोकमात जगी, मिटे अन्धेर कलिजुग काले। सृष्ट सबाई अन्तिम दगी, ना दिसे किसे राह सुखाले। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साचे विच मात आपे पाले। गुर सतिगुर सूरा जगत वरयाम। प्रभ शब्द कराए पड़दा काया चाम। घर साचे मिले एका जोती नूरा, मिटे अन्धेरी रैण जगत शाम। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त कलि आपणे पूर कराए आपे काम। कलिजुग बली बलवाना। मात मिटाए गुर पीर शाह सुल्ताना। दर दर घर घर लाहुंदा फिरे जीव, कोई ना छड्डे ख़ाली ख़ाना। जोती जोत सरूप हरि, आपणा रंग आपे जाणे वेले अन्त श्री भगवाना।

काया माटी खाए काल। जगत तुट्टे नाती, तुट्टे माया जाल। ना कोई पुच्छे किसे बाकी, खाली होए खाल। जोती जोत सरूप हरि, एका वस्त रक्खे दस्त रक्खे सद संभाल। गुर पीर जगत अवतारा। अन्तिम सुत्ते पैर पसारा। कोई ना आए दूजी वारा। जगत नाम फेर धराए, जोत जगाए आदि अन्त वारो वारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे आप करन करावणहारा। काया चोली माटी डोली। अन्तिम सुत्ती भोली भाली। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले लक्ख चुरासी कीनी गोली। पीर पैगम्बर सय्यद मुलाणा। मीरी पीरी पीर फकीरी, शाह हकीरी, मन्नणा पए साचा भाणा। तन किसे ना रहे चीरी, मिटे निशान राजा राणा। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त अखीरी, निहकलंकी पहरे बाणा। निहकलंकी शब्द अमोला। पहलों छड्डया काया चोला। फेर सुणाया सोहँ ढोला। भरम भुलेखा गुरमुख साचे संतां आत्म खोल्हा। मेल मिलावा साचे कन्ता, होया जगत विचोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, चौवीआं वार मातलोक लक्ख चुरासी खेडण आया एका अन्तिम होला। निहकलंक शब्द वणजारा। वेखे परखे परखे वेखे, घाड़न घड़े सच्चा सुन्यारा। जन भगतां अमृत मेघ सद बरखे, काया करे ठंडी ठारा। गुरमुख साचा कदे ना हरखे, आपे करे कराए, जगत वरताए आपणी धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भिखारी आपे बणया, करदा जाए वणज वपारा। वणज व्यपारा साचा मंगे। मातलोक ना हरि जी संगे। शब्द घोड़े कसे तंगे। चरन छुहाए चिट्टे घोड़े, लक्ख चुरासी पैर नंगे। अन्तिम कलि वागां मोड़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे परखे माढ़े चंगे। साचा हट्ट हटवाणा। मंगण जाए वड बल बलवाना। तन मन साचा रंगण जाए, होए जगत कल्याणा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भाणा। उन्नी हाढ़ी उठे गुर चेला। दरगहि साची लग्गे साचा मेला। बेमुख जगत वणजारया, होए वक्त दुहेला। गुरमुख संत प्यारयां, हरि रंग रंगे नवेला। देवे शब्द भण्डारया, फल लगाए काया साचे डाला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पछाणे चले चलाए आपणे भाणे, आपे गुर आपे चेला। उन्नी हाढ़ जाए ब्यास। शब्द सरूपी पाए रास। जोत सरूप घनकपुर वास। हरि हरि वडा शाहो, जगत निमाणा होए दास। सदा सदा सद बेपरवाहो। आपे करे हास रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात बलोई, करे प्रकाश मात पताल अकाश। मात पताल अकाश होए चानणा। धरत मात दए धरवास, जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञानणा। शब्द चलाए स्वास स्वास, अन्तिम पकड़े साचा दामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आपे बणे, गुरमुख साचे जामना। उन्नी हाढ़ ब्यासा जाए। निज घर वासा आप रखाए। आपे वेखे हरि तमाशा, दिस किसे ना आए। जगत बंधन जगत फासा, कोए ना किसे लए छुडाए। नाम जोती

तोला मासा, रत्ती किसे हथ्थ ना आए। आप रिड़के छाछ छाछा, मक्खण रोल बाहर कढाए। गुरमुख परखे सोना पासा, साचा कंचन आप सुहाए। आपे बणे दासन दासा, अचरज खेल प्रभ आपणी आप वरताए। ब्यासों आए हरि गिरधार। तिन्न महीने सोए पैर पसार। खेल कराए रूसे चीने, मेल मिलावा साचे यार। गुरमुख आत्म मन तन भीन्ने, खिले सच्ची गुलज़ार। अमृत धार बरखे शांत रक्खे सीने, काया रहे ठंडी ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े रहे सदा सदा अस्वार। सतारां भादों भरम भउ भागे। प्रभ अबिनाशी सोया जागे। घनकपुर वासी मोड़े वागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे संतां जन भगतां बन्ने शब्द धागे। शब्द धागे आप परोए। बचया रहे ना मात कोए। प्रभ का भाणा सिर ते सहे, मेल मिलावा अन्तिम होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरे बाणा, ना जन्मे ना मात मोए। शब्द घोड़े हरि साचा चढ़। शब्द डण्डा हथ्थ लए फड़। देवे सुनेहड़ा सच दुआरे, शब्द घलाए दयाल गढ़। नाम अक्खर इक्क समझाए, आत्म अन्दर साचे वड़। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म दए लिखाए, फड़न आए प्रभ तेरा लड़। सतारां भादों लिखे लेख लेखणी, जगत कर्म विचार। जोत सरूपी धारे भेखणी, चिट्टे अस्व हो अस्वार। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़णी, कोई ना दिसे दूजा मीत मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्न पंज सत्त नौ पूर कराए, शब्द लिखाए अपर अपार। अस्सू तिन्न गुण निधाना। जन भगतां चढ़ाए शब्द बबाणा। दिल्ली किले लाल हरि चरन छुहाना। आत्म जोती देवे बाल, करे खेल आप भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप वखाए दया कमाए, निहकलंकी पहरे बाणा सच टिकाणा। तिन्न अस्सू तिन्न लोक। शब्द सरूपी प्रभ लए ठोक। लोकमात हरि खेल रचाए, जोत जगाए चौदां लोक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपणी हथ्थीं हरि समरथी रिहा झोक। तिन्न पंज पंज परवान। गुरमुख साचे चतुर सुजान। संग रलाए मार ध्यान। लाउण जाए साचे घर सच्चा इक्क निशान। संत मनी सिँघ गया तर, बणया इक्क दर दरबान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां पंच प्यारयां देवे नाम सच्चा दान। सति पुरख सति रीता। सत्त समुन्दरी माया जाल, सत्त पताली परखी नीता। सति सरूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मिले साचा मीता। किला लाल कोट दुआरा। शब्द चलाए हरि निरँकारा। वाक भविख्त आप सुणाए, करे खेल जगत न्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगे आगरे इक्क दुआरा। गुर पूरा मैल काटे, जन्म संवारदा। पूर कराए मात घाटे, ना देवे पासा हारदा। गुरमुख साचा रसना राटे, वेखे रंग सच्ची सरकार दा। रसना रस्स साचा चाटे, तुट्टे गढ़ किला हँकारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साची जोती तन शृंगारदा। साची जोती तन रंगाए। ना मैहन्दी

हथ्थीं लाए। दिशा लहन्दी सृष्ट सबाई खहन्दी, लाड़ी मौत तृखा बुझाए। उम्मत नबी रसूल दी इक्की हो हो बहिंदी, जूठे झूठे वहिण वहन्दी, कोई ना अन्त छुडाए। गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम आप वसाए। वडभागी वडभाग, हरि पाया। वडभागी वडभाग, पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी, प्रगट जोत दरस दिखाया। वडभागी वडभाग, अमृत मेघ रिहा बरस, कलिजुग अग्न बुझाया। वडभागी वडभाग, प्रभ साचा करे तरस, सांतक सति कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची रंगण गुरमुख रंगे, एका रंग मजीठ चढ़ाया। अमृत धार आत्म ठारे। प्रभ देवे वारो वार, वेखे विगसे करे सर्ब विचारे। जो जन मंगे दर भिखारे। देवे नाम वड वड भण्डारे। शब्द बन्ने सिर दस्तार, सच्चा शाहो वडी सरकारे। काया लाहे जगत बुख़ार, शब्द खण्डा साचा मारे। आत्म भरे हरि भण्डार, जोत सरूपी किरपा धारे। देवे नाम इक्क ख़ुमार, मंगण आए नर नारे। मिले मीत हरि मुरार। अन्तिम वेले पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा सुहेला सद वसे अकेला, जोत सरूपी जगत अधारे। जगत अधारी सर्ब समांयदा। वेखे विगसे करे विचारी, गुरमुख साचे आप जगांयदा। आत्म ब्रह्म पूर कर्म, जगत कर्म एका एक रखांयदा। जन भगतां देवे मानस जन्म, देही लेखे लांयदा। गाओ साचा शब्द गीत सुहागी, एका हरि सुणांयदा। गुरमुख साचे धुरदरगाही, अन्तिम वेले लेखे लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत साचा जाम भर प्याले आप प्यांयदा। देवे नाम प्याला, जगत अनमोल है। किरपा करे दीन दयाला, गुरमुख साचा सद वसे हरि हरि कोल है। आपे होए सदा प्रितपाला हरि रखवाला, अट्ठे पहर करे चोहल है। तोड़े मात जगत जंज़ाला, दूई द्वैती पड़दे देवे खोल्ह है। मस्तक लाहे टिक्का काला, चरन प्रीती रिहा जोड़ है। सोहँ देवे शब्द दात दुशाला, आप चढ़ाए शब्द घोड़े, तन पाई नाम साची माला है। धुरदरगाही आया दौड़ है। फल लगाए काया डाला, जन भगतां मिल्या बौहड़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वेखे वेख वखाणे, परखे गुरसिख सुघड़ स्याणे, भन्ने रीठे कौड़ है। कूड़ कुड़यारा बेमुख रीठा। गुरमुख साचा लागे मीठा। साचा दरस पुरख अबिनाश, नेत्र नैण वेख चढ़या रंग मजीठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी तेरा पीसण आपणी हथ्थीं आपे पीठा। लाड़ी मौत तन श्रृंगारी। सोलां हाढ़ कर्म विचारी। सतारां हाढ़ वाजां मारी। निहकलंक वज्जे डंक, उठे राउ रंक लक्ख चुरासी आप वंगारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ तेरे दर होई निमाणी साचे घर निमस्कारी। तन श्रृंगारे सोलां श्रृंगार, मौत राणी हो त्यार, लक्ख चुरासी वेखे चुणे सभे लाड़। जलां थलां आवे जावे जावे आवे पार किनार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, बेमुख कलिजुग जीवां काला

मथ्थो टिक्का लाया, अन्तिम वेले माया रूपी बन्नृण आया इक्क दस्तार। लाड़ी मौत पाए गहिणे। प्रभ अबिनाशी आपे वेखे साचे नैणे। लक्ख चुरासी तेरे कलिजुग अन्तिम वेले, आप चुकाए लहिणे देणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, चार कुन्ट चार चुफेरे बेमुख देण मिहणे। लाड़ी मौत पाए डण्ड। लहन्दी दिशा चढ़ना चन्द। मेट मिटाए धरत मात तेरी गोद आप सवाए मदिरा मासी जो खांदे गन्द। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, बेमुखां जीवां दिस ना आया, इक्क गंवाए परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया, वारो वार कहन्दा जाए, सभ दा दुःख लहंदा जाए, शब्द सरूपी चढ़या चन्द। पहली हाढ़ वाग मोड़े। पैरीं पाउण ना देवे जोड़े। अन्तिम कलिजुग दिन रहि गए थोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी खेल रचाई, सारी सृष्ट आप हिलाई, गुरमुखां मन वज्जी वधाई, शब्द सरूपी आपे बौहड़े। धर्म राए तेरी धी निमाणी। लाड़ी मौत पहली कुन्ट आपे चढ़ी, वेखण चली साचे हाणी। वहन्दी जाए किला गढ़ी, परखी जाए राजे राणी। इक्क बहारी हथ्थ फड़ी, पीण ना देवे किसे पाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले आप मिटाए खाणी बाणी। प्रगट जोत प्रकाश, जगत अन्धेरा। सद निज घर रक्खे वास, ना चुक्के हेरा फेरा। गुरमुख कहण सद रहे दास, करे हक्क नबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, दिस किसे ना आए वसे केहड़े नगर खेड़ा। दया कर दीन के दाते। आए दर मिले वर पुरख बिधाते। आत्म खोलृ साचा सर, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ झूठे नाते। एका जोती एका शब्द, एका सुरत एका घर, मिटे अन्धेरी राते। जोती जोत सरूप हरि, अठ्ठे पहर एक रंग रंगाए, ना सोए ना जागे किस वेले प्रभाते। गुर की मति गुरमति जाण। रक्खे पति विच जहान। एका शब्द धीरज साचा यति, बख्शे तत्त नाम गुण निधान। आत्म बीज साचा घत्त, लग्गे फल इक्क महान। काया मन्दिर सच अटारी उच्च महल्ल, जगे जोत विच महान। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे वेख वखाणे, वड दाता निगहबान। गुर हरि गुर हरि दीबाण। गुरमुख साचे आत्म सद, साचा दए शब्द ज्ञान। इक्क वजाए साचा नद, चरन प्रीती बख्शे ध्यान। अठ्ठे पहर अमृत मध, होया रहे जगत सुनाण। पंजां चोरां आपे बध्ध, होए ख्वारी जीव निधान। लम्बा चौड़ा उच्चा नीवां दिसे ना कद्द, जिथ्थे वसे हरि भगवान। काया चोली बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, वसे हस्से किस जहान। गुरू गुर गुरू गुर मेरे। शब्द सरूपी पायण घेरे। बन्नी जाए साचे चेरे। दर घर साचे आपे जाणे, जाण पछाणे हरि भगवाने। तुट्टे माणे चरन ध्याने आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाने। सच्चा झुल्ले इक्क निशाने। सर्ब वखाए कूड़ो कूड़, एका मारे शब्द बाने। दिल्ली जाए तोसे खाने। बन्नृे हथ्थ शब्द गाने। पंजां चोरां लग्गे डाने। सच सिँघासण हरि जी बैठा, ना जाणे कोई तहिसीलां

थाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाई वेख वखाणे सर्ब जाणे, आपे चले चलाए आपणे भाणे। गुर पूरा गुर देवणहार दाता। एका पुरख मेरी जाता। इक्को वस्त प्रभ दर मंगण, उठणा पए ना किसे वेले प्रभाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए, साची जोत आत्म झोली आप भराता। गुरमुख साचे बाल अञ्याणे। पुरख अबिनाशी आपे बख्शे चरन ध्याने। साचे धाम आप बहाए, दस्से इक्क टिकाणे। जोत सरूपी डगमगाए, कलिजुग जीवां दिस ना आए, गूढ़ी नींद सवाए, ना कोई चढ़े शब्द बबाणे। गुरमुख साचे आप जगाए, फड़ फड़ बाहों राहे पाए, साचे रथ आप बहाए, मारे इक्क उडाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे माण, जगत तोड़े सर्ब अभिमाने। तुट्टे माण अभिमानया। वज्जे तीर साची कानया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चले तीर शब्द निशानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, साचे संतां वेखण आया कर कर वड मेहरबानीआं। संत सुहेले साचे मीत। आपे परखे हरि जी नीत। गुरदुआरे मन्दिर कोई खाली रहण ना देवे मसीत। वांग बक्करे अन्तिम कोहे, सदी चौधवीं रही बीत। गुरमुख साचे संत जनां, सदा रक्खे काया ठंडी सीत। काया ठंडी ठारे, कलिजुग अन्गयार है। गुरमुख साचे जाए तारे, बेमुखां करे ख्वार है। वेले अन्तिम आई हारे, दुखी होई सर्ब नर नार है। गुरमुख विरला करे तन श्रृंगारे, जिस मिल्या मीत मुरार है। साचा शब्द पहने तन हारे, प्रभ बेड़ा कर जाए पार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे अन्त निबेड़ा, वसाए नगर खेड़ा जिस चरन छुहाए दर द्वार है। सतिगुर पुरख सुजान सदा इक्क रंग है। देवे दात आप भगवान, घर साचे सदा रिहा मंग है। इक्क रखाए आपणी आण, जगत दिसाए भुक्ख नंग है। साचा बख्शे चरन ध्यान, प्रभ वड दाता सूरा सरबंग है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी खेल रचाए, जोत सरूपी डगमगाए, अन्तिम कलि सर्ब रहे भंग है। अन्तिम कलिजुग साजना, सज्जण मीत मुरार। ना कोई दीसे राजान राजना, घर घर दिसे उजाड़। कोई रक्खे ना किसे लाजना, एका उठे साची धाड़। वरते खेल देस माझना, बेमुखां देवे हरि झाड़। गुरमुखां मारे शब्द अवाज़ना, शब्द लिखाए सतारां हाढ़। अन्तिम संवारे साचा काजना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़।

✻ १८ हाढ़ २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर दरबार विच ✻

आत्म अभ्यास, जोग सन्यास। मन रहे उदास, काली रैण पृथ्मी अकाश। ना वखाणे साचे नैण, करे हस्स हस्स रास। रसना दस्से साचा कान्हा, परम पुरख वसे किसे विरले पास। चुकाउँदा रहे लहिण देण, हुक्म हज़ूरी आत्म रास।

हरि संग सदा सुहेला, घर घर क्रोधी हँकारी, जगत ममता मदिमाती करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जोग जगत चलाए, सोहँ शब्द इक्क जपाए, वसे आस पास। जटा जूट धार अंग भिबूत। गल संगल लक्क तड़ाग, मारन मार वड वड अवधूत। सिर पाई फिरन छार, ताणा पेटा कोई ना जाणे, एका धागा शब्द सच्चा सूत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द जपाए, गुरमुख साचे संत जनां, आप मिटाए आत्म अन्धेर जगत अन्ध कूप। रिख मुन मुनी मुन धारे। लग्गी रहे सुन, रक्खे बन्द सर्ब कवाड़े। दर्शन होए घड़ी पल, तपदी रहे काया जिउँ अग्न तत्ती हाढ़े। गुरमुख साचे प्रभ आपे चुण, बहाए सच अखाड़े। कवण जाणे हरि तेरे गुण, लेखे लाए चंगे माढ़े। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुरमुख साचे संत दुलारिआं, शब्द घोड़ी आपे चाढ़े। इक्क कराए साचा वणज वपारया, नाम रंगण काया चोली साची चाढ़े। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां साचे संतां मातलोक आप बणाए दर घर साचे दिसे साचे लाड़े। संत दुलारा हरि प्यारा। साची रंगण रंग रंगाए, किरपा कर अपर अपारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त साचे संत हरि संग समाए, आत्म बैठा लाए ताड़ा। बेमुख जीव काची वंग भन्नाए, आप चबाए आपणी दाढ़ा। शब्द घोड़े तंग कसाए, आप आपणा चरन टिकाए, लक्ख चुरासी भंग कराए, लेख लिखाए सतारां हाढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, चार कुन्ट चार चुफेर, शब्द सरूपी लए घेर, किसे ना दिसे सन्झ सवेर, लग्गी रहे अग्न बेमुख फिरन नग्न, गुरमुख साचे संत जनां देवे साचा सहारा। धरत मात तेरा लग्गे इक्क अखाड़ा। लग्गे इक्क अखाड़। लेख लिखाए हरि धरत मात सतारां हाढ़। इक्क बणाए जमायत, एका एक जगत कर सोहँ शब्द देवे साची दात। लक्ख चुरासी कीने वक्खर, अन्तिम पुच्छे हरि जी वात। जोत धर हरि रोड़ी सक्खर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे जाण पछाणे, एका एक साचा शब्द साचा अक्खर। सज्जण सुहेला हरि, हरि दरगहि साची धर्मसाला। सदा वसे इक्क इकेला। सुणाए शब्द सुहागी गीत, आपे गुर आपे चेला। आपे बणे साचा मीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार उतारे मानस जन्म जाणा जीत। संत सुहेला राम सखाई। साचे दर आत्म वजदी रहे वधाई। आपे सुहाए बंक द्वार, शब्द विचार हरि ठंडी ठार, काया अन्दर डूंघी कन्दर आप वहाई। आपे तोड़े वज्जा जन्दर, एका चाबी उत्ते हथ्थ रखाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, विच मात दए वड्याई। मात वड्याई भगत दुलारया। आत्म होई रुशनाई, साचा शब्द सुणे धुन्कारया। दूई द्वैती दूर कराई, एका रंगे रंग करतारया। एका रंग मात वखाई, सोलां तन श्रृंगारया। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलिजुग भेख धर, लक्ख चुरासी वेख कर गुरमुख साचे संत प्यारे, देवे नाम एका एक साची टेक जगत उधारया। साचा संग भगत

४७४
०४

भगवान। एका जोती एका एक, एथे ओथे दो जहान। कलिजुग माया तन ना लागे सेक, सच्चा देवे पीण खाण। आत्म करे प्रभ बबेक, शब्द देवे नाम बबाण। जोती जोत सरूप हरि, साचा मेल होए साचे संत, साचे घर गुरमुख भगत भगवान। सच घर वसे खोल्हे आत्म दर दुआरा। शब्द कसे रसना तीर आपे खोल्हे बन्द कुआड़ा। अमृत धारा एका वसे, गुरमुख ना साड़े अग्न हाढ़ा। पुरख अबिनाशी सद हिरदे वसे, होए सहाई विच जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां। पंजे दूत जायण नस्से, शब्द सरूपी वज्जे ताड़ा। साचा राह एका दस्से, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत प्यारया, आत्म दर दुआरे सदा सदा सद वसे। आत्म दर द्वार हरि मस्कीन है। एका वसे ग़रीब निवाज़ा, ना कोई मज़्हब ना कोई दीन है। लक्ख चुरासी जिन साजन साजा, एका शब्द सुणाए साची बीन है। जन भगत संवारे आपे काजा, सद होया रहे अधीन है। अन्तिम कलिजुग जोत जगाए देस माझा, मेल मिलाए रूसा चीन है। जन भगतां मारे शब्द अवाजा, बेमुख भन्ने हँकारी बीन है। सोहँ देवे साचा दाजा, धुरदरगाही ल्याआ छीन है। जोती जोत सरूप हरि, लम्बा चौड़ा वडा छोटा कोई ना जाणे ना दिसे किसे महीन है। आत्म दर दुआरा हरि बलकार है। वसदा रहे इक्क चुबारा, जगे जोत निरँकार है। जोत सरूपी पसार पसारा, एका रंग अपार है। अमृत बरखे साची धारा, सद रहे ठंडी ठार है। पुरख पुरखोतम साचा यारा, बणया रहे मीत मुरार है। एका शब्द दस्से गुरमुख साचे हिरदे वसे, चाढ़े रंग अपार है। शब्द बाण कसे, बेमुख जायण नस्से, गुरमुखां देवे एका चरन सच्ची सरन प्यार है। जोती जोत सरूप हरि, एका एक सर्ब टेक सच्ची सरकार है। सच सरकार हरि निरंकारया। एका करे सच विहार, आदि अन्त विच संसारया। लोकमात बन्हाए साची धार, आवे जावे वारो वारया। साचे संत आप बणाए दुलार, शब्द चलाए अपर अपारया। साचा जाम इक्क पिलाए, नाम खुमार उत्तर ना जाए, गुरमुख साचे सद रक्खे हथ्थ गिरधारया। पूरन इच्छया आत्म काम, आप कराए चतुर्भुज चिट्टे अस्व हो अस्वारया। कोई ना लग्गे दर घर साचे दाम, इक्क कराए साचा वणज वपारया। जन भगतां हरया होया चाम, जगी जोत अगम्म अपारया। मिटे रैण अन्धेरी शाम, कलिजुग मिटाए मेल मिलाए हरि गिरधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सद भाणे आपणे समा रिहा। आपणा भाणा प्रभ आपे जाणे। किसे हथ्थ ना आए राजे राणे। कलिजुग भुल्ले रहे माया रुल्ले, होए बाल अञ्याणे। अग्ग लग्गी रहे काया कुले, मायाधारी सुघड़ स्याणे। शब्द पंघूड़ा एका झुले, गुरमुख साचा रंग साचा माणे। गुरमुख साचे पूरे तोल तुले, एका रक्खे हरि चरन ध्याने। दर घर साचे शब्द भण्डारे सद खुल्हे, देवे नाम इक्क अनमुल्ले। जोती जोत सरूप हरि, दरगहि साची माण दवाए, जो जन साचा रसना गाए, कलिजुग जीव अन्तिम अन्त रहे

भुल्ले। हरि नर साचा गुरमुख वेखे संत प्यारा। कलिजुग जीव भाण्डा काचा, भुल्ले अन्तिम वारा। एका पुरख अबिनाशी साचो साचा, आवे जावे वारो वारा। जन भगतां आत्म हिरदे राचा, देवे शब्द सच्ची धारा। बेमुखां मारे इक्क तमाचा, अन्तिम आई मात हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात वड दात, आप सुहाए सुहञ्जणी रात, गुरमुखां अन्तिम पुच्छे वात, सतिजुग साचे तेरा देवे सोहँ सच्चा नाम भण्डारा। सोहँ शब्द नाम भण्डारया। तेरी वड सिक्दारी, चार वरन होए हँकारी, मिट जाए जूठी झूठी चार यारी, बणे सच्ची इक्क सरकारया। पंजां चोरां कढ्ढे बाहरी, मारे शब्द इक्क कटारी, ना झल्ले कोई मारया। आत्म अन्दर देवे नाम बहारी, गुरमुख साचे संत जनां, रिहा पैज संवारया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चिट्टे अस्व अस्वारया। हरिजन शब्द पछाण, नाम अधारया। हरिजन शब्द पछाण, एका सच उडारया। हरिजन शब्द पछाण, तिन्नां लोकां वसे बाहरया। हरिजन शब्द पछाण, साची वक्खर एका अक्खर, नाम निरँजण नर निरंकारया। हरिजन शब्द पछाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे गिरवर गिरधारया। हरिजन शब्द पछाण, जगत अमोल है। हरिजन शब्द पछाण, अन्तिम तुले पूरे तोल है। हरिजन शब्द पछाण, गुरमुख साचे संत जन, मिले लाल इक्क अनमुल्लड़ा, रक्खणी वस्त संभाल है। हरिजन शब्द पछाण, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे सच्चा दान है। हरिजन शब्द पछाण, साची दात है। हरिजन शब्द पछाण, विच लोकमात उत्तम दात है। हरिजन शब्द पछाण, लोकमात वडी इक्क करामात है। हरिजन शब्द पछाण, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान है। हरिजन शब्द पछाण, अट्ठे पहर एका रंग रंगान है। हरिजन शब्द पछाण, नर हरि हरी भगवान, आत्म मिटाए अन्धेरी रैण है। हरिजन शब्द पछाण, अन्धेरी रैण जगत ढंडोरा। हरिजन शब्द पछाण, अन्तिम वेले मौत लाड़ी, अग्गे पिच्छे फेरे घोड़ा। हरिजन शब्द अमोल, किरपा करे सतारां हाढ़ा। हरिजन शब्द अमोल, जोती जोत सरूप हरि, साचा शब्द कन्न सुणाए, गुरमुखां हरि दया कमाए, बेमुखां आत्म अग्न लगाए, कलिजुग वक्त रहि गया थोड़ा। हरिजन शब्द पछाण, साची बाती पुरख अबिनाशी आप जगाई है। हरिजन शब्द पछाण, साची बाणी सोहँ राणी, दो जहानी अचरज खेल रचाई है। हरिजन शब्द पछाण, धुरदरगाही साचा देवे दान, चरन धूढ़ मस्तक देवे आत्म सर कराए इशनान, होए आप सहाई है। हरिजन शब्द पछाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर रहे निगहबान है। हरिजन शब्द पछाण, साची शब्द घनघोर है। हरिजन शब्द पछाण, धुनी धुन्कार है। हरिजन शब्द पछाण, अट्ठे पहर पावे शोर, एका रक्खे आपणी धार है। जन भगतां चुकाए मोर तोर, देवे नाम अपार है। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर, लोकमात ठग चोर यार है। एका चढ़ना शब्द घोड़, रहणा

४७६
०४

सद अस्वार है। बेमुखां मारे सिर विच पौड़, उत्ते पाए डाहढा भार है। जन भगतां अन्तिम जाए बौहड़, आपे होए सहार है। वेखे परखे परख पछाणे मिट्टे कौड़, रसना फिके शब्द कटार है। पढ़न पुरान विचारन वेद वखानण, लभ्भदे फिरन ब्रह्मण गौड़, ना जानण हरि भगवान है। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त लक्ख चुरासी लए वर, धर्म राए तेरा दर द्वार एका वार दए भर, लोकमात हरि आया दौड़ है। धर्म राए उठ बल धार। जोत सरूपी जामा धार। दोए जोड़ कर निमस्कार। शब्द खण्डा आप उठाया, चिट्टे घोड़े तंग कसाया, पंचम् जेठ होए आप अस्वार। आपे भन्ने वड वड सेठ कौड़े रेठे, गुरमुख रक्खे साया हेठे, देवे शब्द अपार। लक्ख चुरासी करे ख्वारी, धर्म राए होए वड वड भागा। जोत सरूपी साचा जागा। सृष्ट सबाई हथ्थ आपणे पकड़े वागा। गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम कलि धोयण आया काया लग्गा झूठा दागा। साचा बीज आप बोण आया, आत्म मारे शब्द सुहागा। इक्क सुणाए साचा रागा। फड़ फड़ बाहों राहे पाउण आया, हँस बणाए कागा। लक्ख चुरासी मेट मिटाए, झूठे मन्दिर आपे ढौहण आया, खेल कराए पहली माघा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंकी जोत जगाई। तिन्नां लोकां वज्जी वधाई। करोड़ तेतीस खुशी मनाई। सुरपति राजा इन्द, चरन प्रीती सेव कमाई। आत्म अतीती इक्क रखाई। पिछली भुल्ल लए बख्शाए। किरपा करे आप रघुराए। छोटे बाले अग्गे लाए। सोलां मग्घर दया कमाए। शब्द घोड़े लए चढ़ाए। एका वाग हथ्थ रखाए। तिन्नां लोकां जाग लगाना। गुरमुख साचे संत प्यारे लाल दुलारे, आप बिठाए सच चुबारे, किरपा करे आप भगवाना। सोहँ बद्धा हथ्थीं गाना। चरन धूढ़ मस्तक लाया, आत्म कराया सच इशनाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे होया मेहरबाना। तिन्न अस्सू दया कमाए। दिल्ली जाए चरन छुहाए। लाल किले हरि लिख्त लिखाए। सोहँ इक्क डंक वजाए। कलिजुग तेरा अन्त कराए। सुणे हरि पुकार सदा समरथ है। भव सागर देवे तार, सिर रक्खे दे कर हथ्थ है। अन्तिम पाए प्रभ साचा सार, देवे नाम साची वथ है। आप उठाए गुरमुखां भार, गुरमुख रक्खे खाली हथ्थ है। अचरज खेल करी करतार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द रक्खी तिक्खी धार, सृष्ट सबाई करे सथ्थ है। जन भगतां देवे चरन प्यार, शब्द उडार विच संसार, आत्म जोती साची वथ है। चढ़ी रहे सद खुमार, आपे मारे तन हँकार, सगल वसूरे जायण लथ्थ है। सोलां करे तन शृंगार, साची सेजा आप बहाए गुरमुख सुलक्खणी नार, अन्त रहाए शब्द साचे रथ है। मेल मिलाए वारो वार, कर विचार हरि गिरधार, हथ्थ आपणे रक्खे नत्थ है। शब्द घोड़े हो अस्वार, तिन्नां लोकां पावे सार, दहि दिश चरनां हेठ रिहा मथ है। परम पुरख एका धार, साची जोत करे उज्जयार, गुरमुखां मैल धोती आए चल्ल दरबार,

आप उठाए आत्म सोती, मुख चुआए अमृत साची धार, जोती जोत सरूप हरि, महिंमा जगत अकथ्थ है। अकथ्थ कथा कहाणी हरि बनवारया। जन भगतां देवे अमृत आत्म साची बाणी, सोमा फुट्टे अपर अपारया। साची रुत्ती आप सुहानी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। जन भगतां चुकाए जम की कानी, देवे शब्द उडारया। सच्चा देवे पीण खाणी, नाम वस्त अपारया। बेमुखां अन्तिम आई हानी, भुल्लया हरि गिरधारया। गुरमुख विरला करे पछाणी, साचा शब्द जिस विचारया। चौथे जुग आप विछाए लक्ख चुरासी ताणी, जीव जन्त सर्ब हंकारया। भेव खुल्हाए चुकाए खाणी बाणी, प्रगट जोत निहकलंक नर अवतारया। सोहँ शब्द बणाए सतिजुग राणी, प्रभ करे तन शृंगारया। धुरदरगाही आई बाणी, अन्तिम समां कलिजुग हरि विचारया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम अमृत आत्म भण्डारे देवे भर, चार वरन खुल्हाए एका दर, ऊँच नीच राउ रंक एका एक करे खेल जगत महानयां। गुरमुख सच द्वार, सदा अडोल है। एका मंगे चरन प्यार, आत्म सुंनी रिहा खोल्ह है। अमृत मंगे साची धार, मुख कँवल रिहा खोल्ह है। हरि देवे कर प्यार, जन भगतां वसे कोल है। काया करे ठंडी ठार, बजर कपाटी देवे खोल्ह है। दर घर साचे आपे पाए सार, साचे हट्ट भगत वणजारा हरि पूरा तोले तोल है। एका देवे नाम भण्डार, सोहँ नाम अनमोल है। कलिजुग जीव ना जाणे कोए गंवारा, जोत सरूपी रिहा बोल है। आदि अन्त हरि पसारा, साचा शब्द वजाए ढोल है। साचे संतां देवे नाम भण्डारा, विच मात रिहा खोल्ह है। आपे बणे फेर वणजारा, मंगण जाए रसना बोल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर नर हरि, जन भगतां सदा वसे कोल है। जन भगतां सदा बख्शिंदड़ा। डेरा लाए साचे घर, अन्ध अंध्यानी अन्धड़ा। आपे देवे साचा वर, भरमां ढाहे झूठी कंधड़ा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द हथौड़ा ल्या फड़, काया गढ़ गया चढ़, आपे तोड़े हँकारी जन्दरा। काया गढ़ चढ़ ललकारे। अन्दर गया वड़, जोत सरूपी नैण मुँधारे। पंजां चोरां लए फड़, शब्द मारे साची मारे। बेमुखां ना दिसे झूठे धड़, गुरमुखां सोहे काया महल मुनारे। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां देवे साचा नाम धना, आप मनाए मन मन्ना, शब्द सुणाए इक्क कन्नां, आप देवे साचा नाम भण्डारे। नाम भण्डारा वंडे हरि रघुराईआ। गुरमुखां आई वंडे, साची वंड आप कराईआ। लक्ख चुरासी होए रंडे, मदिरा मास मुख लगाईआ। आत्म होई सभ दी रंडे, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। करे खेल सर्ब वरभण्डे, राजे राणे हरि डन्ने, शब्द डण्डे हरि पंचम् जेठ रिहा उठाईआ। नंगी होई सभ दी कंडे, शब्द खण्डे रिहा वढाईआ। वेखे खेल हरि ब्रह्मण्डे, तिन्नां लोकां पए दुहाईआ। प्रभ भन्ने आत्म रंडे, साचे सिख मिले वड्डयाईआ। पुरी इन्द्र हरि आपे वंडे, बाल अञ्याणे होए सहाईआ। आपे होए हरि जी वंडे, सत्तां

दीपां तिन्नां लोकां वाह वाह वंड कराईआ। करे वंड सच्ची सरकारा। कलिजुग अन्तिम आई कंड, आया पासा हारा। कलिजुग अन्तिम किसे ना मिले कन्त प्यारा। चार कुन्ट पैंदी डण्ड, कोए ना जाणे शब्द अपारा। आत्म भरया हरि घमंड, गुरमुख विरला प्रभ साचे दी साची नारा। निहकलंक देवण आया दंड, जोत सरूपी लै अवतारा। आपे करे खण्ड खण्ड, शब्द खण्डा मारे दो धारा। चार कुन्ट चण्ड प्रचण्ड, निहकलंक बणे साचा लेख लिखारा। अचरज खेल मात वरताई, दोवें रक्खीआं हरि जी तिक्खीआं धारां। तिखी धार शब्द कटार है। प्रभ साचे सुणी सच पुकार है। आई दर करी पुकार है। कलिजुग अन्तिम आई तेरी वार है। प्रगटे जोत निहकलंक बली बलकार, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार है। चिट्टे अस्व हो अस्वार है। जन भगतां मिटाए आत्म शंक, देवे शब्द उडार है। इक्क थां बहाए राउ रंक, ऊँच नीच ना कोई विचार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, देवे वधाई जगत वड्याई दोए जोड़ करन निमस्कार है। संत प्यारा जगत जवान है। एका साचा सच्चा घर बाहरा, दीप जगाया जोत महान है। मानस जन्म मात संवारा, प्रभ करया चरन ध्यान है। काम क्रोध ममता मोह जगत धरो विच मात झुलाया। धर्म सच्चा निशान है। एका वेख्या सच द्वार है। पूरा गुर जिथ्थे निगहबान है। साचा मिल्या जगत भण्डारा, नाम दान जगत महान है। बणया आप हरि वरतारा, किरपा करी महान है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचा देवे शब्द निशान है। साचा शब्द निशान जगत प्रभ झुल्लणा। बेमुखां अन्तिम आउणी हान, कोई ना पाए मुल्लना। गुरमुख साचे करन पछाण, कलि पूरे तोल तुलना। चढ़े रहण शब्द बबाण, कलिजुग माया वेख ना रुल्लणा। एका मिल्या नाम खज़ान, पुरख अबिनाशी कदे ना भुल्लना। साचा देवे जीआ दान, भाग लगाए साची कुलना। चरन धूढ़ करे इशनान, चरन प्रीती घोल घुलणा। आपे तोड़े आत्म माण, गुरमुख साचे अन्तिम कल, विच मात दे ना रुलणा। चरन प्रीती जोड़े हरि भगवान, जोती जोत सरूप हरि, अमृत साचा सीर प्याए हउमे विच्चों पीड़ कढाए, बज़र कपाटी चीर वखाए, गुरमुख आत्म मूल ना डुल्लणा। जगत जुगत विच मात हरि करे कराए आप। साची मुक्त गुर चरन कर मारे तीनो ताप। अमृत प्याए साचा सीर इक्क जपाए साचा जाप। जन भगतां भण्डारे रिहा भर, सृष्ट सबाई जाए कांप। धुरदरगाही धरत मात देवे वर, किरपा कर हरि धरत मात तेरी आसा पूरत। सच वस्त तेरी झोली पाए, पल्ले दात साची बन्न्ही। कलिजुग बोली प्रभ आप व्याही, बेमुखां आत्म अन्तिम डन्नी। साची चोली तन छुहाई, शब्द डोरी नाल बन्न्ही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप जगाए बेमुखां आत्म रक्खे अन्न्ही। धरत मात हरि भाग लगाया। आत्म दित्ती मात दात, गुरमुख साचा गोद बहाया। आपे वेखे मार झात, चारे दिशा हरि रघुराया। आपे बैठा

रहे इकांत, शब्द सुनेहड़ा जगत चलाया। करे खेल हरि बहु भांत, साध संत किसे भेव ना पाया। ना कोई वखाणे पात जात, रंग रूप किसे दिस ना आया। इक्क निभाए प्रभ चरन नात, दूई द्वैती पड़दा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार आपणा बाणा साचा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। धरत मात तेरी गोदी लाल। अन्तिम कलि रक्ख संभाल। बेमुख भुलाए कर वल छल, गुरमुख देवे इक्क अनमुल्लड़ा लाल। कोए ना सके मार जल थल, फल रहण ना देवे किसे डाल। वेख वखाणे जल थल, सिंध सागर वेखे सर्ब संसार। ना लाए घड़ी पल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धाम रहाए सदा सदा अचल्ल। धरत मात जगत सुहागण। गुरमुख साचे संत जन, आत्म सद सद जागण। साचा मिले नाम धन, होए रहण सदा बैरागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज माया आप वरताई, आत्म हँकारी जगत कराई, मगर लगाई माया नागण। धरत मात प्रभ दए हुलारा। इक्क बणाए जगत निशानी वड महानी, साचा मन्दिर महल मुनारा। साढे तिन्न हथ्थ रक्खी कानी हरि भगवानी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। आदि जुगादी सद ब्रह्मादी शब्द अनादी, जुगा जुगन्तर बन्ने धारा। भेव ना जाणे हरि बोध अगाधी माधव माधी, आपे जाणे आपणी सारा। जोती जोत सरूप हरि, सदा अटल अचल रखाए सिँघ मनजीत तेरा सच्चा घर बाहरा। चार जुग चार द्वारी। करे कराए हरि निरँकारी। ढौंहदा आए वारो वारी। बणाउँदा रहे पैज संवारी। साचा शब्द सुहागी कन्न सुणाउँदा रहे, जन भगत बणाए वणज वपारी। एका साचा रंग रंगाउँदा रहे, तिन्नां लोकां खेल अपारी। गुरमुख सोए बाहों पकड़ प्रभ आप जगाउँदा रहे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे देवे आप सच्ची सरदारी। चार जुग चार चुफेरे। साढे तिन्न हथ्थ रक्खे प्रभ जी घेरे। विच टिकाए साची वथे, अन्तिम कलिजुग मुक्कण झेड़े। बेमुखां पाए हरि जी नत्थे, आप उजाड़े नगर खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सद बन्न बेड़े। चार वेद अछल अछेदा। चार कुन्ट चार चुफेरे, एका हरि सदा अभेदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात राह चलाए चार वरन चलाए सेधा। घर साचे वज्जी वधाई, मेल मिलावा पुरख अपार है। घर साचे वज्जी वधाई, जन भगतां देवे ठंडी छाँ हरि निरँकार है। घर साचे वज्जी वधाई, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जन रिहा पैज संवार है। घर साचे वज्जी वधाई, हरि कन्त सुहागी पाया। घर साचे वज्जी वधाई, मात पताली साची बणता, पुरख अबिनाशी रसना गाया। घर साचे वज्जी वधाई, मिले वड्याई विच जीव जन्त, हरि हिरदे सच वसाया। घर साचे वज्जी वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा गुर संगत आप सुणाया। सच सुनेहड़ा जगत उपदेशा। प्रभ अबिनाशी मात देवे जोत सरूपी धारे भेसा। गुरमुख

४८०
०४

विरला प्रभ दर लेवे, भुल्ले रहण नर नरेशा। जोती जोत सरूप हरि, आपे करे कराए विच मात साचा वेसा। घर साचे वज्जी वधाई, शब्द घनघोर है। घर साचे वज्जी वधाई, नस्स जायण पंजे चोर है। घर साचे वज्जी वधाई, जन भगतां बन्ने शब्द सरूपी डोर है। घर साचे वज्जी वधाई, आप माल चराए धन्ने, जन भगत भाग मथोर है। आपे पीए छाछ छन्ने, एका नर हरि दूसर दिसे ना कोई होर है। काया चोली तन मन भिन्ने, वेखे काया अन्ध घोर है। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त सद वसे भगतां कोल है। जन भगत हरि नाम वखाणे। आप चलाए आपणे भाणे। जन भगत हरि साचा जाणे। देवे दरस आप भगवाने। जन भगत सुख साचा माणे। प्रभ उज्जल करे मुख विच जहाने। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जन भगतां खड़ा रहे सराहणे। साचा मन्दिर आप बणाया। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर हरि जी आप रखाया। शब्द सरूपी मारे जन्दर, पीर फ़कीर औलीए गौंस कुतब, आपणे हथ्थ विच रखाया। चारों कुन्ट कोई ना मारे धौंस, शब्द संगल हरि आप गाया। साची जोत ना कोई तोले तोल तुलाए ना रती मासा औंस, जन भगतां आत्म जोती आप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिउँ होए रुशनाए सहँस। साचा मन्दिर छोटी ताकी। मुकावण आया जगत बाकी। गुरमुखां आप समझावण आया, वेले अन्तिम हरि पड़दा ढाकी। हरि आपणी गोद उठावण आया, अन्तिम मारी मात झाकी। छोटे बाले तेरी बणत बणावण आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा जाम प्याए, बण के मात साचा साकी। साचा मन्दिर आप सुहाया। शब्द जन्दर हरि लगाया। चित्रगुप्त तेरा साचा मन्दिर, हरि साची बणत बणाया। दिसे जगत अन्धेरी कन्दर, दीपक जोती विच टिकाया। दर दर भौंदे फिरन जीव बन्दर, पुरख अबिनाशी किसे हथ्थ ना आया। पकड़ उतारे उचे टिल्ले गोरख मच्छन्दर, जटा जूट धार जोग सन्यास होए उदास, मन वैराग सर्ब कराया। जन भगत जंज़ाले जायण भाग, एका सुण साचा राग, पकड़े प्रभ साचा वाग, साचे घर लए बहाया। आपे धोए पिछले दाग़, हँस बणाए जीव काग, गुर चरन जन जाए लाग, मस्तक धूढ़ी चरन छुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली हाढ़ नींह रखाया, सतारां हाढ़ पूर कराए, वीह सौ ग्यारां बिक्रमी नींह रखाया। रक्खी नींह हरि अपारी। कलिजुग तेरी ढहिंदी जाए जगत उसारी। सृष्ट सबाई इक्क दूजे दे नाल खहन्दी जाए, डूंघे वहिण वहन्दी जाए वारो वारी। लाड़ी मौत घर घर बहिंदी जाए, भाणा हरि का सहन्दी जाए, विरले जीव कलि संसारी। शब्द सुनेहड़ा कहन्दी जाए, हथ्थीं लाउँदी मैहन्दी जाए, निहकलंक प्रगटे नर निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, साढे तिन्न हथ्थ उचे मन्दिर करे तेरी उसारी। रक्खी नींह चार चुफेरा। सृष्ट सबांई आपे देवे एका गेड़ा। चार कुन्ट प्रभ अबिनाशी आपे पाए घर घर

झेड़ा। कलिजुग तेरा अन्त कराए, कोए ना दिसे नगर खेड़ा। गुरमुख विरला आप बचाए, अन्तिम वेले बन्ने बेड़ा। एका साचा राह दिसाए, सोहँ साचा जाप जपाए, आप दिसाए सद नेरन नेरा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, छोटे मन्दिर कर उसारी, धरत मात तेरी सुण पुकारी, आप कराए तेरा खुल्ला वेहड़ा। खुल्ला वेहड़ा जगत वैराना। कलिजुग मुक्के झेड़ा, जगे जोत भगवाना। सच गेड़ हरि आपे गेड़ा, करे खेल वाली दो जहानां। जन भगतां बन्ने आत्म बेड़ा, देवे नाम निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, नर विष्णूं भगवाना। तन मन्दिर हरि उसारे। अचरज खेल कलिजुग अन्तिम करे आप गिरधारे। भगत भगवन्ती मेल साचा, दोए सोहण इक्क दुआरे। साचा चढ़े रंग बसंती, केसर टिक्का चन्दन चौंकी अमृत धारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सृष्ट सबाई आप वहाए अन्तिम कलि वहन्दी धारे। भगतन सेवा हरि इक्क कराए। जगत देवे साचा मेवा, सोहँ फल लगाए। प्रगट होए हरि देवी देवा, सुरपति राजा इन्द सहाए। जुगा जुगन्तर कीती सेवा, कलिजुग अन्तिम लेखे लाए। पुरख अबिनाशी लेखे लाए, लहणा देणा सर्ब चुकाए। रसना गाया हरि साची जिह्वा, दर घर साचे माण रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, साचा झण्डा सत्त रंग आपणी हथ्थीं विच मात झुलाए। आप झुलाए जगत निशाना। साची रंगण नाम रंगाना। सति सतिवादी पुरख अनादी, कलिजुग दाग़ सर्ब मिटाना। आत्म जोती शब्द बांधी, दीपक जोती जगे महाना। गुरमुख विरले मात लाधी, सदा ब्रह्मादी हरि विस्मादी, आप आपणे विच समाना। शब्द चलाए बोध अगाधी, सतिजुग साचा मात उपजाना। गुरमुख साचे रसन अराधी, एका हरि श्री भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, सोहँ देवे साचा दाना। देवे दान गुण निध दाता। मारे शब्द बाण, गुणी गुणवन्त सर्ब ज्ञाता। जन भगतां छुटे पीण खाण विच जहान, साची जोती मेल मिलाता। साचा देवे शब्द बबाण, अन्त उडान साचे धाम आप बहाता। साचा नाउँ रसना गान, पुरख अबिनाशी साचा पाण, साची गोदी आप उठाए आपे बण पिता माता। मातलोक ना आए हान, झुलदा रहे सदा निशान, उत्तम होई साची जाता। जगत चुक्की जम्म की कान, लगा फल काया डाहण, दरगहि साची मिली साची दाता। किरपा करी आप भगवान, जोती जोत सरूप हरि, देवे माण ताण तिन्नां लोकां दीपां सत्तां। गुर संगत तन साचा रंगणा। इक्क द्वार पुरख अबिनाशी साचा मंगणा। सर्ब घट घट रक्खे वास, कटे भुक्ख नंगणा। लाहे सर्ब उदासी, मानस जन्म ना होए भंगणा। किसे हथ्थ ना आवे पंडत काशी, ना फसे विच किसे फंदना। बेमुख जीव करन हासी, आत्म होई ना परमानंदना। गुरमुख साचे सद बलि बलि जासी, आपे बन्ने शब्द डोरी साचे तन्दना। मिलाए मेल हरि शाहो शाबाशी,

दोए जोड़ चरन कँवल गुरमुख साचा करे बन्दना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर प्याए, इक्क उपजाए साचा सुख परमानंदना। परमानंद परम सुख पाण। एका राखो प्रभ चरन ध्यान। साचा सखी सुहेला सुख देवे निधान। साची रीती जगत भाखो, देवे जीआ दान। मिले मेल अलक्खणा अलाखो, जोती जगे हरि महान। अन्तिम वेले पति आपणी राखो, पड़दे कज्जे विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द सुणाए कान। साचा शब्द भगत वणजारा। दर घर साचे बहाए, करे चरन प्यारा। हउमे ममता तृष्ना रोग गंवाए, दूई द्वैती कढ्ढे बाहरा। आत्म चिन्ता सोग मिटाए शब्द लगाए साचा नाअरा। लोकमात जगत विजोग गंवाए, इक्क वखाए साचा घर बाहरा। अन्तिम सन्झ सवेर इक्क कराए, नर हरि हरी हरि निरँकारा। आत्म रस साचा भोग कराए, अमृत देवे ठंडी धारा। हउमे विच्चों रोग गंवाए, मारे शब्द कटारा। दुरमति मैल गंवाए, नाम साबण लाए अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, चार वरना इक्क खुल्हाया सच्चा दुआरा। सच दुआरा हरि एका खोल्हे। जोत सरूपी शब्द साचा बोले। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, पूरा तोल ना कोई तोले। करे खेल हरि सति सरूपी, वसे काया सच्चे डोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आपे देवे शब्द झकोले।

४८३
०४

❋ १६ हाढ़ २०११ बिक्रमी डेरा जैमल सिँघ गुरचरन सिँघ सतिसंग घर ब्यास ❋

सुणया सच दरबार, मन बैरागया। एका वेखे सच्चा घर बाहर, गुर पूरा जिथ्थे जागया। वेख वखाणे सर्ब संसार, कोए ना धोवे काया दाग़या। एका गुर पूरा कर्म रिहा विचार, जन आए चरनी लागया। आत्म देवे शब्द उडार, मोहि होए वड वड भागया। हउमे ममता देवे मार, शब्द सुणावे साचा रागया। पंजां चोरां कढ्ढे बाहर, आपणे हथ्थ पकड़े काया वागया। हरि होए ना कदे ख्वार, दर साचे आया भागया। मिले नाम एका अपर अपार, होए नार कन्त सुहागया। काया होए ठंडी ठार, ना डस्से कलिजुग माया नागया। अमृत देवे साची धार, जगत बिरहों विछोड़ा जाए भागया। दोए जोड़ सच्ची निमस्कार तेरे सच दरबार, पहली वार हरि निरँकार इक्क सुणाए अनहद धुन साचा रागया। आए दर दरबार सच हज़ूर है। गुर आसा मनसा पूर, भरम भुलेखा करना दूर है। आपणी किरपा देणी कर, एका देवे साचा नूर सर्बकला भरपूर है। लोकमात वड दाता, गुर पूरा सदा रहे हाज़र हज़ूर है। गुर पूरा होए मेहरवान, दर मंगण आए दूरन दूर है। गुर पूरे तेरी नाम वधाई। दुरमति मैल काया जाए, मस्तक जोती साचा मेल मिलाई। अचरज़ खेल साचे धाम, नाद धुन राग

सुणाई। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, गुरमुख साचे संत जनां रिहा मात जगाई। गुर पूरा मेहरवान। एका देवे आत्म सुख ब्रह्म ज्ञान। काया मैल धोए, एका बख्शे चरन ध्यान। साचा दर ना कोई सुझे, एका मंगे निर निरबान। अट्ठे पहर होए निगहबान। निगहबान हरि तेरे दर दरबारे। मंगण आए बण भिखारे। सच वस्त हरि झोली पाए, दूई द्वैती पड़दे लाहे, रंगण चढ़ाए नाम अपारे। साची भिच्छया घर साचा पाए, काया दुखड़े उतरे भारे। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साचे देह भाण्डे काचे, गुर पूरा सदा पैज संवारे। एका नाम दर मंगणा। काया चोला अन्तिम अन्त, दर घर साचे रंगणा। एका मंगणी साची मंग, घर साचे मूल ना संगणा। शब्द घोड़े कसे तंगना। मानस जन्म ना होए भंगणा। एह तोड़े काया काची हँगता, होए सहाई सदा अंग संगणा। पुरख अबिनाशी साचा मेल मिलाईं, रक्खीं हथ्थ सिर मेरे उत्ते कदे ना होए नंगना। नंगा होए ना मेरा सिर मेल मिलावीं साचे हरि, साचे घर आप वसावीं दया कमाईं, चरन लगाईं। सदा सिर रहे हथ्थ, आत्म जोती आप जगाईं। अन्ध अन्धेर दईं मिटाईं। निराहार हारनिर अन्तिम कलिजुग दया कमाईं। फड़ के बाहों राहे पाईं। प्रगट हो दरस दिखाईं। हउमे ममता मैल गंवाईं। निहकलंक नरायण, नर करे इक्क रुशनाई। एक नाम फ़कीरी दान। मंगण आया दर दरबान। गुर पूरा होए मेहरवान। आत्म मारे शब्द बाण। पंजां तत्तां चोरां पंजां जूठे झूठे बेईमान। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, अमृत फल खवाए, गुर पूरा सदा रखवाल है। आपे दे समझावे मतां, आत्म सर सरोवर सदा इशनान करान है। किसे नाड़ी दिसे ना झूठी रत्ता, आपे जाणे मित गति, गति मितक सद मेहरवान है। कलिजुग लोकमात लग्गे तत्ता, किरपा करे श्री भगवान है। जोती जोत सरूप हरि, सतिगुर साचे साचा देणा एका सच्चा नाम दान है। नाम दान देवे भगवाना। किरपा करे वाली दो जहाना। जो जन आए चल दुआरे, खाली कोए ना जाणा। अन्तिम अन्त अमृत देवे साची धारी, अमृतसर करे इशनाना। जोती जोत सरूप हरि, गुर मेल मिलाए चरन लगाए, अन्तिम कर कर बहु बिधनाना मेल मिलाना। गुर बनवारी मंगण आए चल्ल द्वारी। काया चोली काली सूसी, मैल ना उतरे भारी। कोई ना पढ़ी जाए पोथी, इक्को दे शब्द उडारी। एह काया होई कौड़ी थोथी, विच वड़या काम क्रोध हँकारी। दुरमति मैल घर साचे धोती, एका मारी साची हँस उडारी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर दे वर, आए दर वखा घर, जिथ्थे वसे साचा हरि, तिन्नां लोआं सदा बाहरी। आत्म खोल्ह दर हरि द्वार है। किरपा कर गिरधार, दे दरस अपर अपार है। आप चुकाए जम का डर, लक्ख चुरासी गेड़ निवार है। भाणा तेरा लए ज़र, शब्द घोड़े कर अस्वार है। घर साचे नहाउणा पए साचे सर, दुरमति मैल लए उतार है। चरन लाग जाईए तर, मानस जन्म ना आउणा दूजी वार है। साची वस्त

आत्म झोली लए भर, गुर दर भरे सदा भण्डार है। एको देवे साचा वर, रहे आत्म सदा खुमार है। एका एक लैणा कर, दूई द्वैती भेव निवार है। एका दिसे साचा घर मेट मिटाए शरअ शरायती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एक बख्शे सरन चरन चरन सरन सदा प्यार है। अचरज खेल प्रभ साचे कीती। गुरमुख मानस देही गुरमति प्रभ परखे एका नीती। धुरदरगाही आया सच स्नेही, सद काया रहे अतीती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगण आए तेरे दर, रहे काया सीतल सीती। काया सीतल सीत है। मानस जन्म जाईए जीत, अचरज चले जगत रीत है। हरि किसे ना मिले मन्दिर गुरदुआरे विच मसीत है। अचरज तेरी रीत है। जोती जोत सरूप हरि, एका दे साची सरना, जगत चुकाए मरना डरना, आप खुल्हाए हरना फरना, सदा गाईए सुहागी गीत है। सुहागी गीत सद सद गावणा। पुरख अबिनाशी साचा पावणा। सोहँ साचा जापा मारे तीनो तापा, प्रगट करे गुर पूरा आप सोया हरि जिस जगावणा। लक्ख चुरासी रही कांप, कलिजुग कर्म वध्या पाप, गुरमुख साचे सतिगुर पूरे साची जोत जगावणा। आपे बणे पिता माई आपे बाप, फड़ फड़ बाहों गोद उठावणा। एका रसनी साचा जाप, दूजे दर ना सीस झुकावणा। जोती जोत सरूप हरि, एका फड़या तेरा लड़, लग्गी प्रीती तोड़ निभावणा। लग्गी प्रीती निभे तोड़े। गुर पूरा मुख कदे ना मोड़े। चढ़या शब्द घोड़े। अट्ठे पहर गुरमुख तेरे दर दुआरे, आउँदा जांदा रहे सदा सद हरि वागां मोड़े। सति संतोखी हल साचा जोड़े। एका अमृत फल लगाए गुरमुख साचा खाए, बेमुखां दिन रहि गए थोड़े। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगण आए तेरे दर, कलिजुग वेला अन्तिम आया, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया, कोए ना जाणे पिता माया, तेरा दित्ता सर्ब भुलाया, दासन दास अन्तिम वार दर तेरे बौहड़े। देवणहार दातार गुर गोपाल है। जन मंगण आए भिखार है। देवे पैज संवार है। देवे शब्द तन शृंगार, गल पहनाए सोहणा हार, साचा बख्शे चरन ध्यान है। लोकमात देवे तार है। एका दस्से शब्द धार, वसे दस्म दुआर है। गुरमुख विरला जाणे विच संसार, लक्ख चुरासी मानस जन्म जाए हार है। प्रभ अबिनाशी जन भगतां आप पछाणे, दरगहि साची देवे माणे, आत्म देवे प्यार है। आप बणाए सुघड़ स्याणे। गुरमुख साचे बाल अञ्याणे। गले लगाए गुण निधाने। आत्म मारे साचा बाणे। पंजां दूतां पए झाड़, विच्चों कढ्ढे काम क्रोध हँकार लोभ मोह माण महाने। किसे हथ्थ ना आए राजे राणे। आत्म अन्धे झूठे धन्दे, वड वड सुघड़ स्याणे। मदिरा मासी पापी गन्दे, मिले इक्क भगवाने। जोती जोत सरूप हरि, एका किरपा देणी कर, देणा शब्द इक्क निधाने। देणा शब्द निधान सर्ब गुणवन्तया। पाया झोली सच्चा दान, मिले हरि भगवन्तया। सदा सद हरि मेहरबान, आदिन अन्तया। तेरा दित्ता जीव खाण, गुर

ਪੂਰੇ

पूरे हाज़र हज़ूरे सच सच्चे कन्तया। घर साचे देवे माण, सच्चा मारीं शब्द बाण, आत्म ब्रह्म ज्ञान, तुट्टे जगत झूठा माण, करे दास बेनन्तीआ। प्रगट हो नर हरि श्री भगवान, दया अधारी वड संसारी, जोत निरँकारी महिंमा अपारी, चरन बलिहारी, जीवां जन्तां विच रहन्तया। जीव जन्त सद हरि वसेरा। कलिजुग तेरा अन्त, चारों कुन्ट होया अन्धेरा। गुरमुख विरला पाए संत, गुर पूरा आप जगाए लोकमात पाए फेरा। जन भगतां साची बणत आप बणाए, आत्म अन्ध अंध्यार मिटाए, महिंमा बड़ी अगणत। जोती जोत सरूप हरि, किसे जणाए गुरमुख साचे संत। लक्ख चुरासी तेरा गेड़ा आप चुकांयदा। जो जन मंगण आए दर, झूठी छेड़ जगत छिड़ांयदा। आत्म रक्खे खुल्ला वेहड़ा, साची सेज विछांयदा। दोहां धिरां दा करे निबेड़ा, पिर नारी आप अखवांयदा। आप वसाए काया नगर खेड़ा, नार सुहागण गुरमुख साचे साचा कन्त मिलांयदा। बेमुख जीव जगत दुहागण, कोए सार ना पांयदा। गुरमुखां सुणाए साचा रागण, साची धुन उपजांयदा। अन्तिम कलि सो जन जागण, जिस पूरा गुर जगांयदा। मिलावे मेल लिख्या धुर, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। प्रभ दर्शन को लोचन सुर, हथ्थ किसे ना आंयदा। गुरमुख साचे आप चढ़ाए शब्द घोड़, धुरदरगाही वागां मोड़, सच धाम बहांयदा। अन्तिम वेले आए दौड़, गुरमुखां गुर साचे जाए बौहड़, अन्तिम गोद उठांयदा। बेमुख जीव भन्ने रीठे कौड़, शब्द हथौड़ा सिर लगांयदा। जन भगतां एका लाए शब्द पौड़, दरगहि साची साचे धाम वसांयदा। आपे परखे मिट्ठे कौड़, गुरमुख साचे संत जनां, किरपा कर साचा हरि, अन्तिम जोती मेल मिलांयदा।

❇ १६ हाढ़ २०११ बिक्रमी चरन सिँघ दे नवित्त तरन तारन ज़िला अमृतसर ❇

हरि संत धाम न्यारा। हरि संत घर इक्क आपारा। हरि संत हरिजन टेक, शब्द अधारा। हरि संत बुध बबेक, आत्म जोत उज्जयारा। हरि संत सद नेत्र लए पेख, निरगुण रूप अगम्म अपारा। निरगुण रूप जन संत लोड़े। दूसर नाल ना संग जोड़े। एका घाले साची घाल, जगत जंजाल तोड़े। आत्म वेखे इक्क अनमुल्लड़ा लाल, काया झूठे डोले। गुरमुख विरला लए भाल, जोत सरूप दर बैठे कोले। सच प्रीती अन्तिम निभे नाल, भगत जन कदे ना डोले। शब्द सरूपी इक्को ताल, इक्क दूजे दे वसे कोले। हरि संत सदा सदा प्रितपाल, गुरमुख आत्म सदा बोले। फल लगाए इक्क काया डाल, धर्म कंडे साचे तोले। चले जगत अवल्लड़ी चाल, मनमुखां रक्खे पड़दे ओहले। साचे संत तोड़ जम काल, साचा रंग चढ़ाए चोले। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म अन्दर साचे मन्दिर डूंघी कन्दर सद सद हस्स हस्स

बोले। भगत भगवान इक्क निशाना। मिल्या जीआ इक्को दाना। एका नाम एका काम, एका सच्चा शब्द बबाणा। एका एक प्याए साचा जाम, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाना। जोत सरूपी घनईआ शाम, दुष्ट सँघारे जिउँ रावण रामा। जन भगतां सुक्का हरया करे काया चामा। जोत जगाए हरि महाना। जुगो जुग जन भगतां साचे संतां, जोती जोत सरूप हरि, प्रगट जोत नाम रखाए विच जहाना। भगतां नाम जगत वड्याई। साचा राह सृष्ट सबाई आप वखाई। इक्क वसे हरि हर थांउँ, आत्म खोजो भाई। दूसर कोई दिसे ना, निरगुण रूप जोत रघुराई। जोती जोत सरूप हरि, एका एक वेस अनेक, जन भगत टेक पूरन बूझ बुझाई। तन जन साचा मन्दिर है। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी वसे अन्दरे अन्दर है। इक्को शाह वडा भूपन भूपी, डेरा लाए डूंघी कन्दर है। निरगुण जोत रूप सति सरूपी, बेमुख लभ्भे बाहर जूठे झूठे मन्दिर है। ना कोई रंग ना कोई रूपी, जोती जोत सरूप हरि, उचे टिल्ले फिर फिर थक्के गोरख मच्छन्दर है। साचा सज्जण सुहेल साचा मीत है। जन भगतां कराए मेल, पुरख अतीत है। आत्म जोती आप जगाए बिन बाडी बिन तेल है। काया रक्खे ठंडी सीत है। अचरज किया पारब्रह्म कलि खेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां आदि अन्त जुगा जुगन्त परखे साची नीत है।

४८७ ०४

❋ २० हाढ़ २०११ बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ❋

पवण जोत जोत पवण जगत मसाणा। शब्द गोत गोत शब्द, वरन अवरन हरि आप चलाना। साचा हल हरि रिहा जोत, तिन्नां लोकां वड किरसाणा। दुरमति मैल रिहा धोत, आत्म उपजे नाम निधाना। कलिजुग जीव रिहा सोत, विसारया नर हरि श्री भगवाना। गुरमुखां खोल्ले बन्द सोत, जोत जगाए तन महाना। मूर्ख मुग्ध अञ्याणे रहे रोत, परम पुरख ना मात पछाणा। सृष्ट सबाई एका दिसे चरन प्रीती साची गोत, भरम भुलेखे दूर कराना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर साचा हल आप चलाना। अमृत पाए साचा जल, धरत काया सिंच वखांयदा। नाम लगाए साचा फल मनमुखां हथ्थ ना आंयदा। आप रखाए निहचल धाम अटल्ल, गुरमुखां चोग चुगांयदा। हरी करे काया खल्ल, जोत नूर इक्क वसांयदा। आत्म सेजा बैठा मल्ल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ रोज़ी रिज़क आप पुचांयदा। ना वेखे अज्ज कि कल, अट्ठे पहर संग समांयदा। सद वसे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कन्दर हरि आप रहांयदा। लक्ख चुरासी जाए दल, एका गेड़ा कलिजुग दवांयदा। गुरमुख साचा रहे अटल्ल, चरन प्रीती सेव कमांयदा। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, पहली हाढ़ी गुरमुख साचे संत जनां लोकमात साची नींह रखांयदा। गुरमुख सदा अटल्ल, शब्द जैकार है। लोकमात दर जाए मल्ल, एका टेक पुरख करतार है। चरन प्रीती जाए बलि बलि, मानस जन्म रिहा संवार है। बेमुख भुलाए कर कर वल छल, मन मुग्ध ना पए सार है। जन भगतां दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, दर घर आए गिरवर गिरधार है। आप मिटाए बिरहों विछोड़ा आत्म सल, काया करे ठंडी ठार है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। इक्क बणाए महल्ल अटारी, गुरमुखां पैज रिहा संवार है। गुरमुख तेरा नाम निधान, एका जाणे हरि भगवान, जीव जन्त साध संत ना करे कोई पछाण है। कलिजुग तेरा वेला अन्त, प्रभ माया पड़दा पाए बेअन्त, धन धन वणजारा गुरसिख प्यारा, जिस मिल्या कन्त भगवान है। बेमुख तन रहे अफारा अट्ठे पहर है। जन भगतां देवे नाम अधारा, झुल्लदा रहे जगत निशान है। आपे बणे हरि सहारा, दरगहि साची देवे माण है। आत्म जोती नूर अपारा, जगे जोत गुणवन्त गुण निधान है। शब्द देवे साची धारा, आत्म सर सच इशनान पंजां चोरां मारे मार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत आप चढ़ाए शब्द सच्चे बबाण है। शब्द बबाण सच उडारी। आप लवाए श्री भगवान, मातलोक कर खेल न्यारी। साचा देवे नाम दान, जगत पित कर साचा हित्त, नित नवित्त भेखा भेखी भेख धारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली हाढ़ी। गुरसिख फुलवाड़ी करे शब्द वाड़ी कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। पहली हाढ़ जगत प्रकाश। हरि दासन दास निज घर वास। आपे वसे चले विच स्वास स्वास। सद वसे आस पास। सच सनेहड़ा एका घल्ले, सच मण्डल दी साची रास। धुर दरगाहों आया थल्ले, गुरसिख आत्म करे निवास। एका वसे धाम इकल्ले सच महल्ले, आदि अन्त ना जाए विनास। गुरसिख साचा सदा जग फले फुल्ले, पुरख अबिनाशी जिस होया दास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती एका नूरा, सर्बकला भरपूरा, मात पताल अकाश। दूजा दोए करे अकार। निरगुण सरगुण खेल अपार। निरगुण निराहार सरगुण शब्द अधार। देवे वस्त इक्क अटल्ल, लोकमात अपार। साची जोती आप टिकाए सच महल्ल, काया कर अकार। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, लक्ख चुरासी करनी ख़बरदार। अन्त कराए जल थल, बेमुख वहाए वहन्दी धार। कलिजुग तेरा अन्तिम कल, आत्म हँकारी जगत विकारी होवण छार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म भरे शब्द भण्डार। तीजा तिन्नां लोकां धारा। होया हरि शब्द अस्वारा। रूप रंग किसे दिस ना आए, करे खेल अपर अपारा। गुरमुखां आत्म जगत तृष्ना विस लाहे, अमृत देवे साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोआं पावे सारा। चौथे चार दर

दरवाजे। आपे जाणे ग़रीब निवाजे। जिथ्थे बैठ गुर पैगम्बर पीर जन भगतां साजन साजे। पंचम् देस इक्क आया हरि हिस्से, होर किसे ना दिसे, शब्द सरूपी मारे अवाजे। जोती जोत सरूप हरि, एका एक आपणा साज आपे साजे। पंचम् घर पंच दुआरा। पवण शब्द एका धारा। इक्क अकाल ओथे वसे, सदा सदा सद खिड़ खिड़ हस्से, लोकमात जोती घल्ले, आप वसे सच महल्ले, आवे जावे घड़ी घड़ी पले पले, कदे उप्पर कदे थल्ले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अपर अपारा। संत जन की जाण पछाणण। एका रक्खण गुर चरन ध्यानण। जोत ना जानण हरि भगवानण। जेहड़ा देवे जगत गुरूआं चानण। सृष्ट सबाई सदा सदा हरि बन्ने बानण। जात पात ना कोई वखाए, ना कोई वेखे गौड़ ब्राह्मण। जन भगतां हरि आप पछाणे, धुरदरगाही सच्चा जामन। भगत विकारा आपे मारे, नेड़ ना आए कोई कामनी कामन। गुरमुख साचे तेरी आत्म ना कदे हँकारे, फड़या गुर पूरे दा साचा दामन। वज्जे इक्क शब्द खण्डा दो धारे, होए आर पारे, विच संसारे पहली वारे, गुरमुख विरले जानण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जोत जगाई, जन भगतां दए वधाई, घर साचे अमृत आत्म सर कराए इशनानण। पंचम् पुरख सुजाना। साचा दस्से इक्क ब्रह्म, जात पात ना कोए वखाना। हरि चरन प्रीती साचा धर्म, एका चरन ध्याना। आत्म अतीती सच कर्म, हरि हिरदे सद वसाणा। मानस देही
४८६ सच जन्म, मिले मेल हरि भगवाना। जगत स्नेही मिटे भरम, दरस पाए पद निरबाणा। दूई द्वैती मिटे वरम, शब्द धीर ४८६
०४ इक्क रखाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां एका एक दिसाए साचा घर सच टिकाणा। ०४
छेवें छप्पर छन्न ना कोए। जिथ्थे आप हरि जी सोए। एका जोत हरि बुलोए। करे रुशनाए तिन्नां लोए। गुरमुख उठाए मात सोए। अवर ना जाणे जीव कोए। पुरख अबिनाशी सच भतारा विच संसारा, कन्त सुहागी वड वडभागी, गुरसिख नार साची होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे धोए काया दाग़ी, साचा शब्द सुणाए साचा रागी, हँस बणाए कागी चरन प्रीती साची लागी, ना अन्त विछोड़ा होए। सतवें सति पुरख कल धारा। जोत निरँजण अलख अगम्म, सर्ब घटां पसारा। आप उपजाए शिव शंकर ब्रह्मा विष्न देवे जोत अकारा। लोकमात ना आए हथ्थ बिन पूर्ब कर्मां, पहले बणे आप लिखारा। सुफ़ल कराए मानस जन्मा, जिस जन देवे दरस दिखाए, दर घर आए हरि गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त, एका सेजा दोवे सुत्ते रहण, इक्क्वे बहिण हरि साचा कन्त भतारा। गुरमुख साची नारा। अठ्ठ तत्त तत्त विचारे। काया कोट प्रभ उसारे। विच्चों कढ्ढण वाला खोट, नौ दर सुत्ता रहे हरि करतारे। लगाउँदा रहे शब्द चोट, अठ्ठे पहर आत्म दर सच्चे दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आत्म वसे ना होए कदे बाहरे। दसवें दिशा जिस वखानी। गुरमुख पढ़े मात ना बाणी। एका मिले जोत भगवानी। मिटे दूई जगत निशानी। एका वज्जे शब्द कानी। मिल्या हरि सच्चा दिल जानी। लोकमात आवण ना देवे हानी। गुर पीर साध संत औलीए गौंस पीर फ़कीर दस्तगीर अन्तिम होए खाली। गुरमुख साचे तेरी जोत इक्क गोत अटल्ल रहि जाणी। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साचा मेल मिलाए, जोत नर हरि भगवानी। दसवीं दिशा सच्चा तराना। ना कोई शब्द राग ना गाना। एका जोत जगे भगवाना। झुले सचा इक्क निशाना। जोत सरूपी आप आपे वड प्रताप डगमगाना। आपे देवे गुरूआं जाप, मातलोक जन आए जपाना। पिच्छे रक्खे वड प्रताप माई बाप, सारयां देवे इक्क ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आपणे घर, एका भगत देवे जगत नाम धुर निशाना। भगत जनां दा उच्च टिकाणा। आपे वसे हरि भगवाना। दोए जहानी देवे माणा। सच झुलाए इक्क निशाना। लोकमात हरि आए मंगणदाना। चरन प्रीती श्री भगवाना। गुरमुखां सृष्ट सबाई जीती, एका रक्खी काया अतीती, मिल्या पुरख सुजाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां हथ्थीं बन्नॄण आया गाना। शब्द गाना हरि साची डोरी। आपणे संग प्रभ जाए तोरी। कोई ना जाणे आत्म घोरी। गुर पूरे तों करन चोरी। मानस देही जीव ढोरी। पूरा हरि ना पाया जाए, ना चढ़ाए शब्द घोड़ी। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त आप बणाए बणदी आए भगत भगवन्त एका जोड़ी। हरि एका इक्क अकार है। दूजी जोत वस्त अपार है। तीजे पवण रहे अस्वार है। चौथे शब्द साची धार है। पंजवें सच्चा सिर सरदार है। छेवें शास्त्र विद्या वसे बाहर है। सतवें सतिवादी पुरख अपार है। अठवें अठां तत्तां दए उधार है। नौवें नौ दर दे समझावे मतां, भाणा ना जाणे जीव गंवार है। दसवें घर वखाए दया कमाए, नौ खण्डां तिन्नां लोआं एका एक साची धार है। एका बैठा कमलापाता, परखे वेखे लक्ख चुरासी विच मात सुहागण दुहागण नार है। साचे मन्दिर डेरा लाए, ना कोई दिसे उप्पर धवल छता, एका महल्ल अपार है। जन भगतां निभाए चरन नाता, मानस जन्म दए सुधार है। साचा शब्द देवे जगत साची दाता, भरया रहे सद भण्डार है। बैठा रहे इक्क इकांता, सृष्ट सबाई पाउँदा रहे सार है। ना कोई वेखे जातां पातां, सर्ब जीआं दा एका हरि निरँकार है। जन भगतां अन्तिम पुच्छे वातां, जोत सरूपी जामा धार है। गुरमुख साचे आप उठाए जिउँ बालक माता, अमृत सीर प्याए कर प्यार है। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि भगवन्त पाउँदा रहे सार है। दस्म दर सच दुआरा। साचा घर वसे निरँकारा। अमृत खोल्ॄ साचा सर, चलदी रहे नाम फुहारा। गुरमुख काया आत्म करे ठंडी ठारा। बेमुखां दर आए डर, पाप हँकारी तन चढ़या रहे बुख़ारा। झूठे भाण्डे

प्रभ अन्तिम वेले देवे भन्न, ना होवे कोई सहारा। बेमुख जीव आत्म अन्ध ना जानण रंग करतारा। पंजे चोर अट्ठे पहर लाउँदे रहण संन्ह, ख़ाली हथ्थ जाए कलिजुग जीव जगत वणजारा। गुरमुखां प्रभ बेड़ा बन्न, साची देवे नाम दात जगत बणे वरतारा। एका शब्द सुणाए कन्न, झूठा कढाए जन, अन्तिम वेले उतरे पारा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आपे खोले साचा शब्द पूरे तोल तोले, सद वसे कोले, ना दिसे बन्द कवाड़ा। खोल्हे बन्द कुआड़, हरि निरंकारया। परे हटाए झूठी धाड़, मारे शब्द खण्डा दो धारया। घर साचे देवे वाड़, जन करे चरन निमस्कारया। जोती जोत सरूप हरि, दरगहि साची जन साचे संत जनां जगत भगतां आप बणाए साचे लाड़या। दसवें दर खेल रचांयदा। शब्द सरूपी डंक वजांयदा। पवण सरूपी आत्म स्वासी, एका धाम वसांयदा। साची जोत करे प्रकाशी, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जन भगतां मेल मिलावा पुरख अबिनाशी, साचे धाम सुहांयदा। काया चोली बण बैठा दासी, साची सेव कमांयदा। गुरमुख साचे सद बलि बलि जासी, साचा कन्त मीत मुरारा, पुरख अपारा हरि गिरधारा, घर आपणे साचे पांयदा। देवे नाम शब्द उडारा, तिन्नां लोकां करे बाहरा, प्रगट होवे गुप्त ज़ाहरा, साचे धाम आप बहांयदा। इक्क लगाए शब्द नाअरा, जोती जोत सरूप हरि, पूरन काम गुरमुख साचे आपे आप करांयदा। साचा धाम हरि धनवन्तया। जन भगतां देवे माण, पूरन भगवन्तया। मारे आत्म शब्द बाण, सति सतवन्तया। अन्तिम मेल मिलाए आण, घर साचे साचा कन्तया। धुर फुरमाण ना कोई मेटे मेट मिटन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे साचे घर, दस्म घर गुरमुख विरला खोज खुजन्तया। एका एका दातार, जगत भिखार है। गुरमुख विरला करे वपार, शब्द अपार है। जिस जन बख्शे किरपा धार, लक्ख चुरासी होए पार है। दरस देवे आप निरँकार, हउमे मारे दर दवारे करे ख्वार है। साची देवे शब्द उडार, इक्क वखाए सच्चा दरबार है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सृष्ट सबाई रिहा कर्म विचार है। कर्म विचार सर्ब किछ जाणे। मानस जन्म जाए संवार, जन भगतां चलाए आपणे भाणे। देवे दात वड करामात, किरपा कर हरि भगवाने। चरन प्रीती आप बन्न्हाए साचा नात, चरन धूढ़ करे इशनाने। अन्तिम वेले पुच्छे वात, दर घर साचे माण दवाने। जोती जोत सरूप हरि, मानस जन्म रिहा संवार, जन भगत चलाए आपणे भाणे, आपणा भेव आपे जाणे। काया कोट दस द्वार है। दसवें निकले झूठा खोट, वसे हरि निरँकार है। आप लगाए शब्द चोट, उपजे धुन सच्ची धुन्कार है। जोती जोत सरूप हरि, कदे गुप्त कदे ज़ाहर है। दस घर लोकमात वखाणे। काया मन्दिर विच सुहाणे। नौवें प्रगट रस भोग लगाणे। दसवें भेव हरि आपे जाणे। जो जन करे घर साचे साची सेव, देवे फ़ल श्री भगवाने। प्रगट वखाए वड देवी देव, आत्म जोत जगे महाने।

जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर आप सुहाए, झूठा जन्दर तोड़ वखाए, किरपा कर गुणवन्त गुण निधाने। काया मन्दिर जन्दर तोड़े। हरि साचा वसे अन्दर, पंजां दूतां सदा होड़े। बेमुख फिरदे बाहर बन्दर, नंगी पैरीं फिरन पाउण ना जोड़े। आपे वसे काया अन्धेरी कन्दर, साचे फल खवाए विच मात मिट्ठे कौड़े। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जना, साचा देवे नाम धना, सच्चा शब्द सुणाए कन्ना, अन्तिम वेले आए बौहड़े। साचा शब्द सुण कान। मातलोक जाए जाग। मिल्या हरि सच्चा सुहेला, होए वड वडभाग। मेल मिलावे इक्क अकेला, आत्म धोए दाग। आपे गुर आपे चेला, हथ्थ आपणे पकड़े वाग। अचरज खेल पारब्रह्म खेला, लक्ख चुरासी आत्म बुज्झया चराग। गुरमुख साचे संत जनां घर साचे सदा मेला, हरि मिलणा कन्त सुहाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे साचा वर, जन भगतां बुझाए आत्म तृष्ना आग। आत्म तृष्ना अग्न आप बुझांयदा। गुर चरन साची लग्न, साचा राह वखांयदा। आत्म दीपक जोती जगण गगन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। गुरमुख कोई ना दिसे नग्न, शब्द चोली तन पहनांयदा। आप रखाए आपणे अंगण, साची डोली आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सच दुआरे नर निरँकारे, एका धाम वसांयदा। एका धाम अटल्ल अस्थूल। गुरमुख साचे विच मात ना जाणा भूल। साचा देवे शब्द पंघूड़ा, घर साचे लैणा झूल। इक्क चढ़ाए नाम घोड़े सोहँ रंग चलूल। चतुर सुजान बणाए मूर्ख मुग्ध देवे नाम निधान, सृष्ट सबाई कूडो कूड़। अन्तिम अन्त सर्ब पछताण। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, सर्ब जीआं एका भगवान। साचा शब्द तीर गुण निधान दा। बज़र कपाटी जाए चीर, तोड़े किला माण हँकार दा। अमृत वहाए सोमा सीर, माया चीर तन लुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, पहली हाढ़ दया कमाए, शब्द वाड़ दर भगत करावे, कलिजुग तेरी अन्तिम बीड़ बन्न्हांयदा। पहली हाढ़ हरि निरँकार। दूजी वस्त कर अकार। तीजे लोयण पावे सार। चौथा वखाए इक्क दरबार। पंजवें मिले विच संसार। छेवें छप्पर छाए अन्ध अंध्यार। सत्तवें सहिज सुभाए, मेट मिटाए औलीए पीर गौंस मुहम्मदी यार। अठवें उठ उठ धाए, चार कुन्ट जाए मार शब्द उडार। नौवें नौ दर हरि वेखे, जोत सरूपी धारे भेखे, गुरमुख साचे लाए लेखे, कलिजुग अन्तिम वार। दसवें दीन रोग हरि हरना, चार वरन एका करना, लोकमात जोत धरना, ना जन्मे ना कदे मरना, एका रंग करतार। ग्यारवें हाढ़ वज्जी वधाई। बारवें भेव रिहा खुल्हाई। तेरवें खुशी इक्क मनाई। चौधवें चौदां लोक दए हिलाई। पन्दरवें पंजां दसां दसां पंजां शब्द डोर बन्न्हाई। दस छे सोलां, सोलां कलीआं साची बणत बणाई। प्रगट होए वलीआ छलीआ, भेव ना जाणे कोई राई। लोकमात अचल चाल हरि चलीआ, सतिजुग तेरी नींह रखाई। सतारां हाढ़ वड वड बलीआ, अन्तिम पूर कराई। जोती जोत सरूप हरि,

४६२
०४

कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क निशानी मात टिकाई। मात धर प्रभ अबिनाशी, देवे वर सर्ब घट वासी। किरपा कर लक्ख चुरासी होए दासन दासी। घनकपुर वासी जगत निशानी। आप बणाए साचा हरि, चढ़दे रख्या साचा दर, सूरज देवता मंगे वर, जगे जोत आदि भवानी। दस अट्ठ अठारां। प्रभ अबिनाशी आपे वेखे पुरखां नारां। जन भगतां राह साचा दस्से, साचा शब्द साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, साचा खेल आपे खेले, संतां भगतां घर सच कराए मेले, आपे बणे वणज वपारा। संत भगत आए दर दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। अठारां हाढ़ दिवस विचारे। लक्ख चुरासी कलिजुग अग्नी रही साड़े। गुरमुखां काया रक्खे ठंडी ठारे। शब्द डण्डे रिहा ताड़े। आपे परखे चंगे माढ़े। धुरदरगाही साचे लाड़े। अन्त बहाए साचे दरबारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगे साचा हरि, गुरमुख साचे जायण चरन बलिहारे। उन्नी हाढ़ वज्जी वधाई, गीत सुहागी गुर संगत गाई। सोई किस्मत मात जागी, काया होई वड वडभागी, हरि देवे सच्ची रुशनाई। मूर्ख मुग्ध बाल अञ्याणे, आप बणाए सुघड़ स्याणे, इक्क सुणाया साचा रागी। सदा चलाए आपणे भाणे, गुरमुख रंग साचा माणे, हथ्थ ना आए किसे राजे राणे, कोटन कोट बैठे जगत त्यागी। जोत सरूपी पहरे बाणा, नर हरि श्री भगवाना, दिस किसे ना आए, कलिजुग जीव बेअन्त बैरागी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए जगाए, दया कमाए दरस दिखाए, ना कोई सुणाए अनहद रागी। देवे दरस अगम्म अपारा। आत्म मिटे अन्ध अन्धयारा, लोकमात तोड़े झूठा बंधन, आपे बन्ने शब्द तन्दन रंगे रंग इक्क अपारा। मिल्या मेल मुकंद मुकंदन, रसना गायण बत्ती दन्दन, आप उपजाए आत्म परमानंदन, अमृत देवे साची धारा। गुरमुख साचे मात बणाए साचे चन्दन, सुहागी गीत इक्क सुणाए साचा छन्दन, लाहे तन बुख़ारा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम भण्डारा। अचरज खेल हरि वरतांयदा। उन्नी हाढ़ दया कमांयदा। गुर संगत संग रलांयदा। साची चोली चाढ़े नाम रंग, आपणे रंग रंगांयदा। शब्द घोड़े कस तंग, सच अस्वारा आप अखवांयदा। सच दुआरा लैणा मंग, धुरदरगाही एह फुरमांयदा। जन भगतां होए संग अंग अंग संग, साची बणत बणांयदा। शब्द सरूपी करना जंग, खाली हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी भन्ने जिउँ काची वंग, शब्द हथौड़ा इक्क उठांयदा। वड दाता सूरा सरबंग, आपणा भेव आपे आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, उन्नी हाढ़ साचा माण दवांयदा। उन्नी हाढ़ मात फुलवाड़ी। गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाए दाढ़ी। शब्द सरूपी अवाज़ लगाए, फिरे पिछे अगाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत उठाए दया कमाए जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। जगत वेखे हरि तमाशा। जन भगतां होया दासन दासा। आत्म जोती पावे रासा। मिल्या मेल हरि साचे शाहो शाबाशा।

जोती जोत सरूप हरि, आपे करे अन्तिम बन्द खुलासा। साची कर हरि त्यारी। लोकमात पहली वारी। शब्द पवण कर अस्वारी। जोत नूर इक्क अकारी। आया चल सच दरबारी। एका मंगे साचा वर, नाम वस्त अपर अपारी। गुर पूरा देवे साचे घर, काया दुखड़ा लथ्थे भारी। आप चुकाए जम का डर, लक्ख चुरासी रोग निवारी। आत्म खोल्हे साचा सर, अमृत चले साची धारी। जोती जोत सरूप हरि, उन्नी हाढ़ लोकमात देवे सच्ची सरदारी। उन्नी हाढ़ दया कमाया। जोत सरूपी खेल रचाया। चरन ब्यासा जा छुहाया। आपणा भेव आप छुपाया। वड देवी देव माया पड़दा पाया। जगत विहारा हरि दातारा, आपे आप करदा आया। एका शब्द चलाया धुर फरमाणा। गुरमुख साचा करे पछाणा। आत्म वज्जे बाना। एका देवे नाम निधाना। गुणवन्त गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग रंगाए साचा संग अन्त निभाए, लिख्या लेख ना किसे मिटाना। साचा लेखा आप लिखावणा। गुरमुख साचे संत जनां दे मति आप समझावणा। आपे जाणे मित गत, सर्ब तत्त जगत जत जगत भेख सर्ब मिटावणा। जोती जोत सरूप हरि, एक रंग साचा संग आपणा आप निभावणा। घर साचे चरन छुहांयदा। जन सोए आप उठांयदा। दुरमति मैल रिहा धोए, अमृत जाम पिआंयदा। साचा बीज रिहा बोए, अमृत फल खवांयदा। गुरमुख विरला जाणे कोए, जिस जन दया कमांयदा। कलिजुग जीव रहे सोए, वेला गया हथ्थ
४६४
०४
ना आंयदा। शब्द हल्ल हरि साचा जोए, गुरमुखां दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब धाम एका काम एका नाम रखांयदा। साचा धाम चरन दुआरा। एका मिले साचा जाम, लाहे तन अफारा। कोए ना लग्गे घर साचे दाम, मिलदा रहे शब्द भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई बणे आप वरतारा। बणे इक्क वरतार, शब्द भण्डारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि निरंकारया। सतिजुग बन्न्हे साची धार, करे खेल अपर अपारया। गुरमुख साचे लाए पार, पूर्ब कर्म हरि विचारया। मानस जन्म रिहा सुधार, मात गर्भ ना आए दूजी वारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणे भाणे सर्ब चला रिहा। साची रचना हरि रचांयदा। पहला फेरा ब्यासा पांयदा। गुरमुखां देवे आत्म धरवासा, दर साचा इक्क खुल्हांयदा। बेमुखां दर आवे हासा, मूढ़ मति रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भेव वड देवी देव आपे आप खुल्हांयदा। दूजी मारे शब्द उडारी दिल्ली जाए हरि निरँकारी। अस्सू तिन्न दिवस विचारी। मातलोक तेरा साचा चिन्न, कलिजुग अन्तिम वारी। दिन लँघाए गिण गिण, जोत सरूपी हरि गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे लेख लिखारी। तिन्न अस्सू दिवस सुहावणा। दिल्ली जाए चरन छुहावणा। किला कोट गढ़ मन्दिर हरि सुहावणा। शब्द घोड़े उप्पर चढ़, जमन किनारा पार करावणा। आपे वेखे किल्हे गढ़, शब्द सरूपी डेरा लावणा। जोत

सरूपी अन्दर वड़, पवण सरूपी शब्द चलावणा। राजे राणे बाहों फड़, पुरख अबिनाशी आप हिलावणा। झूठे भाण्डे जो लए घड़, आपे भन्ने भन्न्ह वखावणा। वाली हिन्द दर दुआरे अग्गे खड़्ह, जोत सरूपी दरस दिखावणा। ना काया ना छाया ना मिट्टी धड़, नर निरँकारी नज़री आवणा। शब्द सरूपी अन्दर जाए वड़, आत्म सेजा डेरा लावणा। पहरेदार बाहर रहण खड़्ह, कुफ़ल द्वार ना कोई खुल्हावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरत मात तेरा सोया पूत बाहों पकड़ आप उठावणा। धरत मात दे सच दुलारे। प्रभ अबिनाशी वाजां मारे। घनकपुर वासी प्रगट होए, असथिल सोहण सच चुबारे। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारे। अठारां भाद्रों हरि भगवाना। लिखे लेख इक्क महाना। शब्द वज्जे तीर निशाना। जोत सरूपी पहरया बाणा। गुरमुख साचे विच समाणा। भरम भुलेखे जगत भुलाणा। राजे राणयां तोड़े माणा। वड वड सुघड़ स्याणयां, प्रभ अबिनाशी एका आन रखाणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा रंग रंगाणा। साचा शब्द साचा राग। घल्ले सुनेहड़ा दयाल बाग़। गुर गुर पूरे उठ उठ जाग। प्रभ प्रगट होया हाज़र हज़ूरे, वरते स्वांगी स्वांग। सर्बकला भरपूरे, सृष्ट सबाई हथ्थ पकड़े वाग। जन भगतां देवे साचा नूरे, हँस बणाए काग। जोती जोत सरूप हरि, इक्क खुल्हाया साचा दर, चार वरन दर आयण भाग। दयाल बाग आगरा वासी। जोत जगाए घनकपुर वासी। लक्ख चुरासी जिस देणी फ़ासी। मेट मिटाए मदिरा मासी। कोई ना पंडत दिसे कासी। प्रगट होए पुरख अबिनाशी। जन भगतां होए दासन दासी। आपे साचा जाप जपाए, सोहँ स्वास स्वासी। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त गुरमुख साचे संत करे बन्द ख़लासी। आगरा वासी गुर सच स्वामी। सर्ब घटां घट अन्तरजामी। चार कुन्ट जपाए नाम वडी नेकनामी। अन्तर पूरा होया तेरा काम, प्रगट होए हरि मुदामी। लेखे लाए आपणा चाम, पूरन होए अन्तर कामी। एका जोत घनईआ शाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानी। नाम स्वामी सर्ब गुण ज्ञाता। अन्तर आत्मा वेखे अन्तरजामी पुरख बिधाता। साध संत औलीए पीर कुतब गौंस शेख़ मुसायक सभ आत्म वेखे कर कर कर हरि मेहरबानी। जगत भगत हरि आप पछाणे, किरपा कर महानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई एका बणे वडा दानी। देवे दान नाम दातारा। सर्ब घटां घट जाणी जाण, इक्क कराए वणज वपारा। गुर पीरां करे आप पछाण, आपे करे लहन्दी चढ़दी धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे पवण अस्वारा। सर्ब घटां घट जाणी जाण किरपा आपणी करे। पवण अस्वारी जो जन करे। मातलोक ना काहूं डरे। ना जन्मे ना उह मरे। मंगण ना जाए किसे दरे। एका वसे साचे घरे। एका जोती इक्क अकाल दीन दयाल, कर दरस काज

सभ सरे। आदि अन्त सदा रखवाल, प्रभ अबिनाशी साचा हरे। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, साचा देवे नाम वरे। तिन्न नौ पंज सत्त, सर्ब जाणे प्रभ आप तत्त, आत्म तोड़े जगत जंज़ाल, लक्ख चुरासी पार करे। जोती जोत सरूप हरि, ना जन्मे ना कदे मरे। इक्क दस बीस इकीस। छत्र झुल्ले हरि साचे जगदीश। अट्ठ दस दस अट्ठ अठारां। वेखे विगसे कर विचारा। नौ सत्त सत्त नौ सोलां, जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा हरि वसे कोले। भारत खण्ड तेरी सच क्यारी। जन भगतां लग्गे सच फुलवाड़ी। अन्तिम फल सचा लागे, गुर पूरे दी पक्की हाढ़ी। सृष्ट सबाई वा तत्ती लग्गे, दर दर घर घर जाए वाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, सृष्ट सबाई अन्त मिटाए पहली हाढ़ी। बणत बणाए सतारां हाढ़। विरला गुरमुख साचा संत कन्त हंढाए, बेमुखां किस्मत होई माढ़ी। भारत खण्ड सति सति सति अस्थाना। कलिजुग तेरी अन्तिम आई वंड, धरे जोत हरि भगवाना। आपे करे खण्ड खण्ड, नौ खण्ड चतुर सुजाना। लक्ख चुरासी देवे वंड, धरे जोत हरि भगवाना। बेमुखां देवे दंड, इक्क चमकाए चण्ड प्रचण्ड, फल ना दिसे किसे डाहना। नार दुहागण आत्म रंड, अन्तिम वेले आए कंड, भुल्लया हरि श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, चले चलाए आपणे भाणा। गुरमुख पाल प्रभ भए दयाल, आपे वेखे वेख संभाले अनमुल्लड़े लाले। जुगा जुगन्त प्रभ करदा आया प्रितपाले। कलिजुग फल लग्गे डाल, वेले अन्त होया रखवाल, कलिजुग घटा दिसे काले। आपे तोड़े जगत जंज़ाल , चरन प्रीती निभे नाले। गुरमुख आत्म ना होए कंगाले। सच्चा देवे नाम शब्द धन माल, आत्म होए मालो माले। मिले इक्क शब्द अनमुल्लड़ा लाल, गुरमुख विरला मात भाले। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए दया कमाए आपे भेजे शब्द दलाले। शब्द दलाल विच विचोला। आप वसाए काया चोला। गुरमुख बणाए दर घर साचे दा साचा गोला। इक्क सुणाए शब्द ढोला। आत्म दर प्रभ पड़दा खोल्ला। इक्क वखाणे साचा घर, आप चुकाए माया उहला। आप नुहाए साचे सर, दुरमति मैल पापां धो ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान, रसना साची तीर कमान, पिछला लहणा गुर चरन बहिणा दर्शन नैणां विच मात पा ला। दर्शन नैण हरि हरि हज़ूर। अन्त ना वहिणा झूठा वहिण, एका आप आपणा भरना सारा पूर। आप चुकाए लहिण देण, पुरख अबिनाशी सर्बकला भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे आत्म बाती, उत्तम जाती जोती साचा नूर। आत्म जोत नूर नुरानी। उत्तम बुद्धी अमृत रस्स गुद्धी, सदा रहे मस्तानी। पाया शब्द सुहागा कीनी सुध्धी, सोहँ सुणाई साची बाणी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे आए दया कमाए, सच वस्त हरि झोली पाए, आदि अन्त हरि वड वडा दान दानी। देवे नाम निहकलंका। वजाए

आत्म शब्द डंका। सुहाए द्वार बंका। आप फिराए मन का मणका। दया कमाए वासी पुरी घनका। साची जोत जगाए दया कमाए करे रुशनाए जिउँ राजा जनका। सच वस्त हरि झोली पाए, निखुट्ट ना जाए करे श्रृंगार तन का। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा उपजाए, लोकमात हरि जामा पाए, आदि अन्त जुगा जुगन्त वार अनका। अनक बार हरि जोत जगाए। गुरमुख साचे संत उपजाए। साचा कन्त हरि आप अख्वाए। लोकमात जाणे साची बणत, जन भगतां दया कमाए। बेमुखां पाए माया बेअन्त, दिस किसे ना आए। एका जोती आदि अन्त, साध संत रिहा दिसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख पाल नार सुहागण वड वड भागण। साचा कन्त सदा हंढाए। साचा कन्त नरायण नर। गुरमुख साचे ल्या वर। अन्तिम आया दर द्वार, साचा मेल मिलाया लोकमात बाहों फड़। दसवें दर तेल चवाया, शब्द घोड़े उप्पर चढ़। अचरज़ खेल आप वरताया। जोत सरूपी आपे अन्दर गया वड़। गुरमुख सोया आप जगाया, आत्म दर दुआरे अग्गे खड़। आप आपणी चरनी लाया, कर्म कुकर्म मानस जन्म गए झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग आपे लाया, कलिजुग अग्न विच ना जाए सड़। कलिजुग अग्न ना लग्गे तत्ती। प्रभ दे समझावे मती। साचा शब्द जन रसना गावे दन्द बत्ती। पुरख अबिनाशी साचा पावे, सति सतवन्ती नार सती। चरन धूढ़ गुर संगत लावे, धीरज धीरज जती। पुरख अबिनाशी साचा पावे, चरन बंधावे साचा नत्ती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमावे, आपे दे समझावे मती। खण्ड मण्डल ब्रह्माद। एका शब्द साचा नाद। जन भगतां देवे लोकमात साची दाद। गुरमुख विरला प्रभ दर सेवे, सद रसना रिहा अराध। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे, शब्द लिखावे बोध अगाध। गुरमुख साचे पार उतारे, किरपा धारे हरि निरँकारे, पैज संवारे दर दरबारे, आप मिटाए कलिजुग माया कलिजुग विवाद। कलिजुग माया मोह अन्ध गंवार है। गुरमुख ना जाए मर, नर हरि सच्ची सरकार है। अन्तिम वेला जाणे को, सृष्ट सबाई जाए हार है। गुर चरनी जाणा छोह, दुरमति मैल रिहा उतार है। तन काया लैणी धो, मैल लग्गे ना दूजी वार है। हल साचा लैणा जो, बीजो बीज नाम करतार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरबारे पैज संवारे, लोकमात ना आए हार है। शब्द नाम देवे डोली, आपे रंगे काया चोली, दूई द्वैती पड़दे देवे खोल्ही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे, आप बणाए दर दर घर घर, दर साचे दी साची गोली। गुरमुख नेत्र नीर वरोले। दुरजनां दे पड़दे खोल्हे। हरि जनां दे अन्दर बोले। जो जन सरनी जायण पढ़, शब्द सरूपी जंदे खोल्हे। आपे तोड़े हँकारी काया किला गढ़, विच्चों काया चोले। पंजां चोरां लए फड़, मारे मार शब्द गोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन

प्रीती घोल घोले। चरन प्रीती घोल आत्म रंग रतीआ। पुरख अबिनाशी साचा पाए, वाओ ना लग्गे तत्तीआ। घनकपुर वासी दया कमाए, आत्म रक्खे जती सतीआ। साची सेवा आपे लाए, वड सरबंसी आप अख्वाए, आपे जाणे मित गति, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती तोड़ निभाए, जन आप लगाई साची नतीआ। वीह हाढ़ जन भगत दुआरा। गगन पताली आया छत्तां पाड़, पुरख अगम्मड़ा हरि निरँकारा। कलिजुग माया रिहा साड़, आप हटाए पंचां चोरां धाड़ां, मारे शब्द कटारा। होए सहाई विच जंगल जूह उजाड़ां, रिहा पैज संवारा। कन्त सुहागी साचा पाया, जगत सुहागण नारां, मिल्या हरि भतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, एका देवे साचा वर, जन्म मरन प्रभ जाए हरि, घर साचे दर साचे हरि दातारा। गुरमुख वधाई भलाई पुर। साची खुशी मनाई प्रभ दया कमाई, लिख्या धुर। पूर्ब लेख रिहा जणाई, फड़ फड़ बाहों राहे पाई, ना कोई जाणे जीव दनाई, आप बणाए गुरमुख सुर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी घनकपुर। दो दो चार चवाुं सिरां हरि इक्क सच्चा सरदार। आपे वणज कराए, जगत सच्चा वपार। साधू सिँघ पाल नाल रलाए, एका धाम बहाए, लहणा देण आप चुकाए, इक्ठे होए चूड़्हे चम्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रविदास तेरी पूर कराए आस, नाल रलाया बाल्मीक बिजवाड़। शत्रु गन

४६८
०४

धर्म पुजारी। पारब्रह्म चरन सरन करे निमस्कारी। इक्क वखाणे आपणा कर्म, लोकमात सच ब्रह्म, राम नाम नाम राम अवतारी। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे आप समाणे, सर्ब जीआं गति आपे जाणे, आपणा रंग रंगे करतारी। सच पुजारी, दर दुआरे अट्ठे पहर करन निमस्कारी। चरन पूजे गिरवर गिरधारी। चौदां बरस तन ख्वारी होए विछोड़ा भारी। साल पन्दरवें राम रमया आए पैज संवारी। साचा मंगे इक्क वर, किरपा कर देवे हरि, मिले मेल कद फिर दूजी वारी त्रेते जुग भाई भाई इक्क कुशल्या जो राम उपजाई, साचा दर दरबारा जिस मात मिल्या। जोती जोत सरूप हरि, त्रेते जुग मात आया गौतम रिख बाण चलाया, मिल्या सराफ अहिल्या। समित्रा जाया करे पुकार। शत्रुगन दर दातार। बेड़ा मेरा देणा बन्न, आप उठाउणा आपणा भार। लहणा देणा आप चुकाउणा मेरे कन्न, मातलोक लए अवतार। साचा शब्द सुणाया कन्न, राम रघुबंसी हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। छोटा भाई कर प्यार, साचा बचन रिहा सुणाई। दसरथ सुत पूत दुलारा, कलिजुग अन्तिम मिले वड्याई। निहकलंक लए अवतार, आत्म जोती दए जगाई। सुणे तेरी पुकार, साची सेवा लए लाई। आत्म बन्ह्ने इक्क प्यार, साचे घर मिले वड्याई। चार वरन दए सच्चा इक्क दरबार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जगत काया दए तजाए, जोत सरूपी खेल रचाई। शब्द सरूपी आप

उठाए, आपणी किरपा धार। आपणी किरपा धारे, हरि दीन दयाल। कलिजुग अन्तिम पैज संवारे, आप बणाए साचे लाल। हउमे हँगता रोग निवारे, भाग लगाए काया सच चुबारे, इक्क वखाए अनमुल्लड़ा लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जामा पाया, गुरमुख साचे पार उतारे, पूत उजागर सिँघ पाल।

❋ २१ हाढ़ २०११ बिक्रमी पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर गुरमुख सिँघ दे गृह ❋

हरि निर्धन माण देवे निरहारा। शब्द बबाण देवे करतारा। आत्म पवण अस्वारा, करे खेल नर हरि हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, साचे भगत वड्याई जगत, लेखे लाए बूंद रक्त, मात सीर बत्ती धारा। बत्ती धार मात प्यारी। बाल अवस्था मुख लगाया, आत्म दित्ती सच अधारी। जगत माया तन दुःख लगाया, भुल्ला जीव गंवारी। उलटा मुख हरि रखाया, उप्पर पसर पसारी। सुक्खणा सुक्ख सुक्ख वक्त लँघाया, मिल्या हरि निरँकारी। सुफ़ल कराए मात कुक्ख, लोकमात जन्म दवाया किरपा धारी। उज्जल होया गुरमुख मुख, गुर पूरे चरन कीनी निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जीआ दान, दरगहि सच करे परवान, आप वसाए दर घर सच्चे दरबारी। गुरमुख गुर गुर इक्क रंग रत्ता। मिल्या मेल लिख्या धुर, आपे देवे माण जोगी जटा जूट धार, आत्म यती सता। साचा देवे शब्द वैराग, जगत त्याग अभ्यास जोग, सर्ब जग पिता। जोती जोत सरूप हरि, अमृत आत्म बरख किरपा कर तत्ती हाढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत दए जगाए, अलख अपार निरँजण, सर्ब दुःख भंजन, मेल मिलाए संग एका कनका। साचे घर वजी वधाई। गुरमुख तेरी आत्म ना होए कदे जुदाई। एका मेल सच्चे हरि परमात्मा, साचा रिश्ता आप बणाई। आपे बणया मात पित साक सज्जण भैण भाई, सर्ब वथ आत्म जातम, गुर मति साची बणत बणाई। आत्म लाया शब्द घातम, ना कोई मेटे मेट मिटाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख गुरसिख प्यारया, गुर संगत मेल दए मिलाई। खाण पकावण दर हरि भगवान होए परवान, जम की छुटकी कान, अमृत फ़ल प्रभ साचा देवे जगत नाम निशान। अन्तिम बख्शे साचे मेवे, गुरमुख साचे दरगहि साची खाण। अट्ठे पहर जन रसना सेवे, ना होए विछोड़ा श्री भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा गुरमुख गुर संगत मेल मिलाया आण। मिल्या मेल भगत दुआरे। वज्जदे रहण शब्द नगारे। घर सच इक्ट्ठे सारे बहिण, दर्शन पायण पुरख अपारे। पड़दे लाहण तीजे नैण, आत्म जोती नूर अपारे। रसना सके ना गुरसिख कहण, वेखे रंग करतारे। प्रभ का भाणा सिर ते सहिण, काग विरले झूठे गोले कलिजुग जीव गंवारे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए, सोहँ शब्द सिर आप बन्हाए, मात सच्चे दस्तारे। मन मति जगत त्याग। गुर दर जागणा, जन होयण वड वड भाग। हरि देवे नाम साचा रागना, हरि सरन जन जाए लाग। मदिरा मास रसना त्यागणा, प्रभ आप बुझाए तृष्ना आग। हँस बणाए कागणा, औखे वेले पकड़े वाग। छड्ड दर मूल ना भागणा, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया एका पुरख अबिनाशी साचा कन्त सुहाग। ढोल मृदंग ना सारंगधर अचल्ल दर खेल मात बहु रंग, अन्त ना पारावारा। सदा सहाई अंग संग, जन भगतां मंगया सच्चा इक्क दुआरा। आत्म कटे भुक्ख नंग, भरया रहे सद भण्डारा। काया झूठी काची वंग, अन्त भन्ने घड़नहारा। जन भगतां निभाए साचा संग, सिर रक्खे हथ्थ गिरवर गिरधारा। कलिजुग अन्तिम चढ़ाए कांग, बेमुख डोबे अद्ध विचकारा। शब्द घोड़े कसे तंग, उत्ते होए हरि अस्वारा। वड दाता सूरा सरबंग, नीत अनीती परखणहारा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, संत साध सदा सदा तारनहारा। संत साध आत्म साधे। मिटे जगत विवाद, शब्द वज्जे साचा नादे। दर घर साचे मिले एका दाद, साचा शब्द बोध अगाधे। किरपा कर हरि माधव माध, गुरमुख साचे विच मात लाधे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम निधान, पंजां चोरां आपे बांधे। पंज चोर जगत गंवारन। अट्ठे पहर पायण शोर, आत्म हँकारन। दिस ना आयण काया घोर, वड वड पुकारन। जन गुरमुखां भाग मथौर, मिल्या हरि भगवानण। चरन प्रीती लए जोड़, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानण। एका शब्द चढ़ाए घोड़, जगत घाल ना गुरमुख घालण। एका नाम लगाया पौड़, आप बिठाए सच्चे दर उचे अस्मानण। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस दर चरन छुहाया, गुर संगत संग रलाया, आपे बख्शे पीण खानण। पीआ खाधा पुरख अबिनाशी लाधा। आपे मात पित पिओ दादा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे किरपा धारी हरि बनवारी, जगी जोत इक्क निरँकारी, गुरसिख साचा साधू सिंघ शब्द डोरी बांधा। गुरमुख बीज सच्ची फुलवाड़ी। तन मन जाए सीज, दूई द्वैती पड़दा पाड़ी। पुरख अबिनाशी आप कराए तेरी रीझ, जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। सदा वसे आत्म दर दहिलीज़, कदे अन्दर कदे बाहरी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची दया कमाए, मानस जन्म लेखे लाए, घर लैण ना आए मौत लाड़ी। लाड़ी मौत दर ना लँघे। गुरमुख वेख दूर दुराडी संगे। अग्गे दिसे हरि जी जोत सरूपी धारे भेख, घर सिक्खां फिरे पैरीं नंगे। खुल्ले रक्खे सतिजुग साचे केस, एका चोली नाम रंगे। बाल अवस्था इक्क विछोड़ा श्री दस्मेश, वेले अन्तिम पार लँघे। दर्शन करे सदा हमेश, पुरख अबिनाशी होए अंग संगे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवे जीआ दान बंस सरबंस भव सागर पार लँघे। भव सागर सिंध दी धार। गुरमुखां उपजे एका बिन्दी, एका इक्की दए उधार।

५०९ ०४

हरि ना जाणे जगत पछाणे जो करन निन्दी, जन भगतां रिहा पैज संवार। एका हरि सर्ब मृगिन्दी, कदे ना आवे हार। गुण दाता वड गुण गहिंदी सद बख्शिंदी, आदि जुगादि बख्शणहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुआरे भाग लगाए दया कमाए, आत्म दर साचे घर सदा भरे रहण भण्डार। आत्म घर भरे भण्डारा। नाम वस्त देवे दस्त, गुरमुख साचा रहे मस्त, साची रहे नाम खुमारा। आप चढ़ाए शब्द साचे हस्त, पवण सरूपी कर अस्वारा। चिट्टा पहनाए तन शब्द बस्त्र, कोई रंग ना रंगे दूजी वारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे गुरमुख साचे संत जना, लोकमात साची सारा। काया चोली तन रंगाया। सोहँ शब्द साची डोली, गुरमुख साचा विच बहाया। दर घर साचे आप बणाए साची गोली, चरन प्रीती इक्क लगाया। कलिजुग तेरी व्याहे बोली, निहकलंकी बाणा पाया। चरन प्रीती घोल घोली, जोत सरूपी दरस दिखाया। आत्म जगे जोत अनमोली , मातलोक करे रुशनाया। कलिजुग जीव किसे ना तोली, साचा कंडा किसे हथ्थ ना आया। एका पुरख अबिनाशी जन भगतां भेव रिहा खोल्ही, सद भाणे आप समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जगत टेक करे बुध बबेक, कलिजुग माया तन ना लाए सेक, साचे शब्द रंग रंगाया। शब्द रंग सच रंगीला। गुरमुख विरला रंगे, काया चोली मात कर कर हीला। लोक लज्जया जगत त्यागे मूल ना संगे, एका बणे सुहेला। आपे होए सदा अंग संगे, दरस दिखाए हरि दातार, शब्द घोड़ वखाए रंग नीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए चतुर सुजान, लक्ख चुरासी बन्द छुडान, अन्तिम वेले दरगहि साची, संग शब्द रलाए दया कमाए, बणे सच वकीला। सच वकीला धुर दरगाह। धर्म राए ना देवे फाह। अन्तिम वेले होए सहाई, आपणी गोद हरि लए उठा। मात पित ना कोई भैण भ्राए, जूठे झूठे मानण ठंडी छाँ। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त भगत भगवन्त, साचे संत विच जीव जन्त, आपे बणे पिता मां। मात पिता हरि पूत दुलारा। गुरमुख साचा संत दुलारा। जिस दर साचा मंगया एका, दूजे दर ना होए भिखारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दए वधाई, आत्म जोती दीप जगाई, वज्जदा रहे शब्द नगारा। दुरजन दुरमति इक्क दुआरे। इक्क दूजे दे मीत प्यारे। तन मन काया झूठी भीजे, झूठा करे तन श्रृंगारे। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं हरि जाणे सारे। दुरजन दुहागन नार कन्त विछोड़या। ना मिल्या मीत मुरार, घर साचे सच ना बहुड़या। कलिजुग माया नार हँकारी, कन्त झूठा तन श्रृंगारया। झूठी बणाए आपणी बणतर, आपणा आप ना जन विचारया। तुटा नाता हरि भगवन्त, होए नीचो नीच सुघड़ स्याणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा, जिस जन मात भुलाणया। भरम भुलेखा मात झूठा हट्ट विकांयदा। जन आप गंवाए साची दात, खाली हथ्थ पछतांयदा। घर साचे

कोई ना पुच्छे वात, गुर संगत नाता तोड़ तुड़ांयदा। ना कोई भैण भ्रा पित मात, जामन होए किसे छुडांयदा। आपे लै जाए आपणी दात, काया थोथी खाली पिंजर मात रहि जांयदा। हँस विचारी जाए रोती, प्रभ बिरहों रोग सतांयदा। हथ्थ ना आया माणक मोती, मानस जन्म गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं आपे लेख लिखांयदा। लेखा चुक्के वारो वारी। भुल्ल ना जावे जीव गंवारी। आपे पिता मात महितारी। धीआं पुत्त साचा संग हरि हरि रंग, एका पुरख अबिनाशी, जन साची नारी। साची जोत मात प्रकाशी घनकपुर वासी जन भगतां जाए तारी। बेमुखां मारे मार करे ख्वारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीव दुरजना एका देवे पासा हारी। छड्डुया इक्क दर दुआरा। कवण मिटाए लिखे लेख, अन्तिम लेखा देणा भर, सर्ब घटां घट रिहा वेख, जोत सरूपी कर पसारा। आत्म लग्गी झूठी मेख, हरि देवे कल्लर कंध उखाड़ा। धर धर धर हरि साचा भेख, लोकमात इक्क शब्द लगाए साचा अखाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दर दुरकारे, चारों कुन्ट पैण झाड़ां। गुर मति गुर जाण, गुर गुर गुर मिल एक है। दूजे घर ना दिसे धीरज यति, अछल अछल्ल जगत बेईमान है। एका रहे हरि अटल्ल, अन्तिम मिटणे सर्ब निशान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुआरे करे पुकार है।

✻ २२ हाढ़ २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल पूरन सिँघ दे गृह ✻

बणत बणाई बण गई, परम पुरख दी धार। संत वड्याई हरि दई, सदा रहे जुग चार। गुरमुख कमाई गुर दर लई, भरया इक्क भण्डार। प्रभ का भाणा सिर सही, शब्द पवण करीं प्यार। अन्तिम लेखा कढ्ढ वही, धर्म राए सच द्वार। शब्द दस्से सच सुनेही, गुरमुख जाए बार बार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप सुहाए बंक द्वार। जगत दुआरा भगत कलि रक्खे। इक्क भण्डारा कदे ना होए सखे। बणे आप वरतारा देवे हार शृंगार तन नौ लक्खे। जन्म कर्म प्रभ आप संवारा, अन्त प्रीती साची रक्खे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे साचा धाम सुहाया, लोकमात विच वक्खर वक्खे। सच धाम, धर्म धिर जड़। पूरन काम, लेखे लग्गे सिर धड़। अन्तिम पीआ अमृत जाम, घर साचे गया वड़। सोहँ मिल्या साचा नाम, प्रभ अबिनाशी खड़या खड़। सुक्का हरया होवे चाम, शब्द घोड़ी गया चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम वसाए, शब्द कमाए किला कोट साचा गढ़। सच महल्ल सच टिकाणा। पुरी इन्द्र हरि खेल रचाणा। सुरपति राजा इन्द, अन्तिम जोती मेल मिलाणा। प्रगट हो विच हिन्द, छोटे बाले माण दवाणा।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं लोकमात हरि आप समझाणा। लोआं पुरीआं हरि आप समझाए। पहली हाढ़ी दया कमाए। सतारां हाढ़ी मन्दिर सुहाए। जन भगतां वसे अन्दर, बेमुखां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सर्ब वड्याए। गुर संगत मन वधाई। हरि हर घट वस्सया, सद रहणा चांईं चांईं। तत्त हँकारा जाए नस्सया, दरस दिखाए थाँईं थाँईं। अमृत मेघ साचा वस्सया, अन्तिम वेले पकड़े बाहीं। मिटे अन्धेर जिउँ चन्न मस्सया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत बणाई। मातलोक कलिजुग तेरी अन्तिम सिड़ी चुणाई, धर्म राए खिड़ खिड़ हस्सया। काया काअबा मन मौलाणा। सुरत शब्द ज्ञान सच कुराना। नूर अलाही अल्ला हू पाक, पाकी पाक पकाणा। जीव जन्त माटी ख़ाक, एका एक भुलाणा। रहे बन्द ताक, दीपक जोत ना किसे जगाणा। ना दस्से भविख्त वाक, सूरत रब्ब रहीम करीम ना किसे वखाणा। ना कोई वखाणे साचा दीन, नाम इस्लाम जगत तमाम हरि रंग महाना। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त सर्ब जन्त, एका रंग रंगाना। मन हाजी काया काअबा, काया मस्जिद विच दोआबा, एका वुज़ू पाक रसूला। दूजा चले पेश आबा, कलिजुग जीव एका भूला, जिहड़ा कटे जगत अज़ाबा, मिल्या हरि कन्त कन्तूला। अमृत चुआए मुख कँवल नाभा, एका हरि सच्चा रसूला। इक्क प्याए अमृत हयात आबा, रोजा नाम बांग सच प्रेम मसल्ला। प्रभ मिलण दी तांघ सच एका दिसे खुदाई इकल्ला। नूर नुरानी नूर सच्च, गुरमुख वखाणे काया आत्म सच्चा मक्का। देवे दीदार शाह सवार सच्च, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा यार, चार यारी पार उतारे, अन्तिम मारे इक्को धक्का। सिदक सबूरी तन साचा कासा। हिज़रत हुज़रत नूरी प्यासे नाम मोवासा। वसले यार दस्म दुआरी, परवरदिगारी कर पूरी आसा। जोती जोत सरूप हरि, एका नूर सति सरूर हाज़र हज़ूर, चार वरन जीव जन्त पुरख अबिनाशा। साचा घर हरि हज्ज मदीने। अन्तकाल कलि जाए तर, प्रभ पड़दे लए कज, देवे नाम शब्द नगीने। जो घड़या अन्तिम जाए भज्ज, वज्जे बाण शब्द सीने। झूठी काया जाणी तज्ज, छड हँकार हो मस्कीने। अमृत पीणा रज्ज, तन मन सदा सदा भिन्न भीन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत नूर नुरानी वहे अमृत वसे मक्के मदीने। मदीना मक्का फल मुहम्मदी अन्तिम पक्का। उम्मत नबी रसूल दी, भाई चारा सका। साचा हज्ज ना काअबे कबूल दी, वेखे मात बूरा कक्का। कुरान भैण बणी अंजील दी, दोहां मिले इक्ठ्ठा धक्का। लोड़ पवे ना किसे वकील दी, लेख लिखारी ना मंगे कोई टका। एका लए दलाली दलील दी, जुगो जुग देंदा लैंदा कदे ना थक्का। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां नत्थ पवाए विच नक्का। हाजी मुलां शेख़ मुसायक कुतब गौंस मजौर मक्के जानण, हज्ज सबानन होए

बागन। इक्ते होए ना माया डस्से नागणी नागन। काम कामनी तोड़े नागन, अन्तिम अल्ला ना होए जामन, उठ उठ सारे भागन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चरन सरन सभ लागण। साचा हज बेऐब परवरदिगार दा। सभ दे पड़दे रिहा कज्ज, इक्क लगाए नाअरा अल्ला हू तूं ही तूं। सच्चा शब्द नगारा सोहँ खण्डा धुर दरगाहों ल्या धू। सृष्ट सबाई जाणे साचा हरि, चरनी बैठा हज़रत नूह। लोकमात बेड़ा कर त्यारा, हज़रत नूह ईसउल सलाम एका जाणे खुदाई तूं। एका करे कलाम, अन्तिम आउणा बेग़ानी जूह। पच्छिम दिशा होई ख़ाम, एका गिड़या पुट्ठा खूह। दखशन पीए जाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए नबी रसूल पीर दस्तगीर, शाह फ़कीरां दिसे इक्क कलाम। बचन सति सति भगवान। एका तत्त वाली दो जहान। आपे दे समझावे मत, गुरमुख सच्चे भुल्ल ना जाण। एका बीजे साचे वत, पूरन पुरख सुजान। धुरदरगाही मेला मेल होया साचा तत्त, जग बंधन तोड़ तुड़ान। लोकमात रक्खे पति, गण गधंरब करोड़ तेतीस, शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष, परम पुरख को सदा आदेस, जिस मिल्या इक्क भगवान। लक्ख चुरासी घर घर वेस, हथ्थ ना आवे गण गधंरब जोत धरे प्रभ माझे देस, जोती जोत खेल महान। भेख अवल्लड़ा खुल्हे केस, ना कोई भुल्ले राज राजान। एका गुरमुख विच प्रवेश, सिँघ पूरन चतुर सुजान। किसे हथ्थ ना आवे नर नरेश, नर नरेश
५०४ तीर्थ तट्ट आपे वेखे, लिक्खे लेखे कढ्ढे भरम भुलेखे, करे मात पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत दए ५०४
०४ धुरदरगाही सच फ़रमान। एका जोती इक्क अकार। एका गुरमुख माणक मोती, मिल्या गुर गोपाल। मातलोक काया मैल ०४
दुरमति कलेवर धोती, तुट्टा जगत जंजाल आप उठाई आत्म सोती, दीपक जोती दित्ता बाल। न कोई वरन ना कोई गोती, सर्ब जीआं करे प्रितपाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सर्ब घटां, जन भगतां करे प्रितपाल। एका जोत हरि इकागर। देवे जोती काया गागर। निर्मल जीआ होए उजागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वत देवे दस्त नाम रत्न रत्नागर। सच सिँघासण एका हरि बिराजे। त्रै लोआं दासन दास, सर्ब संवारे आप काजे। लक्ख चुरासी अन्तिम होए नास, प्रभ अबिनाशी वड राजन राजे। गुरमुख गायण स्वास स्वास, शब्द मारे साची अवाज़े। निर्मल जोती मात पताल अकाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणा साजन साजे। साचा तख्त हरि सुल्तान। एका सोहे श्री भगवान। लक्ख चुरासी रोए, दिस ना आए वड दाता मेहरवान। जन्म जन्म मैल प्रभ दर धोए, मिले शब्द ज्ञान। सोहँ धागे हरि परोए, किरपा कर महान। अवर ना दीसे मात कोए, सच सिँघासण बैठे आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका एक वड बली बलवान। बली बलवान हरि निरँकारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना कोई पावे सारा। गुरमुखां मेल साचे

संत, जिस मिल्या कन्त प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधारे जो करे चरन निमस्कारा। देवे नाम शब्द तन खुमारी। मारे मन उच्च उडारी। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, आत्म लाहे सर्ब बिमारी। कलिजुग जीव आत्म अन्न्ह, पुरख अबिनाशी घट घट वासी ना पायण सारी। गुरमुख साचे गायण स्वास स्वास, चरन कँवल करन निमस्कारी। जोत सरूपी नर नरायण होए दासन दास, वेखे विगसे कर विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजण सर्ब दुःख भंजन, आत्म करे सर्ब कारी। देवे नाम मस्ती मस्त दीवाना। मिले भण्डार अतुट्ट ख़ज़ाना। हरि वरतार विच संसार तोट ना आना। गुरमुख गुरसिख ना कदे हँकार, एका रक्खो गुर चरन ध्याना। सच सिँघासण हरि सरदार तिन्नां लोकां पावे सार, खण्डां ब्रह्मण्डां जोत अधार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। मन मस्ती तन वैरागी। एका वसी काया बस्ती, मिल्या कन्त सुहागी। साची वस्त दात देवे दस्ती, शब्द सुणाए साची रागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती जिस जन लागी। तन मस्ताना चरन ध्याना। माण मोह हँकार गंवाना। सच सिँघासण तख्त बिराज, चौर सिर ना किसे कराना। एका एक जोत निरँजण जगे माझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। निरगुण रूप अपार हरि निरँकार है। जोत सरूपी सच अकार, तिन्नां लोकां वरतण हार है। साचा शब्द साची धार, चलाए अपर अपार है। काया मन्दिर दए उसार,
५०५ ०४ पवण स्वास सति करतार है। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, आपे जाणे आपणी सार है। जाणे सार ५०५ ०४
सर्ब संभालदा। गुरमुख साचे जाए तार, पंजां तत्तां विच्चों मारदा। देवे नाम शब्द उडार, साचा घर इक्क वखालदा। जोती जोत सरूप हरि, कर अकार हरि निरँकार, जीआं जन्तां सुरत संभालदा। देवे वस्त नाम इक्क थार, रंगण साची साचा चाढ़्हदा। हउमे ममता दए निवार, बख्शे नाता चरन प्यार दा। साचा करे तन श्रृंगार, गुरमुख मस्तक धूढ़ी लाए पार उतारदा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त वसे इक्क घर, लक्ख चुरासी पसर पसारदा। नौ खण्ड विच ब्रह्मण्ड। हरि साजन साजे आपे पाए लक्ख चुरासी वंड। भेव छुपाए वड राजन राजे, बेमुखां सद देवे दंड। गुरमुखां संवारे काजे, साचा शब्द नाम देवे चण्ड प्रचण्ड। आप चढ़ाए साचे ताजे, लक्ख चुरासी करे खण्ड खण्ड। धारे जोत हरि देस माझे, बेमुख जूठे झूठे पायण डण्ड। काया भाण्डा अन्तिम जाए भज्ज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच साजना रिहा साजे। सज्जण सुहेला हरि साचा मीता। जन भगतां कराए मेल, देवे नाम सुहागी गीता। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, सतिजुग चलाए साची रीता। बेमुख धकाए धर्म राए दी जेल्हा, गुरमुखां काया करे ठंडी सीता। आत्म जोती जगे बिन बाती बिन तेला, रसना नर नरायण जिस चीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा शब्द चलाए, सोहँ वस्त जन झोली

पाए, माण गंवाए अठारां ध्याए गीता। अठारां ध्याए भगत गुणवन्ती। कलिजुग सति पुरख सतिवादी, लोकमात सति राणी, मिल्या कान्हा कृष्ना कंसी। अर्जन ज्ञान इक्क वखाणी, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जगत रीत वड पतित पुनीत सदा सद रिहा पछाणी। गीता ज्ञान गोझ गुरमंत, द्वापर एका अंक चलाया। भगत दुआरे साचा मन्त्र, दे मति आप समझाया। गुरमुख बणाई साची बणत, कलिजुग साचा राह वखाया। पंडत पांधे हरि समझाया। भेत खुल्हाया मात पताल, गगनंतर मात पताल गगना। दीपक जोती एका जगणा। गुरमुख विरले साचे संत जन साचे मार्ग लग्गणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग सोहँ शब्द मुख लगाए सगना। मुख सगन रसन स्वाद। गुर चरन जो जन लग्गण, कलिजुग मिटे विवाद। अट्ठे पहर रहण मग्न, देवे नाम साची दाद। आत्म दीपक जन भगतां जगण, सच रीती प्रभ आदि जुगादि। बेमुख चार कुन्ट भौंदे नग्न, आत्म ना वजे दर शब्द नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, साचा शब्द इक्क डंक वजाए, भेव खुल्हाए बोध अगाध। बोध अगाधा हरिजन जनहरि रसन अराधा। काया तन ना डोले मन, भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, पंजां चोरां लाए डन्न, साचा शब्द उपजाए नादा। एका राग सुणाए कन्न, गुरमुख आत्म जाए मन्न, प्रगट जोत प्रभ लोकमात, अन्तिम कलि बेड़ा जाए बन्न, गुरमुख साचे विरले लाधा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसन अराधा। एका एक वर दर पावे, दूजा वसे साचे घर। तीजे गुरसिख नुहावे, अमृत आत्म साचे सर। चौथे साची दया कमावे, आप खुल्हावे बन्द कवाड़। पंचम् जोती मेल मिलावे, जन भगत शब्द घोड़ी जाए चढ़। छे शास्त्रां माण गंवाए, सोहँ शब्द एका अक्खर जाए पढ़। सतवां सत्त दीप प्रभ एका मेट मिटाए, ना कोई सके अड़। अठवें अठां तत्तां तन बणाए, काया मन्दिर इक्क सुहाए, जगत वखाए साचा धड़। नौवां नौ खण्ड नौ दर, नौ निध कारज करे सिद्ध, प्रभ शब्द आत्म जाए बिध्ध, गुरमुख साचे मार्ग लावे। दसवें दहि दिश बन्द करावे। शब्द डोरी मन बंधाए। चरन कँवल प्रीती जाए जोड़ी लग्गी तोड़ निभाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, एका एक रिहा कर, राउ रंक एका धाम बहाए। एका इक्क अकार। दूजे शब्द साची धार। तीजे जोत जगी अपार। चौथे घर हरि नर सच निरँकार। पंचम् मिले साचा वर, एका दर सच्चे दरबार। छेवें जम का चुक्के डर, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। सतवें सति सतिवादी गुरमुख साचा जाए तर, मेल मिलावा हरि निरँकार। अठवें अठां तत्तां मारे शब्द कटार। नौवें सच घर आत्म देवे नाम सच्ची विचार। दसवें दृष्ट कूट प्रभ साचा खोल्हे, शब्द सरूपी आत्म बोले, जोत जगाए गुरमुख काया माटी चोले, रंगे रंग इक्क अपार। रंगे रंग नाम रंगीला। एका रंगण प्रभ चढ़ाए,

शब्द जोती लाए भट्ठी तीला। दूजे दर ना मंगण जाए, शब्द बाणा तन पहनाए, साचा रंग आप रंगाए। कलिजुग तेरा अन्तिम नीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी अन्त खपाए, साचे संत लए बचाए, जीव जन्त करन हाए हाए, दिस ना आए अस्व नीला। नीला अस्व हरि अस्वारा। चारों कुन्टां धुंदूकारा। कलिजुग होए जीव गंवारा। अन्तिम आया पासा हारा। गुरमुख विरले रसन उचारा। मिल्या परम पुरख परमेश्वर, अबिनाशी अगोचर अलख निरँजण निहकलंक नरायण नर निरँकारा। आदि जुगादी वड ब्रह्मादी लोकमात खुल्हाए शब्द सच्चा भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, राजे राणे किसे दिस ना आया। वड वड सुघड़ स्याणे माया भरम भुलाया। झूठे धन्दे मदिरा मासी अन्धे कलिजुग अन्तिम लाया। गुरमुख उपजाए साचे चन्दे, खुशी कराए बन्द बन्दे नाम तिलक मस्तक लाया। अन्तिम अन्त आप उठाए आपणे कंधे, मात पित भैण भ्रा साक सज्जण सैण सभना हेत चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम जोती मेल मिलाया। मिलाए मेल निरगुण हारया। जन भगतां सज्जण सुहेल, लोकमात आवे जावे वारो वारया। आपे गुर आपे चेल, खेल करे अपर अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक वज्जा डंक, राउ रंक सर्ब सुणा रिहा। अमृत साचा सीर रोग गवांयदा। काया कढ्ढे हउमे पीड़, शब्द धीर धरांयदा। साचे दर एका हस्त कीड़, ऊँच नीच जात पात सर्ब मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म साचा जाम पिलांयदा। अमृत धार ठंडी ठार। जन भगतां रिहा पैज संवार। मनमुख भुल्ले माया रुल्ले मूर्ख मुग्ध मूढ़ गंवार। हरि भण्डारे सदा खुल्हे, देवणहार हरि निरँकार। गुरमुख विरला पूरे तोल तुल्ले, रसना गाए शब्द जैकार। चरन प्रीती घोल घुले, माण मोह जाए हँकार। आत्म दर साचा खुल्हे, साची जोत करे अकार। प्रभ दर जन आयण भुल्ले, गुर संगत संग जाए तार। बुझे अग्न लग्गी काया कुले, तन पेटा जाए अफ़ार। साचा फल लोकमात ना हुल्ले, लग्गे काया डार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मुख चुआए, दुबिधा मैल सर्ब गंवाए देवे नाम अधार। अमृत बूंद स्वांत प्रभ पिलांयदा। मिटे अन्धेरी रात, एका जोती हरि जगांयदा। गुरमुख आत्म वेख मार झात, साची सेजा आसण लांयदा। बैठा रहे सदा इकांत, दसवें दर हरि समांयदा। एका देवे अमृत बूंद स्वांत, आत्म तृखा मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन काया रोग चिन्ता सोग जगत विजोग सर्ब गवांयदा। अमृत आत्म साची धारा। सर सरोवर ठंडी ठारा। गुरमुख विरला पावे साचे तीर्थ नुहावे, खोल्हे बन्द कवाड़ा। हरि अनादी सद ब्रह्मादी रसना गावे, तत्ती वा ना लग्गे हाढ़ा। हरि दर घर मंगल गावे, जंगल जूह विच उजाड़ पहाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत इक्क बलोए, दुरमति मैल पापां धोए, अवर ना

जाणे कोए, करे रुशनाए बहत्तर नाड़ां। काया कोट दर दरवेशा। वज्जे शब्द चोट, गुर चरन भरवासा। प्रभ कढ्ढे झूठा खोट, रहण ना देवे तोला मासा। जन होए निमाणा आल्हणिउँ डिग्गा बोट, चारों कुन्ट फिरे निरासा। सच शब्द जन रसना गाए, निज घर आत्म रक्खे वासा। काया बंधन सर्ब तुड़ाए, मानस जन्म कराए रासा। दुःख दर्द रहे ना राए, जो जन तजाए मदिरा मासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम भरवासा। हाकन डाकन सिर मुंडवाए। शार खुरी प्रभ बाहर कढाए। निरन्दरी नेसरी केसरी दर दुरकाए। इजीआ बिजीआ बसोधरी शब्द मार कराए। अंचनी कंचनी निरंचनी जल धार वहाए। पशू प्रेतां मार कर, शब्द डण्डा मगर लगाए। साचे दर ख्वार कर, हड्ड नाड़ी पिंजर मास कढाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया दुखड़ा नास कराए। सच्चे शब्द वरतार हरि भण्डार है। जन भगतां देवे वारो वार, विच संसार है। गुरमुख विरला उतरे पार, बेमुख रहे झक्ख मार है। साचा शब्द तन करे सोलां शृंगार, लक्ख चुरासी विच्चों कीना वक्ख है। मानस जन्म ना आए हार, सच पूत प्रभ साचा लए रक्ख है। हरि कन्त सुहेला गुरमुख साची नार, प्रगट होए सदा प्रतक्ख है। पंजां चोरां देवे मार, करे काया ठंडी ठार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे नाम दान गुरमुखां साची वथ है। शब्द घनघोर आत्म जोती। हरि बिन अवर ना दीसे होर, एका नाम अनमुल्लड़ा लोकमात माणक मोती। गुरमुख साचा पूरे तोल तुलड़ा, दुरमति मैल पापां धोती। भाग लगाए काया कुलड़ा, भेव चुकाए वरन गोती। पुरख अबिनाशी दर दुआरा सदा खुल्हड़ा, आत्म जगाए गुरमुख सोती। दर साचे कोई ना लग्गे मुल्लड़ा, जोती जोत सरूप हरि, नाम देवे साचा हरि, जो जन आए चल द्वार लक्ख चुरासी रही रोती। लक्ख चुरासी हाहाकार। भुल्लया एका एक हरि निरँकार। जन भगत प्रभ साची चरन टेक, साचा दिसे इक्क दरबार। काया करे बुध बबेक, साची जोती नूर अकार। कलिजुग माया लग्गे ना अग्न सेक, देवे दरस दर दातार। जोती जोत सरूप हरि, नाम देवे साचा वर, जो जन आए मंगण दर, भरम भुलेखे जगत निवार। भरम भुलेखा जगत चुकाउणा। साचा लेखा विच मात चुकाबणा। कलिजुग जीव प्रभ रहे वेखी वेखा, वेला गया हथ्थ ना आउणा। जोती जोत सरूप हरि, प्रभ धारे भेखा, शब्द सरूपी डंक वजाउणा। जन भगत लाए शब्द मेख, राउ रंक सर्ब भुलाणा। गुरमुख साचा नैण नेत्र लोयण तीजे लैणा वेख, दस्म दुआरी भेख चुकाउणा। किसे हथ्थ ना आए औलीआ पीर शेख़, साचे संत हरि साचा राह वखाउणा। कलिजुग मिटाए तेरी अन्तिम रेख, सतिजुग साचा मात लगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत पित भगत सहाई, आदि अन्त जुगा जुगन्त साचे कन्त नाता चरन बंधाउणा। चरन नाता जगत प्रीत। पुरख अबिनाशी किसे ना मिले विच मन्दिर मसीत। जो जन खोजे काया अन्दर,

जाए जगत कलि जीत। हरि वसे डूंघे कन्दर, अट्ठे पहर परखे नीत। जन भगतां तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, एका सुणाए शब्द सुहागी गीत। बेमुख भौंदे दर दर बन्दर, दुरमति देह होई ना पुनीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सचा रसना लए चीत। रसना चीता हरि साजन मीता। काया होए पतित पुनीता। मेल मिलावा हरि साचे मीता। जगत वक्त भगत सुहावा, भगत भगवन्त एका रीता। सदा सदा रक्खे ठंडी छावां, काया करे शीतल शीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरन बरन सच सरन, ऊँच नीच जात पात भैण भ्रात एका कीता। ऊँच नीच जात पाती। मिल्या हरि प्रभ कमलापाती। लोकमात खुल्हाया साचा दर, देवे नाम साची दाती। बेमुखां दर आए डर, आत्म अन्धेर कलिजुग काली राती। जन भगतां खोल्हे आत्म सर, अमृत बूंद प्याए स्वांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जीआ दान, लक्ख चुरासी फंद कटाती। कटे फंदन हरि निरँकारा। करे बन्दन, दोए जोड़ चरन निमस्कारा। झूठी काया कच्चे तन्दन, तोड़े जोड़े जोड़ विछोड़े, हरि तोड़नहारा। जन भगतां उपजाए गुरसिख जीउं प्रभासे चन्दन, शब्द करे तन शृंगारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगो जुग लोकमात लए अवतारा। लोकमात हरि अवतरया। गुरमुख विरला मारे आत्म झात, जिस जन खोल्हे साचा दरया। मिटे काया रैण अन्धेरी रात, जोती नूर साचा धरया। आपे बणे पित मात, पुरख अबिनाशी जिस जन वरया। शब्द देवे साची दात, वड करामात भाग लगावे घर घर साचे घरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डार भगत वरतार हरि निरँकार, एका एक जन चरन टेक, इक्क नुहाए आत्म अमृत साचे सरया। अमृत आत्म ठंडा ठार, गुरमुख विरला नुहाए, दर घर चरन प्यारा। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, आवण जावण मिटे संसारा। धर्म राए ना डन्न लगाए, देवे दरस अगम्म अपारा। साचा शब्द कन्न सुणाए, जोती दीपक कर उज्जयारा। भाण्डा भरम भउ प्रभ भन्न वखाए, मारे शब्द खण्डा दो धारा। गुरमुख साचे लोकमात साचे चन्द चढ़ाए, तिन्नां लोआं करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घड़न भन्नणहार दातार नर निरँकार, वेखे विगसे करे विचार। वेख विचारे सदा अडोले। सद वसे काया पड़दे ओहले। गुरमुखां साचा राह दस्से, शब्द सरूपी बाणी अनहद बोले। एका तीर साचा कसे, दस्म दुआरी पड़दा खोल्हे। जन भगत भगत जन, गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर, आत्म सेजा बहि बहि हस्से, भाग लगाए काया चोले। आत्म जोती नूर प्रकाश कोट रवि सस्से, किरपा करे संपूरन कलां सोले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सदा सदा वसे कोले। वसे कोल नेरन नेरा। तोले पूरे तोल, ढाहे भरमां डेरा। गुरमुख साचा कदे ना जाए डोल, नर हरि हरि नर करे सच निबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी करे बन्द ख़लासी घनकपुर

५०६
०४

वासी, इक्क वसाए गुरमुख काया नगर खेड़ा। गण गन्धर्ब करोड़ तेतीसा। संग रलाए मूसा ईसा। भेव चुकाए हरि बीस इक्कीसा। दर घर साचे साची सेव लगाए, एका झुलाए छत्र सीसा। वड देवी देव हरि आप अख्वाए, ना करे कोई मातलोक रीसा। शब्द डंक इक्क वजाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी झूठा पीसण मात पीसा। देवी देव धर्म द्वार। पुरी इन्द्र हाहाकार। छोटे बाले तोड़या जिंदा, आत्म तुट्टा सर्ब हँकार। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर वड मृगिन्दा, सोलां कर तन श्रृंगार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपार। देवी देवत सुरपति राजा इन्द। अट्ठे पहर दिवस रैण नर नरायण, ना उतरे मन की चिन्द। मेल मिलावा हरि मृगिन्द। कोए ना पाए मातलोक भेवत, प्रगट होए प्रभ विच हिन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी वहन्दी धार वहाए, जिउँ सागर सिंध। देवी देवत गंधरब गन, शब्द डण्डा लगा तन। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, शिव शंकर प्रभ लाए डन्न। जगे जोत विच वरभण्ड, गुरमुखां शब्द सुणाए कन्न। बेमुख दर दर घर घर पाउँदे फिरन डण्ड, कोए ना कढ्ढे आत्म जन। काया आत्म जगत दुहागण, भाण्डा भरम ना कोई देवे भन्न। एका चले सोहँ चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई खंन खंन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे जीआ दान, गुरमुख साचा रसना कहे धन्न धन्न। करोड़ तेतीस दर दरबारा। दोए जोड़ चरन सरन करे

५१० ०४ निमस्कारा। मेल मिलावा प्रभ साचा तरनी तरन, मंगदे रहण इक्क दुआरा। दर घर साचे मिले ना बहिण, भोग अपच्छरां ५१० ०४

दुःख लग्गा भारा। कलिजुग औखा होया भाणा सहिण, निहकलंक लए अवतारा। ना कोई मात पित भाई भैण, भ्रा हित्त कन्त प्यारा। दरस दिखावे तीजे नैण, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई अन्तिम कलि आप चबाए आपणी दाढ़ा। पुरी इन्द्र राज जोग। झूठे होए रसना भोग। कलिजुग तेरा अन्तिम इक्क वियोग। माया राणी वड ज़रवाणी, पापां ढाहया डेरा, हउमे लग्गा रोग। घर घर दिसे तेरा मेरा धुर संजोग। चारों कुन्ट रैण अन्धेरा, रसना रस्स रहे झूठे भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी पाया घेरा, किसे ना दीसे सन्झ सवेर, शब्द बन्न्हे तिन्ने लोक। पुरी इन्द्र तख्त ताज। झूठा दिसे अन्तिम कलि साज बाज। प्रभ का भाणा ना जाए टल, किसे ना दिसे सिर ते ताज। जगत भुलाए कर वल छल, धरे जोत विच्च देस माझ। निहचल धाम इक्क अटल, शब्द सरूपी करे काज। शब्द सरूपी चलाए हल्ल, तिन्नां लोकां एका रक्खे सांझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख बेमुहाणयां वड ज़रवाणयां, राजे राणयां वड शाह सुल्तानयां, अन्तिम खोल्हे पाज। पुरी इन्द्र सच्ची रास। एका दर एका घर, करोड़ तेतीसा वास। राजे बल दीआ वर, इक्क तजाया मदिरा मास। मोहणी रूप धार घड़ी घड़ी पल पल, करे खेल मात पताल अकाश।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत वछल गुण निधान, सोहँ देवे साचा जाप वड प्रताप, गुरमुख गाए रसन स्वास स्वास। करोड़ तेतीसा सर्ब गुणवन्ता। ना मेल मिलावा साचे कन्ता। सुरपति राजा इन्द होए निथावां, लक्ख चुरासी वेखे जन्ता। जन भगतां देवे ठंडीआं छावां, आप बणाए बणता। अमृत प्याए सीर जिउँ पुत्तर मावां, अलख अभेव आदिन अन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण दवाए चरन लगाए, बज़र कपाटी खोल्ह वखाए साचे संता। एका दसे काया तीर्थ आत्म ताटी। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ माण गंवाए, रसना रस्स एका चाटी। जगे जोत काया माटी साचा शब्द हरि सुणाए, अग्गे नेड़े आई वाटी। गुरमुखां दिसे इक्को घाटी। फड़ फड़ बाहों पार लँघाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंकी अन्तिम कलि जामा पाए। इन्द इन्दासण दर दरवाजे। सिँघ सिँघासण हरि आप बिराजे। सृष्ट सबाई अन्त विनासे, घर घर झूठे साजन साजे। अन्त मिटाए मदिरा मासी, माण गंवाए वड राजन राजे। सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी, प्रगट जोत विच देस माझे। शब्द सरूपी मारे अवाजन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व शब्द अस्वारा, पवण जोत अधारा, आप संवारे आपणा काजे। पुरी इन्द सच तख्त सुल्तान। लिखाए लिख्त श्री भगवान। गुरमुख साचे पूरी लई मात सिक्खत, बणे विच मात बलवान। एका लग्गी नाम लिख्त, लगाए वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए धर्म चलाए, मानस जन्म सुफ़ल कराए विच जहान। पंचम् भए प्रभ अनन्दा। लोकमात चढ़ाए शब्द सरूपी साचा चन्दा। गुरमुख साचे लए उठाए, बण बहाए जो खायण मूल कंदा। जोत सरूपी जोत जगाए, आप उठाए आत्म अन्धा। नाम दात हरि झोली पाए, खुशी कराए बन्द बन्दा। मंगण दर किसे ना जाए, सर्ब जीआं हरि बख्शिंदा। साचा घर इक्क वखाए, वड दाता गुणी गहिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् देवे माण विच जहान, चरन लगाए सुरपति राजे इन्दा। पंचम् सोया जागे। हरि बिराजे गुरमुख विरले चरनी लागे। वड वडभाग देस माझे। बेमुख दर तों जाण भागे। माया डस्से नागणी नागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् खेल रचाए दया कमाए, छेड छिड़ाए कोल वागे। पंचम् पंच होए प्रधाना। बेमुखां बन्न्हे प्रभ हथ्थीं गाना। जन भगतां माण रखाए जिउँ भगत धन्ने, जोत सरूपी पहरे बाना। राजे राणे लए उठाए, शब्द डण्डा मगर लगाए, सोहँ चलाए तीर कमाना। नौ खण्ड पृथ्मी वंड कराए, सत्तां दीपां दंड वखाए, चण्ड प्रचण्ड आप चलाए, करे कराए श्री भगवाना। बेमुखां अन्तिम कंड वखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, करे खेल हरि बिध नाना। पंचम् पंच प्रभाते। कलिजुग अन्धेरी रैण, लक्ख चुरासी तुट्टे नाते। होए विछोड़ा भाई भैण, हथ्थ ना आवे पूत माते। कन्त ना वेखे नारी नैण, ना कोई पुछे जात पाते। इक्टठे हो

५१२
०४

ना बहिण भाई भैण, पिता पूत ना पुच्छे वाते। मिटदे जाण सज्जण साक सैण, कलिजुग तेरे झूठे खाते। प्रभ दर्शन वेखे नैण, नार दुहागण वड कमजाते। औखा होए भाणा सहिण, भेव खुल्हाए प्रभ पंज साते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे नाम दाते। पंज सत्त सति कुलवन्ते। सद सद माती भगत भगवन्ते। एका मिल्या हरि ब्रह्मादी, उत्तम होए जीव जन्ते। शब्द सुणाए बोध अगाधी, मेल मिलावा साचे कन्ते। सृष्ट सबाई शब्द बांधी, बचया रहे ना कोई साध संते। एका पवण रहे पान्धी, लोकमात अन्तिम अन्ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे जगत पछाणे, भुल्ले रुल्ले वड सुघड़ स्याणे जन्ते। काया कोट गढ़ नगर अपारा। सर्ब भविख्त अन्दर गया वड़, पंजां चोरां झूठी धाड़ा। काया डिग्गा मात धड़, होए रोग नाड़ी नाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर खोल्हे दर, साचा इक्क भण्डारा। हरि सच सुल्तान, तख्त बिराज्जया। आदि अन्त वड मेहरबान, जन भगत संवारे काज्जया। देवे नाम जगत निशान, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया। साचा देवे पीण खाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन जिस तेरा साजन साज्जया। संत सुहेला आदि जुगादि, देवे नाम वड्डुयाईआ। शब्द मेला आत्म साध, दीपक जोती दे जगाईआ। हरि का नाम इक्क अराध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। एका वज्जे साचा नाद, अनहद धुन दे उपजाईआ। प्रगट होवे प्रभ माधव माध, जोत सरूपी भेख वटाईआ। जगत भुल्ले वड साधन साध, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरिजन जनहरि रसना रहे अराध, देवे दरस हरि रघुराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आप समझाईआ। साची सिख्या शब्द विचार। पावे नाम भिख्या, जन मंगण आए इक्क द्वार। धुर दरगाहों लेख साचा लिख्या, मेल हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत इक्क कराए वणज वपार। साचा वणज नाम अपारा। ना कोई जाणे दूजी वारा। तीजे नैण वेखे पुरख अगम्म अपारा। चौथे जोत सरूपी धारे भेखे, एका रहे जोत उज्जयारा। पंचम् लोकमात लाए लेखे, शब्द चलाए अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका नूर, भेव चुकाए वरन गोत, एका दस्से सच दुआरा। सच दुआरा साचा पौणा। भरम भुलेखा दूर कराउणा। शब्द जोती साचा नूर काया मन्दिर दीप जगाउणा। मिल्या गुण दाता वड सूर, पंजां तत्तां बाहर कढाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सर्ब टेक, करे बुध बबेक सदा सदा रसना गाउणा। चरन कँवल हरि इक्क ध्यान। आत्म जाए मवल, साचा झुल्ले सर्ब निशान। मेल मिलावा कृष्ना सवल, शब्द चले तीर कमान। करे खेल उप्पर धवल, नर हरि बली बलवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा एका रक्खणा चरन ध्यान। माण मोह विकार, जगत हँकार है। झूठी दिसे जगत धार विच संसार माया राणी होई अस्वार है। बेमुख

५१२
०४

मानस जन्म गए हार, लक्ख चुरासी गई हार है। अन्तिम वार धर्म राए मारे डाहढी मार है। जमराज करे ख्वार, वेले अन्तिम नर नार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां साचे संतां सिर पहनाए शब्द सच्चा ताज है।

❇ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल माता बिशन कौर दे गृह ❇

अकाल काल काल अकाला। परम पुरख दीन दयाल सर्ब प्रितपाला। मात गर्भ उलटा रुक्ख अग्न उदर होए रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, वसे आप सदा निराला। वसे आप सच अस्थाना। एका दसे साचा जाप, रसना गुण हरि भगवाना। जन भगतां मारे तीनो ताप, खिच्चे तीर इक्क कमाना। सदा सहाई माई बाप, गुणवन्त हरि गुण निधाना। पंज चोर रहे काया ताप, अग्नी जोत लग्गे महाना। गुरमुख माण वड प्रताप, होए रुशनाई कोटन भाना। जोती जोत सरूप हरि, एका बख्शे चरन धूढ़ सच इशनाना। नाम निरँजण निराहार। इक्को भय भंजन शब्द अस्वार। जगत सुहेला साचा सज्जण, जोती नूर करे अकार। दर दुआरे साचा मजन, भगत वछल हरि गिरधार। भाण्डे भरम सर्ब जग भज्जण, शब्द हथौड़ा देवे मार। जगत पित हरि पड़दे कज्जण, लोकमात ना आए हार। शब्द दमामे साचे वज्जण, साचे करे तन श्रृंगार। अमृत पी पी गुरमुख रज्जण, झिरना झिरे अपर अपार। पंज विकार होए दज्जण, मारे नाम कटार। जोती जोत सरूप हरि, जन भगत रिहा सदा सद पैज संवार। भगत भण्डारा सद भरपूर। मंगया एका हरि चरन द्वार, सृष्ट सबाई दिसे कूड़। पैज रखाए विच संसार, मस्तक लाए साची धूढ़। होए सहाई विच उजाड़, अन्ध अंध्यारी देवे नूर दूई द्वैती देवे साड़, वड वड दाता हरि साचा सूर। जोती जोत सरूप हरि, सद आसा मनसा पूर। भगत भण्डार भगवन दान। आप वरताए लोकमाती गुणी गुणवन्त साचे संत, जन्म कर्म रिहा विचार, पावे जगत सार। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण खेल कर, गुरमुखां कराए वणज वपार। सरगुण रूप सच्ची सरकारा। निरगुण रूप जोत अकारा। सरगुण रूप दिसे संसारा। निरगुण रूप शब्द धुन देवे धुन्कारा। सरगुण रूप दरस परस जीव जन्त उधरे पारा। निरगुण रूप हरि साचे कन्त, विरला मिले भगत प्यारा। सरगुण रूप आवे जावे मात रहावे वारो वारा। निरगुण रूप एका दस्से धारा। अटल एका एक निरँकारा। सरगुण रूप हरि खेल अपारा। वल छल कर जगत भुलावे, जुगा जुगन्ती साची कारा। निरगुण रूप इक्क अचल्ल निराहार निराधारा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी खेल आप कराए भगत उपजाए जगत वड्याए, एका मेल मिलाए, दूई द्वैती जगत नाता तुट्टे आत्म हँकारा। भोजन भोग भोग भोग चार। कृष्न देवा अलख अभेवा गुर चरन सेवा, लिखाए लेख अपर अपार। लेहज फेहज

भक्ख भोज गुणवन्ती गुण रिहा विचार। भगत भगवान भोजन करे वक्ख, चले अवल्लड़ी चाल विच संसार। चार कुन्ट आत्म दिसे दुःख, नज़र ना आए नर निरँकार। गुर सेव चढ़ाए तिन्न फुल्ल कक्ख, तन कराए शब्द अहार। पंचम् फुल्ल पंजां तत्तां करे वक्ख, देवे जोती सदा अधार। प्रगट होए सति सरूपी हरि प्रतक्ख, नैण लोचण लोचण नैण सोलां कर तन श्रृंगार। गुरमुख साचे संत जन कदे ना सोयण, एका बीज साचा बोयण, नाम नरायण अलख अपार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां भरया रक्खे सद भण्डार। भरे भण्डार भरम भउ नासे। जन चरन पनिहार, प्रभ दासन दासे। गुरमुख गुणवन्त सोभावन्ती नार, मिल्या शाह हरि सच शाबाशे। पंचम् पाए तन फूलनहार, सुफ़ल कराए काया अकार, अप तेज वाए पृथ्मी अकाशे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मानस जन्म कलि सुफ़ल कराए, लक्ख चुरासी होए रासे। नाम सति शब्द उडारी। काया बीजणा साचे वत, मात खिले सच्ची फुलवाड़ी। मेल मिलाए कमलापत, बारां मास पक्की रहे तेरी साउणी हाढ़ी। धन सुभाग धरत मात, धन गुरमुखां रक्खे लाज, प्रभ चरन छुहाई दाढ़ी। आत्म धीरज यति सति संतोखी साचा यति, सदा रहे पिछे अगाड़ी। एका नाम दिखावे साचा तत्त, पंजां चोरां रिहा ताड़ी। साचे खाते बेड़ा लए घत्त, गुरमुखां जगे जोत काया बहत्तर नाड़ी। चरन प्रीती निभे नत्त, शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी। आपे दे समझावे

५१४
०४

मति। गुरमुख तेरे दर ना आवे मौत लाड़ी। अन्तिम रक्खे प्रभ अबिनाशी पति, जंगल जूह विच पहाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, भगतां दिसे इक्क घर, जिथ्थे वसे सच हरि सच महल्ल अटारी। सच महल्ल अटल्ल अटारी सच्चा धामा। धाम अचल वसे राम रामा। शब्द जोत पवण लोकमात रिहा घल्ल। लक्ख चुरासी पाए सार विच जल थल। करे खेल छिन्न छिन्न पल पल। जोत सरूपी नर निरँकार, गुरमुख आत्म रसन चलाए साचा हल। नाम बीज प्रभ रिहा डार। एका लग्गे अमृत फल, अट्ठे पहर रहे अधार। दूई द्वैती मिटे सल, जगे जोत अगम्म अपार। भाणा वरते हरि जी कल, मूर्ख मुग्ध होण ख्वार। अन्तिम वार ना सकण झल्ल, शब्द वज्जे जगत कटार। बेमुखां हरि लाहे खल्ल, गुरमुखां रहे आत्म दर द्वार। दर घर साचे आए चल्ल, बणया रहे जन भगत भिखार। जन भगतां सद जाए बलि बलि, रसना हरि गुण रिहा विचार। जोती जोत सरूप हरि, मात देवे साचा वर, गुरमुख साचे संत जनां साची पैज संवार। राम नामा तन वसंदा। गुरमुखां पूर कराए कामा, सदा सदा सद बख्शिंदा। हरया कराए तन सुक्का चामा, बन्दी तुड़ाए आप बहाए साचा धामा। मिटे काया रैण अन्धेरी, जगत तजाए झूठा धन्दा। दिवस रैण हरि इक्क कराए, जन रसन तजाए मदिरा मासा विकारी गन्दा। एका नाउँ निरँजण गाए निज घर वासी निज आत्म डेरा लाए, गुरमुख उपजाए मात चढ़ाए साचा चन्दा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे आत्म दर, इक्क बहाए साचे घर, खुशी कराए बन्द बन्दा। सच दर गुरमुख इशनाना। उतरे दुरमति मैल प्रभ चरन ध्याना। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ रही फैल, धरया हरि भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख सज्जण संत प्यारया देवे नाम धन्न अतुट ख़ज़ाना। प्रभ ख़ज़ाना सदा अतुट्टे, होए प्रधाना चतुर सुजाना। पंजां चोरां फड़ फड़ कुट्टे, भगत भगवन्ती हरि शब्द गुण निधाना। चण्ड प्रचण्ड वज्जे तीर निशाना। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां एका शब्द दो हथ्थीं बन्न्हे गाना। गाना बन्न्हे दोहीं हथ्थ। किरपा करे हरि समरथ। शब्द सरूपी पाए नत्थ। दरस दिखाए दया कमाए, सगल वसूरे जायण लथ्थ। गुरमुख गुरसिख जन भगत प्यारे, दर घर साचे होए नाम वणजारे, देवे दात हरि एका साची वथ। नाम दात जगत वड्याई। वड करामात आत्म रुशनाई। गुर संगत साची इक्क जमायत, सच्चा नाता भैणा भाई। आदि अन्त सद पुच्छे वात, अठ्ठे पहर बैठा रहे इक्क इकांत, गुरमुख आत्म सेजा डेरा लाई। अन्दर वेख जन मार झात, जोत सरूपी डगमगाई। कलिजुग अन्तिम होई अन्धेरी रात, करे हरि रुशनाई। जन भगतां देवे दात, आत्म सच सुगात नाम भण्डारा धुरदरगाही। ना कोई पुच्छे जात पात, जोती जोत सरूप

५१५ हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, जो जन आए चल सरनाई। सच भण्डारा हरि दातारा हरि वरतार ५१५

०४ विच संसार, पुरख बिधाता पंचम् पंच आप हरि होए। लक्ख चुरासी जोत बलोए। आपणा भाणा आपे जाणे, ना कोई बुझे ०४

राजा राणा प्रभ अबिनाशी साची सोए। तिन्नां लोआं एका शब्द वञ्झ मुहाणा, अवर ना राखे कोए। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत प्यारे मात बणाए सच दुलारे, आप उठाए पैर पसारे सोए।

✻ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे दयाल बाग राधा स्वामी दे डेरे शब्द भेज्जया अते जवाब दी मंग: ✻

आगरा गुर मन्त्र नमो नमो आदि गुणवन्त स्वामी। परम पुरख दी दरस्स निशानी। जपो जपो जपो गुर देवा। तपो तपो तपो चरन ध्यानण साची सेवा। साचा नाम निधान ब्रह्म ज्ञानण, दरस्सो नाम जग साचा मेवा। बोध बोध बोध अगाधा। निर हरि निर धर निज घर साधन साधा। इक्क वर नर हरि जगत तर दरस कर माधव माधा। जोत अकार वेख विचार। गुर सतिगुर अधार। पुरख स्वामी हरि निरँकार। पूर्ब कर्म रिहा विचार। शब्द गुर गुर शब्द दरस्स साची धार। सतिगुर साचे दरस्स शब्द टिकाणा। जीव जन्त सभ भाण्डे काचे, वसे पवण इक्क मसाणा। हरि हरि इक्क हरिजन दर साचे वाचे, चढ़े शब्द बबाणा। एका शब्द लिखाओ साचो साचे, की वरते कलिजुग भाणा। गुर पीर पैगम्बर ना कोई झूठा नाचे, एका

दिसे हरि भगवाना। सच धाम सदा अस्थूल, जोत सरूपी हरि टिकाणा। प्रगट होए कन्त कन्तूहल, भेव खुल्हा श्री भगवाना। कलिजुग सिँघासण भज्जी चूल, फ़ल टुट्टे चोग निखुट्टे कलिजुग संतां टुट्टे डाहणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती खेल करे महाना। सति स्वामी सति गुणवन्ते। जगत नेहकामी पूरन भगवन्ते। पंजे चोर होए हरामी, भरम भुलाए जीव जन्ते। कोए ना पकड़े सच्चा धामी। माया भुल्ले जग रुले संत तमामी। एका जोती नूर नुरंतर, गुरूआं देवे जोत बसंतर, अमृत आत्म मधुर रस शब्द सुहागी गीत नाम निधान साची बाणी। इक्क पुरख अकाल, इक्क पुरख दयाल जगत सवामीआ। सदा सदा सद करे प्रितपाल अन्तरजामीआ। कदे ना खाए काल, ना होए नमक हरामीआ। ना छोहे जगत जंज़ाल, ना होए अन्धेरी रैण शामीआ। ना मंगे बण कंगाल, ना दिसे कोल कोई दामीआ। जन भगतां करे सदा रखवाल, जोती जोत सरूप हरि, एका नाउँ रखाए नेहकामीआ। जै जै जै देवा आदि गुर अन्तर। सृष्ट सबाई लाई सेवा, भेव खुल्हाओ दया कमाओ, सोहँ शब्द जग साचा मन्त्र। परम पुरख दा दरस दिखाओ, आत्म तृष्ना हरस मिटाओ, मुख लगाओ फ़ल साचा मेवा। जगत गुर सतिगुर साचे भगत स्वामी, मस्तक लाओ कौस्तक मनी साचा थेवा। कलिजुग अन्तिम लगा भाग। जगत वखाणे जगी जोत दयाल बाग़। प्रभ वेखे वरते आपणे भाणे, आत्म जोती जिथ्थे जगे चराग। गुर सतिगुर साचे सुघड़ स्याणे, किस पकड़ी तेरी पिछे वाग। शब्द रंग रस्स किस जग माणे कवण बुझाए माया आग। जोती जोत सरूप हरि, कवण पछाणे जन होयण भाग मथोर वड वडभाग। बाग़ दयाला सतिगुर कृपाला। हरि साचा वेखे, शब्द बणाए विच दलाला। तीजे नेत्र गुर पूरा वेखे, काया मन्दिर साची धर्मसाला। कवण तोड़े वज्जा जन्दर, कवण होए रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुर मन्त्र पुच्छे राह सुखाला। गुर मन्त्र, गुरू गुरू गुर नाद। सर्ब जीआं गुर अन्तर, एका लिव हरि रस रसन अराध। लक्ख चुरासी लग्गी बसंतर, कवण बुझाए कलिजुग आग। सति स्वामी किस वसें धाम मग्न, भेव खोल्हे शब्द सच बोले, पूरे तोल तोले विच ब्रह्माद। जोती जोत सरूप हरि, आपणी करनी रिहा कर, तिन्न पंज सत्त नौ भेव बोध अगाध। नौ खण्ड नौ द्वार। प्रभ पाई वंड विच मात संसार। सत्तां दीपां महल्ल उसार। वेखे खेल अज्ज कल्ल निहकलंकी लए अवतार। एका दिसे शब्द अटल्ल, हरि जोत सरूपी करे अकार। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी किया अकार। देणा सच्चा नाम वर, सच सदा स्वामी नाम वंडे। निर्मल होए उजागर, विच मात वरभण्डे। हरि बणे सच सुदागर कलिजुग आया अन्तिम कन्ढे। जगे जोत काया गागर, तन मन्दिर शीतल ठंडे। एका नाम रती रत्नागर, काया ब्रह्मण्ड विच ब्रह्मण्डे। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब किछ आपे जाणे, उत्भज सेत्ज जेरज़ अंडे। सच डेरा सच अस्थाना।

जिथ्थे मिले नाम भगवाना। उचे टिल्ले सारे हिले, चल्लया सोहँ तीर निशाना। भेव खुल्हाउणा बूरे कक्के बिले, पवण सरूपी मढ़ी मसाणा। रसना तीर चढ़े चिल्ले, उठे नर हरि बली बलवाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। कलिजुग अन्तिम पक्की खेती। उत्तर देणा गुर पूरे छेती। दुरमति मैल तन गंवाउणी, उत्ते लाउणी नाम रेती। काया सोई आप जगाउणी, दरस दिखाउणा नेतन नेती। जोती जोत सरूप हरि, गुर पूरे किरपा देणी कर, कलिजुग हाढ़ी होई पछेती। शब्द आए चल द्वार। मंगे वर इक्क भिखार। उत्तर देणा पहली वार। पूर्ब पच्छिम उत्तर दक्खण दिशा विचार। चौदां रत्न कर श्रृंगार सोलां कलां कलीआं कलि पहनणहार। पुरख अबिनाशी वलीआ छलीआ, पूर्ब करनी मात विचार। वड जोधा सूरा वड वड बलीआ, जन भगत दुआरे बणया रहे भिखार। एका दिसे निहचल धाम तेरा अटलीआ, आईए चल द्वार। जोती जोत सरूप हरि, इक्क जोती जगत अधार। शब्द संदेशा देणा घल। आईए धाम तेरे चल। मिलीए राम कलिजुग कल। मिटे अन्धेरी रैणी शाम, मिटे दूई द्वैती दूजा सल। पंझी भादों लेख लिखाउणा तमाम, हरि हरि हउँ हउँ जाए बलि बलि। जगत त्यागणे सर्ब कम्म, वेखणा धाम इक्क अटल। जोती जोत सरूप हरि, शब्द लेख गुर पूरा वेख भारत खण्ड रिहा घल। निहकलंकी जोत नुरानी। एका दिसे साचा शब्द सच्ची गुरबाणी। सच संतां सद हिरदे वसे,
५१७
०४
५१७
०४
गुण गावत सुख सहिज समाणी। माया जाल जगत ना फसे, जगत विद्या हीण आत्म ब्रह्म ज्ञानी। एका राह साचा दस्से, छुट्टे जम की काणी। पंजां शब्दां जो जन हस्से, वसे घर सुल्तानी। जोती जोत सरूप हरि, अग्गे दिसे इक्का जोत सच निशानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जोत धर, आदि शक्त आदि भवानी। करे अकार अकाल अकाला। दीना बंधू दीन दयाला। पंख पंखेरू आत्म अन्धू, गुर गोपाला। लक्ख चुरासी वड प्रबंधू, हित्त पित रखवाला। वसे पड़दे ओहले कंधू, दीपक जोती इक्क उजाला। जोती जोत सरूप हरि, रूप रंग क्या कोई वखाणे, सूहा पीला लाल चिट्टा काला। दीनां नाथ जगत ज्ञाता। सृष्ट सबाई सगला साथ पुरख बिधाता। कौस्तक मणीआं रक्खे माथ, शब्द चलाए साची गाथा। आपणा भाणा रक्खे आपणे हाथ, सोहँ चलाए साचा राथा। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग लोकमात रचाए आपणी गाथा। सनक सनंदन सनातन संत कुमार। हरि भेख पहली वार। दूजा वेख रूप बराह अपर अपार। यज्ञे पुरष तीजा कर विचार। हाव ग़रीब चौथी धार। पंचम् नरायण कर अकार। छेवें कपल मुन नाउँ विचार। सतवें दतात्रै अठवां रिखप देव विच संसार। नौवां पृथु रूप करतार। दसवें मत्स खेल न्यार। ग्यारवें कच्छप नर निरँकार। बारवें मोहणी रूप विच संसार। हँस मोती चुगे चोग तेर्हवीं धार। बावन रूप चौदां तबकां, प्रभ किया चौधवीं वार। पन्दरवां

ਪੁਰਖ की धार। वैद धनंतर कर विचार। सोलवें नर सिँघ रूप हरि करतार। सतारवें हरी गज़ पार उतार। अठारवें नर नरायण भगत ध्रू बाल अवस्था दए प्यार। वार उन्नी राजे राणयां चोटी मुनी परस राम इकी वार। वार बीस भए जगदीश, प्रगट होए राम अवतार। इक्कवीं वार कर अकारा। वेद व्यासा पिता नाम ना कोई उचारा। पुरख अबिनाशी साची धारा। अवतार बाईसवां कृष्न मुरारा। तेईवीं वार ल्या अवतारा, नाम बुद्ध विच संसारा। लोकमात किया युद्ध, मदिरा मास ना खाए कोई जीव गंवारा। हरि बिन अवर ना दीसे कोई आत्म करे सुध, कलिजुग वध्या अन्त विकारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए चवीआं अवतारा। जोती जामा शब्द चोला। सोहँ पवण साचा बोला। नाम ओअँ वज्जे ढोला। जन भगतां आत्म रंग गीत सुहागी साचा सोहला। सदा सद वसे अंग संग जोत निरँकार शब्द अधार पवण अस्वार, आप रखाए पड़दा उहला।

५१८
०४

✻ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी भारत दे राष्ट्रपति डाः रजिन्दर प्रशाद नूं शब्द भेज्जया गया ✻

वाली हिन्द सच्चे सुल्तान, प्रगट होए हरि दाता गुणी गहिंद, जोत अधारी शब्द अस्वारी पवण उडाण। मनमुखां आत्म होई हँकारी जगत ख्वारी, भुल्लया इक्क भगवान। कलिजुग चली ठग्गी चोरी यारी, दूई द्वैती तिक्खी आरी, लोकमात कर जोत अकारी, प्रगट होए श्री भगवान। वाली हिन्द सच तख्त ताजे। कवन जन तेरा साजन साजे। आदि अन्त प्रभ बेड़ा रिहा बन्न, प्रगट होए प्रभ देस माझे। सदी चौधवीं चढ़या साचा चन्न, धरत मात संवारे तेरे काजे। सत्त दीप नौ खण्ड करे खन्न खन्न, चार कुन्ट कराए भाजे। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी मात गाजे। वाली हिन्द तेरा धर्म युद्ध। लेख लिखाया प्रभ सच कर्म, उत्तम होए बुध। मिटे जगत अन्धेरा झूठा भरम, प्रभ दरस नेत्र काया सुध्ध। सुफ़ल होए मानस जन्म, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, शब्द अस्व हो अस्वार, सच सिँघासण बैठ कुद्द। सच सिँघासण सिँघ आसण सच्ची सरकारा। राउ रंक सर्ब विनासण, अन्तिम आए मात हारा। एका जोत निरालम प्रभ अबिनाशण, सोहँ शब्द सच्चा जैकारा। चार वरन गाए रसन स्वास स्वासण, मिटे कलि अन्ध अन्धयारा। जोती जोत सरूप हरि, मात जोत जगत बलोए, प्रगट होए निहकलंक चवीआं अवतारा। नर अवतार जोत प्रकाशे। जगत भेख चुकाए, मेट मिटाए मदिरा मासे। साचे लेख राउ रंक लिखाए, वेख वखाणे प्रिथी अकाशे। राज राजान शाह सुल्तान जगाए, चार वरन इक्क सरन रखाए, एका धाम सच निवासे। वरन बरन कोई रहण ना पाए, जोती जोत सरूप हरि, जीव जन्त साध संत रसना गायण

५१८
०४

स्वास स्वासे। वाली हिन्द सच कर्म कमाउणा। पुरख पुरखोतम सदा बख्शिंद, गऊ ग़रीब निमाणयां गले लगाउणा। दूई द्वैती कढ्ढुणी चिन्द, जगत जगत निमाणयां सिर हथ्थ रखाउणा। कूड़ कुड़यारा चले जिउँ सागर सिंध, धर्म कर्म जगत बचाउणा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नर अवतार, साचा डंक इक्क वजाउणा। सच घर सच्ची वड्याई। निरगुण नूर नुरानया, जिस जगत बणत बणाई। एका जोती हरि भगवानया, मति मन बुध काया मन्दिर विच टिकाई। साचा देवे ब्रह्म ज्ञानया, जोती जोत सरूप हरि, देंदा रहे सदा वर, हरि घर दर सदा इक्क पछानया। सच दरबार सच्ची जग शाही। एका चित चित्तवे, प्रभ अबिनाशी साचा माही। हरि दर्शन लोड़े नितवे, जगत तुट्टे फाही। एका सज्जण साचा मितवे, जोत सरूपी हरि रघुराई। भारत खण्ड सच्ची सरकारन। पुरख अबिनाशी पाई वंड, नौ खण्ड साची धारन। वेख विखाणे हरि ब्रह्मण्ड वरभण्ड, उपजाए राजे राणे। हथ्थ फड़ाए इक्क धर्म चण्ड प्रचण्ड, चले चलाए आपणे भाणे। बन्न्हे दात पल्ले गंढ, सति संतोखी हरि महाने। एका बख्शे तन काया ठंड, देवे माण वड जगत माणे। जोती जोत सरूप हरि, राउ रंक शाह सुल्तान सर्ब जीआं किछ आपे जाणे। किशना पक्ख काया अन्धेर। हरि हरि प्रभ लए रक्ख, जिस जन करे मेहर। भरे भण्डारे ख़ाली सक्ख, वक्त सुहाए नेरन नेर। जगत वड्याई प्रभ रक्खे पति, चुकाए मेर तेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
५१६ ०४ साचा दीपक जगत जगाए, मिटे अन्ध अन्धेर। रोग सोग तन चिन्त विनासे। एका बेनन्ती गुर चरन पासे। रसना शब्द ५१६ ०४
साचा मंत, सोहँ शब्द आत्म वासे। मिले दात साचे संत, लग्गे भाग गर्भ वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीपक जगत जगाए, सुलक्खणी कुक्ख भाग लगाए, दु:ख दर्द हाकन डाकन घर छड्डुण नासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन गायण स्वास स्वास स्वासे। काया मठ तपे तन्दूर। उलटी गिढ़े लड्डु, हड्ड पिंजर होया चूरो चूर। भौं भौं थक्के अड्डु सड्डु, कोई ना मिल्या दाता सूर। गुर संगत मिल्या इक्क इक्ड्डु, प्रगट हरि हाज़र हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब गुणां आपे भरपूर। वायू विवाद अग्नी तेजा। भाग लगाए काया मन्दिर साची सेजा। रोग गंवाए काया कन्दर, शब्द मारे तिक्खा नेजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त जन झोली पाए, सुफ़ल कुक्ख जगत कराए, उपजे पूत नाम रक्खणा सिँघ गुरमेजा। काया सागर डूंघी भवर। काची गागर विच दिसे गहर गवर। जन आए दुआरे प्रभ किरपा धारे, मानस जन्म जाए सवर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख ना जाणे कोई अवर। खिट्टा रोग सहँस नवृती। जगत विजोग मात प्रकृती। जिस जन लिखे धुर संजोग, बख्शे चरन प्रीत साची बिरती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंग संग संग अंग वड सूरा सरबंग, चिन्ता रोग करे नवृरती। तुट्टे जगत जंज़ाल होए छुटकारा। गुरमुख चले साची चाल,

बणे नाम वणजारा। प्रभ आपे रक्खे सुरत संभाल, पंचां फेरे सिर शब्द आरा। जन भगत ना होए कदे कंगाल, प्रभ पल्लू रक्खे सदा भारा। सच वस्त रक्खणी नाम संभाल, सोहँ गाउणा वस्त शब्द अपारा। तीर्थ नुहाउणा काया सुहावे ताल, शब्द सुरत मन जगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुच्च जगत गुरदेव, फड़ फड़ बाहों राहे पाउणा। किंगरे किंगरे वजे मृदंग। इक्क दूजे दा तुट्टे संग। अन्दर बाहर तन ख्वार, दिसे भुक्ख नंग। तुट्टा नाता जगत प्यार, मानस देही दिसे भंग। कर्मा आई दिसे हार, दिवस रैण रहे विचार। ना कोई निभाए साचा संग। चढ़या रहे इक्क बुख़ार, इक्क दूजे नूं वज्जे डंग। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, एका दात दर रहे मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गुण जन सदा उचार, सति सरूपी जायण लँघ। घर घर बाहरा इक्क रख्वारा, चण्ड प्रचण्ड शब्द डण्ड, होए आप सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत पैज संवारे, जन आए चरन द्वार। मदिरा मास देणा तज। गुर संगत विच जाणा सज। एका दर एका घर बणना मंगत, अमृत पीणा नाम रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पड़दे रिहा कज्ज। सच नाम गुर चरन भिखारी। कर किरपा देवे हरि, जो जन आए दर द्वारी। आप चुकाए जगत डर, जगत माया ना करे ख्वारी। चरन लाग गुर जाए तर, पूरन पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सोहँ नाम शब्द सच्ची खुमारी। दु:ख रोग मिटे संताप। मिले नाम जोग वड प्रताप। लिख्या धुर संजोग, सोहँ जपणा साचा जाप। दरस दिखाए हरि अमोघ, प्रगट कर आपणा आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप मिटाए कोटन पाप। तुट्टी गंढ्ढे, प्रभ चरन जुड़ंदा। दुध पुत्त दात साची वंडे, दु:ख रोग मिटंदा। कदे ना देवे हरि जी कंडे, घर बहाए धाम सुहंदा। आत्म होए कदे ना रंडे, साची सेजा हरि तख्त बहिंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा दान, पूरे घाट आप करंदा। पूर कराए घाटा। जोत जगाए विच ललाटा। सहिँसा रोग भुक्ख गंवाए, दूर कराए दुखड़ा वाटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहीं हथ्थीं आप सवाए काया चोली तन मात पाटा। दर घर सीतल अमृत धारी। हरि नर राखो सदा चीतल, बख्शे अवगुण भारी। जगत सुहेला साचा मीतल, साचा वणज करे वपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चरन सरन इक्क धर्म, मंगणा नाम दर भिखारी। साचा नाउँ रसना गाउणा। प्रभ पकड़े बाहों, चिन्ता सोग सर्ब मिटाउणा। जीआं जन्तां रक्खे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ रखाणा। आपे बणे प्रभ पिता माउँ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन चरन ओट इक्क रखाउणा। साचे अमृत साची धार। परम पुरख प्रभ साची कार। सुक्का काया हरया बिरख, लग्गे फल साचे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुख चुआए मेट मिटाए, उपजाए अमृत ताल। पुत्तर धीआं सुखी जीआ।

मात पित पित मात अमृत रस साचा पीआ। गुर चरन प्रीती साचा हित्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सहिंसा रोग जगत गंवाए निर्मल कराए जीआ। जगत विहारा औखा पन्ध। ना दिसे कोई सहारा, कर्मी ढठ्ठी कंध। मंगण आए चल दुआरा, प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्न। ख़ाली भर जगत भण्डारा, मिटे धूंआं धार अन्धेर अन्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुशी करा बन्द बन्द। चरन धूढ़ मजन इशनान। हरि साचा साक सैण सज्जण, सदा सदा मेहरबान। भाण्डे भरम प्रभ दर भज्जण, चुक्के जम की कान। होए सहाई पड़दे कज्जण, देवे नाम निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती जो जन कमान। निर्मल होया जगत सरीर। काया मन्दिर टुट्टी धीर। हाडी हाडी रहे पीड़। कोए ना मिल्या साचा गाडी, कटे अन्तिम भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जन साचे हरि, रोग सोग कट काया भीड़। चरन लिव हरि चरन ध्याना। ना कोई जाणे शंकर शिव ब्रह्मा विष्न महेष गुण निधाना। एका नाउँ जगत दिसाए, एका एक हरि नर गुणवन्त गुण निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ शब्द सच्चा दाना। नाड़ी पिंजर हड्ड मास। अड्डो अड्डी दिसे कंगर, तापां रोगां होया दास। काया सुक्की होई ढिंगर, सदा रहे मन उदास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आए दर, दुक्खां रोगां करे बन्द ख़लास। हड्ड नाड़ी रहे पीड़ा। दुखी दिसे सदा जीअड़ा। काया
५२१ ०४ खाए मास अहारी कीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आए दर काया रोग कट भीड़ा। चरन प्रीती मंगे ५२१ ०४
मिले जोत हरि भगवाना। काया खोल्हे बन्द सोत, उपजे ब्रह्म ज्ञाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा दुरमति मैल रिहा धोत, गुरमुख चरन धूढ़ करे इशनाना। सुखला सीथल सरीरा। चलदा रहे नीर नीरा। काया मन्दिर ढलदा रहे, दुखी रहे जीअड़ा। अग्न तन्दूर बलदा रहे, लग्गी रहे दुहागण पीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर द्वार किरपा धार, बन्न वखाईं मात बीड़ा। कर्म कमाई कृतघन। गुर दर भुल्ल बख़्शाई, दर दुआरे सच धन्न। झूठा रोग देणा गंवाई, प्रभ बेड़ा देवे बन्न। सोहँ शब्द रसना गाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा देवे नाम धन।

✻ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी सतिसंग घर ब्यास सतिगुर गुरबचन सिँघ नूं शब्द भेज्जया
जवाब दी मंग शब्द विच कीती ✻

आदि नमो शब्द गुरदेव सतिगुर सावण जगत उज्जयार। पतित पावन जीआ जन्त उधार। करया छल जिउँ भेख बावन, मंगण आया बण भिखार। किसे हथ्थ ना आउणा दामन, ना होया कोई जामन, हरि घर सच्ची सरकार। काया मन्दिर

वसे कामनी कामन, तन बैठी कर श्रृंगार। हिन्दू सिख ईसाई ब्रह्मण, गुणवन्त गुण गुर कोए करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आपणी जाणे आपे सार। सतिगुर सावण सहिज धुन मातर। वेद पुरान कुरान अंज़ील, घर घर बैठे वाचण शास्त्र। दर घर साचे ना दिसे इक्क दलील, तन पाया ना दिसे नाम गातर। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे मात रहावे, छिन्न भंगर एका अंगर, नाद धुन अनहद वजावे। सावण धुनी मस्त दीवानी। गुरमुख विरला जाणे वड गुण गुणी, देव लोक दी इक्क निशानी। साधन संतां आत्म पुणी, वेख वखाणे वड विद्वानी। सच पुकार इक्क हरिभगत सुणी, लोकमात लए अवतार, जोती जोत सरूप हरि, चिट्टे अस्व पंचम् जेठ हो अस्वार। सतिगुर सावण सुख अनन्द घनेरा। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, पुरख अबिनाशी पाए फेरा। सति सरोवर गुरमुख विरले नुहावण, बेमुखां डिट्ठा भरमां डेरा। जोती जोत सरूप हरि, मंगण आया नाम वर, उन्नी हाढ़ी पाया फेरा। पंचम् पंचम् शब्द तन वजे। शब्द चोट इक्क नगारे लग्गे। दुरमति मैल कढ्ढे खोट, तरन तारन सिँघ बग्गे। चार कुन्ट आलणिउँ डिग्गे बोट, इक्क शब्द हलूणा वा तत्ती वगे। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर, लोकमात हरि किरपा कर, एका लग्गे सर्ब अग्गे। पंचम् शब्द धुन धरन पति। आपणी करनी रिहा कर, लक्ख चुरासी सैनापति। मानस देही वेखे खुल्हे हरन फरन, साधां संतां वड महंतां जाणे मित गत। पुरख अबिनाशी एका साचा कन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्त जिस बणाई साची बणत। सत्तवें सति निरँजण नर हरि किरपा आप करांयदा। वेख वखाणे सच दर, शब्द लेख घर पुचांयदा। लक्ख चुरासी चुक्के डर, भरम भुलेखे दूर करांयदा। जोत सरूपी जामा धार, सोहँ शब्द बाज उडांयदा। चार वरन देवे हरि एका सर, अमृत आत्म सीर पिलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिसंग ब्यासा निज आत्म वासा शब्द मंग इक्क मंगांयदा।

५२२
०४

❇ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी सैदपुर संत लाभ सिँघ नूं शब्द भेज्जया अते उत्तर मंगया ❇

कँवल कल कल किस उपजाई। किस वसे घर महल्ल करे रुशनाई। सच सुहञ्जणी केहड़ी घड़ी केहड़ा पल, प्रभ जोती रंग वटाई। शब्द उछल किस देवे दर कवण पवण चलाई। कवण लए प्रभ अमृत जल, काया सिंच कराई। कवण बणाए काया खल, हड्ड नाड़ी मास विच टिकाई। जोती जोत सरूप हरि, की करे खेल रघुराई। कवण धाम तख्त सुल्तान। कवण राम जिस दीआ पीण खाण। कवण नाम जिस नाम पद निरबाण। कवण दाम दोए जहानी गुरमुख खाण। कवण शाम शाम मेल मिलावा श्री भगवान। कवण जाम मदिरा रस सर्ब मिट जाण। जोती जोत सरूप हरि, बणया आप बाल अञ्याण।

कवण घर हरि संत वसेरा। कवण दर ढहे भरमां डेरा। कवण हरि चुकाए मेरा तेरा। कवण हरि शब्द पाए चार कुन्ट घेरा। कवण हरि जोती जोत सरूप हरि, जिस बणाया तन मन्दिर तेरा। तन मन्दिर बणी इक्क अटारी। तिन्न सौ सठ हाडी जोड़ी अंग अंग वारो वारी। हथ्थ पैर मुख नाक लगाया, ठोडी मुखड़े उप्पर उभारी। बत्ती दन्द हरि बख्शिंद रसन चलाई, दोहां धिरां मेल मिलाई काया सिंची तन क्यारी। ना दिसे वसे अन्दर, बाहर भेव खोल्ह्रे दस्म दुआरी। केहड़ा वज्जा आत्म जन्दर, संत असंत खोल्ह्र खोल्ह्र थक्के हारी। की रूप निरँजण जोत जगे काया कन्दर साची इक्क निरँकारी। साचे संत सतिगुर दुलारे। लिखणा लेख वारो वारे। संत वणजारा हरि निरँकारा, निरँकार उधारा गुरमुख प्यारा। दोहां धिरां एका धार सच्ची धारा। पूरे सतिगुर दया कमाई, आत्म शक्ती जगत भगती विच टिकाई। बूंद रक्ती सुफ़ल कराई। जोती जोत सरूप हरि, पूरन संतां रिहा जगाई। मिली दात वस्त अनमुल्ल। पूरे तोल जाणा तुल। साचा फल साचा मेवा ना जाए हुल्ल। शब्द भेव दर इक्क खुल्ह्राउणा, कोए ना लग्गे मात मुल्ल। सतिगुर पूरा आत्म घर बहाउणा, जगत माया वेख ना जाणा भुल्ल। जोती जोत सरूप हरि, सच भण्डारा रक्खे खुल्ह्र। लाभ सिँघ संत लाभ। देणा जवाब दो आब। दर दरवाजा लिखणा लम्मा चौड़, जिथ्थे वसे ग़रीब निवाजा। चिट्टा अस्व केहड़ा चुक्की खलोता पौड़, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म अग्न बुझाए, साचा सगन मुख लगाए वेखे परखे मिठे कौड़। तिन्न पंज सत्त नौ दस अठारां। उत्तर देणा धन्नवाद कर जोड़ सर्ब विचारां। शब्द घोड़ा रिहा दौड़, चार कुन्ट चार दिवारा। जोती जोत सरूप हरि, एका रक्खे साची धारा। चार दिशा दर दरवाजे। हरि महल्ल ग़रीब निवाजे। सदा सदा सदा अटल्ल, लक्ख चुरासी साजन साजे। जोती जोत सरूप हरि, कवण दुआरे गुरमुखां मारे आवाजे। शब्द धार किस आवे दुआरे। कवण कराए पार देवे कवण सहारे। केहड़ी बन्न्हे हरि जी धार, जीव जन्त ना कोई जाणे। जोती जोत सरूप हरि, भगत भगवन्त किवें कराए मेल श्री भगवाने। कवण दुआरा कवण धामा। किथ्थे वज्जे शब्द दमामा। सुणे सुणाए बूझ बुझाए हरि भगवाना। साची सूझ जिस दवाए तुटे माण ताणा। एका दूज तन गंवाए, सति संतोखी बन्न्हे गाना। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन मिल्या हरि भगवाना। मैं तूं कुछ ना जाणे। हउँ हउँ बन्दा तुछ पुछ श्री भगवाने। ना दाढ़ी ना मुच्छ, रूप रंग ना रेख भेख, ना दिसे केस गुण निधाने। किस कहीए गुर क्या गुर का धाम। किस कहीए सुर, पीए अमृत जाम। किस कहीए चोर, होए निमक हराम। हरिजन जन हरि संत सुहेले लिखणा भेव तमाम। निरँकार कवण बणाए। किस द्वार दए बहाए। घर बाहर दिस किसे ना आए। छप्परी छन्न ना कोई रखाए। बस्त्र तन ना कोई छुहाए। शस्त्र अस्त्र ना हथ्थ उठाए।

जोती जोत सरूप हरि, केहड़ी मनी केहड़ी भव आपणा आप उपाए। कवण पिता कवण माता। जिस जम्मया पुरख बिधाता। कवण गुर जिस दीआ नाम दाता। जोती जोत सरूप हरि, कवण वरन कवण गोत, केहड़ी रक्खे उत्तम जाता। सावण सिँघ किस उपजाया। मातलोक किस नाम रखाया। कवण मात जिस सीर पिलाया। कवण पूत जिस रसना लै आत्म तृप्ताया। कवण पिता जिस उंगली लाया। कवण गुर जिस नाम दवाया। कवण हरि जिस मस्तक लेख लिखाया। कवण दर जिस घर मंगण आया। कवण सर जिस साचे तीर्थ नुहाया। लोकमात जन्म धर किस बिध सिँघ सावण गुर अख्वाया। लाभ सिँघ उठ हो होशियार। दूजा कर नाल गुरू त्यार। तीजा हरि शब्द अस्वार। चौथे घर वेख खण्डा निहकलंक दो धार। पंजवां फड़या हथ्थ विच डण्डा, मारे सिर काड़ काड़। तेरी आत्म होई घमंडा, प्रभ अबिनाशी देवे झाड़। तूं लोकमात विच रंडा, सीस ना निवाया सतारां हाढ़। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, निहकलंक नाउँ रखाया, तिन्नां लोकां साचा लाड़।

✻ १२ भाद्रों २०११ बिक्रमी पाकिस्तान मुहम्मद दीन रोड़ी सखर शाह मस्ताना नूं शब्द भेज्जया गया ✻

रोड़ी सक्खर सखी सुल्ताना। मौली मैहन्दी हथ्थीं गाना। मिले नाम खुदाई अल्ला नूर नुराना। बैठा रहे इक्क इकल्ला, अट्ठे पहर मस्त मस्ताना। शब्द मुलाणयां छड्डुया सच महल्ला, शेख़ पीरां तन होया जगत बेगाना। जोती जोत सरूप हरि, देवे दरस आप भगवाना। हरि खुदाई, खुदी खुद बन्दे। ना होए जुदाई, झूठे जगत धन्दे। एक ओट नूर इल्लाही, जगत त्यागे पापी गन्दे। शब्द स्वासे रिहा गाई, आत्म तुट्टे जिंदे। जोती जोत सरूप हरि, नाम रंगण रंग रंगाए, शब्द कंगण तन पहनाए, साचा धाम हरि सुहंदे। मन मुस्तफा, नूरी जोत अल्ला। आप कटे कटाए जगत फाह, अजमतो कसमतो अजि बवा अतुलहे सच सुहेले। चार यार पीर दस्तगीर, मौलाना शाह फ़कीर हकीर, आपे गुर बणया आपे चेले। वजदा रहे शब्द तीर, हरि जोती साचे मेले। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आपणी खेल आपे खेले।

हरि निरँजण निरगुण धार। एका नाम साचा अंजन, ना कोई वेखे विच संसार। जोती नूर नूर अकार। धुरदरगाही साचा माणक मोती, साचा शब्द इक्क अपार। नाल रलाए आप उठाए पवण रूपी साचा बन्ने इक्क प्यार। निर्मल बाती संग

५२४
०४

जगे जोती, काया बणे इक्क अकार। जोती जोत सरूप हरि, त्रैगुण आपणे हथ्थ रखाए, आपे जाणे आपणी सार। त्रैगुण हरि जी वस। गुर पीर सभ रहे दस्स। लोकमात जो आई नस्स। अन्तिम काया होई भस्स। एका जोती साचा नूर, प्रकाश कोटन रवि ससि। हरि शब्द साची तूर, हरि सुनेहड़ा रिहा दस्स। पवण स्वासी सर्ब गुणां भरपूर, हरि हिरदे साचा रिहा वस। तिन्नां मेल सति सरूर, हरि दर घर एका रिहा दस्स। जोत अधार पीर गुर शब्द धार लिखी धुर पवण अस्वार। नर हरि करे विचार। हरि चरन लोकमात जाए जुड़, जोती जोत सरूप हरि, एका रंग वसे, राह जगत साचा दस्से, दर साचा रिहा लोड़। तिन्नां लोआं हरि प्रभ जाणे। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध संत, आदि अन्त जुगा जुगन्त, आत्म वेखे मार ध्याने। जगत सहाई साचा कन्त, एका मंगे दात जगत महाने। जोती जोत सरूप हरि, पवण बूझ आप बुझाने। एका मंगे नाम मजूरी। कदे ना मंगे लुची पूरी। हथ्थीं कुट ना खाए चूरी। जोती जोत सरूप हरि, चरन ध्याना शब्द ज्ञाना आसा मनसा पूरी। चरन नात पुरख बिधाता। साची मंगे मंग लोकमात गुरमुख साचे उत्तम जाता। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, इक्क अधार जोत रखाता। जोत अधारी हरि निरँकार। अट्ठे पहर ख़बरदार। भिख्या मंगण ना जाए किसे द्वार। जन भगतां देवे आत्म सुखा, शब्द धुन साची धार। उज्जल होए मात मुखा, तुट्टे जगत जंज़ाल। जोती जोत सरूप हरि, साचा नाम अमृत जाम गुरमुखां खाए रिद्धी दाल। गुरमुखां रसना चक्की पीसे। शब्द आटा हरि जगदीशे। अमृत मेल ठंडी जल धार। मिटे भेव बीस इक्कीसे। साचे घर दिसे निरँकार, जोती नूर एका वेसे। मंगण आए जन भिखार, भगती दान विच जहान, छत्र झुलाए साचा सीसे। जोती जोत सरूप हरि, तृष्ना भुक्ख बंधन सभ कटान, कोई ना करे प्रभ की रीसे। इक्क इकल्ला हरि रखवाला। दूजा दिसे सच महल्ला, सृष्ट सबाई करे प्रितपाला। तीजे शब्द साचा भल्ला, लोकमात रिहा वार संभाला। चौथे घर जन संतां हल्ला, होए आप रखवाला। पंजवें घर जगे जोत घड़ी घड़ी पल पला। तिन्ने धार अवल्लड़ी चाल। छेवां घर डूंघी डल्ला, जिथ्थे दिसे जम का काल। सतवें घर सति पुरख सतिवाद, एका खेल रिहा वेख विचार। अट्ठ अट्ठ अट्ठ चौबीसा, तिन्न पंज सत नौ पूर्ब जाणे साची धार। नावें दर भुल्ले रिखी रिखेशा, अन्तिम बाज़ी गए हार। दसवें घर एका हरि नर जगदीस, जोत सरूपी बैठा कर अकार। एका दस्से शब्द हदीसा, खाणी बाणी कुरान अंजीलां वसे बाहर। साचा नाउँ जिस जन रसन पीसन पीसा, प्रभ सोहणा करे अहार। रसना पीसे चिट्टा आटा। प्रभ पूर कराए मात घाटा। शब्द देवे साची तूर, जगे जोत विच ललाटा। आसा मनसा हरि हरि हरि सदा पूर, अमृत देवे आत्म साचा बाटा। पंचम् तत्ती कढ्ढे कर कर चूर, रसना रस रसायण जिस जन चाटा। जोती देवे साचा नूर, दुरमति

पड़दा आपे काटा। जन भगतां सद हाज़र हज़ूर, नेड़े रक्खे अट्ठे पहर वाटा। साचा देवे तन सरूर, ठंडा रक्खे काया माटा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे इक्क नाम वर, लोकमात ना आवे घाटा। दहि दिशा हरि समांयदा। मात पताल आकाश, दिस किसे ना आंयदा। जीआं जन्तां निज आत्म रक्खे वास, आपणा भेव छुपांयदा। गुरमुख साचा संत साजन होए चरन दास, पूरन भेव खुल्हांयदा। रसना गाए स्वास स्वास, जगत मुरारी लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगत वधाई, जगत सहिंसा होए दूरी, धाम साचे भोग लगांयदा। निरगुण धार सरगुण खेल, सरगुण मेल निरगुण जोत अकार, निरगुण निराहार सरगुण सालस नार घर सवाणी। मुखों बोले दुध्ध पानी। रसना तोले अकथ्थन कहानी। आत्म अतीत सदा अडोले, पाए पद निरबानी। लग्गे भाग काया चोले, जगे जोत मिले गुर विण मसाणी।

❇ १४ भाद्रों २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल माता बिशन कौर दे गृह ❇

तन शृंगार हरि का नाउँ। निभे नाल सभनीं थांउँ। जगत रीती सच्ची चाल, हँस बणाए काउँ। एका शब्द सच्ची ढाल, सद रखवाल पिता माउँ। पोह ना सके कदे काल, तोड़े जगत जंज़ाल, रक्खे ठंडी छाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सोए पूत धरत मात उठाए, शब्द सरूपी पकड़े बाहों। हरि सज्जण जगत गुसाँईआ। सच ताल तेरे दर ते वज्जण, ढोल मृदंग ना कोई सहाईआ। गुरमुख साचे संत जन जगत विकारा तज्जण, अमृत देवे साचा नाम दवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहलां काया मन्दिर आपणा आपे ढाईआ। काया मन्दिर ल्या ढाह। प्रगट होया सुहञ्जणी थां। जोत सरूपी जामा पाया, निहकलंकी नाउँ रखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक तेरा सोहणा सच्चा रक्खया नां। पुरी घनक हरि देह तजाई। छब्बी पोह दिन दिहाड़े वज्जी वधाई। कलिजुग जीआं दिन आए माढ़े, देवे लोकमात गीत सुहागी गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ पहली बणत बणाई। पंचम् जेठी सौ बीस। प्रभ रसना गाई मातलोक राग छत्तीस। नारद मुन शिव शंकर ब्रह्मा गणेश महेष हरि जगदीश। तिन्नां लोकां कोए ना चले किसे पेश, चार कुन्ट इक्क खुदाई सच हदीस। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मन्दिर आप तजाया, दिवस सुहाया पोह छब्बीस। काया चोला हरि जी छड्डया। शब्द झण्डा मात गड्डया। सोहँ डण्डा हथ्थ फड़या वडे वड वड्डया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां सिर आप लगाए, खाली घर कोए ना छड्डया। इक्क

५२६
०४

दर द्वार हरि पताल अकाश। चुप्प चुपीता आत्म वस्सया, गुर संगत मन रिहा उदास। पुरख अबिनाशी किस वसे पास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया पुत्तर धी मात पित भैण भाई सारे भए उदास। तीजा साल हरि विचारया। तिन्नां लोआं पावे सारया। जोत सरूपी हरि निरंकारया। लोकमात जोत जगाए दया कमाए, साचे रंग रंगे करतारया। साचा हुक्म इक्क सुणाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणा भेव आपणे हथ्थ रखा रिहा। तीजे साल हरि करे जणाई। गुर संगत लए उठाई। किरपा कर साचा हरि, आपणी बणत रिहा बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न नींह रखाई। बणया मन्दिर इक्क न्यारा। किया खेल हरि गिरधारा। काला रख्या आत्म अन्दर, चारों कुन्ट धुंदूकारा। शब्द मारया साचा जन्दर, तुट्टे माण सर्ब हँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां तत्तां करे ख्वारा। पंजे तत्त होयण ख्वार। तीजे बरस वज्जी कटार। मानस देही आई हार। पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी गुरमुख विरला पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपे जाणे आपणा सच विहार। सप्तम साल सति कर कर मनंता। आपे चले नाल नाल, भाणा आपणे हथ्थ रखंता। राणे राजे राजे राणे सोए दए उठाल, शब्द उठाए हरि भगवन्ता। जुगो जुग चले अवल्लड़ी चाल, नर हरि साजन साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतवें साल गुरमुख लाल आपणे संग रखंता। सत्तवें

५२७ ०४ साल सति करतारया। प्रगट जोत सिँघ सिँघासण उठे मार छाल हरि निरंकारया। चार कुन्ट वेखे वेख वखाणे, करे खेल अपर अपारया। संत साध ना करे पछाणे, इक्क अन्धेर सृष्ट सबाई छा गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द राग साचा कन्न लोकमात उपजा रिहा। साल सतवें हरि दलेरा। वेख वखाणे सर्ब गुरदुआरा मन्दिर मठ डेरा। आपणा भेव आप खुल्हाणे, शब्द लेख लिखाने, जगत चुकाए मेरा तेरा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई करे हेरा फेरा। तिन्न अस्सू हरि रचन रचाई। धाम मन्दिर नींह रखाई। सत्तां दीपां सुन समाधी शब्द अगाधी रीत चलाई। एका खेल किया वड नादन नादी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती मात जगाई। बणया मन्दिर धामा। हरि वड़या अन्दर रामा। जो घड़या सो फड़या, ना लाए कोई दामा। साल सतवें घोड़ी चढ़या, रथ रथवाही कृष्न शामा। मन मतीआ लेख मात सड़या, वज्जया शब्द दमामा। जतीआं सतीआं महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पछाणे वेखे कामणी कामा। सतवें साल हरि निरँकारा। करे खेल अपर अपारा। गुर पीर औलीए नेत्र वेखे, दोए लोयण बन्द कर नैण मुँधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी जोती कर अकारा। कर अकार खेल अवल्ला। जगत धार विच संसार चाल अवल्लड़ी चला। चरन छुहाए जमन किनार, आत्म राज रहे थर थला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे ५२७ ०४

धाम इक्क इकल्ला। अस्सू तिन्न हरि बनवारी। मारी शब्द इक्क उडारी। जोत सरूपी पवण अधारी। निहकलंकी नर अवतारी। राज दुआरे करे ख्वारी। प्रगट होए शाह सवारी। कोई ना अग्गे करे ना, शब्द खण्डा दिसे भारी। गुरमुखां पकड़े हरि जी बांह, आप उठाए वारो वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साजण मीत मुरारी। मीत मुरारी कलिजुग दाता। तिन्नां लोआं सच्चा सरदार पुरख बिधाता। धर्म राज सति दरबार, ना कोई वखाणे जातां पातां। एका रंग नाम अपार, सोहँ शब्द वड करामाता। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान मंगण वर, हरि नर भेख भिखारी भेखन दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत पित जगदीशर सर्ब जीआं का एका दाता। शब्द तीर चढ़े चिल्ले। चरन छुहाए प्रभ लाल किले। अस्सू तिन्न पीड़े कोहलू तेल तिले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पूर कराए चरन सेव कमाई साची शिले। अस्सू तिन्न दिवस विचारे। जोत जगाए बिन्दराबन करे इक्क अकारे। पंडत वेद पुरानी पकड़ उठाए, अकाशी टुट्टण तारे। गुरमुख साचे संत जगाए, सोहँ शब्द सुणाए कन्न जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत हँकारीआं लाहे तन अफारे। दिल्ली किला रंग लाल। पुरख अबिनाशी साची चाल। साची रंगण रंग रंगाया, पंचम् जेठी इक्क अकाल। मेट मिटाए वड सेठन सेठी, हँकारी तोड़े सर्ब जंज़ाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा लेखे लाए, पंचम् जेठ जो कराए, तन छुहाए चोला लाल। चोला लाल हरि दरवेश। अकाल मूर्ति शिवा शिव शंकर वेख वखाण गणेश। इक्क अकार इक्क अंकर अनेक ब्रह्मा बिशन महेष। एका मन्दिर एका कंकर, इक्क दुआरा इक्का बंकर, पुरख अबिनाशी नर नरेश। कलिजुग तेरा अन्त भयंकर, मिटदी जाए तेरी वरेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल मात रचाई, काया कोठड़ी आपणी ढाही, सरगुण रूप दिस ना आई, निरगुण जोत इक्क अलाही, नूर खुदाई अलो वसो इक्क महल्लो धाम अटल्लो गुरमुख साचे विच प्रवेश। अल्ला नूर खुदी खुद नूरा। सदा सद चौदां तबकां हाज़र हज़ुरा। चौदां लोक चौधवीं सदी हट्टां तट्टां वसे घट घटां, आपणा खेल करे पूरा। शिव जी खोल्ही बैठा जटां, गल नाग लटकाए मंगे दरस इक्क हज़ूरा। ब्रह्मा वेखे वाट वट्टां, कलिजुग वेला होया पूरा। विष्नूं वेखे किथे जोत जगे लट लटां, मिले सति सरूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तट्टां, गुरमुख आत्म एका बख्शया जोती साचा नूरा।

❋ दिल्ली लाल किले जाण वास्ते गुरमुखां दे नाम जेहड़े लिख्त विच आए ❋

हरिभगत हरि रखवाल। प्रीतम आत्म गुरमुख पाल। मिटे तृष्ना भुक्ख मिले सच नाम धन माल। सोहण प्रेमा मस्सा नाल। आत्म दिसे ना किसे कंगाल। गुर गोबिन्द चले नाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे सदा सदा सद प्रितपाल। हउँ भैण गुर संगत भईआ। जगत ना डोले काया नईआ। कलिजुग वगण अन्धेर झकोले, ना कोई सहारा दईआ। पति पतवन्त पया साचे डोले, प्रभ सच धाम वसईआ। रंगण चढ़े नाम तन साचे चोले, हार श्रृंगार जगत तजईआ। प्रभ अबिनाशी वसे कोले, क्या कोई भेव रखईआ। देवे नाम दात वड अनमुल्ले, चरन प्रीती चित जुड़ईआ। गुर पूरा पूरे तोल तोले, होए निमाणा जन रहे सदा सरनईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत पाणी आत्म शांत शब्द कटोरा भर प्याईआ। अमृत पीणा साचा पाणी। आत्म रस जगत दस्स, प्रभ साचे दी काया साची साची ताणी। साचा राह प्रभ रिहा दस्स, गुर दर मन्दिर साचे अन्दर सच सुख सद माणी। पंजां तत्तां करना वस, नाउँ निरँजण साचा जाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त सतवन्त पूरा सतिगुर मात पछाणी। साचा पित कन्त प्यारा। देवे मति शब्द अधारा। साचा नाम तत्त करना जगत आत्म विचारा। आपे जाणे मित गति, पंजां करे मार ख्वारा। धीरज तुट्टे ना आत्म जति, भैण भाई सच प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वेखणा नेत्र पेखणा जगत सच दुआरा। सच नाम सच चतुराई। गुरमुख सच मात वड्याई। पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी मात गत रखाई। पिता पूत हरि रक्ख हथ्थ, दित्ती इक्क सरनाई। अक्खर नाम लभ्भी वथ, प्रभ साचे आत्म फूलन सेज विछाई। सगल वसूरे जायण लथ्थ, हरि कन्त प्यारा सच भतारा, सेजे आया चांईं चांईं। लोकमात किया अकारा, सप्तम जेठ दिवस विचारा, सवरन उठाया फड़ के बाहीं। निहकलंक नर अवतारा, इक्क वखाया सच दुआरा, भगत ध्रू अन्तिम वारा। सवरन बहाया सच बरूही, दोए जोड़ करे निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगहि माण दवाया, दर दरबान इक्क रखाया, साचे पति सुहञ्जणी नार भतारा।

❋ १४ भाद्रों २०११ बिक्रमी पिण्ड सैदपुर संत लाभ सिँघ दे मन दा हँकार निवारन लई शब्द भेज्जया गया ❋

कवण सिँघासण कवण गद्दी। कवण आसण त्रै लोआं धार बध्धी। कवण पुरख अबिनाश देवे रस अमर मध मधी। जोती जोत सरूप हरि, कवण वखाणे अमृत धार वहन्दी नदी। कवण सिँघासण कवण डेरा। सृष्ट सबाई सर्ब विनासण, गुर मात मात गुर चेरा। कवण दासी दास दासन, कवण हेरा फेरा। कवण पवण स्वास स्वासण, काया मन्दिर सद वसेरा।

कवण मण्डल रास रासण, रहे सद अन्धेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप करे अन्त नबेड़ा। कवण जोती कवण अकार। कवण मोती फूलन हार। कवण सवण मैल दुरमति धोती, दीआ शब्द अधार। कवण कवण सर्ब गवण, शब्द साची तिक्खी धार। कवण जोत कवण हवण, कवण समग्री साची संसार। जोती जोत सरूप हरि, कवण सो वेले वक्त सुहेले खाए इक्क अहार। कवण दिन कवण सो रैणा, कवण चिन्न वेखे भिन्न भिन्न, कवण धाम हरि हरि जी बहिणा। कवण बन कवण बिन, कवण वेखे साचे नैणा। कवण पेखे लोक तिन्न, कवण जाणे लहणा देणा। जोती जोत सरूप हरि, कवण वखाणे कवण जाणे प्रभ साचे का साचा गहणा। कवण गुण कवण श्रृंगार। कवण पवण शब्द अस्वार। कवण सवण आलस निन्दरा रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, कवण गुण वरते विच संसार। कवण अकाला कवण दयाला। कवण जगत पित हित्त, जीव जन्त अञ्याण बाला। कवण वार कवण थित्त, प्रभ जोती नूर किया उजाला। कवण भीतर कवण भीत, कवण दस्से राह सुखाला। जोती जोत सरूप हरि, नित नवित्त चले आपणी चाला। कवण गुर कवण विचार। कवण रिहा सुण, कवण करे पुकार। कवण करे छाण पुण, तिन्नां लोआं मात विचार। कवण जाणे गुणवन्ते गुण भगवन्ते पूर्ब कार। कवण जीव कवण संते, कवण गुर अवतार। कवण बणाए मात बणते, कवण लेखे लिखे अपार। कवण मीत कवण कन्ते, सोलां कराए तन श्रृंगार। कवण पुरख अबिनाशी आदिन अन्ते मरे ना जम्मे वारो वार। कवण पुरख महिंमा अगणत अगणते, मात माती विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, कवण पती कवण वखाणे साची नार। कवण इकांत कवण इकांता। कवण बणाए दिवस रैण रैण राता। कवण उपजाए भाई भैण, सुत पित माता। कवण दरस दिखाए नैण, शब्द देवे सच सुगाता। कवण दिसाए गुर संगत रल मिल बहिण, कवण मिटाए जातां पातां। जोती जोत सरूप हरि, गऊ ग़रीब निमाणयां सद पुच्छे मात वातां।

✻ १५ भाद्रों २०११ बिक्रमी बिशन सिंघ नूं शब्द भेज्जया गया गुड़गांउँ ✻

शब्द पुजारी नाम वणजारे। गुरमुख साचे हो त्यारे। आस अंदेसा प्रभ सर्ब निवारे। दर आए नर नरे, वसे साचे घर महल्ल मुनारे। दया सिंघ ना जन्मे ना जाए मर। सदा संग प्रभ साचे नाले। गढ़ी चमकौर गुर दित्ता वर, कलिजुग अन्तिम सुरत संभाले। सच धाम साची ठौर, सच घालना घाले। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख गुरसिख जगत सुरत संभाले। शब्द सुनेहड़ा आए दुआरे। गुरमुख साचा करे विचारे। पुरख अबिनाश घट घट वास, जन दासन दास साचा

संग सच प्यारे। जोती जोत सरूप हरि, लहणा देणा जगत चुकाए दर आए काज संवारे। काज संवारे देवे साचा नाउँ। सच शब्द हरि नाम अधार, ना कोई पिता ना कोई माउँ। साचा कन्त करे प्यार, हरि रक्खे मात ठंडी छाउँ। पूर्ब कर्म प्रभ विचार, पंचम् अस्सू आए चल्ल गुड़गाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा बिशन सिँघ हँस बणाए काउँ।

✻ १५ भाद्रों २०११ बिक्रमी दिल्ली लछमण सिँघ नूं शब्द भेज्जया गया ✻

दिल्ली दिल जगत दलील। हिल्ली किल्ली दर सच अपील। करे वल छल बस्त्र पहने नील। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राज दरबार जगत वकील। दिल्ली दर दरया जमन किनार। साध संत साचा घर, कलिजुग अन्तिम वार। घर साचे बैठे देवे वर, गुरमुख ना होए कोई ख्वार। जगत शाही टुट्टे दर, मिले पुरख अबिनाशी मीत मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा जगत लिखाए, वेखे हिन्द सच्ची सरकार। आए दिल्ली ग़रीब निवाज़ा। गुरमुख साचे संत जनां, शब्द छत्र सीस झुलाए, वड शाहो राजन राजा। नाम ओट अमृत सीर प्याए, साचा साजन साजा। राज रजान शाह सुल्तान हकीर फ़कीर बणाए, घर घर मंगण मारन आवाजां। लथ्थे चीर तन वखाए, ना कोई तख्त ना कोई ताजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे आपणे काजा। अस्सू तिन्न जगत विचोला। भगत जनां घर साचा बोला। साची शाही खुल्ह्या दर, वज्जया साचा ढोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त पूरा तोला, शब्द कंडे आपे तोला। गुर संगत जग साची रास। जिउँ नानक अंगद एका शब्द इक्क स्वास। साची नाम रंगत, मन्दिर अन्दर विच प्रभास। प्रभ कटे भुक्ख नंगत, गुरमुख ना होए कदे उदास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जपो जप स्वास स्वास। गुर संगत गुर संत प्यारी। लिख्या धुर कन्त मुरारी। बणाए बणी बणत, कलि अन्तिम वारी। महिंमा जगत अगणत, क्या कोई करे जीव विचारी। सोहँ शब्द पति साचा मंत, दस्से नैण लोचन नैण मुँधारी। मेल मिलावा हरि हरि कन्त, सच शब्द अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसाए दर बहाए सच महल्ल अटारी। हरिसंगत गुर संगत दास, रसना गायण। मधुरा रस पायण निज आत्म सच निवास, सोलां तन शृंगार करायण, नाम नेत्र कज्जल पायण। आत्म फूल माणक मोती, साची सेज बनायण। दुरमति मैल गुर संगत जाए धोती, निर्मल अकार हरि निरँकार शब्द जैकार काया अन्दर इक्क इकलौती, पकड़ना सच्चा दामन। प्रभ जोत सुख आसन सोती, बणी साचा वरन गोती, साचा सुख गुरमुख घर साचे माणण। देवे दरस दर घर आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेजा मन्दिर घर, सवा नेजा

उच्चा दर। फूलन सेजा सुत्ता हरि। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीआ जगत इक्क नाम वर। सच सिँघासण कर त्यार। लोकमात होणा ख़बरदार। सच नाम प्रभ झोली पाए, कोए ना लुट्टे ठग चोर यार। सच धाम हरि चरन छुहाए, गुर संगत कर प्यार। नाम वंडण प्रभ साचा आए, जगत पित निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली अस्सू दिवस विचार। पहली अस्सू रक्खणी आस। पुरख अबिनाशी दया कमाए जोत जगाए, घट घट चानण घट घट वास। गुरमुख खाली रहे ना कोए, प्रभ रोग मिटाए उल्टे दस मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत संगत गुर एका धाम करे निवास। सच धाम सच टिकाणा। सच राम जिस जन पछाणा। पूर कराए काम, इक्क सौ इक्क गुर चरन टिकाना। सच राम जिस जन पछाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीस इकीसा अवतार चौबीसा राग छतीसा सोहँ सुहागी गीत गुर संगत कन्न सुणाना। तेज भान भान तेज प्रकाश। आत्म सीज सीज आत्म हरि निवास। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, गुर संगतां रहणा सदा दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द वाली हिन्द सचा बख्शिंद मिटाए चिन्दा पूरन करे आस।

❇ १ अस्सू २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी तेज भान दे गृह ❇

कँवल नैण नैण कँवल मधुर बैण साक सैण। धरत मझार साचा देवे नाम दान पीण खाण रहण बहिण। सोलां मात तन शृंगार वडभाग प्रभ चरन लाग झूठे वहिण जगत ना वहिण। शब्द जोग हँस मोती आत्म जोती दुरमति मैल दर दुआरे धोती, रसना किसे ना सके कहण। जन भगत उठाई काया सोती, इक्क इकलौती हरि हरि पास पसान। ना कोई वरन ना कोई गोती। एका अकाल दयाल नूरो नूर मिल निर्मल जोती, हरिजन पेखे तीजे नैण। लक्ख चुरासी घर घर रोती, मावां पुत्तरां सांझा वैण। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लाड़ी मौत सेवा लाई घर घर खाए डैण। नैण मुँधार सगल संसारा। भगत अधार पुरख अपारा। शब्द जैकार सोहँ धारा। नर अवतार जगत उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोआं पुरीआं पावे सारा। नैण मुँधार लोचन लोच। धर्म बुध कर साचे सोच। चिट्टे अस्व बैठा कुद्द, लोकमात हरि गया पहुंच। जन भगतां करे उज्जल बुध कारज सुध्ध, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी करे सुध्ध। चिट्टा अस्व सति सरूपा हरि अस्वारा। शाहो भूपा जोती लोकमात अवतारा। ना कोई रेखा ना कोई रूपा, चार वरनां सच्चा सरदारा। नर हरी नर सति सरूपा। एका शब्द जगत जैकारा। करे उज्जयार अन्ध कूपा, गऊ ग़रीब निमाणयां

हाहाकारा। दुखियां भुक्ख्यां देवे नाम सच्चा अपारा। चार कुन्ट वेख वखाणे, राजे राणे शाह सुल्ताने जोती हवन शब्द धूपा। हरिजनां हरि बन्हे गाने, मस्त नैण रंग अनूपा। पारब्रह्म जन कवण पछाणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोती सच्चा नूर सर्बकला भरपूर, आसा मनसा पूर जगत सहिंसा करे दूरा, पुरख निरँजण सति सतिवादी नाद अनादी वड ब्रह्मादी, आदि जुगादी सति सरूपा। चिट्टे अस्व सच दुशाल। चोला पहने हरि जी लाल। जोत नुरानी मात बाल। कलिजुग अन्तिम वार मारे सच्ची छाल। टप्पे चार द्वारी किले लाल। चार कुन्ट होए ख्वारी, डिग्गण फल कच्चे डाल। वेख वखाणे शाह सवारी, जगत अवल्लड़ी चले चाल। आत्म कारी शब्द आरी सोहँ डण्डा लाहे खाल। एका नाम खुमारी एका पैज दर घर संवारी, धर्म राए ना खाए काल। भगत वछल आप करतार, नर नरायण चवीआं अवतार। जोती खेल मात अपार, पुरख पुरखोतम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठ चिट्टे अस्व नर हरि सच्ची सरकार। चिट्टा अस्व मंगे दाणा। पहलों खाणा राजा राणा। किले लाल हरि लेख लिखाणा। वाली हिन्द पकड़ उठाणा। दूजी सेवा फल अमृत मेवा, साचा नाम मुख लगाए वड हरि देवी देवा, करोड़ तेत्तीसा राग छतीसा भेव खुल्हाणा। एका छत्र झुलाए सीस नर हरि जगदीश चार कुन्ट हरि डंक वजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया प्रगट होया शाह सुल्ताना। पवण जोत शब्द धार। तिन्नां लोआं वसे बाहर। प्रकाशन प्रकाश प्रकाश रवि ससि अधार। पवण स्वास स्वास स्वास, लक्ख चुरासी पसर पसार। सच शब्द नर हरि थिर घर साची हासी, जन भगतन खुशी अपार। एका मण्डल सच पुरख अबिनाशी, शब्द धुन सच्ची जैकार। वसे बाहर पताल अकाशी, जोत निरँजण निराहार। दर द्वार सच अस्थूल धाम, निज घर वासी पंचम् पूर्ब निरगुण रूप निराकार। सच समग्री सच हवण, घर साचे सच विहार। अट्ठे पहर एका लहर गम्भीर गहर, शब्द निरँजण साचा शायर गुणवन्त गुण निधान गुण विचार। लोकमात हँकार विकार वेख दोपहर, गऊ ग़रीब निमाणयां वरते कहर, धरे जोत संसार। अमृत धार चरन प्यार, नर निरँकार लोकमात ल्याए किरपा कर अपार। शिव शंकर साचा संग रलाए, मुख ज़हिर प्याला हथ्थ फड़ाए, नाग नागनी गल लटकाए इक्क करे शृंगार। विष्न अकारी हरि बण जाए, ब्रह्म विचारी सीस निवाए, धर्म जैकारी जगदीश अख्वाए, शब्द सूत्र साची धार। ब्रह्मलोक ब्रह्मण्ड वखाए, लोकमात हरि वंड कराए, जगत राणी बेमुहाणी, माया ममता कंड वखाए, करे खेल पद निरबान। आदि अन्त जुगा जुगन्त जी जहाना भगत भगवाना, चतुर सुजाना नूर नुराना, नेड़े दूर इक्क टिकाणा। हरि हज़ूर श्री भगवाना। लोकमात पहरे बाणा। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, कलिजुग अन्तिम वंडया देस, धरत मात होई रंडी कलिजुग जीव होए घमंडी, दर दुआरे हरि पुकारे, बाशक सेजा कँवल

नैण सुरत संभाले। लछमी चरन झस्से सरन बहाए, लाल भूशण लाल फुल्ल हथ्थ उठाए, जगे जोत मसाले। शब्द लशकर नाल उठाले। बाशक तशक सति सफेदी रंग वटाले। रवि ससि हस्स हस्स, प्रभ चरन नस्स नस्स सीस निवाले। भगत भगवान राह दस्स दस्स, हिरदे वस वस बाण मारे कस कस, सोए मात जगाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि धरत मात ख्वारी, तेरी सुरत संभाले। इन्द इन्द्रासण इन्द्रा ताज। करोड़ तेत्तीसा साचा राज। मंगया वर बीस इकीसा, दरस करना देस माझ। झुल्लणा छत्र हरि जगदीशा, नौ खण्ड संवारे आपणे काज। सरन आयण ईसा मूसा, सति सागरां पाए भाज। इक्क पढ़ाए शब्द हदीसा, शब्द उडाए साचा बाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, जोत सरूपी खेल रचाए, मात भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखाए, करे खेल जन भगत मेल कल कि आज। पुरी इन्द्र इन्द्र दुआरा। सोहँ शब्द सच जैकारा। करोड़ तेतीस निव निव करन निमस्कारा। प्रगट होए अवतार चौबीस, निहकलंकी नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरी सुणे दर घर सच पुकारा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप उत्पात, चार कुन्ट नेत्र खोलॄ उप्पर वेखे मार झात, केहड़ी कूटे प्रभ रिहा बोल। सच वजाए शब्द ढोल। कलिजुग आई अन्धेरी रात, अस्सू तिन्न प्रभ पड़दे खोलॄ। चार कुन्ट सृष्ट सबाई रिहा तोल। जन भगतां हरि जी हिरदे वसे, आत्म पड़दा लैणा खोलॄ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच ब्रह्मादी आदि जुगादी, सृष्ट सबाई आत्म साधी, कंडा तोले पूरे तोल। ब्रह्मा गाए मुख मुखड़े चार। धरत मात तेरे लाहुण आया दुखड़े, प्रभ अबिनाशी जामा धार। भगत जनां काया ताल, अमृत आत्म देवे डाल। धरत मात तेरे भाग लगाए साची कुक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार, प्रगट जोत विच संसार। ब्रह्मा आप पुरख अपारा। प्रगट किया नर निरँकारा। कोए ना जाणे नर निरँजण तेरी सारा। साचा नेत्र पाया अंजन, होया सहाई दु:ख दर्द भंजन, वेद राग मुख उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात झोली पाए, सृष्ट सबाई अन्त कराई, ब्रह्मा बणया इक्क वरतारा। नूर निरँजण एका लाटी। प्रभ अबिनाशी कमलापाती। आपे चढ़या साची घाटी। मात पित ना किसे घड़या। ना कोई दीवा ना कोई बाती। संपट नूर एका चढ़या, कँवल नाभी पाटी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा दित्ती कर, ब्रह्मा प्रगट होया माती। ब्रह्मा पसर पसार विच ब्रह्मण्ड। चार कुन्ट वेख मुख चार, चार वेदां पाई वंड। सिर मस्तक इक्क पुरख अपार, मंगी मंग सच्चे दरबार, ना अन्तिम आए कंड। उत्पत उपजे सुरसती नार, नारद मुन संग राग छतीसा कर उज्जयार। बीन हँकारी गाए वजाए सन्झ सवेर, सृष्ट सबाई बध्धी धार, त्रैगुण माया हो अस्वार। दित्ती दात हरि निरँकार। वरते वरतावे विच संसार। वारो वार रसन रसायण, हरि गुण

५३४
०४

रिहा उचार। चार कुन्ट काल कोठड़ा, अन्तिम अन्त होए थोथड़ा, कीट लपेटा चीथा गोथड़ा, काल कलेशी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आदि पुरख भगत वछल जग साची राणी, करे खेल अपर अपार। ब्रह्मा रूप रंग रिक्ख, वार अन्तिम अन्त सिख्या लई सिख, नारद मुन दर दुआरे मंगी भिक्ख मिटी तृख, आदि जुगादि निरगुण सरगुण होया, साचे लेख प्रभ साचे लिक्ख, सति सरूपी साची दाद। जोती जोत सरूप हरि दिवस रैण रिहा अराध। रसन अराधे अराध पन, कवण संवारे मात काजे। जगत निखुट्टा नाम धन, शब्द सरूपी मारे अवाज़े। चार मुख हथ्थ बन्न, धरत मात प्रभ रक्खे लाजे। दुष्ट हँकारी देणा डन्न, प्रगट होया प्रभ देस माझे। शब्द उडारी भगतन कन्न, सच समग्री साजन साजे। शब्द अधारा जगत अन्ध, होए अस्वारा चिट्टे ताजे। मात चढ़ाए साचा चन्न, बंक द्वार सुहाए साचे राजन राजे। जूठे झूठे जाए भन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म ब्रह्मा मन ग़रीब निवाजे। हरि चरन सरन कँवल प्रभ प्रीत , उप्पर धवल प्रभ रिहा मवल, नित नेतन नीत। उपजे फुल्ल नाभ कँवल अन्तिम मात होया बवल, पुरख अबिनाशी साचा चीत। पुरख अबिनाशी शुन्य ध्याए, धरत मात दए दुहाए, अन्तिम कलि हाए हाए, झूठे होए गुरदुआरे मन्दिर मसीत। मन्दिर मसीत
५३५ ०४ शिवदवाले, माया धारी होए रखवाले, मन तन धन होए कंगाले, दर घर साचे वज्जे जिंदे। ना कोई सुरत संभाले, वेख ५३५ ०४
वखायण झूठे धन्दे। प्रभ अबिनाशी कोई ना जाणे, जोती जोत सरूप हरि, धरत मात हरि जोत धर, जन भगत उठाए साचे बन्दे। नैण मुँधार कृष्ना कान्हा। प्रगट होए विच जहान। जोत सरूपी वड बलवान। हथ्थ ना फड़े तीर कमान। शब्द धराए इक्क निशान। चार कुन्ट करे वैरान। किसे ना सुझे पीण खाण। गुरमुख विरला बूझे, चतुर्भुज हरि भगवान। हरि भेव खुल्हाए गूझे, चरन धूढ़ सच इशनान। भेव चुकाए एका दूजे, वरन गोत ना कोई पछान। निहकलंक कलि प्रगट होए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच समग्री सच अकारा। जोत सरूपी खेल अपारा। शिव शंकर प्रगट विच संसारा। जटा जूट धार अमृत वहाई साची धार, लोकमात खेल अपारा। गरुड़ पुरानी हरि दरबार, ब्रह्मा पूता सोया जागे, सच्चा हरि कर अस्वारा। जोती नूर साचा घर सति सरोवर देवे वर, आसा मनसा पूर ना नेड़े ना दूरा। जोती जोत सरूप हरि, एका रंग सदा सहाई साचा संग वड दाता सूरा। सतवें दर उठ सुल्तान। छेवें घर करे इशनान। पंचम् साचा अमृत सर, प्रभ चरन चरनोधक डिग्गे आण। बूहा खोल्हे चौथे घर, संत पीर औलीए गुर जिथ्थे जाण। तिन्नां लोकां देवे वर, ब्रह्म इन्द्र शिव सारे गाण। मात पताल अकाशी जायण। हरि नूर साचे दर्शन पायण। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब घटां घट अन्दर वसे, आदि पुरख जाणी जाण। सत्तवां घर हरि सच वसेरा। लाल भूषण नूरी जोती रक्खे सति सवेरा। कौस्तक

मणी सुच्चा मोती कोई ना दिसे, चारों कुन्ट अन्धेरा। प्रभ अबिनाशी एका जोती, शब्द सच्चा सच वसेरा। निर्धन नार कदे ना सोती, सरधन रूप हरि हरि हरि तेरा। जोती जोत सरूप हरि, थिर घर सतवें दर इक्क इकल्ला रक्खे डेरा। चरन कँवल कँवल चरन दर छे द्वार। दूजी जोती कंचन धार। चरन चरनोदक अमृत धार। लछमी सेवा प्रभ चरन प्यार। मिल्या मेवा हरि द्वार। चौदां रत्नां कढ्ढे बाहर। हत्थ साचा फूल कँवल मुख चार, रसना हरि गुण रही उचार। जोती जोत सरूप हरि, एका दोए दोए एक, इक्क दूजी साची धार। पंचम् परम पुरख निशानी। अमृत सति सरोवर भरया निर पद निरबाणी। जन भगतां देवे साचा जोग, बूंद स्वांती इक्क इकांती काया सीतल धार रखानी। पंचम् घर मारे झाती, प्रभ अबिनाशी कमलापाती वंडण बहे लोआं पुरीआं साची दाती, जोती जोत सरूप हरि, एका वसे थिर घर, पंचम् दर सहिज सुभानी। पंचम् दर सच्चे दरवाज़े। शब्द धुन अनाहद वाजे। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, शब्द स्वासी विच पवन गाजे। जोती जोत सरूप हरि, गुर पीर औलीए पैगम्बर पंचम् घर बैठ साजे। पंचम् घर हरि टिकाणा। एका रक्खे शब्द बबाणा। जोती हवण पवण मसाणा। चौथे घर दीप जगाणा। संतां भगतां राह वखाणा। जोती जोत सरूप हरि, एका एक आपणे हत्थ रखाए आउणा जाणा। चौथा घर चौथा पद। भगत भगवन्त दर लए सद। अमृत प्याए प्रभ साची मध। शब्द भार तन देवे लद। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम दाद। चौथे घर संत वणजारे। प्रभ अबिनाशी वाजां मारे। खोल्हे बन्द कुआड़, जिस जन किरपा धारे। काया बुझाए अग्न तत्ती हाढ़, अमृत धार सीतल धारे। होए प्रकाश नाड़ नाड़, मिटे अन्धेर अन्ध अंध्यारे। पंजां चोरां मारे धाड़, शब्द खण्डा हरि दो धारे। हरिजन दर संत प्यारे, सुणे पुकार सच दातारे। चौथे घर जन वणजारे, अग्गे दिसे सच्चा लाड़े। चौथा घर धाम अस्थूला। जन भगतां मिले कन्त कन्तूहला। भेव चुकाए लेख लिखाए, दर घर साचे माण दवाए भगत भगवन्त मिले मेल हरि जोती खेल महाने। बणे बणाए सज्जण सुहेल, चले चलाए आपणे भाणे। जोती जोत सरूप हरि, किसे हत्थ ना आए राजे राणे। तीजा खोल्हे दर दुआरा। नीली छत्तों होए बाहरा। गगन अकाशी तुट्टा पाड़ा। मात पताली हरि अखाड़ा। तिन्नां लोकां साचा लाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आपे खेले खेल भगत जन मेले सुहञ्जणी रैण सुभागी दिहाड़ा। तिन्नां लोआं बन्न्हे धार। उतपत् माया विच संसार। सच सति प्रभ एका जापा ब्रह्मा वेद मुख चार उचार। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोआं बद्धी धार। दूजा दर हरि निरँकार। आवे जावे वारो वार। मरे मर जम्मे उत्भज सेत्ज अंडज़ जेरज़ जन्मे कदे पुरख कदे नार। गगन पताली पवण थम्मे, पुरख अबिनाशी खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, दो जहानां पावे सार। इक्क इकल्ला इक्क द्वार। सच महल्ला हरि निरँकार। सच फड़ाए साचा

पल्ला, अन्त ना आवे हार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वेख वखाणे सर्ब जाणे नारी नार। इक्क इकल्ला हरि इकलौता। सच द्वार सदा खलोता। निराहार नर निराधार साचा बीज आत्म बोता। शब्द पवण कर शृंगार, प्रेम सेजा हरिजन सोता। सोलां कलीआं वारो वार, नाड़ बहत्तर माण मणोता। वेखे फल साचे डाल, अमृत नीर साचे धोता। अन्त काल ना खाए काल, चरन कँवल जन साचे छोहता। प्रभ अबिनाशी उठे मार छाल, धर्म राए दर आण खलोता। मैं होया अन्त कंगाल, प्रभ थांव निथाविआं माण मणोता। किरपा कर साचे हरि दीन दयाल, लाड़ी मौत कर त्यार, लक्ख चुरासी वारो वार, अठाई कुण्डां खोलां बार, किसे ना दिसे दूध पूता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार, त्रैलोकी नाथ सुण पुकार, शब्द हल्ल साचा जोता। साचा हरि जोती नूरा। नूर नुरानी सच सुल्तानी, सर्बकला भरपूरा। नाम संजोगा वड विद्‌वानी, हरि दाता वड जोधन सूरा। लक्ख चुरासी आत्म ज्ञानी, नाद धुन साची तूरा। एका जोती आदि शक्त आदि भवानी, नूर निरालम जगत आलम वरभण्ड ब्रह्मण्डी पूरा। नर अकाल इक्क इकल्ला। सतवां घर सच महल्ला। ना कोई फूल ना कोई फला। ना कोई शब्द कटार ना कोई भल्ला। एका जोत अकारी निर्मल नूर अधारी निर्मला। जोत अहूती लाटी हवण, पवण स्वासी नूर अल्ला। आप प्रकाशे सर्ब गवण, वसे निहचल धाम अटल्ला। ना कोई वखाए देव गन्धर्ब जमन, कर कर वेखे वल छला। पंचम् बैठ उपजाए सिँघ सवण, रक्खे चरन थला। धरे भेख जिउँ बल बावन, लोकमात मार अछल्ला। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, चार कुन्ट प्रभ साचे हल्ला। वेख वखाणे कामनी कामन, कलिजुग पापी झूठा पल्ला। धुरदरगाही साचा जामन, जन भगतां दस्से राह सुखाला। मिटे अन्धेरी रैण शामन, दीपक जोती साचा बाला। निहकलंक कलि जामा पाया। जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी डंक वजाया, सृष्ट सबाई होए भल भला। प्रभ दिसे साचा शाहो भूपी, द्वार बंक किसे दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व हो अस्वार सोलां कलीआं तन शृंगार, चौथे दर कढ्ढे बाहर, दक्खण दिशा वेख विचार, पवण स्वासी हो अस्वार, पहला हिस्सा मात रखाया। चिट्टे अस्व कर त्यारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। शब्द सरूपी हथ्थ कटारी। एका शेर शेर दलेर, जोती नूर अकारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वेर, लोकमात प्रभ पाए सारी। राजे राणे मारे घेर, सृष्ट सबाई करे दो फाड़ी। आप चुकाए मेर तेर, धरत मात तेरी इक्क अखाड़ी। अन्तिम वेला आए नेड़, लक्ख चुरासी पक्की हाढ़ी। जन भगतां सदा रक्खे मेहर, फिरदा रहे पिछे अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, जोत सरूपी दिस ना आए, शब्द सरूपी रक्खे वाड़ी। पंचम् घर धरे ध्याना। छेवें सर सच्चा इशनाना। सतवें जगे जोत महाना। सति

सरूपी हरि भगवाना। छेवें चरन कँवल लछमी करे ध्याना। पंजवें घर जाए मवल, हरि शब्द एका हथ्थ उठाना। इक्क उपजाए साचा कँवल, पवण स्वासी रूप सुहाना। जोती जोत सरूप हरि, एका जोती इक्क घर, तिन्नां दस्से खेल महाना। पंचम् पंच पुरख अबिनाशा। सच दुआरे एका वासा। रंग अपारे ना कोई वेख विचारे सच मण्डल दी साची रासा। तिन्नां लोआं बन्ने धारे, चौथे वसे आए दुआरे, पूर कराए मात आसा। जोती जोत सरूप हरि, एका जाणे आपणा घर, लक्ख चुरासी आवे डर, सच तख्त सुल्तान शाह शाबाशा। चौथा खोल्हे दर दरवाज़ा। अन्दर बोले ग़रीब निवाज़ा। जन भगतां मारे शब्द आवाजा। सीस टिकाए साचा ताजा। धुरदरगाही साचा राजा। लोक परलोक ब्रह्मलोक शिवलोक इन्द्र महेष गणेशा दर दरवेशा जुगा जुगन्तर रक्खे लाजा। शस्त्र अस्त्र ना तन बस्त्र, दाढ़ी मुच्छ ना केस दर दरवेश तन मन्दिर ना कोई साजा। अलख निरँजण अवल्लड़ा भेस, सच पुरख विच साचे देस, जोत पवण शब्द प्रवेश, तिन्नां लोकां संवारे काजा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, धरे जोत विच देस माझा। चौथा खोल्हे बन्द कुआड़। रचन रचाई पहली हाढ़। लेख लिखाया भेख वटाया उन्नी हाढ़। चरन ब्यासे जा टिकाया, सावण सिँघ सोया आप जगाया, लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, त्रैलोकी नाथ मात आया, सगला साथ आण निभाया, जगत चलाई साची गाथ। सोहँ शब्द डंक वजाया, राउ रंक लए उठाया, तीर चलाया दयाल बाग़। गुर स्वामी लए उठाया, प्रभ अबिनाशी मात आया, जोत सरूपी जामा पाया, निहकलंक नाउँ रखाया, हँस बणाए गुरमुख काग। चौथा दर खोल्ह वखाया। दोहीं हथ्थीं कुण्डा लाहया। छोटा मुंडा अग्गे लाया। सिँघ मनजीत नाम उपजाया। इन्द इन्द्रासण बाहर कढाया। सच सिँघासण हरि जी लाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासण, सच महल्ला इक्क वसाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अस्व हो अस्वार, कर विचार कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चार कुन्ट लए दौड़ाया। चौथे घर चार दरवाज़े। पहले आए ग़रीब निवाज़े। हो अस्वार चिट्टे ताजे। चुक्के पौड़ आए दौड़। मातलोक देस माझे। आपे परखे मिट्ठे कौड़, चार कुन्ट पैणी भाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच साजणा आपे साजे। कवण द्वार हरि होए बाहर। सच अस्व हो अस्वार। कदे गुप्त कदे ज़ाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, चार वरन एका हवन कराए। अमृत सावण मेघ बरसाए। पतित पावण दया कमाए। धरत मात बख्शे इक्क दात, वड करामात सच सुगात, मिटाए अन्धेरी रात ना कोई दस्से जात पात, काया ठंडी ठार कराए। हरि अस्वारी शब्द उडारी, दर दरवाज़े होया बाहरी, नैण मुँधारा पुरख अपारा। दर दरवेशा खुल्हे केसा, नर नरेशा वड मृगेशा जोती

वेसा माझे देसा, करे खेल अपारा। मिटया माण ब्रह्मे हट्ट शिव शंकर करोड़ तेतीसा बीस इकीसा ईसा मूसा होए ख्वारा। जगे जोत एक जगदीशा, वेद पुरानी इक्क हदीसा, कलिजुग झूठा पीसण पीसा, सोहँ चले सच जैकारा। तुट्टे माण राग छतीसा, अठारां वरनां एका रीसा, प्रगट होए अवतार चौबीसा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान गुणवन्त गुण निधान, कवण वखाणे कवण जाणे पवण मसाणे, हरि भगवाने जोत निधाने शब्द उडाने, आदि पुरख आदि उन्नीसा। शब्द उडारी हरि मुरारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। करे खेल जन भगत मेल पूर्ब कर्म मिटे भरम, खेल कराए मानस जन्म दरस दिखाए पहली वारी। दूई द्वैती मेटे भरम, भाग मथंने धन्न धन्ने, जोत जगाए आत्म अन्ने, अन्तिम कलि बेड़ा बन्ने, कोई ना दिसे छप्परी छन्ने, लक्ख चुरासी हरि जी डन्ने, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द गोती वणज कराए, काया सोती आप उठाए, प्रभ दर मैल जाए धोती दूई द्वैती रहण ना पाए, नूर नुरानी साची जोती, गुरमुख साचे संत जनां आत्म अन्दर डूंघी कन्दर विच्चों उठाए, नेड़ ना आए मौत लाड़ी। मौत लाड़ी दर दुरकाए, सच कराए वणज वपारे। लक्ख चुरासी गेड़ निवारे। इक्क सुणाए राग कन्ना, पंज शब्द धुन अपारे। आत्म कढ्ढे झूठा जना, मिले मेल मीत मुरारे। भाण्डा भरम मानस देही हरि भन्ना, हउमे रोग चिन्त निवारे। कलिजुग जीव अन्तिम अन्ना, चार कुन्ट होए ख्वारे। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, नर नरायणी गुरमुखां दस्से साची बहिणी। दरस दिखाए तीजे नैणी। खोल्हे बन्द कुआड़ी, बज़र कपाटी पाड़ी। सति संतोखी पक्की हाढ़ी। अन्तिम मोखी प्रभ चरन छुहाई दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए गुरमुख साचे संत जनां नेड़ ना आए मौत लाड़ी। मौत ना लँघे दर। गुरमुख वेख जाए डर। प्रभ अबिनाशी दर खुल्हाया, भगत सुहेला फड़या लड़। सोहँ फड़या सोटा, अष्टम् पंचम् रिहा लड़। साची जगे नूरी जोता बहत्तर नड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता मेहरवान, पार कराए दर बहाए बाहों फड़। चौथे घर सुण पुकार। जोती नूर कर अकार। शब्द खण्डा कर त्यार। सोहँ डण्डे तिन्नां लोकां करना ख़बरदार। राउ रंक शाह सुल्तान राज राजान ना कोई सके रोक, प्रभ मारे वारो वार। लक्ख चुरासी देवे झोक, इक्क सुणाया हरि सलोक, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। निहकलंक कलि जामा पाए, बली बलवान इक्क रघुराए, सखी सुल्तान आप हो जाए, पीर फ़कीर शाह हकीर दस्तगीर, चार यारां संग मुहम्मद पकड़ उठाए, वेख वखाणे राजे राणे, जगत स्याणे अन्धे काणे, जगत चलाए साचा तीर। खाणी बाणी आई हानी, कुरान अंज़ील भेव ना जाणे, ईसा मूसा काला सूसा कवण वखाणे चीना रूसा भारत खण्डी पाए वंडी चमके चण्ड प्रचण्डी, ना दिसे राह डण्डी चरन छुहाए

प्रभ जमन किनारा। गुर गोबिन्द तेरा बचन पूर आण कराउणा। अस्सू तिन्न दिवस सुहाना। शब्द तीर इक्क चलाना। वाली हिन्द पकड़ उठाणा। आत्म बन्न शब्द धार जोत सरूपी दरस दिखाणा। माणक मोती मनी कौस्तक धारी, शब्द उडारी पवण अहारी, नर निरँकारी भेख धारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे वेखे साचे घर, भगत वछल वछल भगवान, गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना। मौली मैहन्दी अमाम मैहन्दी। उम्मत नबी रसूल दी इक्क दूजे दे नाल खहन्दी। कलिजुग तेरी वहन्दी नदी। गुरमुख विरले तेरी आत्म प्रभ का भाणा सहन्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व हो अस्वार, अस्सू तिन्न दिवस विचार, किले लाल पावे सार, लक्ख चुरासी दोहीं हथ्थीं लाए मैहन्दी। लाए मैहन्दी रंग लाल। प्रभ अबिनाशी साचा उठे मार छाल। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, शब्द बणया विच दलाल। लक्ख चुरासी अन्तिम करे हक्क नबेड़ा, लाड़ी मौत संग रलाए काल। लाड़ी मौत काल अकाला। देवे वर दीन दयाला। भगत वछल होए भगतां आप रखवाला। सोहँ शब्द तन पहनाए चिट्टी चादर सच दुशाला। बेमुख गूढ़ी नींद सुआए, एका भुल्लया हरि गोपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, कलिजुग जीआं दिस ना आए, गुरमुख साचे विच समाए, लक्ख चुरासी वेख वखाणे, पकड़ उठाए राजे राणे, बणया रहे आप कंगाला। आप कंगाल दीन दयाल। ना कोई
५४० ०४ सके सुरत संभाल। राणा संगरूर साचा लाड़, चरन प्रीती लए पाल। फल लगाए साचे डाल। वाली हिन्द अनमुल्लड़ा ५४० ०४
लाल। प्रभ बख्शिंद तोड़े जगत जंज़ाल। पंचम् जेठी वागां मोड़े, एका चढ़या शब्द घोड़े, मातलोक कर ध्यान। आपे जाणे जाण पछाणे, वेख वखाणे बाग़ दयाल। बाग़ दयाल धन्न धनंतर। कवण गुर कवण चेला, कवण सुणाए साचा मन्त्र। कवण आदि पुरख अन्तरजामी, जुगा जुगन्तर पटन पटम्बर। सद सुतंतर निहकामी, कवण बणाए साची बणतर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भाणा हरि नर राणा, पुरख सुजाना वाली दो जहानां, आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता, वेख वखाए साचे संत भगत भगवन्ता। मिले मेल कँवला कन्ता। शब्द झूला आदमी मूला बणाए बणता। कलिजुग अन्तिम फलया फूला, लक्ख चुरासी राह तूला, एका अग्न काया चोला, ना कोई वखाणे आदिन अन्ता । निहकलंक कलि जामा पाए, अन्तिम वेला आण सुहाए, गुरमुख साचे लए जगाए, जोत सरूपी दरस दिखाए, शब्द सरूपी डंक वजाए, इक्क वखाए नाम झूला। नाम झूला शब्द उडान। जन हरि दए श्री भगवान। अमृत आत्म बरसे मेंह, चरन प्रीती साचा नेंह, दूई द्वैती मेट मिटाई, लक्ख चुरासी उडे खेह, झूठी गागर माटी देह कलिजुग अन्तिम मिटणा निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरख आदि अन्तर जुगा जुगन्तर, मात पताल गगन गगनंतर, एका एक जन भगत टेक,

करे बुध बबेक, कलिजुग तन ना लगे सेक, पैज संवारी हरि बनवारी नर निरँकारी नैण मुँधारी, सति पुरख सति धन्नवादा, बोध अगाधा, साची देवे शब्द दादा, एका जोती आदि नूर, ना कोई मात पित ना कोई दादा, जन भगतां रक्खे हित्त, नित नवित्त वार थित्त, अमृत धार आत्म देवे। सति सुहञ्जणी रैण। गुर संगत मिल इक्ट्ठे बहिण। पुरख अबिनाशी साचा लाधा, दरस पेखे साचे नैण। मीत मुरार साक सज्जण सैण, मात पित लोकमात देवे दाती नाम सुगाती, अन्त चुकाए लहिण देण। गुर संगत बणाए इक्क जमाती। आत्म रस सहिज समाती। मिल्या मेल कमलापाती। जगी जोत धरत माती। कलिजुग मिटे अन्धेर राती। गुरमुखां काया सीतल धारा, सीतल धार अमृत फुहार, ठंडी ठार रक्खे छाती। तुट्टे माण मुहम्मद संग यार चार, वजे तीर साची काती। निहकलंक वेख दरबार, शब्द खण्डा खिच्च तलवार, मेट मिटाए ऊँची नीची जगत जाती। शब्द घोड़े हो अस्वार। चरन जोड़ा होए बाहर। लक्ख चुरासी ख़बरदार। कलिजुग फल होया कौड़, मिटदे जाण वारो वार। धर्म राए घर लग्गी औड़, अठाई कुण्डा खोल्हे बार। प्रभ अबिनाशी करे छेती ख़ाली जगत द्वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक अवतार नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमाती लै अवतार। प्रभ अबिनाशी सर्ब घट वासी, धर्म राए तक्के राह। घनकपुर वासी जोत प्रकाशी, लक्ख चुरासी देणा फाह। कोई ना जपे स्वास स्वासी, बेमुख जीवां भुलया राह। झूठे पंडत वेद वखानण पंडत कांशी, सच सुनेहड़ा कोई देवे ना। गुरदुआरे मन्दिर बैठे मदिरा मासी, ना कोई जपाए साचा नां। घर घर बैठे करन हासी, गुर गोबिन्द किसे दिसे ना। कलिजुग तेरी तुट्टी रासी, कवण कराए बन्द ख़लासी, तीर्थ तट्टां कोई पुच्छे ना। होए अन्धेर मात पताल अकासी, कलिजुग तेरी उदासी, गुरमुख विरला जीव जगत स्वासी जिस तन प्रभ नाम धन सच गहणा तन छुट्टे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, एका अंक जगत रखाए, सोहँ डंक राउ रंक कन्न सुणाए, भगत फुलवाड़ी कलि सुक्के ना। लाड़ी मौत धर्मराय दोहां बणी इक्क सलाह। पुरख अबिनाशी जगत मलाह। लक्ख चुरासी देवे फाह। किसे ना सुझे कोई राह। साध संत साध, गुर भगत भगवन्त जगत धर, औलीए पीर दस्तगीर चार यार कर ख्वार। हाहाकार विच संसार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। दर दर घर घर रोए नर नार। कन्त कन्तूहला ना मिले मुरार। जगत झूला, पुरख अबिनाशी भुल्ला, माया रुला सर्ब संसार। ठंडा होया काया चुल्हा, जोती अग्न अग्नी जोती बुज्झया अन्गयार। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे साचे दर निहकलंकी नर अवतार।

❇ २ असू २०११ बिक्रमी तेज भान दे गृह मेरठ छाउणी ❇

सति सरूप अनूप रूप मध मतया। शाह सुल्ताना निगाहबाना जोती नूरा हाज़र हज़ूरा साचा भूप वलीआ छलया। दाता सूरा भेखाधारी वड प्रताप, सतवें घर जोती बलया। एका धार साची चल्लया। नूर नुराना इक्क इकलौता, जोती जोत सरूप हरि, नाम सिँघासण शब्द सेजा दर घर साचे सोता। सत्तम घर सति अकारा। नूर नुराना कमलापत, दीपक जोती इक्क अकारा। दूजा कोए ना दिसे तत्त, रत्त बूंद ना कोई गारा। सच धाम ना उपजे रत्त, हड्ड मास ना नाड़ी पिंजर प्यारा। एका जोत हरि प्रभ समरथ, सगली जोती सर्ब अकारा। सत्तम घर सति सतिवाद। जोती वसे माधव माध। नेत्र नीर निराला कसे, लछमी देवे प्रीती दाद। छेवें घर आए वसे, जोती जोत सरूप हरि, एका नूरी सच धर जोत निरँजण शक्ती आदि सतवें दर तोड़ गढ़। छेवें घर जाए वड़। शब्द साचा लए फड़। चरन दासा हरि भरवासा जोत अकासा, ना कोई सिर ना कोई धड़। जोती जोत सरूप हरि, एका जाणे आप पछाणे, शब्द जोती आपणा लड़। छेवें घर शब्द वसेरा। साची धुन मेरा तेरा। दोहां गुण इक्क घनेरा। पंजवें घर पाए फेरा। पुरख अबिनाशी साचा डेरा। ना कोई सन्झ ना सवेरा। एका पवण दर वसेरा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् वेखे चार चुफेरा। पंचम् घर हरि जी आए। शब्द पवण संग ल्याए। नाद धुन इक्क उपजाए। चौथे दर इक्क कुण्डा लाहे। दर दुआरे अग्गे खड़्, गुरूआं पीरां बणत बणाए। सति सरूपी अन्दर वड़, दीपक जोती दए जगाए। नाम निमाणा बाहों फड़, लोकमाती राह दिसाए। चौथे दर तोड़े गढ़्, साचे घर बाहर कढाए। किले कोट उपर चढ़, गगन अकाशी बाहर कराए। आप फड़ाए आपणा लड़, जोती जोत सरूप हरि, एका वसे साचे घर, चौथे दर बूहा लाहे। चौथा घर सच द्वारी। शब्द पवण मार उडारी। पूरा गुर होए बाहरी। तिन्नां लोकां आई वारी। पैज संवारे वारो वारी। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश करोड़ तेतीसा आई हारी। मिटे भेव बीस इकीसा, एका खेल न्यारी। कवण गाए राग छतीसा, अंजील कुरानी ईसा मूसा, वेद पुरानी पढ़न हदीसा, खाणी बाणी कवण पढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्नां लोकां धार बन्ह्राए। तिन्नां लोआं कर प्रकाश। मात पताल इक्क अकाश। त्रैगुण माया होई दास। सरगुण रूप विच प्रभास। निरगुण जोती नूर अकाश। शब्द धुन पवण स्वास। अठां तत्तां मण्डल रास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी करे वास। तिन्नां लोआं साजन साज। वेख वखाणे ग़रीब निवार। पुरीआ लोआं कर अकार, शब्द जैकार नाम देवे साचा दाज। जोती जोत सरूप हरि, तिन्नां लोआं खोल दर, वेखे खेल कल कि आज। तिन्न लोक कर अकारा। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक पाए सारा। इक्क

चलाए सोहँ शब्द सच्चा सलोक, चार कुन्टी खण्डा भारा। कोए ना सके अग्गों रोक, राजा राणा होए ख्वारा। लक्ख चुरासी देवे झोक, निहकलंक ल्ए अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्ने आपणी धारा। साचा कर जगत अकार। माया राणी पसर पसार। लक्ख चुरासी जोत अधार। नौ दस ग्यारां बीस तीस चार लक्ख अपार। चुरासी कीनी वक्ख वक्ख, आपे करे खेल करतार। जोती नूर इक्क प्रतक्ख, जगे जोत अगम्म अपार। जीव जन्त भाण्डे सक्ख, आत्म भरया इक्क हँकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आवे जावे वारो वार। तिन्नां लोआं कर अकार। प्रभ अबिनाशी साची धार। ब्रह्मा विष्नूं शिव लाए कार। करोड़ तेतीसा बणाए देव, अमृत प्याया तृखा बुझाए, सतिजुग बन्नी साची धार। सच सिँघासण डेरा लाया, पुरख अबिनाशी दिस ना आया, आदि अन्ती जुगा जुगन्ती साची कार। शब्द घेरा इक्क रखाया, चुरासी झेड़ा वाह वाह पाया, एका गेड़ा आप दवाया कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, धरत मात तेरी सुणे पुकार अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, इक्क पुकार तिन्नां लोआं कर अकार। मात चले साची धार। चार जुग एका कार। मीत मुरार आपे करे दासन दासी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कल्गी अवतार। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल रंग अपार। सच दरबार हरि निरँकारा। तख्त ताज करे सच विहारा। चार जुग साजन साज, माण दवाए वारो वारा। शब्द सरूपी मारे अवाज़, काज रचाए विच संसारा। आप रक्खे सदा सद लाज, करे खेल हरि खेलणहारा। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचा मात धराए धर्म कर्म इक्क रखाए, ना कोई दिसे जीव गंवारा। सतिजुग उपजे सति संतान। जन भगतां मिले जीआ दान। आत्म उपजे इक्क ज्ञान। मेल मिलावा हरि भगवान। दिवस रैणी ठंडी छावां, जगत अंदेसे सर्ब मिट जाण। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल करे भगवान। त्रेता द्वापर मात धराए। एका बख्शे सरन सरनाए। जोत सरूपी जामा पाए। जुगा जुगन्तर खेल रचाए। संत नवित्त भगतन हित्त, पुरख अबिनाशी ना कोई वखाए मात पित, लोकमाती जोत जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर अन्तिम अन्त कराए। द्वापर त्रेता जाए मुक्क। कलिजुग भार ल्या चुक्क। अन्तिम वेला आया ढुक्क। हरे रुखड़े गए सुक्क। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी करे ख्वारी हाहाकारी बेमुखां मुख पाए थुक्क। कलिजुग अन्तिम कर ख्वार। काला सूसा तन श्रृंगार। धरत मात करे पुकार। ईसा मूसा होए ख्वार। एका संग रलाए, चीना रूसा, हथ्थ खण्डा हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। धरत मात दए दुहाए। प्रभ अबिनाशी हो सहाए। एका दिसे आई हिस्से तेरी सच सरनाए। झूठी चक्की जीव पीसे सच दात

किसे हथ्थ ना आए। भेव चुकाए बीस इकीसे, नूरी जोत जगाए। एका छत्र झुलाउणा सीसे, शब्द डंक वजाए। प्रगट हो मात जगत पित जगदीसे, निहकलंकी नाउँ रखाए। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् जेठी जामा पाए। पंचम् जेठी जामा पाया। निहकलंकी डंक वजाया। राउ रंकां दए सुणाया। द्वार बंक इक्क सुहाया। सतवें घर दीप जगाया। छेवें घर चरन छुहाया। अमृत प्याला इक्क भराया। शब्द साचे लड़ फड़ाया। पंजवें घर अकार वखाया। चौथे दर धार बन्ह्राया। साचा अस्व इक्क मंगाउणा, शब्द घोड़ा नाम रखाया। शब्द घोड़ा इक्क रखाया। कलिजुग तेरी परखे नीती मिठी कौड़, दूर दुराडा नेड़े आया। धुरदरगाही आया दौड़, जोती जोत सरूप हरि, सोलां कलीआं तन श्रृंगार, सिँघ सिँघासण डेरा लाया। सोलां कलीआं करे श्रृंगार। प्रभ अबिनाशी वेख विचार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। रंग रंगाए अपर अपार। चिट्टा पीला सूहा लाल काली धार। एका रंग चढ़ाए गुलाल, साचे दर हरि करतार। चिट्टा अस्व मारे छाल, किले लाल तन आत्म होवे पार। उचे फल लाहे डाल, शब्द डण्डा हथ्थ अस्वार। वेख वखाए निहचल धाम अटल, लोकमात इक्क अखाड़। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपणा खेल कर करतार। चिट्टा अस्व हो त्यार। दक्खण दिशा होणा बाहर। तिन्नां लोआं पावे सार। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार। कलिजुग अन्तिम आउणी फाँसी, धर्म राए करे प्यार। कोई ना झल्ले पंडत कांसी, वेद पुरानां करन विचार। कुरान अंज़ीलां होए उदासी, अन्तिम होई शार। खाणी बाणी वेख वखाणे मदिरा मासी, शब्द खण्डा तिक्खी धार। एका वसे हरि भगवानी, रसना गाए गुण गुणवन्त रसना धार। हरिजन होए दासन दासी, सोलां कलीआं तन श्रृंगार। प्रगट होए घनकपुर वासी, आत्म किला तोड़े काया गढ़ हँकार। जोती जोत सरूप हरि, अस्सू तिन्न दिवस विचार। अस्सू तिन्न मात वड्याई। निहकलंकी जोत जगाई। सच दुआरे जाए बंकी, चोट नगारे लग्गे डंकी, वाली हिन्द लए उठाई। किरपा कर साचा हरि, जमन किनारे डेरा लाई। राजा राणा फड़ फड़ बाहों चरनी लाई। प्रभ अबिनाशी धरनी धर, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साची जोत जगाई। आप उठाए वडे शाह राजन राजे, पुरख अबिनाशी बेपरवाह, किसे ना लभ्भे थां। शाह सुल्तान फिरन भाजे, जन भगतां पकड़े बांह। दिवस रैण ठंडी छाँ। लोकमात आप उठाए दए बन्ह्रे ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची साजना सतिजुग तेरी आपे साजे अस्सू तिन्न दिवस सुहा। किसे ना दिसे सच कलबूत, झूठी माटी देह तजावणा। एका शब्द प्रभ दर साचे दूत, चार कुन्ट हरि दुड़ावणा। राउ रंक एका नाता, एका सरन सतिगुर शब्द रखावणा। एका मात एका पिता, एका हित्ता चार वरन करावणा। एका खेवट एका खेटा, तीर्थ तट्ट ना कोई रखावणा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक

नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार जमन किनारे डेरा लावणा। चरन छुहाए जमन किनारे, जोती नूर कर उज्जयार। सच्ची तूर शब्द संसार। धरत मात तेरी आसा मनसा करे पूर, दर साचे सुणी पुकार। लक्ख चुरासी कूड़ो कूड़, मानस जन्म गए हार। चार कुन्ट उडे धूढ़, मिटदे जाण मूर्ख मूढ़, फल ना दिसे किसे डाल। राजयां राणयां पाए जूड़, शब्द वेलणे पीड़े बूड़। गुरमुख खिच्च ल्याए चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता मेहरबान चतुर सुजान, वाली दो जहान, जिस जन मस्तक लाए धूढ़। भरे शब्द पवण आए चल दुआरे। प्रभ अबिनाशी कर निमस्कारे। दोए मंगण सच्चा वर, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, खाली भरे आप भण्डारे। राजे राणयां दए वर, अमृत खोल्ह साचा सर मिटे अन्ध अंध्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अस्सू तिन्न देवे किले लाल शब्द दुशाल, चोला पाए विच संसारे। लाल रंग रंग रंग रंगीला। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, जोती लग्गे एका तीला। प्रभ अबिनाशी नूर नुरानी। वेख वखाणे शाह दुरानी। जगे जोत इक्क भवानी। शब्द मारे तीर नुरानी। ना कोई जाणे भेव, सार ना पाए वेद कुरानी। कलिजुग वधी बईमानी। प्रगट होए शाह सुल्तानी। जन भगतां देवे सच निशानी। हथ्थी बन्न्हे मौली गानी। मैहन्दी लाए रंग महानी। गुर गोबिन्द लिख्त भविख्त अन्तिम कलि पूर करानी। गुर गोबिन्द लिख्या लेख। प्रभ अबिनाशी धारे भेख। वेख वखाणे औलीए पीर शेख़। पंच प्यारे आप उपजाए, मस्तक लाए साची मेख़। नाम कराए सति वणजारे। राजे राणे कर ख्वारे। तख्त ताज झूठा काज, शब्द मारे इक्क उडारे। प्रगट होए माझे देश नरायण नर वड मृगेश, करे खेल अपर अपारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा दूर कर, वेखे विगसे कर विचारे। लाल रंग रंग गुलाला। भगत जनां प्रभ बणे दलाला। ना कोई सूहा ना कोई दिसे पीला काला। एका जोती नूर नुरानी अस्सू तिन्न होए उजाला। राउ रंकां जाए आत्म विंन्ह, चिट्टे अस्व मारे छाला। प्रगट जोत भिन्न भिन्न, ना कोई वेखे रैण दिन, कलिजुग मेटे रैण काला। वक्त लँघाया गिण गिण, संत मनी सिँघ लेख लिखाया बैठ सच्ची धर्मसाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चिट्टे अस्व पैर धर करे खेल जगत निराला। सोलां कलीआं सोलां कल। सत्त दीप नौ खण्ड पृथ्मी करे छल। सति सागरां जल थल। काया गागरा घड़ी घड़ी पल पल। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे निहचल धाम अटल्ल। सोलां कलीआं अस्व पलाण। सत्तां दीपां करे ध्यान। जम्बु कुशा लखण करौच पुशकर सलमल सान पछाण। सत्ते हिस्से सत्तां दीपां करे वड आप भगवान। नौ खण्ड पृथ्मी किसे ना दिसे कुला खण्ड, इलाबुत्त हरिवरख किपुरख भारत खण्ड, हरणयमह केतमाल सनक भदर। जोती जोत सरूप

५४५
०४

हरि, सोलां कलीआं देवे वर, घट घट तोड़े जन्दर। सोलां कलीआं सच कनात। सत्तां दीपां नौंआं खण्डां, लाड़ी मौत चढ़े बरात। घर घर पौंदी जाए वंडां, बेमुखां वढी चाए कंडां, ना कोई वेखे दिवस रात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, चरन बन्हाए साचा नात। सोलां कलीआं सोलां शृंगार। पुरख अबिनाशी अन्तिम वार। लक्ख चुरासी होए दासी, जीव जन्त साध संत दर दर ख्वार। जन भगत बणाए साची बणत, किरपा कर नर गिरधार। ना होए विछोड़ा आदि अन्त, जुगा जगंत भगत भगवन्त, शब्द डोरी बद्धे धार। मेल मिलावा पूरन संत, रसना गाए गुण अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंकी लै अवतार। वर वर्याम, शाह सुल्तान, सोलां कलीआं तणयां ताण। चार कुन्ट भवाए बेईमान वड सुल्तान, शब्द डण्डा मगर लाए, इक्क कराए सच उडान। वेख वखाणे थांउँ थाए, अन्दर बाहर ना कोई रखाए, लक्ख चुरासी करे पछाण। ना कोई छुडाए पिता माए, झूठे दिसण भैण भ्राए, कलिजुग दिसे अन्धेरी रात। जोती जोत सरूप हरि, अट्ठे पहर दिवस रैण वक्त सुहाए, अमृत वेला सच प्रभात। सोलां सोलां बत्ती बत्ती धार। प्रभ दे समझावे मती विच संसार। कलिजुग वगे वा तत्ती, ना कोई करे ठंडी ठार। ना कोई दिसे जीव जती, काम क्रोध लोभ चल्लया अन्तिम तन विकार। काया मन्दिर झूठा बणया अन्तिम होणा छार। शब्द तीर एका चल्लया, चार कुन्टी वारो वार। प्रगट होए वलीआ छलीआ, निहकलंकी नर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जामा धर, सोलां कलीआं जोड़े जोड़। उप्पर पाए शब्द घोड़, चरन छुहाए हरि जी दौड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली कूटे लहन्दी दिशा आप लगाए पहला पौड़। सोलां कलीआं सच सुल्ताना। देवे माण भगत भगवाना अस्सू तिन्न दिवस सुहाना। उठया हरि बली बलवाना। जन भगतां तुठ्ठा, हथ्थीं बद्धे गाना। बेमुखां टंगे पुट्ठा, शब्द डण्डा सिर लगाना। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल जगत बिध नाना। सोलां कलीआं सिध्धे चीर। अस्सू तिन्न चले तीर। राजे राणे होए दिलगीर। बेमुहाणे शाह हकीर। सुघड़ स्याणे नेत्र वहायण घर घर नीर। बाल अञ्याणे माता छड्डुण सीर। पुरख सुजाने हरि भगवाने, इक्क चलाए शब्द तीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरी करे ख़लासी, बेमुखां पाए शब्द जंजीर। सोलां कलीआं तन कलीरे। जन भगत उपजाए मात हीरे। दीपक जगे साची जोती, इक्क दूजे दे साचे वीरे। आपे लभ्भे माणक मोती, सृष्ट सबाई रही सोती, मेल मिलाए धीरे धीरे। ना कोई रखाए वरन गोती। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर विष्नूं भगवान, शब्द बन्हाए साचे चीरे। शब्द चीर सिर बंधावणा। नाम बस्त्र तन पहनावणा। आत्म फ़कीर हरि जन बंनावणा। धीरज धीर

इक्क रखवाणा। जोती जोत सरूप हरि, अस्सू तिन्न आत्म बन्न, अमृत साचा सीर पिलावणा। अस्सू तिन्न सच दिहाड़ा। आपे वेखे चंगा माढ़ा। कलिजुग लग्गी अग्न तत्ती हाढ़ा। शब्द सरूपी करे वाड़ा। धरत मात तेरा बणाए इक्क अखाड़ा। मेट मिटाए जात पात, चहुं वरनां दा सच्चा लाड़ा। एका बख्शे सच्ची दात, जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी रात, सृष्ट सबाई चबाए दाढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां दूतां पाए झाड़ा। सच स्वामी सर्ब सुख दाता आत्म वेख वखाणे, सच सिँघासण बैठ मारे झाता। वाली हिन्द साचे राणे, पुरख अबिनाशी वेख इक्क इकाता। कलिजुग भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे, आत्म तृखा कवण बुझाता। कवण चलाए आपणे भाणे, अमृत बूंद प्याए स्वांता। नर हरि वड बली बलवाने, भगत सुहेला पिता माता। झूठे दिसण तहिसीलां थाणे, वड्ढीआं खाणे वड कमजाता। मायाधारी बेमुहाने, गऊ ग़रीबां मारन लाता। पुरख अबिनाशी अन्त पछाणे, सुणी पुकार धरत माता। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता। वाली हिन्द पुरख सुजान। साचे दर कर ध्यान। मिले हरि दर दरबान। खुल्हे सर जाणा तर, चरन धूढ़ कर इशनान। नौ खण्ड पृथ्मी चुक्के डर। ना
५४७ जन्मे ना जाए मर, भरम भुलेखे दूर कर, सृष्ट सबाई सुंञ मसान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख ५४७
०४ लिखाए राष्ट्रपत करना इक्क ध्याना। साचा लेखा हरि लिखाणा। सोहँ कंडे नाल तुलाना। साचे डण्डे वणज कराना। विच ०४
वरभण्डे आप जपाणा। कुझ ना जानण पंडत पंडे, मुलां शेख़ हथ्थ ना आवणा। ग्रन्थी पन्थी होए रंडे, साचे डण्डे किसे हथ्थ ना पावणा। चार वरन प्रभ आपे वंडे, कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, भरम भुलेखा दूर करावना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरना एका सरन राउ रंक शाह सुल्तान एका धाम बहावणा। वाली हिन्द शब्द पुजारी। कर ध्यान नर निरँकारी। धरे भेख भेखाधारी। नेत्र खोल्ह लैणा वेख, नैण मुँधार कृष्न मुरारी। मस्तक लिखे साचे लेख, आदि पुरख एका कारी। लोकमात लाई मेख़, जगत सच्ची सरदारी। अन्तिम कलिजुग धरया भेख, दिल्ली आए सच द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुनेहड़ा रिहा घल, वेख वखाणे जल थल डूंघी कन्दर जंगल जूह पहाड़ी। वाली हिन्द राजन राज। सिर किसे ना दिसे ताज। प्रगट होया प्रभ देस माझ। गऊ ग़रीब निमाणयां रक्खे लाज। वडे वडे शाह राजे राणयां, चार कुन्ट कराए भाज। किसे हथ्थ ना आए सुघड़ स्याणयां, शब्द उडाए साचा बाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा साजन रिहा साज। नाम खुदाई सच रंगीन, अलामुम हिला अलामीन यामबीन, दरोही खुदाए दी, खुदाए दे नबी दी, दरोही चहुं यारां दी, हज़रत दस्तगीर दी, जीव अलनेक कमच

खेल सोहँ ख़ुदाए दी, ख़ुदाए दे नबी दी, दुःख रोग सोग हड्ड नाड़, काया उजाड़ देवे साड़, सभ तौफ़ीक इक्क ख़ुदाए दी, मेहरबान मिहबान बीदो बी खैर या मुबीन बी खैर या अलाह। नाम ख़ुदाई हक्क हलाल सच बिस्मिल्ला। नाम ख़ुदाई कमानी चिल्ला। जगत वड्याई नबी रसूला। सेव कमाई वेखे एका नूर इकल्ला। साचा नूर जिउँ कोहतूर हाज़र हज़ूर , तन मन्दिर माटी झूठी खल्ला। इक्क ख़ुदाई ख़ुदी ख़ुद बन्दे। भरम भुलेखे झूठे धन्दे। अन्ध अज्ञानी मन्दे। एका नूर तूर सुरंगा, सच दमामा नाम मृदंगा, पूर कराए कामा घर सच ख़िताब, एका देवे आबे हयात हयात आब, इक्क इक्ड्डे दो आब समेट देवे काया लाभ हक्क हलाली शाह हज़ूर चौदां तबकी करे कारज पूरा। पीर दस्तगीर शाह जनाब, अली उसमान आलमीन उलमला जहान कुलइतुला नाम बिस्मिला सच सचाई हथ्थ कुरान जोती नूर इक्क रुशनाई। दूई द्वैती रहे ना राई। अहिमद मुहम्मद मिले ऐली शाह सुल्तान, हक्क हकूक शाह रफ़ीका चुक्के चूक सिदक सबूरी आसा पूरी, जग होए नीकन नीका। एका जोती नूरी अल्ला वसे इकल्ला, कोई ना जाणे रस मीठा फीका। दर घर तन अन्दर रोग सोग मिटावणा, किसे रहे ना चिन्ता। बिरध बाल जवान एका मिले नाम खज़ाना, आप बणाए साची बणता। किरपा कर हरि
५४८ ०४ भगवाना, देवे नाम साचा दाना, अमृत आत्म साचे संता। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत निवारे सोगी चिन्ता। काल कलेश जगत कलन्दर। अट्ठे पहर रहे अन्दर। दिवस रैण वरते कहर हँकारी विकारी करे ख्वारी, लग्गी अग्न काया अन्दर। शब्द मार प्रभ तेज कटारी, वारो वारी हड्ड नाड़ी तोड़ जन्दर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आपे जाणे काया मन्दिर साचे अन्दर। गुर संगत भरया रहे भण्डारा। सेवा कीनी गुरूदवारा। मन तन काया सीतल भीन्नी, रंग चढ़े अपारा। जोती जोत सरूप हरि, किरपा करे हरि गिरधारा। सच भण्डारा हरि दातारा। विच संसार देवणहार नर निरँकारा। मानस देही कदे ना हार, मिल्या मेल पुरख अपारा। बस्त्र पाए तन श्रृंगार, साचे घोड़ कर अस्वारा। नाम देवे तिक्खी धार, बज़र कपाटी आर पारा। चरन लगाए दया कमाए दर दुआरा। साचा देवे भगत सहारा। पुरख अबिनाशी नर निरँकार, वणज कराए इक्क वपारा। सोहँ शब्द सच जैकार, हउमे रोग दए निवारा। गुरमुख रसना रही उचार, आत्म लाहे तन अफ़ारा। जगत अवल्लड़ी चले चाल, जोत सरूपी भेख धारा। मानस देही अमृत फल वेखे साचे डाल, गुरमुख खिच्च ल्याए दुआरा। दर घर साचे हरिजन अनमुल्लड़ा लाल, ना कोई जाणे जीव गंवारा। अमृत सुहाए साचे ताल, प्रभ अबिनाशी वड भण्डारा। आदि अन्त ना होए कंगाल, देवणहार सर्ब संसारा। जगत तोड़े हरि जंजाल, लक्ख चुरासी ना आए हारा। सच्चा देवे नाम धन जगत माल, दर घर आए दया कमाए भगत वछल हरि गिरधारा। अन्त

काल ना खाए काल, चरन प्रीती निभे नाल, जगत माण गुर चरन दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत किरपा देवे कर, भरया रहे सद भण्डारा। गुर संगत देवे नाम ख़ज़ाना। प्रभ अबिनाशी बीना दाना। चरन धूढ़ी सच इशनाना। हथ्थीं बन्ने नाम गाना। सोहँ साचा पीणा खाणा। दरगहि साची माण दवाणा। काया काची जोत जगाणा। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत भण्डारे रिहा भर, अतोट तुट्ट आप रखाना। गुर संगत हरि संग निभाउणा। दर घर साचे रहणा मंगत, प्रभ अबिनाशी रिदे वसाउणा। आपे कटे भुक्ख नंगत, रोग सोग चिन्त विजोग गंवाउणा। आपे चाढ़े नाम रंगत, आदि अन्त ना किसे लाहुणा। धन्न वड्याई धन्न कमाई, गुर पूरे सेव कमाई, गुर साची संगत अमरापद घर साचे पाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत देवे सचा माण, दिवस रैण सद रसना गाउणा। शब्द तीर नाम कमान। रसना चिल्ला खिच्चे तीर, वाली दो जहान। दिल हिलावे दिल्ली दिला, साल ग्यारवें नौजवान। वेख वखाणे शाही किला, ला चोट निगारे हरि मेहरबान। कलिजुग तेरा अन्तिम शिला, पूरा होए विच जहान। मात पताली उखाड़ी सिला, झूठी मेटे जगत दुकान। सत्त सागरां जल हिला, पहाड़ पर्बत गूंज गुंजान। नौ खण्डीं उखड़े मात किल्ला, रसना चल्ले तीर निशान। निहकलंक कलि जामा पाए, प्रगट होए विच जहान। फूलणहार कर शृंगार तीर कमानी शब्द कटार। पाड़ा तुटे ज़िमी अस्मानी,
५४६ ०४ ना कोई वेखे रूसा धाड़। आत्म भन्ने जगत अभिमानी, विच निशाना काड़ काड़। निर हरि साचा गुणवन्त गुण निधानी, कलिजुग ५४६ ०४
झूठा देवे झाड़। राजे राणयां हथ्थ फड़ाए ठूठा, मंगण दर द्वार। गुरमुखां देवे रस अनूठा, जगत वड्याई किल्ले विचकार। वाली हिन्द तूं क्यों रूठा, प्रगट होया निहकलंक अवतार। चार वरन बन्नाए एका मुट्ठा, सृष्ट सबाई करे दो फाड़। हरिजन साचा मात तुठ्ठा, पंच बणाए सच्ची सरकार। साल ग्यारवें ना कोई लुकण देवे गुट्ठा, ल्याए अन्दरों बाहर। राजा राणा टंगे पुट्ठा, आत्म भरया जिस हँकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द घोड़े चिट्टे जोड़े हो अस्वार।

✻ ३ अस्सू २०११ बिक्रमी दिल्ली राज घाट गांधी दे नवित्त ✻

इन्द्र तेरा सच द्वार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। घनकपुर वासी जामा धार। भारत वासी उतरे पार। मदिरा मासी होयण ख्वार। गऊ ग़रीब निमाणयां लाहे उदासी, सिर रक्खे हथ्थ आप करतार। जोती जोत सरूप हरि, तेरां मग्घर फूलन हार वंडे वारो वार। तेरां मग्घर हरि वक्त सुहेला, फूलण बरखा हरि जी लाया। गुर संगत साची सिख सहिज सहिज अनन्द मंगल भैण भाई गाया। नाता जुड़े भाई भैण, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। चार वरनी साचा साक सज्जण सैण, निहकलंकी

नाम रखाया। जोती जोत सरूप हरि, नौ अठारां अठारां नौ, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। तेरां मग्घर खेल रचाए। इक्क इक्क फुल्ल हरि वरताए। अन्तिम पैणा सदा मुल्ल, मुखों बोल सुणाए। शब्द पंघूड़ा जाणा झुल्ल, निहकलंक डंक वजाए। कलिजुग माया जाणी रुल, धर्म जैकार आप कराए। लक्ख चुरासी रही भुल्ल, सच दुआरा हरि दिखाए। जोती जोत सरूप हरि, नौ अठारां अठारां नौ आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाए। तेरां मग्घर धन्न वड्याई। तिन्नां लोआं खुशी मनाई। साचे हरी वजी वधाई। इन्दलोक वेखे राही। प्रभ अबिनाशी पाई फाही। लोकमात जोत जगाई। गगन पतालां मारे झात, उहला पड़दा कोई नाही। इक्क कराए दिवस रात, भरम भुलेखा रक्खे नाही। सोलां मग्घर वक्त सुभागा। चढ़या दिन मात भागा। प्रभ लेखा लैणा गिण गिण, कलिजुग तेरा तुट्टा तागा। किया खेल इक्क छिन्न, काया जोती बुझे आगा। जोती जोत सरूप हरि, मिल्या मेल कन्त सुहागा। सोलां मग्घर दया कमाए। छोटे बाले दया कमाए लेखे लाए। साचा राह इक्क वखाए। पुरी इन्द्र जा बहाए। जोती जोत सरूप हरि, साचे भाणे रिहा समाए। पुरी इन्द्र गया भज्ज। सिँघ सिँघासण गया सज। छोटा बाला गया सज। प्रभ अबिनाशी पड़दे मात रिहा कज्ज। काया भाण्डा गया भज्ज। अमृत प्याए काया रज्ज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सिहरा सीस बन्नाया, फूलन वरखा हरि जी लाया, दर घर साचे रिहा सज्ज। फूलन बरखा हरि जी लाए। साची रुत्त आप सुहाए। पूरन सुत भेंट चढ़ाए। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, लिख्या लेख ना कोई मिटाए। वार सुहञ्जणी सुलक्खणी थित्त, साचा लेखा लए लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ अठारां अठारां नौ अन्तिम वेला पूर कराए। साचे घर हरि टिकाए। मस्तक टिक्का आप लगाए। सोहँ देवे नाम इक्का करोड़ तेतीसा जा सुणाए। शब्द मिले साचा सिक्का, दूसर कोई रहि ना जाए। बाल अवस्था बाला निक्का, सच सिँघासण डेरा लाए। मात लग्गे रस फिक्का, अमृत रस साचा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गांधी सेवा लाए। प्रभ खेल हरि हरि जाणे। हरी चन्द जोग महाने। रसना चुगी साची चोग, देवे फल हरि भगवाने। छडया तख्त ताज ल्या सच्चा जोग, तन ग़रीबी सच पछाणे। धुरदरगाह ना होए विजोग, मिटे राज राज राजाने। जोती जोत सरूप हरि, जुगा जुगन्त आदि अन्त भगत भगवन्त आप पछाणे। आत्म मंगया एका दान। साची सेवा हरि भगवान। अमृत मेवा विच जहान। प्रभ अबिनाशी किरपा कर दित्ता वर, प्रगट किया विच जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाणी जान। जोत जोती जामा पाया। साची सेवा हरि जी लाया। गऊ ग़रीब निमाणयां एका सच्चा राह वखाया। अन्तिम मन्नणा प्या भाणयां, तन मन्दिर झूठा डेरा ढाहया। छत्र दीसे ना सिर राजे राणयां,

कलिजुग जंजाला मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे लेखे हरि जी लाया। साचा लेखा हरि अपार। दूजी बन्ने फेर धार। सच्चा अस्व कर त्यार। अठारां माघ करे पार। आपे खिच्चे चरन द्वार। दस्से सच्चा राह फड़ फड़ बाहों पुरी इन्द्र वेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप कराऐ साचा विहार। अठारां माघ देह तजाई। साचे घर वजी वधाई। धरत मात साचा सुत, साची सेवा गया कमाई। मिल्या मेल अबिनाशी अचुत्त, एका घर दए बहाई। जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपे जाणे रघुपत रघुराई। भगत गांधी तन शृंगार। छोटा बाला हो त्यार। चार कुन्ट वेख विचार। राजे राणे घेर ल्याए, हथ्थ फड़ाए शब्द कटार। मेर तेर जगत चुकाए, चार वरनां आप सरदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् चोला तन छुहाए, आप आपणी दया कमाए, पंचम् दित्ता सच्चा हार। सोलां मग्घर सति विहारे। पुरी इन्द्र जै जैकारे। मातलोक ना कोई करे विचारे। छोटा बाला घरों कढ्ढे फड़ के बाहरे। प्रभ अबिनाशी बणया इक्क सच्चा दुलारा, उत्ते पाए शब्द दुशाला, चिट्टा रंग इक्क अपारे। जोती जोत सरूप हरि, आपे होए हरि रखवाला। सोलां मग्घर लोक इन्द्र वधाई। लोकमात दी वारी आई। तिन्न अस्सू खुशी मनाई। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी लेख लिखाई। नौ महीने अठारां दिन गर्भ माती फंद कटाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात साचा चन्द अस्सू तिन्न चढ़ाई।

५५१ ०४

५५१ ०४

❇ ३ अस्सू २०११ बिक्रमी दिल्ली लाल किले दीवाने आम विच्च ❇

सोहँ नाम अजपा जाप जापे। मानस जन्म बणाए कर्म, उतारे पाप रोग संतापे। काया मन्दिर माटी चरम, मेट मिटाए तीनो तापे। जगत अंदेसा मिटे भरम, दरस दिखाए अपन आपे। लेखे लाए मानस जन्म, भगत वछल वड प्रतापे। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि सोहँ जपाए साचा जापे। अजपा जप सोहँ धारा। तिन्न लोआं सद वसे बाहरा। गुर पीर ना करे कोई जाहरा। प्रगट होए अवतार नर, एका मात बन्ने धारा। आप आपणी किरपा कर, शब्द घोड़ा सच अस्वारा। लोकमात खोल्हे दर, जिंदा तोड़े बन्द कुआड़ा। काया भाण्डे देवे भर, अग्न बुझाए लग्गी नाड़ा। जम राज चुकाए झूठा डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग एका चाढ़ा। सोहँ जाप रसन मधू मात्र। आप वखाणे आपणा आप, भेव ना पायण वेद शास्त्र। पुरीआं लोआं रहे कांप, शब्द तीर तन साचे गात्र। कलिजुग तेरा अन्तिम पाप, धर्म ना दिसे छिन्न मात्र। प्रगटे जोत वड नर हरि प्रताप, मिटाए रैण अन्धेरी रात्र। सोहँ जपाए साचा जाप, लिखाए लेख मस्तक पात्र। सोहँ

जाप अजपा जपणा, कलिजुग माया विच ना तपणा, माया मोह ना लाए डंग, सैनी सैना हरि होए सहाई अंग संग, मानस जन्म ना होए भंग, अन्त बणाए आप अपना। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार जोत धर, सोहँ जपाए साचा जपना। सोहँ शब्द सुरत धुन नाद। तुट्टे मुन सुन, वेखे जोती एका आदि। पंजां तत्तां छाण पुण, काया मण्डल सच ब्रह्माद। सच पुकार रिहा सुण, भगती बख्शे साची दाद। देवे माण चुण चुण, हरिजन रसना रहे अराध। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ अजपा जाप जपाए पुरख अबिनाशा माधो माध। अजपा जाप अतोल अतोला। सोहँ शब्द जगत अमोला। नाम रागी कन्त सुहागी चार वरनां सच्चा ढोला। बुझे आगी मिटे दागी, हँस कागी जगत विचोला। माया त्यागी भगत वैरागी, चरन प्रीती साची लागी, नर नरायण वसे कोला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन एका दसे साचा बोला। सोहँ शब्द सच जैकार। सतिजुग साचे साची धार। हरिजन विरला आत्म वाचे, दुरमति मैल लए उतार। करे दरस प्रभ साचो साचे , अक्खर वक्खर सच नितार। जूठा झूठा कोई ना नाचे, क्रिया कर्म लए विचार। माया तन ना लगे आंचे, हँकारी ना चढ़े बुख़ार। आपे ढाले साचे ढांचे, जोती भट्ठी काया अग्नी डार। सोना कंचन एका पासे, शब्द सुहागा देवे डार। निज घर आत्म रक्खे वासे, पुरख अबिनाशी हरि निरँकार।
५५२ हरिजन गावे रसन स्वास स्वासे, मिले मेल अन्तिम वार। जगे जोत विच अकाशे, धर्म राए ना करे ख्वार। जोती जोत ५५२
०४ सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि सतिजुग साचे साची सोहँ दस्से एका धार। सोहँ वणज जगत ०४
वणजारा। खुल्या दर हरि वरतारा। भगत भण्डारे रिहा भर, जोती दीपक कर उज्जयारा। सतिजुग साची नींह धर, अमृत देवे ठंडी धारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अमोला साचा तोला, आप चलाए विच संसारा। संत मनी सिँघ वडा दाता। मिल्या मेल पुरख बिधाता। नाम चढ़ाया साचा तेल, शब्द दित्ती साची दाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम पुच्छे मात वाता। अन्तिम वेला आए ढुक्क। राउ रंकां हरि जी पड़दा देवे चुक्क। बेमुखां मुख पाए थुक्क। जोती जोत सरूप हरि, आपे खोल्हे साचा दर, किसे कोलों ना सके रुक। गुर गोबिन्द तेरा भारा। प्रभ अबिनाशी लाहे सारा। अन्तिम कलि प्रगट होए, घनकपुर वासी देस मझारा। जोती सरूप किया भेस, नर नरायण ना कोई जाणे जीव ग्वारा। सति पुरख सदा आदेस, आदि अन्त जुगा जुगन्त मात बन्न्हे साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारा। संत मनी सिँघ सिर तेरे ताज। पूर कराए प्रभ साचा काज। धुरदरगाही साचा माही, दुःख दलिद्र रोग सोग कटे आज। जगत साजना हरि जी साजे, जोती

जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, बेमुख मारे हरि निरँकारी, तेरी रक्खे अन्तिम लाज। गुर संगत तेरी वड वड्याई। किले लाल चरन छुहाई। प्रभ अबिनाशी करे प्रितपाल, अन्तिम वेले होए सहाई। जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम राम रमईआ। अन्तिम मेल आप मिलाई। संगत साची नाल रखाउणा। प्रभ अबिनाशी लेखे लाउणा, अस्सू तिन्न डन्न लगाउणा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए काज वेख साज साचे दर हरि बहाउणा। संगत मिल्या साचा राह। प्रभ अबिनाशी जगत मलाह। जम की फाँसी देवे लाह। पुरख अबिनाशी देवे ठंडी छाँ, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेवा इक्क खुआए कोई ना अग्गों करे ना। अमृत धारा आत्म सीरा। गुरमुख देवे कर प्यारा। काया छाणे मन्दिर तेरा। आपे पाए हरि जी सारा, लोकमात ना होए वहीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न गुरमुख संत प्यारया, हरि चरन दुलारया, शब्द बन्ने सिर साचा चीरा। साचा चीरा सिर रखाए। नाम हीरा विच टिकाए। पीरन पीरा दया कमाए। अमृत सीरा सच प्याए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किले लाल गढ़ी चमकौर तेरा लेखा पूरा अज्ज कराए। चौबदार प्रभ धार वेसे। पुरख अबिनाशी नर नरेशे। दो जहानां वाली हथ्थों खाली, ना कोई रंग रूप ना रेखे। लोकमात चार कुन्ट करे रुशनाई, विच अन्ध कूप,
५५३
०४
गुर संगत सारी हरि जी वेखे। एका नूर दस्से जोत सरूप, पहली वारी चौबदार हरि निरँकार, गुर संगत बैठी अद्धविचकार, आपे करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्त आदि अन्त आपे जाणे आपणी धार। आपणी धार जाणे हरि भगवाना। एका पहने लाल बाणा। गुरमुखां देवे साची मति धीरज यति, सोहँ शब्द भुल ना जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त होए सहाए, सच वाड़ आप कराना। साची दरगहि हरि माण दवाना। जीव क्यों भुल्ले गुण निधाना। गुरमुख साचा पूरे तोल तुले, आत्म जोती तेज प्रकाशी कोटन भाना। प्रगट होए घनकपुर गुर संगत बणाए चरन दासी, किले लाल झुलदा रहे लाल निशाना। वाली हिन्द दर द्वार। अस्सू तिन्न दिवस विचार। करे खेल हरि निरँकार। गुरूआं पीरां पाए सार। तेरी फेर आए वार। आपे लिखे तेरे लेख, नैण खोल लैणा वेख जोत जगे किस प्रकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक देस माझे जोत धर, प्रगट होए विच संसार। नूरी जोत नूर निराला। पाया गल लाल दुशाला। जगत अवल्लड़ी चले चाला। गुरमुख साचे लाल, किरपा करे हरि गोपाला। गऊ ग़रीब निमाणयां सदा सदा सद करे प्रितपाल, लोकमात जिउँ कृष्ना कान्हा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त दर घर साचे देवे माणा। कृष्न मुरारा खेल अपारा, मारे जीव जन्त हँकारा, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त गऊ ग़रीब निमाणयां, पाउंदा रहे सद मात सारा। राम अवतार वड बलकारी। करे खेल अन्तिम वारी। रावण दुष्ट दए सँघारी । धर्मी भबीखण राज दरबारी। सरन आया गिरवर गिरधारी। चरन लाया किरपा धारी। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, जन भगतां रिहा पैज संवारी। मदिरा मास रसन तजावणी। पूर करे प्रभ साचा भावनी। साची रुत्त घड़ी सुहञ्जणी, लोकमात फेर ना आवणी। जगी जोत मात निरँजण, साची जोती आप जगावणी। चरन धूढ़ करे इशनान, जन्म जन्म मैल प्रभ दर लाहवणी। दर घर साचे मिले माण, लगी प्रीती तोड़ निभावणी। मिले मेल हरि भगवान, सोहँ राग सच शब्द लोकमात सुणावणी। गुर पूरा पूर कराए भावनी। जगत विकारा देणा तज्ज। साची सेजा चढ़ना भज्ज। अमृत पीणा प्रभ दर घर साचे रज्ज। पुरख अबिनाशी आत्म सेजा रिहा सज्ज। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आपे पड़दे लए कज्ज। मति मन बुध, सति सरूपी प्रभ करे सुध्ध। निर्मल अकार जोत निरँकार, शब्द अस्वार पवण अधार, पंचां तत्तां सच्चा युद्ध। जोती जोत सरूप हरि, किरपा आपणी देवे कर, साचा गुरमुख जाए तर, शब्द घोड़े आप चढ़ाए, गुरमुख साचा बहे कुद्द। एका रक्खणा चरन ध्यान। देवे दरस हरि भगवान। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान। दुरमति मैल जाए धोती, भरम भुलेखे झूठे लेखे सर्ब मिट जाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवान सतिगुर मीता। गुरमुखां काया करे ठंडी सीता। अट्ठे पहर दिवस रैण राह साचा दस्से, परखे नीता। विषे विकारां चरनां हेठ झस्से, रस रसन जगत विकारी नस्से, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द तीर एका कसे। चरन कँवल प्रभ साचा लोड़े। प्रभ अबिनाशी कदे ना मोड़े। कलिजुग अन्तिम वेला वक्त दुहेला, गुरसिख आत्म कदे ना कौड़े। गुर संगत मेला हरि दुआरे, अन्त सहाई प्रभ साचा बौहड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए शब्द घोड़े। शब्द घोड़े जाणा चढ़। अन्दर साचे जाणा वड़। प्रभ अबिनाशी आपे फड़े जन भगतां लड़। शब्द उडारी इक्क लगाए, आप आपणी दया कमाए, कोई ना रोके किला गढ़। जोती जोत सरूप हरि, प्रभ अबिनाशी दर दरबान मेहरबान, आत्म दर रिहा खोल्ह, सच दरबार हरि सुल्तान। गुर संगत प्रभ देवे माण। पुरख अबिनाशी निगहबान। चतुर्भुज श्री भगवान, भेव खुल्हाए मात गुज्झ, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, निहकलंक नरायण नर, वड दाता बली बलवान। गुर संगत खड़ी बण भिखार। मंगण वारो वार। देवणहार इक्क दातार। लोकमात जामा पाए, धरत मात सुण पुकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम चवीआं अवतार।

❇ ३ अस्सू २०११ बिक्रमी नवीं दिल्ली लछमण सिँघ, दर्शन सिँघ दे गृह ❇

भेख रूम शाह मुलाना निरँकार। सोहणा किया तन शृंगार। धरत मात सुहाई सीस गुंदाया पुरख अपार। नैण नाई ना कोई रखाया, मेंढी गुंदे वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, फूलन करे तन शृंगार। कज्जल पाया सोहणा सज्जण मात आया। पड़दे कज्जण हरि जी आया। धर्म दमामे साचे वज्जण, शब्द डंक इक्क ल्याया। राजे राणे झूठे भज्जण, धर्म युद्ध ना किसे कराया। जोती जोत सरूप हरि, फूलन सिहरा सीस सजाया। हार शृंगार हरि निरँकार। फुल्ल फुलवाड़ी मात गुलज़ार। सति अखाड़ी धर्म द्वार। चरन छुहाए गंज पहाड़। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तानवें उनानवें घर विचार। गली विचारे हरि जी सति। जन भगतां रखण आया पति। अमृत साचा देवे सीर, हथ्थ ना आवे किसे तीर्थ तट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतानवें उनानवें घर विचार, जोती जोत सरूप हरि, फूलन हार तन शृंगार, सोहणा सुन्दर आत्म पट। रूमे शाह हरि सुल्तान। उठे वेखे मार ध्यान। झुलदा किथ्थे धर्म निशान। निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द चढ़ाए इक्क बबाण। नाथ त्रैलोकी हरि रघुराया, वेख वखाणे राज राजान। शब्द डंक सच्चा लाया, कूड़ कुड़यारे सर्ब मिट जाण। सच्चा इक्क द्वार खुल्हाया। राजे राणे चरनी डिग्गण आण। अस्सू तिन्न दिवस सुहाया, प्रभ अबिनाशी धुर दी बाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा खेल रचाया, महाराज शेर विष्नूं भगवान, किला लाल उच्च दीवार। प्रभ अबिनाशी पाई सार। चार कुन्टां उठ उठ वेखे, नेत्र पेखे वारो वार। भरम भुला जगत भुलेखे, माया पाई हरि करतार। दर घर साचे आप लिखाए भगतन लेखे, ना कोई किया मात उधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, फूलन किया तन शृंगार। शाह रूम उठे जागे। कवण बुझाए तृष्ना आगे। कोई ना फड़े अन्तिम वागे। नेत्र खोल्हे सर्ब घर बोले, पूरे तोल तोले, किथ्थे मिलदे मौली धागे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फूलन सिहरा सिर सजाया, शाह रूमा भेख वटाया, चिट्टे अस्व हो अस्वार, आप सुहाए साचे ताजे। जो दिसे ज़िमी खुदाई नूरा। अमृत धार पीणी, जोती कोहतूरा। गनंत ना जाए गिणी, ज़रा ज़रा हरि भरपूरा। चुगली निन्दया ना कन्न सुणी, फूलनहार सिर बद्धा चीरा। शाह रूम हुक्म सरकार। पहलां करे तन शृंगार। इक्क सौ इकवंजा फूलनहार। बवंजवां छत्र हरि चोबदार। फूलन टोपी सेली गल तन शृंगार। पंझी पंझी वंड कराए, भुजा लटकाए साचे हार। जोती जोत सरूप हरि, नूरी यसू इक्क वार दित्ता राज इक्क अपार। रूमा शाह रिहा बिराज। चोबदार मारे अवाज। मातलोक ल्याए फूलन ताज। उठे शाह लाजन लाज। तन शृंगारे वेख विचारे की हुक्म करना आज। जोती जोत सरूप हरि, सभ साजना रिहा

साज। आसण छड्डे सच सुल्ताना। दोए जोड़ करे ध्याना। खुदी खुदाई देणी मार, रहिमत रहिमान श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, रूमे शाह दित्ता सच्चा हरि इक्क परवाना। इक्क परवाना लिख्या लेख। गुरमुखां नेत्र लैणा पेख। मादरे ब्रिडसी धरया भेख। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारे साची मेख। आए दर लए परवाना। वाह वाह लिख्या लेख विष्न मेहरबाना। मरीआ पूत गुण निधाना। पिता ना दिसे कोई जहाना। धुरदरगाही लिख्या लेख, अन्तिम प्रगटे निहकलंक बली बलवाना। जोती जोत सरूप हरि, दूर दुराडे अड्डो आड्डे नाड़ी बलोए करे सर्ब पछाना। राज जोग अमृत रस भोग। प्रभ चरन दुआरे सच संजोग। पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी चरन कँवलारे। सच प्रकाश अन्धेर विनास, मधुर रस रास हरि गुण रसनारे। पवण स्वास शब्द अभ्यास, निज आत्म वास करे बन्द ख़लास चुरासी गेड़ कटारे। होए दासन दास कर माझे वास। सद वसे पास विष्नूं भगवाने। मात पताल अकाश, जोती मण्डल साची रास, हरि नर पति साचा कमलारे। कमलापत जगत उज्जयारा। जोती जामा शब्द दमामा साचा माना विच संसारा। अमृत देवे साचा जामा, जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण भेख कर, ना कोई वखाणे कृष्ना शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान आप झुलाए सच निशाना। सत्तां दीपां रक्खे आण। नौ खण्ड करे पछाण। शब्द चलाए रसना खिच्च तीर

५५६ ०४ कमान। शब्द तीर हरि बनवार बेमुखां तुट्टे धीर, कलिजुग वक्त अन्त अख़ीर, राजा राणा होए ख्वार। शाह सुल्तान लथ्थे ५५६ ०४

चीर मथ्थो मिटे बिधना लकीर, काया मण्डल होए वैराना। लोकमाती होई भीड़, घनकपुर वासी बद्धी बीड़, गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न दिवस सुहाना। अस्सू तिन्न संग रलाया। साचा रंग इक्क चढ़ाया। दर दुआरा गया लँघ, किल्हे लाल चरन छुहाया। चार कुन्ट दिसे भुक्ख नंग, सच दान किसे हथ्थ ना आया। चिट्टे अस्व कस तंग, शब्द सरूपी करे जंग, दर दरवाज़िउँ बाहर आया। राजे राणे दए टंग। शब्द चढ़ाए साची कंग, नाम वजाए इक्क मृदंग। भन्ने जीव काची वंग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप निभाया आपणा संग। गुर संगत साची संग रलाई। रंग रंग प्रभ वड प्रताप आपणा आप होए सहाई सभनी थाँई। मारन आया तीनो ताप, आपे माई आपे बाप, सोहँ दस्से साचा जाप, साची रुत्त आप सुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किल्हे लाल तेरा शब्द दलाल तेरा वाली हिन्द दए जगाई। साचा शब्द हरि रखवाणा। धर्म दलाल विच बणावणा। हक्क जलाल इक्क वखवाणा। शब्द ताल तन वजावणा। अमृत ताल सच सुहावणा। काया बूटा इक्क पाल, मानस देही फल लगावणा। दीपक जोती साचा बाल, वाली हिन्द फड़ उठावणा। आप अवल्लड़ी चले चाल, सदा सदा बख्शिंद आप अख्वावणा। मरे

ना जम्मे ना खाए काल, राउ रंक शाह सुल्तान विच जहान बाहों पकड़ आप उठावणा। उठया सिँघ शेर शेर दलेर। राजे राणे लए घेर। मारे शब्द कटारी पहली वारी चार कुन्ट करे ख्वारी, कोई ना करे मेर तेर। शब्द रक्खे तिक्खी आरी, करे चीर धड़ दो फाड़ी, बेमुख जीआं किस्मत माढ़ी हउमे विच्चों कढ्ढे पीड़। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एका जोत मात धर, धरत मात तेरी बन्ने साची बीड़। वाली हिन्द सखी सुल्तानयां। प्रगट होया हरि वड मेहरबानयां। पैर पसार लोकमात सुत्ता, दर आए वाली दो जहानया। आप सुहाए बसंती रुत्ता, फल लगाए साचे डाहनया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। आए चल सच दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। भगत उधारे सागर संसारे। काया गागर होई उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न पार उतारे। किला लाल चार दिवार अन्दर गया हरि करतार। वेख वखाणे सर्ब पछाणे वारो वारे। साचा लेखा आप लिखाए भेख वटाए, राजे राणे सर्ब भुलाए ना कोई पावे सार। गुरमुख साचे प्रभ आप जपाए, मात हरि बिरख लगाए, आत्म तृष्ना तृख मिटाए पूरन वड भाग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन जन हरि संत प्यारया अस्सू तिन्न मिल्या कन्त सुहाग। दर मन्दिर साचे वेख वखाणे। लेख लिखाए हरि की वरते कलिजुग अन्तिम भाणे। वाली हिन्द ना भुल्ल निधाने।

५५७
०४

एका सरन हरि भगवाने। वेले अन्त सर्ब पछताने। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, ना कोई जाणे जीव निधाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाया। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी घनकपुर वासी झूठी काया करी नास। जन भगतां होया सच्चा दास। जोत खड़ी विच अकाश। बाहर आया मात प्रकाश। गुरमुख साचे विच निवास। चार वरन नौ खण्ड पृथ्मी करे वास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क एका एका इक्क वखाए साचा घर, आदि अन्त ना जाए विनास। आया आदि पुरख अपारा, कलिजुग सोया लए जगाया। सिर शब्द डण्डा लाए भारा, फड़ के बाहों राहे पाया। जमन किनारे चरन छुहाया। जोत सरूपी दिस ना आया। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंडां, खेल करे विच वरभण्डां, नार सुहागण कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न जन भगतां आत्म विंन्ने, सोहँ चिल्ले तीर चढ़ाया। सोहँ चिल्ले चढ़या तीर। लाल द्वारी गया चीर। अन्दर वड़या हिन्द वाली पीर दस्तगीरा कलिजुग अन्त अखीर। राजे राणयां तुट्टी धीर। आत्म लथ्थे मात चीर। ना कोई सहाई पीर फ़कीर। एका नूर अलाही धुरदरगाही सच सुल्तान वड मेहरबान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त लए बचाई। मात पित जो नां धराया। कर जुगत पुत्त पूत उपजाया। मानस देही गया जित्त,

५५७
०४

झूठी काया दे तजाया। छब्बी पोह साची थित्त, मृत्यु लोक दिस ना आया। पंचम् जेठी साचा सुत, प्रगट होए जोत बलोए पुरी घनक डंक वजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा मात पाया। जोती जामा मात धर, पूरे काज रिहा कर। संत मनी सिँघ लिख्या वर। साची सिख्या गुर शब्द घर। दर मंगी साची भिख्या, नर हरि नाता साचा वर, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त साचे संत आप बहाए साचे घर। सति पुरख हरि चतुर सुजाना। पंचम् बन्ने हथ्थीं गाना। झुल्ले छत्र इक्क निशाना। सोहँ साचा लेख लिखाना। त्रैलोकी नाथ सगला साथ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सगल समग्री साची रास। पुरख अबिनाशी सद वसे पास। घनकपुर वासी ना होए उदास। राजे राणे देवण आया फाँसी, मेट मिटाए मदिरा मासी, जन भगतां पूरन करे आस। माण गंवाए वेद पुरानां पंडत काशी, गोहझ ज्ञाना हरि भगवाना करे अन्त विनाश। खाणी बाणी गगन पताली जीआं जन्तां वेद पुरानी, शाह अंजीलां रंग वेखे नीला। प्रभ अबिनाशी कीता हीला। जोती लग्गया अग्न तीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साल ग्यारवें नर हरि हरि नर प्रगट होया छैल छबीला। साल ग्यारवें हरि बलवान। शब्द फड़े तीर कमान। नौ खण्ड ना कोई अड़े, मारे खण्डा शब्द हरि भगवान। गुरमुख साचे दर घर साचे वड़े, मिल्या मेल हरि भगवान। आत्म दर दुआरे सद रहे खड़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विष्नूं भगवान भगत वणजारा। साचा देवे नाम दान, जन चरन सरन करे प्यारा। आत्म बख्शे ब्रह्म ज्ञान, पंजां सेवकां मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, गुरमुख बणाए चतुर सुजान। देवे नाम नाम निधाना। हथ्थीं बन्ने हरि जी गाना। चरन धूढ़ सच इशनाना। चतुर मूढ़ मूढ़ चतुर हरि एका रंग रंगाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दीप जगत बलोए गुरमुख आत्म कोटन भाना। गुरमुख आत्म वेख विचार। जिस ने पाई साची सार। कर्म धर्म विच संसार। मानस देही उत्तम जन्म, मात गर्भ आया बाहर। जगत माया मेटे भरम, अमृत छिड़के ठंडा ठार। दूई द्वैती मिटे भरम, शब्द कराए तन शृंगार। मानस देही सुफ़ल जन्म, मिले मेल हरि निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन सरन लगाए कर्म कमाए दया धार। कर्म कराया पुरख अबिनाशी , धर्म धराया घनकपुर वास। भरम चुकाया निज आत्म वास। जोती जोत सरूप हरि, रसना रस इक्क वखाया, सोहँ शब्द स्वास स्वास। काल अकाल नेह नेह काला। दीन दयाल हरि रखवाला। गुर गोपाल जगत अवल्लड़ी चले चाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन दास आप रखाए, काल जंज़ाल महांकाला। काल महांकाल प्रभ दासन दासे। प्रभ अबिनाशी भए दयाल, जगी जोत मात पताल अकाशे। संत सुहेला होए रखवाल, भगत स्नेही दासन दासे। बचन अनमुल्लड़े

देवे पाल, गुर गोबिन्दे लेख लखासे। जुगा जुगन्तर साची चाल, आदि अन्त ना कदे विनासे। दीपक जोती कर प्रकाश, लोकमात ना कदे विनासे। चिट्टे अस्व मार छाल, हो अस्वार बन्ने धार विच संसार, जगत वेखे रंग तमाशे। निरगुण सरगुण रूप अपार, ना कोई करे जीव विचार, कलिजुग अन्तिम वगी मार, दर दर घर घर करन हासे। शाह गुर गुर शाह दोवें बैठे इक्क थां। कलिजुग करे कौण निबेड़ी, जन भगतां देवे ठंडी छाँ। लक्ख चुरासी बध्धी बेड़ी, कौण जपाए साचा नां। ढहिंदे जाण नगर खेड़ी, पई पुकारे धरत मां। कवण ल्याए नाम बेड़ी, वञ्झ मुहाणा चप्पू ला। माया राणी भेड़ भेड़ी, अग्न लगाए थां थां। अन्तिम वेला कवण निबेड़ी, इक्क दूजे नूं पुच्छण राह। शाह बहादर आख सुणाया। तख्त ताज सिर झूठा पाया। जगत राज ना मोहे सुखाया। छड्डणा कल कि आज, कलिजुग झूठा जूठा ठूठा, मूंह थुक्कां नाल भराया। दर दवारिउँ गया रुट्ठा, गुर गोबिन्दे बचन भुलाया। कवण कराए एका मुट्ठा, भरम दए गंवाया। गुर गोबिन्दा साचा तुट्ठा, साचा बचन एह सुणाया। बहादर शाह सच सुल्तान। झूठी शाही बेईमान। लोकमात ना चले दुकान। राजे राणे होण वैरन। झुल्लदे रहण सच निशान। खुदाई नूर इक्क रहिमान। होए जुदाई जीव शैतान। क्यों भुलाई कर ज़बान। अन्तिम वेले दए दुहाई, बन्दी ख़ाने विच लटकान। एका होए हरि सहाई। खुशी खुदाई दए गंवाई, नूर अलाही नर हरि श्री भगवान। शाह बहादर करे विचार। झूठा दिसे दिल्ली दरबार। लोकमात आई हार। किरपा कर सच्ची सरकार। आया दर बण भिखार। दे वर दिवस विचार। अमृत दे साचा सर, पूर्ब कर विचार। गुर गोबिन्दे वाली हिन्दे, लज पति तेरे हथ्थ दातार। गुर गोबिन्द बोल बुलारा। कवण देवे अन्त सहारा। छड्डया देस पंजाब मँझारा। गोदावरी कण्डा सच्चा ठंडा कीता आण उतारा। मेरे हथ्थ ना आई तेरी वंडा, सिर तेरे रिहा इक्क उधारा। जूठे झूठे दित्ती कंडा, सिर चुक्कणा भार वडा भारा। आत्म तोड़े हरि घमंडा, निहकलंक नर नरायण लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात हरि जामा धार, किले लाल अन्दर वड़, सिँघां बन्ने सीस दस्तारा। शाह बहादर खुशी मनाई। धुर फ़रमाण मस्तक लाई। कोई ना करे एथे शाही। तेरी मेरी सच सलाही। अन्तिम वेले आए माही। गऊ ग़रीबां पकड़े बाहीं। बन्दी ख़ाने दए छुडाई। बत्ती दन्दी साचे जंदी, आत्म अन्धी सृष्ट सबाई, घनकपुर वासी दए जगाई। ना कोई वेखे उची कंधी, शब्द घोड़े लए टपाई। ना कोई वेखे साक सबंधी, जन भगतां आत्म साची बंधी, रक्खे हरि सची सरनाई। सृष्ट सबाई लग्गी झूठे धन्दी, साधां संतां आत्म गन्दी, ठंडी वा किसे कूट ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्दे शाह सुल्तान बली बलवान, करता कादर गुरमुखां होया दास दासन, चिट्टी सेजा हेठ विछाई। चिट्टी सेजा हरि विछाई। पंजां सिक्खां हुक्म सुणाई। सिँघ

५५६ ०४

बिशन तेरी वड्याई। सच ताज प्रभ तेरे सीस टिकाई। रक्खी लज्ज ना किया पज्ज, चारों कुन्ट लशकर शाही। अमृत पीणा दर घर साचे रज्ज, गुर गोबिन्दे पकड़ी बाहीं। पड़दे रिहा कज्ज, बैठ हरि किल्हे लाल सच्ची शाही। चिट्टी चादर भगतन माण। पंजां बख्शे चरन धूढ़ इशनान। सिँघ प्रीतम हरि मेहरवान। गुरमुख सिँघ अभुल्ल भुल्ल ना जाण। पाल सिँघ गुण निधान। इन्द्र सिँघ जेठा पुत्त नौजवान। संत मनी सिँघ तेरा दिसे सच निशान। गुरमुखां एका आया हिस्से, सोहणा सिहरा विच जहान। होर किसे ना कलिजुग दिसे, निहकलंक वड बली बलवान, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सतिगुर साचा जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान। हरि मालण फूलां खारी। गुरमुखां दर बणी भिखारी। लै के आई घर सच सच्ची फुलवाड़ी। देवे सच्चा नाम वर, चरन छुहाई दाढ़ी। शब्द सरूपी अवाज़ लगाए अट्ठे पहर दिवस रैण फिरदा रहे पिछे अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा धर, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लगाई लोकमात सच्ची फुलवाड़ी। सच्ची फुलवाड़ी मात फुल्ले। प्रभ अबिनाशी कदे ना भुल्ले। कलिजुग अन्तिम अन्त दर घर सच्चे सच्ची शाही, आपे पाए पूरा मुल्ले। हरि सरन लगाए दया कमाए वेख वखाणे बेगुनाही, जोत जगाए काया किल्हे। मगरों लाहे जम की फाही, शब्द पंघूड़ा गुर दर घर साचे एका झुल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, कलिजुग जीवां दिस ना आया, नर हरि हरि नर साचा कन्त कन्त कन्तूले। वरन अवरना वर वरयाम। आदि मध हरि करनी कर, जगत माया ना पल्ले दाम। राह रहिमान महिबान बी खैर खुदाए हरि रघुराए, ना कोई काया ना कोई चाम। चले चलाए आपणे भाणे, तिन्नां लोआं इक्क सरनाए, सच मसल्ला हरि बिसराम। मुलां काया काया दोआबा। नूरी अल्ह जोत महिताबा। इक्क इकल्ला शाह नवाबा। गुरमुख मस्तक धूढ़ी देवे, शब्द घोड़े दे रकाबा। जोती नूरा हरि मौलाना, तिन्नां लोआं सच्चा राणा, लोकमाती वरते भाणा, आपे जाणे आपणा आपा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, करे काज देस माझ शब्द अवाज़ रक्खे लाज, जोती नूर हरि हज़ूर सर्बकला भरपूर, ना कोई झल्ले ताबा। ताब अलाही जगत मलाही। वेख वखाणे मात शाही। कलि अन्धेरी रात, शब्द जंज़ीरी पाई फाही। जन भगतां देवे सच सुगात। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, दूसर कोई जाणे नाही। आदि नीला चिट्टा लाल सूहा पीला। जोती नूर शब्दी पवणी शैल शबीला। बवणी गवणी मसाणी पवणी, खाणी बाणी बाउणी बवणी, धुरदरगाही हरि वकीला। जन पूरन करे भगतां भवनी, दर घर आपे वखाणे जाणे सुघड़ स्याणे कर कर हीला। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चरन छुहाए शब्द लगाए साचा कीला। हरि भाणा हरि भगवान। सुघड़ स्याणा चतुर सुजान। नाम निधाना साचा रंग रखाना, हरि मेली

मेल मिलान। जोती जोत सरूप हरि, अस्त्र बस्त्र शस्त्र घोड़ो तीर कमान ना कोई उठान। प्रभ अबिनाशी करता कादर। ग़रीब निमाणयां देवे आदर। सतिजुग साचा सति वरताए, धरत मात तेरा माण रखाए, उत्ते विछाए चिट्टी चादर। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्दा प्रभ पूरा बचन मात कराए, कँवल करारी शाह बहादर। निहकलंक कलि जामा पाए, जोत सरूपी दिस ना आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिभगत वणजारे हरि चरन प्यारे, करे जगत उजागर। चिट्टा बाणा तन गुरदेव। संत मनी सिँघ पूरी सेव। मिले फल घर साचे मेव। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द गाया अलख निरँजण अलख अभेव। शब्द चोट जोत ज्वाला। आपे तोड़े किला कोट, सदा सदा प्रितपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा रिहा कर, नित नवित्ती साचा हित्ती, दासन दास शाह शाबाश हाज़न मकन बूरे ककन, शाह अलखन वरोले मक्खण। अंग अंग्यारे जीव अंध्यारे सारे भक्खण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरी लाज सुण अवाज़ मातलोक प्रभ आया रक्खण। आया मात जगत विचोला। जोती नूर शब्दी चोला। सर्बकला भरपूरा, आपे रक्खे पड़दा उहला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलि जामा पाया गुर संगत बणया तेरा गोला।

५६१ ०४

❇ ४ अस्सू २०११ बिक्रमी नवीं दिल्ली बिरला मन्दिर पंडत गोस्वामी गनेश दत्त दे नाल बचन होए ❇

रामा कृष्ना हरि अवतारा। कलिजुग जीव दर दर थक्के गए हार। पंडत ब्रह्मण कोई ना करन विचार, नर हरि सच्ची सरकार। ना कोई दिसे सच्चा जामन, जूठे झूठे दर द्वार। कवण कराए पूर कामन, नैण अन्धे लग्गे झूठे माया धन्दे, पुरख अबिनाशी मनों विसार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा मात धर, एका नूर साचा मात धर, रामा कृष्ना देवे वर, आत्म खोल्ह सच दर, वेख वखाणे गुण निधाने, भगत भगवाना मेहरबाना चतुर सुजाना, साचे दर द्वार। साचा दर हरि वखाने। पंडत पांधे अन्धे काणे, दिस ना आए नैण मुँधाणे। जोती जामा मात भगवाने। जोती जोत सरूप हरि, वेद पुरानां अन्तिम कलिजुग आप पछाणे। हरि गुणवन्ता बीर बली बलवाना। पवण सरूपी एक बबाना। मिले मेल राम भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, संग निभाए रंग चढ़ाए मात खेल वधी वेल वाली दो जहाना। हरी मन्दिर हरि दुआरा। कवण वखाणे कवण जाणे, प्रभ अबिनाशी अगम्म अपारा। आत्म होए अन्धा काणा, मायाधारी लोभ लुभाना। अन्त लंगोटी जगत धन्दे चतुर्भुज हो ना किसे वखाणा। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त लोकमात भेख रखाए, ना कोई वखाए राजा

राणा। महात्मा बुद्ध धर्म युद्ध कारज करे प्रभ तेरे सुध्ध। जोत सरूपी जामा धार हरि निरँकारी, लक्ख चुरासी आत्म करे सुध्ध। एका हरि एक भगवान। एका ब्रह्म जगत पछाण। सच कर्म भगत धाम विच जहान। अग्गे ना भुल्ले माया भरम, पुरख अबिनाशी सदा सद करे इक्क ध्यान। काया माटी झूठा चरम, अन्त ना दिसे कोई निशान। मिले मेल भगत मिटे भरम, चार वरनां दस्से एका सरन, दूई द्वैती शरअ शरायती जात पात ऊँच नीच मेट मिटाए हरि निरँकारी। सर्ब कन्ता जीआं जन्तां, साधन संतां भगत भगवन्ता, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सदा नेहकामी, जोती नूरा सर्बकला भरपूरा, गऊ ग़रीब निमाणयां शाह सुल्तान राजे राणयां, देवे मात सच्चा माणे हरि बनवारी। एका मात जोत अधारी नर निरँकारी आवे जावे वारो वारी। वेखे विगसे करे विचारी। जीवां जन्तां मात सुण पुकार जुगा जुगन्त बणाए बणत, जोत मात कर उज्जयारी। सदा वसे इक्क इकांत, अमृत रक्खे बूंद स्वांत, झिरना झिरे अपर अपारी। कलिजुग अन्धेरी रैण रात, पुरख अबिनाशी वेखे मार झात, जन भगतां पुच्छे वात, प्रगट होए राम अवतारी। राम रमईआ रामा राम। जोती जामा कृष्न भगवान। वलीआ छलीआ अटल्ल अटल्लया वसे नेहचल धाम। बल दुआरे बण भिखारी किया खेल महान। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, वेद व्यास बणया लिखारे, निहकलंक कलि जामा धारे, गौड़ ब्रह्मण गुण निधान। धन्न धन्न धन्न हरि गुरू गुरदेव, लाए साची सेव मिल्या इक्क घर सच टिकाणा। भारत खण्ड तेरा सच पुजारी। दर घर आए ना दित्ती कंड, लिख्या लेख इक्क अपारी। आत्म सदा सुहागण ना होए रंड, मिले मेल बसन बनवारी। जोती जोत सरूप हरि, आदि शक्त आदि भवानी। भगत आत्म सच निशानी। गऊ ग़रीब निमाणयां दर घर साचे बैठा सुणे पुकारी। मिल्या घर सच्चा अस्थान, जिथ्थे मूर्ति राम कृष्न मुरारी। गौतम बुद्धा लक्ख चुरासी आत्म करे सुध्धा, धर्म युद्ध दा इक्क निशान। वाली हिन्द राह वखाणा सिद्धा, धर्म सच दा झूले घर साचे इक्क निशान। गऊ ग़रीब निमाणयां पुरख अबिनाशी मारे मात ध्यान, फड़ फड़ मारे आत्म जीव हँकारे, वड वड राजे राणयां, भुल्लया इक्क नैण मुँधारी। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त भगत भगवन्त जीव जन्त पाउँदा रहे सारी। भगत वछल हरि गिरधार। सांवल सुन्दर कँवल नैण मुँधार। मधुर बैन मोर मुकुट कृष्न मुरार। सृष्ट सबाई साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण, वेख वखाणे राज रंक शाह सुल्तान जीव जहान। पुरख अबिनाश घट घट वास, हरि नर नर हरि होए दासन दास, भगत सुदामा हरि पूर कराए कामा। छड्ड सिँघासण हरि आए सच धामा। नेत्र नीर वहाए पकड़या हरि पूरे दा सच्चा दामा। इक्क वड्याई हरि रघुराई, तिन्नां लोआं करे रुशनाई, जोती नूर बन्द रक्खे मानस जामा।

✻ ४ अस्सू २०११ बिक्रमी नवीं दिल्ली रकाब गंज गुरदुआरा ✻

संत मनी सिँघ सेव कमाई। सति सरूपी कलम चलाई। प्रभ अबिनाशी लेखे लाई। पूरन घाल मात कराई। तुट्टा जगत जंज़ाल, मानस देही लेखे लाई। पुरख अबिनाशी करे प्रितपाल, जोती हथ्थ सिर टिकाई। मरे ना जम्मे ना खाए काल, नर नरायण सर्ब सुखदाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, रकाब गंज चरन छुहाई। संत मनी सिँघ लेखा मुक्का। वड ज़रवाणयां स्वास सुक्का। बेमुहाणयां मुख पैण थुक्कां। वक्त सुहेला अन्तिम ढुक्का। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणे भाणे सर्ब कुछ जाणे, आपणी किरपा रिहा कर, किसे कोलों ना मात रुक्का। हरि संत प्यारा कन्त, तिन्न साल चली चाल कलम घाल हरि दातारा। करी प्रितपाल प्रभ अबिनाशी दया धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वखाया अन्त किनारा। दर दुआरे दस्से प्रीत। दर्शन करे नेतन नीत। संत मनी सिँघ चेतन चीत। इक्क वखाए प्रभासी खेता, साची सेवा हरि लगाए, वहन्दा रहे तत्ते ठंडे शीतल शीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद रक्खया चीत।

✻ ४ अस्सू २०११ बिक्रमी नवीं दिल्ली राष्ट्रपती भवन डा: राजिन्दर प्रशाद ✻

राज दरबार सच दुआरा। चरन सरन हरि निरँकारा। वेख वखाणे विच संसारा। दर घर साचे जोत जगाए, चोबदारां दिस ना आया गिरवर गिरधारा। सोहँ शब्द डंक वजाया, चारों कुट जै जै जैकारा। राउ रंक रंक राजान। शाह सुल्तान एका रंग रंगाया, करे खेल अपर अपारा। शब्द घोड़े तंग कसाया, अन्दर मन्दिर लँघ के आया, जोत सरूपी हरि अस्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर चवीआं अवतारा।

✻ ४ अस्सू २०११ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह नवीं दिल्ली ✻

धरत मात तेरी खुल्ही गुत्त। कलिजुग मारया छोटा पुत्त। प्रभ दया कमाई खुशी मनाई साची रुत्त। धर्म राए खुशी मनाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सगन मात कराई, प्रभ अबिनाशी अचुत्त। कलिजुग अन्तिम गया हार। धरत मात तेरी छाती सुत्ता भुजा पैर पसार। जगत मिटे अन्धेरी राती, होए हरि उज्जयार। निर्मल घर निर्मल बाती, जग मलवन्ते कर अकार। जोती जोत सरूप हरि, नेत्र पेखे कवण कंध उठाए कलिजुग भार। कलिजुग काला होया मुरदार। चिट्टा

कफ्न चार दिवार। संगी साथी कोई ना रक्खण, मूसा ईसा मुहम्मदी यार। चारों कुन्ट अन्गयारे भखण, पवण ना मिले ठंडी ठार। हथ्थीं पैंरी दिसे ख़ाली, छुपया मुख विच संसार। लोकमातों करे चाली, नर हरि सच्ची सरकार। करे खेल दो जहानां वाली। दिवस दिहाड़ा वक्त विचार। धरत मात तेरा साचा पाली, प्रगट हो विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आपे कन्त सच भतार। कलिजुग सुत्ता पैर पसार। ख़ाली दिसे बुत्ता, मिटे काम क्रोध हँकार। प्रभ अबिनाशी उठे सुत्ता, जोत सरूपी कर अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। कलिजुग काली रैण वडी डैण मारे धाह। प्रगट होया कवण, उलटा फड़या मात राह। नाता तुट्टा भाई भैण, कोई ना दिसे मात थां। उल्टे वहिण सारे वहिण, ना कोई देवे ठंडी छाँ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, वेख वखाणे पुत्तर मां। उलटा राह उलटी चाल। प्रभ अबिनाशी हक्क जलाल। घनकपुर वासी आपे घाले, हो बेहाले जगत घाल। अस्सू तिन्न सुरत संभाले, चरन छुहाए किल्ले लाल। कर्म चन्द गांधी चरन प्रीत बांधी नाल रलया छोटा बाल। प्रभ अबिनाशी बणया फांदी, लोआं पुरीआं तणया जाल। सृष्ट सबाई होई आंधी, लुट्टया तन होई बेहाल। लक्ख चुरासी थक्की मांदी, कलिजुग उडीके अन्तिम काल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मारी इक्को छाल। लोकमात हरि निरँकारा। प्रगट होए विच संसारा। चिट्टे अस्व कर प्यारा। सोलां कलीआं आसन भारा। मस्तक हीरा साचा चीरा जोती नूरा भगती तारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठा हो अस्वारा। सच अस्वारा लोकमात। चार कुन्ट मारे झात। वेख वखाणे सर्ब थित्त जाणे रैण अन्धेरी कलिजुग रात। सुघड़ स्याणे राजे राणे, भरम भुल्ले जात पात। प्रभ अबिनाशी ना कोई पछाणे, चरन कँवल कँवल चरन कलि साचा नात। रसना रस सर्ब जग जाणे, कोई ना जाणे सच्चा पित मात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट जोती हो अस्वार, हरि गिरधारा आया मात। पंचम् जेठा मात आया। गुरमुख रक्खे साया हेठ, साचा लेखा प्रभ लिखाया। वेख वखाणे औलीए पीर शेख़, कुतब गौंस मजौर जगत ब्राह्मण कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ साचा शब्द चलाया। पंचम् जेठ मात वड्याई। पुरख अबिनाशी जोत जगाई। दसवें साल दहि दिशा, दृष्ट कूट हरि दए खुल्हाई। नौ खण्ड पृथ्मी पाए हिस्सा, सत्तां दीपां वंड कराई। पुरख अबिनाशी विरले देखा, लक्ख चुरासी गूढ़ी नींद कलि सवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां चिट्टे बाणे तन छुहाए अचरज रुत्त सुहाई। हरि सुणाया धुर फ़रमाण। पहली वारी विच जहान। सत्तां नवां वंड वंडान। दोहां वेखे श्री भगवान। ना कोई गोपी ना कोई

कान्हा। जोत सरूपी खेल महान। देवी देवते सारे गान। शिव शंकर करे इक्क ध्यान। ब्रह्मा मारे सद चरन ध्यान। प्रगट होए विच संसारे, निहकलंक बली बलवान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ सत्त वंड कराई। दीप खण्ड कोई रहे नाही। सत्ते वार खुशी मनाई। सोलां कलीआं तन छुहाई। वलीआ छलीआ खेले खेल, ना कोई जाणे जीव गुसाईं। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची वेल वधाई। पंचम् जेठा हरि निरँकारा। कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त बन्ने धारा। पहली हाढ़ दिवस विचारा। वीह सौ ग्यारां बिक्रमी लेख लिखारा। साढे तिन्न हथ्थ सीआं चार दुआरा। धरत मात बोया साचा बीआ, अन्तिम फल लग्गे भारा। जन भगतां निर्मल होया जीआ, मिल्या मेल नर निरँकारा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी नीत कर, चार चार नौ अठारां, अठारां इक्कीस सताई सच विहारा। दिशा देह मन्दिर अपारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम बन्नी धारा। पहली हाढ़ हरि उज्जयारा। गुरूआं पीरां पावे सारा। गुरमुख साचा बणया लिखारा। प्रभ अबिनाशी एका शब्द साचा वाचा, संग ब्यास जाए नाचा करे ख़बरदारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए विच संसार, साचा शब्द मार उडारा। साधां संतां वेखे वारो वारी। पिच्छे लग्गा नर निरँकारी। जोत अग्न लग्गे भारी। साची मंगण विच संसारी। गुर पीरां मुख लाए सगन, करदा जाए ख़बरदारी। लोकमात क्यों बैठे नग्न, चिट्टी चादर प्रभ शब्द पटारी। करे प्रकाश मात पताल गगन, जोती नूरा कर उज्जयारी। कलिजुग वहिण झूठे वगण, नां भुल्ले जीव गंवारी। ना हरि बुझाए आत्म अग्न, अमृत देवे जाम अपारी। इक्क चढ़ाए साची रंगण, जिउँ बालक माता मां प्यारी। शब्द बन्नाए साचा कंगण, दोवें भुजां हरि पसारी। बण भिखारी जाए मंगण, गुर गदेले वड गदीले वारो वारी। वेख वखाणे साचे चेले, पुरख अबिनाशी केहड़ा मेले, शब्द मारे सिर कटारी। जोत सरूपी खेल खेले, हाजी वेखण सज्जण सुहेले, पुरख अबिनाशी पुरख नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उन्नी हाढ़ी शब्द धाड़ी सतिसंग ब्यासा वाड़ी। करनी खेल अपर अपार शब्द धाड़ गई वड़। संत साध सभ गए दड़। पुरख अबिनाशी तोड़े गढ़। शब्द सरूपी उत्ते चढ़। इक्क दूजे दे नाल लड़। उन्नी हाढ़े आए दुआरे, बणया हरि वडा बलकारे शब्द चलाया अपर अपारे। उत्तर देणा सतिसंग प्यारे। एका मंगी मंग, दूजा कोई ना वणज वपारे। तन चढ़ाउणा साचा रंग, दुरमति मैल सर्ब निवारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली हथ्थ मुड़े समरथ मिले ना खैर किसे भण्डारे। करया वेस अवल्लड़े शाह। मिले मेल हरि भगवाने, वेख वखाणे सारे थां। अस्सू तिन्न दिवस विचारे, प्रभ अबिनाशी किरपा धारे, गुरमुखां देवे ठंडी छाँ।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम गुरसिख बहाए, चिट्टी चादर हेठ विछाए, करे आदर गले लगाए, आपे होवे नीवें थां। वेख वखाणे सारे घर। शब्द रखाए दर, देवे वर। पूर कराए ना जाए हरि। भरम भुलेखा लोक बेमुखां चुक्के जगत डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां किल्हे लाल दित्ता सच्चा वर। किल्हे लाल कर विहारा। सति सतिवन्ती बन्न्हे धारा। भगत भगवन्ती मीत मुरारा। कन्तूला कन्ती शब्द झूला देवे इक्क हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मौली तन्दा गुर संगत करे तन शृंगारा। मौली तन्द हथ्थ बन्न्हाया। मिल्या कन्त सुहाग वड वडभाग, वर घर साचे पाया। सोई काया गई जाग, कर दरस उतरी तृष्ना आग, आत्म तिलक प्रभ केसर लाया। मिशरी कूजा झोली पाई। किल्हे लाल खुशी मनाई। साचा सज्जण हरि चरन लग्न, जगत मग्न हरि आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंच परवाना सति सपूता नीच नीचां माण दवाई। पंचम् माण हरि द्वार। गुर सज्जण साचा मीत मुरार। परखे नीत विच संसार। सति संगत सारी जाए तार। किल्हे लाल पहली वार। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़। हँकारी जिंदा देवे झाड़। अन्दर बरखे खुशी अपार। प्रभ अबिनाशी लक्ख चुरासी परखे, बैठ सच सच्चे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए राज महल्लां साची सरकार। साची धार उच्च महल्ल सच अटारी। लेख लिखाए प्रभ वारो वारी। मेख लगाए विच संसारी। गुर संगत साची हरि शृंगारी। बाहर आउण दी करी त्यारी। अग्गे रक्ख कर प्यारी। पिच्छे लग्गा नर निरँकारी। लाल वेसा दर दरवेशा, पहरा देवे चोबदारी। जोत सरूपी धारे भेसा, गुर संगत आए वड चुबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आपे खेले चले चाल जगत न्यारी। दीवान ख़ास गुर संगत आई। हरि हिरदे रक्खया वास, नेत्र नैण मस्तक मुख गुर पूरे वेखण राही। प्रभ सच महल्ले खड़, इकल्ला दरस दिखाए साचा माही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण निधान सच फ़रमाण बणया जगत मलाही। गुर संगत वेख उच्च चुबारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। नेत्र खोल्हे वेख वखाणे, गुरमुख साचे संत प्यारे। शब्द धार रस रसना साची बोले, काया करे ठंडी ठारे। चार कुन्ट गाउणे सोहणे ढोले, गली कूचे विच बज़ारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे लेख लिखारे। लिख्या लेख हरि दातारा। दर घर साचा वेख, गुर संगत किया इक्क प्यारा। लोकमाती लिखाए लेख, बणे रंग साचा संग जगत अपारा। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत साची जाए तर, जन भगतां देवे साचा वर, अस्सू तिन्न आए बाहिरा। अस्सू तिन्न आए बाहर। शाही खड़े चोबदार। मिले माही सच सरकार। दोए जोड़ करन निमस्कार। प्रभ अबिनाशी तुट्टी लए जोड़, चढ़या शब्द घोड़, आया अन्त दौड़, करे ख़बरदार। बाहर कढुया अस्व पौड़, भन्नण चढ़या मिट्ठे कौड़, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे आपणी कार। अस्सू चार कर विचार। गुर संगत साची संग अपार। बिरला मन्दिर जाए अन्दर, कृष्ना रामा हरि अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपार। बिरला मन्दिर बिरहों रोग। अन्त द्वापर होया वियोग। कलिजुग मिल्या धुर संजोग। साचा रस्स ल्या भोग। प्रभ अबिनाशी राह साचा रिहा दस्स, कलिजुग निखुट्टी अन्तिम चोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती भेसा दर दरवेशा, कलिजुग दिसे सच्चा योग। अस्सू चार मीत मुरार। वेखे विचारे अन्दर बाहर। मन्दिर घर घर गुरूद्वार। संत मनी सिँघ साचा धनी, शब्द कलम लेख लिखे अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रकाब गंज सवेर सन्झ रैण मञ्झ, अन्तिम पावे सार। अस्सू चार अवल्लड़ी चाल। प्रभ अबिनाशी दीन दयाल। मूर्ख मुग्ध अञ्याणे करन हासी, कवण वखाणे कवण जाणे , सृष्ट सबाई करे प्रितपाल। जगत होए अन्धे काणे बेमुहाणे, जीव शैतानी ना कोई जाणे लाल गोपाल। गऊ ग़रीब जिस गले लगाने, भुक्खयां नंगयां जिस रोग गंवाने, वेखे घर गुण निधाने, चरन छुहाया असैंबली हाल। सति धर्म दे बन्ने गाने, पंडत मुलां सर्ब पछाणे, ग्रन्थी पन्थी वड विद्‌वानी, जगत भुक्ख मिटाए काल। देवे माण हरि भगवाने, जीव बाल बाल अञ्याण जवाने, अन्तिम अन्त सुरत संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंक राजान सर्ब पछाणे अस्सू चार।
५६७ ०४ बारां तीस पंडत नहिरू वेख जगदीश। छत्र झुलणा जिस दे सीस। नौ खण्ड पृथ्मी जाणी पीस। खुल्हे भेव बीस इकीस। ५६७ ०४
दर घर साचे कोए ना लग्गे फीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, रसना गाए हरिजन बत्तीस। प्रधान मन्त्री हो प्रधान। पहला वर श्री भगवान। मम्गया वर सच्चा घर, मिल्या माण विच जहान। अन्तिम नुहाउणा धूढ़ी साचे सर, लोकमाती कर इशनान। फिर खुल्हे दसवां दर, मिले मेल हरि भगवान। निहकलंक कलि जामा पाया, तेरे सीस हथ्थ रखाए वड दाता मेहरबान। जगत पित जगदीश हरि अख्वाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रघुपत रघुराया। धरत मात तेरी रक्खे पति, लोकमात जामा पाया। धर्म पुजारी वेख विचारे हरि निरँकारे, साचा सुत सज्जण सुहेला आप अख्वाया। कवण जाणे प्रभ मित गत, भाणा राणा किसे हथ्थ ना आया। सच दुआरे सच दातारा। चरन छुहाए पहली वारा। सोया पूत आप उठाए, दरस दिखाए हरि निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सच भवन राष्ट्रपत। हरि प्रभ ना देव ना यमन, ना कोई मसाण ना कोई पवण, एका जोती नूर सति। मात पछाण करे कवण, जाणे मित गत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात अन्त रक्खण आया पति। पति पतिवन्ते धरत मात दुलारे। जीवां जन्तां साचे कन्ते, गऊ ग़रीब तेरे सहारे। मिले मेल हरि भगवन्ते, कलिजुग तेरी

अन्तिम वारे। गुणी निधानी साचे संते, सति धर्म मात जैकारे। चार वरन बणाउणी सच बणत, ऊँच नीच भेव निवारे। एक मिलाउणा साचा कन्ते, नर नरायण हरि निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जोत धर, जगत काज प्रगट हो देस माझ, तेरे काज अन्तिम अन्त आप संवारे।

❋ ५ अस्सू २०११ बिक्रमी दिल्ली अते गुड़गाउँ विचकार जंगल विच बिशन सिँघ दे सीस ते मोर दे पंखां दा मुकट रक्ख के लिख्त करवाई ❋

पुरख अबिनाशी किया कौल। गढ़ी ना दिसे कोई चमकौर। गुरमुख साचे जीवां तिन्नां लोकां एका दौड़। सुहञ्जणी रैण सुभागा दिवस लोकमात लाए झड़ी, गुरमुखां प्रभ पकड़ी डोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बली बलवान कलिजुग अन्धेरी रैण आप पछाणे साची गढ़ी। लेख लिखाया पूर कराया सोहणा तन सच्चा मन उच्चा तन श्रृंगार कराया।

❋ ५ अस्सू २०११ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ❋

५६८
०४
रूप रंग अपार भगत आधारया। आप निभाए साचा संग, लहणा देणा हरि चुका रिहा। लोकमात मार झात, किसे दर ना जाए मंगण, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी घनकपुर वासी, लहणा देणा आप चुका रिहा। आपे पुच्छे वात जम की फाँसी, अन्तिम वारी सर्ब तुड़ा रिहा। एका जोत नर नरायण कलिजुग अन्त प्रकाशी, अज्ञान अन्धेर कलिजुग मिटा रिहा। हरिजन जन हरि देवे नाम शब्द कटारया। शब्द उडाए साचा बाज, गुर संगत शब्द उडा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, तेरा भार उतारया। दया सिँघ हरि दीआ वर, नर हरी कलि भगवाना। सृष्ट सबाई कर वल छल, गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना। आपे करे वल छल छल वल, रूप रंग ना किसे पछाणा। जन भगत उधारे, किरपा धारे हरि निरँकारे विच संसारे, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच जल धारे करे खेल महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, धरत मात तेरी सुणे पुकारे। धरत मात हरि सुण पुकार। प्रगट होए विच संसार। कलिजुग जीव वहे वहन्दी धार। गुरमुख प्रभ का भाणा सहिण, मिले मेल हरि दातार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चल के आए साचे दर, मिले भगत उधार नरायणा नर। गुरमुख विरले वेखण नैणां एका एक हरिभगत टेक। आत्म नूरी प्रभ एक। धर्म युद्ध कारज सुध्ध तन ना लागे सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५६८
०४

५६६ ०४

किरपा कर, इक्क रखाए चरन टेक। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा। वेख वखाणे सर्ब थित्त जाणे, जीव जन्त बिरध बाल अञ्याणे, जगत करे नर हरि हरि वल छला। जोती जोत सरूप हरि, आप वखाए साचे घर, जन भगत चुकाए डर, नाम देवे ब्रह्म ज्ञान सच महल्ल अटारी। जगे जोत इक्क अपारी। नूर नुरानी शाह आलम हरि बसन बनवारी। नर नरायण वज्जे डंका, आप सुणाए राउ रंका द्वार बंका, प्रगट मात राम रमईआ कृष्न मुरारी। साँवल सुन्दर कृष्न मुरार। प्रगट होए विच संसार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गऊ ग़रीब निमाणयां हरि सुण पुकार। वेख वखाणे राजे राणयां, आत्म भरया वड हँकार। दर घर देवे माण जन भगत निमाणयां, सिर रक्ख हथ्थ समरथ करन करावणहार। आत्म देवे नूर जोती साची वथ, काया मन्दिर सच अकार। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर्शन पाए आत्म अपार। लेख लिखाए हरि समरथ, खिड़ी रहे मात गुलज़ार। किरपा करे पुरख अकथ्थ, अन्दरे अन्दर बिशन सिँघ सिँघासण अमृत बरखे किरपा धार। जन्म मरन कलि भेव चुकाया। संत मनी सिँघ सतिगुर साचे, गुरमुखां फड़ फड़ बाहों राहे पाया। प्रभ अबिनाशी सद हिरदे वाचे, आत्म जोती दीप इक्क जगाया। होए उज्जयार काया माटी काचे, मिल्या इक्क शब्द अपार। नर हरि नरायण दर्शन पेख संत मनी सिँघ धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याई। गुरमुखां आत्म गई मन्न, जगत बेड़ा दित्ता बन्न, भाण्डा भरम दित्ता भन्न, आए सच सरनाई। इक्क सुणाए शब्द सच्चा राग कन्न, पंजां तत्तां दे जलाई। धर्म राए ना दए डन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन होए आप सहाई। जोत अकाल दयाल गोपाल। संत सुहेला भगत वछल जगत दलाल। सच सज्जण सुहेला इक्क इकेला नूरी रंग इक्क जलाल। विछड़यां कलि कलवन्ते मेला, पूरन भगवन्ते चेला होए आप रखवाल। भगत जनां मात वध्धी वेला, करे हरि आप प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूरा इक्क अकाल। इक्क अकाल अगम्म अथाह। सर्ब दयाल बेपरवाह। धरत मात रखवाल वेख वखाणे सभनी थां। खण्ड ब्रह्मण्डां आप जाणे, जन भगतां देवे पारजाती ठंडी छाँ। तुट्टे माण राजे राणे, सच जपाए पुरख अबिनाशी मात नां। जोती नूरा हरि साचा सूरा घर घर उडाए कां। जोती जोत जोत भगवाना। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, जगत पित ना किसे पछाणा। धुरदरगाही नित नवित्त करे हित्त, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, धरे जोत विच जहानां। वेख वखाए साची थित्त, रुत्त बहार आप सुहाना। कलिजुग झूठे दिसण बुत्त, विसरया नाम हरि भगवाना। गुरमुख विरले उज्जल मुख, मात सुत देवे दरस नैण मुधाना। पंचम् जेठा वडा सेठा चरन प्रीती जगत रीती, काया अतीती सीतल सीती हथ्थीं बन्न्हे साचा गाना। मानस देही जीती, कलिजुग औध बीती, मिल्या मेल हरि भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। जोत उजाला

हरि संसार। जन भगतां रखवाला, आदि अन्त जुगा जुगन्त वारो वार। लोकमात एका दस्से राह सुखाला, नाम दाती शब्द अपार। नाम अनमुल्लड़ा कंठ माला, सोलां कराए तन श्रृंगार। आत्म तोड़े जगत जंजाला, धर्म राए ना आए द्वार। धुरदरगाही सच दलाला, आत्म जोती करे अकार। काया दीपक साचा बाला, मिटे कलि अन्ध अंध्यार। शब्द देवे तन दुशाला, कर कर आदर चिट्टी चादर, संत मनी सिँघ कर विचार। दर घर आए करता कादर, जुगां जुगां दा लाहे भार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, प्रगट हो विच संसार। प्रगट होवे हरि संसारा। जन भगतां मैल दुरमति धोवे, चाढ़े रंग इक्क अपारा। दिवस रैण कदे ना सोवे, खड़ा रहे पहरेदारा। लक्ख चुरासी कलिजुग रोवे, मिले मेल ना हरि गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे सच प्यारा सच प्यार हरि करतार। सच विहार विच संसार। कलिजुग तेरी झूठी धार। लक्ख चुरासी पैणी मार। माया रुले जगत भुल्ले जीव गंवार। ना कोई पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे माण विच जहान, लोकमात लए अवतार। कोटन कोट काया गढ़। वेख वखाणे सर्ब घर। लक्ख चुरासी अन्दर वड़। किसे हथ्थ ना आए राजे राणे शाह सुल्ताने, उजाड़ पहाड़ कन्दर धार विच संसार, गुणवन्त हरि गुण निधाने, पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाल। संत सुहेले सुरत संभाल। इक्क इकेले फल साचे डाल। काया मन्दिर साचे लाल। नूर जोती रंग गोलाल। माणक मोती शब्द मिसाल। आप उठाए काया सोती, गुरसिख गुर गोपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संत मनी सिँघ तेरी पूर कराए घाल। पूर कराए तेरी घाला। संत मनी सिँघ हरि रखवाला। लोकमात वड वड धनी, आदि अन्त ना होए कंगाला। मिल्या साक सज्जण सैणी वड हरि गुण गुणी तोड़े जगत जंजाला। मात आत्म गुण निधाने पुण छाण छाण पुणी, लभ्भा इक्क सच्चा लाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होया रहे सद रखवाला। संत मनी सिँघ सच दुलारा। पुरख अबिनाशी पावे सारा। घनकपुर वासी आत्म जोती नूर उजाला। ना कोई दीवा ना कोई बाती, काया मिटी अन्धेरी राती, मिल्या हरि दीन दयाला। अन्दर वेखे मार छाल तन मन होए स्वांत स्वांती अमृत धारा। कलिजुग अन्धेरी राती, पुरख अबिनाशी मारे झाती, लोकमात लए अवतारा। जन भगतां मिटाए अन्तिम बाकी, आपे खोल्हे साची ताकी, शब्द चलाए साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ दित्ता वर, जन भगतां खोल्हे आत्म सर, अमृत भरे इक्क भण्डारा। संत मनी सिँघ सच दुलार। प्रगट होए विच संसार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सेवा करी दर अपार। काया आत्म होई उज्जयार। सिर रक्खे हथ्थ करतार। प्रभ का भाणा लए झल्ल, लोकमात ना आए हार। राजे राणयां करे ख्वार।

शब्द डोर प्रभ साचे फड़ी, तुट्ट ना जाए विच संसार। सच सुहञ्जणी घड़ी, संत मनी सिँघ बणया लेख लिखार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जगत बन्ने साची धार। संत मनी सिँघ लेख लिखार। पुरख अबिनाशी साची धार। चार वरनां इक्क प्यार। राजे राणयां करे ख्वार। गऊ ग़रीब निमाणयां, एका बख्शे चरन प्यार। कलिजुग झेड़ा चुक्के वेद पुरान अंज़ील कुरान। खाणी बाणी अन्त पछताणी, सोहँ चलाए इक्क सच्ची बाणी धुरदरगाही प्रभ अबिनाशी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत प्रधान प्रगट होए विच जहान। संत मनी सिँघ घर सच वसंदा, मिल्या हरि कन्त प्यारा। एका शब्द साची धारा। जोत नूर कर अकार मिल्या, गुर पूरे दुरमति मैल धोती चढ़या रूप अपारा। गुर गोबिन्द एका बोली, शब्द चलाए अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए जगत अपारा। जगत वेख मस्तक लाई साची मेख। आत्म नेत्र लैणा वेख। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़। साध संत जगत भगत ना दिसे कोई बिबेक। गुरमुख साचे संत जन, जिस जन देवे साचा धन्न, आदि अन्ता साध संता, जुगा जुगन्ता नर हरि साचा एक। हरि शब्द अमोला, सृष्ट सबाई आपे मवला, प्रगट होए कृष्ना सवला, गुरमुख तन ना लाए सेक। आप उलटाए नाभी कँवला, जोती नूरा सच कोहतूरा, संत मनी सिँघ तेरा बचन अन्त कराए मात पूरा, कोए ना रहे अधूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी जगत पित टेक। प्रगटे जोत सति पुरख सतिवादा। शब्द लिखाए बोध अगाधा। आत्म धुन उपजाए साचा नादा। लेखा मात चुकाए जन भगतां देवे दादा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन मन तन रसन अराधा। संत गुर गुर संत लिख्या धुर। प्रभ चरनी जुड़, ख़ाली हथ्थ ना गया मुड़। मंगी नाम इक्क भिक्ख, प्रभ चढ़ाया शब्द घोड़। मातलोक आए दौड़, वेख वखाणे मिठे कौड़, चरन प्रीती गई जुड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडा दाता चतुर सुजान, मेहरबान हरि भगवान, रसना ध्यायण, सीस झुकायण, तेतीस करोड़। हरि भगवान जगत पसार। शब्द धार विच संसार। दीपक जोती मात उज्जयार। महान महानां, जगत मिटाए कूड़ कुड़यार। कल्कि अवतार, लक्ख चुरासी करनी ख़बरदार। संत मनी सिँघ बद्धा गाना, फड़े कलम इक्क अपार। शब्द दस्से हरि निरँकार। लिख्त लिखे विच संसार। राजे राणे होण ख़बरदार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सोहँ चले तीर कमाना, सिँघ नर हरि हरि दातार। पुरी घनक सुत्ता पैर पसार। कलिजुग माया अपर अपार। गुरमुखां देवे ठंडी छाया, सद बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ दित्ता वर, राणे संगरूर आउणा डर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। संत सति सति सति देवा। उज्जल बुध निर्मल मति, प्रभ रक्खे सति, दर घर साचे कीनी सेवा। आत्म धीरज साचा यति,

एका नाता अमृत आत्म तीर्थ तट्ट, माण गंवाया अट्ठ सट्ठ तीर्थ, आत्म ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म ज्ञाना। गुरमुखां दे समझावे मति, कलिजुग फेर ना आवे वत्त, निहकलंक नरायण नर, जगे जोत इक्क भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि बैठ निहचल धाम अटल्ल, सृष्ट सबाई वल छल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल बेमुखां हथ्थ ना आना। संत मनी सिँघ रसना तीर। बज़र कपाटी गया चीर। गुरमुखां मिल्या अमृत सीर। हउमै विच्चों कढ्ढे पीड़। एका ओट हरि रखाई, शब्द चोट तन लगाई, अन्तिम बन्न्हे हरि जी बीड़। आल्हणिउँ डिग्गे बोट प्रभ लए उठाई गोद बहाई, कलिजुग माया लाहे चीर। आत्म भुल्ली माया रुल्ली, अमृत डुल्ही आया कुली, आपे तोड़े जगत जंजीर। देवे दात वड अनमुल्ली। लोकमात ना तोल तुली। कलिजुग अन्धेरी एका झुल्ली। लक्ख चुरासी आउणी फाँसी, आत्म वाड़ी ना फली फुल्ली। प्रगट होए घनकपुर वासी, मेट मिटाए मदिरा मासी, चरन लगाए शब्द स्वासी, देवे दात नाम अनमुल्ली। मानस जन्म होए रहिरासी, अन्तिम करे बन्द ख़लासी। निज घर आत्म निज वसेरा, सच मण्डल साची रास। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द खण्डा इक्क उठाए। जगत रंडा कर वखाए। विच ब्रह्मण्डां वंड कराए। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंडां, सत्तां दीपां अन्त भन्नाए। मात पताल अकाश सर्ब घट वासा। शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीस साचे वेसा, करे कराए नर नरेशा, खुल्हड़े केसा प्रगट जोत माझे देसा। जोत सरूपी शब्द उडारी। पवण बबान तिन्नां लोकां एका धारी। चौथे खोल्हे दर द्वारी। पंजवें साची जोत निरँकारी। छेवें सुत्ता पैर पसारी। सत्तवें खेल हरि निरँकारी। साचा घर ना आवे डर नर नरायणा मधुर बैणा, सृष्ट सबाई साक सज्जण सैणा, इक्क इकल्ला रहणा, नूर नुराना अकाल अकाला दीन दयाला काल महांकाल करे रखवाली। आत्म दात हरि भगवन्ता। चरन नात विच मात साचे संता। अमृत देवे बूंद स्वांत इक्क इकांत, मेल मिलाए साचे कन्ता। आत्म वेखे मार झात, ना कोई वखाणे जात पात, जोती जोत सरूप हरि, सति सतिवादी नादी नादा, राग छतीसा बीस इकीसा हरि जगदीशा, सुत्ता पैर पसार। हरिजन हरि तोलन तोले। आत्म कुण्डा शब्दी खोल्हे। पवण स्वासी लाहे भगत उदासी, वसे काया चोले। जोत सरूपी घनकपुर वासी, दस्म दुआरी पड़दा खोल्हे। निज आत्म वेखे निज घर वासी। सच मण्डल दी साची रासी। ईड़ा पिंगला सुखमन दासी। मिटे अन्धेरा काला लक्ख चुरासी कटे फाँसी। हरि साजन साचा शाहो शाबाशी। जोती देवे नूर नुराना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, जगत पित जगदीश्र सदा सदा जन भगतां होए आप रखवाला। भगत संवारे काज हरि काजन काजे। अन्तिम रक्खे लाज, प्रगट जोत देस माझे। चार कुन्ट पैणी भाज, हरि साजन साजे।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान शब्द उडारी विच संसारी जोत निरँकारी, वेखे खेल लक्ख चुरासी मेल, धर्म राए दी घल्ले जेल कल कि आजे। साध संत सिख गुर भाई। नित नवित्त वेख वखाणे वार थित्त, अमृत आत्म काया सिंच तन मन्दिर सच क्यारी। बीजे बीज वारो वारी। अमृत फ़ल लग्गे काया डाली। संत मनी सिँघ कन्त सुहागा, सच सुहागण बणी नारी। इक्क सुणाया साचा रागा, गुरमुख होए वड वडभागा। पुरख अबिनाशी पकड़े वागा, प्रगट होए नर निरँकारी। फड़ फड़ धोवे काया दागा, कंचन उत्ते लाए सुहागा, हँस बणाए जीव कागा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। वेख वखाणे पहली माघा। राजे राणयां फेरे सुहागा। सोया शेर कलिजुग जागा। होया दलेर कोल वाघा। शब्द उठाए लड़ाए नागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सुहेले साचे मेले आत्म खेल हरि जी खेले, आपे गुर आपे चेले, एका शब्द सुन खोल्ले, मुन सुन गुरमुख साचे चुण चुण, मस्तक भाग गए जाग, मन भया वैराग, तृष्ना बुझी आग, मिले मेल हरि भगवाना। हरि भगवान मेल मिलईआ। संत मनी सिँघ तेल चढ़ईआ। आप बहाए साची नईआ। गुर संगत बणाए भैणां भईआ। चार वरन एका धार, हरि संसार विच रखईआ। ना कोई पुरख ना कोई नार, बिरध बाल जवानां पावे सार, ऊँच नीच जात पात पुरख बिधात एका देवे शब्द दात, जगत अन्धेरी मिटा रात, प्रगट होए कमलापात, अन्तिम पुच्छे भगतां वात, नाम देवे सच सुगात, गुरमुखां देवे साची दात, हरि बनवारी फूलनहार अन्त गुंदईआ। फूलन हार पाती पाती। पुरख अबिनाशी गुंदे नैण मूंदे ना कोई वेखे दिवस राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे धन्न धन्नवन्ते पत पतवन्ते, मिल्या मेल साचे कन्ते। मिटे अन्धेर ना कोई सन्झ ना कोई सवेर, भगत सुहेला इक्क इकेला, आत्म रासी विच प्रभासी, काया मण्डल साची रासी, गगन पताली मात अकाशी, पुरख अबिनाशी निज घर वासी, पवण स्वासी आत्म सद वसेरा, संत सिख गुर सतिगुर भाया। आप मिटाए तृष्ना तृख, दर घर साचे माण दवाया। प्रभ दर मंगी एका भिक्ख, नाम निरँजण दे रघुराया। पूरी सिख्या लई सिख, शब्द अंजन नेत्र पाया। कलिजुग माया लग्गी विख, आत्म रस तन गंवाया। किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ माण गंवाया। धुरदरगाही साचे लेख रिहा लिख, संत विचोला जगत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरा मस्तक भाग, कलिजुग अन्तिम गया जाग, आत्म इच्छया इक्क वैराग, चरन कँवल हरि जाए लाग, चिट्टे अस्व हो अस्वार, हरि निरँकार पहरेदार वारो वार पकड़ी वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन अन्तिम वेले जायण जाग। साचा मीत मीत मुरारा। नर हरि साचे अचरज रीता, मिले मेल हरि निरँकारा। एका शब्द साची दात विच मात अठारां ध्याए गीता,

रंग अवल्लड़ा रूप न्यारा। दिवस रैण हरि परखे नीता, अट्ठे पहर राखो चीता, आवे जावे वारो वारा। काया करे ठंडी सीता, कलिजुग अन्तिम मिटी रीता, सतिजुग साची बन्ने धारा। नित नवित्ता शब्द सुणाए सच संगीता, माण गंवाए राग छतीसा, मेट मिटाए ईसा मूसा, हरि पुरख अपारा। जगत उज्जयारा भगत सुधारा। एका वणज सच वपारा। दिवस रैण हरि वसे नैणा। गुरमुख संत कन्त सुहाग दर दुआरे घर साचे बहिणा। महल्ल मुनारे वड वडभाग, काया गागर निर्मल उजागर नाम रत्नागर, डूंघी धार शब्द सागर, हरि पावे सारे। गुरमुख विरला होए सौदागर, बख्शे दात हरि बनवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सिख गुर चेला अन्तिम मेला भगत सुहेला, होए सहाए विच संसारे। हरिजन पाए नाम धन्न भाण्डा भरम भन्न, आत्म मिटे जन, काया छप्परी छन्न, जोती नूर टिकाए। सच्चा देवे नाम धन्न, लोकमात ना लग्गे संन्न, मिटे अन्धेर आत्म अन्न, सच उज्जयार आप कराए। पंचां करे खंन खंन, शब्द डोरी देवे बन्न, नौवां दरां देवे डन्न, अन्दर रहण ना पाए। दसवें दर मिले वर खुल्ले सर गुरमुख साचा जाए तर, आत्म भण्डारा प्रभ जाए भर, जोती नूर कर उजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त भगत भगवन्त, होए सहाई सदा रखवाला। संत सिख सदा सुखदाई। आत्म अतीता सदा सुरजीता मीतन मीता, साची सेव कमाई। तन मन्दिर डूंघी कन्दर, ना कोई वेख वखाणे गोरख मच्छन्दर, उचे टिल्ले सारे हिल्ले, शब्द तीर चढ़े चिल्ले, भगत उधार जगत सुधार अवल्लड़ी रीते। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सिख गुर संत प्यारे, सज्जण सुहेले साचे मीते। गुर प्रसादि गुर दर दुआरे। हउमे रोग जगत विजोग चिन्ता सोग, रसना रस भोग जन हरि जगत निवारे। देवे दरस हरि अमोघ, साचा शब्द साचा जोग मिटे हउमे रोग ना होए विजोग, कन्त कन्तूला कमल कँवलारे। लिख्या धुर संजोग आत्म रस साचा लैणा भोग, शब्द झूला हरि झुलारे। देवे झूला जगत हुलारा। भगत उधारा पुरख अपारा। आप चुकाए पिछला मूला, गुरमुख साचा फलया फूला, मिल्या हरि राज राजान शाह सुल्तान दूलो दूल्ला, लाए भोग रसन रसनारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर नर हरि, आत्म खोल्ल दर भण्डारा भर, आत्म जोती नूर धर, शब्द डोर फड़ भरम भुल्ला विच संसारे। अकाश अकाश अकाश जोत प्रकाश। नूर निरँकारा रंग अपारा सद वसे बाहर, थिर घर साचे सदा सद वास। अवण गवण बवण सवण ना कोई पाए सार विच प्रभास। शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष देव यमन, घट घट तट्ट तट्ट भए उदास। सच किनारा हरि निरँकारा वेखे जमन, शब्द सरूपी पाए रास। प्रगट होए दुष्ट दमन, दयानिध दीन दयाला भगत सुहेला होए दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त पूरन भगवन्त जन भगतां पूर कराए आस। खण्ड ब्रह्मण्ड लोअ

लोअ अकार। नर नरेशी साची वंड ब्रह्मा विष्न महेषी धार। गुणवन्त गणेशी खुल्हड़े केसी, दर दरवेशी नैण मुँधार। अवल्लड़ा भेसी गुरमुख प्रवेसी, ना कोई वेख वखाणे प्रभ अबिनाशी जाणे औलीआ पीर दस्तगीर शाह मुहम्मद यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होवे विच संसार। सच दुआरा बणया सच दरबान। अटल्ल अटल्ला श्री भगवान। इक्क इकल्ला वला छला, शब्द फड़े साचा भल्ला, नाम चढ़ाए साचा चिल्ला रसना खिच्च कमान। उच्चे पर्बत लाहे टिल्ला, पूर कराए बचन डल्ला, बूरे कक्के पए तरथल्ला, धूंआंधार ज़िमी अस्मान। चारों कुन्ट शब्दी हल्ला, मेट मिटाए जगत निशान। रसना गाए ना कोई अल्ला, मेट मिटाए हरि कुरान। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए विच जहान। ब्रह्मण्ड मण्डल हरिजन मिल्या कर कर वेसा। लोकमात अन्धेरी राती, पुरख बिधाती अवल्लड़ा भेसा। संत मनी सिँघ जोत पछाती, पुच्छे वाती शाह सुल्तान नर नरेशा। लोकमाती अन्धेरी राती अमृत बूंद प्याए स्वांती, आत्म खोल्हे ताकी, गुणवन्ती हरि गुण निधाना। कलिजुग भेख चुकाए बाकी, लक्ख चुरासी बन्दा ख़ाकी, लाड़ी मौत हथ्थीं बन्न्हे गाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात प्रगट होए वाली दो जहानां। ब्रह्मण्डल हरि ब्रह्मण्डे। धरे जोत जगत वरभण्डे। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, कोई ना दए सहारा, वहन्दी धार सिंध सागर कन्ढे। लक्ख चुरासी आरा पारा, मन्दिर मसीतां ढाहे गुरूदुआरा, जगत निशाने मिटे झण्डे। शब्द चले तीर अपारा, लोआं पूरीआं पावे सारा, पताल अकाशां खण्ड अखण्डे। वेख वखाणे हरि निरँकारा, सृष्ट सबाई कर दो फाड़, अग्न जोत लगाए हाढ़े, मुख वेखे सद इकल्लड़ा, धरत मात तेरा सच अखाड़ा, साची पाए हरि जी वंडे, कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे। धर्म राए कलि भाड़ा मंगे। जल थल जंगल जूह विच उजाड़ां पहाड़ां, शब्द उठाए साची धाड़ा, बेमुखां अग्ग लग्गे बहत्तर नाड़ां, झूठे भन्ने अंडे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन अन्तिम कलि पार उतारे दया कमाए, आप चढ़ाए सोहँ शब्द साचे डण्डे। ब्रह्मण्ड वंड हरि सच कराना। बेमुखां कलिजुग आई कंड छुट्टे तीर लथ्थे चीर, हथ्थ ना आवे नीर, चार कुन्ट होए वैराना। कलिजुग तेरा वक्त अख़ीर, कोई ना देवे मात सीर, प्रभ मेट मिटाए औलीए पीर दस्तगीर शाह हकीर, चले इक्क तीर निशाना। जन भगतां देवे शब्द चिल्ला, आत्म अमृत बख्शे साचा हरि नर नरायण हरि भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, इक्क झुलाए सच निशाना। मात पताल अकाश। दर दरवेश हरि सर्ब घटां घट वास। पुरख अबिनाश कलिजुग अवल्लड़ा भेस कर, आदि अन्त ना जाए विनाश। जोती खेली अपार नर, अन्तिम कलि जल थल वेख वखाणे पवण स्वास। लक्ख चुरासी आवे डर, पवण स्वासा हरि निरँकारा। करे खेल अपर अपारा। जोती जामा रमईआ रामा कृष्ना शामा शब्द दमामा लग्गे भारा। पूर कराए

५७६
०४

मात कामा, हरी हरि नामा त्रिलोकी नाथ सगला साथ गिरवर गिरधारा। धरत मात तेरी रक्खे पत दे कर हथ्थ प्रभ समरथ शब्द चलाए साची गाथ, पुरख अपर अपर अपारा। साचे लेख लिखाए मथ्था, कलिजुग अन्तिम करे ख्वारा। सतिजुग साचे साचा रथ, धरे मात हरि निरँकारा। पुरख अबिनाशी अकथ्थना अकथ्थ, जोत उजाला विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, प्रगट होए विच संसारा। भेखा धार वेख वखाणे। शब्द अस्वारी राजे राणे। जोत निरँकारी चार कुन्ट दहि दिश जोत जगाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। राजे राणे रंक राजान। वेख वखाणे श्री भगवान। शब्द मारे तीर निशान। जगत छुट्टे शब्द तीर, तुट्टे माण ताण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू पंज हरि कर्म वखाना। राणा संगरूर हरि पकड़ उठाना। शब्द डण्डा सिर लगाना। कलिजुग अन्तिम आई कंडा, दर दरबार ना किसे लगाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरा लेख जगत भेख मिटावना। राणा संगरूर हो त्यार। अन्तिम होणा चूर चूर, आसा मनसा हरि जी पूर, कलिजुग भुल्ले जीव गंवार। शब्द देवे साची तूर, चिट्टे अस्व हो अस्वार। एका जोती साचा नूर, पवण स्वासी नाम अधार। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् अस्सू राणे संगरूर हरि हज़ूर प्रभ अबिनाशी करे ख़बरदार। राणे संगरूर उठ उठ जाग। लोकमात प्रभ लाए भाग। आत्म धो पिछला दाग। पुरख अबिनाशी पकड़े वाग प्रभ अबिनाशी जामा पाए जोत सरूपी भेख वटाए, जगत विचोला धोवे दाग़। गुरमुख साचे लए बचाए, चरन सरन जो अन्तिम लाए, आप बुझाए तृष्ना आग। गुर संगत साचा संग निभाए, अंग संग प्रभ आप हो जाए, भुक्ख नंग कोई रहण ना पाए, चरन सरन जन जाए लाग। बेमुख काची वंग भन्न वखाए, शब्द मृदंग इक्क वजाए, हँस बणाए गुरमुख काग। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणी किरपा देवे कर, चरन छुहाए दयाल बाग। दयाल बाग़ हरि चरन छुहावणा। कलिजुग भेख अन्त मिटावणा। वेख वेख गुरसिख जगावणा। मस्तक लिखणा साचा लेख, प्रगट होए दरस दिखावणा। लोकमात लगाए मेख, शब्द निशाना इक्क रखावणा। आप मिटाए औलीए पीर शेख़, मुला मुसल्ला ना कोई पढ़ाए, गुरमुखां एका सोहँ नूरी नाउँ जपावणा। धरे जोत प्रभ माझे देस, कुरान अंजीलां वक्त चुकावणा। ना कोई पूजे शिव गणेश, ब्रह्मा विष्न ना किसे ध्यावणा। ना कोई फिरे दर दुआरे दरवेश, करोड़ तेतीसा बीस इकीसा अन्तिम अन्त करावणा। एका छत्र झुल्ले जगदीशा, निहकलंकी डंक वजावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज राजाना शाह सुल्ताना विच जहान चरन कँवल उप्पर धवल पुरख अबिनाशी सरन लगावणा। शब्द चले सच कटार। तिन्नां लोआं तिक्खी धार। चौदां लोकां वेख विचार। सोलां कलीआं कर शृंगार। वलीआ छलीआ हरि अपार। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, करे

ख्वारी शब्द फड़े तिक्खी आरी। ना कोई वेखे, अन्तिम चीर करे दो फाड़ी। भाणा वरते पहली हाढ़ी। किसे ना दिसे पिछा अगाड़ी। कलिजुग जीवां किस्मत माड़ी। एका उठे रूसा धाड़ी। अग्न लगाए बहत्तर नाड़ी। चारों तरफ काड़ काड़ जंगल जूह पहाड़ उजाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरा बन्ने नात, आप उठाए मौत लाड़ी। मौत लाड़ी कर त्यार। सोहणा करे तन श्रृंगार। लक्ख चुरासी वेख विचार। धर्म राए दर होए वास, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। अन्तिम वार सेवा लाए घनकपुर वासी लोकमात हरि मार झात, कलिजुग अन्धेरी रात, बेमुख सोए पैर पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत वखाणे आपे जाणे, आपणी साची धार। अस्सू पंज हरि बलवाना। करे खेल मात महाना। कलिजुग जीवां तोड़े नात, ना कोई सहाई विच जहानां। चार वरन वेख वखाणे, राजे राणे मार ध्याने, पल्ले ना किसे नाम सुगात, बेमुहाणे अन्धे काणे वड जरवाणे, सीस ना दिसे किसे ताज। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी साजना रिहा साज। तख्त ताज ना कोई दिसे। हरि राजान राज, जगत पित जगदीसे। धरत मात तेरे संवारे काजन काज, प्रगट हो अस्वार चौबीसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त अन्त कराए बीस इकीसे। गुरसिख प्यार राज दुलार। राज दुलारा नाम अधार विच संसार, अमृत धार ठंडी ठार आत्म जल धार लक्ख चुरासी होए पार, बन्द ख़लासी विच संसार। आवण जावण गेड़ निवार। शब्द गहणा तन श्रृंगार। मानस देही मिल्या मेल साचे कन्त हरि भतार। गुरमुख सुलखणी मात नार। अन्तिम अन्त पावे सार। पूर्ब कर्म जन्म विचार। मानस देही सच स्नेही उत्तम जाती, लोकमाती भगत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे करावे हरिजन भावे, दरगहि साची साचे नहावे, गुरमुखां दिसे वसे धाम न्यारा। धाम न्यारा हरि करतारा। ना कोई जाणे आर पार किनारा। गुरमुख विरला वेख वखाणे हरि प्रभ जाणे किरपा करे अपर अपारा। जगत दरवेश भगत प्रदेसी सच टिकाणे जोती रूपा साचा भूपा, शब्दी पहने चिट्टा बाणे। ना कोई रंग ना कोई रूपे, नूर नुराना सति सरूपा, देवे माण राजे राणे। लक्ख चुरासी अन्ध कूपा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि वल छल जल थल कर कर वेखे वेख वखाणे। गुरमुख अपारा संत विचोला, हरि देवे शब्द अधारा। सोहँ साचा तोला, मिले मेल निरँकारा। दर घर साचे होए गोला, चार कुन्टी इक्क जैकारा। दूजा दिसे ना कोई उहला, झिरना झिरे अपर अपारा। गुरमुखां खोल्ले आत्म कँवला, तिक्खी रक्खी शब्द धारा। पुरख अबिनाशी उप्पर धवला, जोत जगाए अपर अपारा। कान्हा कृष्ना सँवला मवला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूर अलाही नूरी अवल्ला। अल्ला नूरी हक्क हलाला। जगत मलाही, गुर गोपाला। भगतां देवे सच सलाही, नाम निरँजण सच रखवाला।

लक्ख चुरासी पैणी फाही, जगी जोत इक्क ज्वाला। गुरमुखां धोवे मस्तक दाग़, सच्चा चाढ़े रंग गुलाला। वेख वखाणे थाउँ थाँईं, शब्द बणाए विच दलाला। दर घर आए चांईं चांईं, जगत अवल्लड़ी चले चाला। सदा सुहेला देवे ठंडी छाईं, कलिजुग दस्से राह सुखाला। अन्त विछोड़ा भैण भाई, जगत जंज़ाला काल महांकाला। मेल मिलावा साचे माही, धुरदरगाही होए रखवाला। धर्म राए ना पाए फाही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम जोती साची गोती मेल मिलाणा। मेल मिलाए हरि भगवान। गुरमुख चरनी डिग्गण आण, होए सहाई हरि रघुराई एथे ओथे दो जहान। फंदन फंद कटान। आत्म वज्जदी रहे वधाई, रसना रस मधुर गुण गाण। गुरमुख सेवा धन्न कमाई, आदि अन्त ना होए जुदाई, एका रंग श्री भगवान। सज्जण सुहेला साचा माही, अन्तिम पकड़े दोवें बाहीं, ना छोड़े छोड़ छुड़ान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि साचा गुरमुख विरले हिरदे वाचा, देवे दरस आत्म दर दरबान। दर दरबाना हरि मेहरबाना। सगल जहाना कुलवन्त हरि भगवन्त भगतन साचा मेल मिलाना। कंठ नीला कर कर हीला छैल छबीला, अन्त साचा संग निभाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सुहेला आपे गुर चेला, अन्तिम जोती मेल मिलाना। पंचम् सोए दर दुआरे। पंचम् परम पुरख की साची धारे। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। सतिजुग साचे होए उज्जयारे। चार वरना साची सरना नर निरँकारे। राउ रंक प्रभ एका करना, गऊ ग़रीबां पावे सारे। आप सुहाए द्वार बंकां, चरन छुहाए विच संसारे। गुरमुख उधारे जिउँ रामा जनका, प्रगट होए काज संवारे। शब्द उठाए साचा धनुखा, रसना चलाए शब्द तीर अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व हो अस्वारे। सिँघ मताब दया कमाई। संत मनी सिँघ सेव कमाई। लहणा देणा देणा लहणा, अन्तिम वेले जोत जगाई। प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा, विच मालवे सिर छुपाई। अन्तिम वेखणा दर्शन नैणां, पुरी घनक जोत जगाई। तन पहनाए शब्द गहणा, दर दुआरे लए बुलाई। एका बणे मात पित भैण भाई साक सज्जण सैणा। शब्द घोड़े दए चढ़ाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरे सीस शब्द ताज पहनाई। शब्द ताज सिर देवे बन्न। संत दुलारा रसना गाए जगत सुणाए कन्न। एका इक्क वखाणे नर निरँकार सच घर बाहर, आत्म खुल्हे दर दुआरा, जगत बेड़ा देवे बन्न। शब्द चलाए सच जैकारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, गुरमुख साचे संत जनां आप उठाए आपणे कन्न्हु। गुरमुखां कढ्ढे आत्म जन। भाण्डा भरम देवे भन्न। सच्चा देवे नाम धन ना लग्गे संन्हु। संत मनी सिँघ हरि दुलारा विच संसारा। मूर्ख मुग्ध अञ्याण चतुर सुजान, बणाए गुण निधाना हो मेहरवान, जोती मेल अपर अपारा। आत्म जोती हरि जगाई। वरन गोत ना कोई रखाई। दस्म दुआरी खुल्हा सोत, काया रैण रात मिटाई। परम पुरख अबिनाशी जोत, घट

घट भीतर गया समाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धुन नाद संत सुहेला साचा लोकमात उपजाई। संत धुन शब्द धुन्कारा। तुट्टी सुन सुणे नाम इक्क निरँकारा। पुरख अबिनाशी ल्या चुण, सज्जण मीत मुरारा। इक्क वखाए साचा गुण, डंक वजाउणा जगत अपारा। राजे राणे भुल्ले धर धर भेख जगत गंवारा। कोई ना छड्डे मुला शेख़, नेत्र खोल्ह ल्या वेख उच्चे मन्दिर डूंघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ सतिगुर साचा लोकमात उपजाए साचा लाड़ा। साचा लाड़ा चढ़या घोड़े। माझे देस वागां मोड़े। चरन प्रीती हरि चरन कँवल उप्पर धवल, लिख्त लेख लिखे अपारे, लिख लिख भेजे दर दरबारे, कलिजुग दिन रहि गए थोड़े। निहकलंक कलि जामा धारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। आपे परखे मिट्ठे कौड़े। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम मार झात आपे वेखे बैठ इकांत। घनकपुर वासी जोत प्रकाशी, मेट मिटाए मदिरा मासी, जन भगतां देवे नाम सुगात। संत मनी सिँघ कलम चलाई। दिवस रैण सेव कमाई। गुरमुख साचे संत प्यारे हरि दुलारे, विच संसारे पहली वार मेल मिलाई। बेमुख अन्त होण ख्वारे, पुरख अबिनाशी जामा धारे, सोहँ खण्डा फड़े डण्डा। राजा राणा होए रंडा। किसे ना दिसे कोई कन्ढा। आप कराए खण्ड खण्डा। ना कोई सुहागण वड वड भागण, जगत दुहागण होई नार रंडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे खेल विच वरभण्डा। संत मनी सिँघ सच दुलार है। वेखे विगसे हरि नर, कलिजुग अन्तिम वार है। आप बहाए साचे घर, ना कोई नर ना नार है। किसे ना आवे उथे डर, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका भगवन्त सच्ची सरकार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण सतवें दुआरे चरन बाहर कर शब्द घोड़े हरि चढ़, जन भगतां पावे सार है। छेवें घर हरि विचार। पंजवें आए हरि द्वार। पुरख अबिनाशी वेख विचार। शब्द घोड़ा कर त्यार। कलिजुग अन्तिम रहि गया थोड़ा, वेखे विगसे हरि दातार। कलिजुग रीठा होया कौड़ा, शब्द भन्ने मार कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, साचा राणा शाह सुल्ताना विच जहानां भाग लगाए पहली हाढ़। संत मनी सिँघ लेख लिखाया। शब्द चलाया बत्ती दन्दा, निहकलंका पूर कराया। कलिजुग जीव आत्म अन्ध, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान विच जहान पुरख अबिनाशी भेव ना पाया। संत मनी सिँघ वड बलवान, किया खेल जगत महान, साची सेवा मात कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणे वड ज़रवाणे साचा लेखा जगत भुलेखा दर दरवेशी देख अन्तिम अन्त कराया। संत मनी सिँघ जगत जणाया। भगत भगवन्त जगत पित ईश्वर लोकमात जामा पाया। कलिजुग होई अन्धेरी राती ना कोई खोल्हे आत्म ताक, अन्ध अन्धेर सर्ब कराया। शब्द चलाए लेख लिखाए भविख्त वाक्, राजा राणा

करे ख़ाक, तख्त ताज किसे रहण ना पाया। जन भगतां अन्तिम रक्खे लाज, शब्द देवे सच्चा दाज, करन करावणहार रघुराया। मस्तूआणे साजन साजे, प्रगट होए देस माझे, राजयां राणयां रक्खे लाजे, अन्तिम वेले होए सहाया। राजे राणे सच दरबार। जगे जोत अगम्म अपार। शब्द चले साची धार। कदे उप्पर कदे थल्ले, गुरमुखां वसे सच महल्ले, जोती नूर जले थल्ले, वरते खेल अपर अपार। राणे संगरूर लेख घल्ले। शब्द तीर चड़्हे चिल्हे। वेख वखाणे मन्दिर टिल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा धाम सुहाउणा। संत मनी सिँघ लिख्या लेख पूर कराउणा। राजे राणयां वड ज़रवाणयां आप मिटाउणी मात रेख, फड़ फड़ बाहों सरन लगाउणा। धुरदरगाही लग्गी मेख, अन्तिम वेला नेत्र वेख, गया वक्त हथ्थ ना आउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा धाम सुहाउणा। मस्तूआणा धाम अपारा। संत मनी सिँघ लेख अपारा। लोकमात सच वणजारा। मिल्या मेल पुरख भतारा। शब्द वज्जे साचा डंक, चार वरन आए दुआरा। इक्क कराए राउ रंक, ऊँच नीच भेव न्यारा। आप सुहाए द्वार बंक, संत मनी सिँघ मात उज्जयारा। गुरमुख उपजाए जिउँ राजा जनक, धर्म राए आए हारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चिट्टे अस्व हो अस्वारा। चिट्टे अस्व हरि अस्वार। दर दरवाज़िउँ आया बाहर। तिन्नां लोआं पावे सार। मात पताल अकाश एका धार। सच मण्डल दी साची रास, प्रगटे आदि पुरख अबिनाश, चारों कुन्ट पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनक पुर वासी संत मनी सिँघ साचा हीरा, सिर बन्न्हे शब्द चीरा, नर हरि हरि नर सच्ची सरकार। साचा चीरा सिर दस्तारा। संत मनी सिँघ साचा हीरा। देवे माण हरि गिरधारा। वडा शाह पीरन पीरा, गऊ ग़रीब निमाणयां पावे सारा। हरिजन साचा धीरन धीर, अमृत बख्शे साचा सीर जो जन आयण चरन दुआरा। हउमै कढ्ढे काया पीड़, कलिजुग अन्तिम वक्त अख़ीर, लग्गी अग्न बहत्तर नाड़ा। लक्ख चुरासी पैणी भीड़, ना कोई बचे हस्त कीड़, धरत मात इक्क अखाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी वेखे जोती धार भेखे, मातलोकी सच्चा लाड़ा। हरि सरनाई जगत पित्त माया। देवे दरस नित नवित्त, भगतन हित्त हरि रघुराया। मीत मुरारा साचा चित, आत्म होई पतित पवित, चरन सरन हरि निमस्कारा। मानस जन्म लैणा जित्त, लक्ख चुरासी करे बन्द ख़लासी, उधरे उतरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि मेहरबान, देवे दरस अगम्म अपारा। सच्चा कन्ता दरस अमोघ, बणाए बणता, शब्द चुगाए साची चोग। मिले मेल अछल अछल्ले साचे कन्ता, मेट मिटाए चिन्ता सोग। जोत सरूपी काया मौले, लिख्या धुर संजोग। आप बहाए शब्द डोले, लोकमात ना होए विजोग। दर दुआरे आत्म पड़दा खोल्हे, आत्म रस लैणा भोग। भाग लगाए काया चोले, सोहँ देवे साचा जोग।

दरस दिखाए हौले हौले, पुरख अबिनाशी मात अमोघ। शब्द सरूपी आत्म बोले, मेट मिटाए चिन्ता सोग। किरपा करे हरि बनवारी, दरस दिखाए विच संसार, दोए जोड़ कर सरन जन निमस्कारा। सीस आपणे हथ्थ रखाए जगदीश पुरख अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन करे कराए एका टेक बुध बबेक सच प्यारा। चिन्ता मन जगत वैराग। वणज वणजारा इक्क धन, बुझे तृष्ना आग। आप मनाए जिस जन, मन शब्द सरूपी लाए जाग। जोती जोत सरूप हरि, आशा मनसा पूर, घर साचे लाए पूरन भाग। सच दुआरा हरि भण्डार है। नर हरि बणे वरतारा, निखुट्ट ना जाए विच संसार है। लाहुण आया सिर तों भारा, पूर्ब कर्म जन्म रिहा विचार है। तन पहनाए फूलनहारा, मालन बणी सच्ची सरकार है। सिर उठाई साची खारी, वेख वखाणे चार कुन्ट चार द्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए दया कमाए साचे दर द्वार है। भगत भण्डारा विच संसारा। कलिजुग चले अन्तिम वारा। लोकमात फले फुल्ले, झूठी माया विच ना रुले, पाणी पए ना काया चुल्ले, अमृत लेवे साची धारा। विच मात प्रभ पाए मुल्ले, शब्द भण्डारा साचा खुल्ले, जन भगत चढ़ाए साचे झूले, देवे इक्क हुलारा। मिले मेल कन्त कन्तूले, कलिजुग अन्तिम भज्जी चूले, चौथे जुग पवाए मुल्ले, तिन्ना लोकां करे बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सच कराए नाम वणज वपारा। गुरमुख तेरा साचा थांउँ। सच वसेरा हरि का नाउँ। घर घर उडदे दिसण काउँ। ना कोई पिता ना कोई माउँ। पुरख अबिनाशी साचा हित्ता, राखो चिता नित नवित्ता, दर घर देवे ठंडी छाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे, बिशन सिँघ संत दुआरे चरन छुहाए गुड़गाउँ। गुण साचा गाया। वज्जी शब्द नाद धुन, पुरीआं लोआं दए सुणाया। तप तपीशर उठाए रिख मुन, चुण चुण कन्नी डंक वजाया। सच पुकार रिहा सुण, आत्म धुंदूकार मिटाया। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुरमुख साचा लाल उपजाया। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, गुणवन्त निधाना आप अखवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत प्यारे, रंग रंगीला कर कर हीला दर घर साचे चढ़ावण आया। गुरमुख साचे धन्न कमाई। उज्जल मुख सेव कमाई। प्रभ आप निवारे तृष्ना भुक्ख, हउमे मेटे काया दुःख, एका सुख तन उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन टेक देवे सच्ची सरनाई।

५८१ ०४

❋ ६ अस्सू २०११ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ❋

जगत अन्धेरा अन्ध अज्ञान। अन्त निबेड़ा मेल भगवान। वसदा रहे काया नगर खेड़ा, दीपक जोती जगे महान। पुरख

अबिनाशी बन्ने बेड़ा, किरपा कर आत्म दर नर हरि चतुर सुजान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मन्दिर महल्ल मुनारा। जोती दीपक कर उज्जयारा। माणक मोती नाम अपारा। आत्म दुरमति मैल प्रभ दर धोती, मारे शब्द इक्क कटारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोगां सोगां पावे सारा। काया कोट कोट गढ़। शब्द लग्गे चोट, दस्म दुआर चढ़। जगत तृष्ना मिटे खोट, सुफल कराए नाड़ी नड़। पुरख अबिनाशी एका ओट, एका फड़या साचा लड़। दर घर आवे ना कदे तोट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरे रिहा खड़। काया मन्दिर सर्ब घट चानण। दुरमति मैल कट, देवे आत्म ब्रह्म ज्ञानण। दूई द्वैती मिटे फट्ट, सच सरोवर सच इशनानण। साचा तीर्थ आत्म तट्ट, गुरमुख विरले मात नुहावण। जोत जगे काया लट्ट लट्ट, मिटे अन्ध अंध्यानण। भाग लग्गे काया मट्ट, शब्द पट हरि तन पहनानण। आत्म दर दुआरा खोल्ले हट्ट, काया मन्दिर सच दुकानण। गुरमुख लाहा लैण खट, तेज प्रकाश कोटण भानण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां धुरदरगाही सच सुहेला सच्चा जामन। काया मन्दिर हरि धाम अस्थूल। गुरमुख साचा संत प्यारा, पुरख अबिनाशी ना जाए भूल। लोकमाती सच दुलारा, आप चुकाए पिछला मूल। साचा देवे शब्द हुलारा, पलँघ रंगीला ना कोई पावा ना कोई चूल। जोती बाती लाए तीला, करे खेल दूलो दूल। वेख वखाणे अकाशी नीला, सूली बणे गुरमुख सूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेल मिलईआ, आप चढ़ाए साची नईआ, भव सागर पार करईआ। जिउँ जल कँवल फूल। काया मन्दिर तन अन्गयार। वेख वखाणे अन्दरे अन्दर, डूंघी कन्दर जोत उज्जयार। लक्ख चुरासी भौंदे बन्दर, पुरख अबिनाशी ना पाए सार। जन भगतां तोड़े आत्म जन्दर, शब्द हथौड़ा एका मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म नेत्र खोल्ले, शब्द बोले किरपा कर अपर अपार। नेत्र नैण होए उज्जयार। आत्म जोती कमलापाती दर खोल्ले ताकी, धरे इक्क अन्गयार। लहणा देणा चुक्के बाकी, मेट मिटाए हाकन डाकी, भविक्खत वाक् खेल अपार। हरिजन सच्चा नायक नाकी, कोई ना मात दिसे आकी, पंजां तत्तां मारे शब्द कटार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मन्दिर महल्ल उसार। काया मन्दिर महल्ल मुनारा। गुरमुख वेखे इक्क अटल्ल, जगे जोत हरि गिरधारा। वेख वखाणे निहचल धाम अचल्ल, प्रभ अबिनाशी पावे सारा। दर दुआरा बैठे मल, देवणहार हरि दातारा। करे खेल घड़ी पल, आत्म वणज हरि निरँकारा। भाणा रक्खे जल थल, काया कोट हरि गढ़ बनाणा। आत्म मारे इक्क उछल्ल, अन्ध अन्धेर सर्ब वहि जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख जगत भेख, गुरमुख आत्म वेख, धरत मात कलि साचा हाट, पुरख अबिनाशी साचा हित्त, मानस देही जगत जित्त, लेख पूर करावणा। काया कोट

काची माटी। आत्म दुआरा साची हाटी। वसे नर निरँकारा, बज़र कपाटी। हरिजन एका बज़र कपाटी पाटी। शब्द देवे साची धारा, जोत उज्जयारा लाटन लाटी। निज घर वसे राम मुरारा, दुरमति मैल रिहा काटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भाणा आपणे हथ्थ रखाए, अग्गे नेड़े आई दिसे वाटी। अग्गे आया दिसे नेड़ा। लग्गे भाग काया खेड़ा। नेत्र नीर विरोले, पुरख अबिनाशी पूरे तोल तोले, बन्न वखाए बेड़ा। माया पड़दा जन भगत खोल्हे, जूठा झूठा मुकाए झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त होए सहाई दया कमाए, गुरसिख काया खुल्हा दिखाए साचा वेहड़ा। साचा भाणा हरि वरतावणा। लिख्या लेख पूर करावणा। आत्म जोती नूर हरि भरपूर करावणा। वडा दाता मेहरबान सूर, मात आप अख्वावणा। आत्म बख्शे साचा नूर, नैणी नूर फेर टिकावणा। दर दुआरे वेखण मार झात, पुरख अबिनाशी नज़र ना आवणा। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत, पड़दा उहला सन्झ सवेर इक्क करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा हरि भगवाना गुरसिख तेरे सीस हरि जगदीश आपणा राह चलावणा।

✻ ७ अस्सू २०११ बिक्रमी एह पंज शब्द सति संग भवन दयाल बाग आगरा विखे उचारन कर के उस वक्त दे राधा स्वामी गद्दी दे मालक महिता जी नूं दित्ते गए ✻

आदि शक्त आई द्वार। बैठी आए कंठ मँझार। आपणा किया पहला वार। सोहँ चल्लया शब्द तीर अपार। तिक्खी रक्खी प्रभ साचे धार। खिच्ची रक्खी दस्म दुआर। नेत्र पेखी अन्ध अंध्यार। अस्सू सत्त अमृत वेला पंज तीस वक्त विचार। नर नरायणा धाम साचे बहिणा, सोया चरन पसार। शब्द सुनेहड़ा देणा मोड़। चारों कुन्ट लैणा दौड़। जगत रस फीका अन्तिम होया कौड़। एका दर दुआरे नाम साचा टीका, चरन सरन गुर दोए जोड़। दर घर साचे भुगतणी पए इक्क तरीका, वेखे परखे मिट्ठे कौड़। समरथ पुरख नित उडीकां, चढ़या रहे शब्द घोड़। नज़र ना आए जोत सरूपी वड नीकन नीका, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे लगाई बैठा इक्का पौड़। इक्का पौड़ा उच्च महल्ला। हरि जी वस्सया सच घर इकल्ला। राह साचा दस्सया, पंज तीस मात पाए तरथल्ला। ना कोई धीरज ना कोई जती, काम कामनी अछल अछल्ला। सच समग्री साची रती, दीपक दीवा जोती जगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन बुझाए लग्गी अग्गा। लग्गी अग्न तन अपार। कलिजुग काया चढ़या बुखार। हँकार विकारा अन्दर वड़या, पंजां लग्गी मगर धाड़। ग़रीब निमाणा

मात डरया, जीव जन्त होण ख्वार। दर घर साचे आए वड़या, गुर पूरे आत्म देणी शब्द धार। तन मन्दिर काल अन्धेरे सड़या, रंगण चाढ़ नाम अपार। दर दवारे आण खड़्या, मंगण दात अपर अपार। पुरख अबिनाशी मात चढ़या, जोती जामा भेख न्यार। भगत जनां हरि अन्दर वड़या, शब्द जोती कर अकार। गुर पूरे लड़ साचा फड़या, मानस जन्म ना आए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिले मेल हरि कन्त भतार। चिन्ता सोग जगत विजोग देणा मार। नाम देणा सच्चा जोग, सोलां कलीआं तन श्रृंगार। निझर रस मधुर सस कंठ वस राह साचा दस्स लईए भोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा दर दरस अमोघ। आए दर बण सवाली। दोवें हथ्थ ना जाईए ख़ाली। कलिजुग रैण घटा काली। दीपक जोती जगे दिवाली। माणक मोती मस्तक थाली। एका एक जोत ज्वाली। पुरख अबिनाश घट घट वास, रक्खी टेक सुरत संभाली। तन मन्दिर करना बुध बबेक, शब्द बणाउणा साचा हाली। जगत माया ना लग्गे सेक, फ़ल लगाउणा साची डाली। मेल मिलाउणा नर नरेश हरि दर दरवेश, जुगा जुगन्तर चाल निराली। कवण सिँघासण कवण आसण, मिले भगवन्ता साचा कन्ता, काया रंगण चाढ़े रंग एका नाम लाल गुलाली।

५८४
०४

✻ दयाल बाग स्वामी महिता जी दे नाल शब्द दुआरा बचन अते शब्द मंग, परंतू राधा स्वामी गद्दी दे मालक महिता जी कोई उत्तर ना दे सके ✻

गुर शब्द जगत दलाल। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल। पंजां तत्तां मारे काल। करे सति सति प्रितपाल। अमृत सोमा वगे नहिर, काया ठंडी ठार। सच मण्डल तन मन करनी सैर, कर जोत अकार। दूजा कोई ना वड़े ऐर गैर, गुर पूरा करे साची मेहर। करे मेहर गुर मेहरबान है। मिल्या मेल धुर, आत्म जोती जगे महान है। मानस देही तरसण सुर, इन्दलोक कर ध्यान है। गुर चरन प्रीती जाए जुड़, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान है। एका मिले शब्द घोड़, चरन धूढ़ सच्चा इशनान है। होए सहाई जीव आत्म मूर्ख मुग्ध मूढ़, मिले सच्चा नाम दान है। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, एका जोत सति सतिवन्ता, पूरन भगवन्ता हरि भगवान है। पूरन भगवाना गुर दर पाईए नाम निधाना। बंधन कट कटाए आत्म जोती मिले कोटन भाना। अन्दरे अन्दर गुर पूरा पाईए, शब्द बन्न्हे हथ्थ साचा गाना। दोए जोड़ मानस देही भुल्ल बख़्शाईए, जोती जोत सरूप हरि, आत्म खोल्हे बन्द दर, आपणी किरपा देवे कर, दस्म दुआरी शब्द अस्वारी जोत निरँकारी, निज घर वास दासन दास, सर्ब सूख सूखम दर पाईए। सूखम दुआरा हरि भगवान। मिटे भूख दूख सगल जहान। मात गर्भ ना होए

५८५
०४

उलटा रुक्ख, आत्म जोती मेल मिलान। जोती जोत सरूप हरि, गुर पूरा किरपा देवे कर, जन मंगे साचा वर, मिले मेल नर हरि श्री भगवान। हउँ दासन दास, दास गुर तेरा। निज घर आत्म करना वास, मिटे जगत अन्धेरा। जोत नूर नुरानी होए प्रकाश, शब्द धुन तुटे सुन, साचा राग सुणाए काना। दर भिखारी ना विचार, गुण अवगुण बख्शो नाम जगत निधाना। सच दुआरा ल्या सुण, जगत तृष्ना अग्न मिटाना। लक्ख चुरासी छाण पुण, पूरा गुर मिल्या मेल लिख्या धुर, मस्तक धूढ़ी चरन छुहाना। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, गुर पूरा देवे नाम वर, लक्ख चुरासी गेड़ मिटाना। लक्ख चुरासी तुट्टे गेड़ा। धर्म राए ना देवे फाँसी, रसन तजाए मदिरा मासी, आत्म दर द्वार खुल्ह़ा दिसे सच्चा वेहड़ा। दर घर साचे कोए ना लग्गे मुल्ले, गुर पूरा बन्न्हे मात बेड़ा। हरिजन जन हरि पूरे तोल तुले, पंचां मिटे काया झेड़ा। गुर भण्डारे सदा खुल्ह़े, करे सति नबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, एका मंगे साचा दर, वसे साचा काया नगर खेड़ा। काया खेड़ा महल्ल अटारी। पंचां झेड़ा, ना मिले मेल बनवारी। इक्को दित्ता सच्चा गेड़ा, बज़र कपाटी पाड़ी। दर घर साचे सच निबेड़ा, मानस जन्म ना आए हारी। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, गुर पूरा देवे साचा वर, सोहँ शब्द फेरे सिर पंचां तिक्खी आरी। तिक्खी आरी तिक्खी धार। दुरमति मैल दए उतार। जन्म कर्म पूर्ब दए संवार। इक्क वखाए सच धर्म, तन कराए शब्द सोलां श्रृंगार। जगत मेटे अंदेसा भरम, नाम रत्न मिले अपार। मानस देही सुफ़ल जन्म, आए सच द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरा देवे साचा वर, भरे रहण अतुट्ट भण्डार। गुर भण्डारा जगत वरतारा। देंदा जाए वारो वारा। गुरसिख साचा भाणा सहन्दा जाए, सच सिंघासण बहिंदा जाए, सच्चा माणे पुरख अबिनाशी साचा कन्ता बण बण साची नारी, मिले माण विच जहान विरले गुरमुख संता जिस जन मग्गया इक्क दुआरा। लोकमाती वेखे मार झाती कवण बणाए साची बणता, मंगण आए बण भिखारा। पूरा गुर महिंमा जगत अगणत अगणता, नाम निरँजण दर्द दुःख भंजन जगत पित कर साचा हित्त, बण साक सज्जण सैण मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरा देवे नाम वर, चिन्ता सोग जगत विजोग रसना रस भोग ना करे विचारा। गुर मूर्त गुर सूरत दयाला। गुर शब्द तूरत सहिज सहिज धन्न माला। जोत नुरानी नूर नूरो नूरत, काल अकाल अकाला। हरिजन दिसे ना कदे दूरत, जगत बसंतर करे प्रितपाला। आसा मनसा सदा सद पूरत, नित नवित्त अवल्लड़ी चाला। अन्तिम अन्त रहणा झूरत, ना कोई पछाणे गुर गोपाला। जोती जोत सरूप हरि, इक्क बणाया दोहां धिरां शब्द दलाला। शब्द दलाल हरि हरि मेहरबान। मात ना सके कोई पछाण। साहमणे बैठ तक्के, कलिजुग

५८५
०४

बूटे सारे पक्के, गुरमुख विरले फल साचा खाण। गुर पीर सभ बाहर धक्के, फेरा पाए मदीने मक्के, कोई ना रोके विच जहान। गुरमुख विरले संत जन हरि चरन कँवल शब्द अधारी रक्खे, आदि तत्त ना होए विनासी। आदि अन्त शब्द गुरदेवा। भगत भगवन्त दर देवे नाम सच्चा मेवा। नाम वड्याई साचे संत, एका जप्पया नर नरायण जिह्वा। मिल्या मेल प्रभ साचे कन्त, दर्शन पेख अलक्ख अभेवा। छुट्टे चुरासी जीव जन्त, जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, आदि जुगादी अन्तिम अन्त। दयाल बाग़ प्रभ चरन छुहाया। शब्द राग इक्क उपजाया। तन मन साचे लाए जाग, पंजां चोरां बाहर कढाया। हरिजन हरिजन हरिजन हथ्थ आपणे पकड़े वाग, शब्द घोड़ा इक्क रखाया। दुरमति मैल धोए दाग, निर्मल काया देह कराया। आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत झिरना दे झिराया। हँस बणाए गुरसिख काग, शब्द धुन नाद तन मन्दिर देह वजाया। दरस दिखाए माधव माध, सुन्दर साँवल कृष्न मुरार। दिवस रैण रैण दिवस सद रक्खणा याद, मानस देही ना आए हार। आदि भवानी शक्ती जोती निरगुण सरगुण खेल अपार। करे खेल विच ब्रह्माद, भरम भुल्ले माया रुल्ले कलिजुग जीव गंवार। जन भगतां मेटे वाद विवाद, तन शब्द कराए इक्क अहार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी निज आत्म बोले
५८६
०४ कुण्डा खोल्ले, देवे नाम इक्क अमोले, लोकमात पूरे तोल तोले, भगतन देवे साची दाद। हरिजन दर घर साचे बणाए ५८६
०४
गोले, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, हरिजन मंगे सच दर, जगत विचोला मिटाए पड़दा उहला, दस्म दुआरे हरि बनवारी दया कमाए, पड़दा लाहे जोत जगाए, मिटे सुन्न समाध। सुन समाध काया तोड़े। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े। चरन कँवल प्रभ प्रीती जोड़े। कलिजुग दिन रहि गए थोड़े। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात जोत धर, निहकलंक नरायण नर, धरत मात सुण पुकार विच संसार। मारे शब्द कटार, लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठे कौड़े। नर नरायणा निहकलंका शब्द वजाए साचा डंका, आप उठाए राउ रंका, जन भगत जगाए मात सोए। जोती नूरा साचा हीरा इक्क लगाए आत्म तनका, अमृत देवे साचा सीर, गुरमुखां आत्म बुझे हउमै विच्चों कढ्ढे पीड़, रसन स्वासी प्रभ होए वस, तन गंवाए अन रस्स फीका। दयाल बाग़ धरत सुहाया। गुर संगत बुझाए तृष्ना आग, साचा संग अमृत आत्म गंग सर सरोवर इशनान कराया। जगत कटे भुक्ख नंग, नाम दात जन लई मंग, मानस देही काची वंग, साची रंगण नाम चढ़ाया। होए सहाई अंग संग , वड दाता सूरा सरबंग, मात पताल अकाश निज घर वास डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा देवे कर, आत्म खोल्ले साचा सर, अमृत झिरना निज्झर धार कर प्यार, हरिजन साचे कँवल नाभ मुख चुआया। उलटी कँवल नाभी। बज़र कपाटी पाटी। एका वेखे वेख वखाणे, साचा तीर्थ साची हाटी। अमृत भरया सीतल ठरया, ना कोई

तट्ट ना कोई ताटी। तन मन काया हरया करया, जगी जोत महल्ल ललाटी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आप चढ़ाए औखी घाटी। औखी घाटी जाणा चढ़। हरि घर मन्दिर सच टिकाणा, गुरमुख विरला जाए वड़। जगत अन्धेरी काया कन्दर, पंजे चोर रहे लड़। जन भगतां जायण अन्दर सड़। प्रभ अबिनाशी फड़या लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा देवे कर, आपे तोड़े काया किला हँकारी गढ़।

❈ ७ अस्सू २०११ बिक्रमी बिन्दराबन बांके बिहारी मन्दिर विच ❈

गिरवर गिरधार गवर्धन धार। गऊ ग़रीब निमाणयां, करे कराए हरि प्रितपाल। पंडत पांधे बेमुहाणयां नर हरि हरि नर ना पछाणया, होए कलि निधान जगत अवल्लड़ी चाल। झूठी घालण रहे घाल। आवे जावे नर हरि भगवानया, जन भगतां रिहा सुरत सम्भाल। बिरज वासी सूरय अंसा विष्नूं बंसा, आदि अबिनाशी ना खाए काल। पंडत पांधे मन्दिर पुजार। माया बांधा तन अन्गयार। कलिजुग अन्तिम थक्का मांदा, रचन रचाई अपर अपार। जादव बंसी रघूपति रघुनाथ, ना गुप्त ना वेखण जाहर। अन्दर बाहर किसे ना दिसे, मुकंद मनोहर लखमी नरायण जगत जगदीशे मोहण माधव कृष्न मुरार। अचुत अगणत खेल अपार। मोर मुकट छत्र सीसे, जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सारे घर, मन्दिर महल्ल अन्तिम कलि झूठी चक्की सारे पीसे। अस्सू सत्त बिरज बिहारी। ना कोई वेखे नैण मुँधारी। माया भुल्ले जीव गंवारी। मुकट मोर धज धरनापति हरि अपारी। कँवल नैणां मधुर बैणा, कुण्डल मण्डल जोत निरँकारी। निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे साचे घर, जूठे झूठे माया लूठे पूज पुजारी। कान्हा घनईआ। मण्डल रास, जगत चलाई साची नईआ। भाग लगाया विच प्रभास, सृष्ट सबाई सज्जण सुहेला इक्क इकेला अनाथ अनाथी सगला साथी, बणया रहे भैणां भईआ। मस्तक तिलक जोत ललाटी, फड़फड़ चाढ़े औखी घाटी, जमन किनारा सच दुआरा तेरी अन्तिम वारा, मुकंद मनोहरा गऊ ग़रीब निमाणयां हथ्थ पकड़े डोरां। वड वड राजे जर जरवाणयां, पकड़ बहाए अन्ध घोरा, मिलाए मेल भगत भगवानयां। भगत भगवान जन करे पछाण। आत्म जोती दीप महान। निर्मल नैण मिले नर हरि सच्चा साक सैण, उतरे मन की चिन्दा। राम रमईआ कृष्न घनईआ, सुन्दर कुण्डल मुकट बैण। सच दुआरा बंक द्वार। कृष्न मुरारा नर निरँकार। जोत अकारा विच संसार। बिदर सुदामा पार उतार। द्रोपत पाई सार। पांडो दित्ता इक्क सहार। दरस अमोघ दर दातार। शब्द फड़े खण्डा दो धार। दर्योधन हँकारी कर ख्वार। द्वापर तेरी अन्तिम वार। भारत खण्ड पई वंड, वेख वखाणे गिरवर गिरधार। गुर दर

अन्तिम आई कंडा, अर्जन मिल्या कृष्न मुरार। जोती जोत सरूप हरि, अवतार नर कवण वखाणे कवण जाणे माया धारी वड संसारी वड ख्वारी, आवे जावे मात रहावे वारो वारी।

✻ ८ अस्सू २०११ बिक्रमी दिल्ली रेलवे स्टेशन उत्ते बिशन सिँघ दे नवित्त ✻

प्रेम मध माता गुणवन्त, भगवन्त गुरमुख साचा संत जगत भगत अन्तिम मुक्त दर घर सच बणाता। पारब्रह्म सच कर्म मानस जन्म, आर पार विच संसार, दो धार जगत अधार पार कराता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण गुणवन्ती सोभावन्ती गुरमुख नारी कन्त प्यारी, साचे दर अटल्ल महल्ल निहचल धाम सद सद रखाता। विष्नूं बंसी बंस अमोला। उत्तम मात विच सहँसी, मिले शब्द साचा ढोला। पंच दुष्ट सँघारे जिउँ कान्हा कंसी, निर्मल बुद्धि उत्तम चोला। मिल्या मेल जिउँ अर्जन बंसी, आत्म पड़दा प्रभ साचे खोल्हा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सिँघ बिशन तेरा मात बणाया सच विचोला। संत विचोला दो जहान। दर घर बणया साचा गोला, मिल्या नाम इक्क निशान। शब्द पहनाए प्रभ निर्मल चोला, रंगण चढ़े जगत महान। बज़र कपाटी पर्दा खोल्हा, शब्द धुनी कन्न सुणी, मिले मेल नर हरि श्री भगवान।

५८८
०४

✻ ८ अस्सू २०११ बिक्रमी मोदी नगर चन्नण सिँघ दे गृह ✻

गुणी गुणवन्त साजन संत, रसन रस भोग गुर चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण आदि अन्त अबिनाशी, चार कुन्ट ना जाए हार। पालण पाल बिरध बाल अञ्याण होए रखवाल। जीव जन्त विच जहान, हरि दर ना खाए काल। चुकाए जम की काण, भगत जगत अवल्लड़ी चाल, एका जोत मेल भगवान, जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर पंचम् जेठी देवे जगत दान। जगत दान भगत दर पाया। मिले माण कलि कलेशी घरों लाहया। हो मेहरवान दर दरवेशी चरन छुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था बाल बाले सिँघ सुरजीत नाम धराया।

✻ ६ अस्सू २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी केहर सिँघ दे गृह ✻

जग पंडत पिण्ड पराया। लोकमात आया बण के मंगत साचा हुक्म हरि भुलाया। सच घर ना माणी साची संगत, लोभी ममता रसन विकार चलाया। काया दुहागण होई नंगत, शब्द चोला ना तन पहनाया। मानस देही दिसे भंगत, अन्दर

मन्दिर डेरा किसे ना लाया। हरिजन विरला प्रभ होए सहाई जिउँ नानक अंगद, सरन सरनाई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त निहकलंकी भेख वटाया। पंडत पढ़ वेद विचार। वेद क्तेब ना पाई सार। घर साचा वेख वखान, पुरख अबिनाशी गुप्त ज़ाहर। कलिजुग जीव ना भुल्ल गंवार। सच शब्द घर सच सुन्यार। माया झूठी वेख ना भुल्ल, सोलां कर तन शृंगार। भाग लगाउणा आपणी कुल, जोती नूर कर उज्जयार। निहकलंक कलि जामा पाया, वेख वखाणे पंडत पांधे, आत्म आंधे माया डोरी बांधे, कवण वखाणे कवण जाणे कवण भतारा कवण नार। पंडत पढ़या वेद शास्त्र। इक्क ना जाणे नाम अस्त्र। तन ना पहने सच्चा बस्त्र। हउमे लग्गी काया नसतर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाए, पंडत पांधे लए उठाए, सोहँ शब्द हथ्थ रखाए सच्चा शस्त्र। पंडत पांधे पिण्ड प्याल। कलिजुग थक्के मांदे, दरस ना पेखत दीन दयाल। पीत पतम्बर झूठा गांदे, वेख वखाणी अवल्लड़ी चाल। अन्दर बाहर आउँदे जांदे, आत्म रहे सदा कंगाल। प्रभ अबिनाशी गाउँदे जांदे, माया ममता रंग चढ़ाउँदे काया काल। कलिजुग जीव भुलाउँदे फिरदे, काया नीत ना सके संभाल। झूठे ताल वजाउँदे जांदे, फल ना दिसे किसे डाल। निहकलंक कलि जामा पाए, भुल्ले रुले राहे पाए, अन्तिम सुरत संभाल। मन्दिर अन्दर ना कोए वड़या। पंडत पांधे दर दुआरे, गर्भ हँकारे बाहर खड़या। अस्थिर ना वेखे हरि चुबारे, सिखर डण्डे ना कोई चढ़या। जीआं जन्तां झूठे लारे, माया डोली घाड़न घड़या। मिले मेल ना हरि निरँकारे, कलिजुग वहिण हड़्या। निहकलंक कलि जामा धारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, पंडत पांधे वेख विचारे। सोहँ डण्डा हथ्थ विच फड़या। मन्दिर अन्दर गऊ घाट। वेख वखाणे तीर्थ ताट। किते ना दिसे जोती लाट। चारों कुन्ट चार चुफेरे आई घाट। लक्ख चुरासी फिरे अन्धेरे, दुरमति मैल ना देवे कोई काट। मात गर्भ आवण जावण जेहड़े, कोए ना कढ्ढे आन बाट। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, जूठा झूठा भेख वटाया, इक्क खुल्हाए साचा हाट। गुरदुआरा गुर दरबार। दर घर साचा ना कोई करे विचार। ग्रन्थी पन्थी भाण्डे काचे, कंचन पाया तन शृंगार। हरि हरिजन कोए ना वाचे, एका भरया मन हँकार। जोत निरँजण साचो साचे, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आवे जावे वारो वार। हरिजन विरला हिरदे वाचे, किरपा करे जिस अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, ग्रन्थी पन्थी अन्तिम पावे मात सार। गुरदुआरा गुर का राह। बेमुखां कलि दिसे ना। माया राणी वड ज़रवाणी गल पाई बैठी मात फाह। दर घर साचे होए सवाणी, चतुराई किसे चले ना। बेमुखां आत्म होई अन्धी काणी, दर दुआरा ना दिसे कोई सच्चा थां। ना कोई जाणे जाण वखाणे खाणी बाणी पुरख ध्यानी वड विद्वानी, काया मन्दिर डूंघी कन्दर घर घर उडदे दिसदे कां। जोती जोत

सरूप हरि, निहकलंक कलि जोत धर, गुरदुआरा दर दरबारा, अन्दर बाहरा गुप्त ज़ाहरा, वेख वखाणे सभनी थां। गुरदुआरा गुरमुख जान। बेमुख भुल्ले जीव निधान। पाणी प्या काया चुल्ले, मिटे अन्त कलिजुग निशान। हरि भण्डारा एका खुल्हे, चार वरनां ब्रह्म ज्ञान। भाग लगाए काया कुले, वाली दो जहान। हरि शब्द सुहेला धुरदरगाही मेला पूरे तोल तुल्ले, आत्म जोती दीप महान। जगत सिँघासण कलिजुग डुल्ले, प्रगट होए श्री भगवान। शब्द अन्धेरी एका झुल्ले, रसना चले तीर कमान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए अट्ठे पहर दिवस रैण कदे ना सोए वड बली बलवान। गुर काया गुरबाणी गुर का बाण। गुरमुख विरला करे ध्यान। जिस जन हरि हिरदे चरन ध्यान। कलिजुग भुल्ले जीव अञ्याण। मिटी अन्त जोत निशानी, साध संत धर मन अभिमान। भेव ना जानण बाणी, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, दर दुआरे गुर घर तीर्थ तट्ट, सद करे सर्ब पछाण। नाम अल्ला हक्क मसल्ला शब्द कुरान। ज़बराईल मेकाईल असराईल असराफील, चार कुन्ट चार गली वेख वखान। इक्क महल्ला चार यार दस्तगीर पीर ऐली शाह फ़कीर नूर अलाही धुरदरगाही इक्क इकल्ला गौंस मजौरी दस्तगीर। मक्का काअबा हक्क ज़नाब मेल दुआबा आप प्याईं ठंडा सीर। मुलां शेख़ मुलाना अन्धा काणा, किसे ना वज्जे आत्म तीर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दोहीं हथ्थीं तन लाहे चीर। मुलां शेख़ हाहाकारे। कलिजुग भेख वेख नेत्र पेख, दर दर घर घर पुकारे। काअबा मुकाअब मक्का दो आब, वेख वखाणे हरि हरि खुदाए ज़नाब, नूरी नूर कर अकारे। मुलां शेख़ काजी कलिजुग अन्तिम झूठे पाज़ी, मिले अन्त अज़ाब, दोज़ख़ अग्न अन्तिम साड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न वेखे भिन्न भिन्न, भेव खुल्हाए गिण गिण, वाली हिन्द उठ जाग, माझे देस लग्गा भाग, जगी जोत एका एक नर नरायण नर निरँकारे। वाली हिन्द उठ सुल्तान। कलिजुग सोया क्यों नौजवान। माया राणी होई प्रधान। जूठ झूठ सवाई विच जहान। धीआं भैणां ख़ाक छाणी, ऊँच नीचां माण ताण। जूठे झूठे माया लूठे, कोए ना करे हरि पछाण। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोत मात धर, करे खेल जगत महान। वाली हिन्द हो हुशिआर। पुरख अबिनाशी जामा धारे, वेख वखाणे मुहम्मदी चार यार। जगे जोत इक्क अपारे, वेद पुरानां कुरान अंजीलां, खाणी बाणी दो जहानी सच्ची राणी, पाए सच्ची सार। ना कोई दिसे राजा राणी, अन्तिम ख़ाकी लाड़ी मौत उठाए, धरत मात गोद सवाए, मानस देही आई हार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, घनक पुर वासी चवीआं अवतार। घनकपुर हरि जामा पाया। इक्क उठाया शब्द घोड़, चार कुन्टां रिहा दुड़ाया। वेख

५६० ०४

वखाणे राउ रंक बंक द्वार, शाह सुल्तान लए जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न वीह सौ ग्यारां बिक्रमी, आपणा खेल आपणे हथ्थ रखाया। अस्सू तिन्न रक्खणा याद। लोकमात वज्जणा साचा नाद, सोहँ शब्द प्रभ तीर चलाउणा, राजा राणा सर्ब उठाउणा, वेख वखाणे खण्ड ब्रह्मण्ड ब्रह्माद। पुरख अबिनाशी ना मनों भुलाउणा, जोत सरूपी दरस दिखाउणा, शब्द चलाउणा बोध अगाध। कान्हा कृष्ना भेख वटाउणा, ब्रह्मा विष्ना संग रलाउणा, करोड़ तेतीस चरन बहाउणा, दोए जोड़ रसन रहे अराध। जोती जोत सरूप हरि, शब्द देवे साचा वर, चल के आए तेरे दर, वेख वखाणे माधव माध। अस्सू तिन्न सच विहारा। धरत मात तेरा वेखे चन्न, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। करे खेल छिन्न भंगर छिन्न, क्या कोई जाणे जीव गंवारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लिखे जगत लेख, धरत मात तेरे मस्तक मेख, चरन छुहाए नर निरँकारा। अस्सू तिन्न नेड़े वाट। चरन छुहाए प्रभ राज घाट। गांधी पान्धी खोल्ह वखाए बज़र कपाट। ना कोई सोना रुपा चांदी, जोती नूर साची लाट। रसना हरि गुण पींदी खांदी, जगत किनारा तीर्थ ताट। गीत सुहागी गाउँदी जांदी, शब्द खटोला साची खाट। पुरख अबिनाशी राह तकाउँदी जांदी, रसना रस आत्म चाट। पुरी इन्द्र दर दरसौंदी जांदी, अन्तिम चढ़े साचे घाट। सच सिँघासण डेरा लौंदी जांदी, वेख वखाणे साचा हाट। निहकलंक जोत निरँजण दे मति मात समझाउँदी जांदी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाए, गुणवन्ती विच ललाट। राज घाट राज द्वार। जगत भगत धर्म सति, मिले मेल प्रभ अबिनाशी अचुत्त, पारब्रह्म पार उतार। धरत मात तेरी सुहाए रुत्त, बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, राजे राणयां रंक राजाना करे ख़बरदार। वेख वखाणे वार थित्त, गुर गोबिन्दा साचा मिता, अस्सू तिन्न विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखाए, आप खुल्हाए वाली हिन्द दिल्ली दरबार। वाली हिन्द प्रभ चरन छुहा के। किल्हे लाल दर खुल्हा के। आप वसाए साचे घर, गुर गोबिन्द जो गया लिखा के। बहादर शाह दित्ता वर, शब्द शहीदी फौज़ चढ़ा के। अन्तिम कलिजुग करना सर, जोत सरूपी जामा पा के। चार वरना खुल्हाउणा एका घर, निहकलंकी कलि जामा पा के। ना जन्मे ना जाए मर, आदि पुरख अबिनाशी, घट घट वासी, सच्चा राह जगत चलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो मेहरबान वाली हिन्द सद बख़्शिंद सोया आप जगावणा। वाली हिन्द उठ ललकार। प्रभ अबिनाशी जामा धारे, कलिजुग अन्तिम आई हारे, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार। खण्डा डण्डा हथ्थ दो धार। त्रैलोकी नाथ सगला साथ, वेख वखाणे खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड ना कोई पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिल्ली किला लाल, शब्द करे रखवाल, जगत चले अवल्लड़ी चाल, मारे नाम

बाण। किले लाल रंग लागा लाल। शब्द घोड़े मारी छाल। वेख वखाणे नूर अलाही सच जमाल। धुरदरगाही साचा माही, गऊ ग़रीब निमाणयां करे प्रितपाल। तख्तों लाहे राजे राणयां, वड बली बलवान। माण गंवाए सुघड़ स्याणयां, मारे शब्द बाण। जोती जोत सरूप हरि, सच धर्म जगत कर्म झुलाए इक्क निशान। अस्सू तिन्न हरि रचन रचाई। वक्त लँघाया गिण गिण, धरत मात गोद सुहाई। खुशी वखाणे भिन्न भिन्न, होई मात सति रुशनाई। सतिजुग तेरा साचा चन्न, पहली वार दए दिखाई। वाली हिन्द सुणना कन्न, जगी जोत इक्क रघुराई। गऊ ग़रीब निमाणयां ना देणा डन्न, पुरख अबिनाशी होए सहाई। भाण्डा भरम कलि देणा भन्न, आत्म वज्जे सच वधाई। जूठा झूठा जगत जन, बेमुख मूढ़ सूझ ना पाई। तन मन हरया होए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिल्ली दर द्वार बंका राउ रंका इक्क खुल्हाई। अस्सू चार चार जुग जाता। कलिजुग मिल्या पुरख बिधाता। मेट मिटाए, अन्ध अन्धेरी राता। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, देवे नाम सच सुगाता। गऊ ग़रीब निमाणयां फड़ गले लगावे, ना कोई वेखे परखे जाता पाता। सदा बहावे ठंडी छाँवे, अमृत जाम इक्क प्याता। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क सरन, एका बख्शे चरनी नाता। अस्सू चार दिवस लिखाउणा। पंडत नहरू आप जगाउणा। बारां तीस वक्त समझाउणा। हरि जगदीश दरस दिखाउणा। मोर मुकट मुकंद मनोहर लख़मी नरायण, बन बनवारी कृष्न मुरारी, मोहण माधव कँवल नैण मधुर बैण, बाली बाला जोत ज्वाला गुर गोपाला, प्रगट होए दरस दिखाउणा। तन वखाए सूहा काला, कलिजुग अन्तिम टुट्टे डाला, सतिजुग साचा मारे छाला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप जगदीश। नहरू नरायण नर हरि पेख। रसना किसे ना सके कहण, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़। एका रंग सच्चा संग सूरा सरबंग, शब्द घोड़े कस तंग, किले कोट मार शब्द चोट, कढ्ढ काया खोट, आत्म अन्दर दर दुआरे अग्गे रहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू चार दिवस विचार, दरस दिखाया असैंबली हाल, भरम भुलेखा मन का रहणा। भवन भवर फूल, फूलन माल मालन, जगत दलालण भगत रखवालण, तन हार शब्द श्रृंगार रंग गुलालण, तेज भानण अमृत इशनानण, जोत महानण इक्क अकालण विच जहानण, राज राजानण शाह सुल्तानण, वाली दो जहानण निहकलंक बली बलवानण, शब्द बंक द्वार इक्क सुहानण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राष्ट्रपित कर सच्चा हित्त, आत्म देवे जोती नूर सच्चा चानण। राष्ट्रपति जगत भतार। आत्म करनी इक्क विचार। चार कुन्ट उडदी दिसे शार। निहकलंक कलि जामा पाया। धरत मात सुण पुकार। ग़रीब निमाणे रहे बिल्लाए, करन हाए हाए, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मायाधारी रहे सताए, राज दरबार ना कोई सहाए, वढ्ढी खोर जगत सरकार। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, राष्ट्रपति कर साचा हित्त शब्द लिखाए अपर अपार। राष्ट्र पति पती पति पावन। हरि धरया भेख कलिजुग लेख वेख, जिउँ बल बावन। मिटदी जाणी शाह सुल्ताना रेख, कोई ना दिसे मात जामन। सच धर्म यति सति धुरदरगाही साची मेख, आप लगाए दया कमाए राम रमईआ रामा रामन। निहकलंक कलि जामा पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी चमके दमके दामनी दामन। जोती नूर जगत उज्जयार। सर्बकला भरपूर, नूर निरँजण इक्क अकार। वड दाता सूरा सूरबीर, शब्द सच्चा जै जै जैकार। रसन चलाए एका एक तीर, चार कुन्ट एका वार। धरत मात गंवाए तेरा नीर, चरन दबाए पहली वार। थणीं दुध्ध ना दिसे सीर, जोत खिचाए हरि करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी डंक वजाया, राजे राणयां दर दरबानयां करे ख़बरदार।

❋ १० अस्सू २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी केहर सिँघ दे गृह स्वामी महिता जी नूं आगरा ❋

दयाल बाग़ गुर जाणा जाग। प्रगट होया माही धुर, जिस हथ्थ पकड़ी तेरी वाग। चरन प्रीती जाए जुड़, शब्द सुणाए इक्क राग। नाम वस्त ना रहे थुड़, तन बुझाए तृष्ना आग। मानस देही कलिजुग रही रुढ़, ना कोई धोए पापां दाग़। निहकलंक कलि जामा पाया, जन भगतां मिल्या कन्त सुहाग। दयाल बाग़ गुर वेख वखाण। आत्म मूल सच पछाण। जोती नूर शब्द बाण। पुरख अबिनाशी आसा मनसा पूर, कर चरन ध्यान। सदा सदा सद हाज़र हज़ूर, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर जोती नूर सच जहान। निहकलंक कलि जामा पाया, वड दाता सूर बली बलवान। दयाल बाग गुर गुर सुरत संभाल। तन लग्गे पंजे चोर, अट्ठे पहर करन कंगाल। कोए ना पकड़े देवत सुर, ना सके कोई सुरत संभाल। कलिजुग माया गए रुढ़, कोई ना झल्ले जगत झाल। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत अवल्लड़ी चली चाल। दयाल बाग़ गुर शब्द जगाउणा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर संग सुहेला, जोती नूर मेल मिलाउणा। आपे गुर आपे चेला, आदि शक्ती जगत भवानी भगत रखानी, दस्म दुआरी जोत जगाउणा। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े सृष्ट सबाई जिस चढ़ाउणा। दयाल बाग़ गुर उठ बल धार। प्रभ अबिनाशी चढ़या शब्द घोड़, पंचम् जेठा हो अस्वार। चारों कुन्ट रिहा दौड़, नौ खण्ड पृथ्मी सर्ब संसार। शब्द घोड़ा मारे पौड़, हँकारी विकारी जीव जन्त दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया,

५६३
०४

शब्द रखाई तिक्खी धार। दयाल बाग़ गुर गुर कीर्ति रत। हरि दर्शन को लोचण सुर, लोकमात दर घर साचे एका मत। प्रगट होए घनकपुर, एका शब्द जगत वखाणे साचा तत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान सद मेहरबान, दर दुआरा हरि भण्डारा जगत वरतारा, देवे सति संतोख धीरज जत। सति हरि वंडे। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे। गुरमुखां लोकमात मार झात, ना वेखे परखे जात पात, तुट्टी गंढे। काल कोठड़ी जगत अन्धेरी रैण रात, कलिजुग अन्धेर विच वरभण्डे। पुरख अबिनाशी धुरदरगाही साचा माही नाम ल्याया इक्क सुगात, भगत जनां दर साचे वंडे। अन्तिम वेले पुच्छे वात, सोहँ देवे साची दात, चार वरन बहाए दया कमाए, गुर गोबिन्दा वाली हिन्दा एका झण्डे शब्द डण्डे आत्म चण्डे। शब्द डण्डा वड बलकारी। वेख वखाणे वारो वारी। राजे राणे आत्म हँकारी। बेमुहाणे जीव संसारी। अन्धे काणे धीआं भैणां करन ख्वारी। मदिरा मासी पापी गन्दे, शब्द चलाए इक्क कटारी। धर्म राए दी पाए बन्दी, लक्ख चुरासी गेड़ अपारी। गुरमुखां ढाहे आत्म कंधी, छुटी बंधी मिले मेल नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जन लेवे मात वस्त दस्त अपारी। दोए जोड़ गुरसिख अरदास। पुरख अबिनाशी सदा आस पास। घट घट वासी, हरि हिरदे रक्खे वास। हरिजन साचे शाहो शाबाशी, रसना जपे स्वास स्वास। आप मिटाए चिन्ता सोग रोग उदासी, हउमे करे विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, सच घर आत्म काया मण्डल सच समग्री, जोती नूरा पाए साची रास। हरि दस मास नौ अठारां घट घट वास, आत्म सुखी माया कुक्खी, उतरी तृष्ना भुक्खी, सच सुगंधी शब्द शब्दी एका नाम सुखणा सुक्खी, छुटयां गेड़ा गर्भवास। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, भगत सुहेला देवे वर, आदि अन्ता साचा कन्ता पूरन भगवन्ता गुणी गणंता ना जाए विनास। धाम अवल्लड़ा थां सुहाए। हरि इकल्लड़ा जोत जगाए। दर दुआरा जिस जन मलड़ा, अमृत फल निहचल धाम अटल्ल मात रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दस्से राह सुखलड़ा, अन्तिम वेले फड़े पलड़ा, जोती साचा मेल मिलाए। मिले मेल जोत भगवान। सोहँ शब्द चढ़ाए साचा तेल, अचरज खेल शब्द गाना हथ्थ बंधान। धर्म राए दी तोड़े जेल्ह, आप बचाए गुर गोबिन्दा साचा चेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवे साचा वर, हरि दर वसे एका इक्क अकेल। थान सुभागा, हरि मिल्या कन्त सुहागा। हरि सुणया रागा। सोया जीव मात जागा। जन्म जन्म दा धोया दागा। भरम भरम भरम गया, धुनी धुनवन्ते शब्द सुणाया साचा रागा। प्रभ अबिनाशी कीनी दया हरि सरनाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा नाम दान जो जन चरनी लागा। गुर सेवा पूरन घाल जगत दलाला। हरि रखवाल करे प्रितपाला। सुरत संभाल नित नवित्त

अवल्लड़ी चाला। जगत बंधाया माया जाल, गुरमुख साचे संत जनां अन्तिम अन्त ना खाए काला। पुरख अबिनाश होए
आप रखवाला। हरिभगत हरि दर सुहाए। मिले वड्याई विच जगत, प्रभ अबिनाशी सेव कमाए। साची देवे नाम शक्त,
बूंद रक्त लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मानस देही सुफ़ल कराए। मानस देही
उत्तम जात। मिल्या हरि सच्चा शब्द स्नेही, अन्तिम पुच्छे मात वात। गुर पीर औलीए किसे ना रहणी मानस देही, अन्तिम
आउणी काली रात। गुर पूरे चरन प्रीती साची बहिणी, वेख वखाणे मार झात। गुर नानक गया जिउँ विच त्रबैणी , जगत
अन्धेरा माया कनात। इक्क प्रीत सच रीत जगत मीत नेंही, बैठा वेखे इक्क इकांत। अमृत बूंद नानक हरि चोए। तिन्नां
लोआं पुरीआं पतालां एका धार हरि निरँकार, दूजी दिसे ना कोए सोए। पृथ्मी अकाश घट घट वास, ना भए उदास, मण्डप
मण्डल साची रास विच प्रभास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर गुर नानक दित्ता सच्चा वर,
विच मात दित्ती दात बैठ इकांत काया कोठड़ी धर्मसाल। सच दुआरा हरि मात लगाया। गुरमुख साचा बण भिखारी, कोए
न मंगे धुरदरगाहया। वेद व्यास वडा शाह, वेख अवल्लड़ा राह मंगण आया। प्रभ अबिनाशी वेख वखाणे सच्चा थां, जोती
जोत सरूप हरि, लोकमाती मार झाती, पुरख बिधाती जोत जगाया। बेमुख सुत्ते पैर पसार विच संसार, गुरमुखां लेखे
५६५ ०४ लाई राती। किरपा करे हरि निरँकार अन्तिम वेले पुच्छे वाती। अन्तिम जोत जगे बाती। गुरमुख साचे संत जनां, ख़ाली ५६५ ०४
हथ्थ हरि समरथ, मंगण आया नाम भिखार। गुरमुख साचे संत जन, रसना कहण धन्न धन्न, जिस जन आत्म जाए मन,
भाण्डा भरम दर साचे दए भन्न, गुण अवगुण रसना रस विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप महान,
मंगण आए जीआ दान। गुरमुख साचे संत जनां, आपणे हथ्थ हरि समरथ छत्र सीस चवर झुलार। गुर संगत तेरी सति
कमाई। प्रभ अबिनाशी जोत धर, दर घर साचे सेवा लाई। प्रगट होए दर्द दुःख भंजन, गुरमुखां देवे नाम अंजन, कलिजुग
माया झूठी छाया, दोहीं हथ्थीं मुख तों रिहा लाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा
कर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां बाल अञ्याणयां धोवण आया कलिजुग तेरी झूठी छाही। कलिजुग दाग़ प्रभ देवे धो।
दुरमति मैल गुरमुख तेरे तन ना जाए छोह। गुरमति दस्से मात, जग खेल कर छब्बी पोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
चार कुन्ट वज्जे डंक, घर घर दर दर सुणाए आपणी सो। सोया जागे जगत गुर दीना। गुरमुख साचा हरि चरनी लागे।
मन तन काया मन्दिर साचा अन्दर। होए भिन्न भिन्न भिन्न पीना, तुट्टा जोड़े शब्द डोरी बन्न्या, कलिजुग जीव भौंदे बन्दर।
महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाई डूंघी कन्दर। वेसी वेसा नर नरेशा। गुरमुख साचे विच प्रवेशा। किसे हथ्थ

ना आए ब्रह्मा विष्न महेषा। जगत भेख वटाए, टेक एक रखाए, चार वरन हरि साची सरन, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पकड़े सच्चा दामन। हरिसंगत हरि हरि रसन ध्याया। पुरख अबिनाशी दर रहणा मंगत, फूलनहार तन सिगार आप कराया। कलिजुग तेरी तिक्खी धार विच संसार, लक्ख चुरासी गई हार। झूठे धन्दे पापी गन्दे मानस जन्म गंवाया। मौत पंघूड़ा चुकया कंधे, घर घर खोल्हे कुण्डे तोड़े जंदे, भाई भैण ना होए कोई सहाया। रसन ना गाया बत्ती दन्दे, वेले अन्त ना लए कोई छुडाया। बेमुख जीव मदिरा मासी आत्म गन्दे, नर नरायणा मनों भुलाया। काया ताणी कच्ची तन्दे, तुट्टा गंढु ना किसे लगाया। धर्म राए लाड़ी मौत फंदी फंदे, लक्ख चुरासी लए प्रनाया। गुरमुख साचे संत जनां, हरि सरनाई चरन प्रीती साची बंधे, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, अन्तिम जोती मेल लए मिलाया। गुरमुख गुर गुर गुर नेत्र वेख, उतरे भुक्ख उज्जल मुख, निज घर आत्म सुख, जगत सुहेला। नेत्र पेख गर्भ वासी ना होए उलटा रुख, धर्म राए ना पाए जेल्हा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात पछाण, आदि अन्त जुगा जुगन्त, भगत भगवन्त साचे संत, मीत मुरार नर निरँकारा दर भिखारा, बणया रहे सज्जण सुहेला। गुर संगत प्रभ दर आवे। फूलण बरखा सीस लगावे। रोग सोग जगत चिन्त मिटावे। रसना रस सच्चा लैणा भोग, हरि हरि गुण साचे गावे। मिले जिस दर घर अमोघ, दोए जोड़ चरनी सीस झुकावे। धुर दरगाहों आए दौड़, दर दरबान हो मेहरबान साची जोत जगावे। ना वेख वखाणे पैंडा लम्बा चौड़, छिन्न भंगर अन्दरे अन्दर जोती जोत डगमगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची दए वधाई, रैण सबाई रसन रस गाई, आत्म तृष्ना हरस मिटाई, फूलनहार तन शृंगार कर्म विचार प्रभ झोली पाई। कर्म धर्म होए उज्जयार, मिल्या मेल विच संसार। मिटे चुरासी भरम, प्रभ चरन द्वार। दूई द्वैती मिटे वरम, अमृत पीए ठंडी धार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बाल अञ्याणयां, करे हित्त नित चित्त आत्म घर सच प्यार। आत्म घर कर प्यारा। खुल्हा दर नर निरँकारा। तीर्थ वखाणे गुरमुख जाणे, अमृत साचा सर नैण मधुर मधुर रस पवण तृखा बुझावण कर दरस कन्त मीत मुरारा। नेड़ ना आए कामनी कामन, मिले मेल हरि साचे जामन, धुरदरगाही आप कराए पार किनारा। अन्तिम वेले पकड़े बाहीं, धर्म राए दी तोड़े फाही, पवण जोती शब्द गोती, गुरमुख बणाए माणक मोती, तन पहनाए आप सच्चा हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया निध कर कारज सिद्ध, मेल मिलाए शब्द दयाला रक्खे बुद्ध, तुट्टे माण हँकार। दर द्वार जाए तुठ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी स्वास स्वासी जप जप जपणा, लक्ख चुरासी जाए छुट्ट। मानस देही रासी, साची जोत आत्म प्रकाशी, मिले भण्डारा अतुट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण

५९६ ०४

निधान शब्द खण्डा हथ्थ फड़े, पंजां चोरां बाहर कढ्ढे मार कुट्ट। शब्द खण्डा लैणा फड़। गुरसिख काया मन्दिर अन्दर वड़, काया कोट कढ्ढे खोट, तोड़ जिंदा जाणा चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर दुआरे बैठा, आप फड़ाए आपणा लड़। सति पुरख निरँजण धन्न, जोती जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, शब्द धार जिस उपजाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, स्वास स्वास रसन जिस चलाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, मात पताल अकाश एका रास वधाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, निज घर आत्म डेरा लाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, लोकमात वेख प्रभास, अचरज खेल रचाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, प्रगट जोत घनकपुरी, काया झूठी देह तजाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आपणे हथ्थ रखाईआ। सति पुरख निरँजण धन्न, रचन रचाया। सति पुरख निरँजण धन्न, सोहँ शब्द साचा बचन मातलोक आप उपजाया सति पुरख निरँजण धन्न, गुरमुख काया कंचन, शब्द सुहागा उप्पर लाया। सति पुरख निरँजण धन्न, जन भगतां देवे आत्म दान, साचा राग कन्न सुणाया। सति पुरख निरँजण धन्न, आपे धोए दुरमति मैल दाग, काया निर्मल कराया। सति पुरख निरँजण धन्न, हथ्थ आपणे पकड़े वाग, भव जल बेड़ा पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कन्त सुहागा विरले गुरमुख मात पाया। सति पुरख निरँजण धन्न, जोत बनवारीआ। सति पुरख निरँजण धन्न, एका एकँकारीआ। सति पुरख निरँजण धन्न, जोत सरूप अगम्म अनमोल अमुलड़ा करे सच विहारया। शब्द तोल तोले गुरमुख पूरे तोल तुलड़ा, लक्ख चुरासी पासा हारया। सति पुरख निरँजण धन्न, हरि जन साचे संत लोकमात पाए साचा मुलड़ा, वेखे विगसे करे विचारया। हरि पुरख निरँजण धन्न, भाग लगाए आपणी कुलड़ा, जगे जोत अगम्म अपारया। हरि पुरख निरजण धन्न, सद दुआरा रक्खे खुलड़ा, सच्चा करे वणज वपारया। हरि पुरख निरजण धन्न, लोकमात जन भगतां बेड़ा देवे बन्न, सोहँ देवे शब्द नाम सहारया। हरि पुरख निरजण धन्न, बेमुखां देवे डन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी भेख धर, करे खेल मात अपारया। हरि पुरख निरजण धन्न, धन्न धन्नवन्त है। हरि पुरख निरजण धन्न, गुरमुख जगाए दया कमाए, बेमुख आत्म अन्नृ, होए रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यारया। गुरसिख उपजाए मात साचे चन्न, जोती नूर कर उज्जयार किरपा धार विच संसारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपारया। हरि पुरख निरजण धन्न, जगत प्रवेश है। सति पुरख निरजण धन्न, गुरमुख साचे सदा सदा कर अदेश है। सति पुरख निरजण धन्न, साचा शब्द सुणना कन्न, धरे जोत माझे देस है। सति पुरख निरजण धन्न, गुरमुखां देवे बेड़ा बन्न, धुरदरगाही सच्चा नर नरेश है। सति पुरख निरजण

धन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुल्ड़े रक्खे मात केस है। सति पुरख निरजण धन्न, दर दरबार है। सति पुरख निरँजण धन्न, हरि वडा सुल्तान शाहो अस्वार है। सति पुरख निरजण धन्न, गुरमुख वसे साचे तन, काया मन्दिर पार द्वार है। सति पुरख निरजण धन्न, पंचां करे खंन खंन, मारे खण्डा शब्द दो धार। सति पुरख निरजण धन्न, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एकँकार है। सति पुरख निरजण धन्न, जगत ज्ञानया। सति पुरख निरजण धन्न, गुरमुख साचे संत जनां, चरन कँवल कँवल चरन देवे चरन ध्यानया। सति पुरख निरजण धन्न, उप्पर धवल गुरमुख उपजाए फुल्ल कँवल, मात लगाए साचा निशानया। सृष्ट सबाई रिहा मवल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले मात पछानया। सति पुरख निरजण धन्न, जोत जगांयदा। सति पुरख निरजण धन्न, वरन गोत मिटांयदा। सति पुरख निरजण धन्न, कवाड़ दसवां सोत खुल्हांयदा। सति पुरख निरजण धन्न, वेख वखाणे बहत्तर नाड़, जोती नूर उपजांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुरमति मैल अड्ड सड्ड रही फैल, गुरसिख आत्म देवे झाड़, सोहँ शृंगार तन पहनांयदा। भिन्नी रैनड़ीए कलि रंग गुलाल। भिन्नी रैनड़ीए उठ जाग वड वडभाग, सुण सच्चा राग धो काया दाग़, प्रभ देवे शब्द दलाल। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे संत जनां बुझा तृष्ना आग, हरि सरन सरनाई जायण लाग, अन्तिम अन्त ना खाए काल। भिन्नी रैनड़ीए मिले मेल कन्त सुहाग, शब्द सुणाए सच्चा राग, सदा सहाई होए रखवाल। भिन्नी रैनड़ीए जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन संतां देवे साचा फल, लगाए काया डाल। भिन्नी रैनड़ीए धन्न धन्न सुरैणी। भिन्नी रैनड़ीए गुरसिख गुरमुख प्यारयां आत्म गया मन्न, प्रभ अबिनाशी वेखण नैणी। भिन्नी रैनड़ीए शब्द शृंगारा तेरे तन साची सेजा, धरत मात गुर संगत मिल बहिणी। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संत सुहेले साचे मेले, बणे बणाए साक सज्जण सैणी। भिन्नी रैनड़ीए रुत्त मात सुहाई। भिन्नी रैनड़ीए पुरख अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त, जोती जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे संत जन हरि दर साचे सुत, लए गोद उठाई। भिन्नी रैनड़ीए जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां लेख रिहा लिखाई। भिन्नी रैनड़ीए साचे लैणे प्रभ दर लैणे, कलिजुग जीव अन्तिम कलि झूठे वहिण मात वहिणे। प्रभ भाणा ना जाए टल, जगत भुलाए कर कर वल छल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत तराए दया कमाए, आप चुकाए लहिणे देणे। लहणा देणा हरि चुकाउणा। धरत मात तेरा साचा पूत, गुरमुख सोया आप जगाउणा। ताणा पेटा वेखे सूत, रंग मजीठी इक्क चढ़ाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा शब्द दमामा जगत

वजाउणा। जोती जामा नर निरँकार। पूरन कामा करे विच संसार। भेखाधारी बन बनवारी कृष्न मुरारी रमईआ राम। हरि उज्जयार काया माटी, झूठा चम्म होए शार। एका टेक हरि हरि नाम नामा, दो जहानी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आदि अन्त ना जाए मर, आवे जावे वारो वार। आवण जावण खेल रचाया। पतित पावन किसे भेद ना पाया , अमृत सावण बरखे मेघ, निज्झर झिरना दए झिराया। नेड़ ना आए कामनी कामन, पंजां शब्द डोर बंनाया। धुरदरगाही साची मुन्न सुन्न, कर प्रकाश अन्धघोर मिटाया। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रामन, शब्द घोड़ा इक्क रखाया। भेख धारे जिउँ दुआरे बल बावन, बेमुख जीवां दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक कलि अवतार नर, शब्द अस्वार नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां वंड कराया। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंड। सत्तां दीपां दिसे कंड। शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड। लक्ख चुरासी हाए हाए, दर दर घर घर पए डण्ड। वेले अन्त ना कोए छुडाए , बेमुखां आत्म होई रंड। निहकलंक जामा पाए, शब्द सरूपी डंक वजाए, चार कुन्टां रिहा सुणाए, कोई ना दिसे जेरज अंड। हरि वडा शाहो भूपी, ना कोई रंग ना कोई रूपी, शब्द छत्र जगत झुलावणा। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, एका जोत सति सरूपी, राजे राणे किसे हथ्थ ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमत हरि जोत धर, राणा संगरूर दर दरस हज़ूर बाहों पकड़ मात उठावणा। राणे संगरूर हरि दरस दिखाए। जोत सरूपी नज़री आए। कौस्तक मणीआं मस्तक टीका, चारों दिशा इक्क दिसाए। भेखाधारी वड धन धनीआ, तेरी नईआ इक्क चलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मस्तूआणे चरन धर, सच सुहावा थान, वाली दो जहान विच मात उपजाए। मस्तूआणे चरन छुहाउणा। राजा राणा हरि चरन लगाउणा। चार वरनां इक्क टिकाणा, मिले मेल हरि भगवाना, अमृत जाम इक्क प्याउणा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रैणी, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा। अमृत आत्म प्याए जाम, हँकार विकार दूर कराउणा। चार वरना जपाए एका नाम, ऊँच नीच जात पात भरम भुलेखा दूर कराउणा। मेट मिटाए औलीए पीर दस्तगीर, जोती जोत सरूप हरि, एका डंक चार कुन्ट वजाउणा। मुलां शेख़ मिटे काजी। कोई ना दिसे मक्के हाज़ी। छत्र झुल्ले ना किसे ताजी। शब्द अन्धेरी एका झुल्ले, मेट मिटाए पापी गाजी। किसे सिर ना दिसे कुले, सच साजना प्रभ साचे साजी। हरिजन जन हरि देवे नाम इक्क अनमुल्ले, अन्तिम वेले रक्खे लाजी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, जिन जन हरि साची साजना साजी।

❋ १० अस्सू २०११ बिक्रमी मेरठ छाउणी केहर सिँघ दे गृह ❋

जगत साजन साज साजे। पुरख अबिनाशी राज राजान, जुगा जुगन्तर संवारे काजे। शाह शहाना ताज ताजन, शब्द मारे सच अवाजे। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होए जोत बलोए सम्बल देसा, देस माझे। राजन राज राज दुआरा। कूड़ कुटम्ब सर्ब संसारा। चार कुन्ट धरत मात रही कम्ब, कलिजुग पाप फल लग्गा भारा। पुरख अबिनाशी छेती झम्ब, सोहँ डण्डा फड़ अपारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर लोकमात जोत धर, लए मात अवतारा। राज राजान बंक दुआरे। आन शान दरबान मुसायक चोबदारे। माण ताण विच जहान, गुण अवगुण ना कोई विचारे। धरत मात आई हान, कलि पछाण कलिजुग भुल्ले जीव निधान, पुरख अबिनाशी पाई सारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर जामा धारे। राज राजान तख्त तीर। शाह सुल्तान वड फ़कीर। हरि मेहरबान अन्तिम लाहे कलिजुग चीर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां देवे अमृत सीर। धरत मात मिटे झूठी रीत, वेख मार झात, अमृत देवे हरि बूंद स्वांत। बैठा वेखे दिसे इक्क इकांत। लोकमात हरि जोत धर, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल धरत मात धवल, इक्क बणाए साचा नात। धरत मात हरि हरि ध्यान। चरन धूढ़ मात बख्शे उत्तम रीती मजन इशनान। लक्ख चुरासी परखे नीती। फड़े शब्द तीर कमान। हरिजन तन हरि काया रक्खे ठंडी सीती, तन मन्दिर जोत दीप महान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यान। चरन कँवल जन जाए लाग। प्रभ अबिनाशी आप बुझाए तृष्ना आग। घनकपुर वासी बेमुखां पाए जम की फाँसी, वेले अन्तिम जाए जाग। चरन छुहाए पकड़ उठाए पंडत कांशी, वेख वखाणे राज प्राग। गऊ ग़रीब निमाणयां इक्क रखाए चरन ध्याने, वासी अयुध्या लाए भाग। निहकलंक कलि जामा पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि जन जन हरि गंगा जाए जगाए, मेल मिलाए कन्त सुहाग। कांशी अयुध्या जाए प्राग। पंडत पांधिआं धोए दाग। आत्म अन्धयां थक्के मान्दयां, वेद पुरानां गान्दयां, शब्द लाए एका जाग। तीर्थ तट्टां नहान्दयां। घट घट घटां विसमान्दयां, सच थान सुहान्दयां, सच सरोवर इशनान करान्दयां, हँस बणाए काग। गौड़ ब्रह्मण वेख वखान्दयां, धुरदरगाही सच्चा जामन। दे मति समझाए पंडत काशी पान्धयां, शब्द वजाए साचा नाद। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, धरत मात तेरी रक्खे लाज जुगादि आदि। जमन किनारा वेखे गंग। शब्द सहारा पुरख अपारा, इक्क चढ़ाए साचा रंग। शब्द धारा आर पारा, भगत सुहेला सच्चा संग। कलिजुग तेरी अन्तिम वार,

रवीदास चुमारा मीत मुरारा। बन बनारस होए सहारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारा। गोदावरी गोद हरि सुहाई। पुरख अबिनाशी जोधन जोध, मति इकलड़ी जगत अवल्लड़ी, आपणे हथ्थ रखाई। लक्ख चुरासी बेमुख जीवां लाहे खलड़ी, अचरज बणत रिहा बणाई। किसे हथ्थ ना रही दंमड़ी, चार कुन्ट पए दुहाई। गुर गोबिन्द लिखाई एका मात धरत सच्ची अम्बड़ी, ना कोई मात पित भैण भाई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, अचरज खेल करे जोत मात धरे जीव जहानां हरि भगवाना, ना कोई जाणे राही। गोदावरी गोद सुहागा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, सोया जागा। तीर्थ तट्टां लाहे उदासी, बेमुखां अन्तिम लाए फाँसी, इक्क सुणाए सच्चा रागा। अमृत सर सरोवर सच नीर जल वगे थल अज्ज कल्ल मात बणाए साची रासा। कलिजुग अन्तिम गया टल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल भगत सुहेल पृथ्मी अकाशा। जगत वधाई भगत वड्याई, रसना जै जै जैकार। पुरख अबिनाशी जोत जगाई, काया माटी देह तजाई, संत मनी सिँघ लिख्या लेख अपर अपार। सुहञ्जणी रैण लोकमात आई। गीत गोबिन्दे हरिजन हरि जस रसना गाई। धरत मात तन श्रृंगार, सुरपति राजे इन्दे अमृत मेघ बरसाई। पारजाती फूलनहार, करोड़ तेतीस रिहा गुदांई। तन पहनाए नर नरायण कल्कि अवतार, ब्रह्मा मुख रिहा उठाई। चारों कुंट वेख वखाणे केहड़ी कूटे होए रुशनाई। शब्द पंघूड़ा त्रैलोक रिहा झूट, गुरमुख विरला पाए सार। शंकर सरन रखाए। दिवस रैण उठ उठ वेखे नेत्र, प्रभ अबिनाशी केहड़ी थाएँ। जोती धारे अवल्लड़ा भेस, दिस किसे ना आए। संत मनी सिँघ लिख्या लेख, लिखी लिख्त ना कोए मिटाए। प्रभ अबिनाशी वाक भविख्त, निहकलंकी जोत जगाए। वेख वखाणे सिक्खी सिक्खत, हरि गोबिन्दे हरि हरि राए। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कलि जामा पाए। जिस जन काया अन्दर जोत अधारी। विच संसार पावे सारी। शब्द उडारी पवण अस्वारी। वसे बाहर सच द्वारी। विच संसार करे खेल अपर अपारी। कलिजुग वहन्दी तिक्खी धार, मिटदी जाए चार यारी। चार कुंठी उडे शार, पंडत पांधयां आई हार। काशी अयुध्या प्राग राज, ग्रन्थी पन्थी होए पाजी। छुटड़ नार ना मिल्या कन्त सुहाग, शेख़ मुला वड वड गाज़ी। काया लग्गे वड वड पाप, पुरख अबिनाशी चढ़या चिट्टे ताजी। शब्द रखाए साची अवाज, लोकमात सच्चा हाज़ी। पंचम् जेठ चरन धरे रकाबा। काया काअबा जल दुआबा। वेख वखाणे सच ज़नाबा। अमृत ल्याए हयात आबा। विच लगाए कँवल नाभा। शब्द चलाए अज़ाब अज़ाबा। धरत मात साची दात, गुर चरन प्रीती सच सवाबा। लक्ख चुरासी अन्तिम लाभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत

६०१
०४

मनी सिँघ दित्ता वर, अन्तिम कलि चार वरन बुझाए तृष्ना आगा। जोत निरँजण मात जगाई। पुरी ब्रह्म मिली वधाई। सच धर्म प्रभ नींह रखाई। चारे मुखड़े उतरे दुखड़े, वेद पुरानां होए सहाई। हरिभगत सुहेले अन्तिम भुक्खड़े, देवे नाम दात वस्त सवाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाई। शिव शंकर खुशी मनाई। पार्वती संग रलाई, सच सुरसती फूलन बरखा लोक ब्रह्मे लाई। इन्द्र इन्द्रासण सिँघ सिँघासण, आसन बासन पुरख अबिनाशन, स्वास स्वास करोड़ तेतीस गाई। जोत हुलारा मात पताल अकाशन, शब्द सवारा घट घट वासन, जै जैकार तिन्नां लोआं गण गंधरब रसना गाई। पंचम् बैठा शब्द अस्वारा पवण उडारां सत्तां दीपां वसे बाहर, जोती नूरा कर उज्जयारा। लोकमात होए सहाई, कलिजुग तेरा अन्त किनारा। संत मनी सिँघ तेरा बणया सच्चा लेख लिखारा। जन भगतां होए आप सहाई, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी जीआं जन्तां पुरख बिधाता। साधां संतां नाम ज्ञाता। दीन दुनियां हरि हरि बन्हया गुरमुख समाए जिउँ जल मीना। वेख वखाणे रूसा चीना। आपे जाणे मक्का मदीना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच खुदाई नूर अलाही आप वखाणे जाणे मुहम्मदी दीना। जै जैकार होए त्रैलोए। मातलोकी हाहाकार सुणे पुकार ना कोए। पुरख अबिनाशी जामा धार, जोती नूरे होए। धरत मात तेरे काज संवार, दर दुआरे आण खलोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, संत मनी सिँघ दित्ता वर, एका एक जगत टेक, वरन गोत रहे ना कोए। संत मनी सिँघ कलम चलाई। एका रक्खी नर हरि हरि नर सच्ची सरनाई। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आत्म जोती सच जगाई। शब्द नाम सच्चा वर, दर घर साचे गया पाई। जगत अंदेसा चुकया डर, लेखा लिखे हरि रघुराई। डेरा लाया सुख सहिज समाया, अनन्दपुर भाणे साचे रिहा समाई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चरन छुहावणा भाग लगावणा सभनीं थाँई। संत मनी सिँघ कलम चलाउँदा। राजे राणे दे मति समझाउँदा। गऊ ग़रीब निमाणे गले लगाणे, निहकलंकी डंक वजाउँदा। अन्त होए बेमुहाणे, तख्त ताज ना रहे, शब्द लेख लिख्त भेज साचा हुक्म सुणाउँदा। आत्म अन्धे जूठे झूठे अन्न्हे काणे, चरन ध्यान ना कोई लगाउँदा। संत मनी सिँघ लेख लिखाउँदा। हुक्म चलाए भरम भुलाणे, प्रभ अबिनाशी कन्त ध्याउँदा। निहकलंकी पहरे बाणे, तख्तों लाहे राजे राणे, जगे जोत इक्क भगवाने, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थान थनंतर आदि अन्तर जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, जिस धाम चरन छुहाउँदा। संत मनी सिँघ लिख्त लिखाई,। पुरी अनन्द मिले वड्याई। घनक पुर वासी साची जोत दए जगाई। प्रगट होए शाहो शाबाशी, चरन कँवल दए छुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

लक्ख चुरासी जाए हर, गुरमुख साचे संत जनां साची बख्शी चरन सरन सरनाई। पुरी अनन्द हरि चरन टिकाउणा। लिख्या लेख पूर कराउणा। राज प्राग वेख वखाउणा। पंडत कांशी आप उठाउणा। अयुध्या भाग हरि जी लाउणा। वेद पुरानां पकड़े वाग, शब्द हुलारा एका लाउणा। आपे धोवे बेमुखां दाग़, बाती दीपक इक्क जगाउणा। मिलना मेल सहिज सुख भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जल थल वेख वखाउणा। भारत खण्ड वेख वखाण। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। नौवां खण्डां करे ध्यान। दर दर बैठा पाए वंडां, ना कोई जाणे चतुर सुजान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे देवे सच्चा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड हरि भाग लगाउणा। कर कर साची वंड, मस्तक टीका शब्द निशाना मात लगाउणा। नाम सच्ची करे वंड चार कुन्ट, सोहँ सगला साथ निभाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अकथ्थना अकथ्थ सगला साथ साची गाथ शब्द नाद चार कुन्टी दहि दिशा अन्तिम अन्त इक्क वजाउणा। अस्सू दस दहि दिशे, प्रभ अबिनाशी जाए दस्स। आप कराए सच हिस्से, धुर दरगाहों आए नस्स। बेमुखां जीआं मूल ना दिसे, जन भगतां आत्म तीर मारे कस। कलिजुग माया लाहे विसे, सृष्ट सबाई जाए वस। झूठी चक्की पीसण पीसे, गुरमुखां राह साचा जाए दस्स। दर दुआरे काया महल्ल मुनारे पुरख अबिनाशी दिसे, गुरमुख साचा संग रलाए हस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए दर बणाए नाम वणजारे भेख भिखारे। नाम रंग साची बोली। गुरमुख साचा प्रभ शब्द चढ़ाए साची डोली। दर घर साची मंग, चरन प्रीती घोल घोली। होए सहाई अंग संग, दासन दास गोल गोली। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरे अन्तिम अन्त, इक्क व्याहे हँकारी गोली। गोली हँकार रच्चया काज। बेमुखां पापां देवे झूठा दाज। गुरमुखां मिटाए तृष्ना भुक्ख, माझे बैठ संवारे काज। आत्म उपजाए साचे सुख, संत सुहेला रक्खे लाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उज्जल कराए मात मुख, शब्द पहनाए साचा ताज। जोती जामा हरि निरँकार। नामा रामा विच संसार। शब्द दमामा इक्क अपार। चार कुन्टां हरि सुनार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात जोत धर, करे खेल अपर अपार। पुरख अबिनाशी दया कमाई। लोकमात सच्ची प्रकाशी, वीह सौ बिक्रमी लेख लिखाई। प्रगट होए घनक पुर वासी, जम की फाँसी गलों कटाई। जन भगतां लाहे मन उदासी, निज घर वासी दीपक जोती इक्क जगाई। रसन चलाए शब्द स्वासी। वेख वखाणे मदिरा मासी। ना कोई जाणे पंडत कांशी। ज्ञान गीता प्रभ बिधाता, खाणी बाणी वेद पुरानी, कुरान अंज़ीली अंज़ील कुरानी ना किसे पछाणी। जोत मात लग्गी तीली, गगन पताली छत्त नीली कलिजुग मिटे अन्धेरी राती। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां देवे आत्म वर, मिले

मेल कन्त सुहेले साचे वेले, आपे गुर आपे चेले, अचरज़ खेल पारब्रह्म कलि खेले, वेख वखाणे जातां पातां, वीह सौ बिक्रमी खेल रचाई। एका घर वज्जी वधाई। पुरी घनक होई रुशनाई। शब्द वजाए साचा डंक, राउ रंकां रिहा सुणाई। जोती नूरा लाए तनक, गुरमुख साचे लए जगाई। आप सुहाए द्वार बंक, काया मन्दिर आसण लाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात मार झात, कलिजुग वेख अन्धेरी रात, जोती जोत नर नरायण, शब्दी चोला जोती पाई। निहकलंक नर नरायण रसना किसे ना सके कहण, ना कोई वेखे नेत्र नैण, लोकमात जोत जगाई। लोकमात होया उज्जयारा। पंचम् जेठ दिवस विचारा। पुरख अबिनाशी धरत मात सुणे पुकारा। लक्ख चुरासी देवे फांसी, गुरमुखां करे बन्द ख़लासी, तन कराए शब्द शृंगारा। मानस देही करे रासी, शब्द चलाए स्वास स्वासी, सोहँ खण्डा हथ्थ दो धारा। तिन्नां लोआं एका डण्डा, नौ खण्ड पृथमी पाए वंडा, कलिजुग अन्तिम आया कन्ढा, मानस देही आत्म रंडा, धरे जोत हरि संसारा। चार कुन्ट चल्ले चण्ड प्रचण्डा, आप कराए खण्ड खण्डा। बेमुखां हरि जी मारे डण्डा, निहकलंक धर अवतार मेट मिटाए हरि जी पखण्डा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर लए अवतारा। लोकमात हरि जोत जगाई। तिन्नां लोकां वज्जी वधाई। धरत मात खुशी मनाई। कलिजुग तेरी अन्तिम वेल, फल ना लग्गे किते राई। लक्ख चुरासी हरि पाए धर्म राए दी जेल्ह, ना होए कोई सहाई। सदा सदा वसे रंग नवेल, वेख वखानण हरि दिस ना आई। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भाणा साचा राणा, रिहा जगत चलाई। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जीव जन्त होए ख्वार। मन्दिर मड्ढ हाहाकार। गुरदुआरे अन्दर विषे विकार। बेमुखां आत्म वज्जा जन्दर, भरया तन इक्क हँकार। काया अन्धेरी डूंघी कुन्दर, डूंघे वहिण डुब्बा संसार। जोगी भुल्ले गोरख मच्छन्दर, कोई ना पाए कलिजुग सार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए चवीआं अवतार। लोकमात हरि जामा पाया। गुरमुखां साचा संग रलाया। शब्द घोड़े तंग कसाया। जन भगतां सहाई अंग संग, लोकमात डेरा लाया। गऊ ग़रीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, राजे राणयां शाह सुल्तानयां, तख्त ताज दए रुलाया। लक्ख चुरासी बेमुहानयां, अन्तिम भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां, शब्द तीर चार कुन्ट वहीर, किसे हथ्थ ना आउणा नीर, करे खेल जगत महानयां। बेमुखां लथ्थे अन्तिम चीर, भैणां छड्डुण सच्चे वीर, बालक मिले ना माता सीर, मेट मिटाए औलीए पीर फ़कीर शाह दस्तगीर, चले चलाए आपणे भाणयां। जन भगतां बन्न्हे साची बीड़, हउमे कढ्ढे विच्चों पीड़, देवे नाम गुण निधानयां। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, वाक भविख्त

साची लिख्त पूर कराए, गुर गोबिन्द लिखाए विच जहानयां। गुर गोबिन्द बण लिखारा। लिख्या लेख अपर अपारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। करे खेल हरि निरँकारा। जोती वेस माझे देस, चार कुन्ट कराए हाहाकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए विच संसारा। गुर गोबिन्द लिख्त लिखाई। अठवंजा पैंठ साखी, मन वेख वखाणे सुरत मति दे समझाई। किलथपुर वासी शब्द स्वासी, साचा हवण जोती पवण अवण गवण रिहा कराई। धारे भेख जिउँ बल बावन, बेमुख जीवां रिहा भुलाई। गुरमुखां उत्ते बरखे सवण, जगत तृष्ना रिहा भुक्ख गंवाई। निहकलंक नरायण नर, कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी डंक वजाया, चार कुन्ट दहि दिश दिस किसे ना आई।

✻ १८ अस्सू २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल अमृतसर दरबार विच ✻

राज घाट नर निरँकारा। अस्सू तिन्न, पूर्ब कर विचारा। नौ अठारां गिण गिण, करे खेल जोती मेल मात अपर अपारा। धर्म राए दी कटे जेल्ह, गुरमुख बणाए साचे चेल, रंगे रंग नाम अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत रीती काया करे पतित पुनीती, सतिजुग बन्ह्‌णाए साची धारा, नौ अठारां लेख लिखाया। प्रभ अबिनाशी भेव खुल्ह्‌आया। गुरमुख साचे साची सेव लगाया। वड वड दाता मेहरबान, देवी देव पुरी इन्द्र, हरि मृगिन्द फूनन सेजा हरि तख्त सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न लोकमात भिन्न, दिवस विचार गिण, करोड़ तेतीसा लेख लिखाया। अठारां नौ नौं अठारां। साची पुरी सच विहारा। इक्क प्रीती हरि चरन जुड़ी, अमृत बख्शे साची धारा। मात देवे चरन धूढ़ी, अन्त मेल शब्द हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दिसे पार किनारा। पार किनार हरि वखाए। शब्द धार इक्क रखाए। पूर्ब कर्म विचार, मानस देही लेखे लाए। चरन सरन जन जाए बलिहार, भाणा मन्नणा बेड़ा बन्ह्‌णा हुक्म सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बिरध बाल जवान अञ्याणयां , नौ अठारां अठारां नौ लेखे लाए। नौ अठारां गर्भ वास। प्रभ अमृत बरसे साची धारा, पवण देवे सच स्वास। नूरी जोत कर अकार, काया मण्डल पावे रास। मात बख्शे बत्ती धार, माता सास ग्रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन होए दासन दास। गुरमुखां हरि अन्त जगाए। शब्द सुनेहड़ा दर पुजाए। लक्ख चुरासी चुक्के गेड़ा, सतारां हाढ़ लड़ फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मन्दिर किला कोट गढ़्‌ह, पंजां चोरां लए फड़, शब्द डोर नाल बंधाए। सच फ़रमाण हरि

सुणाउणा। धुर दी बान भगत भगवान मेल मिलाउणा। सच धर्म जगत निशाना इक्क चलाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, पिछला घाट नेड़े वाट पूर कराउणा। घर घर मन्दिर , काया अन्दर वसे गुर गोपाल। गुरमुख विरला खोल्हे जन्दर, मिले मेल पुरख दयाल। लक्ख चुरासी बाहर भौंदे बन्दर, हत्थ ना आए इक्क अनमुल्लड़ा लाल। काया अन्धेरी डूंघी कन्दर, अमृत भरया साचा ताल। गुरमुख साचे संत जन विरले नहावण, मारन साची छाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती नूर कर, सच घर दीपक देवे बाल। दीपक जोती कर उज्जयार। गुरमुख साचे माणक मोती, शब्द कराए तन श्रृंगार। कलिजुग जाए मैल धोती, फूलन बरखा दर द्वार। आप उठाए काया सोती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मंगे चोली रंगे हरि द्वार। सदा सदा देवे नाम जगत अनमुल्ला। जीव निमाणा दर आए भुल्ला। तन पहनाए शब्द बाणा, भाग लगाए काया कुला। एका धाम वखाए राजा राणा, दर दुआरा साचा खुल्हा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाणे सर्ब कुछ, गुरमुख पूरे तोल मात तोला। तोले मात जगत वणजारा। आत्म बोले शब्द जैकारा। वसे काया चोले, जोती नूर कर अकारा। गुरमुख बहाए साचे डोले, चरन प्रीती घोल घोले, खिच ल्याए चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जगत पछाणे , गुरमुखां जाणे मात सारा। सुरत नाद नाद धुनी। मूर्त अकाल विच ब्रह्माद, वड गुण गुणी। अन्त आदि पुरख अबिनाशी लाध, मानस देही छाणी पुणी। देवे शब्द साची दाद, सच पुकार हरि दातार घर साचे सुणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आत्म विच मात साची चुणी। राग रंग रंगीला माधव माध, ना कोई वखाणे सूहा चिट्टा लाल काला पीला। एका रंग आदि जुगादि, जोती नूरी साचा तीला। लग्गा रहे खण्ड ब्रह्मण्ड विच ब्रह्माद, नाम निधान भगत भगवाना अमृत आत्म रसन स्वाद। शब्द तीर बज़र कपाटी चीर, देवे साचा सीर, शब्द धुनी साचा नाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गुर हरि नरायण रसन आराध। रसना गाओ गुण गुणवन्ती। दर घर साचे सोभा पाओ, मिले मेल हरि भगवन्ती। काया रंगण इक्क चढ़ाओ, पूरन काजे साचे संते। नाम भबूती तन लगाओ, मात बणाए साचे संते। शब्द माणो ठंडी छाउँ, हरि सहारा साचे कन्ते। आपे पिता आपे माओ, वेस अनेक आदिन अन्ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेखाधारी हरि निरँकारी दर भिखारी, तिन्नां लोआं पावे सारी, मंगे एका वारी, वेख वखाणे लक्ख चुरासी जीव जन्ते। जीव जन्त साध संत भगत भगवन्त बणाए बणत, रसना जिह्वा हरि शब्द मेवा, कौस्तक मणीआं मस्तक थेवा, मिले पुरख अबिनाशी घट घट वासी, लक्ख चुरासी वेख वखाणे पंडत काशी। गुरमुखां नूरा जोती दासी। सर्बकला भरपूरा, शब्द तूरा हाज़र हज़ूरा, अन्तिम अन्ता करे बन्द ख़लासी। मानस

जन्म कराए रासी। दुरमति मैल अट्ठ सट्ठ रही फैल, ना कोई गुर ना कोई चेल, वेख वखाणे घर घर घर, धर्म राए दी पाए जेल्ह। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म लोकमात शाहो शाबाशी, अचरज किया खेल। अचरज खेल भ्राती, मेला हरि सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे गुर आपे चेला। पीर दस्तगीर शाह फ़कीर नेरन नेर वेख वखाणे, सर्ब कुछ जाणे जीव जन्त अन्तिम वेला। सच धाम अस्थूल। धरत मात प्यारी, गुरमुख साचे उपजाए सच्चे फूल। आत्म जोत कर उज्जयारी, भेव चुकाए कन्त कन्तूहल। हउमे मारे हँकारी, गुरमुख ना जाए मात भूल। करे खेल कलिजुग अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द पंघूड़ा लैणा झूल। अन्तिम कलि नर हरि कराया। जगत नाम कलिजुग वखाया। लक्ख चुरासी किसे ना दिसे हड्ड पिंजर, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक मिलाया। पल्ले बन्न्हे ना कोई नाम, दाता राम शाम मनों भुलाया। अमृत पीवे ना कोई जाम, आत्म विख रसना तृख विकार वधाया। गुरमुख साचा साची मंगे भिक्ख, देवे दान दात साढे तिन्न हथ्थ सीं रखाया। वेले अन्तिम पुच्छे वात, पहली अस्सू बणत बणाया। बणे हरि पित मात, सतारां हाढ़ी दिवस सुहाया। मिटे अन्ध अन्धेरी रात, नौ अठारां लेखा पूर कराया। साची बख़्शे इक्क दात मार झात, बारां बारां लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथ सगला साथ, शब्द

६०७ चढ़ाए साचे राथ, पहली अस्सू सतारां हाढ़ी गर्भवास रोग गंवाया। पहली सति सति सति सतारां। खुल्हे नर हरि नौ अठारां। ६०७

०४ दर दरवेशा देवी देव, वेख वखाणे संग मुहम्मद चार यारां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात पूर्ब कर्म गुरसिक्खां ०४

विचारा। सतारां हाढ़ करे लेखा। गुरमुखां चुक्के भरम भुलेखा। लिख्त लेख लेखणी लगाए साची मेखा। नेत्र नैण दर साचे पेखा। खुल्हाए भेव नौ अठारां वेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूरी जामा जोती वेसा। अकाल इक्क दयाल दूजा, तीजे सुरत संभाल। चौथे घर वखाए साचे लाल। पंचम् चले नाल नाल। छेवें देवे शब्द दुशाला, सतवें सति पुरखां चरन प्रीती निभे नाल। अठवें अट्ठ तन विच पावे शब्द जाल। नावें नौ दर काया घर, शब्द नाम जूठी चाम रक्खे काल। दसवीं दिशे आया हिस्से, पुरख अबिनाशी गुर गोबिन्दा वड मृगिन्दा, सुरती सुरत संभाल। दस इक्क ग्यारां शब्द उडारां पुरीआं लोआं खण्डां ब्रह्मण्डां वरभण्डा कर त्यार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग्यारां कत्ते पाड़ नीली छत्ते कर अकार शब्द जणाए लेख लिखाए, तट्ट ब्यासा होणा ख़बरदार। कमलापात चरन नात बंधाए कल। गुरमुख जगाए सोए आप, हरि सहिज सुख दात मात अन्तिम पुछे गुरमुख वात, दरस दिखाए चरन बहाए, दया दयाल कर। मिटाए जात पात, कलिजुग अन्धेरी रात, बैठ इक्क इकांत, भरम चुकाए रोग सोग चिन्त मिटाए निज आत्म वास कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

एका शब्द संत सुहागी सदा सुहेला, जप स्वास स्वासी नर। नर नर नरायण नर, नर ध्याए है। एक एक देवे कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार पुरख अबिनाशी घट घट वास कराए है। एका खुल्ह्ाए दर, चार वरन चुकाए डर, दरस दिखाए साचा हरि, कर जोत मात प्रकाश है। चरन द्वार हरि बणाए सच सर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करे कलि रास है। रासन रास रासे दासन दास दासे, पुरख अगम्म अबिनाशा शब्द चलाए रसन स्वास है। जोत प्रकाशा, मात पताल अकाशा, नूरी नूरा शब्दी रासा, खेल अपर अपार है। लक्ख चुरासी करे अन्त नासा, धर्म राए घर घर दर दर वेख तमाशा, मारे मार कर ख्वार निरँकार है। मेट मिटाए मदिरा मासा, इक्क जपाए शब्द स्वासा, सोहँ चलाए मात साची कल धार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तट्ट ब्यासा पावे तेरी सच्ची सार है। तट्ट ब्यास अन्त कलि अन्त, अन्त होणा जग नास है। वेख वेख साध संत, माया पाए हरि बेअन्त, जंगल प्रभास है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत मात करे सति प्रकाश है। जोत प्रकाश प्रगट हरि राए। घनक पुर वास मण्डल रास जोत सवाए वेख वखाणे आस पास, पुरख अबिनाश सुख सहिज समाए है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग्यारां कत्तक लिख्त लेख, आपणी आप लिखाए है। ग्यारां कत्तक लेख लिखाउणा। सतिसंग ब्यासा आत्म पड़दा खोल्ह्, प्रभ अबिनाशी भेव चुकाउणा। काया मन्दिर वज्जे एका ढोल, धुन अनादां अनन्त रखाउणा। अट्ठे पहर करे कलोल, दूई द्वैती भेव चुकाउणा। एका शब्द जगत अनमोल, पंचां जिस डोर बंधाना। पुरख अबिनाशी तोले पूरे तोल, वाध घाट ना कोई रखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दूसर कोई विच मात ना आउणा। हरि गुर जिस बणत बणाई। बूंद रक्त जिस देह उपजाई। मात कुक्ख नौ अठारां मात छुहाई। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी मानस देही बणत बणाई। बणी बणत गर्भवास। महिंमा अगणत, जिस दीआ जीव स्वास। ना कोई साध ना कोई संत, एका कन्त सद रक्खे विच वास। बाहर आया सच जपाया, कलिजुग माती सुंञा वेहड़ा, सिंमल रुक्खा विच प्रभास। विच प्रभास जगत अखाड़ा। बणी बणत बहत्तर नाड़ा। लहू मिझ काया सिंज, बणया गारा गाहड़ा। काया कुठाली रही रिज्झ, शब्द चले साचा ताड़ा। झिरे झिरना निज्झर निज, लग्गी अग्न तत्ती हाढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम आपणा खेल कर, बेमुख जीआं व्याहे लाड़ी मौत झूठा लाड़ा। पूरा गुर ना मिल्या कोए। जूनी भरमे जगत कुकर्मे, दुरमति मैल ना कोई धोए। मरे जन्मे जन्मे मरे, मानस देही मात हरे, ना होए सहाए कोए। जोती जोत सरूप हरि, आवण जावण खेल रचाए, अगला पिछला लेख लिखाए, त्रै भवण सूझ ना जाणे कोए। पिछला जामा सूकर जाण। विष्टा मुख अन्ध अंध्यान। अट्ठे पहर नेत्र दुःख, नैण मूँध मूँध मूँधान। जोती जोत

सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त करे पछाण। गुर कसाई तेरा बणया। सिर छुरी चलाई, वज्जा तीर अणीआ। नेत्र नीर मुख दुहाई, ना कोई सहाई जगत घनईआ। झूठी देह मात तजाई, दूजा ताणा हरि जी तणया।

✻ ११ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल माता बिशन कौर दे गृह ✻

हरि नर भेख अवल्लड़ा, चले चाल निराली। नूर जोती इक्क इकल्लड़ा, चारों कन्नीआं रक्खे ख़ाली। सच दुआरा एका धाम मलड़ा, शब्द रक्खे भण्डारा आत्म जोती नूरी पलड़ा, कल्गीधर नर निरँकारा। गुरमुख आत्म दर दुआरे अग्गे खल्ड़ा, दीपक जोती कर उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चार वरन इक्क खुल्हाए सच्चा दर दुआरा। दर दुआरा देवे खोल्ह। सोहँ शब्द वजाए चार कुन्ट एका ढोल। आप उठाए राउ रंक शाह सुल्तान, विच जहान तोले पूरे तोले। जन भगत लगाए आत्म तनक, दस्म दुआरी प्रभ खोल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, वडा शाहो हरि हरि भूप, शब्द सरूपी रिहा बोल। शब्द सरूपी हरि हुलारा। चार कुन्टां इक्क जैकारा। सोहँ शब्द सतिजुग साचे तेरी साची धारा। आदि अन्त जुगा जुगन्त, करे खेल जन भगत मेल, देवे दरस अगम्म अपारा। आत्म जोती जगे बिन बाती तेल, निर्मल शब्द पवण हुलारा। दिवस रैण ना देवे सवण, वेख वखाणे अवण गवण त्रै भवन, नूरी जोत कर उज्जयारा। धारे भेख जिउँ बल बवन, भगतन मंगे इक्क दुआरा। कवण सवण हरि जोती रवण, एका धार विच संसारा। विच संसार शब्द अपार, खण्डा दो धारा। प्रगट जोत हरि निरँकार विच संसार पावे सार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नर नरायण हरि जगदीश है। शब्द चलाए एका चक्की, सृष्ट सबाई रही पीस है। धर्म राए दर तेरे जाए धक्की, लेखा चुक्के लक्ख चुरासी बीस इकीस है। अन्तिम कलिजुग बेमुखां खेती पक्की, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे नर हरि सच्चा जगदीश है। एका जोती शब्द जैकारा। प्रगट होए नर निरँकारा। साचा देवे माण ताण, गुरमुखां विच संसारा। शब्द उठाए खण्डा दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। कलिजुग काला वेस, दर दरवेश हरि। लोकमात धर अवल्लड़ा भेस वेस कर। भुले नर नरेश खुल्हे केस, द्वार ना कोई जाणे पंडत ब्रह्मण, वेद पुरान गीता ज्ञान, अठारां ध्याए खाणी बाणी कुरान अंज़ील अंज़ील कुरानी सारे रहे भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत प्रगटाए। हरि साचे जोत जगाईआ। चार कुन्ट पए दुहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, विच मात दे आईआ। प्रभ अबिनाशी सोलां

करे तन शृंगार, लक्ख चुरासी गई हार, शब्द बन्ने साची धार, सोहँ डण्डा हथ्थ उठाईआ। बेमुखां वेख विचार, साधां संतां पावे सार हरि निरँकार, देवे दात नाम सच्ची दवाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कलि जोत धर, कर कर वेस माझे देस खुल्हड़े केस राज राजान शाह सुल्तान अन्तिम कलि मेट मिटाईआ। सच्चा हरि राज राजाना। प्रगट होए शाह सुल्ताना। फड़ फड़ मारे बेईमाना। शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, जोत सरूपी नौजवाना। वडा शाहो हरि भूपी, इक्क रखाए जगत तराना। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, भुल्लया नाम इक्क गुण निधाना। प्रगट होए सति सरूपी, जगे जोत इक्क महाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वड दाता सूरबीर बली बलवाना। वड दाता सूर हरि बलकारया। जामा धारे विच संसार, कलिजुग अन्तिम वारया। आप उठाए सोए भगत साध संत, लिखाए लेख लिख्त अपर अपारया। सोहँ शब्द वाक भविख्त, सतिजुग करे तेरी उज्जयारया। महाराज शेर सिँघ भेखधारी वड बलकारी, साचा भेव चुका रिहा। मेट हँकारी खण्डा दो धारी, मिटाए चार यारी, सच देवे इक्क सरदारी, किल्हे लाल मार छाल, शब्द देवे इक्क दुशाल, लोकमात मार झात मिटाए अन्धेरी रात, शब्द पाए गुरसिख तेरी झोली साची दात, ना कोई पुछे ज़ात पात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारी। कलिजुग काला वेस काली शाही है। हरि प्रगट
६१० ०४
होए माझे देस, लक्ख चुरासी पाए फाही है। पकड़ ल्याए नर नरेश, दोवें बन्ने बाहीं है। किसे ना चले अग्गे पेश, चार कुन्टां देण दुहाई है। जोती धरया हरि जी भेस, वेख वखाणे थांउँ थाँईं है। कलिजुग मिटाए रेख, सतिजुग दए वड्याई है। आप मिटाऐ औलीए पीर शेख़, गुरमुखां मस्तक तिलक लगाई है। आत्म बैठा दर दरवेश, साची जोत करे रुशनाई है। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मा महेष गणेश, एका जोती नूर नुरानी शाह सुल्तानी, आवण जावण खेल रचाई है। जुगा जुगन्त चलाए साची बाणी दो जहानी, जन भगतां दए वड्याई है। सृष्ट सबाई अन्तिम आई हानी, शब्द वज्जे तीर नाता तुट्टे भैणां भाई है। बेमुखां प्रभ फड़ फड़ कुट्टे, रसना तीर एका छुट्टे, राज राजाना ना सके कोई छुडाई है। कलिजुग जड़्ह आपे पुट्टे, जीवां जन्तां भाग निखुट्टे, मस्तक लग्गी जूठी झूठी छाही है। गुरमुखां देवे शब्द झूटे, सतिजुग लगाए साचे बूटे, तन शृंगार हरि विचार, सोलां तणीआं चोली पाई है। आप बणाए दर घर साचे गोले, जन भगत उठाए, काया डोली आत्म पड़दा रिहा खोल्ही, शब्द सरूपी आत्म बोली, देवे दात नाम सच्ची वड्याई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात मार झात, गुरमुख बणाए सच बरात, लाड़ी मौत लक्ख चुरासी बणाए नात, चौथे जुग चौथी वार एका गेड़ा दए दवाई है। चौथे जुग एका गेड़ा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी घनकपुर

वासी, आप मिटाए झूठा झेड़ा। धर्म राए दर करे दासी मदिरा मासी, किसे ना दिसे काया नगर खेड़ा। मौत लाड़ी खिड़ खिड़ हस्से, राह एका दस्से, अठाई कुण्डा खुल्हा वेहड़ा। झूठी फाही बेमुख जीव फसे, ना कोई करे निबेड़ा। गुरमुखां हरि हिरदे वसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे मात बेड़ा। ओअँ अकार अकार अकारा। शब्द पवण अस्वार, पुरख अपार साची धार, त्रै लोआं पावे सारा। वेख वखाणे दिवस रात, अट्ठे पहर मार झात, बारां मास घर घर वास, ना कोई जाणे थित्त वारा। प्रगट जोत घनकपुर वास, पुरख अबिनाश शाहो शाबाश, चलाए शब्द अपर अपारा। मेल मिलाए तट्ट ब्यास, रसना गाए स्वास स्वास, मिल्या कन्त हरि प्यारा। निज आत्म होया सच्चा दास, काया जोती जगी प्रभास, अन्ध कूप सति सरूप जोत उज्जयारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ सावण पतित पावन, शब्द दित्ती साची धारा। शब्द पाया हरि द्वार। मिल्या मेल हरि निरँकार। लोकमाती कर खेल, शब्द चलौणा तिक्खी धार। आपे गुर आपे चेल, करे कराए आपणी कार। संत सहाई सज्जण सुहेल, जुगा जगंती वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, सदा सदा सदा निहकामी, करे खेल अपर अपार। होया मेल हरि बनवार। चुक्कया भेव दस्म दुआर। जगत लग्गी साची सेव, शब्द वरतौणा विच संसार। अमृत मेव साचा फल दर घर साचे पाउणा, लग्गे फल काया डार। गुरमुख सोया मात जगाउणा, शब्द फुंकारा देणा मार। निज आत्म वास इक्क रखाउणा, शब्द घोड़े रास उठाउणा, जोती पवण मसाण जगाउणा, सति सरूपी दरस दिखाउणा, आपे अन्दर आपे बाहर। दर घर साचा इक्क वखाउणा, फड़ फड़ बाहों राहे पाउणा, काया मन्दिर दीप जगाउणा, शब्द सुणाउणा एका धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जोत धर, वेले अन्त भगत भगवन्त पाए साची सार। पाए साची सार, सुरत संभालीआ। दीआ शब्द अधार, आत्म जगी जोत निरालीआ। लोकमात होया उज्जयार, साची घालण एका घालीआ। दूजे दर ना बणना भिखार, मग्गया एका वर बण सवालीआ। मिल्या शब्द अपर अपार, मस्तक चढ़या रंग गुलाल गुलालीआ। जगी जोत मन्दिर उज्जयार, मिटे अन्धेरी रैण घटा कालीआ। दर घर साचे कन्त संत सुहेले आत्म सेजा एका धाम इक्ठे बहिण, चले चाल जगत निरालीआ। इक्क दूजे दे सज्जण साक सैण, इक्क गुर इक्क बनवालीआ। अन्तिम मेल मिलावा साचा दाअवा जिउँ भाई भैण, राह दस्से इक्क सुखालीआ। कलिजुग चुकाए लहिण देण, प्रभ सूसा लाहे कालीआ। गुरमुख साचे संत जन दर घर साचे हो इक्ठे बहिण, किरपा करे देवे वरे भण्डारे भरे, प्रभ अबिनाशी मस्तक गगन दीपक जोती धरे साची थालीआ। हरि का धाम अगम्म, जोत जगांयदा। हरि का धाम अगम्म, शब्द पवण संग रलांयदा। हरि का धाम अगम्म, रूप रंग ना कोए जणांयदा। हरि

का रूप अगम्म, कोई दम ना मुल्ल चुकांयदा। हरि का रूप अगम्म, काया मन्दिर अन्दर नज़री आंयदा। हरि का धाम अगम्म, नीर सीर छम्म छम्म ना कोई वहांयदा। हरि का रूप अगम्म, दूत जम कोई ना दिस आंयदा। हरि का धाम अगम्म, कोई ना जाणे प्रभ का कम्म, केहड़ी बणत बणांयदा। हरि का धाम अगम्म, तिन्नां लोआं बैठा धार बन्न, एका जाल चारों कुन्ट रखांयदा। एका शब्द सुणाए कन्न, राग रंग दिस किसे ना आंयदा। हरि का धाम अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, एका जोती साचा नूरा वड भरपूरा, सदा सदा डगमगांयदा। हरि का धाम अटल, अगम्म अथाह है। हरि का धाम अटल, ना कोई जाणे अज्ज कि कल्ल, ना किसे दम वसाह है। लक्ख चुरासी आप भुलाई, ख़ाक रुलाई कर वल छल, एका एक वखाए सच्चा आपणा नाउँ है। गुरमुख जगाए थांउँ थाँईं पकड़े बाहीं, होए सहाई जिउँ बालक माता माउँ है। चरन दुआरे सच घर बाहरे विच संसारे कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, देवे ठंडी छाउँ है। प्रभ अबिनाशी जामा धारे घट घट वासी, मेट मिटाए मदिरा मासी, दर दर घर घर उडदे काउँ है। धर्म राए दर देवे फाँसी, पंडत पांधे बैठे कांशी, ना लेवे अन्त कोई छुडाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, गुरमुखां दुरमति मैल रिहा धोत, लोकमात करे रुशनाई है। लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार घनकपुर वासी जोत मात जगाईआ। जन भगतां मेल हरि सज्जण सुहेल, शब्द डोरी काया नाल बंधाईआ। कलिजुग तेरी अन्ध घोरी, चारों कुन्ट लग्गी चोरी, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी गुरमुख साचे तेरी आत्म जोत जगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि शब्द चलाए साचा हल्ल, कलिजुग सतिजुग दोवें बैल बणाईआ। कलिजुग सतिजुग आए दुआरे। दोए जोड़ करन निमस्कारे। कलिजुग रो रो धाहां मारे। प्रभ अबिनाशी तुट्टी जोड़, लक्ख चुरासी होए ख्वारे। निहकलंकी वज्जा डंक, पंचम् जेठ चढ़े शब्द घोड़े। आप मिटाए मदिरा मासी, जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे देवे वर, मंगण आया साचे घर, सूरा जोध जोधा आत्म बोधा, बोध अगाधा आत्म साधा, विच ब्रह्मादा शब्द अनादा, घनक पुर वासी सतिजुग साचे हो त्यार। सोलां कलीआं कर तन श्रृंगार। गुरमुख साचे संत जनां मेल मिलाउणे शब्द डोर बंधाउणे, चार कुन्ट दहि दिश वारो वार। प्रभ अबिनाशी हथ्थ फड़ाउणे, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। साचे धाम प्रभ आप बहाउणे, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवाए, लोकमात जन्म दवाए, मिले वड्याई विच संसार। सतिजुग साचा मात धरांयदा। शब्द देवे साची दात, सोहँ झोली हरि भरांयदा। चार वरन इक्क बरात, शब्द लाड़ा संग रखांयदा। कलिजुग तेरी मिटे अन्धेरी रात, सतारां हाढ़ी पिछा अगाड़ी हरि लिखांयदा। चारों कुन्ट शब्द बणाए वाड़ी, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आपणी आप रखांयदा। शब्द वाड़ देवे कर। जगत झूठा चुक्के डर। सतारां हाढ़ देवे वर। नौ अठारां बारां धर। मानस देही हरिभगत स्नेही आसा मनसा पूर कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी बन्द ख़लासी आवण जाण जाण आवण पतित पावन भेख बावन रामा रावण, वेस दरवेस इक्क कर। गुर का धाम गुर गुर देवा। पूरन होए काम, मन तन रसना जो जन करे सेवा। तिन्न सौ सठ हाडी बहत्तर नाड़ी काया चाम, लग्गे फल अमृत साचा मेवा। कोई ना लग्गे घर साचे दाम, मस्तक बणया वड धन धनईआ लाउणा कौस्तक थेवा। तीर चलाउणा एका अणीआ, रसना खिच्च कमान साची जिह्वा। सतिजुग साचे जगत रखवाली, भगत कृपाल भेव चुकाउणा, लेख लिखाया हरिद्वार पहली हाढ़ हरि कर्म कमाया। बहत्तर नाड़ी जोती जोत गुरसिक्खां दे समाया। वेख वखाणे जंगल काया मन्दिर डूंघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उचे टिल्ले सर्ब रहाया। रसना तीर चलाया खिच्च कमान, साचे चिले भेव अभेव ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द विचोला इक्क रखाया। शब्द विचोला मात बणाया सोहँ नाम इक्क अमोला, पूरे तोल हरि जी तोला, गुरमुख साचे झोली पाया। लग्गा भाग काया डाला, दर घर साचे बणया गोला, रसन रसायण कंचन सवरनी देह बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर गुर सूरा चरन सरन सरन चरन एका धाम
६१३ रखाया। शब्द विचोला मारे फेरे। कलिजुग अन्तिम आया घेरे। उन्नी हाढ़े साचे गेड़े। प्रभ अबिनाशी भेखाधारी नर निरँकारी, ६१३
०४ आया दर द्वारी साचे डेरे। शब्द घोड़े कर अस्वारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण पाए घर साचे सारे। उन्नी ०४
हाढ़ी दर दरबार। वेख वखाणे सच्ची सरकार। पंचम् पंचम् शब्द धुन वाजे, राग रंग रत्न अपार। नूरी जोत अकाली गाजे, इक्क कराए जै जैकार। साचे साजण हरि जी साजे, वेख वखाणे कलि अन्तिम वार। शब्द प्यारे वड राजन राजे, करना सच्चा इक्क प्यार। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया। करे कराए आपणी कार। ओंकार अकार धर रूप अपार। सति द्वार छेवां घर बाहर। पंचम् सरदार खोल्हे बन्द कवाड़। चौथे घर आए संत जनां दा साचा लाड़। जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जाणे पिछा अगाड़। चौथा घर कवण द्वार। कवण शब्द कवण धुनी, कवण मुख कवण धुन्कार। कवण पवण कवण रिहा पुकार सुणी, कवण रूप रेख रंग कवण रक्खे साची धार। कवण अमृत मेघ बरसे सवण, साध संत जीव जन्त साचा कन्त काया करे ठंडी ठार। जोती जोत सरूप हरि, कवण दुआरे आए, कवण सिँघासण डेरा लाए, चौथे घर सच्चे दरबार। चौथा घर जो जन विचारे। सच सिँघासण लेख अपारे। चार कुन्ट चार रूप, रंग रेख भेख न्यार, वेख वेख नर निरँकारे। जोती जोत सरूप हरि, कवण धामां करे बिसरामा, कवण कूट रिहा झूट, जोती

नूर करे उज्जयारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कलि जामा धारे। जामा धार मात अवतारा। निहकलंक नर अवतार, पंचम् जेठी शब्द अस्वारा। शब्द रक्खे साची धार, कलिजुग सतिजुग पावे सारा। पूर्ब कर्म रिहा विचार, लक्ख चुरासी जानणहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका जोत लोकमात करे उज्जयारा। घनक पुर वास जोती नूर हरि। वेख वखाणे सरब, दस मास हरि। सर्बकला भरपूर हरि। जीव जन्त साध संत भगत भगवन्त, निज आत्म रक्खे वास हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त साध संत भगत भगवन्त आत्म रक्खे वास हरि। गुरमुख नाम अनमोल, जगत अनतोल है। बज़र कपाटी प्रभ रिहा खोल्ह, वसे सदा कोल है। सच सुनेहड़ा शब्द देवे बोल रंगे रंग काया चोल है। सदा सहाई अंग संग, पुरख अबिनाशी दर मंगी एका मंग, साचे संत प्यारे। नाम वणजारे हरि दुलारे, सृष्ट सबाई रही अनभोल है। सृष्ट सबाई अनभोल सुत्ती पैर पसार। धर्म राए दर घर साचे दए बहाए, प्रभ अबिनाशी कुण्डा खोल्ह। अठाई कुण्ड खाली, ना कोई दिसे वाली, लक्ख चुरासी करनी चाली, गुरमुख आत्म बणना हाली, आत्म सोहँ बीज बिजाउणा साचे चोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, रामा कृष्ना अवतार नर, लोकमाती जोत धर, गुरमुखां पर्दे देवे खोल्ह।

६१४
०४

❇ ११ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल तों सतिगुर गुरचरन सिँघ नूं तीसरी वार शब्द भेज्जया गया ❇

तीजा लेख हरि लिखांयदा, आत्म नेत्र लैणा खोल्ह। दूई द्वैती पर्दा लाहिंदा, साचा रंग रंगीला माधव माध, काला चिट्टा सूहा नीला, वेख वखाणे चिट्टा चोल। अन्तिम कलिजुग करना हीला, मिल्या माण उप्पर धौल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दर द्वार बंक, आप सुहाए साचे तेरे सावण। सावण सिँघ जोत उज्जयारी। आस पास ब्यास धाम न्यारी। सिँघ चरन साची सरन, गुर नेत्र दीआ हरन फरन, खोल्हे आप वड प्रताप, जपया जाप हरि बनवारी। कलिजुग अन्तिम फलया पाप, हरि भुलाया आपा आप, प्रगटे जोत निहकलंक नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टे अस्व शब्द घोड़, पवण जोत सच अस्वारी। चिट्टे अस्व आसण लांयदा। मात पताल अकाश अकाशण, चारे कुन्टां हरि दुड़ांयदा। लक्ख चुरासी बैठ आत्म आसण, वेख विचारे पावे सार, लेख लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम आई हार, प्रभ अबिनाशी किया जोत अकार, साधां संतां गुरूआं पीरां, अमृत सीरा ठंडी धारा विच संसारा, साचा नाम एका जाम पिलांयदा। लक्ख चुरासी पैणी मारा, मानस देही आई हारा, माया रुले जीव गंवारा, प्रभ अबिनाशी भुल्ले निहकलंक नरायण नर, कोई ना पावे सार।

अन्तिम कलि ना कोई पाए मुल्ले, पाणी प्या काया चुल्हे, बुझे जोती अग्ग अन्गयार। सच दुआरा एका खुल्हे, पूरा तोल एका तुले, शब्द निशान एका झुल्ले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। गुरचरन सिँघ सरन इक्क रखाया। राज द्वार बंक माढ़ी मण्डल कूड़ पसार, विच संसार अन्त रहण ना पाया। तन श्रृंगार जगत विहार, माया धार शब्द कटार साची तन रखाया। मानस देही वेख विचार, आत्म जोती कर उज्जयार, शब्द मिले माणक मोती डूंघी चुभ्भी मार, डूंघी भवर हरि रखाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक अन्तिम कलि जोत जगाया। गुरचरन सरन सिँघ आउणा दौड़। कलिजुग अन्तिम वेला पापां रीठा होया कौड़। हरि एका दिसे साचा सज्जण सुहेला, घर साचे लग्गा शब्द पौड़। पंचम् जेठी लग्गे साचा मेला, प्रगट होए ब्रह्मण गौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर सतिगुर साचा अन्तिम वेले जाए बौहड़। कलिजुग अन्तिम धार सिंध सागरा। प्रभ चरन छुहाए दया कमाए, अस्सू सत्त दयाल बाग़ आगरा। सति स्वामी हुक्म सुणाए, जोत जगाए काया गागरा। साचा शब्द मृदंग वजाए, जिउँ कृष्ना दमामा द्वापरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जोती जोत सरूप हरि, मात पित पित मात बापरा। एका टेक हरि हरि जाण। चरन कँवल कर साचा हित्त, नेत्र नैण पेख मुंधान। अमृत काया आपणी सिंच, ना कोई वेखे वार थित्त, लक्ख चुरासी गोर मढ़ी मसाण। पुरख अबिनाशी राखो चित्त, जोत प्रगटाए नित नवित्त, वाली दो जहान। कलिजुग अन्तिम गुरमुख साचे गए जित्त, जिन मिल्या मेल हरि भगवान। जोत जगाई हरि भगवाना। जोत सरूपी खेल महाना। काया मन्दिर इक्क सुहाना। गुरमुखां बन्हे शब्द गाना। आत्म जोती नूरो नूर तेज कोटन भाना। नाम रत्न शब्द सरूर सिँघ भगवान हरि भगवान पछाना। सर्बकला आपे भरपूर देवे दान गुण निधाना। एका साची मस्तक धूढ़, जोत सरूप हरि अन्तिम जोती मेल मिलाना। सच घर चार दरबान। पंचम् पुरख अबिनाश घट घट वास चतुर सुजान। हरि नर सच्चा शाहो शाबाश, एका शब्द एका धुनी धुनकान। निज घर आत्म रक्खे वास, देवे नाम सच्चा दान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार दुलार गुरमुख विचार। उतरे भुक्ख दरस अपार। मानस देही मिल्या वर, दर द्वार रवीदास चुमार। दूजा बणया भगत स्नेही बाल्मीक वड नीकन नीका, मम्गाया वर दर भिखार। सिँघ प्रीतम नित उडीकां, खड़ा रहे सच्चे सच दरबार। प्रभ अबिनाशी पाई इक्क तरीका, भुक्ख नंग करे दूर अपर अपार। आपे जाणे रस मीठा फीका, भगत सुदामे दित्ता तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा धार। हरि आपे कृष्न मुरार, जगत बनवारया। जन आया दर द्वार, ग़रीब निमाणा बण भिखारया। प्रभ साचा पाए सार, विच संसार बन्हे धार ना आए हारया। रोग सोग

चिन्त मिटाए अन्ध अंध्यार, नेड़ ना आए घनकपुर वासी सच्ची सरकारया। शब्द देवे साची धार, पवण घोड़ा दर दुआरे आए बौहड़ा, करे शब्द अस्वारया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका राम सुक्का करे हरया काया चाम, रोग सोग चिन्त निवारया। आत्म सहिंसा दुखड़ा दूर। उज्जल मुखड़ा मिले सच नूरो नूर। सुफ़ल कराए मात कुक्खड़ा, आए दर सच्चे हज़ूर। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सगल रोग सोग मिटाया वजाए नाद अनाहत साची तूर। वज्जे नाद नाम निराला। आदि जुगादि होए रखवाला। आत्म साधन रिहा साध, शब्द पाए तन साची माला। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानी अंस बंस होए रखवाला। अंसा बंसा कान्हा कंसा हरि सहँसा, देवे माण जगत वड्याई। झूठी माया जो जन फंसा, दर आए दया कमाए देवे फंद कटाई। आप बणाए साची अंसा, डोर गुर संगत हथ्थ रखाई। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी किरपा देवे कर, सच द्वार आए सच्ची सरनाई। किरपा कर हरि अबिनाश। हरिजन होए दासन दास। जीव जन्त सर्ब कर आत्म वास। माया पाई, कलि बेअन्त, सच सुच्च गई विनास। जोती जोत सरूप हरि, कलि कलेशा दूर कर, रोग सोग चिन्त जाए विनास। घर घर मारे अट्ठे पहर ख्वारे। भैणा भईआ आत्म सर्ब हँकारे। झूठी चढ़े मात नईआ, देवे कवण सहारे। एका बणे हरि साचा सज्जण सैण सईआ, बेड़ा लाए पार किनारे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जगत कलेश माया राणी झूठा वेस करे दूर दुआरे।

✻ १२ कत्तक २०११ बिक्रमी आत्मा सिंघ दे गृह पिण्ड मल्लूवाल ज़िला अमृतसर ✻

जाग जाग जीव जाग कल, अन्त कन्त संत अमोल नर। जाग जाग जीव जाग कल, मिले सति नाम अन्त कन्त सुहाग मात सच दर। जाग जाग जीव जाग कलि देव दंत कलि अन्त होए भस्मंत, उडे काग घर घर। उठ जीव जाग जाग कल, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त, चार वरन इक्क सरन खोल्ह इक्क सच्चा दर। दर दुआरा इक्क खुल्हांयदा। साचा राह इक्क वखांयदा। गुरमुखां फड़े बांह पार करांयदा। दरगहि साची देवे सच्चा थान, आवण जावण पतित पावन गेड़ा झेड़ा जगत चुकांयदा। अमृत मेघ बरसे सावण, गुरमुख साचे तीर्थ नाव्हण, दुरमति मैल प्रभ गवांयदा। बेमुख मारे कर ख्वारे वड हँकारे जिउँ रामा रावणा, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। उठ उठ लाल जगत दलाल, सिंघ सावण पकड़ दामन, निहकलंकी बाणा पांयदा। नेड़ ना आए कामनी कामन, दरगहि साची होए जामन, साचा लड़ अग्गे खड़्ह हरि हथ्थ फड़ांयदा। जगे जोत बहत्तर नड़, काया दिसे झूठा धड़, एका शब्द सीस ताज रखांयदा। माया

वहिण झूठा हढ़, शब्द पैणा काड़ काड़, अट्ठे पहर रिहा लड़, डोरां आपणे हथ्थ रखांयदा। अन्तिम कलि जाणा झड़, माया धारी जाणे सड़, गुरमुख साचे संत जन, पुरख अबिनाशी होए रासी बाहों लए फड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेस वटाया, गुरूआं पीरां किसे हथ्थ ना आए सीस धड़। सिर धड़ ना दिसे सीस। करे खेल हरि जगदीश। ना कोई गुर ना कोई चेल, सृष्ट सबाई जाए पीस। लक्ख चुरासी एका साचा सज्जण सुहेल, जगत देवे माण ताण, कवण करे हरि तेरी रीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फड़ फड़ चरन निवाए, शब्द डण्डा सीस लगाए, इक्क अकार जोत धराए, सच्ची सरकार आप अख्वाए, खोल्हे भेव वड देवी देव बीस इकीस। सतिगुर सोए साचे जाग। मानस देही अन्त कलि कवण धोए पापां दाग़। साचे शब्द कर अस्वारी पहली वारी, सुण शब्द साचा राग। निहकलंक कलि जोत धारी वड संसारी, जामा धारी भेख अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपारी। जगत गुर जागे जन भगत जगांयदा। जगत गुर जागे, सच शब्द नाम दृढ़ांयदा। जगत गुर जागे, कलिजुग जीआं भुल्लयां फड़ फड़ राहे पांयदा। जगत गुर जागे, माया ममता लोभ मोह चुकांयदा। सतिगुर साचा जागे मातलोक पूरे तोल तुल्या, साचा दर दुआरा इक्क खुल्हांयदा। सतिगुर साचा जागे, गुरमुखां काया लाए भागे देवे नाम दात, ना मुल्ल कोई रखांयदा। कलिजुग आई अन्धेरी रात, कोई ना पुच्छे वात, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। नेत्र खोल्ह मार झात, गुर गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द मात जोत प्रगटांयदा। ना कोई पिता ना कोई मात, सिँघ सावण दरस दिखांयदा। धुरदरगाही देवे साची दात, तन मन्दिर विच बहांयदा। बैठा रहे सदा इक्क इकांत, सुन समाध आसण बासण, ताड़ी वाड़ी नैण उग्घाड़ी, ना नेत्र बन्द करांयदा। मानस देही अन्तिम हारी, ना कोई थिर रहांयदा। एका जोत नर निरँकारी, जगत गुर थापन थाप आपे आप, माण ताण दवांयदा। एका रक्खे आपणा वड प्रताप, दूसर कोई दिस ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम पाप गया कांप, सतिगुर पूरा बेड़ा बन्न्हे लांयदा। एका दस्से घर साचे जाप, बन्द कवाड़ा काया मन्दिर अन्दर गुर खुल्हांयदा। काया माटी भाण्डा काचा, नूरी जोती शब्द साचा, आवे जावे दिस किसे ना आंयदा। एका नर हरि थिर रहावे, तिन्नां लोआं जीआं जन्तां साधां संतां, आत्म जोती माणक मोती, मस्तक गगन जोती, अग्न काया ब्रह्मण्ड वखांयदा। सतिगुर पूरे करो विचार विच संसार, शब्द घोड़े हो अस्वार, निहकलंक नरायण नर, करे ख़बरदार। दरस पेख तीजे नैण, लेख आवे वारो वार। मिले मेल साचे साजन सैण, मेल मिलावा सच घर दर दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाई, पुरी घनक वज्जी वधाई, सृष्ट सबाई सच भतार। सच भतार शब्द स्वामी। काया मन्दिर दए सुधार, पहला करे सच्चा वार, निहकलंक

निहकामी , अन्तिम आउणी कलिजुग हार, मल्लणा पए इक्क द्वार, किसे ना पल्ले दिसे दामी। प्रगट होए विच संसार, पुरी घनक जामा धार, चार वरन सरन लगाए, राउ रंक राजान शाह सुल्तान तमामी। सतिगुर पूरे जगत गुर दाते, उपजे धुन अनाहद तूरे अमृत रस अमर मध माते, नेत्र वेख वेख वखानी। माया राणी वड कमजाते, अन्तिम मिले ना किसे पाणी। जगे जोत इक्क पुरख बिधाते छड्डणे पैणे हाणीआं हाणी। निहकलंक दर साचा खोल्हे अमृत देवे बूंद स्वांती, चुकाए जम की कानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाए, आदि शक्त आदि भवानी। शब्द फूलनहार तन श्रृंगारया। किरपा कर दातार विच संसार होए उज्जयारया। इक्क वखाए सच दरबार, नर हरि सच्ची सरकार, ऊँच नीच भेव निवारया। जन्म कर्म धर्म वेख, लोचन नैण नेत्र पेख भरम निवारया। शब्द लग्गे साची मेख बज़र कपाटी, खुल्ही साची हाटी वणज वणजारया। अमृत आत्म सच सरोवर तीर्थ ताटी, अठसठ फिर फिर थक्के साधां संतां काया चोली पाटी, शब्द डोर ना कोई बंधा रिहा। कर कर खेल नाटक नाटी, हँकार विकार डंक वजा रिहा। दरस दरस दरस गुरदेव नेत साचा लाहा मात खाटी, मस्तक रेख मेख वेख लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, औलीए पीर शेख़ एका धार विच संसार वहा रिहा। शब्द तीर रसन कमान। खिच्चे हरि बली बलवान। सतिगुर उठे नौजवान। माया मूधे होण ठूठे,
६१८ घर मन्दिर दिसे वैरान। साक सम्बन्धी सारे झूठे, वेले अन्त सर्ब पछतान। प्रभ अबिनाशी एका तुठ्ठे, देवे नाम शब्द निशान। ६१८
०४ पंजां चोरां फड़ फड़ कुट्ठे, मेट मिटाए मार शैतान। गुर गुर गुर गुरमुख साचे रुठ्ठे, मेल मिलाए श्री भगवान। अन्तिम ०४
रक्खे एका मुठ्ठे, सतिजुग झुल्ले सोहँ सच्चा इक्क निशान। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगण रंग नाम कन्त मुरारया। जुगो जुग काया काला चाम, होए अन्ध अंध्यारया। अन्तिम किसे ना आउणा काम, होए खेह शार शारया। कोई ना मंगे किसे दाम, चारे कुन्टां खोल्ह खुल्हा रिहा। गुरमुख साचे इक्क प्याए अमृत जाम, देवे रस अपर अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंगण नाम इक्क चढ़ाया, ना कोई रंगे दूजी वारया। रंग रंग रंगण लाल। गुरमुखां रक्खे संग चरन प्रीती निभे नाल। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख नंग, दरगहि साची ना होए कंगाल। प्रभ अबिनाशी सदा अंग संग, गुरमुख उठाए गोदी सिँघ पाल। गुरचरन सिँघ उठ आत्म बोधी मात सुरत संभाल। प्रगट होया नर नरायणा ना कोई वरना ना कोई गोती, नूरी नूर ना कोई जाणे दलाल। आप गुंदाए एका लड़ी गुरमुख साचे माणक मोती, गल लटकाए सुरत संभाल। पुरीआं लोआं एका जोती, गुरूआं पीरां रिहा बाल। काया मन्दिर आत्म जोती, शब्द डण्डा रिहा उठाल। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढा, तट्ट ब्यासा होणा ठंडा, पल्ले किसे ना दिसे धन माल। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, चले अवल्लड़ी इक्क जगत चाल। हरि चरन सच सरनाई। खुल्ले हरन फरन चुक्के मरन डरन, प्रभ दया कमाई। करे खेल हरि करनी करन, लेखा अगणत ना गणया जाई। हरि दर मिले वर सच्चे घर, जन पड़े सच्ची सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत नाता तोड़ विछोड़, शब्द घोड़े दए चढ़ाई। रोग सोग चिन्ता दुःख सुख मुख प्रभ चरन आए दर। आए करे उज्जल मुख, सुफ़ल होए मात कुक्ख, मिले सच्चा नाम वर। मात गर्भ उलटा रुक्ख, अन्ध अन्धेर धूंआं धुक्ख, जपे स्वास स्वास हरि। मानस देही मिली मनुक्ख, लक्ख चुरासी सुखणा सुक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क वखाए सच दर। सच्चा दर जगदीश मात वखांयदा। शब्द छत्र झुलदा रहे सीस, गुरमुख साया हेठ रखांयदा। ना कोई सुणाए राग छतीस, एका शब्द तन वसांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन चरन सरन आए प्रभ बेड़ा पार करांयदा। बेड़ा करे पार ना कोई वञ्झ मुहाणया। डूंघी भवर कलि संसार डुब्बे राजे राणयां। कोई ना करे पार, बेमुख होए जीव बेमुहाणयां। गुरमुख पाए प्रभ दर साचा माण, हरि दर साचा रंग जिस जन माणया। पूर्ब कर्म लए विचार, शब्द कराए तन श्रृंगार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। धर्म सिँघासण हरि बिराजे।
प्रगटाए जोत जोत जोत देस हरि माझे। जोती शब्दी साचा भेस ना कोई पछाणे राजन राजे। कलिजुग अवल्लड़ा किया
६१६ वेस, शब्द तुरंग चिट्टा रंग, जीव जन्त चार कुन्ट दिसण नंग, ना कोई रखाए किसे लाजे। काया काची भज्जी वंग, घड़े ६१६
०४ भन्ने जो जन साजन साजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जन भगतां पड़दे काजे। प्रगट ०४
होए नर अवतारा। ना कोई हाडी ना कोई चम्म, ना कोई पल्ले दिसे दम, नाम भगती सच वणजारा। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, ना कोई धन्दा ना कोई कम्म, ना प्रभ अन्धा ना नीर वहाए छम्म छम्म, वेखे विगसे सर्ब संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, चार वरन साची सरन इक्क रखाए, सच्चा मन्दिर अन्दर गुर दर दुआरा। गुर दुआरा तन मन्दिर बणाए। शब्द साचा बख्शे अन्दर, अनहद धुन उपजाए। जोती नूरा देवे डूंघी कन्दर, काया अन्धेर करे रुशनाए। तोड़े वज्जा तन मन हँकारी जन्दर, नाम चाबी इक्को लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कलि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां शब्दी मेल मिलाए। शब्द मेल शब्द सुरत नाद। शब्द जोत अकाल मूर्त, शब्द शब्द शब्द ब्रह्माद। शब्द दाद नाम तूरत, शब्द शब्द शब्द आदि जुगादि। शब्द आसा मनसा पूरत, शब्द शब्द शब्द मेल माधव माध। शब्द ना जाणे ना वखाणे कोई रंग रूप सूरत, शब्द शब्द शब्द धुन साची दाद। शब्द मेल साची जोती नूर नूरत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे पार उतारे, अन्तिम कलि

संत साध। तन मन्दिर शब्द वजन्ता। वस्सया नगर खेड़ा, मुक्या जगत झेड़ा खुल्या एका वेहड़ा, दर घर साचे मेल साचे कन्ता। होए सच्चो सच निबेड़ा, मिटे मात चुरासी गेड़ा, चरन सरन गुर साचे संतां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम बन्ने कलिजुग बेड़ा, पूरन जोत नर हर श्री भगवन्ता। नर हरिभगत भगवन्त पत पतवन्ता। अन्तिम मेल घर साचे खेल, दीपक जोती बिन जगे तेल, आदि जुगादी जुगां जुगन्ता। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी साचा मेल, बणत बणाए मानस जन्म दवाए दए वड्याई जीव जन्ता। निहकलंक कलि जोत जगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन जोत नेड़ ना आए जगत विकार हउमै हँगता।

✻ १४ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे प्रेम सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✻

जरम कर्म प्रभ हत्थ, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। जरम कर्म प्रभ हत्थ, जीआं जन्तां मात उपजांयदा। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, देवे शब्द स्वास पवण सच दात झोली पांयदा। काया मन्दिर बणे अन्धेरी रात, दीपक नाम इक्क टिकांयदा। विच वसे बैठ इकांत, दिस किसे ना आंयदा। आपे वेखे वेख पछाणे अन्दर बाहर मार झात, आपणे भाणे सद समांयदा। हरि जन जोड़े चरन कँवल कँवल चरन नात, उप्पर धवल माण रखांयदा। हरया करे प्रभ नाभ कँवल, अमृत बूंद मुख चवांयदा। बहत्तर नाड़ी रिहा मवल, जन कोए भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका जरम कर्म आपणे हत्थ रखांयदा। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, डोर बंधाईआ। जन्म कर्म प्रभ हत्थ, पंज तत्त पंज चोर एका थां वसाईआ। काया मन्दिर दिसे अन्ध घोर, जीव जन्त साध संत रहे शोर मचाईआ। अग्गे पिच्छे वारो वारी देवे तोर, ना किसे भेव जणाईआ। कोई मढ़ी कोई मसाणी कोई वास गोर, जोती आपणी आप समाईआ। इक्क चढ़ाए शब्द घोड़, गुरमुख साचे सेवा लाईआ। धुरदरगाही मात बौहड़, लक्ख चुरासी गेड़ कटाईआ। मानस देही ना रस होए फीका कौड़, अमृत फल दर घर साचे इक्क एका वार लगाईआ। काया माटी भाण्डे काचे, प्रभ अबिनाशी साचा वाचे, आदि अन्त कोई रहण ना पाईआ। काया बन्दर जगत नाचे डोरी हत्थ कलन्दर, पुरख अबिनाशी आप रखाईआ। करे लेखा अन्दरे अन्दर, चित्र गुप्त सच हिसाब मुकाईआ। ना कोई दिसे उच्चे टिल्ले गोरख मच्छन्दर, गुरूआं पीरां साधां संतां लाड़ी मौत प्रनाईआ। दर घर साचे पुरख अबिनाशी तोड़े जन्दर, गुरमुख साचे संत जनां दर साचे लए बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तां दीपां पार कर, सत्त अकाश बाहर धर, सत्तवें दिन सति संतोखी साचे धाम समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ प्रेम साचा बचन

चौदां कतक दर घर साचे आण मनाईआ। आदि अन्त जगत कुछ नाही। जीव जन्त साध संत, बिन हरि साचे कन्त सर्ब पछताई। हरिजन साचे प्रभ आप उपाए बणाए साची बणत, मानस जन्म लोकमाती मार झाती, पुरख बिधाती लेखे लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा साजन साजे, गुर गोबिन्द ग़रीब निवाजे दूसर कोई जाणे नाही। नेत्रहीण सृष्ट सबाई हरि सज्जण सार ना पईआ। गुरमुख साचे हरि जन जन हरि संत प्यारे वख कीन वड प्रबीन दयाल दीन साची नईआ शब्द चढ़ईआ। साची नईआ हरि चढ़ांयदा। भैणां भईआ मात पित जगत हित्त, नाता सुत तुड़ांयदा। आपे सुहाए आपणी रुत्त, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, घर साची खिड़ी बसंत अन्त फुल फुलवाड़ी सोहणी मात लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खिच्चे जोत बहत्तर नाड़ी, काया मन्दिर नींह उसारी, आपे अन्तिम ढाहिंदा। आपे ढाहे होए जन ढेर। गुरमुख साचे लेखे लाए, मात गर्भ ना आए दूजी वेर। भरम भुलेखे दूर कराए, सतिगुर साचा ना कोई वखाए सन्झ सवेर। दर घर साचे साचा माण ताण विच जहान हरि भगवान रखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी जम की फाँसी दूर कराए ना लाए देर। जम का डर तुट्टा फाह। मिल्या सच्चा हरि, वखाया एका सचा राह। खुल्हाया सच्चा दर, पार कराया फड़ के बांह। लोकमाती जाए मर, दरगहि साची मिल्या सचा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ अठारां बारां तीस आप रखाए आपणी ठंडी छाँ। नौ अठारां बारां तीस। होए बन्द ख़लासी, प्रभ चरन दासी, चरन छोहे सच्चा सीस। मिल्या सच्चा शाहो शाह शाबाशी। जोती नूर शब्द भरपूर घनकपुर वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात कटी जगत भीड़। लेखा लिख लेख जगत चुकांयदा। वेख वेख वेख हरिजन जन हरि जोती मेल मिलांयदा। मेट मिटाए लिखी रेख धार भेख, साचा राणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। नेत्र नैण लोचन दरस लैणा पेख, चरन सेव सच लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दरबार, तिन्नां लोआं वसे बाहर, गुरमुख फुलवाड़ी साची आप लगांयदा। नौ अठारां बीस इकीस। लेखे लाए हरि जगदीश। दे मति रिहा समझाए, लेखा चुक्के बारां तीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सरन रखाए, चरन छुहाया साचा सीस।

❋ १६ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल काका जगदीश सिँघ दे जोती जोत समाण दे नवित्त ❋

एका जोती जोत अकाला। ऐथे ओथे होए रखवाला। गुरमुखां तन पहनाए, सच्चा शब्द सच्चा दुशाला। आप आपणी सरन रखाए, कलिजुग माया छाया ना लग्गे हड्डीं पाला। लक्ख चुरासी डन्न लगाए, काया भाण्डा भन्न वखाए, आप बहाए

साचे घर सच्ची धर्मसाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे संग रलाए, होए सदा रखवाला। आपणे संग आपे रक्ख। लक्ख चुरासी विच्चों गुरमुख साचा कीना वख। जीव जन्त जगत गंवार करन हाहाकार, कोए ना सके रक्ख प्रभ अबिनाशी तेरी धार पहली वार, कलिजुग उडदे दिसण काग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचे घर बहाए सरन लगाए, अन्तिम वेले लए रक्ख। गुर जागे गुरमुख जगांयदा। लेख लिखाया प्रभ साचे धुर प्रभ साचा मेल मिलांयदा। चरन प्रीती गई जुड़, मानस देही लेखे लांयदा। आप चढ़ाए शब्द घोड़, तिन्नां लोआं पार करांयदा। साचे धाम बहांयदा। साचा धाम हरि अपार। ना कोई दिसे पार किनार। घर घर बैठे करन विचार, बेमुखां अन्तिम आउणी हार। गुरमुख साचे संत जनां मिले जोत हरि करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक करे खेल अपर अपार। अपर अपार खेल करांयदा। साची धार जगत चलांयदा। ना कोई पावे सार, गुर गोबिन्दा वड मृगिन्दा, जोत धर प्रभ साचा हिन्द, गुरमुख साचे बिन्द तेरी लेखे लांयदा। ना कोई मारे ना कोई कढ्ढे जिंद,। आपणा भाणा साचा राणा, आपणे हथ्थ रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी जम्म की फाँसी गलों फाह कटांयदा। जम्म का फाह देवे कट। सच वखाए एका राह, शब्द पहनाए साचा पट्ट। आपे फड़े आए बांह, करे खेल झट पट। सदा देवे ठंडी छाँओ, गुरमुख लाहा लैण खट। ना कोई पिता ना कोई मांओ, प्रभ अबिनाशी जगत खुलाया झूठा हट्ट। प्रभ साचे तेरा एका नाउँ, लक्ख चुरासी खेल बाज़ीगरनट। जन भगत बहाए दर घर साचे साचे थांउँ, दूई द्वैती मेल फट। किया इक्क अकार जोत निरंकारया। लोकमाती कर विचार, पुरख बिधाती करे खेल अपर अपारया। बेमुखां दिसे कलि अन्धेरी राती, गुरमुखां जोत अकारया। जीव जन्त साध संत चार कुन्ट वेख मार झाती, अन्तिम अन्त किसे ना छुडा रिहा। जन भगतां देवे अमृत बूंद स्वांती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत पित जगदीशर, आपणे भाणे सद रहा रिहा। आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। ना कोई जाणे राजा राणा, सुघड़ स्याणा भेव ना पांयदा। दर घर साचे मिले माणा, आप बिठाए शब्द बबाणा, साचे घर बहांयदा। एका दर हरि वखाणा, सिँघ पाल तेरी लाज रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म मात जन्म आपे आप दवांयदा। लोकमात हरि जन्म दवाए। जन्म कर्म आपणे हथ्थ रखाए। मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण झूठा भरम काया चरम किसे कम्म ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम जोती मेल आपणा आप कराए। अग्गे लाए सिँघ मनजीत। साधा संतां आप वखाई साची रीत। जीआं जन्तां आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता, वेख वखाणे हरि नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, देवे

नाम इक्क धनां, साचा राग सुणाए कन्नां, मानस जन्म जाणा जग जीत। मनजीत वज्जी वधाई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। इन्द इन्द्रासण दए बहाई। सिँघ सिँघासण बैठा जाई। करोड़ तेतीसा, रिहा छत्र झुलाई। आई वारी जगत जगदीशा, जगदीश सिँघ प्रभ सेवा लाई। साचे लेखे प्रभ लाया सीसा, जटा जूट धार शिव शंकर कढ्ढे बाहर, गंगा धार जिस वहाई। लोआं पुरीआं पावे सार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे खेल हरि जोती मेल आपणा आप कराई। साचा मेल हरि मिलाया। धुरदरगाह सच दुआरे शब्द चढ़ाए साचा तेल। किरपा कर हरि निरँकारे, धर्म राए दी कटे जेल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जोती नूरा साचा मेल। पहला मेल हरि मिलाया। सिँघ पाल दर बहाया। दीन दयाल वड किृपाल, साचे लेखे रिहा लिखाया। इक्क लगाए शब्द छाल, ब्रह्म पुरी हरि दए बहाया। चवी चेत वस्सया काया खेल, उन्नी सौ अठानवें बिक्रमी खेल खलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगहि साची साचे धाम बहाया। दूजा किया हरि विचार। चेत दस दिवस विचार। खाणी बाणी बोध अगाधा, बणी धार विच संसार। प्रभ अबिनाशी वड जोधन जोधा, शब्द शस्त्र तन शृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा बाला जगत जंजाला। काया मन्दिर डूंघी कन्दर विच अन्ध अंध्यार। तीजे खेल हरि वरताई। सिँघ मनजीत वज्जी वधाई। सेजे आया चाईं चाई। जगत छड्डे भैणां भाई। जन भगतां साचे संतां आत्म लडाए साचे लड्डे, घर घर दर दर रिहा जगाई। सुता कोई ना छड्डे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा लेखा आपे जाणे, पुरी इन्द्र तख्त सुहाई। सिँघ मनजीत सच प्रीत, चित्रगुप्त ना लेखा कढ्ढे झूठा करे जगत विहारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। सतिजुग साचे तेरी बन्न्है नर हरि साची धारा। आप उठाए बेड़ा आपणे कन्न्है, गुरमुख किसे ना लग्गे भारा। गुरमुख बहाए साचे घर ना छप्परी ना छन्ने, जगे जोत अगम्म अपारा। जो घड़या प्रभ साचा भन्ने, काया माटी झूठी हाटी खेल न्यारा। बेमुख जीव कलिजुग अन्न्है, जूठा झूठा जगत मोह करन हाहाकारा। गुरमुख मैल प्रभ दुरमति धो, खिच्च ल्याए चरन दुआरा। सिँघ जगदीश तेरी प्रभ खुशी मनाए पंचम् पोह, बैठ प्रभ इक्क चुबारे। जीव जन्त ना जाणे को, करे खेल हरि गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए जन भगतां सारे। पाए साची सार सुरत संभालदा। जन जाए वारो वार, मोह टुट्टे काया डाल दा। गुरमुखां तन प्रभ करे शब्द शृंगार, साची सुरत संभालदा। साची पुरीआ बन्न्है धार, वेख वखाणे सर्ब कुछ जाणे बेड़ा पार उतारदा। आउणा जाणा रंग भगवान, गुरमुख साचा साची आण माणे रंग करतार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा चुक्के हेरा फेरा, रंग साचा घर साचे सदा सदा माणदा। चौथा धाम हरि सजाया। जोती राम जोत जगाया। पूरन करे काम, पड़दा उहला ना कोई रखाया। महाराज

६२३
०४

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पूरन दर घर साचे गोला इक्क बणाया। इक्क गुर गोबिन्द गोपाल। पिता वारे नाल सपूत लाल। मरे ना जन्मे जन्मे ना मरे, ना खाए काल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच फल लगाया काया डाल। गुरमुख तेरी फुल्ल फुलवाड़ी। पक्कणा फल सतारां हाढ़ी। गुरमुखां लाज रखाए दया कमाए, चरन छुहाए दाढ़ी। गुरमुख साचे लए उठाए, दरगहि साची जाए वाड़ी। सिँघ पाल तेरी झोली पाए, झूठी काया मात साड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती मेल मिलाए दया कमाए खिच्चे जोत बहत्तर नाड़ी। बहत्तर नाड़ी तुट्टा नाता। मिल्या मेल पुरख बिधाता। दो जहानी सज्जण सुहेल, बैठा रहे इक्क इकांता। दोहां भ्रावां मिल्या मेल, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। गुर गुर गोबिन्द गुरू गुर चेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म करे शांत स्वांता। आत्म स्वांती बूंद अमृत हरि पिलांयदा। जगत बन्न्हे धीर, नेत्र चले ना नीर, वक्त अख़ीर सर्ब लिआंयदा। माया ममता कढ्ढे विच्चों पीड़, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण बैठ आपणा खेल वरतांयदा। सच घर सच टिकाणा। जिथ्थे झुल्ले शब्द बबाणा। शब्द सरूपी घट घट वासी, लक्ख चुरासी फंद कटाना। मिले मेल शाहो शाबाशी, लोकमात लाहे उदासी, दरगहि साची माण दवाना। गुरमुख साचे सद करन हासी, प्रभ अबिनाशी जिस गोद उठाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख धुर मस्तक वेख, अन्तिम कलि पूर कराना। मस्तक लेखा आप लिखांयदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख साचे संत जनां, हरि सच दुआरे किरपा धारे पार उतारे, फड़ फड़ बाहों पार करांयदा। अन्तिम वेले पावे सारे, दर घर साचा एका धाम वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोती मेल कर ,आवण जावण पतित पावन झूठा गेड़ चुकांयदा। अन्तिम करे सच निबेड़ा। जगत देवे झूठा गेड़ा। इक्क वसाए गुरसिख काया नगर खेड़ा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साचे हरि दित्ता वर, पहली सावण बन्न्हया बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, साचे दर सदा वसेरा। साचा दर हरि दरबार। भरया रहे शब्द भण्डार। जन भगतां देंदा आए लोकमात वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जन भगत टेक, वसे निहचल धाम अटल्ल करे खेल हरि निरँकार। साचा खेल हरि निरंकारया। आत्म जोती साचा मेल, काया होई ठंडी ठारया। धर्म राए दी कटी जेल्ह, आप बहाए चरन द्वारया। शब्द चढ़ाया साचा तेल, फूलनहार सोहँ शब्द तन पहना रिहा। आपे गुर आपे चेल, साचा खेल आप वरता रिहा। अचरज पारब्रह्म कलि खेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा माणक मोती, जगदी रहे काया जोती, पहले सावण पकड़े दामन, धुरदरगाही साचा माही, मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण आप अख्वा रिहा। ना कोई भैण ना

कोई भ्राता। कलिजुग दिसे अन्धेरी राता। प्रभ अबिनाशी जामा पाए, अन्तिम वेले पुछे वाता। शब्द दात प्रभ झोली पाए, धुरदरगाही सच सुगाता। साचे धाम आप बहाए, जोत मिलाए इक्क इकांता। आवण जावण गेड़ चुकाए, अमृत बूंद प्याए स्वांता। कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा लेख लिखाए, सतिजुग तेरी उत्तम ज़ाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पाल हो दयाल, गोद बिठाए तिन्न लाल, सच्चा दर नर घर इक्क पछाता। सिँघ पाल तिन्न दुलार। चारों कुन्ट पहरेदार। दर घर साचे खेल अपार। जगे जोत हरि हरि हरि निरँकार। आपणी करनी रिहा कर, उत्तर दक्खण पूर्ब पच्छिम दिशा विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए आपणी सार। आपे पाए सार सुरत संभालदा। गुरमुख साचे बण दयाल लेखे लांयदा। देवे सच्चा नाम ना होए कंगाल, साचे धाम बहांयदा। फल लगाए साचे डाल, गुर संगत मेवा अमृत फल इक्क खवांयदा। प्रभ अबिनाशी वड देवी देवा, करोड़ तेतीसा साची सेवा, सुरपति राजा इन्द तख्तों लाह बहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं कर अकार विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी पावे सार, धर्म राए दर खोल्हे बन्द कवाड़, लेखा चुक्के सतारां हाढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत बणांयदा। साचा लाल इक्क दुलारा। दस चेत दिवस विचारा। किया भेंट पहली वारा। बाणी मन्दिर इक्क उसारा। जोत जगी अन्दरे अन्दर, मातलोक होए उज्जयारा। बन्द कवाड़ी वज्जा जन्दर, काया दिसे धुंदूकारा। पुरख अबिनाशी वसे डूंघी कन्दर, भुल्ले जीव जगत गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवण जोत शब्द गोत, सदा वसे गुप्त ज़ाहरा। गुप्त ज़ाहर हरि दयाल। जगत अवल्लड़ी चले चाल। काया दिसे झूठी खलड़ी, किसे ना निभे अन्तिम नाल। मात पिता छप्पर छाया हेठ पलड़ी, लग्गा फल साचे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचा गुरसिख एका अन्तिम मल्लणा ना होए मात कंगाला। इक्क दुआरा भगत वरतारा। इक्क दुआरा भगवन्त वरतारा। साध संत जुगा जुगन्त आदि अन्त, मंगदे रहे नाम भिखारा। मिले वड्याई जीव जन्त, मेल मिलावा साचे कन्त, रोग सोग जगत विजोग चिन्त निवारा। आत्म सेजा साचा सुख लईए भोग, मिले मेल हरि भतारा। देवे साचा शब्द जोग, पड़दा खोल्हे दस्म दुआरा। हउमे विच्चों चुक्के रोग, जात पाती वसे बाहरा। जन भगतां देवे दरस अमोघ, लक्ख चुरासी उतरे पारा। प्रभ जोती मिल्या धुर संजोग, लोकमात ना होए ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माणक मोती, आप कराए तन श्रृंगारा। तन श्रृंगार हरि गिरधारया। गुरमुख रिहा तार, वारो वारया। देवे शब्द उडार पहली वार, बाल अञ्याणे सुघड़ स्याणे, साचे लेखे ला रिहा। मानस देही ना आए हार, दर घर साचे उतरे पार, भरम भुलेखा दूर करा रिहा। सोलां करे तन श्रृंगार शब्द बणाए साचा हार, कौस्तक

मनी मस्तक लग्गा रिहा। जगे जोती विच संसारा। सतिजुग तेरी बन्ने साची धारा। गुरमुख साचे मात विचारा। एका जोती वरन गोती भेव मिटा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम कलि साचा राह इक्क वखा रिहा। साचा राह इक्क टिकाणा। जिथ्थे वसे गुण निधाना। ना कदे हस्से ना कदे रोवे एका रंग हरि भगवाना। भगत जनां दे हिरदे वसे, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। बेमुख झूठी फाही फसे, मोह ममता जगत वधाणा। अन्तिम वेले जायण नस्से, खिच्चे जोत श्री भगवाना। काया कोठड़ी अन्धेरी रैण जिउँ चन्द मस्से, साचा दर किसे हथ्थ ना आणा। गुरमुख साचा प्रभ भाणा जाणे खिड़ खिड़ हस्से, किसे हथ्थ ना आए राजे राणे हरि का भाणा। उतरे पार भव सागर। काया गागर झूठी माटी। अमृत रस आत्म एका चाटी। काया मन्दिर वड सिंध सागर, लोकमात खुल्लाई साची हाटी। गुरमुख निर्मल कर्म उजागर, साचा राह प्रभ दर खुल्लाई साचे शब्द बणना सच सुदागर, काया चोली अन्तिम पाटी। किसे ना देवे आदर, लोकमात विच एका औखी घाटी। प्रभ देवे चिट्टी चादर, आवण जावण खेल बाज़ीगर नाटी। एका जाणे करता कादर, ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी। एका मेल हरि रत्नागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच दुआरे। कराए वणज इक्क वपारे। नाम तन ना लगे डन्न, भाण्डा काया देवे भन्न, वसाए सच दुआरे। सच दुआरा हरि का न्यारा, नाम भण्डारा नर निरँकारा जोत जगाया। सतवें आसण डेरा लाया। छेवें घर जोत उपजाया। पवण स्वास संग रलाया। पंजवें कुण्डा आपे लाहया। शब्द डोरी नाल बंधाया। पंज पंजायण लेख लिखाया। जोत नरायण भेव किसे ना पाया। चौथे घर गुरमुख साचे मंगलाचार इक्क कराया। नाता तुट्टे भाई भैण, शब्द संगल हरि बन्नाया। आपे बणे साक सज्जण सैण, मात पित पिता पूत आप रघुराया। दरस दिखाए तीजे नैण, जोत सरूप डगमगाया। रसना किसे ना सके कहण, हरि घर साचे जिस दर्शन पाया। आप चुकाए लहिण देण, लोकमाती मार झाती पुरख बिधाती झूठा जूठा लेख मुकाया। गुरमुख तेरी उत्तम जाति, चरन कँवल हरि डेरा लाया। मिल्या मेल कमलापाती, उप्पर धवल माण रखाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। सिँघ पाल तेरी पुच्छे वाती, देवे प्रभ साची दाती, मनजीत जगदीश तेरी झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द सर्ब बख्शिंद तुट्टा नाता जगत बंधाया। तुट्टा नाता देवे गंढु। जन भगतां रक्खे आत्म ठंड। जगे जोत विच ब्रह्मण्ड। सत्त दीप नौ खण्ड, प्रभ पाए वंड। लक्ख चुरासी आई कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सर्ब पछाणे जीव जन्त साध संत, पूरन भगवन्त उत्भज सेत्ज जेरज अंड। सति पुरख दयाल कर्म कमांयदा। दीना नाथ दीन दयाल हरि गोपाल, गुरमुख साचा लाल साची सेज बहांयदा।

६२६ ०४

एथे ओथे करे प्रितपाल, चले नाल नाल, पल्ला नाम इक्क फड़ांयदा। लोकमात घाल घाल, अन्तिम तुट्टा जगत जंज़ाल, पहली मारे इक्को छाल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर पार लँघांयदा। काया खेड़ा वस्सया धर्मसाल, मिल्या इक्क अनमुल्लड़ा लाल, साचा मुल्ल आप पुआंयदा। आपे बणे हरि दलाल। रंग वेखे सूहे लाल, दूसर नाहीं वेख वखांयदा। गोद बिठाया सिँघ पाल, छोटा इक्क अञ्याणा बाल, दरगहि साची धाम सुहांयदा। अमृत भरे सुहावा ताल, तोड़े माया जगत जंज़ाल, साचे सर सरोवर इक्क इशनान करांयदा। शब्द वजाए साचा ताल, अनहद धुन वज्जे कमाल, ढोल मृदंग ना कोई रखांयदा। जन भगतां रिहा सुरत संभाल, अकाल मूर्त जगत निराल, दिस किसे ना आंयदा। एका रक्खे नाम तूरत, बेमुखां दिसे सदा दूरत, गुरमुख आत्म आसण डेरा लांयदा। मनमुख भुल्ले रहे झूरत, सृष्ट सबाई दिसे कूड़ो कूड़त, एका धाम अटल दिखांयदा। जोती जगे नूरो नूरत, सर्बकला आपे भरपूरत, शब्द जोत पवण, एका धाम रहांयदा। सर्ब जीआं सर्ब आसा पूरत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवण जावण आपणे हथ्थ रखांयदा। आवण जाणा हथ्थ करतार। बेमुख पाए राह औझड़, गुरमुख सोए प्रभ चरन द्वार। भेव रखाए हरि साचा गुझड़, जीव जन्त ना पाए सार। महाराज शेर सिँघ
६२७ विष्नूं भगवान, आवण जावण खेल रचाए, लक्ख चुरासी बणत बणाए, पवण स्वासी विच टिकाए, दिस ना आए गुप्त ज़ाहर। ६२७
०४ शिव शंकर जटा जूट धारे। कलिजुग अन्तिम आई हारे। बाशक तशक गल लटकाए, जावे दर हरि निरँकारे। जोती जोत ०४
सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम जोती मेल मिलाए। अन्तिम जोती मेल मिलईआ। शब्द चढ़ाए साची नईआ। शिवलोक हरि वेख वखाणे, खाली धाम इक्क करईआ। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, देवे माण हरिभगत गुसँईंआ। ना कोई जाणे वेद पुराने, खाणी बाणी अंज़ील कुरानी किसे सार ना पईआ। एका जोत नर हरि श्री भगवानी, आदि शक्त आवे जावे वारो वार, विच संसार साचा राह इक्क चलईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका जोती नूर कर, कलिजुग अन्धेर अन्ध मिटईआ। कलिजुग मिटे अन्ध अन्धेरा। प्रभ अबिनाशी पाया फेरा। गुरमुखां चुकाए हेरा फेरा। इक्क दवाए साचा गेड़ा। धर्म राए दा चुक्के झेड़ा। दरगहि साची इक्क वखाए, साचा धाम खुल्ह्रा वेहड़ा। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, दिसे राम रहीम नेड़न नेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम कलि बन्न्हे बेड़ा। बेड़ा देवे बन्न, भाण्डा भरम भन्नांयदा। शब्द वसाए साचा तन, एका राग सुणांयदा। जन भगतां कढ्ढे आत्म जन, शब्द शृंगार तन करांयदा। सच दुआरे रसना कहण धन्न धन्न, मानस जन्म लेखे लांयदा। गुरमुख आत्म जाए मन्न, अन्तिम जोती मेल मिलांयदा। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, गुरमुख साचे प्रभ साचे घर वसांयदा। साचा घर इक्क

द्वार। जगे जोत अगम्म अपार। शब्द दस्से साची धार। पवण स्वास ठंडी ठार। पुरख अबिनाशी नर निरँकार। घट घट वासी एका करे हरि अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी जोत सरूपी, शब्द स्वासी रिहा पसार। शब्द जोत पवण अस्वार। सर्ब भवण हरि निरँकार। ना कोई जाणे देव यमन, ना कोई जाणे जीव संसार। ब्रह्म सरूप सर्ब हरि रवण, ब्रह्मा वेद ना पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी शब्द स्वासी रिहा सद सद पसार। सच सिँघासण हरि जी लाया। सिँघ मनजीत तेरा धाम आण सुहाया। लोकमात सदा सुरजीत, ना मरे ना जन्मे जाया। दर घर सचे रिहा अतीत, सदा रक्खे प्रभ ठंडी छाया। गुर चरन निभे तोड़ प्रीत, मात पित भैण भाई हित्त तजाया। दर घर साचे इक्क चलाई साची रीत, शब्द सेहरा सीस गुंदाया। आपे परखे जन भगतां नीत, नाम मैहन्दी हथ्थ रंगाया। हरिजन सदा राखो चीत, काया मन्दिर थान सुहाया। सदा गाओ सुहागी गीत, आवण जावण प्रभ खेल रचाया। प्रभ अबिनाशी साचा मीत, सच सिँघासण आसण लाया। लक्ख चुरासी जाणा जीत, आवण जावण देवे फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ मनजीत तेरा धाम सुहाया। सिँघ मनजीत वज्जी वधाई। मिल्या मेल वडे भाई। दोहां कर इक्क सलाही। दर घर साचा पाया, प्रभ जोती लाड़ी इक्क व्याही। सिहरा शब्द सीस गुंदाया, हार तन पहनाई। कलिजुग वेला अन्तिम आया, जोड़ जोड़े हरि रघुराई। बेमुखां बेड़ा दए डुबाया, अग्गे वाट नेड़े आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हरि साचे घर वजदी रहे सदा वधाई। साचे घर वज्जे मृदंग। चढ़े शब्द साचा रंग। गुरमुख साचे संत जन, जमन किनारा पार जायण लँघ। एका देवे माल धन, दूजा दर ना कोई मंग। जोती जोत सरूप हरि, सदा सहाई अंग संग। मनजीत मन भया अनन्द। कलिजुग चढ़या साचा चन्द। प्रभ अबिनाशी रसना गाया, मुख भाग लगाया बत्ती दन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां भाईआं मेल मिलाया, जीव ना जानण अज्ञान अन्ध। अज्ञान जगत अन्धेरा ना कोई जाणे ना हरि पछाणे, कवण मिटाए हेरा फेरा। दरगहि साची देवे माणा, कटे जम का झेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानी बन्ने आपे बेड़ा। सिँघ मनजीत सद रसना गाए। जगत जगदीश प्रभ दए मिलाए। बीस इकीस एका सेजा हरि सवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोए ना सके रोक, भाणा आपणे हथ्थ रखाए। प्रभ अबिनाशी जगत मलाह, दोहां बख्शे साचा थांउँ, करोड़ तेतीस सिँघ मनजीत छत्र झुल्ले साची छाउँ। नाल रलया सिँघ जगदीशा, जगदीश जगत तजाया पिता माउँ। ना कोई करे रीसा, शिव शंकर पकड़े साची बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शिवलोक बहाया, दरगहि साची लाए नाउँ। शिवलोक हरि द्वार। सिँघ जगदीश वेख विचार। प्रभ अबिनाशी

बन्नी धार। पहली सावण लेख लिखार। पंचम् पोह पावे सार। छब्बी पोह बण सच सच्चा दरबार। निहकलंक नरायण नर, काया माटी छड्डी खाटी, जगत तजाया झूठा मोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गति मितक आपे जाणे, अवर ना जाणे को। गुणी गहीर गहर गुणवन्ते। मिल्या मेल गुरसिख प्यारे सच दुलारे साचे कन्ते। शब्द चढ़या साचा तेल, फुल्ल फुलवाड़ी सच संगते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब लेख आप चुकाया, गुरमुख साचा पार कराया, बेड़ा बन्ने जीव जन्ते। उठ जगदीश कर त्यारी। सच सिँघासण तेरी आई वारी। जीव जन्त प्रभ अबिनाशन, अन्तिम पासा आए हारी। गुरमुख विरले मिले पुरख अबिनाशन, रिहा जगत पैज संवारी। दर घर साचे होया दास दासन, गुर गोबिन्द सिर लथ्था भारी। सदा सदा सदा बलि जासण, गुरमुख विहावण प्रभ जोती लाड़ी इक्क कुँवारी। बेमुखां अन्तिम खाए डैण, लाड़ी मौत कर ख्वारी। नाता तुट्टे भाई भैण, सिँघ जगदीश करी सच्ची इक्क सवारी। प्रभ आप चुकाया लहिण देण, धर्म राए ना लेखा मंगे दूजी वारी। जोती दर्शन तीजे नैण, सदा रहे मन खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सपूत सच आसण डेरा लाए, सुत्ता रहणा पैर पसारी। जगत जगदीश जोत जगईआ। सति सति सतिजुग साची आप रखाए कलिजुग नीआ। आपे धोए पिछले दाग़े, निर्मल किया जीआ। विच्चों हँस उडाया कागी, ना कोई पुत्तर ना कोई धीआ। सोई काया

६२६
०४

मात जागी, प्रभ बीज साचा बीआ। चरन प्रीती साची लागी, अन्तिम किया साचा हीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीश साढे तिन्न हथ्थ रखाई तेरी सीआ। साढे तिन्न हथ्थ धाम न्यारा। देवे हरि समरथ, मात अन्तिम वारा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, दर्शन करे जोत निरँकारा। जगत महिंमा बणे अकथ्थ, आप उपजाए सच्चा इक्क दरबारा। लोकमाती साचा रथ, खिच्ची जाए वारो वारा। गुरमुखां सिर रक्खे हथ्थ, सिँघ मनजीत सिँघ जगदीश प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा छत्र सीस झुलाए, धर्म सति निशान इक्क झुलाए, सत्त रंग रंगाए अपर अपारा। सत्त रंग शब्द वट। प्रभ अबिनाशी जाणे घट घट। साची जोत करे उज्जयार, जगे लट लट। गुरमुखां बेड़ा कर त्यार, इक्क बणाए तीर्थ साचा तट्ट। मानस जन्म ना आए दूजी वार, काया दिसे झूठा हट्ट। एका मेल हरि कन्त भतार, लक्ख चुरासी देवे कट। दर घर साचे सौणा पैर पसार, छड्डुया काया झूठा मट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म रस प्याए, रसना रसक लैणा चट्ट,। जगत जगदीश वणज वपारी। लाह खट्टया दूजी वारी। गुरमुख नाउँ पहली वारी। सिँघ सावण नाउँ कर उज्जयारी। मिल्या मेल पतित पावन, मानस देही महल्ल उसारी। नेड़ ना आए कामनी कामन, बाल अवस्था खेल अपारी। जोती चमके दामनी दामन, निर्मल काया होई उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ जगदीश लाए

६२६
०४

मात तेरी सच्ची फुलवाड़ी। फल लगाए सतारां हाढ़ी। साचा दर इक्क खुल्हाए, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, गुर संगत अन्दर जाए वाड़ी। नाम रंगण इक्क चढ़ाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन छुहाए दाढ़ी। सिँघ मनजीत तेरी ख़ाक, साचे दर हरि रखांयदा। तेरा खोल्हे इक्क ताक, दर दर बन्द करांयदा। आपे जाणे भविख्त वाक, ना कोई भेव रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेत्र पेख मार झात, वडे भाई मेल मिलांयदा। सिँघ जगदीश वडा भाई। तेरी ख़ाक जिस मस्तक लाई। जगत मेटी झूठी शाही। मिल्या मेल सच्चे माही। सच दुआरे आप बहाए, फड़ के दोवें बाहीं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण दवाए, साचा छत्र सीस झुलाए, रक्खे थांउँ थाँईं। गुरसिख दर घर प्रभ रक्खे गंढु, गुर संगत देवे वंड, गुरसिख होए ना किस्मत माढ़ी, आत्म होए ना रंड। लक्ख चुरासी गेड़ निवारी, घर साचे पाए सदा ठंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले अग्गे लाए, दो जहानी काज रचाए, बेमुखां आत्म आई गंढु। सिँघ जगदीश चिखा सिँघासण डेरा लाए, दो जहानी काज रचाए, बरखा फूलण हरि कराए, गुरमुखां भार आप चुकाए, सदा सुहागी ना होए रंड।

६३० ०४

❇ २१ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल पूरन सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ❇

दर दरबार गुरसिख मन्दिर हरि आप सुहाणा। जन्म कर्म मात विचार, शब्द टिकाए विच बबाणा। लक्ख चुरासी बन्न्हे धार, धर्म राए हरि गेड़ कटाना। हरिजन साचे उतरन पार, दर द्वार जिस सीस झुकाना। दरगहि साची दिसे पार किनार, राह विच ना किसे अटकाना। मानस देह लेखे लाए हरि करतार, दे मति सर्ब समझाना। जन्म ना आए दूजी वार, मिले मेल हरि भगवाना। उधरे पार नर, नार पाए सार बिरध बाल जवाना। शब्द रक्खे तिक्खी धार, जगत जंज़ाला फंद कटाना। छोटी काया निक्की वाड़, गुरसिक्खी हरि नींह रखाना। आपे जाणे आपणी सार, आपणा भेव हरि आप रखाना। सतारां हाढ़ी दिवस विचार, गुर संगत हरि बन्न्हे हथ्थीं गाना। शब्द चढ़ाए साचे लाल, चुक्के गेड़ आवण जाणा। परे हटाए जमदूतां धाड़, चित्र गुप्त हरि लेख मिटाना। कलिजुग माया चोली पाड़, साचा धनी शब्द वसाना। चारों कुन्ट दिसे उजाड़, काया मन्दिर महल्ल इक्क वसाना। जगत जगे जोत अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग मस्तक तिलक इक्क लगाना। चाढ़े रंग शब्द गुलाल। गुरमुखां मंगी इक्क मंग, प्रभ अबिनाशी बणया दलाल। शब्द घोड़े कस तंग, लोकमात मारी सच्ची छाल। आपे वसे अंग संग, जगत अवल्लड़ी चले चाल। मानस देही होणी भंग, गुरमुख लैणी सुरत संभाल।

६३९
०४

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी, फल लगाउणे काया डाल। हरि मन्दिर हरि उसारे। गुरमुखां पार उतारे। लाल दुलारे साचे वारे। लेखा लिखे फेरा पावे दर दरवेशा, जोत सरूपी भेखा धारे। कलिजुग वटाया आपणा भेसा, ना जाणे जीव गंवारे। शिव शंकर करे सदा वेसा, दोए जोड़ चरन निमस्कारे। प्रभ प्रगट होए माझे देसा, प्रभ मेल मिलावे सिँघ जगदीश बहाए सच चुबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां बेड़ा पार कराए दया कमाए, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, लेख लिखाए सतारां हाढ़े। साची बणत हरि बणांयदा। साध संत जीव जन्त, ना किसे भेव चुकांयदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त, अचरज माया जगत पित जगदीश पांयदा। आवण जावण खेल रचाया, पुरीआं लोआं कर अकार, शब्द धीर धरांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंकी नर निरँकार, बाणा भाणा जोती राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, प्रभ आपे घड़े अन्दर वड़े, आपे अन्त मिटांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़े, मानस देही किसे ना दिसे मात जड़े, गर्भवास रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आत्म जोती फड़े, अन्तिम जोती मेल मिलांयदा। मिले मेल हरि भगवाना। गुरमुख विरले सच दुलारे, सच्चा शब्द बन्ने गाना। सच धाम बहाए सिँघ पाल देवे माण संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हो दयाल तिन्न लाल नाल रलाए, जगत चलाए साची धारे। फल लगाए साचे डाल, वेखे विगसे करे विचारे। चार कुन्ट दए बहाल, दर दरबान खड़े रहण पहरेदारे। मातलोकी कर ध्यान, ब्रह्मलोकी शब्द उडान, इन्दलोकी सुरत ध्यान, शिव शंकर वेखे नैण मुँधारे। शब्द वज्जे एका बाण, पुरीआं लोआं लाहे घाण, गुरमुखां वधदी जाए शान, देवे माण हरि गिरधारे। सर्ब जीआं जाणी जाण, आपे करे मात पछाण, जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, लेखा चुक्के सतारां हाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मस्तक तिलक लगाए, जगत उपजाए साचे लाड़े। शब्द जोग जगत ब्रह्माद। पुरीआं लोआं साचा नाद। मिले मेल जहानी दोआ, लिख्या लेख आदि जुगादि। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि किरपा कर, देवे दात वड सुगात, सोहँ शब्द नाम दाद। हरि जोत अकार, शब्द प्रकाश है। शब्द रक्खे तिक्खी धार, पवण देवे सर्ब स्वास है। शब्द घोड़े हो अस्वार, सच मण्डल वेखे साची रास है। तिन्नां लोआं बन्ने धार, वेख वखाणे मात पताल अकाश है। साची पुरीआं पावे सार, हरि विचार किरपा धार, ब्रह्मा शिव इन्द वड मृगिन्द सच्ची सरकार है। जन भगत उपजाए मात साची बिन्द, मानस देही अपर अपार है। जोती जोत सरूप हरि, आत्म जोती नूर धर, शब्द वसाए साचे घर, पवण सवार हरि निरँकार है। हरि नर नर निरँकारा। पवण शब्द जोत अधारा। वरन बरन गोत वसे बाहरा। एका अबिनाशी अबिनाश जोत, दिसे सद गुप्त ज़ाहरा। गुरमुखां

६३९
०४

मैल दुरमति रिहा धोत, शब्द कराए तन श्रृंगारा। बेमुख मात रहे सोत, आत्म अन्ध धुंदूकारा। नर निरँजण एका जोत, आवे जावे वारो वारा। लक्ख चुरासी व्याहे लाड़ी मौत, गुरमुखां देवे शब्द बबाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त माया खेल, जन भगत मेल आपणे हथ्थ रखाना। भगत मेल हरि आप करांयदा। जोती जगे बिन बाती बिन तेल, जगत उज्जयार हरि गिरधार चार कुन्ट करांयदा। गुरमुख साचे माणक मोती, फड़ फड़ बाहों साचे हार बणांयदा। ना कोई जाणे वरन गोती, चार वरन एका सरन एका धार रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं पसर पसार आपे जाणे वेख वखाणे नज़र किसे ना आंयदा। ना कोई वेखे ना कोई जाणे। लोकमाती भुल्ले राजे राणे। लक्ख चुरासी झूठी बाती, ना कोई चुकावे आवण जाणे। गुरमुखां मेल कमलापाती, देवे दरस श्री भगवाने। आत्म मिटे अन्धेरी राती, दीपक जगे जोत महाने। बैठा दिसे इक्क इकांती, गुरमुख लाए चरन ध्याने। आत्म वेखे मार झाती, काया मन्दिर हरि सुहाने। अमृत देवे बूंद स्वांती, सर सरोवर इशनान कराने। अन्तिम वेले पुच्छे वाती, दरगहि साची माण दवाने। ना कोई पिता ना कोई माती, जगत झूठे भैण भ्राने। एका नर हरि पुरख बिधाती, जन भगतां बन्ने हथ्थीं शब्द गाने। साची देवे नाम दाती, लक्ख चुरासी गेड़ कटाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथी सगला साथी, आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत सुहेला साचा मेला दो जहाने। दो जहानी मेल मिलांयदा। शब्द मारे तीर कानी, गुरमुख सोया आप जगांयदा। अमृत देवे आत्म पाणी, काया ठंडी ठार रखांयदा। साची देवे शब्द बाणी, नाद धुन इक्क उपजांयदा। प्रभ जोती साची राणी, गुरमुख लाड़े नाल ब्याहिंदा। साचा मेल इक्को हाणी, विछड़ कदे ना जांयदा। शब्द चढ़े साचा तेल, जन भगतां सिरों वारे पाणी, फूलन सिहरा सीस गुंदांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड धन धनी कौस्तक मणी गुरसिक्खां मस्तक तिलक लगांयदा। कौस्तक मनी तन श्रृंगार। प्रभ अबिनाशी लाए वारो वार। सिँघ सिँघासण बैठ सच्ची सरकार। लक्ख चुरासी अन्तिम नासन, जन भगतां पाए साची सार। मिले मेल पुरख अबिनाशन, शब्द बन्ने सीस दस्तार। निज घर आत्म रक्खे वासन, बेमुख लभ्भण अन्दर बाहर। जन भगतां करे मानस जन्म रासन, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़। जुगा जुगन्ती दास दासन, बैठा रहे दर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं बन्ने धार, कर्म कमांयदा। कोई ना पावे सार, सतिजुग साचे जन्म दवांयदा। शब्द रक्खे तिक्खी धार हरि करतार, खण्डा आपणे हथ्थ रखांयदा। वेख वखाणे दर द्वार, आप बणाए आपे ढाहिंदा। ना कोई जाणे जीव गंवार, केहड़े धाम हरि रहांयदा। तिन्नां लोआं पावे सार, आपणा भेव आप छुपांयदा। लक्ख चुरासी कर उज्जयार,

जोती नूर इक्क वखांयदा। पवण स्वासी कर विचार, पवण उनन्जा काया मण्डल विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां साचा माण दो जहान आपे आप दवांयदा। दो जहानां वाली बणत बणांयदा। जन भगत सुरत संभाली, सेव कमाई लेखे लांयदा। माया तोड़े जगत जंज़ाली, फल लगाए साची डाली, अमृत मेवा इक्क खवांयदा। जगत पित चाल निराली। कलिजुग दिसे घटा काली, चन्द सूरज दोए मात चढ़ांयदा। गगन मस्तक साची थाली, जोती नूर इक्क अकाली, तिन्नां लोकां अकार कांयदा। कलिजुग सतिजुग दर दरबार सच्ची सरकार, लाड़ी मौत नाल रलाई, वेख वखाणे सर्ब कुछ जाणे, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई तणदी ताणा, ना कोई जाणे गुण निधाना, आपे घड़े अन्दर वड़े, आपे अन्त मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख लगाए साचे लड़े पल्लू नाम इक्क फड़ांयदा। पल्लू नाम इक्क फड़ाया। सच्चा दाम प्रभ झोली पाया। पूर कराए आपणा काम, निहकलंकी भेख वटाया। राम रहीमा एका राम, नूरी जोती जोत उपजाया। ना होए अन्धेरी राती शाम, सन्झ सवेर इक्क कराया। हड्ड नाड़ी ना कोई चाम, बत्ती धार ना सीर मुख चुआया। नर हरि एका एक रमईआ राम, जोती नूर शब्द समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा मात धर, आप आपणा भेव छुपाया। जोती जामा हरि निरँकार है। गुरमुखां पाए साची सार है। तिन्नां लोआं बन्न्हे एका धार है। चौथे घर खोल्हे दर, गुरमुख साचे वेख विचार है। पंजवें घर जोत होए, एका नूरी चानण होए, शब्द धुनी अनहद धुन नाद है। छेवे घरं हरि खलोए, अमृत धार निझर चोए, पवण स्वासी चरन दासी जाणे रंग करतार है। सतवें घर प्रभ अबिनाशी कर जोती नूरा, एका हरि सति सरूपा वडा भूपा, शाहो शहाना शाहकार है। सतवें घर हरि बनवारी। रूप रंग ना रेख भेख, ना कोई वेखे खेल मुरारी। छेवें घर लिखे लेख, पवण शब्दी जोत अधारी। पंजवें घर रिहा वेख, गुरूआं पीरां पैज संवारी। चौथे अन्दर नेत्र पेख, आत्म जोती शब्द धुनी साची देवे इक्क धुन्कारी। जन भगत पुकार हरि जी सुणी, पंजवें अन्दर आया बाहरी। लक्ख चुरासी छाणी पुणी, फल ना दिसे किसे डारी। वड दाता हरि वड गुण गुणी, वेख वखाणे गुप्त ज़ाहरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त, गुरमुखां बणाए साची बणत, देवे माण सच दुआरे। किरपा धारे वारो वारी। किरपा धार धार बन्न्हांयदा। नर निरँकार सच्ची सरकार, सिँघ सिँघासण डेरा लांयदा। वेख वखाणे करे विचार, आपणा भेव वड देवी देव आपणे हथ्थ रखांयदा। ना कोई जाणे नर नार, गुरमुख साचे संत जनां प्रभ साची सेव लगांयदा। सोलां कर तन शृंगार, साची सेजा आप बहांयदा। गुरमुख नारी हरि भतारा, साचा कन्त मीत मुरारा, साचा संग निभांयदा। आत्म खोल्हे

बन्द कवाड़ा, नाम गाड़ा प्रेम रंगण रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बहत्तर नाड़ा एका रंग, सच्चा संग आपणा आप निभांयदा। साचा संग आप निभाया। सिँघ पाल वड प्रताप, सोहँ जपया साचा जाप, चरन कँवल उप्पर धवल सीस झुकाया। पुरीआं लोआं गया मवल, रंग अवल्लड़ा प्रभ रंगाया। प्रभ अबिनाशी आप टिकाया। नाभ कँवल, कँवल मुख अमृत धार दे झिराया। ना कोई वेखे रंग काला पीला सँवल, जोती नूर सति सरूर सर्बकला भरपूर, एका रंग हरि रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दित्ता वर, ब्रह्मलोक धाम सुहाया। ब्रह्मलोक धाम न्यारा। आपे वेखे हरि हरि सिरजनहारा। सृष्ट सबाई लिखे लेखे, बणाए ढाए कर उसारा। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम इक्क सुहाया, गुरमुख साचा दए बहाया, नां लगाए इक्क चुबारा। पाल सिँघ तेरी सेव वड वड्याई। मिल्या हरि वड देवी देव, लोकमात बणत बणाई। जपया जाप रसना जिहव, भुल्ल रहे ना राई। लग्गा फल साचा मेव, पिता पूत एका जोत समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म कलि जोती नूर सति सरूर देवे माण चरन सरनाई। सरन सरनाई आप रखाया, हरि धरनी धरन, मरन डरन गेड़ चुकाया। मिल्या नर वरनी वरन, करनी करन कलि खेल कराया। खोल्हे दर वड दरनी दरन, वड भण्डार इक्क रखाया। आत्म झोली हरि भरन, भरन तोट कदे ना आया। आपे खोल्हे हरनी फरन, तीजे नेत्र लोयण दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक साचा धाम अन्त सुहाया। अन्त संत भगवन्त मेल मिलांयदा। मिल्या मेल कन्त जन्त, साचा नाता मात जुड़ांयदा। जीव जन्त साध संत, जुगा जुगन्त पैज रखांयदा। मात बणाए साची बणत, पिता पूत एका धागा एका सूत, शब्द डोर नाल बन्न्हांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वारो वारी रिहा तोर, अग्गा पिच्छा किसे नज़र ना आंयदा। पिच्छा अग्गा ना कोई जाणे। काया तुट्टे अन्तिम तग्गा, भुल्ले जीव निदाने। माया ममता मोह झूठा लग्गा, मात पित ना कोई भैण भ्राने। एका दाता हरि सूरा सरबग्गा, दरगहि साची देवे माणे। चरन सरन सच सरनाई जो जन लग्गा, आवण जावण फंद कटाणे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्न्हाए शब्द हथ्थीं सच्चे गाने। पाल सिँघ कर त्यारी। मारी इक्क शब्द उडारी। मिल्या जोत हरि निरँकारी। ब्रह्मलोक मिली सच्ची सरदारी। पिता पूत हरि पैज संवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा नूर धर, काया मन्दिर साचे अन्दर डूंघी कन्दर तोड़ जन्दर, आत्म सेजा आसण लाया भारी। आत्म सेजा आसण लाया। शब्द नेजा हथ्थ उठाया। नेत्र तीजा खोल्ह वखाया। आप खलोए दर दहलीजा, पड़दा उहला सर्ब चुकाया। गुरमुख आत्म तन मन सीजा, काया ठंडी ठार

कराया। शब्द बीज साचा बीजा, नाद धुन इक्क उपजाया। आपे करे मात रीझा, पूत सपूता दे वड्याआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवण जावण जगत जहान, हरि भगवान आपणे हथ्थ रखाया। पूत सपूता हरि बणत बणाई। नार कन्त ना जाणे राई। साध संत ना भेव पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती साचा नूर, बज़र कपाटी कीनी दूर, काया मन्दिर विच टिकाई। काया मन्दिर हरि सुहाया। अन्दरे अन्दर डेरा लाया। नूर उजाला गुर गोपाला, भगत दयाला आप अख्वाया। एका रक्खया शब्द दुशाला। धर्म राए दा लाहे पाला, गुरमुखां हरि तन पहनाया। जगत अवल्लड़ी चल्ले चाला, शब्द वजाए साचा ताला, सुर ताल राग रंग ना कोई रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती नूर कर, वेख वखाणे सच घर, साचे मन्दिर डेरा लाया। साचा धाम इक्क अस्थूल। जिथ्थे वसे कन्त कन्तूहल। सच सिँघासण हरि बिराजे, ना कोई पावा ना कोई चूल। प्रगट होया देस माझे, लक्ख चुरासी गई भूल। आप संवारे आपणे काजे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि सच कन्तूहल। ब्रह्मलोक हरि पैज संवार। तीजे घर वेख विचार। सुरपति राजे इन्द, प्रभ पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्ने आपणी धार। राज इन्द हरि आप जगाया। वड दाता गुणी गहिंद, साचा हुक्म इक्क सुणाया। लोकमात उपजी साची बिन्द, पूत सपूता भाग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण सर्ब सुख आसण, एका डेरा आप रखाया। आए दर हरि दरबार। राजा इन्द कर विचार। नर हरि गुणी गहिंद, अन्तिम कलि लोकमात लए अवतार। इक्क रखाए निहचल धाम अटल, पुरीआं लोआं करे ख्वार। जोती जामा वल छल, गुरमुखां रिहा पैज संवार। जन भगतां जाए बलि बलि, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत तेरी रिहा पैज संवार। मनजीत सिँघ हरि पैज रखाई। पुरी इन्द्र मिली वड्याई। सुरपति राजा इन्द हरि सरनाई। सदा सदा सदा बख्शिंद, आत्म चोला मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्नां लोआं कर अकार, शब्द जैकार इक्क कराई शब्द जैकारा इक्क कराया। सोहँ नाअरा गुरसिख लगाया। करोड़ तेतीसा करे निमस्कारा, हरि हरि साचे सेवा लाया। मातलोक आए दौड़ा, देवे वर हरि रघुराया। प्रभ चरन लाग जाईए तर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। आवण जावण चुक्के डर, जोती मिल्या हरि भतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि कुलवन्ते, पूरन भगवन्ते पाई साची सारा। इन्द्रपुरी धाम सुहेला। ना कोई जाणे जीव जगत दुहेला। पारब्रह्म अचरज़ खेला। सति पुरख निरँजण जोत अपारी हरि निरँकारी, वेख वखाणे गुर चेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी बाण इक्क रखाए शब्द आण, बणया रहे सज्जण सुहेला। सज्जण सुहेला हरि मुरार। करे

६३५ ०४

मेल साचा मेला विच संसार। नौ बारां अठारां तीस, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला। मिटे भेव राग छतीस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाण पछाणे वसे धाम इक्क इकेला। साचा धाम हरि सुहांयदा। पूरन करे आपणा काम, शिव शंकर चरन ध्यान लगांयदा। सुक्का काया झूठा चाम, हरया कोई ना मात करांयदा। प्रभ दर कोई ना लग्गे दाम, अमृत इक्क बरसांयदा। इक्क प्याए शब्द जाम, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नील कंठ बसन बनवारी, अन्तिम मेल जोती आप मिलांयदा। नील कंठ कर त्यारी। चौथे जुग आई हारी। प्रगट होया नर निरँकारी। पुरीआं लोआं करे फिर उसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ जगदीश छत्र झुले मात सीस आई अन्तिम कलि वारी। छत्र साचा सीस झुलाउणा। गुरमुख साचे साचा ताज जगत राज हथ्थ रखाउणा। आप रखाए गुर संगत लाज, चार कुन्ट पए भाज, मात पित किसे हथ्थ ना आउणा। धुरदरगाही साचा माही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दर निर्मल घर गुरमुख साचे दर दुआरे दर्शन पाउणा। साचा दर सच दरबारा। लक्ख चुरासी नाता तुट्टा मोह, गुर मन्दिर सोहे दुआरा। हरि जन मस्तक धूढ़ी जाए छोह, लक्ख चुरासी उतरे पारा। सिँघासण लाउणा छब्बी पोह, जगे जोत अगम्म अपारा। करे खेल वाली जहानां दो, नर नरायण हरि निरँकारा। अवर ना जाणे जीव को, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए जन भगतां सारा। हरि विछोड़ा हरि जन जाणे, बिरहों रोग संताप। आत्म जोती जो सुख माणे, ना जाणे जगत मात पित माई बाप। माणक मोती साचे चन्द चढ़ाणे, लोकमाती उतरन कोटन पाप। हरिजन दिसण वांग महिताब। हरि वक्त सुहाए आपणा आप। तन पहनाए शब्द बाणे, शब्द जपाए साचा जाप। किसे वक्त हथ्थ ना आए राजे राणे, जन भगतां थापणा रिहा थाप। अन्तिम लाड़ी मौत खाणे, लक्ख चुरासी रही कांप। हरि रंग गुरमुख विरला माणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन गोद बिठाए आप। हरि विछोड़ा गुरमुख धारी। गुर गोबिन्द चरन जोड़ा, शब्द तन सच श्रृंगारी। घर साचा एका लोड़ा, निहकलंक नरायण नर जोत निरँकारी। लोकमाती नाता तोड़ा, छड्डया जोड़ हरि गिरधारी। एका मिल्या शब्द घोड़ा, साचा घर महल्ल अटल्ल अटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए, तिन्नां लोआं दर दरबारी। हरि विछोड़ा बिरहों रोग। कलिजुग वक्त रहि गया थोड़ा, अन्तिम होए मात सोग। सतिजुग साचे मिल्या जोड़ा, लिख्या लेखा धुर संजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे गुरमुख चरन सरन रस साचा लैण भोग। हरि विछोड़ा औखी घाटी। काया दिसे झूठी माटी। राउ रंकां चोली पाटी। दर दर फिरन मंगण हाटी। गुरमुख साचे मात तरन, प्रभ लपेटे शब्द पाटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर बहाए अग्गे वखाए नेड़े वाटी।

६३६ ०४

❋ २७ कत्तक २०११ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे प्रेम सिँघ दे गृह ❋

जोती नारी गुरमुख कन्त सुहागया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, वेख वखाणे गुरमुख जाणे जाण पछाणे आत्म धोए दागया। साचा रंग इक्क चढ़ाणे, जोती जोत सरूप हरि, सरन चरन जो जन लागया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सोया मात उठ उठ जागया। जोती नार तन शब्द श्रृंगार। सोलां कलीआं वेख विचार। जोती जोत सरूप हरि, साचा सीस आप गुंदाए गुरमुख प्रनाए साची नार। साचा सीस आप गुंदाया। सच जगदीश खेल रचाया। ना कोई जाणे मूसा ईसा, कुरान अंजीली भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती नारी इक्क प्यारी, शब्द रक्खे तन श्रृंगारी, सोहणी सेजा आसण लाया। सोहणी सेज हरि द्वार। जोती राणी पुरख भतार। दो जहानी वज्जे शब्द सितार। जन भगतां पड़दे कज्जे, लोकमाती मारे झाती, दिवस राती पावे सार। हरिजन निभाए चरन नाती, जोती दिसे इक्क इकांती, अमृत धार ठंडी ठार। इक्क प्याए बूंद स्वांती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरख निरँजण सदा सुहागण एका नार। जोती नारी जिस प्रनाई। दुहागण रात मात ना आई। सेज सुहागण इक्क हंढाई। अट्ठे पहर दिवस रैण रिहा जाग, साची सेवा रिहा कमाई। गुरमुखां पूरन वड वडभाग, चरन प्रीती एका लाई। अन्तिम बुझे तृष्ना आग, सांतक सति करे आत्म जोत धरे रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख निरँजण साची जोती गुरमुख तेरे नाल व्याही। हरि जोती शब्द अधार है। एका शब्द सच्ची सरकार है। तीजा पुरख सबाई सृष्टी एका नार है। आत्म दर वजदी रहे वधाई, अनहद धुनी सच्ची धुन्कार है। गुरमुख गाउँदा रहे चांईं चांईं, नरायण नर सच्चा भतार है। होए सहाई सभनीं थाँईं, मानस जन्म रिहा संवार है। कलिजुग पार लँघाए फड़ के बाहीं, पुरी घनक ल्या अवतार है। सदा रक्खे ठंडी छाईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलकार है। वड बली बलवान, हरि हरि निरंकारया। वज्जे सच्चा बाण, बज़र कपाटी चीर वखा रिहा। वड दाता चतुर सुजान, जोती खेल अपर अपारया। धारे भेख श्री भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचे लेखे आप लिखा रिहा। एका देवे शब्द दान, नाम झोली हरि भरा रिहा। एका रक्खे आपणी आण विच जहान, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। ना कोई भुल्ले जीव निधान, लक्ख चुरासी बणत बणा रिहा। दरगहि साची देवे माण, गुरमुख साचे संत जनां साचा रंग वखा रिहा। लोक माती छुट्टे पीण खाण, अमृत फल इक्क खवा रिहा। फल लगाया सच्चे डाहण रसना रस सोहँ शब्द हरि चवा रिहा। जन भगत होया वस, राह साचा रिहा दस्स, वासी पुरी घनक लोकमाती जोत जगा रिहा। बेमुख दर तों जायण नस्स, गुरमुखां हिरदे जाए वस, चरन प्रीती इक्क निभा रिहा। लक्ख चुरासी रैण अन्धेरी

मस्स, गुरमुखां आत्म जोत प्रकाश कोट रवि ससि, दीपक साचा इक्क जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती नारी शब्द उडारी, गुरमुक्खां मेल मिला रिहा। जोती नार शब्द उडान है। लोकमाती कर ध्यान हरि भगवान गुरमुखां मेल मिलाण है। आत्म देखे चतुर सुजान, शब्द देवे सच्चा दान, साची झोली हरि भरान है। आपे गोपी आपे कान्हा, दूसर ना कोई विच जहान है। जन भगतां देवे माण गुण निधान, झुलदा रहे सदा इक्क निशान। पंचम् पोह वेख वखाणे निहकलंक बली बलवान, करे खेल मात महान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साधां संतां गुरूआं पीरां गहर गम्भीरां मारे आत्म तीर रसना खिच्च कमान है। रसना खिच्च कमान तीर चला रिहा। पंचम् पोह चार कुन्ट दहि दिश प्रभ अबिनाशी घट घट वासी सर्ब कुछ वेख विखा रिहा। निहकलंक मात जोत प्रकाशी, मेट मिटाए मदिरा मासी, सोहँ खण्डा शब्द डण्डा हथ्थ उठा रिहा। प्रगट होए घनकपुर वासी, तीर कमान ना हथ्थ उठा रिहा। भारत खण्ड जोत प्रकाशी, सत्त दीप नौ खण्ड एका धार बन्हा रिहा। वेख वखाणे पंडत काशी, वेद पुराना माण चुका रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह लिख्त लेख वाली हिन्द तेरे दर पुजा रिहा। पंचम् पोह बणे लिखारा। उसरे महल्ल इक्क अपारा। देवे वार वारो वारा। राजे राणयां कर ख्वारा। शब्द रक्खे तिक्खी धारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। प्रगट जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा। मेट मिटाए वरन गोत, चार कुन्ट होए धुंदूकारा। सच जोत निरालम, सिँघ शेर शेर सिँघ सच्ची सरकारा। जन भगतां दुरमति मैल रिहा धोत, अमृत पाए काया करे ठंडी ठारा। लक्ख चुरासी रही रोत, हथ्थ ना आए नैण मुँधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीश तेरा मात बणाए इक्क सच्चा चुबारा। वाली हिन्द हरि जणाया। साचे मन्दिर नींह रखाया। जोत जगाणी अन्दरे अन्दर, गुरूआं पीरां खिच्च बहाया। काया दिसे डूंघी कन्दर, साचे मन्दिर जोत सवाया। अट्ठ सट्ठ तीर्थ भौंदे बन्दर, सच्चा राह किसे हथ्थ ना आया। पंचम् पोह धरत मात तेरा तोड़े जन्दर, आपणी हथ्थीं खेल रचाया। ना कोई जाणे गोरख मच्छन्दर, उचे टिल्ले आसण लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सुरत संभाल ना बण कंगाल, निहकलंक साची जोत जगाया। साची जोत करे उज्जयारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। पंचम् पोह दिवस विचारी। कलिजुग जीव ना जाणे को, पुरीआं लोआं पावे सारी। जगत नाता झूठा मोह, अन्तिम जाए बाज़ी हारी। गुर चरन सरन जन जाए छोह, मानस जन्म जाए पैज संवारी। होए सहाई जहानी दो, अग्गे पिच्छे पिच्छे अग्गे हरि शब्द सवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करे साची कारी। सच विहार कराउणा। कर जोत अकार शब्द धार इक्क रखाउणा। वेख वखाणे सर्ब संसार, शब्द मारे डाहढी मार, राज राजान शाह

सुल्तान तख्तों लाह बहाउणा। ना कोई झुल्ले मात निशान, कलिजुग अन्तिम लेख लिखाउणा। प्रगट जोत श्री भगवान, एका झण्डा धर्म उठाउणा। सत्तां दीपां देवे माण, नौवां खण्डां हरि चरन लगाउणा। सोहँ चले एका बाण, चार कुन्ट चार वरन अठारां बरन हरि इक्क कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह साचा दिवस खुशीआं नाल मात मनाउणा। पंचम् पोह करे त्यारी। लक्ख चुरासी जिस करनी पारी। बेमुख जीव करन हासी प्रगटे जोत नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनक पुर वासी आपणी हथ्थीं हरि करे आप उसारी। पंचम् पंचम् पंचम् जगत वड्याईआ। पंचम् जेठी लए अवतार, लोकमाती पुरख बिधाती जोत जगाईआ। काया मन्दिर बैठा रहे इक्क इकांती, भैणां भाईआं सार ना पाईआ। जन भगतां मिल्या पुरख बिधाती, दर दर घर घर जाए आत्म कुण्डा लाहीआ। देवे दरस जोत जगाए, सावण सुन्दर रूप वटाईआ। अचरज खेल हरि रघुराईआ। माता ताबो सिँघ जवंद, भोले भाओ गुर गोबिन्दा साचा दर सुहाईआ। देवे वड्याई गुरमुख वधाई, छब्बी पोह देह तजाईआ। अवर ना जाणे को, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज़ खेल जन भगतां मेल आपणा आप कराईआ। छब्बी पोह देह तजाई जगत तुट्टा मोह, छड्डे भैणां भाईआ। तिन्नां लोकां पाए सो, एका जोत जगे रघुराईआ। बेमुख जीव कोए ना सके छोह, गुरमुखां रिहा बणतष बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीशा बीस इकीसा, एका छत्र रिहा सीस झुलाईआ। छब्बी पोह तन तजाया। लक्ख चुरासी देणा डन्न, शब्द घोड़ा इक्क रखाया। जो घड़या सो देणा भन्न, आउण जाणा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख साचे सुणना कन्न, मानस देही उत्तम फल , साचा मेवा मात लगाया। जन भगतां मिल्या साचा हरि आत्म जाए मन। लक्ख चुरासी फंद कटाया। बेमुख जीव कलिजुग अन्नॄ, नर हरि हरि नर भेव किसे ना पाया। गुरमुख साचे रसना कहण धन्न धन्न धन्न, भाण्डा भरम हरि भन्नाया। लोकमात चढ़ाए साचे चन्न, पंचम् पोह नींह रखाया। लेखे लग्गा सच्चा तन, मात कुक्ख मिल्या सुख लोकमाती सुफ़ल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा लाहे दुःख, कर दरस उतरे भुक्ख, छब्बी पोह इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक बैकुण्ठ धाम एका थां दए वखाया। छब्बी पोह हरि बणत बणाउणी। पंचम् पोह धार रखाउणी। शब्द घोड़े हो अस्वार, गुरमुखां वेखे वारो वार, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, एका जोती राम जगाउणी। धरत मात चार कुन्ट खिच्चे कार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण एका सार रखाउणी। गुरमुख विरोले जिउँ छाछ मक्खण, लक्ख चुरासी छाण वखाउुणी। जूठे झूठे भाण्डे सक्खण, गुरमुखां आत्म अमृत धार ठंडी ठार आप वखाउणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी कटे गेड़ा, धर्म राए तेरा छुट्टे झेड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत इक्क

बणाउणी। साची बणत हरि बणांयदा। जीव जन्त साध संत भगत भगवन्त वेख वखांयदा। जन भगतां मिले साचा कन्त, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी विच मात लगांयदा। पंचम् पोह कर त्यारी, छब्बी पोह पूर उसारी, साचा धाम आप सुहांयदा। सतारां हाढ़ी वेखे वाड़ी, आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी, गुरमुखां रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, सच्चा पल्ला नाम फड़ांयदा। शब्द घोड़े जाए चाढ़ी, नेड़ ना आए मौत लाड़ी, जगे जोत बहत्तर नाड़ी, शब्द नाद इक्क वजांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, लक्ख चुरासी जम की फाँसी, लोकमात मार झात अन्तिम अन्त कटांयदा। लक्ख चुरासी देवे कट, हरि साची बणत बणाया। ना कोई जाणे तीर्थ तट्ट, वसे घट घट, लेखा लिख्त रिहा लिखाया। वेख वखाणे काया मट, जगे जोत लट लट, शब्द लपेटे साचे पट, ताणा पेटा इक्क रखाया। इक्क खुल्लाए साचा हट्ट, गुरमुख लाहा लैण खट्ट, दूई द्वैती मिटे फट्ट, सतारां हाढ़ी मिले मात वड्याआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे नाम पूर कराए काम, दर मन्दिर काया इक्क सुहाया। काया मन्दिर इक्क सुहावणा। दीपक जगे अन्दरे अन्दर, पंजां चोरां डन्न लगावणा। साचे घर तोड़े जन्दर, दूई द्वैती पड़दा लाहवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ लक्ख चुरासी गुरमुख फंद कटावण। तिन्न पंज सत्त नौ बारां पन्दरां अठारां इकीस चौबीस सताईस संग लाउणी तीस। प्रभ अबिनाशी भेव चुकाई, जाणे राग छतीस। नारद मुन रिहा समझाई, चुक्के भेव बीस इकीस। साची जोत करे रुशनाई, प्रगट होए जगत जगदीश। झूठा नाता मात पित भैणां भाई, अन्तिम जाणा मात पीस। एका हरि सच्ची सरनाई, छत्र झुल्ले सदा सीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण करे कलि तेरी रीस। कल कल कल प्रभ धारी। वसे निहचल धाम अटल्ल, अटल अटला नींह उसारी। जगत कराए वल छल, वल छल छलीआ खेल अपारी। गुरमुख साचे सच दुआरा लैणा मल्ल, मिले मेल हरि बनवारी। आप लगाए साचा फल, काया अमृत आत्म सिंचे इक्क क्यारी। गुरमुख साचे आयण चल, वेखण धाम सच्चा राम छत्र झुल्ले इक्क अपारी। मावां पुत्तरां जगत विछोड़ा दूई द्वैती मिटे सल, काया होए ठंडी ठारी। इक्क वखाए जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, जगे जोत घड़ी घड़ी पल पल, छब्बी पोह करे शब्द अस्वारी। गुरमुखां दुरमति मैल रिहा धो, सिँघ पाल पैज संवारी। लक्ख चुरासी रही रो, कोई ना पावे कलिजुग सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम बहाए, खिच्च ल्याए वारो वारी। दर दुआरे एका वारे, शब्द अस्वारी पवण अधारी जोत निरँकारी पावे सार। तिन्नां लोआं वसे बाहर। नूरी जोत कर अकार, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपे गुणीआं साचा शायर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जोधा सूरबीर बहादर , बेमुखां दिसे एका कायर। सूरबीर

बहादर एका बनवारया। करे खेल करता कादर, निर्मल कर्म होए उजागर, गुरमुखां बणया सच सुदागर, कराए साचा वणज वपारया। जोत जगी काया गागर, अमृत भरया सिन्ध सागर, चल्ले धार अपर अपारया। मिल्या मेल हरि रत्नागर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पाल हो दयाल, हथ्थ फड़ाए साचे लाल, वारो वारी साचे धाम सुहा रिहा। साचा धाम आप सुहाया। जोती नूरा जोत सवाया। कोटन भाना गुण निधाना चतुर सुजाना दिस ना आया। सर्ब ज्ञाना वड ध्याना, पवण बबाणा शब्द उडाना, जोती राणा इक्क रखाया। कृष्ना कान्हा नैण मुधाना, साँवल सुन्दर कँवल नैण मधुर बैन, कुण्डल सीस ना कोए रखाया। जन भगतां बणे साक सज्जण सैण, लहिण देण मात चुकाया। रसना सके ना किसे कहण, दरस पेखे जो जन नैण, तीजा लोयण हरि खुल्हाया। बेमुखां खाए लाड़ी मौत डैण, गुरमुखां प्रभ गोद उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगाध बोध बोध अगाध, शब्द लेख जन भगत वेख, विच मात सच दात वस्त नाम झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सोहँ साचा अमृत आत्म जाम पिलाया। ना कोई रक्खे घोड़ हस्त, ना श्रृंगारे तन बस्त, खण्डा फड़े ना कोई दस्त, जोती खेल रचाया। गुरमुखां रक्खे सदा मस्त, रंगण नाम इक्क चढ़ाया। साचा जाम हरि पिलांयदा। कोई ना लाए दाम, मिटाए अन्धेरी शाम, दीपक जोती इक्क जगांयदा। पूर कराए काम, सोहँ
६४१ ०४ बख्शे साचा नाम, दो जहानी पैज रखांयदा। सुक्का हरया करे काया चाम, अमृत प्याए साचा जाम, तन रोग जगत विजोग ६४१ ०४
सर्ब मिटांयदा। गुरमुखां देवे अमृत आत्म रस साचा भोग, जगत तृष्ना हरि मिटांयदा। एका देवे दरस अमोघ, नेत्र नैण लोयण एका धार वखांयदा। लिख्या धुर सच्चा संजोग, एका सेजा कन्त प्यारी साची नारी, शब्द सुहागण वड वडभागण साची सेज बहांयदा। गुरमुख साचे प्रभ चरन लागण, दिवस रैण जागण, मात पित भाई भैण त्यागण, एका नाता चरन जुड़ांयदा। आप बणाए हँस कागन, इक्क सुणाए साचा रागन, जन भगतां धोए पिछले दागन, पूर्ब लेखा हरि चुकांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, खाधे बेर सन्झ सवेर पंचम् वेर, साचे फल साचे डाल लगांयदा। साचे फल लगाए डाल। काया सुहाया एका ताल। अमृत भरया नाम जलाल। गुरमुख मारे पहली छाल। सुच्चा मिले अनमुल्लड़ा लाल। अन्त काल ना खाए काल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिहा सुरत संभाल। हरि चरन जो जन ध्यान लगांयदा। हरि चरन जो जन मन टिकांयदा। हरि चरन जो जन तन सेव कमांयदा। हरि चरन जो जन एका धार कर विचार, दु:ख भुक्ख भेंट चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात कर उज्जल मुख बणत बणांयदा। एका किया चरन ध्याना। अट्ठे पहर रसना गाए, गुणवन्त गुण निधाना। जीव जन्त कोई सार ना पाए, गऊ ग़रीबां मारन

ताअना। कवण बेड़ा पार कराए, किरपा कर श्री भगवाना। जगत उखेड़ा रिहा लगाए, तुट्टा माण ताणा। नगर खेड़ा कौण वसाए, काया महल्ल होया वैराना। माया झेड़ा कौण चुकाए, बैठी विच उजाड़ बीआबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम दान दे दरस मिटे हरस, चरन धूढ़ सचा इशनाना। मंगे चरन धूढ़ दिवस रैणया। जीव जन्त की जानण मूढ़, प्रभ दरस लोचण नैणयां। आत्म काया रंग रहे गूढ़, मिली राम नाम इक्क रसैणया। मस्तक मंगे चरन धूढ़, चरन कँवल साची बहिणया। मंगे धूढ़ी कर पुकार काया रंगे नाम रंगण गूढ़ी, भुक्खी भीलणी तिक्खी धार। ना कोई जाणे मुनी रिखी आत्म कुरलाणी, दए दुहाई हरि रघुराई कर विचार। मिट्ठा कौड़ा दिसे पाणी, ग़रीब निमाणी बेरीआं बेर खाणी, अट्ठे पहर रहे उधार। चतुर सुजान ना सुघड़ स्याणी, जीव जन्त कहण गंवार। तेरे चरन सरोवर मंगां इक्को पाणी, देणा दरस राम अवतार। आत्म कुरलाए दए दुहाए, राम प्यारा भगत उधारा, कवण मिलाए शब्द सुणाए इक्क जैकारा। सुत्या रैण समां सुहाए, करे दरस हरि निरँकारा। दर दुआरा आण सुहाए। उठे भीलणी मन करे विचारा। कवण भेंट प्रभ अग्गे चढ़ाए, वेख वखाणे झाड़ी झाड़ा। तोड़ बेर झोली पाए, प्रभ अबिनाशी जाणे बहत्तर नाड़ा। तिन्न सौ सट्ठ हाडी विच समाए। जन भगत लडाए आपे लाडी, ऊँच नीच ज़ात पात ना कोई रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां रिहा बणत बणाए। किरपा करी राम अवतारी। आया चल्ल दर द्वारी। भीलणी वेख खुशी अपारी। नेत्र पेखे चढ़ी खुमारी। अग्गे डाही बेरां खारी। प्रभ अबिनाशी कीनी इक्क प्यारी। आत्म जोती नूर उजाला, शब्द मारी तेज कटारी। दरस दिखाया गुर गोपाला, मिल्या मेल बसन बनवारी। झूठा पड़दा लाहया काला, काया मन्दिर जोत उज्जयारी। धुरदरगाही मिल्या सच दलाला, मानस देही पैज संवारी। जोती जोत सरूप हरि, पंज बेर पहली वेर आपणी मुट्ठ रखा ली। पंज बेर हरि हत्थ उठाए। पहला आपणे मुख लगाए। लग्गे भोग मिटे जगत विजोग, भीलणी दुःख मिटाए। जन भगतां लिख्या धुर संजोग, रसना रस भोग दए खवाए। जोती जोत सरूप हरि, चारे फ़ल साचे डाल अन्तिम कलि आण लगाए। साचा फल दर परवान। खुशी होए हरि भगवान। देवे वर वड मेहरबान। जगत भीलणी गई तर, मेटे आवण जाण। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, दरस दिखाउणा फेर जहान। जोती जोत सरूप हरि, लिख्या लेख वक्त पछाण। साचा लेखा राम लिखईआ। त्रेता द्वापर जोत मिलईआ। कलिजुग चलाए साची नईआ। निहकलंकी जोत जगईआ। मानस देही सच स्नेही, द्वार बंकी आण सुहईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणा खेल आपे जाणे ना कोई जाणे भैणां भईआ। मग्गया वर चरन दुआरे। मिले मेल दूजी वारे। लोकमात हरि जामा धारे। कलिजुग अन्तिम पैज संवारे। साचे फल साचे डाले। चौथे जुग

चार अपारे। पंचम् डिग्गा धरत मात मुख उग्घाड़े। लिख्या लेख वेद रिग्गा अथर्बण आए पाए सारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी गेड़ निवारे, साचा गेड़ा हरि चुकांयदा। जूठा झूठा जगत झेड़ा, अन्तिम वेले बन्ने बेड़ा, आपे पार करांयदा। झूठा दिसे काया खेड़ा, आप बणाए आपे ढाहिंदा। पंचम् जेठ करे निबेड़ा, कलिजुग जीव भेव ना पांयदा। आवण जावण जगत गेड़ा खुल्ला वेहड़ा, ना कोए पार करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दा करे निबेड़ा, विच विचोला पड़दा उहला ना कोई रखांयदा। जगत विचोला ना कोई रखाया। शब्द बोला इक्क कराया। हरि साचे पूरा तोल एका तोला, वाध घाट ना कोई जणाया। प्रभ चरन दुआरे एका डोला, शब्द बबाणा इक्क रखाया। काया दिसे झूठा चोला, आदि अन्त किसे रहण ना पाया। जीव निमाणा आला भोला, माया ममता फंद फसाया। धर्म राए दा होया गोला, आत्म अन्धेरी कंध रखाया। गुरमुखां सुणया शब्द ढोला, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ तेरे दर साचे घर मिल्या वर, जगत बोला इक्क विहाया। जगत खेल हरि बनवारया। संत मनी सिँघ साचा मेल, जन्म दवाया दूजी वारया। शब्द चढ़ाया साचा तेल, नाम मैहन्दी रंगण रंग रंगाया। आपे गुर आपे चेल, गुर गोबिन्दा वक्त सुहाया। अचरज पारब्रह्म कलि खेल, भेव किसे ना पाया। भीलणी मिल्या साचा मेल, निहकलंक चरन प्रीती सेव कमा लया। आप कटाए धर्म राए दी जेल्ह, जगत जीती नाम रखा लया। बणे साचा सज्जण सुहेल, काया अतीती इक्क रखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ तेरे सच दुआरे, साची सेवा लेखे ला रिहा। साची सेवा लेखे लाई। काया डाल लगा फल अमृत मेवा, मिट्ठत रस रसना गुर संगत दए खवाई। देवे वड्याई वड देवी देवा, साचे धाम दए बहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गुर गुर चरन कौर अड्ड कत्तक जोती मेल मिलाई।

✻ २८ कत्तक २०११ बिक्रमी बेबे वीरो दे अन्तिम समें नवित्त पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

पंचम् जेठ सच विहारा। सति पुरख निरँजण साची धारा। नेत्र नैण चरन धूढ़ साचा अंजन, चरन सरन सच्ची सरकारा। सच दुआरे साचा मजन, अमृत बरखे ठंडा ठारा। आदि जुगादी पड़दे कज्जण, जोती खेल कृष्न मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाण वखाणे, जीव जन्त बेमुहाणे, ना कोई पावे सारा। जीव अञ्याण सार ना पांयदा। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण विच जहान, पूर्ब कर्म लेख लिखांयदा। इक्क रखाए शब्द आण, झूठा भेख ना कोई जणांयदा।

दर घर मिलदा साचे माण, साचा फल हरि आप खवांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। भाणा भगवन्त रंग करतार। वेख वखाणे मनी सिँघ संत, शब्द करे तन शृंगार। कलिजुग जीव भुल्ले बेमुहाणे, जीव जन्त ना कोई पावे सार। नर नरेशा इक्क भगवन्त, जोत सरूपी हरि दातार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत स्वामी जगत निहकामी, जोत निरँजण सद अधार। शब्द उडारी पवण अस्वारी, जोत निरँकारी किसे दिस ना आंयदा। मेल मिलाए वारो वारी, वेख वखाणे नर नारी, सुघड़ स्याणा राजा राणा, भेव कोई ना पांयदा। फड़ फड़ बाहों जाए तारी, मानस जन्म ना जाए हारी, कलिजुग वेला अन्त सुहांयदा। अर्जन मेल कृष्न मुरारी, संत मनी सिँघ दूजी वारी, चरन छुहाए साची दाढ़ी, हरि साचा लाज रखांयदा। आपे रहे पिछे अगाड़ी, शब्द घोड़ी रिहा चाढ़ी, मानस देही नाम मृदंग वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा मेल कर, दर दुआरे साचे माण दवांयदा। अर्जन मेल हरि भगवान। खिच्चे तीर इक्क कमान। अमृत नीर साचा सीर, दो जहान अन्तिम वेले कटे भीड़, मिल्या मेल जोत महान। जोती जोत सरूप हरि, भगत भगवन्ता, आपे जी जीआ जन्तं, अन्तिम अन्त अन्त जन आए। साध संत जीव जन्त, मानस देही झूठा भाण्डा, प्रभ अबिनाशी भन्न
६४४ ०४ वखाए। अर्जन मेल हरि साचे कन्त, नैण मुँधारी रसना गाए। जगत बणाए साची बणत, दोए जोड़ चरन सरन सीस झुकाए। ६४४ ०४
कलिजुग वड्याई मनी सिँघ संत, मानस देही जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर दर घर सच दुआरे आत्म जोती कर अकारे, शब्द धार विच संसार एका एक चलाए। हरि चरन करी निमस्कारा। अर्जन पाए प्रभ साचा सारा। दुरजन जीव रहे गंवारा। सति सरूपी वडा शाहो भूपी, कलिजुग मेट अंध अन्धयारा। रूप रंग ना जाणे कोई रेख रूपी, जोती खेल शब्द अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सतिगुर साचे, हरि मेल मिलाया कन्त भतारा। द्वापर बणया हरि रथवाही। चारो कुन्टां वेख वखाणे, वेखे थांउँ थाँईं। मार मुकाए राज राणे, जन भगतां रक्खे ठंडी छाईं। रसना चले एका बाणे, वड हँकारी दीसे नाही। हरि संत सुहेला रंग साचा माणे, दूसर दीसे कोई नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि जामा पाया, संत मनी सिँघ कलिजुग तारे दोवें फड़ के बाहीं। कलिजुग रथ आप चलाउणा। संत मनी सिँघ तेरा साचा साथ, प्रभ अबिनाशी आप निभाउणा। जोती जामा त्रैलोकी नाथ, जगत अकथ्थ सर्ब समरथ भेव किसे ना पाउणा। सृष्ट सबाई पाए नत्थ, राजा राणा दर नचाउणा। बेमुख जीव जाए मथ्था, हो सहाई ना किसे बचाउणा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, चरन द्वार जिस दर्शन पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

शब्द घोड़ा एका एक, धरत मात चारों कुन्ट आप दुड़ाणा। शब्द घोड़ा हरि दुड़ाए। तुट्टा नाता फेर बंधाए। पुरख बिधाता दया कमाए। कलिजुग होई अन्धेरी राता, बेमुख जीव होए हलकाए। गुरमुखां देवे सच सुगाता। सोहँ दात झोली पाए। आपे बणे पिता माता। भैण भ्रा सभनी थाएँ। ना कोई वेखे जातां पातां, ऊँच नीच हरि भेव चुकाए। बैठा रहे इक्क इकांता, आत्म सेजा आसण लाए। अट्ठे पहर मारे झातां, साचा लेखा रिहा लिखाए। गुरमुख विरला अमृत आत्म तीर्थ नहाता, दुरमति मैल रिहा गंवाए। मिल्या मेल सहिज सुख दाता, चरन कँवल कँवल चरन जन सेव कमाए। अन्तिम वेले पुछे वाता, संत मनी सिँघ तेरा रथ प्रभ समरथ शब्द सरूपी रिहा चलाए। शब्द सरूपी इक्क हुलारा। खिच्चे वाग वारो वारा। धोए दाग़ विच संसारा। गुरमुख विरला जाए जाग, प्रभ खिच्च ल्याए चरन दुआरा। अस्सू तिन्न हथ्थ बन्ने ताग, किला लाल खेल अपारा। इक्क चलाउणा शब्द राग, आत्म धुनी सच्ची धुन्कारा। गुरमुख साचा प्रभ चरन जाए लाग, बन्द कवाड़ी खोले दस्म दुआरा। आप बुझाए तृष्ना आग, हउमे कढ्ढे रोग भारा। हँस बणाए जीव काग, अमृत मुख चवाए साचा सीर पाए सारा। बेमुखां डस्से माया नागनी नाग, आत्म विख दुःख लग्गा भारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी सिँघ सच स्वामी, मिल्या मेल वड वडभाग। वड वड भाग जगत वड्डयाईआ। सज्जण सुहेला गया जाग, सच दुआरा हरि निरँकारा
६४५ ०४ वेख विचारा पहली वारा, देवे दात सच सुगात धुरदरगाही साचा माहीआ। आत्म मिटे अन्धेरी रात, शब्द मिली सच्ची दात, ६४५ ०४
जोती नूर हरि सवाईआ। काया डाल फल फुल्ल लग्गे पात, मिल्या मेल पुरख बिधात, साचा खेल जगत रचाईआ। पंचम् जेठ सुहञ्जणी रात, जन भगतां वेखे मार झात, साची जोत मात धराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा नूर धर, शब्द सरूर इक्क कर, सच सिँघासण डेरा लाए, गुरमुखां दे मति रिहा समझाईआ। देवे मति हरि करतारा। चरन प्रीती साचा नात, झूठा दिसे जगत विहारा। ना कोई पिता ना कोई मात, कूड़ कुटम्बा जीव गंवारा। अन्तिम वेले कोई ना पुच्छे वात, जूठे झूठे करन हाहकारा। इक्क इकेली जगत सहेली रैण अन्धेरी रात, देवे इक्क सहारा। प्रभ अबिनाशी पुछे वात, गुरमुखां वेखे अट्ठे पहर, ना जाणे कोई वेला प्रभात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क बहाए सच दुआरा। झूठा नाता जगत विहार। पुरख अबिनाशी गुरमुख विरले कलि पछाता, शब्द रखाया इक्क अधार। ना कोई दिवस राता, घड़ी पल जल थल रिहा विचार। बैठा रहे इक्क इकांता। जीआं जन्तां पाए सार। ना कोई पिता ना कोई माता, जन भगतां साचा मीत मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति रिहा समझाए, गुरमुख साचे रिहा जगाए, लक्ख चुरासी रही झक्ख मार। साचा हुक्म हरि सरनाई। चरन सरन इक्क ओट रखाई। चुक्के मरन डरन, काया नगारे इक्क चोट

लगाई। हरि मेल हरि तरनी तरन, झूठा खोट दए गंवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे जाण पछाणे, जीव जन्त सुघड़ स्याणे, भेव रहे ना राई। बीस दस बिक्रमी खेल अपार। पंचम् जेठ सच विहार। किरपा करी हरि करतार। आपणा किया सच विहार। पुत्तर धीआं सर्ब संसार। हरिजन कराए निर्मल जीआ, आत्म देवे शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर सर्ब सार। सच विहारा दित्ता कर। प्रभ अबिनाशी किरपा कर। सगन सुहागी झोली भर। सोई काया मात जगाई, मिले मेल लिख्या धुर। आत्म रहे सदा बैरागी, ना कोई जाणे देव सुर। चरन प्रीती एका लागी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चढ़ाया शब्द घोड़। सच विहारा विच संसारा। शब्द खेल अपारा, ना भुल्ल जीव गंवारा। जन भगतां पाउँदा आए सारा, देवे माण दर दरबारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, करनी कर धरनी धर, आत्म जोती नूर नुराना, इक्क अकाला तोड़े जगत जंज़ाला, सर्ब प्रितपाला ना कोई पुरख ना कोई नारा। ना कोई पुरख ना कोई नारी। एका जोत हरि निरँकारी। काया मन्दिर झूठा महल्ल मात अटारी। प्रभ अबिनाशी आप कराए वल छल, अचरज़ खेल वड संसारी। सच दुआरा लैणा मल्ल, लिख्या लेख धुर मस्तक मातलोक आई वारी।
६४६ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब कर्म मानस जन्म रिहा सर्ब विचारी। पूर्ब कर्म हरि लेखे लाउणा। मानस जन्म मिटे ६४६
०४ भरम, जगत भुलेखा दूर कराउणा। वड वडभागी सुणया इक्क सच्चा रागी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द ०४
भगत दात, आपणी दात आप वरताउणा। साचा खेल हरि करतारा। मिले मेल दूजी वारा। चढ़े तेल विच संसारा। अचरज़ खेल पारब्रह्म मानस जन्म ना आई हारा। सद वसे रंग नवेल, ना कोई जाणे उच्च महल्ल चुबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म शब्द गुरमुख साचे लाज रखाए, दर दुआरे साचे आए, संत मनी सिँघ सतिगुर साचे तेरे सीस धरे दस्तारा। साची दस्तार सीस टिकांयदा। लेखा चुक्के बीस इकीस, भगत भीलणी पार करांयदा। छत्र झुले हरि जगदीश, सीस निवाया लेखे लांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, त्रेता जुग पिण्ड बुग्घ लेखा पूर करांयदा। पूर कराया हरि जी लेखा। आपे कढ्ढे भरम भुलेखा। मात पित ना किसे नेत्र पेखा। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेखा। ना कोई जाणे वेद पुरानी पंडत रेखा। ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानी, ना कोई जाणे धारी केसा। ना कोई जाणे जगत इशनानी, साची जोत श्री दस्मेशा। कलिजुग जीव पड़दा पाए माया राणी, मिटे ना जगत अंदेसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम जोती जामा भेख धर पिछला लेखा पूर कर, आपे किया आपणा वेसा। त्रेता युग लेखा चुक्के। द्वापर वेला आए ढुक्के। शब्द बाणी ना कदे रुके। गुरमुख मुख ना थुक्क सुट्टे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत मनी

सिँघ हरि संत प्यारे, शब्द लगाए एका चोटे। जुग द्वापर तेरी वारी। दित्ता वर हरि बनवारी। मिले मेल भैण प्यारी। कलिजुग वेला अन्तिम निहकलंकी जोत अपारी। आपे सज्जण सुहेला संत मनी सिँघ पैज संवारी। आप कराए साचा मेला, अर्जन सुभदरा नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ चार कुन्ट रिहा दौड़, आदि अन्त एका जोत एका अस्वारी। साचा शब्द हरि जणाया। गुरमुख साचे लए जगाया। आपणा भाणा साचा राणा, आपणे हथ्थ रिहा रखाया। गुरमुख जाणे चतुर सुघड़ स्याणा, जिस जन सिर प्रभ हथ्थ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत अकथ्थ, सच विहारा सीस दस्तारा आप सजाया। सच विहार हरि आप करांयदा। ना करनी जगत विचार, भरम निवार साचे राहे पांयदा। रक्खणी लाज सीस दस्तार सच्ची सरकार, साचा दर इक्क खुल्हांयदा। जन्म मरन ना जाणे जीव गंवार, आवण जाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। झूठा नाता जगत विहार, पुरख बिधाता साची सेवा इक्क करांयदा। अमृत फल लग्गे साचा मेवा, तुट्टा फल साचे डाल फिर लगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि, पृथीपाल बण शब्द दलाल, चार छुहारे साचे दर लिआंयदा। हरि दर सच्चा दरबारया। हरि दर खेल अपारया। एका रक्खे साचे सर, अमृत साचा ताल सुहा रिहा। गुरमुख साचा जाए तर, साचे तीर्थ नुहावण नहा रिहा। ना जन्मे ना जाए मर, गुर चरन सीस झुक्का रिहा। धर्म

६४७ ०४ राए घर चुक्के डर, निहकलंकी लड़ फड़ा रिहा। शब्द घोड़े जाए चढ़, तिन्नां लोआं किला कोट सर करा रिहा। प्रभ ६४७ ०४

अबिनाशी लए बाहों फड़, सच दुआरा इक्क रखा रिहा। एका अक्खर जाए पढ़, सोहँ शब्द मात चला रिहा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती जामा हरि जी पा रिहा। गुरमुख साचे बैठा अन्दर वड़, रूप रंग ना किसे वखा रिहा। पंजा चोरां लए फड़, शब्द डण्डा हथ्थ उठा रिहा। गुरमुख साचे तेरे आत्म दर दुआरे खड़्, सति सरूपी दरस दिखा रिहा। लक्ख चुरासी वहिणा झूठे हड़्, कलिजुग वेला अन्तिम आ रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, साची बणत विच मात बणा रिहा। साची बणत बणाए दया कमांयदा। जगत नईआ इक्क चलाए, गुर संगत भैणां भईआ साचे धाम बहांयदा। ना कोई वखाणे पिता मईआ, साजण सईआ आप जणांयदा। साचे शब्द अस्वार हरि निरँकार , लोआं पूरीआं पावे सार, आप बणाए आपे अन्तिम ढाँयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच समग्री कर त्यार, काया गगरी विच संसार, वसे नगरी सच दरबार, साचा खेल करांयदा। साचा खेल हरि करतारा। जन भगतां मेल विच संसारा। सतारां हाढ़ी चढ़ना तेल, संत सुहागण साची नारा। धर्म राए दी कटे जेल्ह, किरपा करे पुरख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे सुन्दर मन्दिर, जोत जगाए काया डूंघी कन्दर, आत्म

जोती नूर उजाला। गुर गोबिन्दा गुर गोपाला। हरिभगत बख्शिंदा दीन दयाला। इक्क उपजाए साची बिन्दा, शब्द पहनाए तन दुशाला। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म दर दुआरे बणाए सच्ची धर्मसाला। आत्म दर सच्चा दरबारा। मिले मेल हरि गिरधारा। जगे जोत अगम्म अपारा। शब्द धुन अनहद धारा। तुट्टे मुन ना रहे सुन्न, बज़र कपाटी घर साचे पाटी, मेट मिटाए धुंदूकारा। वणज कराए साची हाटी, जगे जोत काया माटी, निर्मल दीप करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म पड़दा खोल्हे, शब्द सरूपी अन्दर बोले, खोल्ह वखाए दस्म दुआरा। दस्म दुआर जाए खुल्ह। सतारां हाढ़ी पैणा मुल। भाग लगाउणा साची कुल। पूरे तोल जाणा तुल्ल। कलिजुग जीव ना जाणा भुल्ल। झूठी माया जगत छाया, आत्म अन्धे झूठे धन्दे, मदिरा मासी पापी गन्दे, मात ना जाणा रुल्ल। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्दे, प्रगट होए गुर गोबिन्दे, सच दुआरा जाणा खुल्ह। इक्क उपजाए परमानंदे, सदा सदा हरि बख्शिंदे, अमृत आत्म ना जाए डुल्ल्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे साचा घर, गुरमुख वसे केहड़े दर, धरत मात मार झात, चारों कुन्ट बख्शे दात शब्द सुगात, लोआं पुरीआं पावे सारे। लोआं पुरीआं पावे सार बणत बणांयदा। निहकलंकी जामा धार, हरि करतार पहली वार, साचा छत्र सीस झुलांयदा। राजे राणयां कर ख्वार, शब्द रक्खे तिक्खी धार, चिट्टे अस्व हो अस्वार, चारों कुन्टां पावे सार, वेख वखाणे नर नार, ठग चोर यार ना कोई भुल्ल रखांयदा। जन भगतां पावे अन्तिम सार, खिच्च ल्याए चरन द्वार, आत्म जोती नूर उज्जयार, वरन गोत ना करे विचार, पूर्ब लेखा हरि लिखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा सच दरबार विच संसार कर त्यार, सोलां कलीआं तन श्रृंगार, नौ खण्ड सत्तां दीपां पाए सार, सुर नर गण गंधरब सुरपति राजा इन्द वड मृगिन्द खिच्च ल्याए चरन द्वार। शिव शंकर साची बिन्दा, जोती मेला हरि भतार। ब्रह्मा वेख वखाणे, रंग रस साचा माणे, अन्तिम मेला हरि करतार। जगे जोत निहकलंकी बली बलवाने, कलिजुग अन्तिम विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथ सगला साथ, शब्द चलाए साचा राथ, पंचम् जेठी हो अस्वार। साचा रथ हरि रथवाही है। सृष्ट सबाई रिहा मथ्था, वेख वखाणे थांउँ थाँईं है। राजे राणयां पावे नत्थ, शब्द डोरी आपणे हथ्थ रखाई है। गुरमुख साचे संत जनां आत्म वसूरे जायण लथ्थ, दर घर साचे दर्शन पाई है। शब्द चढ़ाए साचा रथ, खिच्ची जाए वाहो दाही है। कलिजुग सीआं साढे तिन्न हथ्थ, मण्डप माढ़ी जगत पसारा, झूठी बणत बणाईआ। गुर चरन सरन एका सच्चा सच दुआरा, आदि अन्त होए सहाईआ। साचा मेल कन्त भतारा, गुरमुख सुहागण साची नारा, आवण जावण जगत विछोड़ा, दए मिटाईआ।

६४६ ०४

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी इक्क रखाए साचा घोड़ा, गुरमुखां रिहा चढ़ाईआ। साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। जुगां जुगां दे विछड़े चरन नाते साचे जोड़े, प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े, साची बणत बणांयदा। बेमुख जीव रीठे कौड़े, कलिजुग अन्तिम भन्न वखांयदा। गुरमुख गुर चरन सरन कलि आयण दौड़े, धर्म राए डन्न चुकांयदा। तिन्नां लोआं लाए शब्द पौड़े, साचे धाम आप वसांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम आपणा आप, अन्तिम कलि कर वल छल, मात आण करांयदा। साचा तन श्रृंगार, शब्द करांयदा। फूलन बख्शे हार हरि दातार, किरपा कर धीर धरांयदा। काया करे ठंडी ठार विच संसार, मीत मुरार आप अखवांयदा। निर्मल जोती कर अकार, काया सोती होए उज्जयार, सच भण्डार हरि वरतार, काया मन्दिर इक्क सुहांयदा। गुणवन्ता हरि गुण विचार, पूरन भगवन्ता चरन प्यार, हरि साचा सीर पिलांयदा। मात बणाए साची बणता, महिंमा जगत सदा अगणता, लेखा लेख ना कोए चुकांयदा। वेख वखाणे जीआं जन्ता, करे ध्याने साधन संता, ब्रह्म ज्ञाने आदिन अन्ता, जोती दीपक इक्क जगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण ताण विच जहान गुण निधान, गुरमुख साचे आप माण रखांयदा। साचा हरि तन फुलवाड़ी। फल फुल्ल लग्गे सतारां हाढ़ी। दीपक जोती आत्म जगे, होए रुशनाई बहत्तर नाड़ी। शब्द बन्न्हे हथ्थीं तगे, पड़्हे हटाए चोरां झूठी धाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म लेखे लाए भरम भुलेखे दूर कराए, गुरमुख साचे नेड़ ना आए मौत लाड़ी। मौत लाड़ी दर दुरकारे। शब्द खण्डा एका मारे। गुरमुखां पाई साची वंडा, चरन प्रीती उप्पर धवलारे। आत्म सदा सुहागण ना होए रंडा, मिले मेल हरि कन्त प्यारे। जोती नूर शब्द ब्रह्मण्डा, मात पताल अकाश, एका रंग सच्ची सरकारे। गुरमुख आत्म करे वास, जोत प्रकाश प्रभ अबिनाश, भाग लगाए काया महल्ल सच चुबारे। जोत सरूपी पाए रास, शब्द चलाए स्वास स्वास, दरस दिखाए अगम्म अपारे। रसन तजाए मदिरा मास, हउमे दुखड़ा होए नास, हरि जी वसे सदा पास, कदे गुप्त कदे ज़ाहिरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां देवे वड्याई सच्ची सरकारे। साचा शब्द तन श्रृंगारी। ना डोले मन दहि दिश विचारी। साचा राग सुणना कन्न, नाद धुन धुनी धुन्कारी। लक्ख चुरासी विच्चों चुण, मिले मेल हरि बनवारी। सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख साचे रिहा नितारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेशा माझे देसा, जोत सरूपी धारे भेसा, अन्तिम रक्खे खुल्हड़े केसा, जन भगत जगाए विच संसारी। हरिजन सोया, आप जगाए। अवर ना जाणे जीव कोया, प्रभ अबिनाशी दया कमाए। साचा हल प्रभ साचे जोया, सोहँ बीज बिजाए धुरदरगाही सच्चा ढोआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम कलि आपणी हथ्थीं झोली पाए। शब्द

नाम जगत पंघूड़ा। काया चाम रंग चाढ़े गूढ़ा। मिटे अन्धेरी शाम, जन मस्तक लाए धूढ़ा। कोई ना लग्गे दर साचे दाम, चतुर सुजान करे मन मूर्ख मूढ़ा। मेल मिलावा साचे राम, सृष्ट सबाई नाता कूड़ा। इक्क प्याए अमृत जाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला भरपूरा। सोहँ शब्द रसना रस गीत। मिले मेल प्रभ साचे मीत। हरि हिरदे जाए वस, काया करे ठंडी सीत। पंच पंचायन जायण नस्स, इक्क दिसाए साची रीत। शब्द बाण लाए कस, गुरमुख साचे एका अन्दर साचा मन्दिर, ना कोई वखाणे दिहुरा मसीत। आत्म तोड़े वज्जा जन्दर, नर हरि साचा राखो चीत। दर दर भौंदे फिरदे बन्दर, कोई ना परखे किसे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द झोली पाए, दरस दिखाए दया कमाए सदा गाउँणा सुहागी गीत। रसना गीत सुहागी गाउणा। पुरख अबिनाशी रखणा चीत, काया मन्दिर भाग लगाउणा। जगत अवल्लड़ी दस्से रीत, मदिरा मास रसन तजाउणा। गुर संगत साचा मेल मिलाउणा। चरन प्रीती काया डाल, अमृत फल लगाउणा। ना कोई मन्दिर ना मसीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर दुआरे साचे अन्दर, निज घर वासी जोत प्रकाशी, स्वच्छ सरूपी दर्शन पाउणा। नेतन नेत नेत गुर अन्तर। दिवस रैण जन रसना चीत, हरि शब्द जग साचा मन्त्र। काया वखाणे साचा खेत, अट्ठे पहर लग्गी रहे बसंतर। जोती जोत सरूप हरि, साची किरपा देवे कर, नर हरि

६५० ०४ साचा नेतन नीत। सच शब्द शब्द धुन्कारा। प्रभ अबिनाशी रिहा पुकार सुण, हरिजन आए चरन दवारा। वेख वखाणे गुण ६५० ०४

अवगुण, देवे नाम इक्क भण्डारा। संत सुहेले साचे चुण, चरन लगाए वारो वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए, गुरमुख मंगे बण भिखारा। गुरमुख साचा दर भिखारी। प्रभ अबिनाशी लिखणा लेख, आत्म करे साची कारी। सज्जण सुहेला साचा सक्ख, फल लगाए सच्ची फुलवाड़ी। अट्ठे पहर रहे रक्ख, पवण स्वासी जोती रहिरासी बहत्तर नाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जाप मारे तीनो ताप, सदा सदा सदा बलि बलि जासी। सोहँ नाम रसना गाउणा। पुरख अबिनाशी साचा पाउणा। घट घट वासी निज घर वास इक्क रखाउणा। काया मण्डल साची रासी, शब्द स्वास जगत धरवास हरि रखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाप, चार वरन अन्तिम एका एक जपाउणा। सोहँ जाप, जपे जप अजपा जप जप जापे। कोटन कोट उतारे पाप, लोकमाती वड प्रतापे। आपे बणे माई बाप, गुरमुख साचे एका रंग रंगाणे आपणे आपे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग निभाए, आप कलि सागर पार कराए, देवे दात वड करामात, सोहँ दात जगत सुगाते। जगत जंज़ाला झूठा नाता। गुर गोपाला पिता माता। करे प्रितपाला दिवस राता। तोड़े जगत जंज़ाला, बैठा रहे इक्क इकांता। जोती जोत अकाल अकाला, चरन प्रीती दिसे नाता।

शब्द सरूपी वज्जे ताला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बैठा मारे झाता। आत्म झाकी खोल्हे ताकी। जन भगतां चुकाए लेखा बाकी। सृष्ट सबाई अन्तिम बाकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह इक्क वखाए, जगत फाह दए कटाए, वेले अन्तिम पड़दे ढाकी। जगत जंजाला मात कटाउणा। गुर गोपाला रिदे वसाउणा। शब्द दुशाला तन पहनाउणा। ना होए मात कंगाला, सोहँ लाल हथ्थ फड़ाउणा। बणया रहे शब्द दलाला, दो जहानां पार कराउणा। दर घर साचे एका नाम सच्चा धन माला, प्रभ अबिनाशी झोली पाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती करे उजाला, चरन सरन गुर ध्यान रखाउणा। चरन सरन हरि सरनाई। मिले माण जगत वड्याई। जीव जहान भुल्ल ना राई। शब्द बबाण रिहा चढ़ाई। आप चुकाए झूठी कान, एका आण नाम रखाई। दर घर साचे देवे थान, बंक द्वार रिहा सुहाई। जगत निमाणयां देवे माण, पार लँघाए फड़ के बाहीं। साचा शब्द पीण खाण, अट्ठे पहर ठंडी छाईं। गुर चरन तीर्थ साचा न्हाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभनी थाँईं। रसना गाओ गहर गम्भीरा। अमरापद पाओ, सुख सहिज समाओ, अमृत धारा बख्शे साचा नीरा। हउमे चिन्ता रोग गंवाओ, शब्द रसना रस भोग लगाओ, कढ्ढे हउमे पीड़ा। गुर चरन प्रीती जोग कमाओ, लेखा धुर संजोग जगत विजोग चुकाओ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपे कटे मात भीड़ा। तन जोबन शब्द शृंगारा। कटे हउमे रोगण, पूर्ब कर्म विचारा। दर घर साचे एका जोती जोगण, ना कोई पुरख ना कोई नारा। गुरमुख साचा रसन आत्म भोगण, फूलन कलीआं तन शृंगारा। मिल्या मेल धुर संजोगण, कन्त मिलावा मीत मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दर साचा जगत रखाया दर सच्चा दरबारा। सोभावन्ती नार, तन शृंगारया। मिल्या कन्त प्यार, आत्म सेजा होई त्यार, हरि सुत्ता चरन पसारया। गुरमुखां वाजां रिहा मार, शब्द बाज़ा इक्क उडार, चारे कुन्टां वेख वखा रिहा। दर घर पाउँदा साची सार, मानस देही पैज संवार, ना कोई जाणे राजे राणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चतुर सुजान, रंग संग साचा माणयां। साचा संग सच्ची सरकारा। चिट्टे अस्व कसे तंग, अट्ठे पहर रहे अस्वारा। जन भगतां कटे भुक्ख नंग, आत्म भरे इक्क भण्डारा। शब्द चढ़ाए साचा रंग, माया ममता लाहे तन अफारा। वड दाता सूरा सरबंग, देवणहार सदा दातारा। गुरमुख साचा पार जाए लँघ, मंगी मंग प्रभ चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वस्त हरि झोली पाए, पुरख अबिनाश दया कमाए, हरिजन बणया सच भिखारा। मंगे भिक्ख चरन द्वारया। आत्म तृष्ना लाहे विख, देवे शब्द अपर अपारया। साची सिख्या लैणी सिख, मानस देही भाग लगा रिहा। ना कोई जाणे मुन रिक्ख, जोती जामा हरि संसारया। दर दुआरे मिले एका नाम भिक्ख,

गुरमुख मंगण दर दरबारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त भरे रहण सद भण्डारया। हरि भण्डार सदा भरपूरया। गुरमुखां जाए तार विच संसार, देवे शब्द सति सरूरया। सच कराए वणज वपार, मानस जन्म ना आए हार, मंगण आए सच द्वारया। सोलां करे तन शृंगार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर दुआरा अमृत साचा आप चवा रिहा। उठ उठ जाग हरि जोत जगईआ। गुरमुख साचे जागे भाग, प्रभ शब्द चढ़ाए सच्ची नईआ। कलिजुग माया धोए दाग़, निर्मल काया बुध बबेक करईआ। इक्क सुणाए साचा राग, सोहँ जाप जगत जपईआ। तन बन्ह्नाए साचा ताग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ईआ। आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत मेघ हरि छिड़कईआ। गुरमुख बणाए हँस काग, माणक मोती सोहँ चोग चुगईआ। अन्तिम वेले पकड़े वाग, भव सागर पार करईआ। जन मिल्या साचा कन्त सुहाग, जगत वछोड़ा दूर करईआ। चरन कँवल जन जाए लाग, लक्ख चुरासी प्रभ फंद कटईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख वड्याए वड वडभाग, दरस अमोघ शब्द जोग इक्क दवईआ। शब्द जोग रसन रस भोग। नर हरि दित्ता वर किरपा कर, आत्म घर कटे हउमे रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए मस्तक लिख्या धुर, धुर मस्तक सच संजोग। सर्बकला समरथ, हरि मेहरबान है। सर्बकला समरथ, वाली दो जहान है। सर्बकला समरथ, तिन्नां लोआं बंध बंधान है। सर्बकला समरथ, चौदां लोकां हट खुल्हान है। सर्बकला समरथ, समेरू रक्खे इक्क निशान है। सर्बकला समरथ, ब्रह्मा बहाए विच सच्ची दुकान है। सर्बकला समरथ, शिव शंकर बाशक तशक गल लटकान है। सर्बकला समरथ, इन्द इदरासण सिँघ सिँघासण करोड़ तेतीसा छत्र झुलान है। सर्बकला समरथ, हरि सुरसती प्रगटी विच जहान है। सर्बकला समरथ, नारद उपजे ब्रह्म ज्ञान है। सर्बकला समरथ, छत्ती रागां धुन धुनकान है। सर्बकला समरथ, जुगां जुगन्ता आदिन अन्ता बणाए बणता, ना कोई जाणे जीव निधान है। सर्बकला समरथ, बणत बणांयदा। सर्बकला समरथ, मात पताल अकाश एका ताण तणांयदा। सर्बकला समरथ, घट घट रक्खे वास, दिस ना आंयदा। सर्बकला समरथ, साची जोत इक्क प्रकाश, रंगण रंग धुन वखांयदा। सर्बकला समरथ, ना कोई वखाणे रूप रंग जिन प्रगट हो छिन्न छिन्न भिन्न भिन्न हरि समांयदा। सर्बकला समरथ, लक्ख चुरासी बुझाए गिण गिण, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका रक्खे सच दर, चार कुंट दहि दिश वंड करांयदा। साची वंड मात कराई। लक्ख चुरासी वरभण्ड उपजाई। सत्त दीप नौ खण्ड गणत गिणाई। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे अंडज जेरज उत्भज सेत्ज, दिस किसे ना आई। जोती जोत सरूप हरि, पुरीआं लोआं धार बन्ह्नाई। बन्न्हे धारा सच्ची सरकारा। लोकमाती कर विचार, लक्ख चुरासी जोत अधारा। प्रभ अबिनाशी साची कार,

बणत बणाए गिरवर गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, चार जुग पाए वंड, तरताली लक्ख संग रलाए बीस हज़ारा। तरताली लक्ख बीस हज़ार। सतिजुग त्रेता कीने वख, कीनी खेल अपर अपार। अठारां जामे हरि प्रतक्ख, सतिजुग साचे सहिजे सुख धार। त्रेते प्रगटे अलखणा अलक्ख, एका जोती दोए अधार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। जुग द्वापर वेख विचारे। दोए जामे हरि जी धारे। अन्तिम वेखे वेख वखाणे, जीव जन्त जाए हारे। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि प्रगट जोत हरि मालन करे त्यारीआ। सिर उठाए साची खारीआ। गुरमुख साचे संत जन, विच मात वेखे लग्गी सच्ची फुलवाड़ीआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा कर्म कमाए दया कमाए, वेख वखाणे सतारां हाढ़ीआ। साची खारी सीस उठांयदा। हरि जगदीश दया कमांयदा। प्रभ भेव खुल्हाउणा बीस इकीस, छत्र सीस इक्क झुलांयदा। लक्ख चुरासी जाणी पीस, ना कोई किसे छुडांयदा। ना कोई दए सहारा खाणी बाणी अंज़ील कुरानी शब्द हदीस, वेद पुरानां वक्त चुकांयदा। अन्तिम छड्डणे हाणीआं हाणी, किसे ना मिलणा घर घर पाणी, राजे छड्डण सुतीआं राणी, अमीर वज़ीर दर दरबान शाह सुल्तान तख्त जहान नज़र कोई ना आंयदा। प्रगट होया नर हरि बली बलवान विच जहान, शब्द डंक इक्क वजांयदा। फड़ फड़ मारे बेईमान शैतान, धर्म राए दुलारी सच प्यारी, लाड़ी मौत आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ

६५३ विष्णूं भगवान, सतारां हाढ़ी गुरमुख साचे दर घर साचे जाए वाड़ी। सदा ठंडी छाँ रखांयदा। जगत फुलवाड़ी फुल्ल कयारा। ६५३

०४ ०४

गुरमुखां पाए कलि जगत पित्त विच संसारा। भाग लगाए साची कुल, नित नवित्त नरायण नर निरँकारा। ना कोई जाणे धी पुत्त, मात पित ना पावे सारा। गुरमुखां अमृत आत्म रिहा सिंच, काया करे ठंडी ठारा। सतारां हाढ़ी सुहाए थित्त, मात गर्भ ना आए रित्त, मिले जोत अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम बहाए वक्त सुहाए, कौस्तक मनीआ तिलक लगाए, नौ चन्द चढ़ाए विच संसारा। नौ चन्द नौ नौं खण्डे। जगे जोत हरि ब्रह्मण्डे। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे। सतिजुग साचा मारे डण्डे। शब्द फड़या हरि जी खण्डे। चारे कुन्ट पाए वंडे। जीव जन्त होए घुमंडे। घर घर दीसे नार रंडे। धरत मात कर पुकार, हरि दातार वर एका मंगे। लक्ख चुरासी कर ख्वार विच संसार, राजे राणे फिरन पैर नंगे। निहकलंक जामा धार। शब्द घोड़े हो अस्वार, अन्तिम कलि मारे डण्डे। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, फूलनहार गुरसिख प्यार, जगत विहार करे विच वरभण्डे। वरभण्ड वरभण्ड वरभण्ड हरि भंडी पाई। किसे ना दिसे राह डण्डी, मावां पुतरां सुध ना राई। लुकदे फिरन करीर जंडी, आपे करे खण्ड खण्डी, जगत पखण्डी दए मिटाई। शब्द फड़े साची चण्डी, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, कलिजुग अन्तिम दए मिटाई। कलिजुग अन्तिम

मेट मिटाउणा। सतारां हाढ़ी लेख लिखाउणा। वेख वेख गुरसिख जगाउणा। मस्तक साची मेख लगाउणा। औलीआ पीर शेख़ मिटाउणा। पीर दस्तगीर कोई दिस ना आउणा। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान, बीआ बान विच जहान, डूंघी कन्दर उजाड़ पहाड़ उच्चा टिल्ला बूरा कक्का बिल्ला, कोई रहण ना पाउणा। रसना तीर शब्द चिल्ला, गगन पतालां थंम हिल्ला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक डंक शब्द अंक राउ रंक द्वार बंक घर घर चलाउणा। जगत सूरा सखी सुल्तान। शब्द गुणी पूरा नौजवान। आत्म बख्शे हरि सति सरूरा, साचा देवे शब्द निशान। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम किरपा देवे कर, आप बिठाए इक्क बबाण। सच बबाणे जाणा चढ़। हरि चरन ध्याने फड़या लड़। कलिजुग होया बेमुहाने, अन्तिम वेले जाए हड़। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे, प्रभ अबिनाशी बाहों लए फड़। दर घर साचे देवे माणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला इक्क इकल्ला, हरिभगतन मेला, जोत सरूप अन्दर बैठा वड़। रक्खे लाज देस माझ, भगत बनवारया। शब्द सीस साचा ताज, खेल नर निरंकारया। चार कुन्ट पैणी भाज, आवे वारी वारो वारया। गुरमुखां संवारे आप काज, शब्द देवे सच वस्त हथ्थ समरथ, ना पुच्छे कोई वारया। नाम गहणा तन शब्द बस्त, एका असत नर निरंकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि दर प्यारे, कर किरपा पार उतारया। उतरे पार बन्ने बेड़ा। विच संसार झूठा झेड़ा। प्रभ जाए पैज संवार, चुक्के चुरासी गेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आत्म दर दुआरे दया कमाए, खुल्हा रखाए सदा वेहड़ा। खुल्हा वेहड़ा काया नगर खेड़ा। दर घर साचे सदा सच निबेड़ा। पुरख अबिनाशी हरि जन हिरदे वाचे अन्तिम बन्ने बेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए दया कमाए, जगत जगदीशा लक्ख चार चुरासी गेड़ा। लक्ख चुरासी चार यार। संग मुहम्मद होए ख्वार। कोई ना पावे अन्तिम सार। अल्ला राणी ना मात जम्मदी, ना होए कलि ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम अन्त इक्क मुहम्मद वारो वार बुलाया, वेखे पुच्छे की वरते संसार। आए दर होए निमाणा। जगत भुलाया राजा राणा। साचा राह किसे दिस ना आया, पीर फकीरां छड्डया भाणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमाती जोत धर, वरन गोत इक्क कर, राउ रंक राज राजाना। द्वार बंक शाह सुल्ताना। एका रंग दए चढ़ाईआ। फूलन बरखा हरि नर लाईआ। गुरमुखां आत्म वजदी रहे वधाईआ। शब्द सुहागी गीत, गाउँदे रहणा चांईं चांईंआ। कलिजुग अन्तिम जाणा बीत, सतिजुग साचे मिली वड्याईआ। जन भगतां करे काया ठंडी सीत, अमृत सच भण्डार खुल्हाईआ। मानस जन्म जाणा जीत, निहकलंकी चरनी चीत लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां फूलन बरखा अमृत मेघ बरसाईआ। फूलन बरखा सोभावन्त, करे खेल हरि भगवन्त, भगत वड्याई

संत सहाई। मेल मिलावा साचे कन्त, जगत विछोड़ा दए कटाई। चरन प्रीती नाता जोड़ा, जगत छडे भैणां भाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम इक्क वसे अटल्ला, वसे हरि सद इकल्ला, दूर दुराडा इक्क महल्ला, दीपक जोती रिहा जगाई। सच्चा भोग भगत द्वार। भरे रहण सद भण्डार। तोट ना आवे विच संसार। साची लग्गे शब्द चोट, काया वज्जे इक्क नगार। जूठा झूठा कढ्ढे खोट, देवे नाम शब्द अपार। बेमुख जीव आलूणिउँ डिग्गे बोट, कोई ना पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख न्यार। जगे जोत हरि भगवाना। आत्म जोती जगे, झूलदा रहे जगत निशाना। एका वा ठंडी वगे, गुरमुख अन्तिम तृखा बुझाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बंक द्वार, सहिज सुख धार आप सुहाना। रसना भोग भगत वड्डुयाईआ। शब्द जोग सच कमाईआ। निखुट्ट ना जाए चोग, हरि होए आप सहाईआ। गुरमुखां दरस अमोघ, आत्म दर द्वार दर दरसाईआ। दूई द्वैती कटे रोग, रंगण नाम मजीठ चढ़ाईआ। ना कोई चिन्ता ना कोई सोग, हरि भाणे सद समाईआ। हरि आप चुगाए शब्द साची चोग, गुरमुख साचे गोद उठाईआ। मिल्या मेल लिख्या धुर संजोग, चरन प्रीती तोड़ निभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसन लाए साचा भोग, गुर संगत मुख छुहाईआ। गुर संगत, गुर चरन दास। दूजे दर ना जाए मंगत, प्रगट जोत करे प्रकाश। होए सहाई जिउँ नानक अंगद, शब्द सुहेला मानस जन्म रहिरास। लक्ख चुरासी जम की फाँसी आप कटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां साचा होए दास। दासन दास दर दुआरे। प्रभ पूर कराए आस, मंगे मंग बण भिखारे। जगे जोत पृथ्मी अकाश, एका एक अपर अपारे। निज घर आत्म रखे वास दासन दास दास हरि चरन पनिहारे। सदा सहाई अंग संग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगे मंग इक्क नाम दर दुआरे।

* १ मग्घर २०११ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर *

त्रैलोकी नाथ तिन्न द्वार। तिन्नां मिल्या तिंन तिन्न वार। तीजा नेत्र खोल्ले, शब्द सरूपी आत्म बोले, पवण घोड़े हरि अस्वार। तिन्नां लोकां कुण्डा खोल्ले, तिन्नां पुरीआं बन्न्हे धार। शब्द तोल प्रभ साचा तोले, सोहँ देवे इक्क हुलार। आत्म पड़दा प्रभ साचा खोल्ले, गुरमुख निमाणा जाए तार। आप बहाए शब्द डोले, बणया रहे मात कहार। भाग लगाए काया चोले, शब्द कराए तन शृंगार। गुरमुख साचे भोले भाले, जोती जामा देवे हुलार। आपे धोए दाग़ काले, सोहँ रक्खे तिक्खी

धार। माया तोड़े जगत जंज़ाले, होए सहाए जंगल जूह विच पहाड़। अन्तिम अन्त देवे शब्द दुशाले, गुरमुख ना व्याहे मौत लाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबार इक्क खुल्हाए, दया कमाए सतारां हाढ़। त्रै तिन्न तिन्न त्रै तिन्न तीन। साधां संतां प्रभ आत्म भन्ने हँकारी बीन। गुरमुखां होए सहाई जिउँ माल चराए धन्ने, करे काया ठंडी सीन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाणे मारे शब्द बाणे, चरन लगाए वाली शाह रूसा चीन। त्रै तिन्न त्रै गुणवन्ता। कर खेल जगत हरि मेल, पूरन जोती हरि भगवन्ता। चार कुन्ट तिन्न द्वार, खोल्हे कवाड़ सतारां हाढ़, पुरख अबिनाशी साचा कन्त वेखे परखे चंगा माढ़, जगे जोत बहत्तर नाड़, भेव रहे ना कोए जीव साधां संतां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जन भगत बणाए साची बणता। तेरां तिन्न तिन्न तिन्न, चार कुन्ट हरि जी वेखे, वेख वखाए भिन्न भिन्न भिन्न। गुरमुखां लिखाए साचे लेखे, अट्ठे पहर दिवस रैण गिन गिन गिन। बेमुखां रहे भरम भुलेखे, मिटे निशान लोक तिन्न तिन्न तिन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा मात धराए, दिस ना आए कोई किसे चिन्न चिन्न चिन्न। सच दरबार ग़रीब निवाज़। गुरमुखां साजण रिहा साज। जोत जगाई वज्जी वधाई, तिन्नां लोकां देस माझ। तिन्नां लोआं करे रुशनाई, मावां पुत्तरां मात वड्याई, हरि हरि हरि संवारे साचे काज। जोत नूर जगत सवाई।

शब्द वज्जे साची तूर, पंचम् पोह मिले वड्याई। खिच्चे जोत हरि कोहतूर, पीर फ़कीर देण दुहाई। प्रगट होए इक्क सूरबीर, वज्जे डंक हरि सभनी थाँईं। अट्ठ सट्ठ तीर्थ खिच्चे नीर, गंगा गोदावरी दए दुहाई। साधां संतां लत्थे चीर, प्रभ अबिनाशी दिस ना आई। गुरमुखां वेला अन्त अख़ीर, छब्बी पोह करे खेल हरि रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बीज फुल्ल फुलवाड़ी, सतारां हाढ़ी रिहा बिजाई। त्रैलोकी धार बंधाए पुरख बिधाता। मातलोक दए वखाए, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। गुरमुख साचे प्रभ लए उपजाए, धुर मस्तक लिख्या साचा नाता। साचा संग आप निभाए, देवे माण ताण सच शब्द सुगाता। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, महाराज शेर सिँघ जिस नर हरि पछाता। नर हरि हरी हरि जाण। आपणी करनी रिहा कर, वाली दो जहान। साची सरन जन गया पड़, मिल्या नाम इक्क निधान। सोहँ अक्खर गया पढ़, मिली जोत हरि भगवान। शब्द घोड़े गया चढ़, साची लाई इक्क उडान। प्रभ अबिनाशी लड़ ल्या फड़, मिल्या मेल हरि भगवान। दर दुआरे अग्गे खड़्हा, मातलोक करे ध्यान । दर घर साचे जाण वड़, नूरी जोत कर ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचे सच चलाउणा इक्क बबाण। सच बबाण इक्क चलाउणा। चरन ध्यान इक्क रखाउणा। माण ताण विच जहान, अन्तिम कलि आप रखाउणा। झुलदा रहे जगत इक्क निशान, मिटदा रहे पीण खाण, पूत सपूता साचा नाम

इक्क चलाउणा। साचे हरि सुणी पुकार। पुरख अबिनाशी पहली वार। सिँघ पाल जाए चरन बलिहार। प्रभ होया आप दयाल, रक्खे लाज विच संसार। धरे जोत विच साचे लाल। काया रोशन होए मुनार। जगत अवल्लड़ी चले चाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूत सपूता एका रंगण रंग रंगाए सतारां हाढ़ी लाल गुलाल। कलिजुग अन्तिम बणत बणाई। प्रभ अबिनाशी साचे कन्त, साची नींह सतिजुग रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साढे तिन्न हथ्थ दित्ती सीं, सिँघ मनजीत मात अतीत रखाई। साढे तिन्न हथ्थ जगत निशाना। गुरमुखां मिल्या साचा रथ, बणे रथवाही हरि भगवाना। बेमुखां दिसे घर सत्थ, गुरमुखां अमृत मेघ हरि बरसाना। सगल वसूरे जाण लथ्थ, दर दुआरे जिस दर्शन पाना। साधां संतां पाए नत्थ, शब्द डोर हथ्थ रखाना। सर्बकला समरथ, आत्म जोती खिच्च लयाना। धुरदरगाही साची वथ, साचे धाम हरि टिकाणा। महिंमा जगत चले अकथ्थ, अकथ्थ कथी ना किसे कथाना। लक्ख चुरासी जाए मथ्था, वेले अन्त ना किसे छुडाना। वेला गया ना आए हथ्थ, जीव जन्त सर्ब पछुताणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मन्दिर एका आप सुहाना। साचा मन्दिर हरि सुहाए। जगत सिँघ जगदीश भेंट चढ़ाए। मस्तक धूढ़ी गुरमुख लगाए। काया रंगण रंगे गूढ़ी, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। कलि जीव भुल्ले मूढ़ी, जूठे झूठे धन्दे लाए। कलिजुग माया दिसे कूड़ी, आत्म अन्धे होए हलकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण ताण चरन ध्यान गुरमुखां कलि रखाए। साच मन्दिर करे त्यार। जगे जोत साचे अन्दर, नर निरँजण हरि निरँकार। काया वेखे डूंघी कन्दर, पापां होया धुंदूकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट दहि दिश अट्ठे पहर पावे सार। नौ दर जगत दुआरे। प्रभ अबिनाशी पाए सारे। शब्द घोड़े होए अस्वारे। पंचम् पोह दिवस विचारे। चार कुन्ट एका धार विच संसार, अन्तिम कलि पहली वारे। ना कोई जाणे जीव गंवार, लक्ख चुरासी गई हर, निहकलंकी जामा धारे। गुरमुखां प्रभ पावे सार, अन्तिम खोल्हे बन्द कवाड़, सतारां हाढ़ी जगत अपारे। जगे जोत बहत्तर नाड़, शब्द वज्जे काड़ काड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी पार उतारे। लक्ख चुरासी उतरे पार। जो जन आए चल द्वार। धर्म राए ना मारे मार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर देवे वर, साचा हरि इक्क वखाए दया कमाए दर दरबार। सोहँ साचा नाम जपाए, गुरमुख साचे मात जगाए, नेत्र नैण लोचन खोल्ह वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपर अपार। नौ दर दर दरवेशा। वेख वखाणे काया घर, अट्ठे पहर गहर गम्भीर धारे वेसा। कलिजुग अन्तिम वरते कहर, ना कोई जाणे नर नरेशा। पंचम् जेठी वड दोपहर, जोती धारे हरि जी भेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पाए सार, आप चुकाए दो जहानां साचा लेखा। लेखा चुक्के दो जहान, देवे मात

वड्डयाईआ। झेड़ा छुट्टे आवण जाण, पतित पावन फंद कटाईआ। दरगहि साची माण ताण, हरि साचा माण रखाईआ। एका शब्द सुणाए कान, नाद धुनी इक्क वजाईआ। शब्द देवे पीण खाण, आत्म तृष्ना रोग मिटाईआ। इक्क बिठाए शब्द बबाण, पुरीआं लोआं बाहर कढाईआ। साचा देवे नाम दान, त्रैलोकी नाथ दया कमाईआ। लोकमात कर हरि पछान, गुरमुख साचे संत जन आपणी गोद उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त साचे संत, जुगा जुगन्त साध संत, रिहा बणत बणाईआ। बणाए बणत सच्ची सरकारा। करे खेल अपर अपारा। ना कोई जाणे नारी नारा। झूठा खेल जगत विहारा। प्रभ चरन प्रीती साचा मेल, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। अचरज पारब्रह्म करी खेल, ना कोई जाणे जीव गंवारा। आपे गुर आपे चेल, धुरदरगाही सच सहारा। धर्म राए दी कटे जेल्, मानस देही जन्म सुधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच हरि जगत नर, जिस जन मग्गया इक्क दुआरा। इक्क दर सच दरबार है। मिले नाम वर, भगत भण्डार है। गुरमुख विरला जाए तर, मिले मेल हरि दातार है। अमृत नुहाए साचे सर, काया होए ठंडी ठार है। आप चुकाए जम का डर, दूई द्वैती दए निवार है। इक्क वखाए साचा घर, जगे जोत अगम्म अपार है। ना जन्मे ना जाए मर, नर नरेश सहिज सुख धार है। आपणी करनी रिहा कर, गुरमुख साचे पैज संवार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत भाणा साचा राणा, आप कराए करनहार करतार है। करन करावण जोग, प्रभ समरथ है। जन भगतां देवे दरस अमोघ, शब्द चढ़ाए साचे रथ है। हउमै कटे चिन्ता रोग, पंजां चोरां देवे मथ्थ है। साचा रस रसना लैणा भोग, सोहँ शब्द जगत अकथ्थ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग पार उतारे, सद दे कर रक्खे हथ्थ है। कलिजुग उधरे पार, सरन सरनाईआ। पूर्ब कर्म रिहा विचार, बणे मात पित भैण भाई साक सज्जण सैण, किसे भेव ना पाई है। आपे जाणे आपणी धार, ना कोई रसना सके कहण, आवण जावण जगत गेड़ आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत मुकाए लहिण देण, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी पुरख अबिनाशी, एका राह जगत फाह कलिजुग अन्तिम लाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीशा बीस इकीसा, छत्र झुल्ले साचे सीसा, राउ रंक शाह सुल्तान विच जहान, लए चरन बहाईआ। आए चरन राज रजाना। एका सरन श्री भगवाना। सोहँ शब्द नाम निधाना। तिन्नां लोआं हरि जपाना। अवर ना जाणे कोया, गुरमुखां हरि भेव खुल्ाना। भेव चुकाए दोअँ दोआ, एका रंग नाम रंगाना। आप उठाए कलिजुग सोया, प्रभ अबिनाशी वाली दो जहानां। दुरमति पापां मैल धोया , अमृत सीर इक्क प्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना। हथ्थीं गानां बन्न धीर धरांयदा। कलिजुग

माया ना लग्गे तन, हउमे पीड़ कढांयदा। भाण्डा भरम देवे भन्न, आत्म साची जोत जगांयदा। साचा शब्द सुणाए कन्न, नाद धुन इक्क रखांयदा। आप तुड़ाए आत्म सुन, माया पड़दा परे हटांयदा। सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख साचे लाल गोद उठांयदा। कवण जाणे हरि तेरे गुण, बोध अगाध अगाध बोधा भेव कोए ना पांयदा। धुरदरगाही साचा माही जन भगतां पुकार रिहा सुण, पुरीआं लोआं धार बन्न्हांयदा। गुरमुख साचे मात चुण, साचे धाम ल्आंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीशा छत्र सीसा, बीस इकीसा एका एक झुलांयदा। साचा धाम हरि न्यारा। ना कोई दिसे पार किनारा। पुरीआं लोआं पाए हिस्से, पृथ्मी अकाश घट घट वास, वेख वखाणे सर्ब संसारा। चौदां लोक मण्डल रास, ब्रह्मण्ड वेख वखाणे हरि पछाणे साची धारा। नौ खण्ड पृथ्मी पाई वंड, सत्तां दीपां सोहँ शब्द जै जैकारा। जगी जोत विच ब्रह्मण्ड, वेख वखाणे हरि पछाणे विच वरभण्ड, होए जै जै जैकारा। बेमक्खां अन्तिम आई कंड, घर घर दिसे नार रंड, लक्ख चुरासी हाहाकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग अन्तिम पार उतारा। आप बणाए सच दुलारे, सतिजुग चढ़ाए साचे चन्द, साचे चन्द जगत रुशनाईआ। ठंडा सीतल बन्द बन्द, इक्क उपजाया परमानंद, मदिरा मास रसन तजाईआ। शब्द सुणाए साचा छन्द, सोहँ ढोला गाया चांईं चांईंआ। आपे ढाहे भरमां कंध, आत्म अन्धेर पड़दा लाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा बख्शंद, आदि अन्त मेल मिलाईआ। हरि समरथ, जगत पित सुखदाईआ। देवे नाम सच्ची वथ, नित नवित्त जोती नूर जगत सवाईआ। ना कोई जाणे वार थित्त, प्रभ अबिनाशी मात किसे ना जाईआ। गुरमुख विरला रक्खे चित्त, जिस जन दया कमाईआ। अमृत आत्म काया दए सिंच, काया मन्दिर साचा अन्दर साचा धाम सुहाईआ। आपे बणे हरि साचा मित, एथे ओथे होए सहाईआ। मानस जन्म कलि लैणा जित्त, जन्म अनमुल्लड़ा विच मात दे पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा खुल्ह्ड़ा गुरमुख विरला पूरे तोल तुलड़ा, जिस जन तन चरन सरन सीस हरि भेंट चढ़ाईआ। मन तन चरन गुर भेंटा, ना कोई बेटी ना कोई बेटा, धुरदरगाही एका खेवट खेटा, चार कुन्ट हरि चतरंग सूरा सरबंग। सृष्ट सबाई ताणा पेटा, शब्द घोड़े कसे तंग। नाम शस्त्र पहने अंग। गुरमुखां प्रेम लाए मैहन्दी रंग। सृष्ट सबाई इक्क दूजे दे नाल खहन्दी, नौ खण्ड पृथ्मी लाए जंग। झूठे वहिण अन्तिम कलि वहन्दी। प्रभ प्रगट होए भेखाधारी धार भेख अमाम मैहन्दी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार, संग मुहम्मद चार यार। वेख वखाणे पाए सार। ईसा मूसा बन्न्हे धार। पंचम् पोह वेख विचार। वाली हिन्द प्रभ करे ख़बरदार। प्रगट होया वडा शाह मृगिन्द, शब्द डंक वज्जे अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणा बाणा

६६० ०४

शब्द ताणा, पंचम् पोह हरि सुहाना, वाली हिन्द सोया मोया आप उठाना, लेख लिखाए अपर अपार। लेखा लिखणहार सुल्ताना। वेख वखाणे श्री भगवाना। भेख वटाए कृष्ना कान्हा। तीजे लोयण दरस दिखाए, नैण मुँधारी नैण मुंधाना। अमृत मेघ बरस वखाए, इन्द इन्द्रासण चरन बहाए, शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष गणेश जिन उपाए, अन्तिम कलि आप मिटाना। साची जोत दस दस्मेश शब्द शहीदी बन्ने गाना। कलिजुग अन्तिम वेस कराए, ना कोई जाणे जीव जहाना। खुल्ले हरि जी केस रखाए, आत्म जोती नूर महाना। माझे देस होए रुशनाए, वाली हिन्द सखी सुल्ताना। वरन बरन ना कोई रखाए, जात पात हरि भेव मिटाना। एका सरन टेक रखाए आत्म तीर निर निशाना। गुरमुखां आत्म बुध बबेक कराए, सोहँ देवे नाम निधाना। सृष्ट सबाई इक्क कराए। राउ रंक द्वार बंक हरि इक्क सुहाए, शब्द वजाए साचा डंक, चार कुन्ट हरि सुहाना। गुरमुख उधारे जिउँ राजा जनक, पतित पावन पार कराना। प्रगट होए वासी पुरी घनक, मातलोक कलिजुग अन्तिम वक्त सुहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह तिन्नां लोकां पाए सो, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाना। काला सूसा तन श्रृंगार। ईसा मूसा होए ख्वार। संग मुहम्मद चार यार। अहिमद बीर बैताले दर दर भिखार। चारों कुन्ट होए कंगाले, कोई ना पावे सार। मसीत मन्दिर ना दिसे धन माले, चारों कुन्ट भट्ठ अन्गयार। फल ना दिसे किसे डाले, लक्ख चुरासी आई हार। जन भगतां तोड़े जगत जंज़ाले, शब्द पहनाए साचा हार। सच्ची वस्त नाम देवे धन माले, अन्तिम अन्त ना आए हार। प्रभ भेखा धारी करे भेख, सृष्ट सबाई वेख तन पहनाए सूसे काले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ दर जगत दुआरा दसवां घर हरि निरँकारा गुरमुखां पावे सारा। सर्ब सहाई जोती नूर इक्क अलाही। नूर नुरंतर सर्ब घट अन्तर, जगे जोत इक्क बसंतर, भेव किसे ना पाई। नूर अलाही अल्ला ऐली हक्क। ना कोई मिल्या सच घर माही। अन्तिम फल गया पक्क। कवण देवे ठंडी छाईं, कलिजुग अन्तिम गया थक्क, ना कोई पकड़े दोवें बाहीं, चारों कुन्ट पैण धक्क। दर दुआरे रोवण ग़रीब गऊ गाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे, दूर दुराडे रिहा तक्क। हरिभगत जगत वड्डयाईआ। साची बूंद रक्त, प्रभ जोती नूर सवाईआ। पवण शब्दी साची शक्त, आदि अन्त इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, इक्क रखाए सच घर, आवे जावे आपणी खेल रचाईआ। आवण जावण खेल करतारा। पतित पावन विच संसारा। भेखाधारी हरि बनवारी, जिउँ बल बावन करे खेल अपर अपारा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क रखाए सच घर, आदि अन्त जुगा जुगन्त, त्रै लोआं पावे सारा। त्रै लोआं पाए सार सुरत संभालदा। करे जोत इक्क अकार, लक्ख चुरासी पसर पसार मात पताल अकाश एका धार रखांयदा। घट घट हरि जी रक्खे वास, एका शब्द पवण

स्वास, गुरमुखां धीर धरांयदा। लक्ख चुरासी होणी नास, मुख लगायण मदिरा मास, आत्म रस सर्ब गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, अन्तिम कलि वसे निहचल धाम अटल, भाणा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा भाणा हरि करतार। ना कोई जाणे जीव जन्त गंवार। कलिजुग भुल्ले माया रुले, डुब्बे विच मँझधार। लग्गी अग्न काया कुले, आत्म भरया इक्क हँकार। गुरमुख विरला पूरे तोल तुल्ले, मिल्या जिस शब्द अधार। मात फुलवाड़ी फले फुल्ले, लोकमाती सच बहार। गुरमुखां अमृत आत्म अन्त ना डुल्ले, खुल्ले कँवल जोत उज्जयार। बेमुखां पाणी प्या काया चुले, होए अन्ध अंध्यार। हरि शब्द भण्डारा सदा खुल्ले, देवणहार सर्ब संसार। कोए ना लाए हरि जी मुल्ले, निहकलंक लए अवतार। गुरमुख विरला पूरे तोल तुले, माया रुले, जूठे झूठे जगत विहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी शब्द घोड़े चिट्टे अस्व रहे अस्वार। शब्द घोड़े हरि अस्वारा। चार कुन्ट पावे सारा। राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहानां, वेखे विगसे कर विचारा। कलिजुग जीव जूठा झूठा पीण खाण, साचा नाम इक्क गिरधारा। दरगहि साची ना मिले माण, माया ममता दुःख लग्गा भारा। जन भगतां चुकाए जम की काण, देवे दरस अगम्म अपारा। शब्द दुशाला देवे ताण, जोती नूरा साचा सूरा, सर्बकला भरपूरा वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन आप बिठाए शब्द बबाण। सच बबाणा शब्द उडारी। सच मसाणा पीणा खाणा नाम अधारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत न्यारी। संत सुहेला मीत, हरि राम रमईआ हरि रहिमान। मानस जन्म जाणा जग जीत, दर पुरख सुजान। आप चुक्काए जम का डर, गुरमुख आत्म बूझ बुझान। आत्म जोती नूर कर, मेट मिटाए अन्ध अंध्यान। एका इक्क इक्क शब्द साची तूर, धुनी धुन धुनी धुनकान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क अकेला संत सुहेला, करे खेल कलि अन्त महान। कलिजुग अन्तिम खेल रचाउणी। गुरमुख साचे संत प्रभ बणत बणाउणी। मिले मेल हरि साचे कन्त, आलस निन्दरा मगरों लाउहणी। ना कोई जाणे जीव जन्त, लक्ख चुरासी जिस कटाउणी। कलिजुग भुल्ले जूठे झूठे संत, गुर गोबिन्द लिख्त भविख्त हरि साचे पूर कराउणी। लक्ख चुरासी देव दंत, धर्म राए तेरे हथ्थ फड़ाउणी। जन भगत बणाए साची बणत, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी प्रभ साचे मात लगाउणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच द्वार हरिभगत अधार, एका धाम गुर संगत मेल मिलाउणी। हरि धाम जगत अपार। जोती राम खेल करतार। गुरमुख माणक मोती काया झूठा चाम, कराए सच्चा वणज वपार। सोहँ जपाए साचा नाम, चार वरन इक्क प्यार। कराए गुरसिक्खां पूरन काम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि

जिउँ त्रेता राम। अन्तिम कलि जगत वणजारा। प्रभ अबिनाशी करया वल छल, भुल्लया हरि संसारा। जोती खेल घड़ी घड़ी पल पल, बेमुख जीव ना पायण सारा। वेख वखाणे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा। लक्ख चुरासी पाए डूंघी डल, आप चबाए आपणी दाढ़ा। गुरमुख बहाए निहचल धाम अटल्ल, दर खुल्हाए सतारां हाढ़ा। कलिजुग भाणा ना जाए टल, बेमुखां लग्गे अग्न बहत्तर नाड़ा। सृष्ट सबाई जाए हल, शब्द सरूपी उठे धाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरा इक्क बणाए मात अखाड़ा। सुरत शब्द हरि चरन ध्यान रखांयदा। सोहँ साचा नाम बबाण, हरि संतां आप चढ़ांयदा। इक्क लगाए सच उडान, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड पार करांयदा। दर घर साचे देवे माण, चरन सरन इक्क रखांयदा। ना कोई सके कलि पछाण, जोती जामा हरि जी पांयदा। गुर नानक करया इक्क ध्यान, निहकलंकी डंक वजांयदा। गुर गोबिन्द रखाई एका आण, विष्नूं भगवान खेल खलांयदा। दर दुआरे देवे साचा माण, अन्तिम कलि नूर नुराना शाह सुल्ताना वड मेहरबाना, भेख अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा मात रखांयदा। गुरमुखां रक्खे भारा पलड़ा, साची धार हरि बन्ह्नांयदा। दस्से राह इक्क सुखलड़ा, सोहँ साचा जाप जपांयदा। आत्म दर दुआरे अग्गे खलड़ा, निज घर आत्म दरस दिखांयदा। कलिजुग अन्धेर एका झुलड़ा, ना कोई किसे छुडांयदा। कलिजुग जीआं फल काया अन्तिम हुलड़ा, दूजी वार ना कोई लगांयदा। लग्गी अग्ग काया कुलड़ा, कोई ना दिसे बुझांयदा। दर दुआरा नर निरँकारा एका खुल्हड़ा, गुरमुखां दया कमांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां फड़ फड़ बाहों धुर दरगाहों विछड़े आप मिलांयदा। विछड़े धुर दरगहि, मेले हरि निरंकारया। बण जगत मलाह, निहकलंक कलि जामा धारया। गुर गोबिन्द वेले अन्तिम मारी धाह, दर साचे इक्क पुकारया। कवण पकड़े मेरी बांह, लोकमात देवे कवण सहारया। पिता पूत वारी मां, खाली चल्लया तेरे द्वारया। सिर रक्खीं ठंडी छाँ, घर घर उडाईं कां, निहकलंक अन्तिम कलि आप आपणी वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर दरवाज़ा हरि द्वार सच्चा दरबार गुर पीर साध संत औलीए पीर शेख़ गौंस मंगदे रहे वारो वारया। सच्चा इक्क दरबार नर निरँकार है। दूजा कोई ना पावे सार, लक्ख चुरासी रही झक्ख मार है। तीजे जोती इक्क अकार, लक्ख चुरासी पसर पसार है। चौथी शब्द इक्क उडार, तिन्नां लोआं खण्ड मण्डल ब्रह्मण्डां देवे सच सच्ची धुन्कार है। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् पवण अवण गवण, लक्ख चुरासी देवे इक्क स्वास है। छेवें छप्पर छन्न ना कोए, जिथ्थे हरि जी सच्चा सोए, साची जोत इक्क प्रकाश है। सत्तवें घर जोत निरँजण इक्क बलोए, संत गुर ना करे कोई क्यास है। अठवें अट्ठ तत्त विचारे, वसे काया महल्ल मुनारे, ना कोई जाणे जीव संसारे, जन भगतां होया दास है।

६६२ ०४

नावें रंग सच्चे गिरधारे, मात उपजाए सच सुच्च इक्क दरबारे, नौ दर बेमुखां घर आप खुल्हारे, गुरमुखां बन्द करांयदा। दसवें दहि दिश विचारे, गुरमुखां वसे आत्म घर सच्चे दुआरे, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क धाम जगत अटल्ल पंचम् पोह नींह रखांयदा। पंचम् पोह बन्न्हे धार। आप उठाए शब्द खण्डा साचा डण्डा ना जाणे को, राजा राणा लए सुधार। गुरमुखां बीज आत्म साचा बो, सोहँ शब्द हरि अपार। एका हल हरि रसना रिहा जो, आप बणाए सति सति सति बहार। बेमुख गुर दर ना सके छोह, देवे दर दुरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सच महल्ल दए उसार। सच महल्ल कर उसारी। पुरीआं लोआं बन्न्हे धारी। पूर्ब कर्म सर्ब विचारी। ब्रह्मलोक हरि खेल न्यारी। गुरमुख जोती जगे अपारी। इन्दलोक सच्ची सरदारी। करोड़ तेतीसा चरन निमस्कारी। छोटे बाले सिर छत्र झुलारी। जगत जगदीशे आई वारी। कलिजुग अन्तिम खेल अपारी। शिव शंकर सुन स्माधी आत्म साधी, जटा जूट धारी। जोत निरँजण प्रभ साचे लाधी, शब्द लग्गा मगर भारी। अन्तिम कलिजुग विच साचा नादी, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडा माधव माधी, सच महल्ल इक्क अटल्ल करे सच उसारी। हरि ब्रह्मण्ड ब्रह्मण्ड, अकार वेख वखाणे। सर्ब घट जाणे हरि विच नौ खण्ड, करे खेल हरि महाने। कलिजुग जीवां होई आत्म रंड, भुल्ले जीव जन्त बेमुहाणे। वेले अन्तिम प्रभ देवे कंड, ना कोई करे गुर पीर सहाने। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आत्म ठंड, देवे नाम गुण निधाने। देवे नाम हरिभगत अधारी। पूरन करे काम, जोती नूर सर्ब पसारी। मिटे कलि रैण अन्धेरी शाम, जगे जोत इक्क निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पंच पुरख सुजाना, चलाए शब्द तीर साची धारी। शब्द साची धारी विच जहान है। लक्ख चुरासी पावे सारी, एका जगत सच्ची उडान है। साधां संतां वेख वखाणे वारो वारी। शब्द घोड़े हरि बलवान है। ना कोई जाणे नर नारी, निहकलंक झुलाए सच्चा इक्क निशान है। इक्की माघ करे त्यारी, सिँघ लाभ जाणा जाग, ना सौणा बण नदान है। इक्की माघ आए दुआरे। करे खेल हरि निरँकारे। सतवें घर साचा मेल, छे पंज ना हरि विचारे। शब्द चढ़ना साचा तेल, चौथे दर बन्द कवाड़े। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेल, लग्गे अग्न तत्ती हाढ़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, विच मात उपजाए धुरदरगाही साचे लाड़े। इक्की माघ हरि अस्वारा पवण घोड़ा। शब्द तिक्खी धारा नाम जोड़ा। ना कोई पावे सारा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा। शब्द धुनी नाड़ी तन मन्दिर महल्ल दस्म दुआरे एका साचा पौड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात मार झात इक्क इकांत धुरदरगाही

साचा माही आया दौड़ा। धुरदरगाही धाम अवल्ला। वसे हरि इक्क इकल्ला। लक्ख चुरासी आप भुलाए, कर वल छल्ला। गुरमुख साचे लए जगाए, सोहँ शब्द हथ्थ फड़ाए साचा भल्ला। साध संत आदि अन्त जुगा जुगन्त प्रभ रिहा पैज रखाई।, वेख वखाणे जो जाणे सच महल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया, शब्द सरूपी खेल रचाया, पवण सरूपी मेल मिलाया, किसे हथ्थ ना आए अल्ला। शब्द ख़ज़ाना आत्म भरपूर। गुर पूरा होया मेहरबाना, आत्म दिया जोती साचा नूर। तन बद्धा नाम गाना, माया ममता कीनी दूर। जोत प्रकाशी कोटन भाना, गुर पूरा हाज़र हज़ूर। जगत झूठा पीणा खाणा, एका वस्त नाम सच्ची तूर। प्रभ देवे दाना बीना, अन्दर बैठा ना दिसे दूर। संत सुहागी ठांडा सीना, पंचम् दिसे कूड़ो कूड़। दिवस रैण मन तन भीन्ना, गुर चरन मस्तक साची धूढ़। आप आपणे जिहा कीना, छुट्टे जगत झेड़ा कूड़ो कूड़। साचे संत मिल्या माल धना पूरे धनवन्त जीव जन्त ना जाणे मूढ़। वेख वखाणे प्रभ साचा कन्त इक्की माघ आत्म लाए जाग, हथ्थ पकड़े आपणे वाग, वेख वखाणे शब्द हुलारा इक्क पंघूड़। अन्दर गुर बाहर गुर, गुप्त ज़ाहिर साची सुर, आत्म जोती नूर निरालम, वेख वखाणे सर्ब घट आलम, सतिगुर सखी सर्ब सुल्ताना। विच जहानां शब्द डोरी नाम बिबाणा, एका पौड़ी दोए जहानां। कलिजुग वेल होई कौड़ी, वेखे जाणे श्री भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे साचा घर, जोत नूरी शब्द महल्ला साचा नाउँ इक्क टिकाणा। काया मन्दिर महल्ल सच दुआरा। जगे जोत काया झूठी खल, रोशन होए तन मुनारा। ना कोई जाणे जल थल काया डूंघी वेखे डल, बैठा इक्क इकल्ला नर निरँकारा। शब्द सरूपी चलाए हल, अमृत बरखे जल ठंडी धारा। निहचल धाम इक्क अटल, ना कोई जाणे जन्त गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाणे सर्ब थित्त जाणे, साचा मेल दस्म दुआरा। काया चिन्ता रोग आत्म दुःखदाई। मीठे करे रसना भोग, ना होवे कोई सहाई। एका मिले शब्द सच्चा जोग, काया सुफ़ल कराई। नाम मिले सच्ची चोग, तृष्ना भुक्ख सर्ब मिट जाई। हरिजन जन हरि कटे चिन्ता विजोग, साचा सुख इक्क उपजाई। दर घर मिले दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, जो जन रसना सद सद गाई। रसना गाउँणा गहर गम्भीरा। आत्म शांत ठंडी धार, देवे अमृत साचा नीरा। अन्दर वेखे मार झात, मिटे अन्ध अन्धेरी रात, दिवस रैणी कढ्ढे पीड़ा। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन जन भगत सुहेला आपे बन्न्हे बेड़ा। बेड़ा बन्न्हे हरि बनवारी। काया नगर खेड़ा वसे, एका राह साचा दिसे, भुल्ले रहण ना जीव गंवारी। शब्द तीर साचा कसे, दुःख दलिद्र दर तों नस्से, किरपा करे नर हरि हरि नर सर्बकलधारी। आत्म घर साचे वसे, खिड़ी रहे सच्ची गुलज़ारी। दुक्खां मिटे अन्धेरी रैण मस्से, आत्म जोती हरि उज्जयारी।

जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे वर जो जन आए चरन सरन सच्ची सरकारी। गुर चरन सरन कलि जाणा जाग। मदिरा मास देणा त्याग। प्रभ आप बुझाए काया अग्न लग्गी झूठी आग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुक्खां रोगां धोए अगले पिछले दाग़, पवण मसाणा तीर निशाना मारे गुण निधाना, आत्म वड प्रभ साचे साज वखाना। करे खेल अन्ध घोरी, पवण मसाण गौरी, दर घर साचे कौण करे चोरी, वेख वखाणे गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन ध्याना। पवण पवण पवण मसान मसानयां रविआ सर्ब गवन, ना जाणे जीव निधानयां। दीआ एका जगत दुःख वरता ना किसे कलि पछाणयां। काया मन्दिर अन्दर अन्धेरी राता, सोया जीव अज्ञानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण जगत निशान वाली दो जहानया।

❁ १६ मग्घर २०११ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❁

सत दीप नौ खण्ड सर्ब संसारया। वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, सुघड़ स्याणया। पहली पाई मात वंड, सोलां मग्घर कर ध्यानया। साधां संतां आई कंड, उठया बाल नौजवानया। दर घर जाए वंड, इक्क वखाए आपणे भाणया। कलिजुग औध गई हंढ, बेड़ा डुब्बे बेमुहाणया। सिर उठाई पापां पंड, तन पाए झूठा बाणया। आत्म होई खण्ड खण्ड, ना कोई देवे माण जगत निमाणया। ना कोई सुहागण ना कोई रंड, कलिजुग जीव अन्धे काणया। शब्द फड़े हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, प्रगट होए विच जहानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां मग्घर इक्क इक्क अक्खर कर कर वक्खर, रखाए जगत निशानया। सोलां मग्घर करे विचारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। छोटे लाल हरि दुलारे। शब्द घोड़े कर अस्वारे। चरन प्रीती साची जोड़े, तिनं लोआं वसे बाहरे। आप चढ़ाए शब्द घोड़े, गुरूआं पीरां साधां संतां वाजां मारे। कलिजुग दिन रहि गए थोड़े, निहकलंक कलि जामा धारे। वेखे परखे मिठे कौड़े, शब्द हथौड़ा इक्को मारे। गुरमुखां हरि साचा बौहड़े, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारे। सोलां मग्घर खेल रचाई। गुरमुख साचे संत जन हरि साचा मेल मिलाई। देवे नाम इक्क धना, रोग दुःख रहे ना राई, जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द सृष्ट सबाई रिहा सुणाई। छोटा लाल कर त्यारे। साधां संतां वाजां मारे। गुरमुखां देवे शब्द अधारे। आत्म उपजाए एका सुखा, आओ चल्ल सच घर सच दरबारे। निहचल धाम इक्क अटल, वसे ना मन्दिर किसे चुबारे। वेख वखाणे जल थल, डूंघी कन्दर

डूंघी गारे। शब्द मारे इक्क उछल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात खुल्हाए इक्क दुआरे। छोटा बाला उत्तों बोले। साधां संतां वाजां मारे, आत्म कुण्डा एका खोल्हे। जीव जन्त आदि अन्त, हरि साचा पूरे तोल तोले। जन भगत मिलावा साचे कन्त, आत्म पड़दे खोल्हे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी इन्द्र सच सिँघासण आप बिठाए पड़दे ओहले। इन्द इन्द्रासण हरि श्रृंगार। छोटा बाला आया भज्ज, आपणी पैज संवारे। मेटे दाग़ काले, शब्द घोड़े कर अस्वार। अट्ठे पहर करे प्रितपाले, अमृत बख्शे ठंडी धार। चरन प्रीती निभे नाल, पुरी इन्द्र पैज संवार। इन्द्र दुआरे होए खाली , अन्तिम होया कलिजुग बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत सदा अतीत, एका बख्शे सच्चा चरन प्यार। सोलां मग्घर वेख वखानया। जगत भुलेखा भेख वटानया। साचा लेखा हरि लेख लिखानया। लक्ख चुरासी विच्चों वेख, भाल बाल अञ्याणया। अग्गे लाया साधां संतां नेत्र लैणा पेख, सोलां कलीआं तन पहनाया। धुरदरगाहों लिखी साची रेख, बिधना लेख दए मिटाया। सतिजुग साची लग्गी मेख, इन्द्र गगन सुहाया। नेत्र नैण लोचण तिन्ने लैण वेख, सच सिँघासण हरि बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि मेहरबान लक्ख चुरासी विच्चों कर वख बहाया। लक्ख चुरासी कीना वक्खर। सोहँ शब्द भेंटा अक्खर। प्रभ आप उठाए साचा बेटा, दया कमाए रोड़ी सक्खर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे उजाड़ पहाड़ वड वड पत्थर। सोलां मग्घर समरथ दीन दिआलया। जन भगतां सिर रक्खे हत्थ, देवे शब्द नाम दुशालया। सोहँ इक्क चलाया साचा रथ, रथ रथवाही आपणा आप रखानया। पुरीआं लोआं देवे मत्था, गुरमुखां साचा राह वखानया। जगत चलाए साची गत्थ, देवे माण जगत जहानया। वेला गया ना आवे हत्थ, भुल्ले जीव गुण निधानया। राजे राणयां पाए नत्थ, घर घर फिराए वड शैतानया। सगल वसूरे जायण लत्थ, जो दर आए जीव निमाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां मग्घर सिँघ मनजीत, आप चुकाए पीणा खाणया। पीणा खाणा जगत चुकाया। शब्द बाण हत्थ फड़ाया। तीर कमान हरि रसन रखाया। करे पछाण जगत रघुराया। साधां संतां तुट्टे माण, नाम निशान इक्क लगाया। आपे जाणे जाणी जाण, दूसर कोई सार ना पाया। तट्ट ब्यासा वेख वखाण, शब्द सीने तीर लगाया। दयाल बाग़ कर ध्यान, शब्द आण इक्क वखाईआ। इक्क झुलाए शब्द निशान, छोटे बाल हत्थ फड़ाईआ। पुरीआं लोआं देवे माण, गुरमुखां हरि दया कमाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हान, जगत लेखा दए चुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ मनजीत छोटे बाले आपणा भाणा तेरे हत्थ रखाईआ। छोटे बाले हरि हुक्म सुणाए। साध संत लए जगाए। सोया मोया कोई रहि ना जाए। एका हल प्रभ साचे जोया, चारे कुन्टां आपे वाहे। अमृत बीज गुरमुखां आत्म बोया, साचा फल

नाम खवाए। निझर रस एका चोया, तृष्ना भुक्ख सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे ना जाणे जीव कोए। सिँघ मनजीत सेव कमाई। साधां संतां जीआं जन्तां दए उठाई। आदिन अन्ता इक्क भगवन्ता, साची बणता रिहा बणाई। हरिजन मेल साचे कन्ता, सिँघ जगदीश उठाए फड़ के बाहीं। वेला चुक्कया साधां संतां, राजे राणयां पाए फाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द हुक्म सुणाए, दए सुनेहड़ा थांउँ थाँईं। सिँघ जगदीश कर विचार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। लोकमात मार झात, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। चारों कुन्ट अन्धेरी रात, चन्द सूरज दोए गए हार। ना कोई पुच्छे मात वात, जीव जन्त होए ख्वार। शिव शंकर बैठा इक्क इकांत प्रभ चरन करे इक्क प्यार। प्रगट हो प्रभ कमलापात, धरत मात रोवे धाहां मार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अपर अपार। , शिव शंकर दर पुकारया। प्रभ साचे खेल अपारया। प्रभ साची जोती मेल कर, विछड़े जुग कई कई वारया। एका आपणा सज्जण सुहेल कर, कलिजुग दुखी आत्म भुक्खी चरन प्यारया। इक्क उपजाना साचा सुखी, शब्द चलाणा साची धारया। गुरमुखां कर कर उज्जल मुखी, खिच्च ल्याए चरन द्वारया। सुफ़ल कराए मात कुक्खी, देवे माण विच संसारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे सच द्वार, शिव शंकर दर पुकारया। शिव शंकर दर दए दुहाई। कलिजुग वेला अन्तिम आया, दर घर साचा कोई दीसे नाही। निहकलंक हरि दर सुहाया मेल मिलाया फड़ के बाहीं। अन्तिम वेला नेड़े आया, सदा रक्खे ठंडी छाईं। हेरा फेरा करदा आया, जीव जन्त कोई जाणे नाही। तेरा मेरा नाउँ धरदा आया, जोती नूर सभनीं थाँईं। गुरमुखां हरि वरदा आया, सेज बहाए चांईं चांईं। आत्म भण्डारे भरदा आया, तोट कोई रक्खे नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम अन्त कलि दूसर कोई दीसे नाही। शिव शंकर दर निमाणा। कंकर कंकर वरते भाणा। शब्द मृदंग इक्क वजाणा। गुरमुखां चोले चाढ़े रंग, रंगण नाम इक्क रंगाणा। आप निभाए आपणा संग, नर हरि श्री भगवाना। शब्द घोड़े कस तंग, आप उडाए इक्क बबाणा। दर घर मिले साची मंग, मंगे मंग चरन ध्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बिठाए दया कमाए साचे सच टिकाणा। सच टिकाणा हरि मेहरबान, हरि देवे शब्द बबाणा इक्क उडान है। मिले आत्म जोती पवण मसाणा, छड्डे जीव जहान, एह काया दिसे झूठा बाणा, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक मिल जाण है। दर घर साचा इक्क पछाणा, जिथ्थे वसे हरि भगवान है। मिले अमृत नाम निधाना, अट्ठे पहर रंग रंगान है। छुट्टे जगत पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मेट मिटान है। झुल्ले सच्चा नाम निशाना, लक्ख चुरासी एका आन है। जगी जोत इक्क भगवाना। नूरी जोत डगमगान है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप बिठाए दया कमाए साचे धाम निधान है। साचा धाम आप सुहाया। पूरन काम अन्तिम कलि आपणा आप कराया। जूठा झूठा काया चाम, अन्तिम वेले हथ्थ किसे ना आया। आत्म जोती नूरी प्रभ साचे मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शिव शंकर अंकुर कंकर, एका मृदंग वजाया। शिव शंकर कर त्यारी, प्रभ साचा हुक्म सुणांयदा। जगी जोत हरि निरँकारी, लोकमात डगमगांयदा। वेख वखाणे वारो वारी, पुरीआं लोआं धार बन्नांयदा। पहलों आए ब्रह्म वारी, सिँघ पाल तख्त सुहांयदा। राजे इन्द करी त्यारी, सिँघ मनजीत हुक्म सुणांयदा। शिव शंकर चरन बलिहारी, सिँघ जगदीश दरस दिखांयदा। वेखे खेल हरि करतारी, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। प्रभ खेल अपर अपारी, जीव जन्त ना कोई जणांयदा। पुरीआं लोआं एका शब्द उडारी, जोती नूर इक्क रखांयदा। दर घर साचे लग्गी सच्ची फुलवाड़ी, प्रभ साचा फल लगांयदा। करे खेल सतारां हाढ़ी, राजे राणयां हुक्म सुणांयदा। गुरमुखां रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, लक्ख चुरासी गेड़ कटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि संत दुलारे, साचा नाम निशान तेरा जगत झुलांयदा। सच निशान जगत झुलाउणा। रंगण रंग सति कराउणा। एका तत्त हरि रखाउणा। आत्म शब्द साचा तत्त, दे मति चार वरनां आप समझाउणा। प्रभ अबिनाशी रक्खी पति, सिँघ जगदीश शिव शंकर जाए सुणाउणा। बाल अवस्था ना तुट्टे धीरज यति, रक्त बूंद एका लेख लिखाउणा। आत्म शब्द साचा सति, साची शक्त हरि दर घर बन्द कराउणा। पूर कराए हरि सेवा भगत, पंचम् पोह नींह रखाउणा। मिले वड्याई चार जुग जगत, गुरसिख साचे सेव कमाउणा। दर घर साचे मिली मुक्त, सिँघ जगदीश तेरा दर दरबार विच मात उपजाउणा। निहकलंक बणाई साची जुगत, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण किसे हथ्थ ना आउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड मेहरबान, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी विच मात लगाए, शब्द डण्डा विच नव खण्डां सिँघ प्रीतम तेरे हथ्थ फड़ाउणा। शब्द डण्डा लैणा फड़। साचे पौड़े जाणा चढ़। साध संत कोई अग्गे ना सके अड़। गुरूआं पीरां जोत दए निरँकार, ख़ाली दिसण धड़। सच बणाए दर दरबार, आप अन्दर बैठे वड़। लक्ख चुरासी भौंदी फिरे बाहर, शब्द तीर वज्जे कड़ कड़। गुरमुखां पैज हरि रिहा संवार, दर दुआरे अग्गे खड़्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सुल्तान अट्ठे पहर शब्द घोड़ चढ़। पंचम् पोह भगत वड्डयाईआ। जन भगतां मिटे दुःख रंज, सवेर सन्झ इक्क रखाईआ। ना कोई दिसे धार मंझ, प्रभ बेड़ा पार कराईआ। शब्द रक्खे साचा वञ्झ, गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। छब्बी पोह गुरमुखां चढ़नी साची जंञ, लाड़ी मौत जिन व्याहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाए, साधां संतां गुरूआं पीरां, जोती नूरा जोती खिच्च लिआईआ। साची

बणत आप बणाउणी छब्बी पोह, तुट्टे जगत जंज़ाला झूठा मोह, पूर कराए वेख वखाए मात पताल पृथ्मी अकाश। मात पताल पृथ्मी अकाशे। करे खेल विच परवासे। नौ अठारां बणे बणत, लेख लिख्त लिलाट लिखासे। दर घर वड्याई साचे आवण जावण चुक्के झेड़ा, दहि दिश दस मासे। हरि हरि जी बन्ने बेड़ा, निज घर आत्म रक्खे वासे। वसदा रहे नगर खेड़ा, गुरमुखां जन्म होया रहिरासे। कलिजुग जीव झूठा झेड़ा, लक्ख चुरासी अन्तिम नासे। हरि हरि का भाणा मेटे केहड़ा, एका एक पुरख अबिनाशे। धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल मात कराए, गुरमुख साचे लेखे लाए, इन्दलोक शिवलोक धाम बहाए, ब्रह्मलोक रखाए, सिँघ पाल वासे। वसे धाम नर निरंकारया। अमृत प्याए साचा जाम, गुरमुखां कर प्यारया। लेखे लाए काया चाम, वसाए सच दरबारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर दुआरा, जन भगत भगत जन सदा भिखारा, देवणहार हरि गिरधारया। तेग बहादर सेव कमाई। चिट्टी चादर धर्म विछाई। प्रभ अबिनाशी किया आदर, सिँघ पाल जन्म दवाई। करी खेल करते कादर, निहकलंकी मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सेवा अलख अभेवा, देवी देवा रिहा पूर कराई। गुर पूरे जन्म दवाया। वड सूरे हरि सरन लगाया। कारज करे मात पूरे, मरन डरन जगत चुकाया। सर्बकला आप भरपूरे, पिता पूत हरि जोत टिकाया। बेमुखां कलि दिसे दूरे, गुर गोबिन्द कलि जामा पाया। जोत निरँजण साची नूरे, प्रभ अबिनाशी झोली पाया। समरथ पुरख सदा उडीके, सिँघ पूरन हरि नाम उपजाया। निहकलंक कलि आसा पूरे, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा अन्त भुलेखा, अन्तिम दए मिटाया। पिछला लेखा हरि मुकांयदा। भगत भुलेखा अन्त कढांयदा। ना कोई जाणे पीर औलीआ शेखा, साध संत ना किसे जणांयदा। आपे लिखी धुर मस्तक रेखा, लेखा आप लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम धारे भेखा, जोती जामा हरि वटांयदा। गुर गोबिन्द तेरे लिखे लेखा, हरि लेखा लेख लिख्त पूर करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेत्र नैण लोचन जिस जन पेखा, लक्ख चुरासी जम की फाँसी, अन्तिम कलि कटांयदा। गुर गोबिन्दे खेल अपारे। वाली हिन्दे विच संसारे। वाली हिन्दे लाल दुलारे। सच नौ चन्दे नीहां विच उसारे। प्रभ आप बणाए साची बिन्दे, अन्तिम कलि पाए सारे। करे खेल हरि गुणी गहिंदे, जगाए जोत अपर अपारे। आप मिटाए सगली चिन्दे, करे खेल नर निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लेखा आण चुकाए देवे माण विच मात जन्म संसारे। मातलोक हरि जन्म दवाया। लोक परलोक थां सुहाया। साची पुरीआं आण रखाया। शब्द बाण इक्क चलाया। माण ताण सच निशान, शब्द बबाण हथ्थ फड़ाया। वेख वखाणे चतुर सुजान, जोती नूर कोटन भान, अकाश पताल गगन रहाया।

लक्ख चुरासी पुण छाण, दर घर साचे वेख वखाणे, बाल अञ्याणे लेखे लाया। सृष्ट सबाई सुंञ मसाण, कलिजुग अन्तिम आई हान, सिँघ जगदीश तेरा दर द्वार इक्क रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह नींह रखाया।

✻ १६ मग्घर २०११ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ✻

हरि शब्द जगत जगदीश। नौ अठारां बारां तीस। चुक्के भेव राग छतीस। कलिजुग वेस बीस इकीस। छत्र झुल्ले हरि साचे सीस। सरन लगाए हरि रघुराए मूस ईस। कुरान अंज़ील रहण ना पाए, सोहँ शब्द सच हदीस। थाणा तहिसील सर्ब मिट जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, ना कोई करे रीस। कल कलन्दर, कलि जामा पाया। जगी जोत अन्दरे अन्दर, गुरदुआरे मन्दिर किसे हथ्थ ना आया। लक्ख चुरासी भौंदे बन्दर, गोरख मच्छन्द्र, उचे टिल्ले आसण लाया। आत्म वज्जा हँकारी जन्दर, अन्तिम कलि ना कोए तुड़ाया। रैण अन्धेरी डूंघी कन्दर, साक सैण ना कोई होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपक जोती इक्क जगाया।
६७० दीपक जोती हरि प्रकाश। गुरमुख हिरदे रक्खे वास। अलख ना लक्खे, हरि शब्द स्वास। पति मात रक्खे होया दास। ६७०
०४ चार कुन्ट भौंदे वखे, लेखा देणा दस मास। चारे कुन्टां होण सखे, उल्टे रुख गर्भवास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ०४
गुर पीर औलीए राह साचा दस्से, मिले मेल हरि अबिनाश। हरि अबिनाशी मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी जोती नूर इक्क करांयदा। घनक पुर वासी, शब्द धार विच संसार, एका एक रखांयदा। मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द स्वासी चरन रखांयदा। भुल्ले रुले जीव करन हासी, छब्बी पोह बणत बणांयदा। चार वरनां करे दासी, राजे राणयां नत्थ पवांयदा। पंडत पकड़ उठाए काशी, शब्द तीर इक्क चलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राणा आपणा भाणा बेमुहाणा, अन्तिम कलि आपणे हथ्थ रखांयदा। भाणा रक्खे हथ्थ, जगत भुलाया। सृष्ट सबाई रिहा मथ्था, रंक राजाना शाह सुल्ताना हरि मेहरवाना ख़ाक रुलाया। जगत चलाए शब्द अकथ्थ, सोहँ नाउँ रखाया। इक्क रखाए साचा रथ, गुरसिक्खां लए चढ़ाया। बेमुखां सीआं साढे तिन्न हथ्थ, मन्दिर माढ़ी कोई दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला समरथ, सोलां कलीआं कर शृंगार, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे, एका शब्द मृदंग वजाया। शब्द मृदंग हरि वजाउणा। गुरमुख साचे साचा संग, तेरा अन्तिम हरि पूरे आप निभाउणा। शब्द घोड़े कस तंग, चार कुन्ट दहि दिश पवण सरूपी आप तजाउणा। कलिजुग जीव भन्ने काची वंग, होए संग ना किसे छुडाउणा। लक्ख चुरासी होणी भंग, शब्द

पड़दा किसे ना पाउणा। पार ब्यासों जाणा लँघ, बेमुहाणा बेड़ा अन्तिम कलि डुबाउणा। इक्क चढ़ाए साचा रंग, गुरमुखां मंगी साची मंग, राज राजान किसे हथ्थ ना आउणा। वड दाता सूरा सरबंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, संत सुहेला साचा मेला, इक्क इकेला, दर घर साचे आपणा आप कराउणा। हरि साचा मेल मिलाए, तन शृंगारया। एका शब्द तेल चढ़ाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। एका आपणा खेल वखाए, जोत जगाए विच संसारया। गुरूआं पीरां दए हिलाए, शब्द खण्डा इक्क उठा रिहा। साधां संतां हरि जगाए, नाम हलूणा एका मारया। फड़ फड़ बाहों राहे पाए, शब्द डण्डा हथ्थ फड़ा रिहा। इक्क वखाए साचा थाएँ, धुर दरगाही साचा माही बेपरवाही, लोकमात जोत जगा रिहा। सृष्ट सबाई आत्म रथवाही, अट्ठे पहर दिवस रैण काया आप चला रिहा। अन्तिम लेखा चुक्के लहिण देण झूठे छड्डे भाई भैण साक सैण इक्क अख्वा रिहा। जन भगतां खोल्ह्े साचे नैण, तीजा नेत्र काया खेतर, आपणा आप खुल्ह्ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणत बणाए पहली चेत्र, फुल्ल फुलवाड़ी मात लगा रिहा।

६७१
०४

❇ १६ मग्घर २०११ बिक्रमी सतिगुर प्रताप सिँघ वास्ते शब्द भलाईपुर ज़िला अमृतसर ❇

६७१
०४

जगत नेत्र गुर खोल्ह्। शब्द सरूपी हरि नर नर हरि बिन रंग रूपी, कवण दुआरा किस वसे कोल। एका जोत सति सरूपी, धुन नाद अनाहद धुन कवण दुआरे वज्जे ढोल। दो जहानां हरि सुल्तानां शाहो भूपी, कवण नाम काया तन चाम, आदि अन्त इक्क अनमोल। लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई लोकमाती अन्ध कूपी, कवण गुरमुख तुले पूरे तोल। जोती जोत सरूप हरि, नूर नुराना एका गुरदुआरा वडा संसारा, भगत भण्डारा रिहा खोल्ह्। भगत भण्डारा हरि खुल्ह्ाया। कलिजुग अन्तिम वार, अचरज खेल मात कराया। गुरमुख साचे कर प्यार, जोती मेल हरि मिलाया। शब्द बख्शी साची धार, बत्ती धार दए बख्शाया। अमृत देवे ठंडा ठार, निज्झर रस कोट रवि ससि, काया गगन अकाश वखाया। पुरख अबिनाशी होया वस, राह साचा मात रिहा दस्स, भगत सुहेला किसे हथ्थ ना आया। शब्द तीर रिहा कस, बेमुख दर तों जाण नस्स, गुरमुखां हरि होया वस, बाहों पकड़ गले लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, उन्नी मग्घर सिँघ गुरमुख सच सिँघासण हरि डेरा लाया। सच सिँघासण हरि सुहाए। शब्द जोती खेल रचाए। माणक मोती गुरसिख बणाए। दुरमति मैल काया धोती, अमृत आत्म इक्क प्याए। एका नूर एका जोती, काया महल्ल सदा अटल्ल, साचा दीपक इक्क जगाए। आप कराए वल छल्ल, वसे निहचल धाम अटल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तक टिका नाम लगाए।

मस्तक नाम भगत रेखा। काया चाम जगत भुलेखा। साचा दाम अन्तिम अन्त हरि साचे पेखा। पूर कराए प्रभ साचा काम, मेट मिटाए बिधना रेखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सुहागा वड वडभागा, कलिजुग अन्तिम जोती जागा, शब्द चलाए इक्क अनुरागा, जगत भगत मीत बणाए। बणाई बणत जगत वड्डुयाईआ। साध संत किसे हथ्थ ना आईआ। हरिजन मेल मिलावा साचे कन्त, कन्त सुहागी मिल्या मेल हरि रघुराईआ। कलिजुग भुल्ले जीव जन्त, साचा दामन ना कोई किसे फड़ाईआ। कलिजुग वेला आया अन्त, गुर पूरा गुरमुखां लेख लिखाईआ। कलिजुग माया पाए बेअन्त, बेमुखां माया पड़दा पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख निरँजण सति स्वामी, सज्जण मीत मुरारा हरि निरँकारा, लोआं पुरीआं बन्ने धारा, गुरूआं पीरां पावे सारा, रसना कमान हरि बलवान विच जहान, आपणी आप उठाईआ। रसन कमान बली बलवानया। चले तीर निशान वाली दो जहानया। राज राजान शाह सुल्तान, तख्त ताज ना कोई बचानया। गुरमुख साचे संत जनां देवे माण, हरि पछाण चले चलाए आपणे भाणया। आपे गोपी आपे कान्हा हरि भगवान, लक्ख चुरासी छाणे पुणे, अन्दर बाहर वेख वखाणया। जन भगतां देवे शब्द दान, आत्म जोती साचा नूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड वड हरि मेहरबानया। कवण दर कवण दुआरा। कवण घर कवण पसारा। कवण नर कवण जोत अधारा। ना जन्मे ना जाए मर, किस वसे सच दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, कवण रंग जगत संग, मिले मेल हरि कन्त भतारा। कवण राम रहिमान, जगत गुर चेलया। कवण देवे जीआ दान, आत्म मेला जिस जन मेलया। कवण हीआ मिले भगवान, अन्तिम बणे साचा बेलया। कवण झुल्ले सच निशान, चार कूंट दहि दिश रंग नवेलया। कवण चले जगत बाण, गुर साचे सतिगुर पूरे, कवण वखाणे कवण जाणे, बन बनवाली अचरज खेल खेलया। कवण धाम गुर सतिगुर वसेरा। कवण नाम जगत करे निबेड़ा। कवण चाम सुहाए काया नगर खेड़ा। कवण दाम बन्ने लाए बेड़ा। कवण काम चुक्के चुरासी झेड़ा। कवण राम वखाए खुल्ला वेहड़ा। कवण ताम जगत जीव खाए, छुट्टे पंजां झेड़ा। गुर सतिगुर साचे अन्तिम करना इक्क निबेड़ा। सतिगुर सच सहिज सुख धारे। काया माटी भाण्डे कच्च, नूरी जोत इक्क निरँकारे। अग्न बसंतर जाणी मच्च, कोई ना होए जगत सहारे। गुर सतिगुर जग सच्च, कवण बिध कलि उतरे पारे। कलि कल्याणा जगत वखाईआ। जीव निधाना साचा राह दिस ना आईआ। वज्जे शब्द तीर निशाना, हथ्थी गाना इक्क बन्नाईआ। मिले मेल हरि भगवाना, जोती नूर शब्द सवाईआ। होए सहाई वाली दो जहानां, धर्म राए फंद कटाईआ। कवण जोती हरि पहरे बाणा, कवण शब्द धार रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सिँघ प्रताप सच जाप, साचे दर साचे घर, आपणा

आप दए खुल्हाईआ। दर द्वार जाप जपाउणा। गुरमुख गुरसिख सच घर बाहर, एका इक्क वसाउणा। ना होए बन्द कवाड़, तत्ती वा ना जेठ हाढ़, अमृत धार इक्क वगाउणा। जोती जगे बहत्तर नाड़, दीपक साचा नाम जगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा लेख गुर पूरा वेख, तेरे मस्तक तीर चलाउणा। मस्तक तीर हरि चलाए। नेत्र नीर ना कोई वहाए। काया बस्त्र चीर पार कराए। सोहँ रक्खे सच्चा शस्त्र, ना कोई किसे धीर धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नामधारी जगत वपारी पावे सारी, लिख्त लेख मस्तक आत्म वेख, दर द्वार घलाए, लेख लिख्त आए दर। वेख भेख ना जाणा डर। लोकमात प्रभ लाई साची मेख, भगत भण्डारे रिहा भर। गुर पूरे लोचन लोयण नेत्र पेख, प्रभ अबिनाशी साचा वर। जिस बणाया जगत लेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क वखाए सच घर। सच घर हरि वखाउणा। खोल्हे दर भरम चुकाउणा। गुरमुख साचा जाए तर, नर हरि कलि रसना गाउणा। ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग नाम रंगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत सुहेले, जगत माण दो जहान गुर पूरे आप दवाउणा। साचा लेखा हरि लिखाए। औलीआ पीर शेख़ ना कोई मिटाए। जोती जामा भेख धारे वाली हिन्द लए उठाए। आप लिखाए साची रेखा, वड प्रधानी हरि बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
६७३ ०४ तीजा लेख जगत वेख, राणा संगरूर तुट्टे ग़रूर, दर घर पुचाए। चौथी लिख्त लिखे अपार। ब्यास किनारा वेख विचार। ६७३ ०४
सिँघ गुरचरन हो त्यार। निहकलंक नरायण नर, धरी जोत विच संसार। बाग़ दयाला खोल्ह दर, कलिजुग होया बन्द कवाड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् लेखा लिख्त लिखाए, वेखे परखे चंगे माढ़। गुरमुख अन्दर सच दरबार। प्रभ अबिनाशी खोल्हे जन्दर, ना कोई करे बन्द कवाड़। साचा दीप जगे जग अन्दर, घट घट रुशनाई हड्ड मास नाड़ी नाड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म पूर्ब कर्म , साचे लेखे लाए, मात पैज रिहा संवार। लोकमात सच दुआरा। प्रभ अबिनाशी पावे सारा। सच सिँघासण आत्म रासी, जोती रामा हरि बलवाना आसण लाए नित नवेला इक्क अपारा। घनकपुर वासी शाहो शाबाशी, राजे राणयां पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाए, गुरमुख साचे पार उतारा। सच सिँघासण हरि सुहांयदा। चार कुन्ट चार द्वार दहि दिशे, शब्द डोर हरि बन्न्हांयदा। गुरमुख तेरे आए हिस्से, नाम धारी जगत वपारी, साची वंड करांयदा। नूर उजाला किसे ना दिसे, सिँघ पाला हथ्थ फड़ांयदा। आपे लाहे आत्म विस्से, तीर निराला इक्क चलांयदा। छत्र झुलाए हरि साचे सीसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ प्रताप फड़ बाहों आप लगांयदा। सच सिँघासण डेरा ला, गुर पूरा बाहों फड़ जगत

ਗੁਰ ਸੂਰੇ ਦਏ ਹਿਲਾ,

गुर सूरे दए हिला, इक्क वखाए साचा थां। दो जहानां वाली हरि बनवाली करे रखवाली, देवे सदा ठंडी छाँ। चली जगत चाल निराली, कलिजुग अन्तिम रैण काली, चारे कुन्टां दिसण खाली, गुर पीर जगत दलाली, कोई वात पुच्छे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया। शब्द सरूपी हुक्म सुणाया। राउ रंक राजान शाह सुल्तान कोई भुल्ले ना। साचा हुक्म हरि सरकारा। दर दर आवे घर घर जावे, गुर गोबिन्द पावे साची सारा। वेख वखाणे जगी जोत अन्दरे अन्दर, भेव चुकाए गुप्त जाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, इक्क खुल्हाए सच्चा दर दरबारा। नाम अधारी शब्द अस्वारी। पवण आहारी कवण दिशा, विच मात विचारी। नाम वंडे साचा हिस्सा, कवण रक्खे नाम खुमारी। निहकलंक कलि जामा पाया, लोआं पुरीआं मात पताल अकाश गगन पताली, दीपक मस्तक जोती थाली भेव रहे ना राया। मस्तक जोती नूर प्रकाश। तीजे लोयण हर घट वास। गुरमुख बीज साचा बोयण, हरि नर नर हरि सदा सुहेला होए दास। गुर पीर ना जगत सोयण, पुरख अबिनाश सदा बलोयण, ना होइण कदे विनास। निहकलंक कलि जामा पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द चलाए गुरमुखां स्वास स्वास। शब्द स्वासा आप चलाए। पूरन भरवासा मात धराए। पृथ्मी अकाशा नात बंधाए। सर्ब घट वास पंचम् पोह, लेखा लिख्त लिखाए। गुरूआं पीरां आत्म जोती नूर खोह, साचे मन्दिर बन्द कराए। शब्द जणाए छबी पोह, जगत जंजाला मोह चुकाए। जगत सिँघासण बैठे रहे रो, अन्तिम कलि कवण पार लँघाए। साचा हल प्रभ रिहा जो, जड़्ह किसे दी रहण ना पाए। साचे दर ना मिले किसे ढो, फुल्ल फुलवाड़ी जगत वाड़ी, प्रभ जोती अग्न साड़ी, ना होए सहाई को। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जल थल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, एका बीज सोहँ शब्द चार कुन्टां रिहा बो। सतवें घर हरि निरँकारे। महल्ल अटल्ल अचल्ल अथल्ल, ना कोई दीसे चार दीवारे। एका फल एका हल एका थल, आप आपणी पावे सारे। साचे घर खुल्हे दर, नाम वर शब्द भण्डारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूरा साचा सूरा, समरथ सर्बकला आपे भरपूरा, आत्म वेखे नेत्र पेखे पावे सच्ची सारे। सतवें घर सहिज सुख जोती नूर उपाए। ना कोई रोग सोग चिन्ता दुःख, काया छाया ना भुक्ख सताए। ना कोई नर नारी मनुक्ख, ना कोई मात रक्खे कुक्ख, साचा सीर ना कोई प्याए। गर्भ वास ना उलटा रुख, मास दस ना होए कोई सहाए। घर घर जोती धूंए रहे धुख, दीपक जोती इक्क जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण सतवें घर जोत धर, अकाश प्रकाश गगन लग्न सगन, ब्रह्मण्ड खण्ड मात वंड, इक्की माघ तेरे हिस्से आए। वंडी वंड हरि निरँकारी। ना देणी कंड, वड वड वड बलकारी। शब्द फड़ी हत्थ

विच चण्ड, आए दर नर निरँकारी। माया ममता करनी खण्ड, खण्डा मारी दो धारी। पंजां चोरां देणा दंड, वेखे विगसे हरि शाहो सवारी। बाल जवानी गई हंढ, आई अन्तिम तीजी वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा जोत अकारा, शब्द अधारा पवण अस्वारा, तिन्नां लोकां वसे बाहरी। चौथा घर चौथा पद। गुरमुख साचे लैणे सद। शब्द धुन धुनी धुन नाद, इक्क वजाउणा अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत पीए साचा जाम, एका सच्चा मध लाहे सद सद तन अफार। सतवें घर सति सति सति धार, दूजा रंग हरि संग वेख विचार। कवण अंग कवण संग कवण जंग कवण तंग कसे पुरख अपार। कवण सुहेला कवण मेला जगत दुहेला, गुर पूरा संत सुहागी जगत बैरागी, कलिजुग माया तन त्यागी उतरे पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त सुहाए इक्की माघी, गुरमुख रलाए सच्चे रागी, पहले धोए जूठे झूठे दाग़ी, शब्द कराए तन श्रृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर जोत सरूपी जामा धर, आए दर सच्चे दरबार। हरि दर भेंटा इक्क रुमाला। खेवट खेटा जगत दलाला। साचे सूत्र शब्द लपेटा कलिजुग अन्तिम लथ्था पाला। प्रभ अबिनाशी साचा बेटा आप बणाए, करे सद प्रितपाला। जोती जोत सरूप हरि, भेव खुल्हाए दया कमाए, पूर्ब जन्म लेखे लाए, मात रखाए नाउँ सिँघ सिँघ सिँघ पाला। पूर्ब लेखा लेख वखाणी। वेख वखाणे सर्ब घट जाणी। आदि जुगादी शब्द अनादी, हथ्थ ना आए वेद पुरानी। जोत जोत शब्द ब्रह्मादी, देवे माण निताण निताणी। अट्ठे पहर दिवस रैण हरि रसन अराधी, हरी चन्द दर सुघड़ स्याणी। जोती जोत सरूप हरि, साची सेवा आपे लाई, चरन प्रीती इक्क रखाई। कन्त सुहागी हरि भगवन्ता, नार सुहाई तारा राणी। तारा राणी हरि देवे तार। माया राणी दर ख्वार। रसना भरया साचा पाणी, गाया गुण गुणवन्त भतार। अकथ्थ अकथ्थनी जगत बाणी, वेख वखाणी सर्ब संसार। लक्ख चुरासी पुणी छाणी, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचा सेवा लाए दया कमाए, दर दुआरा दए खुल्हाया, पाए वस्त इक्क अपार। सच वस्त हरि झोली पाए। दर घर हरि साचा , एका वर नाम वड्याए। सच सरनाई जाए पढ़, शब्द लड़ ल्या फड़, चार कुन्ट चार चुफेर, चारे वारां दए भवाए। एका अक्खर लैणा पढ़, वक्खर रंग ना कोई रखाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गुर मेला संत सुहेला। एका आपणा नाम जपाए। नार भतार मिल्या मीत। शब्द गाया इक्क सुहागी सोहँ गीत। प्रभ अबिनाशी दर घर साचा पाया, रसन रसायण सदा चीत। ना दिसे ना किसे जाया, मन्दिर दिहुरे ना दिसे मसीत। जोत सरूपी गुरमुख साचे अन्दर मन्दिर डेरा लाया, अट्ठे पहर परखे नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछला लेखा पूर कराया, साची सेवा आप लगाया, आदिन अन्ता पूरन

भगवन्ता, वेख वखाणे साची नीत। जगत रोग भगत दलाला। दरस अमोघ नर हरि निराला। देवे वर थिर घर बैठ करे प्रितपाला। जोती जोत सरूप हरि, शाह वड वड भूप, मेटे दाग़ आत्म काला। आत्म दाग़ हरि हरि कटे। चरन लाग पूरन भाग, गुरमुख लाहा साचा खट्टे। काया आंच बुझे तृष्ना अग्ग, रसना रस शब्द चट्टे। रोग सोग सर्ब विनासे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए लोकमात ना मिटे। इक्क जल दर परवान। काया थल सुंञ मसाण। अमृत पाए निहचल धाम अटल, हरया होवे पवण मसाण। लग्गे फल काया डाल, किरपा करे हरि भगवान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा चरन नाता पुरख बिधाता, बख्शे जीआ दान। जल सागर सिंध, हरि बख्शिंद है। हरिभगत सुहेला साची बिन्द, बख्शे प्रभ मृदंग है। अमृत धार विच संसार, देवे कर विचार गुणी गहिंद है। रसना लावे जीव अपार, काया होवे ठंडी ठार है। मुख करे ना निन्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा धारी वड बलकारी, आप मिटाए आत्म सगली चिन्द है। आदि अन्त अदेस अदेसा। कमला कन्त भगत प्रवेशा। साध संत हरि वड नरेशा। जोती जोत सरूप धारी भेख जोत निरँकारी माझे देसा। माझे देस ढोल मृदंग। सीस दस्तार काला रंग। शब्द यार सूरा सरबंग। करे विचार पावे सार, गुरमुखां कटे भुक्ख नंग। पंचम् पोह दिवस विचार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काला सूसा लगाए शब्द साचे अंग। काला सूसा तन शृंगार। राज राजाना हरि सुल्ताना करे ख़बरदार। शब्द चले तीर महाना, लिख्त लेख जाए दिल्ली दरबार। ना कोई जाणे मुनी रिखी, पंडत पांधे गए हार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, काला सूसा ईसा मूसा तन शृंगार। काला सूसा तन शृंगारे। ईसा मूसा कलिजुग चोबदारे। अन्तिम अन्त पकड़ उठाए, मगर लगाए शब्द धाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क दस्तार रंग अपार, काली धार सीस रखाए। रक्खे सीस काली धार। जगत जगदीश कर प्यार। शब्द चलाए भेव खुल्हाए, बीस इकीस सोहँ खण्डा नाम डण्डा फड़े हत्थ करतार। जगी जोत इक्क ब्रह्मण्डा, चरन लाए दया कमाए, राज राजाना हरि नव खण्डा, वाली हिन्द हो त्यार। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, ना कोई जाणे जीव गंवार।

❋ २० मग्घर २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❋

राजन राज हरि निरँकार। साचा साजन विच संसार। जुगा जुगन्तर संवारे काजे, रक्खे लाजन भगत मुरार। मारे शब्द इक्क अवाजण, जोती जामा भेख न्यार। आपे मक्का आपे हाजण, ना कोई दीसे ठग चोर यार। शब्द घोड़ा साचा

६७७ ०४

ताजन शाहो शाबाशा हरि अस्वार। जोती जोत सरूप हरि, भेख भिखारी भगत अधारी मंगे दात प्रेम अपार। हरि भिखारा भगत दुआरा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। करे खेल अपर अपारा। शब्द रखाए तिक्खा आरा। ना कोई जाणे मुन रिखा, वेद पुराना दिसे बाहरा। एका लेख धुर मस्तक लिखा, गुरमुखां पाए मात सारा। शब्द जणाई साची सिक्खा, लक्ख चुरासी उतरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणया दर दरवेश नर हरि निरँकारा। दर दरवेश शाह हकीर। जोत ग़रीबी अवल्लड़ा भेस, ना कोई जाणे जगत फ़कीर। धरे जोत हरि माझे देस, शब्द चलाए साचा तीर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह तन छुहाए काले चीर। काले चीर तन छुहाए। साचा तीर इक्क शब्द चलाए। राजे राणयां तुट्टे धीर, वाली हिन्द हरि उठाए। गुरूआं पीरां कढ्ढे दूई द्वैती पीड़, बाहों पकड़ जगत जणाए। गुरमुखां कटे अन्तिम भीड़, गुर गोबिन्द जो गया लिखाए। छब्बी पोह वक्त अख़ीर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव सर्ब खुल्हाए। पंचम् पोह हरि खेल रचाउणा। शब्द म्यानों खण्डा धूह, राजे राणयां हरि वखाउणा। एका हरि अवर ना को, तख्त ताज जिस मात मिटाउणा। गुरमुखां अमृत आत्म रिहा चोअ, एका मेघ नाम बरसाउणा। शब्द हल प्रभ रिहा जो, साचा बीज नाम बिजाउणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त लेख लिखाए, अन्तिम कलि जो मात वरताउणा। पंचम् पोह लिख्त लिखाए। वाली हिन्द हरि उठाए। सर्ब बख्शिंद पंडत पांधे लए जगाए। जगत प्रधान नौजवान, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, शब्द हलूणा इक्क रखाए। राणा संगरूर शब्द तूर जोती नूर इक्क उपजाए। तट्ट ब्यासा आत्म वासा, सिँघ गुरचरन शब्द डोरी नाल बंधाए। दयाल बाग़ जाए जाग। राधा स्वामी राह वखाए, दर घर साचे सद ल्याए, कागों हँस आप बणाए, शब्द सुणाए साचा राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह खेल रचाए, गुरमुखां मिले कन्त सुहाग।

✻ २१ मग्घर २०११ बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पट्टी ज़िला अमृतसर ✻

हरि सेवा फल उत्तम पाया, नाम पदार्थ लाधा। जगत मेवा रस्स साचा खाया, मिल्या मेल हरि माधव माधा। साचा दर जिस इक्क वखाया। शब्द वजाया साचा नादा। बाहों पकड़ कलि गले लगाया, पारब्रह्म पुरख ब्रह्मादा। संत मनी सिँघ जन्म दवाया, मानस देही साधन साधा। चरन प्रीती नात जुड़ाया, शब्द चलाया बोध अगाधा। साचा लेखा मात कराया, आप कराए मात वाधा। जोती जोत जोत जगाया, दिवस रैण अट्ठे पहर रसन अराधा। आपे बख्शे पीआ खाया, आपे होए

पिता दादा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रत्न पदार्थ गुरसिख हीरा, संत दुलारा एका लाधा। संत दुलारा हरि द्वार। पावे सार विच संसार। शब्द वणजारा जगत अपारा, प्रभ भरे भण्डार। पहली वार आत्म खोल्हे दर द्वार। शब्द धुन अपर अपार। कँवल मुखी मुख उग्घाड़ा, झिरना अमृत झिरे अपार। पंचम् चोरां पाए झाड़ा, शब्द डण्डा मारे मार। नेड़ ना आए झूठी धाड़ा, तुट्टा माण जगत हँकार। गुर चरन छुहाए चिट्टा दाहढ़ा, बाहों पकड़ कलि जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म दवाए दया कमाए, घर सपूता सच्ची सरकार। सच सरकार हरि निरँकारा। जगत अवल्लड़ी चले धारा। हरि जन पावे सार, आत्म वेखे इक्क दुआरा। साचा भरे शब्द भण्डार, पुरख अबिनाशी बण वरतारा। मातलोक ना आए हार, शब्द सिहरा सीस दस्तार। फूलन वरखा अपर अपार, गण गंधरबी पाए सारा। अमृत बरखे ठंडी धार, किरपा करे अपर अपारा। कारज करता दए संवार, ना कोई जीव गंवारा। आपे डुबदे लाए पार, इक्क वखाए पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलक्ख अलेखा जगत भुलेखा, करे खेल अपार अपरा। अपर अपारा खेल न्यारा। दो जहानी हरि करतारा। भगत निशानी विच संसारा। गुरमुखां जोत जगे महानी, थिर घर वास पुरख अबिनाशी चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जाणे सारा। हरि संत प्यारा मीत, वड संसारया। जगत अवल्लड़ी चल्ले रीत, कराए वणज इक्क सच वणजारया। दिवस रैण परखे नीत, भरम भुल्ले ना जन्त विचारया। हरि हरि सदि राखे चीत, मिले मेल नर बनवारया। सदा रक्खे काया ठंडी सीत, देवे नाम शब्द साची धारया। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीत, मिले हरि ना किसे गुरद्वारया। एका टेक गुर चरन प्रीत, दोए जोड़ दर निमस्कारया। शब्द सुणाए इक्क सुहागी गीत, साचा मंगल गुरमुख संत सुहागी रसना गा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दे विछड़े कलिजुग अन्तिम मेल मिल रिहा। जग विछोड़ा जगत कल। भगत सुहेला आप अछल अछल्ल। जल थल घड़ी घड़ी पल पल। इक्क जपाए साचा जाप, हरि भाणा जगत राणा सुघड़ स्याणा ना जाए टल्ल। वेख वखाणे अज्ज कि कल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरे बाणा, सच दुआरा लैणा मल्ल। सच दुआरा हरि निरँकार। जोत अकारा साची धार। शब्द अस्वारा पवण अधार। खेल अपारा संत प्यारा, चरन बहाए दया कमाए, प्रभ अबिनाशी मीत मुरारा। तुट्टी गंढे तोड़ तुड़ाए जोड़ जुड़ाए साचा नाता, पुरख बिधाता विच संसार। गुरमुख गुरमुख करे उत्तम जाता, संत सुहेला पिता माता, भैण भाई साक सज्जण सैण सच्चा यार। बैठा रहे इक्क इकांता, सुहाए दिवस रैण सुहञ्जणी राता, भाग लगाए दर द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती खेला जगत मेला, आपे गुर आपे

चेला, साचा वणज इक्क कराया, फड़ के बाहों राहे पाया, ना होए विछोड़ा दूजी वार। जगत विछोड़ा गया छुट्ट। साचा पीआ अमृत घुट्ट। निर्मल जीआ भण्डार अतुट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए, दोहां धिरां मेल मिलाए, दूई द्वैती गई छुट्ट। मिल्या मेल धुरदरगाह। प्रभ अबिनाशी जगत मलाह। पुत्तर धीआं पकड़े बांह। रखाए मात नीहां, सदा रक्खे ठंडी छाँ। जीव जन्त क्या करे हीआ, पिता मात कोई जाणे ना। पूर्ब कर्म बीज जो बीआ, मानस देही लैणे खा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत वड्याई बणत बणाई दोहां धिरां एका थां। हरि प्यार प्रभ परम पुरख भानया। जगत विहार हरि दातार, शब्द धार इक्क सच निशानया। दिवस विचार कर तन शृंगार, हरि देवे नाम दान वड सच दान दानया। चरन ध्यान इक्क धुरदरगाही, सच लेख प्रभ देवे लिख, आदि अन्त टेक इक्क भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्ती शब्द रखाए संग एक सच निशानीआ। शब्द डोरी हत्थ सगन मनांयदा। भाण्डा भरम भन्न, तन सुहांयदा। जगत निकले जन, कन्न सुणांयदा। मूर्ख मुग्ध ना जाणे अन्न, तोड़ विछोड़ा आप करांयदा। दर घर साचे चढ़दा सच्चा चन्न, अन्ध अन्धेर सर्ब मिटांयदा। अन्तिम बेड़ा रिहा बन्न, धुर संजोगी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले साचे मेले गुर चरन प्रीती साची नीती, काया अतीती ठंडी ठार, माया धार विच संसार, पवण अस्वार शब्द धार अमृत जाम पिलांयदा। अमृत जाम हरि प्याए। पंचम् जेठी सगन मनाए। जुगा जुगन्तर लिख्या लेख, कलिजुग अन्तिम पूर कराए। जोत सरूपी धारे भेख, निहकलंकी जामा पाए। आप मिटाए बिधना रेख, शब्द मेख इक्क लगाए। गुरमुख साचे नेत्र पेख, धुरदरगाही साचा माही, कन्त कन्तूले संत प्यारे मेल मिलाए। नार प्यारी कन्त सुहागण वड वडभागण, सहिँसा रोग पहली माघण, साचा शब्द तेल चढ़ाए। आप मिटाए तृष्ना आगन, गुरमुख साचे संत जनां, पुरख अबिनाशी घट घट वासी दर घर साचे मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त बणाए बणत, एका जोड़ा शब्द घोड़ा साची वाग प्रीत ताग मौली मैहन्दी साचा सगण नाम रंगण साची तन आप कराए। साचा तन हरि शृंगार। अंगण भूशण शब्द प्यार। साचा सगण हरि साचे कीआ, जोत सरूपी कर विचार। दूजा दर ना गया मंगण, आपे बणे लेख लिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सभनी थाँईं, आपे जाणे वेख वखाणे, देवे माणे दो जहाने, मिल्या मेल भईआ भाई। भईआ भईआ जगत विचोला, साची नईआ आप चढ़ईआ। खाए मात झकोला, अन्तिम वेले पकड़े बाहीं, सदा रखावे ठंडी छाँईं, दर घर प्यारा जगत न्यारा, आत्म दर महल्ल मुनारा, दूसर कोई दीसे नाही। संत मनी सिँघ कर प्यार, मुख सगन लगाए प्रभ छुहारा। चरन सुहाए साची नारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। प्रभ अबिनाशी सिर

लथ्था भारा। मिल्या मेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज धरे सीस शब्द सच्चा दस्तारा। शब्द ताल मृदंग नगारा। साची धुन धुनी, धुन नाद लोक परलोक इक्क सहारा। वजदा रहे आदि जुगादि, ना कोई मेटे मेटणहारा। शब्द चलाए हरि ब्रह्माद, आप खुल्हाए सुन्न समाध, गुरमुखां खोल्हे दर दुआरा। दर घर मिले साची दाद, नाम कराए वणज वपारा। हरि सज्जण मीत मुरारा लैणा अराध, चरन कँवल कर इक्क प्यारा। धुरदरगाही माधव माध, वरभण्डी होए कन्त प्यारा। संत सुहेला रसन अराध, सदा सदा सद जै जैकारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात किरपा कर, आपे देवे सच्चा वर, जगत भण्डारा देवे भर, चरन लाग जाणा तर, मानस देही शब्द स्नेही, एका नाम सच्चा काम जगत धाम दूसर कोई नाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संजोगी धुरदरगाही मेला, फड़ फड़ तारे विच संसारे अन्तिम दोवें बाहीं। हरि विचोला जगत विवहार। पड़दा उहला विच संसार। नाम डोला कर त्यार। संत मनी सिँघ तेरा गोला, जगत बणे हरि कहार। आप शृंगारे काया चोला, तन पहनाए फूलनहार। दस्म दुआरी पड़दा खोल्हा, जोती नूर कर अकार। अन्तिम पूरे तोल तोला, ना कोई किया मात अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जाती पुरख बिधाती दिवस राती, शब्द रखाए एका धार। एका धार शब्द चलाईआ। पंचम् जेठी कर विहार बीस इकीसा पूर कराईआ। मात पित भैण भाई ना कोई पावे सार, जगत अवल्लड़ी रीत आपे आप चलाईआ। जोड़ी जोड़ हरि निरँकार, साची सेजा इक्क बणाईआ। फूलन बरखा अमृत धार, काया ठंडी ठार रखाईआ। संत सुहागी साची नार, चरन कँवल प्रीत बंधाईआ। मेल मिलावा सच भतार, विछड़ कदे ना जाईआ। फल लगाया साचे डाल, माता कुक्ख सुफल कराईआ। गुर संगत सुहाए प्रभ साचा नाल, सच ताज साचा सीस, शब्द सेहरा हरि गुंदाईआ। करे खेल हरि जगदीश, मातलोकी काज रचाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानी, पूरन जोती इक्क भगवानी, देवे नाम सच निशानी, साचा लेखा नेत्र पेखा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, वेख वखाणे जीव निधाने बेमुहाने, गुरमुख विरला संत पछाणे, प्रभ अबिनाशी चल्ले भाणे, साची धार शब्द विचार नर नार, गुरमुख विरले मात पाईआ। नर नारी कन्त प्यारी। प्रभ अबिनाशी देवे सच्चा इक्क प्यार, चरन बंधाए एका धारी। अन्तिम वेला आप सुहाए, काया चोली रंग वखाए, शब्द चूड़ा हथ्थ पहनाए, मैहन्दी लाए प्रेम प्यारी। गुर संगत सेवा सच कमाए, रंगण रंग उत्तर ना जाए, चढ़ी रहे सद खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि दर कर प्यार, जगत खारे आप उतारी।

❇ २२ मग्घर २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❇

संत भतार जोती नार। साचा पीहड़ा तन श्रृंगार। शब्द लीड़ा विच संसार। हथ्थ कलीरा मैहन्दी धार। अमृत नीरा वारे वार। साचा सीरा चरन प्यार। मन तन तन मन भाण्डा देवे धीरा, गुर गोबिन्दा दर दरबार। शब्द पहनाए साचा चीरा, साचा हीरा संत प्यार। आप उठाए आपणा बीड़ा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। भगत निमाणयां कटे भीड़ा, जोती जामा भेख न्यार। जोती जोत सरूप हरि, मेल मिलाया आपणा कर विहार। सच विहारा जोती नारी। इक्क प्यारा शब्द धारा तिक्खा आरा, एका एक पावे सारी। ना कोई जाणे शाह दारा, लक्ख चुरासी भुल्ले जीव गंवारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब लहणा शब्द गहणा, जगत चुकाए मेल मिलाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। शब्द गहणा तन श्रृंगारे। काया मन्दिर सच दुआरे। कन्त कुँवारा साची सेजा आत्म सुत्ता पैर पसारे। एका देवे शब्द झूला, पवन नादी अपर अपारे। आप चुकाए अगला पिछला मूल, वेख वखाणे जीव जन्त अधारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा साचा रामा, खेल कराया मेल मिलाया संत सुहागी साची नारे। साची सिख्या सुलक्खणी नार प्रभ दर मिली साची भिख्या, गुर चरन प्रीती इक्क प्यार। आप मिटाए जगत तृख्या, धीरज धर्म सहिज सुख धार। सिर मस्तक लेख प्रभ साचे लिख्या, मेल मिलाया एका इक्क अधार। जोती जोत सरूप हरि, विच विचोला ना कोई रखाया, शब्दी खेल अपर अपार। धर्म सिँघासण नाम सहारा। पुरख अबिनाशण भगत अधारा। निज घर वासण शब्द स्वासण जोत प्रकाशण, देवे दात चरन प्रीत वड वणजारा। मदिरा मासी अन्तिम नासण, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द खण्डा साचा डण्डा, मारे सिर काड़ काड़ा। शब्द डण्डा हथ्थ उठाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। वेख वखाए चार यार, संग मुहम्मद हो त्यार। काला सूसा तन श्रृंगार, ईसा मूसा होए दुख्यार। छत्र झुले प्रभ साचे सीसा, जगत जगदीशा बणत बणाए सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, जगत बेड़ा अन्तिम अन्त फड़ फड़ बाहों लाए पार। बेड़ा पार कराए जगत मलाहीआ। पार किनारा इक्क वखाए, साचा राह वखाईआ। शब्द जैकारा इक्क कराए, चार वरनां साची सरनां एका एक रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक रंक राजान, शाह सुल्तान विच जहान, प्रगट हो नौजवान, दर दर घर घर साचा हुक्म, धुरदरगाही सच मलाही, अन्तिम वेले घर नवेले, जंगल जूह उजाड़ां बेले, मन्दिर मस्जिद गुरदुआरे, वेले अन्तिम दए पुजाईआ। शब्द सुनेहड़ा देवे कलि, ना कोई करे वल छल, कलिजुग शब्द मारे उछल, छाण पुण पुण छाण करे जल थल, राजे राणयां आई हान।

प्रभ अबिनाशी करे पछाण, जगत तुट्टे माण ताण, रसना खिच्चे तीर कमान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा नाम दमामा, छत्र झुल्ले विच जहान। साचा छत्र हरि झुलाउणा। जगत जगदीश बणत बणाउणा। बीस इकीस खेल रचाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच निशाना शब्द बिबाण इक्क उडान, तिन्नां लोआं कर ध्यान, लोकमात मार झात, बख्शे दात वड करामात, साचे दर दरबार कर अकार, जोती नूर शब्द तूर हरि भरपूर, देवणहार सच्ची सरकार। विच संसार पहली वार, सतिगुर तेरी बन्ने धार, छोटे बाले कर त्यार, जगत जंज़ाले वारे वार। चरन प्रीती निभे नाले, अन्त ना होए कोई ख्वार। साचे दित्ते शब्द दुशाले, रण भूमी सुत्ते पैर पसार। आपे धोए दाग़ काले, माता सीर बख्शे बत्ती धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अस्वारी सहिज सुख धारी करे अपर अपार। किरपा करे अपर अपार। खोल्हे दर हरि नर नर हरि सच्ची सरकार। खोल्हे दर चुक्के डर ना जाए मर देवे वर, लक्ख चुरासी बेड़ा करे पार। गुरमुखां करे बन्द ख़लासी, दर ना आए मदिरा मासी, शब्द डण्डा हथ्थ उठाए, कलिजुग जीवां दिस ना आए, अट्ठे पहर दिवस रैण मारे मार वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह नींह रखाए, साढे तिन्न हथ्थ सीं सुहाए, ना कोई जाणे जीव गंवार। साचा मन्दिर हरि बणाउणा। गुरमुखां अन्दर जोत जगाउणा। डूंघी कन्दर भाग लगाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे हरि, देणा वर, लक्ख चुरासी फंद कटाउणा। लक्ख चुरासी कटे फंद। हरिजन गाए बत्ती दन्द। शब्द सुहागी साचा छन्द। पुरख अबिनाशी परमानंद। घट घट वासी, गुरमुख चढ़ाए साचे चन्द। साची जोत मात प्रकाशी, कलिजुग जीव ना जाणे अन्ध। प्रगट होए घनकपुर वासी, राजे राणयां बेमुहाणयां आत्म ढाहे भरमां कंध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आदि अन्त जुगा जुगन्त, देवे वड्याई दया कमाई आए सरनाई दाते हरि भगवन्त। पूरन भगवन्ता भगत पुजारी। लेखा लिखे वारो वारी। अन्दर बैठा वेखे वेख वखाणे, जीव जन्त बेमुहाणे, साध संत भुल्ले निधाने, माया रुले आत्म हँकारी। गुरमुख साचे संत पछाणे, दरगहि साची देवे माणे, साचा नाम पीण खाणे सच्ची शब्द उडारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। कलिजुग अन्तिम अन्त जोत जगाईआ। पूरन दाता हरि भगवन्त, साची बणत रिहा बणाईआ। फड़ फड़ उठाए साध संत, शब्द डोरी नाल बंधाईआ। बेमुखां माया पाए बेअन्त, आत्म धुंदूकार रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड मेहरबान, पंचम् पोह लाए निशान, गुरमुख साचे संत जनां देवे मात वड्डयाईआ। सच निशाना देणा ला। शब्द बिबाणा तीर चला। राजा राणा तख्तों लाह। एका हुक्म दए सुणा। निहकलंक कलि जामा पाया, सभ नूं फाही रिहा पा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, वाली हिन्द हुक्म

सुणाया, राज दरबार झूठी छाया, अन्तिम वेला इक्क तका। घनकपुरी हरि जोत जगाया, गुरमुख साचे विच समाया, छब्बी पोह लिख्त रिहा लिखा। साचा लेख हरि लिखाया, रूसा चीना संग रलाया, शब्द दरबान दर ते आया, हो मेहरबान हरि भेव खुल्हाया, राजा राणा कोई भुल्ले ना। कलिजुग अन्तिम भेख वटाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात, वेख वखाणे सारे थां, वेखे सारे थां सर्ब किच्छ जाणदा। ना मिलणी पुत्रां मां, अन्तिम वेला आया पछोताण दा। राजे राणयां ना कोई पकड़े बांह, झुले इक्क निशान श्री भगवान दा। दर दर घर घर उडदे कां, वक्त चुक्के माया पीण खाण दा। निहकलंक कलि जामा पाया, छुट्टे तीर रसन इक्क कमान दा। रसना छुट्टे तीर सीना पाड़या। चारों कुन्ट होए वहीर, शब्द घोड़े चढ़या साचा लाड़या। किसे हथ्थ ना आउणा नीर, ना दिसे पिच्छा अगाड़या। भाईआं भैणां नाता तुट्टे वीर, उठे रूसा धाड़ी दिन दिहाड़या। कोई ना देवे किसे धीर, मगर लग्गी मौत लाड़ी धर्म राए खोल्हे बन्द कवाड़या। प्रभ अबिनाशी दोहीं हथ्थीं रिहा चीर, तन ना किसे दिसे लीर, शब्द खण्डा वज्जे काड़ काड़या। ना कोई सहाई पीर फकीर शाह दस्तगीर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, औलीए पीर शेख़ गौंस कुतब, अग्नी जोती काया अन्दरे अन्दर साड़या। हरि मन्त्र नाम अपार, वस्त अमोल है। एका दस्से सच प्यार, मेल मिलाए वसे सदा जो जन कोल है। आत्म भेव देवी देव चुकाए, मार झाकी आत्म ताकी रिहा खोल्ह है। लहिण देण चुकाए, शब्द देवे साचा रस, धुनी नाद वजाए ढोल है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पूरे तोल रिहा तोल है। तोले तोल जगत वणजारा। नाम अनमोल हरिभगत वपारा। आदि अन्त ना जाए डोल, शब्द सरूपी इक्क सहारा। दिवस रैण करे चोहल, काया मन्दिर महल्ल मुनारा। सहिज सुभागी रिहा बोल, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़ा। चरन प्रीती साची घोल मिले माण सतारां हाढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लाज रखाए दया कमाए, चरन छुहाए दाहड़ा। चरन प्रीती नाम अधार। परखे नीती विच संसार। काया अतीती सीतल सीती, दिवस रैण ठंडी ठार। रसना रस आत्म मध, मानस जन्म जाओ जग जीती, वेले अन्त ना आए हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेला जगत सुहेला, इक्क इकेला सद नवेला, साचा करे तन शृंगार। आपे गुर आपे चेला, संत मनी सिँघ कन्त सुहागी हरि भतार। हरि भतारा विच संसारा। देवे माण वाली दो जहाना, शब्द सिहरा सीसा दस्तारा। आपे तारे कर कर मेहरा। वक्त ल्याए नेरन नेरा। चारों कुन्ट पाए घेरा। शब्द डोरी बंध बंधान, भेव चुक्के मेरा तेरा। रहण ना देवे कोई डेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत प्याला नाम रस। दीन दयाला होए वस। हरि कृपाल एका राह जगत फाह, बेपरवाह साचा जाए दस्स। गुरमुख कोई भुल्ले ना, प्रभ अबिनाशी पकड़े

६८३
०४

बांह, ना कोई पिता ना कोई मां, चरन लगाए हस्स हस्स। सदा रक्खे ठंडी छाँ, एथे ओथे दो जहानी, इक्क जपाए साचा नां। शब्द मारे तीर कानी, मेट मिटाए शाह इरानी, वड दुरानी जीव शैतानी बेईमानी, गुरमुख साचे दर घर अन्तिम कोई दीसे ना। एका धार धुर फ़रमान, शब्द सोहँ सच्ची बाणी, कलिजुग मुक्के अन्तिम खाणी, सतिजुग साचे धरत मात मार झात, प्रभ आप दवाए साचा थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संत सुहेला इक्क इकेला, दो जहानी साचा मेला, शब्द चढ़ाए साचा तेला, दूसर कोई ना। प्रभ अबिनाशी साचा काज। शब्द देवे नाम दाज। तन बस्त्र कंगण साची रंगण, आदि अन्ती रक्खे लाज। दर घर साचा एका मंगण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा हरि निरँकारा, सृष्ट सबाई साजन साज। साजन साजे ग़रीब निवाज़े। रक्खे लाजे देस माझे। चारों कुन्ट पैण भाजे। संगी साथी ना कोई पड़दा काजे। प्रभ रघुनाथी मस्तक लिख्या लेख त्रैलोकी नाथी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर पहनाए शब्द साचा ताजे। नर हरि हरी भगवान। किरपा कर साचा हरि देवे नाम वर, आत्म जोती जीआ दान। दुरमति मैल काया धोती, पुरख अबिनाशी आप उठाए मात सोती, इक्क रखाए चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर खोल्हे दर, वड दाता मेहरवान। आए दर हरि दातार। चरन लाए दया कमाए, रोग सोग चिन्त मिटाए, शब्द देवे साची धार। लेखा धुर संजोग मिलाए, बिरहों विछोड़ा रोग गंवाए, अमृत रक्खे ठंडा ठार। रसना रस भोग लगाए, दर घर साचा आण सुहाए, जोती जामा रमईआ कृष्ना शामा, कलिजुग अन्तिम भेख न्यार। आपे बन्न्हे नाम दामा, सुक्का हरया करे चामा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि हरि निरँकार। दर घर घर दर, दिवस रैण आवे डर। गुर पूरे दया कमाई, चरन लाग जागे भाग, मातलोकी जाए आप, बुझाए आत्म लग्गी तृष्ना आग, जगत भण्डारे जाए भर। हँस बणाए गुरमुख काग, इक्क सुहाए साचा सर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत अधारी जगत सुधारी, पूर्ब कर्म रिहा विचारी, आपे धोए काया दाग़। काया दाग़ दूरो दूर। प्रभ अबिनाशी हाज़र हज़ूर। आसा मनसा करे पूर। चिन्ता सोग होए दूर। जोती जोत सरूप हरि, किरपा कर दर घर साचे देवे वर, सर्बकला समरथ सर्ब कलि भरपूर। सर्बकला समरथ दया कमांयदा। हरि रक्खे दे कर हथ्थ, जिंनां प्रेतां भूत दैतां शब्द डण्डा सीस लगांयदा। हाकन डाकन सिर मुंडवाए, शब्द डोरी हरि बंधाए, गुरमुख साचे हरिभगत दुलारे, बेड़ा पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, धुरदरगाही सच मलाह, जगत तोड़े जंज़ाला फाह, जगत मार्ग साचे पांयदा। जगत जंज़ाला जाए कट। भगत रखवाला प्रगट झट्ट। आत्म जोती जगे जो अन्दर नूर नुरानी लट। ख़ाली भरे हरि प्याला, रसना रस सोहँ शब्द लैणा चट्ट,। जोती जोत सरूप हरि, एका

वसे सच घर, किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तट्ट। तीर्थ तट्ट जगत इशनान। गुरमुख वेखे घट घट, चरन धूढ़ सर्ब माण। शब्द पहनाए साचा पट्ट, साचा नाम पीण खाण। इक्क खुल्हाए साचा हट्ट, अतुल्ल भण्डार सदा रहि जाण। रोग सोग प्रभ रिहा कट, किरपा करे श्री भगवान। जगे जोत काया मट्ट, देवे दरस हरि मेहरवान। कलिजुग माया मेटे फट्ट, साचा देवे जीआ दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अधारा भगत सहारा, इक्क इकल्ला सच महल्ला, मिले मेल नर हरि हरि नर श्री भगवान। हरि नर नर हरि नरायण। किरपा रिहा कर, लोचण लोयण वेखे नैण। साचा देवे नाम वर, आपे बणे मात पित भाई भैण। लक्ख चुरासी चुक्के डर, धर्म राए ना दर बहाए, प्रभ आप चुकाए लहिण देण। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, गुरमुख साचे संत दुलारे, एका धार विच संसार, हरि दुआरे साचे बहिण। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा जाए कर, शब्द दात देवे वर, सज्जण सुहेला हरि अकेला, सखा सहाई अन्तिम साक सैण।

❋ पहली पोह २०११ बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड जेठूवाल दरबार विच ❋

हरिभगत हरि दर न्यारा, हरिभगत हरि घर सच वसानया। हरिभगत ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग सद रहानया। हरिभगत आवण जावण चुक्के डर, मिले माण दो जहानया। हरिभगत अमृत तीर्थ नुहावे साचे सर, खुल्हे बन्द कवाड़ जगे जोत इक्क महानया। हरिभगत शब्द सरूपी अट्ठे पहर रिहा लड़, मार मिटाए पंज शैतानया। हरिभगत साचे घाड़न रिहा घड़, ना भन्ने डन्ने कोई विच जहानया। हरिभगत ना कोई सीस ना कोई धड़, साचा नाम जगत निशानया। हरिभगत दस्म दुआरे चढ़, मिले मेल बली बलवानया। हरिभगत दस्म घर जाए वड़, मिले जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। हरिभगत जगत न्यारा। हरिभगत प्रभ पाए सारा। हरिभगत मात साची धारा। हरिभगत दात शब्द वणज वपारा। हरिभगत नात, गुर चरन प्यारा। हरिभगत पित मात, नरायण नर निरँकारा। हरिभगत बैठा रहे इक्क इकांत, साची पुरी कर पसारा। हरिभगत प्रभ वेखे मार झात, जोती नूर इक्क उज्जयारा। हरिभगत अमृत बूंद पीए स्वांत, मिटे अन्ध अन्धयारा। हरिभगत उत्तम जात, मिल्या मेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। हरिभगत हरि द्वार। हरिभगत वड्याई विच संसार। हरिभगत मिले वधाई, रसना गाए नर नार। हरिभगत ना होए जुदाई, दो जहानी पहरेदार। हरिभगत माणे ठंडी छाईं, देवे प्रभ किरपा धार। हरिभगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए आप बहाए सच साचे दरबार।

हरिभगत साजण साज्जया। हरिभगत रक्खे लाज ग़रीब निवाज़या। हरिभगत मारे अवाज़, संवारे काज्जया। हरिभगत सद पहनाए शब्द ताज, वेखे खेल कल कि आज्जया। हरिभगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात देवे वड्याई, वज्जे वधाई अन्तिम कलि देस माज्झया। हरिभगत मिले वड्डुयाईआ। हरिभगत माझे देस जोत जगाईआ। हरिभगत कर कर वेस, निहकलंक नरायण नर साची वेल वधाईआ। हरिभगत सदा आदेस, कल साची बणत बणाईआ। हरिभगत ब्रह्मा विष्न महेष कलि शिव शंकर धार रखाईआ। हरिभगत नर नरेश, कर साची पुरी आप वसाईआ। हरिभगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे माण, लोकमात करे रुशनाईआ। हरिभगत हरि उधारे, निहकलंक कलि जामा धारे। जगे जोत निरालया। हरिभगत प्रभ पावे सारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, कर के खेल भगत मेल मिलाईआ। कलिजुग जीव थक्के ना कोई पावे साची सारे। चले चाल हरि निरालया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, सृष्ट सबाई साचे दर एका सदा सुहाईआ। हरिभगत हरि भण्डार, शब्द अतुट्ट नाम अपार, सच कराए वणज वपार, देवे माण वड्डुयाईआ। सतिजुग तेरी तिक्खी धार, गुरमुख विरले उतरे पार, प्रभ अबिनाशी पावे सार, ना होवे अन्त जुदाईआ। लक्ख चुरासी थक्के हार, किसे ना दिसे पार किनार, गुरमुखां मिल्या हरि निरँकार, आत्म जोती दीप इक्क जगाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, जन भगतां रिहा पैज संवार, दिवस रैण करे काज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल जोत वरन गोत ना कोई कराईआ। गुर पूरा मेहरवान दया कमांयदा। अट्ठे पहर कर ध्यान, चरन सरन प्रीत रखांयदा। आपे करे जाण पछाण, जुगा जुगन्त मेल मिलांयदा। लोकमात साचा मेल मिलाण, सुफ़ल कुक्ख आप करांयदा। मिले वड्याई दो जहान, पुरीआं लोआं धार बन्न्हांयदा। इक्क रखाया शब्द बबाण, साचे बाले विच बहांयदा। अमृत नीर कराया सच इशनान, इन्दलोक शिवलोक धाम सुहांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुलारी धी प्यारी, पिछला लहणा कलिजुग गहणा वखाए नैणा, अन्तिम तन पहनांयदा। पिछला लहणा आप चुकाया। लाल दुलारे सिहरा लाया। शिव पुरी चुबारे विच बहाया। इन्द्र पुरी पावे सारे, करोड़ तेतीसा सेवा लाया। किरपा कर हरि निरँकारे, अमृत मेवा फल खवाया। जगे जोत विच संसारे, वल छल ना कोई रखाया। खाली भरे हरि भण्डारे, तोट कोई रहण ना पाया। एका बख्शे चरन प्यारे, धीरज धीर आप रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता रोग जगत सोग दए मिटाया।

६८६
०४

❋ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर काका जगदीश सिँघ दी याद विच नौ दर दरबार दी नींह रखण समें उस दी हड्डीआं ते भस्म नींह विच पाई गई अते बाअद विच विहार होया ❋

पंचम् पोह पंच परवाना। कलिजुग काला वेस, माझे देस श्री भगवाना। प्रगट होए वड नर नरेश, गुण निधाना। सति पुरख को सदा आदेस, पंचम् पोह थित्त साची वेख, वडे वडे राज राजाना। पंचम् पोह पवण अस्वारा। शब्दी पवणी इक्क हुलारा। अवणी गवणी ना कोई पावे सारा। भेख धारे जिउँ बावन बवनी, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरमुखां आत्म मेघ सवणी, अमृत बरखे ठंडी धारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीश करे खेल अपर अपारा। करे खेल अपर अपारया। पहली वार विच संसारया। कलिजुग अन्तिम जामा धारया। जोत सरूपी किया वेस, ना कोई जाणे जीव गंवारया। सति पुरख को सदा आदेस, आवे जावे वारो वारया। भुल्ले फिरदे नर नरेश, कोई ना पावे साची सारया। कलिजुग तेरा काला वेस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, वेख वखाणे दर घर, करे कराए आप आपणी वारया। कलिजुग काला वेस, दर दरवेश हरि नरेश है। गुरमुख साचे विच प्रवेश, माझे देस जगत अवल्लड़ा वेस है। खुल्ले रक्खे हरि जी केस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राज राजान शाह सुल्तान, नौ खण्ड पृथमी विच जहान, राज राजाना देवे साचा संदेश है। राज राजाना आप जगाए। जगत जगदीश बणत बणाए। साची नींह शब्द रखाए। साढे तिन्न हथ्थ कलिजुग जीव तेरी सीं, सिँघ मनजीत संग रलाए। गुरमुख अमृत साचा जाम लैण पी, प्रभ अबिनाशी भेव खुल्लाए। लोकमाती सदा जीण, सच दुआरे माण दवाए। गुरमुख साचे बलि बलि थीन, निहकलंकी जोत जगाए। शब्द लिखाए रूसा चीन, छब्बी पोह नेड़े आए। आपे भन्ने हँकारी बीन, काला वेस दर दरवेश वाली हिन्द लए उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् दिवस सुभागा सोया जागा, शब्द चलाए सच्चा रागा, राज राजाना लए उठाए। वाली हिन्द उठ बल धार, निहकलंक कलि जामा पाए। प्रगट होया विच संसार, पंचम् पोह नींह रखाए। इक्क बणाए सच सच्चा दरबार, चार वरन इक्क थां बहाए। ऊँच नीच जात पात, भरम भुलेखा दूर कराए। भरम निवार गुरमुखां ठंडी छाँ रखाए। लक्ख चुरासी होई रंड, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। आपे करे खण्ड खण्ड, धर्म राए दर देवे दंड, ना कोई सके किसे बचाए। राजे राणयां नंगी होई कंड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। साची बणत हरि बणांयदा। महिंमा जगत अगणत, ना कोई गिणांयदा। गुरमुख विरला जाणे संत, जिस जन दया कमांयदा। एका शब्द चलाए साचा अंक, राउ रंक शाह सुल्तान जीव जहान साचा डंक

वजांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह दिवस सुभागा खुशीआं नाल मनांयदा। साची खुशी हरि मनाईआ। गुरमुखां मिले वधाईआ। अन्तिम धारे कलिजुग भेखा, माया तृष्ना दए बुझाईआ। उलटा मात गर्भ कलि रुखा, ना होवे कोई सहाईआ। नौ अठारां गर्भवास दुःखा, अमृत सीर ना कोए प्याईआ। सुफ़ल कराई मात कुक्खा, लोकमात मिली वड्डुयाईआ। उज्जल होया साचा मुखा, साची सेवा हरि लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीश तेरी बणत गुर संगत मेल आपणे हथ्थीं बणाईआ। आपणे हथ्थीं आप बणाए। हरि समरथी कथना अकथ्थी, भेव ना जाणे कोई राए। सृष्ट सबाई जाए मथ्थी, राज राजाना दए हिलाए। नक्क डोरी पाए नत्थी, अन्त काल ना कोई छुडाए। ना कोई संगी ना कोई साथी, चारों कुन्ट पए दुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाई तेरी साची रथी, साचे धाम आप टिकाए। साचा धाम आप सुहाया। जगत जगदीशे डेरा लाया। सिँघ मनजीते नाल मिलाया। अचरज़ खेल मात कराया। आपे बणया सज्जण सुहेल, दो जहानां वाली हरि बनवाली, एथे ओथे होए सहाया। इन्दपुरी होई खाली, सच सिँघासण सिँघ मनजीते हरि बहाया। लोकशिव ना मिले दलाली, वेला अन्तिम मात आया। गुरमुख पूरे घाल घाली, साचे दर दए बहाया। अट्ठे पहर दिवस रैण मस्तक लाली, दीपक जोत रिहा जगाया। चढ़या रंग इक्क गुलाली, आदि अन्त ना किसे लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा साचा धाम लोकमात मार झात बैठ इकांत, आपणी हथ्थीं आप सुहाया। सुहाए धाम हरि बनवारया। पूर कराए काम, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। इक्क जपाए साचा नाम, सोहँ शब्द अपर अपारया। कोए ना लाए घर साचे दाम, साचा वणज आप करा रिहा। कलिजुग होई अन्धेरी शाम, काला वेस आप रखा रिहा। गुरमुखां प्याए अमृत जाम, तन मन्दिर साचे अन्दर दीपक जोती आप जगा रिहा। साधां संतां आत्म वज्जे जन्दर, प्रभ पकड़ लयावे आपे गोरख नाल मच्छन्दर, सभ दा माण गंवा रिहा। गुरमुखां जोत जगाए अन्दरे अन्दर, शब्द मेल आप मिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा विच संसारा पहली वारा, नौ दर आप रखा रिहा। नौ दर रक्खे दरवाज़े। प्रभ सच्ची साजन मात साजे ग़रीब निवाज़े। साची लेख लिख्त आप कराए, सोए उठाए राजन राजे। सिँघ जगदीश तेरी पहली मेख लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहन्दी दिशा आप कराए नूर अलाही साचा माही आपणे साचे काजे। नूर इल्लाही नूर नुरानया। धुरदरगाही सच मलाही काला वेस फूलनहार गल विच गानीआ। वेख वखाणे थाउँ थाँईं अंज़ील कुरान जगत जहान बेईमान करे आप पछाणया। मारे शब्द इक्क निशाना। वाली हिन्द उठ बलवाना। प्रगट होए वाली दो जहाना। अन्तिम झुल्लणा इक्क निशाना, सत्तां दीपां माण दवाना। नौ खण्ड पृथ्मी वंड कराना। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, शब्द सरूपी बन्ने गाना। शब्द गाना रिहा बन्न। सुक्का हरया होवे तन। ना जन्मे ना मरया, धर्म राए ना देवे डन्न। प्रभ अबिनाशी दर दुआरे खड़या, आपे घड़े आपे लए भन्न। ना कोई सीस ना कोई धड़या, ना कोई फड़े ना देवे डन्न। मातलोक ना किसे लग्गी जड़या, लक्ख चुरासी होई अन्न। गुरमुख विरला पंजां तत्तां नाल लड़या, प्रभ का भाणा रिहा मन। एका लड़ साचा फड़या, धुरदरगाही आप मिटाए, कलिजुग भरम भुलेखा झूठा जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए दूजी मेखा, वेख वखाणे बिधना रेखा, गुरमुख साचे तेरी मात वड्याई, रसना हरि हरि गाई धन्न धन्न धन्न। कलिजुग सूसा तन छुहाया। ईसा मूसा भेव चुकाया। बीस इकीसा जगत जगदीशा सेवा लाया। एका छत्र झुलाए साचे सीसा, निहकलंकी जामा पाया। ना कोई जाणे राग छतीसा, वेद पुरानी हथ्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे साचे घर, मन्दिर मुनारा गुरदुआरा उच्च चुबारा किसे दिस ना आया। उच्च दुआरा दर द्वार। पुरख अबिनाशी विच संसार। सर्ब घट वासी, आदि अन्त पावे सार। लक्ख चुरासी सदा विनासी, वेले अन्तिम आए हार। कोई ना जाणे पंडत काशी, किसे हथ्थ ना आवे हरि द्वार। पन्थी ग्रन्थी मदिरा मासी, जूठे झूठे माया धार। प्रगट होए घनकपुर वासी, भेजे लिख्त दिल्ली दरबार। पूर कराए जन भगतां आसी, जगाए जोत अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीजा लेख सृष्ट सबाई अन्तिम कलि वेख धरत मात सुण पुकार। वेले अन्तिम पावे सार। गुरमुख उपजाए साचे संत, जगत वड्याई देवे तन शृंगार। गुर संगत साचा मेल मिलाई, बणत बणाई अपर अपार। सिँघ जगदीश तेरी खुशी मनाई। पंचम् पोह दिवस विचार। गुरमुख साचे साची जंञ बणाई। मंगलाचार तेरे दर दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी वाग आपणे हथ्थ रखाई, खिच्च बहाए चरन द्वार। साचा लाड़ा हरि सजाए। सृष्ट सबाई चबाए हेठ दाढ़ा, लक्ख चुरासी धाम बणाए। खेल रचाए सतारां हाढ़ा, कलिजुग अन्धेरी शाम मिटाए जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। साध संत गुर पीर शेख़ मुसायक गौंस औलीआ कुतब दस्तगीर शाह हकीर विच जहान कोई भुल्ल ना जाए। एका पाए शब्द जंज़ीर, अमृत देवे साचा सीर, विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़, साची बणत रिहा बणाए। आत्म हँकारी देवे पीड़, बेमुखां तोड़े हड्डी रीड़, ना कोई जाणे हस्त कीड़, सच द्वार रिहा खुल्हाए। सतिजुग तेरी बन्ने बीड़, लक्ख चुरासी देवे पीड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा भार रिहा उठाए। साचा भार हरि उठांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दर द्वार इक्क बणांयदा। चार वरनां इक्क प्यार, अठारां बरन मेट मिटांयदा। संग रलाए मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा सरन बहांयदा। अंज़ील कुरान तुट्टे धार, वेद पुरानां मुख

भवांयदा। खाणी बाणी गई हार, कलिजुग काला वेस मिटांयदा। दर दर घर घर संत जनां नूं पैंदी मार, माण ताण ना कोई रखांयदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुख साचे संत जनां, आपणी गोद उठांयदा। एका शब्द वसाए मना, साचा देवे नाम धना, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। इक्क सुणाए राग कन्ना, सोहँ साचा जाप जपांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि इक्क बणाए निहचल धाम अटल्ल, सृष्ट सबाई आप भुलाई कर कर वल छल, दिस किसे ना आंयदा। वल छल हरि आप कराया। जल थल प्रभ आप समाया। घड़ी घड़ी पल पल, आपणे भाणे आप रहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चौथी मेख नेत्र पेख, धरत मात तेरे मस्तक दए लगाया। चौथी मेख देवे गड्ड। वारी होवे पंचम् हड्ड। पंचम् तत्त प्रभ देवे मति, आप लडाए साचे लड्ड। शब्द देवे धीरज यति, सोहँ साचा मात सति, दूई द्वैती देवे वढ्ढ। सिँघ जगदीश तेरी रत्त। गुर संगत तेरी रक्खे पति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा अमृत फल धुरदरगाही साचा मेवा। गुर संगत अमृत मेवा विच मात लगाया। मस्तक लगाए कौस्तक मनी साचा थेवा, खण्ड ब्रह्मण्ड करे रुशनाया। गुर संगत गाए रसना जिह्वा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा नर नरायण घर बाहरा, किसे जीव दिस ना आया। नर नरायण इक्क द्वार है। रसना सके ना किसे कहण, भुल्ले जीव गंवार है। आप चुकाए लहिण देण, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। ना कोई मात पित ना भाई भैण, छड्डणा सर्ब एह संसार है। घर घर पैंदे वेखो वैण, दर दर रोंदे नारी नार है। गुरमुख साचे भाणा साचा सहिण, जिस मिल्या हरि भतार है। आप बणाए साक सज्जण सैण, प्रभ अबिनाशी हरि करतार है। धुरदरगाही आया लैण, करया खेल अपर अपार है। ना खाए लाड़ी मौत डैण, धर्म राए रिहा दर दुरकार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पहली सावण पतित पावण, तेरा बणया लेख लिखार है। संत बणाए बणत सहिज सुखदाया। मेल मिलावा साचे कन्त, विछड़ कदे ना जाया। माया ममता भुल्ले जीव जन्त, जूठा झूठा मोह जगत वधाया। हरिजन वड्याए आदि अन्त, जुगा जुगन्त पैज रखदा आया। पकड़ पछाड़े देव दंत, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जन, आसा मनसा पूर आप कराया। साची रचन हरि रचाई। धुरदरगाही साचा बचन, ना कोई पिता ना कोई माई। काया भाण्डा काचा कंचन, थिर किसे दीसे नाहीं। अन्तिम चढ़े साची अंचन, गुरमुख साचे बलि बलि जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती अग्नी साचे सगनी विच मात लगाई। जोती अग्न हरि आप लगाए। गुरमुख कुठाली प्रभ साची आप रखाए। चारे कुन्टां वेखण खाली, किसे नाल कुछ ना जाए। धर्म राए घर होए चाली, अन्तिम अन्त ना कोई छुडाए।

गुरमुखां हरि बणया पाली, आपणी गोद उठाए। एका मंगे नाम दलाली, भरम भुलेखा दूर कराए। जगे जोत सच दीपक थाली , गगन पताली होए रुशनाए। साचा फ़ल लगाए साची डाली, अमृत फ़ल प्रभ आप खवाए। कलिजुग तोड़े जगत जंज़ाली, साचा नाता पुरख बिधाता आपणे चरन बंधाए। चली चाल इक्क निराली, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे लेखे लाए। साचे लेखे हरि आप लगाया। भरम भुलेखे जगत भुलाया। नेत्र पेखे सृष्ट सबाया। लोकमात लगाए साची मेखे, पंचम् पोह नींह रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए औलीए पीर शेख़े, वरन बरन किसे दिस ना आया। जगत जगदीश प्रभ सेवा लाई। मेट मिटाए राग छतीस, सुरसती धुन जो रसना गाई। वक्त चुकाए सुपारा तीस, दन्द बतीस ना कोई गाई। चार वरनां इक्क हदीस, सोहँ सद जै जै जैकार कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, अन्तिम कलि पूरन आस आप कराई। पूरन आस करे मेहरवान। मिल्या मेल विच प्रभास, बख्शे जीआ दान। जुगा जुगन्त ना होए नास, सिर हथ्थ रक्खे श्री भगवान। जगे जोत पृथ्मी अकाश, इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक करोड़ तेतीस रसना गाए गान। गण गंधरब शिव शंकर जटा जूट धारी, परम पुरख प्रभ पावे सारी, दर दुआरे साचा माण। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत महान। प्रभ साचा दया कमांयदा। सिँघ जगदीश प्रभ साचा तेरी सेवा पूरा करांयदा। वड देवी देव जगत माता, तेरी झोली आपणी हथ्थीं आपे भरांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे फूल तेरी भेंट चढ़ांयदा। जगत जगदीशे तेरे साचे फुल्ल। लोकमात प्रभ पाए मुल्ल, भाग लगाया साची कुल। मात सुलक्खणी पूरे तोल जाणा तुल। रणजीत कौर नेत्र नीर ना जाए डुल्ल्ह। सृष्ट सबाई चारों कुन्ट सक्खणी, अमृत आत्म शब्द गया डुल्ह। निहकलंक नरायण नर, लज पति मात रक्खणी, किसे अग्ग ना दिसणी चुल्ह। चारों कुन्ट अग्नी जोती एका भखणी, जगत जगदीशे सच दुआरा गया खुल्ह। धारे भेख अलख अलखणी, कलिजुग तेरा अन्तिम फ़ल जूठा झूठा गया हुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे गुर संगत तेरी भेंट चढ़ाए साचे फुल्ल। साचे फुल्ल करे दाना। किरपा करे आप भगवाना। चरन धूढ़ करना इक्क इशनाना। मूर्ख मुग्ध मूढ़ बणाए चतुर सुजाना। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, ना कोई रंक ना कोई राजाना। शब्द वेलणे प्रभ पीड़े साचे बूड़, अन्तिम कलि शाह सुल्ताना। सतारां हाढ़ी पाए जूड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ अबिनाशी बणया गाडी, जगत जगदीशे तेरी लेखे लाए तिन्न सौ सट्ठ हाडी। साचा मन्दिर विच बणाए, इक्क इक्क देवे गाडी। जोत जगाए अन्दरे अन्दर, सत्त दीप चार कुन्ट कोए ना छाडी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, लोकमात

मार झात बैठ इकांत, साचा वेला सच प्रभात, बेमुख जूठे झूठे दर दवारिउँ जाए काढी। साचे हड्ड प्रभ देवे वंड। गुरमुखां आत्म रक्खे ठंड। पुरख अबिनाशी घनकपुर वासी लोकमात ना देवे कंड। राजे राणयां लाहे उदासी, शब्द लाए साचा दंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग काला वेस दर दरवेस, जन भगतां लडाए साचे लाडी। वाली हिन्द राज दरबार। प्रभ अबिनाशी पाए सार। घनकपुर वासी सच महल्ल रिहा उसार। मेट मिटाउणे मदिरा मासी, लक्ख चुरासी पैणी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचे गुरमुख साचे संत जनां, शब्द पहनाए सच सच्चा पंचम् सच्चा हार। साचा हार तन शृंगार। किरपा धारे विच संसार। मेट मिटाए चार यार, संग मुहम्मद अंज़ील कुरानां पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर पीर औलीए साध संत, खिच्च ल्याए चरन द्वार। चरन दुआरा इक्क गिरधार है। लक्ख चुरासी रही झक्ख मार है। अन्तिम लाहे जम की फाँसी, गुर पूरा बेड़ा कर जाए पार हे। मानस जन्म कराए रहिरासी, लोकमात बणाए सच्चा दरबार है। करे खेल घनकपुर वासी, मात गर्भ गेड़ निवार है। गुरमुखां पूर कराए आसी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी लोकमात लाए सच्ची बहार है। बिशन सिँघ हो त्यार। साची नींह दे उसार। पहला रक्खे हरि जी वार। दूजी करे संगत त्यार। तीजा वेखे नैण मुँधार। चौथा साधां संतां पावे सार। पंजवें जोत करे अकार। छेवें घर खोल्हे बाहर। सतवें घर जगे जोत अगम्म अपार। गुरमुख साचे तेरा साचा बचन, कलिजुग अन्तिम विच संसार। गुर संगत सारी साक सैण सज्जण, प्रभ अबिनाशी मात पित भाई भैण यार प्यार। लोकमात आया पड़दे कज्जण, लक्ख चुरासी करे ख्वार। गुरमुख साचे लोकमात गज्जण, नाल रखाए विच दिल्ली दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अस्सू तिन्न लाल किल्हे कीना सच विहार। सच विहारा आप कराया। अस्सू तिन्न खेल रचाया। वाली हिन्द सार ना पाया। प्रधान मन्त्री गूढ़ी नींद सवाया। दर दर घर घर पंडत पांधे वेखण जन्तरी, केहड़ी कूटे निहकलंक कलि जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात भेख कर, वेस अवेसा माझे देस विच मात दिस ना आया। माझे देस धारे भेस। ना कोई रूप रंग ना कोई रेख। गुर संगत कीना साचा संग, शब्द स्नेही मात पेख। नूरी जोती किया रंग, आप मिटाए बिधना रेख। सदा सहाई अंग संग, धरे धराए अवल्लड़ा भेस। पंचम् पोह शब्द सरूपी करे जंग, राजे राणयां करे नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच दुआरा जगत घर बाहरा, गुरमुख साचे संत जन, दूजा दर ना लैण मंग। राज इन्द्र इन्द्र प्रसाद, पंडत नहिरू रक्खणा याद, प्रभ अबिनाशी जामा धारे। लक्ख चुरासी सुणे फरयाद, लोकमात करे अकारे। भगतां देवे शब्द

दाद, सोहँ शब्द कराए सच जैकारे। चार वरनां एका नाद, एका शब्द चलाए बोध अगाध, खाणी बाणी कोई ना पावे सारे। प्रगट होया माधव माध, वेद पुरानां वसे बाहरे। गुरमुख साचे लए लाध, आत्म जोती शब्द हुलारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वजाए डंक, शब्द चोट लग्गे काया तन नगारे। काया तन नगारा चोट लगाईआ। सोहँ शब्द सच जैकारा, चार वरनां दए सुणाईआ। कलिजुग मिटे धुंदूकारा, सतिजुग साची बणत बणाईआ। प्रगट होए चवीआं अवतारा, वेद व्यास गया लिखाईआ। गुर नानक तेरी सुण पुकारा, पताल अकाश गगन रहाईआ। गुर गोबिन्द तेरी बन्ने धारा, जोती भेख हरि वटाईआ। वाली हिन्द बण भिखारा, निहकलंक जोत प्रगटाईआ। मंगण आओ चल दुआरा, साचा मन्दिर रिहा सुहाईआ। अन्दर बाहर पाए सारा, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। कलिजुग अन्तिम आई हारा, ईसा मूसा दए दुहाईआ। मिटदे जाण चार यारा, संग मुहम्मद रिहा शरमाईआ। कुरान अंजीली पैणी मारा, शब्द डण्डा हथ्थ उठाईआ। वेद पुराना करे ख्वारा, साचा राह ना कोए वखाईआ। ब्रह्मे अन्तिम आई हारा, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सच्ची सरकारा, जोती रूप धार भेख लोकमात रिहा वटाईआ। शिव शंकर हरि सुण पुकार। लोकमाती कर विचार। जगत जगदीशा दए हुलार। साचा सीसा छत्र झुलार। ईसा मूसा करे ख्वार। पंचम् पोह गल पाया काला सूसा, सोहणा किया शृंगार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन अठारां बरन, इक्क सरन चुकाए मरन डरन, खोल्ले हरन फरन, प्रगट होए तारन तरन, करन करावणहार। करन करावणहार सखी सुल्तानया। धरे भेख जिउँ बल बावन, भुलाए राजे राणया। आप उठाए सोए गुर चेले सिँघ सावण, मारे शब्द तीर कानीआ। जगाओ जोत पतित पावण, गुरमुखां पकड़े सच्चा दामन, दर घर करे परवानया। नेड़ ना आए कामनी कामन, मेट मिटाए पंज शैतानया। धुरदरगाही सच्चा जामन, निहकलंक बली बलवानया। हँकारी मारे कर ख्वारे शब्द कटारे जिउँ रामा रावण, चार कुन्ट रखाए एका आणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क खुल्लाए सच दर, लक्ख चुरासी देवे वर, आए दर साचे घर, अमृत आत्म सर कराए इक्क इशनानया। अमृत आत्म सर इक्क बणाया। लोकमाती खोल्ले दर, जोत सरूपी भेख धर, धर्म झण्डा इक्क झुलाया। ना जन्मे ना जाए मर, गुर चरनी जन जाए पड़, नौ खण्डी माण दवाया। अट्ठे पहर रिहा लड़, गुरसिख तेरी काया अन्दर वड़, बेमुखां दिसे खाली धड़, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, किसे दिस ना आया। जन भगत तेरे आत्म दर दुआरे खड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपक जोती इक्क जगाया। जगत रचाया काज, बणत बणाईआ। भगत रखाए लाज, हरि रघुराईआ। शब्द पहनाए सिर सच्चा ताज, छत्र सीस झुलाईआ।

साचे साजण रिहा साज, भुल्ली भरम सर्ब लोकाईआ। बणया मक्के वडा हाजी हाज, काअबा कुरान इक्क दिशा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पूरन इच्छा आप कराईआ। मक्कण हाजी हज्ज जलाल। किसे दिस ना आए शेख़ काज़ी, चली अवल्लड़ी चाल। शब्द रखाया साचा ताजी, पवण सरूपी मारी छाल। कलिजुग तेरी अन्तिम बाजी, झाड़े फल उचे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा सुरत संभाल। हाजन मक्का पीरन शाह। एका देवे शब्द धक्का, कोई ना पकड़े किसे बांह। कलिजुग फल अन्तिम पक्का, कलिजुग जीवां लैणा खा। किसे ना सहाई भैण भाई सका, घर घर रोवण मारन धाह। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँ। मक्का हाजण हज्ज हज़ूर। सर्बकला आपे भरपूर। नूर उजाला जोती नूर। शब्द दलाला कलिजुग तेरा अन्तिम वेखे भरया पूर। कलिजुग भेख प्रभ अबिनाशी वेख, एका रंग रंगाया काला, लक्ख चुरासी करनी चूर। बेमुख जीवां कढ्ढे दवाला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आसा मनसा पूर। हाजी हाजन दर कबूल। लोकमात ना जाए भूल। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, फुल्ल फुलवाड़ी साची लाए, होए रखवाला कन्त कन्तूहल। लाड़ी मौत ना कदे व्याहे, गुरमुख साचा संत जन, शब्द पंघूड़ा रिहा झूल। धर्म राए ना पाए फाही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लहणा देणा पिछला मूल। मक्का हाजी हाजण हज्ज नवाब। मिल्या मेल लोकमात दो आब। शब्द चढ़या साचा तेल, दर घर साचे सच ज़नाब। अचरज़ किया हरि जी खेल, शब्द घोड़े चरन रकाब। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दया कमाए सरन लगाए, इक्क वखाए काअबा काअब। कलिजुग तेरे काले चीर, अन्तिम वेले अन्त अन्त अन्त संत फ़कीर। वेख वखाणे हरि जीव जन्त जन्त जन्त, कोई ना देवे किसे धीर। गुरसिख बणाए साची बणत, अमृत प्याए साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह भेख वटाया, काला सूसा तन छुहाया, ना कोई जाणे शाह फ़कीर। शाह फ़कीर मवल मौलानया। वड दाता बेपरवाह, लक्ख चुरासी खेल खिलानया। वेख वखाणे सारे थां, ना कोई भेव छुपानया। गुरमुखां रक्खे ठंडी छाँ, देवे माण जहानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काला सूसा तन छुहाया। पंचम् पोह लिख्त लिखाया, करे वेस दर दरवेस जगत महानया। इक्क तख्त इक्क सुल्तान। एथे ओथे दो जहान। गुर गुर गुर ना भुल्ल निधान। कवण उपजाए शब्द सुर, कवण देवे नाम निधान। चरन प्रीती किस जाए जुड़, कवण देवे ब्रह्म ज्ञान। कवण चढ़ाए शब्द घोड़, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड मार ध्यान। निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया, प्रगट होया वड बली बलवान।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल स्वामी महिता जी नूं दयाल बाग आगरा शब्द भेज्जया ✻

बाग़ दयाला अन्तिम पति तेरी रहे, सरन आओ बण कंगाला। कलिजुग वहिण झूठा वहे, रुढ़दा जाए धन माला। गुरमुख विरला प्रभ अबिनाशी चरनी बहे, शब्द पाए तन साची माला। एका नाउँ दर साचे लए, पंचां तोड़े जगत जंज़ाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया। शब्द डण्डा हथ्थ उठाया, गुरूआं पीरां साधां संतां अन्तिम कलि कढ्ढे दवाला। दयाल बाग़ गुर जाणा जाग। अन्तिम बुझे जोती चिराग। ना कोई धोवे काया लग्गे दाग़। सच सिँघासण गूढ़ी नींद सोवे, आत्म तृष्ना बुझे जगत आग। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, घर घर दर दर उडाए काग। चौथा दर हरि बन्द कराउणा। इक्क वखाए साचा घर, जोत सरूपी डगमगाउणा। चरन सरोवर साचा सर, आत्म तीर्थ इक्क इशनान कराउणा। ना जन्मे ना जाए मर, एका हरि ओट रखाउणा। लोकमात आया जोत धर, सोहँ शब्द डंक वजाउणा। आपणा कीता लैणा भर, हो सहाई ना किसे बचाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द डण्डा हथ्थ फड़ाया, गुरूआं पीरां साधां संतां मायाधारी कर्म विचारी, सोया गुर आप जगाउणा। सोए जाग जगत गुर। प्रभ धोए दाग़, आओ तुर। बुझे तृष्ना आग, चरन प्रीती जाए जुड़। अन्तिम अन्त पकड़े वाग, इक्क चढ़ाए शब्द घोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बचन रिहा लिखाए, दे मति अन्त समझाए, कलिजुग बेड़ा रिहा रुढ़। दयाल बाग़ गुर क्यों मुख छुपाया। आत्म लग्गी माया तृख, भुक्ख जगत विकार अन्त वधाया। साची सिख्या लैणी सिख, निहकलंक कलि जामा पाया। आदि अन्त जुगा जुगन्त मस्तक लेख रिहा लिख, बिधना लेख दए मिटाया। दर घर एको एका प्रभ देवे भिक्ख, अतुट्ट भण्डार इक्क रखाया। आत्म लाहे दूई द्वैती विख, माया ममता मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर गद्दी शब्द डोर बद्धी, लोकमात दए हिलाईआ। शब्द डोरी दित्ती पा। अन्तिम पाए गल विच फाह। इक्क वखाए सिद्धा राह। पुरी घनक जामा पाया, बेमुखां कलि दिसे ना। निहकलंकी डंक वजाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर पीर वंडाए हिस्से थां थां थां। पहला हिस्सा पाई वंड। करी खेल विच वरभण्ड। अस्सू सत्त दित्ता वंड। दर घर आए पैज संवारी, लोकमाती दित्ती कंड। अन्तिम आया पासा हारी, आत्म होई रंड। शब्द फड़े प्रभ सच कटारी, प्रगट होए विच ब्रह्मण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी जामा पाया, कलिजुग जीव भेव ना राया, सिर उठाई माया छाया झूठी पंड। माया राणी सिर बद्धा भार। अन्तिम वेले आई हानी, दर दर होणा अन्त

६६५
०४

ख्वार। झूठी तणी मात ताणी, वेस कलन्दर तन शृंगार। सोहँ शब्द सच्ची बाणी, पंचां करे चरन प्यार। एका जोत हरि भगवानी, आदि अन्ती एकँकार। निहकलंकी सच निशानी, शब्द चलाए अपर अपार। भुल्ले फिरदे वड विद्वानी, ना कोई पाए मात सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म करे ब्रह्म ज्ञानी, खिच्च ल्याए चरन द्वार। दूजा लेख रिहा घल्ल। ना कोई करना वल छल्ल। फल बोणा काया डल। कलिजुग जवानी गई ढल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम इक्क सुहाए मन्दिर अन्दर डेरा लाए, वेख वखाणे राजे राणे, शाह सुल्ताने जल थल।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल संत गुरचरन सिँघ ब्यास नूं शब्द भेज्जया ✻

शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व चुक्के पौड़। चरन सरन सरन गुरचरन। कलिजुग अन्तिम आउणा दौड़। प्रभ अबिनाशी तरनी तरन, अन्तिम परखे मिट्ठे कौड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया, धुरदरगाही आया दौड़। आत्म दर सच द्वार। तट्ट ब्यासा कर विचार। जगत हासा भगत ख्वार। निहकलंकी जोत प्रकाशा, शब्द डण्डा अपर अपार। एका देवे शब्द धरवासा, फड़ फड़ बाहों लाए पार। होए सहाई मात पताल अकाशा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर। सतारां हाढ़ी वेख तमाशा, आउणा चल सच सच्चे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया, पंचम् पोह दए नींह उसार। पंचम् पोह नींह उसारे। साधां संतां पावे सारे। आत्म जोती खिच ल्याए, इक्क बहाए सच चुबारे। दूजा ना कोई विच रखाए, आपे करे आपणी कारे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, शब्द डण्डा हथ्थ रखाया, उठे मात मारे झात, कलिजुग अन्तिम रिहा ललकारे। निहकलंक नर अवतार। शब्द डंक इक्क अपार। राउ रंकां इक्क करे कराए जैकार। साधां संतां लाए तनक, खिच ल्याए चरन द्वार। आप सुहाए थान बंक, छब्बी पोह कर त्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द म्यानों ल्या धूृ, चारे कुन्टां मारे वारो वार। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण, अजपा जप रस नांओ। नेत्र नैण प्रभ साचा जोती नूर एका अंजन, लोचन पेख घर साचा वेख अन्तिम कलि पाओ। धुरदरगाह सच मलाह, इक्क कराए साचा मजन, माया ममता मैल गंवाओ। जो घड़या भाण्डा अन्तिम भज्जण, सुख रैण वसेरा ना मिले ठंडी छाउँ। जन भगतां आया पर्दे कज्जण, पार कराए फड़ फड़ बाहों। जोती जोत सरूप हरि, होए सहाई सभनी थांउँ। साचा सज्जण वेख वखाणे साचा थांउँ। साचा सज्जण जगत मलाह। चार वरनां एका सरना,

६६६
०४

इक्क दिसाए राह। गुरचरन सिँघ प्रभ साचा वरना, जोती नूर उजाला, शब्द सरूपी गुर गोपाला, पवण अधारी दीन दयाला ना कुछ खाओ। खाणा पीणा देणा तज। शब्द पंघूड़े चढ़ना भज्ज। हरि दर दुआरे जाणा सज। एका अमृत पीणा रज। सदा सदा लोकमात जीणा, प्रभ अबिनाशी पड़दे रिहा कज्ज। हरि सरन प्रीती बलि बलि बलि थीणा, प्रगट होए देस माझ। माझे देस मिली वड्याई। निहकलंक जोत जगाई। पुरी घनक वज्जे डंक, रंक राजाना रिहा सुणाई। सोहँ शब्द सुणाए साचा अंक, सतिजुग साची बणत बणाई। इक्क सुहाए द्वार बंक, गुरसिख काया आत्म सेजा बैठा आसण लाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा जगत लेखा वेखी वेखा मन तन अन्दर रहि ना जाई।

❁ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल सतिगुर प्रताप सिँघ नामधारी नूं शब्द भेज्जया गया ❁

सिँघ प्रताप वड वड आप। चार कुन्ट वध्या पाप। घर घर दर दर झूठा जाप। ना कोई जाणे आपा आप। इक्क हँकारी जगत अकारी, जूठा झूठा चढ़या ताप। धरत मात प्रभ दर पुकारी, हरि हो सहाई माई बाप। निहकलंक खेल अपारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए आपे आप। शब्द सुनेहड़ा रिहा घाल। कलिजुग अन्तिम वेख वखाणे जंगल जूह जल थल। गुरमुख साचे संत स्याणे, फ़ल लगाए साचे डाल। कलिजुग जीव बेमुहाणे, जगत भुलाए कर कर वल छल। पकड़ उठाए राजे राणे, खेल रचाए अज्ज कि कल्ल। गुरमुख साचा रंग साचा माणे, सच द्वार लए मल। चले चलाए आपणे भाणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दूई द्वैती मेटे सल। गुर सति सतिगुर सति। लिख्या धुर धुर लेख, लिख्त प्रभ दे समझावे मति। जोत सरूपी धारे भेख, तीजे लोयण लैणा वेख, दसवें घर हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए, सोहँ साचा शब्द चलाए, जन भगतां अन्तिम रक्खे पत। निहकलंक जामा पाया। शब्द डंक इक्क वजाया। राउ रंक दए सुणाया। गुर पीर साध संत, जोती नूर हाज़र हज़ूर, सर्बकला भरपूर, सदा सुहेला इक्क अकेला, धुरदरगाही मेला दए मिलाया। आपे गुर आपे चेला, धर्म राए दी कटे जेल्ह, अचरज़ करे मात खेला, दिस किसे ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पुरी घनक डेरा लाया। सिँघ प्रताप गुर गुर आप। कवण सुवेला जगत सुहेला, कवण वखाणे साचा जाप। कवण धामा कवण रामा दर घर साचे साचा मेला, कवण वखाणे पुंन पाप। कवण गुर कवण चेला, कवण मारे तीनो ताप। कवण

हरि इक्क अकेला, जोती जोत सरूप हरि, कवण थापणा रिहा थाप। कवण थापे काया रास। कवण करे जोत प्रकाश। कवण देवे आत्म रसन स्वास। कवण चलाए शब्द मात पताल अकाश। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कवण दुआरा सच घर बाहरा, विच संसारा जोत अकारा, कवण वसे आस पास। आस पास किस वसेरा। लग्गा प्रभास विच डेरा। परम पुरख हरि साची आस, वेख वखाणे हरि नेरन नेरा। काया पिंजर हड्ड नाड़ी मास, अन्तिम ढह ढह होए ढेरा। मात गर्भ रिहा दस मास, आया गया चुरासी गेड़ा। रसना गाए स्वास स्वास, कवण चुकाए अन्तिम अन्त जम का झेड़ा। प्रभ मिलण दी साची आस, अन्तिम बन्ने लाए बेड़ा। मन बैरागी सदा उदास, वेख वखाणे काया नगर खेड़ा। सच मण्डल हरि साची रास, काया मन्दिर अन्दर खुल्हा वेहड़ा। गगन पताली जोत अकाली मात पताल अकाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आप लगाए इक्क उखेड़ा। लाए कलि उखेड़ा सर्बकला भरपूरया। धरत मात कराए खुल्हा वेहड़ा, गुरमुखां आसा मनसा पूरया। लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा, वेला नेड़ ना जाणो दूरया। काया मन्दिर ढहिणा खेड़ा, एका जोती साचा नूरया। अन्तिम वेले बन्ने बेड़ा, सर्बकला आपे भरपूरया। गुरूआं पीरां भेड़ भेड़ा, हरि दिसे हाज़र हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि बन्ने बेड़ा।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल राष्ट्रपती राजिन्दर प्रशाद नूं दिल्ली शब्द लिख के भेज्जया गया ✻

राज जोग दिल्ली दरबार। फीका रस रसना भोग विच संसार। एका हरि दरस अमोघ, मानस देही जगत अपार। लिख्या लेख धुर संजोग मिले मेल कन्त भतार। दूई द्वैती कटे रोग, शब्द देवे इक्क अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, पूर्ब कर्म रिहा विचार। वाली हिन्द सखी सुल्तान। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, प्रगट होया वाली दो जहान। सोहँ साचा शब्द चलाया, चार वरनां इक्क ज्ञान। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका माण रखाया, एका बख्शे चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वाली हिन्द सर्ब बख्शिंद, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। वाली हिन्द जगत सरदार। साचा भगत प्रभ चरन द्वार। मिले मुक्त अन्तिम अन्त अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी साची जुगत, आप कराए किरपा धार। निहकलंक कलि जामा पाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती खेल अपर अपार। वाली हिन्द धरत मात दुलारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। प्रगट होया माझे देस, करे वेस राम रमईआ कृष्न मुरारे। सति पुरख सदा आदेस, राज राजाना पावे सारे। कोटन कोट मंगण दर दरवेश, ब्रह्मा विष्न महेष शिव खड़े दुआरे। जोती जोत

सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात कलि जामा धारे। सच दुलारे सच सपूत, धरत मात खुशी मनाउँदी ,। कलिजुग काला वडा अवधूत, काला सूसा ईसा मूसा तन श्रृंगार कराउँदी। साचा संग निभाए चीना रूसा, एका बणत बणाउँदी। जोती जोत सरूप हरि, किरपा आपणी रिहा कर, धरत मात मार झात, वाली हिन्द तेरी बणत बणाउँदी। वाली हिन्द सच्ची सरकार। चार वरनां इक्क प्यार। गऊ ग़रीब निमाणया, देणा माण सच्चे घर बाहर। साचा रंग एका एक जन भगत साचा माणया, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, धारे भेख श्री भगवानया। निहकलंकी खेल अपार। लोकमात विच संसार। शब्द रक्खी साची दात, जन भगतां बणे आप वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द वड मृगिन्द, साचे दर सुणे पुकार। वाली हिन्द राज दुआरे। प्रभ अबिनाशी वेख वखाणे महल्ल अटल्ल उच्च चुबारे। आपे जाणे जल थल, लोआं पुरीआं पावे सारे। प्रभ का भाणा ना जाए टल, कलिजुग अन्तिम गया हारे। प्रभ अबिनाशी करे वल छल, माया पड़दे पाए भारे। गुरमुखां आत्म जोती जाए बल, आयण चल्ल सच दुआरे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जन भगतां पैज संवारे। जन भगतां पैज संवार, सदा प्रितपालदा। देवे शब्द हुलार, तोड़े काल जंजाल दा। आत्म जोती कर उज्जयार, देवे नाम ख़ज़ाना सच्चे धन माल दा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आदि अन्त जुगा जुगन्त, सदा सदा प्रितपालदा। पुरी घनक हरि जोत जगाई। पंचम् जेठ मिली वड्याई। धरत मात खुशी मनाई। सदा रहे इक्क इकांत, दूसर किसे दीसे नाही। देही नाता तुट्टा मात, शब्द उडारी इक्क लगाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छब्बी पोह तन मन्दिर देणा खेह कराई। काया मन्दिर गया सड़। लग्गी अग्ग बहत्तर नड़। साचे पौड़े गया चढ़। सिँघ पूरन विच बैठा वड़। ना कोई सीस ना कोई धड़। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़। राज राजाना शाह सुल्ताना, शब्द सरूपी रिहा फड़। साचा देवे नाम निधाना, काया किल्ले अन्दर वड़। भारत खण्ड झुल्ले इक्क निशाना, सच धर्म दी लाए जड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वाली हिन्द सच्चे सुल्तान, सोहँ अक्खर जगत वक्खर लैणा पढ़। कर्म जोग मातनिंग। प्रभ मारे इक्क झातनिंग। कर्म विचारे पावे सारे, कलिजुग अन्धेरी रातनिंग। धरत मात सच दुलारे, वाली हिन्द सच्ची सरकारे, अन्तिम वेले पुच्छे कौण वातनिंग। साचे भगत जगत वड्याई। मात पित बूंद रगत प्रभ लेखे लाई। आत्म जोती शब्दी शब्द, लोकमात मिले वड्याई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संत दुलारे, प्रभ चरन वणजारे देवे शब्द जणाई। शब्द जणाई जाणा जाण। मिलणा मेल अन्त भगवान। आत्म देवे इक्क

७०० ०४ सच्चा सुच्चा ब्रह्म ज्ञान। चार वरनां एका सरना, ऊँचां नीचां कर ध्यान। ना कोई दीसे वरना बरनां, एका जोत श्री भगवान। अन्तिम वेले हरि संत दुलारे साचे तरना, हरि शब्द खटोला मिले बिबाण। आप कटाए जम्मणा मरना, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा देवे जीआ दान। साचा दान हरि भगवन्त है। मेल मिलाए साचे कन्त है। सोहँ शब्द लोकमात महान, आदि अन्त है। मिले मेल भगत भगवान, मेल मिलावा साचे कन्त है। चरन धूढ़ सच्चा इशनान, मिले वड्याई जीव जन्त है। अमृत फल आत्म रस साचा खाण, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जिस बणाई साची बणत है। बणत बणाई गई बण। पूर्ब कर्म कमाई धन्न। लोकमात मिली वड्याई, प्रभ अबिनाशी ल्या मन। शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाई, लक्ख चुरासी होणा खन। निहकलंक जोत जगाई, बेमुख जीवां देवे डन्न। जन भगतां आत्म वज्जे वधाई, भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न। दिल्ली तख्त होए रुशनाई, सच छत्र हरि सीस झुलाई, नौ खण्ड पृथमी होई अन्नू। साचा माण ताण विच जहान रखाई, वड दाता सूरा सरबंग। अट्ठे पहर दिवस रैण होए सहाई, चिट्टे अस्व कस तंग। वाली हिन्द चाढ़े नाम रंग, दर दुआरे आए चांईं चांईं। जोती जोत सरूप हरि, चार वरना खुल्हाए इक्क दर, निहकलंक नरायण नर, वाली हिन्द वड मृगिन्द, सागर सिंध, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, सदा सुहेला रक्खे ठंडी छाईं। ७०० ०४

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू नूं शब्द भेज्जया गया दिल्ली ✻

प्रधान मन्त्री वड प्रधान। प्रभ अबिनाशी चरन ध्यान। जिस ने दीआ पीण खाण। लोकमात रखाई साची नीआ, उडे उडावे शब्द बिबाण। साढे तिन्न हथ्थ अन्तिम आवे सीआ, वडे वडे नौजवान , हरिजन निर्मल होए जीआ, पुरख अबिनाशी रसना गान। साचा जाम जिस जन पीआ, अमरापद जगत कलि पान। जोती जोत सरूप हरि, देवे माण वाली दो जहान। प्रधान मन्त्री आत्म ध्यान। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, वेख वखाणे चतुर सुजान। घनकपुर वासी शाहो शाबाशी, धरे जोत श्री भगवान। वेखे खेल मात पताल अकाशी, गुणवन्त हरि गुणी निधान। मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द जणाए लिख्या धुर फ़रमाण। मानस जन्म करे रहिरासी, हरिजन जन हरि कल रसना गान। जोती जोत सरूप हरि, वड दाता बल बली बलवान। वड बली बलवान हरि निरंकारया। अट्ठे पहर नौजवान, ना आवे पासा हारया। जन भगतां देवे माण ताण, रखाए आण विच संसारया। शब्द फड़े फड़ाए तीर कमान, चलाई जाए वारो वारया। गुरमुख साचे संत जनां दर घर साचे साची

दरगहि देवे माण, मिलाए मेल जोत निरंकारया। जोत निरँकार जगत निरालया। कलिजुग कर्म रिहा विचार, चारों कुन्ट घटा कालया। धरत मात करे पुकार, दर आए बण सवालया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, लोकमात साचे वालया। निहकलंक लए अवतार, गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त साध संत भगत भगवन्त मिलाए मेल नर हरि बन बनवाल्या। हरि बनवाली भगत सवाली साचा दर दुआरा, कोई ना जाए खाली। राग रंग राज ताज, धुरदरगाही साची डाली। शब्द सुनेहड़ा आत्म अवाज़, मारे हरि निरँकारे चले चाल निराली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्मी दीप सत देवे मति रक्खे पति, फल लगाए साची डाली। मति कच्छ कच्छ मति कशमीर। प्रभ अबिनाशी जगत निराला इक्क अकाला, सोहँ शब्द चलाए साचा तीर। जोती जामा दीन दयाला, धरत मात दुलारे, प्याए अमृत साचा सीर। करे खेल अन्तिम वारे, चारों कुन्ट होए वहीर। निहकलंक कलि जामा धारे, गुरमुख साचे संत सुहेले आपे मेले, जुगां जुगां दे विछड़े वीर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम कटे हिन्द गोबिन्दा, भारत खण्डी बिरहों पीड़। भारत खण्ड होए प्रकाश। निहकलंक कलि जामा पाया, पुरी घनक कलि रक्खे वास। शब्द घोड़ा इक्क रखाया, वेख वखाणे पुरीआं लोआं मात पताल अकाश। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात मार झात, जन भगतां पूर कराए अन्तिम कलि साची आस। पूरन आस जाए कर। जन भगतां देवे साचा वर। गुरमुख विरला रसना सेवे, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां चोरां नाल शब्द सरूपी रिहा लड़। शब्द डोरी हथ्थ रखाईआ। चोरी चोरी गुरमुख साचे संत जनां आत्म बन्न वखाईआ। कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, सच सुच्च किसे हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां दे मति लोकमात रिहा समझाईआ।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी महाराज संगरूर नूं शब्द भेज्जया गया ✻

भगत वछल गिरधार रूप अपार है। आदि अन्त एका एक सच्ची सरकार है। जुगा जुगन्त भगत अधार, देवे नाम अपार है। पूर्ब कर्म रिहा विचार, हरि साजन मीत मुरार है। लक्ख चुरासी आर पार, कलिजुग अन्तिम आई हार है। पंचम् पोह रक्खे नींह सच दरबार, चार वरनां इक्क अधार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात ल्या अवतार है। लोकमात हरि जोत जगाई। चार कुन्ट वज्जे वधाई। गुरमुख साचे संत जन, प्रभ अबिनाशी लए जगाई।

सोहँ देवे नाम धन, आत्म तृष्ना दए मिटाई। भाण्डा भरम हरि दए भन्न, संत मनी सिँघ लिख्त लिखाई। कलिजुग जीवां देवे डन्न, मस्तूआणे जोत जगाई। साची जोत जगाए तन, अन्दर मन्दिर करे रुशनाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणे संगरूर हरि हज़ूर रिहा बणत बणाई। राणे संगरूर उठ कर ध्यान। जोत सरूपी हरि भगवान। शब्द सरूपी इक्क बिबाण। बिन रंग रूपी धर्म निशान। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, साध संत होए हैरान। प्रगट होया सति सरूपी, निहकलंक बली बलवान। दो जहानां वडा शाहो भूपी, राज राजानां देवे जीआ दान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

❁ ५ पोह २०११ बिक्रमी महाराजा पटिआला नूं शब्द लिख के भेज्जया गया ❁

राजन राज, राज प्रमुक्ख। प्रभ अबिनाशी साजन साज, घर घर धूंएं रहे धुख। प्रगट होए देस माझ, जन भगतां कराए उज्जल मुख। कलिजुग संवारे आपे काज, सुफ़ल कराए धरत मात कुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात गर्भ ना होए उलटा रुख। राज प्रमुक्ख राज राजाने। आत्म तृष्ना श्री भगवाने। बिन हरि दर्शन ना साचा सुख, मिले माण ना विच जहाने। ना कोई मिटाए तृष्ना भुक्ख, देवे माल धन नाम निधाने। गुरमुख साचे संत जन सुक्खणा रहे सुक्ख, मिले मेल अन्त भगवाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठी जामा पाया, गुरमुख साचे संत जनां, शब्दी बन्नॣे हथ्थीं गाने। निहकलंक नरायण नर निरंकारया। शब्द वजाए साचा डंक, साची जोत करे उज्जयारया। हरिजन सुहेले साचे मेले जोत सरूपी लाए तनक, खिच्च ल्याए चरन द्वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् जेठी निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, कलिजुग जीवां दिस ना आया, गुर गोबिन्द बणया एक लिखारया।

❁ ५ पोह २०११ बिक्रमी महाराज फरीदकोट नूं शब्द भेज्जया गया ❁

राणे फरीदकोट, उठ उठ जाग। प्रभ अबिनाशी लाए शब्द चोट, अगले पिछले धोए दाग़। कलिजुग माया ममता कढ्ढे खोट, आपणे हथ्थ पकड़े वाग। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, मिल्या मेल हरि कन्त सुहाग। राज राजान झूठा ताज। कलिजुग मूधा होया ठूठा, चारों कुन्ट पैणी भाज। गुरमुखां मिले रस

अनूठा, प्रभ अबिनाशी रक्खे लाज। कलिजुग वेले अन्तिम अन्त, दर घर साचे क्यों बैठा रूठा, प्रगट होए हरि देस माझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, जन भगतां साजना रिहा साज।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी महाराज कपूरथला नूं शब्द लिख के भेज्जया गया ✻

जगत माण जीव निधानया। भगत भगवान, ना कलि पछाणया। दरगाह साची देवे माण, चुकाए आवण जाणया। सच झुलाए इक्क निशान, ना कोई जाणे राज राजाणया। जीवां जन्तां देवे पीण खाण, आत्म जोत नूर महानया। संत मनी सिँघ लाया बाण, चलाई चक्की जेल्ह दिवानया। अन्तिम वेले आई हान, सति सरूपी ना हरि पछानया। कवण चुकाए जम की कान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मारे शब्द तीर निशानया। शब्द तीर हरि चलाए। संत मनी सिँघ तेरी भीड़, अन्तिम कलि आप कटाए। सतिजुग साचे बन्न्हे बीड़, राजे राणे लए उठाए। आत्म हँकारी जगत विकारी, शब्द वेलणे रिहा पीड़, अन्तिम अन्त ना कोई सहाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपणी गोद आप उठाए।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी बाबा मेहर सिँघ जी जलन्धर माडल टाऊन शब्द भेज्जया गया ✻

जोती धूंआं धुखे अन्दर। काया डूंघी वेखे कन्दर। लेखे लाए तन साचा मन्दिर। प्रभ अबिनाशी किरपा कर वेखे दर, चौदां चेत्र शहर जलन्धर। चौदां चेत लैणा चित। प्रभ अबिनाशी वेखण आए, काया सुहणा सुच्चा खेत। नैण लोचण पेखण आए, मायाधारी जिन प्रेत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलिजुग अन्तिम कर कर भेख। शहर जलंधर गुर गुर लाल। जोत निराली अन्दरे अन्दर, डगमगाए बेमिसाल। चारों कुन्ट मदिरा मासी भौंदे बन्दर, कलिजुग अवल्लड़ी चले चाल। कोई ना तोड़े आत्म जन्दर, फल ना दिसे किसे डाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, लक्ख चुरासी विच्चों लए भाल। संत प्यारे हरिजन मीत। प्रभ अबिनाशी वेख वखाणे, एका जाणे सच प्रीत। गुरदुआरा मन्दिर ना किसे टिकाणा, वसे रसे ना किसे मसीत। जोती नूर शब्द बिबाणा, साचे कुन्टां रिहा जीत। गुरमुखां देवे नाम निधाना, सोहँ शब्द सुहागी गीत। जोत सरूपी पहरे बाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अट्ठे पहर परखे नीत। पंचम् पोह, परम पुरख प्रधान। साधां संतां आत्म शक्ती खोह, खाली

करे विच जहान। जगत नाता तुट्टे मोह, काया मण्डप होए वैरान। आत्म दर रहे रो, ना मिले मेल भगवान। शब्द बीज प्रभ रिहा बो, गुरमुखां फल लग्गे साचे डाहण। कलिजुग अन्तिम ना जाणे को, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरान। वेद पुरान सार ना जाणया। अंजील कुरान हरि रंग ना माणया। उठया शब्द जवान, विच जहान वड बलवानया। पुरख अबिनाशी रसना खिच्चे इक्क कमान, चल्ले तीर गुण निधानया। फड़ फड़ उठाए राज राजान शाह सुल्तान, इक्क रखाए आनया। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगी जोत इक्क महानया।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी संत लाभ सिँघ सैदपुर नूं शब्द भेज्जया गया ✻

लाभ सिँघ प्रभ लैणा लब्भ। घर बैठयां ना लए दब्ब। प्रगट होया माझे देस, कर नाल वेस झब्ब। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे उलटी सिध्धी कँवल नभ। कवण बिध नभ उलटाए। कवण रिद्ध कवण सिद्ध, तीजे घर शृंगार लगाए। कवण करे कारज सिद्ध, चौथा दर चौथा पद घर सद आत्म दर दए खुल्हाए। किथ्थे वजे साचा नद, धुन अनहद किस धाम सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क समाध सुन लगाए।
७०४ सुन समाधी लए लगा। साध संत लए बहा। पंज दिन खुशी मना। पंजां चोरां डोरी पा। दर द्वार दए सुहा। खाणा ७०४
०४ पीणा दए छुडा। बेमुहाणा खेल रचा। वड जरवाणा भेख वटा। संत सुहेले अन्दर बहा। बाहरों कुण्डा देवे ला। महाराज ०४
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जगत पखण्डा दए मिटा।

✻ ५ पोह २०११ बिक्रमी सः गुरबख्श सिँघ एडीटर प्रीत लड़ी नूं शब्द भेज्जया गया ✻

चार वरनां सच्चे यार। लोकमात रहणा ख़बरदार। कलिजुग मिल्या अन्तिम गहणा, जीआं जन्तां आत्म करे इक्क शृंगार। जगत तमाशा वेखे नैणां, आत्म भरया वड हँकार। प्रभ का भाणा सहिणा पैणा, ना कोई जाणे जीव गंवार। आप चुकाए लहणा देणा, मीत बणाए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार। जगत रीत इक्क चलाई। मानस देही सच मसीत, मन्दिर गुरूदुआरा धाम सुहाई। सुरती बुध जोती अन्दर आदि अन्त इक्क टिकाई। जोती जोत सरूप हरि, काया काअबा जगत दोआबा, वाह वाह सोहणी बणत बणाई। बणाए बणत हरि बनवाली। कोई ना मंगे विच दलाली। लोकमात पुरख बिधात, आवे जावे दोहां हथ्थां खाली। जन भगतां देवे शब्द दात, चले चाल जगत निराली। कलिजुग

मिटाए अन्धेरी रात, गऊ ग़रीब निमाणयां प्रभ बणे पाली। इक्क बंधाए चरन नात, हरि दर चरन सुहेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बूंद प्याए स्वांत। चार वरनां इक्क प्यारा। चार वरनां एका धारा। चार वरनां एका रंग एका संग, एका मंग प्रभ सच दुआरा। चार वरनां कटे भुक्ख नंग, आत्म भरे तन भण्डारा। चार वरनां होए सहाई अंग संग, परम परखोतम निहकलंक नरायण नर अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी आदि अन्त देवे मात दात इक्क भण्डारा। सच भण्डारा देवे वंड। गऊ ग़रीब निमाणयां, प्रभ आत्म पाए ठंड। वड शाह राज राजानया, अन्तिम नंगी होई कंड। वज्जे शब्द तीर साचा बाणया, जोत सरूपी देवे सच्चा दंड। हरिजन चले प्रभ के भाणया, आत्म सदा सुहागण ना होए रंड। कलिजुग जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणयां, सत्त दीप नौ खण्ड चार कुन्टां पाए वंड। प्रभ का भाणा विरले गुरमुख जाणयां, जगत भरया तन घमंड। दर आया ना किसे पछाणया, मानस देही गई हंढ। जोती जोत सरूप हरि, जीआं जन्तां बेमुहाणयां जगत निमाणयां, सिर आपणे चुक्के दुक्खां पंड। पंचम् हाढ़ शब्द उडार। प्रीत नगर आया कर विचार। वेख वखाणे काया गागर, एका भरया जगत हँकार। गुरमुख विरले कर्म उजागर, परम पुरख दी पाए सार। एका बणना शब्द सुदागर, सोहँ शब्द वस्त अपार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमाती भगत उधार।

७०५
०४

❇ ८ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल माता बिशन कौर दे गृह ❇

प्रभ अबिनाशी रचन रचाई जावे। गुरूआं पीरां साधां संतां कलिजुग जीवां, बाहों पकड़ उठाई जावे। कलिजुग जीवां हो हो नीवां, दे मति आप समझाई जावे। साढे तिन्न हथ्थ अन्तिम आवे सीआं, मात पित भाई भैण ना नाल कोई जावे। गुरमुखां बणत बणाए लोकमात रखाए नीआं, सच महल्ल इक्क चुणाई जावे। जन भगत दुलारे आप बणाए पुत्तर धीआं, अमृत फल अन्तिम कलि खवाई जावे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी बणत बणाई जावे। हरि साची बणत बणांयदा। महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। साध संत सोए मोए मात उठांयदा। शब्द सरूपी मुखड़ा धोवे, अमृत जल इक्क रखांयदा। एका बूंद स्वांती चोए, कँवल नाभ खुल्हांयदा। जोत प्रकाश साची होए, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, राजे राणे शाह सुल्ताने शब्द भाणे आपे हरि रखांयदा। शब्द भाणा हरि रखाया। काला बाणा तन छुहाया। पंचम् पोह मात वड्याआ। तख्त ताज ना रहणे को, निहकलंक कलि जामा पाया। सच सिँघासण गुर पूरे अग्गे लैणा हो, राज राजानां सरनी लए लगाया। एका जोत जगाए

त्रै लोअ, सोहँ साचा डंक वजाया। गुरूआं पीरां साधां संतां आत्म शक्ती लए खोह, छब्बी पोह बणत बणाया। गुरमुखां आत्म सोहँ शब्द रिहा बो, हाली पाली हरि रखवाली साचा हल जवाया। एका जोत नर अकाली। , कलिजुग मिटाए घटा काली, गुरमुख साचे मारन छाली, वाली हिन्द वड मृगिन्द निहकलंक नरायण नर, लोकमात जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे मात वड्याई, गुरमुख साचा संत प्यारा, दूजी वारा भगत सुदामा संग रलाई। इक्क दर दरबार रखाउणा। सतिगुर पूरे साची कार, जगत विहारा इक्क कराउणा। सृष्ट सबाई इक्क भतार, लक्ख चुरासी पैणी मार, घर घर दर दर नर नार, कन्त सुहागी गुरमुख साचे विच मात हंढाउणा। विरले गुरमुख किस्मत जागी, प्रभ अबिनाशी मिल्या भागी, धोण आया पिछले दाग़ी, इक्क सुणाया साचा रागी, आत्म रंगण इक्क चढ़ाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां इक्क दुआरा विच संसारा, पहली वारा जोत अधारा, दोवें हथ्थ खाली रखाउणा। हथ्थ खाली भगत दलाल है। दो जहानां साचा वाली, चले मात अवल्लड़ी चाल है। गुरमुख आत्म भोली भाली, धरत मात तेरा अनमुल्लड़ा लाल है। प्रभ शब्द बणाए साची डोली, अन्तिम लए आप उठाल है। दर घर साचे इक्क बणाए साची गोली, तन सुहाए शब्द चोली, आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, नूर इक्क जलाल है। चरन प्रीती साची घोली, मिली वस्त नाम अनमोली, पूरे तोल हरि रिहा तोली, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। जन भगतां आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, लक्ख चुरासी अन्तिम वेले इक्क खिडाए शब्द होली, फड़ी हथ्थ सच्ची कटार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक हरिभगत टेक, सच्चा सच सच्ची सरकार है। मात सिँघासण हरि बणाया। शब्द आसण इक्क लगाया। सृष्ट सबाई जोत प्रकाशण, गुरमुखां निज घर वास आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अष्टम् पोह लेखा रिहा लिखाया। अष्टम् पोह खेल अपार। भेखाधारी विच संसार । सृष्ट सबाई वेख विचारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वार । लक्ख चुरासी चारों कुन्ट हारी, जीव जन्त होए गंवार। धरत मात होई ख्वारी, प्रभ दर आई धाह मार। वध्धदी जाए चार यारी, कामी क्रोधी मुग्ध नर नार। कलिजुग होई रैण अंध्यारी, कोई ना पावे तेरी सार। राजे राणे सुत्ते पैर पसारी, मायाधारी बेमुहार। गऊ ग़रीब निमाणयां दुःख लग्गा भारी, अट्ठे पहर रोण धाहां मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, सुण सच्ची इक्क पुकार। करी पुकार सुण दर तेरे। प्रभ बख्शीं अवगुण मेरे। कलिजुग करीं अन्त नबेड़े। घर घर वधदे गए झेड़े। धरत मात करे पुकार, रोवे धाहां मार सुण दातार, झूठे दिसण नगर खेड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम बन्न्हे बेड़े। धरत मात दए दुहाईआ। रक्खे खुल्हड़े केस, वेस दरवेस सुण

साचे मेरे माहीआ। भुल्ले कलिजुग नर नरेश, सार किसे ना पाईआ। कलिजुग झूठा वध्या भेख, साची जोत ना कोई जगाईआ। कवण मिटाए बिधना लिखी रेख, धरत मात अन्त कुरलाईआ। जूठे झूठे औलीए पीर शेख़, सच कुरान ना किसे फड़ाईआ। चारों कुन्ट घर घर बैठी रही वेख, मेरी पति ना किसे रखाईआ। इक्क दर दुआरा हरि दातारा तेरा ल्या वेख, मंगण आई बण शुदाईआ। कलिजुग जूठी झूठी रेख, आपणे हथ्थीं दए मिटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर एक मिले साचा वर, दर दर दए दुहाईआ। रो रो मात पुकारदी। प्रभ अबिनाशी वाजां मारदी। दिवस रैण संत चितारदी। वेखे खेल सच्ची सरकार दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नदी नूह एका मिले खुदी खुदाई सच्चे परवरदिगार दी। परवरदिगार परवरदिगार, चार यारां संग कर प्यार। मुहम्मद बद्धा सिर भार। कलिजुग अन्तिम हो त्यार। धरत मात अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, लोकमात आया जामा धार। करे खेल अपर अपार। फड़े शब्द खण्डा हथ्थ कटार। मारी जाए वार वार। रहण ना देवे कोई हँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा खेल आपे करे, लोकमात जोत धरे, रूप रंग ना किसे विचार। प्रभ साची बणत बणाईआ। महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। जीव जन्त साध संत रिहा भुलाईआ। गुर पूरा गुरूआं पीरां रिहा उठाईआ। शब्द चलाए साचा तीरा, एका रसन कमान उठाईआ। संत मनी सिँघ सिर बन्न्ही चीरा, जोती हीरा मस्तक इक्क टिकाईआ। एका देवे शब्द धीरा, दूई द्वैती भेव चुकाईआ। कलिजुग होए अन्त अखीरा, प्रभ साचा लेख रिहा लिखाईआ। गुरमुखां प्याए अमृत साचा सीरा, आत्म तृष्ना दए बुझाईआ। कोई ना कटे किसे दी भीड़ा, प्रभ साचा डन्न लगाईआ। आप उठाए सच्चा बीड़ा, कलिजुग अन्तिम बेड़ा डुबाईआ। लक्ख चुरासी भेड़ भेड़ा, ना किसे कोई छुडाईआ। ना कोई वसे नगर खेड़ा, तुट्टे नाता भैण भाईआ। आपे देवे इक्को गेड़ा, धरत मात सोहणी सेजा इक्क विछाईआ। गुरमुखां बन्न्हे हरि जी बेड़ा, खुल्ह्ड़े केस दर दरवेश, काला भेस माझे देस कराईआ। किसे ना चले कोई पेश, शब्द डण्डा इक्क रखाईआ। समरथ पुरख को सदा आदेस, गुरमुख साचे विच प्रवेश, जोती खेल रचाईआ। एका धारे आपणा भेस, जुगा जुगन्त अवल्लड़ा वेस, ना किसे बूझे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अष्टम् पोह आप तुड़ाए जगत जंज़ाला झूठा मोह, गुरमुखां चरन प्रीती इक्क बंधाईआ। साची चाल हरि निरँकारे। काला वेस कलिजुग कलि धारे। दर पकड़ ल्याए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, वेद पुरानां पावे सारे। आपे वेखे चौदां लोक तिन्न देस, चौथे घर संत प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची बणत आपणी आप

बणा रिहा। साची बणत बणाई जावे। शब्द डंक वजाई जावे। जोती नूर जगाई जावे। इक्क तूर रखाई जावे। सर्बकला भरपूर, आपणी कार कमाई जावे। राजे राणयां अष्टम् पोह उठाई जावे। शब्द म्यानों खण्डा धूह, अग्गे दिसे नदी नूह, पीर फ़कीर भुल्ले, डाहढी मार कराई जावे। वाली हिन्द दया कमाए, दे मति आप समझाई जावे। प्रधान मन्त्री दिसे डूंघा खूह, मगरों धक्का दे डराई जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, राणा संगरूर हरि हज़ूर, बाहों पकड़ हरि उठाई जावे। वाली हिन्द कर ध्यान। आए खड़ा हरि भगवान। रूप रंग ना कोई वखान। जोत सरूपी जोत महान। ना कोई लभ्भे किसे निशान। मन्दिर अन्दर ना विच बीआबान। बिरध बाल ना विच जहान। अठ्ठ सठ्ठ ना तीर्थ करदा फिरे कोई इशनान। मक्का मदीना रूसा चीना, चारों कुन्ट कर ध्यान। एका वेख गुरमुख साचे दा साचा सीना, जिथ्थे बैठा श्री भगवान। पुरख अबिनाशी दाना बीना, चार वरन जिस एका कीना, राउ रंक रंक राजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा लक्ख चुरासी विच्चों वख कीना, एका दीआ सोहँ सच्चा नाम निधान। प्रधान मंत्री पड़दा खोलू। प्रभ अबिनाशी केहड़ी कूटे रिहा बोल। गुरमुखां देवे साचे झूटे, आप मनाए जुगां जुगां दे रूठे, शब्द वजाए साचा ढोल। अन्त कराए एका मुट्ठे, लिखे लेख आप अनमोल। प्रभ अबिनाशी साचा तुठ्ठे, सद वसे भगतां कोल। रहण ना देवे लुकया कोई किसे गुठ्ठे, प्रभ अबिनाशी अमृत आत्म देवे तोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, इक्क रखाया पार किनारा, चार वरनां शब्द साचा ढोल। सच्चा शब्द ढोल वजाई जांदा। गुरमुखां आत्म पड़दे खोलू, हिरदे विच वसाई जांदा। अन्तिम कलि पूरे तोल तोल, साचे लेखे लाई जांदा। बेमुख जीव रोल रोल, साचे दर हरि दुरकाई जांदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आपणी बणत साचे संत, आपे आप बणाई जांदा। प्रभ साचा भेख वटांयदा। जम राया हुक्म सुणांयदा। देस माझा काज रचांयदा। राजे राणयां कोई ना रक्खे लाजा, धर्म राए फाँसी गल लटकांयदा। जमदूतां नूं मारे अवाजां, दोवें हथ्थ बन्नांयदा। किसे ना मिले घोड़ा ताजा, खाली हथ्थीं नंगी पैरी सर्ब रखांयदा। जगत वजाया झूठा वाजा, राग नाद ना कोई संग जांयदा। किसे मिले ना पिओ दादा, भैण भाई ना कोई छुडांयदा। प्रभ अबिनाशी साचे बांधा, मौत लाड़ी अग्गे लांयदा। कलिजुग जीव थक्का मांदा, ना पैर अग्गे उठांयदा। चार भ्रावां सद लिआंदा, तोला इक्क बणांयदा। अन्तिम कलि मुख करे काला, धर्म राए घर बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भय भयानक अचन अचानक, राजे राणे शाह सुल्तान, बाहों पकड़ हिलांयदा। कलिजुग तेरा अन्त स्यापा। झूठा जग वध्या पापा। एका भुल्लया साचा जापा। जूठा झूठा चढ़या तापा। ना कोई दिसे माई बापा। अन्तिम पाए कलिजुग

७०६ ०४ हिस्से, पुरख अबिनाशी थापन थापा। बेमुख जीवां मूल ना दिसे, ना कोई पछाणे आपणा आपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोत सरूपी भेख वटाया, कलिजुग तेरा करे अन्त स्यापा। कलिजुग तेरे पाए वैण। राजे राणे वेखण नैण। अन्त सहाई ना भाई भैण। लाड़ी मौत खाए डैण। गुरमुखां सुहाए भिन्नड़ी रैण। गुर संगत नाता भाई भैण। साचा खेल हरि रचाया, ना रसना सके कोई कहण। हरि दर साचा मेल मिलाया, आपे बणे साक सज्जण सैण। राजे राणयां लए जगाए, आप चुकाए लहिण देण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे साचे घर, एका देवे आत्म वर, दर दुआरे अंगे खड़। पंजां चोरां नाल रिहा लड़। इक्क फड़ाए दया कमाए नाम डोरी शब्द लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्दर मन्दिर किल्हे गढ़, शब्द सरूपी जाए चढ़, जोत सरूपी खेल कर, ना कोई सके अग्गों फड़। पंचम् पोह लग्न खुल्हाया। प्रभ साचा सगन आप मनाया। गुरमुखां काया रंगण रंगाया। जोती दीपक इक्क जगाया। साचा घर इक्क रखाया। जगत दुआरा आप खुल्हाया। किरपा धार हरि रघुराया। सच दरबार नींह धराया। अमृत बरखे ठंडी धारा, साचा मींह बरसाया। जगत जगदीश कर प्यारा, धरत मात साचा बीज बिजाया। लहू मिझ बणाया साचा गारा, धरत मात तेरी ख़ाक नाल रलाया। हड्डी हड्डी रक्खे चार द्वार, सतिजुग साची धार बंधाया। पंचम् रक्खे विच अन्धकार, पंज तत्त तन जलाया। मिली जोत नर निरँकार, जोती मेला इक्क मिलाया। देवे माण विच संसार प्रभ साचा धाम सुहाया। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, जन भगतां दए जगाया। चारों कुन्ट पहरेदार, दर दरबान ना कोई रखाया। नेड़ ना आवण देवे कोई किया पड़दा, नौ दुआरे खोल्ह वखाया। आपे करे आपणी मेहरा, दस्म दुआर साचा हरि किरपा कर, सिँघ सिँघासण डेरा लाए, देवे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क दुआरा विच संसारा, पहली वारा लोकमात मार झात एका एक खुल्हाया। सच दुआरा आप खुल्हाए। भगत भिखारा मंगण आए। नाम प्यारा लै के जाए। जीव जन्त अधारा, दर घर साचे बहि के जाए। साधां संतां कर विचारा, सोहँ शब्द मात साचा रसना कहि के जाए। लोकमात ना करे कोई उधारा, जो बणया सो ढहि के जाए। एका रहे अटल्ल मुनारा, प्रभ का भाणा सहि के जाए। मानस जन्म ना आए हारा, रसना हरि हरि कहि के जाए। लक्ख चुरासी गेड़ निवारा, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साची सच भण्डारा लै के जाए। सच दरबार सच्चा घर बाहरा। विच संसार हरि उज्जयारा। पंचम् पोह दिवस विचारा। कलिजुग नाता तुट्टे मोह, सतिजुग तेरा सति प्यारा। लक्ख चुरासी रही रो, ना मिले हरि कन्त भतारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ७०६ ०४

आपे बणे अन्त लिखारा। बणया आप लेख लिखारी। लिखे लेख हरि गिरधारी। नेत्र नैण लोचण लैणा वेख, वरते खेल जो संसारी। जोत सरूपी धारे भेख, प्रभ अबिनाशी नैण मुँधारी। कलिजुग मिटदी अन्तिम रेख, झूठी मिटणी चार यारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राज राजाना शाह सुल्ताना, विच जहानां करे ख़बरदारी। राज राजान सर्ब जगाए। हरि सुल्तान हुक्म सुणाए। लिख्या लेख मात महान, ना कोई मेटे मेट मिटाए। एका झुल्लया शब्द निशान, प्रभ अबिनाशी आप झुलाए। सत्तां रंगां रंग रंगान, सत्तां दीपां वंड वंडाए। नौंवां खण्डां करे ध्यान, सोहँ डण्डे नाल बंधाए। जोती जोत सरूप हरि, प्रभ अबिनाशी पुरख सुजान साची बणत आप बणाए। लिख्या लेख जगत अपार। राजे राणे हो त्यार। प्रभ अबिनाशी मात आया, चिट्टे अस्व हो अस्वार। निहकलंक कलि फेरा पाया, शब्द सरूपी वडा शाहो भूपी करे ख़बरदार। सति सरूपी किसे दिस ना आया, सति सरूपी जोत अकार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह लेख लिखाए करे ख़बरदार। लेख लिखाया जाणा जाग। कलिजुग वेला अन्तिम आया, दर दर घर घर लग्गे आग। कोए ना होए किसे सहाया, ना कोई धोवे झूठे दाग़। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, शब्द सरूपी डंक वजाया, सोहँ बन्ने तन साचा ताग। साचा ताग शब्द तन्द। प्रभ अबिनाशी आप बंधाए, खुशी कराए बन्द बन्द। जोती नूरा इक्क टिकाए, मेट मिटाए अन्धेर अन्ध। राजे राणे वेख वखाए, ना कोई जाणे सवेर सन्झ। गुरमुख साचे सरन लगाए, लए उठाए दया कमाए, आप मिटाए अगला पन्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग चढ़ाए साचा चन्द। साचा चन्द शब्द अस्मान। परमानंद दो जहान। मिटे अन्धेर कलिजुग अन्ध, होए रुशनाई जोत महान। लक्ख चुरासी कटे फंद, साचा बख्शे चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए, गुरमुख साचे संत जन, चरन धूढ़ देवे सच्चा इशनान। सच इशनान प्रभ चरन द्वार। मिले माण विच संसार। शब्द बिबाण इक्क उडार। पवण मसाण हरि जोत अधार। जोती जोत सरूप हरि, वेस अनेक जन भगत टेक, लोकमात वारो वार। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। भिन्नड़ी रैण पैज संवारे। राउ उमराउ खोल्हे नैण, भेखाधारी करे भेख दर दुआरे। काला वेस काली डैण, आए डर महल्ल अटल चुबारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारे। साची सार आप संभाले। मगरों लाहे सूसे काले। कलिजुग जीवां कढ्ढे दवाले। आत्म होए मुखड़े काले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आप पहनाए शब्द सरूपी तन चिट्टे दोषाले। शब्द दोषाला लैणा ओढ़। गुरमुख विरला विच्चों इक्क करोड़। चरन प्रीती आप रखाई, अन्तिम

वेले लए जोड़। आत्म दर वज्जे वधाई, प्रभ अबिनाशी जाए बौहड़। जोती नूर करे रुशनाई, मस्तक मिले साची धूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आदि अन्त सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ , काला सूसा हरि उतारे, ईसा मूसा होए ख्वारे। झूठा पीसण मात पीहण, कलिजुग चक्की चले अपारे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिट्टा बाणा साचा राणा करे तन शृंगारे। चिट्टा बाणा तन छुहाए। गुरमुखां तन मन रंगाए। भाण्डा भरम प्रभ भन्न वखाए। कलिजुग जूठा झूठा जन कढाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच्चा राग गुरमुखां धोए काया दाग़, आपणी हथ्थीं रिहा धवाए। चिट्टा बाणा तन शृंगार। सोलां कलीआं सोहणा हार। रल मिल सखीआं मंगल गाया, मिल्या हरि कन्त भतार। साचा वक्त आप सुहाया, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। प्रभ अबिनाशी साचा पाया, मानस जन्म सुफ़ल कराया, साचा किया वणज वपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे नाम, काया करे ठंडी ठार।

❇ ६ पोह २०११ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❇

हरि शब्द नगारा वजे, चार चुफेर है। लक्ख चुरासी वांग अग्न दजे, प्रभ अबिनाशी आप भुलाई कर कर हेर फेर है। दर द्वार एका सज्जे, कलिजुग तेरी अन्तिम वेर है। किसे लाउण ना देवे अज्जे पज्जे, राजे राणयां रिहा घेर है। गुरमुखां आत्म डोर साची बज्झे, प्रभ करे साची मेहर है। जो घड़या सो अन्तिम भज्जे, प्रभ रिहा जोड़ उखेड़ है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ दरे विच संसारे, दसवें रिहा वसेर है। नौ द्वार जगत वणजारा। पुरख अबिनाशी ना पायण सारा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, प्रभ अबिनाशी जामा धारा। शब्द डंक इक्क वजाया, चार कुन्टां करे ख़बरदारा। सोया कोई रहण ना पाया, करे खेल अपर अपारा । माया पड़दा साचा लाहया, गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा। लक्ख चुरासी जगत जंज़ाला फाह कटाया, किरपा कर हरि गिरधारा। एका सच्चा राह वखाया, मंगण ना जाए कोई दुआरा। कलिजुग साचा धाम सुहाया, निहकलंकी दया कमाया, जोत सरूपी लै अवतारा। एका एक शब्द चलाया। राउ रंक दए हिलाया। द्वार बंक आप सुहाया। जगत जगदीशे हरि दरबारे दीपक जोती इक्क जगाया। गुरमुख साचा माणक मोती, लोकमात हरि दए उपजाया। दुरमति मैल काया धोती, निझर रस प्रभ अबिनाशी होया वस, अन्तिम जोती मेल मिलाया। सच दुआरे गया वस, जोत प्रकाशी कोट रवि ससि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे दर्शन पाया। दर्शन पाया हरि गिरधार। मिल्या मेल सच्ची सरकार। सच सिँघासण डेरा लाया, वेखे विगसे करे विचार। गुरमुखां साचा मेल

मिलाया, जोती मेला इक्क अकेला सज्जण सुहेला, नूर नुरानी हरि दातार। जोती जोत सरूप हरि, नौ दुआरे विच संसारे, आप बणाए सच सच्चे दरबार। सच दरबारे नौ दरवाज़े। करे खेल ग़रीब निवाज़े। प्रगट जोत देस माझे। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त आप रचाया साचा काजे। गुरमुख विरले साचे संत, प्रभ आप रखाए अन्तिम लाजे। कलिजुग भुल्ले जीव जन्त, अन्तिम वेले खोल्हे पाजे। गुर संत मिलावा साचे कन्त, वसे महल्ला पड़दे काजे। जगत वड्याई आदि अन्त, भगत जनां हरि साजन साजे। पंचम् पोह मिले वधाई, लेख लिखाया वड राजन राजे। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़ा दिवस रैण अट्ठे पहर चढ़या रहे सच्चे ताजे। चिट्टे अस्व हरि अस्वारा। नौवां दरां वसे बाहरा। कलिजुग जन्तां झूठे संतां पावे सारा। आप बणाए साची बणता, नौ दुआरे सच दरबारा। जोती खिच्चे आदिन अन्ता, गुरूआं पीरां आई हारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ दरवाजे साजन साजे देस माझे, चारों कुन्ट आए हारा। नौ दरवाजे नर नरायण वेखे। रसना किसे ना सके कहण, लक्ख चुरासी धारे भेखे। जन भगतां खोल्हे तीजे नैण, आप लिखाए साचे लेखे। कलिजुग जीव झूठे वहिण वहिण, ना कोई मिटाए बिधना रेखे। हरिभगत चुकाए लहिण देण, किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच दरबारा आप बणाया, पंचम् पोह नींह रखाया, राजे राणयां दए जगाया, सिँघ जगदीश लाया लेखे। साचे लेखे गया लग्ग, प्रभ अबिनाशी दया कमाई। साची ख़ाक दर दर पाक, राजे राणयां दए खुल्हाई बन्द कवाड़ आत्म ताक, ना कोई वेखे मार झात, नौ दुआरा विच संसारा, कलिजुग माया डाहढी पाई। राज राजान मस्तक धूढ़ी लायण ख़ाक, आत्म जोती प्रभ दए जगाई। काया मन्दिर अन्दर खोल्हे ताक, जोती नूर करे उज्जयार, शब्द खुल्हाए दया कमाए, लेख लिखाए भविख्त वाक्, प्रगट होए हरि रघुराई। राजे राणे अन्त मिलाए ख़ाकी ख़ाक, किसे ना होए कोई सहाई। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ दुआरे सच दरबारे, लोकमात रिहा उपजाई। नौ दुआरे दर खुल्हांयदा। बेमुखां हरि भुलाया। कलिजुग लग्गी माया आत्म तृष्ना , साचा सुख ना कोई उपजांयदा। ना कोई सहाई ब्रह्मा विष्न गणपति महेष गणेश, ना कोई किसे छुडांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम ना कोई जाणे रामा कृष्ना, शब्द पल्लू ना कोई हथ्थ फड़ांयदा। सच दुआरा किसे ना दिसना, कलिजुग अन्ध अन्धेर मिटांयदा। आत्म लाहे ना कोई विस्सना, कलिजुग माया पड़दा पांयदा। जन भगतां हरि हरि साचा दिसना, जिस जन साची दया कमांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ द्वार विच संसार, लक्ख चुरासी कर्म विचार, अन्तिम कलि आप खुल्हांयदा। नौ दुआरे वेखे ख़ाकी। नौ दर काया घर,

कोई ना चुकाए अन्तिम बाकी। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए, कलिजुग खुलाए अन्तिम अन्त, गुरमुखां आत्म ताकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूर निरँजण हरि निरँकार, ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी। नौ दर काया घर जगत महल्ल अटारीआ। आपे दीआ हरि जी वर, रंग नवेल इक्क करतारया। सच सरोवर एका सर, काया मण्डल साचे धाम सुहा रिहा। अमृत भरया हरि भण्डार, ना कोई किसे प्या रिहा। साचे मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर आवे डर, पंजां चोरां पहरे ला रिहा। मारे इक्क हँकारी जिन्दर, जूठी झूठी चाबी ला रिहा। चारों कुन्ट बेमुख जीव फिरदे बन्दर, मदिरा मास मुख छुहा रिहा। गुरमुख विरले साचे संत जोत जगाए अन्दरे अन्दर, चरन प्रीती इक्क वखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ दुआरे विच संसारे, बेमुख जीवां दे मति आप समझा रिहा। नौ दुआरे दिशा तिन्न। वेख विचारे भिन्न भिन्न। लेख लिखाए गिण गिण। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच संसार साचा मन्दिर आप उसारया गिण गिण। साचे वार कर उसारे। चार चार कर त्यारे। साचे जाणे चार दुआरे। चारे कुन्टां खेल अपारे। मेख लगाए प्रभ अबिनाशी, लोकमात ना कोई उखाड़े। करे खेल घनकपुर वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी छत्त गगन दी पाड़े। नौ दरवाजे नौ निध। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साचा धाम शब्द तोला, जोती अग्नी रिहा रिध्ध। नौ उजाला हरि कृपाला, दीन

७१३
०४

दयाला गुरमुख साचे संत जनां, आपे करे कारज सिद्ध। ना कोई मंगे विच दलाला, अट्ठे पहर रहे रखवाला, बेमुखां मुख करे काला, ना कोई वखाणे साची बिध्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती खिच्च ज्वाला, चरन ल्याए नौ नाथ चुरासी सिध्ध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द तीर चलाए, नौ दुआरे पीड़ कढाए, राजे राणयां आत्म जाए विध्ध। नौ दुआरे वज्जे तीर। वेख वखानण शाह हकीर। पुरख अबिनाशी साचा भालण, तन शृंगार लथ्थे चीर। हड्ड नाड़ी झूठा दिसे बालण सड़ना मरना अन्त अख़ीर। नूरी जोत अकालण, रंक सुल्ताना विच फकीर। धुरदरगाही साचा पालन, ना कोई जाणे वज़ीर अमीर। चली चाल जगत निरालण, कलिजुग अन्त अन्त अख़ीर। ना कोई रक्खे विच दलालण, रसना खिच्चे शब्द तीर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राज राजाना शाह सुल्ताना, दर दुआरे अन्त कराए वहीर। सरगुण रूप अपार, नौ द्वार है। निरगुण रूप अपार, दसवें प्यार है। सरगुण रूप अपार सर्ब संसार है। निरगुण रूप अपार जोत निरँकार है। सरगुण रूप अपार, पंजां तत्तां मात उडार है। निरगण रूप अपार, एका जोती पुरख बिधाते, ना कोई पावे सार है। निरगुण सरगुण खेल अपार, निहकलंकी अन्तिम वार है। भरम भुलाए जगत अपार, किसे ना आए सार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ दुआरे दर द्वार, लक्ख चुरासी कर पछाण, लोकमात रिहा

वखाण है। नौ दुआरे लक्ख चुरासी कलिजुग माया झूठे रस। अन्तिम पै जाए जम की फाँसी, धर्म राए दे पाए वस। पुरख अबिनाशी, मदिरा मासी शब्द तीर रिहा कस। प्रगट होए घनकपुर वासी, राजे राणयां राह साचा रिहा दस्स। पंडत पकड़ उठाए काशी, जोत जगाए कोट रवि ससि। जन भगतां आत्म लाहे उदासी, अमृत प्याए आत्म रस। शब्द जपाए स्वास स्वासी, जोती जोत सरूप हरि, नौ दरवाजे खोल्ह दर, करे प्रकाश घट घट वास, लोकमात पताल अकाश। नौ दुआरे लोकमात, काया महल्ल सच चुबारे। अट्ठे पहर अन्धेरी रात, भुल्ले जीव जन्त गंवारे। ना कोई पाए वस्त सुगात, झूठी खेल विच संसारे। माया रही मार झात, गुरमुख साचे संत प्यारे। पुरख अबिनाशी एका बख्शे साची दात, आप कराए चरन वणजारे। अमृत देवे बूंद स्वांत, इक्क वखाए सच घर बाहरे। दसवें घर हरि इकांत, जगे जोत अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम वेले पुच्छे वात। सच सिँघासण हरि निरँकार। छब्बी पोह कर त्यार। आप रखाए दर सच्चे दरबार। गुरमुखां साची बणत बणाए, लोकमात कर विचार। कलिजुग सोए संत उठाए साधां कराए ख़बरदार। आप आपणे कंठ लगाए, जुगां जुगां दे विछड़े वीर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाए, छब्बी पोह काया तज, जोत सरूपी कर अकार। सच सिँघासण हरि सुल्तान। शब्द स्वासण वड मेहरबान। पुरख अबिनाशण नौजवान। जोत प्रकाशण नौ खण्ड पृथ्मी, दीपक जोती इक्क महान। जन भगतां आत्म निज घर रक्खे वासन, देवे नाम सच्चा पीण खाण। मानस जन्म करे रहिरासन, सतारां हाढ़ी खुशी मनाण। प्रगट होए घनकपुर वासन, वड दाता जोधा सूरा बलवान। लक्ख चुरासी देवे फासन, मेट मिटाए जीव शैतान। करे खेल पुरख अबिनाशण, ना कोई जाणे जीव जहान। जन भगतां होए दास दासन, जोती शब्द हरि भगवान। जूठे झूठे अन्तिम नासन, शब्द मारे एका बाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तख्त सुल्तान बिराजे, वड राजा शाह सुजान। वड शहाना हरि मेहरबान। जोती बाणा शब्दी गाना, रसना रक्खे तीर कमान। खिची आए राजा राणा, ना कोई रहे सुघड़ स्याण। सोहँ शब्द रखाए साची आन। निहकलंक पहरे बाणा, ना कोई रक्खे वञ्झ मुहाणा, पुरीआं लोआं संसार सागर इक्क उडान। एका छत्र सीस झुलाणा, सत्तर बहत्तर भेव चुकाणा, जगे जोत कोटन भान। इक्क इकत्तर आप अख्वाणा, सोहँ मन्त्र जाप जपाणा, गुरमुख बिठाए विच बिबाणा, साचा झुले इक्क निशान। दर घर साचे साचा माणा, नाम रस पीणा खाणा, साचा मेल श्री भगवान। लक्ख चुरासी तणया ताणा, राजा राणा जिस फसाणा, साध संत सर्ब पछतान। निहकलंकी पहरे बाणा, शब्द सरूपी डंक वजाणा, राउ रंक इक्क कराना, एका आप वड प्रताप, पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख साचे संत जनां, चरन दुआरे पैज संवारे, दरगहि साची रखावे लोकमात माण। लोकमात हरि मलाह। पार कराए फड़ फड़ बांह। ना कोई जपाए औखा नां। इक्क दरस दए दिखा। कर तरस मिटाए हरस, बेड़ा बन्ने देवे ला। अमृत मेघ देवे बरस, शब्दी जोती ठंडी छाँ। जोती जोत सरूप हरि, सदा सुहेला साचा मेला इक्क इकेला, आपे पिता आपे मां। मात पित हरि माई बाप। जोत सरूपी वड प्रताप। सोहँ जपाए साचा जाप। कलिजुग चढ़या हँकारी ताप। सृष्ट सबाई साची थापणा रिहा थाप। चारों कुन्ट होए ख्वारी, ना कोई जाणे आपणा आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म फेरे शब्द तिक्खी आरी, आप उतारे कोटन पाप। कोटन पाप देवे लाह। धुरदरगाही सच मलाह। लक्ख चुरासी फाह कटा। गुरमुख कर शब्द स्वासी, अन्तिम वेले लए बचा। बेमुख जीव मदिरा मासी, दर दुआरे दए दुरका। जोत निरँजण पुरख अबिनाशी, साची जोत मात प्रगटा। प्रगट होए घनकपुर वासी, राउ उमराउ प्रभ लए जगा। वारी आए पंडत कांशी, शब्द सुनेहड़ा दए घला। वेद पुरानां करे दासी, सोहँ साचा शब्द जणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत रिहा बणा। कलिजुग तेरी काली शाही, आत्म तृष्ना रही आग। जूठी झूठी माया फाही, साधा संतां आत्म लाए दाग़। साचा दर दुआरा कोई दीसे नाही, जूठे झूठे दिसण काग। हरि वेख वखाणे थांउँ थाँईं, ना कोई सुहेला साचा राग। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वेर, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म शब्द लाए जाग। गुरमुख साचा इक्क दुलारा। प्रभ अबिनाशी पाए सारा। वेख वखाणे सर्ब कुछ जाणे, आदिन अन्ता नर निरँकारा। साचा दर इक्क सुहाए, करे खेल जग अपारा। सोए जगाए राजे राणे, शब्द चलाए तिक्खा आरा। इक्क रखाए आपणे भाणे, ना कोई भुल्ले जीव गंवारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां इक्क वखाणे सच्चा दरबारा। सच दरबारा धुरदरगाही। लक्ख चुरासी जिस अन्तिम कलि कटणी फाही। मेट मिटाए मदिरा मासी, दर दुआरा कोई दीसे नाही। खिच्च ल्याए प्रभ पंडत काशी, जोती अग्न रिहा जलाई। प्रगट होए घनकपुर वासी, दूसर कोई दीसे नाही। मानस जन्म होए रहिरासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन साची सेव कमाई। साची सेवा आप लगाए। अमृत फल वड देवी देवा, एका नाम रस खवाए। कौस्तक मनी मस्तक थेवा, शब्द रंगण तन चढ़ाए। प्रभ अबिनाशी गायण जिह्वा, दर घर साचे माण रखाए। मिल्या प्रभ अलख अभेवा, चरन सरन जन साचे लाए। बिरथा जाए ना मात सेवा, दर दरबारे जो मात कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आत्म झोली देवे भर, शब्द भण्डार रिहा वरताए। शब्द भण्डार

हरि वरतार। करे खेल न्यारी पहली वारी, लक्ख चुरासी होए दुखयारी, धरती दबी पापां भार। दर घर साचे करे पुकारी, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। वेख वखाणे नैण मुँधारी, प्रगट होए विच संसार। जोती खेल अपर अपारी, शब्द खण्डा तिक्खी धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म इक्क कमाया, धरत मात तेरा धर्म रखाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जगत धर्म साचा नाता। लिखे कर्म पुरख बिधाता। सतिजुग साचे तेरा साचा जन्म, कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। कलिजुग जीव भुल्ले भरम, ना कोई जाणे पिता माता। दूई द्वैती आत्म वरम, ना कोई वेखे इक्क इकांता। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए कमलापाता। भगत भगवान कमलापत। चरन बंधाए चरन प्रीत एका नत। गुरमुख साचे सेवा लाए, शब्द देवे साची मत। पन्दरां पोह दिवस सुहाए, सच दरबारे पाई छत्त। जगत जगदीश प्रभ लेखे लाए, धरत मात मुख चवाई रत्त। भरम भुलेखे हरि कढाए, राजे राणयां पाई नत्थ। लोकमात सोए जगाए, सृष्ट सबाई रिहा मथ्था। प्रभ अबिनाशी गए भुलाए, अन्तिम सीआं आए साढे तिन्न हथ्थ। सिँघ मनजीत हरि जगत वड्याए, कलिजुग चलाया अन्तिम रथ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोहां भाईआं मेल मिलाया, शब्द दित्ती साची वथ।

७१६
०४

✻ २१ पोह २०११ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सच्च मण्डल शब्द रहिरास। विच वरभण्ड पुरख अबिनाश। वेख वखाणे हरि नव खण्ड, जोत सरूपी कर प्रकाश। शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड, चार कुन्ट कराए दासी दास। लक्ख चुरासी पाए वंड, वेख वखाणे पृथ्मी अकाश। कलिजुग औध अन्त गई हंढ, बेमुहाणां होए नास। बेमुख जीवां आत्म होई रंड, भुल्लया हरि सर्ब गुणतास। जन भगतां हरि पाए ठंड, देवे दरस हरि शाहो शाबाश। बेमुखां सिर चुकी पापां पंड, सच नाउँ ना दिसे किसे पास। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां पूर कराए आस। गुरमुखां पुनी आस चरन वणजारया। देवे शब्द नाम धुनी, खोल्ह् बन्द कवाड़या। सच पुकार धुरदरगाह प्रभ साचे सुणी, देवे अमृत साची धारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वेखे, करे खेल हरि करतारया। सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुखां लभ्भा लाल इक्क दुलारया। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, निरगुण सरगुण खेल अपारया। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपारया। करे खेल अपर अपारा। दीपां लोआं पावे सारा। अवर ना जाणे जीव जन्त गंवारा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। बेमुखां जड़्ह उखाड़े पहली हाढ़ा। गुरमुखां आत्म बीज साचा बोए। धरत मात तेरा फुल्ल फुलवाड़ा। हरि जोत जगत प्रकाश। वरन गोत एका रास। हरि

जोत हरिभगत जगत वास। हरि जोत शब्द चलाए स्वास स्वास। हरि जोत गुरमुख वड्याए, दया कमाए मात पताल अकाश। हरि जोत सद डगमगाए, आदि अन्त ना जाए विनास। हरि जोत प्रभ लोकमात धराए, वेख वखाणे दहि दिश दस मास। हरि वेख वखाणे चार कुन्ट राजे राणे, शब्द तीर इक्क चलाए। आप कराए बेमुहाने, नेत्र नीर रहे वहाए। पुरख अबिनाशी ना मात पछाणे, बालक माता सीर छुडाए। करे कराए खेल आपणे भाणे, सृष्ट सबाई चीर वखाए। बेमुख जीव भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे, गुरमुखां आत्म हउमे पीड़ कढाए। एका देवे आत्म सच्चा नाम ब्रह्म ज्ञाने, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवाने। वड बली बलवान जगत उधारया। अट्ठे पहर नौजवान, साचा रंग सच्चे करतारया। लक्ख चुरासी पकड़ पछाड़े बेईमान, खिच ल्याए चरन द्वारया। प्रगट होए वाली दो जहान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। मेट मिटाए अंज़ील कुरान, होए ख्वारी संग चार यारया। आप वखाणे सर्ब किछ जाणे वेद पुरानया। खाणी बाणी जुग चौथे राणी, अन्तिम वेले होए बेमुहाणया। माया राणी होई प्रधानी, भुलाए जीव जन्त निधानया। प्रभ अबिनाशी शब्द चलाए एका तीर, लक्ख चुरासी नाम वखाणया। चारों कुन्ट कराए वहीर, राजे छड्ड छड्ड भज्जण राणीआं। इक्क दूजे दे विछड़न वीर, छुट्टे संग राजे राणयां। मारे शब्द जंज़ीर, मंगे लेखा हरि शाह साचा बाणीआ। वेख वखाणे हस्त कीड़, ऊँच नीच सर्ब कुछ जाणया। धरत मात तेरी बन्ने बीड़, प्रगट होए निहकलंक बली बलवानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी साची बणत बणाए, साचा शब्द चलाए कर कर वड मेहरबानया। मात पित ना कोई भैण भ्राता। सर्ब जीआं का एका दाता। अमृत धार कर प्यार, लक्ख चुरासी बूंद स्वांता। मानस देही कीता अकार विच संसार, जीआ दान देवे सच सुगाता। आत्म जोती हरि भगवान, सदा अडोल रहे इकांता। बिरध बाल अञ्याणयां करे पछाण, ना वेखे जात पाता। मानस देही देवे माण, आपे पिता आपे माता। जोती जोत सरूप हरि, धुरदरगाही जगत मलाही, नूर जोती शब्दी नाता। हरि चरन नात सच्ची सरनाईआ। मिले शब्द सच्ची दात, जगत वड्डयाईआ। आत्म मिटे अन्धेरी रात, दीपक जोती इक्क जगाईआ। गुरमुख साचे आत्म वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी घट घट वास, आत्म सेजा आसण लाईआ। अन्तिम वेले करे बन्द खलास, मानस देही भगत स्नेही, साचे लेख लिखाईआ। धर्म राए दी कटे फाँसी, रसना तजाए मदिरा मासी, शब्द धार इक्क रखाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो शाबाशी, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण आत्म नाम चढ़ाईआ। आत्म रंगे रंग चलूल। सृष्ट सुहेला साचा मेला, प्रभ अबिनाशी ना जाए भूल। कलिजुग अन्तिम दिसे वेला, मेल मिलावा हरि साचा कन्त कन्तूहल। एका शब्द एका धार। एका गुर एका चेल,

काया मन्दिर महल्ल अटल, जोती नूर हरि उज्जयार। ना कोई करे वल छल, वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल, जोती नूर हरि उज्जयार। ना कोई साचे संतां पाए सार। लोकमात बणाए साची बणता, मिले वड्याई जीव जन्ता, मंगे मंग दर भिखार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, देवे साचा नाम वर, आत्म भरया रहे नाम भण्डार। नाम भण्डारा देवे वंड। गुरमुखां आत्म रक्खे ठंड। आदि अन्त ना देवे कंड। आत्म होए ना कदे रंड। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाणे सर्ब किछ जाणे, उत्भज सेत्ज जेरज़ अंड। जुग जुग धारे भेख भगत भगवानया। जोती नूरा हरि महानया। जुग जुग धारे भेख, साचा रंग इक्क रंगानया। चिट्टे अस्व कसे तंग, वड बली बलवानया। जुग जुग धारे भेख, शब्द वजाए इक्क मृदंग, हथ्थीं बन्ने नाम गानया। जुग जुग धारे भेख, त्रै लोआं आए लँघ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबानया। जुग जुग धारे भेख, आप निभाए आपणा संग, गुरमुख चतुर सुघड़ स्याणया। जुग जुग धारे भेख, बेमुख भन्ने काची वंग, मेट मिटाए जीव शैतानया। जुग जुग धारे भेख, दूर दुराडा एका सच्चा संग, कलिजुग भुल्ल ना जीव निधानया। जुग जुग धारे भेख, मानस जन्म ना होए भंग, देवे नाम सच्ची निशानीआं। जुग जुग धारे भेख, शब्द चढ़ाए साची कंग, रोड़ रुढ़ाए वेद पुरानया। जुग जुग धारे भेख, जन भगतां कटे भुक्ख नंग, आत्म देवे अमृत साचा जाम होए ब्रह्म ज्ञानया। जुग जुग धारे भेख, हरि संत दुलारे लए वेख, ना कोई लाए दाम, देवे दात नाम निशानीआ। कलिजुग धारे भेख, सोहँ शब्द देवे वड करामात जोती जगे नूर महानया। जुग जुग धारे भेख, मेल मिलावा हरि बहु भांत, मस्तक धूढ़ी जिस जन चरन छुहानया। जुग जुग धारे भेख, मेट मिटाए कलि अन्धेरी रात, दीपक जोती इक्क जगानया। जुग जुग धारे भेख, सद वसे इक्क इकांत, गुरमुखां दस्से सच निशानीआं। जुग जुग धारे भेख, ना कोई पिता ना कोई मात, भैण भाई ना कोई रखानयां। जुग जुग धारे भेख, लोकमात मार झात, जोती जोत सरूप हरि, शब्द तीर चलाए एका कानीआ। जुग जुग धारे भेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वार सोहँ चलाए साची बाणीआं। जुग जुग धारे भेख, वक्त सुहांयदा। हरिजन नेत्र लैणा पेख, वक्त सुहांयदा। आत्म शब्द लाई साची मेख, ना कोई बाहर कढांयदा। वेख वखाणे औलीए पीर शेख़, अग्गे हो ना कोई छुडांयदा। कलिजुग जूठा झूठा दिसे भेख, नर नारी हरि समझांयदा। आपे लिखे साचे लेख, जन भगतां बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों वेख, चरन प्रीती नाता जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दे विछड़े कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। मिल्या मेल हरि बनवारा। जुग जुग धारे भेख, वेख वखाणे सर्ब संसारा।

पूर्ब जन्म रिहा वेख, मस्तक लिखी साची धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म खोल्ह्े बन्द कवाड़ा। खोल्ह्े बन्द कवाड़ बज़र कपाटीआ। शब्द घोड़े प्रभ साचे देवे चाढ़, पूर कराए पिछला घाटयां। दर घर साचे देवे वाड़, बख्शे दात आत्म जोती इक्क महानया। जगे जोत बहत्तर नाड़, दूई द्वैती पड़दा पाया, कलिजुग माया प्रभ देवे साड़, गुरमुख साचे रसना रस, चरन सरन गुर चट्ट,। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी किरपा कर, लोकमात खुल्ह्ाए एका साचा हट्ट। एका हट भगत वणजारा। शब्द पहनाए साचा पट्ट, करे तन श्रृंगारा। जोती जगे काया मट, मिटे अन्ध अन्धयारा। ना कोई जाणे रागी नादी भट, शब्द सुरंगा इक्क सितारा। गुरमुख विरले साचा लाहा लैण खट्ट, मिले मेल कन्त भतारा। आपे मेटे काया दूई द्वैती फट, अमृत बख्शे ठंडी धारा। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, एका बख्शे गुरचरन प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, बन्ह्े सच्ची दस्तारा। जुग जुग धारे भेख कर्म कमांयदा। सतिजुग लाए साची मेख, धरत सति हरि उपजांयदा। नर नरायणा नेत्र नैणां वेख, पारब्रह्म अचुत आपणे भाणे सद समांयदा। लक्ख चुरासी मिटाए रेख, बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, अग्गे हो ना कोई छुडांयदा। कलिजुग जूठा झूठा दिसे भेख, नर नारी हरि समझांयदा। आपे लिखे साचे लेख, जन भगतां बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों वेख, चरन प्रीती नाता जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दे विछड़े, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। मिल्या मेल हरि बनवारा। जुग जुग धारे भेख, वेख वखाणे सर्ब संसारा। पूर्ब जन्म कर्म प्रभ रिहा वेख, मस्तक लिखी साची धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, खोल्ह्े बन्द कवाड़ा। खोल्ह्े बन्द कवाड़ बज़र कपाटयां। शब्द घोड़े प्रभ देवे चाढ़, पूर कराए पिछला घाटयां। दर घर साचे देवे वाड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया पड़दा पाटयां। आत्म तृष्ना लग्गी भुक्ख , अमृत मेघ ना कोई बरसांयदा। कलिजुग सुक्का काया रुक्ख, बिन गुर पूरे ना कोई हरा करांयदा। गुरमुखां कराए उज्जल मुख, शब्द राग सच धुनी नाद हरि सुणांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, शब्द देवे सच्चा वर, साचे दर द्वार आप बहांयदा। शब्द गहणा तन श्रृंगार। गुर संगत लैणा चरन प्यार। भाणा सहिणा खुशी अपार। दर्शन कर कर साचे नैणा, आत्म तृखा लैणी निवार। साचा शब्द रसना कहणा, सोहँ सतिजुग साची धार। सच दुआरा एका रहणा, कलिजुग भुल्ले जीव गंवार। लक्ख चुरासी खाए लाड़ी मौत डैणा, ना कोई करे मात उधार। नाता तुट्टा भाई भैणां, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। साचा शब्द तन पाए चोला, नाम ढोला हरि चरन सरन गुरमुख बणाए प्रभ

साचा गोला। चुकाए मरन डरन, धुरदरगाही सच विचोला। खुल्हाए हरन फरन, लोकमात बण साचा तोला। करोड़ तेतीसा वड देवी देवा पाणी भरन, सुरपति राजे इन्द व्याहे तेरा बोला। प्रगट होया तरनी तरन, शब्द रखाए एका डोला। आपे जाणे करनी करन, सच दुआरा कुण्डा खोल्हा। गुरमुख साचे आए सरन, एका शब्द सुणाए सोहँ साचा बोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई रखाए पड़दा उहला। शब्द डोरी रसना गीत। आत्म लाहे उदासी, मिले साचा मीत। देवे दरस घनकपुर वासी, काया करे ठंडी सीत। मानस जन्म करे रहिरासी, कलिजुग अचरज चलाए रीत। बेमुख जीव करन हासी, लभ्भदे फिरन मन्दिर गुरदुआरे मसीत। सच मण्डल दी साची रासी, लक्ख चुरासी परखे नीर। हथ्थ ना आए पंडत काशी, गुरमुख विरले मानस जन्म गए जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कटाए जम की फाँसी, एका बख्शे चरन प्रीत। चरन प्रीती पुरख सुजाना। साची रीती विच जहाना। काया अतीती प्रभ चरन ध्याना। कलिजुग औध गई कलि बीती, ना कोई मिले मात टिकाणा। सतिजुग चल्ले साची रीती, आप चलाए वाली दो जहानां। मेट मिटाए मन्दिर मसीती, इक्क चलाए शब्द बाणा। अमृत धार गुरमुख साचे आत्म पीती, मिटे अन्धेर अन्ध अंध्याना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म घर सोहँ शब्द साचा गाणा। साचा गाना बन्न्हे मन।
७२० ०४ भरम भुलेखा कढ्ढे जन। धर्म राए ना मंगे लेखा, रसना कहे धन्न धन्न। मस्तक लिखी साची रेखा, गुरमुखां बेड़ा रिहा बन्न। शब्द सरूपी धारे भेखा, सोहँ नाम सुणाए कन्न। कलिजुग जीव रहे वेखी वेखा, आत्म होई अन्न्ह। आप मुकाए अगला पिछला लेखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बेड़ा रिहा बन्न। कलिजुग खेल अपार बणत बणांयदा। कलिजुग साची धार जगत धरांयदा। वेख वखाए कर विचार, नर ना कोई बुझांयदा। राजे राणे कर ख्वार, शब्द मारे डाहढी मार, भरम भुलेखा दूर करांयदा। काया तन करे शृंगार, सोहँ शब्द हरि अपार, साचा बाणा हरि पहनांयदा। मेट मिटाए चार यार, संग मुहम्मद होए ख्वार, ईसा मूसा ढाहे ढेर करांयदा। फड़ हथ्थ शब्द कटार, तिक्खी रक्खी हरि जी धार, लक्ख चुरासी मदिरा मासी, पार करांयदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त आपणी आप करांयदा। लिख्त लेखा लिखणहार। जोती जामा खेल अपार। माणक मोती गुरमुख साचे, साचे धाम आप बणाए सोहणा हार। करे प्रकाश कोटन भाना, लोकमात कर उज्जयार। शब्द बन्न्हे हथ्थीं गाना, छब्बी पोह दिवस विचार। मारे तीर राजा राणा, झूठा दिसे घर बाहर। वाली हिन्द बेमुहाणा, प्रभ शब्द करे ख़बरदार। गुरमुख साचा आप उठाना, बण के रहे पहरेदार। शब्द घोड़ा इक्क रखाना, चारे कुन्टां वेखे वारो वार। नाम तोड़ा इक्क लगाना, सच सच्ची

दस्तार। कल्गी जोड़ा इक्क बणाना, गुरमुख तेरी आत्म प्यार। प्रभ अबिनाशी सीस टिकाना, कलिजुग करना अन्त विहार। आपे छड्डे पीणा खाणा, जगत जीणा साची धार। लक्ख चुरासी तणया ताणा, ना कोई जाणे जन्त गंवार। आपे वरते आपणा भाणा, निहकलंक कलि लए अवतार। हरिजन साचा सुघड़ स्याणा, दर घर साचे लए वाड़। प्रभ अबिनाशी पड़दा पाणा, लक्ख चुरासी नाता तुट्टे सतारां हाढ़। दर घर साचा गुरमुख विरले माणा। लक्ख चुरासी धर्म राए दी देवे फाँसी, सृष्ट सबाई दाढ़ां हेठ चबाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना, आत्म मंगल साची रास विच प्रभास दस्से इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग आप निभाए चढ़ाए शब्द बिबाणा। शब्द बिबाणा भगत भगवान। इक्क टिकाणा जोत महान। ना कोई जाणे राजा राणा, झूठे झुल्लण जगत निशान। गुरमुख मन्ने साचा भाणा, आत्म जोती मेल मिलान। आप चुकाए जम की काना, लक्ख चुरासी फंद कटान। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा रमईआ रामा कृष्ना शामा हरि भगवान। करन कारन जोग हरि समरथ है। सच रस प्रभ चरन लैणा भोग, मौत राणी प्रभ पाए नत्थ है। तोड़े नाता जगत विजोग, सिर रक्खे दे कर हथ्थ है। मेल मिलावा शब्द संजोग, देवे दात साची वथ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात चलाए काया सच्चा रथ है। साचा रथ

हरि समरथ चलांयदा। पुरख अबिनाशी अकथ्थना अकथ्थ, साची वथ झोली पांयदा। लेखे लाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, मानस जामा रमईआ रामा, आपणे हथ्थ रखांयदा। हरया करे सुक्का चामा, ना कोई मंगे हरि जी दामा, आपणी दया कमांयदा। गुर चरन सेवा साचे धामा, मानस देही बख्शे जामा, सोया पूत फेर जगांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डोरी आपणी हथ्थीं आप बन्न्हांयदा। शब्द डोरी प्रभ देवे बन्न। ख़ाक ना रुले काया तन। प्रभ साचे तेरी छत्र छाया हेठ पले, बेड़ा दित्ता बन्न। लोकमात फले फुले, धर्म राए ना देवे डन्न। जगे जोती साची कुले, रसना कहण धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत आप बलोए, करे रुशनाए साचे तन। तिन्न सौ सठ हाडी बहत्तर नाड़। विच ना जाए प्रभास उजाड़। अग्नी आंच ना देवे साड़। लाड़ी मौत ना लभ्भे साचा लाड़। आप चढ़ाए शब्द साची पौड़ी, चरन बंधाए साचा नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दित्ता वर, साचा पूत पिता मात। कलिजुग ना मिले कोई मीत मुरार। रुढ़दा बेड़ा लाए पार। जगत सागर दूर किनार। काया गागर तुट्टा हँकार। निर्मल कर्म होए उजागर, आया गुर चरन द्वार। साचा बणया हरि दर सुदागर, एका नाम वणज वपार। चाढ़े नाम रंग रती रत्नागर, सिरों लथ्थे पापां भार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर साचे दर, आप कराए बेड़ा पार। कलिजुग माया

गई छड्ड। दुखी होया हड्ड हड्ड। झूठा लडाया लाड लड्ड। आत्म हँकारी मार कटारी गई वढ्ढ। आए दर गुर चरन द्वारी, भरम भुलेखा देवे कढ्ढ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे साचा नाम वर, कलिजुग कढ्ढे अन्धेरी डूंघी खड्ड। नाम वर साचा पाई जा। पुरख अबिनाशी रिदे वसाई जा। सोहँ शब्द साचा गाई जा। माया राणी चिट्टी चादर उत्ते पाई जा। अट्ठे पहर भरे पाणी, साचा हुक्म सुणाई जा। कलिजुग अन्तिम अन्त जग दिसे झूठी ताणी, आपणी बणत बणाई जा। अन्तिम वेले इक्क आए हिस्से, अद्धविचकारे घड़ा पाणी सिर पैरां ताईं पवाई जा। अन्तिम छड्डणे पैणे हाणीआं हाणी, साचा लेखा आप लिखाई जा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच्चा नाम वर, माया राणी लड़, आपणे नाल बंधाई जा। सति पुरख अपरम्पर अपार, अमर हरि धारा। सोहे सीस सच्चा पीतम्बर, शब्द रक्खे सच्चा दस्तारा वड वडा पीर पैगम्बर, नर हरि सच्चा अवतारा। लोकमात वड अडम्बर, लक्ख चुरासी पसर पसारा। सृष्ट सबाई आप भरतम्बर, विष्नूं बंसी पुरख अपारा। कलिजुग तेरा मात रचाया सवम्बर, शब्द स्नेही जोत अधारा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे आप विहारा। कलिजुग रच्चया काज जगत कुड़माईआ। गुरमुखां रक्खे लाज, बणत बणाईआ। साचा साजण रिहा साज, पंचम् पोह नींह रखाईआ। शब्द सरूपी मारे अवाज़, गुरमुख साचे सेवा लाईआ। देवे नाम साचा दाज, प्रभ अबिनाशी धुरदरगाहीआ। हरि चरन प्रीती साचा राज, झूठी तोड़े माया फाहीआ। प्रगट जोत हरि देस माझ, जोगी जुगत इक्क बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीश तेरी साची सेवा लाईआ। साची सेवा लाए विच संसार है। पंचम् पोह लग्गे मेवा, हरिभगत द्वार है। कौस्तक मनी साचा थेवा, प्रभ लाए मस्तक धार है। करे खेल अलख अभेवा, ना कोई जाणे जन्त गंवार है। लक्ख चुरासी गाए रसना जिह्वा, सतिजुग साचे तेरी धार है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणत बणाई सच्चे दरबार है। सच दरबार हरि निरंकारया। एका एक टेक, गुरमुख गुर चरन द्वारया। दूजे करे बुध बिबेक, माया सेक तन गंवा रिहा। तीजे आत्म लाए मेख, लोयण लोचण आप खुल्हा रिहा। चौथे दर घर साचे लैणा वेख, शब्द राग हरि सुणा रिहा। पंजवें आप लिखाए साचे लेख, गुरमुख साचे मेल मिला रिहा। छेवें छे घर रिहा वेख, दूसर दिस ना आ रिहा। सतवें सति सरूपी धारे भेख, जोती जामा हरि अपारया। अठवें उठ उठ लैणा वेख, माझे देस भाग लगा रिहा। नावें नौ दर झूठा भेख, कलिजुग जीवां आप डुला रिहा। दसवें घर इक्क वसेख, जोती नूर हरि डगमगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्बकला भरपूरा, आपणा रंग आप वरता रिहा। जुग जुग धारे भेख, हरि निरंकारया। जुग जुग धारे भेख, शब्द अपारया। जुग जुग धारे भेख, लक्ख

७२२
०४

चुरासी विच पसारया। जुग जुग धारे भेख, सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारया। जुग जुग धारे भेख, ब्रह्मा ज्ञान दवाए वेद विदाता रसन उचारया। जुग जुग धारे भेख, शिव शंकर साची जोत जगा रिहा, बाशक तशका गल लटका रिहा। जुग जुग धारे भेख, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा संग बहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, भगत धू बणाए साची बिन्द, साचा दर आप सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, वड जोधा दाता हरि मृगिन्द, शब्द ताज सिर टिका रिहा। जुग जुग धारे भेख, नर हरि हरि नर वड मृगिन्द, निन्दक दुष्ट दंत आप खपा रिहा। जुग जुग धारे भेख, हरि बख्शिंद, गुरमुख साचे मेले आप करा रिहा। जुग जुग धारे भेख, बेमुख घले धर्म राए दी जेल्हे, लाड़ी मौत नाल प्रना रिहा। जुग जुग धारे भेख, फल लगाए साची वेले, पुरीआं लोआं आप लँघा रिहा। जुग जुग धारे भेख, अचरज खेल मात प्रभ खेले, कलिजुग वेला अन्त सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, हरि संत बणाए सच सुहेले, सच वड्याई आप दवा रिहा। जुग जुग धारे भेख, गुरमुखां चाढ़े नाम तेले, शब्द वटना आप लगा रिहा। जुग जुग धारे भेख, करे खेल अन्तिम वेले, नेत्र सुरमा इक्क सुहा रिहा। जुग जुग धारे भेख, गुरमुखां साचे मेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम गाना जगत निशाना, हथ्थ बन्न्हा रिहा। शब्द गाना बन्न्हे डोर। दर घर साचे गुरमुख साचे देवे तोर। ना कोई पुन्न ना कोई पापे, पुरख अबिनाशी एका जापे, चुक्के मोर तोर। लोकमात वड प्रतापे, मिटे अन्धेर घोरी घोर। सोहँ जपया साचा जापे, दूर कराए पंजे चोर। दु:ख रोग ना कोई व्यापे, चढ़या रहे शब्द घोड़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द कलिजुग तेरे अन्तिम वेले सच्ची मोहर। लाए मोहर गुरमुख साचे सिँघ पाल, कलिजुग होए अन्धेरा घोर। प्रगट होए दीन दयाल, लक्ख चुरासी लुट्टे, धर्म राए बण बण चोर। कलिजुग जीवां भाग निखुट्टे, एका दिसे मढ़ी गोर। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे चरन प्यारे, फड़ फड़ बाहों रिहा तोर। सिँघ पाल मिले सिक्दारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। चवी चेत दिवस विचारी। शब्द घोड़े कर अस्वारी। मारी इक्क सच्ची उडारी। बैठा जाए हरि चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर हरि दित्ता वर, ब्रह्मलोक हरि पैज संवारी। ब्रह्मलोक गुरसिख बहाया। आप कराया उज्जल मुख, साचा सुख इक्क वखाया। आप मिटाए तृष्ना भुक्ख, अमृत सीर मुख चवाया। जोती जोत सरूप हरि, सज्जण सुहेला साचा मेला, इक्क इकेला आपणा आप कराया। साचे धाम गुरसिख सुहाए। कलिजुग साची रीत चलाए। हरिजन हरि हरि साचा मीत, साची बणत रिहा बणाए। गुरमुख विरले जन्म जाणा जीत, प्रभ चरन साची सेव कमाए। काया जूठी झूठी नीत, कलिजुग जीव होए हलकाए। गुरमुखां परखे आपे नीत, सिँघ सवरन सेवा

लाए। प्रभ अबिनाशी साचा मीत, दर दरबान आप बहाए। काया होई ठंडी सीत, जोत सरूपी दर्शन पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत रिहा बणाए।

✻ २५ पोह २०११ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

कलिजुग साची धार विच संसार है। प्रभ अबिनाशी पावे सार, लक्ख चुरासी वेख विचार है। वेख वखाणे जीव जन्त साध संत पूरन भगवन्त, जोती जामा भेख अपार है। कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त, भुल्ले जीव गंवार है। करे खेल प्रभ अन्तिम अन्त, शब्द घोड़े हो अस्वार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा करे सच विहार है। सच विहार हरि दातारया। कलिजुग कर्म रिहा विचार, वेला अन्तिम आ रिहा। सतिजुग साचे बन्ने धार, शब्द सहारा इक्क करा रिहा। पुरीआं लोआं कर विचार है। साचा ढोआ इक्क वखा रिहा। ब्रह्मा वेद वखाणे मुख चार, लेखा आप चुका रिहा। आप चलाए आपणे भाणे, जुग छतीसा आपणा खेल खिला रिहा। वेख वखाणे राजे राणे, बीस इकीसा नेत्र नीर सर्ब वहा रिहा। मेट मिटाए मूसा ईसा, संग मुहम्मद रुला रिहा। इक्क चलाए शब्द हदीसा, खाणी बाणी भेव चुका रिहा। माण गंवाए राग छतीसा, नारद मुन हरि समझा रिहा। मात सुरसती झुकाए सीसा, हँकारी बीन आप भन्ना रिहा। प्रगट करे जोत जगदीशा, निहकलंकी भेख वटा रिहा। एका छत्र झुलाए साचे सीसा, वाली हिन्द आप समझा रिहा। लक्ख चुरासी झूठा पीसण पीसा, गुरसिक्खां राह साचा इक्क वखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, शब्द बाणा साचा राणा, जन भगतां तन पहना रिहा। कलिजुग काली रैण, ना कोई दीसे साक सज्जण भाई भैण, आत्म जीव प्रभ हंकारया। बेमुख डुब्बे वहन्दे वहिण, ना देवे कोई सहारा, गुरमुख विरला प्रभ अबिनाशी पेखे तीजे नैण, सति सरूपी दरस दिखा रिहा। आप चुकाए लहिण देण, आत्म झोली आप भरा रिहा। रसना किसे ना सके कहण, निहकलंक साचा डंक वजा रिहा। आप उठाए राउ रंक, शब्द सुनेहड़ा इक्क घला रिहा। इक्क सुहाए द्वार बंक, वाली हिन्द हुक्म सुणा रिहा। गुरमुख उधारे जिउँ राजा जनक, कौस्तक मनीआं मस्तक तिलक लगा रिहा। प्रभ अबिनाशी वड धन धनीआ, नाम झोली हरि भरा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, संत सुहेला साचा मेला, वड वडभागी एका रागी राग सुणा रिहा। शब्द रागी राग अनाद। गुरमुखां देवे साची दाद। आत्म जोती नूर कराए, शब्द चलाए विच ब्रह्माद। एका साची तूर रखाए, प्रभ अबिनाशी माधव माध। अमृत साचा जाम

प्याए, भेव खुल्हाए बोध अगाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना, इक्क वजाए साचा नाद। वजाए नाद अन्ध घोर है। प्रभ अबिनाशी घनकपुर वासी, सर्बकला भरपूर है। मेट मिटाए मदिरा मासी, कलिजुग डोबे तेरा सच्चा पूर है। गुरमुखां करे बन्द ख़लासी, वड दाता हरि हरि सूर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आदि अन्त साध संत, सदा सदा सद हाज़र हज़ूर है। शब्द हथौड़ा रिहा वज्ज। हँकारी काया कौड़ा रीठा रिहा भज्ज। प्रभ अबिनाशी साचा डीठा, जगत तजाई झूठी लज। एका नाम मिले आत्म मीठा, अमृत आत्म सर सरोवर पीणा रज्ज। साचा रंग चढ़े मजीठा, काया पर्दे रिहा कज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, चार कुन्ट चार चुफेर, अट्ठे पहर सन्झ सवेरे लभ्भे भज्ज भज्ज। गुरमुख सोया पैर पसार, ना जाणे प्रभ दी सार है। पुरख अबिनाशी घट घट वासी पूर्ब कर्म रिहा विचार है। साची जोत मात प्रकाशी, कलिजुग अन्ध अन्धेरा अंध्यार है। बेमुख जीव करन हासी, मदिरा मासी करन ख्वार है। वेद पुरान वाचण पंडत कांशी, ग्रन्थी पन्थी बेमुहार है। गुरमुखां आत्म प्रभ लाहे उदासी, आप कटाए जम की फाँसी, शब्द मारे तेज कटार है। सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वासी, मानस जन्म ना आए हार है। मानस जन्म होए रहिरासी, गुरमुख साचे संत जनां प्रभ कर जाए बेड़ा पार है। प्रगट होए घनकपुर

वासी, वड बली बलवान है। गुरमुखां पूर कराए आत्म रासी, इक्क रखाया चरन ध्यान है। जन भगतां होया दासन दासी, गुणवन्ता गुण निधान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे हरि दुआरे देवे सच्चा माण है। दर घर साचे देवे माण है। गुरमुख साचे आत्म मारे शब्द बाण है। कलिजुग जीआं भाण्डा काचा, मिटे अन्त निशान है। गुरमुख मिल्या प्रभ साचो साचा, देवे नाम शब्द बिबाण है। बेमुख आए दर ते नाचा, आत्म होई सुंञ मसाण है। गुरमुख विरले हिरदे वाचा, प्रभ अबिनाशी साचो साचा, जोत सरूपी बहत्तर नाड़ी राचा, आत्म जोती जगे महान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, चार वरनां एका सरना, रंक राजानां शाह सुल्तानां बेईमानां अन्तिम मिटे निशान है। आत्म रोवे दए दुहाई है। आई हरि सच्ची शरनाई है। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मिले नाम वड्याई है। आत्म साचा नूर धर, एका दस्से सच रुशनाई है। दर घर आए मिले साचा वर, भाण्डा भरम रिहा भन्नाई है। आप नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ी मस्तक रिहा छुहाई है। शब्द संजोगी मेल कर, चिता सोगी सर्ब गंवाई है। कलिजुग माया जगत विजोग, कलि शब्द झोली तन भराई है। रस रसना साचा भोग, हरि जगत विस वख कराई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, लाड़ी जोती इक्क प्रनाई है। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड वरभण्ड शब्द धुन्कार

है। वेख वखाणे उत्भज सेत्ज जेरज अंडज, सर्ब घट घटा पसार है। गुरमुख साचे लोकमात नंगी होए ना कंड, प्रभ होवे पहरेदार है। शब्द दात प्रभ रिहा वंड, आदिन अन्ती एका कार है। आप उठाए शब्द चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी रक्खी हरि जी धार है। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंड, विच मारे शब्द कटार है। कलिजुग औध गई कल हंढ, अन्तिम खाली दिसे घर बाहर है। आई हार अन्त वरभण्ड, लक्ख चुरासी बेमुहार है। कोई ना पाए आत्म ठंड, चारों कुन्ट ठग चोर यार है। बेमुख जीवां आत्म होई रंड, साध संत दुहागण नार है। गुरमुखां बन्ने प्रभ अबिनाशी सोहँ नाम साची गंढ, एका करे कराए सच्चा वणज वपार है। धर्म राए ना देवे दंड, शब्द बिबाण इक्क हुलार है। तिन्न लोआं करे खण्ड खण्ड, प्रभ अबिनाशी खेल अपार है। ब्रह्मलोक प्रभ पाई वंड, अन्तिम आई कलिजुग हार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख अपार है। साचा हरि दर द्वार। हउमे कढ्ढे काया पीड़, एका बख्शे चरन प्यार। लोकमात बन्ने बीड़, मानस देही पैज संवार। कलिजुग अन्तिम कटे भीड़, अट्ठे पहर होए रख्वार। रोग सोग जगत विजोग दए पीड़, मारे इक्क शब्द कटार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे आत्म अन्दर साचे मन्दिर, नूरी जोत शब्द अधार। नूरी जोत आत्म प्रकाश। दुरमति मैल धोत, शब्द जपाए स्वास स्वास। ना कोई जाणे वरन गोत, सच मण्डल दी साची रास, माण रखाए दुध्ध पोत, साचा फल जिउँ चन्नण प्रभास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा सीर मुख लगाए, पूर कराए दर आयां आस। साचा प्रभ धारे भेसा। ना कोई जाणे पीर फ़कीर औलीआ शेख़ा। गुरसिख एका ताणा एका पेटा। लक्ख चुरासी रही वेखी वेख, कवण खेवट कवण खेटा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूपी धारे भेख, आप बणाए साचा बेटा। मस्तक लेख लिखाए साची रेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दुआरा भगत भण्डारा, आपे मां प्यो बेटा। गुरमुख साचे साचा हरि, प्रभ साचा मेल मिलाए, हरि अमृत साचा सीर। दोहां धिरां एका घर तेल चढ़ाए, शब्द बन्ने हथ्थ कलीर। दर घर साचे इक्क वखाए, गुर संगत साची भैण भाई साचे वीर। फड़ फड़ राहे कलिजुग पाए, ना कोई जाणे संत फ़कीर। गुरमुख साचे संत उठाए, प्रभ कटण आया भीड़। अमृत साचा मुख चुआए, कलिजुग वेला अन्त अख़ीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धार वहाए, अमृत साचा नीर। अमृत नीर हरि द्वार। गुरमुख हरि कर प्यार। दोहां मेल एका धार। गुरसिक्खां काया करे ठंडी ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी पाए सार। दोवें हथ्थ रक्खे प्रभ ख़ाली। दो जहानां बणे वाली। कलिजुग जीवां बणया पाली। ना कोई मंगे विच दलाली। सोहँ शब्द माली। कलिजुग रैण घटा काली। गुरमुखां प्रभ दया कमाए, आत्म दीपक जगे, आत्म जोती

सच दिवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दिवस रैण करे रखवाली। निरँकार निरँकार निरँकार जोत प्रकाश है। निरँकार निरँकार निरँकार लोकमात पताल अकाश है। निरँकार निरँकार निरँकार लक्ख चुरासी रखे वास है। निरँकार निरँकार निरँकार लोआं पुरीआं वेख वखाणे, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास है। निरँकार निरँकार निरँकार, प्रकाश प्रकाश प्रकाश, आदि अन्त आदि अन्त आदि अन्त ना जाए विनास है। प्रकाश प्रकाश प्रकाश बेअन्त बेअन्त बेअन्त, आपे जाणे आपणी रास है। जोती जोत सरूप हरि, एका जोत ना वरन ना गोत, सदा सदा अबिनाश है। जोत जोत जोत, जगत रही मौल है। जोत जोत जोत, लोकमात तोले पूरे तोल है। जोत जोत जोत, गुरमुख साचे सद मारे झात, सद वसे तेरी काया कोल है। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पहली जोत हरि जगाई, सतिजुग साचे बणत बणाई, जोती नूर दूण सवाई, भगत भगवन्ते मेल मिलाई, साचे कन्ते इक्क वड्याई, जोती जोत सरूप हरि, साचे घर आप सहाई है। साचा घर इक्क टिकाणा। ना कोई जाणे जन्त निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आपे बैठे सच बिबाणा। सच बबाणा हरि द्वार। रूप रंग ना रेख भेख, शब्द सहार अपार। ना कोई सके वेख लेख, पवण अस्वारा शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे एका जोती करे अकार। मातलोक लए अवतारा। जुगा जुगन्तर वारो वारा। सनक सनंदन सनातन संत कुमारा। बराह रूप यगय पुरश खेल अपारा। हाव गरीव चौथी वारा। नरायण नर साची धारा। कपल मुन रूप न्यारा। दत्ता त्रै रिखव देव भगत सुधारा। पृथु वेख प्रभ सहारा। मत्स बन्ने साची धारा। कच्छप रूप विच जल धारा। मोहणी रूप बल दुआरा। बावन भेख भेख भिखारा। हँसा चोग चुगे अपारा। नर सिँघ जामा भगत अधारा। हरि जी गज सहारा। नर नरायण ध्रू उधारा। परस राम कश्त्री मारा। राम रमईआ रावण सँघारा। वेद व्यासा आई वारा। कृष्न घनईआ नैण मुँधारा कंस सँघारा। बुद्ध चलाई साची नईआ, सतिजुग तेरी विच संसारा। ईसा मूसा खेल रचाया, कलिजुग सूसा तन छुहाया, प्रभ अबिनाशी रचन रचाया, संग मुहम्मद चार यारा। नानक दात लै के आया, सतिनाम मन्त्र अपारा। दसवें गुर भेख वटाया, पुरख अबिनाशी शब्द अपारा। एका ओट हरि रखाया, कलिजुग सारे गए हारा। शब्द चोट डंक लगाया, चारों कुन्ट होए धुंदूकारा। कोटां विच्चों इक्क जगाया, गुरमुख साचा संत प्यारा। जोती जामा हरि जी पाया, कलिजुग वेखे मात वणजारा। चवीआं जामा निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए विच संसारा। निहकलंक कल्गी अवतारा। शब्द तोड़ा सीस अपारा। साचा घोड़ा पवण अस्वारा। चिट्टा जोड़ा नर निरँकारा। कलिजुग जीव मिट्ठा कौड़ा, परखण आया वड संसारा। तिन्नां लोआं इक्का पौड़ा, आपे जाणे पार किनारा। ना कोई जाणे

लम्बा चौड़ा, शब्द डण्डा इक्क सहारा। कलिजुग वक्त रहि गया थोड़ा, निहकलंक लए अवतारा। धुर दरगाहों आया दौड़ा, गुरमुखां करे सच प्यारा। वेले अन्तिम हरि जी बौहड़ा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां पाए साची सारा। साची सार हरि जी पाए। लोकमात शब्द जणाए। चार कुन्टां वेखे मार झात, गुरमुखां साची बणत बणाए, कलिजुग रैण अन्धेरी रात, बेमुखां कोई दीसे नाहे। जन भगतां मिले कमलापात, चरन नात इक्क बंधाए। शब्द देवे साची दात, पुरख बिधाता अन्तिम वेले पुच्छे वात, होए आप सहाई, ना कोई जाणे जात पात, राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम निशान, चार कुन्ट चलाए। साचा नाम निधान, हरि द्वार है। पुरख अबिनाशी होए मेहरबान, जन भगतां खोल्ले बन्द कवाड़ है। एका मारे तिक्खा बाण, हरि मेट मिटाए पंजां धाड़ है। लक्ख चुरसी पुण छाण, गुरसिख साचे लभ्भे लाड़ है। आप रखाए आपणी आण, शब्द घोड़े रिहा चाढ़ है। अन्तिम देवे इक्क बिबाण है। धुरदरगाही साचा माही, दर घर साचे रिहा वाड़ है। आप कटाए जम की फाही, जोत जगाए बहत्तर नाड़ है। गुर संगत नाता भैणां भाई, प्रभ आप बंधाए सतारां हाढ़ है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, लक्ख चुरासी चबाए आपणी दाढ़ है। लक्ख चुरासी चबाए आपणी दाढ़। लेख लिखाए सतारां हाढ़। राजे राणयां सीने पाड़। शब्द लगाए मगर धाड़। ना कोई छुडाए, कलिजुग दिन आए माढ़। चारों कुन्टां रहे बिल्लाए, शब्द खण्डा चले काड़ काड़। बेमुख जीव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साड़। धर्म राए द्वार खुल्लांयदा। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणांयदा। घनकपुर वासी साची बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी देवे फाँसी, मातलोक ना कोई छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत बणांयदा। साची बणत हरि मात बणाई। गुरमुख साचे सेवा लाई। जगत जगदीशे तेरी वारी आई। मिटणा भेव बीस इकीसे, बेमुखां सिर पैणी छाही। झुल्ले छत्र इक्क जगदीशे, चार कुन्ट सभनी थाँईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा आपे तारे, फड़ फड़ दोवें बाहीं। जगत जगदीशा कर त्यार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। धरत मात रो रो पुकारे धाहां मारे, जूठे झूठे कलिजुग जीव माया राणी श्रृंगार। वड वड भुल्ले राजे राणे, गऊ ग़रीब निमाणे ना कोई पावे सार। झूठे होए तहिसीलां ठाणयां, दर दर भिखारी लक्ख चुरासी बेमुहाणया, ना मिले कोई सच्ची सरकार। गुरमुख विरले मात पछाणया, निहकलंक ल्या अवतार। हरिजन चलाए आपणे भाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल जगत अपार। हरि साचा खेल रचाया। गुरमुख साचा लेखे लाया। उन्नी कत्तक खुशी मनाया। वजी वधाई सुणी लोकाई, जै जै जैकार कराया। पुरीआं लोआं करे रुशनाई,

प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। सत्त नौ छड्डे भैणां भाई, जगत जंजाला मोह तजाया। एका मिल्या सच गुसाईं, साची गोद जिस उठाया। गुरमुखां उठाए फड़ के बाहीं, अमृत साचा दुध्ध प्याया। सदा रक्खे ठंडी छाईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगाध बोध बोध अगाध साचा हुक्म सुणाया। साचा हुक्म हरि द्वार। शिव शंकर बैठा कर विचार। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, निहकलंक लए अवतार। कलिजुग अन्तिम माण गंवाया, अन्तिम वेला आई हार। गुरमुख साचे माण दवाया, शिव पुरी जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चढ़ाए शब्द बिबाण। शब्द बिबाणे आप चढ़ाया। साचे राणे हुक्म सुणाया। एका अमृत साचा पीणा खाणा, आवण जावण गेड़ चुकाया। लक्ख चुरासी वेखे नैणा, साचे धाम आप सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे दाना बीना, आपणे भाणे सद समाया। हरि भाणा बली बलवान है। ना कोई जाणे राजा राणा विच जहान है। गुरमुख विरले मात पछाणा, जिस बख्शे चरन ध्यान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट चार वरन झुलाए सच्चा इक्क निशान है। छब्बी पोह दिवस जाए चढ़। गुरमुखां प्रभ करे मोह, आप फड़ाए आपणा लड़। आत्म बीज रिहा बो, सोहँ अक्खर लैणा पढ़। जीव जन्त ना जाणे को, हरि वसे काया कोट गढ़। लक्ख चुरासी रही रो, किसे ना दिसे सीस धड़। गुरमुखां अमृत आत्म रिहा चो, लोकमात बाहों फड़ फड़। मिले वधाई

७२६ ०४ गुर संगत छब्बी पोह, शब्द घोड़े जाणा चढ़। गुर संगत मन वज्जे वधाई। छब्बी पोह प्रभ रुत्त सुहाई। जगत जगदीशा ७२६ ०४

साचा सुत, गुर संगत सेवा साची लाई। पारब्रह्म साचा अचुत्त, अमृत फल साचा मेवा रिहा खवाई। लोकमात वड देवी देवा, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द साचा मेघ रिहा बरसाई। धरत मात लाया साचा थेवा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरबारा विच संसारा एका एक खुलाई। सच दरबार मात खुलाया। नर निरँकार बणत बणाया। शब्द जैकारा इक्क कराया। जगत जगदीशे तेरी साची ख़ाक, लहू मिज्झ गारा नाल रलाया। गुरमुखां खोले आत्म ताक, तेरी जोती दए जगाया। राजे राणयां लिखे लेख भविख्त वाक्, पंचम् पोह नींह रखाया। प्रगट होया पाकी पाक, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। लक्ख चुरासी होणी ख़ाक, झूठी शार प्रभ दए उडाया। कोई ना बणे सज्जण साक, झूठा जगत मोह वधाया। प्रभ मगर लगाए लाड़ी मौत, बीर बेताले हाकन डाकन रहे तकाया। धर्म राए लोकमात मार झाक, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। अठाई कुण्डां खोले ताक, इक्को धक्का दए लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, मदीना मक्का बूरा कक्का अन्तिम अन्त आपे दए मिटाया। छब्बी पोह कर त्यार। पुरख अबिनाशी पावे सार। सोलां कलीआं कर तन शृंगार। वड जोधा हरि बल बलीआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत रीती सदा अतीती, करे कराए आपणी

वार। साची रीत जगत चलाउणी। गुरसिक्खां प्रीत चरन बंधाउणी। मन्दिर मसीत काया साची मात बणाउणी। सच दुआरा इक्क जगदीश, नौ दुआरे ताक रखाउणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच समग्री विच रखाउणी। सच समग्री देवे रक्ख। लक्ख चुरासी करे वख। चारों कुन्ट लाउँदे भक्ख। गुरमुख साचे लए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा श्री भगवाना, करे खेल अलक्खणा अलक्ख। साचा दर दर दरबार। लोकमात सच्ची सरकार। राउ उमराउ करे ख़बरदार। चारों कुन्ट वेख वखाणे जीव जन्त साध संत मूर्ख मुग्ध जीव गंवार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रिहा पैज संवार।

✻ २६ पोह २०११ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल दरबार दे संपूरन होण ते काका जगदीश सिँघ दी याद विच विहार होया ✻

हरि का रूप अगम्म, खेल अपारया। हरि का रूप अगम्म, जोत निरंकारया। हरि का रूप अगम्म, भेव न्यारया। हरि का रूप अगम्म, देवी देव ना पाए सारया। हरि का रूप अगम्म, ब्रह्मा ब्रह्मपुरी जोत जगा रिहा। हरि का रूप अगम्म, शिव शंकर जटा जूट धार साची सेवा ला रिहा। हरि का रूप अगम्म, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा अमृत फल इक्क
७३० ७३०
०४ ०४
खवा रिहा। हरि का रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्म, एका जोती शब्द अधारया। हरि का रूप अगम्म, पवण उनन्जा दर खलोती, तिन्नां लोआं दर खुल्ह्हा रिहा। हरि का रूप अगम्म, मंगदे रहण कोटन कोटी, दिस किसे ना आ रिहा। हरि का रूप अगम्म, ना कोई खाए पीए रोटी, इक्क अधार रखा रिहा। हरि का रूप अगम्म, हरि का शब्द रखाए सोटी, लोआं पुरीआं धार बन्न्हा रिहा। हरि का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी वेखे परखे आत्म नीती खोटी, शब्द जोती मेल मिला रिहा। हरि का रूप अगम्म, कदे ना आवे कोए तोटी, गुरमुख साचे आत्म झोली हरि भरा रिहा। साची जोत जगाए काया मण्डल चोटी, धूंआं धार सर्ब मिटा रिहा। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, लोकमात मार झात, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। हरि का रूप अगम्म, बेपरवाह है। हरि का रूप अगम्म, ना जाणे कोई सच्चा थां है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पिता ना कोई मां है। हरि का रूप अगम्म, पवण स्वासी ठंडी छाँ है। हरि का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी करे दासी, ना करे कोई नांह है। हरि का रूप अगम्म, तिन्नां लोआं फाँसी, ब्रह्मे आई अन्तिम उदासी, शिव शंकर मिटे लोकमात घर घर उडाए कां है। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्दा जोत जगिन्दा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साची जोत करे अकार है। हरि का रूप अगम्म, निर अकार

है। हरि का रूप अगम्म, पवण सरूपी शब्द अस्वार है। हरि का रूप अगम्म, चौदां हट्टां तीर्थ तट्टां करे वणज वपार है। हरि का रूप अगम्म, आत्म जोती जगे लट लटां, ना होए अन्ध अंध्यार है। एका खेल बाजीगर नटां, साचा शब्द सच्ची धुन्कार है। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साचे सर सरोवर भरया इक्क भण्डार है। हरि का रूप अगम्म, शब्द भण्डारया। हरि का रूप अगम्म, तिन्नां लोआं पावे सार है। अवर ना जाणे जीव कोया, गुर पीर लभ्भ लभ्भ थक्के हार है। कवण सिँघासण हरि जी सोया , ना कोई जाणे राजा राणा। पुरख अबिनाशी ना जन्मे ना कदे मोया। आपे चले आपणा भाणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अन्तिम अन्त बेमुहानया। हरि का रूप अगम्म, बेमुहाण है। हरि का रूप अगम्म, गुणवन्त गुण निधान है। हरि का रूप अगम्म, राज राजाना शाह सुल्ताना एका रक्खे विच जहान है। हरि का रूप अगम्म, साध संत ना सके कोई पछाण है। हरि का रूप अगम्म, शब्द रक्खे सच्चा बाण है। हरि का रूप अगम्म, अट्ठे पहर नौजवान है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, साचा छत्र एका सीस झुलान है। हरि का रूप अगम्म, अलखणा अलक्ख है। हरि का रूप अगम्म, जोती जामा धारे भेख है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़ है। हरि का रूप अगम्म, किसे हथ्थ ना आए लोकमात साची रेख है। हरि का रूप अगम्म, खण्ड मण्डल वरभण्ड रिहा वेख है। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका दात एका एक है। हरि का रूप अगम्म, शब्द उडार है। हरि का रूप अगम्म, पवण अस्वार है। हरि का रूप अगम्म, जीआं जन्तां सर्ब भतार है। हरि का रूप अगम्म, साधां संतां बन्ने धार है। हरि का रूप अगम्म, साची बणत बणांयदा। सच सिँघासण हरि निरँकार। कलिजुग किया इक्क त्यार। चौथे जुग बध्धी धार। गुरमुख साचे सेवा लाए चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात कर अकार। सच सिँघासण पावा चार। झूठा दाअवा जीव गंवार। प्रभ रक्खे सदा ठंडी छावां, हरिजन साचे चरन द्वार। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण जोती आसण अपर अपार। सच सिँघासण पाई वंड। कलिजुग अन्तिम आई कंड। कोई ना खोले झूठी गंढु। आत्म होई सर्ब रंड। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, विच संसारी पहली वारी, भारत खण्ड कराई साची वंड। निहकलंकी जोत धर, शब्द उठाए चण्ड प्रचण्ड। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे, उत्भज सेत्ज जेरज अंड। सच सिँघासण हरि बणाया। पंझी प्रकृतीआं नाल उणाया। चवीआं जुगां दा मेल मिलाया। निरगुण सरगुण दोवें रूप, आपणा आप नाम रखाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा ताणा तणया जाल। लक्ख चुरासी करे बेहाल। मिट जाणे मदिरा मासी, कलिजुग चले अवल्लड़ी चाल। गुरमुख बचाए शब्द स्वासी, चरन प्रीती

निभे नाल। मात जोत हरि प्रकाशी, गुरसिख ना होए कदे कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रिहा सुरत संभाल। सच सिँघासण सेज विछाई जा। घनकपुर वासी शाहो शाबाशी, आपणी खेल कराई जा। गुरमुखां मानस जन्म करे रहिरासी, साची बणत बणाई जा। पंडत पांधे रोंदे कांशी, ग्रन्थी पन्थी जगत भुलाई जा। मुल्लां शेख़ां रहे उदासी, हज़ारा दरूद ना किसे पढ़ाई जा। कुरान अञ्जीलां आई फ़ासी, ईसा मूसा आप जगाई जा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सच सिँघासण आप उणाई जा। सच सिँघासण हरि बणांयदा। कलिजुग सोया गूढ़ी नींद, शब्द डण्डा आप उठांयदा। सच सिँघासण हरि सुल्ताना। जोत सरूपी हरि भगवाना। चिट्टे अस्व पा पलाणा। सोलां कलीआं तन छुहाना। वडा शाहो शाह सरदार, बन्नृण आए राजा राणा। लक्ख चुरासी कर्म विचार, गुरमुखां देवे लोकमात माणा। धरत मात सुणी पुकार, प्रगट होए निहकलंक वड बली बलवाना। माया राणी झूठा कलि विहार, लक्ख चुरासी भुला हरि गुणवन्त गुण निधाना। आत्म होई सर्ब हँकार, साध संत ना किसे पछाणा। चार कुन्ट दिसे धूआं धार, दीपक जोती ना कोई जगाना। गुरमुख साचे कर त्यार, साची सेवा आप लगाना। सिँघ मनजीत लाल वार, चाढ़े साचे शब्द बबाणा। इन्द्रपुरी होए इन्द्र बाहर, गुरमुख साचा विच बहाणा। तन किया शब्द श्रृंगार, इक्को मारी नाम उडाना। तिन्नां लोकां होया बाहर, मिल्या मेल पुरख सुजाना। प्रभ अबिनाशी करे प्यार, छोटा बाला वेख निधाना। पुरी इन्द्र खोल्हे बन्द किवाड़, नर हरि साचा बन्न्हे गाना। रक्खी खेल सतारां हाढ़, झुलदा रहे नाम निशाना। शब्द घोड़े गुरमुख साचे चाढ़, दर घर साचे देवे वाड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे गुरसिख दुलारे, लोकमात उपजाए साचे लाड़। साचा लाड़ा चढ़या घोड़ी। तिन्नां लोकां प्रभ अबिनाशी इक्को लाई शब्द पौड़ी। धरत मात कर पुकार धाहां मार, प्रभ अबिनाशी दर आई दौड़ी। प्रभ अबिनाशी पाई सार, लक्ख चुरासी अन्तिम वेल होई कौड़ी। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अन्तिम वेले किरपा कर, दर घर साचे आए बौहड़ी। दर घर साचा कर पछाण। करे खेल विच जहान। धरत मात देवे वर, गुरमुख उठाए नौजवान। शब्द भण्डारा रिहा भर, दर घर साचे देवे माण। आप चुकाया जम का डर, इक्क बिठाया शब्द बिबाण। साची तरनी गया तर, गुरमुख साचा चतुर सुजान। ना जन्मे ना जाए मर, पुरख अबिनाशी चरन ध्यान। सच सरोवर आत्म भण्डारा रिहा भर, चरन धूढ़ सच्चा इशनान। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचा दर घर साचे होया परवान। गुरमुख साचा दर परवान। जगत जगदीशा विच जहान। छत्र झुलाए प्रभ साचा सीसा, चरन बिठाए कर ध्यान। करे खेल हरि जगदीशा, ना कोई जाणे जीव जहान। जोती जोत

सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जगदीशे तेरी वंड। गुरमुखां आत्म रक्खीं ठंड। पल्ले साचा नाम बन्नाए, दर घर साचे माण दवाया, शब्द सुनेहड़ा दर घर साचे जाईं वंड। राजे राणे सर्ब उठाईं, तख्त ताज सर्ब मिटाईं, कलिजुग औध गई हंढ। साचा हुक्म धुर फ़रमाण आप सुणाईं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म सुहागण नार ना होए रंड। साचा मेला हरि करतार। सज्जण सुहेला विच संसार। आपे वसे सद अकेला, लक्ख चुरासी साचा यार। गुरमुखां होए सज्जण सुहेला, आदि अन्ता अन्तिम वार। अचरज खेल मात खेला, धरत मात सुण पुकार। आप सुहाया कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, निहकलंक जामा धार। आपे गुर आपे चेला, शब्द जोती इक्क मिलार। गुरमुख साचे फड़ फड़ बाहों जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे सच विहार। सच विहारा आप करांयदा। पुरख अबिनाशी साची धारा विच संसारा, ना कोई भेव जणांयदा। ना कोई जाणे नारी नारा, साध संत जीव जन्त, गुर पीर किसे दिस ना आंयदा। आपणा रंग आपे जाणे हरि करतारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, आपणी बणत बणांयदा। मातलोक खोल्हे सच दुआरा, चार वरनां एका सरन ल्यांअदा। एका भरे नाम भण्डारा, देंदा जाए वारो वारा, तोट कदे ना आंयदा। गुरमुखां देवे अमृत धारा, काया करे ठंडी ठारा, एका साचा जाम पिलांयदा। आत्म जोती कर उज्जयारा, लक्ख चुरासी वसे बाहरा, सच्चा धाम इक्क अटल, आपणा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साची बणत हरि आप बणांयदा। साची बणत हरि बनवारी। आदि अन्त विच संसारी। गुरमुखां मेल साचे कन्त, आत्म जोती करे उज्जयारी। बेमुखां माया पाए बेअन्त, बेमुख जीव मदिरा मासी, घर घर फिरे दुहागण नारी। गुरमुखां देवे आत्म पवण स्वासी, साचा छत्र सीस झुलारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, साची खेल विच संसारी। करे खेल आप करतार है। कलिजुग तेरी अन्तिम कौड़ी वेल, ना कोई देवे अमृत सीस साची धार है। लक्ख चुरासी जाए धर्म राए दी झूठी जेल्ह, अन्तिम बन्न्हे झूठा भार है। गुरमुखां मिले हरि साचा सज्जण सुहेल, कराए मेल खिच ल्याए चरन द्वार है। आप चढ़ाए शब्द सरूपी साचा तेल, गुरमुख साचा कन्त सुहागी, मिलाए मेल सच्ची नार है। लोकमात होए वड वडभागण, गुरमुख सोए मात जागण, इक्क बन्नाए सच्चा तागन, पुरख अबिनाशी चरन लागण, आप पकड़े साची वागण, दुरमति धोए दागण, चाढ़े रंग इक्क अपार है। गुरमुख बणाए हँस कागण, माया डस्से ना झूठी नागण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर कलिजुग अन्तिम जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाया, ना कोई जाणे जीव गंवार है।

जोती भेख हरि निरँकारा। गुरमुख साचे वेख, देवे माण विच संसारा। लक्ख चुरासी नेत्र नैणां लैणा पेख, नौ खण्डां ब्रह्मण्डां दिसे इक्क दुआरा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, चारों कुन्ट किसे ना दिसे पार किनारा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, गुरमुखां किया सच प्यारा। सोलां मग्घर थित्त वार वेख, सिँघ मनजीत किया त्यारा। आपे बणे मात पित, भाई भैण हरि भतारा। दरस दिखाए नित नवित्त, अट्ठे पहर अगम्म अपारा। अमृत काया साची सिंच, झिरना झिराए ठंडी धारा। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, लक्ख चुरासी उतरे पारा। एका मिल्या हरि साचा मित, साचा देवे शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप सुहाए, तेरा इक्क दर दुआरा। सच दुआरा आप सुहाए। इक्क घर बाहर मात वखाए। जगत जगदीशा कर त्यार, दोहां वीरां हरि मेल मिलाए। शब्द कराए तन शिगार, नाम चीरा सिर बंधाए। जगत खेल अपर अपार, जोती जामा हरि जी पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी नौ दर दरबारा इक्क वखाए। जगत जगदीशे तेरा नांउँ। नौ दुआरे साचा थांउँ। पुरख अबिनाशी डेरा लाए अगम्म अथाहो। चारों कुन्ट घेरा पाए, मेरा तेरा आप मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर उडाए कांउँ। सच दुआरा आप सुहाउणा। नौ दरां भेव खुल्हाउणा। दसवें अन्दर वास रखाउणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच मण्डल साची रास लोकमात खेल खिलाउणा। मातलोक करे कार, साची बणत बणाईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द किवाड़, आपणी दया कमाईआ। बजर कपाटी देवे पाड़, शब्द तीर हत्थ रखाईआ। कलिजुग माया देवे साड़, अग्नी जोत इक्क जगाईआ। गुरमुख बणाए साचे लाड़, देवे मात हरि वड्याईआ। लक्ख चुरासी चबाए आपणी दाढ़, जोत जगाए भेख वटाईआ। करे खेल सतारां हाढ़, लक्ख चुरासी बध्धन कटे, साची बणत बणाईआ। गुरमुखां तन पहनाए सोहँ शब्द साचा पटे, किसे हट्टे हत्थ ना आईआ। ना कोई दिसे तीर्थ तट्टे, एका वसे घट घटे, सोहँ साचा राह वखाईआ। काया जोत जगाए लट लट्टे, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दूई द्वैती मेटे फटे, चार वरनां दे समझाईआ। गुरमुख विरला दर आए नट्ठे, आए हरि सरनाईआ। दुरमति मैल प्रभ अबिनाशी कटे, सच सरोवर इक्क इशनान कराईआ। रसना रस एका चट्टे चरन धूढ़ मस्तक धुरदरगाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुखां कटण आया जम की फाहीआ। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाला। साचा देवे नाम धन सच्चा धन माला। सोहँ शब्द तन पहनाए, गुरमुख तेरी आत्म साची माला। एका राग कन्न सुणाए, फुल्ल लगाए साचा डाला। भरम भुलेखा सर्ब कढ्ढे, दर्शन दिखाए गुर गोपाला। झूठी काया भन्न वखाए, किसे ना निभे अन्तिम नाला। गुरमुख साचे लोकमात चन्न चढ़ाए, आपे बणे हरि

रखवाला। गुर संगत रसना हरि हरि सदा गाए, सिँघ मनजीता सदा अतीता, साचे धाम बहाया। काया करे ठंडी सीता। जगत चलाए साची रीता। निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम जाम प्याए, एका शब्द सुणाए सोहँ सच्चा अठारां ध्याए गीता। वरन बरन मेट मिटाए, गुरमुख साचे नौ निध प्रभ दर आए, एका रस आत्म पीता। आत्म साची जोत जगाए, पुरख अबिनाशी एका राखो हिरदे चीता। आदि अन्त साध संत होए सहाए, अट्ठे पहर परखे नीता। मात पित भाई भैणां साक सज्जण सैणा ना कोई छुडाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, अचरज खेल हरि वरताना। अचरज खेल हरि वरतारया। गुरमुखां मिलाए साचा मेल, आप बहाए अटल उच्च महल्ल शब्द अटारीआ। पार कराए जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, एका एक देवे शब्द हुलारया। काया नात तुट्टे बहत्तर नाड़, आत्म जोती मेल पुरख अपारया। नेड़े ना आए पंचम् पंचां धाड़, शब्द मारे हरि काड़ काड़, गुरमुख साचे संत जनां बणे आप सहारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे आपणा सच विहारया। सच विहार हरि करतार है। कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। लक्ख चुरासी होणी मात ख्वार है। धर्म राए हथ्थ फड़े फाँसी, पुरख अबिनाशी खोल्हे इक्क द्वार हैं। लाड़ी मौत करे सोहणा तन शिगार है। मेट मिटाए मदिरा मासी, कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। करे जोत प्रकाश घनकपुर वासी, निहकलंक चवीआं अवतार है। गुर गोबिन्दा गुणी गहिंदा, दो जहानां सद बख्शिंदा, आपे जाणे आपणी कार है। लक्ख चुरासी करे निन्दा, आत्म वज्जा हँकारी जिंदा, गुरमुख विरले आप बणाए साची बिन्दा, देवे दरस अगम्म अपार है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपे जाणे आपणी सार है। जाणे सार सुरत संभालदा। लोकमात आवे वारो वार, गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों पार उतारदा। एका धाम थिर रहावे, नर हरि सच्ची सरकार दा। लक्ख चुरासी झूठे दाअवे, यमराज अन्तिम फड़ फड़ बाहों धर्म राए जेले वाड़दा। गुरमुखां देवे प्रभ अबिनाशी ठंडी छाएं, रसना हरि हरि जो जन उचारदा। ना कोई पिता ना कोई माए, झूठा नाता पीण खाण दा। घर घर उडदे दिसण कांओ, गुरमुख हँस प्रभ साचा मात पछाणदा। आप बणाए साची बणत, मारे तीर एका शब्द ब्रह्म ज्ञान दा। गुरमुख सुहाए विच सहँस, धरे भेख श्री भगवान दा। जोती जोत सरूप हरि, साचा राणा बेमुहाणा, अन्तिम कलि पछाणदा। अन्तिम कलि कर विचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। लोकमात ल्या अवतार। गुर गोबिन्द साचा बणया भविक्खत लेख लिखार। गुर नानक दित्ती साची सिक्खत, मक्के मदीने पाए सार। ना कोई जाणे मुन रिखत, ज्ञानी ध्यानी पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरानां पैंदी मार। ना कोई जाणे बूरे कक्के, ईसा मूसा गए हार। दूर दुराडा

हरि जी तक्के, तिन्नां लोआं पाए सार। पहलां खेल करे प्रभ मदीने मक्के, औलीए पीर शेख़ गौंस कुतब कढ्ढे बाहर। उम्मत नबी रसूल दी चारों कुन्ट पैण धक्के, सच्चा लग्गा शब्द नाहर। सदी चौधवीं फल साचा पक्के, वेखो खेल परवरदिगार दी। धर्मराज दे अग्गे हक्के, लाड़ी मौत सच दुलारी, बेमुखां ताईं वंगार दी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आत्म वेख वखाणे सर्ब संसार दी। पहली कूट कर विचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। ऐली अल्ला हो त्यार। शब्द आए अपर अपार। लहिंदा जाए तन बुख़ार। चारों कुन्ट आई हार। मूंह दे भार डिग्गे चारों यार। झूठे तुट्टे काया तग्गे, ना कोई देवे मात सहार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा बणे शब्द लिखार। अल्ला राणी दए दुहाई। पुरख अबिनाशी पाई फाही। कोई ना मिले साचा माही। दर घर साचा चारों कुन्ट दिसे नाही। जोती जोत सरूप हरि, आपे भन्ने काया भाण्डा काचा, दूसर कोई नाही। अल्ला राणी होई हैरान। प्रभ अबिनाशी रसना खिच्चे तीर कमान। पहला वज्जे मदीने मक्के, आप मिटाए वडे वडे बेईमान शैतान। नाता तुटे भाई भैण सके, जीव जन्त साध संत सर्ब कुरलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण बैठ शब्द चलाए साचा बाण। शब्द बाण जाए चल। पार कराए जल थल। जंगल जूह डूंघी डल। उचे टाहणे लाहे फल। लक्ख चुरासी जाए दल।
७३६ ०४ शब्द सरूपी वाहे हल। वडा शाहो शाह भूपी, निहचल बैठ धाम अटल। ना कोई दिसे रंग रूपी, लक्ख चुरासी आप भुलाई कर कर वल छल। एका जोत सति सरूपी, प्रगट होए घड़ी घड़ी पल पल। माया राणी अन्ध कूपी, बेमुखां लाहे कलिजुग खल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, जोत सरूपी भेख वटाए, करे खेल अज्ज कि कल्ल। शब्द मालन फूल लिआईआ। प्रभ साचे भेंट चढ़ाईआ। बणे सच्ची इक्क दलालण, जीउड़ा लेखे ल्या लगाईआ। एका जोत हरि अकालण, सर्ब थाँईं होए सहाईआ। दिवस रैण करे प्रितपालन, ना देवे कोई सजाईआ। बेमुख चारों कुन्ट चले भालण, निहकलंक माझे देस जोत जगाईआ। साचा वज्जे शब्द तालन, राजे राणयां रिहा समझाईआ। काया माटी ना निभे किसे नालन, आत्म जोती हथ्थ हरि रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचे फूल साची सेवा लाईआ। साचे फूल फुल्ल उमंग। खुल्ले कँवल जल तरंग। उप्पर धवल प्रभ अबिनाशी साचा संग। बहत्तर नाड़ी रिहा मवल, शब्द घोड़े कसया तंग। सृष्ट सबाई होई बवल, गुरमुखां आत्म चाढ़े रंग। जिउँ रामा कृष्ना सँवल, ना कोई जाणे जीव बेरंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा सच दुआरा। भगत भण्डारा गुरसिख वणजारा, साची मंग लए मंग। फल फुलवाड़ी साचे पत्त। पुरख अबिनाशी वेखे नाड़ नाड़ी, जूठी झूठी उब्बल रत्त। गुरमुखां फिरे सद पिच्छे अगाड़ी, आत्म बीजे साचे

वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जामा धार, गुरमुखां देवे साचा वर, सर्बकला समरथ। गुरसिख आत्म दर कुरलाईआ। झल्ली जाए ना मात जुदाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, धुरदरगाही साचे माहीआ। साचा दे नाम वर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिट जाईआ। चरन धूढ़ नहाईए साचे सर, मूर्ख मूढ़ चतुर सुघड़ बण जाईआ। आत्म भण्डारा साचा भर, दूजा दर मंगण मात ना जाईआ। सच दुआरा मिले वर, धर्म राए फंद कटाईआ। साची सरन जाईए पड़, बण साचा जगत मलाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुआरे होए निमाणी आत्म राणी रो रो दए दुहाईआ। आत्म रोवे धाहां मारदी। पुरख अबिनाशी कन्त भतार, साचा आपणा आप पुकारदी। साचे दर सुण पुकार, लोकमात गई हार, झूठी खेल ठग चोर यार दी। चारों कुन्ट पैंदी मार, कलिजुग जीव भुले गंवार, झूठी माया जगत साड़दी। एका बख्श चरन प्यार, मैं आई चल्ल सच द्वार, मिल्या हरि पुरख अपार, आत्म जोती सच बालदी। आत्म जोत जगे दीवा। गुर चरन दुआरे रहणा नीवां। साचा वेहड़ा हरि वखाए, साढे तिन्न हथ्थ रखाए सीआं। प्रभ बिन पार लँघाए केहड़ा, बेमुख भुल्ले माया रुले, ना करे कोई ठंडा सीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म साचा जाम प्याए, गुरमुख साचे दर घर आए, एका रस साचा पीआ। आत्म रस शब्द सरूर है। प्रभ अबिनाशी होए वस, बेमुख जानण दूर है। आत्म जोत करे प्रकाश कोट रवि ससि, गुरमुखां हाज़र हज़ूर है। पंच पंचायण जाए नस्स, शब्द उपजाए साची तूर है। लाड़ी मौत ना खाए डैण, प्रभ अबिनाशी आपणी गोद उठाए हस्स है। आपे बणे मात पित साक सज्जण भाई भैण, गुरमुख हिरदे रिहा वस है। गुर संगत तुठा साचा सैण, मिटे अन्धेरी कलिजुग काली रैण है। गुरमुखां अन्त विछोड़े पैण, प्रभ आप चुकाए लहिण देण है। हरिजन साचा भाणा सहिण, हरि हरि रसना सदा कहण है। बेमुख वहे डूंघे वहिण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना सके कोई कहण है। ना जाणे कोई जीव गंवारा। अन्तिम पासा आया हारा। कलिजुग काली वहन्दी धारा। फल ना दिसे किसे डाला। शब्द डण्डा लग्गा भारा। प्रभ अबिनाशी बणया हाली, धरत मात रहण ना देवे कोई जाड़ा। कलिजुग चली चाल निराली, लक्ख चुरासी इक्क बणाए सच अखाड़ा। किसे घर ना दिसे छन्ना थाली, मगर लगाए मौत लाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दिन दिहाड़े बेमुख जीवां रिहा पाड़ी। हरि दरबार अपर अपारया। हरि दरबार मानस देही जगत स्नेही, पूरे लेख लिखा रिहा। हरि दरबार साचा वेख, साचा घर सुहा रिहा। सच दरबार लोकमात ना दिसे कोई रेख, साची बणत बणा रिहा। सच दरबार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नींह रखा रिहा। सच दरबार सच टिकाणा। सच दरबार गुरमुखां मिले नाम बिबाणा। सच दरबार सुक्का

हरया करे चाम, जो जन करे चरन ध्याना। सच दरबार कोई ना लग्गे दाम, देवे दरस हरि भगवाना। सच दरबार पूर कराए गुरसिक्खां काम, दर घर साचे रक्खे माणा। सच दरबार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात इक्क सुहाणा। सच दरबार हरि भगवन्त है। सच दरबार गुरमुख विचारे संत है। सच दरबार विच मँझधार, आप बणाया हरि हरि साचे कन्त है। सच दरबार पाए सार नर नार, आदि अन्त साची कार है। सच दरबार पूर्ब कर्म रिहा विचार, दर घर साचे बन्ने धार, मेल मिलाया साचे कन्त है। सच दरबार शब्द उडार विच संसार, रसना गाउणा सोहँ सच सति है। सच दरबार भरम निवार चरन द्वार, काया चोली नाम रंगत है। सच दरबार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आप सुहाए, गुरमुख साचा बणया रहे भिखार है। साचा धाम ऊँच अटल्ला। गुर दरबार इक्क इकल्ला। वसे हरि सच्ची सरकार, माया पाई आप भुलाई कर कर वला छला। गुरमुखां कटे जम की फाही, कलिजुग वेले अन्तिम होए सहाई जल थला। फड़ फड़ तारे दोवें बाहीं, वञ्झ मुहाणा ना कोई रखाई, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत रिहा बणाई। सच दरबार नौ द्वार। गुरमुख विरला पावे सार। बेमुख चारों कुन्ट फिरदे, दहि दिश रहे झक्ख मार। गुरमुखां वसे हरि साचा हिरदे, आत्म जोती कर अकार। आप रखाए आपणे पर्दे, निहकलंकी जामा धार। कारज करे मात सिद्धे,

जन भगतां खोल्हे बन्द कवाड़। दासी करे नौ निधे, अठारां सिद्धे होए भिखार। गुरमुखां हरि आत्म विध्धे, शब्द बिबाणा साची बिद्धे, तन पहनाया कंगणहार। इक्क वखाए राह सिध्धे, लक्ख चुरासी बेड़ा पार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धार। सच दरबार हरि रघुराई। वेखे विगसे कर विचार, ना कोई सके भेव छुपाई। धुरदरगाही सच्ची सरकार, लोकमात मिल्या जगत मलाहीआ। गुरमुखां बन्ने साची धार, धर्म राए रिहा समझाईआ। सोलां करे तन शृंगार, शब्द चोली तन छुहाईआ। खिच्च ल्याए चरन द्वार, वारो वार सोए पूत रिहा जगाईआ। आत्म खिड़ी रहे गुलज़ार, सदा रहे बसंत बहार, फूलन बरखा हरि जी लाईआ। जोती जामा कर प्यार, आपे तारे नर नार, बिरध बाल जवाना रिहा समझाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा रिहा जगत समझाईआ। सच दरबार नौ दरवाजे। वसे विच ग़रीब निवाजे। आप आपणा साजण साजे। जोत जगाए देस माझे। हरि संत सुहेला गुरसिख मेला, अन्त रखाए मात लाजे। आपे गुर आपे चेला, ना कोई होए वक्त दुहेला, शब्द सरूपी मारे अवाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, चारों कुन्ट कराए भाजे। सच दरबार हरि बणाए। किरपा धारे जोत जगाए। सच सिँघासण इक्क सुहाए। गुरमुख साचे दासी दासन, आपे आप हो जाए। शब्द

७३८
०४

चलाए स्वास स्वासन, मानस देही रास कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ अठारां अठारां नौ लेखा अन्त मुकाए। सच दरबारा नौ दुआरे। खोल्हे भेत आप निरँकारे। हिस्से करे वारो वारे। किसे ना दिसे परवरदिगारे। झूठी चक्की कलिजुग जीव पिसे, अन्तिम होए दो फाड़े। गुरमुखां प्रभ आया हिस्से, वंड कराए सतारां हाढ़े। मिटणा भेव बीस इकीसे, बेमुखां दिन आए माढ़े। माण गंवाए ईसा मूसे, शब्द लगाए मगर धाड़े। इक्क चलाए शब्द हदीसे, कुरान अञ्जीलां लहन्दी दिशा साड़े। शब्द तीर चले प्रभ अबिनाशी तेरे सच महल्ले, नौजवान शब्द वज्जे काड़ काड़े। गुरमुख साचा छत्र छाया हेठ पले, बणाए सच दुआरे, आप बणाए साचे लाड़े। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, छब्बी पोह साधां संतां, आत्म जोती लाए आग बहत्तर नाड़े। सच दरबार शब्द लगाणा। प्रगट होया शाह सुल्ताना। जोत सरूपी वाली दो जहानां। वड वड शाहो भूपी, रूप रेख ना कोई वखाणा। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, कोई ना जाणे सच निशाना। सच सिँघासण हरि बिराजे, जोत सरूपी देस माझे, गुरमुखां हथ्थीं बन्न्हे गाना। आप आपणा साजन साजा। पुरख अबिनाशी ग़रीब निवाजा। आत्म जोती कर प्रकाश, हिरदे रक्खे वास, नूरी जामा कोटन भाना, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मन्दिर जगी जोत अन्दरे अन्दर, ना कोई जाणे गोरख मच्छन्दर, अञ्जील कुरानी खाणी बाणी, वेद पुरानी ना किसे पछाणा। खाणी बाणी गई हार। अन्तिम कलि ना सुणे कोई पुकार। प्रभ का भाणा ना जाए टल, चल्ले अपर अपार। निहकलंकी वल छल, जोती जामा भेख न्यार। वसे जल थल बेमुख जीव भुले रुले, माया जगत गंवार। जन भगतां सच दुआरा खुल्हे, नौ दरवाजे सच दरबार। कोए ना लाए हरि जी मुल्ले, देवे शब्द नाम अपार। गुरमुख विरला पूरे तोल तुले, प्रभ सोहँ डण्डे देवे शब्द इक्क हुलार। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंडे, सत्तां दीपां करे विचार। आप चलाए चण्ड प्रचण्डे, शब्द रक्खे तिखी धार। चार कुन्टां नार रंडे, तुट्टे नाता कन्त भतार। गुरमुख चढ़ाए साचे डण्डे, लोकमात मार झात, प्रभ अबिनाशी किरपा धार ना कोई पूजे करीर जंडे। खाणी बाणी कुरान अञ्जीली गई हार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। चोली काली हरि तन छुहाए, सूही पीली लाल काली नीली करे भेस जगत अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचे दर देवे वर, गुरमुखां वखाए इक्क सच्चा घर बाहर। इक्क घर बाहरा हरि निरँकारा। जोती जगे अगम्म अपारा। गुरमुख साचे माणक मोती, आप बहाए चरन दुआरा। दुरमति मैल प्रभ साचे धोती, शब्द रंग इक्क अपारा। आप उठाए काया सोती, शब्द खण्डा मार दो धारा। नूर नुरानी एका जोती, मिटे अन्ध अन्धयारा। लक्ख चुरासी रही रोती, हथ्थ ना आवे हरि गिरधारा। गुरमुख साचे संत

७३६
०४

जनां प्रभ अबिनाशी मेल मिलाया, लोकमात दया कमाया, आप आपणी सरन बहाया, सिँघ सिँघासण डेरा लाया, दसवें घर सच दुआरा। दसवां घर हरि निरंकारया। ना जन्मे ना जाए मर, उच्च अटल्ल वसे सच मुनारया। गुरमुख साचा जाए बलि बलि, देवे दरस मिटाए हरस, जिस जन अगम्म अपारया। लोकमात कर आया तरस, धरत मात सुण पुकारया। अमृत मेघ प्रभ रिहा बरस, गुरमुखां काया करे ठंडी ठारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, नौवें दर बाहर रखा लया। नौवें दर वसे बाहर। कदे गुप्त कदे ज़ाहर। सति सरूपी एका कार। बिन रंग रूपी जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलि जामा पाया, शब्द सिँघासण डेरा लाया, लक्ख चुरासी रिहा कर्म विचार। पहला दर हरि खुल्हाए। लोकमात दे हिस्से आए। पंजे चोर आयण नस्से, साचे राह फिरन हलकाए। प्रभ अबिनाशी मूल ना दिसे, ना कोई कटाए जम की फाहे। जोती जोत सरूप हरि, घर मन्दिर साचे अन्दर, पंजां एका धाम सुहाए। दूजा दर वेख विचार। मति बुध खड़ी रहे मंगे दर हरि करतार। शब्द डण्डी हथ्थ विच फड़ी रहे, मन चंचल रिहा हउमे मार। ना कोई सेर ना कोई धड़ी रहे, एका शब्द अटल अपार। काया मन्दिर अन्दर खड़ी रहे, जोती मिले नर हरि करतार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सार। तीजे दर मनाई बुध। मंगण आई नव निध। लोकमात कर कारज सिद्ध। चरन भिखारी हरि द्वारी एका दर साची रिद्ध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात कर कर कारज आपणे सिद्ध। चौथा दर हरि विचारया। धरे जोत इक्क निरंकारया। साधां संतां करे ख़बरदारया। प्रगट होए आदिन अन्ता, आओ चल सच महल्ल निहकलंक कलि जामा धारया। करे खेल घड़ी घड़ी पल पल, बेमुखां माया पर्दे पा रिहा। एक धाम उपजाए जगत अटल्ल, चौथे घर डेरा ला रिहा। करे खेल अज्ज कल्ल, सोए पुत्त आप जगा रिहा। लक्ख चुरासी वेखे लग्गे जूठे झूठे फल, सोहँ शब्द डण्डे नाल झड़ा रिहा। ना कोई करे वल छल, जोती जामा हरि प्रबल, साचा लेखा लिख्त भविख्त आप लिखा रिहा। दीपक जोती जाए बल, एक मारे नाम उछल, बेमुख जीव ना सकण झल्ल, रूप रंग जगत अपारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, चौथे दर सच दुआरे, साधां संतां माण दवा रिहा। पंचम् दर हरि सुहाया। शब्द सरूपी कुण्डा लाहया। ना कोई वेखे छैल छबीला, एका प्रभ जी साचा हीला, करे खेल हरि रघुराया। जोती नूर लाए तीला, लक्ख चुरासी विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, चल के आए साचे घर, पंचम् बोले शब्द जणाया। पंचम् बोले शब्द सुभागा। इक्क सुणाए साचा रागा। गुर पीर औलीआ साध संत शेख़ पीर दस्तगीर शाह हकीर, आप उठाए सोया जागा। अमृत

रक्खे साचा नीर, गुरमुखां मुख चुआए मिटाए तृष्ना आगा। जोती जोत सरूप हरि, पंचम् बैठ देवे वर, चरन दुआरे साचा सर, साधां संतां हरि धोवे दागा। पंचम् घर हरि बनवारी पवण रक्खे कर प्यारी। स्वासी देवे जीआं अधारी। निरगुण रूप अपर अपारी। सरगुण उतरे पार प्रभ किरपा धारी। दित्ता पवण उधार, चले स्वास वारो वारी। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच महल्ले, इक्क इक्कले शब्द अटारी। छेवें घर हरि भगवाना। साचा देवे शब्द ज्ञाना। गुरमुखां मारे आत्म तीर, वड बली बलवाना। बज़र कपाटी देवे चीर, आत्म जोती जगे महाना। किसे हथ्थ ना आए पीर फकीर, औलीए गौंस रहे मस्ताना। छेवें घर शब्द सरूपी ना कोई दिसे रंग लकीर, एका वजे शब्द तराना। ना कोई सारंग ना कोई सुर, शब्द चले लिख्या धुर, अनहद शब्द सच्ची धुनकाना। गुर चरन प्रीती आए जुड़, आप चढ़ाए शब्द घोड़, सच वखाणे इक्क टिकाणा। धुर दरगाहों आया दौड़, चिट्टे अस्व चुक्के पौड़, आपे भन्ने मिट्ठे कौड़, उम्मत नबी रसूल दी हथ्थ बन्ने गाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, एक मारे शब्द निशाना। छेवें घर शब्द तीर। लक्ख चुरासी रिहा चीर। प्रभ अबिनाशी आप चलाए वड जोधा सूरबीर। लोकमात ना कोई उठाए, माया भुल्ले पीर फ़कीर। गुरमुखां साचे संत जनां, आत्म बन्नण साचे बन्ने, विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छेवें घर शब्द धारी, गुरूआं पीरां रिहा
७४१ पैज संवारी, बन्ने जगत बीड़। सतवें घर हरि निरँकार है। चारों कुन्ट खुल्हे दर द्वार है। चिट्टा अस्व खड़ा रहे अट्ठे पहर ७४१
०४ त्यार है। ऐराप्त हाथी सगला साथी हरि रघुनाथी, हरि दुआरे करे तन शृंगार है। लछमी चरन झस्से, खिड़ खिड़ हस्से, ०४
लक्ख चुरासी राह साचा दस्से, प्रभ अबिनाशी साचा चरन प्यार है। पारजात मिटाए अन्धेरी राते, शब्द सुगात साचा फल खवाए, दया कमाए आदि अन्त ना जाए विनास है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा हरि भगवाना, सतवें घर प्रकाश है। ना जन्मे ना जाए मर, न होए कदे उदास्सया। मातलोक ना जाए डर, ना फसे किसे फास्सया। एका जोत नूर उजाला, लक्ख चुरासी करे दास्सया। साचा रंग गुर गोपाला, धरत मात जोत प्रगटाए पुरख अबिनाशया। गुरमुखां देवे साचा वर, सतवें घर बैठा वड़, कोए ना अग्गे जाए अड़, छेवें शब्द रिहा लड़, पंजवें कुण्डा आपे मारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धर, साचे मन्दिर देवे वर, सतवें घर आए वड़, सिँघ सिँघासण साचा आप सुहा रिहा। साचे दर हरि जी आया। सत्तवें घर भाग लगाया। गुरमुखां आत्म जाग जगाया। एका साचा राग सुणाया। आप आपणे हथ्थ पकड़ी वाग, चारों कुन्ट लए फिराया। हरिजन मेला कन्त सुहाग, ना मरे ना किसे जाया। जोत निराली ना कोई दिसे अन्दर बाहर दाग, उज्जल कर ना किसे धवाया। गुरमुख बणाए हँस काग, सच दुआरे लाए भाग, छब्बी

पोह दिवस सुहाया। पुरख अबिनाशी गया जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साच कर्म गुरमुखां वेख मानस देही झूठा चरम, आपणी हथ्थीं आप धवाया। दुरमति मैल धवाए, अन्दर वड़ हरि सुहाए, काया महल्ल मुनारे परे हटाए, पंचां धाड़ हरि। एका आपणी रक्ख सरनाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, दर घर साचे देवे वाड़ हरि। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दसवें घर दिसे हरि, ना जन्मे ना जाए मर, गुरमुखां पार उतार हरि। अठवें दर उठ उठ वेखे। लक्ख चुरासी तेरे भरम भुलेखे। मेट मिटाए लोकमात रेखे। आपे परखे साची सिक्खी, सोहँ धार रक्खे तिक्खी, पहली वार लिखे लेखे, ना कोई जाणे मुनी रिखी। दर दर भौंदे नाम ना पाए मस्तक लेख, वड पुरख अबिनाशी घट घट वासी एका एक लिखी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् वर देवे साची सिक्खी। नावां दर नौजवान है। गुरमुख विरला जित्ते, वड बली बलवान है। मोह तुटे हस्से, नावें दर वड वड शैतान है। लग्गे भाग काया कुले, आत्म जोती पुरख अबिनाशी, एका जाण मात पिते, सो जन पुरख सुजान है। धारे भेख नित नवित्ता, जाण प्रभ दी आण है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां किरपा रिहा कर, नावें दर कर पछाण है। नावां दर वेख विचारो। मानस जन्म ना मात हारो। लक्ख चुरासी झूठा गेड़ा, चुक्के मेरो तेरो। हरि नर साचा बन्ने बीड़ा, आत्म ढाहो भरमां डेरा। आप वसाए काया नगर, देवे शब्द साचा गेड़ा। आपे गुर आपे चेरा, अन्तिम करे हक्क नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर आपणीआं मेहरां। नावें दर सृष्ट हलकाई है। लक्ख चुरासी रही मर, ना सके कोई छुडाई है। गुरमुख साचा जाए तर, हरि साची सरन रखाई है। चरन दुआरे जाए पढ़, भरम भुलेखा दूर कराई है। आत्म दर प्रभ साचा खड़, आदि अन्त होए सहाई है। अट्ठे पहर दिवस रैण, पंजां तत्तां नाल रिहा लड़, साची बणत रिहा बणाई है। अन्दर बैठा हरि जी वेखे, हथ्थकड़ी इक्क रखाई है। डूंघी कन्दर काया मन्दिर कोई ना दीसे साची धाड़ मगर लगाई है। वेख वखाणे बहत्तर हाडी हाडी नाड़ नाड़, साची बणत जिस बणाई है। कलिजुग जीवां भाग माढ़, हउमे तृष्ना जगत वधाई है। गुरमुख साचे साचे पौड़े जाणा चढ़, दर घर साचे जाणा वड़, नौ दुआरे हरि गिरधारे गुरमुखां बन्द कराईआ। भेव खुल्लाए सतारां हाढ़े, गुरमुख बणाए साचे लाड़े, सोहणी सेजा हरि विछाईआ। काया चोली झूठी पाड़े, आत्म जोती मेल मिलाईआ। करे खेल दिन दिहाड़े, पर्दा उहला ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दस्म दुआरा सच घर बाहरा, सिँघ सिँघासण साचे मन्दिर, एका एक विछाईआ। साची सेजा हरि ध्यान, गुरमुखां रिहा बणत बणाईआ। दर घर साचे आपे जाए, सोए सिख रिहा उठाईआ। एका देवे साचा वर, आत्म जोत रिहा जगाईआ। दरस दिखाए नर हरि, भेख

अवल्लड़ा इक्क इकल्ला, वेखे गुरमुखां थाउँ थाँईंआ। आप फड़ाए आपणा पलड़ा, सद रक्खे ठंडी छाए, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मन्दिर गुरद्वार, हरि निरँकार, चार वरनां इक्क प्यार साची मति रिहा समझाईआ। हरि दरबार सच विचारा। चार वरनां इक्क प्यारा। सतिजुग तेरी साची धारा। ऊँच नीच हरि भेव निवारा। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान, आयण चल दुआरा। मेट मिटाए बेईमान वड शैतान, जगत जहान कराए पार किनारा। अट्ठे पहर इक्क उडान, वेख वखाणे सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि दए वर, गुरमुखां खोल्हे दस्म दुआरा। सच दुआरा खोल्हे भूप एका एक सति सरूप। होए प्रकाश काया मन्दिर अन्ध कूप। आदि अन्त ना जाए विनास ना कोई रंग ना कोई रूप। एका एक पुरख अबिनाश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा पार किनारा अन्तिम वारा, एका वार करांयदा। जोती जगे अगम्म अपारा, नूरी नूर इक्क रखांयदा। पवण घोड़े हरि अस्वारा, चारों कुन्ट आप दुड़ांयदा। गुरमुखां करे हरि प्यारा, चार वरनां इक्क प्यारा, सच दुआरा चार वरनां इक्क रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि भुल्ले जगत निधान है। राजे राणे विच जहान है। शाह सुल्तान होए हैरान है। जोती जगे इक्क भगवाने, आप उठाए वड बली बलवान है। जन भगतां देवे आत्म दाने, शब्द मारे तीर निशान है। हथ्थी बन्न्हे शब्द गाने, हथ्थ फड़ाए तीर कमान है। झुलदे रहण मात निशाने, जगत जगदीशे कलिजुग तेरी अन्तिम वार है। नौवां खण्डां खेल महाने, विच ब्रह्मण्डां जोत भगवाने, गुणवन्ती गुण निधान है। साचा रंग शब्द बसंती, आप चढ़ाए इक्क इकन्ती, भारत खण्ड पाई वंड, किरपा कर हरी हरि दान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा खेल मात रचाया, धरत मात बख्शे दात, कलिजुग रैण अन्धेरी रात, सच दुआरा भगत घर बाहरा, प्रभ अबिनाशी चरन छुहाया, सच तख्त सुल्तान शब्द निशान है। प्रगट होए वाली दो जहान, वड शाहो शाह शहान है। लोआं पुरीआं मार ध्यान, नौवां खण्डां हरि वेख वखाण है। पुरख अबिनाशी एका साचा वर, लक्ख चुरासी विखाए बली बलवान है। निहकलंक लए अवतार, साचे तख्त बिराजे देस माझे, फड़े शब्द तीर निशान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता बेपछाण है। हरि भगवन्ता हरि भगवन्त, हरि भगवन्त ना कोई पछाणदा। कलिजुग भुल्ले जीव जन्त, आत्म वज्जा तीर अन्ध अज्ञान दा। अट्ठे पहर रहे पीड़, भुल्लया राह पुरख सुजान दा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, धारे भेख श्री भगवान दा। सच सिँघासण डेरा लाए। शब्द स्वासण इक्क चलाए। मात पताल अकाश अकाशण, साची जोत हरि जगाए। गुरमुखां रक्खे निज घर आत्म वासण, बंधन धर्म राए हरि आप कराए। जोती जामा दासी दासन,

शब्द बंधन बंध बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण आसण लाए। सच सिँघासण हरि अस्थूल। ना कोई पावा ना कोई चूल। ना कोई चुकाए मात मूल। शब्द सिँघासण हरि जी बैठा, चारे कुन्टां रिहा झूल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचा मेल मिलाए, हरि कन्त साचा कन्त कन्तूहल। कन्त कन्तूहल हरि बनवारया। लक्ख चुरासी गई भूल, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। काया टाहणी किसे ना दिसे नाम साचा फूल, ना देवे अमृत कोई सच्ची बाणीआं। एका धाम हरि अस्थूल, लेखा मंगे ना धर्म राए सच्चा बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जगाए, आप आपणी सरन लगाए, जुगां जुगां दे विछड़े मेल मिलाए साचे हाणीआं। सतिजुग त्रेता आप विचार। आपे पिता आपे माता, आपे मां पिओ बेटा, आपे होए सुलक्खणी नार। आपे खेवट आपे खेटा, गुरमुखां बेड़ा पार कराए, कलिजुग डुब्बणा विच मँझधार। दरस दिखाए तीजे नैण, गुरमुख रसना सके ना कहण, घर घर रोवे नारी नार, लाड़ी मौत खाए डैण, नाता तुट्टे भाई भैण, गुरमुखां बणे साचा सज्जण सैण, आप चुकाए लहिण देण, देवे वस्त नाम अपारया। गुर संगत रल मिल सारे बहिण, लोकमात मार झात पुरख बिधात, साची दसे धारया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, अमृत देवे बूंद स्वांत, खोल्हे बज़र कपाट आपे
७४४ पाड़या। तन वखाए साचा हाट, जगे जोत इक्क लिलाट, जोती नूरा हाज़र हज़ूरा, साचा संग वखा रिहा। सर्ब गुणां ७४४
०४ आपे भरपूरा, शब्द मोहणी अनहद तूरा, साचा राग आप उपजा रिहा। गुरमुखां आत्म बख़्शे सति सरूरा, साचा झूला आप ०४
झुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा मेल मिला रिहा। मेल मिलाए हरि भगवाना। शब्दी बन्न्हे हथ्थीं गाना। सोहँ चले तीर निशाना। आप उडाए विच बिबाणा। रसना खिच्चे इक्क कमाना। कान्हा कृष्णा ब्रह्मा विष्ना शिव शंकर लाए बैठ ध्याना। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा हरि जगदीशा एका मंगे नाम निधाना। प्रभ भेव खुल्हाए बीस इकीस एका छत्र झुलाए सीसा, प्रगट होया लोकमात वाली दो जहानां। दो जहानां वाली जोत निरालीआ। चली चाल निराली, खेल अकालीआ। लक्ख चुरासी तेरा हाली, गुरमुख करन आया रखवाली, साची बणत बणा रिहा। ना कोई मंगे विच दलाली, एका शब्द हक्क जलाली, शब्द सुनेहड़ा हरि सुणा रिहा। साचा फल साची डाली, काया मण्डल साची थाली, दीपक जोती विच टिका रिहा। आपे वेखे गगन पताली, मात पताल अकाश वास हरि रखा रिहा। आदि अन्त ना जाए विनास, गुरमुखां दासन दास, आप अखवा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण सच्चा समा रिहा। सच सिँघासण डेरा लाया। गुरमुखां घेरा साचा पाया। आप चुकाए मेरा तेरा हेरा फेरा, चन्द नौ चन्दी सच चढ़ाया। आपे

कटे फंद फंदी, धर्म राए ना फंद कटाया। इक्क उपजाए परमानंदी, प्रभ अबिनाशी सद बख्शिंदी, आत्म साचा जाम प्याया। कलिजुग जीवां आत्म गन्दी, जूठे झूठे माया लूठे लग्गे झूठे धन्दी, माया मोह हँकार वधाया। बेमुख जीवां आत्म होई अन्धी, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। अट्ठे पहर रसना गन्दी, मदिरा मास मुख लगाया। हरि ना ध्याया बत्ती दन्दी, मानस देही जिस जन्म दवाया। गुरमुख साचे संत जनां प्रभ अबिनाशी जाए रंदी, सोहँ रंदा हथ्थ रखाया। आप मिटाए मायाधारी दूई द्वैती कंधी, शब्द धक्का एका लाया। बेमुख जीव आपे पाए धर्म राए दी फंदी, ना सके कोई छुडाया। निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, आप आपणी सरन रखाया। आए साची सरन, सरन सरनाईआ। चुकाए मरन डरन, साचा मेल मिलाईआ। खोले हरन फरन, नेत्र नैण लोचण तिन्ने इक्क कराईआ। बेमुख डूंघे डुब्बे वहिण, ना फड़े कोई बाहींआ। गुरमुख साचे साचा लाहा, हरि दर लैणा, तख्त बिराजे देस माझे, साची जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी साजण साजे, वेख वखाणे राजे राणे, लिख लिख लेख हरि घलाईआ। चारों कुन्ट पैणी भाजे, रूसा चीना दए दुहाईआ। उठे शाह फरंगी, अन्तिम होए कंड नंगी, अग्गा पिच्छा दिस ना आईआ। प्रभ खण्डा रिहा हुलार, सिँघ सिँघासण कर त्यार, छब्बी पोह दिवस विचार, राउ उमराउ शाह सुल्तान दए हिलाईआ। धरत मात रही पुकार, निहकलंक किरपा धार, कलिजुग जीवां
७४५ ०४ हो हो नीवां, काली शाही लाईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्तिम आवे सीआं, मनजीत सिँघ तेरी बणत बणाईआ। महाराज शेर ७४५ ०४
सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा संत, चरन दुआरे लए बहाईआ। संत जगाए दया कमाए, उठ उठ आए दर साचे भागे। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, वज्जी वधाई देस माझे। कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त करन आया कुड़माई, लाड़ी मौत नाल वजाए वाजे। धर्म राए दए दुहाई, प्रभ अबिनाशी मेरा दर खुलाईं, अठाई कुण्डां पर्दे काजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत जगाई, पुरीआं लोआं धार बंधाई, आप आपणा साजण साजे। सच दुआरे बणत बणाईआ। सच गिरधारे खेल रचाईआ। विच संसारे मिले वड्याईआ। निहकलंकी जोत जगाईआ। शब्द डंकी रिहा वजाईआ। राउ रंकां रिहा उठाईआ। वाली हिन्द शब्द जणाईआ। प्रगट होया वड मृगिन्द, माझे देस जोत सवाईआ। लक्ख चुरासी करे निन्द, बेमुखां सार ना पाईआ। गुरमुख साचे साची बिन्द, प्रभ आपणी आप उपजाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे आत्म सागर सिंध, साचा नीर रिहा वहाईआ। वाली हिन्द वड बलकार। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, अन्तिम वेला हो त्यार। साचा शब्द नाल ल्याया, सोहँ रक्खी तिक्खी धार। सतिजुग साचे पल्ला फड़ाया, मगरे आए वारो वार। कलिजुग पापी दए दुहाया, पुरख अबिनाशी किरपा धार। ना कोई पिता ना कोई माया, अन्तिम वेले ना होए कोई सहार।

हँकार विकारी झूठी छाया, अन्तिम होवे शार। निहकलंक जामा पाया, खिच्ची शब्द हथ्थ कटार। द्वार बंक इक्क सुहाया, जगत जगदीशे हरि निरँकार। जोती तनक इक्क लगाया, गुरमुखां आत्म दए हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या धुर, साचा जोड़ गया जुड़, आपणा काज आप रचाया। माझे देस काज रचांयदा। जोत सरूपी धर धर भेस, राजा राणा आप जगांयदा। लिख लिख साचे लेख, वाली हिन्द दे मति आप समझांयदा। अन्तिम कलि नेत्र लैणा पेख, साचा भाणा हरि वरतांयदा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, दस्तगीर ना कोए छुडांयदा। कलिजुग तेरी जूठी झूठी लग्गी मेख, प्रभ अबिनाशी आपणी हथ्थीं आप मिटांयदा। सतिजुग दूर दुराडा रिहा वेख, कवण सवेला वक्त सुहेला, प्रभ अबिनाशी साचा हुक्म सुणांयदा। गुरमुखां होवे मात मेला, बेमुखां अन्त खपांयदा। धर्म राए दी कटे जेल्हा, सोहँ जो जन रसना गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, साचा राणा साचा भाणा, आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि भाणा हरि सरकार है। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा जीव जन्त सर्ब गंवार है। माया भुला राजा राणा, आत्म वध्या इक्क हँकार है। मायाधारी बेमुहाणा, भुल्लया हरि करतार है। दर दर घर घर फिरे गऊ ग़रीब निमाणा, ना सुणे कोई पुकार है। झूठा चल्ले खेल जहानां, माया राणी वणज वपार है। भेखा धारी झूठा बाणा, दर दर घर घर फिरदे ठग चोर यार है। एका हरि सुघड़ स्याणा, शब्द दस्से साची धार है। धुरदरगाही इक्क बिबाणा। गुरमुख ना जाए मढ़ी मसाणा, आप बहाए चरन द्वार है। हरिजन मन्ने साचा भाणा, दरगहि साची देवे माणा, लक्ख चुरासी उतरे पार है। आत्म जोती मेल मिलाना, पवणी शब्दी इक्क टिकाणा, आवण जाण गेड़ निवार है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सिँघासण डेरा लाए नौ दर दरवाजे, आप आपणा साजन साजे, गुरमुखां रक्खे लाजे देस माझे, दसवें घर आसण लाए। दसवां घर सच टिकाणा। एका जोती हरि भगवाना। दुरमति मैल जाए धोती, होए प्रकाश कोटन भाणा। काया नाड़ी रहे ना सोती, वजे तीर बेमुहाणा। उच्च महल्ल अटल्ल अस्थूल, जोती नूर सति सरूर, गुरमुखां मिले मात निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच दरबारा विच मात उसारा, गुरमुखां चुकाए अगला पिछला मूल। दर मन्दिर हरि सुहाया, जोत जगाईआ। दर मन्दिर हरि सुहाया, वरन गोत इक्क रखाईआ। दर मन्दिर हरि सुहाया, गुरमुखां देवे मात वड्डयाईआ। हरि मन्दिर आप सुहाया, हरिजन साचा मेला पारब्रह्म सच सरनाईआ। हरि मन्दिर आप सुहाया, काया फल लगाए अमृत साचा केला, निझर धार अमृत सीर रिहा मुख चुआईआ। हरि मन्दिर आप सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, छब्बी पोह खुशी मनाईआ, छब्बी पोह खेल न्यारी। काया तजी झूठी देह, तुटा नाता मात संसारी। बेमुखां सिर पाए खेह, अलख अगोचर अगम्म अपारी। गुरमुखां अमृत आत्म

बरखे मींह, काया करे ठंडी ठारी। बेमुखां जगत नाता झूठा मोह, अन्तिम पासा आया हारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण जोत करे उज्यारी। हरि मन्दिर हरि सुहाए, साचा शब्द जणाईआ। हरि मन्दिर आप सुहाए, हरिजन साची बणत बणाईआ। हरि मन्दिर आप सुहाए, पत पतवन्ता साचा कन्ता पूरन भगवन्ता, रंग मजीठी रिहा चढ़ाईआ। रूपा अनूपा हरि संता, लेखा लेख भविख्त आपणा आप लिखाईआ। बेमुखां माया पाए बेअन्ता, अन्ध अन्धेर जगत रखाईआ। गुरमुखां दे वड्याई विच जीव जन्ता, पूरन बूझ बुझाईआ। वेद पुरानां हथ्थ ना आए पंडता, पांधे पढ़दे कांसी आत्म सर्ब रही कुरलाईआ। ग्रन्थी पन्थी आत्म हँगता, हउमे रोग रहे वधाईआ। गुरमुखां मिले मेल साची संगता, हरि रक्खे आप सरनाईआ। गुरमुख साचा दर घर साचे एका बणे मंगत, देवे वस्त हरि रघुराईआ। महिंमा जगत अगणत, ना सके कोई गिणाईआ। एका जोती आदिन अन्त, भेखाधारी वड संसारी, लोकमात आपणी रचन रचाईआ। गुरमुख उठाए वारो वारी, आप बणाए सच दुलारी, मात पित अखवाईआ। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी, आत्म होई सर्ब हँकारी, ना होवे कोई सहाईआ। दर दर घर घर चली विकारी, कलिजुग अन्तिम होई ख्वारी, धरत मात रही कुरलाईआ। लाड़ी मौत अजे कुँवारी, लक्ख चुरासी विच्चों ना किसे प्रनाईआ। धर्म राए दर दए बहारी, साचा कुण्डा आपे लाहीआ। आपे मेटे
७४७ ०४ चार यारी, संग मुहम्मद सुत्ता पैर पसारी, ईसा मूसा आई हारी, निहकलंक जगी जोत करे खेल हरि निरँकारी, महाराज ७४७ ०४
शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां साचा मेल मिलाईआ। संगत आई चल्ल द्वार, चरन निमस्कारया। पुरख अबिनाशी पाए सार, देवे नाम अधारया। सोहँ शब्द अपर अपार, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। प्रभ कराए काया तन शृंगार, गुरमुख मंगण आए चल द्वार, गुरमुख साचे तन पाए फूलनहार, गल आपणे विच लटका रिहा। सच कराए वणज वपार, नाम सिहरा इक्क विका रिहा। मानस देही पैज संवार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे सद समा रिहा। मंगण आए मंग, वस्त अनमोल है। प्रभ अबिनाशी चाढ़े रंग, गुर संगत तोले पूरा तोल है। मानस देही ना होए भंग, प्रभ पर्दे रिहा खोल्ह है। सद सहाई अंग संग, वसे काया चोल है। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, गुरमुखां पूरी करे मंग, लक्ख चुरासी हिरदे रिहा फोल है। शब्द वजाए इक्क मृदंग, राजे राणे होए नंग, मिले माण ना उप्पर धवल है। माया डोरी चढ़ी पतंग, अन्तिम वेले डूंघी गंग, ना सके कोई खल्हार है। गुरमुखां कटे भुक्ख नंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छब्बी पोह दिवस विचारे। चरन प्यार हरि गिरधारया। दूजा दर वेख विचार, वसे साचा नर निरंकारया। तीजे नेत्र सद तिक्खी धार, वज्जे आत्म नाम कटारया। चौथे दर साचा हरि, जन भगतां रिहा पैज संवार, पंजवें ना

जाए एका धाम सुहा रिहा। छेवां छे घर आपे वसे, हरि शब्द भण्डार इक्क वखा रिहा। सतवें जोती नूर अपार, नूरो नूर उपजा रिहा। अठवें अट्ठे काया तत, मानस देही मात उपजा रिहा। बेमुखां खोले दस नवें, दसवां साचे घोड़े आप चढ़ा रिहा। दोवें हथ्थीं वाग लए फड़, धुरदरगाही साचा माही एका राह वखा रिहा। ना कोई अग्गे सके अड़, धर्म राए दर खुल्ला रिहा। गुरमुख साचा गुर चरन लए फड़, साचे पौड़े आप चढ़ा रिहा। दर घर साचे जाए वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, साची जोत डगमगा रिहा। ना कोई वरन ना कोई गोती, एका आपणा आप सुहा रिहा। चन्द सूरज अवतार तारे, आपणे चरनां हेठ लटका रिहा। उत्ते सुत्ता पैर पसार, सत्तवें घर माल अयारे, चारों दिशा ना कोई वखा रिहा। बैठा रिहा सदा विचकारे, जोती जामा भेव न्यारे, लोकमात आवे जावे वारो वारया। कलिजुग तेरी पावे सार, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण साची सेजा, आपणी हथ्थीं आप विछा रिहा। हथ्थ उठाए सोहँ तिक्खा नेजा, वड ज़रवाणे पकड़ हिला रिहा। गुरमुख हंढाए आत्म प्रभ अबिनाशी तेरी सेजा, कलि साचा कर्म कमा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत चाढ़े रंगत, पूरी इच्छया पाई भिच्छया, आत्म झोली आप भरा रिहा। आत्म झोली भरे भण्डार, बेमुख जीव मारे बोली, गुरमुख साचा रिहा सहार। प्रभ अबिनाशी पूरे तोल रिहा तोली, शब्द खण्डा हथ्थ अपार। लोकमात दी साची
७४८ ०४ डोली, सोहँ शब्द अपर अपार। आप बणाए दर घर साचे दी साची गोली, इक्क कराए चरन प्यार। मंगण आए अग्गे ७४८ ०४
डाहे झोली, मिले वस्त इक्क प्यार। प्रभ अबिनाशी आत्म पर्दे रिहा खोली, आपे जाणे गुण अवगुण नर हरि सच्ची सरकार। गुरमुखां काया भोली भाली, साचा करे तन शृंगार। रंग रंगे काया चोली, उत्तर ना जाए दूजी वार। बज़र कपाटी रिहा खोली, आप आपणी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आई मंगत, भिच्छया पाए नाम अपार। निहचल धाम अटल अस्थूल है। निहचल धाम अटल, एका दिसे कन्त कन्तूहल है। निहचल धाम अटल, साचा घोड़ा शब्द सिँघासण रिहा झूल है। निहचल धाम अटल, नाम रंगण तन पाए चूड़ा, नाम शृंगारा सच्चा फूल है। निहचल धाम अटल, एका रंग चढ़ाए गूढ़ा, ना उतरे मात मूल है। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त अन्त आदि है। निहचल धाम अटल, इकल्ला सिरजणहारया। निहचल धाम अटल, शब्द पसारया। निहचल धाम अटल, मेल मिला रिहा। निहचल धाम अटल, त्रैलोकी बाहर रखा रिहा। निहचल धाम अटल, शब्द पसारया। साचा धाम अटल, साचा नाउँ शब्द सलोकी आदि अन्त वारो वार मात घला रिहा। निहचल धाम अटल जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम आप सुहा रिहा। निहचल धाम अटल, हरि सुहञ्जणा। निहचल धाम अटल, जोत निरँजणा। निहचल धाम

अटल, दर्द दुःख भय भंजना। निहचल धाम अटल, मीत मुरार साचे सज्जणा। निहचल धाम अटल, पुरख अबिनाशी लोकमात साचा पर्दा कज्जणा। निहचल धाम अटल, एका जोत सच्ची प्रकाशी, शब्द ताल दूजा वजणा। निहचल धाम अटल, हरि दिसे शाहो शाबाशी, हरि एका एक सच महल्लना। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, सच द्वार गुरमुख विरले मात मल्लणा। निहचल धाम अटल, दूरन दूरया। निहचल धाम अटल, शब्द सरूरया। निहचल धाम अटल, एका नाद अनाहद तूरया। निहचल धाम अटल, प्रभ अबिनाशी माधव माध, सर्ब गुण भरपूरया। निहचल धाम अटल, गुरमुख विरला लए लाध, दरस दिखाए हाजर हजूरया। निहचल धाम अटल, जन भगतां देवे साची दाद, आसा मनसा हरि जी पूरया। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका एक सति सरूरया। निहचल धाम अटल, गहर गंभीरया। निहचल धाम अटल, एका रक्खे अमृत साचा नीरया। निहचल धाम अटल, नाम अधारा हरिभगत प्यारा, देवे साचा सीरया। निहचल धाम अटल, राह दिसे अग्गे भीड़या। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्ने आपणी बीड़या। निहचल धाम अटल, जोत निशान है। निहचल धाम अटल, शब्द बिबाण है। निहचल धाम

७४६ अचल अटल, किला कोट ना कोई मकान है। निहचल धाम अटल, तेज कोटन कोट भान है। निहचल धाम अटल, अमृत ७४६

०४ सरोवर इक्क इशनान है। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, एका एक वसे भगवान है। निहचल धाम अटल, ०४

इक्क भगवानया। निहचल धाम अटल, लोकमात ना किसे पछाणया। निहचल धाम अटल, ना होए अन्धेरी रात, जोती जगे बेमुहानया। निहचल धाम अटल, शब्द रक्खे सच सुगात, गुरमुखां झोली आप भरानया। निहचल धाम अटल, त्रैलोकी परखे जात पात, एका रंग हरि रंगानया। निहचल धाम अटल, अट्ठे पहर दिवस रात, बारां तीस वक्त सुहानया। निहचल धाम अटल, एका जोती शब्द सीस, पवण चवर हरि झुलानया। निहचल धाम अटल, जोती जामा हरि जगदीश, ना दिसे जीव जन्त मात निधानया। निहचल धाम अटल, ना जाणे राग छतीस, साचा राह ना किसे वखानया। निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, सद वसे बेपछाणया। निहचल धाम अटल, निर्मल उजागरा। निहचल धाम अटल, शब्द शब्द शब्द रक्खे सिंध सागरा। निहचल धाम अटल, वेख वखाणे लक्ख चुरासी काया गागरा। निहचल धाम अटल, एका एक आप वखाए शब्द जणाए, तट्ट ब्यास दयाल बाग आगरा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग भेख दए मिटाए, खिच्चे जोत जोत रती रत्नागरा। निहचल धाम अटल, सर्ब सहारया। निहचल धाम अटल, जीआं जन्तां साधां संतां होए आप सहारया। निहचल धाम अटल, पुरख अबिनाशी साचा कन्ता, आप बणाए साची बणता, नूरो नूर आप उपा रिहा। जोती जोत सरूप

हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर द्वार वखाए, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़ समझा रिहा। निहचल धाम अटल, सचखण्ड हरि प्रभ वास है। निहचल धाम अटल, लोकमात पाई वंड, भाग लग्गा विच प्रभास है। रंक राजानां देवे दंड, कलिजुग सुत्ते दे के कंड, काया लग्गी अन्धेरी आग है। फड़े शब्द सच्ची प्रचण्ड, लक्ख चुरासी भन्ने कच्चे अंड, किसे दर ना दिसे चराग है। जोती जोत सरूप हरि। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म धोए कलिजुग झूठा दाग है। निहचल धाम अटल, विच संसारया। गुरमुखां अमृत काया देवे सिंच, करे ठंडी ठारया। नाम अनूठा पुरख अबिनाशी साचा तूठा, कराए वणज सच्चा वणजारया। द्वापर त्रेता सतिजुग विछड़े रिहा रूठा, मिलाए मेल हरि कन्त भतारया। बेमुखां हथ्थ फड़ाए झूठा जूठा ठूठा, मंगण दर दर भिखारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे बंक दुआरे आप सुहा रिहा। सतवें घर हरि निरँकारा। करे खेल जोती मेल, अपर अपारा। सच सुहाए आपणा वेल, तिन्नां लोआं बन्ने धारा। एका एक इक्क इकेल, ना कोई दूजी नारा। एका आप आपणा सज्जण सुहेल, ना कोई जाणे जीव गंवारा। नूरी जोती साचा खेल, शब्द मोती हरि भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, रूप रंग ते वसे बाहरा। सत्तवें घर हरि निरँकार। जोत जगाए अपर अपार। शब्दी उठे पवणी धार। अवणी गवणी पाए सार। पुरीआं लोआं पार कराए भवणी, खण्डां ब्रह्मण्डां रिहा सर्ब विचार। जोती जोत सरूप हरि, घर साचे जोती कर अकार। साचे घर जोत उजीआरा। ना कोई अन्दर ना कोई मन्दिर, ना कोई दिसे धुंदूकारा। ना कोई काया ना कोई बंध, माया जाल ना दिसे फंद, एक रूप अपारा। ना कोई शतीर ना कोई कंध, शब्द अटल उच्च मुनारा। ना कोई सागर ना कोई गंग, अमृत बख्शे साची धारा। ना कोई रूप ना कोई रंग, आप आपणा रक्खे संग, दूजे दर ना लए मंग, साचे घर हरि पसारा। जोती जोत सरूप हरि, सत्तम दुआरे जोत अकारे, शब्द घोड़ा मंगे मंग इक्क अपार, पुरख अबिनाश किरपा धार। चिट्टे अस्व आसण सोलां कलीआं कर शृंगारा। संत मनी सिँघ सेवा लाई, पंचम् जेठ दिवस विचार। आपणी हथ्थीं तंग कसाईं, पहला पौड़ा इक्क उठाई, लोकमात दा राह वखाईं, आप आपणी किरपा धार। चिट्टा बाणा तन छुहाईं, गुरमुख साचे सेवा लाई, साचा करीं जगत विहार। आप आपणी बणत बणाईं, वेखीं थांउँ थाँईं पुरीआं लोआं बन्नी धार। गुरमुखां देवे ठंडीआं छाईं, लोकमात मार झात, सच सच्चे दरबार। जोती जोत सरूप हरि, सत्तवें घर उठ खलोता, चिट्टा बाणा तन छुहाया, होया ख़बरदार। सत्तवें घर कर त्यारी। प्रभ अबिनाशी करे लोकमात पहली वारी। चिट्टे घोड़े कर सवारी। मारे शब्द इक्क उडारी। चरन झस्से लच्छमी प्यारी। पुरख अबिनाशी साचा हस्से, चरन द्वारी कढ्ढे बाहरी। गुरमुखां दा राह तक्के, कलिजुग तेरी अन्तिम

वारी। चारों कुन्ट पैण धक्के, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे झाड़े बेमुखां फल काया पक्के। साचा चरन कढ्ढे बाहर। चिट्टा अस्व रिहा पुकार। प्रभ अबिनाशी हो अस्वार। शिवलोक इन्दलोक ब्रह्मलोक गुरमुख साचे रहे पुकार। इक्क सुणाए शब्द सलोक, धुरदरगाही वस्त अपार। ना कोई सके एहनूं रोक, शब्द खण्डा तीर कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आए सच सच्चे दरबार। साचा दर आप सुहाया। जोत सरूपी भेख वटाया। छेवें खड़ा राह वखाया। साचा शब्द नाल रलाया। तिन्नां पुरीआं माण दवाया। आप आपणा रंग चढ़ाया। साचा संग इक्क निभाया। आत्म साची गंग, हरि चरन छुहाया। गुरमुखां चाढ़े काया रंग, कटे भुक्ख नंग, साचा जामा निहकलंक नरायण नर, आप आपणा आपे उपाया। छेवें घर दर दरवाजे। शब्द सरूपी साजन साजे। लक्ख चुरासी मारे अवाजे, आपे बैठा हो अस्वार चिट्टे अस्व घोड़े ताजे। साचा करे इक्क शृंगार, जोती जामा भेख न्यार, चिट्टा बाणा साजन साजे। पवण वेखे ठंडी ठार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, लक्ख चुरासी स्वास अधार, ना कोई जाणे राजन राजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा साजन साजे। सत्तवां घर हरि सुहाया। साचा शब्द नाल रलाया। खण्ड ब्रह्मण्ड एका धार एका दर एका चोट रिहा लगाया। आदिन अन्ता जुगा जुगन्त हस्से कोटन कोट, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख धर, वरन गोती ना कोए रखाया। छेवें घर खुशी मनाईआ। वज्जी धुन शब्द धुनकाईआ। आपे रिहा हरि जी सुण, साचा ताल रखाईआ। ना कोई जाणे गुण अवगुण, एका धार चलाईआ। जन भगतां पुकार रिहा सुण, सितार ना कोई रखाईआ। अट्ठे पहर छाण पुण, प्रभ साचे आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणे रंग रहे सदा रघुराईआ। छेवें घर बणया संग। खुल्या दर शब्द मंग। मिले वर गुरमुखां काया ना होए भंग। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, सदा सुहेला अंग संग। शब्द जोत इक्क धार, छेवें घर सच प्यार। उठे नर हरि करतार। आए साचे सर, चरन छुहाए अमृत साची धार। जोती जोत सरूप हरि, साचा रंग आपे जाणे आपे माणे आप आपणी कर विचार। शब्द चढ़ाए साचे डोले, पंजम दर हरिजी बोले, लोकमात दा कुण्डा खोल्हे, लोआं पुरीआं बन्न्हे धार। आप वसे पड़दे ओहले, गुर पीर ना आए सार। हरि आपे दसे आपणे चोले, नाल रलाए पवण अधार। लक्ख चुरासी आत्म बोले, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। करे खेल पूरे तोल तोले, पंजवें दर साजन साज। करे खेल ग़रीब निवाज। तिन्ना लोकां मारे आवाज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा साजन साज। पंचम् घर हरि सुहाए। साधां संतां दया कमाए। शब्द धार इक्क रहाए। पवण सवार आप कराए। काया ठंडी ठार कराए। आप आपणा भेव खुल्हाए। अमृत साचा सीर प्याए। साचा चरन आप

उठाए। दर दवारिउँ बाहर कढाए। जोती जोत सरूप हरि, महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाए। चरन उठाए बारो बार। वेखे वेख वखाए इक्क सच्चा दरबार। सच सिँघासण आप बणाया, शब्द कराया सच शिगार। जोती जामा हरि भगवान, करे खेल अपर अपार। आपे दाना आपे बीना, ना कोई जाणे जीव गंवार। जोती जोत सरूप हरि, पंजवें घर देवे वर, सिँघ सिँघासण बैठ नर हरि सच्ची सरकार। सच सिँघासण डेरा लाया। चौथा दर फेर तकाया। साधां संतां मिले वर, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणाया। पंचम् दर श्री भगवान। नूरी जोती खेल महान। अट्ठे पहर कदे ना सोता, जोधा सूरा वड बलवान। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे साचा माण। गुर प्रसादि हरि वरतांयदा। साची खेल आदि जुगादि, आप बणाए आपे ढाहिंदा। जन भगतां देवे साची दाद, साची झोली आप भरांयदा। शब्द उपजाए साचा नाद, दिवस रैण सद वजांयदा। सोहँ शब्द रखणा याद, अन्तिम वेले मात छुडांयदा। झूठी माया जगत विवाद, एका नाता चरन जुड़ांयदा। पुरख अबिनाशी साचा माधव माध, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। गुरमुख आत्म साची लैणी साध, शब्द खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। दिवस रैण रसना लैणा अराध, साचा हुक्म हरि सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची भिच्छया झोली पांयदा। गुर प्रशादि हरि भण्डार। लोकमात हरि वरताए, आप आपणी किरपा धार। गुरमुखां बेड़ा पार कराए, आए चल सच सच्चे दरबार। पंजां झेड़ा आप चुकाए, वज्जे नाद अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, शब्द भण्डारे भर भण्डार। ब्रह्मे सुणी हरि पुकार। अमृत आया ठंडी धार। खुल्हे कँवल होए उज्जयार। चारे वेद लेख लिखार। चहुं जुगां दी बन्न्हे धार। प्रभ अबिनाशी किरपा करी, बणया दर हरि भिखार। अमृत झिरना साचा झिरी, आपे डोबे माया मझार। इक्क वखाए साची गली, दसवां घर हरि निरँकार। पिंगला ईड़ा दोए दुआरे खुल्ही, सुन्न सुखमन नाड़ी बद्धी धार। आपे रक्खे पर्दा उहला, सद वसे काया चोले, ना कोई जाणे जगत गंवार। जोती जामा हरि भगवाना, एका रक्खे शब्द बाणा, साचा करे तन शृंगार। निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं बन्न्हे धार। ब्रह्मे काया सीत कराई। आप आपणा मीत बणाई। कलिजुग अन्तिम दए मिटाई। साची रीत हरि रघुराई। हरिजन साचा राखे चीत, धुरदरगाही मिली वड्याई। सिँघ पाल सदा अतीत, रक्खे हरि सरनाई। मानस देही गई जीत, आत्म दर वज्जी वधाई। एका गाया शब्द सुहागी गीत, मिल्या मेल हरि रघुराई। प्रभ अबिनाशी लग्गी चरन प्रीत, मानस देही लेखे लाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वर देवे किरपा कर, पूत सपूता भाग लगाई। देवे वर हरि सच्ची सरकारा। अमृत भण्डारे रिहा भर, ना जन्मे ना जाए मर, अदि पुरख अपरम्पर स्वामी, एका

खोले सच दुआरा। भगत जनां सदा निहकामी, बणे बणाए जगत भिखारा। कलिजुग होई रैण अन्धेरी शामी, चार कुन्ट धुंदूकारा। बेमुख जीव कुष्टी कामी, आत्म भरे सर्ब विकारा। गुरमुखां देवे सच्ची बाणी, हरि भगवानी जोत निशानी, अन्तिम अन्त नर निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण आप रखाए, लोकमात विच दवाए, आप दिसाए दर घर सच्चा दरबारा। दित्ता माण हरि रघुराईआ। गुरमुख करी सच पछाण, ना होए कदे जुदाईआ। चढ़या साचे शब्द बाण इक्क उडान हरि रखाईआ। नाता तुट्टा पीण खाण, अमृत जाम हरि पिलाईआ। आपे देवे साचा माण, ब्रह्मपुरी लेखे लाईआ। अट्ठे पहर कर ध्यान, प्रभ अबिनाशी साचा राह तकाईआ। प्रगट होए बली बलवान विच जहान, निहकलंक साची वस्त नाम दात झोली पाईआ। अन्तिम वेले पुच्छे वात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सज्जण सुहेल आप अखवाईआ। गया लँघ इक्क द्वार। अग्गे हरि करे पुकार। फल लगाए काया डाल। लोकमात मार झात, फुल्ल फुलवाड़ी पिच्छे छड्डी, पूर्ब करनी आप विचार। जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे साचा वर, दोए जोड़ करे निमस्कार। मंगे वर सिँघ पाल। प्रभ अबिनाशी होए दयाल। साची जोत विच टिकाए, तेरे साचे सुत लाल। आप आपणी सेवा लाए, जोती जामा हरि अखवाए, चढ़े रंग इक्क गुलाल। चिट्टे अस्व आसण लाए, लोआं पुरीआं छड्ड के आए, पंचम् जेठी मारे छाल। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी किरपा कर, एका दित्ता सचा वर, फल लगाए साचे डाल। लग्गे फल विच संसारया। प्रभ इक्क चलाया शब्द हल, सोहँ बीजे बीज अपर अपारया। वसे निहचल धाम अटल, ना पावे कोई सारया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल, घट घट वासी घट घट वास रखा रिहा। निहकलंक नरायण नर, साचा कर्म आप कमा रिहा। आपणा कर्म आप कराया। धरत मात तेरा साचा धर्म, अन्तिम वेले आण बचाया। साची दित्ती इक्क दात, छोटे लाल तेरी गोद बहाया। साची बणी गुर संगत इक्क बरात, गुरमुख लाड़े व्याहवण आया। सिँघ मनजीत मारे झात, साधां संतां लए जगाया। जगत जगदीशा बैठ इकांत, राजे राणे दए उठाया। पुरख अबिनाशी एका बख्शे चरन नात, सच निशाना नाम रखाया। मिले वड्याई लोकमात, साचा मन्दिर हरि जी अन्दर सिँघ सिँघासण डेरा लाया। जोत जगे अन्दरे अन्दर, बेमुख जीव फिरे हलकाया। किसे ना दिसे डूंघी कन्दर, जोगी जटा जूट धार, मल मल ख़ाक तन रुलाया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, उचे टिल्ले गोरख मच्छन्दर, नाथां जतीआं भेव ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच दरबारे गुरमुख वणजारे, नौवां दरां बाहर रखाया। नौवें दर करे बन्द। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्द। इक्क उपजाए परमानंद। खुशी कराए बन्द बन्द। गुरमुख गायण बत्ती दन्द। मदिरा मासी पापी अन्ध। अट्ठे पहर मुख लगायण, माया धारी झूठा

गन्द। गुरमुख साचे सच दुआरा एका पावन, प्रभ इक्क सुणाए सोहँ शब्द सच्चा छन्द। साचा घर इक्क वखाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आप मिटाए भरमा कंध। आत्म साची जोत जगाए, शब्द धुन इक्क उपजाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बख्शंद। सदा बख्शंद बख्शणहार है। बेमुख करन निन्द, दुष्ट दुराचार है। प्रगट होए वड दाता गुणी गहिंद, दर दुआरे वसे बाहर है। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, दसवें घर पायण कन्त भतार है। आप मिटाए सगली चिन्द, देवे दरस अगम्म अपार है। जोती जोत सरूप हरि, जगत जगदीशे बणाया इक्क सच्चा दरबार है। सच दरबारे हरि निरँकार। जोत अकारे विच संसार। बेमुख वहाए वहन्दी धारे, शब्द धक्का रिहा मार। गुरमुख उपजाए सच दुलारे, हथ्थीं सिहरा बन्ने शब्द सीस दस्तार। एका साचा राग सुणाए कन्ने, सोहँ शब्द अपर अपार। गुरमुख साचे आत्म मन्ने, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाए अन्तिम वार। सच दरबारे भाण्डा भरम भउ भन्ने, मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। लक्ख चुरासी आपे डन्ने, जोत सरूपी जामा धार। आपे घड़े आपे भन्ने, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। गुरमुखां हरि बेड़ा बन्ने, एका दिसे पार किनार। लक्ख चुरासी पाए फाँसी, धर्म राए मेट मिटाए मदिरा मासी, मानस देही आई हार। धर्म राए घर चढ़या चाअ, प्रभ अबिनाशी इक्क वखाई लोकमाती सच्चा थां। अट्ठे पहर मारा झाती, कलिजुग वेख अन्धेरी राती, ना कोई पिता
७५४ ०४ ना कोई मां। पूत सपूता नाता तुटा, ना कोई भैण ना भ्रा। एका शब्द तीर छुट्टा, चारों कुन्टां दए हिला। हरि नाम ७५४ ०४
लगाए साची चोटा, गुरमुख साचे लए जगा। आप कढ्ढे आत्म खोटा, अमृत साचा जाम पिला , दर घर साचे कदे ना आवे तोटा, लक्ख चुरासी साची झोली रिहा भरा। मंगदे रहण कोटन कोटा, दर दुआरा इक्क निरँकारा, सच सिँघासण बैठा डेरा ला। इक्क फड़ाया शब्द सोटा, ना पतला ना लम्भा मोटा, राजे राणयां रिहा जगा। सच सिँघासण हरि बिराज्जया। दर दुआरे देस माज्झया। जोती जाम भेख न्यारे, गुरमुखां रक्खण आया लाज्जया। आपे छड्डे उच्च महल्ल मुनारे, छोटे बाले तेरा साजन साज्जया। गुरसिख ना होयण कदे कंगाले, प्रभ मिल्या राजन राज्जया। देवे नाम सच्चा धन माले, काया पर्दा काज्जया। चिट्टे शब्द दुशाले साचे आपे पाए वारो वार, कलि धुरदरगाहों आया भाज्जया। गुरमुख साचे कर त्यार, सोलां करे तन श्रृंगार, देवे नाम सच्चा दाज्जया। मातलोक अन्त विहार वेख विचार, लक्ख चुरासी गई हार, गुरमुख विरले उतरे पार, प्रभ अबिनाशी साचे नेत्र सोहँ कज्जल पाज्जया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अट्ठे पहर दिवस रैण शब्द सरूपी मारे अवाज्जया। गुरमुखां मिली वड्याई जगत जुदाईआ। नाता तुटा भाई भैण, मिल्या इक्क सच्चा रघुराईआ। झूठे दिसण साक सज्जण सैण, एका हरि सच्चा रथवाहीआ। धुरदरगाही आपे आया लैण, सोहँ रथ एका नाल लिआईआ। सिँघ

मनजीता उत्ते लए रक्ख, वाह वाह सोहणी बणत बणाईआ। सोलां मग्घर कीना वख, पूरी इन्द्र धाम सुहाईआ। सुरपति राजे इन्द टेके मथ्था, निहकलंक सिर साचा छत्र झुलाईआ। सगल वसूरे गए लथ्थ, प्रभ सरन मिली सरनाईआ। लक्ख चुरासी गया मथ्था, फड़ के बाहों तोड़ जंजाला, छोटे बाले गुरमुखां वारो वार बहाईआ। प्रभ की महिंमा अकथ्थना अकथ्थ, बेमुख भेव ना पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची बणत आप बणाईआ। छोटे बाले मार उडारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी। खिच्च लै जाए चरन द्वारी। इक्क दवाए शब्द अस्वारी अन्तिम वेले पैज संवारी। साचे घर मिली सरदारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। साढे तिन्न हथ्थ हरि समरथ, चिट्टी कुली नींह उसारी। विच धरे नाम वथ, सतिजुग जोत जगे अपारी। सगल वसूरे जायण लथ्थ। जो जन आयण चरन द्वार करे निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां बन्ने आपे धारी। साची बन्ने धार रीत चलाईआ। छोटे बाले कर त्यार, प्रभ काया चोली आप छुडाईआ। सत्तां दीपां पाए वंड, नौवां खण्डां रक्खे ठंड, साधां संतां रिहा जगाईआ। सिँघ जगदीशे तेरी वंड, प्रभ अबिनाशी एका पकड़े चण्ड प्रचण्ड, राजे राणयां रिहा हिलाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, तेरी भस्म बेमुखां मस्तक टिक्का लाईआ। गुरमुखां करी साची वंड, प्रभ साचा हिस्से आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे पंचम् पोह नींह रखाईआ। अमृत साचा मींह बरसाई। जोती जामा भेव ना राई। गुरमुख साचे माणक मोती, साचे हार रिहा पुराई। आपे जगे साची जोती, सच महल्ल इक्क अटल, करे जगत रुशनाईआ। बेमुख भुलाए कर कर वल छल, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दूज दूजा एक भेव चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम कलि कल कलवन्ती नार। भुल्ले फिरन जीव जन्त संत साध, माया पाई अपर अपार। पुरख अबिनाशी महिंमा अगणत, कोई ना जाणे जीव गंवार। एका जोती जामा न्यार। आदि अन्त विच संसार। निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए सच अवतार। सच अवतार सच विहारा। करे मात कलि अन्तिम वारा। सिँघ जगदीश जगत दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह नींह रखाई, साची भस्म विच टिकाई, लहू मिज्झ बणाया साचा गारा। पंचम् हाडी पंच परवान। बणया गाडी हरि भगवान। शब्द लडाए साची लाडी, वेख वखाणे दो जहान। बेमुख दर तों जाए काढी, गुरमुखां करे कलि पछाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती नूरा हरि भगवान। जोती जामा धरे हरि, अठां तत्तां अठां वारां महल्ल उसार। चार दुआरा एका घर नांवे खुल्हे रक्खे दर, दसवां करे बन्द कवाड़। बेमुख जीवां आवे डर, गुरमुख साचे गए तर, तीर्थ नुहाए साचे सर, अमृत भण्डारे रिहा भर, सच दुआरे मिले वर। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक

७५५ ०४

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक चार वरनां साची टेक, राउ रंक रंक राजान, इक्क दिसाए जगत वखाए साचा घर। राज राजाना भेख अपार। वडे शाहो शाह सुल्तानां, खोल्हे भेव हरि निरँकार। औलीए पीर शेख़ शेखां शाह दिवाना, आपे खोल्हे बन्द कवाड़। शब्दी मारे तीर निशाना, बजर कपाटी देवे पाड़। आप विखाणे आपणे भाणा, बेमुख जीव झूठी धाड़। गुरमुख करे आप पछाना, जोत जगाए बहत्तर नाड़। शब्द बन्न्हे हथ्थी गाना, लेखा लिखे सतारां हाढ़। दरगहि साची मिले माणा, जगत जोत ना देवे साड़। साचा देवे इक्क बबाणा, सोहँ शब्द नाम रखाणा, घर साचे विच देवे वाड़। आवण जावण भेव खुल्हाना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घोड़े देणा चाढ़। शब्द घोड़ा हरि दुड़ांयदा। पहला चुक्के सज्जा पौड़ा, लोकमात इक्क टिकांयदा। पिच्छे सतिजुग आए दौड़ा, निहकलंक पलू फड़ांयदा। कलिजुग फल होया कौड़ा, शब्द डण्डे हरि भन्नांयदा। धुरदरगाही साचा पौड़ा, एका एक लगांयदा। ना कोई लम्भा ना कोई चौड़ा, ना बाडी कोई बणांयदा। साचा फड़्या नाम हथौड़ा, साचे बन्न्हण आपे पांयदा। ना कोई जाणे ब्रह्मण गौड़ा, वेद पुरानां दो जहानां भेव राई ना आंयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दे मति आप समझांयदा। सच दरबार जगत न्यार। नौ दर विच संसार। साचे घर पुरख अपार। शब्द खण्डा तीर कटार। चौथा डण्डा कलिजुग धार। अन्तिम कन्ढा विच संसार। विच वरभण्डां हाहाकार। चौथे घर साची वंड, गुरमुख साचे संत दुलार। आत्म पाए हरि जी ठंड, अमृत बरखे किरपा धार। शब्द बन्न्हे पल्ले गंढु, जोती जामा भेख न्यार। बाल जवानी गई हंढ, अन्तिम आई कलिजुग हार। सिर उठाई पापां पंड, लोकमात लग्गा भार। चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्ड, प्रभ अबिनाशी गल पए फूलन सोहणे हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस जोत जगाई, गुरमुख साचे सिँघ जगदीशे, तेरे साचे दर दरबार। साचा दर दरबार हरि सजांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, फूलन सेजा इक्क बणांयदा। आपे तोड़े पत्त डाली, गुरमुखां करे हरि रखवाली, कलिजुग कंडा चुभ ना जांयदा। चल्ले चाल जगत निराली, दोवें हथ्थां दिसे ख़ाली, तीर कमान ना कोई उठांयदा। दो जहानां आपे वाली धरत मात तेरी करे रखवाली, गऊ ग़रीब निमाणा गले लगांयदा। शाह सुल्तानां करे खाली, ना कोई दिसे माल माली, आपणा भाणा हरि वरतांयदा। किसे फल ना दिसे कलिजुग डाली, काया जूठी झूठी माया ममता मोह वधांयदा। गुरमुख साचे तेरी आत्म जोत जगे ज्वाली, खिच्च्व पहाड़ां विच जगांयदा। एका जोत हरि अकाली, तीर्थ तट्टां माण गवांयदा। गंगा गोदावरी होई ख़ाली, हीरा घाट हरि सुहांयदा। पुरख अबिनाशी बणया पाली, सतिजुग तेरी साची बणत बणांयदा। कलिजुग दिसे रैण काली, चारों कुन्ट माया पर्दा पांयदा। गुरमुखां दिसे एका शब्द

हक्क हलाली नूर जलाली, अल्ला हू शब्द म्यानों लए धूह, आपणी खेल रचांयदा। इक्क चढ़ाए नदी नूह, भरया पूर कलि आप डुबांयदा। आत्म जोती खिच्चे रूह, ना कोई किसे उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, साचे मन्दिर सच सिँघासण, एका आसण लांयदा। एका आसण सखी सुल्ताना। वेख वखाणे सर्ब बिधनाना। लक्ख चुरासी बन्नूण आया हरि जी गाना। मेट मिटाए मदिरा मासी, एका झुल्ले धर्म निशाना। आप मिटाए आप उठाए पंडत कांशी, सिध्धा मारे तीर निशाना। आप चढ़ाए बेमुख जीव धर्म राए दी फाँसी, गुरमुखां देवे नाम बिबाणा। दर दुआरे जीव हँकारे करन हासी, अन्त मिटे नाम निशाना। गुरमुखां आत्म करे रहरासी, लक्ख चुरासी फंद कटाना। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवाना। वड बली बलवान शब्द कटार है। अट्ठे पहर नौजवान, रहे ख़बरदार है। वेख पछाड़े बेईमान जीव शैतान, नर हरि सच्ची सरकार है। साचा जामा श्री भगवान, जोती भेखा अलखणा अलेखा, गुरमुख विरले नेत्र पेखा, कलिजुग भुल्ले जीव गंवार है। मेट मिटाए मदिरा मासी, कुरान अञ्जील औलीए पीर शेखां, आई हार है। अट्ठे पहर लिखे लेखा, चित्रगुप्त लेख लिखार है। लक्ख चुरासी पई भरम भुलेखा, एका भुल्लया हरि करतार है। लोकमात झूठी मेखा, जाणा वारो वार है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों बेड़ा पार करा रिहा। आई हरि सरनाई, जगत निमानणी। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, गुण निधानणी। साचा लेखा रिहा लिखाई, आप पछाणे आपा आपणी। झूठा नाता होई कुड़माई, पुत्तर धीआं पुरख सुजानणी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे शब्द तीर कानणी। पुत्तां धीआं नाता जग। लग्गा दु:ख काया अग्ग। आत्म मिले ना साचा सुख, मानस देही होई कग्ग। जोती जोत सरूप हरि, साचा लेखा रहे लिखाए, पवण मसाणी मेट मिटाए, पकड़ पछाड़े शाह रग। पवण मसाणी जम जमदूत। शब्द डण्डा एका वज्जे, एका छड्डे काया कलबूत। पुरख अबिनाशी पर्दा कज्जे, एका ताना पेटा सूत। होए सहाई सज्जे खब्बे, अग्गे पिच्छे शब्द रखाए सच्चा दूत। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, मेट मिटाए प्रेत भूत। भूत प्रेतां नाता तुट्टा। एका शब्द तीर छुट्टा। नेत्र नीर फुहार गुर चरन फुट्टा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द हुलारा नाम झूटा। शब्द हुलारा नाम डोली। पापां पर्दे रिहा खोल्ही। एका दस्से साचा जापा, सोहँ जपणा हौली हौली। कलिजुग तेरा पाप कांपा, जूठी झूठी छड्डी मात चोली। आप पछाणे आपणा आपा, हरि चरन सुहाए साची गोली। लोकमात कराए वड प्रतापा, जोती जोत सरूप हरि, पूरे तोल रिहा तोली। रूसा शाह सर्ब सरबग्गी। पुरख अबिनाशी दस्सण आया

एका राह, करे कटार शब्द नंगी। धुरदरगाही सच मलाह, चार कुन्ट आए तंगी। कोई ना दीसे जगत थां, बेमुख जीवां धर्म राए दर जाए टंगी। घर घर उडाए झूठे कां, भन्नी जाए कच्ची वंगी। ना कोई छुडाए पुत्तर मां, वज्जे ताल शब्द मृदंगी। चार कुन्टां वेख वखाणे, आपे जाणे पुरख अबिनाशी पकड़ उठाए शाह फरंगी। निहकलंक कलि जामा पाया, वाली हिन्द हुक्म सुणाया, साचा लेखा मात लिखाया, धरत मात अन्तिम वार एका धार लहू मंगी। धरत मात रक्खी आस। कवण बुझावे मेरी प्यास। बेमुख जीव बन्नृण झूठे दाअवे, गुरमुख होए मात निरास। राजे राणे प्रभ शब्द सिँघासण बन्नृण आया पावे, जोत जगाए मात पताल अकाश। हरिजन साचा तीर्थ नुहावे, लेखा चुक्के मात गर्भ दस मास। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरे रक्खे वास। रूसा शाह कर ध्यान, वाली हिन्द जोत जगाई। भारत खण्ड मिली वधाई। इक्क चलाए साची डण्डी, चारों कुन्टां रिहा सुणाई। लक्ख चुरासी नार रंडी, कन्त सुहागी ना कोई हंढाई। शब्द भण्डारा वंडण आया। जोत सरूपी भेख वटाया। पुरख अबिनाशी साचा माही, लाड़ी मौत नाल ल्याया। धर्म राए दा दर खुल्ह्राया। चौथा गेड़ा आप दवाया। कलिजुग जीवां पापां भरया बेड़ा, पुरख अबिनाशी अन्तिम आण रुढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, माझे देस सच सिँघासण डेरा लाया। वाली हिन्द हो ख़बरदार। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाए लेख लिखाए चार यार। अन्तिम वेला नेड़े आया, शब्द डंक इक्क वजाया, लहन्दी दिशा दिसे हार। जोत सरूपी भेख वटाया, सदी चौधवीं वेख वखाया, निहकलंकी नर अवतार। अमाम मैहन्दी ना रखाया, काला चोला गलों लाहया, नीला बाणा तन छुहाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे आपणी कार। हरि साची कार कराईआ। अल्ला राणी बेमुहाणी, प्रभ दर दए दुहाईआ। चल्लया तीर शब्द निशानी, उडया चिल्ले शब्द बबाणी, मक्के मदीने रिहा जगाईआ। आप चुकाए कलिजुग जीआं अन्तिम कान्ही, दूजा कोई कहार ना लाईआ। दर घर साचे किसे ना मिले मग्गया पाणी, उम्मत नबी रसूल हक्क जलाल, जले जलाली आपणा आप गई भुलाईआ। ना होए कोई रखवाल, चारों कुन्ट होए बेहाल, प्रभ अबिनाशी मारी छाल, सच सिँघासण साची सेजा विछाईआ। आपे झाड़े उचे डाल, पति किसे रहण ना पाईआ। रोटी मिले ना किसे थाल, भज्जे जाण वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी चल्ले अवल्लड़ी चाल, ना कोई सके सुरत संभाल, पीर फकीर औलीआ गौंस ना बणे विच दलाल, सारे पए औझड़ राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक लक्ख चुरासी तेरा सच्चा मलाहीआ। आई हार वक्त मुलाणयां। प्रभ अबिनाशी शब्द खण्डा रिहा हुलार, तुट्टे माण राजे राणयां। प्रगट होया विच संसार, वाली दो जहानयां। लेख लिखाए

७५६ ०४

अपर अपार, दीन मुहम्मदी उठे सुत्ता लै के चार यार। एका हल प्रभ साचे जुता, पहली कूटे फेरा रिहा मार। पकड़ उठाए जूठा झूठा मायाधारी कुत्ता, शब्द डण्डा रिहा मार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर अवतार। वाली हिन्द जगत विचोले। साचा लेख कोई ना फोले। पुरख अबिनाशी सच्चा बोले। शब्द खण्डा हथ्थ विच फड़या, सृष्ट सबाई चारों कुन्ट बणया तोला आपे तोले। वाली दो जहानां सच सुल्तानां, विच जहानां हरि भगवाना, उम्मत नबी रसूल दी हरि बन्ने गाना, वेखे खेल जगत शैताना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऐली अल्ला शाह प्यारा, एका देवे शब्द चौदां तबकां पार उतारदा। आए दर सच्ची कुरान। प्रभ अबिनाशी किरपा कर साचे हरि, आत्म होई वैरान। एका दे दे साचा वर, बेमुख मारां जीव शैतान। चारों कुन्ट आए डर, मन्दिर मस्जिद होए वैरान। कोई ना दिसदा वसे घर, एका करां सुंञ मसाण। गुरमुखां लड़ लवां फड़, करां मात पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शीं जिआ दान। लोकमात पहला फेरा। सनक सनंदन सनातन संत कुमारा, आप बणाया आपणा चेरा। बराह यज्ञे पुरष हाव गरीव लए अवतारा। निरँजण नर जोत धर, करे खेल पंचम् वारा। दतात्रै भेव न्यारा। कपल मुनी सच्ची धारा। रिखव देव खेल न्यारा। पृथु पाए सागर सारा। मतस करे रंग अपारा। कच्छप रूप हरि जी धारा। मोहणी रूप रूप अपारा। वैद धनन्तर बाहर नकार। नर सिँघ होए दुष्ट सँघारा। साची खेल हरि करतारा। आवे जावे वारो वारा। हँस हँसा खेल न्यारा। नरायण ध्रू पार उतारा। हरी गज दीआ सहारा। बावन भेव वेद विहारा। अठारां जामे शब्द दमामे, सतिजुग करे सच विहारा। त्रेते तेरी आई वारी, उन्नवीं जोत हरि जगाई परस राम नाउँ रखाई। शत्रु करे मात सँघार, इक्की वार जै कराई। साची जोत जगे रघुनाथ, राम अवतारी जोत जगाई। दुष्ट हँकारी आप मिटाई। रामा रावण खेल रचाई। जोती भेख ना कोई सके वेख, जुगो जुग रिहा छुपाई। आया द्वापर कर विचार। वेद व्यासा बद्धी धार। शब्द चलाया, अठारां पुरानां बणे लिखार। अन्तिम गया मात हार। पुरख अबिनाशी खेल अपार। कृष्ना कान्हा हो त्यार। वड दाता सूरा सरबंसी, मेट मिटाए हँकारी कंसी, दुष्ट सँघारे वारो वार। भगत बणाए साचे अंसी, बिदर सुदामा द्रोपद लाई पार। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धार। द्वापर अन्त अन्त कराया। कलिजुग झूठा मात धराया। आप आपणा भेख वटाया। साचा लेखा आप लिखाया। गौतम बुद्ध इक्क उपजाया। साचा हुक्म इक्क सुणाया। चारों कुन्टां दए दुहाया। चीन जपाना आप जगाया। प्रभ अबिनाशी एका शब्द नार दित्ती, बंधन आया हथ्थीं धर्मी गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप झुलाए आपणा इक्क निशाना। ईसा मूसा हो त्यार , प्रभ अबिनाशी दित्ता वर, लोकमात जामा धार। काला सूसा तन छुहाया। एका राह जगत वखाया।

७५६ ०४

मदिरा मास भर प्याला, अग्गे हरि जी आपे डाहया। ना कोई जाणे दीन दयाला, बेमुख जीवां मनों भुलाया। सृष्ट सबाई आप रखवाला, राजे राणयां अन्तिम कलि आया करन मूंह काला, सिँघ जगदीश तेरे मस्तक लाहे छाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम् पोह लिख लिख लेख, साचे रिहा घलाईआ। भारत खण्ड तेरी वेख रेख, प्रभ साची बणत बणाईआ। धरत मात रक्खण आया पैज, सत्तां दीपां वंड कराईआ। जोत सरूपी धारे भेख, नौवां खण्डां रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी बणत बणाईआ। कलिजुग तेरी धार, संग रलाया। इक्क मुहम्मद संग चार यार। लोकमात हरि जन्म दवाया, लहन्दी दिशा भाग लगाया। करे खेल अपर अपार। साचा हिस्सा आण वंडाया, मंगी मंग बण भिखार। प्रभ अबिनाशी लड़ छुडाया, काला टिक्का मस्तक लाया, एका इक्क राह वखाया, ना कोई जाणे जीव गंवार। झूठा सिक्का मात चलाया, अन्तिम वेला नेड़े आया, सदी चौधवीं आई हार, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धार। गुर नानक जोत जगाईआ। प्रभ साचे दित्ती नाम दात, मिली मात वड्डयाईआ। चारे कुन्टां वंडे शब्द उडारी इक्क लगाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे डण्डे, नाम सति पौड़ी लाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार निहकलंक दे आए वंडे, आपे जाणे हरि रघुराईआ। गुरमुखां सीने रक्खे ठंडे, अमृत जाम प्याईआ। सच भण्डारा हरि जी वंडे, आत्म झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी वड्डयाईआ। गुर नानक डंक वजांयदा। राउ रंक आख सुणांयदा। जोती जामा हरि जी पांयदा। आदि अन्त आप निभांयदा। माया पाए जगत बेअन्त, भरम भुलेखे जीव रुढ़ांयदा। आप उठाए गुरमुख सोए संत, साचा मीत हरि आपणी गोद उठांयदा। मेल मिलावा साचे कन्त, जगत विछोड़ा आप छुडांयदा। एका देवे शब्द घोड़ा, चारे कुन्टां हरि फिरांयदा। धुरदरगाही आए मात दौड़ा, सच सिँघासण डेरा लांयदा। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, नानक गुर एह लेख लिखांयदा। कलिजुग तेरा वक्त रहि गया थोड़ा, प्रभ साचा लेख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सच रहांयदा। गुर नानक सची बध्धी धार। गुर अंगद किया नाल त्यार। साची दित्ती शब्द उडार। अमरदासा होया पार। रामदासा जोत अधार। सच सरोवर अमृत भरया, इक्क सुहाया साचा ताल। पंचम् गुर लिख्या धुर, शब्द मिली साची सुर, आप वजाए आपणे ताल। गुरदास प्रीती गई जुड़, भेख लेख हरि कमाल। कलिजुग जीवां लेखा छाही गई थुड़, ना तुट्टे जगत जंजाल। धरे जोत विच हरि गोबिन्द, जोती जामा इक्क बलवान। मीरी पीरी जगत अखीरी होए वहीरी, लिखे लेख हुक्म महान। एका हरि दस्तगीरी, मेट मिटाए पीर फ़कीरी, ना कोई दिसे नौजवान। गुरमुखां देवे आत्म धारी, आपे कढ्ढे हउमे पीड़ी, इक्क झुलाए धर्म निशान। हरि हरि राए हरि कन्न सुणाए धुर फ़रमाण, साची आण, कलिजुग जीव

७६०
०४

भुल्ल ना जाए। अष्टम् गुर, चरन प्रीती गई जुड़, बाल अवस्था लेखे लाए। गुर तेग बहादर मिलया आदर, करता कादर साची सेवा आपे लाए। हिन्द बणाई चिट्टी चादर, सीस कटाए सीस गंज आप लगाए मुहाणा वञ्झ, साचा धर्म पार कराए। प्रभ अबिनाशी डेरा लाए दिन पंज, वाली हिन्द दरस दिखाए। बेमुखां माया धारीआं जगत ख्वारीआं। आत्म कराए रंज, मारे शब्द कटारीआ। ना कोई स्वेर ना कोई सन्झ, जोती नूर इक्क अकारया। जोती जोत सरूप हरि, आवे जावे वारो वारया। तेग बहादर दया कमाई। आप आपणी जोत मिलाई। गुर गोबिन्दे आप जगाई। सागर सिंधे नीर वहाई। आप बणाए आपणी बिन्दे, दुष्ट दमन तेरा जामन इक्क रघुराई। नेड़ ना आए कामनी कामन, मेट मिटाए अन्धेरी शामन, गुरमुख साचे लए उपजाई। पंजां यारां कर प्यारा, आपे फड़े सच्चा दामन, अमृत साचा जाम पिलाई। रक्खे पति गऊ ब्रह्मण, शब्द कटारा इक्क उठाई। जोती जोत सरूप हरि, साचा हुक्म रिहा सुणाई। साचा हुक्म हरि निरँकारा। देवे मात वारो वारा। गुरू पीर देण पहरा। हरि जी सुत्ता पैर पसारा। आपे वेखे आप दुआरा। तिन्नां लोआं बध्धी धारा। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक आप चलाए आपणी कारा। विच समेरू चौदां लोक चौदां हट्ट, खुल्हा रक्खे बन्द कवाड़ा। इक्क रखाए वस्त साची नाम पट, गुरमुखां तन पहनाए सतारा हाढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात मार झात, तेरा वेखण आया अन्त अखाड़ा गुर गोबिन्द हरि दया कमाई। साची दित्ती मात वड्याई। काया राणी साची मिट्टी, आत्म जोती इक्क टिकाई। कलिजुग तेरी अन्तिम वार बीस इकीसा साची मिती, गुर गोबिन्दे आप लिखाई। गुर संगत गुर रल मिल पावण हरि सरनाई। ना कोई ताम ना कोई चाम, ना कोई मुनी रिखी। गुरमुख साचे संत जनां, साचा नाम जपाए दया कमाए, रक्खे धार सोहँ शब्द तेरी तिक्खी। सोहँ शब्द तिक्खी धारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। गुर गोबिन्दा बणया साचा लेख लिखारया। निहकलंक कलि कल्कि होए अवतारया। किसे सुरत ना देवे घड़ी पल की, शब्द डण्डा इक्क उभारया। संभाले सुरत हरि दयाले जल थल की, लोआं पुरीआं आप समा रिहा। जोती जामा खेल वल छल की, राजे राणयां आप भुला रिहा। गुरमुखां भार करे हलकी, छोटे बाले अग्गे ला रिहा। आप बणाए लोकमात साची पलकी, नौ दुआरे हरि खुल्हा रिहा। गुरमुखां देवे आत्म साची झलकी, दसवें घर सिँघ सिँघासण साचे डेरा ला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे राजे राणे सर्ब चला रिहा। हरि घट आपे जाणदा, घट घटां घट रक्खे वसे पास। हर घट आपे जाणदा। शब्दी जोत शब्द स्वास। हरि घट आपे जाणदा, जगत अजोती पुरख अबिनाश। सर्ब घर आपे जाणदा, वड गुणी गुण सच मण्डल दी साची रास। सभ घट आपे जाणदा, सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख साचे संत,

एका सच्चा फुल्ल पुरख अबिनाशी सच अकाश दा। महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोती देवे नूर साचे प्रकाश दा। शब्द भण्डार अटल हरि निरंकारया। देवे आप अभुल्ल, गुरमुखां हरि आप वरता रिहा। भाग लगाए साची कुल, मानस देही अपर अपारया। ना कोई लाए हरि जी मुल्ल, चरन प्रीती इक्क सखा रिहा। काया डाले लग्गा साचा फुल्ल, लोकमात हरि महिका रिहा। अमृत आत्म ना जाए डुल्ल, सच भण्डारा आप भरा रिहा। कलिजुग अन्तिम फल गया हुल, शब्द हलूणा इक्क लगा रिहा। सच दुआरा गया खुल्ह, निहकलंकी डंक वजा रिहा। पूरे तोल गुरमुख साचे जाणा तुल, प्रभ साची बणत बणा रिहा। लक्ख चुरासी गई भुल्ल कलिजुग काला रूप वटा रिहा। माया राणी गई हुल्ल, झूठा वेस तन छुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणा भाणा आप वरता रिहा। साचा भाणा नाम करतारया। जोती बाणा विच संसारया। शब्दी भाणा मात चला रिहा। पकड़ ल्याए राजा राणा, साचा लेख लिख्त भविख्त आप लिखा रिहा। जगत हँकारी तोड़े माणा, शब्द बाण इक्क चला रिहा। आप चलाए आपणा भाणा, चारे वरनां एका राह वखा रिहा। प्रगट होया धरनी धरना, गुरमुखां खोल्हे हरना फरना, आत्म जोती इक्क जगा रिहा। आप चुकाए लक्ख चुरासी मरना डरना, बन्द ख़लासी घनकपुर वासी आपे आप करा रिहा। मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द खण्डा हथ्थ उठा रिहा। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, राज सुल्तानां विच जहान बेईमान तख्त ताज सर्ब मिटा रिहा। चारे कुन्टां पैण वंडां कोई ना देवे किसे अवाज़, अग्गा पिच्छा ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात हरि जोत धर, आपणे भाणे खेल रचा रिहा। सच तख्त सुल्तान हरि बिराज्जया। जोती नूरा इक्क महान, आप आपणा साजन साज्जया। शब्द तूर वड महान, अट्ठे पहर दिवस रैण मारे अवाज्जया। सति संतोख पीण खाण, आप रखाए अन्तिम लाज्जया। वेख वखाए दया कमाए, रूस चीना आप मिटाए शहाना शाह ताज्जया। शाह फरंगी पिट्ठ करे नंगी, चारों कुन्ट दिसे तंगी, कोई ना रक्खे मात लाज्जया। खेले रंग वड दाता सूरा सरबंग, सच वस्त किसे हथ्थ ना आए, चारों कुन्ट दिसे तंगी। गुरमुखां चाढ़े साचा रंग, अमृत धार वहाए गंग, सदी चौधवीं जाए लँघी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, इक्क वजाए शब्द मृदंगी। शब्द मृदंग ढोल नगारया। गुरमुखां आत्म चाढ़े रंग, बेमुखां हाहाकार कर रिहा। धुर दरगाहों मंग साची मंगी, कलिजुग साचे विच सच दरबारया। लक्ख चुरासी करनी नंगी, कोई ना देवे किसे संग, आत्म भरया इक्क हंकारया। कलिजुग औध गई लँघ, लक्ख चुरासी पुरख अबिनाशी धर्म राए दर देवे टंग, शब्द खण्डा इक्क उठा रिहा। बेमुख भन्ने काची वंग, धरत मात प्रभ चाढ़े रंग, सूहा

७६२
०४

वेस हरि करा रिहा। जामा धारे माझे देस, पकड़ उठाए नर नरेश, साचा वेस आप वखा रिहा। खुल्हे करे हरि जी केस, गुरमुखां माण रखाए दया कमाए, एका जोती हरि दस्मेश। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपे करे आपणा वेस। हरि का देस अगम्म, जगत अपारया। लक्ख चुरासी भुल्ली भरम, ना पावे कोई सारया। माया राणी झूठा चर्म, ना जाणे कोई राजे राणया। गुरमुखां उज्जल होए कर्म, प्रभ साचा मात पछाणया। दूई द्वैती मिटे वर्म, एका रंग दर घर साचे माणया। साचा शब्द साचा धर्म, देवे हरि नर भगवानया। मेट मिटाए अठारां बरन, एका सरन राउ रंक रजानया। पुरख अबिनाशी आप चले चलाए आपणे भाणयां। महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात प्रभ जोत धर, करे खेल बेमुहानयां। हरि का शब्द अटल, जगत धुन्कार है। हरि का शब्द अटल, वसे सच महल्ल दस्से पार किनार है। हरि का शब्द अटल, ना कोई देही ना कोई खल्ल, एका रंग अपर अपार है। हरि का शब्द अटल, ना कोई फुल्ल ना कोई फल, चारों कुन्ट पसर पसारया। हरि का शब्द अटल, वसे जल थल, तिन्नां लोआं पावे सारया। हरि का शब्द अटल, बेमुख भुलाए कर कर वल छल, गुरमुखां देवे साची धारया। हरि का शब्द अटल, गुरमुख साचे संत जनां, वसे काया सच महल्ल मुनारया। हरि का शब्द अटल, जगत अमोल्लया। हरि का शब्द अटल, किसे ना तोल्लया। हरि का शब्द अटल, गुरमुखां पर्दा साचा खोल्ल्हया। हरि का शब्द अटल, काया मन्दिर साचे बोल्लया। हरि का शब्द अटल, रंग रंगाए काया चोल्लया। हरि का शब्द अटल, गुरमुख साचे संत जनां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना हरि हरि बोल्लया। हरि का शब्द अटल, जगत वणजारया। हरि का शब्द अटल, भगत भण्डारया। हरि का शब्द अटल, देवणहार हरि निरंकारया। हरि का शब्द अटल, अनहद धुन सच्ची धुन्कारया। हरि का शब्द अटल, तोड़े मुन सुन आत्म जोती मेल मिला रिहा। हरि का शब्द अटल, ना कोई वरन ना कोई गोती, एका रंग समा रिहा। हरि का शब्द अटल, गुरमुखां उठाए काया सोती, इक्क हलूणा ला रिहा। हरि का शब्द अटल, लक्ख चुरासी रही रोती, दिस किसे ना आ रिहा। हरि का शब्द अटल, गुरमुख उपजाए दया कमाए लोकमात साचे मोती, प्रभ साचा हार गुंदा रिहा। हरि का शब्द अटल, दुरमति मैल जाए धोती, जो जन रसना हरि गुण गा रिहा। हरि का शब्द अटल, ना कोई मंगे दान अहूती, अमृत साचा जाम पया रिहा। हरि का शब्द अटल, एका नाम जगत भबूती, गुरमुख विरला मस्तक ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सच दुआरा इक्क खुल्हा रिहा। हरि का शब्द अटल, धाम अस्थूलया। हरि का शब्द अटल, मिलाए मेल कन्त कन्तूलया। हरि का शब्द अटल, अट्ठे पहर दिवस रैण तिन्नां लोआं रक्खे एका झूलया। हरि का शब्द

अटल, चुकाए लहिण देण, जो जन गाए रसना भूलया। हरि का शब्द अटल, आप बणे साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण, अगला पिछला चुकाए मूलया। हरि का शब्द अटल, रसना सके ना किसे कहण, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग जीवां अन्तिम भूलया। आप वहाए वहन्दे वहिण, लाड़ी मौत खाए डैण, घर घर उडदी दिसे धूलया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जन, सच दुआरे लोकमात फलया फूलया। हरि का शब्द अटल, जगत सनिआस है। हरि का शब्द अटल, सर्ब घट वास है। हरि का शब्द अटल, होए सहाई गर्भ दस मास है। हरि का शब्द अटल, पवण चलाए रसन स्वास है। हरि का शब्द अटल, इक्क वखाए सच मण्डल दी साची रास है। हरि का शब्द अटल, गुरमुख साचे संत जनां, निज घर आत्म रक्खे वास है। हरि का शब्द अटल, खोल्हे बन्द कवाड़, सदा होया रहे दास है। हरि शब्द अटल, पंजां चोरां चबाए दाढ़, साची जोत करे प्रकाश है। हरि का शब्द अटल, जोत जगाए बहत्तर नाड़, वेख वखाणे पृथ्मी अकाश है। हरि का शब्द अटल, आदि अन्त ना जाए विनास है। हरि का शब्द अटल, वसे धाम इक्क इकल्ल, जन भगतां करे बन्द ख़लास है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत धर, आप आपणा करे साचा वास है। हरि का शब्द अटल, भगत ज्ञानया। हरि का शब्द अटल, माण गंवाए वेद चार अठारां पुरान पुरानया। हरि का शब्द अटल, रसना गाए कृष्न भगवानया। हरि का शब्द अटल, गीता गाए जगत सुणाए, देवे ब्रह्म ज्ञानया। हरि का शब्द अटल, वेद ब्यासा रिहा सुणाए, साची रसना हरि वखानया। हरि का शब्द अटल, ऊँचो ऊँच इक्क प्रबल, गौतम बुद्धा आत्म सुध्धा, मिल्या माण जगत जहानया। हरि का शब्द अटल, आपे वेखे पाणी दुध्धा, अठां तत्तां वख रखानयां। हरि का शब्द अटल, गुरमुख विरले आत्म गुद्धा, तन साचा सुध्धा मिले माण जगत निशानया। हरि का शब्द अटल, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, इक्क उडाए शब्द बिबाणया। हरि का रूप अगम्म, शब्द बिबाण है। हरि का शब्द अगम्म, पुरीआं लोआं इक्क उडान है। हरि का रूप अगम्म, चारे कुन्ट दहि दिशा एका करे ध्यान है। हरि का शब्द अगम्म, साची धुन सच्ची धुनकान है। हरि का रूप अगम्म, जोती जगे बेमुहान है। हरि का शब्द अगम्म, ना दिसे कोई निशान है। हरि का रूप अगम्म, ना सके कोई पछाण है। हरि का शब्द अगम्म, जगत निमाणया देवे माण है। हरि का रूप अगम्म, राजे राणया बेमुहाणया अन्तिम आई हान है। हरि का शब्द अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात आप उठाए शाह सुल्तान है। हरि का शब्द अगम्म, सच दुकान है। हरि का रूप अगम्म, पवण मसाण है। हरि का शब्द अगम्म, ना वसे किसे मकान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई

पत्त ना कोई पत्ती, ना कोई दिसे डाहण है। हरि का रूप अगम्म, दिस ना आए तीर्थ तट्टी, अठसठ रहे ख़ाक छाण है। हरि का रूप अगम्म, किसे हथ्थ ना आए रत्ती, वेद पुरानां आए हान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई जाणे जोगी जती, आत्म धीरज होई हैरान है। हरि का शब्द अगम्म, गुरमुखां दे समझावे मती, साचा धर्म विच जहान है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई नार ना कोई पती, ना कोई दीवा ना कोई बत्ती, आत्म सभ दी होई तत्ती, कलिजुग मारे बली बलवान है। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, प्रगट होए विष्नूं भगवान है। हरि का शब्द अटल, धीर धरांयदा। हरि का शब्द अटल, अमृत आत्म साचा सीर पिलांयदा। हरि का शब्द अटल, एका तीर्थ साचा सीरथ आत्म इक्क वखांयदा। हरि का शब्द अटल, ना कोई जाणे शाह सुल्तान पीर फ़कीर, वेद पुरानां हथ्थ ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा हरि प्रगटांयदा। जोती जामा हरि बलवानया। रमईआ रामा खेल महानया। घनईआ शामा किसे ना जाणया। वज्जे एका शब्द दमामा , आप उठाए राजे राणया। आप कराए आपणा कामा, ना सके कोई पछाणया। कलिजुग होई अन्धेरी रैण शामा, लक्ख चुरासी बेमुहानया। लाड़ी मौत तेरा इक्को तामा,
७६५ आप कराए हरि भगवानया। काया झूठी झूठा चामा, आप भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक ७६५
०४ नरायण नर, गुरमुख विरले मात पछाणया। जोती जामा भेख अवल्लड़ा। लक्ख चुरासी लिखे लेख, बैठा रहे इक्क इकलड़ा। ०४
नर नरायण रिहा वेख, धरत मात तेरा सच महल्लड़ा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, गुरमुखां फड़ाए साचा पलड़ा। आप मिटाए हरिजन लिक्खी रेख, राजे राणयां हथ्थ ना आए दमड़ा। जोती जामा माझा देस, पुरख अबिनाशी साचा वेस, चल्ले चाल इक्क अवल्लड़ा। पकड़ उठाए नर नरेश, आत्म दर जाए इक्क इकल्लड़ा। पकड़ उठाए शिव शंकर गणेश, अन्तिम वेले लाहे खल्लड़ा। ब्रह्मा विष्न दर महेष, एका लाए शब्द हलड़ा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आपणी चाल चले अवल्लड़ा। ब्रह्मा विष्न महेष हरि द्वारया। प्रभ धारे जोती वेस, लोकमाती खेल अपारया। आपे जाणे आपणा वेस, साचा भेव आप छुपा रिहा। बेमुख जीव लभ्भदे फिरन गुर दस्मेश, नीले घोड़े जोड़ जुड़ा रिहा। जामा धारे माझे देस, जोती जामा हरि धरा रिहा। शब्द बहिणा जाए देस प्रदेस, वाली हिन्द हरि जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूसा चीना आप समझा रिहा। वाली हिन्द हरि समझांयदा। सदा सदा बख्शिंद, जोती जामा हरि जी पांयदा। बेमुख जीव करन निन्द, नर हरि साचा दिस ना आंयदा। राजे राणयां लाहे आत्म चिन्द, लेखा लेख आप मुकांयदा। उठ उठ सोया वाली हिन्द, प्रभ साचा आप जगांयदा। प्रगट होया वड्डा शाह मृगिन्द, दे मती हरि समझांयदा।

धरी जोत प्रभ साचे हिन्द, सत्तां दीपां वंड वंडांयदा। शब्द धार सागर सिंध, नौवां खण्डां आप रुढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची वंड आप वंडांयदा। वाली हिन्द सच सुल्तान, जगत हंकारया। प्रभ उठे नौजवान, शब्द खण्डा फड़े दो धारया। मेट मिटाए बेईमान जीव शैतान, चारों कुन्ट वारो वारया। नौ खण्ड पृथ्मी करे आप वैरान, ना देवे कोई सहारया। गुरमुख विरला लेवे सोहँ सच्चा नाम दान, खाणी बाणी कलिजुग राणी, प्रभ साचा वक्त चुकानया। साचा बख्शे चरन धूढ़ इशनान, अठसठ तीर्थ अन्तिम मेट मिटाणया। वेद पुराना आई हानी, ना सके कर पछाण, पंडत कांशी आप भुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा लेखा लिख्त लिखा रिहा। हरि साचा लेख लिख्त लिखांयदा। सोया राणा आप जगांयदा। मन्नणा पए हरि का भाणा, धुर फ़रमाना आप पुचांयदा। जोती हरि जी पहने बाणा, शाह सुल्तानां मेट मिटांयदा। कलिजुग आया लाहुण मकाणा, लक्ख चुरासी साचे खारे आप चढ़ांयदा। गुरमुखां हथ्थीं बन्न्हे गाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, सोहणा करे तन शृंगारा, शब्द तेल इक्क चढ़ांयदा। धरत मात पाणी वारे, डेरा लाए जमन किनारे, वाली हिन्द उठ जवान, प्रभ अबिनाशी जामा पांयदा। धुरदरगाही देवे सच सहारे, दो जहानां आपे वाली, चारे कुन्टां करे ख़ाली, उच्च मुनारे आपे ढाहिंदा। मन्दिर मसीतां गुरदुआरे चारों कुन्ट हाहाकारे, शब्द तीर इक्क चलांयदा। राजे राणे होण भिखारे, कोई ना देवे मात सहारे, प्रभ दर दर भिक्ख मंगांयदा। जोती जामा मात धारे, लिखे लेख अपर अपारे, वाली हिन्द जगत विचोला, सोहँ गाउणा साचा ढोला, रूसा चीना हुक्म सुणांयदा। साचा लिखे हुक्म अपार। शब्द तिक्खी रक्खे धार। कलिजुग वेला अन्तिम आया, करे आर पार। इक्क इकल्ला जामा पाया, सोलां कलीआं कर शृंगार। चिट्टा अस्व संग रलाया, करे खेल्ह हरि करतार। पहला पौड़ आप उठाया, धरत मात दब्बी भार। गौड़ ब्रह्मण दिस ना आया, जोती जामा हरि जी पाया, मात पित ना किसे जाया, एक रंग हरि करतार। आपे बणे दाई दाया, वेख वखाणे सर्ब थाँईंआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख कलि अन्तिम वेख आपणा आप लिखाया। साचा लिखे लेख प्रभ देवे मती। कलिजुग भरम भुलेखा दूजा देस, एका वगे वा तत्ती। कलिजुग सुत्ते नर नरेश, किसे ना मिल्या कमलापती। प्रगट होए माझे देस, चारे कुन्टां एका लाए जोत बत्ती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, गुरमुख साचे संत जनां दे समझावे मती। साचा नाता हरि बन्न्हांयदा। पुरख बिधाता दया कमांयदा। कलिजुग तेरी अन्धेरी राता, दीपक जोती इक्क जगांयदा। आपे पिता आपे माता, सोहँ सीर हरि प्यांयदा। आपे भैण आप भ्राता, साक सज्जण आप अखवांयदा। ना कोई जाणे जातां पातां चार वरनां एका सरना, सच द्वार खुल्हांयदा। आप चुकाए मरना

७६६
०४

डरना, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जो जन आए साची सरना, मानस देही लेखे लांयदा। धर्म राए ना पाणी भरना, लाड़ी मौत हरि दुरकांयदा। देवे वर सोहँ शब्द दानी दाना, सच बिबाणे आप चढ़ांयदा। गुरमुख विरले साची तरनी मात तरना, अन्तिम जोती मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचे लेखे लांयदा। साचे लेखे जाणा लग्ग। कलिजुग अग्न ना जाणा दग। कलिजुग वेला अन्तिम आया, प्रभ पकड़ पछाड़े शाह रग। गुरमुखां साचा मेल मिलाया, हरि रखाए लज धर्म दी साची पग्ग। आप आपणी अंस बणाया, साचा बंस मात सजाया, किरपा कर वड सूरे सरबग्ग। सोहँ साचा नाम जपाया, सतिजुग साचा राह वखाया, चरन प्रीती जाए लग्ग। फड़ फड़ बाहों पार कराया, वञ्झ मुहाणा ना कोई रखाया, तन बन्ह्णाए शब्द तग। आप आपणा दरस दिखाया, गुरमुख आत्म हरस दए मिटाया, अमृत मेघ साचा बरखे, आत्म तृखा दूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे संत जनां, साचा बेड़ा मात बणाया। साचा बेड़ा जगत नईआ। गुरमुखां बणाए भैणां भईआ। सच मलाह आप अखवईआ। आप चलाए साचा राह, धर्म राए ना मात डुबईआ। इक्क वखाए सच्चा थां, जोती नूर दूण सवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग बेड़ा पार करईआ। कलिजुग काला वेस कलि दुहाई है। प्रभ अबिनाशी धारे भेस, माझे देस वज्जी वधाई है। आप उठाए वड नरेश, लिख लिख लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, काली चोली तन छुहाईआ। कलिजुग तेरी काली चोली। आप उठाए हरि जी डोली। लक्ख चुरासी धर्म राए दी बणाए गोली। आत्म पर्दे दूर दुराडा रिहा फोली। माया राणी झूठे लड़दे, प्रभ पूरे तोल रिहा तोली। गुरमुख विरले साचे पौड़े मात चढ़दे, प्रभ आपे तोरे हौली हौली। बेमुख जीव चारों कुन्ट इक्क दूजे नाल लड़दे, आत्म जोती हरि जी खोहली। करे निबेड़े सिर धड़ दे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाई सच्ची डोली। साची डोली हरि शृंगारदा। बेमुखां नूं वाजां मारदा। कलिजुग वेला अन्तिम हँकार दा। मुक्कया वक्त संग मुहम्मद चार यार दा। ईसा मूसा प्रभ चरन निमस्कार दा। कलिजुग वेला अन्तिम आया, एका दिसे पासा हार दा। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, वाली हिन्द सच संत जगाया, देवे नाम प्याला काया उधार दा। फड़ के बाहों राहे पाया, वखाए खेल परवरदिगार दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों तारदा। काला वेस तन कलन्दरा। शब्द डोरी हरि जी रक्खे, लक्ख चुरासी फड़े बन्दरा। आपे मेटे मेट मिटाए, औलीए पीर शेख़, वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां डूंघी कन्दरा। ईसा मूसा लग्गी मेखे, लक्ख चुरासी भरम भुलेखे, प्रभ जाणे आत्म अन्दर अन्दरा। अन्तिम अन्त मिटावण आया लेखे नौवां खण्डां

७६८
०४

हरि जी वेखे, संतां दीपां तोड़े जन्दरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया मेट मिटाए गुरदुआरे दिस ना आए मसीत मन्दिरा। मसीत मन्दिर प्रभ देणे ढाह। लक्ख चुरासी फड़े बन्दर, अन्तिम वेले पाए फाह। गुरमुख साचे वाड़े अन्दर, बाहरों कुण्डा दए ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काला सूसा ईसा मूसा तेरा भेस वटा। ईसा मूसा दए दुहाई है। प्रभ पाया काला सूसा, रैण अन्धेरी मात आई है। संग मिलाए चीना रूसा, वज्जे शब्द सच्ची शहिनाई है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साची बणत बणाई है। सच मन्दिर हरि उसारया। जोत जगाई अन्दरे अन्दर, नौवें दर बन्द करवा रिहा। होए प्रकाश डूंघी कन्दर, साची जोत हरि धरा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी बणत बणा रिहा। साचे मन्दिर तेरी धार। पुरख अबिनाशी पाए सार। नावें खेल्हे दर द्वार। पहले डेरा इक्क रखाए, पंचम् पोह नींह रखाए, शब्द डोरी हरि जी पाए, मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। दूजे दर हरि दया कमाई। लोकमात देवे वड्याई। गुरमुखां मस्तक लाहे काली झूठी छाही। गुरमुखां लेख लिखावण आया, पार कराए फड़ के बाहीं। औलीए पीर शेख़ मिटावण आया, चौदां तबकां रिहा हिलाई। जोती जोत सरूप हरि, सच्चे दर डेरा लाई। साचा मन्दिर हरि द्वार। पुरख अबिनाशी जोत अकार तीजे घर पावे सार। रिद्धां सिद्धां कर ख्वार। गुरमुखां आत्म एका विधा, मारे तीर शब्द कटार। सच दुआरा राह सिध्धा, आप वखाए हरि निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जामा धार। चौथा घर हरि दुआरा। प्रभ अबिनाशी साची धारा। एका पवण दूजा शब्द तीजी जोती कर अकारा। चौथा बणाए वरन गोती, तिन्नां मेल इक्क प्यार। चौथे दर मार ध्यान। कलिजुग वेखे ब्रह्म ज्ञान। खाणी बाणी वेख पछाणे, नाल रलाए अञ्जील कुरान। वेद पुरानां ना मिले पाणी, गंगा गोदावरी आई हान। शब्द चलाए सच्ची बाणी, अठसठ तीर्थ रहे ख़ाक छाण। गुरमुखां देवे नाम निधानी, हरि भगवान आप चढ़ाए शब्द बिबाण। बेमुखां मारे तीर कानी, मिटदी जाए जगत निशानी, मेट मिटाए शाह ईरान। माया राणी भरया पाणी, ना कोई दिसे हाणीआं हाणी, करे खेल गुण निधानी, सोहँ शब्द सच मधाणी, गुरमुख विरोले साचे लाल। सृष्ट सबाई दए दुहाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल रहण ना देवे किसे डाल। चौथे घर सति संतोखया। गुरमुख साचे संत जनां, प्रभ देवे साची मोखया। एका मिले नाम धनां, कलिजुग काया मिटे दोखया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे वसे साचे घर, गुरमुख साचे संत, दर घर साचे देख्या। चौथे घर खेल रचा के। लक्ख चुरासी बणत बणा के। पवण स्वास विच टिका के। शब्द धरवास इक्क दवा के। साची जोत करे प्रकाश, आप आपणी विच टिका के। जोती जोत सरूप हरि, चौथा दर साचा

घर, लोकमाती मिले वर, अन्तिम वेले बन्द कर, पंचम् जाए घनकपुर वासी। पंचम् घर हरि निरँकारा। आपे खोले बन्द कुआड़ा। शब्द जिंदा लाया भारा। ना कोई जाणे सुरपति राजा इन्दा, करोड़ तेतीसा रहे पुकारा। शिव शंकर हरि बख्शिंदा, ना पाए प्रभ दी सारा। ब्रह्मा उतप्त कराए लोकमात उज्जयारा। कँवल नाभी अमृत धारा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे राह साचा दस्से कदे गुप्त कदे ज़ाहरा। पंचम् घर हरि सुहाया। उनन्जा पवण सेवा लाया। साचा छत्र सीस झुलाया। सच सिँघासण डेरा लाया। गुरूआं पीरां दिस ना आया। एका आपणे रंग समाया। रूप रंग ना कोई रखाया। जोती भेख दूण सवाया। आपणा आप प्रभ रिहा वेख, दीपक साची जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे विच समाया। पंचम् घर कर त्यारी। छेवें बोले हरि निरँकारी। शब्द सुणाए साचे ढोले, उपजे धुन सच्ची धुन्कारी। लक्ख चुरासी बणाए गोले, हुक्म सुणाए वारो वारी। अन्दर बाहर आपे बोले, पीर पैगम्बर औलीए शेख़ मुसायक इक्क रखाए दर दरबारी। पूरे तोल हरि जी तोले, अट्ठे पहर कदे ना डोले, वसे काया पड़दे ओहले, करे खेल अपर अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचे अन्दर जगत मन्दिर निर्मल जोत करे अकारी। साचे शब्द सच टिकाणा। छेवें घर इक्क बिबाणा। चारों कुन्टां हरि उडाना। दहि दिशा हरि भेव खुल्लाना। वेख वखाणे सर्ब किछ जाणे ज़िमी अस्माना। मात पताल अकाश घट घटा, दरस श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द चलाए इक्क तराना। शब्द तराना हरि दातार। ना कोई सुरंगा ना कोई तार। दूजा वर ना कोई मंगा, ना कोई बणाया तीजा यार। चौथे घर साचा रंगा, गुरमुखां चाढ़े अपर अपार। पंजवें घर साचा संगा, मिल्या मेल कन्त भतार। छेवें घर शब्द मृदंगा, आप वजाए नर निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, सच सिँघासण कर अकार। छेवें घर शब्द जणाईआ। गुरमुखां मिले वर, प्रभ साची दया कमाईआ। आप चुकाए जम का डर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, एका जोत हरि रघुराईआ। साचा खोले मात दर, नौ दुआरे बणत बणाईआ। गुरमुखां वखाए इक्क घर, सच सिँघासण आसण डेरा लाईआ। बेमुखां जीवां आवे डर, निहकलंक दए सजाईआ। पकड़ उठाए राउ रंक, साचा रिहा डंक वजाईआ। इक्क सुहाए द्वार बंक, सिँघ जगदीशे तेरी बणत बणाईआ। साचा छत्र झुलाए सीसे, राजे राणे हरि सरनाईआ। भेव मिटाए बीस इकीसे, लोकमाती सच्ची वड्डयाईआ। इक्क चलाए शब्द हदीसे, सोहँ अंक हरि रघुराईआ। कलिजुग जीव माया चक्की झूठी पीसे, घर घर देण दुहाईआ। मेट मिटाए मूसे ईसे, अञ्जील कुरान अन्त खपाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साच घर रिहा जोत जगाईआ। छेवां दर हरि तजाए। सतवें घर आसण लाए। जोती नूर डगमगाए।

७६६
०४

चारे कुन्टां करे रुशनाए। एका सति सरूप, हरि अनूप वड शाहो भूप, सच सिँघासण आप सुहाए। ना कोई रंग ना कोई रूप, होए ना कदे अन्ध कूप, जोती नूर डगमगाए। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, अटल महल्ल अचल्ल सच सिँघासण डेरा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात जोत धर, आप आपणा भेख वटाए। अट्ठवें घर अट्ठे हरि तत्त है। गुरमुखां रिहा समझाए, सोहँ शब्द देवे मति है। एका बख्शे सच सरनाए, मानस देही लेखे लाए, ना उब्बले काया रत्त है। साचे घर आप वसाए, अन्तिम जोती मेल मिलाए, साचे घर आप बहाए, ना कोई वेखे उत्ते छत्त है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा मात धर, गुरमुखां रक्खण आया पति है। नावें घर जीव गंवार। आत्म भरया इक्क हँकार। माया राणी वड विभचार। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार। मन मति दुष्ट दुराचार। आत्म तोड़े धीरज जति, कलिजुग भुल्ले नर नार। गुरमुख विरले देवे मति, साचा शब्द अपर अपार। आप चलाए काया रथ, कलिजुग भुल्ले जीव गंवार। मानस देही एका तत्त, लक्ख चुरासी बध्धी धार। पंजां चोरां पाए नत्थ, शब्द फड़े हत्थ मुहार। अट्ठे पहर रिहा मथ, दो जहानां दए हुलार। गुरमुख साचे आप तराए, दया कमाए रक्खे दे कर हत्थ, कलिजुग बेड़ा कर जाए पार। सगल वसूरे जायण लत्थ, जो जन आए सच दरबार। पुरख अबिनाशी देवे साची वथ, सोहँ वस्त अपर अपार। त्रैलोकी नाथी सगला साथी, आत्म तन कराए इक्क शृंगार। साचा लेखा लेख लिखाई माथी, शब्द तीर तिक्खी धार। एका अकत्थ अकत्थना अकाथी, आपे जाणे आपणी सार। वेख वखाणे ऐराप्त हाथी, प्रभ अबिनाशी कर शृंगार। लक्ख चुरासी खिच्च ल्याए, धर्म राए दे दर दरबार। मेट मिटाए मदिरा मासी, धर्म राए दी सुण पुकार। प्रगट होए घनकपुर वासी, कलिजुग होए अन्ध अंध्यार। गुरमुख साचे लए जगा, पवण स्वासी शब्द चला, एका साचा राह वखा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करे रहिरासी, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। हरि हरि सच्चा द्वार हरि निरंकारया। हरि हरि सच्चा घर बाहर, एका आप सुहा रिहा। हरि हरि सदा सिक्दार, साचे लेख आप लिखा रिहा। हरि हरि सच्चा कन्त भतार, सृष्ट सबाई नाता इक्क रखा रिहा। हरि हरि सच्चा वणज वपार, तिन्नां लोआं आप करा रिहा। हरि हरि सच्चा शब्द अधार, गुरमुखां मति दवा रिहा। हरि हरि सच्चा शब्द पसार, जोती नूर इक्क करा रिहा। हरि हरि सच महल्ल उसार, पुरीआं लोआं आप टिका रिहा। हरि हरि आप उपजाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जल थल साची बणत बणा रिहा। हरि हरि वसे एका साचे घर, दिस किसे ना आ रिहा। हरि हरि हरि निरंकारया। जोती जामा भेख न्यारया। सच महल्ल इक्क उसारया। सदा अटल जुगो जुग बणत बणा रिहा। मात जोत धर, आए वारो वारया। लेखा आपणे हत्थ रखा रिहा। माया राणी

साचा ताणा, पुरीआं लोआं आप बंधा रिहा। माया राणी तणया जाल। चौदां लोक विच बंधाए मात पताल। अकाश गगन पताल लक्ख चुरासी विच लगाए, सूरज चन्द दीपक जोती साचे थाल। साचा मण्डप आप सुहाए, सदा नवेला अवल्लड़ी चाल। मातलोक हरि बणत बणाए, धरत उपजाई, प्रभ अबिनाशी आप रखाए आपणे नाल। सच दाता हरि झोली पाई, साची ख़ाक दस्त कमाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच विचोला, तिन्नां लोआं बणया आप दलाल। धरत भरया इक्क प्याला है। प्रगट होया दीन दयाला है। अग्नी खिच्चे जोत ज्वाला है। गुरमुखां काया सिंचे, अमृत देवे साची मध, अट्ठे पहर रहे मतवाला है। छब्बी पोह घर साचे ल्या सद्द, बणया आप रखवाला है। आत्म वजदा रहे नद, ना लग्गे हड्डी पाला है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां आत्म जोती धरे नूर निराला है। अमृत साची धार मस्त मस्तानया। प्रभ देवे कर प्यार, काया करे ठंडी ठार, मिटाए तृष्ना आग, कलिजुग भेख दूर कर, काया शब्द बन्न्हे साचा तग, ना कोई मात तुड़ानया। चरन प्रीती जाए लग, दर घर साचे साचा माण रखानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत जाम प्याए। अमृत धार अपार, जगत वणजारया। काया करे ठंडी ठार, कामी क्रोधी कुष्टी दुष्ट दुराचारया। इक्क निभाए सच्ची यारी, अट्ठे पहर देवे पहरया। पंजां चोरां दए बहारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धारया। अमृत सच्चा जाम, काया नूर है। दूजा कोई ना लग्गे दाम, पूरन करे काम, गुरमुख आत्म सदा भरपूरया। पूरन इच्छया पूरन काम, प्रभ आप कराए सर्ब गुणां भरपूर है। कोई ना लाए दर घर सच्चे दाम, वड दाता हरि सूरबीरया। सुक्का कराए हरया चाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जोती नूरया। साचा अमृत पीण दर। आत्म दर मिले वर। साचे घर भरे भण्डार, नारी नारा जायण तर। शब्द श्रृंगारा देवे हरि, अमृत धारा ठंडी कर। काया छिड़के पंजां चोरां रिड़के, शब्द मधाणी हथ्थ फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, आपे वेखे माया कढ्ढे भरम भुलेखे, सच सिँघासण बैठा चढ़। सच सिँघासण अमृत धार। निझर रस अपर अपार। गुरमुखां लैणां हस्स हस्स, आए हरि द्वार प्रभ साचा राह रिहा दस्स, चार वरनां इक्क प्यार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए वणज वपार। साचा राह इक्क वखाया। चार वरनी सिख उपजाया। एका धर्म साचा धरनी, धरत मात हरि दए जगाया। पुरख अबिनाशी साचा वरनां साची वरनी, लक्ख चुरासी दए मिटाया। उचां नीचां एका सरनी, जात पात हरि लेख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख निहकलंक नरायण नर, आपणा आपे पाया। बूंद रक्ती हरि जणांयदा। साची शक्ती इक्क समझांयदा। मुक्ती जुगती आपणे हथ्थ रखांयदा। सोहँ शब्द महाराज शेर सिँघ

७७१
०४

विष्नूं भगवान, जो जन रसना गांयदा। सतिजुग साची धार भगत वड्डयाईआ। सतिजुग साची धार, खेल रघुराईआ। सतिजुग साची धार, शब्द बिबाण इक्क रखाईआ। सतिजुग साची धार, धुरदरगाही साचा फ़ुरमाणा, लोकमत रिहा सुणाईआ। सतिजुग साची धारा, आप उठाए राजा राणा शाह सुल्तानां , शब्द धार इक्क रखाईआ। सतिजुग साचे तेरी धार, प्रगट होए गुण निधाना हरि भगवाना, जोती दीपक इक्क जगाईआ। सतिजुग साची धार, विच संसार, प्रभ अबिनाशी देवे माणा, सोहँ शब्द नाल रखाईआ। सतिजुग साची धार, वेख वखाणे सुघड़ स्याणे, गुरमुख साचे संत रिहा जगाईआ। सतिजुग साची धार, पहली वार, कलिजुग पापी कर ख़बरदार, गुरमुखां आत्म झोली रिहा भराईआ। सतिजुग साची धार, लक्ख चुरासी करनी मात ख्वार, धरत मात दा बण दुलार, साची गोदी आप बिठाईआ। सतिजुग साची धार, गुरमुखां पूर्ब कर्म रिहा विचार, आपे फड़े तेरी बाहींआ। सतिजुग साची धार, वेख वखाणे बिरध बाल नौजवान, एका धार वहाईआ। सतिजुग तेरी साची धार, ना कोई जाणे चार यार, संग मुहम्मद नाता तुट्टा, नट्ठे जाण वाहो दाहीआ। सतिजुग तेरी साची धार, कुरान अंजीलां नाता तुट्टा विच संसार, कोई ना देवे अन्त प्यार, चारों कुन्ट रिहा कुरलाईआ। सतिजुग तेरी साची धार, सोहँ खण्डा कर त्यार, प्रभ अबिनाशी साची जोत जगाईआ। साचे घर हो त्यार, चिट्टे अस्व सोलां कलीआं पा पलाणा हरि
७७२ ०४
७७२ ०४
भगवाना गुरमुखां बणे पहरेदार, बन्न्हण आए राजा राणा, प्रभ अबिनाशी शाह सुल्ताना, एका रक्खे तीर निशाना, रसन कमान इक्क उठाईआ। लक्ख चुरासी बन्न्हे गाना, करे खेल जगत महाना, लाड़ी मौत ख़ुशी मनाईआ। प्रभ अबिनाशी बीना दाना, गुरमुखां देवे नाम निशाना, अट्ठे पहर रहे समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विछोड़ा शब्द घोड़ा, एका एक रखाईआ। शब्द घोड़ा हरि करतारया। चिट्टा जोड़ा सतिजुग तेरी धार बन्न्हा रिहा। धुरदरगाही साचा माही लोकमात वागां मोड़ रिहा। कलिजुग तेरा चौथा डण्डा, आप मुकाए अन्तिम कंडा, एका धक्का ला रिहा। नौ खण्ड पृथमी पाए वंडा, आप मिटाए जगत पखण्डा, शब्द खण्डा हथ्थ उठा रिहा। आप चलाए चण्ड प्रचण्डा, बेमुखां देवे हरि जी दंडा, करे खेल विच वरभण्डा, अठसठ तीर्थ हरि हिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, छोटे बाले जगत कंगाले, प्रभ अबिनाशी आपे पाले, साचे धाम सुहा रिहा। छोटे बाले कर प्यार। प्रभ अबिनाशी विच संसार , घनकपुर वासी किया खेल अपर अपार। मेट मिटाए मदिरा मासी, चार वरन चलाए एका धार। साची जोत मात प्रकाशी, चौदां लोक इक्क विचार। वड समेरू शब्द घेरा, चारों कुन्ट लाए फेरा, करे ख़बरदार। ना कोई दीसे सन्झ सवेरा, माया राणी भरमां डेरा, आपे रिहा निवार। गुरमुख चुकाए मेरा तेरा, दरस दिखाए पहली वेरा, किरपा कर हरि

गिरधार। नर अवतारी चवीआं फेरा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। वेद व्यासा लेख लिखासा, नानक गया मात पुकार। गुर गोबिन्दा दए दिलासा, गुरमुखां रहणा ख़बरदार। कलिजुग वेला अन्तिम आए, प्रभ अबिनाशी संत जगाए, शब्द पहनाए फूलन हार। साचा मेल कन्त मिलाए, आदि अन्त एह बणत बणाए, जीव जन्त ना जाणे राए, सोलां करे तन श्रृंगार। गुरमुख विरले साचे तीर्थ नावॣण नहाए। पतित पावन धारे भेख जिउँ बल बावन, गुरमुखां डेरा आप सुहाए। एका जोत रमईआ रामन, दुष्ट हँकारी आप खपाए। अंमित बरखे साचा सावण, गुरमुखां आत्म अग्नी तृखा मिटाए। अन्तिम वेले पकड़े दामन, संत मनी सिँघ साचा लेख लिखा, निहकलंकी जोत जगाए। राजे राणया देवे सिक्खा, अनन्दपुरी हरि डेरा लाए। अन्तिम मिले ना किसे भिक्खा, बेमुख होए कलिजुग जीव मायाधारी जगत गंवार वाहो दाही रहे हलकाए। प्रभ अबिनाशी एका फड़या तीर तिक्खा, सोहँ साचा नाम रखाए। हथ्थ ना आए मुनी रिखा, पीर दस्तगीर रहे कुरलाए। गुरमुखां लाहे आत्म विखा, बेमुखां आत्म नीर वहाए। गुरमुखां देवे साची भिक्खा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाए। साचा नाम धुर फ़रमानयां। साचा नाम हरि भगवानयां। साचा नाम आदि अन्त विच जहानया। साचा नाम मिटाए अन्धेरी शाम, जोत जगाए कोटन भानया। साचा नाम आत्म पूर कराए काम, साचा देवे ब्रह्म ज्ञानया। साचा नाम कोई ना मंगे एथे दाम,
७७३ मिले मेल पुरख सुजानयां। साचा नाम काया सुक्का हरया करे चाम, अमृत साचा जाम प्याए, किरपा कर वड मेहरबानया। ७७३
०४ जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आप आपणी बणत बणा रिहा। हरि का नाम अटल, ०४
जगत विस्थारया। वसे निहचल धाम अटल, अखल्ल ना किसे विचारया। प्रभ आप रहाए दया कमाए, विच टिकाए जल थल, साचे भाणे आप समा रिहा। नौ दस ग्यारां बीस तीस चार, लेखा आप लिखा रिहा। लक्ख चुरासी मिटे, एका छत्र झूले सीसा, हरि जगदीशा जोत जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, साचा भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। उठ उठ जाग, हरिभगत वणजारया। उठ उठ जाग, प्रभ खोल्हे सच द्वारया। उठ उठ जाग, आत्म छड्ड झूठा हंकारया। उठ उठ जाग, नाता तुटे मोह माया विच संसारया। उठ उठ जाग, प्रभ चरनी जाणा छोह, खुल्हे भेव अपर अपारया। उठ उठ जाग, अवर ना दीसे को, एका जोत जगा रिहा। उठ उठ जाग, आत्म नीर साचा रो, जगत नीर क्यों वहा रिहा। उठ उठ जाग, धो आपणा पिछला दाग, जुग त्रेता फेर सुहा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ लाए काया भाग, दीपक जोती विच टिका रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ हँस बणाए काग, सोहँ मोती चोग चुगा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ पकड़े तेरी वाग, साचा राह इक्क वखा रिहा। उठ उठ जाग, प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, साची बणत

मात बणा रिहा। उठ उठ जाग, सुण साचा राग तुटे मुन खुल्हे सुन्न, प्रभ साचा शब्द सुणा रिहा। उठ उठ जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत विछोड़ा आपणा आप गंवा रिहा। उठ उठ जाग, वक्त सुहेलड़ा। उठ उठ जाग, पूरन होए भाग प्रभ मिल्या इक्क इकेलड़ा। धुरदरगाही साचा माही नौजवाना बली बलवानां वड अभेदड़ा। शब्द रक्खे नाम मस्ताना, आत्म बन्न्हे हरि जी गाना, साचा बख्शे चरन ध्याना, आपे बणे सज्जण सुहेलड़ा। सोहँ शब्द पीणा खाणा, सदा जीणा नाउँ रखाना, तन पट काया चोली आपणी हथ्थीं आप सवाणा, प्रभ आप कराया आपणा महल्लड़ा। साचा शब्द रसना गाणा। छत्ती रागां माण गंवाणा। बत्ती दन्दी हरि जी ध्याणा। रसना होए ना गन्दी, मदिरा मास मुख ना लाउणा। आत्म चढ़े चन्द नौंचन्दी, मस्सया अन्धेर आप मिटाउणा। खुशी कराए बन्द बन्दी, जगत विकार झूठी धन्दी, आप मिटाए भरमी कंधी, नावें दर बन्द कराना। प्रभ अबिनाशी सद बख्शंदी, सोहँ शब्द पाए फंदी, लक्ख चुरासी होई अन्धी, गुरमुख साचे साचे धाम, दसवें घर दस्से इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संत सुहेला इक्क इकेला, मिल्या मेल श्री भगवाना। उठ उठ उठ जाग, शब्द वणजारया। उठ उठ उठ जाग, प्रभ साचा बख्शे चरन प्यारया। उठ उठ उठ जाग, हरि देवे चरन धूढ़, जीव जन्त मूढ़, चतुर सुघड़ स्याणया। उठ उठ उठ जाग, लक्ख चुरासी कूड़ो कूड़, साचा नूर इक्क भगवानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हरि दर दुलारे, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानया। सच ब्रह्म हरि ध्यान है। साचा कर्म धर्म निशान है। मानस देही साचा जरम, लक्ख चुरासी फंद कटान है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे मेल, दर दुआरे दयावान है। नेत्र नीर सच वरोल्लया। प्रभ साचे पड़दा फोल्लया। साचा सीर चरन दुआरे डोल्लया। कटे हउमे पीड़, शब्द जैकारा एका बोल्लया। आपे बन्न्हे मात बीड़, प्रभ पूरा तोल तोल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर साचे घर, गुरमुख साचे आप खोल्ल्हया। खोल्हे दर मिटे अन्धयारा। साची जोत करे उज्जयारा। देवे नाम वस्त अपारा। सोहँ शब्द सच्ची सरकारा। पवण जोती इक्क हुलारा। तिन्ना मेल सच घर बाहरा। दसवें घर हरि जी सुत्ता, साची सेजा आपणी दोए पैर पसार। आप सुहाए गुरमुख तेरी काया साची रुत्ता, अमृत फल लगाए कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी ख़ाली दिसे बुत्ता, जोती जगे ना हरि करतारा। मदिरा मासी पापी कुत्ता, चारों कुन्ट फिरे हलकारा हरिभगत दर दुआरे जाए सुत्ता, प्रभ अट्ठे पहर देवे पहरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच्चा नाम वर, मेट मिटाए पंचां कायरां। पंजां पाए हथ्थकड़ी शब्द डोर है। साचा देवे नाम धन, ना लग्गे कोई चोर है। गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न, धर्म राए ना देवे डन्न, आप आपणा नाल रिहा तोर है। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, पंजां धाड़ परे हटाए, आत्म दर ना पाए कोई शोर है। छब्बी पोह खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे संत जनां, देवे मात वड्डयाईआ। एका देवे नाम धना, आत्म भुक्ख रहे ना राईआ। कोई ना लग्गे मात संन्हा, ठग चोर ना कोई चुराईआ। प्रभ अभिनाशी बेड़ा सच बन्न्हा, भार आपणे सीस उठाईआ। इक्क सुणाया राग कन्ना, राग छतीस लेख मुकाईआ। गुरमुख चढ़ाया साचा चन्ना, सिँघ जगदीश साची सेवा लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा मन्दिर आप सुहाईआ। छब्बी पोह दिवस सुहा के। गुरमुख साचे संत जगा के। सोहँ साचा जाप जपा के। दर घर साचे आए मंगण, साचे सर सरोवर तीर्थ नाहवण जायण नुहा के। आप रखाए आपणे अंगण, दूजा दर कोई ना मंगण, साचा मेला पार गगन। प्रभ शब्द पहनाए हथ्थ कंगण, देवे माण विच संसार, दीपक जोती साचे जगण। अट्ठे पहर रहे मग्न। सोहँ शब्द मुख लगाए सगन। हरिजन साचे चरनी लग्गण। मिल्या एका हर भतारा, बेमुख जीव झूठे वहिण वगण। कलिजुग माया लग्गी अग्न। काया मन्दिर झूठा द्वार गुरमुखां बन्न्हे साचे तगन। लक्ख चुरासी होई नग्न। शब्द लगाए मगर धाड़, गुरमुखां लगाए साची लग्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए सतारां हाढ़। साचा दरबार कर त्यार। छब्बी पोह कर विचार। गुरमुखां देवे नाम अपार। आत्म सुख दस्म दुआर। उलटा रुक्ख गर्भ अंध्यार। उज्जल करे मात कुक्ख, लक्ख चुरासी पार किनार। जोती धूंआं साचा धुक्खे अन्दर बाहर। गुरमुखां करे सुफल कुक्खे, मिल्या मेल सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां लोकमात पावण आया सार।

❇ २८ पोह २०११ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ❇

चार वरन सरकार हरि निरंकारया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, दहि दिशा पावे सारया। शब्द डोला कर त्यार, लोकमात आवे जावे वारो वारया। साचा चोला तन शृंगार, जोती जामा हरि उपा रिहा। गुरमुख सुण रिहा पुकार, साचा भाणा हरि सुहा रिहा। साची बन्न्हे मात धार, लहणा देणा आप चुका रिहा। कलिजुग चली अवल्लड़ी चाल, शब्द तीर लगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी बणत बणा रिहा। साची बणत बणाए जगत समझांयदा। जोती जामा हरि जी पाए, दिस ना आंयदा। पूर कराए आपणा काम, नौ खण्ड पृथ्मी, लोकमात साचा हुक्म सुणांयदा। मिटाए रैण अन्धेरी रात, जोती नूर इक्क करांयदा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वात, शब्दी मेला आप मिलांयदा। आपे गुर आपे चेला, पारब्रह्म सच खेल खेला, कलिजुग जीवां वक्त दुहेला, दे मति ना कोई समझांयदा। कलिजुग जीव जगत

गंवार, चारों कुन्ट पैणी मार, शब्द डण्डा हरि हथ्थ उठाए। पूर्ब करे हरि विचार, कलिजुग धक्का एका लाए। मातलोक विच्चों होए बाहर, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप बणत बणाए। कलिजुग उठ कर त्यारी। अन्तिम आई तेरी वारी। लक्ख चुरासी गई हारी। मदिरा मासी करन ख्वारी। घर घर दर दर फिरे दुहागण नारी। गुरमुख साचा सच सुहेला साचा मेला निरगुण रूप इक्क अपारी। जोती जामा हरि भगवाना, साचा खेल नौजवाना, ना कोई जाणे जंत गंवारी। शब्द तीर रसन कमाना, खिच्चे हरि बली बलवाना, लोआं पुरीआं जाए पाड़ी। सिध्धा रक्खे इक्क निशाना, बेमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, लाड़ी मौत साची घोड़ी जाए चाढ़ी। आप चुकाए पीणा खाणा, ना कोई दिसे जीव शैताना, इक्क रखाए शब्द आणा, अग्ग लगाए बहत्तर नाड़ी। गुरमुखां देवे नाम शब्द बिबाणा, चारों कुन्टां इक्क उडाना, जोती मेल आप मिलाना, साचे दर हरि बहांयदा। आपे गोपी आपे कान्हा, आपे शब्द आप तराना, आपे रंग रंगीला माधव, रंग आपणे हरि समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा इक्क धरांयदा। जोती जामा मात बलकारया। मेट मिटाए वरन गोती, एका धार हरि बन्ना रिहा। गुरमुखां उठाए आत्म सोती, शब्द हलूणा इक्क दवा रिहा। आप बणाए माणक साचे मोती, साची जोती विच टिका, दुरमति मैल जाए धोती, जन आए सरन निमस्कारया। लक्ख चुरासी घर घर रोती, ना मिले कन्त भतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, देवे नाम अपर अपारया। साचा नाम अपार, वस्त धुरदरगाहीआ। प्रभ अबिनाशी लै के आया कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साची रुत्त सुहाईआ। शब्दी चोला तन श्रृंगार, सोलां कलीआं हरि दातार, आपणी बणत आप बणाईआ। ना कोई जाणे जीव गंवार, साध संत होए ख्वार, प्रभ अबिनाशी भेव ना पाईआ। एका जोती आदि अन्त हरि भगवन्त, गुरमुखां मेल मिलाईआ। आप बणाए साची बणत, महिंमा जगत सदा अगणत, ना लेखा कोई लिखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती भेख शब्द कटारया। ना कोई रूप ना कोई रेख, लोआं पुरीआं हरि पसारया। कलिजुग जीव चारों कुन्ट रहे वेख, प्रभ अबिनाशी केहड़ी कूटे जामा धारया। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, माया भुल्ले जीव हंकारया। गुरमुखां लिखाए प्रभ साचा लेख, देवे दरस अगम्म अगोचर, अनाद अनादी जोत उजाला, हरि कृपाला आपे आप करा रिहा। चुकाए भेव ब्रह्म ब्रह्मादी, शब्द नादी इक्क सुणा रिहा। शब्द चले बोध अगाधी, साध संत कोए भेव ना पा रिहा। गुरमुख साचे संत जनां, देवे शब्द साची दाद, आत्म झोली हरि भरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। देवे शब्द दात जगत वड्याआ। मिटाए अन्धरी

७७६
०४

रात, आत्म जोती इक्क जगाईआ। सोहँ शब्द सच सुगात, सतिजुग तेरे हिस्से आईआ। प्रभ आप धराए लोकमात, गुरमुखां वंड कराईआ। चारे कुन्टां मारे झात, दहि दिशा पुरीआं लोआं मात पताल अकाश गगन पतालां सार ना पाईआ। कुरान अञ्जीलां वेद पुरानां, खाणी बाणी साची राणी बेमुहाणी, प्रभ साचा रसना गाईआ। आपे तणया ताणा जाली, दीपक जोत मस्तक थाली, शब्द फल काया डाली, बेमुख जीवां हथ्थ ना आईआ। कलिजुग चले चाल निराली, दोवां हथ्थां रक्खे ख़ाली, शब्द डोरी इक्क रखाईआ। धरत मात तेरा साचा माली, अट्ठे पहर करे रखवाली, शब्द रक्खे विच दलाली, गुरमुखां संग निभाईआ। सच्चा नाम हक्क हलाली, आत्म नूर जोत जलाली, मिटे रैण अन्धेरी काली, साची जोती आप जगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख दुरमति मैल आत्म धो, साचा बीज बो, सच सरोवर अमृत ताल ठंडा नीर चवाईआ। अमृत साचा ताल ठंडा नीरया। गुरमुख विरला मारे छाल, होए ठंडा कलि सरीरया। काया बूटा रिहा पाल, वेला अन्त अखीरया। कोई ना निभे किसे नाल, भुल्ले फिरदे पीर फ़कीरया। ना कोई तोड़े जगत जंजाल, शाह सुल्तान हकीरया। राजे राणे होए कंगाल, आत्म तुट्टी धीरया। प्रभ आपे रिहा आपणी सुरत संभाल, फड़ फड़ बन्ने शब्द जंजीरया। जगत अवल्लड़ी चले चाल, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां कटे मात भीड़या। गुरमुखां कटे भीड़ सदा सहाई

७७७
०४

है। प्रभ बन्नृण आया बीड़, देवे मात वड्याई है। हउमे विच्चों कढ्ढे पीड़, देवे सदा सच्ची धुनकाई है। ना कोई हस्त ना कोई कीड़ एका रंग हरि रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साची बणत रिहा बणाईआ। साची बणत बणाए दया कमांयदा। महिंमा अगणत गणी ना जाए, आप आपणा भेव छुपांयदा। संत मनी सिँघ लेख लिखाए, अन्तिम कलिजुग पूर करांयदा। राउ राजान शाह सुल्तान, विच जहान फड़ फड़ आप उठांयदा। सुत्ता कोई रहि ना जाए, शब्द बिबाण इक्क उडाण, कर ध्यान चारों कुन्ट वेख वखांयदा। इक्क झुलाए धर्म निशान, मेट मिटाए बेईमान, ठग्गां चोरां यारां शब्द डण्डा सीस लगांयदा। ना कोई पढ़े अंज़ील कुरान, वेद पुरानां आई हान, कलिजुग लाहे अन्त मकान, जोती जामा हरि रखांयदा। सोहँ शब्द सच्ची आण, देवे दात हरि भगवान, दरगहि साची साचा माण, जो जन मात रसना गांयदा। लक्ख चुरासी फंद कटान, अट्ठे पहर हरि मेहरबान, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे सद समांयदा। हरि भाणा बलवान कोए ना जाणदा। वड शाह सुल्तान, वाली दो जहान दा। रंग आपणा आपे माणदा। करे खेल जगत महान, किसे हथ्थ ना आए राग छतीस रसना गाण। वेद पुरान पढ़ पढ़ थक्के, पंडत कांशी गीता ज्ञान। मुल्लां काजी वड वड पाजी, शब्द निमाज़ां वेख वखानण अञ्जील कुरान। प्रभ चिट्टे अस्व चढ़या ताजी, ना देखे कोई निशान।

घर घर डोले शाह गाज़ी, उठे जोधा सूरा वड बली बलवान। गुरमुखां रक्खे हरि लाजी, आपे मारे शब्द अवाजी, देवे नाम गुण निधान। अन्तिम वेले पर्दे काजी, काया साजण जिस ने साजी, आत्म जोती शब्द बिबाण। पवण स्वासी हरि भगवाना। एका बख्शे जीआ दाना। ना कोई जाणे जीव निधाना। जोती जामा कृष्ना कान्हा। विष्नूं बंसी साचा अंसी, हरि हरि श्री भगवाना। नर हरि निरंकारया। नर हरि जोत अधारया। नर हरि शब्द अधारया। नर हरि ना किसे विचारया। नर हरि आप आपणी जाणे खेल, साचा रंग आप वरता रिहा। लक्ख चुरासी चाढ़े तेल, लाड़ी मौत नाल प्रना रिहा। धर्म राए ना देवे फ़ासी, अठाई कुण्डां नर्क भरा रिहा। मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द खण्डा हथ्थ उठा रिहा। प्रगट होए घनकपुर वासी, साची जोत मात प्रकाशी, मात पताल अकाश, एका रंग रंगा रिहा। जन भगत होया आत्म दासी शब्द स्वास मानस देही लेखे ला रिहा। सच मण्डल दी साची रास, सदा वसे आस पास, सदा सहाई हरि रघुराई आप अख्वा रिहा। पवण उनन्जा देवे स्वास, साल बवंजा शाहो शाबाश, अट्ठे पहर बहे उदास, काया मण्डप देह तजाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जामा भेख धर, मात साची बणत बणाईआ। करन करावण जोग हरि निरंकारया। रसना रस झूठा भोग, कलिजुग जीव गंवारया। एका दरस हरि अमोघ, लक्ख चुरासी करे पारया। हउमे काटे काया रोग, अमृत देवे साची धारया। गुरमुखां लिख्या धुर संजोग, मिले मेल कन्त भतारया। लोकमात ना होए विजोग, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद समा रिहा। हरि भाणा अचल, ना कोई जणांयदा। निहचल धाम अटल, हरि साचा दरस दिखांयदा। वेख वखाणे जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कन्दर उचे मन्दिर गोरख मच्छन्दर, उचे टिल्ले आप हिलांयदा। गुरमुखां जोत जगाए अन्दरे अन्दर, लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, काया अन्धेरी साचा मन्दिर, प्रभ अबिनाशी दिस ना आंयदा। गुरमुखां तोड़े साचा जन्दर, करे प्रकाश काया कन्दर, दीपक जोती इक्क जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत सुहेले, कलिजुग मेले, आपे आप करांयदा। मिल्या मेल हरि बनवारी। पारब्रह्म कलि खेले खेल। जोती जामा खेल न्यारी। गुरमुखां कटे धर्म राए दी झूठी जेल्ह, शब्द देवे सच उडारी। धरत मात तेरी साची वेल, गुरमुख साचे संत दुलारे, फुल्ल फुलवाड़ी साची वाड़ी, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, लोकमात उपांयदा। मानस जन्म करे रहिरासी, हरि हरि जन संत सुहेला, साची बणत बणांयदा। सदा वसे इक्क इकेला, दिस किसे ना आंयदा। आपे गुर आपे चेला, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, आपणा आप सुहांयदा। आपे गुर आपे करतार। लिख्या धुर सच्ची सरकार। चरन प्रीती गई जुड़, दो जहानां शब्द एका धार। लक्ख चुरासी रही सोती, सरगुण निरगुण

रूप अपार। गुरमुख विरले माणक मोती, लोकमात हरि आप उठाए, सोहँ धागे लए परोए, गल आपणे प्रभ पाए हार। धरत मात कलि खुशी मनाए। प्रभ अबिनाशी जामा पाए। कलिजुग जीवां दए मिटाए। सतिजुग सच्ची बणत बणाए। साध संत गोद उठाए। देव दंत कोई दिस ना आए। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जोती जामा मात पाए। जोती जामा शब्द अधारया। राम रमईआ कृष्ना कान्हा, रंग नवेल रखा रिहा। बावन बाणा हरि भगवाना, चतुर सुजानां वाली दो जहानां साची बणत बणा रिहा। शब्द उडाए सच बिबाणा, चारों कुन्ट इक्क उडाना, लोआं पुरीआं चरनां हेठ झसा रिहा। ब्रह्मे अन्तिम माण गंवाणा। शिव शंकर दर बणे निमाणा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द, मंगे दान दोए जोड़ किरपा कर भगवाना। कलिजुग वेला अन्तिम आया, दिन रहि गया थोड़ा। बेमुख लभ्भण प्रगट होया ब्रह्मण गौड़ा। ब्रह्म रूप ना कोए रखाए, एका धर्मा एका जर्मा, मात कुक्ख ना किसे उठाया। लक्ख चुरासी पई भर्मा, जोती नूरा दिस ना आया। कलिजुग तेरा वेख कुकर्मा, प्रभ अबिनाशी खेल रचाया। माण दवाए चार वरना, सतिजुग साची बणत बणाया। आप आपणी करनी करना, विच विचोला ना कोई रखाया। प्रभ अबिनाशी धरनी धरना, सति संजोगी खेल रचाया। गुरमुख विरला सरनी पड़ना, जोती जोत मेल मिलाया। दया कमाए हरि रघुराए, गुरमुखां खोल्हे आत्म हरना फरना, तीजे लोयण डगमगाए। हरिजन

७७६
०४

साचे गुरमुख तरना, इक्क बहाए साचे थाएँ, जोती जोत सरूप हरि लोकमात हरि जोत धर, आप आपणी बणत बणाया। जोती जामा धार, पुरख अपारया। कलिजुग तेरी पावे सार, गुर गोबिन्द बणया सच लिखारया। जोती नूरा सति सरोवर खेल अपार, आवे जावे वारो वारया। सर्बकला आपे भरपूरा, मंगण जाए ना किसे द्वारया। शब्द रखाए साची तूरा, पुरीआं लोआं नाद वजा रिहा। बेमुखां दिसे दूरन दूरा, गुरमुखां आसण आत्म डेरा ला रिह। पुरख अबिनाशी हाजर हजूरा, अट्ठे पहर दरस दिखा रिहा। एका जोती साचा नूर, पवण स्वासी नाल चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमत हरि जोत धर, आपणी बणत बणा रिहा। जोती जामा हरि भगवान। ना कोई जाणे जीव निधान। ज्ञानी ध्यानी पढ़ पढ़ थक्के, किसे ना हथ्थ आए वेद पुरान। मुल्ला शेख़ बैठे मक्के अट्ठे पहर खोल्हण संग मुहम्मदी सच कुरान। भेद ना पाया बूरे कक्के, अन्त अञ्जील आई हान। नाता तुट्टा भैणां भाई सके, ना कोई किसे पछाण। कलिजुग फल अन्तिम पक्के, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी आण। जोती जामा खेल निरालया। दूजे रक्खे शब्द दमामा, चार कुन्टां एका तालया। तीजे हथ्थ ना आए किसे धर्मसाला, आपणा आप आपे विच रखा लया। चौथे दर ना मिले जोत ज्वाला, भरम भुलेखे इक्क भुला रिहा। पंजवें घर ना नीर निराला, साचे सर ना कोई नहा रिहा। छेवें घर ना शब्द ना तराना, राग रंग ना कोई सुणा

रिहा। सत्तवें घर कोए ना वेखे, हरि प्रभ आपणा आप छुपा रिहा। अठां तत्तां मानस देही कर, विच जोती नूर लगा रिहा। नावें खोल्हे हरि जी दर, बेमुखां विच फसा रिहा। दसवें रक्खे बन्द कवाड़, सच सिँघासण आप टिका रिहा। अग्गे बैठी पंजां धाड़, मनमुखां मार भजा रिहा। गुरमुखां शब्द डोरी लए फड़, प्रभ साची बिध बणा रिहा। अट्ठे पहर रिहा लड़, नौ निध अठारां सिद्ध, चरनां हेठ झसा रिहा। प्रभ मिलण दी साची बिध, साचा नाम इक्क लोकमात टिका रिहा। आपे कारज करे सिद्ध, गुरमुख सोए आप जगा रिहा। आपे मारे तीर, बज़र कपाटी जाए चीर, अमृत वहे साचा नीर, ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, प्रभ साचा दया कमांयदा। आप चढ़ाए औखी घाटी, आत्म जोती देवे इक्क ललाटी, होए प्रकाश काया माटी, कोटन भाना हरि मेहरबाना, एका जोत जगांयदा। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, गुरमुखां देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना, नाम निधाना हरि भगवाना, एका जाम पिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भाणा साचा राणा, आपणे हथ्थ रखांयदा। हरि शब्द भण्डार जगत वरतांयदा। देंदा आए वारो वार, तोट कदे ना आंयदा। आपे जाणे आपणी सार, लोकमात हरि बन्न्हांयदा। लोआं पुरीआं बन्न्हे धार, चौदां हटां आप खुल्हांयदा। तीर्थ तट्टां वसे घट घटा, जोती जगे लट लटा, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग जीव जूठे झूठे काया मटा, काम क्रोध हँकार विच रखांयदा। बेमुखां लाए झूठे धन्दे, आपे वेखे खेल बाजीगर नाटी, जोती जामा खेल रचांयदा। सोहँ शब्द ल्याया साचा पटा, गुरमुखां तन पहनांयदा। विरले गुरमुख लाहा प्रभ दर खट्टा, बेमुखां दर दुरकांयदा। दूई द्वैती हउमे रोग, नित नवित्त काया खेत, पुरख अबिनाशी दर्शन पांयदा। अट्ठे पहर चेतन्न चित, चेतन्न रूप आप रखांयदा। ना कोई देव करोड़ तेतीस, बीस इकीसा कोई भेव ना पांयदा। गा गा थक्के राग छतीसा, नौ दर कलि उपजांयदा। वेद व्यासा सच लिखासा, पुरान अठारां कर विचारा, लोकमाती मात टिकांयदा। कृष्न मुरारा बन्न्हे धारा, गीता ज्ञान अर्जन बाण, एका हरि लगांयदा। लोकमात झुल्ले हरि निशान, अठारां ध्याए कृष्ना बेमुख भुल्ले जीव निधान। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणा भाणा, नर हरि श्री भगवान। हरि हथ्थ वड्याई, सर्ब पसारया। ना चले जीव चतराई, प्रभ करनहार करतारया। ना कोई किसे दानाई, दे मति आप समझा रिहा। अन्तिम पैणी गल विच फाही, धर्म राए सर्ब फसा रिहा। लाड़ी मौत आए चांईं चांईं, लोकमात भजा रिहा। बेमुखां वेखे थांउँ थाँईं, ना कोई किसे छुडा रिहा। गुरमुखां देवे ठंडीआं छाईं, शब्द ताज सिर पहना रिहा। बैठा हरि साचे दर दूसर को नाही, आदि अन्त साध संत, हरि भगवन्त साचा मेल मिला रिहा। मेल मिलाए साचे कन्त, कलिजुग जीव भुल्ले जन्त, जोती जोत सरूप हरि, आपणे लेखे आप लगा रिहा। हरि लेखा वड बलवानया। कलिजुग भुल्ले जीव

भुलेखा, हरि नर ना किसे पछानया। अन्तिम मंगे साचा लेखा, हुक्म सुणाए धुर फ़रमाणया। साची मस्तक लिखी रेखा, खोल्ह वखाए चतुर सुजानया। लोकमात उखाड़े लग्गी मेखा, वडे वडे राजे राणया। मेट मिटाए औलीए शेख़ा, गौंस कुतब कर्मा आई हारया। जोती जामा हरि दरवेशा, गुरमुख साचे विच प्रवेशा, कलिजुग तेरी अन्त निशानया। एका जोत श्री दस्मेशा, आवे जावे बेमुहाणया। जोती जामा जोत निरालीआ। एका जगी जोत अकालीआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, चारो वरन दर सवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे देवे वर, जन भगतां करे मात रखवालीआ। भगत जनां हरि दए सहारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। सतिजुग साचे सच दुआरा। शब्द देवे अपर अपारा। जोती नूरा इक्क उज्जयारा। शब्द तूरा अनाहद धारा। वड दाता जोधा सूरा, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त अन्त आदि लोआं पुरीआं पावे सारा। जुग जुग भेख अपार, लेख वड्डयाईआ। जुग जुग भेख अपार, अलख लिखाईआ। जुगो जुग भेख अपार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जुग जुग भेख अपार, जोत जगाए नित नवित्त, लक्ख चुरासी रिहा उपाईआ। जुग जुग धारे भेख, आपे पिता आपे माता, जगत पित आप अखवाईआ। जुग जुग भेख अपार, आपणी बणत आपे रिहा बणाईआ। ना कोई बूंद रक्ती रत, हड्ड मास नाड़ी पिता, अमृत जल ना कोई सिता, इक्क अधार रखाईआ। ना कोई दूजा किसे मिता, आदि अन्त ना किसे जित्ता, साचा धाम सुहाईआ। आप पाए ना आपणी विथा, भेव कोई ना पाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, कलिजुग तेरा काला वेस, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। कलिजुग काला वेस दर पुकारया। दर दर जीव होए दरवेश, ना कोई सुणे मात पुकारया। जोती जामा हरि जी भेख, लोकमात खेल अपारया। वेख वखाए औलीआ पीर शेख़, आप बणाए आपे ढाह रिहा। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखा रिहा। लक्ख चुरासी नेत्र लैणा पेख, आपणा भाणा साचा राणा विच मात वरता रिहा। जोती जामा हरि भगवाना, एका रक्खे शब्द बिबाणा, सच उडाना आप लगा रिहा। शब्द बिबाणा नाम अपार। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म वज्जे सच्चा बाण, जोती नूर इक्क अपार। सोहँ शब्द सच्चा दान, जगत मुकाए माण ताण, आत्म करे सर्ब भरपूर। आप मिटाए जम की कान, अन्तिम वेले हरि पछाण, वड दाता वड वड सूरा, फ़ल लगाए साचे डाहण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, आप आपणी करे पछाण। जगत पछाणे आप हरि, आपणा भेद छुपांयदा। राजे राणे वेख दर, सोए मोए अन्त उठांयदा। इक्क लगाए शब्द नाअरा, झूठा नाता जगत तुड़ांयदा। दस्म दुआरा खोल्हे घर, नावें बन्द करांयदा। साचे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप रंग ना कोई वखांयदा। चारे कुन्टां शब्द सरूपी

रिहा लड़, अचरज खेल मात वरतांयदा। शब्द डोरी रंक रजाना फड़, आपणा भाणा आप मनांयदा। शब्द चले तीर कड़ कड़, किले गढ़ आप हिलांयदा। सच महल्ले हरि जी चढ़, बेमुखां जड़ पुटांयदा। मुख ना लाए कोई नड़, मदिरा मासी अन्त मिटांयदा। कलिजुग पापी गया हड़, शब्द डण्डा हथ्थ उठांयदा। सतिजुग साचे फड़या लड़, लोकमात हरि साचा जन्म दवांयदा। धरत मात दी गोदी वड़, ख़ुशीआं आप मनांयदा। साचे पौड़े गया चढ़, ना अग्गे कोई अटकांयदा। प्रभ अबिनाशी फड़या लड़, लोकमात माण रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग जुगन्त आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग रोवे करे पुकार। प्रभ अबिनाशी मारे मार। शब्द खण्डा तिक्खी धार। दोवें रक्खे अपर अपार। गुरमुखां देवे नाम सिक्खी, देवे शब्द अपर अपार। बेमुखां मिले ना मात भिक्खी, भुल्ले फिरन जीव गंवार। किसे हथ्थ ना आए मुनी रिखी, पंडत पांधे गए हार। एका रेख धुरदरगाही साचे माही आपणी आप लिखी, ना बणया कोई होर लिखार। कलिजुग तेरी वेखण आया अन्तिम साची सिक्खी, प्रगट होए हरि भतार। बेमुखां आत्म चढ़ी विखी, अट्ठे पहर दिवस रैण भरया रहे हँकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी पावे सार। कलिजुग अन्तिम
७८२ दए मिटाया। प्रभ अबिनाशी जामा पाया। राउ रंकां रिहा सुणाया। जोती तिनका इक्क लगाया। आत्म मनका आप फिराया। ७८२
०४ प्रगट होए वासी पुरी घनका, माझे देस भाग लगाया। कर कर वेस नर नरेश, साचा लेखा रिहा लिखाया। इक्को जोत ०४
श्री दसमेश, जम्मे मरे ना मरे जाया। जोती जोत सरूप हरि, काया चोली झूठी डोली, मातलोक खेह कराया। काया चोली तुट्टे नाता। प्रगट होए पुरख बिधाता। कलिजुग मिटे अन्धेरी राता। गुरमुखां देवे अमृत बूंद स्वांता। गुरमुख विरला प्रभ दर लेवे, पुरख अबिनाशी इक्क पछाता। रसना नर नरायण सेवे, भेव चुकाए जातां पाता। अलक्ख निरँजण अलक्ख अभेवे, वड वड देवी देवे, साचा शब्द लोकमात ल्याए इक्क सुगाता। रसना किसे ना गाए जिहवे, ना कोई पिता ना कोई माता। गुरमुख साचे संत जनां, कौस्तक मनी लावे थेवे, चरन बंधाए सच्चा नाता। अमृत फल खवाए साचे मेवे, सगल वसूरा आत्म लाथा। निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग अन्तिम आवे डर, प्रगट होए त्रैलोकी नाथा। त्रैलोकी नाथ जोत अकारया। सगला साथ आप निभा रिहा। कलिजुग तेरा तुट्टा रथ, विच भरया इक्क हंकारया। प्रभ अबिनाशी रिहा मथ, दोहीं हथ्थीं रिहा हुलारया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, धक्का इक्को मारया। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, धर्म राए दे खिच्चे दर द्वारया। अन्तिम अन्त कलिजुग तेरी सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग जीव सुत्ते पैर पसारया। कोई ना सके किसे रक्ख, नाता तुटे मात पित भैणां भाई प्यारया। गुरमुख साचे संत जन प्रभ आपे कीने वख, साचा देवे शब्द अधारया।

सिर रक्खे दे कर हथ्थ, आदि अन्त हरि सहारया। प्रभ दी महिंमा अकथ्थनी अकथ्थ, गीता ज्ञान खाणी बाणी जगत राणी, गुण हरि गुण ना विचारया। जोती खेल जगत महानी, आदि शक्त आदि भवानी, एका जोत श्री भगवान निहकलंक सच निशानी, शब्द डंक चार कुन्ट आपणा आप वजा रिहा। आप उठाए राउ रंक, शब्द सुनेहड़ा हरि घला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्मी करे वंडी, सच्चा खण्डा हथ्थ उठा रिहा। मेट मिटाए भेख पखण्डी, कलिजुग जीवां आत्म होई रंडी, हरि भगवाना दिस ना आंयदा। कलिजुग चढ़या अन्तिम कन्ढी, पूरे तोल तुलांयदा। हरि सोहँ शब्द रक्खे डण्डी, इक्क हुलारा आप दवांयदा। सिर चुक्की पापां पंडी, ना भार कोई उठांयदा। प्रभ कच्चे भन्ने अंडी, चारों कुन्ट हुक्म सुणांयदा। देण आया हरि जी दंडी, लाड़ी मौत नाल प्रनांयदा। गुरमुखां देवे आत्म छाँ साची ठंडी, ना भार कोई उठांयदा। माया राणी जगत घुमंडी, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, धरत मात मार झात, हरि साची बणत बणांयदा। धरत मात दर कुरलाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, साचा दे दे इक्को वर, कलिजुग जीव बेमुख होए, ना करे कोई सहाईआ। लोकमात जोत धर, गऊ ग़रीब निमाणयां ना होवे कोई सहाईआ। कलिजुग जीव जूठे झूठे तख्त ताज राजे राणयां लोकमात मिली वड्डयाईआ। ना चलण चलायण हरि के भाणयां,
७८३ आत्म होई सर्ब दुःखदाईआ। मदिरा मासी रोग झूठा माणया, नाम वस्त हथ्थ ना आईआ। आत्म होई अन्धी काणया, ना ७८३
०४ दिसे हरि रघुराईआ। प्रभ अबिनाशी लक्ख चुरासी पुणया छाणया, गुरमुख विरला लाल, इक्क इकल्ला सच महल्ला काया ०४
मन्दिर रिहा टिकाईआ। आपे वेखे जल थला, घड़ी घड़ी पल पला, शब्द कराए एका हला, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम हार आई अल्ला, मिटणा नाम संग मुहम्मद चार यार, ना होए कोए सहाईआ। पुरख अबिनाशी पाए सार, सदी चौधवीं वक्त विचार, शब्द धाड़ मगर लगाईआ। ईसा मूसा हो त्यार, प्रभ अबिनाशी करे ख़बरदर, काला सूसा तन शृंगार कलिजुग तेरी अन्तिम वार काली छाही झूठा टिक्का मस्तक आप लगाईआ। ना कोई जाणे नर नार, जीव जन्त होए ख्वार, माया भरम भुल्ले, कलिजुग अन्तिम रुले, प्रभ साचा भेव खुल्हाईआ। निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, साची बणत रिहा बणाईआ। ईसा मूसा कर प्यार। प्रभ अबिनाशी बन्हे धार। चीना रूसा आई हार। फड़ फड़ मारे डाहढी मार उम्मत नबी रसूल दी, एका धक्का रिहा मार। हरि का भाणा ना कबूल दी, अन्तिम आई हार। वेख धार कन्त कन्तूहल दी, ना पावे कोई सार। माया राणी इक्क पंघूड़ा झूलदी, कलिजुग देवे आप हुलार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अपर अपार। रूसा चीना संग रलाया। आप आपणा अंग रखाया। एका दर मंगी साची मंग, दोहां

धिरां दा मेल मिलाया। शब्द घोड़े कसे तंग, चिट्टे जोड़े करे संग, सोलां कलीआं तन शृंगार कराया। प्रभ अबिनाशी वडा बलीआ, आपे बणे वलीआ छलीआ, दिस किसे ना आया। सच सिँघासण सोलां कलीआं, हरि पलाणा सोहणा पाया। आपे बणे राजा राणा, सुघड़ स्याणा शेख़ मुलाणा, पीर दस्तगीरां शाह हकीरां दिस ना आया। नौवां खण्डां पाए वंड मारे विच लकीरा, तिक्खा तीर शब्द रखाया। इक्क दूजे दे विछड़न वीरा, भैणां भाई हथ्थ ना आया। लाड़ी मौत हथ्थीं आई बन्न कलीरा, लक्ख चुरासी लए प्रनाया। गुरमुख विरला साचा हीरा, प्रभ अबिनाशी होए सहाया। आपे बन्न्हे शब्द चीरा, नाम तोड़ा आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आपणा जोड़ा आप जुड़ाया। जुड़े जोड़ हरि भगवानया। ना सके कोई मोड़, धुरदरगाही आप फ़रमानया। विच मात लै के आया शब्द घोड़, कलिजुग जीव भेव ना पाया। आपे भन्ने रीठे कौड़, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठाया। चारे कुन्टां एका पैंडा ना लम्मा ना चौड़, बंनण आया राजे राणयां। मात पित ना जाणे कोई वरन गोत, ना कोई होर ब्रह्मण गौड़, जोत सरूपी हरि भगवानया। धुरदरगाहों आया दौड़, धर्म झूलाए इक्क निशानया। सचखण्ड दुआरा इक्को पौड़, दूजा डण्डा ना कोई रखानया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, धरत मात ना दए वर, खिच्चे जोत इक्क जवाल्या। जोत ज्वाला खिच्चे लाट। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट। कलिजुग
७८४ तेरी अन्तिम वाट। अञ्जील कुरानां आई घाट। वेद पुरान गए पाट। शब्द निशान ना विके हाट। गुरमुख विरला ब्रह्म ७८४
०४ ज्ञानी, सच पट्ट लपेटे काया माट। एका रक्खे चरन ध्यानी, आत्म जोती जगे ललाट। शब्द वजे तीर कानी, बज़र कपाटी ०४
जाए पाट। देवे दान हरि वड दानी, सोहँ शब्द रसना राट। कलिजुग तेरी अन्त निशानी, प्रभ दुरमति मैल रिहा काट। सतिजुग साची जगे जोत महानी, नेड़े आई वाट। प्रगट होए पुरख सुजानी, जोती जोत सरूप हरि, धरत मात दे साचा वर, धर्म राए दर खोल्हे हाट। धर्म राए खुशी मनाईआ। प्रभ जोती जोत जगाईआ। अठाई कुण्डां रिहा खुल्हाईआ। छैल छबीला साचा मुंडा, नर हरि श्री रघुराईआ। रहण ना देवे लंगड़ा टुंडा, वारो वार दए घलाईआ। धर्म राए घर खोल्हे कुण्डा, ख़ाली जनक आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढा, प्रभ डण्डा रिहा वखाईआ। चारों कुन्ट चले चलाए चण्ड प्रचण्डा, धरत मात होए सहाईआ। आपे करे खण्ड खण्डा, सूरबीर रिहा उठाईआ। शब्द उठाए साचा डण्डा, चारों कुन्ट होए वाहो दाहीआ। ना कोई दिसे नार सुहागण लोकमात होई रंडा, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। शब्द धर्म दा फड़या झण्डा, सत्तां दीपां रिहा झुलाईआ। नौ खण्डां पाए ठंडां, गुरमुखां रिहा जगाईआ। रचन रचाई हरि वरभण्डां, ब्रह्मण्डा रिहा हलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, पुरीआं लोआं रिहा उल्टाईआ। पुरी ब्रह्म हरि

करे विचार। अन्तिम कलिजुग आई हार। ब्रह्मा होया ख़बरदार। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, तेरा वक्त अन्त चुकाया, ना कोई होए होर सहार। चार वेदां भेव खुल्हाया। वेद क्तेबा बाहर रखाया। आप आपणी जाणे सार, जोती जोत सरूप हरि, वडा शाहो भूप, सच घर साचा हुक्म रिहा सुणाया। साचा भूप हरि सुल्तान। ब्रह्मे दित्ता नाम ज्ञान। चार मुख अट्ठ नेत्र, आपे वेखे काया खेत्र, उलटी नभी अमृत दबी, कवण सर हरि भरान। जोती जामा हरि भगवाना, लोकमात ना किसे पछाणा, लोआं पुरीआं इक्क उडान। कलिजुग तेरा अन्त निबेड़ा। विष्न ब्रह्मा पुरी चुक्के झेड़ा। इक्क दिसाए साचा खेड़ा। आपे देवे साचा गेड़ा। चौथे जुग तेरी अन्तिम वारी, साची पुरीआं होए निबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, बंनण आया साचा बेड़ा। ब्रह्मे धुर फ़रमान शब्द जणाईआ। अन्तिम छड्डुणा पए मकान, निहकलंकी जोत जगाईआ। साची चलदी रहे दुकान, अन्तिम कलि बन्द कराईआ। गुरमुखां झुलाए सच निशान, लोकमात दए वड्डयाईआ। विच बिठाए आप बिबाण, ब्रह्मपुरी आप उठाईआ। गुर तेग बहादर तेरा नाम निधान, त्रैलोकी हरि जपाईआ। ब्रह्मे तुटा माण तान, साचा गुर लिख्या धुर, साचे धाम सुहाईआ। चरन प्रीती रही जुड़, प्रभ अमृत धार साचा मेघ रिहा बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सिँघ पाल हो दयाल, जगत दलाल मिली मात वड्डयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं धाम सुहाईआ। शिव शंकर धुर फ़रमाणयां। मृदंग वज्जे ना कंकर कंकर, मन्नणा पए प्रभ का भाणयां। एका रंग एका संग, एका एक श्री भगवानया। मंगदे रहण द्वार बंक, मिल्या माण नील कंठ, कंठ नील गुण निधानया। अन्तिम छड्डुणा पए मकान, प्रभ वेला आत्म आप पछानया। एका मिले पुष्प बिबाण, देवे हरि चतुर सुजानया। लोकमात मार ध्यान, गुरमुख उठे नौजवानया। प्रभ अबिनाशी साचा तुठे, आपणी गोद उठानया। ख़ाक रखाई एका मुट्ठे, जोती जोत महानया। जोती जोत सरूप हरि, जटा जूट विचार अन्तिम सहिणा दर घर साचे बहिणा, मन्नणा पए भाणया। शिव शंकर अग्गे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। कलिजुग अन्तिम आई हार। मिले जोती हरि निरँकार। अट्ठे पहर रहे सोती, पवण उनन्जा छत्र झुलार। माया मैल जाए धोती, मिले मेल कन्त भतार। जोती जामा साची जोती, नूर उजाला विच संसार। ना कोई वरन नां कोई गोती, मीत मुरारा ना कोई यार। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे सुणी सच्ची पुकार। जगत जगदीशे छत्र झुल्ले सीसे, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सुरपति राजा इन्द पवण उडारीआ। आपे बणया साची बिन्द, करोड़ तेतीसा दए सहारया। अमृत पीआ एका जाम उतरी चिन्द, मोहणी मेल दर अपारया। साची धार सागर सिध्ध, सद रक्खे ठंडी ठारया। अन्तिम कलि प्रगट होए हरि गोबिन्द, लोआं पुरीआं पाए सारया। गुरमुखां बणे हरि बख़्शिंद, देवे माण ताण विच

७८५
०४

जहान, वड भण्डारया। झुल्लदा रहे जगत निशान, नाम धर्म इक्क मकान, ना आवे पासा हारया। जोती जोत सरूप हरि, सुरपति राजे इन्द, मिल्या शाहो वड मृगिन्द, देवे हुक्म अपर अपारया। सुरपति राजे इन्द वड राजान। कलिजुग वेला अन्तिम आया, पुरी इन्द्र होणी पए वेरान। निहकलंक कलि जामा पाया, भोग अपच्छरां रहे गलतान। साचा शब्द डंक वजाया, चढ़ के आए विच मैदान। रसना तीर कमानी फड़ के आया, शब्द चलाए सच निशान। लक्ख चुरासी घाड़न घड़ के आया, अन्तिम भन्ने विच जहान। एका अक्खर सोहँ वक्खर, सतिजुग तेरा पढ़ के आया, नाल ल्याया धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, आपे करे अन्त पछाण। साचा अक्खर एका पढ़या। शब्द घोड़े हरि जी चढ़या। सतवें दर आपे खड़्या। दर दहिलीजों बाहर खड़्या। छेवें घर आए वड़या। शब्द खण्डा हथ्थ विच फड़्या। आप आपणी हथ्थीं खड़्आि। पंजवें डण्डे आपे चढ़या। पवण मसाणी हथ्थीं फड़या। जोती शब्दी पवणी मेल एका करया। चौथे दर आए घर साचा हरि सुत्ता भगतां तेल चढ़ाईआ। लोकमात हरि दए वर, आप खलोए चौथे घर, दर दुआरे अग्गे खड़या। जोती जामा भेख अपार, ना कोई नारी ना कोई नर, ना कोई दीसे सीस धड़या। आप आपणी रिहा कर, ना जन्मे ना जाए मर, ना घाड़न कोई किसे घड़या। लक्ख चुरासी तेरा लाहे अन्तिम डर, धर्म राए
७८६
०४
दा वसे घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणे अन्दर वड़या। हरि वस्त अपार, शब्द ७८६
०४
भण्डारया। गुरमुख मंगे दर द्वार, प्रभ देवे किरपा धारया। आप दिखाए साचे घर, जोत सरूपी अन्दर वड़, खोल्ह बन्द कवाड़या। माया तोले किला गढ़, साचे डण्डे जाए चढ़, दस्म महल्ल अटल अटारया। गुरमुखां घाड़न रिहा घड़, आप आपणी हथ्थीं फड़ वसाए सच चुबारया। जोती जोत सरूप हरि, देवे सच्चा नाम वर, लोकमात ना आए हारया। मंगणा इक्क द्वार पुरख अपारया। देवे नाम अधार, जोत निरंकारया। करे शब्द तन शृंगार, मिले माण विच संसारया। मानस देही अपर अपार, लक्ख चुरासी कूड़ कुड़यारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां शब्द भण्डारे रिहा भर, देवे नाम इक्क इक्क इक्क अपारया। नाम भण्डार हरि भरपूर। शब्द नादी साची तूर। अठ्ठे पहर सति सरूर। जोती खिच्चे साचा नूर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, सदा सदा सदा हाजर हजूर।

❋ २६ पोह २०११ बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला गुरदासपुर ❋

शब्द खण्डा धर्म महानया। नाम डण्डा विच जहानया। गुरमुखां पाया साचा वंडा, फड़ाए हथ्थ भगवानया। पंजां

चोरां देवे दंडा, हरि तिखी रक्खे धारया। बेमुखां वडे कंडा, मूंह दे भार सुटा रिहा। आपे करे खण्ड खण्डा , ना कोई किसे छुडानया। नाल रलाए कहर राणी मात सुहाणी। चण्ड प्रचण्डा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द खण्डा नाम कटारया। प्रभ अबिनाशी फड़या हथ्थ, धुरदरगाही सच्ची सरकारया। लम्मा रखाए साढे तिन्न हथ्थ, मारे वारो वारया। कलिजुग तेरा झूठा रथ, धर्म राए दए हुलारया। यमराज पाए सथ, पाए पल्लू चार कुन्ट पाए घर घर घर हाहाकारया। किसे सिर ना दीसे ताज, झूठे छुट्टे राजन राज, प्रभ साचा पाए घेरया। हरिभगतां रक्खे लाज, बेमुखां खोले पाज, करे खेल जगत न्यारया। साचा साजन रिहा साज, प्रभ अबिनाशी ग़रीब निवाज, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। आप संवारे आपणा काज, प्रगट जोत देस माझ, रंक डंक इक्क वज्जा रिहा। बेमुखां अन्तिम चारों कुन्ट पैणी भाज, ना कोई किसे छुडा रिहा। गुरमुखां मारे शब्द अवाज, अन्तिम होई रैण अन्धेरी कलिजुग आपे आप जगा रिहा। शब्द खण्डा पुरख अपार। सिध्धा डण्डा विच संसार। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, आपे वेखे हरि दातार। गुरमुख बेमुख पाए वंडा, साचा तोल तोलणहार। ना कोई दीसे पखण्डा, जगी जोत इक्क करतार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी करे विचार। आप आपणी कर विचार। किया खेल अपर अपार। गुरमुख साचे संत मिलाए, दया कमाए चरन बहाए, मिल्या मेल कन्त भतार। बेमुख जीव दर दुरकाए, दर घर साचे रहण ना पाए, चारों कुन्ट फिरन भिखार। साची भिच्छया कोई ना पाए, जोती जामा हरि भगवाना, शब्द बिबाणा जगत उडाणा, चार दुआरे वेख वखाए, चार दुआरे चारे यार। अट्ठे पहर सेवादार। प्रभ इक्क चलाए शब्द लहर। आप बहाए वहन्दी धार। धरत मात दर मंगे कहर, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। कोई ना दीसे नगर खेड़ा शहर, पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जोती अग्नी देवे साड़। गुरमुखां आत्म करे मेहर, जोत जगाए बहत्तर नाड़। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर हेर फेर, बेमुख जीव झूठी धाड़। गुरमुख साचे मात तराए, हउमे विच्चों रोग गंवाए, शब्द घोड़े रिहा चाढ़। चरन दुआरे घेर ल्याए, मेर तेर सर्ब चुकाए, आप आपणी दया कमाए, ना लाए देर घर साचे रिहा वाड़। आपे गुर आपे चेले सिँघ शेर शेर दलेर, कलिजुग चोली रिहा पाड़। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवे साचा वर, लक्ख चुरासी वढ्ढे धड़, रचन रचाए सतारां हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि सुहेले जगत मेले, धरत मात दुलारे, आप बणाए साचे लाड़। सतारां हाढ़ी फुल फुलवाड़ी। प्रभ शब्द बगीचा लाया, आपे करे नाम वाड़ी। रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी। साची बणत रिहा बणाया, सदा फिरे पिच्छे अगाड़ी। होए सहाई बहत्तर नाड़ी। पंजां चोरां दर दुरकाया, गुर चरन सरन नेड़ ना आए

मौत लाड़ी। सिँघ सिँघासण डेरा लाया, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, खुशी मनाई सतारां हाढ़ी। धर्म राए दी कटे फाँसी, आपणा बेड़ा आपणे हथ्थ रखाए, आपणा बेड़ा रक्खे हथ्थ। प्रभ अबिनाशी सर्ब समरथ। आवण जावण जावण आवण पतित हरि भगवान, जगत झेड़ा दए चुकाया। किरपा करे गुण निधान, वड वडा मेहरवान, काया खेड़ा भाग लगाया। शब्द बिठाए सच बिबाण, लोकमात हरि गेड़ा लाया। आप उठाए गुरमुख साचे नौजवान, बेमुख सोया ना कोई जगाया। अट्ठे पहर कर ध्यान, चार कुन्ट दहि दिश, गुरमुखां साचा मेल मिलाया। साचा छत्र झुलाए सीस, आप आपणे हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी किसे ना आए दिस, साध संत किसे वेख ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बणत रिहा बणाया। प्रभ साचा बणत बणाई जांदा। गुरमुखां गणत गिणाई जांदा। दे मति समझाई जांदा। नौ अठारां भेव चुकाई जांदा। मात गर्भ रोग मिटाई जांदा। साचा शब्द रसन जपाई जांदा। मोती चोग हँस चुगाई जांदा। आत्म जोती आप जगाई जांदा। चार वरनां इक्क गोत बणाई जांदा। दुरमति मैल गई धोती, गुरमुखां बणत बणाई जांदा। जोती जोत सरूप हरि, धर्म राए तेरा लेखा ताम, सतारां हाढ़ी लंगर लवाई जांदा। बारां बारां कर लेखा पूरा, बारां मास लिव मात लाई जांदा। तेरां तेरां दर खोल्हे भेत, गुर नानक जो रसना गाई
७८८ ०४ जांदा। गुरमुखां लिखाए लेख, शब्द रसना कलम चलाई जांदा। लक्ख चुरासी विच्चों वेख, चरन प्रीती जोड़ जुड़ाई जांदा। ७८८ ०४
माया राणी जगत भेख, गुरमुखां गलों जंज़ाला लाही जांदा। जोती जोत सरूप हरि, बारां बारां सच धारा, माया राणी तेरा लंगर लवाई जांदा। हरि प्रकाश शब्द अनूपया। हरि प्रकाश जगत अन्ध कूपया। हरि प्रकाश सति सरूपया। हरि प्रकाश ना कोई रेख ना कोई रूपया। हरि का प्रकाश महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए गुरमुखां आत्म दूखया। हरि प्रकाश जगत अज्ञानया। गुरमुख विरले मात पछानया। हरि प्रकाश शब्द रहिरास पुरीआं लोआं अकाश पतालां गगनां एका ताल वजा रिहा। गुरमुखां देवे आत्म लग्न, साचा दर वखा रिहा। हरि प्रकाश आत्म जोती साचे जगण, गुरमुख ना होए मात नग्न, प्रभ साचा लेख लिखा रिहा। मुख लगाए साचा शब्द सगन, धुरदरगाही मेल मिला रिहा। हरि प्रकाश जगत रंगण, गुरमुख साचे दर घर साचा एका मंगण, हरि हउमे पीड़ गंवा रिहा। मानस देही ना होए भंगण, दूई द्वैती फट्ट गंवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि निहकलंक नरायण नर, साची जोती नूर उपा रिहा। हरि प्रकाश शब्द नगारया। चार कुन्ट दहि दिशा प्रभ अबिनाशी आप वजा रिहा। हरि प्रकाश घट घट भीतर अन्दर बाहर डूंघी कन्दर सागर थारया। अज्ञान अन्धेरा भगत सवेरा, कलिजुग सुंञ मिटा रिहा। हरि प्रकाश गुरमुखां हिरदे रक्खे वास, हरि हरि साचा दासन दास

आपे आप अख्वा रिहा। मेट मिटाए मदिरा मास, शब्द अमृत साचा सीर प्या रिहा। हरि प्रकाश मात पताल अकाश, कलिजुग रैण अन्धेरी आप मिटा रिहा। गुरमुख नाता पुरख बिधाता साचा जोड़ जुड़ा रिहा। हरि प्रकाश रसन किसे ना सके कहण, हरिजन वेखे तीजे नैण, बेमुखां नेत्र बन्द करा रिहा। गुर चरन दुआरे साचा नाता, मात पित भाई भैण पिता पूत एका डोर बंधा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे हरि समा रिहा। हरि प्रकाश शब्द घन घोरया। घट घट रक्खे वास, पकड़ उठाए ठग चोर यारया। हरि प्रकाश गुरमुखां सुणाए एका राग, चुक्के मोर तोरया। जोती जामा कन्त सुहाग, शब्द बहाए साचे डोल्लया। बणे कुहार चुक्के वाग, रसना कदे ना बोल्लया। आत्म धोए अमृत दाग, काया सागर नीर वरोल्लया। दीपक जोती जगे चिराग, मिटे अन्धेर पर्दा उहलया। आत्म तृष्ना बुझे आग, अमृत सीर साचा डोहलया। गुरमुख विरला जाए जाग, प्रभ पूरे तोल तोल्लया। हँस बणाए हरि जी काग, चुगाए चोग शब्द अमोल्लया। माया राणी डस्सणी नाग, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां वसे सदा काया चोल्लया। हरि शब्द गुर धार। गुर शब्द जगत पसार। हरि शब्द ब्रह्म विचार। गुर शब्द जगत अधार। हरि शब्द अन्ध अंधिआर। गुर शब्द अन्दर बाहर। हरि शब्द नूर उज्जयार। गुर शब्द मात पसार। हरि शब्द रंग अपार। गुरमुख गुर शब्द संग प्यार। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख विरले करन विचार। हरि शब्द गुर अधारया। गुर शब्द विच संसारया। हरि शब्द अगम्म वेख वेख ना किसे विचारया। गुर शब्द लोकमाती गगनी थम्म, रसना रस उपा रिहा। हरि शब्द ना जन्मे ना जाए मर, साची धुन धुनी धुन्कारया। गुर शब्द काया भन्ने घड़े, करे वेस वारो वारया। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख विरले मात विचारया। हरि शब्द गुर जणाईआ। गुर शब्द जगत वड्डयाईआ। हरि शब्द ना किसे लेख लिखाईआ। गुर शब्द लोकमाती हुक्म चलाईआ। हरि शब्द गुणवन्त गुण निधान हरि भगवान, आपे आप रिहा उपाईआ। गुर शब्द सरगुण साचा साचा रूप, कथ कथ जीव जन्त रिहा समझाईआ। हरि का शब्द गुर का शब्द गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरि का शब्द अडोल काया चोल्लया। गुर का शब्द अमोल रसनां बोल्लया। हरि का शब्द काया मन्दिर साचे अन्दर, गुर पूरे मात फरोल्लया। गुर का शब्द लोकमाती कलिजुग जीवां हो हो नीवां तोल तोल्लया। हरि का शब्द गुर पूरे हाजर हज़ूरे, आत्म सुणया सच ढोल्लया। गुर का शब्द अपार साची तूरे, लोकमात गुरमुखां आत्म पड़दा खोल्लया। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख साचे संत प्यारे, हरिभगत नाम वणजारे, आत्म साची कोल्लया। हरि शब्द जगत गुर निआउँ है। गुर शब्द वसे थांउँ थांउँ है। हरि शब्द गुर पूरे रक्खी ठंडी छाउँ है। गुर शब्द लोकमात पिता माउँ है।

हरि शब्द ना कोई वेखे ना कोई जाणे, ना कोई दस्से नाउँ है। गुर शब्द लोकमात राग छतीसा, वंडे कर कर न्याउँ है। हरि शब्द गुर शब्द गुरमुख साचा संत प्यारा, हरिजन साचा भगत उज्जयारा, जाणे नेहचल थांउँ है। हरि शब्द गुर गुर दात। गुर गुर शब्द जगत करामात। हरि शब्द काया रैण अन्धेरी डूंघी कन्दर खोल्हे ताक। गुर शब्द गुर रसनी गाए, जगत जणाए भविख्त वाक्। हरि शब्द हरि घर वसेरा, ना कोई रक्खे दूजी आस। गुर शब्द लोकमात करे निबेड़ा, चल्ले स्वास स्वास। हरि शब्द गुर शब्द निरगुण सरगुण दोहां बणाए साची रास। हरि शब्द सुणे पुकार। हरि शब्द गुर अधार। घर घर वेखे नेत्र पेखे, इक्को सच्चा इक्क विचार। धुरदरगाही लिखी रेखे, आपे लिखणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत धार। किरपा धारे हरि निरँकारा। देवे वरे साचा मीत मुरारा। गुरमुख साचा करनी करे, हउमे दुखड़ा लथ्थे भारा। आप आपणी करनी करे, आत्म मारे इक्क हँकारा। साची तरनी हरिजन तरे, देवे साचा शब्द शृंगारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त हरि झोली पाए, नारी कन्ता सच भतारा। नारी कन्ता सच भतार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, दूई दवैती शरअ शरायती आत्म खोटी कढ्ढे बाहर। एका देवे नाम हदायती, जोती नूरा अपर अपर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे सच्चा इक्क प्यार। इक्क प्यार दूजा जोड़। जगत विछोड़ा देवे तोड़। हउमे कढ्ढे विच्चों रोड़। शब्द चढ़ाए साचे घोड़। जोती जामा हरि भगवाना, देवे सच्चा नाम निशाना, अन्तिम वेले जाए बौहड़। करे प्यारा हरि करतारा, दूई दवैती करे दूर। शब्द फेरे तिक्खा आरा। काया मन्दिर साचे अन्दर, हउमे रोग कढ्ढे बाहरा। कर उज्जयारा अन्दरे अन्दर, गुप्ती गुप्ता करे ज़ाहिरा। हँकारी तोड़े आत्म जन्दर, साचा मेल कन्त भतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब कर्म कर विचारा। मानस देही बन्न्हे धार, मिले वड्याई विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, इक्क वखाए सच दुआरा। जगत पखण्डा वणज, लक्ख चुरासीआ। जगत पखण्डा वणज मदिरा मासीआ। जगत पखण्डा वणज कलिजुग जीव उदासीआ। जगत पखण्डा वणज, अन्तिम अन्त अन्त विनासीआ। कलिजुग पखण्डा वणज, जीव जन्त कराए दासीआ। कलिजुग पखण्डा वणज, जोती जोत सरूप हरि, एका एक शब्द स्वासीआ। जगत पखण्डा वणज, जगत भण्डार है। जगत पखण्डा वणज, साधां संतां वगी मार है। जगत पखण्डा वणज, गुरूआं पीरां माया राणी पाया वड जंजाल है। जगत पखण्डा वणज, दिसे मन्दिर मस्जिद गुरूद्वार है। जगत पखण्डा वणज, मुलां पंडत पांधे खाणी बाणी करन विचार है। जगत पखण्डा वणज, गुर पीर औलीए शेख़ मुसायक आप आपणा गए हार है। जगत पखण्डा वणज, चारों कुन्ट चार चुफेर होए अन्ध अंध्यार

है। जगत पखण्डा वणज, ना कोई जाणे सच्ची सरकार है। जगत पखण्डा वणज, कलिजुग तेरी सच्ची धार है। जगत पखण्डा वणज, पुट्ठी सिध्धी सीस बन्ह्नी दस्तार है। जगत पखण्डा वणज, भाणा पैणा सहिणा करे ख्वार है। कलिजुग पखण्डा वणज, गुरमुखां करे हित्ता, अन्त पैणी शब्द मार है। कलिजुग पखण्डा वणज, ना कोई दिसे सुघड़ स्याण बेमुहाणा सर्ब संसार है। कलिजुग पखण्डा वणज, ना कोई दीसे तहसील थाना, गऊ ग़रीबां पावे सार है। कलिजुग पखण्डा वणज, ना कोई मन्ने प्रभ का भाणा, आत्म भरया इक्क हँकार है। जगत पखण्डा वणज, मायाधारी वडे वडे शाहकार है। जगत पखण्डा वणज, ना कोई करे कराए सच हुक्म दी साची कार है। जगत पखण्डा वणज, धरत मात तेरी सुणे ना कोई पुकार है। जगत पखण्डा वणज, कलिजुग बीज साचा बीआ, फल लगाया चौथे जुग तेरे सच्चे डाल है। कलिजुग पखण्डा आप रखाई साची नीआं, कलिजुग बणाया आप सिक्दार है। कलिजुग पखण्डा साढे तिन्न हथ्थ रखाए सीआं, वंड कीती अपर अपार है। कलिजुग पखण्डा ना कोई बीवी ना कोई मीआं, ना कोई नारी कन्त भतार है। कलिजुग पखण्डा कलिजुग जीआं, मार रिहा डाढी मार है। कलिजुग पखण्डा अन्त चढ़ाए झूठा डण्डा, ना दीसे पार किनार है। कलिजुग पखण्डा जोती जोत सरूप हरि, आपे आप कराए आर पार है। कलिजुग पखण्डा मात प्रधानया। कलिजुग भेख पखण्डा आत्म होई जीव शैतानया। आत्म भेख पखण्डा, साधां संतां बन्न्हे हथ्थीं गानया। कलिजुग भेख पखण्डा, उलटी करे मति राजे राणया। कलिजुग भेख पखण्डा आप गंवाए साचा तत, भुलाए जीव निधानया। कलिजुग भेख पखण्डा किसे ना उब्बले बहत्तर नाड़ी साची रत्त, काया माटी ना किसे पछाणया। कलिजुग भेख पखण्डा कोई ना रक्खे किसे पत, जूठे झूठे शेख़ शिख़ाणया। कलिजुग भेख पखण्डा आत्म तुट्टा धीरज यति, वड वडे शाह दुरानया। कलिजुग भेख पखण्डा सच वस्त ना आए हथ्थ, ना कोई देवे ब्रह्म ज्ञानया। कलिजुग भेख पखण्डा बेमुखां पाए नत्थ, चार कुन्ट करे हलकानया। कलिजुग भेख पखण्डा सृष्ट सबाई रिहा मथ, रिड़के वांग मधानया। कलिजुग भेख पखण्डा लक्ख चुरासी लाहे सथ, आत्म राम ना किसे पछाणया। कलिजुग भेख पखण्डा बेमुखां मिली एका वथ, होए विछोड़ा श्री भगवानया। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई चढ़ाए शब्द रथ, डूंघे वहिण जगत रुढ़ानया। कलिजुग भेख पखण्डा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलि आपे मेट मिटानया। कलिजुग भेख पखण्ड, जगत न्यारया। कलिजुग भेख पखण्ड, गुरमुख विरले मात विचारया। कलिजुग भेख पखण्ड, जीवां जन्तां करे ख्वारया। कलिजुग भेख पखण्ड, सच दुआरे दर दरवाजे हँकारी कुण्डा मारया। कलिजुग भेख पखण्ड, दर दर बन्दर नाचे, लक्ख चुरासी आपे आप नचा रिहा। कलिजुग भेख पखण्डा, धूंआं धुखे अन्दरे अन्दर, जोती दीप ना

७६१
०४

कोई जगा रिहा। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई वखाए साचा मन्दिर, जात पात वंड वंडा रिहा। कलिजुग भेख पखण्डा, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम मेट मिटा रिहा। कलिजुग भेख पखण्ड, जगत कुड़माईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, माया राणी तन श्रृंगार लगाईआ। कलिजुग भेख पखण्ड, लक्ख चुरासी इक्को वेखे सच्चा हाणी, सच सुहागण नार आप अखवाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, माया ममता कज्जल सुन्दर बांके नैण सुहाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, बेमुखां वखाए झूठा मन्दिर, फड़ अन्दर आप बहाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, इक्क वखाए डूंघी कन्दर, झूठी सेजा आसण लाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना होए मेल पुरख अबिनाशण, राह साचा हथ्थ ना आईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई गावे शब्द स्वासण, साचा नाद ना कोई वजाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, चारों कुन्ट मदिरा मासन, गुरमति दर रही शरमाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, चल्लया मात अकाशन, मन मति जीआं रही भुलाईआ। कलिजुग भेख पखण्डा, कलिजुग तेरा आया वण्डा, दुरमति नाल संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम देवे मेट मिटाईआ। कलिजुग भेख पखण्ड, जटा जूट धारया। कलिजुग भेख पखण्ड, मुनी नाद पार करा रिहा। कलिजुग भेख पखण्डा, शब्द रागी आप भुला पा रिहा। कलिजुग भेख पखण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

७६२ ०४

कलिजुग भेख पखण्डा, अन्त निशानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, वड वड विद्वानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई जाणे जगत ज्ञानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे वेद पुरानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई वखाणे साची बाणीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, भुल्ले पंडत पाधे बेमुहानया। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे शेख़ शेख़ानया। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे मुलां मुलानया। कलिजुग भेख पखण्डा, झूठे मणके गल तसबानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई विरोले दुध्ध मधाणीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, लक्ख चुरासी झूठी बणी सवाणीआ। कलिजुग भेख पखण्ड, ना कोई जाणे अञ्जील कुरानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, मोनी सोनी नैण मुधानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, काला सूसा दर दरवेश कोई ना जाणीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, लाल चोला जगत अमोला, चिट्टा रंग दा जाणीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई जाणे राजे राणीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे शाह सुल्तानया। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे शाह अरकानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, पर्दा पाए आप दुरानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, आप भुलाए वड अरबानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, माया लुटयां शाह ईरानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, पत लथ्थी शाह लिबनानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, वेख वखाणे रूस बूसानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे चीन चीनानीआ।

कलिजुग भेख पखण्डा, मिटदा जाए शाह जापानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, आप मिटाए आस्टरेलानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, मेट मिटाए शाह सुल्तानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे अमरीकानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, फिरे दुहाई फरीक अफरीकानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, उडदा जाए रंग शाह इंगलतासनीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, मेट मिटाए हरि सुलानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना जाणे शाह फरांसीसानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, आप मिटाए वड बिलजमआनीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, उडे ख़ाक विच हालैडानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, लथ्थे ताज पोल पुलैंडानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, वजे ताक वड जरमानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई बचाए शाह फिनलानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, आप मिटाए नारवेआनीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, रुढ़दा जाए जगत सुडानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, मिटे नाम मात हंगरानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना कोई दीसे जगत तसमानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, चक्की पीसे चैक चकवानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, धक्का लग्गे शाह इटालानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, ना होए विचोला सविटज़रलानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, मिटे निशान तुरक तुरकानीआ। कलिजुग भेख पखण्डा, सति सागर वड गागर, मारे इक्क उछाल शब्द भगवानीआ। कलिजुग भेख पखण्ड, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघी कन्दर अन्दर मन्दिर, जल धार सच्चे ताल एका धार रुढ़ानया। कलिजुग भेख पखण्ड, आपे करे कराए वेख वखाए, भारत खण्डानया। कलिजुग भेख पखण्डा, पाक पाकानया। कलिजुग भेख पखण्ड, प्रभ आपे मेटे प्रगट होए दे जहानया। कलिजुग भेख पखण्ड, आपे घड़े आपे लए भन्न, शब्द डण्डा हथ्थ रखानया। कलिजुग भेख पखण्ड, सत दीप नौ खण्ड पाए वंड, ना कोए छोड छुडानया। कलिजुग भेख पखण्ड, प्रभ देवण आया दंड हथ्थ चुक्के चण्ड प्रचण्ड, रसना तीर कमान उठानया। आपे करे खण्ड खण्ड, जोती जोत सरूप हरि, ना कोई जाणे खेल महानया। कलिजुग भेख पखण्ड, हरि मिटावणा। शब्द सुहागी गीत, हरि जपावणा। आप चलाए आपणी रीत, वक्त सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, धर्म जैकार करावणा। कलिजुग भेख पखण्ड, गुरूआं पीरां आत्म होई हैरानीआ। कलिजुग भेख पखण्ड, कलिजुग जीआं आत्म रंड, प्रभ करे आप पछाणया। पल्ले किसे ना नाम गंढु, सिर चुक्की पंड, पाप पुरानीआ। कलिजुग भेख पखण्ड, प्रभ देवण आया दंड, जोती जोत सरूप हरि, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखानया। आत्म पाए ठंड, लक्ख चुरासी गेड़ कटावणा। आपे वेख वखाणे विच ब्रह्मण्ड, पुरीआं लोआं धार बन्न्हावणा। आदि अन्त ना दए कंड, जन भगतां एह समझावणा। सोहँ पल्ले बन्न्हणी गंढु, अन्तिम जिस ने पार करावणा। जोती जोत सरूप हरि, आपे पकड़े आपणा दामना। एका जोती नूर कर, देवे दरस

गुण निधानणा। सर्बकला भरपूर, धुरदरगाही साचा जामणा। गुरमुखां आत्म करे सति सरूर, मेट मिटाए कामनी कामना। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, कलि अन्त अन्तिम ख़ाकी खाक मिलावणा। गुरमुखां चरन धूढ़ी कर, आपणी गोद उठावणा। गुरमुख चतुर मुग्ध मूढ़ कर, सतिजुग साचा जाप जपावणा। एका एक आत्म साची गूढ़ कर, नाम साचा उप्पर लावणा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग झूठा भेख पखण्डा, आपे आप मिटावणा। कलिजुग भेख पखण्डा, आपे आप मिटावण। कलिजुग भेख पखण्डा, दए दुहाईआ। लोकमात विच रंडा, जोती हरि जी आप प्रगटाईआ। ना दीसे पार कन्ढा, संसार सागर वहिण रुढ़ाईआ। मगर फड़या हरि जी डंडा, भज्जा जाए वाहो दाहीआ। वेखे खेल विच वरभण्डा, निहकलंक जोत जगाईआ। गुरमुखां कराए एका साची वंडा, नाम वस्त हरि झोली पाईआ। धर्म राए ना दए दंडा, अन्तिम अन्त आपणी गोद उठाईआ। सद सुहेला इक्क इकेला, ठंडी छाँ रखाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, मेट मिटाए जगत पखण्डा, कल आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग भेख पखण्ड, धांही मारदा। वेखे हथ्थ विच फड़्या डण्डा सच्ची सरकार दा। कोई ना अग्गे मात अड़या, तोड़े गढ़ किला हँकार दा। आपे भन्ने जो जन घड़या, आप महल्ल उसारदा। अन्दर कोई रहे ना वड़या, करे कम्म हरि पहरेदार दा। सच अस्वारा साचे घोड़े चढ़या, करे खेल सच्चे परवरदिगार दा। लक्ख चुरासी नाल सिँघ सिँघासण बैठ लड़या, शब्द खण्डा इक्क हुलार दा। अड्डो अड्ड कराए सीस धड़या, साचा खेल नर अवतार दा। अग्गे जाए कदे ना लड़या, भाणे अन्दर सर्ब निवारदा। पुरख अबिनाशी किसे ना फड़या, राजे रणयां आप वंगारदा। सच किल्हे कोट प्रभ साचा चढ़या, खिच्चे तीर रसन कमान दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग भेख पखण्डा मेटे, ना दिसे झूठ निशान दा। हरि मंगल हरिजन जानया। भिन्नड़ी रैण सुहागण, हरि रंग हरि हरि वखाणया। भिन्नड़ी रैण धोए दागण, हरि रंग देवे गुरमुख बाल अञ्याणया। भिन्नड़ी रैण बणाए लागन, हरि रंग वेखे हरिजन सुघड़ स्याणया। भिन्नड़ी रैण बणे सुहागण, हरि रंग गुरमुख साचे प्रभ सरनाई माणया। भिन्नड़ी रैण होई वड वडभागण, हरि रंग वेखे पुरख निधानया। गुरमुख साचे संत दुलारे, आप बहाए चरन द्वारया, भिन्नड़ी रैण उठ उठ जागण। भिन्नड़ी रैण कन्त प्यार। गुरमुख साचे सच दुलार। मिल्या मेल पुरख अपार। रसना गाए रोग गंवाया। आत्म रस निझर अमृत बूंद धार कँवल चवाया। प्रभ अबिनाशी होया वस, शब्द सरूपी आया नस्स, शब्द बाण हरि रिहा कस, गुरमुखां हरि बन्ने लाया। भिन्नड़ी रैण राह साचा दस्स, कलिजुग मिटे अन्धेर मस्स, सोहँ चन्द सच चढ़ाया। जोत प्रकाशे घर घर वासे, गुरमुखां मानस जन्म करे रहिरासे, खुशी बन्द बन्द कराया। लेखे लाए गर्भ दस मासे, आत्म जोती कर प्रकाशे, गगन मण्डल दी बणत बणाया। आपे रक्खे

अन्दर वासे, पवण देवे इक्क स्वासे, शब्दी बोला बोल बुलासे, जोती नूर इक्क प्रकाशे, नावें दर दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, भिन्नड़ी रैण देवे वर, गुरमुख साचे गए तर, हरिजन आए साचे घर दसवें मेल पुरख अबिनाशे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला इक्क इकेला, हरिजन मेला, आपे वसे आस पास्सया। आस पास चार द्वार। हरि जी होवे पहरेदार। गुरमुखां करे ख़बरदार। कलिजुग वेला अन्तिम आए, लुटया जाए चोर यार। बेमुखां वक्त दुहेला होया, प्रगट होया कूड़ कुड़यारा यार। जन भगतां वक्त सुहेला होया, हरि मिल्या पुरख अपार। आपे रंग नवेला होया, जोत सरूपी गुप्त ज़ाहिर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। भिन्नड़ी रैण खुशी मनाउँदीआं। दर घर साचे जोत जगाउँदीआं। गुरमुखां नाल रलाउँदीआं। भैणां भाईआं नाता जोड़ जुड़ाउँदीआं। सतिजुग तेरी बणत बणाउँदीआं। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, तेरी गणत गिणाउँदीआं। रसना गाउणा स्वास स्वासी, माया मोह तजाउँदीआं। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, गुर संगत नाउँ रखाउँदीआं। भिन्नड़ी रैण वज्जी वधाईआ। गुर संगत मात वड्डयाईआ। हरि घर साचे आई मंगत, प्रभ भिच्छया नाम इक्क पाईआ। नाम अमोला चाढ़े रंगत, शब्द ढोला इक्क सुणाईआ। पूरे तोल हरि जी तोला, गुरमुख साचे संत जनां, चिट्टा बाणा शब्द चोला, आपणे हथ्थीं तन पहनाईआ। बज़र कपाटी पर्दा खोल्हा, आप हटाए पर्दा उहला, दर घर साचा बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, भिन्नड़ी रैण नेत्र वेख साचे नैण, गुर संगत मेल मिलाईआ। बेमुख डुब्बे डूंघे वहिण, प्रभ गूढ़ी नींद सवाईआ। गुरमुख साचे साचा लाहा लैण, आए हरि सरनाईआ। दरस दिखाए साचे नैण, आत्म तृष्न मिटाईआ। गुर संगत नाता भाई भैण, जगत विछोड़ा इक्क कराईआ। दर घर साचे साचा बहिण, पंजां तत्तां दूर हटाईआ। हरि सहाई साचा साक सज्जण सैण, होए अन्त सहाईआ। आप चुकाए लहिण देण, लेखा लिखे शब्द रघुराईआ। गुरमुख साचे संत जनां नाल रलाई भिन्नड़ी रैण, भैणां भाईआं इक्क सलाह पकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, तेरे सच्चे दर द्वार साची रुत्त सुहाईआ। पूर्ब कर्म विचार, धार बन्न्हांयदा। जन्म कर्म हथ्थ करतार, जन्म मरन खेल रचांयदा। पूर्ब कर्म विचार, भगत उधार बणत बणांयदा। शब्द कराए वणज वपार, साचा लेखा जगत लिखांयदा। आत्म देवे नाम अधार, साचा शब्द झोली पांयदा। चरन छुहाया सच घर बाहर, साचा कर्म कमांयदा। उन्नी सौ तरयासी बिक्रमी दिवस विचार। जोती जोत सरूप हरि, लेखे लाए दया कमाए, शब्द सरूपी इक्क प्यार। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ जगत वड्डयाईआ। बेमुख भुल्ले झूठे भरम, घर साचा सार ना पाईआ। मानस देही उत्तम जन्म, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। करे कराए

आपणा कर्म, सद भाणे हरि समाईआ। हरि नाउँ साचा मात धर्म, जात पात कोई दीसे नाहीआ। एका रूप एका ब्रह्म, साची रेखा किसे दिस ना आईआ। घर घर वण्डां धारे भेख, हउमे माया जगत ढाहीआ। ना कोई जाणे पंडत मुलां शेख़ शेख़ाना, ग्रन्थी पन्थी सार ना पाईआ। प्रभ अबिनाशी साचा राणा, धुर फ़रमाणा एका शब्द चलाईआ। वेखे विगसे गऊ ग़रीब निमाणा, आपणी सरन लगाईआ। सरन ना लाए राजा राणा, हरिभगतां होए सहाईआ। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, पढ़ पढ़ विद्या भुल्ली लोकाईआ। गुरमुख विरले हरि पछाणा, जिस आत्म बूझ बुझाईआ। दर घर साचे मिले माणा, हरि साचा लेख लिखाईआ। कलिजुग झूठा तणया ताणा, हउमे रोग वड वड्डयाईआ। कोई ना दीसे शाह शहाना, बेमुहाणा दए दुहाईआ। हरि का नाम शब्द बबाणा, गुरमुखां रिहा उडाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, प्रेम सितार इक्क वजाईआ। आत्म बख्शे ब्रह्म ज्ञाना, धुनी नाद नाद धुन आपणी रिहा सुणाईआ। शब्द सरूपी बन्ने गाना, लक्ख चुरासी विच्चों वख कराईआ। पुरख अबिनाशी बीना दाना, आत्म वस्त इक्क टिकाईआ। हरिजन हरि हरि रसन चीना, प्रभ साची जोत जगाईआ। अट्ठे पहर मन तन भीन्ना, आत्म वज्जदी रहे वधाईआ। हरि दर्शन पाया ठांडा सीना, धर्म राए फाही कटाईआ। नेत्र नैण तिसाए जिउँ जल मीना, प्रभ अमृत मेघ बरसाईआ। ना कोई जाणे मुहम्मदी दीना, ब्रह्म विद्या ना किसे सिक्खाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, हरिजन साचे संत सुहेले आपे रिहा मिलाईआ। सुहाए द्वार बंक चरन छुहांयदा। गुरमुख उधरे पार, प्रभ पूर्ब लेखा आप लिखांयदा। मानस देही जन्म संवार, लक्ख चुरासी पार करांयदा। ऊँचां नीचां भरम निवार, सूचो सूच दर द्वार सुहांयदा। प्रभ अबिनाशी जामा धार, चार वरनां एका सरना साचा रसन वखांयदा। आपे जाणे हरि जी सार, फड़ फड़ बाहों पार करांयदा। ना कोई जाणे नर नार, भरम भुलेखे जगत भुलांयदा। गुरमुखां करे तन शृंगार, शब्द चोला तन पहनांयदा। आत्म बख्शे चरन प्यार, साचा धर्म मात धरांयदा। देवे वर सच्ची सरकार, परवरदिगार आप अखवांयदा। नैण मुंधाना जोत अकार, हरि भगवाना शब्द चलांयदा। नाम बबाणा विच संसार, भगत निधाना आप चढ़ांयदा। साचा माण दर दरबार, जगत विकार रसन तजांयदा। मिले मेल पुरख अपार, दरगहि साची माण दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला संत सुहेला, जगत विछोड़ा शब्द घोड़ा गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जोड़ जोड़ा, साचा नाता पुरख बिधाता उत्तम जाता एका चरन रखांयदा। करे सच निआउँ, सच्ची सरकारया। वेख वखाणे साचे थांउँ, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरया। गुरमुखां देवे ठंडी छाउँ, दर मिले माण जगत निमाणया। आपे पिता आपे माउँ, भाई भैणां हरि साचा साक सज्जण सैणा अख्वा रिहा। सच्चा नाम पीण खाण, चरन ध्यान इक्क

७९६
०४

वखाणया। दर घर साचे देवे माण, नर हरि श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस अमोघ धुर संयोगा, साचा दर आप पछाणया। जल नीर अमृत अमृत धारया। कढ्ढे हउमे पीड़, दुःख निवारया। अमृत साचा सीर, गुरमुखां आप चवा रिहा। किसे हथ्थ ना आए पीर फ़कीर, वेद पुरान गा गा थक्के, अमृत धार ना कोई चवा रिहा। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, वड संसारी साची बणत बणा रिहा। एका देवे नाम अधारा जगत वणजारा, भगत वणज साचा नाम करा रिहा। ना कोई करे मात अधारा, लहणा देणा शब्द गहणा, काया चोली साचे मन्दिर आत्म अन्दर आपणे आप पहना रिहा। होए प्रकाश कोटन भाना, गुरमुख साचे चतुर सुजाना, चरन धूढ़ कर इशनाना, आत्म जोती जोत जगा रिहा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, साचा देवे नाम निशाना, भरया जाम रमईआ रामा, साचे मार्ग आपे पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ ठंडी सीतल धार, गुर संगत तेरा इक्क प्यार, लोकमात मार झात, इक्क इकांत आपणा आप निभा रिहा। अमृत साचा सीर, मुख चवांयदा। जन भगतां आत्म देवे धीर, पीड़ कढांयदा। गुरमुखां करे शांत सरीर, काया अग्नी आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द चीर सीस सजांयदा।

❇ ३० पोह २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❇

सचखण्ड सच्चा दरबारया। विच वरभण्ड खेल अपारया। जोती जामा हरि ब्रह्मण्ड, लोआं पुरीआं सर्ब समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां साचे धाम आप बहा रिहा। साचे घर जोत निरँकार है। एका धार अपर अपार है। ना कोई सके विचार, ना वेखे रेखे भेख ना कोई नारी नार है। एका जोती बिन वरन गोती, पुरख अकाला दीन दयाला आपे जाणे आपणी सार है। आपे जाणे आपणी सार, जोत जगांयदा। वसे सच द्वार, आपणा महल्ल सदा अटल एका एक बणांयदा। वसे रस्से निहचल धाम अटल, किसे हथ्थ ना आंयदा। किसे हथ्थ ना आवे जल थल, उच्च पर्बत ना कोई वखांयदा। जोती जामा वल छल, कलिजुग तेरी दात साचे धाम ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा श्री भगवाना, साची बणत बणांयदा। सचखण्ड सच अकालया। जगी जोत बेमिसालया। ना कोई वरन ना कोई गोत, मात पित ना किसे पा लया। ना कोई दुध्ध ना कोई पोत, पुत्तर धी ना किसे अख्वा लया। एका एक निरँजण जोत साचे धाम आप समा लया। जोती जामा हरि भगवाना, निहकलंक पहरे बाणा कलिजुग अन्तिम वार लोकमात मार झात, साची बणत बणा रिहा। जोत निरँजण नूर अकाली, कलिजुग रैण घटा

काली, पुरख अबिनाशी वेख विचार दीपां लोआं पाए सार, विच वरभण्डां करे खेल न्यारे। जोती जामा श्री भगवाना, प्रगट होए विच संसारे। शब्द जणाए इक्क तराना, ना कोई धुन ना कोई सुन पड़दा उहला ना कोई रखावे। गुरमुख साचे संत जन प्रभ लोकमात चुण भेव खुल्हाए दया कमाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे। निरगुण खेल जगत हंकारया। ना कोई गुर ना कोई चेल, भुल्ला सर्ब संसारया। ना कोई बाणी ना कोई शब्द सच्ची धुन्कारया। जोती जोत सरूप हरि निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साचा मेल मिला रिहा। शब्द तराना नाम मृदंग। ना कोई चढ़ाए कंचन काया साचा रंग। पंज तत्त लग्गी झूठी अंचन, जलदे रहण वांग पतंग। गुरमुखां काया आया सिंचण, हरि दर मंगी साची मंग। तन मन भिन्ना हरि हरि भिंचन, मानस देही ना होए भंग। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा चाढ़े रंग। शब्द धार ना कोई विचार, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानया। कवण दुआरा कवण घर बाहरा, जिथ्थे वज्जे तार महानया। कवण वजाए तार अपार रबानीआ। कवण चलाए साची धारा, कवण रखाए धुरदरगाही सच निशानीआ। कवण वखाए रारा रारा रारा, राम रहीम करीम ना किसे पछाणया। बेमुखां आत्म भरया हँकार, चारों कुन्ट होए वैरानया। कलिजुग तेरा धुंदूकारा, बेमुख मारे वड शैतानयां। गुरमुख विरले नाम अधार, प्रगट होए वाली दो जहानया। काया करे ठंडी ठार, अमृत साची बूंद प्या
७६८ ०४ रिहा। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, एका दीपक जोत जगा लया। चरन प्रीती सच प्यार, चार वरनां रीत चलानयां। लोकमात ७६८ ०४
इक्क सच दुआरा, संत मनी सिँघ बण लिखारा, कलम चलाई बेमुहाणया। राजा राणा होए ख्वार, ना कोई दिसे शाह सवार, पवण झुल्ले एका धार, प्रभ मारे शब्द तीर कमानया। कलिजुग पासा आया हारा, सृष्ट सबाई होए दो फाड़ा, गुरमुखां वेल वधाए सतारां हाढ़ा, लक्ख चुरासी फंद कटानया। जगे जोत बहत्तर नाड़ा, काया मन्दिर सच अखाड़ा, पंजां चोरां मार भगानया। धुरदरगाही साचा वाड़ा, पुरख अबिनाशी साचा लाड़ा, गुरमुख नारी जिस प्रनानया। कलिजुग पाया पड़दा भारा आप चबाए आपणी दाढ़ा, गुरमुखां देवे सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञानया। शब्द उठाए साची धाड़ा, वेख वखाणे जूह उजाड़ा, उचे पर्बत हरि हिलानया। शब्द चल्ले काड़ काड़ा, बेमुख जीवां मारे झाड़ां, सीस धड़ धड़ सीस ना कोई दिसानया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणे भाणे, जीव जन्त ना सके कोई पछाणया। लोकमात बणत बणांयदा। मिटे अन्धेरी रात, गुरमुख साचे संत उपजांयदा। देवे साची शब्द दात, हरि सुगात इक्क लिआंयदा। सति पुरख निरँजण साचा नात, दुःख भय भंजन मेल मिलांयदा। धूढ़ी चरन नेत्र अंजन, कज्जल धार शृंगार करांयदा। बणे सुहेला साचा सज्जण, जगत विछोड़ा आप कटांयदा। अमृत देवे इक्क प्याला गुरसिख पी पी रज्जण, आत्म तृष्न मिटांयदा।

काया भाण्डे अन्तिम भज्जण, ना कोई किसे छुडांयदा। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, शब्द जोती खेल खिलांयदा। बेमुख जीव कलिजुग तेरी अग्नी दगन, घर घर धूंआं धार रखांयदा। गुरमुखां ताल आत्म साचे वज्जण, प्रभ शब्द डंक वजांयदा। ना कोई हाजी ना कोई हज्जण, मदीना मक्का वेख वखांयदा। ना कोई ताजी ना कोई ताजन, शब्द घोड़ ना कोई चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणी बणत बणांयदा। निरगुण खेल अपार, ना सरगुण जाणया। जोती इक्क अकाल, जगत भगवानया। आवे जावे दीन दयाल, आपणे भाणे आप सद रहानया। साची नूरी जोत जलाल, शब्द दलाल इक्क रखानया। गुरमुखां झोली देवे डाल, दर मंगण बण सवालीआ। साची जोती दीपक थाल, काया जगे जोत बेमुहानया। चिट्टा अस्व शब्द घोड़ा मारे इक्को छाल, किरपा करे वाली दो जहानया। गुरमुख साचे रक्खण आया लाल, देवे शब्द सच्चा दुशालया। लक्ख चुरासी मात कंगाल, पंजां लुट्टया नाम धन मालया। सोहँ शब्द वस्त आत्म घर रखणी संभाल, हरि तोड़े जगत जंजालया। फल लगाए काया सच्चे डाल, गुरमुख साचे संत जनां, आपे करे रखवालया। अन्त काल ना खाए काल, हरि गोदी आप उठा लया। दो जहानी चले नाल, साचे धाम बहा लया। जगत अवल्लड़ी चल्ले चाल, जोती जामा श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जना एका
७९६ ०४ देवे नाम धन, जगत भगत वड दानीआ। हरि शब्द काया गागरा। गुर शब्द जगत उजागरा। हरि शब्द रती रत्नागरा। ७९६ ०४
गुर शब्द गुरमुख साचे संत जनां, आपे मेल मिलाए, चरन प्रीती इक्क वखाए, हरि सरन सच्ची जन लागरा। सरगुण निरगुण एका धार, शब्द तरंता साची धार, लोकमात बेमुहानया। हरि डोली इक्क बणांयदा। फूलनहारा आप सुहांयदा। करे मात शृंगारा, त्रै लोआं वेस करांयदा। पुरीआं लोआं इक्क अखाड़ा, आपे रचन रचांयदा। साची डोली बण कहारा, आपणे कंध उठांयदा। लक्ख चुरासी करे चोरी, प्रभ आपणा भेव छुपांयदा। हौली हौली जाए तोरी, सच दुआरा हरि निरँकारा, फड़ फड़ बाहर कढांयदा। उतरया आवे वारो वारा, छेवें घर सच विचोला, शब्द नाल रलांयदा। पंचम् हरि गावे ढोला, पवण स्वासी तार वजांयदा। चौथे घर लक्ख चुरासी, विच मात मार झात, वेखे काया चोला, अन्दर बाहर वेख वखांयदा। चौथे जुग तेरा साचा डोला, प्रभ अबिनाशी चौथे घर लिआंयदा। करे खेल घनकपुर वासी, लाल वेस हरि करांयदा। धर्म राए दी लाहे उदासी, दिवस रैण सीस निवांयदा। जनक राए गल कटी फाँसी, धर्म राए बख्शांयदा। कलिजुग वेखे मदिरा मासी, यम राजा खुशी मनांयदा। लाड़ी मौत करे हासी, साची मैहन्दी हथ्थीं लाए, सोहणा रंग चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी देणी फाँसी, सच दुलारी धी कुँवारी, लाड़ी मौत आपे आप समझांयदा। चारे कुन्टां वेखे वारो वारी, ना कोई छड्डी पुत

मां प्यारी, साची सिख्या आप समझांयदा। ना कोई वेखी कन्त भतारा नारी, ना कोई वेखी भैण भ्रा प्यारी, कलिजुग नाता आप तुड़ांयदा। लोकमात ना करे उधारी, चारों कुन्ट पए ख्वारी, फड़ाए एका नाल बहारी, साचा हुक्म सुणांयदा। लाड़ी मौत अजे कुँवारी, धर्म राए अग्गे निमस्कारी, मैं वेखां पहलां चार यारी, कवण वर कवण दर कवण घर, साचा कन्त वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी साची डोली, आप तुराए होली हौली, चौथे घर आसण लाया, वाहवा सोहणी बणत बणांयदा। साचे घर हरि करे विचार। धरत मात तेरी सुणे पुकार। लोकमात तेरी झूठी धार। कलिजुग अन्तिम आई हार। बेमुख जीव मुग्ध गंवार। मदिरा मासी वड हँकार। शब्द स्वासी गुरमुख विरला, पुरख अबिनाशी करे विचार। प्रगट होए घनकपुर वासी, साची डोली करे त्यार। नाल रलाए ना कोई साथी, हथ्थ ना फड़े तेज कटार। ना कोई वेखे शाह अस्वार। ना कोई अस्व घोड़ा ताजी हाथी, आपे चल्ले पवण अस्वार। प्रगट होए त्रैलोकी नाथी, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। आप चलाए साची गाथी, सतिजुग चलाए साची धार। जोती जामा श्री भगवाना साची डोली आप बिठावे, चारे कुन्टां बन्ने वारो वार। इक्क दरवाजा ग़रीब निवाजा लहन्दी दिशा वखांयदा, साची डोली तणया ताण। तणीआं बन्ने शब्द डण्डे नाल। आपे पाए साची वंडा, ना कोई सके सुरत संभाल। वेख वखाणे आत्म देवे गंढ्ा, सोहँ शब्द सच्चा धन्न माल। अन्तिम वेले पाए ठंडां, कलिजुग तेरा अन्तिम वेख, प्रभ अबिनाशी सच सुहेला, आप कराए अन्तिम वेला, चरन प्रीती निभे नाल। जोती जामा श्री भगवाना चोली रंगे लाड़ी मौत सिर वाहे कंघी, आप बिठाए दया कमाए, आपणे कंधे लए उठाए, लोकमात दा राह वखाए, आपे चल्ले नाल नाल। हरि साची डोली आप उठाईआ। पहली पौड़ी दरस दिखाईआ। ब्रह्मे पाई वंड, ब्रह्म लोक वधाईआ। की करे खेल्ह रघुराई, ना जाणे कोई राईआ। चारे वेदां रिहा लिखाईआ। हरि की खेल समझ ना आईआ। ना होए कोई सहाई, कलिजुग वेला अन्तिम आया, ना सके कोई छुडाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, सच दुआरे बैठा आईआ। जोती जामा श्री भगवाना, साची डोली आपणे कंध उठाईआ। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाया। ब्रह्मे अग्गों सीस निवाया। हरि प्रभ साचा शब्द वाचा, साचा राह वखाया। पुरीआं लोआं भाण्डा काचा, आपे भन्ने घड़े आपे लए उपजाया। भाणा मन्नण साचो साचा, प्रभ साचा होए सहाया। जोती जामा श्री भगवाना। हथ्थीं बंनण आया गाना। कलिजुग अन्तिम दर घर साचे जाणा गुण निधाना। अन्तिम मेला जोत मिलाना। ब्रह्मा साची करे पुकार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। एका बख्श चरन प्यार। चारे मुख गए हार। अट्ठे नेत्र वारो वार, रोंदे धांह मार। उलटी नभी कँवल अमृत डुल्ल्हा, आत्म होई दुखिआर। इक्क दुआरा हरि जी खोल्हा, करे साची कार। लोकमात ना लाए मुल्ला, गुरमुखां

देवे शब्द अपार। गुरमुख विरला पूरे तोल तुल्ला, प्रभ साचा तोलणहार। चरन प्रीती घोल घुला, दर घर प्रभ वेख, लेख लिखाए दया कमाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। शब्द बणाए साचा दूला, गुरमुख साचा कर अस्वार। आप बणाए साचा घोड़ा, दर घर साचे देवे वाड़। शब्द पहनाए साचा चोला, तिलक लगाए अपर अपार। आत्म पर्दा साचा खोल्ह्आ, आत्म जोती दस्म दुआर। अन्दरे अन्दर हरि जी बोला, पुरीआं लोआं एका धार। चुक्क ल्याया साचा डोला, इन्द्रपुरी हरि करे पार। आप मिटाए पड़दा उहला, शिव शंकर करे निमस्कार। शब्द सुणाए साचा ढोला, ब्रह्मा वेखे दर दरबार। गुरमुख उत्ते जाए कोला, प्रभ अबिनाशी पहरेदार। जोती जामा श्री भगवाना, साचा लेख आप लिखाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। साचा सिख गया दुआरे। प्रभ अबिनाशी दित्ती भिक्ख, साचा किया वणज वपारे। साची सिख्या लैणी सिख, रसना गाया हरि निरँकारे। आत्म लाही दूई द्वैती विख, चढ़या रंग अपर अपारे। मस्तक लाई साची मेख, कौस्तक मनीआ नूर उज्जयारे। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचा साचे घर आप वसाए ब्रह्मा तेरे उच्च महल्ल मुनारे। उच्च महल्ल मुनारा सच टिकाणया। अन्तिम मन्नणा पए भाणा, साचा राणा हुक्म सुणा रिहा। अन्तिम छड्डणा पए माणा, जोती मेल मिला रिहा। ना कुछ पीणा ना कुछ खाणा, इक्क अधार रखा रिहा। गुरमुख साचे संत सुहेले साचा माण दवाणा, सच दुआरे आप बहा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी बणत बणा रिहा। साचे सिख मिली वड्डयाईआ। शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। आत्म जोती नूर सवाईआ। वरन गोती भेव चुकाईआ। एका ब्रह्म सरूपी ब्रह्मा बैठा लिव लाईआ। सद वजाए शब्द नाद, अमृत धार मुख चुआईआ। लेखा जाणे आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर होए सहाईआ। साची बख्शे अन्तिम दाद, गुरमुख साचे माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सिँघ पाल साचे धाम वसाईआ। साचे धाम गुरसिख वसाया। रमईआ राम, सच सिँघासण डेरा लाया। लाड़ी मौत लक्ख चुरासी मंगे ताम, अट्ठे पहर तृष्न वखाया। पूर कराए हरि जी काम, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी झूठी डोली आपणे कंध उठाया। प्रभ साचे बणत बणाईआ। शिवपुरी रिहा तजाईआ। इन्द्रपुरी डेरा लाईआ। साचा शब्द सलोक सुणाईआ। ना कोई सके रोक, रसना तीर इक्क चलाईआ। लक्ख चुरासी देणी झोक, पुरीआं लोआं माण गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सुरपति राजे इन्द, दे मति रिहा समझाईआ। सुरपति राजे इन्द कर विचार। करे खेल हरि मृगिन्द, अन्तिम कलिजुग आई हार। करोड़ तेतीसा तेरी बिन्द, अट्ठे पहर इक्क प्यार। प्रगट होया हरि हरि हरि वड मरदिंग, करे खेल अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्न्हे आपणी धार। साचा भाणा धुर फ़रमानया। हरि देवे साचा माणा,

८०१
०४

ना कोई जाणे बाल अञ्याणया। सुरपष्त राजा इन्द होए पछताणा, सुघड़ स्याणा ना वक्त पछाणया। वेले अन्तिम ना किसे छुडाणा, प्रभ अबिनाशी चल्ले आपणे भाणया। अमृत आत्म रस छुट्टे पीणा खाणा, काम धेन ना सीर मुख चवाणया। जोती जामा हरि भगवाना, साचा हुक्म सुनेहड़ा आपणा आप सुणा लया। साचा हुक्म हरि सुणाया। इन्द इन्द्रासण दे तजाईआ। पुरख अबिनाशी लोकमात मार झात, वाहो दाही भज्जा आया। गुर संगत बणाई इक्क बरात, साचा लाड़ा आप सजाया। कलिजुग तेरी वेख अन्धेरी रात, शब्द चन्द्रमा सच चढ़ाया। धुरदरगाही सच सुगात, शब्द डोला नाल ल्याया। जन भगतां देवे साची दाद, अमृत साचा सीर पिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा काज मात रचाया। साचा काज श्री भगवाना, ना कोई जाणे राजन राणया। गुरमुखां वेखे वेख वखाए, हरि जी चल्ले आपणे भाणया। धुर दी बाण मस्तक लिखे साची रेखे, आपे जाणे सुघड़ स्याणया। लक्ख चुरासी नेत्र पेखे, मिले माण बाल निधानया। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़े, खिच्चे तीर रसन कमानया। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख विरले मात पछाणया। रच्चया काज हरि निरँकारे। आप आपणा साजे साज, गुरमुख साचे दर दुआरे। गुरमुखां सद्दा मार अवाज, शब्द भाजी साची फेरे। फूलणहार बणाया साचा दाज, आत्म जोती नाल प्रनाए, आप दिवाए चारों कुन्ट चार गेड़े चार चुफेरे। प्रेम मोती तन शृंगार कराए, साचा वेस नर नरेश, सोलां कलीआं आप कराए। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे लाल दुलारे, साची घोड़ी आप चढ़ाए। साची घोड़ी चढ़या लाल। गुरमुखां दस्से राह सुखाल। एका मारी शब्द छाल। प्रभ अबिनाशी चले नाल। फल लगाए साचे डाल। जगत अवल्लड़ी चल्ले चाल। सत्त महीने तिन्न दिन कीती मात प्रितपाल। कलिजुग वेख अन्धेरी रात अग्गे लाया इक्क छोटां बाला नौजवाना, गुरमुखां बणे सच दलाल। हथ्थीं बन्ने हरि जी गाना। शब्द फड़ाए तीर कमाना, करोड़ तेतीसा बीस इकीसा होए सर्ब वैरान। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए शब्द बिबाण। शब्द बिबाणे गया चढ़। प्रभ अबिनाशी फड़या लड़। दर घर साचे गया वड़। छोटा बाल निधाना, डण्डा डण्डा रिहा चढ़। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, आप कराई साची वंडा, गुरमुखां रक्खे सीने ठंडा, अमृत धार बहत्तर नाड़, साची खारी गया चढ़। मात पिता लोकमात लड़, सच दुआरे गया खड़। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, अग्गों बांह लए फड़। आत्म लथ्थी जगत उदासी, खुशी मनाए करे हासी, एका अक्खर ल्या पढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप बन्न्हाए आपणे लड़। गुरमुख साचा सच द्वारया। प्रभ अबिनाशी देवे वर, किरपा कर निरंकारया। आप बहाए साचे दर, सच सिँघासण इक्क वखा रिहा। इन्द इन्द्रासण जाए तज, गुरमुख साचा जाए सज, मस्तक तिलक

आपणा आप लगा रिहा। अमृत पीणा हरि दर रज सदा जीणा गुरमुख पर्दे कज्ज, हरि साचा हुक्म सुणा रिहा। काया भाण्डा लक्ख चुरासी जाणा भज्ज, लाड़ी मौत लाउण ना देवे अज्ज पज्ज, प्रभ साची डोली आपणे हथ्थ उठा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे संत दुलारे, बाल अञ्याणे साचे धाम सुहा रिहा। छोटे लाले खुशी मनाई। वेख वखाणे साचे थाँईं। ना कुछ खाणा ना कुछ पीणा, एक नाम साची धार प्रभ अबिनाशी ठंडी छाईं। जोती जामा श्री भगवाना, आप बहाए करे सच निआए, फड़ फड़ दोवें बाहीं। करे सच निआउँ, जगत कल रीतिआ। गुरमुखां माण दवाए साचे थांउँ, एका राह वखाए चरन प्रीतिआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे आप सदा सुरजीतिआ। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साच दया कमाए, खुशी मनाए सिँघ मनजीतिआ। मिली वड्याई सच दरबारया। आत्म वज्जी वधाई, छड्डया लोकमात संसारया। गुरमुखां गाउणा चांईं चांईं, कलिजुग तेरी धार बंधा रिहा। साढे तिन्न हथ्थ नींह रखाई, सोहणा सुच्चा सच महल्ल उसारया। चार कुन्ट दहि दिश वेख वखाणया। उच्च मन्दिर दसवां घर बन्द रखा रिहा। सुखमन नाड़ी टेडी धार, निरगुण सरगुण दोवें बन्द बणा रिहा। कलिजुग तेरी सच निशानी, आप बणाए अन्तिम वार साचा लेख लिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी काली डोली, उत्तों लाहे लाल चोली, आपणे कंध उठा रिहा। काली चोली उत्ते ताण। करे खेल हरि जाणी जाण। बाशक तशका कर पछाण। नील कंठ रंग साचा माण। जोती जामा हरि भगवाना, नाल रखाए शब्द बाण। आया दर सच दुआरे। शिवपुरी हरि पावे सारे। शिव शंकर पाए सार, ना कोई करे विचार। पुरख अबिनाशी खेल अपार। जोती मेल मिलावा वारो वार। साचा हुक्म धुर फ़रमान, शब्द ढोला इक्क सुणाए खोल्ह बन्द कवाड़। अन्तिम जोती मेल मिलाए, खेल रचाए माण रखाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वार सतारां हाढ़। जोती जामा श्री भगवाना, साचे घोड़े शब्द चढ़या, शब्द तीर हथ्थ विच फड़िआ, धुरदरगाही सचा लाड़। शिव शंकर दर द्वार पुकारदा। किंगरे किंगरे वज्जे मृदंग, चारों कुन्ट रंग कुफर हँकार दा। लक्ख चुरासी होई नंग, कोई ना दिसे साचा संग, नाता तुट्टे सांझे यार दा। धरत मात मंगे मंग, हथ्थीं मैहन्दी कवण रंग, साचा खेल हरि जी मेल, अन्तिम कलि परवरदिगार दा। लाड़ी मौत चाढ़े तेल, यमराज वटणा लाए करे खेल रंग नवेल दा। हथ्थ कलीरे तन श्रृंगार कराए, लक्ख चुरासी ना लँघाए, बुहा खोल्हे धर्म राए दी जेल्ह दा। शिव शंकर अंकर कंकर बोले मृदंगा, चारों कुन्ट तीर तुफंगा, कलिजुग तेरा साचा जंगा, मिटे निशाना बेईमान दा। सुणी पुकार हरि दातार। शिव शंकर देवे इक्क प्यार। निहकलंक कलि जामा पाया, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। शब्द खण्डा हथ्थ उठाया, वेख वखाणे वारो वार। कलिजुग कन्ढा अन्तिम आया, छड्डणा पए दर द्वार।

हरि जी साची वंड वंडाया, लोकमात कर विचार। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणी जाणे धार। साची वंड हरि वंडांयदा। कलिजुग जीवां देवे दंड, साची बणत बणांयदा। गुरमुखां शब्द दात देवे वंड, साची रीत मात चलांयदा। आप उठाए आपणे कंध, गुरमुखां पापां भारी पंड, हौला भार रखांयदा। आदि अन्त ना देवे कंड, साध संत आप तरांयदा। जोती जामा हरि भगवाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सच निशाना इक्क झुलांयदा। शिव शंकर खुशी मनाई। प्रभ साचे दया कमाई। मिले मेल हरि रघुराई। कंड विख उत्तर सभ जाई। जोती जामा श्री भगवाना, लोकमात रिहा बणत बणाई। लोकमात हरि बणत बणाई। महिंमा अगणत गणी ना जाई। गुरमुख साचे संत, हरि लोकमात रिहा उपजाई। ना कोई जाणे जीव जन्त, प्रभ साचे लेख रिहा लिखाई। आदि अपरम्पर आदिन अन्ता जुगा जुगन्त, आपणी रचन रिहा रचाई। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे संत दुलारे साची सेवा लाई। साची सेवा हरि जी लाए। धरत मात दी तृख मिटाए। लहू मिज्झ दा घाण वगाए। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा भेव छुपाए। आप आपणी बणत बणाई। धरत मात मन वज्जी वधाई, प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, आत्म तृखा मात बुझाई। छोटा बाला कर त्यारी। उडया मार शब्द उडारी। वेंहदा जाए थांउँ थाँईं, आपे जाए आपणी वारी। साचे घर सच्चे दरबारी। मिले हरि साचे घर, ना जन्मे ना जाए मर, सदा सुहेला ठंडी छाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर द्वार आपे दए बहाई। सच दुआरे गुरमुख सुधारया। करे खेल अपार विच संसारया। चार वरनां मीत मुरारे, जगत चले अवल्लड़ी धारया। जगत निशाना सच दरबारे, सचखण्डी बणत बणा रिहा। पंचम् पोह नींह उसारे, सिँघ जगदीशे तेरीआं हड्डीआं गुरसिख पैरां हेठ दबा रिहा। हड्ड मास तेरी नाड़ी साड़े, साची बणत बणा रिहा। राजे राणयां खिच दुआरे, मस्तक टिक्का शाही ला रिहा। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतारे, सच सुनेहड़ा तेरा लेख आपे आप घला रिहा। लक्ख चुरासी नेत्र लैणा पेख, सतिजुग तेरी साची धार, पुरख अबिनाशी कर्म विचार, आपे आप जणावे ना कोई जाणे जीव गंवार, खुल्ले रक्खे नौ कवाड़, दसवां बन्द करवा रिहा। दसवें घर हरि निरँकार, आपे जाणे आपणी सार, पर्दा उहला इक्क रखा रिहा। गुरमुखां देवे शब्द हुलार, पवण उनन्जा छत्र झुला रिहा। आत्म जोती काया मण्डल करे हरि उज्जयारया। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा अन्तिम खेल आपणे हथ्थ रखा रिहा। जगत जगदीशे बणत बणाई। पंचम् पोह लिख्त लिखाई। आप रखाए साची नींह, गुरमुखां बणत रिहा बणाई। अट्ठ वार अट्ठ तत्त काया मन्दिर तेरे अन्दरे अन्दर रिहा दबाई। नौवें दर उत्ते धर, सताई वार घेर लयाई। कँवल नाभ होए बेताब, अमृत झिरना एका झिरे, आत्म किरना किरना किरे, साचा मेघ रिहा बरसाई। जोती जामा श्री भगवाना। सच

८०४
०४

महल्ल सदा अटल एका एक रखाई। उच्च महल्ल घनकपुर वासीआ। लोकमात इक्क बणाए हरि शाहो शाबाशीआ। लोकमात फलया फुला, प्रभ मिल्या पुरख अबिनाशीआ। गुरमुख विरला पूरे तोल तुला, ना होए मात उदासीआ। भाग लगाए साचे कुला, जोती जामा श्री भगवाना, आदि अन्त ना जाए विनासीआ। सच दरबारा कर त्यार। गुरमुखां करे मात अधार। साची सिख्या विच संसार। शब्द देवे नाम भिखा, आत्म तृष्ना भुक्ख निवार। साचा लेखा हरि जी लिखा, आत्म खोल्ह बन्द कुआड़। लोकमात लगाए साची मेखा, ना सके कोई उखाड़। लक्ख चुरासी करे लेखा, पुरख अबिनाशी सतारां हाढ़। जोती जामा हरि जी भेखा, गुरमुखां जोत जगाए नाड़ नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलार लोकमात बणाए साचे लाड़। पारब्रह्म सच धार पुरख सुजानया। पारब्रह्म सच धार, करे खेल जुगो जुग महानया। पारब्रह्म कल धार, पुरीआं लोआं बन्न वखानया। पारब्रह्म कल धार, साचा धाम हरि भगवानया। पारब्रह्म कल धार, आपे जाणे आपणी सार, चले चाल निरालीआ। पारब्रह्म कल धार, लक्ख चुरासी चुक्के आप कराए आर पार, दोवें हथ्थ रक्खे नालया। पारब्रह्म कल धार, साची डोली कर त्यार, शिव शंकर तेरे दर द्वार साचा करे अन्त विहार। जोती जामा मेल कर, होए मात त्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपार। काली डोली काली कालया। प्रभ बणाए झूठी गोली, साची बोली जगत विहालया। पाए वस्त काली चोली, जामा अबलीस लिखाईआ। बेमुखां आत्म पर्दे रिहा खोल्ही, शब्द हदीस इक्क रखा रिहा। पूरे तोल रिहा तोली, नर नरेश चार कुन्ट आपे आप जगा रिहा। जोती जामा हरि भगवाना विच जहानां, साचा डंक मात वज्जा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, धर्म राए तेरी साची डोली, धरत मात टिका रिहा। धरत मात कलि चढ़या चाअ। प्रभ अबिनाशी बणत बणाई, लाड़ी मौत नाल रलाई, इक्क वखाया सच्चा थां। चारों कुन्ट रिहा फिराई, वेख वखाणे सभनीं थाँईं, राजा राणा कोई छड्डे ना। घर घर झूठे काग उडाई, मां पुत्त विछोड़ा डाहढा पाई, राह इक्क दूजे नूं दस्से ना। एका आपणा डंक वजाई, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान विच जहान ख़ाक रुलाई, कोई किसे छुडाए ना। नौ खण्ड पृथमी सत्तां दीपां रंड कराई, चण्ड प्रचण्ड आपणे हथ्थ उठाई, झूठे भरम भुलाईं ना। जोती जामा हरि भगवाना, लक्ख चुरासी बन्न्हण आया गाना, कच्चा तन्द कोई तुड़ाए ना। लाड़ी मौत करे पुकार। वर घर साचा हरि दातार, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, मैं करावां आपणी कार। वेख वखाणे नारी नर, कलिजुग जीव गंवार। गुरमुखां देण जावां वर, दोए जोड़ करां निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमाती सच सच्चे सरदार।

❋ १ माघ २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ❋

हरि सरन जग माण, नौ निध पाईआ। हरि सरन जग माण, जुगां जुगन्त कारज सिद्ध, आदि अन्त संग निभाईआ। हरि साचा मात साची बिध, आत्म तृख विकार गंवाईआ। हरि सरन जोती जोत सरूप हरि, एका एक रखाईआ। हरि सरन जग लाल, शब्द ख़ज़ानया। हरि शब्द ना भूल, जीव दीवानया। हरि शब्द कलि फूल, नाम निधानया। हरि शब्द मेल कन्त कन्तूल, मेल मिलानया। हरि सरन जोती जामा श्री भगवाना, आपणी आप रखा रिहा। हरि सरन सर्ब सुखदाया। हरि सरन मिटे तृष्ना भुक्ख, हउमै रोग गंवाया। हरि सरन आप निवारे काया दुःख, शब्द साची चोग चुगाया। हरि सरन आत्म परमानंदे, साचा सुख सहिज धुनकाईआ। हरि सरन जोती जोत सरूप हरि, एका आपणी आप रखाईआ। हरि सरन दो जहानया। हरि सरन भेव चुकाए अवण गवण, लक्ख चुरासी फंद कटानया। हरि सरन गुरमुख विरले आए मात तरन, हरि जोती जोत जगानया। हरि सरन हरि भाणा जन जरन, हरि साचा शब्द पछाणया। हरि सरन ना कोई गोत ना कोई वरन, एक सरन ब्रह्म विखानया। हरि सरन साचा धर्म, रसना हरि गुण गानया। हरि सरन गुरमुख विरले लाए लोकमात चुण, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआ। हरि सरन आप जणाए गुण अवगुण, बाणी वेद ना कोई पढ़ानया। हरि सरन करे कराए छाण पुण, दुरमति मैल सर्ब गंवानया। हरि सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी इक्क रखानया। हरि सरन जगत भगत, त्रैलोकी नाथिआ। हरि सरन अन्त कराए मुक्त , एका लाए शब्द बाणया। हरि सरन धुरदरगाही साची जुगत, ना सके कोई वखानया। हरि सरन मेट मिटाए कलिजुग झूठी भुगत, ना लग्गे कोई दोखिआ। हरि सरन इक्क उपजाए आत्म सुखत, देवे शब्द नाम संतोखिआ। हरि सरन दो जहान निर्मल मुखत , जोती जोत सरूप हरि, इक्क पढ़ाए साची पोथीआ। हरि सरन शब्द रसनानया। हरि चरन ब्रह्म गयानया। हरि सरन गुर चरन, गुरमुख विरले मात पछानया। हरि सरन खुल्हे हरन फरन, देवे सच्ची इक्क निशानीआ। हरि सरन जोती जोत सरूप हरि, मस्तक धूढ़ी शब्द उडानया। हरि सरन मस्तक धूड़या। हरिशरन करे चतुर सुघड़ स्याण मनमुख मूढ़या। हरि सरन दरगाह साची देवे माण, लोकमात दिसावे कूड़ो कूड़या। हरि सरन पवणी शब्दी इक्क उडान, रंग चढ़ाए एका गूढ़या। हरि सरन नाम जोती शब्द निशान, आपे जाणे आप पछाणे, सृष्ट सबाई दिसे कूड़या। हरि शब्द नाम निशानीआ। हरि शब्द जगत बेमुहानया। हरि शब्द हरि सरन मिले दान, वड वड दानीआ। हरि शब्द हरि सरन जगत माण, सच निशान आपणा आप झूलानया। जोती जोत सरूप हरि, भाणा जिस पछाणया। हरि सिँघासण अडोल, हरि निरंकारया। हरि सिँघासण अडोल, ना किसे उसारया। हरि

सिँघासण अडोल, सच महल्ल अपर अपारया। हरि सिँघासण अडोल, ना दिसे कोई चार द्वारया। हरि सिँघासण अडोल, पावा चूल ना कोई रखा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, लम्भा चौड़ा ना कोई वखा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आपे आप बणा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना किसे जणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना बाडी कोई बणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना ढाडी कोई गाईआ। हरि सिँघासण अडोल, छत्ती रागां भेव ना राईआ। हरि सिँघासण अडोल, नारद दिस ना आईआ। हरि सिँघासण अडोल, ब्रह्मा वेता सार ना पाईआ। हरि सिँघासण अडोल, शिव शंकर दिस ना आईआ। हरि सिँघासण अडोल, सुरपति राजा इन्द ना वेखे नैण उठाईआ। हरि सिँघासण अडोल, रवि ससि कोट वेख ना पाईआ। हरि सिँघासण अडोल, मात पताल अकाश ना कोई बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, सच मण्डल दी साची रासा, साची सेजा आप विछाईआ। हरि सिँघासण अडोल, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आपे जाणे आपे आप रघुराईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई सुहा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई बस्त्र भूषण फूलनहार नाल लटका रिहा। हरि सिँघासण अडोल, अस्त्र शस्त्र ला ना हरि सुहा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, प्रभ आपणा आप उठा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, साचे थांउँ है। हरि सिँघासण अडोल, करे सच निआउँ है। हरि सिँघासण अडोल, पारजात ना वेखे ठंडी छाउँ है। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, एका एक लगाए आपणे नाउँ है। हरि सिँघासण अडोल, सच टिकाणया। हरि सिँघासण अडोल, एका एक सच बिबाणया। हरि सिँघासण अडोल, गुर पीरां हथ्थ ना आ रिहा। हरि सिँघासण अडोल, सुघड़ स्याणे जगत राणे ना वेख वखाणया। हरि सिँघासण आप उठाए आपणे भाणे, ना देवे कोई सहारया। हरि सिँघासण आप आपणा आपे जाणे, ना कोई किसे जणा रिहा। हरि सिँघासण हरि सच निशाने, हरि साचे धाम रखा रिहा। हरि सिँघासण जोत महाने, प्रभ आपणी आप जगा रिहा। सच सिँघासण धूप दीप ना कोई वखाणे, संध्या काल ना कोई निशानीआ। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आपणा आप रखानया। हरि सिँघासण अडोल, धाम अनमोल्लया। हरि सिँघासण अडोल, बिराजे हरि कन्त कन्तूलया। हरि सिँघासण अडोल, हरि साचे साजन साज, हरि झुल्ले साचा झूलया। हरि सिँघासण अडोल, वड शाहो राजन राज, आप चुकाए आपणा मूलया। हरि सिँघासण अडोल, आप आपणी रक्खे लाज, आदि अन्त कदे ना भूलया। हरि सिँघासण अडोल, दूसर ना कोई मारे अवाज, दर दुआरे ना कोई बोल्लया। हरि सिँघासण अडोल, किसे ना बन्ने हरि जी धागे, आप आपणा साचा तोल तोल्लया। हरि सिँघासण सदा अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा दर दुआरा आपे खोल्लया। हरि सिँघासण सच द्वारया। हरि

सिँघासण अडोल, अन्त ना पारावारया। हरि सिँघासण हरि जी मवल, पूरे तोल तुला रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई जाणे जीव धवल, लेखा अगणत ना कोई गिणा रिहा। हरि सिँघासण ना उपजे किसे कँवल, ना नाभी कोई टिका रिहा। हरि सिँघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोती नाल समा रिहा। हरि सिँघासण खेल अपारया। जोती नूर इक्क निरंकारया। चार कुन्ट दहि दिशा वेखे वेख विचारे पावे सारया। साचा घर साचा झण्डा झुल्ले ना दूसर किसे द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती लाटी लाट लिलाटा छत्र झुल्ले सीसे, आप आपणी बणत बणा रिहा। जोती जामा हरि जगदीशे, ना कोई भेव खुल्ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण हरि साचा डेरा ला रिहा। सच सिँघासण कर त्यार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। कवण साजणा हरि जी साजे, कवण बन्ने माया धार। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत कर अकार। हरि साचे मता पकाया। घर सतवें पाड़े छतां, इक्क अमृत ताल सुहाया। ना कोई लहू मिज्झ ना नाड़ी रता, ना सागर सिंध वहाया। ना कोसा ना पाणी तत्ता, ना ठंडा ठार वखाया। ना रोटी ना कोई भत्ता, ना तीर्थ ना कोई तट्टा, ना काया ना कोई मट्टा, प्रभ साची खेल रचाया। ना धड़ी ना कोई वट्टा, ना मिट्ठा ना दीसे खट्टा, ना लपेटे किसे पट्टा, प्रभ आपणे आप रहाया। जोती जोत सरूप हरि, सत्तवें घर दर दुआरे, साचा भाग लगाया। सच दुआरे खुल्ले दर। आप आपणी किरपा कर। जोत सरूप चरन उठाए, चारों कुन्टां डगमगाए, दर दहिलीजों बाहर कर। साचा चरन हरि छुहाए। छेवें दर कुण्डा लाहे। ताल सुहावा इक्क सुहाए। अमृत भण्डारा नाम रखाए। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण आपणा आप सुहाए। हरि साचे चरन छुहाया। अमृत ताल इक्क भराया। सत्तवें दर दे थल्ले रखाया। छेंवें घर दा मूंह खुल्लाया। एका बूंद धार वहाया। खुल्ल्या बन्द कवाड़ छेवें घर धाड़ धाड़, साचा शब्द बोल बुलाया। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण लाया। साची चल्ले अमृत धारा। छेवें खुल्ले बन्द कवाड़ा। शब्द चल्ले धाड़ धाड़ा। हरि जी आया दया कमाया, साचे घर पड़दा पाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आपे बोले आपे तोले, ना कोई दिसे नाड़ी नाड़ा। साचे घर शब्द जैकारा। राग नाद ना कोई वखाणे, ना कोई रक्खे डंक डफारा। एका नाद हरि ब्रह्माद, धुरदरगाही साची दाद, आपे बणे हरि सुनारा। करे खेल माधव माध, साची धुन पुरख अबिनाशी सुणी, साचा अमृत देवे सीर न्यारा। जोती जामा श्री भगवाना, सच सिँघासण आप बिराजे, आपे बन्ने आपणी धारा। साचा नीर शब्द विरोल्लया। अमृत मिल्या साचा सीर, घर साचे शब्द अगम्मा आपे बोल्लया। ना कोई रक्खे थल्ले थम्मा, गगन पतालां मूल ना डोल्लया। ना कोई दीसे नाड़ी चम्मा, ना कोई पड़दा उहलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत प्याला दित्ता भर, साचा

८०८
०४

शब्द आपे बोल्लया। साचा शब्द दए दुहाई। प्रभ अबिनाशी सरन रखाई। आप आपणी गोद उठाईं। जोती साचा मेल मिलाईं। वरन गोती इक्क बणाईं। आत्म मेरी रहे ना सोती, अट्ठे पहर आप जगाईं। साचा दईं माणक मोती, जगत तृष्ना आपणे हार बणाईं। साचा बणी खेवट खेटा, पंजवें दुआरे बाहर कराईं। आपे बण मां प्यो बेटा, आपणी उंगली नाल रखाईं। जोती जोत सरूप हरि, शब्द विरोले साचा हरि, ना जन्मे ना जाए मर, आपे नेतन नेता। शब्द जोती मेल मिलाया। अमृत भरया साचे हरि ताल, पूर भण्डार रखाया। आदि अन्त ना होए कंगाल, साचा माण दवाया। आपे बणे हरि रखवाल, किसे दूसर हथ्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर घर पंचम् डेरा लाया। पंचम् आया हरि निरँकार। पवण उठाई ख़बरदार। शब्द शब्दी हरि चरन करे निमस्कार। पवण पुकारी दर निमस्कारी, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। मेरी आई साची वारी, सेवा बख्शी सच्ची सरकार। प्रभ अबिनाशी पाए सारी, पवण सुनेहड़ा छत्र झुलार। साची खेल करे न्यारी, पवण जोती मेल मिलार। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, आप बणाए आपणी कारी, शब्द बणाया साचा यार। जोती जोत सरूप हरि, आपे बन्ने तिन्नां धार। शब्द पवण जोत इक्क अकारया। इक्क बणाई वरन गोत, साचा मता पका रिहा। दिवस रैण रैण दिवस ना रहणा सोत, अट्ठे पहर हरि जगा रिहा। हरि दाना बीना साची जोत, अमीर वजीर पवण शब्दी नाल रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे घर चरन छुहा रिहा। पंचम् घर पवण मसाणया। मिल्या मेल जोत भगवानया। देवे माण शब्द गयानया। झुल्ले इक्क निशाना तख़्त सुहानया। ना कोई रक्खे दर दरबान, तीर कमान ना कोई रखानया। अट्ठे पहर नौजवान, ना कोई जाणे बिरध बाल अञ्याणया। ना कुछ पीण ना कुछ खाण, हरि रंग आपणा आपे माणया। ना कोई वेखे ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म जोती धर्म साचा कर्म साची कल वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर तिन्नां वसेरा पंचम् दर साचा धाम सुहा रिहा। पंचम् घर मिले वड्याई। प्रभ अबिनाशी दया कमाई। आत्म तत्त चेतन्न चित्ता, आपणी बणत रिहा बणाई। जोती जोत सरूप हरि, महिंमा अगणत गणी ना जाई। आप आपणा मति रखाया। पुरीआं लोआं बन्न वखाया। मात पताल अकाश, गगन ब्रह्मण्डां साचा खेल रचाया। घट घट हरि जी रक्खे वास, दिस किसे ना आया। ब्रह्मलोक शिवलोक इन्दलोक बन बन बनवारी आप अख्वाया। इक्क सुणाए शब्द सलोक, पवण सुनेहड़ा दए घलाया। आत्म जोती रक्खे रोक, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, चौथे घर देण वर लोकमात आया। चौथे घर बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी मात उपजांयदा। हड्ड मास नाड़ी पिंजर लहू मिझ घाण आप करांयदा। आपे करे आप पछाण, आपे बणत बणांयदा। साचा देवे जीआ दान, आत्म जोती विच

टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, साची बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी हरि उपाया। साची जोती विच टिकाईआ। पवण स्वासी नाल रलाईआ। शब्द जणाई हरि रघुराईआ। अट्ठे पहर रिहा सुणाईआ। आत्म दर वज्जदी रहे वधाईआ। कदे ना होवे सुंञा घर, हरि हरि मन्दिर डेरा लाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण रचना हरि रचाईआ। ना कोई लेखे लेख लिखाए प्रभ अबिनाशी तेरे कर्म, लक्ख चुरासी रिहा लेख लिखाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, संत जनां हरि बन्ने गाना, चौथे दर मेल मिलाईआ। चौथे घर हरि भगवान। सच धर्म दा इक्क निशान। लोकमाती नाम बबाण। आपे बैठा मारे झाती, जीव जन्त साध संत करे पछाण। जुगा जुगन्तर वेखे कलि काती, एका मारे शब्द बाण। आप उठाए सुत्तया रातीं, इक्क रखाए आपणी आण। जन भगतां बख्शे अमृत बूंद स्वांती, साचा नाम चरन ध्यान। गुरमुख साचे तेरी उत्तम जाति, हरि हरि साचा रसना गाण। ना कोई पिता ना कोई माती, मिले मेल पुरख बिधाती, आवण जावण फंद कटान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम दान। साचा नाम हरि खज़ाना। आपे देवे बीना दाना। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म झोली हरि भराना। एका देवे नाम धनां, अट्ठे पहर शब्द तराना। साचा राग सुणाए कन्नां, अनहद धुन अनाहद काना। गुरमुखां बेड़ा आपे बन्ना, मेल मिलाए साचे घर पद निरबाना। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा मात धर, गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञाना। लोकमात मात कल धारया। आवे जावे वारो वारया। सतिजुग त्रेता उधरे पार, द्वापर खेल बणा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम वधे वेल, प्रभ अबिनाशी पावे सारया। लक्ख चुरासी चढ़ना तेल, आप व्याहे लाड़ी मौत साची नारीआ। धर्म राए दी जाणा जेल, ना होए कोई सहारया। अचरज पारब्रह्म कलि खेल, तेरी जाए वारो वारया। ना कोई वेखे गुर चेल, पीरां शेखां आई हारया। नर नरायण नेत्र लैणा पेख, करे खेल जगत निरंकारया। आप मिटाए कलिजुग तेरा जूठा झूठा भेख, हथ्थ फड़े शब्द कटारया। गुरमुखां मेट मिटाए बिधना लिखी रेख, लेखा लिखे निरगुण हारया। साचे नेत्र लैणा पेख, दसम दुआरे हरि खोले बन्द कवाड़या। गुरमुखां देवे हरि जी दात, आत्म भण्डारे देवे भर, काया चोले पुरख अबिनाशी आपे बोले, रचन रचाए सतारां हाड़या। शब्द बिबाण ल्याए डोले, गुरमुख बणाए चरन गोले, सोहँ कन्ढा हथ्थ उठाए आपे पूरे तोल तोले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द घोड़े साचे चाढ़या। साचे घोड़े शब्द चढ़ांयदा। जगत विछोड़ा आप कटांयदा। चरन प्रीती हरि जी जोड़े, दरस अमोड़ हरि संजोग आपणा आप वखांयदा। गुरमुख साचा दर साचा लोड़े, अन्तिम वेले हरि जी बौहड़े, आपणी गोद उठांयदा। अन्तिम वेला वक्त दुहेला दिन रहि गए थोड़े, राजा राणा बेमुहाना शाह सुल्ताना दर दर घर घर पछोतांयदा। गुरमुख साचा सुघड़ स्याणा, पुरख

अबिनाशी मन्ने भाणा, घनकपुर वासी साचा राह वखांयदा। ना कोई आए मदिरा मासी, गुरमुखां देवे शब्द स्वासी, ठग चोर यार निन्दक जूठे झूठे मायाधारी हरि साचा दर दुरकांयदा। गुरमुखां देवे नाम खुमारी, चरन प्रीती साची धारी, काया ठंडी ठार रखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, काली डोली हरि शृंगारी, हरि निरँकारा सच कहारा आपे आप अखवांयदा। साची डोली हरि बणाई। धर्म राए दी साची गोली, अन्दर ना किसे शब्द बोली, प्रभ साचे दया कमाई। पूरा तोल हरि जी तोली, कलिजुग अन्तिम वेला, ना पासा कोई बचाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर सदा रक्खी ठंडीं छाईं। ठंडी छाउँ गुर चरन द्वारया। आपे पिता आपे मां, अमृत देवे शब्द न्यारया। ना कोई रक्खे मज्झ गां, अमृत आत्म रस चवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां साची बणत बणा रिहा। हरि साची बणत बणांयदा। अमृत बख्शे साची दात, आत्म तृखा मात मिटांयदा। गुर चरन सीर अमृत बूंद स्वांत, हउमे रोग गवांयदा। आपे वेखे मार झात, अन्दर बैठा डगमगांयदा। नित नवेला सदा इकांत, जोती करे हरि जी मेला, अमृत मेघ बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघी वक्त सुहांयदा। पहली माघी वक्त सुहंदड़ा। गुरमुखां धोए दाग, कर्म करंदड़ा। हथ्थ आपणे पकड़े वाग, शब्द घोड़ा इक्क रखंदड़ा। हरिजन सोया जाए जाग, वर पाए माण लोड़ंदड़ा। सच दुआरे हँस बणाए

काग, हरि अमृत मुख चवंदड़ा। माया डस्सणी ना डस्से नाग, हरि शीतल धार वहांयदा। आत्म तृष्ना बुझे आग, चार चण्डाली दूर करांयदा। गुरमुखां होए वड वडभाग, अमृत प्याला इक्क पिलांयदा। हरि मिल्या कन्त सुहाग, दीन दयाला मेल मिलांयदा। आप बुझाए तृष्ना आग, आत्म तृखा दूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर गुर संगत मेला गुर चरन प्रीती साचा राह वखांयदा। गुर चरन प्रीती सच विहारया। मानस देही जाए जीती, मिले मेल भतारया। सदा सुहेला काया सुघड़ स्याण रक्खे अतीती, ना आवे पासा हारया। अमृत बूंद स्वांती पीती, हरि मिल्या वड भण्डारया। मानस देही सुफल कीती, गुर चरन सरन निमस्कारया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आसा मनसा पूर करा रिहा। माघ वज्जी वधाई, मग्न गुर चेलया। ना होवे मात जुदाई, प्रभ साचा मेल मेलया। फड़ फड़ बाहों राहे पाई, बण साचा सज्जण सुहेलया। वेले अन्त होए सहाई, दर घर साचा वर घर धाम वसे रंग नवेलया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिल्या मेल नर हरि अलबेलया। धर्म राज हरि द्वार। अग्गे दिसे नर निरँकार। दोए जोड़ करे निमस्कार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। नर नरेशा देवे वर, रसना मुख आप उचार। धरत मात सुफल कराए तेरी कुक्ख, गुरमुख साचे संत अपार। धर्म राए तेरा चुक्के दुःख, प्रभ अबिनाशी पाए सार। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर वसे साचे घर देवे वर सच्ची सरकार। सच सरकार हुक्म सुणाईआ। तेरा खुल्हे बन्द कवाड़, खुशी मनाईआ। मगर लग्गे एका धाड़, राजा राणा दए दुहाईआ। गलों चोगा देवे पाड़, सिर ताज रहण ना पाईआ। घर तेरे विच देवे वाड़, ना सके कोई छुडाईआ। फड़ फड़ टंगे झाड़ झाड़, वखो वख रंग वखाईआ। सिर हथौड़ा वज्जे काड़ काड़, अग्नी तीला आप लगाईआ। घुट्ट घुट्ट बन्न्हे नाड़, लहू मिज्झ बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, दे मति रिहा समझाईआ। धर्म राए खुशी मनाउँदा ए। प्रभ अबिनासी रसना गाउँदा ए। घनकपुर वासी जाम प्याउँदा ए। फड़ फड़ मारे लक्ख चुरासी, एका राह वखउँदा ए। धर्म राए दी करे दासी, लाड़ी मौत नाल रलाउँदा ए। मेट मिटाए मदिरा मासी, साचा शब्द लिखाउँदा ए। शब्द सुनेहड़ा देवे कांशी, प्राग अयुध्या आप समझाउँदा ए। साची जोत मात प्रकाशी, सतारां हाढ़ी बणत बणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा देवे वर, धर्म राए निउँ निउँ सीस निवाउँदा ए। धर्म राए गुण साचा गाए। प्रभ अबिनाशी पुकार सुण, मेरा घर इक्क वसाए। लक्ख चुरासी छाण पुण, गुरमुख साचे वख कराए। सोहँ शब्द सुणाए साची धुन, सतिजुग साची रेख वखाए। गुरमुखां पुकार लए कन्न सुण, धरत मात दी गोद बिठाए। जोती जोत सरूप हरि, सतिजुग साचे साची धार मात चलाए। सतिगुर साचा धर्म धराया। पहली माघी दिवस सुहाया। माण ताण विच जहान, श्री भगवान आपणी आण रखाया। इक्क झुलाए धर्म निशान, सत्तां दीपां नौजवान, नौवां खण्डां वंड कराया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा कर्म कमाया। हरि द्वार वड भण्डार शब्द अपारया। गुरमुखां करे ख़बरदार कर प्यार, देवे नर निरंकारया। मानस जन्म जाए संवार, आवे सरन सच्ची सरकारया। उलटी नाभी कँवल मौलया, झिरना झिरे अपर अपार, नूरी जोत कर उज्जयार, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। शब्द चलाए एका धार, आत्म हँकार विकार मिटा रिहा। वेखे रंग सच्चा करतार, गुरमुख साचे बूझ बुझा रिहा। शौह दरयाए बेड़ा पार, प्रभ आपणे कंध उठा रिहा। धुरदरगाही सच विहार, एका शब्द राग सुणा रिहा। ना कोई जाणे जन्त गंवार, गुरमुख सोया आप उठा रिहा। शब्द भण्डारा भरे भण्डार, काया मन्दिर साचे अन्दर, एका वस्त टिका रिहा। नूर उजाला गुर गोपाला, काया डूंघी कन्दर, साचा दीपक आप सुहा रिहा। आत्म तोड़े वज्जा जन्दर, सोहँ कुंजी नाम लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, दर आए माण दवा रिहा। साचा मिले माण, हरि सरन निरंकारया। अमृत देवे पीण खाण, मिली धारा ठंडी ठारया। आप चुकाए जम की कान, बन्द खुलासी आप करा रिहा। इक्क रखाणे शब्द आण, सच्ची सिख्या आप सिक्खा रिहा। मदिरा मास जगत त्याग, हरि साचा मार्ग ला रिहा। अनहद उपजे साचा राग, धुन धुनी आपणे हथ्थ रखा

रिहा। सच सितारा आप वजन्ता, राग रागनी एक धार सुणा रिहा। गुरमुख साचे कन्न सुणंता, आप बणाए आपणी बणता, पवण अस्वारी शब्द उडारी, अन्दरे अन्दर करा रिहा। आपे गोबिन्द आपे गोविन्ता, आपे भोगी आपे भोग भुगंता, शब्द धुन नाद धुन्कारी, हरि साचा नाद वजा रिहा। माण दवाए साचे संता, चरन बहाए आदिन अन्ता, सोहँ शब्द जिह्वा रसना हरि चोग चुगा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुखां देवे नाम निशाना, वड वडभागी दिवस माघी, लोकमात सुहा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, विच संसारया। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई तोल तुला रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अनमोल, जुगो जुग मात धरा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, सतिजुग साचे धरत मात टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोल, अठारां भेखी वेखा वेखी लाल धार खेल रचा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई जाणे जगत डोला, ना कोई बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण जगत अतोला, त्रेते आपणा आप उपा रिहा। हरि सिँघासण सदा अडोला, दोए दोए लेख लिखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, जुगो जुग जुगन्ती मात बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, शब्द छत्र हथ्थ फड़ा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई पहने अस्त्र शस्त्र, चक्र सुदर्शन उप्पर टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोला,
८१३ ०४ द्वापर वेख वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, साची जड़ती आप जड़ा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, कलिजुग रक्खे ८१३ ०४
पड़दा उहला, गुर पीरां भेव ना पा लया। हरि सिँघासण अतोला, पा सरगुण मात चोला, काया देही ना किसे बणा लया। हरि सिँघासण अडोला, धुरदरगाही सच स्नेही, आप आपणे हथ्थ रखा रिहा। आप तजाए काया देही, जोती जामा पा लया। जोत निरँजण निर विकार, निरगुण सरगुण दोवें लेख लोकमात लिखा रिहा। जोती जामा धरया भेख, हरि आपणी बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, कलिजुग तेरे अन्तिम वेले बेमुखां पड़दे देवे खोल्ह, साची बणत बणा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, साची रचन रचा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, चार कुन्ट चार चुफेर धरत मात वेख वखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, पुरख अबिनाशी साचे भेख, साचे धाम वंड कराईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुर गोबिन्दे लिख्या लेख, निहकलंक दए उपजाईआ। हरि सिँघासण अतोल, हरि साचा साची गणत गिणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुरमुख साचे संत दुलारे धरत मात तेरी गोद उठाईआ। हरि सिँघासण अतोल, सिँघ मनजीत ना जाए डोल, प्रभ भाणे आप रखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जगत जगदीशे किहा बोल, तेरी वारी मात अन्तिम आईआ। हरि सिँघासण अतोल, प्रभ पाकी पाक नीहां हेठ चुणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, साचा मन्दिर आप सुहाईआ। हरि सिँघासण अडोल, अठां तत्तां बणत बणाईआ।

हरि सिँघासण अतोल, नावें दर खोल्ह वखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, दसवां आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, नावें उप्पर पड़दा पाईआ। हरि सिँघासण अतोल, बारां चार लेखा रिहा लिखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, बैठ इकांत आपणी बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, मात बणांयदा। हरि सिँघासण अतोल, चार चार चार चार, चार चुफेर रखांयदा। निरगुण सरगुण दोवें रूप, हीआं सेरू आप जणांयदा। साचा ताणा प्रेमी बाणा, नौ तन्दी आप उणांयदा। तिन्न तिन्न रक्खे एका धारा, इक्क दूजे उप्पर लँघांयदा। तिन्ने दिशा वारो वारा, नावें घर तिन्न तिन्न जोड़ जुड़ांयदा। लेखा लिखे हरि जी गिण गिण, साची बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण कर त्यार, लोकमात तेरे उप्पर चरन छुहांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणे रंग समांयदा। सच सिँघासण देवे रक्ख। कलिजुग तेरी अन्तिम साची वस्त करे वख। चार कुन्ट दहि दिशा किसे हथ्थ ना आए, ना कोई मुल चुकाए करोड़ लक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण धरत मात टिकाया , गुरमुखां साचा माण दवाया, आपे रक्खे दे कर हथ्थ। सच सिँघासण दस्म दुआरया। प्रभ अबिनाशी साचा आसण दिस किसे ना आ रिहा। करे खेल हरि शब्द स्वासन, मात पताल अकाशन बणत बणा रिहा। जोत निराली घनकपुर वासण, शब्द जलाली रंग चढ़ा रिहा। गुरमुखां लहणा देणा देवे हक्क हलाली, आत्म दर ना रहे खाली, हरि सच भण्डार भरा रिहा। जगत अवल्लड़ी चली चाली, कलिजुग जगी जोत अकाली, गुरमुखां बणया आपे पाली, भाणा आपणे हथ्थ रखा रिहा। कोई ना मंगे विच दलाली, फल लगाए साची डाली, अमृत मेवा रसना जिह्वा आपे आप खवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सति सिँघासण आप बिराजे, करे खेल देस माझे, भगत जनां हरि साजन साजे, साचा लेखा लेख लिखा रिहा। आप संवारे आपणे काजे, भगत सुहेला रक्खे लाजे, शब्द सरूपी मारे अवाजे, सोया गुरमुख मात उठा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, सच भण्डारा हरि दातारा, आपे आप वरता रिहा। सच सिँघासण हरि रखांयदा। जगत जगदीशे तेरी काया मन्दिर तख्त बणांयदा। नौ दुआरे वज्जे जन्दर, दसवें डेरा लांयदा। बाहर वेखण बेमुख बन्दर, गुरमुखां अन्दरे अन्दर नूर नुराना आप वखांयदा। काया कोठा साची कन्दर, अठारां बारां पन्दरां नौ साची बणत बणांयदा। सच सिँघासण रिहा मवल, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, दर तेरे आप सुहांयदा। काया मन्दिर बणत बणाईआ। विच बैठा हरि रघुराईआ। आत्म सेजा इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा डेरा हरि घर वसेरा, आपणा आप रखाईआ। काया मन्दिर सेज वछाईआ। हरि सुत्ता जगत रघुराईआ। बेमुख जीवां खाली दिसे बुता, प्रभ साचा दिस ना आईआ। गुरमुखां सुहाए

८१४
०४

साची रुत्ता, छब्बी पोह खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण डेरा लाए, आत्म सेजा इक्क बणाए, ना चले किसे कोई चतुराईआ। काया मन्दिर खेल न्यारड़ा। लोकमात बणाया साचा अन्दर, विच वस्सया मीत मुरारड़ा। नौ दरवाजे साजन साजे, ना किया किसे प्यारड़ा। सच दुआरे हरि जी भाजे, सुत्ता पैर पसारड़ा। हरिजन रक्खे हरि जू लाजे, मिले मीत सचा यारड़ा। आप संवारे कलिजुग काजे, गुरमुखां बन्द कराए नौ द्वारड़ा। किसे हथ्थ ना आए राजन राजे, वणज कराए एका शब्द बण सच्चा वणजारड़ा। बेमुख जीव भाण्डे काचे, ना मिल्या कोई ठठयारड़ा। गुरमुखां हरि साजन साजे, करे खेल अपर अपारड़ा। शब्द सरूपी मारे अवाजे, खिच ल्याए चरन द्वारड़ा। कलिजुग अन्तिम रक्खे लाजे, ना कोई करे हुदारड़ा। चिट्टे अस्व चढ़े सदी बीस साल ग्यारड़ा। लेखा लिखे दसवें मासे, हरि बेड़ा पार उतारड़ा। प्रगट होए घनकपुर वासे, मिले वड्याई सतारां हारड़ा। साची जोत मात प्रकाशे, नर नरायण सच्चा लारड़ा। कलिजुग अन्धेरा अन्त विनासे, मारे बाण रसन कमान तीर अपारड़ा। गुरमुखां हरि होया दासे, जोती जोत सरूप हरि, बण साचा मीत मुरारड़ा। हरि साचा मीत मुरारया। लोकमात ना करे कोई हुदारीआ। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, लोकमात करे उज्जयारीआ। दूर दुराडा मारे झात, शब्द सची उडारीआ। गुरमुखां देवे अमृत बूंद स्वांत, खिच ल्याए चरन द्वारीआ। आप बंधाए चरन नात, हउमे ममता रोग निवारीआ। शब्द देवे साची दात, अट्ठे पहर रहे खुमारीआ। धुरदरगाही सच सुगात, मंगण आए दर द्वारीआ। अन्तिम वेले पुच्छे वात, पुरख निरँजण हरिभगतां पावे सारीआ। जोती जामा श्री भगवाना, खेल अपर अपारीआ। हरि खेल अपार विच संसारया। कलिजुग तेरा अन्तिम वेल, ना किसे मात विचारया। गुरमुखां चाढ़े शब्द सरूपी आत्म तेल, नाम वटणा आप लगा रिहा। हरि कन्त सुहेला साचा मेल, पिर नारी मात जुड़ा रिहा। आपे कटे धर्म राए दी झूठी जेल्ह, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोती मेल मिला रिहा। गुर पूरा सेव कमाए, हरि साचा लेखे लांयदा। संत मनी सिँघ जन्म दवाए, साचा धुर ध्यान हरि रखांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ रखाए, दिस किसे ना आंयदा। आत्म जोती वथ टिकाए, शब्द नाल आप जुड़ांयदा। सोहँ साचे रथ चढ़ाए, साचा तत्त वखांयदा। फड़ फड़ बाहों आप उडाए, लोआं पुरीआं पार करांयदा। आप आपणा लड़ फड़ाए, जोती जामा हरि जी पांयदा। अन्दर वड़ कोई भुल्ल ना जाए, प्रभ आत्म भेव खुल्ह्हांयदा। दर दुआरे साचे खड़्ह, एका राह वखांयदा। मुख ना पीवे कोई नड़, दर दुआरे हरि दुरकांयदा। शब्द सरूपी लए फड़, शब्द डण्डा हथ्थ उठांयदा। काया मन्दिर साचे वड़, पंच विकार पुरख अपारा डन्न लगांयदा। ना कोई जाणे जीव जन्त गंवारा, मदिरा मास करे अहारा, दर घर माण ना पांयदा। पहली माघी वक्त विचारा, सतिजुग तेरी साची धारा, प्रगट होए नरायण

नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, शब्द कराए तन श्रृंगारा, सोलां कलीआं बन्नृण बन्नृे, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आप आपणी वंड कराए। चल्ले शब्द विच वरभण्ड, ना कोई सौंवें दे कर कंड, राजे राणयां देवे दंड, मेट मिटाऐ जगत पखण्ड, सीस मूंडा मगर लगाए। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, नाम निशाना वञ्झ मुहाना, वाली दो जहानां लोकमात इक्क चलाए। साचा इक्क निशान बणाउणा। वाली हिन्द वेख वखाउणा। सत्तां दीपां रंग वटाउणा। नौ दुआरे नौ घर, नौ खण्ड पृथ्मी वंड कराउुणा। फड़ फड़ मारे औलीए पीर शेख़ पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मुलां काजी, जोती जामा श्री भगवना, निहकलंक बली बलवाना, साचा तीर उठाउणा। साचा तीर आप उठांयदा। रसना खिच्च कमान, विच मात हरि चलांयदा। वेख वखाणे बेईमान शैतान, चारे कुन्टां फोल फुलांयदा। ना कोई जाणे जीव जहान, माया राणी पड़दा पांयदा। मिले ना किसे नाम दान, ब्रह्म ज्ञान ना कोई दवांयदा। कूड़ कुड़यारा जगत प्रधान, दिन दिहाड़ा खेल वरतांयदा। कलिजुग जीव कढ्ढे हाढ़ा, ना कोई किसे छुडांयदा। ज़िमी अस्मानी पड़दा पाड़ा। कलिजुग तेरा धुंदूकार, प्रगट होए नर निरँकारा। भेख अनूपा सति सरूपा, जोती जामा श्री भगवाना निहकलंकी पहरे बाणा, मल्लया देस कर कर वेस, गुरमुख साचे विच प्रवेश, पकड़ उठाए नर नरेश, वाली हिन्द आप जगाए, शब्द बाण इक्क लगाए, सोया कोई रहण ना पाए, गुरमुखां आत्म दाग धोया। साचा बीज इक्क बिजाए। नर हरि साचा अवर ना जाणे कोया, लक्ख चुरासी भरम भुलाया, धुरदरगाही ल्याए साची धूढ़ा, गुरमुखां झोली आपे पाए। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवना, आप आपणा रंगाए। साचा रंग रंगे करतारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लोकमात लक्ख चुरासी करे पुकारा। धरत मात तेरी बन्नृे धारा। मिटे अन्धेरी रात, जोती दीप करे उज्जयारा। प्रगट होए इक्क इकांत, चारों कुन्ट करे ख़बरदारा। गुरमुखां देवे अमृत बूंद स्वांत, काया करे ठंडी ठारा। चरन प्रीती बनाए साचा नात, लक्ख चुरासी दित्ता वर, ना कोई जाणे जात पात, ऊँच नीच रंक राजान शाह सुल्तान, एका वर सच्चे दरबारा। बैठे तख्त श्री भगवान। प्रगट होए वाली दो जहान। चरन छुहाए दिल्ली आण। वाली हिन्द उठ मृगिन्द, सरनी डिग्गे पुरख अबिनाशी करे पछान। आपे बन्नृे सच्चे तगे, आत्म जोती साची जगे, तत्ती वा ना मात लग्गे, दरस देवे गुण निधान। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणी करे पछाण। आप आपणी करे पछाणा। आपे बणे साचा राणा। शब्द चलाए तीर कमाना। चारों कुन्ट वहीर अख़ीर हथ्थ ना आए नीर, कलिजुग भुले जीव नदाना। ना कोई शाह दस्तगीर पीर फ़कीर होए वैराना। कोए ना किसे कटे भीड़, तख्त ताज साज बाज अन्तिम लथ्थे चीर। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, गुरमुखां अन्तिम कटे भीड़। गुरमुखां कटे

८१६
०४

भीड़ बणत बणांयदा। रंक राजाना जाए पीड़, ना कोई किसे छुडांयदा। कलिजुग टुट्टी हड्डी रीड़, ना पापां भार उठांयदा। सतिजुग तेरी बन्ह्रे बीड़, सच धर्म दी साची रासा, तेरी झोली पांयदा। कलिजुग वक्त अन्त अखीर, प्रभ साचा हुक्म सुणांयदा। सतिजुग साचे देवे धीर, प्रभ सोया आप उठांयदा। कलिजुग नेत्र आप बहाए नीर, संगी साथी लक्ख चुरासी कोई दिस ना आंयदा। सतिजुग लग्गे मस्तक तिलक, प्रभ शब्द बणाए सच्ची मालण, लोकमात आप टिकांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, आपे जाणे आप पछाणे, कलिजुग सतिजुग वारो वारी, आपे आप समझांयदा। कलिजुग देवे हरि जी मत। झूठा नाता पंज तत्त। अन्तिम वेले उबली रत्त। लक्ख चुरासी तुट्टा धीरज यति। कोई ना देवे साचा सीरज, ना कोई रक्खे अन्तिम पति। आपणा खाणा बीज्जया बीरज, जूठा झूठा झूठे वत्त। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, अन्तिम वेले पाए नत्थ। सतिजुग साचा कर त्यारा। एका देवे नाम अधारा। सोहँ शब्द अपर अपारा। लोकमात हरि आप चलाए, आप आपणी दया कमाए, दोवें रक्खे तिक्खीआं धारा। जोती जामा श्री भगवाना, दोहां धिरां हरि खेल रचाना, आप आपणी बणत बणाए। कलिजुग काला वेस, कूड़ कुड़यारड़ा। कोई ना दीसे दर दरवेश, ना कोई मीत मुरारड़ा। नर नारी खुल्ह्रे दिसण केस, लुट्टया कन्त सुहागढ़ा। माया राणी घर घर वेस, गुरमुख विरला मात जागढ़ा। आप भुलाए नर नरेश, झूठी काया लग्गे दागढ़ा। ना कोई जाणे जोत वरन गोत दस दस्मेश, कलिजुग लग्गी तत्ती वा, चरन सरन ना कोई लागढ़ा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, अन्तिम खेला आप कराए, भारत खण्डी बणत बणाए वागढ़ा। सतिजुग साचे हो दलेर। आप चुकाए जगत माया झूठी राणी मेर तेर। सोहँ शब्द चलाए साची बाणी, गुरमुखां ल्याए घेर घेर। आत्म जोती इक्क पछाणी, हरि दिसे नेरन नेर। जोती जामा श्री भगवाना, आपे तारे संत दुलारे, बेड़ा लाए पार, कर कर आपणी मेहर। बेड़ा लाए पार, कंध उठांयदा। मानस जन्म रिहा संवार, भरम गवांयदा। लक्ख चुरासी उतरे पार, हरि साचा जो जन दर्शन पांयदा। मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द फाँसी गल लटकांयदा। प्रगट होए पुरख अबिनाशी, हरि सुहेले आप मिलांयदा। साची जोत मात प्रकाशी, निहकलंकी डंक वजांयदा। गुरमुख विरले शब्द स्वासी, पूर्ब कर्मी जन्म दवांयदा। आत्म लाहे हरि उदासी, आत्म धारा सीर प्यांयदा। चरन कँवल कर चरन दासी, आत्म दरस आप करांयदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, शाह सुल्तानां पकड़ उठांयदा। वेख वखाणे लक्ख चुरासी, कलिजुग अन्तिम गाना हत्थ बन्ह्रांयदा। कोई ना जाणे हरि नर साचा शाहो शाबाशी, शब्द तीर कमान इक्क उठांयदा। गुरमुख विरला बलि बलि जासी, जिस आपणा भेव खुल्ह्रांयदा। बेमुख दर दर घर घर करन हासी, झूठ विकारा झूठ भिखारा ख़ाली हत्थ वखांयदा।

गुरमुखां आत्म जगे जोत, घट घट रक्खे वास, शब्द भण्डारा आप भरांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, सतिजुग तेरी बणत बणांयदा। भिन्नड़ी रैण संत सुहेली, लाए रंग चरन द्वार। गुरमुखां दिसे इक्क इकेली, मंगे भिक्ख नाम दातार। गुर दर आई बण के चेली, दोए जोड़ करे निमस्कार। गुर संगत मिल्या साचा मेली, नर नरायणा कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सतिजुग तेरी बन्न साची धार। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाउँदी। गुरमुख साचे संत जनां, फड़ फड़ बाहों मात उठाउँदी। पुरख अबिनाशी जामा पाया, जोत सरूपी खेल रचाया, सच सिँघासण हरि जी बैठा, दोवें नेत्र खोल्ह वखाउँदी। रंग रंगीला माधव आया, साधन संता आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, तीजे लोयण भेव चुकाया। जुगा जुगन्ता साचा कन्ता, भगत बणाए साची बणता, माण ताण विच जहान गुण निधान रक्खदा आया। भिन्नड़ी रैण हथ्थ बन्न्हे गाना, गुरमुख वेखे चतुर सुजाना, प्रभ अबिनाशी आप पछाणा, चरन प्रीती तन्द बन्न्हाया। गुरमुख साचा करे ध्याना, मिले मेल हरि भगवाना, भिन्नी रैण मिले दाना, ख़ुशी बन्द बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सतिजुग तेरी साची बणत रिहा बणाया। भिन्नड़ी रैण चढ़या चाअ। केहड़ा वेखां मात थां। घर घर उडदे दिसण कां। ना कोई वेखे पिता मां। गुरमुख साचा संत दुलारा पकड़ उठावां रैण अन्धेरी काली, जिस ने गाया सोहँ नां। जावां मैं चल्ल द्वार, गुरमुखां करां ख़बरदार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक कलि जामा पाया, शब्द सरूपी डंक वजाया, गुरमुख साचे संत जनां देवे सच्चा नाम दान। अट्ठे पहर सन्झ सवेर रक्खे ठंडी छाँ। जोती जामा श्री भगवाना, सतिजुग साचे तेरी बणत बणाए दिसे किसे ना। भिन्नड़ी रैण हथ्थ रंगे लाल। गुरमुख साचे संत जनां बण जाए आप दलाल। चारों कुन्ट डगमगाए, उठ उठ वेखे किथे सुत्ता पैर पसारे, गुरमुख साचा अनमुल्लड़ा लाल। दिवस रैण अवाजां मारे, आत्म धुनी एका धारे, दूर दराडी चार चुफेरे वेखे अमृत फल केहड़े डाल। गुरमुखां लेख लिखाए साचे लेखे, बेमुख रहे भरम भुलेखे, शब्द सरूपी निहकलंका वज्जा डंका सच्चा ताल। कोई ना जाणे आपणी रेखे, भुल्ले औलीए पीर शेखे, सोहँ शब्द सच दमामा, आप वजाए निहकामा, जग अवल्लड़ी चल्ले चाल। जोत सरूपी पहरे बाणा, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म साची जोत धर सुक्का हरया करे चामा। चरन प्रीती निभे नाल। आप आपणा वरते भाणा, ना कोई जाणे राज राजाना, कलिजुग जीव बेमुहाना, आत्म जोती किसे ना दिसे गगन मण्डल दी साची रास। ना कोई वेखे माणक मोती साची जोती मस्तक थाल। जोती जामा श्री भगवाना, भिन्नड़ी रैण देवे माण। नाल रलाए गुरमुख साचा बाल अञ्याणा, अट्ठे पहर दिवस रैण करे कराए आप प्रितपाल। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मनाउँदी। चांई चांई हरि जी ध्याउँदी। गुरमुख साचे संत जनां, सुहागी गीत अग्गे

८१८ ०४

हो हो रसना कहि कहि सुणाउँदी। जगत नाता तुटे मोह, लक्ख चुरासी कलिजुग जीव कोए ना कर बन्द ख़लासी, प्रभ अबिनाशी जामा पाया, सच्चा राह वखाउँदी। दुरमति मैल पापां धो, जोती जोत सरूप हरि, नेत्र नैण पेख हरि, गुरमुखां साचा संग रलाउँदी। भिन्नड़ी रैण जगत वणजारड़ी। दर्शन पेखे साचे नैण, मिल्या मेल मीत मुरारड़ी। नाता तुट्टे भाई भैण, चरन प्रीती साची बहिण नैण मुँधारड़ी। ना कोई दिसे साक सज्जण सैण, जूठे झूठे हो हो इक्ठे बहिण, ना कोई देवे अन्त सहारड़ी। ना कोई चुकाए लहिण देण, अन्तिम खाए लाड़ी मौत डैण, पापां पंड होई भारड़ी। बेमुख वहन्दे वहिण वहण, आत्म दए ना कोई गंढु, झूठी दिसे चार यारड़ी। गुरमुखां प्रभ आत्म पाए ठंड, सच नाम रिहा वंड, बेमुख सुत्ते दे कर कंड, कलिजुग औध अन्त गई हंढ, जोती जोत सरूप हरि, चले चाल न्यारड़ी। गुरमुख जागे, भिन्नड़ी रैण जगाईआ। प्रभ अबिनाशी चरनी लागे, आत्म वज्जी वधाईआ। खुशी मनाई पहली माघे, मिले मात वडुयाईआ। आपे धोवे पिच्छले दागे, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। गुरमुख परोए सोहँ धागे, रसना सूई हरि चलाईआ। आप बणाए हँस कागे, चरन धूढ़ी मस्तक लागे, जो जन आए चरन छुहाईआ। इक्क उपजाए शब्द रागे, अनहद धुनी साची धुन रिहा उपजाईआ। कलिजुग माया भुल्ले जीव अनुरागे, सुरती शब्द ना मेल मिलाईआ। आत्म वधी तृष्ना आगे, ना कोई तृखा बुझाईआ। गुरमुखां मिल्या कन्त सुहागे, भिन्नड़ी रैण नाल रलाई साची भैण, दोहां बणत बणाईआ। आप चुकाए लहिण देण, गुर सरनाई जो जन लैण, जोती जोत सरूप हरि, होए अन्त सहाईआ। होए अन्त सहाई दो जहानया। आए चल सरनाई, गुण निधानया। लोकमात पैज रखाई, शब्द बन्ने आत्म गानया। आत्म वज्जदी रहे वधाई, हरि साचा शब्द चलानया। एका रंग एका राग प्रभ आपणा आप रिहा उपजानया। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचा सुघड़ स्याणा, भिन्नड़ी रैण भैण भ्रा बणानया। भिन्नड़ी रैण करे विचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। कँवल नैण नैण कँवल मूधा उलटी नभी, आपे दए इक्क हुलार। पापां भार काया दब्बी, आत्म मिले ना साची धार। इक्क इकल्लड़ी भैण प्यारड़ी रैण वणजारी लभ्भी, काया करे ठंडी ठार। पंजां चोरां शब्द दाढ़ हेठ चब्बी, दर घर साचे कढु बाहर। जोत सरूपी प्रगट हो देह तजाई पोह छब्बी, जोती जामा कर अकार। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे तेरी बन्ने साची धार। सतिजुग बन्ने धार, बणत बणांयदा। वेख वखाणे जीव गंवार, लक्ख चुरासी लेख लिखांयदा। शब्द फड़ाए हथ्थ कटार, तिक्खी धार रखांयदा। पंचम् पोह दिवस विचार, राजे राणे आप जगांयदा। हो के रहणा ख़बरदार, निहकलंकी डंक वजांयदा। मेट मिटाउणे चार यार, संग मुहम्मद संग छुडांयदा। ईसा मूसा कर ख्वार, वहन्दी धार जगत वहांयदा। काला सूसा तन श्रृंगार, कलिजुग काला वेस

रखांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कालख शाही झूठा टिक्का, उप्पर आपणी हथ्थीं लांयदा। भेव चुकाए बीस इकीस शब्द चलाए साचा सिक्का, वाली हिन्द हरि सुणांयदा। जोती जामा हरि भगवाना, लेखा लेख ना कोई मिटांयदा। लिखे लेख हरि बनवारया। सच्चा शाह सुल्तान विच जहान जोत निरंकारया। आपे जोधा वड बलवान, तिन्नां लोआं सच सरदारया। अट्ठे पहर नौजवान, ना सके कोई मारया। चढ़या रहे शब्द बिबाण, लाउँदा रहे सद उडारया। लोक परलोक ना आए हान, ना मारे कोई निशान दिस किसे ना आ रिहा। आपे जाणे जाणी जाण, कलिजुग तेरी कर पछाण, अन्तिम बणत बणा रिहा। जोत जामा श्री भगवान, रंक राजानां शाह सुल्तानां शब्द सुनेहड़ा सच मृदंग आपे आप सुणा रिहा। वज्जे शब्द मृदंग, काया चोट नगारया। कलिजुग तेरा काला रंग, हरि साचा वेख वखा रिहा। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, उत्ते चढ़या हरि भगवानया। सतवें आसण साचे दर पार लँघ, शब्द चढ़े तीर कमानया। छेवां अस्त्र साचा शस्त्र, तन पहन चिट्टा बस्त्र, पंचम् वेख वखाणे सुघड़ स्याणयां। पवण अस्वारी हरि निरँकारी, शब्द उडारी एका मारी, चौथे दर आया बाहरी, वेख वखाणे मार झात, पुरीआं लोआं खण्डां वरभण्डां पावे सारी। जोती जामा श्री भगवान, चौथे घर आया आप, आप आपणे रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम भाणा, आपणे हथ्थ रखाया। चौथे घर कर विचार। पहलों मारां केहड़ी मार। चारों दिशा हाहाकार। आपे वंडे पाए डण्डे, शब्द कटारी रिहा मार। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, राजे राणयां लहिण झण्डे, ना कोई दीसे छत्र झुलार। पुरख अबिनाशी आपे दंडे, शब्द खण्डा रिहा हुलार। गुरमुखां आत्म पाए ठंडे, अमृत प्याए ठंडी धार। चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्डे, ना कोई दीसे कन्त सुहागण, जगत नारी होए रंडे। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा अन्त पछाणा, गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, साची बणत बणांयदा। हथ्थीं बन्ने गाना खेल अपारया। ना कोई जाणे जीव नदाना, भुल्लया सर्ब संसारया। पुरख अबिनाशी जोती बाणा, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरानां, ना कोई जाणे अञ्जील कुरानां, खाणी बाणी सार ना पा रिहा। अन्तिम छड्डुणे पैणे हाणीआं हाणी, घर घर किसे ना मिले पाणी, राजे छड्डी जाण राणी, प्रभ आपणी खेल रचा रिहा। ना कोई दीसे सुघड़ स्याणी, ना कोई गाए जगत बाणी, किसे हथ्थ ना आए अन्न दाणी, चारों कुन्ट हाहाकारया। गुरमुख साचा आप उठाए, आप आपणी गोद बिठाए प्रभ अबिनाशी दया कमाए, सोहँ गाए साची बाणी, पुरख अबिनाशी लक्ख चुरासी रिड़कण आया। गुरमुखां अमृत साचा छिड़कण आया। सोहँ डण्डा नाल उठाया। सतिजुग साची सिरी बणाया। आप मधाणी जोती जामा हरि भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, कलिजुग तेरा अन्त पछाना, ना कोई जाणे राजा राणा, जीवां जन्तां साधां संतां बन्नण आया।

८२०
०४

पुरख अबिनाशी घट घट वासी, मदिरा मासी दूर कराया। प्रगट जोत घनकपुरवासी, कन्त कन्तूला साचा झूला, शब्द बिबाणा इक्क रखाया। कोई ना लाए हरि जी मुल्ला, सच भण्डारा हरि जी एका खोल्हा। गुरमुखां मिले नाम वड अनमुल्ला। हरिजन साचा संत प्यारा, पूरे तोल कलिजुग तुल्ला। पुरख अबिनाशी वसे कोल, दस्म दुआरा एका खुल्हा। अट्ठे पहर करे चोहल, बणया रहे दर घर साचे सच्चा गोला। अन्दरे अन्दर रिहा बोल, शब्द सुणाए साचा ढोला। गुरमुखां पड़दे आत्म फोल, भाग लगाए काया चोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे नाम वणजारे, प्रभ देवे नाम अनमोला। नाम वस्त अनमोल, हरि वरतांयदा। शब्द कंडे रिहा तोल, वध्ध घट्ट ना कोई रखांयदा। साचा शब्द वजाए ढोल, भरम भुलेखा दूर करांयदा। गुरमुख आत्म रिहा मवल, मेर तेर हेर फेर सन्झ स्वेर वखांयदा। बज़र कपाटी पड़दा रिहा खोल्ह, शब्द हाटी तीर्थ ताटी, अमृत सरोवर काया मन्दिर साचे अन्दर एका ताल सुहावा, नेत्र लोचन साचे आप वखांयदा। गुरमुखां देवे ठंडी छावां, दर घर साचे लावे नावां, जोती जामा श्री भगवाना, धुरदरगाही साचा माही साचे धाम आप बहांयदा। साचा धाम अस्थूल, हरि अवल्लड़ा। गुरमुख ना जाए भूल, सदा वसे इक्क इकल्लड़ा। एका हरि साचा कन्त कन्तूल, एका रक्खे सच महल्लड़ा। सच सिँघासण आप बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, आसण लाए जल थल्लड़ा। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुखां देवे साचा माणा चरन ध्याना, जो दर आए भुल्लड़ा। भुल्ल भुलेखे आए दर। गुर संगत वेख मंगे वर। प्रभ अबिनाशी लिखे लेख, बिधना लेख दूर कर। साचे नेत्र नैण पेख, अमृत आत्म सच सरोवर साचा सर। जो जन रहे वेखी वेख, दर घर साचे आउणा डर। गुरमुखां लिखे मस्तक लेख, लक्ख चरुासी फंद कटाए ना जन्मे ना जाए मर। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त इक्क रखाए शब्द निशाना। कलिजुग लथ्थे चीर, दए दुहाईआ। ना कोई देवे धीर, ना होए कोई सहाईआ। ना कोई सहाई पीर फकीर दस्तगीर शाह हकीर, साचा संग ना कोई निभाईआ। तन लग्गी हउमे पीड़, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। कलिजुग पाप रिहा पीड़, लहू मिज्झ एका धार वहाईआ। कोए ना कटे किसे भीड़, काली रैण अन्ध अंध्यानी, राह साचा दिस ना आईआ। ना कोई सहाए हस्त कीड़, राज राजाना धीर गंवाईआ। कोई ना बन्न्हे मात बीड़, शाह शाहाना विच मैदाना तन झूठी ख़ाक उडाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला लाड़ी मौत बन्न्हे गाना, आप उठाए वड बली बलवाना, विच पवणा आप उडाईआ। मिटदा जाए नाम निशाना, ना कोई दीसे राज राजाना, चार वरनां ना होए कोई सहाईआ। प्रगट होए पुरख अबिनाशी बीना दाना, गुरमुखां देवे साचा माणा, अन्तिम अन्त होए सहाईआ। हरि हरि साचा जिस पछाणा, आप आपणी गोद उठाईआ। बंक दुआरा

८२१
०४

सच दरबारे आप लगाईआ। आपे वसे असथिल महल्ल मुनारे, सच सिँघासण जोत जगाईआ। गुरमुखां देवे हरि जी पहरे, साची सेवा रिहा कमाईआ। चल्ल के आवे मात दुआरे, जोती जामा भेख वटाईआ। हथ्थ ना आए किसे मन्दिर मसीत गुरदुआरे, शिवदवाले ठाकर रहे मनाईआ। गुरमुखां मेल काया महल्ल शब्द अटल जोत प्रबल, नूर नुराना हरि निरँकारे। कलिजुग वेला अन्तिम अन्त कलि कालख टिक्के मस्तक भारे। आप कराए जल थल, संत मनी सिँघ लेख लिखारे। राजे राणयां रिहा घल्ल, पुरीआं अनन्द धाम विचारे। प्रगट होया प्रभ जल थल, निहकलंकी जामा धारे। राज राजाना जाए दल, कलिजुग सतिजुग दोवें पुड़ चक्की आप बणाए, सोहँ हथ्था विच गडाए, देवे गेड़ा इक्क अपारे। लक्ख चुरासी हथ्थ हुलारे। फड़ फड़ पाए वारो वारे। पहली कूट लहन्दी दिशा, उम्मत नबी रसूल दी धुरदरगाही मंगे भाड़े। एका हज्ज कुरान कुराना। ना काअबा हरि कबूल दी, मिटे नाम निशाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख वटांयदा। ना कोई जाणे चतुर सुजाना। संत मनी सिँघ साचा सच दुलार है। आत्म जोती शब्द धना धनी, वड वड भण्डार है। आत्म आई इक्क गल्ल मन्नी, वस्सया जगत न्यार है। आत्म चढ़या साचा चन्नी, होया सच उज्जयार है। हथ्थ विच फड़ी कापी कन्नी, सृष्ट सबाई आप लिखार है। प्रभ अबिनाशी इक्क पुकार साची मन्नी, दोए जोड़ खड़्हा द्वार है। लक्ख चुरासी मिले अन्तिम डन्नी, काया तज्या देह मुनार है। काचे भाण्डे कलिजुग जीव घर घर भन्नी, ना घड़े कोई ठठयार है। आप करे खंन खंनी, बेमुख होए बेमुहार है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां बख्शे चरन प्यार है। गुर चरन प्यार, जगत कुड़माईआ। गुर चरन प्यार आत्म जोती जाए व्याहीआ। गुर चरन प्यार, सच सवरन उठ सोती, प्रेम प्यारी सेज विछाईआ। गुर चरन दुरमति मैल जाए धोती निर्मल जोती इक्क दिसाईआ। गुर चरन नाता छुट्टे वरन गोती, एका रंग रंगीला पुरख अबिनाशी सच सुहागण नार तन शृंगार, बैठी साचे घर आत्म कुण्डा लाहीआ। गुर चरन प्यार छैल छबीला। साचा मुंडा ना लंगढ़ा ना दिसे टुंडा, शब्द अस्वार साचा लाड़ा, दर दुआरे आईआ। अग्गों उठे पुरख अपारा, जोती खेल साची नारा, एका दिसे दस्म दुआरा, नौवें बन्द कराईआ। गुर चरन प्रीती जन अस्वारा। दर घर साचा एका वेखे, केहड़ा खुल्हे बन्द कवाड़ा। पुरख अबिनाशी नेत्र पेखे नेड़ ना आए पंचम् धाड़ा। जोती नारी कन्त प्यारी, दर घर साचे आत्म अन्दर जोड़ा। आत्म अन्दर सच प्यार। एका नारी कन्त भतार। नाम रंगीला शब्द शृंगार। अमृत जाम साचा पी ला, आत्म तृष्णा भुक्ख निवार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म सेजा रैण बसेरा, विच संसारा सुत्ता पैर पसार। सुत्ता पैर पसार कदे ना जागया। बेमुख जीव गंवार, चरन सरन ना लागया। ना खुल्हे बन्द कवाड़, ना धोए कोई दागया।

८२२
०४

माया अग्नी तत्ती हाढ़ा साड़े काया चोली कच्चा धागया। गुरमुख साचा संत दुलारा। मिल्या मेल कन्त कन्त भतारा। एका करे चरन प्यारा। दर घर साचे देवे वाड़ा। अमृत बख्शे ठंडी धारा। सांतक सीतल बहत्तर नाड़ा। आत्म जोती कर उज्जयारा। मेट मिटाए पंचम् धाड़ा। दरस दिखाए अगम्म अपारा। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ा। गुरमुख साचा संत दुलारा। मिल्या मेल कन्त भतारा। शब्द घोड़े देवे चाढ़ा। लक्ख चुरासी हाहाकारा। आप चबाए आपणी दाढ़ा। जोती जामा श्री भगवाना, शब्द चलाए तीर कमाना, बेमुखां सीने वजे काड़ काड़ा। शब्द तीर रसन कड़ाका। गुरमुखां खोल्हे आत्म ताका। दया कमाए आप वखाए, लेख लिखाए भविक्ख वाका। गुरमुख सोया आप जगाए, चरन प्रीती राह वखाए, आत्म खोल्हे हरि जी ताका। जन्म जन्म दा गेड़ कटाए, जोती जोत सरूप हरि, आप चुकाए गुरमुखां पिछला बाका। पिछली बाकी जाए चुक्क, चरन हज़ूरया। लोकमात पैंडा जाए मुक, जन आए मन्ज़ूरया। हरया चाम ना जाए सुक्क, काया तपे वांग तन्दूरया। दाणा पाणी ना जाए मुक्क, हरि चरन तुट्टे गरूरया। चारों कुन्ट ना पए मुख विच थुक्क, आत्म नूरी सच सरूरया। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, शब्द मिले साची तूरया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धन्ना, आसा मनसा पूरया, आसा मनसा पूर, दया कमांयदा। शब्द रखाए साची तूर, सोहँ नाद वजांयदा। गुर संगत तेरा पहला ८२३ ०४
८२३ ०४ पूर, सतारां हाढ़ी बेड़ा बन्न वखांयदा। राजे राणयां रिहा घूर, शब्द लेखा लेख लिखांयदा। फड़ फड़ कुट्टे करे चूरो चूर, शब्द खण्डा इक्को उठांयदा। तोड़े हँकार माण गंवाए मूर्ख मुग्ध मूढ़, चरन दुआरा सच्ची सरकारा एका एक वखांयदा। शाह सुल्तानां विच जहानां एक बख्शे चरन धूढ़, आत्म जोती खिच्च वखांयदा। शब्द सरूपी पाए जूड़, ना कोई मात तुड़ांयदा। कलिजुग वेलणे पीड़े बूड़, अड्डो अड्ड हड्ड हड्ड करांयदा। अन्तिम वेले आई भीड़, ना कोई किसे छुडांयदा। गुरमुखां हरि जी बन्न्हे बीड़, आपणे कंध उठांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, सतिजुग तेरा साचा लेखा आपणी हथ्थीं आप लिखांयदा। सतिजुग लेखा चिट्टा दुध्ध। जन भगतां करे उज्जल बुध। चरन दुआरा हरि प्यारा कारज करे सुद्ध। मंगण आए बण भिखारा, नाम वड्याई संग रलाई नौ निध। साचे घर वज्जी वधाई, रल मिल सईआं मंगल गाई, प्रभ मिलण दी साची बिध। साचा शब्द रिहा सुणाई, गुरमुख साचा भुल्ल ना जाई, आत्म तीर रिहा विध। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साची जाग लगाए, आप आपणी दया कमाए, मुख लगाए चिट्टा सीर निर्मल दुध्ध।

✻ २ माघ २०११ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर ✻

मिल्या कन्त सुहाग, हरि भगवानया। हथ्थ रक्खे आपणे वाग, वाली दो जहानया। धोए मात काले दाग, किरपा कर बेमुहानया। आत्म जोती जाए जाग, वज्जे तीर शब्द निशानया। आत्म तृष्ना बुझे आग, अमृत सांतक साचा आप वरतानया। गुरमुखां बणाए हँस काग, हरि साचा बेमुहानया। चरन कँवल जाए लाग, देवे नाम निशानया। पंच पंचाइनी जाए भाग, सति सरूपी सति वखानया। इक्क उपजाणा साचा राग सोहँ शब्द नाद धुनकान, धुन धुनंता हरि भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत उठाए कर कर वड मेहरबानीआ। मातलोक हरि दया कमाए। गुरमुख साचे संत उपजाए। आप आपणी सेवा लाए। सच वस्त हरि झोली पाए। आप आपणा संग निभाए। लोआं पुरीआं आप फिराए। इन्द्र ब्रह्मा शिव लोक, अन्तिम कलि पार कराए। इक्क सुणाए शब्द सलोक, गीत सुहागी सोहँ साचा नाद वजाए। कलिजुग तेरी अन्तिम रीत, मेट मिटाए गुरदुआरे मन्दिर मसीत, एका रंग सर्ब सरबंग सच खुल्हाए। चरन कँवल हरि दस्से प्रीत, दूसर ना कोई सीस झुकाए। एका हरि हरि साचा मीत, अग्गे पिच्छे होए सहाए। अट्ठे पहर परखे नीत, दिवस रैण लेख लिखाए। गुरसिख विरला रक्खे चीत, हरि घर साचे बूझ बुझाए। काया रक्खे ठंडी सीत, अमृत धारा झिरे अपारा, जोती जोत सरूप हरि, सदा सहाई साचा मीत। हरि निरँकारा सच दुआरा, सच घर बाहरा, सर्ब सुहेला साचा मेला आपे वसे लोआं पुरीआं बाहरा। हरिजन भगत सुहेले राह साचा दस्से, चरन कँवल नैण मुंधाण, एका दरस पुरख अगम्मड़ा रूप अपारा। दो जहानां वाली हरि बनवाली दोवीं हथ्थीं रहे ख़ाली, गुरमुखां देवे नाम निशानी कलिजुग अन्तिम खेल अपारा। साचा शब्द चलाए बाणी। धुरदरगाही एका नाद वजाई, चार वरनां एका सरना, आप रखाए आदि शक्त आदि भवानी। जोती जामा हरि भगवाना। निहकलंका साचा डंका, उच्चा दर सुहाए बंका, करे खेल आप महानी। उच्चा दर सच्चा दरबार। सच्चा घर हरि निरँकार। सच्चा दर जगत अधार। सच्चा सर अमृत धार। सच्चा नर लक्ख चुरासी आप उपाए, सति सरूपी एका नार। जोती जामा श्री भगवाना, सच दुआरे जोत अकारे, बैठा दिसे सद निराहार। नर निराहार जोत अधारा। आपे जाणे आपणी सारा। पुरख अगम्मा, ना कोई हाडी ना कोई चम्मा, ना कोई लए स्वासी दमा, अट्ठे पहर एका धारा। ना कदे मरा ना कदे जम्मा, एका जोत अकाल अकाली, सच सिँघासण साचे धामा, आपे आप धर जोती जामा श्री भगवान, सच दुआरे अट्ठे पहर रहे खड़्हा। सच दुआरे हरि बलवान। अट्ठे पहर जोत निशान। सच सिँघासण हरि बिराजे, ना किसे दिसे जगत निशान। आप पहनाए आपणा ताजे, राजन राज शाह सुल्तान। आप आपणा साजन साजे, करे कराए एका

काजे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे विच समान। आप आपणे विच समाना। मात पित ना कोई रखाना। ना कोई जाणे भैण भाई साक सज्जण सैण, ना कोई नाता पुरख बिधाता, गुर पीर ना कोई बणाना। उत्तम ज़ाता हरि रघुराता, सति सिँघासण आप सुहाता। जोती जामा श्री भगवाना, एका रंग रंग रंगीला। ना कोई जाणे सूहा पीला। लाल चिट्टा ना कोई जाणे अग्नी नीला। जोती जामा श्री भगवाना, अट्ठे पहर छैल छबीला। नर हरि जोती एका धारी। सच सिँघासण पुरख अपारी। कोई ना दिसे नर नारी। एका झुल्ले छत्र सीसे, आपे करे आपणी कारी। दर दरबान ना कोई रखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे दर सुहाए, साचा घर पुरख अपारी। कोई ना वेखे जाए दर, आप आपणे विच समा रिहा। सच सिँघासण सत्तवें घर, देव लोकी बणत बणा रिहा। ना कोई शब्द ना सलोकी, ना कोई राग ना कोई तान, ना कोई नाद ना कोई धुन, ना कोई रबाब वजा रिहा। ना कोई मुन ना कोई सुन्न, ना कोई जाणे हरि हरि गुण, आपणे भाणे आप समा रिहा। ना कोई सके छाण पुण ना कोई सके हरि जी चुण, आप आपणी आपे गणत गिणा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, सच सिँघासण सतवें आसण, पुरख अबिनाशी आपणा आप सुहा रिहा। सतवें घर ग़रीब निवाजा। आप आपणा साजण साजा। वडा शाहो भूप राजन राजा। ना कोई रंग ना कोई रूप, एका जोती सति सरूप, महिंमा अनूप, आप आपणी रक्खे लाजा, होए ना कदे अन्ध कूप, जोती जोत सरूप हरि, आप संवारे आपणे काजा। जोती जामा श्री भगवाना, सच सिँघासण घट घट वासण आपे आप बिराजा।

८२५
०४

❋ ३ माघ २०११ बिक्रमी हैड रागी पृथीपाल सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ❋

आत्म गृह तन मन श्रृंगार। पुरख अबिनाशी साचा रहे, आप आपणा महल्ल उसार। सच सिँघासण बैठा रहे, जोती नूरा शब्दी धार। अमृत धार साची वहे, कँवल नाभी खिड़ी गुलज़ार। हरिजन भाणा एका सहे, आत्म हरि दरस अपार। रसन रसायण गोबिन्द गोबिन्द कहे, साचे दर मिले पुरख हरि कन्त भतार। लहणा देणा धुरदरगाही सच सिँघासण आत्म बैठा आपे दए, पूर्ब कर्म रिहा विचार। जोती जोत सरूप हरि, गृह मन्दिर सच सिँघासण दिवस रैण सुत्ता पैर पसार। गृह मन्दिर काया तन। प्रभ अन्दरे अन्दर, साचा बख्शे नाम धन। कुफर हँकारी तोड़े जन्दर, पंजां चोरां जाए डन्न। कोटन भाना तेज प्रकाश अन्धेरी काया कन्दर, साची जोत जगे तन। जोती जोत सरूप हरि, गृह मन्दिर अन्दर आपणा चाढ़े चन्न। गृह मन्दिर काया तन सुहागा। जोती जामा हरि भगवाना, शब्द उपजाए दया कमाए, एका नाद वड वड सुभागा, धुरदरगाही साची दाद, दर घर देवे माधव माध, हरि सुहेला इक्क इकेला, दूई द्वैती धोवे दागा। पारब्रह्म पीतम्बर स्वामी,

सदा सदा जगतेश्वर अलक्ख निरँजण, गुरमुख साचे कन्त मिलाए नार सुभागा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, आप बुझाए आत्म तृष्णा जगती जुगती आगा। गृह काया शब्द अधारी। पुरख अबिनाशी किरपा धारी। घट घट वासी जोत निरँकारी। पवण शब्द शब्द पवण, पवण स्वासी नाद धुनी, इक्क पुकार हरि जी सुणी, लोकमात कर विचारी। पंचम् रोले काया मन्दिर छाणे पुणे, वड दाता हरि वड वड गुणी। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे संत दुलारे, कर प्यार इक्क पुकार दर घर साचे सुणी। गृह मन्दिर ढोल मृदंगया। शब्द सुहागी गीत एका एक रंगया। नादी जोती शब्द तरानी, ब्रह्म ज्ञानी हरि हरि संगया। एका शब्द धुरदरगाही सच्ची बाणी, दूजे घर ना मिले मंगया। आदि अन्ता इक्क निशानी, साचा शब्द जगत बिबाणा, गुरमुख उडे वांग पतन्गाया। जगत जगदीश्र आप बणाए साची राणी, साचा रंग नाम चढ़ाए, गुरमुखां काया नव नव रंगया। सर्ब घटां घट जाणी जाण, आत्म मन्दिर साचे अन्दर सच वसेरा अन्ध अन्धेरा, इक्क वजाए शब्द ताल वड मृदंगया। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंकी बली बलवाना, दर दुआरा नर निरँकारा पुरख सुजाना वाली दो जहाना, एका एक मात मंगया। गृह अन्दर मंग अपारया। प्रभ अबिनाशी तोड़े जन्दर, वज्जा दर द्वारया। जोती नूर करे उज्जयारा साचे अन्दर, शब्दी मिले साची धारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म गृह घर साचे बहे, करे खेल अपर अपारया। गृह मन्दिर ताल वजन्तया। शब्द अधार इक्क करतार, आपे आप खुजन्तया। आपे सुणे हरि पुकार, आपे आप बुलन्तया। आपे खुल्ह मुन मुनार, आपे चोग चुगन्तया। आपे करे कर उज्जयार, आपे सुंन रखन्तया। आपे बख्शे अमृत धार, आपे कँवल बन्द करन्तया। आपे दए शब्द धुन्कार, आपे डूंघे भवर सुटन्तया। आपे आत्म जोती कर उज्जयार, अज्ञान अन्धेर मिटन्तया। नाम शब्द कराए तन श्रृंगार, गुरमुख साचा सोभावन्ती नार, घर साचे धाम वसंतया। मिले मेल कन्त भतार, आत्म सेजा सच सुहागण, साचे धाम रहन्तया। चरन सरन जन साचे लागण, आपे धोए माया दागण, मिले मेल पूरन भगवन्तया। जोती जामा श्री भगवाना, आत्म अन्दर साचे गृह गुरमुख विरला खोज खुजन्तया। आत्म गृह शब्द टिकाणा। जोती नूर बिबाणा। नादी पवण साची तूर, अवणी गवणी बूझ बुझाना। नूर उजाला एक नूर, दिस ना आए पवण मसाणा। सति सरूपी हाज़र हज़ूर, आत्म दर सच टिकाणा। सर्बकला आपे भरपूर, हरि हरि वाली दो जहानां। पंचम् करे चूरो चूर, शब्द मारे तीर निशाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आत्म अन्दर साचे गृह आपे वसे गुण निधाना। आत्म गृह गुण निधान। चरन धूढ़ एका बख्शे सच इशनान। बेमुख मुग्ध मूढ़, आप बणाए चतुर सुजान। पंचां नाता कूड़ो कूड़, एका शब्द ब्रह्म ज्ञान। जोती जामा श्री भगवाना, साचे मन्दिर आत्म गृह गुरमुखां करे आप पछाण।

आत्म गृह शब्द बिबाणा। गुरमुख साचा विरला बहे, जिस जन देवे श्री भगवाना। पार किनारे एका रहे, नौंवें दर बन्द कराना। दसवें घर अमृत मेंह, ठंडी धार आप बरसाना। पुरख अबिनाशी लग्गा नेंह, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाना। लक्ख चुरासी दिसे खेह, इक्क अटल महल्ल जगत जगदीशा हरि हरि श्री भगवाना। वसे निहचल धाम अखल्ल, शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा।

✻ ३ माघ २०११ बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड पंडोरी ज़िला अमृतसर ✻

हरि शब्द अटल गुरमुख विरले जाणया। हरि शब्द अमोघ, किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। हरि शब्द अमोघ, गुरमुख साचे दर घर साचे एका एक वखाणया। हरि दरस अमोघ, जोती देवे नाम, जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणे चल्ले भाणया। हरि दरस अमोघ, गुर दर द्वारया। हउमे कटे माया रोग, देवे नाम अटल अपारया। मिलाए मेल धुर संजोग, साचा दीपक जोत जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, गुरमुख साचे बणत बणा रिहा। हरि दरस अमोघ, जगत वणजारड़ा। हरि दरस अमोघ, हरि वसे धाम न्यारड़ा। हरि दरस अमोघ, गुरमुखां पूर कराए काम, मिले
८२७ मीत मुरारड़ा। हरि दरस अमोघ, कोई ना मंगे दाम, चरन प्रीती साची नीती एका राह अपारड़ा। हरि दरस अमोघ, मानस ८२७
०४ देही जाए जीती, मिल्या कन्त सुहागढ़ा। हरि दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण नाम रंगाए लाल गुलालड़ा। ०४
काया रंगण रंग गुलाल। गुरमुख दर एका मंगण, आत्म जोती साचा लाल। आपे कटे भुक्ख नंगण, साची देवे वस्त संभाल। आप सुहाए आपणे अंगण, दो जहानी करे प्रितपाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी चल्ले चाल। हरि दरस अमोघ, जगत दीवानया। आत्म रस सच्चा जोग, सुख सहिजे सहिज समानया। मिले मेल लिख्या धुर संजोग, नर हरि श्री भगवानया। आत्म कटे हउमे रोग, शब्द मारे तीर निशानया। नेड़ ना आए पंचम् तत्तां काम क्रोध, प्रभ आत्म देवे सोध, साचा शब्द ब्रह्म ज्ञानया। हरि हरि शब्द वड जोधन जोध, वड सूरा सूरबीर बलवानया। धुर फ़रमाणा श्री भगवाना एका शब्द अगाध बोध, लोकमात सच्चा निशानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आपे जाणया। आपे जाणे आप हरि निरंकारया। एका शब्द जपाए साचा जाप, लोकमाती मार झाती कलिजुग अन्तिम वारया। गुरमुखां मारे तीनो ताप, शब्द कटार हथ्थ उठा रिहा। चार कुन्ट चार वरन रिहा कांप, ना देवे कोई सहारया। कलिजुग काला वध्या पाप, घर घर दर दर हाहाकारया। ना कोई माई ना कोई बाप, भैण भाईआं नाता तुट्टा भाई भाई हंकारया। ना

कोई दिसे साक सज्जण सैण, चार कुन्ट चार चुफेरे एका धूंआं धुंदूकारया। हरि नर साचा रसन कहि ना सके कहण, काया तन मन हंकारया। गुरमुख विरले लाहा साचा लैण, सोहण हरि साचे बंक द्वारया। दर्शन पायण तीजे नैण, हरि खोले बन्द किवाड़या। बेमुख डोबे वहन्दे वहिण, कलिजुग माया तत्ती हाड़या। कलिजुग अन्धेरी रैण, जोती जोत सरूप हरि, साचा शब्द एका चन्द लोकमात कलि चाड़या। साचा चन्द भए प्रकाश। गुरमुखां खुशी कराए बन्द बन्द, मेल मिलाए पुरख अबिनाश। हरि हरि साजन रसना गाए बत्ती दन्द, करे कराए बन्द खुलास। कलिजुग जीव आत्म अन्ध, अट्ठे पहर रहण उदास। शब्द सुहागी गीत सोहँ सच्चा छन्द, रसना गायण स्वास स्वास। आप उपजाए परमानंद, हउमे रोग जाए विनास। माया पड़दा ढाहे कंध, काया मण्डल इक्क वखासे साची रास। मदिरा मास जन तजाए गन्द, सदा सुहेला दरस दिखाए, सद वसे आस पास। जोती जोत रूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता शाहो शबाश। वड दाता शाह सुल्तान पुरख सुजानया। वड दाता बेपरवाह हरि भगवान, चल्ले चलाए आपणे भाणया। धुरदरगाही सच मलाह, गुण निधान ना कोई जाणे जीव नदानया। सदा सुहेला पकड़े बांह, हरि मेहरवान गुरमुख विरले मात पछाणया। आदि अन्ती ठंडी छाँ, चतुर सुजान गुरमुख साचे रंग साचा माणया। दरगहि साची साचा थां, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, आप बहाए सच अस्थानया। साचा धाम हरि अस्थूल। कन्त वसेरा एक गुरमुख ना जाणा भूल। जीव जन्त साध संत एका एक रखाए टेक, शब्द तीर शब्द त्रसूल। आपे मारे चारे वारे पंचम् करे बुध बबेक, नर हरि साचा कन्त कन्तूल। जोती जोत सरूप हरि, अलक्ख अलक्खणा सति सुहेला एका एक। जगत निधान गुणवन्त, मिले मेल कन्त भतार। चतुर सुजाना हरि भगवन्त, पूर्ब कर्म रिहा विचार। वड धन माला हरि पतिवन्त, आत्म भरे सर्ब भण्डार। सखा सखाई सति सतिवन्त, आप आपणी किरपा धार। साचा मेला एका कन्त, गुरमुख सुहागण साची नार। जगत वड्याई जीव जन्त, आत्म दुःख निवार। किसे हथ्थ ना आए भेखाधारी संत, दहि दिश फिरन होयण ख्वार। हरि आप बणाए साची बणत, गुरमुख निमाणे पैज संवार। सगल मिटाए आत्म चिन्त, साचा देवे नाम अधार। जगत सुहेला महिंमा अगणत, रसना कोई ना सके उचार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख दुआरा इक्क सुहाए, चरन छुहाए बंक द्वार। गुरमुख आत्म हरि दर पुकारे। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, मिले मेल कन्त भतारे। एका नाम साचा दर, अमृत भण्डारा साचा सर, आत्म खुल्हे बन्द कवाड़े। लक्ख चुरासी चुक्के डर, पंचम् नेड़ ना आए धाड़े। दर घर साचे जायण वड़, पुरख अबिनाशी फड़्या लड़, शब्द घोड़े साचे चाढ़े। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साचे मन्दिर शब्द सरूपी गया वड़। शब्द सरूपी

सच तराना। राग नाद ना किसे वखाना। रसना साद ना किसे पछाना। धुरदरगाही साची दात, सच वस्त सच घर टिकाणा। गुरमुख विरला लए लाध, लोकमात मिले मेल भगवाना। शब्द तूरत साचा नाद, अकाल मूर्त एका रंग वखाना। सति सरूपी साची सूरत, आत्म जोती नूर नुराना। बेमुखां सद वसे दूरत, गुरमुखां हरि विच समाणा। लक्ख चुरासी रही झूरत, दिस ना आए गुण निधाना। गुरमुखां आसा मनसा पूरत, दरस दिखाए दया कमाए प्रभ अबिनाशी वड मेहरबाना। नूर नुरानी साची सूरत, वलीआ छलीआ खेल महाना। सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़त, इक्क अटल सच महल्ल श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे, चरन प्रीती इक्क बंधाना। निभे चरन प्रीत भगत भगवानया। साची परखे नीत विच जहानया। मानस देही सदा अतीत, एका शब्द सुहागी गीत, हरि साचा रसन वखानया। लक्ख चुरासी जाणा जीत, काया मन्दिर ढहे मसीत, अन्तिम छड्डणा विच जहानया। एका हरि हरि राखो चीत, अट्ठे पहर नाम वस्त सच दस्त, रक्खे रंग मस्तानया। काया चोला झूठा बस्त, अन्तिम छड्डणा विच जहानया। कोई ना चल्ले संग अस्त, कलिजुग भुल्ले जीव निदानया। गुरमुख साचा सदा मस्त, अट्ठे पहर दिवस रैण गुर चरन ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गऊ ग़रीब निमाणे दर घर साचे देवे आपे माणया।

८२६
०४

❇ ३ माघ २०११ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❇

हरि जोत अबिनाश, जगत उपजांयदा। हरि जोत अबिनाश, भगत भुगत बणांयदा। हरि जोत अबिनाश, आत्म शक्त लक्ख चुरासी आप टिकांयदा। हरि जोत अबिनाश, बूंद रक्त काया माया आप बणांयदा। हरि जोत अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग आपणी आप जगांयदा। हरि जोत अबिनाश, सति सरूरया। हरि जोत अबिनाश, सर्बकला भरपूरया। हरि जोत अबिनाश, नूर नुरानी साचा नूर कलिजुग दीसे दूरया। हरि शब्द अबिनाश, वेख वखाणे जन्त जीव शैतानी, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां आत्म रंग चढ़ाए गूढ़या। हरि जोत अबिनाश, जगत प्रकाश है। हरि जोत अबिनाश, घट घट रक्खे वास है। हरि जोत अबिनाश, काया आत्म साचा तीर्थ, जोत ज्वाला इक्क ललाट है। हरि जोत अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, इक्क निभाए सच्चा साथ है। हरि जोत अबिनाश, संग साथीआ। हरि जोत अबिनाश, वेख वखाणे त्रैलोकी नाथीआ। हरि जोत अबिनाश, काया मन्दिर डगमगाए झूठी देही माटी ख़ाकीआ। हरि जोत अबिनाश, आप आपणी मात जगाए, जन भगतां लिखे लेख मस्तक साचे माथिआ। हरि जोत अबिनाश, नर निरंकारया।

हरि जोत अबिनाश, सगल पसारया। हरि जोत अबिनाश, खेल अपारया। हरि जोत अबिनाश, साचे धाम सच सिँघासण आपे आप डगमगा रिहा। हरि जोत अबिनाश, सच मण्डल दी साची रास, एका नूरा चार कुन्ट दहि दिशा वखा रिहा है। हरि जोत अबिनाश, सर्ब घटा घट वास्सया। हरि जोत अबिनाश, जन भगतां आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, भाग लगाए काया चोली, दीपक जोती डगमगा रिहा। हरि जोत अबिनाश, लक्ख चुरासी दासन दास, वस्त अनमोल पूरा तोल तोल, आप आपणे विच टिका रिहा। हरि जोत अबिनाश, जन भगतां आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समा रिहा। हरि जोत अबिनाश, रंग रंग रंगानया। हरि जोत अबिनाश, हरि धाम हरि राम आपे आप समानया। हरि जोत अबिनाश, आप कराए आपणा काम, दिस ना आए राजे राणया। हरि जोत अबिनाश, लक्ख चुरासी काया चाम, डगमगाए एका रंग समानया। हरि जोत अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा रंग आपे जाणया। हरि जोत अबिनाश, धाम अस्थूलया। हरि जोत अबिनाश, सच सिँघासण डेरा लाए, ना पावा ना चूलया। हरि जोत अबिनाश, सन्झ सवेर ना कोई रखाए, अन्ध अन्धेर दिस ना आए, एका रंग रंग नवेलया। हरि जोत अबिनाश, आप आपणा आप उपाए, ना कोई गुर ना कोई चेलया। हरि जोत अबिनाश, अचरज खेल खेलया। जगत सुहेल अट्ठे पहर डगमगाए, ना कोई बाती ना कोई तेलया। हरि जोत अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, अचरज खेल पारब्रह्म आप आपणा खेलया। हरि जोत अबिनाश, सच द्वारया। हरि जोत अबिनाश, परम पुरख एका कलि एका धारया। हरि जोत अबिनाशी, लक्ख चुरासी वल छल जुगा जुगन्तर खेल बणा रिहा। हरि जोत अबिनाश, वेख वखाणे जल थल, शब्द मन्त्र इक्क चला रिहा। हरि जोत अबिनाश, सत्तवें घर सति इक्क अहिमद सच मुहम्मद साचा आसण ला रिहा। साचे घर हरि बलवाना। जोत सरूपी पवण मसाणा। गुणवन्ता हरि गुण निधाना। जीव जन्त ना करे पछाना, साध संत किसे हथ्थ ना आए, दर घर साचा बूझ बुझाना। सर्बकला समरथ आप अख्वाए, लोआं पुरीआं बाहर टिकाना। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आप आपणा सच निशाना। हरि जोत अबिनाश, जोध बल सूरया। हरि जोत अबिनाश, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकारा वारया। हरि जोत अबिनाश, तुट्टे नाता जगत मोह, आत्म राम सद भरपूरया। हरि जोत अबिनाश, कोई ना सके मात छोह, लक्ख चुरासी कूड़ कुड़यारया। हरि जोत अबिनाश, साध संत कलि कलवाती रहे रो, किसे हथ्थ ना आए साचा नूरया। हरि जोत अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, इक्क रखाए दया कमाए, संग सुहेला शब्द सुहेला साची तूरया। हरि जोत जोत अबिनाशी। करे खेल हरि सर्ब घटा घट वासी। छेवें दर वेखे हरि खोल्हे बन्द कवाड़, नूर नुरानी जोत प्रकाशी। सच दुआरे जाणा वड़, प्रभ अबिनाशी

अग्गे खड़, आप फड़ाए आपणा लड़, शब्द बणाए साची दासी। जोती जामा श्री भगवाना, सच मण्डल दी साची रासी। छेवें घर हरि विचारे। जोती खेल अपर अपारे। शब्द तराना इक्क अलाए, देवे नाद नाद धुन्कारे। साचा शब्द इक्क चलाए, जुगा जुगन्तर बणत बणाए, आप आपणी जाणे कारे। जोती जामा श्री भगवाना, छेवें दर हरि निरँकारे। वेख विचारे साचा शब्द सच तराना। किसे ना दिसे मात निशाना, आप आपणी बन्ने धारे। साचे घर शब्द निशाना एका राग एका साज, दूजा ना कोई ताल रखाना। अनहद धुनी साची अवाज़, धुन धनवन्ता आप अख्वाना। मातलोक प्रभ देवे साची दात, साचा शब्द जगत महाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म दर सच सुहाणा। उपजे शब्द वैराग, आग तन नासीआ। गुरमुख सोया जाए जाग, वड वडभाग किरपा करे शाहो शाबाशीआ। काया अन्दर आत्म अन्ध धो झूठे दाग, मानस जन्म करे रहिरासीआ। हरि संत सुहेला आप बणाए हँस काग, किरपा कर साचा हरि देवे वर घट घट वासीआ। जोती जोत सरूप हरि, सच शब्द हरि मात धर, सुण सुणावे आवे जावे पुरख अबिनाशीआ। साचा शब्द जगत जणाईआ। गुरमुख साचे संत जना प्रभ अबिनाशी रिहा उठाईआ। एका देवे सच्चा नाम धना, साची वस्त इक्क अमोल अतोल धुरदरगाही साचा माही विच मात टिकाईआ। साचा सुणाए राग कन्नां, गुरमुखां कढ्ढे आत्म जनां, दरस अमोघा धुर संजोगा एका आपणा आप विखाईआ। भाण्डा भरम हरि जी भन्ना, शब्द तीर लाया तना, आत्म खिच्चे साचा सीर, बज़र कपाटी चीर वखाईआ। जोती जामा श्री भगवाना, शब्दी वेखे इक्क तराना, जुगा जुगन्तर आप बणाए साची बणतर, भगत सुहेला साचा मेला शब्द सुरती मेल मिलाईआ। शब्द सुरती मेल मिलावा, खेल अपर अपारया। बेमुख बन्नण झूठे दाअवे, नर हरि दिस ना आए जीव जन्त गंवारया। गुरमुखां देवे ठंडीआं छावां, आप उठावे फड़ फड़ बाहों, साची जोती मेल मिला रिहा। दर घर साचे साचे थावां, गुरमुख साचे संत जनां, जोती जामा श्री भगवाना, एका रंगण नाम चढ़ा रिहा। साची रंगण हरि द्वार। गुरमुख गुरसिख मूल ना संगण, मिले मेल कन्त भतार। काया डोली शब्द चोली, हौली हौली करदी विच्चों बोली, सच कराए तन शृंगार। आत्म पर्दे रिहा फोली, गुरमुख साचे चरन प्रीती घोल घोली, आपे वेखे अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर। पूरे तोल रिहा तोली, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी कर्म विचार, जोती जामा श्री भगवाना, धुरदरगाही साचा राणा, आप जाणे आपणी कार। साची जाणे कार शब्द मृदंगया। कलिजुग तेरा अन्त विहार, गुरमुखां मेल मिलाए साचा सन्गया। मानस देही अपर अपार, मिल्या नर हरि हरि नर सूरा सरबन्गया। लक्ख चुरासी गई हार, सच वस्त किसे हथ्थ ना आए, साचा नाम दर दर मंगया। भेखाधारी भेख भिखार, भगवें वेस पैरीं नंगया। चारों

८३१
०४
८३१
०४

कुन्ट फिरे देस प्रदेस, मायाधारी आत्म अंध्या। शब्द लिखाया गुर दस्मेश, कलिजुग तेरा झूठा वेस, झूठा दिसे धन्दया। प्रगट होए नर नरेश, जोती जामा माझे देस, पूरन नर हरि भगवानया। बेमुख पछाड़े पकड़ केस, राजे राणे दर दरवेश, साचा लेखा लेख लिखा रिहा। जोती जामा शब्दी भेखा, नाम तराना इक्क रखा रिहा। सोहँ शब्द सच्चा धन माला, ना होए कदे कंगाला, आदि जुगादी सद ब्रह्मादी, साचे धाम सुहा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, सच्चा वज्जे एका नादी, चार वरनां एका सरना, हरि साचा खोज खुजा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंकी पहरे बाणा, शब्द रक्खे इक्क तराना, लक्ख चुरासी बन्ने गाना, गुरमुखां देवे नाम निधाना, समरथ पुरख पूरन भगवन्तया। पूरन भगवन्त सच वधाईआ। जुगा जुगन्त आवण जावण खेल रचाईआ। आपे बन्ने आपणी धार, भेव किसे ना पाईआ। माया राणी जगत भुलाया, भुल्ले जीव गंवार, घर घर पई दुहाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरार, चोरी यारी ठग्गी घर घर वास रखाईआ। ना कोई दिसे कन्त भतार, ना कोई जाणे साची नार, मात पित भैणां भाई तुट्टा नाता जगत मोह, आत्म हँकार चलाईआ। पुरख अबिनाशी प्रगट हो गुरमुखां आत्म मैल धो, अमृत साचा जाम प्याईआ। पूर कराए आपणे काम, इक्क जपाए साचा नाम, वरनां बरनां भेव चुकाईआ। कोई ना लाए हरि जी दाम, सुक्का करे हरया चाम, सच ख़ज़ीना प्रबीना, धुरदरगाही वस्त अमोल, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात रिहा टिकाईआ। गुरमुखां देवे कर प्यार, सद रक्खे तिक्खी धार, पंज चोरां मारे मार, काम कामनी नेड़ ना आईआ। साचा मेल कन्त भतार, आत्म जोती कर उज्जयार, शब्द मोनी साची धार, साचा रंग एका रिहा रंगाईआ। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे संत जनां, लोकमात मार झात, आपे बैठ इक्क इकांत, साची बणत रिहा बणाईआ। बणत बणाए हरि बनवारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। चारों कुन्ट होए ख्वारी। लक्ख चुरासी उतरी पारी। गुरमुख विरला सच सुहेला, हरि चरन सरन करे इक्क प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे एका बख्शे शब्द उडारी। शब्द उडार अपारया। आत्म खुल्हे दर बन्द कवाड़या। पंजां हट्टे धाड़, दर द्वारया। शब्द चल्ले काड़ काड़, साची धुनी नाद धुन्कारया। जोत सरूपी आत्म दर जाए खड़, गुरमुख साचे सुणे पुकारया। ना कोई सीस ना कोई धड़, नूर नुराना जोत अकारया। गुरमुख आत्म साचे अन्दर आपे जाए वड़, दिस किसे ना आ रिहा। सच सिँघासण आत्म सेजा गुरमुख जाए चढ़ साचा कन्त रंगीला माधव साचे आसण डेरा ला रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, जन भगतां देवे नाम निधाना, पूरन आसा धुर भरवासा, एका शब्द मात पताल अकाशा, काया कन्दर आप उपजा रिहा। काया कन्दर अन्धेरी रात। मानस देही साचा मन्दिर, बैठा रहे इक्क इकांत। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, ना कोई देवे

अमृत बूंद स्वांत। ना कोई तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, दर दर घर घर कलिजुग जीव भवांत। गुरमुखां दे वसे अन्दरे अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम अन्त पुच्छे वात, हरि शब्द अतोल विच संसारया। कोई ना सके रसना बोल, आपे जाणे गुण विचारया। आत्म पड़दे रिहा खोल्ह, जिस जन आपे किरपा करे अपारया। शब्द वजाए एका नाद एका धार अनाद अनादी सच्चा ढोल, साचा राग छतीसा एका एक सुणा रिहा। हरिजन गाए संग बतीसा, इक्क झुलाए छत्र सीसा, साची दरगहि साचा माण दवा रिहा। खेल खिलाए बीस इकीसा, मेट मिटाए मूसा ईसा, कुरान अञ्जीलां कर कर हीला, अग्नी जोती लाए तीला, भेख ना कोई वेखे चिट्टा पीला, काला लाल हरि आपणी खेल रचा रिहा। वेद पुरानां वेख वखाणी, कलिजुग अन्तिम आई हानी, शब्दी उडे इक्क बबाणी। चार कुन्टां दहि दिशा खण्डां वरभण्डां लोआं पुरीआं विच नवखण्डां, सत्तां दीपां वंड वंडाणी। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, शब्द सरूपी एका डण्डा, लक्ख चुरासी पाए वण्डां, कोई ना जाणे जीव निधानी। गुरमुखां आत्म करे ठंडा, बेमुख दुहागण नार आत्म होई रंडा, ना होवे कोई स्यानी। जोती जोत सरूप हरि, सच शब्द अतुंल अडुल्ल, इक्क अमुल्ल नाम निशानी। नाम निशानी विच संसार। जुगा जुगन्तर साची धार। एका अंकर एकाकार। ब्रह्मा विष्न महेष गणेश शिव शंकर खड़े रहण द्वार। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द साचा छत्र सीस झुलीसा, अट्ठे पहर मंगे बण भिखारा। एका शब्द एका धुनी विच ब्रह्माद, गुरूआं पीरां साधां संतां आदिन अन्ता दए उधारा। जोती जामा श्री भगवाना, एका शब्द जगत निशानी, आप उपजाए विच संसारा। हरि शब्द आप उपजांयदा। मात धरे सच्ची बाणी, जगत जाप आप जपांयदा। गुर गुर गुरूआं एका आण, शब्द दान हरि झोली पांयदा। अट्ठे पहर शब्द बिबाण, इक्क उडान लगांयदा। दिवस रैणी चरन ध्यान, नेत्र नैणी दरस दिखांयदा। आदि पुरख आदि भवानी, साचा शब्द रखाए साची बाणी, आप आपणा आप टिकांयदा। चार वरनां एका खाणी, प्रभ अबिनाशी साचा जाणी, जोती जामा श्री भगवाना, सतिजुग साचा कन्त सुहागा, एका राग सोहँ जाप आपे आप जपांयदा। शब्द अटल अडोल, निरगुण हारदा। अन्दरे अन्दर रिहा बोल, सच्चा खेल सिरजण हारदा। बज़र कपाटी पाई साची हाटी रिहा बोल, गुरमुखां वाज मारदा। किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताटी, एका वसे काया घाटी, सदा अडोल अडोलदा। गुरमुखां दिसे नेड़े वाटी, साचे घर वसे हरि आत्म ताकी खोल्हदा। भरम भुलेखा चुक्के डर, अमृत प्याए साचे सर, सच सरोवर एका ताल मारे छाल चढ़े रंग चलूल दा। जोती जामा श्री भगवाना, एका शब्द जगत अमोला। जुगा जुगन्तर हरि जी बोला, गुर गुर गुरूआं काया चोले साचे वसे, ना कोई रक्खे पड़दा उहला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, सोहँ शब्द साचा ढोला। सोहँ

८३३
०४

शब्द वंडे दात। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात। पुरख अबिनाशी दूर दुराडा आत्म वेखे, नौ खण्ड पृथ्मी मारे झात। गुरमुख साचा नेत्र पेखे, आत्म जोती पवण अधारी हरि गुण रूपा इक्क इकांत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां पुच्छे वात। गुरमुखां पुच्छे वात, शब्द मिलांयदा। एका बख्शे चरन नात, साचा जोड़ जुड़ांयदा। आत्म मिटे अन्धेरी रात, दीपक जोती इक्क जगांयदा। आपे पिता आपे मात, साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण अखवांयदा। एका देवे शब्द सुगात, धुरदरगाही जगत मलाही, गुरमुख साचे समझांयदा। आप कटाए जम की फाही, लक्ख चुरासी पार करांयदा। कलिजुग धोवे लग्गी छाही, उज्जल मति बुध बबेकी एका टेकी सरन चरन गुर रखांयदा। बहत्तर नाड़ी रत्ती रत्त, देवे मति धीरज यति कमलापत, सति सतिवादा ब्रह्म अनादा एका एक वजांयदा। शब्द चढ़ाए साचे रथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, पंच पंचायती जाए मथ, प्रेम जोती पाए नत्थ, शब्द अस्वार करांयदा। धुरदरगाही साची वथ हरि समरथ, सोहँ अक्खर आत्म झोली टिकांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, जिउँ रामा घर दसरथ, कृष्न कान्हा भेखा धारी गुण विचारी, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण भेखी भेख वटांयदा। गुरमुखां चुकाए लहणा देणा, साचा भाणा सिर ते सहिणा, शब्द पहनाए सिर ते गहणा, सच श्रृंगार करांयदा। नाम पाए कज्जल नैणां, लेखे लाए चाम गुर चरन बहिणा, मिटे अन्धेरी शाम दरस पेखे साचे नैणां, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। चार वरन कराए भाई भैणां, बेमुखां खाए लाड़ी मौत डैणां, दर दर घर घर हरि हरि हाहाकार करांयदा। गुरमुख पूरे रसना कहणा, बेमुख जीव झूठे वहिण वहिणा, कलिजुग वेला अन्तिम अन्त आपणा कर्म कमांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंकी पहरे बाणा, माझे देस कर कर वेस, आपणा भेख वटांयदा। शब्द तुरंग हरि हरि रंगा। चार कुन्टी एका जंगा। आप उठाए राजा राणा भाणा मंगा। बेमुहाणा हरि भगवाना, इक्क कराए साचा संगा। चिट्टे अस्व तंग कसाणा। शाहो अस्वार आप अख्वाणा। शब्द घोड़ा चार कुन्ट दौड़ा, दिस किसे ना आणा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मिट्ठा कौड़ा, पहला मारे मात पौड़ा, लहन्दी दिशा आख वखाणा। जोती जामा श्री भगवाना, शब्द रक्खे इक्क उडाना। नूरी जोती खेल महाना। ना कोई जाणे जीव नादाना। पवण शब्दी इक्क उडाना। जोती वरनी तीर निशाना। धरनी धरना एका सच्ची खेल करनी, कलिजुग अन्तिम मिटे निशाना। गुरमुख विरला आए सरनी, आप चुकाए मरनी डरनी, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। लोचण नेत्र खुल्हे हरनी फरनी, साचा दरस अमोगा अरोगा, धुर संजोगा श्री भगवाना। शब्द चुगाए साची चोगा। गुरमुख साचा माणक मोती, हँस कागा होया दागा, हरि हरि पुरख सुजाना। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुखां पकड़े आपे वागा, अट्ठे पहर नौजवाना। नर हरि हरि नर दया कमांयदा। प्रभ अबिनाशी दीन दयाला, साची बणत बणांयदा।

साचा शब्द मात दुशाला, गुरमुखां तन पहनांयदा। आप लपेटे साचे लाला, दिस किसे ना आंयदा। फल लगाए साचे डाला, अमृत रस भरांयदा। जोती दीपक जोत उजाला, आत्म विस मिटांयदा। काया मन्दिर सच धर्मसाला, सदि पुरख निरँजण आसण लांयदा। जगत अवल्लड़ी चले चाला, भेख भगवन्ता आप अखवांयदा। कलिजुग अन्तिम मुखड़ा काला, साध संत ना कोई दाग धवांयदा। माया लगा जगत जंजाला, झूठा बंधन ईधन अन्धन ना कोई बुझांयदा। लक्ख चुरासी होए कंगाला, सच वस्त ना कोई झोली पांयदा। ज्ञानी ध्यानी होए बेहाला, गुर गुरबाणी कोए भेव ना पांयदा। वेद पुरानी अञ्जील कुरानी आई हानी, एका अल्ला नूर अलाही जोत अकाला नेत्र नरायण कोई दिस ना आंयदा। ग्रन्थी पन्थी आत्म छड्डया इक्क महल्ला, जगत नाता रसन विवाद चारों कुन्ट वजांयदा। मुल्लां शेख़ मुलाना पीर, शब्द दाद ना कोई झोली पांयदा। राजा राणा बेमुहाणा शाह सुल्ताना दस्तगीर अन्त अख़ीर, कलिजुग ना कोई छुडांयदा। सति सतिवादी मिटया निशाना, चारों कुन्ट होई वैराना, कलिजुग काला आपणा भेख वटांयदा। लक्ख चुरासी बद्धा गाना, अन्तिम करे इक्क इशनाना, धरत धवला जोती मवला सर्ब खेल रचांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, नैण कँवला लोकमाती जामा पांयदा। लोकमाती लए अवतार। धरत मात तेरी सुण पुकार। गुरमुख साचे संत दुलारे, आप बहाए सच दरबार। आत्म देवे नाम भण्डारे, एका रक्खे तिक्खी धार। कलिजुग भुल्ले जीव गंवारे, हउमे रोग रसन विकार। गुर गुर गुर गोबिन्दा, आप उतारे सगली चिन्दा, एका बख्शे चरन प्यार। दुष्ट दुराचार हाहाकार करन निन्दा, आत्म वड़या काया लड़या इक्क हँकार। हरिजन सुहेला साची बिन्दा, दर घर साचे सोभावन्ती नार। आप मिटाए सगली चिन्दा, देवे दरस अगम्म अपार। प्रगट होए वाली दो जहाना वड मृगिन्दा, पवणी जोती शब्द अधार। शब्द धार वड सागर सिंधा, ना सके कोई खुल्हार। पकड़ उठाए सुरपति राजा इन्दा, करोड़ तेतीसा आई हार। शिव शंकर हरि बख्शिंदा, अन्तिम जोती मेल मिलार। ब्रह्मा वेद वखाणे रसना हरि हरि गुण गोबिन्दा, अन्तिम वेले पाए सार। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंकी पहरे बाणा, गुरमुख बन्न्हाए दर दुआरे एका धार। ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाया। आप आपणी जोत समाया। सच दुआरा सच सिँघासण, पंचम् घर वेख हरि सति सरूपी रिहा समाया। पवण अधारी लक्ख चुरासी पावे सारी। स्वास स्वासा पृथ्मी मात पताल अकाशा, एका देवे आप सहारी। गुरमुखां देवे चरन भरवासा, तिन्नां लोकां वसे बाहरी। लक्ख चुरासी वेखण आया तमाशा, घर घर फिरे दुहागण नारी। राजे राणयां हथ्थ फड़ाए जूठा झूठा कासा, आप फिराए दर दर भिखारी। एका जोत पुरख अबिनाशी, आवण जावण पतित पावन जगत भुलेखा खेल न्यारी। गुरमुखां अमृत मेघ बरसे सावण, काया करे ठंडी ठारी। आप पकड़ाए आपणा दामन, धुरदरगाही पैंज संवारी।

एथे ओथे होए जामन, नर नरायण हरि निरँकारी। नेड़ ना आए कामनी कामन, साची देवे शब्द कटारी। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, जोधा सूरा वड बलकारी। खेल रचाया कृष्ना शामन, द्वापर तेरी खेल न्यारी। कलिजुग जगी जोत निहकलंक नरायण नर अवतारी। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, गुरमुख साचे संत सुहेले, आप मिलाए दया कमाए खिच्च ल्याए चरन द्वारी। चरन दुआरा इक्क विचार। सच घर बाहरा विच संसार। एका नर नर निरँकारा, ना कोई दूजी दिसे धार। तीजे घर ना होए ख्वारा, गुरमुख साचा करे पुकार। चौथे मिले आप हरि, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़। पंजवें तीर्थ नुहाए सर, नेड़ ना आए पंचम् धाड़। छेवें घर जाए वड़, शब्द धार हरि पुकार आपे सुणी, वेखे खेल अपर अपार। सतवें सति सरूप सदा अनन्दा परमानंदा, जोत विजोगी सच संजोगी एका रंग अपर अपार। अट्ठ तत्त देवे मति, लोकमात दी साची रत्त, पुरख अबिनाशी किरपा धार। नांवे दर आवे डर, किसे ना मिले साचा हरि, लक्ख चुरासी गई हार। दसवें घर मिले वर, गुरमुखां देवे किरपा कर, आप बहाए सच द्वार। ना जन्मे ना जाए मर, इक्क नुहा अमृत तीर्थ साचे सर, कलि कलेश दर दरवेश सदा हमेश, आपे आप मिटा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, साचे धाम आपणे आप बहा रिहा।

८३६
०४

❇ ५ माघ २०११ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड बरनाला ज़िला अमृतसर ❇

हरिजन शब्द अधार, दर परवानया। हरिजन शब्द अधार, भगत भगवानया। हरिजन शब्द अधार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा आप पछानया। हरिजन शब्द अधार, जगत पित जगतेश्वर एका रंग रंगानया। हरि शब्द हरिभगत अधार, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाद इक्क तरानया। हरिजन शब्द भगत उधारया। आदि अन्ती जुगा जुगन्ती, लोकमाती साची धारया। आप बणाए साची बणत, गुरमुख साचे साचे संतां देवे नाम हरि गिरधारया। मिले वड्याई विच जीव जन्तां धुन धुना साचा राग एका बाणी आप उपजा रिहा। हरिजन साचा सुघड़ स्याणा, आत्म वस्सया पद निरबाणी, जम की कानी आप चुका रिहा। अमृत आत्म सच सुहावा ताल एका देवे धीरज पाणी, सति संतोखा अन्तिम मोखा अमृत धार ठंडी ठार, काया गागर डूंघे सागर आपे आप उपजा रिहा। हरिजन मीता रसना चीता, मानस देही जामा जीता, पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे पत्तित पुनीता, दर घर आऐ बंक द्वार, हरि करतार, आपे आप सुहा लया। नर हरि साचा राखो चीता, आपे परखे आत्म नीता, साचा राग इक्क सुणाए, माण रखाए अठारां ध्याए गीता, जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला शब्द सुहेला आप बणा रिहा। हरि शब्द अपार जगत अडोल्लया। गुरमुख विरला करे प्यार, रसना हरि हरि

बोल्लया। एका बख्शे चरन प्यार, पूरे तोल हरि साचे तोल्लया। अमृत आत्म ठंडी धार, सति सरूपी आपे चो रिहा। शब्द पवण इक्क उडार, अवणी गवणी पसर पसार, त्रैभवण बूझ बुझा रिहा। शब्द लगाए साचा डंक। आप उठाए राउ रंक। गुरमुख साचे भगत उधारे, जिउँ राजा जनक। प्रभ अबिनाशी वेख विचारे, गुरमुख साचे पावे सारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, इक्क लगाए आत्म जोती साची तनक। साची जोत कर अकारे। वरन गोत वसे बाहरे। इक्क महल्ल अटल अचल अथल, जोती जामा श्री भगवाना, प्रगट होए वाली दो जहानां, गुरमुख साचे वेख वखाणे, दया कमाए वासी पुरी घनक, देवे दरस दर द्वार हरि अमोघया। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन बख्शे चरन प्यार, लिख्या लेख धुर संजोगया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी गई हार, चारों कुन्ट हाहाकार, ना कोई करे बन्द खुलासीआ। कलिजुग माया जगत विकार, आत्म अन्धी बेमुहार, झूठा बाणा तन शृंगार, नर हरि ना कोई पछानया। पुरख अबिनाशी जामा धार, इक्क उठाए शब्द कटार, वेख वखाणे वारो वार, शाह शहाना राज राजानया। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, गुरमुख साचे सच दुआरे। आत्म अन्दर साचे मन्दिर साचा डेरा लानया। साचा मन्दिर गुरमुख भाग। आत्म जोती नूर नुरानी इक्क चराग। ना कोई वरन ना कोई गोती, दूर द्वैती धोवे दाग। आप उठाए आत्म सोती, जगत बुझाए तृष्ना आग। जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, गुरमुख साचे संत दुलारे, इक्क सुणाए साचा राग। रंग रंगीला शब्द तराना। आप चलाए दया कमाए, जोती जोत श्री भगवाना। अन्दरे अन्दर दरस दिखाए, डगमगाए जोत महाना। बेमुख जीवां दिस ना आए अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ दर भौंदे, हथ्थ ना आए कोई निशाना। गुरमुख साचे दर घर साचे पुरख अबिनाशी कन्त सुहागा आत्म सेजा साची पाउँदे, साचा नाम इक्क वखाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम गुण निधाना। साचा नाम निधान, जगत वणजारया। हरि चरन कँवल ध्यान, एका देवे शब्द बिबाणया। धुरदरगाही सच उडान, पवणी शब्दी जोती मेल मिला रिहा। पुरख अबिनाशी चतुर सुजान, गुरमुख साचे पार उतारे, मूर्ख मुग्ध अञ्याणया। जोती जामा श्री भगवाना, हरिजन साचे विच मात पछानया। निरगुण रूप अपार, किसे ना जाणया। निरगुण रूप अपार, खेल महानया। निरगुण रूप अपार, किसे हथ्थ ना आवे राजे राणया। निरगुण रूप अपार, खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरानया। निरगुण रूप अपार, ना कोई मन्ने कन्ने जीव निधाने, वसे साचे घर सच टिकाणया। निरगुण रूप अपार, किसे दिस ना आए दर, सच महल्ल ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, आपे करे वल छल, अछल अछल्ल इक्क अखा रिहा। निरगुण रूप अपार, आपे वसे जल थल, थल जल आप समा रिहा। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आपे

जाणे आपणी धार। निरगुण रूप अपार, जगत अमोल्लया। निरगुण रूप अपार, किसे ना तोल्लया। निरगुण रूप अपार, साचे दर द्वार दर दुआरा किसे ना खोल्ल्या। निरगुण रूप अपार, आणा जाणा आपणे घर साचे सर, शब्द भण्डारा आपे एका खोल्ल्या। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग आपे मौलया। निरगुण रूप अपार अन्धानया। निरगुण रूप अपार, ना किसे वखानया। निरगुण रूप अपार, एका एक एक भगवानया। निरगुण रूप अपार, आपे वसे आपे जाणे सच टिकाणया। निरगुण रूप अपार, लक्ख चुरासी बणत बणाए, साची वस्त इक्क टिकाए, पवणी शब्दी जोती नूर महानया। निरगुण रूप अपार, वरन गोती ना कोई जणाए, मात पित ना गोद उठानया। निरगुण रूप अपार, जोती जोत सरूप हरि, एका आपणा रंग आपे आप पछानया। निरगुण रूप अपार, अवल्लड़ी धारया। निरगुण रूप अपार, इक्क अगम्मड़ी साची जोत अकारया। निरगुण रूप अपार, दिसे ना किसे काया खलड़ी, साचे मन्दिर आप सुहा रिहा। निरगुण रूप अपार, सद अतोल कदे ना तुलड़ी, सृष्ट सबाई आप तुला रिहा। निरगुण रूप अडोल, लक्ख चुरासी आप डुला रिहा। निरगुण रूप अपार, हरि हरि वडा शाहो भूप, जोती नूरा सति सरूप, सच सिँघासण एका एक डगमगा रिहा। सच सिँघासण हरि टिकाणा। ना कोई जाणे जीव जन्त नदाना। पवण शब्द ना किसे पछाना। जोती जामा श्री भगवाना, ना कोई वेखे चढ़ बिबाणा। सच टिकाणा हरि भगवान। जोती जामा नाम निशान। लक्ख चुरासी खेल रचाना, आप आपणा जाणे काम। जोती जामा भेख वटाणा, आप रखाए आपणा नाम। सृष्ट सबाई लेख लिखाना, पुरीआं लोआं सुहाए धाम। सति सतिवादी मेख लगवाणा। अमृत प्याए साचा जाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्हे रक्खे सदा दर, पूर कराए गुरमुखां काम। निरगुण नाम निधान, शब्द खज़ानया। गुरमुखां देवे कर ध्यान, पुरख अबिनाशी चतुर सुजानया। साचा शब्द भगत बिबाण, चार कुन्ट दहि दिश उडानया। आत्म झुल्ले धर्म निशान, जगत विकारा दूर करानया। एका बख्शे चरन ध्यान, नर नरायण श्री भगवानया। अट्ठे पहर पीण खाणा, नाम निधान हरि साचा रसन वखानया। पंचम् तत्ती साचा युद्ध, निर्मल बिबेकी आत्म बुध, प्रभ साचा धीर धिरानया। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े मार छाल बहिणा कुद्द, पुरख अबिनाशी साचा दर वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत दुलारे, साचा देवे नाम वरे वड खज़ानया। निरगुण शब्द अपार, भगत अधारया। देवणहार दातार सर्ब संसारया। कोटन कोट खड़े द्वार, प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, एका एक जगत टेका वड भण्डारया। जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द सति संतोखी, आत्म वस्त गुरमुखां आप वरता रिहा। शब्द भण्डार हरि द्वार। गुरमुखां मंगे कर प्यार। उतरे भुक्ख कलिजुग माया तृष्ना होए ख्वार। हउमे

विच्चों जाए दुःख, एका रस रसन रसायण साचा शब्द हरि करतार। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, आत्म भरे हरि भण्डार। लोकमाती उज्जल मुख, हरि संत सुहेला साचा मेला, एका दिसे दर दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे शब्द अधार। निरगुण शब्द अपार, सर्ब पसारया। गुरमुख विरला पाए सार, मंगे हरि अपारया। कलिजुग अन्तिम लँघे पार, एका एक आत्म रस हिरदे वस, साचो सच ध्या रिहा। शब्द तीर प्रभ मारे कस, पंज दूत दर जायण नस्स, साचा घर खुल्ला रिहा। अमृत आत्म हरि रस, सच राह प्रभ जाए दस्स, शब्द धार कर प्यार, एका एक वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां देवे नाम शब्द अपारे, लोकमाती सच वणजारे, आत्म झोली आप भरा रिहा। आत्म जोती भरे भण्डार। आत्म पर्दा रिहा खोल्ल, शब्द कटारा एका मार। हौली हौली रिहा बोल, अनहद धुन सच्ची धुन्कार। भाग लगाए काया चोली, मानस देही भगत सेजा जोती नूर कर अकार। लग्गे भाग काया डोली, पुरख अबिनाशी जोत मौली, साचा शब्द धुरदरगाही साची बाणी, एका देवे सच हुलार। जोती जामा श्री भगवाना, एका रंग साचा संग, दर दुआरे साची मंग, मंगण आया जन प्यार। साची मंग हरि दरबार। आत्म देवे एका रंग, उत्तर ना जाए दूजी वार। आप निभाए आपणा संग, मानस देही पैज संवार। अमृत नीर वहाए गंग, काया सागर डूंघी धार।
८३६ ०४ आपे कटे जगत भुलेखा भुक्ख नंग, साचा शब्द इक्क अधार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत सुहेले तन कराए ८३६ ०४
शब्द शृंगार। गुरमुख साचा मंगण आया, सच दरबारया। रंगण नाम इक्क चढ़ाया, आत्म खोल्ले बन्द कवाड़या। दर घर साचे आप बहाया, तत्ती वा ना लग्गे हाड़या। आत्म जिंदा आपे लाहया, गुरमुख साचा आप बणाया, धुरदरगाही लाड़या। आप आपणे कंध उठाया, जगत धन्दा मोह चुकाया, आत्म अन्धा गुर ज्ञान अन्धेर मिटाया। इक्क सुणाया शब्द छन्दा, खुशी कराए बन्द बन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आपणी जोत जगा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणे रंग समाना, इक्क सुणाए शब्द तराना, राग छतीसा बीस इकीसा, साचे घर सुणा रिहा। आत्म दर वजी वधाई, पुरख अबिनाशी वस्सया घर आत्म जोत जगाईआ। अमृत आत्म लैणा साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। आप चुकाए जम का डर, भव सागर पार कराईआ। एका पाणा साचा वर, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, हरि चरन सरन रखाईआ। आपे वसे आपणे घर, दूसर कोए दिस ना आईआ। गुरमुखां खोल्ले बन्द कवाड़, शब्द तीर इक्क चलाईआ। आप मिटाए पंजां धाड़, आत्म नीर ठंडा सीर आत्म दर वहाईआ। गुरमुख साचा साचे पौड़े जाए चाढ़, दर दुआरा नज़री आईआ। प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़, दोवें भुजा रिहा उठाईआ। आप फड़ाए आपणा लड़, गुरमुख वखाए दसवां घर, साची जोत डगमगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत दुलारे, शब्द दात वड करामात आत्म झोली आप भराईआ। आत्म झोली तन भरांयदा। शब्द चोली गुरमुख साचे साचे तन पहनांयदा। बज़र कपाटी रिहा खोल्ही, हौली हौली जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द भण्डार हरि वरतारा जन भगता भिच्छया पांयदा। साची भिच्छया हरि द्वार। पूरन इच्छया आप कराए, गुरमुख मंगे कर प्यार। आत्म दिशा इक्क वखाए, जोत जगाए अपर अपार। साची सिख्या दे मति समझाए, शब्द गुण गुण शब्द निरगुण रूप अपार। धुरदरगाही लिख्या लेखा कवण मिटाए, सरगुण देवे साची धार। जोती जोत सरूप हरि, धुरदरगाही आदि अन्ता जुगा जुगन्ता आप आपणी जाणे धार। आपे जाणे धार आप समालया। पूर्ब कर्म रिहा विचार, गुरमुखां करे प्रितपालया। मानस जन्म रिहा संवार, फल लगाए काया डालया। जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती एका एक बालया। हरि शब्द अपार, ब्रह्मण्ड सहारया। हरि शब्द अपार, वरभण्ड जैकारया। हरि शब्द अपार, आप चलाए नव खण्ड, एका एक सच्ची धारया। हरि शब्द अपार, पुरीआं लोआं रिहा वंड, आपे आप बणत बणा रिहा। हरि शब्द अपार, इक्क रखाए चण्ड प्रचण्ड, साचा खेल रचा रिहा। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी देवे दंड, हरि आपणे हथ्थ रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां रिहा वंड, गुणवन्ता गुण विचारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां वढ्ढे कंड, तिक्खी रक्खे धारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, अमृत देवे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, बेमुखां आत्म होई रंड, भुल्ले जीव गंवारया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां पाए ठंड, गुरमुख विरला आत्म बन्न्हे साची गंढु, धुरदरगाही वस्त अपारया। हरि शब्द हरि आपे दे वंड, लक्ख चुरासी सुणा रिहा। हरि शब्द अपार, वड ख़ज़ानया। हरि शब्द अपार, मिलाए मेल हरि बीने दानया। हरि शब्द अपार, एका घर रहाए उपजाए लक्ख चुरासी कन्न सुणानया। हरि शब्द अपार, तिक्खी रक्खे हरि जी धार, काया मन्दिर साचे अन्दर, आप वखाए सच टिकाणया। गुरमुख विरला पाए सार, मंगे वर हरि द्वार, देवे नाम गुण निधानया। सोलां करे तन श्रृंगार, प्रभ अबिनाशी मीत मुरार, आत्म सेजा आप विछानया। मिले मेल कन्त भतार, साचा संत हरि उज्जयार, अन्ध अन्धेरा आत्म अन्ध मिटानया। अट्ठे पहर ख़बरदार, एका मिल्या सच सुहेला पुरख अबिनाशी साचा यार, वसे इक्क इकेलया। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुखां आत्म बन्न्हे गाना, बेमुखां दिसे वक्त दुहेलया। शब्द गाना हरि बनांयदा। आत्म करे इक्क ध्याना, डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। साचा शब्द मन तराना, नाद अनाहद इक्क वजांयदा। नाल रलाए जोती कोटन भाना, इक्क अकार करांयदा। पवण रखाए सच बिबाणा, शब्द अस्वार करांयदा। आप उडाए इक्क उडाना, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, आपणे भाणे आप रहांयदा। गुरमुखां देवे नाम निशाना, वाली दो जहानां,

धुरदरगाही साचा माही, शब्दी मेला आपणा आप मिलांयदा। आपे गुर आप चेला, अचरज खेल मात खेला, दर द्वार नर निरँकार, एका एक खुल्हांयदा। सच द्वार आप खुल्हांयदा। एका रक्खे नाम भण्डारा, जगत वणजारा आप करांयदा। देंदा आया वारो वारा, लोकमात बणत बणांयदा। आदि अन्त ना करे विचारा , ना कोई जाणे जीव गंवारा, केहड़ी धार सच्चा राम आपणी आप बणांयदा। बेमुखां लाहे तन अफारा, हउमे कढ्ढे रोग विकारा। शब्द कटारा इक्क चलांयदा। गुरमुखां देवे चरन प्यारा, साचा मेला नर निरंकरा, एका रंग साचा संग, दरस अमोघ अन्तिम मेल मिलांयदा। आपे कटे भुक्ख नंग, गुरमुख साचे संत दुलारे, जोती जोत सरूप हरि, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। हरि शब्द अपार, खण्डा दो धारया। पकड़े हथ्थ करतार, जुगो जुग वारो वारया। लक्ख चुरासी पाए सार, करे खेल अपारया। पुरीआं लोआं बन्न्हे धार, उच्च महल्ल अटल मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे वेख वखा रिहा। जीव जन्त साध संत हरि भगवन्त, आपे वेखे बहत्तर नाड़ां, साची जोती आप जगा रिहा। बेमुख जीव जूठी झूठी धाड़ा, किसे ना दिसे पिच्छा अगाड़या। कलिजुग तत्ती वा अग्न हाढ़ा, माया राणी लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़ा, कोई ना किसे छुडा रिहा। सति सरूपी होए उजाड़ा,
८४१ धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, काम क्रोधी आत्म हँकारी जगत विकारी इक्क बणा रिहा। शब्द उठाए साची धाड़ा, धुरदरगाही ८४१
०४ साचा लाड़ा, कलिजुग वेला अन्तिम अन्त साची बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द खण्डा कलिजुग तेरा अन्तिम ०४
कन्ढ्ढा, लक्ख चुरासी एका डण्डा, आप चढ़ा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। प्रभ अबिनाशी पाए सार। साचा खण्डा हथ्थ उठाए, दोवें रक्खे तिखी धार। बेमुखां वढ्ढी जाए कंडां, गुरमुख देवे नाम अधार। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंडां, सत्तां दीपां कर विचार। शब्द चलाए चण्ड प्रचण्डां, राजे राणे करे ख्वार। घर घर दिसण नारां रंडां, ना कोई करे तन श्रृंगार। बेमुख जीआं आत्म होई रंडा, आत्म भरया इक्क हँकार। आपे करे खण्ड खण्डा, मारे शब्द तिक्खी कटार। कलिजुग अन्तिम देवे दंडा, आप आपणा गया हार। गुरमुखां रक्खे सीना ठंडा, आत्म जोती शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जाणे धार। हरि शब्द बली बलवाना। पुरख अबिनाशी हथ्थ उठाए, लक्ख चुरासी बन्न्हे गाना। राउ रंक डंक वजाए, खिच्च ल्याए विच बिबाणा। रसना तीर खिच्च कमान, वाली दो जहान शब्द तनक इक्क लगाए, ना कोई जाणे राजा राणा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वरते आपणा भाणा। आपे भाणा हरि वरतांयदा। राजा राणा तख्तों लाहिंदा। गऊ ग़रीब निमाणा गोद उठांयदा। शब्द चल्ले बेमुहाणा, रसना तीर खिच्च कमाना, वाली दो जहानां आप चलांयदा। ना कोई सके मात पछाण, लक्ख चुरासी आई हान, आत्म गया ब्रह्म ज्ञान, ना कोई टिकांयदा। गुरमुखां

देवे धर्म निशान, एका झुल्ले विच जहान, नौ खण्ड पृथ्मी एका आण, शब्द धारी इक्क बनांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरी कल पछाण, शब्द उठाए तीर कमान, वारो वारी आप चलांयदा। फड़े तीर कमान शब्द कटारया। उठे नौजवान, नर हरि बली बलकारया। वेख वखाणे बेईमान, आपे मार मुकानया। लक्ख चुरासी एका पाए आण। साचा शब्द दिसाए साची बाणीआ। आप गंवाए माण ताण, वेख वखाए मुगल पठाणया। एका जाणे जाणी जाण, चार कुन्ट दहि दिश शब्द उडारी इक्क लगानया। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी गई हार, प्रभ साचा खेल खिलानया। साचा खेल खिलाए तीर चलांयदा। धर्म राए दर द्वार साची जेल्ह खुल्हाए, लाड़ी मौत मगर लगाए, इक्क बहारी हथ्थ फड़ाए, चारों कुन्ट फेर फिरांयदा। आपे करे साची कारी, वेखी जाए वारो वारी, ना कोई छड्डे नर नारी, बिरध बाल जवाना, गुण निधाना एका राह चलांयदा। गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना, आपे करे अन्त पछाणा, साचे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, चार कुन्टां एका धक्का लांयदा। चार कुन्ट होए ख्वारी। किसे ना दीसे दर दरबारी। राजे राणयां आई भारी। उठ उठ वेखण शाह अस्वारी। कन्त भतारा तुट्टा नाता, किसे ना दिसे भैण भ्राता, किसे ना दिसे पिता माता, वाहो दाही चार यारी। उम्मत नभी रसूल दी, नूर अलाही इक्क इकल्ला इक्क महल्ला अन्तिम आई भारी। शब्द सरूपी हरि जी फड़या तिक्खा भल्ला, सोहँ नाम अपर अपारी। आपे सुट्टे डूंघी डला, मेट मिटाए दर द्वारी। रसना तीर चढ़ाया चिल्ला, आपे खिच्चे बन बनवारी। आप हिलाए उच्चा टिल्ला, पर्बत जंगल जूह उजाड़ी। कोई ना दिसे काया किला, आपे ढाहे ढाह उसारी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, करे खेल जगत न्यारी। खेल जगत न्यारी हरि भगवानया। रसना चल्ले तीर शब्द निशानया। पीर दस्तगीर होए हकीर, औलीए पीर शेख़ मेट मिटानया। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, नर नरायण आत्म अन्तर सभ नूं रिहा वेख, अन्त मिटाए जगत निशानयां। कलिजुग वेखे काला भेख, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़, मुल्लां मुलाणा शाह सुल्तानां आपे आप भुलानयां। मौली मैहन्दी बन्न्हे गाना। उम्मत नबी रसूल दी इक्क दूजे दे नाल प्रगट होए अमाम मैहन्दी, आप आपणी वंड कराए। बेमुखां अन्तिम कंड वढ्ढ चण्ड प्रचण्ड एका धार धरत मात तेरे उत्ते आप वहाए। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा खेल रचाना, भेव कोई ना पाए। हरि साचा खेल रचांयदा। कलिजुग आई अन्तिम वारी, लक्ख चरासी धर्म राए दी देवे फाँसी, एका तेल चढ़ांयदा। मेट मिटाए मदिरा मासी, ना कोई दीसे पंडत कांशी, वेद पुरानां गुर ज्ञाना अञ्जील कुरानां शाह सुल्तानां अट्ठे पहर नौजवाना आपणी धार बन्न्हांयदा। गुर गोबिन्द लेख लिखाना। वड मृगिन्दा जोत जगाना। सागर सिंधा तीर चलाना।

गुरमुख उपजाए साची बिन्दा, आप आपणी गोद उठाना। प्रगट होए हरि जी हिन्दा, लिख्या लेख पूर कराना। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा भेख मिटाना, लक्ख चुरासी आप खपाया। कलिजुग मिटे भेख भगत उडारया। ना कोई दिसे औलीआ पीर शेख़, अन्तिम अन्त हरि भगवन्त आपणी खेल रचा रिहा। चार यारी मिटी रेख, संग मुहम्मद नाता तुट्टा, ना कोई मेल मिला रिहा। दर दर घर घर पावे फुट्टा, रसना तीर एका छुट्टा, ना कोई जोड़ जुड़ा रिहा। नेत्र नीर ना दिसे घुट्टा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची बणत बणा रिहा। साची बणत बणाए खेल रचांयदा। महिंमा अगणत गणी ना जाए, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुख साचे संत उठाए दया कमाए, शब्द तराना इक्क सुणांयदा। बेमुखां माया पाए बेअन्त, ना कोई पार लँघांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, कलिजुग तेरा अन्त निशाना, पहली कूटे शब्द झूटे, तीर निशाना इक्क करांयदा। पहली कूट छुटे तीर, मेट मिटाए औलीए पीर शाह हकीर दस्तगीर किसे हथ्थ ना आए लथ्थे चीर, आत्मा रही पीड़ ना पीड़ कोए हटाए, शब्द वेलणे रिहा पीड़, हड्डी रीड़ हस्त कीड़ एका धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणी किरपा कर, आपणा कर्म कमांयदा। सोहँ बंक द्वार गुरमुख द्वारया। किरपा कर करतार जोत अकारया। मानस देही जन्म सुधार विच संसारा, लक्ख चुरासी पार उतारया। आप कटाए जम की फांसी, शब्द चलाए स्वासो स्वासी, आत्म रासी सच मण्डल काया आप बणा रिहा। आत्म दर दुआरे हरि निरँकारे, खेल अपारे जोत अकारे, दरस अमोघा धुर संजोगा, आप वखा रिहा। कलिजुग माया कटे रोगा, आदि अन्त ना होए विजोगा, धुर संजोगा आप वखानया। सच सहारा इक्क निरँकारा, आपणा आप रखा रिहा। सच्चा घर सच्चा सर विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे विच समा रिहा। साचा दर सच्चा दरबार। मानस देही आत्म दर, पुरख अबिनाशी चरन प्यार। ना जन्मे ना जाए मर, आत्म जोती मेल मिलार। भरम भुलेखा दूर निवार। आपे दस्से साची धार। आत्म जोती नूर कर, शब्द देवे साची धुन धुन्कार। सर्बकला भरपूर हरि आपे भरे दर भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, देवणहारा सर्ब संसार। गुर भण्डार गुर दुआरा, गुरमुखां विच संसारया। मंगी वस्त इक्क अपारा, काया वस्त शब्द श्रृंगारा, प्रभ साचा तन पहना रिहा। सोहँ साचा सीस दस्तारा, नाम निरँजण तेज कटारा, चरन प्यारा झोली पा रिहा। भाग लगाए काया महल्ल मुनारा, इक्क अटल विच संसारा, शब्द अपारा इक्क चला रिहा। गुरमुखां आए चल दुआरा, जोती भेख अपर अपारा, अन्दर गुप्त बाहर ज़ाहिरा, आपे लेख लिखा रिहा। सच वस्त हरि सच भण्डारा, पुरख अबिनाशी किरपा धारा, आपणा भोग लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे

८४३
०४

देवे वर, गुर संगत आत्म रस रसक निझर आप चुआ रिहा। निझर रस अमृत धार। गुरमुखां देवे कर प्यार। सच भण्डारा हरि वरतार। खुल्ह्रा रहे दर दुआरा, आदि अन्त एकँकार। हरिजन मंगे बण भिखारा, देवणहार सर्ब संसार। वेखे खेल वारो वारा, जुग जुगन्ती बन्न्हे धार। गुरमुखां आत्म रुत्त बसंती, कँवल नाभी खिड़े गुलज़ार। जोत प्रकाशे कोटन भाना, प्रगट होए काया मन्दिर सच मुनार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां पूरन करे भण्डार। हरि शब्द अपार, कल घनघोरया। हरि शब्द अपार, जगत ढंडोरया। हरि शब्द अपार, कलिजुग दिसाए अन्तिम अन्त वेला, वक्त रहि गया थोड़या। हरि शब्द अपार, रहण ना देवे कोई मात जोड़ी जोड़या। हरि शब्द अपार, चिट्टे अस्व हो अस्वार घोड़या। हरि शब्द अपार, आपे वेखे परखे भन्ने कलिजुग जीव रीठे कौड़या। हरि शब्द अपार, जुगा जुगन्तर साची धार, प्रभ आप रखाए हथ्थ हथौड़या। हरि शब्द अपार, गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, अन्तिम वेला सच सुहेला, आपे आप बहुड़या। हरि शब्द अपार, जगत संजोगया। हरि शब्द अपार, गुरमुखां साचा मेल आत्म रस एका एक भोगया। हरि शब्द अपार, पुरख अबिनाशी होए वस, एका जोग साचा जोगया। हरि शब्द अपार, चार वरनां साचा राह एका रिहा दस्स, हउमे कटे रोग काया रोगया। हरि शब्द अपार, कलिजुग मिटाए अन्ध अंध्यार मस, साचा सच करे अकारया। हरि शब्द
८४४ अपार, कूड़ कुड़यारा जाए नस्स, मारे तीर इक्क अपारया। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे सच्चा ८४४
०४ वर, किरपा कर जगत करतारया। हरि शब्द अपार, भगत जगत अडोल्लया। हरि शब्द अपार, किसे ना तोल्लया। हरि ०४
शब्द अपार, आत्म अन्दर साचे मन्दिर, घट घट शब्द बोल्लया। हरि शब्द अपार, खोल्ह्री ताड़ी आत्म वाड़ी, इक्क सुणाए सच्चा ढोल्लया। हरि शब्द अपार, दर घर साचे जाए वाड़ी, ना कोई रक्खे पड़दा ओहल्या। हरि शब्द अपार, गुरमुखां देवे इक्क अधार, नेड़ ना आए मौत लाड़ी, दर दुआरा सच्चा खोल्ल्हया। हरि शब्द अपार, सच घोड़ प्रभ देवे चाढ़, गुरमुख साचा चरन प्रीती घोल घोल्लया। हरि शब्द अपार, जोत जगाए बहत्तर नाड़, आप कराए दर घर साचे गोल्लया। हरि शब्द अपार, गुरमुख साचे आत्म दर आप दिसाए, भाग लगाए काया चोल्लया। काया चोले लग्गा भाग। पुरख अबिनाशी आपे बोले, आत्म तृष्णा बुझे आग। इक्क सुणाया साचा ढोले। माण गंवाए छत्ती राग। आपे वसे पड़दे ओहले, दीपक जोती जगे चिराग। गुरमुखां हरि जी पड़दे खोल्हे, पूरे तोल अन्तिम तोले, अन्दरे अन्दर पकड़े वाग। आत्म साचा नीर विरोले, पुरख अबिनाशी कदे ना डोले, हरिजन प्रीती जाए लाग। बज़र कपाटी पड़दे खोल्हे, साची हाटी इक्क वणजारा, नर नरायण हरि करतारा, देवे वस्त इक्क अपारा, साचा वणज करे वणजारड़ा, आदि अन्त जुगां जुगन्त पूरन भगवन्त कदे

ना डोले। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा पहरे बाणा, खेल रचाए कला सोले। हरि शब्द अपार, शब्द तूरया। हरि शब्द अपार, गुरमुख साचे संत जनां आसा मनसा पूरया। हरि शब्द अपार, किसे हथ्थ ना आए, गुरमुख विरला आत्म नैण साचे वेखे हरि हज़ूरया। जोती जामा श्री भगवाना, एका रंग सच्चा संग, गुरमुखां हाज़र हजूरया। हरि शब्द तीर कटारया। आप आपणे हथ्थ उठाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। सृष्ट सबाई मथ वखाए, बेमुखां हरि नत्थ पवाए करे खेल न्यारया। कलिजुग झूठे हो त्यार। अन्तिम आई कलिजुग हार। माया झूठे जीव गंवार। मूधे होए ठूठे, राजे राणे होए भिखार। जोती जामा श्री भगवाना, करे खेल अपर अपार। कलिजुग सोया मात जाग। वेला तेरा अन्तिम आया, पुरख अबिनाशी हथ्थ पकड़े वाग। संगी साथी कोई दिस ना आया, चारों कुन्ट दहि दिशा आत्म तृष्ना लग्गी आग। वेले अन्त ना कोई छुडाया, साध संत गए मुख छुपाया, माया राणी लाए दाग। धर्म राए गल फंदी पाया, आत्म परमानंद गंवाया, जूठा झूठा चन्द चढ़ाया, लक्ख चुरासी हँस बणाया काग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणा खेल रचाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। पुरख अबिनाशी पाए सार। लाड़ी मौत कर त्यार।

८४५ सोलां करे तन श्रृंगार। धर्म राए दी इक्क दुलार। घर घर साचे साचा वर मंगण आई, प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लक्ख ८४५

०४ चुरासी एका मंगां कन्त भतार। हथ्थीं मैहन्दी लहू लगाणा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वारो वार। आप करावां घर घर ०४

जंगा, शब्द वजावां तेरा मृदंगा, चार कुन्ट करावां ख़बरदार। राजे राणे दर दर मंगां, लोकमात मूल ना संगां, देई जावां इक्क प्यार। लक्ख चुरासी अन्तिम भंगा, प्रगटे जोत सूरा सरबंगा, एका शब्द हरि हथ्थ उठाए, तिखी तीर कटार, जोती जामा श्री भगवाना, निहकलंक बली बलवाना, आपे जाणे आपणी कार। लाड़ी मौत आई दुआरे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। दोहां जीआं दा इक्क प्यारे। साची सिख्या दर ते देवे, धर्म राए दी धी प्यारे। धुर दा लिख्या झोली पाए, मारीं जीव जन्त गंवारे। साची बोली इक्क व्याहीं, कलिजुग नेड़े अन्तिम वारे। लक्ख चुरासी धर्म राए दी गोली आप बणाई, अठाई कुण्डां आपे भरे बूहे मारे। पूरे तोल रिहा तोली, कलिजुग तेरी अन्तिम होली आपे आप खिलारे। जोती जामा श्री भगवाना, गुरमुख साचे संत उठाए, आप आपणी सरन लगाए, धुरदरगाही सच दुलारे। लाड़ी मौत ख़ुशी मनाउँदी। प्रभ अबिनाशी अट्ठे पहर ध्याउँदी। दिवस रैण तूंही तूं गांदी रसना किसे ना सके कहण, ना कोई वेखे केहड़ी कूटे पहलों आउँदी। प्रभ आप वखाए गुरमुखां तीजे नैण, कूड़ कुड़यारे पहली कूटे साचे झूटे आप झूलाउँदी। मेट मिटाए ठग चोर यारे, नाता तुट्टा संग मुहम्मद किया भेख चार यारे, उम्मत नबी रसूल दी, हौली हौली रसन ध्याउँदी। हरि का भाणा ना कबूलदी, जोती

जामा श्री भगवाना, निहकलंकी पहरे बाणा, एका खेल करे कराए, शब्द सच्चे त्रसूल दी। लाड़ी मौत तन शृंगारया। बेमुखां नूं वाजां मारे। धर्म राए दी धी कँवारी, लैण आई लोकमात साचे लाड़े। पड़दा आपणा कज्जण आई, पी पी लहू रज्जण आई आपे वेखे चंगे माढ़े। गुरमुख वेखे सज्जण भाई, थांउँ थाँईं लए जगाई, बेमुखां दिन आए माढ़े। जोती जामा श्री भगवाना, शब्दी खिच्चे तीर कमाना, रसन कमान इक्क उठाई, लक्ख चुरासी वेखां सच्चे थां। लाड़ी मौत चढ़या चाअ। पहला वेखां राजा राणा सच्चा शहनशाह। कलिजुग माया बेमुहानी, ना कोई अन्दर बाहर दिसे थां। गऊ ग़रीबां गले लगाना, गुरमुख साचे संत उठाना, आप आपणी उंगली ला। जोती जामा श्री भगवाना, साचा हुक्म इक्क सुणाना, धुरदरगाही सच मलाह। हरि साचा काज रचांयदा। शब्द सरूपी साचा नूर, चार कुन्ट उडांयदा। राजे राणयां लथ्थे ताज, सच सिँघासण साची सेजा, ना कोई आसण लांयदा। दर दरबान ना मारे कोई अवाज़, चोबदार ना कोए सुणांयदा। झूठे दिसण साज बाज, अन्तिम लाज ना कोई रखांयदा। चारों कुन्ट पैणी भाज, कल आज ना कोई जणांयदा। कोई ना देवे किसे दाद, अन्तिम वेला ना कोई छुडांयदा। खेल कराए आदि जुगादि, जुगा जुगन्तर बणत बणांयदा। प्रभ अबिनाशी माधव माध, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला आपे आप सुहांयदा। इक्क बजाए शब्द नाद, राज राजानां शाह सुल्तानां बाहों पकड़ उठांयदा। कलिजुग माया झूठा काज, अन्तिम अन्त ना कोई दसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां साचा मेल मिलांयदा। ना कोई राज राज राजाना। ना कोई दीसे शाह सुल्ताना। एका शब्द हरि जगदीशे, चार कुन्टी तीर कमाना। लक्ख चुरासी पीसण पीसे, पहली कूट इक्क निशाना। छत्र झूले ना किसे सीसे, तख्त ताज ना कोई वखाना। मिटे भेव बीस इक्कीसे, लिख्या लेख ना कोई मिटाना। मेट मिटाए मूसे ईसे, बूरे कक्के मिटे निशाना। चारों कुन्टां पैण धक्के, वेखे खेल मदीने मक्के, संग रलाए रूसा चीना। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा खेल रचाया, जुगती जुगत करदा आया, वख कराए मुहम्मदी दीना। कलिजुग तेरी अन्तिम बाण। लक्ख चुरासी आई हान। झूठा तणया माया ताण। कोई ना सके मात पछाण। इक्क हँकार आत्म वसे, काया कोट भरी दुकान। सच्चा दर ना कोई दिसे, मायाधारी बेईमान। गऊ ग़रीब निमाणे पैरां हेठ झसे, ना कोई दीसे राज राजान। लाड़ी मौत खिड़ खिड़ हस्से, प्रगट होए निहकलंक बली बलवान। इक्क दुआरा साचा दिसे, मातलोक दी कर पछाण। लक्ख चुरासी जाए नस्से, फड़ फड़ मारे बेईमान। तीर निशाना शब्द कसे, प्रगट होए वाली दो जहान। धर्म राए दी फाही फसे, ना कोई सके अन्त छुडान। गुरमुखां हरि हिरदे वसे, शब्द देवे सच बिबाण। जम जंदार जायण नस्से, दर द्वार खलोता इक्क श्री भगवान। जोती जामा श्री भगवाना,

८४६
०४

लक्ख चुरासी बन्ने गाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लाहुण आया मकाण। कलिजुग अन्तिम वेख वखाणे, शाह सुल्तान राजे राणे, मायाधारी बेमुहाने, एका भुल्लया हरि गिरधारी नर निरँकारी। कलिजुग जीव मात अञ्याणे, जूठी झूठी जगत सिक्दारी, अन्तिम वेले बंणन भिखारी। प्रभ अबिनाशी खेल महाने, आपे जाणे आपणी कारी। वेख वखाणे वारो वारी। भुल्ले रुल्ले सुघड़ स्याणे, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी। पंडत पांधे शेख़ मुलाणे अन्धे काणे, ना कोई दिसे ब्रह्म ज्ञानी। ना कोई देवे चरन ध्याने, प्रभ अबिनाशी ना पछाणे, ना कोई दिसे सच निशानी। कलिजुग अन्तिम आई हानी। शब्द वजे तीर कानी। किसे हथ्थ ना आए राजे राणी। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणी खेल रचाना, कलिजुग मिटे अन्धेरी रैण सुघड़ स्याणी। कलिजुग मिटे अन्धेरी रैण, जगत अन्धेरया। ना कोई भाई ना कोई भैण, नाता तुट्टा तेरा मेरया। ना कोई सज्जण सैण, माया जाल सभ नूं घेरया। अट्ठे पहर खाए डैण, भरमां ढाहया ढेरया। लक्ख चुरासी वहन्दी जाए डूंघे वहिण, कलिजुग अन्तिम आया वेलया। पुरख अबिनाशी ना कोई वेखे तीजे नैण, सच घर वसेरा रखा रिहा। रसना किसे ना सके कहण, नाद धुन शब्द राग जगत त्याग एका एक सुणा रिहा। आप चुकाए लहिण देण, गुरमुख साचे गुर संगत मेल मिला रिहा। चार वरनां एका नाता पुरख बिधाता इक्क बंधा रिहा। धुरदरगाही देवे सच सुगाता, आपे पिता आपे माता, साची दात झोली
८४७ पा रिहा। आप मिटाए अन्धेरी राता, चरन बंधाए साचा नाता, कलिजुग कलंकी नार वड कमज़ाता, शब्द ज्ञान दे समझा ८४७
०४ रिहा। ना कोई वेखे जातां पातां, ऊँचां नीचां राउ रंकां शाह सुल्तानां वाली दो जहानां आपे आप अख्वा रिहा। वाली दो ०४
जहान, सच्ची सिक्दारया। शब्द रखाए इक्क बिबाण, धर्म उडान इक्क लगा रिहा। पुरीआं लोआं कर पछाण, लोकमात ध्यान रखा रिहा। पहली मारे साची झात, ब्रह्मा ब्रह्मलोक आप उठा रिहा। गुरमुख साचे देवे साची दात, साचे धाम सुहा रिहा। आपे वसे इक्क इकांत, साची बणत बणा रिहा। शिव शंकर अंकर द्वार बंकर, जोती जामा सुहा रिहा। आपे वसे इक्क इकांत, जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम जोती मेल कर, आप आपणे विच समा रिहा। साची खेल हरि निरँकारा। साची पुरीआं बन्ने धारा। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा राह विच करे निमस्कारा। सिर तों अन्तिम अन्तकाल कलि लथ्था भारा। जोती जामा श्री भगवाना, अन्तिम अन्त पछाणे वेख वखाणे सच दुआरा। सच द्वार आप विचारया। प्रभ अबिनाशी सर्ब वेखे, भेव कोई ना पाए सारया। लोकमात लक्ख चुरासी कर्म कुकर्मी ना मेख मारे शब्द उडारया। कलिजुग तेरी बन्नुण आया रेख, जोती जामा भेख वटा रिहा। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, साची खेल रचा रिहा। गुरमुख साचे नेत्र नैण लोचन लैणा पेख, साचा रंग हरि करतारया। लक्ख चुरासी वेखां वेख, पुरी घनक हरि जामा धारया। आप भुलाए भरम

भुलेख, माया पड़दा पा रिहा। मेट मिटाए बिधना लिखी रेख, शब्द तीर इक्क चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका साचा डंका, एका शब्द वजा रिहा। साचा शब्द डंक वजाए। आत्म शंक दूर कराए। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणा नाम रखाए। एका रंग इक्क ओंकारा। ना कोई दिसे दूजी धारा। सतिजुग तेरा भेख न्यारा। सोहँ शब्द अपर अपारा। आप चलाए नर निरँकारा। जुगा जुगन्तर बणाए बणतर, साची देवे वस्त अपारा। आप उठाए साचे संत, मेल मिलाए कन्त नार सुहागण नारा। माया भुल्ले जीव जन्त, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, ना कोई देवे सच दुआरा। जगत विछोड़ा साचे कन्त, दिस ना आए पार किनारा। एका जोती आदिन अन्त, भेख अभेख रूप न्यारा। नर हरि हरि नर पूरन भगवन्त, कलिजुग खेल अपर अपारा। महिंमा जगत अगणत, ना कोई लिखे लेख लिखारा। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणे रंग समाना, करे कराए आपणी कारा। करे कराए कार कर्म कमांयदा। सतिजुग बन्ने साची धार, प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। मंगण आउणा चल द्वार, आत्म झोली हरि भरांयदा। लोकमात होणा ख़बरदार, अन्तिम वेले ना कोई छुडांयदा। धर्म राए घर पैणी मार, दर दरबान ना कोई मुख उठांयदा। इक्क सहाई श्री भगवान, एथे ओथे दो जहान सच प्रीत कमांयदा। अन्तिम झुल्ले इक्क निशान, चार वरनां इक्क ज्ञान, प्रगट होए निहकलंक बली बलवान, शब्द खण्डा धर्म झण्डा, आपणा आप झुलांयदा। आप आपणी पाए वंडा, सत्तां दीपां करे खण्डा, नौ खण्ड पृथ्मी भाणे विच रखांयदा। जोती जामा श्री भगवाना, लिख्या लेख गुण निधाना, ना कोई मेटे मेट मिटाना, राज राजाना श्री भगवाना आपे आप समझांयदा। हरि सरन सरनाई भरम भउ भागया। मिले नाम जगत वड्याई, गुरमुख सोया जागया। आत्म घर वजे वधाई, पूरन होए वड वडभागया। दिवस रैण ख़ुशी मनाई, हँस बणे बणाए कागया। साची सिख्या गुर मति पाई, आत्म धोया दागया। सर सरोवर तीर्थ नुहाई, जोती जोत सरूप हरि, साचा मिल्या मेल सुहागया। गुरमुख गुरमुख गुण गुण गुण विचारी। शब्द पुकारी रिहा सुण, पवण जोती हरि निरँकारी। लक्ख चुरासी छाण पुण, मेल मिलाए वड संसारी। कवण जाणे जन तेरे गुण, किरपा करे हरि गिरधारी। आत्म धुनी शब्दी धुन, रागन राग राम मुरारी। संत सुहेला साचा चुण, आत्म देवे शब्द उडारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए बंक द्वारी। बंक दुआरा माझ मझार। शब्द ताज वड संसार। दो जहानां रक्खे लाज, जोती जोत कर अकार। आप संवारे आपणा काज, भेखी भेखा रूप अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाया बंक द्वार। बंक द्वार हरि भगवानया। हरिजन साची पाए सार, देवे नाम निशानया। आपे तोड़े जगत जंजाला, कलिजुग फंदन फंद कटानया। फल

८४८
०४

लगाए साचा डाला, अमृत रस इक्क वखानया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उधारे किरपा धारे गुणवन्ती गुण निधानया। गुण निधाना हरि मेहरवाना। गुरमुख साचा चतुर सुजाना। चरन प्रीती इक्क ध्याना। शब्द सरूपी मिले माणा। आप आपणी करे पछाणा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका बख्शे सोहँ शब्द आत्म ब्रह्म ज्ञाना। आत्म ब्रह्म ज्ञान जगत सुखदाया। मिल्या मेल हरि भगवान, पुरख अबिनाशी घर में पाया। साची बिधा आप बंधान, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे, खुशी बन्द बन्द कराया। हरि पूज्जया इक्क भगवानया। आत्म शब्द कारज दूजा, तीजा नेत्र वेख नैण मुंधानया। चौथे भेव खोल्हे गुज्झा, राग इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मात देवे वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। हरि शब्द तेज कटार। हरि शब्द लोकमात विचार। हरि शब्द साची कल साची धार। हरि शब्द जोती जोत सरूप हरि, करे कराए आपणी कार। हरि शब्द जुगत गुरदेव। हरि शब्द दया कमाए, प्रभ अबिनाशी लेखे लाए रसना गाए जेव। मानस देही जन्म दवाए, पुरख अबिनाशी वड देवी देव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कराए एका एक जगत नेहकेव। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा। शब्द महल्ला सच दुआरा। साचा भला

८४६ ०४ विच संसारा। जलां थलां पावे सारा। डूंघी डला बन्न्हे धारा। आप वसे निहचल धाम अटला, किसे ना दिसे कोई किनारा। ८४६ ०४

जगत भुलाए कर कर वल छला, जोती जामा खेल अपारा। अन्तिम कलि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे एका आपणा रंग महल्ला, पूर्ब कर्म हरि पछाना, लिख्या लेख पूरन कराना। जोती जामा धार भेख, शब्द उडार इक्क लगाए, मस्तक लिखे साची रेख, लक्ख चुरसी पावे सारा। विच संसार भेख वटाए, जोती जोत सरूप हरि, भरम भुलेखे जगत भुलाए। भुल्ले जन्त जीव गंवार। साध संत ना पायण सार। माया पाए हरि बेअन्त, होवण सर्ब ख्वार। नाता तुटे साचे कन्त, दर दर घर घर फिरन भिखार। हरिजन बणाए प्रभ साची बणत, एका मंगे दरस निरँकार। महिंमा जगत अगणत, पुरख अबिनाशी घट घट वासी पाए सार। पूरन पतवन्त, मेट मिटाए मदिरा मासी, शब्द फड़ हथ्थ कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल जन भगतां मेल, सतारां हाढ़ी दिवस विचार। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल। ना कोई करना वल छल। एका धाम एका राम, वसे निहचल धाम अटल। पूर कराए आपणा काम, सच दुआरा लैणा मन्न। काया माटी झूठा चाम, झूठी देही झूठी खल्ल। एका पीणा सोहँ सच्चा जाम, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल।

❋ १० माघ २०११ बिक्रमी सूरत सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्गे ज़िला अमृतसर ❋

जोती राणा हरि भगवाना, धुर फ़रमाणा आप जणांयदा। कलिजुग अन्तिम वक्त पछाणा, साध संत बेमुहाना, गुर पीर कोई दिस ना आंयदा। रसन विकारी अन्धा काणा, जगत ख्वारी तुट्टा माणा, ना कोई धीर धरांयदा। मदिरा मास मुख रखाणा, काया दु:ख रोग वधाणा, ना कोई अन्त छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वरते भाणा, साचा शब्द जणांयदा। सतिगुर सूरत जाणा जाग। सतारां हाढ़ी लग्गणी आग। किसे ना धोणा काया दाग। मदिरा मासी घर घर रोणा, आत्म जोती बुझे चराग। पैर पसार ना मात सौणा, हँस ना बणना अन्त काग। पिछला लेखा पूर कराना, जोती जोत सरूप हरि, साचा खेल कन्त सुहाग। मदिरा मास रसन तजाउणा। दर घर साचे फेर आउणा। जोती जामा हरि भगवाना, साचे हरि सीस झुकाणा। काया माटी झूठा चामा, मानस देही कम्म ना आउणा। सतारां हाढ़ी वज्जे शब्द दमामा, मदिरा मासी रहण ना पाउणा। जगत विकारा देणा तज। गुर संगत विच बहिणा सज। पुरख अबिनाशी जगत पड़दे लए कज्ज। घनकपुर वासी एका सच्चा जाम प्याए, गुरमुख पीवे आत्म रज्ज। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रक्खे आपे लज। मदिरा रसन जगत विकारी। गुरमुख साचा ना करे चरन कोई निमस्कारी। काया माटी भाण्डा काचा, एका जोत एका शब्द साची वस्त नर निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतारां हाढ़ी फुल्ल फुलवाड़ी विच मात लगाए, करे खेल अपर अपारी।

❋ ११ माघ २०११ बिक्रमी कांशी राम दे गृह पिण्ड सनईआ ज़िला गुरदासपुर ❋

आत्म भोग शब्द भगवानया। दरस अमोघ जीव निधानया। मिले मेल धुर संजोग, पुरख सुजानया। जगत माया कटे हउमे रोग, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञानया। शब्द चुगाए साची चोग, मिटाए तृष्ना जगत महानया। कलिजुग चिन्ता कड्ढे रोग, आत्म तीर्थ सच इशनानया। सोहँ शब्द सच्चा जोग, सतिजुग साची मात निशानीआ। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, देवणहार वड वड दानीआ। आत्म भोग शब्द श्रृंगारा। साचा जोग जीव गंवारा। ना होए विजोग पुरख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़ा। आत्म भोग नाम निधानया। देवे हरि किरपा कर, वड बली बलवानया। आत्म जोती नूर शब्द साची तूर, वज्जे धुन सच्ची धुनकानया। अन्ध अन्धेरा दूर कर, जोत उज्जयारा सति पुरख सति सरूर कर, देवे शब्द आत्म ज्ञान वड ब्रह्म ज्ञानया। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, एका शब्द सच्ची

खाणी बाणीआ। आत्म भोग हरि निरँकार। वेख वखाणे विच संसार। राजे राणे दर भिखार। बेमुहाणे चार यार। सुघड़ स्याणे पंज प्यार। चरन ध्याने हरि भगवाने, गुरमुख साचे साची नार। चतुर्भुज भेव मुहाने, भेव खुल्हाए आत्म घर, मारे तीर इक्क निशाने, ना कोई जाणे जीव निधान। बज़र कपाटी खोल्ह वखाए, साची हाटी नाम विकाए काया मन्दिर अन्दर शब्द भण्डार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बणे मात वरतार। आत्म भोग धुरदरगाही। आपे मेटे कलिजुग छाही। फड़ फड़ पाए राही। धुरदरगाही साचा माही। इक्क इकाग्र काया गागर, सति पुरख निरँजण आप अधार, जोत निरँजण इक्क जगाई। आत्म सर सरोवर साचा कज्जल नैण नेत्र लोचण अंजन, करे खेल हरि रघुराई। काया भाण्डे झूठे भज्जण, गुरमुखां ताल आत्म साचे वज्जण, मिले मेल आत्म घर साचे दर, होए विछोड़ा नाही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, जगत जंजाला कटे जम की फाही। आत्म भोग काया बस्त्र निझर रस, साची चोग मानस देही जाए जीत। पुरख अबिनाशी होए वस, किसे ना मिले मन्दिर मसीत। शब्द सुनेहड़ा राह साचा जाए दस्स, इक्क सुणाए सुहागी गीत। आत्म तीर शब्द मारे कस, चरन कँवल कराए सच प्रीत। पंच पंचायण जाए नस्स, सुणे सुणाए सोहँ शब्द सुहागी गीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, काया करे पतित पुनीत। आत्म भोग निरगुण हारया। आत्म भोग सरगुण विरले मात विचारया। आत्म भोग निरगुण रूप जोत सरूप, जोती जामा भेख न्यारया। आत्म भोग हरि वडा शाहो शाह भूप, राज राजानां शाह सुल्तानां वड सिक्दारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, फड़ फड़ बाहों तारे कलिजुग वारो वारया। आत्म भोग भगत भगवानया। ना कोई जाणे जीव जन्त, साध संत दर साचा माणया। कलिजुग माया पाए बेअन्त, झुल्ले झुलाए इक्क निशानया। लक्ख चुरासी जीव जन्त, आत्म हँकारी विषे विकारी भुल्ले गुण गुण निधानया। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, मिले शब्द बिबाणा इक्क उडानया। एका शब्द साचा मंत, आदि अन्त देवे मात पुरख अबिनाशी घट घट जानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, लक्ख चुरासी झूठा गेड़ा, जम जेड़ा आप कटानया। आत्म भोग भगत उधारया। किरपा कर हरि निरंकारया। दर दुआरे आत्म खड़े, देवे दरस अगम्म अपारया। पंजां तत्तां नाल लड़े, शब्द फड़ खण्डा दो धारया। आप उखाड़े झूठी जड़े, कलिजुग वेला अन्त ना होए किसे सहारया। आपे घड़े आपे भन्ने, जुगा जुगन्तर साची कारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, आत्म भरे वड भण्डारया। आत्म भोग पूरन भगवन्त। साचा मेल गुरमुख साचे संत। साचा दर

घर रंग नवेल, एका वसे इक्क इकन्त। लक्ख चुरासी धर्म राए दी जाए जेल्ह, कलिजुग माया पाए बेअन्त। ना कोई गुर ना कोई चेल, बेमुख जीव देव दंत। अचरज पारब्रह्म कलि खेल, गुरमुख साचे संत आप उठाए दया कमाए हरि कन्त, मिलाए अन्तिम वेल। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, आपे बणे सज्जण सुहेल। आत्म भोग शब्द धुन्कारया। गुरमुख साचा संत दुलारा, साचा राग जगत त्याग इक्क सुणा रिहा। पुरख अबिनाशी हथ्थ पकड़े वाग, वडभाग आत्म सोई गई जाग, शब्द हुलारा इक्क लगा रिहा। हँस बणाए काग, आत्म तृष्ना बुझे आग, मिल्या मेल कन्त सुहाग, एका उपजे मन वैराग, शब्द नाद सच्चा वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, ग्यारां माघ वक्त सुहा गया। आत्म भोग हरि हज़ूरया। आसा मनसा पूर, सर्बकला भरपूरया। पंजां चोरां करे चूरो चूर, दर दुआरे आत्म रक्खे दूरया। एका बख्शे नाम सति सरूर, जोती नूर नूरो नूरया। जगत माया झूठी छाही कूड़ो कूड़, आत्म तृष्ना जगत वसूरया। शब्द वेलणे प्रभ रिहा पीड़ साचे बूड़, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, ना कोई जाणे साची तूरया। आत्म भोग शब्द नाद प्रभ आप जणाए, दया कमाए बोध अगाध। आत्म भेव गुझ खुल्हाए, मेट मिटाए जगत विरोध। एका दूजा भउ चुकाए, साची सेवा आप लगाए, साची देवे शब्द दाद। काया डाल फल लगाए, जल थल होए सहाए, वल छल जगत भुलाए, गुरमुख विरला रसना रिहा अराध। अज कल खेल वरताए, निहचल धाम अटल समाए, गुरमुख साचा बलि बलि जाए, मिले मेल माधव माध। घड़ी घड़ी पल पल, छिन्न भंगर अन्दर जोत जगाए, गुरमुख साचे लए लाध। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, हरिभगत सुहेला एका मेला, धुरदरगाही इक्क इकल्ला। जन भगतां धाम न्यारड़ा। एका जोती एका गोती, एका नाम एका काम, एका हरि पसारड़ा। दुरमति मैल जाए धोती, काया उठे सोती, मिले जोत साची जोती, आप बणाए माणक मोती, मिले मीत मुरारड़ा। भुल्ले फिरन कोटन कोटी, चढ़दे फिरन उप्पर चोटी, किसे हथ्थ ना आए शब्द सोटी, ना कोई वसे पार किनारड़ा। लक्ख कटायण बोटी बोटी, किसे ना मिले आत्म जोती, ना कोई मिलाए संग सुहेला, इक्क इकेला जोती जोत सरूप हरि, साचा यार प्यारड़ा। कलि होया वक्त दुहेला। बेमुखां लाया मेला। गुरमुखां साचे संत जना, चरन प्रीती गई जुड़। चार कुन्ट चार द्वार धर्म राए ना मारे मार। मिल्या मेल कन्त भतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा कर प्यार। जोत सरूपी हरि भगवान। ना कोई दीसे होर निशान। ना कोई किला कोट मकान। ना कोई दीसे कोल बिबाण। ना कोई शब्द ना हदीसे, ना हरि रक्खे कोई आण। आप आपणा पीसण पीसे, अट्ठे पहर आप चुकाए पीण खाण। एका शब्द छत्र सीसे, ना कोई दीसे दर दरबान। ना कोई करे मात रीसे, किसे हथ्थ

ना आए राज राजान। जूठी झूठी चक्की कलिजुग जीव पीसे, आत्म भुल्ले माया रुले पाणी प्या काया चुल्ले, ना कोई दीसे ब्रह्म ज्ञान। जोती जामा श्री भगवान, साचे धाम इक्क टिकान। आप आपणे रंग समाणा, ना कोई दीसे होर निशान। साचा घर सुहाया है। जोती नूर इक्क रखाया है। सर्बकला साचा भरपूर, सच सिँघासण डेरा लाया है। ना कोई पावा ना कोई चूल, ताणा पेटा अग्गा पिच्छा ना कोई रखाया है। आपे खेवट आपे खेटा, धुर दरबार पार किनारा, किसे दिस ना आया है। जोत सरूपी पुरख अपारा, आपे जाणे आपणी धारा, सच सिँघासण हरि बिराजे, लोआं पुरीआं साजन साजे, लोकमात आवे जावे वारो वार है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, सद रक्खे बन्द किवाड़ है। साचे घर हरि बलवान। जोती नूर श्री भगवान। दूरन दूर ना कोई जाणे चतुर सुजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, ना कोई जाणे गुण निधान। सत्तवें घर सति सतिवादा। जोत सरूपी वड ब्रह्मादा। लक्ख चुरासी हिस्से पाए, भेव ना जाणे वड साधन साधा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, ना कोई जाणे सुन समाध्या। सुन्न समाध शब्द स्वास। कोए ना जाणे पुरख अबिनाश। लोआं पुरीआं बन्ने धार, मात पताल अकाश। जोत सरूपी खेल अपार, आदि अन्त ना जाए विनास। सतवें घर सति करतार, सति पुरख निरँजण एका कार, सच मण्डल दी साची रास। जोती जोत सरूप हरि,
८५३ आप आपणी किरपा कर, एका जोती नूर धर, आदि अन्त ना होए उदास। सत्तवें घर जोत जगांयदा। सच सिँघासण ८५३
०४ हरि जी बैठ, आपणा खेल रचांयदा। जोती नूर कर उज्जयार, साचा चरन हरि धरनी धरन, आपणा आप उठांयदा। आप ०४
आपणी करनी करन, छेवें घर टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द धार सच्ची धुन्कार, अनहद नाद एका संग रलांयदा। छेवां घर बोध अगाधा। शब्द वज्जे साचा नादा। संग रलाए माधव माधा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा साजन साजा। आप आपणा कर उज्जयार। शब्द रक्खे वस्त अपार। दोहां बणया इक्क प्यार। एका जोती ना कोई वरन ना कोई गोती, लोआं पुरीआं पसर पसार। हरि शब्द उठाई धुनी नाद, आप वजाए विच संसार। छेवां घर आप सुहाया, साचा शब्द कर त्यार। जोती जोत अपर अपार। पंचम् खोल्ले बन्द कवाड़। आपे बैठा दिसे अगाड़, पंच पंचायती नर नरायणी साचा खेल रचाया, जोती जोत सरूप हरि, आपे आए आपणे घर, पवण स्वासी आपणे संग रखाया। , निज घर कर विचार। पवण स्वासी इक्क हुलार। छत्र झुलाए हरि निरँकार। आप आपणी दया कमाए, शब्द रखाए साची धार। जोती मेला अन्त कराए, आदिन अन्ता पूरन भगवन्ता, मेल मिलाए आप आपणी किरपा धार। शब्द जोत हरि मेल मिलाया। पवण स्वास नाल रलाया। पंचम् नर हरि सुहाए, लक्ख चुरासी बणत बणाए, जोती जोत सरूप हरि, आप

८५४
०४

आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी विच मात उपजाए। पंचम् घर बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त, पुरीआं लोआं आप टिकांयदा। आपे वसे इक्क इकन्त, सार कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे खोल्हे चौथा दर, गुरमुख साचे संत जनां प्रगट होए दरस दिखांयदा। गुरमुख शब्द अधार शब्द कमाईआ। गुरमुख साचा करे वणज वपार, मानस जन्म लेखे लाईआ। लक्ख चुरासी उतरे पार, भाण्डा भरम तन भन्नाईआ। जूठे झूठे कलिजुग मीत मुरार, साचा संग ना कोई निभाईआ। साची रीत गुर चरन प्यार, मन्दिर मसीत किसे हथ्थ ना आईआ। शब्द रक्खे तिक्खी धार, बज़र कपाटी खोल्ह वखाईआ। अमृत काया ठंडी ठार, साचा झिरना रिहा झिराईआ। आत्म जोती कर उज्जयार, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाईआ। खाली भरे हरि भण्डार, शब्द भण्डार इक्क वरताईआ। आदिन अन्ता ना जाए हार, एका जोती नूर सवाईआ। जन भगतां देवे शब्द दात, बेमुख भुल्ले वाहो दाहीआ। जोती जाणे खेल्ह अपार। हरि निरँजण एका धार, साचा मजन गुर चरन प्यार, साची बणत बणाईआ। ना कोई जाणे नर नार। जीव जन्त होए गंवार, साध संत दर दर भिखार, साची वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। साचा डंक शब्द अपार, राउ रंक एका धार, ऊँच नीच जात पात ना करे विचार, एका रंग साचा संग आपणा आप निभाईआ। पूर्ब कर्म हरि विचार, लहणा देणा विच संसार, शब्द गहणा तन श्रृंगार, भाणा सहिणा हुक्म अपार, इक्क मृदंग वजाईआ। वेखे खेल संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा कर त्यार, काला सूसा तन श्रृंगार, चीना रूसा हो हुशिआर, जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणी जाणे कार। जाणे जगत विहार शब्द जणाईआ। जन भगतां रिहा पैज संवार, आत्म वज्जी वधाईआ। कलिजुग माया लाहे बुखार, शब्द हार तन पहनाईआ। मेल मिलाए अन्तिम वार, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। साचा कन्त हरि भतार, आत्म सेजा डेरा लाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, नार सुहागण गुरमुख साची आप बणाईआ। शब्द डोला कर त्यार, उप्पर रिहा चढ़ाईआ। सोलां करे तन श्रृंगार, चिट्टे अस्व आसण लाईआ। अट्ठे पहर पहरेदार, चारों कुन्ट करे जणाईआ। आपे चुक्के बण कहार, साचे दर दुआरे अन्त बहाईआ। फड़ बाहों कढ्ढे बाहर, नाम रंगण मैहन्दी जिन्हां लाईआ। दर घर साचे संत प्यार, गुरमुख आत्म फूल सच्चा महिकाईआ। मिले मेल नर हरि करतार, जगत विछोड़ा अन्त तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बेड़ा रिहा बन्न्हाईआ। गृह मन्दिर तन सुहाया। जोत जगे अन्दरे अन्दर, तन मन भिन्ना आप कराया। होए प्रकाश अन्धेरी कन्दर, सांतक सीत आप वखाया। आत्म तोड़े हँकारी जन्दर, भरमां डेरा आपे ढाहया । जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख सचे संत जनां साचा मेल कराया। गृह मन्दिर तन सुहानया। प्रभ अबिनाशी वसे अन्दर, गुरमुख विरले मात पछानया। चारों कुन्ट दर दर घर

घर भौंदे बन्दर, ना कोई जाणे खेल नर हरि श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, एका दीपक जगत बलोए, सदा सदा डगमगानया। आत्म गृह शब्द नाद धुन वजन्ता। आत्म गृह गुरमुख साचा साचे धाम रहे, प्रभ अबिनाशी खोज खुजन्ता। चरन प्यार अमृत धार एका वहे, साचा जाम आप पलंता। हरि प्रभ भाणा साचा सहे, धुनी नाद नाद धुन शब्द राग इक्क सुणंता। एका लिव हरि हरि रसना कहे, मिले मेल हरि भगवन्ता। धाम अवल्लड़ा गुरसिख बहे, साचा नाता साचा कन्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा मेल कर, माण कराए जगत वड्याए गुरमुख साचे संता। मिले मेल भगत भगवानया। शब्द दान विच जहान वड महानया। चरन धूढ़ इशनान, पवण मसाण इक्क उडान शब्द बिबाण आप चढ़ानया। आप चुकाए जम की कान, लक्ख चुरासी फंद कटान, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, शब्द सरूपी नाम निधान, सच्चा झुल्ले इक्क निशान, ना कोई जाणे राउ रंक रंक रजान, द्वार बंक इक्क सुहाए, गुरमुख आत्म दर दरबानया। शब्द साची तनक लगाए, आत्म जोती दीप जगाए, करे प्रकाश घट घट वास कोटन भानया। हरि मिलण दी साची आस, काया मण्डल डेरा प्रभास, चारों कुन्ट अन्ध अंध्यानया। रसना गाए स्वास स्वास, हरि हिरदे होए वास, शब्द देवे आत्म धरवास, सति सरूपी दरस दिखानया। वेख वखाए मात पताल अकाश, भगत जनां हरि होया दास, काया मन्दिर पावे रास, आपे गोपी

आपे कान्नया। एका एक पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, आप आपणी किरपा कर, वाली
८५५ ०४
दो जहानया। गुर संगत वड वड्याईआ। एका साची नाम रंगत, आत्म वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी साचे घर, रहणा मंगत, दूजे दर ना कोई जाईआ। चार वरनां भैण भाई साची संगत, भरम भुलेखा दूर कराईआ। हरिजन साचे हरि नेत्र पेखा दूई द्वैती मैल तन मन्दिर अन्दर गंवाईआ। किसे हथ्थ ना आए औलीआ पीर शेखा, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी वेद पुरानी किसे हथ्थ ना आईआ। धुरदरगाही शब्द निशान आत्म वज्जे तिक्खी कानी, बज़र कपाटी पार कराईआ। आत्म सरोवर अमृत पीणा सच्चा पाणी, जल धार ठंडी ठार काया गागर साचे सागर एका एक वखाईआ। निर्मल कर्म होए उजागर, गुरमुख साचे नाम सुदागर, एका वणज वपारा जगत हरि रखाईआ। आत्म जोती नूर इकागर, रंग रंगीला इक्क रत्नागर, दूसर रंग ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत सोहे साचा घर, रसना रस रसायण हरि हरि गुण गाईआ। गुर संगत संगत गुर वड वडभाग। एका लेख मस्तक धुर, लोकमात गए जाग। प्रभ दर्शन को लोचन सुर, पुरी इन्द ना बुझे तृष्ना आग। गुर संगत गुर चरन प्रीती जाए जुड़, कलिजुग धोए झूठे दाग। आप चढ़ाए शब्द घोड़, प्रभ अबिनाशी हथ्थ आपणे रक्खे वाग। आपे वेखे मिठे कौड़, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे

संत जनां, इक्क उपजाए साचा राग। शब्द राग उपजे तार, मिले मेल माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर माधव माध। सुन समाधी लग्गे अवाज। एका देवे साची दाद। गुर संगत वसे सच घर, शब्द गाए रिदे वसाए बोध अगाध। शब्द चोला तन शृंगारे। जगे जोत काया महल्ल मुनारे। लक्ख चुरासी रही रोत, किसे हथ्थ ना आए मीत मुरारे। गुरमुखां मैल रिहा धोत, आपे वसे इक्क किनारे। शब्द कवाड़ी खोल्हे सोत, शब्द जणाए साची धारे। जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दिर साचे घर, आप आपणा काज संवारे। शब्द चोला तन रंगाया। काया माटी झूठा डोला, रंगण नाम इक्क चढ़ाया। गुरमुख साचा भोला भाला, शब्द विचोला इक्क रखाया, आत्म पड़दा हरि जी खोल्हा, अन्दरे अन्दर जोत जगाया। बेमुखां दिसे पड़दा उहला, सति सरूपी दिस ना आया। जगत कारन बणया गोला, हरि वड शाहो भूपी मन मति भुलाया। सृष्ट सबाई अन्ध कूपी, काया मन्दिर साचे अन्दर दीपक जोत ना किसे जगाया। घर घर भौंदे फिरदे बन्दर, माया राणी बणी कलन्दर, चारों कुन्ट रही नचाईआ। भेखाधारी वड संसारी जीव गंवारी, प्रभ अबिनाशी ना पाई सारी, मानस देही जन्म गंवाया। गुरमुख विरला लोकमात प्रभ चरन द्वारया। दोए जोड़ आत्म करे सच्ची निमस्कार, अमरापद दर घर साचे एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म धुनी नाद आपणा आप वजाया। काया चोला शब्द अपार,
८५६ जगे जोत आत्म मवला, नूर निरँजण इक्क अकार, इक्क सुणाए शब्द सोहला, खाणी बाणी वसे बाहर। नाम निरँजण साचा ८५६
०४ ढोला, पुरीआं लोआं बन्न्हे धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जाणे धार, काया मन्दिर साजण साची रीत। जगे ०४
जोत डूंघी कन्दर, एका एक गुरदुआरा मन्दिर मसीत। गुर शब्द तोड़े आत्म हँकारी जन्दर, आपे परखे गुरमुख नीत। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख विरला रस रसना गाए, हिरदे रिहा चीत। हरि हरि गुण गावणा। घर घर साचा सुख पावणा। दर दर दर आत्म दर खुल्हावणा। वर वर वर घर एका साचा पावणा। नर नर नर एका पुरख ध्यावणा। कर कर कर साचा नाउँ कर्म कमावणा। डर डर डर लक्ख चुरासी डर चुकावणा। तर तर तर संत सुहेला मीत अख्वावणा। हरि का भाणा जर जर जर, कलिजुग वेला अन्त पछतावणा। चार वरन खुल्हाए एका दर, आत्म सच सर सरोवर इक्क इशनान करावणा। ना जन्मे ना जाए मर, जोती जामा मात धर, हरि आपणी बणत बणावणा। ना कोई जाणे नारी नर, वेख वखाणे घर घर हाहाकार वड विभचार जूठा झूठा रंग रंगावणा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, आत्म शब्द तिक्खी धार दूई द्वैती मैल गंवावणा। सोलां कलीआं कर शृंगार, चिट्टे अस्व हो अस्वार, पुरीआं लोआं आप पार करावणा। जोती नूर कर अकार, शब्द नाद इक्क उडार, साची पवण दर पुकार, एका संग निभावणा। लोकमात जामा धार, निहकलंकी खेल अपार, शब्द डंका

हरि सुणावणा। राउ रंक रंक राजान, शाह सुल्तान उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़, इक्क वखाए साचा घर, सुन्न समाध तुड़ावणा। सुन्न समाध आप तुड़ांयदा। शब्द चलाए बोध अगाध भेव चुकांयदा। एका शब्द तूर कर, साची धुन उपजांयदा। सच सिँघासण रसना किसे ना आवे साध, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरान, दिस किसे ना आंयदा। आत्म मेल माधव माध, सति पुरख स्वामी सदा सुहेला इक्क इकेला आत्म सेजा सच सिँघासण डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां खोल्हे बन्द कवाड़, परे हटाए पंचां धाड़, सति सरूपी हरि हरि वडा शाहो भूपी, प्रगट होए दरस दिखांयदा। आत्म जोती कर उज्जयार, गुर देवे शब्द कर प्यार, अट्ठे पहर साची धुन साचे घर सच द्वार। धुरदरगाही लोकमात आए पुकार सुण, जुगा जुगन्तर वारो वार। कलिजुग वेख वखाणे गुण अवगुण, बेमुख पकड़ पछाड़े, निहकलंकी जामा धार। जोती जोत सरूप हरि, इक्क उठाए हथ्थ शब्द कटार। शब्द कटारा हथ्थ उठांयदा। चवीआं अवतारा खेल रचांयदा। निहकलंकी जोत अकारा, दिस किसे ना आंयदा। गुर गोबिन्द बणया इक्क लिखारा, पुरी घनक जोत जगांयदा। शब्द रक्खे तिखी धारा, गुरमुख बेमुख दोवें पार करांयदा। सृष्ट सबाई आरा पारा, आपे करे सच विहारा, तख्त ताज राज बाज साज किसे दिस ना आंयदा। शब्दी खेल अपर अपारा, गुरमुख साचे संत जनां, इक्क द्वार रखांयदा। जोती नूरा कर उज्जयार, गुर संगत मेल मिलांयदा। कलिजुग कर्म हरि विचारा, अन्तिम अन्त साची बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महिंमा अगणत गुरमुख विरला संत भेव अभेदा पांयदा। गुरमुख विरले संत, हरि जणाईआ। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्त, हरिजन मेला साचे कन्त, वज्जे शब्द सच्ची शनवाईआ। लक्ख चुरासी भुल्ली जीव जन्त, मदिरा मासी देण दुहाईआ। कवण बणाए साची बणत, धर्म राए अन्तिम अन्त फाँसी गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अचरज खेल रचाईआ। संत सुहागण नार पत पतवन्ती मिल्या पुरख भतार, घर साचे सोभावन्तीआ। कलिजुग जीव मुग्ध गंवार, झूठा खोज खुजन्तया। ना कोई पावे प्रभ की सार, झगड़त बोलत वक्त गवन्तया। आप अपणा जन्म सुधार, वड होए कुल कुलवन्तया। आत्म जोती सच महल्ल मुनार, घर आपणा ढूंड ढूंडन्तया। मिले मेल हरि निरँकार, आसा मनसा पूर करन्तया। हउमे दुखड़ा दए निवार, एका रंग रंगतिआ। साचा शब्द कर त्यार, जोती जोत सरूप हरि, देवे सच्चा दान हो मेहरबान, एका धाम हरि सुहन्तया। हरि शब्द अपार, जगत ढोडोरया। हरि शब्द अपार, एका एक सच्चा घोड़या। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले संत जन, लोकमात जुगा जुगन्त एका बहुड़या। हरि शब्द अपार, जन भगतां बणाए साची बणत, धुरदरगाही साचा मेला इक्क इकेला नर निरँकारे जोड़ जोड़या। हरि शब्द अपार, साचा सज्जण,

सुहेला, ना होए वक्त दुहेला, एका रंगण रंगे अपर अपारया। हरि शब्द अपार, खण्डा दो धार विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, फड़े हथ्थ आप करतारया। लक्ख चुरासी पावे सार, जोती जामा कर अकार, शब्द रक्खे तिक्खी धार, साची सिक्खी कर्म विचार, भगतां देवे दात भिक्खी, सोहँ शब्द अपर अपारया। धुरदरगही लेख लिखी, ना कोई मेटे मेटणहार, जोती जोत सरूप हरि, एका शब्द मात धर, चार वरनां एका सरना, राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां इक्क बन्ह्णए साची धारया। हरि शब्द अडोल, कदे ना डोल्लया। पुरख अबिनाशी एका सच्चा बोल, ना कोई सके तोल, पूरा तोल किसे ना तोल्लया। आत्म दर वजाए ढोल, बज़र कपाटी पाटी सुन्न समाधी अन्दरे अन्दर बोल्लया। गुरमुखां मिले माधव माधी, गुरमुखां जोत अन्दर लाधी, दूजा दर ना कोई फोल्लया। एका नाउँ रसन अराधी, पंच पंचायण जिस ने साधी, साचा दर दुआरा आत्म घर एका खोल्ह्लया। शब्द वज्जे एका नादी, जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे, गुरमुखां राह साचा दस्से, काया मन्दिर साचे अन्दर झूले झूलया। काया मन्दिर हरि निरँकार है। अन्दरे अन्दर गेड़ा आपे मारे, सर्ब जीआं प्रभ पावे सारे, आपे आप सच्ची सरकार है। लक्ख चुरासी भौंदे बन्दर, जंगल जूह विच पहाड़ां उचे टिल्ले सुन समाधी ना पावे कोई सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, सदा रक्खे बन्द कवाड़ है। हरि शब्द अपार, जगत ढंडोरा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप सुणे सुणाए अन्ध घोरा। परखण आया साचे लाल, शब्द बणाया इक्क दलाल, जोती जामा लक्ख चुरासी खाए काल। गुरमुख साचे संत जनां, करे कराए आप रखवाल। मेट मिटाए मदिरा मासी, फल ना दिसे किसे डाल। गुरमुखां दिसे लक्ख चुरासी धर्म राए दी आए फाँसी, ना कोई सके सुरत संभाल। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जगत अवल्लड़ी चल्ले चाल। हरि शब्द अपार, जगत चलाईआ। हरि शब्द अपार, गुरूआं पीरां साधां संतां, आत्म वज्जी इक्क वधाईआ। हरि शब्द अपार, एका एक सच्चा तीरा, बज़र कपाटी चीर वखाईआ। हरि शब्द अपार, अमृत आत्म कढ्ढे बाहर, ठंडी धार इक्क वहाईआ। गुरमुखां आत्म कढ्ढे हउमे पीड़ा, एका धार बंधाईआ। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक एका डंक, राउ रंक रखाईआ। हरि शब्द अपार, खेल निरालीआ। हरि शब्द अपार, जन भगतां कराए मेल वाली दो जहानयां। हरि शब्द अपार, गुरमुख साचे संत जन आत्म पाए सार, सुरत संभालीआ। हरि शब्द अपार, धर्म राए दी कटे जेल्ह, देवे नाम इक्क बिबाणया। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात, देवे इक्क सुगात सच्ची निशानीआं। हरि शब्द अपार, सदा अडोल्लया। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले मात बोल्लया। हरि शब्द अपार, गुर

प्रसादि साध संत, पूरा किसे ना तोल्लया। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी भुल्ले जीव जन्त, आत्म पड़दा किसे ना खोल्ल्हया। हरि शब्द अपारा मेल मिलावा साचे कन्त, हरि शब्द अपार, गुरमुख विरला जाणे संत, आत्म कुण्डा जिस ने खोल्ल्हया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्दर आपे बोल्लया। हरि शब्द अपार, जगत धुनकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरि शब्द अपार, एका दूजा भउ चुकाईआ। हरि शब्द अपार, घर साचे वज्जे वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर सुहाईआ। हरि शब्द अपार, सदा जैकारया। हरि शब्द अपार, एका घर साचे दर सदा सदा पसारया। हरि शब्द अपार, मिलाए विरले मेल कन्त भतारया। हरि शब्द अपार, काया सीतल ठंडी धार, करे ठंडा ठारया। हरि शब्द अपार, साचे मन्दिर जाए वड़, एका जोती अगम्म अपारया। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, आप फड़ाए आपणे लड़, इक्क बहाए सच द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चुकाए जम का डर, आदि अन्त एका एक आवे जावे वारो वारया। वारो वार आए संसार। सृष्ट सबाई बन्न्हे धार। गुरमुखां देवे नाम अपार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना धरनी धरना कलिजुग तेरी अन्तिम वार। हरि शब्द अपार, वड वड्डियारआ। हरि शब्द अपार, खेल करतारया। हरि शब्द अपार, जन भगतां कराए मेल विच संसारया। हरि शब्द अपार, लोकमात रखावे उपजावे वारो वारया। हरि शब्द अपार, एका डंक राउ रंक अठारां वरनां एका सरना आपे आप रखा रिहा। हरि शब्द अपार, गुरमुखां लाए आत्म तनका, खिच्च ल्याए चरन द्वार। हरि शब्द अपार, संत सुहेले तारे जिउँ भगत जनका, आत्म पड़दे देवे पाड़। हरि शब्द अपार, पतित पापी जाए तार जिउँ तारी गनका, रसना गाए हरि निरँकार। हरि शब्द अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जपाए आदि अन्त वारो वार। हरि शब्द अपार, हरि ख़ीनया। हरि शब्द अपार, वड वड दाना बीनिआ। हरि शब्द अपार, गुरमुख विरले रसना चीनया। हरि शब्द अपार, तन मन काया ठंडा करे सीनया। हरि शब्द अपार, अमृत सिंच काया कराए ठंडी ठार, हरि शब्द अपार, खोल्हे बन्द कवाड़, तत्ती वा ना लग्गे हाढ़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत दुलारे, आपे परखे चंगे माढ़े, सच सच्च सच नगीनया। हरि शब्द अपार, वथ रघुराईआ। हरि शब्द अपार, सर्बकला समरथ, मातलोक सदा एका वस्त टिकाईआ। हरि शब्द अपार, गुरमुखां देवे वथ, सिर रक्खे दे कर हथ्थ, आत्म भेव गूझ खुल्हाईआ। हरि शब्द अपार, लक्ख चुरासी पाई नत्थ, चारों कुन्ट फिरन वाहो दाहीआ। हरि शब्द अपार, पंजां चोरां जाए मथ, इक्क चढ़ाए शब्द रथ, लोआं पुरीआं पार कराईआ। हरि शब्द अपार, जन भगतां देवे नाम वथ, शब्द गहणा लोकमात लैणा,

हरिजन सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सैणा, दरस दिखाए तीजे नैणा, संत सुहेले मिल मिल बहिणा, अचरज रीत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, दुरमति मैल तन रिहा धोत, हरिजन रहे सरनाईआ। हरि संत अपार, सति सरूप्या। हरि संत अपार, करे प्रकाश अन्ध अन्ध कूपया। हरि संत अपार, जगत बंधाए धार, फड़ उठाए वड वड शाहो भूपया। हरि संत अपार, मिल्या मेल कन्त भतार, वसे सच महल्ल उच्च मुनार, रंग माणे हरि भगवान, ना कोई जाणे रेख रूपया। हरि संत अपार, जीव जन्त वखाणे सच इक्क टिकाणया। हरि संत अपार, कुलवन्त सोभावन्त सुहागी नार, जोती जोत सरूप हरि, इक्क बिठाए दया कमाए, साचे शब्द बिबाणया। शब्द बिबाणा हरि करतार। जन संतां देवे कर प्यार। लोकमात उठाए वारो वार। सुख सहिज समाए, घर इक्क वखाए दर द्वार। नाम वस्त हरि झोली पाए, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे शब्द अधार। हरि संत हरि दुलारा। आदि अन्त नाम वणजारा। बैठ इकन्त वेख वखाणे घर सच टिकाणे, ना कोई दीसे चार दुआरा। आत्म रंग साचा माणे, ना कोई जाणे जगत काणे, मिल्या मेल पुरख अपारा। जीव जन्त वञ्झ मुहाणे, एका देवे नाम निधाने, गुणवन्त गुणी गुणकारा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आदि अन्त जुगा जुगन्त, एका मिले मीत मुरारा, मीत मुरारा हरि निरँकारा। अट्ठे पहर करे प्यारा। वेला वक्त ना रिहा विचारा। शब्द दस्से तिक्खी धारा। इक्क फड़ाए हथ्थ कटारा। मारी जाए वारो वारा। हउमे रोग रिहा निवारा। आत्म जोती कर उज्जयारा। मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा। जगे जोत अगम्म अपारा। मिले मेल पुरख भतारा। सोहँ तिक्खी धारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, शब्द भण्डार रिहा भर, मातलोक ना आए हारा। हरि मूर्त अकाल, नूर नुरन्तया। हरि मूर्त अकाल, जोत भगवन्तया। हरि मूर्त अकाल सच धाम रहन्तया। हरि मूर्त अकाल, इक्क अकार त्रै लोआं रखन्तया। हरि मूर्त अकाल, ना कोई जाणे जीव जन्त गंवार, भरम भुलाए साधन संतया। हरि मूर्त अकाल, गुरूआं पीरां मारे कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दूसर दर ना कोई वखन्तया। हरि मूर्त अकाल, इक्क हरि सच्ची सरकार, चार वरन एका सरन रखन्तया। हरि मूर्त अकाल, अट्ठे पहर ख़बरदार, हरि मूर्त अकाल, ना कोई पावे सार, हरि नरायण सहिज सुखवन्तया। हरि मूर्त अकाल, आप नुहाए एका साचे ताल, सति सरोवर इक्क इशनान करन्तया। हरि मूर्त अकाल, जन भगतां करे प्रितपाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जन भगत टेक आदिन अन्तया। हरि मूर्त अकाल, इक्क ओंकार है। हरि मूर्त अकाल, शब्द साची धार है। हरि मूर्त अकाल, पवण स्वासी घट घट वासी, जीआं जन्तां पाए सार है। हरि मूर्त अकाल, मानस जन्म करे रहिरासी, आप कटाए जम की फाँसी, गुरमुखां रिहा सुरत

संभाल है। हरि मूर्त अकाल, गुरमुख बणाए शब्द स्वासी, आत्म जोत करे प्रकाशी, आत्म दीपक कर उज्जयार है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वसे सद बाहर है। हरि मूर्त अकाल विच दरबारया। जगे जोत इक्क गुलाल, अन्त ना पारावारया। शब्द रक्खे इक्क दलाल, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। चार वरनां एका सरनां, राउ रंक राज राजाना शाह सुल्ताना, एका राह वखा रिहा। ना कोई जाणे जीव जहाना, गुरमुखां बन्ने आत्म गाना, शब्द डोरी नाल बंधा रिहा। एका झुल्ले जगत निशाना, साचा लेख हरि लिखाए, सत्त दीपां वंड करानां, नौवां खण्डां बणत बणा रिहा। जोती जोत कोटन भाना, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञाना, हथ्थ ना आए वेद पुराना, खाणी बाणी नर पछाणा, कलिजुग अन्तिम अन्त आपणा भाणा हरि सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धार विच संसार आप आपणी आप बणा रिहा।

❋ २१ माघ २०११ बिक्रमी संत लाभ सिँघ नाल बचन होए पिण्ड सैदपुर ज़िला अमृतसर ❋

गुर प्रसादि किरपा धारी। संत सुहेले लाध, देवे वस्त इक्क अपारी। किरपा कर माधव माध, देवे दरस अगम्म अपारी। जोती जोत सरूप हरि, वड दाता शब्द भण्डारी। इक्क वजाए आत्म नाद, अनाद अनादा धुन धुन्कारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका शब्द तन अधारी। गुर प्रसादि गुर चरन प्यारा। प्रभ अबिनाशी साची धारा। लोकमात कलि वणज कराए, एका नाम अपर अपारा। सवेर सन्झ ना कोई रखाए, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत निशाना हरि भगवाना शब्द महाणा वञ्झ ल्याया। शब्द वञ्झ नाम मुहाणा। प्रभ अबिनाशी लोकमात मार झात आप लगाणा। आपे रहे इक्क इकांत, जल थल वल छल कर कर बलि बलि आप आपणा खेल रचाणा। जोती जोत सरूप हरि, गुर प्रसादी आदि जुगादी अनाद अनादी शब्द ब्रह्मादी गुरमुख आत्म भरपूरया, सति सरोवर एका नूर हाज़र हज़ूर आप आपणा दरस दिखाणा। मन तृप्त काया तृप्तास। आपे कटे जगत बिप्पत, दुःख ना लग्गे काया नाड़ी हड्ड मास। पुरख अबिनाशी साची सिफ्त, सदा सुहेला वसे आस पास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मानस जन्म कराए रास। सोहँ बंक द्वार, दर द्वारया। किरपा कर हरि निरँकार, चढ़ के आए साचे ताज्जया। आपे शब्दी बोले खोल्ले बन्द कवाड़, साचा साजन जिस जन साज्जया। वा लग्गे अग्गे तत्ती हाढ़, ना वज्जे साचा वाज्जया। दर घर साचे लैणा वाड़, जगे जोत बहत्तर नाड़, भरम भुलेखा जाए भागया। माया जोती देणी

८६१
०४

साड़, शब्द मारे काड़ काड़, पड़े होए झूठी धाड़, रक्खे लाज लाजन लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर आए एका एक भागया। साचा दर द्वार बन्द द्वारया। दसवें नूर अपार ग़रीब निवाज्जया। जोती भेख अपार, शब्दी नादया। एका एक अपार, हरि निरँकार, गुरमुख विरले मात लाध्या। सोलां करे शृंगार, गुरमुख साचा साची नार, मिले मेल कन्त भतार, देवे नाम सच्चा दाज्जया। साचा करे वणज वपार, मानस देही अपर अपार, वेले अन्त ना जाए हारया। दर घर साचे मेले इक्क अकेले, आप संवारे लोकमात जन भगतां जोती काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे उच्च महल्ल जगत मुनारे आया भाज्जया। उच्च महल्ल इक्क अटला। पुरख अबिनाशी वेख विचारे, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थला। गुरमुख साचे संत दुलारे, आप वसाए घर अपारे, जोती जोत सरूप हरि, सदा वसेरा इक्क घर निहचला धाम अचल्ला। आए दर द्वार संत सुजानया। खोल्ह बन्द कवाड़, विष्नूं भगवानया। नेड़ ना आए पंचां धाड़, शब्द फिरे पिच्छे अगाड़, साचा समां सुहानया। जोती नूर इक्क अकाला हरि कृपाला दीन दयाला जगे जोत बहत्तर नाड़। कलिजुग लाहे दाग कालया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, दस्सण आया इक्क राह सुखालया। सच्चा राह एका दस्से, गुरमुखां दे हिरदे वसे। बेमुखां तों डर डर नस्से। शब्द तीर एका कसे। कलिजुग अन्धेरी रैण जिउँ चन्द मस्से। गुरमुख साचा संत सुहेला आए चल बंक द्वारी खिड़ खिड़ हस्से। साचे बंक द्वार आप सुहानया। नावें दर ना दिसे हरि, पूर्ब कर्म आप पछानया। आप चुकाए अगला पिछला डर, एका जोत श्री भगवानया। ना जन्मे ना जाए मर, आदि पुरख दी सच निशानीआ। साची करनी रिहा कर, लोकमात मार झात हरि वड बली बलवानया। जन भगतां देवे शब्द सुगात, आत्म मिटे अन्धेरी रात, वज्जे तीर एका कानीआ। आत्म वेख मार झात, बैठा दिसे इक्क इकांत, सति सरूप सति सतिवादी बोध अगाधी, अन्तिम हरि गुण निधानया। आत्म घर गुण निधान। वसे हरि सर्ब घट जाण। गुरमुखां खोल्हे बन्द दर नौ निध निध निधान। इक्क वखाए सच घर, जगे जोत हरि बलवान। आप आपणी किरपा कर, चल के आया साचे घर, झुल्लदा दिसे इक्क निशान, एका झूले मात निशान। सोहँ लेख लेख लिखान। एका दूजा भेव मिटान। गुरमुख साचा ना कदे सोया, पुरख अबिनाशी आप जगान। अमृत मेघ साचा चोया मिले हरि जगत निधान। धुरदरगाही साचा ढोआ, एका शब्द वड बिबाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए सच घर, नौ निध अठारां सिध्ध, चारों कुन्टां होई हैरान। सतिगुर पूरा जागे जगत जगांयदा। गुरमुख विरला चरनी लागे, सच वस्त हरि झोली पांयदा। लोकमात होए वड वडभागे, मानस जन्म सफल करांयदा। इक्क सुणाए

साचा रागे, शब्द धुन इक्क उपजांयदा। आप बणाए हँस कागे, सोहँ साची चोग चुगांयदा। अगले पिछले धोवे दागे, मिल्या मेल कन्त सुहागे, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। बेमुख दर तों जायण भागे, आत्म बुझे ना तृष्ना आगे, माया ममता जाल विछांयदा। गुरमुखां पकड़े आपे वागे, खेल रचाए इक्की माघे संत सुहेला दर घर साचे आपे आवे आप कराए आपणा लेखा, डोर आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे गुर आपे चेला, बेमुखां होए वक्त दुहेला, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, साची बणत बणांयदा। धर्म राए दी कटे जेल्ह, गुरमुखां रक्खे एका संग साचे धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरूआं पीरां शब्द धार बन्न्हांयदा। शब्द धार हरि निरँकार। लोकमात देवे वारो वार। गुरमुख साचे आत्म वेख मार झात, अमृत देवे बूंद स्वांत, काया रक्खे ठंडी ठार। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आप बन्न्हाए चरन नात, आपे पिता आपे माता सतिगुर पूरा नीर विरोले साची जोती नूर टिकांयदा। मिले वड्याई लोकमात, गुरमुख बणाए सच बरात, एका जोती हरि टिकांयदा। सच महल्ल इक्क अटल इकांत, ना कोई दिवस ना कोई रात, अट्ठे पहर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, सतिगुर पूरे हाज़र हज़ूरे, शब्द तूरे एका नाद वजांयदा। एका नाद धुन अनहद तूरे। तुटे मुन सुन हाज़र हज़ूरे। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, बेमुखां दिसण दूरे। लक्ख चुरासी विच्चों चुण, आपे करे छाण पुण, आपे लाहे जगत वसूरे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात उपजाए साचे सूरे। हरि शब्द अपार चारों कुन्ट ढंडोरया। गुरमुख विरला पाए सार, पुरख अबिनाशी चारों कुन्ट फिरे दौड़या। एका करे चार वरन चार कुन्ट बन्न्हे धार, वेख वखाणे सर्ब संसारया, आपे वेखे मिट्ठे कौड़या। शब्द रक्खे तिक्खी धार, बज़र कपाटी जाए पाड़, नेड़ ना आए मौत लाड़, गुरमुख चढ़या साचे घोड़या। पंजां चोरां देवे झाड़, जोत जगे बहत्तर नाड़, दर घर साचे देवे वाड़, धुरदरगाही बेपरवाही लोकमात आवे दौड़या। लोकमात बणाए इक्क अखाड़, नौ खण्ड पृथ्मी देवे साड़, लेख लिखाए सतारां हाढ़, ना कोई जाणे ब्राह्मण गौड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, आप चढ़ाए साचे पौड़या। एका पौड़ा मात लगाउणा। गुरमुख साचा पार लँघाउणा। शब्द धार इक्क चलाउणा। अठारां बरन इक्क कराउणा। सुघड़ स्याणा चतुर सुजाना, हरि भगवान आप अख्वाउणा। जन भगतां बन्न्हे हथ्थीं गाना, एका बख्शे चरन ध्याना, बेमुखां मिटे नाम निशाना, रसना तीर इक्क चलाउणा। जगत छुडाए खाणा पीणा, दर बहाए दाना बीना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, एका रंगण रंग रंगा रिहा। चाढ़े रंगण रंग नाम भगत ललारीआ। एका दर लैणा मंग, ना होए मात ख्वारीआ।

पुरख अबिनाशी सदा सुहेला अंग संग, अट्ठे पहर पहरेदारया। आपे कटे भुक्ख नंग, शब्द घोड़े कसे तंग, बेमुख भन्ने कच्ची वंग, होए आप अस्वारया। धरत मात लहू रंगे रंग, लक्ख चुरासी होए भंग, एका मारे शब्द डंग, तिक्खी धार अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, एका बन्न्हे धार विच संसारया। साची बन्न्हे धार जगत सुणांयदा। पूर्ब कर्म रिहा विचार, गुरमुख साचे संत सुहेले आप उठांयदा। भुले फिरन जीव गंवार, साचा राह ना कोई वखांयदा। एका देवे शब्द अधार, आत्म जोती कर अकार। धुनी नाद मारे अवाज़, गुरमुख सोए आप उठांयदा। गुरमुख साचे लए लाध, प्रगट होए माधव माध, जोती जामा हरि बलवाना, वाली दो जहानां लोकमात पांयदा। शब्द पकड़े तीर कमाना, मेट मिटाए राज राजाना, ना कोई चतुर सुजाना, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञाना, भेद ना पायण वेद पुराना, अञ्जील कुरान दिस ना आंयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, हरि वडा शाह सुल्ताना, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरमुख साचे संत, फड़ फड़ बाहों आप उठांयदा। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्त, ना कोई जाणे साध संत, साचा कन्त दिस ना आंयदा। लक्ख चुरासी भुल्ली माया रुली, जीव जन्त भरम भुलेखे हरि भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साची बणत बणांयदा। आत्म भाग मेल मिलावा साचे कन्तया। माया डस्सणी ना डस्से नाग, गुरमुख ना बणे हँस काग, मानस देही ना लग्गे दागया। पुरख अबिनाशी गया जाग, गुरसिक्खां बुझाए तृष्ना आग, दर दुआरे आत्म घर साचे सर आवे भागया। मेल मिलावा कन्त सुहाग, शब्द मिले काया ताग, इक्क वजाए साचा नाद, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सोहँ शब्द वड अनरागया। सतिगुर पूरा जाणीए, होए चतुर सुजाना। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे ब्रह्म ज्ञाना। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे नाम निधाना। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क रखाए सच निशाना। सतिगुर पूरा जाणीए, फंदन फंद कटाना। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे संग समाना। सतिगुर पूरा जाणीए, सति संतोखया। सतिगुर पूरा जाणीए, एका देवे अन्तिम मोखया। सतिगुर पूरा जाणीए, लोकमात ना देवे धोखया। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, गर्भवास ना होए उलटा रुखिआ। सतिगुर पूरा जाणीए, दीन दयाला। सतिगुर पूरा जाणीए, अट्ठे पहर होए रखवाला। सतिगुर पूरा जाणीए, कलिजुग जामा हरि ने पाया, लाहे हड्डी पाला। सतिगुर पूरा जाणीए, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढे ना पल्ला तेरा छड्डे, ना कढ्ढे कोई दवाला। जोती जोत सरूप हरि, साचा साक सैण सज्जणा। हरि जोती नूर अवल्लड़ा। सद वसे इक्क इकल्लड़ा। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म दर दुआरे सदा खल्लड़ा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क दुआरा साचा मलड़ा। एका जोती

सदा जगाईआ। आदि अन्त खेल रघुराईआ। इक्क जोती सदा टिकाईआ। संत लाभ सिँघ जिस तेरी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंड आप कराईआ। एका जोती सर्ब उजाला है। जिस देवे गुर गोपाला है। अट्ठे पहर सदा रखवाला है। जोती जोत सरूप हरि, सच घर दी सैर, ना वड़े कोई ऐर गैर ना रक्खे कोई दलाला है। ना कोई दलाल ना कोई विचोला, इक्क पहनाए प्रभ अबिनाशी गुरमुख तेरे तन चोला, फल लगाए काया डाला है। जोती जोत सरूप हरि, चरन प्रीती इक्क निभाए आपणे नाला है। आत्म दर इक्क दुआरा है। जिथ्थे वसे इक्क निरँकारा है। कदे गुप्त कदे ज़ाहरा है। साध संत पूरन भगवन्त आप बन्नाए साची धारा है। जोती जोत सरूप हरि आपणे रंग वसे करतारा है। जोती नूर सच टिकाणया। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया। कलिजुग भुल्ले जीव निधानया। माया रुले पाणी प्या काया चुल्ले, बुझी जोत भगवानया। पूरे तोल गुरमुख विरले तुले, दर घर साचे मिले माणया। जोती जोत सरूप हरि सद मिले सति टिकाणया। सति पुरख सति टिकाणा है। एका जोत डगमगाणा है। ना कोई राग ना कोई धुन गाना है। एका छत्र झुलाए सीसा, आपणे घर करे वसेरा है। गुरमुखां दिसे नेरन नेरा, बेमुखां दूरन दूरा है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तारे कर कर आपणी मेहरा है। आत्म जोती जिस जगाईआ। काया सोती मात उठाईआ। दुरमति मैल जगत गंवाईआ। अट्ठ सट्ठ तीर्थ रही फैल, किसे हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणी रचन रचाईआ। संत जनां हरि मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी घर बहाया। एका देवे नाम धना, आत्म झोली दए भराया। शब्द सुणाए सच कन्ना, सोहँ राग इक्क अलाया। आप मिटाए जीव जनां, भाण्डा भरम दए भन्नाया। जोत जगाए सच तना, आत्म अन्धेर दए मिटाया। धर्म राए ना दए डन्ना, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण नाम चढ़ाया। रंगण नाम हरि चढ़ांयदा। काया माटी झूठा चाम, ना कोई दाम लगांयदा। पूर कराए आत्म काम, इक्क प्याए अमृत जाम, आत्म तृष्ना भुक्ख गवांयदा। मेट मिटाए कलिजुग रैण अन्धेरी शाम, नेड़ ना आए कामनी काम, गुरमुख साचे संत जनां, साचे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल इक्क अटल साचे धाम बहांयदा। साचा दिसे हरि निरँकारा। पुरख अबिनाशी खेल अपारा। बेमुखां आत्म रहे उदासी, आत्म विकार जगत हँकारा। धर्म राए गल पाए फाँसी, वेले अन्त ना होए छुटकारा। मेट मिटाए मदिरा मासी, प्रगट होए घनकपुर वासी, जोती जोत सरूप हरि, एका रंगण रंगे नाम, करे खेल अपर अपारा। अपर अपार खेल हरि बनवारया। शब्द चढ़ाए साचा तेल, नाल व्याहे जोती लाड़या। मिल्या मेल साचे सज्जण सुहेल, सद फिरे पिच्छे अगाड़या। साचा

धाम इक्क नवेल, जोती जोत सरूप हरि, मिल्या मेल भतार, आत्म किया श्रृंगार, तुट्टा माण ताणया। साची सेजा सुत्ते पैर पसार, आत्म उत्ते खिड़ी गुलज़ार फल फुल लग्गे काया डालया। ना कोई जाणे जीव गंवार, गुरमुख विरला पावे सार, शब्द आवे तिखी धार, दर द्वार दीपक जोती जगे महानया। सुरती खिच्ची जाए दस्म दुआर, आपे खोल्ले बन्द कवाड़, पंजां चबाए आपणी दाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आपणे घर देवे वर, करे खेल वड महानया। आत्म दर हरि खुल्लांयदा। साचे सर इशनान करांयदा। ना कोई जाणे नारी नार, एका पुरख हरि भतार, लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा। गुरमुख जाणे शब्द स्वासी, वेख वखाणे पृथ्मी अकाशी, लोआं पुरीआं धार बनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणे रंग समांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। लक्ख चुरासी गई हारया। चारों कुन्ट रैण अंध्यारया। ना कोई भाई भैण साक सज्जण सैण, माया राणी खाए डैण, घर घर पौंदी जाए वैण, देंदी जाए बहारीआ। ना कोई चुकाए लहिण देण, बेमुख झूठे वहण वहिण, ना मिल्या शब्द भण्डारया। गुरमुख साचे संत जन प्रभ का भाणा सिर ते सहिण, गुर संगत सारे मिल मिल बहिण, रंग चढ़ाए हरि करतारया। रसना किसे ना सके कहण, दरस दिखाए तीजे नैण, जोत जगाए डगमगाए नर निरंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अपर अपारया। कलिजुग तेरा कर्म विचारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। धरत मात करे पुकारे। साधां संतां तुट्टा नाता, भरम भुलेखे जात पात ऊँचां नीचां गऊ ग़रीबां कोई ना पावे सारे। ना कोई पिता ना कोई मात, ख़ाली दिसण सर्ब भण्डारे। एका मिले पुरख बिधात, साची देवे शब्द सुगात, आप आपणी किरपा धारे। कलिजुग नार कुलक्खणी वड कमज़ात, ना मिल्या कन्त सुहाग, चारों कुन्ट अन्ध अंध्यारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे रंग समारे। आपणा रंग आपे जाणे। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, किसे हथ्थ ना आए सुघड़ स्याणे। साची जोत मात प्रकाशी, गुणवन्त हरि गुण निधाने। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आप आपणे रंग समाणे। वेखे रंग रंग रंगानया। शब्द घोड़े कस्सया तंग, लोआं पुरीआं रिहा लँघ, साची रक्खे इक्क उडानया। ना कोई ढोल ना मृदंग, ना कोई दूजा वसे संग, सुर ताल ना कोई रखानया। वड दाता हरि सूरा सरबंग, गुरमुखां कटे भुक्ख नंग, आत्म तृष्ना दूर करानया। लक्ख चुरासी होणी भंग, शब्द चलाए तीर तुफंग, एका धार वहाए गंग, लहू मिज्झ मात महानया। गुरमुखां मंगी साची मंग, प्रभ अबिनाशी होया संग, आत्म दर द्वार सच घर बाहर आपे जाए लँघ, आपे खोल्ले बन्द किवाड़या। पंजां तत्तां देवे मतां, एका बंधाए चरन नत्त, साचा देवे शब्द सहारया। शब्द सहारा कलिजुग तेरा प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आप आपणा दरस दिखाए,

जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चार वरनां एका सरना रखा रिहा। चार वरना एका सरना, कलिजुग अन्तिम वारया। गुरमुखां मिल्या हरि धरनी धरना तरनी तरना , आप खुल्हाए हरना फरना, जगत चुकाए मरना डरना, देवे दरस अगम्म अपारया। प्रभ का भाणा सिर ते जरना, साचा फ़रमाण धुर दरबारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमत हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, राजे राणे बाहों फड़, शब्द जकड़ आप उठा रिहा। वज्जे शब्द जंजीर जगत अमोल्लया। कोई ना कटे भीड़, ना किसे जन्दरा खोल्ल्या। ना कोई जाणे हस्त कीड़, हरि अन्दरे अन्दर बोल्लया। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, देवे शब्द नाम अनमोल्लया। लक्ख चुरासी शब्द वेलणे देवे पीड़, कलिजुग अन्तिम पड़दा फोल्लया। एका बन्न्हे साची बीड़, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द अनमोल्लया। सोहँ शब्द चलाए साचा तीर। सत्तां दीपां वंड वंडाए, लोआं पुरीआं हुक्म सुणाए, सुरपति राजा इन्द पकड़ उठाए, वड दाता गुणी गहीर। जोती जोत सरूप हरि, एका धार विच संसार चलाए कलिजुग तेरा अख़ीर। ना कोई जाणे गहर गवर। गुरमुख विरले मानस जन्म जाए सवर। लक्ख चुरासी इक्क बिठाई धरत मात तेरी गोद कबर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, एका सच्चा राह दिसाने, जगत जंजाला फाह कटाने, जगत मलाह आप अख्वाने, देवे नाम सच्चा धन माल, कोई ना जाणे अवर। सज्जण सुहेला मीत हरि रघुराईआ। अट्ठे पहर वसे चीत, साचे मन्दिर रिहा सुहाईआ। भगत सुहेला परखे नीत, पड़दा उहला ना कोई रखाईआ। जोत निरालम इक्क अतीत, घर साचे डगमगाईआ। हरि संतां दस्से साची चरन प्रीत, हरि मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर इक्क रखाईआ। जोत निरँजण दर्द दु:ख भंजन, साचा सज्जण हथ्थ किसे ना आईआ। हरि संत प्यारा पुरख अपारा हरि गिरधारा, जोती खेल अपर अपारा आप कराए साचे मेल, शब्द कराए इक्क वणजरा। जोती जोत सरूप हरि, अनाद अनादा बोध अगाधा, गुरमुख विरले रसन अराधा, एका दस्से साची धारा पुरख अपारया। किसे हथ्थ ना आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जोती जोत सरूप हरि, आत्म नुहाए साचे सर, दुरमति मैल रिहा उतारया। दुरमति मैल देवे कट। दूई द्वैती मेटे फट्ट। आपे खेवट आपे खेटे, ना कोई खेल बाज़ीगर नट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन संतां मैल देवे कट। मिल्या मेल कन्त सुहागा। छुट्टा ताण छत्ती रागा। आत्म सोई आप जगाए वड वडभागा। नाम जपाए एका एक एक अनुरागा। जोती जोत सरूप हरि, धोवे काया दागा। हरि नाउँ जगत अनरागया। वसे साचे थांउँ, अगम्म अथाह बेपरवाह ना सोया ना जागया। जन भगतां करे ठंडी छाउँ, आपे पिता आपे माओ, काया धोए लग्गे दागया। सच सरोवर हँस बणाए काउँ, चरन प्रीती जो जन साची लागया। जोती जोत

सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जुगा जुगन्त आवे जावे भागया। आदि अन्ती एका कार। जुगा जुगन्ती पाए सार। भगत भगवन्ती खेल अपार। साधन संती शब्द धार। लोकमात बणाए बणती, आए चल द्वार। मेल मिलावा साचे कन्ती, गुरमुख नारी सच भतार। पुरख अबिनाशी सोलां श्रृंगार आप श्रृंगारी, काया नाम शब्द कंगण तन पहनाया। एका रंगण नाम चढ़ाया, दूजा दर ना मंगण जाए, देवणहार सर्ब संसारया। अंगण संगण आप रहाए, जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी सारया। काया किला कोट गढ़ अपारया। दुक्खां धाड़ रही चढ़, ढहिंदा जाए वारो वारया। कोई ना सके अग्गे अड़, ना कोई सके नाड़ी फड़, वेला चुक्कया हथ्थ ना आ रिहा। ना कोई रखाए काया धड़, होए सहाई ना कोई बचा रिहा। ना कोई जाए अन्दर वड़, रोगां सोगां लए फड़, चिन्ता रोग मिटा रिहा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, अट्ठे पहर रिहा लड़, भेव आप छुपा रिहा। गुरमुख साचा गुर पूरे दा पकड़े लड़, जगत जंजाला हरि दयाला आपे तोड़ तुड़ा रिहा। मानस देही ना जाए हड़, बुझे अग्ग बहत्तर नाड़, अमृत जाम इक्क प्या रिहा। दर दुआरे आत्म खड़, रोगां सोगां देवे झाड़, काया मन्दिर साफ कराए सोहणा वसेरा सुच्चा घर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ देवे नाम वर, रसन गुण गंवा रिहा। काया मिटे रोग सोग, चिन्त विजोग दूर करावणा। प्रभ दरस दिखाए अमोघ, मिलाए मेल लिख्या धुर संजोग, एका दूजा भउ चुकावणा। आप चुगाए शब्द चोग, माणक मोती गुरमुख साचा आत्म जोती आप जगावणा। आप बणाए माणक मोती, दुरमति मैल जाए धोती, सति सरोवर आत्म इशनान इक्क करावणा। साचा देवे ब्रह्म ज्ञान, पुरख अबिनाशी चरन ध्यान, नेत्र नैण लोचन तीजे मन तन भीजे, काया सिंचे ठंडी ठार करावणा। एका शब्द नाम बीजे, गुरमुखां आत्म इक्क पतीजे, पुरख अबिनाशी आप कराए मात रीझे, शब्द हार तन श्रृंगार एका तन पहनावणा। मानस देही ना आए हार, लक्ख चुरासी करे पार, शब्द घोड़े कर अस्वार, साचे धाम आप बहावणा। दरस दिखाए हरि निरँकार, हरस मिटाए कर प्यार, अमृत मेघ बरस वखाए काया ठंडी ठार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच्चा नाम वर, काया मन्दिर अन्दर रोग सोग दए निवार। देवे शब्द अधार, नाम भरपूरया। बख्शे चरन प्यार, आसा मनसा पूरया। मानस देही ना आए दूजी वार, एका जामा जोती नूरया। लक्ख चुरासी गई हार, कलिजुग भरया अन्तिम पूरया। गुरमुख विरला पावे सार, प्रभ अबिनाशी साची धार, जोती जामा खेल अपार, सर्बकला भरपूरया। रक्खे शब्द इक्क अपार, मारी जाए वारो वार, गुरमुख सुहेले आप उठाए, खिच्च ल्याए चरन द्वारया। बेमुखां दिसे दूरन दूरया। जोती नूरा कर अकार, खोले आत्म बन्द कवाड़, अग्गे दिसे साचा लाड़, आत्म सेजा सुत्ता वड दाता वड वड सूरया। आपे

धीआं आपे पुत्ता, आपे आपणे नाम विगुत्ता, पुरख अबिनाशी सच अचुत्ता, आप सुहाए काया रुत्ता, फल फुल्ल लगाए सच्चे डालया। एका हल्ल सच्चा जुत्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, साचा नाम बीज अमृत धरा लया। अमृत आत्म बीज हरि कढाईआ। तन मन अमृत सीज, एका धार अमृत फुहार काया मन्दिर साचे अन्दर आपे आप रखाईआ। ना हरि जाणे डूंघी कन्दर, आपे तोड़े वजा जन्दर, सच दुआरा आप खुल्हाईआ। जगे जोत अन्दरे अन्दर, गुरमुख साचे संत जनां साचा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। स्वच्छ सरूप अनाद अनाद। आवे जावे आदि जुगादि। वेख वखाणे सर्ब ब्रह्माद। पुरीआं लोआं रिहा साध। ब्रह्मा अट्ठे पहर गाए चारे मुख रिहा उठाए, सुणे सुणाए इक्क अवाज। शिव शंकर करे विचार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। जटा जूटी खेल अपार। एका पाए हरि जी सार। देवे दरस अगम्म अपार। पुरीआं लोआं बन्न्हे धार। जोती जामा श्री भगवाना आदि अन्ता एका बन्न्हे धार। करोड़ तेतीसा गाए बतीसा, सुरपति राजा इन्द मेट मिटाए, खेल रचाए बीस इकीसा। जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणे रंग समाना। आपे जाणे आपणी कार। एका एक इक्क अकाला। साचे घर खेल निराला। अन्तिम खाए सभ नूं काला। संत जनां हरि हिरदे वसे, शब्द तीर एका कसे, दस्से राह सुखाला। पंजे चोर जायण नस्से, निझर धार एका वसे, किरपा करे हरि गोपाला। आत्म प्रकाश कोटन भान रव रवि सस्से, मिटे अन्धेरी रैण मस्से, नेड़ ना आए कोई शैताना। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे नाम धना, पिठ दे कदे ना नस्से। गुर संगत आई दर नाम भिखारी है। देणा दरस अगम्म, जोत निरँकारी है। अमृत झिरना झिरे छम छम, एका दिसे सीतल धारी है। मानस देही किसे ना आउणी कम्म, अन्तिम जाणी साड़ी है। आत्म जोती रमईआ रम, पूरन ब्रह्म विचारी है। कोई ना मंगे दर घर साचे दम, ना करे कोई हुदारी है। आप मिटाए जगत कम्म, दर्शन देणा किरपा कर, अपर अपारी है। जोती जोत सरूप हरि, साचा बैठण साचे घर, एका एक गुजारी है। एका दरस भगत भगवान। आत्म जोती शक्त महान। बूंद रक्ती चुक्के कान। साची जुगती विच जहान। अन्तिम मिले साची मुक्ती, रहणा नाम निशान। दसवें घर जाए चढ़, अग्गे हरि जी सुरती लए फड़, ना खिच्चे कोई कमान। एका जोत साची जगी, मिले मेल श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, सच महल्ल अटल बैठा हथ्थ ना आए वड बली बलवान। वड बली बलवाना, नर निरंकारया। आपणे भेव समाणा, खेल अपारया। जोती जोत महाना, ना किसे विचारया। गुरमुख विरला बन्न्हे हथ्थीं सच्चा गाना, इक्क ध्यान लगा रिहा। कलिजुग तुट्टे माण ताणा, अट्ठे पहर सन्झ सवेर एका एक समा

रिहा। संगत नहीं ऐर गैर, गुरमुख साचे संत शाइर आत्म ब्रह्म ज्ञाना, दरस दिखाए दया कमाए दर घर आए श्री भगवाना, साची भिच्छया पा रिहा। आत्म इच्छया हो सहाए, फंदन फंद लक्ख चुरासी गेड़ मात कटाओ, जोती जोत सरूप हरि, साचे मार्ग पा रिहा। काया मन्दिर खुल्ा वेहड़ा, शब्द बगीचा इक्क लगाओ। गुर संगत नाम वणजारी है। काया मन्दिर इक्क क्यारी है। गुर पूरा बीज बीजे वारो वारी है। अमृत धार एका बख्शे साचा बण जाए सज, लग्गे फल इक्क अपारी है। नेत्र खोल्े तेजन तेज, गुर संगत कराओ साची रीझ, ना होए बन्द कवाड़ी है। सतिगुर पूरे हाज़र हज़ूरे सर्बकला भरपूरे, घर साचे देणा वाड़ी है। दस दस इक्क ग्यारां। घर लग्गीआं रहण सच बहारां। गुरमुख साचे संत सुहेले, आप कराणे साचे मेले, कन्त सुहागी मिलण नारां। शब्द गुर सुरती मेल मिलाना। अन्तिम वेले धर्म राए दी तुट्टी जेल्े, खिच्च लयाउणा चरन दुआरा। पल्ले नाही कुछ पैसे धेले, आत्म जोती इक्क इकेले, वसे सच महल्ल मुनारे, जोती जोत सरूप हरि, इक्क ग्यारां कर विचार, आपणा खेल आपे खेले। गुरमति गुर की धार, जगत वड्डयाईआ। आत्म देवे धीरज जत, काम कामनी वस कराईआ। बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत्त, आत्म विकार गंवाईआ। देवे शब्द नाम गुरमति, गुरमुख तुट्टे मात ना जत धीर धराईआ। आप चढ़ाए साचे रथ, सतिगुर पूरा जगत समरथ, ना दामन कोई छुडाईआ। शब्द चलाए जगत अकथ्थ, लक्ख चुरासी जाए मथ, राजे राणयां पाए नत्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां देवे नाम वथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, एका चरन ध्यान रखाईआ। कलिजुग सीआं साढे तिन्न हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, रंक राजाना वंड कराईआ। वंडे वंड आप बलकार। शब्द खण्डे तिक्खी धार। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढे, ना कोई जाणे जीव गंवार। करे खेल हरि वरभण्डे, जोत सरूपी जामा धार। चार कुन्ट चमकाए चण्ड प्रचण्डे बेमुखां नंगी होई कंडे, अन्तिम वेला आई हार। मेट मिटाए भेख पखण्डे, हथ्थ उठाए सोहँ खण्डे, चारों कुन्ट रिहा हुलार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, करे खेल अपर अपार। पुरख अबिनाशी वंड वंडाउँणी। आपणी बणत आप बणाउँणी। लक्ख चुरासी अन्त विनाशी, ना कोई समझाए हाढ़ी साउणी। एका जोत मात प्रकाशी, ना कोई जाणे अवण गवणी। दर दर घर घर करन हासी, अमृत मेघ ना बरसे संवण संवणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणी रचन रचाउणी। कलिजुग अन्तिम हरि विचारे। पुरख अबिनाशी जामा धारे। पुरी घनक खेल अपारे। शब्द वजाए एका डंक, आप उठाए राउ रंक, जन भगतां सोहणा बंक दुआरे। शब्द दमामा लाए तनक, जन भगतां जोती देवे कनक, अट्ठे पहर नाम हुलारे। आप फिराए मन का मणक, सोहँ शब्द अपर अपारे। जोती जामा श्री

भगवाना, कलिजुग अन्तिम वक्त पछाना, आपे बीना आपे दाना, आपे प्रभ चतुर सुजना, करे खेल हरि निरँकारे। हरि का खेल अगम्म, जगत वड संसारया। इक्क झुलाए शब्द निशान, मेट मिटाए बेईमान, चार कुन्ट कराए हाहाकारया। ना कोई दीसे शाह सुल्तान, प्रगट होए वाली दो जहान, फड़े शब्द खण्डा दो धारया। एका जोधा बली बलवान, ना कोई रक्खे तीर कमान, शब्द तीर इक्क चला रिहा। लाड़ी मौत आए खाण, पुरख अबिनाशी करे ध्यान, धर्म राए दी खुल्हे दुकान, चारों कुन्ट पए वहीर ना कोई मढ़ी ना मसाण, बेमुखां लाहुण आया मकाण, शब्द निशान हरि झुला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, आप आपणे रंग समा रिहा। इक्क दाता जगत भिखारीआ। पुरख बिधाता वड संसारीआ। जन भगतां देवे सच सुगाता, आत्म नाम शब्द धन अपर अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त बणया रहे मात वरतारया। गुरमुखां मंगी इक्क मंग। तन मन काया रंगे रंग। झूठी माया ना डस्से डंग। पुरख अबिनाशी तेरी सच्ची छाया, अट्ठे पहर एका संग। जन भगतां हरि जी गोद उठाया, बेमुख भन्ने काची वंग। शब्द बोध अगाध झोली पाया। हउमे विच्चों रोग गंवाया। चिन्ता सोग जगत मिटाया। आत्म पड़दा उहला लाहया। आप आपणा भेव खुल्हाया। दर घर साचे मेल मिलाया। जगत विछोड़ा इक्क कटाया। चरन प्रीती जोड़ जोड़ा लिख्या धुर संजोगा, आत्म रस भोग कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जल भगतां देवे नाम वर, दरस अमोघा इक्क वखाया। गुरमुख मंगे दरस अमोघ, कटे काया हउमे रोग, झूठी माया चिन्ता सोग, कलिजुग जीवां भेद ना पाया। परमानंद इक्क गंवाया। नाम रंगण ना काया चोली, भरम भुलेखे जन्म गंवाया। अन्तिम वेले पिठ होई नंगी, तुट्टा नाता वड दाता सूरा सरबंगी, एथे ओथे ना कोई सहाया। गुरमुखां दात एका मंगी, वजे शब्द नाम मृदंगी, मानस जन्म ना होए भंगी, अन्तिम वेले कटे तंगी, एका वस्त हरि झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आदिन अन्ता साचा संगी, आप आपणा संग बणाया। हरि वडा वड भण्डार है। देवे नाम इक्क अधार है। अमृत प्याए साचा जाम, अट्ठे पहर हुलार है। आप कराए पूरन काम, इक्क कराए वणज वपार है। जोती जोत रमईआ राम, पल्ले कोई ना रक्खे दाम, जगत जंजाला वसे बाहर है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, शब्द भण्डारे रिहा भर, तोड़े जगत हँकार है। आत्म भण्डार जीआ दान। देवे गुर कर ध्यान। मिले मेल शब्द सुरत साची सुर, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। चरन प्रीती जाए जुड़, आत्म मिटे अन्ध अंध्यान। छुट्टे रसना रस फीका कौड़, नेड़ ना आए पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, आप आपणी किरपा कर, लोकमात खोल्हे इक्क सच्ची दुकान। सच दुकान हरि खुल्हाईआ। किला मकान ना कोई रखाईआ। एका

वस्त नाम निधान विच टिकाईआ। गुरमुखां देवे कर ध्यान, अन्दरे अन्दर सर्ब रखाईआ। भरमे भुल्ले जीव निधान, सच वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। गुरमुखां देवे हरि मेहरवान, आत्म जोती रिहा जगाईआ। धुरदरगाही सच फ़ुरमान, जपे जपाए विच जहान, गुर गुरूआं बणत बणाईआ। इक्क अडोल अतोल अमोल हो हो नीवां, सद भाणे रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका देवे सोहँ सच्चा नाम धना, कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त देवण आया लोकमात शब्द वधाईआ।

✻ १ फगण २०११ बिक्रमी हरिभगत द्वार पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सुल्तान सुल्तान सुल्तान परम पुरख जोत, भगवान हरि निरंकारया। सुल्तान सुल्तान सुल्तान बिन वरन गोत, पुरख अगम्म अगम्म अपारया। सुल्तान सुल्तान सुल्तान निर्मल जोत, सच धर्म इक्क संसारया। सुल्तान सुल्तान सुल्तान दुरमति मैल रिहा धोत, शब्द रंगण इक्क करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द डंक इक्क वजा रिहा। सुल्तान सुल्तान सुल्तान वड बलवानया। करे खेल भगत सुहेल, वाली दो जहानया। वसे रंग नवेल, आपे जाणे खाणी बाणीआ। ना कोई गुर ना कोई चेल, ना कोई जाणे वेद पुरानीआ। अचरज पारब्रह्म प्रभ खेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलाए वड सुघड़ स्याणया। सुल्तान सुल्तान सुल्तान हरि भगवन्तया। सुल्तान सुल्तान सुल्तान हरि साजण साचा मीत मुरार, आदि अन्त साचा कन्तया। साचा देवे शब्द भण्डार हरि वरतार, माण रखाए जुगा जुगन्तया। जोत जगाई सृष्ट सबाई बन्न्हे धार, नर हरि श्री भगवन्तया। लक्ख चुरासी कर्म विचार, भगतन होए दास शब्द स्वास, मानस जन्म ना आए हार, आप कटाए जम की फास, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क पहनाए तन शब्द हार। सुल्तान सुल्तान सुल्तान सखी सुल्तानया। मेहरवान मेहरवान मेहरवान पति आत्म रक्खी, मेहरवान देवे माण विच जहानया। कलिजुग अग्नी चार कुन्ट भखी, साध संत होए वैरानया। नेत्र नैण वेखण अक्खीं, साचा हरि ना किसे पछाणया। सड़दे जाण माया झूठे कक्खीं, भुल्ले पुरख सुजाणया। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग गुरमुख विरले मात पछाणया। ना कोई जाणे संत फ़कीर। शब्द चल्ले साचा तीर। वेख वखाणे जल थल्ले डूंघी डल्ले, ना कोई देवे किसे धीर। चारों कुन्ट पैण हल्ले, बेमुख रुलण कलम कले, किसे हथ्थ ना आए नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए तेरा अन्त, अन्त अन्त अख़ीर। छब्बी पोह हरि बणत बणाई। साचे मन्दिर अन्दरे अन्दर, साची गणत आप गिणाई। लक्ख चुरासी काया डूंघी कन्दर, प्रभ पूरन बूझ बुझाई। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, छब्बी पोह जगत जंजाला तुट्टा मोह, झूठी काया मात तजाई। छब्बी पोह दिवस उज्जयार। करे कराए हरि निरँकार। साची जोत मात धरे, शब्द रक्खे तिक्खी धार। ना जन्मे ना कदे मरे, आवे जावे वारो वार। एका वसे सच घरे, उच्च महल्ल इक्क मुनार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाया अपर अपार। छब्बी पोह लेख लिखाया। गुर पीर कोई रहण ना पाया। आत्म तोड़े जगत धीर, शब्द डण्डा मगर लगाया। नंगीं पैरीं फिरन फ़कीर, पुरख अबिनाशी हथ्थ ना आया। शब्द निराला चल्ले तीर, वक्त अख़ीर नेड़े आया। जन भगतां कटे आपे भीड़, निहकलंकी जामा पाया। ना कोई हस्त ना कोई कीट, एका रंगण रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा संग निभाया। जगत गुरूआं मारे मार। हथ्थ फड़ शब्द कटार। आत्म कढ्ढे बल हँकार। जोती नूर ना किसे घर छड्डे, खिच्च ल्याए चरन द्वार। ख़ाली दिसण काया हड्डे, अड्डो अड्डे, झूठी रहे फूं फुंकार। जन भगतां लडाए साचे लड्डे, पुरख अबिनाशी मीत मुरार। भरम भुलेखा सारा कढ्ढे, सतारां हाढ़ी कर विहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शेख़ पीर ना कोई छड्डे, चारों कुन्ट करे ख्वार। चारों कुन्ट होए ख्वारी। गुरूआं पीरां आए हारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। फेरे हरि शब्द बहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी कारी। एका हरि इक्क इकेला। दूजा ना कोई वसे महल्ला। गुरूआं पीरां पए तरथल्ला। गगन पताली थम्म हिला। फल ना दिसे किसे डाली, वेख वखाणे वल छला। कलिजुग रैण अन्धेरी काली, जोत निरँकारी अचल अचल्ला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक सोहँ शब्द इक्क धार, चारों कुन्ट एका वार कराए साचा हल्ला। गुर पीर औलीए जाण भज्ज। माया मन्दिर झूठे तज। कोए ना पर्दे लए कज्ज। गुरमुख साचा रसना सेवे, काया काअबा आप कराए साचा हज्ज। साची वस्त प्रभ दर लेवे, साचा ताल जाए वज्ज। गुण गोबिन्दा रसना सेवे अन्तिम वेले रक्खे लज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख अभेवे जो घड़या सो जाए भज्ज। एका सोहे हरि द्वार। गुर पीर सभ होणे छार। ना कोई दीसे मीत मुरार। पुरख अबिनाशी साची रीते, लक्ख चुरासी इक्क भतार। ना कोई गुरदुआरा मन्दिर मसीते, उच्च महल्ल ना कोई अटार। कलिजुग औध गई बीते, ना कोई होए अन्त सहार। गुरमुख गुर साजण सदा जग जीते, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। कलिजुग माया आई हार, कोई ना मिल्या सच्चा मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क कराए सच्चा वणज वपार। एका वणज जगत वपारा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी रसना गाओ अमरा पद पाओ, आत्म भरया रहे भण्डारा। निजानंद सुख सहिज समाओ, वर दर घर साचा पाओ, फेर ना आए हारा। गहर गम्भीर सद रसना गाओ, आत्म शांत सरीर कराओ, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जगत सहारा। मानस जन्म अपार, उत्तम जातया। मानस जन्म अपार, मिले मेल हरि पुरख बिधातया। मानस जन्म अपार, साचा सज्जण सुहेल, मेट मिटाए अन्धेरी रातया। मानस जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे बूंद सवांतया। मानस जन्म अपार, अमृत धारया। मानस जन्म अपार, गुरमुखां देवे कर प्यारया। मानस जन्म अपार, काया अन्दर साची जोत धरे निरंकारया। मानस जन्म अपार, तोड़े वज्जा जन्दर, देवे दरस अगम्म अपारया। मानस जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यारया। मानस जन्म अपार, जगत अमोल्लया। मानस जन्म अपार, गुरमुख साचा प्रभ साचे पूरा तोल तोल्लया। मानस जन्म अपार, पर्दे रिहा खोल्ह, एका शब्द सुणाए सच्चा ढोल्लया। मानस जन्म अपार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सद वसे कोल, अन्दरे अन्दर बोल्लया। मानस जन्म अपार, भगत वड्याईआ। मानस जन्म अपार, मिल्या मेल सहिज सुखदाईआ। मानस जन्म अपार, हरि साचा सज्जण सुहेल, चरन प्रीती तोड़ निभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन गुर दोए जोड़, सदा सुहेला होए मात सहाईआ। हरिजन जन्म अपार, वणज करंदड़ा। हरिजन जन्म अपार, मिले मेल भगत भगवान सदा बख्शिंदड़ा। हरिजन जन्म अपार, एका देवे नाम सहार, सच दुआरे नर निरँकारे आपणा आप खुल्हदड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे संत जनां, दए दिलासा शब्द अरदासा, सच घर आत्म रक्खे वासा, तृष्ना भुक्ख मिटंदड़ा। कलिजुग काला वेस नौ द्वार है। पुरख अबिनाशी आपे वेखे कर कर वेस, शब्द नर नार है। शब्द सुनेहड़ा जाए देस प्रदेस, करे कराए आप ख़बरदार है। पकड़ उठाए नर नरायणा नर नरेश, मारे इक्क हुलार है। साल ग्यारवां बाल अवस्था, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई भुल्ले श्री दस्मेश है। कलिजुग काला वेस नौ द्वारया। पुरख अबिनाशी दर दरवेस, मंगण गया वड वड दर द्वारया। खुल्हे रक्खे केस, कलिजुग अन्ध अंध्यारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जोती करे खेल अपर अपारया। नौ दरवाजे दर दरबार। कलिजुग तेरा रच्चया काजे, माझे देस खेल न्यार। लक्ख चुरासी तेरा आप बणाए सच्चा दाजे, आप चुकाए सिर पापां भार। जन भगतां साजन आपे साजे, देवे शब्द नाम ख़ुमार। अन्तिम वेले रक्खे लाजे, राजे राणे दर दुरकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ दुआरे आपे खोल्हे, शब्द सरूपी घर साचे बोले, रचन रचाए सतारां हाढ़। नौ दरवाजे साची नईआ। बेमुखां अन्तिम आप चढ़ईआ। गुरमुखां चुकाए झूठा झेड़ा, दस्म दुआर इक्क वखईआ। अन्तिम करे हक्क निबेड़ा, सज्जण सुहेला हरि साचा सईआ। आप वसाए काया नगर खेड़ा, अन्ध अंध्यान तन मिटईआ। शब्द सरूपी देवे गेड़ा, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा खेल रचईआ। नौ दरवाजे जगत अन्ध। दिस ना आए ग़रीब निवाजा, झूठा दिसे माया धन्द, लक्ख चुरासी साजण साजा, आत्म जोती साचा नूरा, इक्क वखाए काया साचा चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ दुआरे जगत अकारे इक्क रखाई माया कंध। नौ दुआरे कलिजुग निशानी। शब्द मारे तीर कानी। कलिजुग वेला अन्त प्रभ पकड़ उठाए साध संत, भरम भुलेखे वड विद्वानी। गुरमुख विरले मेल मिलावा साचे कन्त, देवे दरस हरि जोत भगवानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ द्वार बणाई बणत, कलिजुग तेरी अन्तिम निशानी।

✻ ११ फगण २०११ बिक्रमी स्वामी संत दर्शना अनन्द दे नवित्त बटाला ज़िला गुरदासपुर ✻

दर घर साचे मेल भगत भगवानया। शब्द चढ़ाए साचा तेल, गुरमुख साचे सुघड़ स्याणया। अचरज करे लोकमात खेल, ना जाणे जीव निधानया। धर्म राए दी कटे जेल्ह, रसना गाए हरि भगवानया। सदा वसे रंग नवेल, चल्ले चलाए आपणे भाणया। हरि साचा सज्जण सुहेल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, वड बली बलवानया। वड बली बलवान नर निरंकारया। शब्द रखाए तिखी धार विच संसारया। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, चारों कुन्ट वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डंका सोहँ शब्द वजा रिहा। सोहँ शब्द अपार, विच संसारया। खोल्हे हरि द्वार, हरि निरंकारया। चार वरनां इक्क प्यार, करे खेल अपर अपारया। साचा देवे शब्द अधार, सोहँ वरते विच संसारया। आत्म खण्डा रिहा मार, पुरख अबिनाशी घट घट वासी करे खेल न्यारया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सतिजुग साची धार बन्न्हा रिहा। जन भगतां पुच्छे वाती, देवे नाम सच सुगाती, अमृत प्याए बूंद स्वांती, काया करे ठंडी ठार है। आत्म अन्दर मारे झाती, मिटे रैण अन्धेरी राती, चिट्टे घोड़े हरि अस्वार है। कलिजुग तेरी बणाए अन्त मिट्टी ख़ाकी, गुरमुखां चुकाए लहणा देणा बाकी, लक्ख चुरासी करे पार है। ना कोई दीसे राज राजान शाह सुल्तान आकी, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, दर दुआरा इक्क अकाल है। भरया रहे भण्डारा, सदा रहे दयाल है। देंदा आए वारो वारा, जुगा जुगन्तर अवल्लड़ी चाल है। सतिजुग त्रेता पार उतारा, द्वापर खेल न्यार है। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, प्रभ अबिनाशी खेले खेल, ना कोई जाणे जीव गंवार है। जन भगतां कराए आत्म मेल, शब्द सरूपी चाढ़े तेल, साचा दीपक आप जगाए बण साचा सज्जण सुहेल है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, घर सच मिलाए मेल है। घर साचा हरि

निरंकारया। पिण्ड काचा जीव गंवारया। गुरमुख विरले हिरदे वाचा, दरस दिखाए हरि अमोघा, मिल्या मेल धुर संजोगा, कटे रोग विच्चों हउमे रोगा, आप चुगाए शब्द चोग, सोहँ शब्द आत्म चोगा, मिले मेल कन्त भतारया। साचा भोग गुरमुख विरले भोगा, लक्ख चुरासी भुल्ली रुली, ना देवे कोई सहारया। हरि भाग लगाए गुरमुख काया कुली, अन्तिम कलिजुग लोकमाती फली फुल्ली, अट्ठे पहर खिड़ी रहे गुलज़ार है। बन्द कवाड़ी अन्तिम खुल्ही, अमृत धार एका डुल्ली, काया करे ठंडी ठार है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, किरपा करे अपर अपार है। चरन प्यार हरि भगवन्तया। दिवस रैण पावे सार, मिल्या मेल साचे कन्तया। साजण साचा मीत मुरार, आपे गुप्त आपे ज़ाहिर आप आपणे रंग रगन्तया। एका जोत हरि निरँकार, दूजी रक्खे शब्द धार पवण स्वासी नाल अपार, साचा मेल साधन संतया। शब्द घोड़े हो अस्वार, हत्थ फड़े नाम कटार, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। मेट मिटाए ठग चोर यार, रक्खे लाज साध संतया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग काला वेस कर, दर दरवेश हरि बेमुखां माया पाए बेअन्तया। कलिजुग माया हरि जी पाई। वेला अन्त ना जाणे हरि जी राई। चारों कुन्ट भुल्ली रुली लक्ख चुरासी सर्ब लोकाई। अमृत आत्म सभ दी डुल्ल्ही, आदि पुरख आदि शक्त जोत निरँजण भुली, दरस ना पायण तीजे नैण। गुरमुख विरले चरन प्रीती घोल घुल्ली, मिल्या मेल हरि साचे साक सज्जण सैणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे संत जनां, तन शृंगार कराने शब्द बिबाणे तन साची लेखी। साचा शब्द तन शृंगारया। किरपा करे हरि गिरधारया। आत्म जोती जोत धरे, मिटे अन्ध अंध्यारया। दिवस रैण संत सुहेला अट्ठे पहर पुकार सुणे, देवे शब्द नाद धुन धुन्कारया। कवण जाणे तेरे गुणे, लक्ख चुरासी छाणे पुणे, गुरमुख विरले विच्चों लभ्भे वेखे वेखणहार रत्नी रत्न जवाहरया। बेमुख पाए भरम भुलेखे, अट्ठे पहर हरि वेखे लेखे, जोती खेल अपारया। ना कोई जाणे औलीआ पीर शेखे, गुरमुख विरला लोकमात कलिजुग तेरी अन्तिम वारे नैण वेखे, जगे जोत इक्क बनवारया। जोती जामा धारे भेखे, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान देवे शब्द इक्क अधारया। एका शब्द इक्क सहारा। जन भगतां देवे कर प्यारा। सोहँ वज्जे तन नगारा। चारों कुन्ट हाहाकारा। राजा राणा होए ख्वारा। मन्नणा पए सिर ते भाणा, आपे जाणे चतुर सुजाना। लक्ख चुरासी अन्त मिटाए पीणा खाणा एका तीर चलाना। रसना खिच्चे हरि कमाना। पहला मारे विच मदीने मक्के, करे खेल श्री भगवाना। लक्ख चुरासी धर्म राए दे दर दुआरे हक्के, कलिजुग काया फल अन्तिम पक्के, शब्द हलूणा इक्क लगाणा। लाड़ी मौत दूर दुराडी हरि दुआरे

८७६
०४

लोकमात खिड़ खिड़ हस्से, प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाना। जोती जामा श्री भगवाना, आपे गोपी आपे कान्हा, ना कोई जाणे जीव निधाना। महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, एका चाढ़े शब्द राणा। शब्द घोड़े हरि अस्वारा, धुर दरगाहों आया दौड़ा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, चौथा चुक्के अन्तिम पौड़ा। भन्ने जीव कलिजुग कौड़ा। ना करे कोई हुदारा, गुरमुखां प्रभ साचा बौहड़ा। शब्द लगाए एका पौड़ा। आप कराए पार किनारा, सच दुआरा ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, भगत जनां हरि किरपा कर, आप मिलाए दया कमाए, एका दूआ एका जोड़ा। एका एक इकल्ला, हरि निरंकारया। साचा हरि महल्ला, जगे जोत अपर अपारया। ना कोई जल ना कोई थला, साची खेल अपर अपारया। ना कोई घड़ी ना पला, अट्ठे पहर ना कोई दिवस ना कोई रैण, एका रंग समा रिहा। सृष्ट सबाई कलि वेखे साचे नैण, भरम भुलेखे आप भुला रिहा। आप वहाए डूंघे वहिण, रसन किसे ना सके कहण, माया जाल हरि अकाल हो दयाल, कलिजुग जीवां अन्तिम अन्त पा रिहा। फल ना दिसे किसे डाल, मस्तक जोती ना जगे दीपक थाल, अन्ध अन्धेर करा रिहा। जन भगतां करे प्रितपाल, शब्द देवे नाम दुशाल, दूई दवेती माया मोह जगत जंजाला, आपे आप हरि कटा रिहा। काया मन्दिर साचा अन्दर इक्क वखाणे धर्मसाल, डूंघी कन्दर तोड़े जन्दर जोती नूर कर कमाल, रंगे रंग इक्क अपारया। लाल अनमुल्लड़े हरि संत प्यारे पुरख अबिनाशी लए भाल, अन्तिम अन्त सुरत संभाल, देवे शब्द नाम वस्त अपारया। लोकमात ना होए कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग समा रिहा। आपणा रंग आपे जाणे। चल्ले चलाए आपणे भाणे। शब्द घोड़े कस तंग, बेमुख भन्नाए काची वंग, ना जाणे कोई सुघड़ स्याणया। धरत मात प्रभ दरमंगी मंग, कर पुकारी प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, लाल मैहन्दी चाढ़े रंग, करे खेल विच संसारया। कलिजुग औध गई लँघ, लक्ख चुरासी होणी भंग, चल्ले शब्द तीर हरि निरंकारया। गुरमुखां बणया साचा संग, जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सद आपणे रंग समा रिहा। हरि का शब्द अमोल भगत वणजारया। गुरमुख विरले उतरे पूरे तोल, हरि साचा तोल तुला रिहा। अन्दरे अन्दर रिहा बोल, इक्क मृदंग वजा रिहा। आत्म पर्दे रिहा खोल्ह, अज्ञान अन्धेर गंवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचा मेल मिला रिहा। काया मन्दिर कोट गढ़ अपारया। वज्जे शब्द चोट, खुल्हे बन्द कवाड़या। गुर पूरा कढ्ढे विच्चों खोट, अमृत देवे साची धारया। कलिजुग जीव आल्हणिउँ डिग्गे बोट, ना कोई फेर उठा रिहा। मायाधारी जगत ख्वारी जगत तृष्ना ना भरी काया पोट, धीरज धीर ना कोए रखा रिहा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क रक्खे भण्डार अतोट, गुरमुखां आप वरता रिहा। मंगदे रहण दर दरबार कोटन कोट, आत्म झोली

८७८
०४

सर्ब भरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क इकल्ला सच महल्ला उच्च अटला आपणा आप सुहा रिहा। उच्च महल्ला हरि निरंकारया। वसे इक्क इकल्ला, ना कोई जाणे गंवारया। हरि जी फड़ाए आपणा पल्ला, लोकमात आवे जावे वारो वारया। पार उतारे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थला, लोआं पुरीआं आप लिखा रिहा। इक्क शब्द फड़ाए जुगा जुगन्त सोहणा सच्चा भल्ला, पंजां चोरां मार मिटा रिहा। फल लगाए काया डाला, दर घर साचे आप खवा रिहा। गुरमुख साचा लोकमात ना होए कंगाला, नाम धन प्रभ साचा आप दवा रिहा। आपे तोड़े जगत जंजाला, अट्ठे पहर होए रखवाला, शब्द साचा कन्न सुणा रिहा। अमृत सुहाए साचा ताला, गुरमुख साचा मारे छाला, दुरमति मैल हरि गंवा रिहा। बेमुखां दर घर साचे लग्गे हड्डां पाला। जगत निबेड़ा काया नगर खेड़ा, ना कोई वसा रिहा। पंच पंचायण अट्ठे पहर जूठा झूठा झेड़ा, माया राणी लाए उखेड़ा, माया ममता मोह वधा रिहा। गुरमुखां बन्ने बेड़ा, लक्ख चुरासी भेड़ भेड़ा, आत्म दर सच दुआरा आप वखाए खुल्ा वहड़ा, हरि आपणा रंग वखा रिहा। अन्तिम करे हक्को हक्क नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, गुरमुख साचे साध संत, शब्द धार कर प्यार विच संसार, जोती नूर कर उजाला हरि कृपाला, साचा दीप जगा रिहा। साचा दीप इक्क जगांयदा। गुरमुख साचे संत जनां, साचे मार्ग पांयदा। पंजां चोरां लाए डन्नां, साचे धाम बहांयदा। भाण्डा भरम हरि भन्ना। आप चढ़ाए शब्द सच चन्ना, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। ना कोई लगाए घर साचे संना, हरि भण्डारा इक्क भरांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुखां प्रभ कर प्यार। दर दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग झूठा भेख मिटांयदा। कलिजुग झूठा मेट मिटाए। औलीआ पीर शेख़ गुर कोई रहण ना पाए। गुरमुखां साचा लेख लिखाए। धुरदरगाही साचा माही बेपरवाही आप लिखाए साचा लेख, बाहों पकड़ आप उठाए। आप सुणाए धुर संदेश, राज राजाना दिस ना आए। जोती जोत सरूप हरि, शब्द बिबाण इक्क उडाए। प्रभ इक्क उडाए शब्द बिबाण, चार कुन्ट दहि दिश एका एक उडाणया। लक्ख चुरासी आई हान, सोहँ वज्जे साचा बान, तख़्तों लाहे राजे राणया। अन्तिम करे हरि पछाण, बेमुख जीवां छुट्टे पीण खाण, गुरमुख विरले मात पछाणया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणे भाणया। हरिजन जन्म अमोल, प्रभ रसना गाया। हरिजन जन्म अमोल अन्तिम तुल्या पूरे तोल, शब्द कंडा हथ्थ रखाया लक्ख चुरासी सुत्ती पई अनभोल, शब्द बान ना किसे लगाया। धरत मात रही डोल, कलिजुग जीवां घोल मचाया। भाग लगा ना काया चोल, रंगण नाम ना रंग चढ़ाया। घर साचे ना वज्जया ढोल, सच मृदंग ना किसे वजाया। आत्म दर सच ख़ज़ाना लैणा फोल, भुक्ख नंग दए मिटाया। दर घर कोए ना लग्गे मोल, लाल अनमुल्लड़ा

काया मन्दिर अन्दर हरि टिकाया। आत्म जन्दर आपे रिहा खोल्ह, गुरमुख साचे हरि हिरदे वाचे रसन रसायणी, आत्म घर साचे नैणी, दर दुआरे पुरख अपारे जोत निरँकारे दर्शन साचा पाया। साची धुन वज्जे धुन्कारे, मिले मेल कन्त भतारे, बणे बणत विच संसारे, साचा संग हरि निभाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, एका मंगी साची मंग, शब्द दात वड करामात पुरख बिधाता आत्म झोली दए भराया। मंगी दात नाम वस्त अपारया। काया मिटाए अन्धेरी रात, आत्म जोती कर उज्जयारया। अमृत बूंद प्याए स्वांत, बैठा दिसे इक्क इकांत शब्द सुहाए सीस ताज, पवण हुलारा इक्क रखा रिहा। आपे अन्दर आपे बाहर गुप्त जाहिरा जोत अकारा। जोती जोत सरूप हरि, साची धारा आपणी आप वहा रिहा। साची धार हरि चलांयदा। आत्म खोल्हे बन्द कवाड़, अग्ग ना लग्गे तत्ती हाढ़, पंजां चोरां आप चबाए आपणी दाढ़, साचा धाम वखांयदा। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, दर घर साचे लए वाड़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, भरम भुल्लेखा दूर करांयदा। आपे परखे चंगे माढ़, धुरदरगही गुरमुख साचे संत जनां साचे लाड़े, साची नारी कन्त प्यारी हरि निरँकारा आपे आप प्रनांयदा। अन्दरे अन्दर सच विहारा, साची सेजा कन्त भतारा, आलस निन्दरा जगत जंजाला, आपे आप मिटांयदा। फल लगाए काया डाला, दस्से सचा राह सुखाला, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी देवे फाँसी, ना कोई किसे छुडा रिहा। एका दर सच्चा दरबारा। जोत नूर हरि अकारा। सर्बकला आपे भरपूर, मंगण जाए ना किसे दुआरा। शब्द रक्खे साची तूरा, जन भगतां सदा सुणारा। वड दाता जोधा सूर जोती नूर, जोती जोत सरूप हरि, करे खेल निराला। हरि का खेल अपार अन्तिम अन्तया। कलिजुग जूठा झूठा वणज वपार, भुल्ले गुणे हरि गुणवन्तया। ना कोई पुरख ना कोई नार, शब्द किया तन शृंगार, झूठी काया अन्त भजन्तया। हरि चरन प्रीती सच प्यार। आपे परखे साचा लेखा साची नीती पुरख अगम्मड़ा नर निरँकार। गुरमुख विरले मानस देही लोकमात अन्तिम कलिजुग जीती, वेले अन्त ना आई हार। हरि काया करे सीतल सीती, जोती जोत सरूप हरि, एका बख्श शब्द अधार। साची शब्द धार धुनी धुनकानया। गुरमुखां देवे कर प्यार, आत्म सुन खुल्हानया। अट्ठे पहर वाजां रिहा मार, हरि सोए आप जगानया। बेमुख सुत्ते कलिजुग माया पसर पसार, भुल्लया नर हरि श्री भगवानया। मायाधारी जगत विकारी, अन्तिम वेले आई हारी, चारों कुंट होए ख्वारी, शब्द डण्डा नर निरँकारी, आप आपणा रिहा हुलारी, ना होवे कोई सहारया। साचा खोल्हे दर दरबारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। राउ रंक रंक राजाना शाह सुल्तानां वड मेहरवाना खिच ल्याए चरन द्वारी। गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना, सोहँ शब्द सच निशाना। इक्क कराए वणज वपारी। करे खेल गुण निधानी वड बलवाना, हरि सच्चा शाह शाह सिक्दारी। राम

रमईआ कृष्ना कान्हा, जोती खेल श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, चार वरनां दस्से इक्क टिकाणा। चार वरनां इक्क द्वारया। मेट मिटाए अठारां बरन, मेल मिलाए ग़रीब निवाज्जया। चारों कुन्ट एका सरन, करे खेल हरि साजन साज्जया। जन भगत खुल्हाए हरन फरन, शब्द सरूपी मारे अवाज्जया। आप चुकाए मरन डरन, वेले अन्तिम रक्खे लाज्जया। प्रभ आया करनी करन, चार कुन्ट पाए भाज्जया। बेमुख जीव भरनी भरन, राज राजानां सीस ना दिसे ताज्जया। गुरमुख साचे प्रभ का भाणा सिर ते जरन, पुरख अबिनाशी प्रगट होए जोत जगाए देस माज्झया। गौड़ ब्राह्मण धुरदरगाही जामन, नेड़ ना आए कामनी कामन, मेट मिटाए अन्धेरी शामन, आप रचाए आपणा काज्जया। सम्बल देस खेल महाना, करे खेल श्री भगवाना, शब्द कसे तीर कमाना वाली दो जहानया। एका झुल्ले जगत निशाना, जोती जोत सरूप हरि, सोहँ शब्द मात धराए, सतिजुग तेरी झोली पाए, देवे माण विच जहान चतुर सुजान हरि वड बली बलवानया। वड बली बलवान नूर नुरंतरा। शब्द रक्खे तीर कमान, चार कुन्ट घर घर लगाए बसंतरा। गुरमुखां चढ़ाए शब्द बिबाण, तिन्नां लोकां इक्क उडान, पार कराए गगन गगनंतरा। साचा नाम पीण खाण, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी आपे जाणे आदि अन्त अन्तिम अन्तरा। अन्तर अन्तर आपे जाणे, घर घर लग्गी बसंतर। वड वड भुल्ले सुघड़ स्याणे, साचा जाप ना जपंतर। पुरख अबिनाशी ना कोए पछाणे, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे वेखे दर दर राजे राणे। राजे राणे दर दर ख्वार। प्रभ अबिनाशी पाए सार। लेख लिखाए अपर अपार। शब्द रक्खे तिखी धार। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, चारों कुन्ट आई हार। धुरदरगाही साचा मेला, आपे गुर आपे चेला, आपे कन्त आपे नारी सच भतार। अचरज खेल हरि जी खेला, धर्म राए दी कटी जेल्हा, जो जन आए चरन द्वार। आत्म साची जोत जगाए बिन बाती बिन तेला, गुरमुख साचा बणे भिखार। आप सुहाए अन्तिम वेला, प्रगट जोत दरस दिखाए रूप अगम्मड़ा अगम्म अपार। लेखे लाए काया चम्मड़ा, कोई ना लाए हरि जी दमड़ा, एका मंगे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां साचा बख्शे शब्द अधार। साचा शब्द जीव अधारया। प्रभ अबिनाशी साचा देवे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। हरिजन साचा प्रभ दर लेवे, लक्ख चुरासी गेड़ कटा; रिहा। आत्म घर साचे लेवे, माया पड़दा पर्हे हटा रिहा। दरस दिखाए देवी देवे, जोती जोत जगा रिहा। कौस्तक मनीआ साचे दर आप लगाए एका थेवे। अज्ञान अन्धेरा दूर करा रिहा। पुरख अबिनाशी अलख अभेवे, लहणा देणा लोकमात मार झात, जन भगतां आप चुका रिहा। लहणा देणा जाए चुक्क, आए हरि सरनाईआ। कलिजुग वेला आया ढुक्क, ना होए कोई सहाईआ। शब्द तीर ना जाए रुक,

८८१
०४

चलाए बेपरवाहीआ। बेमुखां मुख पाए थुक्क, मानस देही भरम भुलेखे आपणा आप गंवाईआ। गुरमुखां भार रिहा चुक्क, छोटे बाले अग्गे लाईआ। ना हरया ना जाए सुक्क, एका रंग रंगाईआ। एका शब्द साची तुक, सोहँ अक्खर जगत वक्खर प्रभ अबिनाशी आपणी आप पढ़ाईआ। लेख लिखाया रोड़ी सखर, प्रभ जोती नूरा सति सरूरा, हाज़र हज़ूरा अमाम महिदी। उम्मत नबी रसूल दी, एका गाह गहिंदी। साचे दर इकल्ली हो हो बहिंदी। इक्क दूजे दे नाल खहन्दी। प्रभ का भाणा ना सिर ते कबूलदी, प्रभ साचा बणत बणाए वेखे खेल दिशा लहन्दी। शब्द मार घर घर पैंदी। लाड़ी मौत हथ्थीं मारे, लाए दोहीं हथ्थीं मैहन्दी। बेमुखां दे अग्गे हो हो बहिंदी। लक्ख चुरासी वरना इक्क भतार, धर्म राए सच सपुतरी रसना बोल बोल कहिन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, करे खेल दिशा लहन्दी। सच महल्ला हरि हरि निरंकारया। इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई आप उपा रिहा। दूजे रक्खे शब्द भल्ला, तीजे पवण घोड़े अस्वारया। चौथे घर घर पाए तरथला, साधां संतां वेख वखाणे वारो वारया। पंचम् घर सति सतिवादी शब्द सरूपी मल्ला, साचा खेल अपारया। छेवें दर साचा हरि खोल्हे, बोले तोले हरि निरंकारया। सतवें महल्ल उच्च अटल बैठा चढ़ लोआं पुरीआं हथ्थ फड़, ना कोई किला ना कोई गढ़, ना कोई दीसे चार द्वारया। अठां तत्तां लक्ख चुरासी रिहा घड़, भेखाधारी भेख वटा रिहा। नौ दुआरे लाए लड़, बेमुख अन्त प्रना रिहा। गुरमुख वसे साचे घर, दसवां दर आप खुल्हा रिहा। ना जन्मे ना जाए मर, जोती नूरा डगमगा रिहा। अन्तिम अन्त साचे संत बाहों लए फड़, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। ना कोई सीस ना धड़, ना कोई सके हरि जी फड़, गुरमुख साचे संत जनां दासन दास आप अख्वा रिहा। आपे भन्ने आपे लए घड़, आपे अन्दर जाए वड़, आपणे आप बाहर वखा रिहा। ना मरे ना जाए सड़, अग्नी जोती इक्क रखा रिहा। रक्खे वसेरा बहत्तर नाड़, पंजां चोरां कढ्ढे फड़, शब्द घोड़ा आप दुड़ा रिहा। गुरमुख साचा साचे पौड़े जाए चढ़, कलिजुग माया ना जाए हड़्ह, प्रभ आपणा लड़ फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे सच घर, सच सिँघासण ला रिहा। सच सिँघासण हरि अस्थूलया। कलिजुग माया भरम भुलाया, भागां मन्दा कलिजुग अन्तिम भूलया। जगत विकारी झूठा धन्दा, ना कोई मेल मिलावे कन्त कन्तूलया। ना कोई शब्द सुणाए एका छन्दा, ना चाढ़े काया रंग चलूलया। बेमुखां काया दुखी बन्द बन्दा, प्रभ अबिनाशी एका भूलया। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्दा, कलिजुग अन्तिम लाए फुलवाड़ी वेख वखाए सतारां हाढ़ी, गुरमुख साचा कँवल फुल्ल संत प्यारा विच मात दे फूलया। शब्द डण्डे रिहा ताड़ी, शब्द घोड़े कर अस्वारी, जंगल जूह विच पहाड़ी, बेमुखां टोहे नाड़ी नाड़ी, प्रभ साचा डन्न लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां साचे मार्ग ला रिहा। साचा मार्ग हरि निरँकारा है। गुरमुख विरला जाणे, जिस देवे कर प्यारा है। दर घर साचे रंग एका माणे, मिले मेल पुरख भतारा है। मिल्या मेल कन्त भतार, आत्म सोई जागया। साचा शब्द इक्क भण्डार, सुणाए साचा रागया। जन भगत देवे वारो वार, आत्म धोए अगले पिछले दागया। पुरख पुरखोतम साची धार विच संसार, साचा राह इक्क वखाए चार वरनां इक्क सरना एका लागया। आप आपणी दया कमाए, संत सुहेले लए मिलाए, होए वड वडभागया। साची रंगण नाम चढ़ाए, शब्द कंगण तन पहनाए, हरि मिल्या कन्त सुहागीआ। परमानंद एका सुख आप उपजाए, जोती चमके साचा चन्दन, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए, खोले आत्म ताकीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पकड़ उठाए शाह इराकीआ। आप उठाए शाह सुल्तानां, मारे शब्द तीर निशाना, चारों कुन्ट होए वहीर, कलिजुग जीवां लथ्थे चीर, हथ्थ ना आउणा किसे नीर, वेले अन्त ना कोए सहाया। जूठी झूठी मिटे लकीर, बेमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, दूई द्वैती आत्म वढे, शब्द वेलणे रिहा पीड़। पंजां चोरां फड़ ना छड्डे, आपे वेखे शाह हकीर। करे खेल अड्डो अड्डे, सोहँ मारे इक्क जंजीर। जन भगतां लडाए साचे लड्डे, चाढ़े डण्डे अन्त अख़ीर। भरम भुलेखे सारे कढ्ढे, बज़र कपाटी जाए चीर। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां अमृत आत्म सच दुआरे इक्क प्याए आत्म सीर। आत्म सीर हरि बनवारया। किसे हथ्थ ना आए नीर पीर फ़कीर, दर दर फिरन भिखारया। माया राणी लाहे चीर, भुल्लया नर निरंकारया। कलिजुग तेरा वक्त अख़ीर, प्रभ करे खेल बेमुहानया। जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपारे, छड्डणे पैणे हाणी हाणीआ। हरि का खेल अगम्म रूप अपार है। आपे जाणे आपणी धार, लक्ख चुरासी पई भरम है। वरते वरतावे विच संसार, जीवां जन्तां वेख वखाणे आपे जाणा पूर्ब कर्म है। गुरमुख साचा शब्द सुणाए काने, आत्म जगे जोत महाने, लेखे लाए काया चीर है। मिले मेल श्री भगवाने, चरन धूढ़ सच्चा इशनाने, मूर्ख मूढ़ चतुर सुजान बणाने, देवे नाम गुण निधान है। आप चढ़ाए इक्क बिबाणे, पुरीआं लोआं पार कराने, सच महल्ले आप वसाने, जोती मेल नर निरँकार है। ना कोई पवण ना मसाणे, अवण गवण कोई ना जाणे पतित पावण, जोती जोत सरूप हरि, एका जोत श्री भगवाने। एका जोत श्री भगवानया। जन भगतां देवे शब्द आत्म ब्रह्म ग्यानया। सिध्धा जाए इक्क निशान, रसना मारे तीर कमानया। आप चुकाए जम की कान, हरि बलवान वाली दो जहानया। मेट मिटाए जीव शैतान, तोड़े किला हँकार वड अभिमानया। जन भगतां देवे शब्द आत्म ब्रह्म गयानया। वेख वखाणे सर्ब संसार बेईमान, लक्ख चुरासी पुण छाण, गुरमुखां देवे चरन ध्यान, आत्म सति सरूर एका नूर, भरम

भुलेखा दूर करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, दर साची नईआ, चार वरन कराए भैणां भईआ, एका थान बहानया। चार वरन भैणां भईआ। पुरख अबिनाशी साचा साक सज्जण सैण सईआ। घट घट वासी मात पित्त करे हित्त नित नवित्त, आप आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अबिनाशी राखो चित्त, सदा सुहेला एका मित, आदि अन्त जुगा जुगन्त ना विछड़ गईआ। ना कोई वेखे वार थित्त, मानस देही जाणा जित्त, अमृत काया लैणी सित्त, साची धार हरि निरँकार, काया गागर विच रखईआ। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, इक्क वखाए सच घर, जोत निरँजण डगमगईआ। जोत निरँजण डगमगाए। दूसर कोए दिस ना आए। सच सिँघासण हरि जी सोए, ना जन्मे ना कदे मोए। एका जोत सद बलोए। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, बेमुख जीव ना जाणे कोए। बेमुख जीव अञ्याण जगत दीवानया। पुरख अबिनाशी कर पछाण, जोत सरूपी पहरे बाणया। जिस ने दीआ पीण खाण, कलिजुग भुल्लया गुण निधानया। प्रगट होए पंज शैतान, काया ममता लोभ लुभानया। काया खेती होई वैरान, साचा हल ना कोए जवाणया। साचा बीज ना पाया शब्द गुण निधान, अमृत फल कवण खलानया। अमृत आत्म काया सिंच ना किसे नुहाया, आत्म साचे ताल ना मिल्या मेल भगवानया। गुरमुख साचे संत दुलारे, पुरख अबिनाशी खड़्हा आपणे दर, आत्म दर दहिलीज अन्दर बाहर एका धाम वसानया। आत्म दर सच दुआरा। एका दिसे हरि निरँकारा। गुरमुख नुहाए साचे सर, अमृत देवे इक्क भण्डारा। साचा झिरना रिहा झिरा, आवे जावे वारो वारा। किरना किरना रिहा वर, बूंदा बूंदी अपर अपारा। इक्क खुल्हाया साचा सर, जोती जोत सरूप हरि, जो जन मंगे काया रंगे, शब्द वज्जे इक्क मृदंगे, मंगे नाम हरि भिखारा। मंगे हरि नाम भगत भगवानया। सुक्का हरया करे चाम, साचा करे वणज वपारया। मेल मिलावा साचे राम, आत्म जोती कर उज्जयारया। एका वेखे नेत्र पेखे, पुरख अबिनाशी सच वसेखे, मिटे रैण अन्ध अंध्यारया। आप मिटाए बिधना लिखी रेखे, जोत सरूपी धारे भेखे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। नर नरायण हरि निरंकारया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़या। आत्म खुल्ल्हे कवाड़, जोत प्रकाशया। परे्ह हटाए दूतां धाड़, पुरख अबिनाशी शब्द वज्जे काड़ काड़, तत्तां करे दासन दास्सया। गुरमुख बणाए साचे लाड, शब्द चलाए स्वास सवास्सया। दूई द्वैती पड़दा देवे पाड़, मानस जन्म करे रहिरास्सया। कलिजुग माया देवे साड़, अन्तिम अन्त करे विनास्सया। दर घर साचे आपे परखे चंगे माढ़, बेमुख घर घर करन हासीआ। शब्द घोड़े लए चाढ़्ह, दर घर साचे देवे वाड़, जन भगतां करे बन्द खुलासीआ। हरिजन तत्ती वा ना लग्गे हाढ़, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत प्यारे सदा सदा बलि बलि जासीआ।

बलि बलि बली बलवानया। आप कराए वल छल, जोत धरे श्री भगवानया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल उचे मन्दिर किले कोट पखानया गुरमुखां आत्म तोड़े जन्दर, शब्द मारे इक्क दवानया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, किसे हथ्थ ना आए हरि भगवानया। जगे जोत अन्दरे अन्दर, नाम खुमारी अट्ठे पहर दिवस रैण करे मस्तानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे नाम वर, एका शब्द ब्रह्म गयानया। ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म ध्यानया। शब्द निशानी विच जहानया। आवण जावण भेव चुकानी, दूई द्वैती भेव मिटानया। सीने वज्जे एका कानी, आर पार पार आर एका वार करानया। माया राणी कलिजुग अन्तिम करे सोलां तन शृंगार, आप भुलाए राजे राणया। बेमुख जीव होए दुहागण नार, ना मिले कन्त ना बणी सच सवाणीआ। गुरमुख साचे विरले पुरख अबिनाशी चरन लागण, एका गावण साची बाणीआ। आप उपजाए शब्द रागन, इक्क वजाए साचा नादन, ढोल मृदंग ना कोई रखा रिहा। माया डस्से ना डसणी नागन, आत्म रसन आप बुझा रिहा। सच सरोवर आत्म सदा इशनान कराए आप बणाए हँस कागण, प्रभ साचा साचा कर्म कमा रिहा। गुरमुखां होए वड वडभागण, जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत साचा मेला कलि होया वक्त सुहेला आपे आप करा रिहा। गुर संगत मन वधाईआ। हरि जस हरि हरि रसना गाईआ। पुरख अबिनाशी हिरदे वसे, संत सुहेले राह साचा दस्से, साचा मार्ग

८८४ ०४ रिहा वखाईआ। हरि दुआरे बहिणा नस्स, असथिर चुबारे साधा संतां दस्स, संत सुहेले राह साचा दस्स, करना वास मिटाउणी हरस, नेत्र नैण तृखा रिहा बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सति संतोख अन्तिम मोख, गुर संगत आप दवाईआ। गुर संगत आई चल द्वार। धर्म राए ना करे ख्वार। शब्द खण्डा मारे मार। आपे पाए साची वंडा, ना कोई वेखे पुरख नार। गुरमुख साचा सदा सुहागी ना आत्म होए रंडा, मिलिअ मेल कन्त भतार। आत्म तोड़े जगत घुमंडा, मंगे नाम सच वस्त बण भिखार। पंजां चोरां देवे दंडा, रसना गाए गुण निरँकार। आप वखाए काया मन्दिर उच्चा डण्डा, बैठा दिसे आप अपार। गुरमुखां कराई साची वंडा, मानस जन्म ना आए हार। वेखे खेल विच वरभण्डा, चारों कुन्ट पैणी डण्डा, बेमुख जीवां आई हार। गुरमुख साचे संत जनां एका मिल्या नाम धना, आदि अन्त ना आई हार। धन्न कमाई संत जन, जग साचा राह वखाया ए। धन्न कमाई संत जन, कलिजुग सोया जीव आप उठाया ए। धन्न कमाई संत जन, गुर संगत आत्म बीज लोकमात आपणी हथ्थीं पाया ए। मिल्या मेल हरि समरथ कथना प्रभ दी जाए ना कथी, लक्ख चुरासी जाए मथी, अचरज खेल रचाया ए। गुरमुखां आत्म विस विसायण लथ्थी, आप चढ़ाए शब्द रथीं, बेड़ा पार कराया ए। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, बेमुखां दर आए डर, झूठे धन्दे लाया ए। झूठा झेड़ा अन्त ख्वारी। ना

कोई बन्ने बेड़ा, ना दीसे पार किनारी। धरत मात तेरा खुल्ला होए वेहड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी चण्ड प्रचण्डे चलाए वारो वारी। शब्द लगाए इक्क उखेड़ा, ढहिंदी जाए महल्ल अटल उच्च अटारी। गुरमुख विरला अग्गे हो हो बहिंदा, जिस जपया नाम राम मुरारी। संत साचा कलिजुग जीवां उठ उठ कहन्दा, कलिजुग अन्तिम वेला जूए बाज़ी मूल ना हारी। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सदा तेरे अन्दर, आत्म रहन्दा, देवे दरस अगम्म अपारी। दरस अगम्म अपार, रूप अपारड़ा। गुरमुखां देवे कर प्यार, हरिजन मीत मुरारड़ा। शब्द बख्शे साची धार, कलिजुग दस्से पार किनारड़ा। मानस देही पैज संवार, रंगे रंग इक्क अपारड़ा। इक्क वखाए हरि द्वार, चार वरन सच्ची सरकारड़ा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक सुहाए बंक द्वारड़ा। बंक दुआरा इक्क सुहाउणा। चरन ब्यासों पार टिकाउणा। शब्द स्वासी इक्क चलाउणा। पुरख अबिनाशी खेल रचाउणा। घट घट वासी मेट मिटाए मदिरा मासी, मस्तूआणा धाम सुहाउणा। शब्द दात हरि झोली पाउणा। आत्म तोड़े सर्ब हँकार, गुर संगत साची नाल रलाउणा। राणे संगरूर लाहे उदासी, प्रगट होए दरस दिखाउणा। आए द्वार बण भिखार, शब्द दात हरि झोली पाउणा। साचा करे, आप विहार मस्तूआणा धाम तजाउणा। करे खेल सच्ची सरकार, जमन किनारे डेरा लाउणा। साधां संतां सुणे पुकार, आत्म ध्यानी ब्रह्म ज्ञानी। शब्द निशानी मारे तीर अपर अपार, जगे जोत एका शक्त आदि भवानी। वाली हिन्द करे ख़बरदार, प्रगट होए वाली दो जहानी। दिल्ली तख्त शाह सुल्तानी। नेत्र नैण वेख विचार, एका शब्द चलाए सोहँ सच्ची बाणी। नौ खण्ड पृथ्मी सतां दीपां सच्ची राणी, प्रभ अबिनाशी बन्ने आपे धार। जोती जोत सरूप हरि, अग्गे करे बन्द कवाड़, भेव खुल्लाए सतारां हाढ़, पड़दा उहला ना कोई रखाईआ। ना कोई पड़दा ना कोई उहला। शब्द सरूपी इक्क सुणाए साचा ढोला। सृष्ट सबाई आया तोला। सच दुआरा हरि निरँकारा मातलोक कलि अन्तिम खोल्ला। इक्क सुणाए हक्क जैकारा, करे खेल कलीआं सोलां। दूजे दर ना बणे कोई भिखारा, देवे वस्त हरि नाम अमोला। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल चवीआं अवतारा। बीस चार चार बीस, वेख वखाए राग छतीस। मुला काज़ी शेख़ मुसायक, प्रभ अबिनाशी साचा नायक, पढ़े पढ़ाए इक्क हदीस। पंडत पांधे वड ज्ञानी, आत्म वेखे शब्द निशानी, तोड़े माण जगत अभिमानी, झूठी चकी रहे पीस। हरि हरि जोती इक्क निशानी, गुरमुख विरले मात पछाणी, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि शक्त भवानी। हरिसंगत दर घर परवानया। पुरख अबिनाशी एका दर होणा मंगत, देवे नाम गुण निधानया। काया चोली चाढ़े रंगत, गुणवन्त हरि गुण निधानया। मानस देही ना होए भंगत, काया

कोट कढ्ढे खोट, एका चोट लग्गे निशानया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, मिल्या मेल नर हरि हरि नर श्री भगवानया। भिन्नी रैनड़ीए कलि मिले वधाई। भिन्नी रैनड़ीए हरिजन साचे संत सुहेले, दर घर साचे होए मेले, रसना गुण रहे गाई। भिन्नी रैनड़ीए मिल्या मेल साचे माही, धुरदरगाही आपणा रंग साचा संग रखाई। भिन्नी रैनड़ीए जोती जोत सरूप हरि, साची जोत मात धर, करे खेल रघुराई। भिन्नी रैनड़ीए शब्द ढंडोरड़ा। भिन्नी रैनड़ीए कलिजुग माया झूठी छाया, कलिजुग जीवां मात भुलाया, अन्तिम वेला रहि गया दिन थोरड़ा। गुरमुख साचा भिन्नणी रैण सुहञ्जणी साचे मार्ग लाया, आप बन्न्हाया बेरड़ा। भिन्नी रैनड़ीए रघु रघुवंसा साचा बंसा पुरख पुरखोतम एका गाया, करे अन्त निबेड़ा। भिन्नी रैनड़ीए रंग चलूला। प्रभ अबिनाशी जामा पाया, लक्ख चुरासी दूल्हो दूल्हा। भिन्नी रैनड़ीए हरिजन साचे मेल मिलाया, मिल्या मेल कन्त कन्तूला। भरम भुलेखा दूर कराया, भिन्नी रैनड़ीए जन भगतां देवे शब्द झूला। इक्क हुलारा नाम रखाया, भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचा संत दुलारा, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा, दर घर साचे फलया फूला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, करे अन्त प्यारा। भिन्नी रैनड़ीए हरि साचा नैणा। भिन्नी रैनड़ीए दर घर साचे एका नाउँ सोहँ शब्द सुहागी गहणा। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो बेपरवाहो, चरन प्रीती साचा नेंह दर
८८६ ०४ घर साचे लाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख अन्तिम पकड़े बाहों। भिन्नी रैनड़ीए वणज ८८६ ०४
अपारया। भिन्नी रैण हरि मिल्या साक सज्जण सैण अन्तिम वारया। भिन्नी रैण बेमुखां माया पाए बेअन्त, आत्म करे बन्द कवाड़या। गुरमुख उठाए साचे संत, बज़र कपाटी पड़दा पाड़या। लोकमात बणाए साची बणत, माया ममता जोती अग्न देवे साड़या। भिन्नड़ी रैण महिमा जगत अगणत, गुरमुख आत्म दर द्वार आप सुहाए धुरदरगाही साचा लाड़या। भिन्नड़ी रैण संत दुलारे वेख विचारे थांउँ थाँईं, जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। जन भगतां देवे दर सरनाई, शब्द घोड़े हरि जी चाढ़िआ। भिन्नड़ी रैण खुशी मनाई, प्रभ अबिनाशी दया कमाई, गुर संगत साची संग रलाई, दर घर साचे वड़या। भिन्नड़ी रैण गुर गुर संगत साचा संग रलाई। भिन्नड़ी रैण गुर संगत प्यारा। भिन्नड़ी रैण प्रभ दर होई नाम मंगत, चढ़े रंग अपर अपारा। भिन्नड़ी रैण जन भगतां मिटाए भुक्ख नंगत, बेमुख सोए पैर पसारा। भिन्नड़ी रैण गुरमुख वेखे साचे नैण, नाता बणया भाई भैण, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम खेले खेल विच संसारा। भिन्नड़ी रैण सोई जागी। मिल्या मेल दरस वेखे साचे नैण, शब्द सुणे साचा रागी। पुरख अबिनाशी साक सज्जण सैण, चरन कँवल कँवल चरन प्रभ साचे लागी। भिन्नड़ी रैण आप चुकाए लहिण देण, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां मेल मिलाया, इक्क दूजे

दा लड़ फड़ाया, मिले वड्याई वड वडभागी। भिन्नड़ी रैण गुरमुख साचे संत दुलारे। भिन्नी रैनड़ीए आदि अन्त जुगा जुगन्त, गुरमुख विरला जाणे संत, वेखे रंग अपारे। भिन्नी रैनड़ीए बेमुखां माया पाए बेअन्त, निन्दरा आलस दए हुलारा ए। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुखा मेल मिलावा साचे कन्त, एका सेजा सुत्ते नारी पुरख भतारा ए। भिन्नी रैनड़ीए कलिजुग जीव भुलाए जन्त, झूठी माया अन्त विगुत्ते, भरया इक्क हँकारा है। भिन्नी रैनड़ीए आप सुहाई गुरमुख साचे संत जनां दी साची रुत्ते, होई बसंत खिड़ी गुलज़ारा है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम भण्डारा है। धन्न कमाई संत जन, रसना हरि हरि गाया। धन्न कमाई संत जन, एका वारे पुरख अबिनाशी पाया। धन्न कमाई भगत जन, आत्म दर बन्द खुल्हाया। धन्न कमाई भगत जन, साचे घर एका एक डेरा लाया। धन्न कमाई संत जन, आत्म तीर्थ नुहाए साचे सर, दूई द्वैती दुरमति मैल गंवाया। धन्न कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप हरि, दोहां धिरां एका घर साचा मेल मिलाया। धन्न कमाई संत जन, हरि चरन ध्यान। धन्न कमाई भगत जन, आत्म जोती जोत मिलान। धन्न कमाई संत जन, वरन गोती भेव चुकान। धन्न कमाई भगत जन, साचा शब्द माणक मोती चोग खाण। धन्न कमाई संत जन, मिल्या मेल धुर संजोगी, लक्ख चुरासी फंद कटाना। धन्न कमाई भगत जनां, करे दरस हरि अमोघी, माया ममता मोह चुकाना। धन्न
८८७ ०४ कमाई संत जन, आत्म रस रिहा भोगी, आत्म सेजा साचा कन्त इक्क वसाना। धन्न कमाई भगत जन, जोती जोत सरूप ८८७ ०४
हरि, दोहां धिरां एका घर, शब्द सरूपी मेल मिलाना। धन्न कमाई संत जन, शब्द अधारया। धन्न कमाई भगत जन, रसना गाए हरि गुण गुणवन्ता गुण निधानया। धन्न कमाई संत जन, माया राणी छाण पुण, एका नाता पुरख बिधाता, रक्खे चरन ध्यानया। धन्न कमाई भगत जन, एका वेखे पिता माता, पुरख अबिनाशी चतुर सुजानया। धन्न कमाई संत जन, दुरमति मैल तन तों नासी, आत्म जोत सच्ची प्रकाशी, वेखे खेल महानया। धन्न कमाई भगत जन, मानस जन्म करे रहिरासी, अन्तिम वेले बन्द ख़लासी, नेड़ ना आए पंज शैतानया। धन्न कमाई संत जन, जगत वड्याई भगत दोहां मिल्या नाम धन्न, रसना गाया स्वास स्वासी। धन्न कमाई संत जन, सदा अडोल्लया। धन्न कमाई भगत जन, हरि अन्दरे अन्दर बोल्लया। धन्न कमाई संत जन, पूरा तोल तोल्लया। धन्न कमाई संत जनां, आत्म सेजा बैठा इकांत, आत्म पड़दा खोल्ल्हया। धन्न कमाई भगत जन, अमृत पीवे बूंद स्वांत, अन्तिम मेट मिटाए अन्धेरी रात, साची रंगण नाम चढ़ाए, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, दोहां साची बणत बणाए, तन पहनाए शब्द सच्चा चोल्लया। शब्द चोला तन श्रृंगार है। प्रभ अबिनाशी खेल अपार है। घनकपुर वासी जोत प्रकाशी, मेट मिटाए मदिरा मासी, फड़े शब्द खण्डा दो धार है।

बेमुख दर ते करन हासी, गुरमुख गायण स्वास स्वासी, पवण जोती शब्द हुलार है। ना कोई वरन ना कोई गोती, गुरमुख चुणे माणक मोती, इक्क बणाए सच्चा हार है। दुरमति मैल काया धोती, लक्ख चुरासी रही रोती, हरिजन उठाए आत्म सोती, प्रभ देवे इक्क हुलार है। किसे हथ्थ ना आवे कोटन कोटी, उचे पर्बत चढ़के चोटी, लक्ख कटायण बोटी बोटी, अग्न भबूती ख़ाक रमायण तेड़ ना दिसे किसे लंगोटी, ना मिल्या नर निरँकारा है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, सद वसे दर दुआरा है। हरि संत सुहेला मीत नर निरँजणा। जुगा जुग चलाए रीत, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, चरन धूढ़ रखाए साचा मजना। गुरमुख विरला गाए एका सुहागी गीत, मेल मिलावा हरि साचे साक सैण सजणा। दिवस रैण राखो चीत, दरस दिखाए तीजे नैणां। काया करे पतित पुनीत, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा। गुरमुख साचे संत शब्द दुलारया। जगत बणाई बण गई बणत, मिल्या मेल जोत निरंकारया। अचरज रीत आदि अन्त पूरन भगवन्त, साचे संत आप उपजा रिहा। बेमुखां माया पाए बेअन्त, पकड़ पछाड़े जूठे झूठे माया लूठे देवे दंत, शब्द खण्डा इक्क उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां मेल मिलाए साचे कन्त, एका मार्ग ला रिहा। एका राह हरि वखाए। धर्म राए ना दए फाह, लक्ख चुरासी फंद कटाए। दरगहि साची देवे थां, एथे ओथे होए सहाए। आपे पिता आपे मां, सदा रखाए ठंडी छाँए। कलिजुग अन्तिम अन्त घर घर उडाए कां। जोती जोत सरूप हरि, बेमुख रुलाए दर दर किसे ना दिसे कोई थां। सर्बकला समरथ, नर निरंकारया। जुग जुग शब्द चलाए रथ, लोकमात खेल अपारया। जन भगतां देवे नाम वथ, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटा रिहा। पंजां चोरां पाए नत्थ, डोर आपणे हथ्थ रखा रिहा। लक्ख चुरासी होणी सत्थ, कलिजुग वेला अन्तिम आ रिहा। सीआं रखाए साढे तिन्न हथ्थ, आत्म दर जायण लथ्थ, दीपक जोती हरि जगा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, जिउँ रामा घर दसरथ, आपणा भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं बणत बणा रिहा। लोआं पुरीआं बणत बणाए। आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि साचा साची धार बन्ह्हाए। किसे दिस ना आए देव दंत, करोड़ तेतीस सुरपति राजा इन्द रसन रसायणी रहे गाए, भेव कोई ना पा रिहा। जोती जामा दीन दयाला शब्द ल्याए साची माला, फल लगाए काया डाला, गुरमुख साचे आप जगा रिहा। अन्तिम कलि ना खाए काला, आप नुहाए अमृत सर साचे ताला, दूई द्वैती मैल गंवा रिहा। हरिजन साचा मारे छालां, पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्क अनमुल्लड़ा लभ्भे लाला, जगत जवाहरी मुल कोए ना पा रिहा। गुरमुख काया सच भण्डारी आपे वेखे परखे हरि जी तोला, तोलणहारी शब्द कंडा साचा डण्डा, सेर धड़ी ना कोई रखा रिहा। गुरमुख

विरले पाई वंडा, वेखे खेल जोती मेल शब्द धार हरि चला रिहा। बेमुख जीवां दिस ना आई आत्म भरया इक्क घमंडा, लक्ख चुरासी होई रंडा, साचा कन्त सुहाग ना कोई हंढा रिहा। चारों कुन्ट पावण वंडां, पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत निरँजण दीन दयाला हरि कृपाला जोत ज्वाला, करे खेल हरि रघुराईआ। हरि का खेल अगम्म किसे ना जाणया। कोई भेव ना जाणे हड्ड मास नाड़ी चम्म, पुरख अबिनाशी किसे ना जाणया। लेखा लिखे गिणे ना कोई आप आपणे दम, मानस जन्म बेमुहाणया। गुरमुख विरला चरन बैरागी जगत त्यागी रोए आत्म रैण छम्म छम्म, अमृत धार इक्क वहा रिहा। प्रभ अबिनाशी वड वडभागी, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख बहाए साचे घर, शब्द सुणाए साचा रागी। सच्चा राग शब्द सुणांयदा। गुरमुख सोया जाए जाग, प्रभ आत्म तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जूठा झूठा धोए दाग, कान्हा कृष्ना दया कमांयदा। शब्द बन्न्हाए तन साचा ताग, अन्तिम कलि ना कोई तुड़ांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, चारों कुन्ट फिरांयदा। माया डस्सणी ना डस्से नाग, शब्द तीर इक्क रखांयदा। हरिजन संत बणाए हँस सच्चे काग, रसना चोग शब्द माणक मोती आप चुगांयदा , मेल मिलावा कन्त सुहाग, साची सेजा आप बहांयदा। गुरमुख विरले वड वडभाग, जोती जोत सरूप हरि, दरस अमोघा धुर संजोगा आपणा आप मिलांयदा। मेल मिलाए हरि बनवारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। जगी जोत इक्क निरँकारी। वरन गोत मेट मिटाए राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदारी। जन भगतां दुरमति मैल रिहा धोत, सोहँ देवे आत्म नाम ख़ुमारी। लक्ख चुरासी रही रोत, दर दर घर घर जूठे झूठे फिरन वपारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां आप वखाए दया कमाए सच्चा दर दरबारी। एका दर दरबार पुरख निरँजणा। साचा करे वणज वपार, चरन धूढ़ इक्क रखाए मजना। मानस जन्म ना आए हार, मेल मिलावा साचे सज्जणा। तोड़े जगत जंजाल आत्म देवे शब्द कर प्यार, जो घड़या सो अन्तिम भञ्जणा। सोलां कराए तन शृंगार, गुरमुख साचा साची नार, मिले मेल हरि कन्त भतार, वेले अन्तिम पड़दा कज्जणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां, अमृत साचा जाम प्याए, सच घर पी पी कलिजुग रज्जणा। अमृत साचा जाम हरि पिलांयदा। ना कोई लए दाम, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। काया सुक्का हरया करे चाम, पूरन इच्छया आप करांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी शाम, दीपक जोती आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जना आपे कलि मिलांयदा। जोती जामा श्री भगवान। ना कोई जाणे जीव निधान। गुरमुख विरला संत कलिजुग चतुर सुजान। बेमुखां माया पाए बेअन्त आत्म हँकारा जगत विकारा, काया मन्दिर अन्ध अन्धयारा, करे खेल

आदि अन्त जुगा जुगन्त, धुरदरगाही साचा माही, कलिजुग जूठा झूठा अन्तिम अन्त होए भस्मंत, ना कोई दीसे अन्त निशान। बेमुखां हथ्थ फड़ाए ठूठा, दर दर घर घर मंगण भुले रुले जीव शैतान। गुरमुख विरला लोकमात मार झात आप मनाए कलिजुग रुठा, धरे ध्यान श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साचा देवे नाम वर, एका एक जन भगत टेक, कलिजुग माया ना लाए सेक, सोहँ शब्द सच्चा दान। देवे दान हरि वड दानया। आत्म तुट्टे झूठा माण, मिले मेल जोत भगवानया। आपे देवे पीण खाण, चरन धूढ़ सच्चा इशनानया। इक्क रखाए आपणी आण, साचा शब्द चलाए सच्ची बाणीआ। मेट मिटाए अञ्जील कुरान, कलिजुग अन्तिम हानया। वेख वखाणे वेद पुरान, खाणी बाणी हरि पछाणया। रसना छुट्टे तीर कमान, फल दिसे ना किसे डाहनया। पकड़ उठाए राज राजान लिखे लेखा वाली दो जहानया। एका शाह वडा शहान हरि भगवान दूसर किसे दिसे ना कोई निशानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, तोड़े माण जगत अभिमानया। प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े, करे खेल गुण निधानया। गुरमुख साचे चरन प्रीती साची जोड़े, आत्म देवे एका ब्रह्म हरि एका ब्रह्म ज्ञानया। आपे वेखे मिट्ठे कौड़े, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआं। दर घर साचे इक्क लगाए साचे पौड़े, संत सुहेले आप चढ़ानया। गुरमुखां हरि साचा बौहड़े, लक्ख चुरासी होणी अन्त वैरानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल ब्राह्मण गौड़े, वेद व्यास लेख लिखानया। वेद व्यासा बण लिखारी। पुरान अठारां रिहा चतारी, चार लक्ख सतारां हज़ारी, सलोक लिखाए वारो वारी। नारद मुन ज्ञान रखाए, ब्रह्मा सुत दया कमाए, इक्क निभाए सच्ची यारी। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। लिख्या लेख वेद व्यासा। कलिजुग अन्तिम वेख तमाशा। दर दर घर घर जीवा जन्तां आत्म होई सर्ब उदासा। जूठे झूठे माया धारी, एका फड़या हथ्थ विच कासा। गऊ ग़रीब ना कोई पावे सारी, राजे राणे करन हासा। प्रगट होए वड बलकारी, लक्ख चुरासी आपे तोले तोलणहारा, वेख वखाणे तोला मासा। कलिजुग जीवां मानस जन्म जूए बाजी हारी, मुख लगाया मदिरा मासा। ना मिल्या मेल हरि निरँकारी, मानस जन्म होया रासा। चारों कुन्ट होए ख्वारी, दर दर घर घर फिरन भिखारी, कलिजुग अन्तिम होणा नासा। गुरमुख साचे संत जन सोहण चरन द्वारी, लाड़ी मौत चारों कुन्ट दोवे हथ्थीं फेरी जाए बहारी, जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे जगत तमाशा। लाड़ी मौत हो त्यार। मंगे वर प्रभ चरन द्वार। प्रभ अबिनाशी किरपा धार। कलिजुग अन्तिम आई हार। गुरमुख विरला संत आत्म रहे सदा उदासी, एका मंगे दरस करतार। रसना गाए स्वास स्वासी, एका शब्द एका धार। किसे हथ्थ ना आए पंडत पढ़ पढ़ थक्के काशी, निरगुण रूप नर नरायण निराहार।

८६१ ०४

जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां होया रहे दासी, फिरदा रहे दर द्वार। हरिभगतां होए दास हरि हरि दानया। वेख वखाए पृथ्मी अकाश, वाली दो जहानया। आदि अन्त ना जाए विनास, जोती खेल गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, सदा वसे आस पास, जन भगतां मेल श्री भगवानया। कलिजुग भेख अपार हरि सुल्तानया। जोती जामा जगत अपार, करे खेल मात महानया। लक्ख चुरासी गुण अवगुण रिहा विचार, दिवस रैण वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे जन भगत पछाणे सुघड़ स्याणे आत्म कर कर ध्यानया। आत्म करे ध्यान, सर्ब विचारदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, मारे तीर ब्रह्म ज्ञान दा। एका बख्शे चरन ध्यान, अमृत देवे सच्चा सीर, मिले मेल हरि निगहबान दा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक लक्ख चुरासी रक्खे टेक, जन भगतां करां बुध बिबेक, गुरमुख विरला वेखे खेल गुण निधान दा। गुरमुख वेखे खेल, हरि खिला रिहा। साचे नेत्र लए पेख, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़, मुसायक गौंस कुतब बाज़ी हारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अपर अपारया। अपर अपार खेल रचांयदा। लोकमात सच विहार, भेव किसे हथ्थ ना आंयदा। ना कोई दीसे शाह दारा, एका तीर शब्द चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी कारा, पीर फ़कीर कोए भेव ना पांयदा। आपणी कार आप करांयदा। सतिजुग साची बन्ने धार, शब्द घोड़े हो अस्वार, लोकमात फेरा पांयदा। लोआं पुरीआं पैरां हेठ लिताड़, चौदां लोकां शब्द सरूपी रिहा पाड़, आपणा रंग रंगांयदा। लक्ख चुरासी रिहा साड़, मगर लगाए अगम्मी धाड़, लुकया रहण ना देवे कोई झाड़, साचा लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम आपणी बणत बणांयदा। अस्सू तिन्न दिवस जाए चढ़। शाह सुल्तानां प्रभ लए फड़। शब्द सरूपी अन्दर वड़। आपे तोड़े जूठा झूठा किला गढ़। चरन प्रीती एका जोड़े, ना कोई सीस ना कोई धड़। कलिजुग दिन रहि गए थोड़े, एका अक्खर लैणा पढ़। जन भगतां प्रभ साचा बौहड़े, आत्म दर दुआरे अग्गे खड़, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वाली हिन्द आप फड़ाए आपणा लड़। आपणा लड़ आप फड़ाउणा। एका अक्खर शब्द पढ़ाउणा। दसवें घर वखाए वखर, अज्ञान अन्धेर मिटाउणा। जोती जोत सरूप हरि, बज़र कपाटी अग्गे पत्थर, शब्द तीर नाल हटाउणा। शब्द तीर लाए धार। बज़र कपाटी जाए पाड़। साची हाटी आपे खोल्हे इक्क वखाए सच द्वार। अट्ठ सट्ठ तीर्थ आत्म दर एका ताट, आप नुहाए नर निरँकार। मातलोक चढ़ाए औखी घाटी, सुरत शब्द मेल मिलाए विच बहाए दस्म दुआर। झूठी चोली जाए पाटी, जोती जोत सरूप हरि, करे खेल अपर अपार। गुरमुख विरला संत प्रेम प्राणीआ। कलिजुग माया पाई बेअन्त, भुले जीव

निधानीआ। हरिजन साचा साचा संत, एका जाणे ब्रह्म निशानीआ। मिले मेल साचा कन्त तुटे माण आत्म अभिमानीआ। माया रुले वड वड दंत, काया कोठी दिसे खालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां जोत जगाए मस्तक गगन साची थालीआ। गुरमुख विरला संत नाम वणजारड़ा, करे सच विचार है। लक्ख चुरासी अन्तिम कलि दर दर घर घर करदी फिरे हुदार, ना कोई वेखे परखे मीत मुरार है। आत्म रण होई उजाड़, झूठे घर होया वासा, ना कोई दीवा ना उज्जयार है। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां एका देवे शब्द हुलार है। गुरमुख साचा संत रंग चलूलया। कलिजुग जीव जन्त माया राणी झूठे धन्दे प्रभ अबिनाशी भूलया। मदिरा मासी पापी गन्दे, ना मिले मेल कन्त कन्तूलया। गुरमुखां उपजाए परमानंदे, हरि दाता दूल्हो दूल्हया। इक्क सुणाए शब्द छन्दे, धुरदरगाही साचा झूलया। जन भगत उठाए आपणे कंधे, गुरमुख विरला विच मात दे फलया फूलया। बेमुख जीव आत्म अन्धे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, आप बणाए सूली सूलया। गुरमुख साचा संत ब्रह्म ज्ञानीआं। प्रभ अबिनाशी एका देवे धुरदरगाही साचा शब्द मात निशानीआं। आत्म अन्दर साचे मन्दिर हरि हरि सेवे, उजाड़ पहाड़ ना कोई वखानीआ। दरस दिखाए अलख अभेवे, ना कोई जाणे खाणी बाणीआ। जोत निरँजण वड देवी देवे, सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा साची सेव लगानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेल मिलाए आदि शक्त आदि भवानीआ। आदि शक्त आदि भवानी। जुगा जुगन्त आप बणाए, शब्द रखाए सच निशानी। साध संत लए उठाए, देवे दान हरि वड विद्वानी। जोती जोत सरूप हरि, जगत दूजा रहे नाही, शब्द सरूपी ब्रह्म ज्ञानी। शब्द सरूपी इक्क ज्ञाना है। हरि वडा शाह भूपी, रक्खे सच टिकाणा है। एका एक सति सरूपी, आदि अन्त इक्क निशाना है। ना कोई रेख ना कोई रूपी, एका जोत डगमगाना है। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी, कलिजुग भेख बेमुहाना है। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां मेल मिलाए, किरपा कर श्री भगवाना है। हरिभगत सुहेला मीत कन्त भतारड़ा। गुरमुख विरला मानस देही जाए जीत, रसना गाए पुरख अपारड़ा। काया होए ठंडी सीत, दुःख ना लग्गे नेड़ ना आए पंचम् धारड़ा। काया मन्दिर सच मसीत, मिले मेल मीत मुरारड़ा। अट्ठे पहर परखे नीत, आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारड़ा। कलिजुग औध रही बीत, हरि वेखे खेल अन्तिम अन्त वारड़ा। आप चलाए साची रीत, चार वरन बहाए इक्क द्वारड़ा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अपर अपारड़ा। अपर अपारा खेल वरन अवरनया। साचा मेल चार वरनां आप कराए धरनी धरनया। सतारां हाढ़ी चढ़ना तेल, जन भगतां खुल्हाए हरना फरनया। धर्म राए दी कटे जेल्ह, आप चुकाए

मरना डरनया। दरस दिखाए हरि अख्वाए साचा सज्जण सुहेल, गुरमुख साचे माण दवाए तरनी तरनया। आप कराए आपणा मेल, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, वड दाता करनी करनया। वड दाता गहर गम्भीर करनी कारया। गुरमुखां रक्खे शात सरीर, अमृत बख्शे साची धारया। हउमे कढु विच्चों पीड़, साचा दस्से इक्क प्यारया। कलिजुग अन्तिम आई भीड़, ना होए कोई सहारया। अन्तिम कलिजुग तुट्टी हड्डी रीड़, जूठा झूठा डिग्गा मूंह दे भारया। ना कोई जाणे हस्त कीड़, मायाधारी बैठा रूठा, भुल्ले रंग श्री गिरधारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग पैरां हेठ लताड़या। कलिजुग डिग्गा मूंह दे भार। प्रभ अबिनाशी मारे मार। सतिजुग साचे हो त्यार। आपणा चुक्क लै आपे भार। शब्द कर तन शृंगार। लोकमात आया हिस्से, गुरमुखां करना ख़बरदार। बेमुखां हरि जी मूल ना दिसे, चारों कुन्ट होया अंध्यार। जूठी झूठी चक्की पीसे, आत्म होई दो दो फाड़। एका छत्र झूले जोत निरँजण हरि जगदीशे, लेख लिखाए सतारां हाढ़। ना कोई करे हरि जी रीसे, मगर लगाए मौत लाड़। मेट मिटाए मूसे ईसे, धरत मात बणाए इक्क अखाड़। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी देवे झाड़। कलिजुग काला दए दुहाई। प्रभ अबिनाशी पाई फाही। बेमुख जीव ना कोई सहाई। चारों कुंट वाहो दाही। आप आपणे पै राहीं। कोई ना पकड़े अन्तिम बाहीं। शब्द सरूपी हरि साचा पकड़े, पकड़ उठाए थांउँ थाँईं। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात हरि जोत धर, बेमुख जीवां दीसे नाहीं। कलिजुग पापी रिहा रो। पुरख अबिनाशी मुखड़ा धो। बेमुख जीवां रिहा कोह। गुरमुख साचे संत जनां, आत्म घर ना जाए छोह। हरि दर साचा लाए डन्ना, दर दुआरे अग्गे हो। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार लोकमात हरि जोत धर, साचा हल रिहा जो। साचा हल आप बणाउणा। कलिजुग सतिजुग दोवें बैल, शब्द पंजाली गल रखाउणा। जोती जोत सरूप हरि कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा हाली जगत पाली आप अख्वाउणा। साचा हाली हल चलाए। सतिजुग कलिजुग बैल जुड़ाए। नाम रखाए तिक्खा फाला, सोहँ हरि जी नाम रखाए। पहली रहिल लए मल, दिशा लहन्दी होए तरथल, नीला बाणा तन छुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल रचाए। साचा धाम धुर दरबारया। पूर कराए आपणा काम, नर हरि सच्ची सरकारया। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, साचा दीपक कर उज्जयारया। झूठी माया काया चाम, भुल्ले जीव अन्त गंवारया। वस होए कामनी काम, आत्म भरया लब लोभ हंकारया। कोई ना पकड़े दामनी दाम, ना दिसे पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सोहँ शब्द सच भण्डारा बण वरतारा जन भगत दुआरा आपे आप वरता रिहा। सोहँ शब्द

अपार, वस्त अमोल्लया। देवणहार दातार कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सच दुआरा एका खोल्लया। ना कोई वेखे पुरख नार, एका रंग बिरध बाल नौजवान, रंगण चाढ़े अपर अपारया। आत्म जोती धर महान, वरन गोती मेट मिटान, शब्द रखाए इक्क निशान, हरि आपे आप झुला रिहा। आप उठाए आत्म सोती, गुरमुख बणाए साचे मोती, कर श्रृंगारा सोहणा हारा हरि दातारा एका गल पवा रिहा। शब्द बन्ने सीस दस्तारा। कल्गी तोड़ा नाम अपारा। पुरख अबिनाशी जोड़ जोड़ा, ना होए विछोड़ा दूजी वारा। इक्क रखाया शब्द घोड़ा, गुरमुख चढ़ाए वारो वारा। चौथे घर इक्को पौड़ा, खिच्च बहाए दस्म दुआरा। सुखमन नाड़ी ना दस्से राह सौड़ा, आपे दस्से पार किनारा। धुरदरगाही आया दौड़ा, गुरमुखां करे मात प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल अन्तिम वारा। करे खेल अपार शब्द ज्ञानया। चार वरनां इक्क प्यार, एका धार गुण निधानया। ऊँच नीच हरि भेख निवार, रंक राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहानया। इक्क सुहाए बंक द्वार, रंगत साची नाम रंगानया। जोती नूरा कर अकार, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, शब्द धुन कन्न सुणानया। वेला चुक्के चार यार, चारों कुन्ट पैणी मार, पंचां बणे हरि सरदार, हथ्थीं बन्ने साचे गानया। शब्द फड़े हथ्थ कटार, तिखी रक्खे साची धार। गुरमुखां बेड़ा करे पार, बेमुख होण मात ख्वार, वजे साची कानीआ।
८६४
०४
हरिजन मेला साचे मीत मुरार, वसे इक्क इकेला हरि साचे धाम न्यार, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जना, आत्म जोती देवे सच निशानीआ। आत्म जोती सच निशानीआ। दुरमति मैल जाए धोती, साचा वज्जे शब्द तीर कानीआ। आपे कढ्ढे वासना खोटी, पकड़ बहाए पंच दरबानया। अन्त चढ़ाए साचे चोटी, वड शाहो शाह शहानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां, आप चुकाए जम की कानया। आप चुकाए जम की कान। दया कमाए हरि भगवान। शब्द रखाए इक्क बबाण। गुरमुख चढ़ाए घर साचे आए, झुलदा जाए धर्म निशान। जोती जोत सरूप हरि, सच घर बहाए, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए, इक्क वखाए अचल्ल मकान। दर घर साचे हरि बहाया। जीओ जीव काचन काचे, अन्तिम संग ना किसे निभाया। एका नार हरि साचो साचे, अन्तिम बेड़ा बन्न वखाया। मन मन्दिर अन्दर जूठा झूठा नाचे, गुरमुख विरले बन्न वखाया। जोत प्रकाशे साचो साचे, रसना गोबिन्द हरि जस गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप बुझाए कलिजुग माया झूठी आंचे, अमृत मेघ दए बरसाया। अमृत मेघ हरि वसांयदा। काया करे ठंडी ठार गुण विचार, भरम भुलेखा दूर करांयदा। साचा अंजन पुरख अपार रिहा डार, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। दीपक जोती कर उज्जयार, आपे खोल्हे बन्द कवाड़, सच दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुणाए साचा कान, चरन धूढ़ इक्क

८६५ ०४

इशनान साचा मजन हरि हरि सज्जण एका एक करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग साचा संग आपे आप निभांयदा। संतन संग सति पुरख बण आई। एका मंगण साची मंग, ना कोई जाणे जीव लुकाई। अमृत धार आत्म साची गंग, दूसर तीर्थ को नाही। दो जहान कटे भुक्ख नंग, संत सुहेला साचा माही, सिँघ महिताब चढ़ाया काया रंग, जगी जोत पिण्ड भंगाली, कलिजुग अन्तिम मेटे शाही। सिँघ महिताब आत्म ज्ञानी चतुर्भुज। हरि कर ध्यान, सच द्वार गया सुझ। एका रक्ख हरि चरन ध्यान, कलिजुग वेला अन्तिम ल्या बुझ। प्रगट होए वाली दो जहान, गऊ ग़रीब निमाणे आप उठाए उत्ते आपणी भुज। करे खेल जगत महान, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, एका शब्द चलाए बाण। सिँघ महिताब हरि बुलाई। मिल्या मेल सच्चे जनाब, आत्म जोत होई रुशनाई। चरन रखाया नाम रकाब, साचे घोड़े रिहा चढ़ाई। मिल्या मेल दो दोआब, कँवल फूटा साची नाभ, दूई द्वैती भेव चुकाई। संत मनी सिँघ लाई जाग, देस मालवे वज्जी वधाई। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां शब्द सुनेहड़े घर साचे लै आई। सिँघ महिताब हरि दया कमाई। शब्द धार इक्क रखाई। अट्ठे पहर रिहा सुणाई। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ साचा लेख आपे वेख, इक्क दूजे दे संग मिलाई। संत मनी सिँघ संग रलाया। एक शब्द कन्न सुणाया। धर्म राए ना लाए डन्न, साचा बेड़ा बन्न वखाया। जोत जगाई साचे तन, साचे अन्दर आप सुहाया। भरम भुलेखा देवे भन्न, प्रगट होवे हरि रघुराया। पकड़ उठाए आत्म अन्न्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेव खुल्ह्राया। संत मनी सिँघ सुणया राग। आत्म सोई गई जाग। मिल्या मेल कन्त सुहाग। कलिजुग धोए काला दाग। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, इक्क चलाए सच्चा राग। संत मनी सिँघ शब्द जणाई। पुरी घनक होए रुशनाई। माझे देस उन्नी सौ पंजाह बिक्रमी वजी वधाई। प्रभ अबिनाशी देह उपजाई। काया मन्दिर साचे अन्दर आप आपणी वस्त टिकाई। काया मन्दिर बणया घर। इक्क खुल्ह्राए साचा दर। शब्द सरूपी अन्दर वड़या, जोत सरूपी भेख कर। राजे राणे किसे ना फड़या, चारों कुन्ट गए हर। जोती जोत सरूप हरि, संत मनी सिँघ दित्ता वर, होका देणा घर घर, पंचम् जेठ वक्त सुहाया। शेर सिँघ कलि जामा पाया। पुरी घनक जोत जगाया। अमृत साचा नाल ल्याया। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, साचे घोड़े तंग कसाया। कृष्न रमईआ गया जाग, वेला वक्त आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, शेर सिँघ नां रखाया। मात पूत पिता पुत्त साचे घर वज्जी वधाई। एका जम्मया उच्चा सुच्चा सुत, कलिजुग करन आया कुड़माई। आप सुहाए साची रुत्त, गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे फड़ फड़ उठाए थांउँ थाँईं। बेमुखां वढ्ढे नक्क गुत्त, किसे ना दिसे कोई सहाई। जोती जोत

सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सिँघ शेर नाउँ रखाई। दो साल अवस्था वेख विचारे। प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। सर अमृत आए गुर अर्जन तेरे सच दुआरे। चरन छुहाउणा साचे सर, आपणा भेव आप छुपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे रंग अपर अपारे। आत्म तृष्ना प्यास हरि रघुराईआ। प्रभ मिलण दी साची आस, साचे नैण रहे रंग लाईआ। माया ममता होई नास, रसन स्वास एका गाईआ। आत्म रस एका मिल्या सच्चा रस, निझर धार हरि वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पूरन करे साची आस, हउमे दुखड़ा होए नास, दर घर साचे चरन छुहाईआ। साचा दर दर परवान। मिले वड्याई जगत वर, मिल्या मेल श्री भगवान। भरम भुलेखा चुक्के डर, भाग लगाए काया मन्दिर सच मकान। साची जोत देवे धर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। ना जन्मे ना जाए मर, साची तरनी जाए तर, सृष्ट प्यारा लोकमात झुलाए सच निशान। द्वार बंका आप सुहाया। शब्द सरूपी लाए तनका, मन का मणका आप फिराया। देवे वड्याई वासी पुरी घनका, शब्द डंका रिहा वजाया। धारे जोत वार अनका, गुरमुख साचे रिहा तराया। जोती जोत सरूप हरि, सच दुआरे मेल मिलाया। हरि संत प्यारा दोहां धिरा आत्म घर वज्जदी रहे वधाई। एका नाद एका धुन, साचा राग रिहा सुणाई। गुरमुख विरला लए लाध, विच ब्रह्माद बन दर खोजण बाहर ना जाई। मिल्या मेल हरि माधव माध, दर घर साचे दर्शन पाई। भेव खुल्हाए बोध अगाध, जोती जोत सरूप हरि, लहणा देणा रिहा चुकाई। साँवल सुन्दर नैण मुंधानया। सोहणे कुण्डल दरस दिखाए कँवल नैणां बेमुहानया। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग अन्तिम भेख धर, दर घर साचे माण दवाए, जन भगतां बाल अञ्याणया। बाल अञ्याणा भगत दुलारा, दर साचे आण पुकारया। दर्शन देवे गिरवर गिरधारा, शाम मुरारा कृष्न मुरारया। आत्म खोल्हे बन्द कवाड़ा, दरस दिखाए साचे दर धुरदरगाही साचा लाड़ा, साचा वणज कराए इक्क वपारया। जोती जोत सरूप हरि, साची किरपा कर देवे वर, सद रहे पिच्छे अगाड़या। साँवल सुन्दर कृष्न मुरार। किसे हथ्थ ना आए डूंघी कन्दर, उच्चे टिल्ले जीव गंवार। गुरमुख साचा दर साचे आत्म पाए, खोल्हे बन्द कवाड़। शब्द सरूपी आपे बोले, दरस दिखाए अगम्म अपार। जोत निरँजण कर अकार सदा सुहेला डगमगाए, साचा जाम प्याए अमृत धार। मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। साचा शब्द तन कराए इक्क श्रृंगार। जोती जोत सरूप हरि, दर घर साचे देवे वर, आत्म अन्दर तोड़े जन्दर, करे खेल अपार। आत्म गृह सच टिकाणा, पुरख अबिनाशी आपे आप बणाया। इट्ट गारा ना कोई लगाया। बेमुख जीवां दिस ना आया। झूठी काया डूंघी कन्दर, माया पड़दा वाहवा पाया। गुरमुखां मेल मिलाए अन्दरे अन्दर, बेमुखां दिस ना आया। चार कुन्ट दर दर भौंदे बन्दर। नर नरेश किसे हथ्थ ना आया।

भेखाधारी वड मृगेश, आपे रक्खे खुल्हड़े केस, वेस अवल्लड़ा धारे भेख, साचे दर भाग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा देवे नाम वर, आत्म तृष्ना ब्रह्मा विष्ना दर दरवेशा एका रंगण रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, शब्द डोरी नाल बंधाया। शब्द डोरी देणा बन्न। भरम भुलेखा निकले जन। अन्दरे अन्दर करे लेखा, साचे मन्दिर बैठा तन। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे भगत वर, साचा राग सुणाए कन्न। सुणाए सच्चा राग नाद अनादया। आत्म देवे इक्क स्वाद, हरि हरि साचा रसन अराध्या। धुरदरगाही साची दाद, देवे शब्द वड ब्रहमादया। मिले मेल माधव माध, भेव खुल्हाए बोध अगाध, वस्त अमोलक नाम हीरा गुरमुख विरले मात लाध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चल्ल के आए साचे दर, गुरमुख साचे रसन अराध्या। आया दर द्वार हरि निरंकारया। पंजां चोरां करे ख्वार, हरि शब्द मारे डाहढी मारया। साची देवे वस्त नाम अपार, साची बाणी तीजे नैणी, अट्ठे पहर रहे खुमारया। जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, फड़ फड़ बाहों जाए तार, मंगया दरस अपार शब्द दलालया। देवणहार दातार गुर गोपालया। कलिजुग बेड़ा कर जाए पार, शब्द पहनाए तन दुशालया। मानस देही ना आए हार, लक्ख चुरासी गेड़ निवार, आप बहाए साचे घर धुरदरगाही सच्ची धर्मसालया। जोती जोत सरूप हरि, आत्म जोती कर अकार, तन मन्दिर अन्दर जूठा झूठा लाहे कलि बुखार, इक्क बंधाए चरन नातया। चरनी नाता देवे बन्न, किरपा अपर अपारया। हरया होए कलिजुग सुक्का तन, अमृत सिंचे कर प्यारया। धर्म राए ना देवे डन्न, प्रभ दरस दिखाए दर घर आए अन्तिम अन्त द्वारया। सच बबाणा शब्द लिखाए गुरमुख साचे लए चढ़ाए, आपणे कंध आप उठाए, किसे दिस ना आए चार किनारया। साचे दर जा बहाए, धर्म राए रिहा शरमाए, लाड़ी मौत सीस निवाए, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी चरन बहाए, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए, जोती जोत सरूप हरि, एका देवे नाम वर, गुरमुख साचे संत जनां साचा धाम आप सुहानया। साचे धाम साचा डेरा। आप चुकाए मेरा तेरा। चारों कुन्ट शब्द घेरा। जमका दूत ना आवे नेड़ा। सच सपूत प्रभ अबिनाशी आप चढ़ाए साचे बेड़ा। एका ताणा पेटा सूत, एका देवे हरि जी गेड़ा। आवण जावण देवे कट। दूई द्वैती मेटे फट्ट। शब्द लपेटे साचे पट्ट। दुरमति मैल रिहा कट। साचा वणज वपार कराए पुरख अबिनाशी आप खुल्हाए, आत्म दर साचा हट्ट। सच्चा सदा नाम रखाए, गुरमुख विरला लै लै घर साचा जाए, बेमुख जानण खेल बाज़ीगर नट। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां, साचे सर सरोवर इशनान कराए, आत्म सर सरोवर ना कोई दीसे तट्ट। ना कोई तीर्थ, ना कोई तट्ट किनारा। अमृत ताल भरया घट घट, गुरमुख विरला पावे सारा। कलिजुग जीव दिवस रैण रहे

रट, काया मट लग्गी रहे दूई द्वैती अग्नी भारा। गुरमुख विरला रसना रस रिहा आत्म घर चट्ट,, आप लाहे तन बुखारा। साचा लाहा लए खट्ट, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां सच कराए वणज वपारा। धन्न धन्न धन्न गुरदेव धन्न। धन्न धन्न हरिजन आत्म गया मन, भाण्डा भरम ल्या भन्न, एका लग्गा साची सेव। हउमे कढुया झूठा जन, कलिजुग चढ़या साचा चन्न, जगी जोत काया तन, धर्म राए ना देवे डन्न। सच वस्त प्रभ झोली पाए, ठग चोर यार ना कोई लाए संन्ह। जोती जोत सरूप हरि, सच दुआरे किरपा कर, सोहँ शब्द साचा राग सुणाए कन्न। गुर संगत माण वड्डयाईआ। प्रभ दर आई मंगत, आत्म भिच्छया प्रभ साचे पाईआ। एका चाढ़े शब्द खुमारी नाम रंगत, फूलन बरखा आपे लाईआ। जगत कटे भुक्ख नंगत, सुख सहिजे सहिज समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, भगत वणजारे शब्द प्यारे पूरन इच्छया आप कराईआ। फूलन बरखा गुर पूरा लाए। गुरमुख साचे संत सुहेले गुर संगत साचा मेल मिलाए। धुरदरगाही साचे मेले, भरम भुलेखा दूर कराए। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेले, जोत सरूपी भेख वटाए। आपे गुर आपे चेले, एका दूजा भउ चुकाए। हरिजन साचे सज्जण सुहेले, पुरख अबिनाशी धुरदरगाही दर दुआरे लए बहाए। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत किरपा कर, फूलन बरखा साची लाए। बिरध बाल जवान दर आए पुकारया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, गुर चरन प्रीती इक्क ध्यान, मंगण वस्त अपारया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, देवे दान गुण निधान, घर साचे शब्द भण्डारया। आप मिटाए जम की कान, शब्द चढ़ाए सच बिबाण, अन्तिम बेड़ा पार करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां दर घर साचे दया कमाए, एका रंगण नाम रंगाए, आपणी दया कमा रिहा। गगन लोआं अकाश पताल अकाशया। साची जोत रिहा जगा, आदि अन्त ना कदे विनास्सया। जन भगत रखाए साची लग्न, शब्द चलाए स्वास स्वास्सया। दीपक जोती दर घर साचे उच्च महल्ल अन्दर जगण, अन्धेर अज्ञान विनास्सया। गुर पूरा मुख लगाए सोहँ शब्द कलिजुग वेले अन्तिम सगन, मात गर्भ कटाए उलटा बिरख ना आए दस दस मास्सया। झूठे वहिण चारों कुन्ट वहिण भेखाधारी फिरन नग्न, कलिजुग माया साड़े अग्न, आत्म होई ना रास ना होए बन्द ख़लास्सया। जूठे झूठे पापी दगण, गुरमुख विरले संत जन दर घर साचे सच महल काया रंगण नाम नाल रंगे कोई ललारीआ। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वसंदड़ा सच घर, साची जोत कर अकारया। सच महल हरि पतिवन्त। उच्च अटल वड प्रबल आपणा आप रचाए, गुण गुणा हरि गुणवन्त। शब्द दुआरा आप रखाए। पवण जोती विच टिकाए। दीपक जोती साचा डगमगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे घर समाए। साचे घर करे बिसराम। जोती नूरा सति सरूरा सर्बकला भरपूरा, आप संवारे आपणे काम। गुरूआं पीरां एका

देवे लोकमात शब्द तूरा, भाग लगाए काया चाम। काया रंगण रंग चढ़ाए इक्क मजीठी गूहड़ा, मेट मिटाए अन्धेरी शाम। गुरमुख विरला मस्तक लाए धूढ़ा, चरन कँवल कँवल चरन मिले सच्चा नाम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर कराए आपणा काम। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, भरम भुलेखे रुल्लया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, प्रभ देवे शब्द दात नाम इक्क अनमुलया। उठ उठ जीव जाग, प्रभ दर दुआरा एका खुल्या। उठ उठ जीव जाग, जूठ झूठ प्या पाणी काया झूठे चुल्या। उठ उठ जीव कलिजुग जाग, भाग लग्गे तेरी कुलया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, पावण आया साचा मुल्लया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, चारों कुन्ट रैण अन्धेरया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, पुरख अबिनाशी पाया फेरया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, दर घर साचे आपे ढाहे भरमां ढेरया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, पुरख अबिनाशी दया कमाए आप बुझाए कलिजुग माया तृष्ना अग्ग चुक्के मेर तेरया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, मिले मेल कन्त सुहाग, हरि साचा शाह संवारया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, प्रभ आप बणाए हँस काग, जूठे झूठे धोए दाग, इक्क सुणाए शब्द राग, साची धार आप रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, धरे भेख नर निरंकारया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, वक्त दुहेला। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, अन्तिम जाणा पए अकेला। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, गुरमुख साचे संत जनां, इक्क मात लगाया साचा मेला। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, प्रभ अबिनाशी साची वस्त झोली पाए, खाली हथ्थ सदा रखाए, ना कोई रक्खे पैसा धेला। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, काया धोणा झूठा दाग, प्रभ अबिनाशी चरनी लाग, आप चढ़ाए कलिजुग अन्तिम वेले शब्द सरूपी साचा तेला। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात जोत हरि धर, जन भगतां देवे नाम वर, आपे होए सज्जण सुहेला। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, मन बैरागया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, जगत त्यागया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, झूठी माया जगत छाया मन मन्दिर अन्दर लागया। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, प्रभ भाग लगाए काया डूंघी कन्दर, साचा शब्द सुणाए इक्क वैरागया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल जन भगत मेल दर होए वड वडभागया। उठ जीव जाग, हरि जगांयदा। धोणा आपणा झूठा दाग, साची बणत बणांयदा। आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत मेघ बरसांयदा। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग जूठे झूठे दर दुआरे सच घर बाहरे आप दुरकांयदा। उठ जीव जाग, हरि भण्डारया दर घर साचे लग्गा भाग, साचा शब्द आप वरता रिहा। तन पहनाए साचा ताग, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ा रिहा। जोती

जोत सरूप हरि, इक्क वजाए सदा धुन सच्चा नाद, बोध अगाधी भेव खुल्हा रिहा। बोध अगाधा भेव खुल्हाउणा। पुरख अबिनाशी जिस जन अराधा, प्रगट होए दरस दिखाउणा। लाल अमोलक गुरमुख विरले अन्तिम लाधा, सच घसवटी एका लाउणा। पंच पंचायण हरि जी शब्द डोर एका बांधा, भरम भुलेखे ना किसे डुलाउणा। आपे ढाहे झूठी कंधा, एका दूजा भेव चुकाउणा। गुरमुख साचा जुगा जुगन्त ना थक्का मांदा, कलिजुग जीवां आप जगाउणा। लोकमात चढ़ाए कलि अन्तिम साचा चांदा, सच प्रकाश आप कराउणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, सुरपति राजा इन्द, पुरी इन्द्र विच्चों बाहर कराउणा। सुरपति राजा इन्द, कलि पुकारया। प्रगट होया वड मृगिन्द, करे ख़बरदारया। प्रगट होया विच हिन्द, शब्द खण्डा रिहा हुलारया। एका धार वहाए सागर सिंध, बेमुख जीवां आप रुढ़ा रिहा। दर दर घर घर बैठे करन निन्द, निहकलंक केहड़ी कूटे करे जोत अकारया। गुरमुख विरला प्रभ साचे दी साची बिन्द, आत्म शब्द इक्क जैकारा, तुट्टे माण हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, पुरी इन्द पावे सारया। पुरी इन्द कर विचार। प्रभ अबिनाशी बन्ने धार। कलिजुग तेरी अन्तिम वार। करोड़ तेतीसा जन्म दवाए, सतिजुग साचे दूजी वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, पुरीआं लोआं पावे सार। सुरपति राजा इन्द सच दरबारया। वड दाता गुणी गहिंद, अन्तिम लाहे तख्त ताज साज बाज काज एका दिसे पासा हारया। वीह सौ बिक्रमी पैणी भाज, करे खेल हरि निरंकारया। शब्द बणाया इक्क जहाज, सच मलाह आप अख्वा रिहा। किसे सिर ना दीसे ताज, राउ रंक राजान शाह सुल्तान वाली दो जहानां साचा लेख लिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपणे भाणे सद समा रिहा। तन मन अन्दर धूंआं धार। त्रैगुण माया वेख विचार। सति संतोखी बन्ने धार। राजस तामस खेल्ह अपार। सति सुलखणी कुक्ख अपार। पुरख अबिनाशी लाज मात रखणी, इक्क बेनन्ती चरन द्वार। जगत जंजाला ना काया भक्खणी, जूठा झूठा जाए विकार। साचे दर ना रहे सक्खणी, दोए जोड़ करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आत्म भरे सर्ब भण्डार।

❇ १३ फगण २०११ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड फैज़पुर ज़िला गुरदासपुर ❇

सुरत शब्द जन मेल, भगत चुकानया। सुरत शब्द जन मेल, गुरमुख साचे कर्म साचा कमानया। सुरत शब्द जन मेल, चिन्त सोग हरख लोकमात आत्म घाट मिटानया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, जात पात पुरख

बिधात हउमे रोग गंवानया। सुरत शब्द जन मेल, मेट मिटाए जात पात साचा मार्ग इक्क वखाया। सुरत शब्द जन मेल, नाता तुट्टे मात पित, पुरख अबिनाशी एका नात बंधाया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, इक्क इकांत आपणा आप कराया। सुरत शब्द जन मेल, रंग अपारया। सुरत शब्द जन मेल, अमृत आत्म साचे सर डूंघी गंग लाए साची तारीआ। सुरत शब्द जन मेल, त्रिकुटी जाए लँघ, गुर पूरा देवे संग, माया ममता कटे भुक्ख नंग, राह दस्से इक्क अपारया। मानस जन्म ना होए भंग, होए सहाई अंग संग, भरम भुलेखा दूर करा रिहा। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, शब्द घोड़े कसे तंग, आपे आप उप्पर बिठा रिहा। सुरत शब्द जन मेल, भरम भउ कटया। सुरत शब्द जन मेल, दूई द्वैती मेटे फट्टया। सुरत शब्द जन मेल, तन पहनाए सोहणा पट्टया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जगे काया हट्टया। सुरत शब्द जन मेल, साचे तीर्थ इक्क इशनान कराए, ना कोई दीसे तीर्थ तट्टया। सुरत शब्द जन मेल, एका खोल्हे साचा हट्टया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आपणा आप कराए, गुरमुख विरले आत्म रस रसन रसायणी चट्टया। सुरत शब्द जन मेल, जगत विछोड़या। सुरत शब्द जन मेल, चरन प्रीती नाता एका जोड़या। सुरत शब्द जन मेल, बैठा दिसे इक्क इकांत, दर दुआरे साचे घर आपे आए बहुड़या। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां, बाहों फड़ आप लगाणा आपणे लड़, आप चढ़ाना एका साचे पौड़या। सुरत शब्द जन मेल, देह तजाईआ। सुरत शब्द जन मेल, काया माटी झूठी खेह, दिस ना आईआ। सुरत शब्द जन मेल, इक्क लगाए घर साचे नेह, साचे धाम रहाईआ। सुरत शब्द जन मेल, पुरख अबिनाशी एका बरसे अमृत मेंह, ठंडी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संत जनां साचे दर दुआरे सदा बहाईआ। सुरत शब्द जन मेल, आत्म रतीआ। सुरत शब्द जन मेल, माया अग्न ना लग्गे ततीआ। सुरत शब्द जन मेल, एका रंग साचा माणे, आत्म मिले धीरज सतीआ। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची जोत देवे वर, ना कोई तोले तोल तुलाए तोल मासा रतीआ। सुरत शब्द जन मेल, दरस अमोल है। सुरत शब्द जन मेल, पुरख अबिनाशी सदा वसे कोल है। सुरत शब्द जन मेल, साचा शब्द वजाए अन्दरे अन्दर ढोल है। सुरत शब्द जन मेल, बज़र कपाटी रिहा खोल्ह है। सुरत शब्द जन मेल, आप वखाए नेड़े वाटी रोल घचोल है। सुरत शब्द जन मेल, हरिजन ना आए आन बाटी, जोती जोत सरूप हरि, दिवस रैण अट्ठे पहर करदा रहे चोहल है। सुरत शब्द जन मेल, वड चतुराईआ। सुरत शब्द जन मेल, साची नईआ आप चढ़ाईआ। सुरत शब्द जन मेल, एका सईआ आत्म दरस दिखाईआ। सुरत शब्द जन

मेल, भैणां भईआ दूसर कोए दिस ना आईआ। सुरत शब्द जन मेल, धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ, ना लेखा कोई रखाईआ। सुरत शब्द जन मेल, स्वच्छ सरूपी अन्तरजामी निहकामी आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां शब्द सच्चा सोहला इक्क सुणाईआ। सुरत शब्द जन मेल, सच महल्लया। सुरत शब्द जन मेल, प्रभ एका दीसे इक्क इकल्लया। सुरत शब्द जन मेल, प्रभ पूरा आप कराए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वड वड थलया। सुरत शब्द जन मेल, ना दिसे काया अन्धेरी डूंघी डल्लया। सुरत शब्द जन मेल, गुरमुख साचे आप कराए, बेमुख भुलाए कर कर वल छल्लया। सुरत शब्द जन मेल, आत्म जोती नूर कराए, जगे जोत घड़ी घड़ी पल पल्लया। सुरत शब्द जन मेल, आत्म साचा सर सरोवर वखाए, सच दुआरा गुरमुख विरले लोकमात विच मल्लया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खोल्हे आत्म दर, दहिलीज रहे खल्हया। सुरत शब्द जन मेल, दर परवानया। सुरत शब्द जन मेल, मेल मिलाए भगत भगवानया। सुरत शब्द जन मेल, एका दिसे सति निशानया। सुरत शब्द जन मेल, मिले नाम अन्त अनन्ता, गुण गुणवन्ता गरमुख साचे पुरख सुजानया। सुरत शब्द जन मेल, गुरमुख विरले चढ़या तेल साचे संता, आत्म जोती जगे होए प्रकाश कोटन भानया। सुरत शब्द जन मेल, अज्ञान अन्धेरा जाए विनाश, पुरख अबिनाशी होए दास, शब्द चलाए स्वास स्वास, इक्क वखाए मात पताल अकाश, त्रै लोआं धार बन्न्हानया। सुरत शब्द जन मेल, सच मण्डल दी साची रास, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां आत्म तन साचे रंगानया। सुरत शब्द जन मेल, हरि हजूरया। सुरत शब्द जन मेल, हरि साचा आसा मनसा पूरया। सुरत शब्द जन मेल, साची धुन अनाहद नाद आप उपजावे साची तूरया। सुरत शब्द जन मेल, एका देवे साचा वर, आत्म जोती जगे जिउँ कोहतूरया। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे नाम वर, सद वसे नेरन नेर ना जाणो दूरया। सुरत शब्द जन मेल, रूप अगम्म है। सुरत शब्द जन मेल, प्रभ आप मिटाए झूठा भरम है। सुरत शब्द जन मेल, मानस देही लेखे लाए, लोकमात मिल्या जरम है। सुरत शब्द जन मेल, गुरमुखां गुर पूरा दया कमाए, बणत बणाए सच कर्म है। सुरत शब्द जन मेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत जगाए काया माटी झूठे चरम है। हरि सुहाए थान, जोत जगांयदा। हरि सुहाए थान, गुरमुख साचे चतुर सुजान, आत्म वेखे कर ध्यान, गुण निधान साची बणत बणांयदा। सुरत शब्द जन मेल, वड प्रधान। सुरत शब्द जन मेल, शब्द झुलाए इक्क निशान, गुरमुख साचे संत जनां आत्म धुन एका झोली पांयदा। सुरत शब्द जन मेल, जगी जोत इक्क भगवान, लक्ख चुरासी जूठी झूठी झूठे ताणे रही ताण। जोती जोत सरूप हरि,

एका रंग चलूल, गुरमुख काया आपणा आप चढ़ांयदा। हरि सुहाए थान, पुरख अबिनाशीआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुरान, किसे हथ्थ ना आए पंडत कांशीआ। खाणी बाणी करन विख्यान, प्रभ होए ना दासन दासीआ। आत्म ध्यानी करन ध्यान, मानस जन्म होए रहिरासीआ। हरि सुहाए थान, जगत वड्डियाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, आपणी बणत रिहा बणाईआ। दर घर साचे मिल्या माण, दरगहि साची पुरख अबिनाशी साचा संग निभाईआ। एका नाउँ सच्चा पीणा खाण, लोकमात देवे वाली दो जहान, तृष्ना भुक्ख रिहा गंवाईआ। आप चुकाए जम की कान, गुरमुख साचे संत जनां, बेमुखां दर दुरकाईआ। लक्ख चुरासी होई हैरान, माया राणी तणया ताण, बेमुख जीव अन्त फस जाण, गुरमुख साचे संत जनां आपणा पल्लू रिहा फड़ाईआ। फल ना दिसे किसे डाहण, माया ममता कलिजुग जीवां आई खाण, भुल्लया नाम इक्क भगवान, प्रभ देवे अन्त सजाईआ। शब्द मारे इक्क बाण, सोहँ रक्खे साची आण, चार वरनां इक्क ज्ञान, ऊँच नीच जात पात राउ रंक राजान एका धाम सुहाईआ। संतोश संतोश संतोश सुहाए द्वार बंक, प्रभ इक्क रखाए लोकमात अंक, शब्द डंक रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात हरि जोत धर, गुरमुख साचे संत जनां देवे मात वड वडी वड्डियाईआ। हरि सच्चा इक्क दरबारया। जीउ पिण्ड एह दिसे काचा, प्रभ अबिनाशी कलि उसारया। मन मनुआ विच नाचे नाचा, मति बुध बल खेल अपारया। जोत निरंतर आत्म रचा, सच्चा खेल करतारया। पंच पंचाइनी अग्नी मच्चा, विच वसाए काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। शब्द सरूपी इक्क बणाया हरि जी सच्चा, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश, अन्दरे अन्दर काया महल्ल उसारया। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत साची आई दर, शब्द सरूपी देवे वर, चिन्ता रोग जगत सोग, आत्म रस साचा भोग दरस अमोघ नाम जोग धुर संजोग, कटे हउमे रोग, साची बणत बणा रिहा। आए दर आत्म ध्यान। पुरख अबिनाशी करे पछाण। जीआं जन्तां दुःख महान। काया मन्दिर अन्ध अज्ञान। गुरमुख विरला चतुर सुजान। चरन कँवल कँवल चरन हरि इक्क ध्यान। उप्पर धरत रिहा मवल, दरस दिखाए कृष्ना सँवल, किरपा करे आप भगवान। गुरमुख विरले, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, साचा देवे शब्द निशान। आत्म दुखीआ दुःख दुख्यार। प्रभ अबिनाशी आप कराए सुफल कुक्खीआ, नर नारी आत्म अग्न, जगत विछोड़ा लग्गे भार। उज्जल कराए लोकमात मुखीआ, दर घर साचे आए जिस जन दर्शन किया हरि निरँकार। अट्ठे पहर दिवस रैण काया जीआ होए सुखीआ, सोहँ शब्द रसना गाए करे जै जै जैकार। आप मिटाए तृष्ना भुक्खीआ, मात गर्भ ना होए उलटा रुक्खीआ, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत आए साचे दर, आत्म भण्डारे रिहा भर, कोई ना दीसे नंगा भुक्खीआ।

६०३
०४

आत्म भरे भण्डार, मनसा पूरया। गुर संगत करे विचार हाज़र हज़ूरया। फड़ बाहों जाए तार, आप चढ़ाए साचे पूरया। ना जाणे बिरध बाल जवान नारी नार, एका रंग रंगाए, ऊँच नीच जातां पातां भेव चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे नाम वर, काया दुखड़े दूर कर, साचा राग जगत त्याग लग्गा भाग, मिले मेल कन्त सुहाग, साचा लेख लिखा रिहा। गुर संगत आई दर द्वार। मंगे मंग बण भिखार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, आत्म दुखड़े दए निवार। आप चुकाए जूठा झूठा डर, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर, होए ना किसे सहार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बन्ह्‌ाए एका धार। गुर संगत खुशी मनाउँदी जाणा। पुरख अबिनाशी रसना नाल ध्याउँदी जाणा। आवण जावण जम्मण मरन चुक्के डर, साची तरनी जाणा तर, गुर पूरे चरन नेह लाउँदी जाणा। करया कर्म धरनी धर, जन भगतां देवे साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जैकारा रसना नाल लगाउँदी जाणा। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन हरि हथ्थ समरथ रखाया। गुर पूरा भरम भुलेखा दए निवार, बज़र कपाटी देवे पाड़, साचे पौड़े देवे चाढ़, परे हटाए पंजां धाड़, आत्म ज्ञान चरन ध्यान इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, साची दया कमाया। गुरमति गुर की धार चतुर सुजान। बेमुख जीव घर आत्म अन्ध अंध्यार। झूठा करन वणज वपार, हरि साची सार ना पाण। झूठा धन्दा झूठी कार। साचा शब्द इक्क अधार, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। ना कोई घर ना कोई द्वार, जोती जोत सरूप हरि, साचे धाम इक्क सुहांयदा। गुरमति गुर ते जाण, परम पद पाया। आत्म मिल्या शब्द निशान, निहकलंकी नाद सच्चा वजाया। कलिजुग भुल्ले जीव निधान, गृह मन्दिर डेरा किसे ना लाया। प्रभ अबिनाशी लक्ख चुरासी पुण छाण, गुरमुख साचा संत सुहेला, आप कराए आपणा मेला, आत्म जोती दीप जगाए इक्क महान। साचा गुर साचा चेला, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, शब्द बन्ह्‌े तन साचा गाना। आत्म तन बन्ह्‌े गाना। पुरख अबिनाशी कर ध्याना। गुरमुख विरला चतुर सुजाना। धुरदरगाही जगत मलाही हरि रघुराई, बेपरवाही एका रंगण नाम रंगाना। हरि जी साचे संत दुलारे, पताल अकाश शब्द चलाए तीर कमाना। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, चल्ले चलाए आपणा भाणा। कलिजुग जीव माया रुल्ले, झूठे तोल सारे तुले, लग्गी अग्ग काया कुले, पुरख अबिनाशी एका भुल्ले अमृत आत्म अन्तिम डुल्ले, नर हरि हरि नर ना कोई पछाणे। गुरमुख साचे संत जनां भण्डारे सच सदा खुल्ह्‌े, कोई ना लाए हरि जी मुल्ले, साचा देवे नाम दाने। मायाधारी माया रुले, जोती जोत सरूप हरि, किसे दिस ना आए राजे राणे। राजे राणे बंक द्वार है। वेले अन्तिम होए ख्वार है। शब्द सरूपी प्रभ मारे मार, निहकलंकी जामा

धारे। राउ रंकी आप बहाए सच घर इक्क चुबारे। शब्द सरूपी लाए तनक, खिच्ची आए चरन दुआरे। धार जोत भेख भेख वार अनक, बेमुख ना जाणे जीव गंवारे। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारे। नौ खण्ड पृथ्मी पाए सार, साची बणत बणांयदा। आपे जाणे आपणी कार, दूसर संग ना कोई रहांयदा। नूरी जोत कर अकार, पुरीआं लोआं आप समांयदा। दूजी फड़ शब्द कटार, चिट्टे अस्व हो अस्वार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात हरि जोत धार आपणे हथ्थ रखांयदा। वेख वखाणे बेमुख जीव गंवार, राउ उमराउ आई हार, वड शाहो बेपरवाहो सुट्टी जाए मूंह दे भार, करे खेल महानया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भुन्ने जीव जिउँ भठयाले दाणयां। नौ खण्ड पृथ्मी पाए वंड, अचरज खेल रचाईआ। सत्तां दीपां करे रंड, हरि की जोत दिस ना आईआ। बेमुख जीव आत्म भरया इक्क घमंड, हउँ हउँ करे जन्म गंवाईआ। गुरमुखां आत्म रक्खे ठंड, अमृत साचा जाम पिआईआ। पल्ले बन्ने नाम पंड, सोहँ वस्त इक्क अनमोल, धुरदरगाही आपे आप लै आईआ। हरिजन आत्म ना होए रंड, कन्त सुहागी आत्म दर सच सिँघासण अट्ठे पहर सवाईआ। बेमुख जीवां देवे दंड, चारों कुन्ट चण्ड प्रचण्ड, बेमुख देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपणा भेव आपे रिहा खुल्हाईआ। प्रभ का भेव किसे ना पाईआ। ना कोई जाणे देवी देव करोड़ तेतीसा किसे दिस ना आईआ। शिव शंकर लग्गे सच्ची सेव, जटा जूट धार, काला नाग गल लटकाईआ। ब्रह्मा सुणे सच्चा राग शब्द बोध अगाध, चारे वेदां रिहा गाईआ। पुरख अबिनाशी साची दाद, करे खेल विच ब्रह्माद, शब्द वज्जे एका नाद, विष्नूं कर अकार, जुगो जुग बन्ने धार, आवे जावे ना मरे रघुराईआ। साचे धाम बहिण न्यार, पुरख अबिनाशी खेल न्यार, जोत सरूपी इक्क अकार, अट्ठे पहर दिवस रैण डगमगाईआ। ना कोई जाणे हरि द्वार। पुरख अगम्मड़ा अगम्म अपार। पल्ले ना रक्खे कोई दमड़ा, लक्ख चुरासी दए उसार। अप तेज वाए पृथ्मी अकाश काया माटी बणाए चम्मड़ा, पवण स्वासी शब्द उडारी जोती दए अधार। कलिजुग जीव की करे गंवारी, चारों कुन्ट पैंदी मारी, पंजां फड़ी हथ्थ सरदारी। मति बुध गई मारी। मन पंखेरू वसे बाहरी। दहि दिशा दी इक्क उडारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध संत गुर पीर औलीए कोई ना पावे सारी। साचा घर हरि परवानया। ना कोई दर द्वार, उत्ते छत्त ना कोई रखानया। एका दिसे हरि निरँकार, रूप रंग ना रेख, भेख ना जाणे हरि की धार, जुगा जुगन्त लोकमात भुल्ले वड वड विद्वानया। एका इक्क इक्क अकार, दूजी रक्खे शब्द धार, तीजे पवण स्वास नाल प्यार, लक्ख चुरासी विच रखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे दर, लोकमात हरि

किरपा कर, आवे जावे जावे आवे एका रचन रचानयाा। आवे जावे लोकमात। जुगा जुगन्तर मार झात। जन भगतां अन्तिम पुच्छे वात। मेट मिटाए कलिजुग जीवां अन्धेरी रात। गुरमुख साचे संत जनां आप आपणा दरस दिखाए, आत्म तृष्ना हरस मिटाए, अमृत बूंद प्याए स्वांत। अमृत मेघ बरस वखाए, जूठे झूठे परख वखाए, हरिजन साचे संत सुहेले, आप कराए घर साचे मेले चरन प्रीत बंधाए साचा नात। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे गुर आपे चेले, किसे हथ्थ ना आए मन्दिर गुरदुआरे मसीत आपणा आप ना कोई फोले। गुरमति गुर ते जाण, कर्म कमाया। दुरमति होई हैरान, गुर पूरे शब्द डण्डा हथ्थ फड़ाया। मनमति मुग्ध अञ्याण, बेमुख जीवां अन्दर डेरा लाया। गुरमति बड़ी बलवान, पंजां चोरां दए दुरकाया। दुरमति होई वड शैतान, इक्क हँकारा नाल रलाया। मन मति मिल्या एका दान, कलिजुग पल्लू हरि फड़ाया। गुरमति गुर पूरे दित्ती खाण, अन्तिम अतुट्ट भण्डार रखाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां खोल्हे बन्द दर, शब्द हथौड़ा इक्क रखाया। खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड शब्द खुजन्तया। लोआं पुरीआं अकाश पताल मात सद रहन्तया। आदि अन्त जुगा जुगन्त धरत मात मंगदी आई दात, देवणहार पूरन भगवन्तया। साध संत मेल कन्त अन्तिम अन्त जुगा

९०६

०४

जुगन्तया। अन्तिम धारे भेस, जोत सरूपी करे वेस, वेखे खेल गगन, अट्ठे पहर मग्न, ना होए नग्न, गुरमुखां मुख लगाए सोहँ शब्द साचा सगन, जीव जन्तया। साचा दर दरबार लगाउणा। ऊँच नीच राउ रंक राज रजाना एका धाम बहाउणा। प्रगट होए वड शाह शाहाना, वाली दो जहानां, शब्द तीर इक्क कमान रसना हरि उठाउणा। कलिजुग जीव वड बली बलवान, शब्द रखाए इक्क बिबाण, चारों कुन्ट उडाए, शाह सुल्तान कोई रहण ना पाउणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आप आपणा खेल रचाउणा। साची बणत हरि बणाए। अञ्जील कुरान रहण ना पाए। राग छतीसा रसन ना गाए। वेखे खेल हरि उन्नीसा, सभ दा खाली होए खीसा, सोहँ चले जगत हदीसा, कवण करे प्रभ तेरी रीसा, जुगा जुगन्तर भेख वटाए। जोती जोत सरूप हरि, सच्चा जाप इक्क जपाए। तीर तुफंग ना कोई नगारा। शब्द डंक विच संसारा। धरत मात रंगे रंग गुलाला इक्क अपारा। गुरमुख मंगे साची मंग, आत्म दिसे नर निरँकारा। लक्ख चुरासी भन्ने जिउँ काची वंग, घर घर दिसे इक्क अन्धयारा। शब्द वजे इक्क मृदंग, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां सोहँ जै जै जैकारा। गऊ ग़रीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, राजे राणयां करे ख्वारा। आप निभाए आपणा संग, गुरमुख साचे संत जनां, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। एका देवे नाम धन्ना, सच्चा राग सुणाए कन्ना, आत्म खोल्हे बन्द कवाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक करे सर्ब पसारा। एका एक पसार जोत अकालीआ। शब्द रक्खे

९०६

०४

तिक्खी धार, गुरमुख विरला मंगे दर सवालीआ। ना कोई वेखे नारी नार, एका रंगण चाढ़े नाम गुलालीआ। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, जन भगतां करे अन्त रखवालीआ।

✻ १३ फगण २०११ बिक्रमी संत रणधीर सिँघ लुध्याणा नूं शब्द भेज्जया गया ✻

सिँघ रणधीर मन रक्ख धीर। प्रभ अबिनाशी घर साचे आए, दूर दुराडा पैंडा चीर। पंज चोर ना झूठा नाचे, आपे वेखे आत्म अन्दर, एका चोटी सिखर अख़ीर। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे साचा घर, ना भुक्ख प्यास ना मंगे रोटी, एका अमृत मिले सच्चा सीर। भुक्ख प्यास ना तृष्ना अग्ग। सच सरोवर हरिजन नहाना बणे हँस कग। साची धार इक्क वहाए, दूसर कोई दिस ना आए, सुणे सुणाए साचा राग। दीपक जोती डगमगाए। शाह रग कोई दिस ना आए, जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, नूर नुरंतर जोत बसंतर गगन गगनंतर काया मन्दिर सच दुआरे डगमगाए। आउणा दर करो परवान। चारों कुन्टां मार ध्यान। निज नेत्र वेख काया खेतर, आत्म जोती कर ध्यान। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, वेखे नाम सच दुकान। सच नाम कवण टिकाणा। कवण राम जिस नाम उपजाणा। कवण राम जिस जोत जगाणा। कवण जोत जिस भरम गंवाणा। जोती जोत सरूप हरि, अन्तिम कलि जोत धर, आपे वेखे वेख वखाणे जन संत जिस चढ़ बैठा केहड़े शब्द बिबाणा। कवण बिबाणे गया चढ़। कवण रथवाही ल्या फड़। दो जहानां हथ्थ रक्खे वागां, दर दुआरे अग्गे खड़्ह। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, आपे वेखे आत्म महल उच्च अटारी साचे पौड़े अन्दरे अन्दर वड़्ह। सुरत शब्द प्रभ देवे बन्न। कलिजुग माया झूठी छाया, पोह ना सके गुरमुख तन। साचा नाम इक्क सिखाया, सोहँ अक्खर जगत वखर शब्द पढ़ाया, भाण्डा भरम हरि देवे भन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां चोरां देवे डन्न। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, भरम ना भुल्लणा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, झूठी माया विच ना रुलणा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, पूरे तोल कलिजुग तुलणा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, शब्द चढ़ाए साचे रथ, सच दुआरा गुरमुख साचे तेरी आत्म दर खुल्ह्णा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, शब्द देवे साची वथ, माया ममता करे सत्थ, जोती जोत सरूप हरि शब्द पंघूड़े आप झुलाए, धुरदरगाही साचा झूलना। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, बणत बणांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, गुरमुख साचे संत जनां गुर संगत मेल मिलांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, एका दर रहणा मंगत, गुरमुख साचा दर दर भिखारी ना अखवांयदा। होए सहाई जिउँ नानक अंगद, मानस देही ना होए भंगत, प्रभ साची जोत मिलांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ शब्द साचा पल्लू एका लड़ फड़ांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, वड गुणवन्तया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जीआं जन्त वेख वखाए पूरन भगवन्तया। सुरत शब्द आत्म साची मेख लगाए, काया चाढ़े रंग बसंतया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां मेल मिलाए हरिजन हरि हरि साचे कन्तया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, शब्द स्वास्सया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, कलिजुग अन्तिम एका दरसे सोहँ शब्द लोकमात सच्चा अभ्यास्सया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, गुरमुख तेरी काया मचे जूठ झूठ ना तन नच्चे, काया मन्दिर साचे ढाले जिउँ सोना पास्सया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जोत जगाए अन्दरे अन्दर होए उज्जयारा साचा मन्दिर, दीपक जोती करे प्रकाशया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, आपे तोड़े आत्म वज्जा जन्दर, वेख वखाए डूंघी कन्दर, पंजां चोरां परे हटाए, वेखे आप तमाशया। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे सच वर, सच शब्द लै जाणा घर, ना वक्त गंवाणा कलिजुग वेला अन्त विच हास्सया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, दया कमांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, साची नईआ आप चढ़ांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, भैणां भईआ गुर संगत इक्क बणांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, आपे पिता आपे माता, आपणी गोद उठांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे संत जनां लहणा देणा घर साचे बहिणा, दरस करना तीजे नैणां, साची रीती लोकमात चलांयदा। निमस्कार निमस्कार निमस्कार गुरदेव। बिरथा ना जाए लोकमात गुर पूरे कीनी सेव। आत्म तीर्थ आप नुहाए, दया करे वड देवी देव। रसना गुण हरि साचा गाए, होए सुलक्खनी साची जेहव। अमृत फल इक्क खवाए, जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे संत जनां, सोहँ शब्द साचा मेव। गुर संगत विदा कराए। नौ निधां घर उपजाए। शब्द तीर आत्म विधा, अमृत धार इक्क वहाए। प्रभ मिलण दी साची बिधा, गुरमुख विरला संत जणाए। जोती जोत सरूप हरि, संत सुहेले कर कलि मेले, एका दूजा भउ चुकाए। गुर संगत हरि विदा कराई। नाम रंगत तन चढ़ाई। भुक्ख नंगत दूर कराई। साचे घर रहणा मंगत, आदि अन्त प्रभ होए सहाई। जोती जोत सरूप हरि, गुर संगत देवे साचा वर, खुशी खुशी जाणा आपणे घर, पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द उडारी इक्क लगाई।

६०८
०४

❊ ❊ ❊ ❊ ❊